कु० 928

हिन्दी

कुरआन मजीद

तर्जुमा

हज़रत मौलाना फतेह मुहम्मद
खां साहिब जालन्धरी र०

रूपान्तरकार

हज़रत मौलाना
कौसर यज़दानी साहिब

प्रकाशक
महमूद एण्ड कम्पनी
मरोल पाइप लाइन बम्बई ५९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कु० - 928

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुर्आन मजीद

हिन्दी मुतर्जिम
मआ अरबी मतन

तर्जुमा
मौलाना फ़तेह मुहम्मद खां साहिब
जालंधरी

तसही :-
मौलाना अब्दुल मजीद सर्वर सहिब

प्रकाशक
महमूद एण्ड कम्पनी
मरोल पाइप लाइन बम्बई-५९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

© महमूद एण्ड कम्पनी
मरोल पाइप लाइन, बम्बई-५६

तादाद : ३१००

हदिया (उपहार) ६०-००

आर्टपुलस प्रिंटिंग : इक़रा प्रिंटर्स 1097; गंज मीर ख़ां, नई दिल्ली-2

आफसेट प्रिंटिंग : राहिल नसीम प्रिंटर्स, दिल्ली-6

पहली बार : फ़रवरी १९८७

प्रकाशक

महमूद एण्ड कम्पनी

मरोल पाइप लाईन, बम्बई-५६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुछ इस क़ुरआन मजीद के बारे में

एक लम्बे अरसे से ख़ास कमी महसूस की जा रही थी कि सरल और आसान हिंदी भाषा में क़ुरआन मजीद का एक आम-फ़हम तर्जुमा हो जिसे हर ख़ास व आम (तालीमयाफ़्ता और कम पढ़े लिखे लोग)' आसानी से पढ़ कर समझ सकें, साथ ही अरबी मत्न (अरबी अक्षरों में लिखा हुआ क़ुरआन) भी हिंदी रस्मुल्ख़त (देवनागरी) में हो और जिस को बिल्कुल सही और शुद्ध उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) से पढ़ा जा सके।

क़ुरआन मजीद के तर्जुमे को हिंदी रूप देना तो फिर भी इतना मुश्किल न था लेकिन अरबी मत्न को हिंदी देवनागरी में रूपान्तर करना बहुत कठिन और मुश्किल था, चूंकि अरबी में कुछ ख़ास हुरुफ़ (अक्षर) ऐसे होते हैं जो हिंदी में नहीं होते जैसे (ث) से, (ح) बड़ी हे, (ز) ज़े, (ذ) ज़ाल, (ص) साद, (ض) ज़ाद, (ط) तो, (ظ) ज़ो, (ع) अैन, (غ) ग़ैन, (ف) फ़े, (ق) क़ाफ़, (ة) गोल ते, (~) छोटी मद और (ــــ) बड़ी मद वग़ैर:" हमने कुछ अलामतें (निशानियां) देकर उन हर्फ़ों (अक्षरों) को बनाया है जो अरबी हर्फ़ों की सही आवाज़ को ज़ाहिर करते हैं। हर हर्फ़ की आवाज़ के लिए अलाहिद: अलाहिद: हर्फ़ मुक़र्रर किये हैं। हिंदी के मत्न में लफ़्ज़ों के वस्ल व फ़सल (सन्धि-विग्रह), साकिन व मुतहर्रिक, (हलन्त और सस्वर), क़ल्ब व इदग़ाम वग़ैरह में क़ुरआन मजीद के मामूर व मंक़ूल रस्मुल्ख़त के तरीक़-ए-तहरीर व तिलावत की पाबन्दी की है और रुमूज़े औक़ाफ़ (विरमाविरम चिह्न) की रायज अलामतें भी अरबी में किताबत (लिखाई) की गई है ताकि उस को कोई क़ुरआन का हिस्सा समझ कर न पढ़ने लगे अलावा इसके रुबअ, निस्फ़, सुल्स, रुकूअ और सज्द: वग़ैर: के लिए भी अलामते दी गई हैं। हिंदी में अरबी के मुताबिक़ तिलावत (पाठ) करने के लिए क़ायदे बयान किये गये हैं। हुरुफ़ के सही मख़ारिज (शब्द की सही आवाज़ निकालने) का तरीक़ा भी तफ़्सील (detail) से दिया गया है ताकि हिंदी मत्न भी अरबी के सही तलफ़्फ़ुज़ के साथ पढ़ा जा सके और उस के पढ़ने का अंदाज़ अरबी के तर्ज़े अदा (तरीक़े) के मुताबिक़ हो। मत्न वाले पेज पर हिंदी के मत्न के साथ अरबी मत्न का सफ़ा (पन्ना) भी छोटा (Reduce) करके रखा गया है ताकि कभी कोई हिंदी देवनागरी मत्न को अरबी से मिलाना चाहे तो मिला भी सके। बेहतर होगा कि पाठक (क़ारी "पढ़ने वाला") किसी अरबीदां (अरबी जानने वाले) के सामने दो चार बार पढ़ कर अपना उच्चारण दुरुस्त कर लें ताकि पढ़ने में कोई ग़लती न रह जाये।

इसमें कोई शक नहीं कि यह काम बड़ा दुश्वार (कठिन) था जिसके लिए हमने मुख़तलिफ़ उलमा-ए-किराम की ख़िदमात हासिल कीं शुरू में मौलाना कौसर यज़दानी साहिब से रब्त रहा लेकिन किसी वजह से वह वक़्त न दे सके। इस क़ुरआन मजीद का टाइटल पेज क़ुरआन छपने से पहले छप चुका था इसलिए टाईटल पेज पर मौलाना कौसर साहब का नाम भी है अलावा इस के इस की तस्हीह की तरफ़ ख़ास तवज्जह (ध्यान) दिया गया है और कई हाफ़िज़े क़ुरआन और उलमा-ए-किराम ने इसकी तस्हीह (Proof Reading) की है। साथ ही शुरू में ३८ पन्नों पर क़ुरआन मजीद से मुताल्लिक़ (संबंधित) ज़रूरी मालूमात (जानकारी) का एक जामेअ (बड़ा) मुक़द्दमा है जिसमें क़ुरआन को

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सही उच्चारण से पढ़ने का तरीक़ा और दीगर ज़रूरी मालूमात दर्ज हैं कि क़ुरआन मजीद किस तरह उतरा, कितने दिनों में उतरा और उस की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) का अल्लाह तआला ने क्या इन्तज़ाम (बंदोबस्त) किया है अलावा इसके पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के मुकम्मल हालात भी दे दिए गये हैं ताकि इस मुबारक किताब को पढ़ने से पहले यह समझा जा सके कि जिस पैग़म्बर पर यह किताब उतरी है उसकी ज़िंदगी कैसी थी। हमें उम्मीद है कि हिंदी पढ़ने वाले इस से फ़ायदा हासिल करेंगे और उलेमा से गुज़ारिश है कि वह अपने मश्विरों से नवाज़ें, साथ में पाठकों (पढ़ने वालों) से भी निवेदन है कि तिलावत (पाठ) के वक़्त कोई ग़लती या कमी देखें, तो मेहरबानी करके हमें लिखें ताकि उसे सही किया जा सके।

इस हिंदी क़ुरआन मजीद कीं तरतीव, तस्हीह वग़ैरह में जिन हज़रात ने हमारी मदद की उन के नाम यह हैं—

१. मौलाना अब्दुल मजीद सर्वर साहिब (मालेगांव)
२. मौलाना खालिद हुसैन सिद्दीक़ी साहिब (ज़िला बस्ती)
३. मौलाना इमरान क़ासमी साहिब (दिल्ली)
४. मौलाना शुऐब इदरीस साहिब (बम्बई)
५. हाफ़िज़ हसनेन साहिब (दरभंगा)
६. हाफ़िज़ वारीस साहिब (दिल्ली)
७. नासिर खां (दिल्ली)

उम्मीद है कि हिंदीं में हमारी यह कोशिश अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाएगा और उन तमाम लोगों को इस का अज्र देगा जिन्होंने इस काम में हमारी मदद की है या मश्विरा दिया है।

—**प्रकाशक**
सैयद महमूद क़ादरी

नोट : अनुवाद में जो शब्द ब्रेकेट ( ) में हैं वह अरबी उर्दू के शब्दों के हिंदी अनुवाद के मतलब को खुलासा करने के लिए दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल (लाभ)

नबी करीम सल्ललाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, मेरी उम्मत की सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) इबादत क़ुरआन मजीद की तिलावत है। अह्ले क़ुरआन (क़ुरआन पढ़ने वाले) ख़ास अल्लाह वाले होते हैं। तुम में से बेहतर वह है जो क़ुरआन सीखे और सिखाये।

तिर्मिज़ीशरीफ़ में इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने क़ुरआन मजीद का एक हर्फ़ (अक्षर) पढ़ा, तो उसको एक नेकी मिलेगी, जो दूसरे कामों की दस नेकियों के बराबर होगी। अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद पढ़ने वाले की ओर सबसे पहले मुतवज्जह होता (यानी ध्यान देता) है। तुम क़ुरआन मजीद पढ़ा करो क्योंकि क़ुरआन मजीद क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेगा।

तिर्मिज़ी शरीफ़, सुनने दारमी और बैह्की में अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस को क़ुरआन की तिलावत ने मेरी याद से और मुझ से अपनी हाजतों के मागने से रोका, तो मैं तमाम मांगने वालों से ज़्यादा उस की हाजतों और दिल की मुरादों को ख़ुद ही पूरा करूंगा (यानी बे-मांगे,) क्योंकि अल्लाह के कलाम की फ़ज़ीलत (बड़ाई) दूसरे कलामों पर ऐसी है, जैसे ख़ुदा की फ़ज़ीलत मख़्लूक़ पर।

सुनने दारमी शरीफ़ में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर क़ुरआन मजीद किसी खाल में हो, तो वह खाल आग में नहीं जल सकती। खाल से मुराद मोमिन का दिल है। अगर इस में क़ुरआन मजीद हो, दोज़ख़ के अज़ाब से बचा रहेगा। हदीसों में क़ुरआन मजीद के अनगिनत फ़ज़ाइल (लाभ) हैं, जो यहां बयान से बाहर है।

क़ुरआन मजीद की अज़्मत (बड़ाई), बुज़ुर्गी और उसकी फ़ज़ीलत के लिए इतना काफ़ी है कि यह दुनिया के पैदा करने वाले ख़ुदा का कलाम है तमाम ऐबों और कमज़ोरियों से पाक और साफ़ है। इसकी फ़साहत और बलाग़त तमाम दुनिया ने मान ली है। बड़े-बड़े फ़साहत और बलाग़त के दावेदार इस जैसे दो-तीन जुमले (वाक्य) भी सदियों (सैकड़ो साल) की कोशिशों के बावजूद न बना सके। खुले आम एलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले खिताब से कहा गया कि, 'अगर तुम इसके ख़ुदाई कलाम (ईश्वरीय वाणी) होने में शक करते हो और इसको इंसानी कलाम समझते हो, तो तुम इस जैसी छोटी से छोटी सूरः बना लाओ और तमाम ख़ास व आम (ज्ञानी व अज्ञानी) को जमा करो, हरगिज़ न बना सकोगे हरगिज़ न बना सकोगे।' क़ुरआन मजीद में सूरः बनी इस्राईल में, पारा १५, रुकूअ १०, आयत न० ८८-८९ में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

अनुवाद—'कह दो कि अगर इंसान और जिन्न इस बात पर जमा हों कि इस क़ुरआन जैसा बना लाएं, तो इस जैसा न ला सकेंगे, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हों और हमने इस क़ुरआन में हर तरह की मिसालें (उदाहरण), बयान करके बात ठीक तरीक़े से बता दी। मगर ज़्यादा लोगों का यह हाल है कि बिना इन्कार किए उनसे रहा न गया। जिन्नों की क़ौम ने जब इस चमत्कारी कलाम को सुना तो बे-झिझक कह उठे कि—'इन्ना समिअ्ना क़ुरआनन् अजबय् यह्दी इलर्रुश्दि फ-आ मन्ना बिही व लन्नुश्रि-क बिरब्बना अहदा० अर्थात-बेशक हमने एक अजीब क़ुरआन सुना जो नेकी की तरफ़

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हिदायत करता है हम इस पर ईमान लाए और अपने पालनहार का किसी को साझीदार हर्गिज़ न समझेंगे।'

स्वयं अल्लाह तआला इस पवित्र क़ुरआन की तारीफ़ (प्रशंसा) करता है फिर हम लोगों की ज़ुबान व क़लम में क्या ताक़त है कि इसकी ख़ूबियों और बरकतों का एक अंश भी बयान कर सकें।

क़ुरआन मजीद के उतरने और संग्रह व संकलन के हालात

क़ुरआन मजीद एक पवित्र किताब है जो अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतारी गयी। यह अर्श कुर्सी के मालिक का कलाम है जो उसने स्वयं एक बरगुज़ीदा पैग़म्बर और मुक़र्रब (सबसे ज़्यादा लोकप्रिय) बन्दे पर नाज़िल किया। इस्लाम का आधार इसी आसमानी फ़रमान (आदेश) पर है जिसने अनुपालन किया वह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुआ और जिसने ज़रा भी अवज्ञा की वह इस पाकीज़ा जमाअत (इस्लाम) से अलग हो गया और अल्लाह के बाग़ियों में शामिल हुआ। जब नबी-ए-करीम सल्ल० की उम्र शरीफ़ ४० साल की हुई उस समय आप को नबुवत प्रदान की गयी और रिसालत का ताज आप के सर पर रखा गया। इसी ज़माने से क़ुरआन के उतरने की शुरूआत हुई। यदा कदा यथा ज़रूरत के अवसर पर थोड़ा-थोड़ा २३ साल तक नाज़िल होता रहा है। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नहीं उतरा (हज़रत मूसा अलैहि० पर तौरात, हज़रत ईसा अलैहि० पर इंजील और हज़रत दाऊद अलैहि० पर ज़ूबूर ये सब किताबें तो एक ही बार में उतारी गयीं और सौभाग्य से ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरीं)

सही यह है कि आप (सल्ल०) की नुबूवत के बाद रमज़ान की शबे-क़द्र में पूरा क़ुरआन मजीद लौहे महफ़ूज़ (अल्लाह के पास से) से उस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं अल्लाह के हुक्म से उतारा गया और इसके बाद हज़रत जिब्रील अलैहि० को जिस समय जिस क़दर हुक्म हुआ उन्होंने पवित्र कलाम को बिल्कुल वैसा ही बिना किसी परिवर्तन या कमी-बेशी के नबी सल्ल० तक पहुंचाया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें और कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें और कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअत में वह्य कहते हैं। उलमा (विद्वानों) ने वह्य के विभिन्न तरीक़े हदीसों से पेश किए हैं।

१—फ़रिश्ता वह्य लेकर आए और एक आवाज़ घंटी जैसी मालूम हो। यह स्थिति अनेक हदीसों से साबित है और यह क़िस्म वह्य की सभी क़िस्मों में सख़्त थी। बहुत कष्ट नबी सल्ल० को होता था यहां तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी वह्य आती है तो मैं समझता हूं कि अब जान निकल जाएगी।

२—फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

३—फ़रिश्ता आदमी के रूप में आ कर बात करे। यह क़िस्म बहुत आसान थी इसमें कष्ट न होता था।

४—अल्लाह तआला जागते में नबी सल्ल० से कलाम फ़रमाए जैसा कि शबे मेअराज (मेअराज की रात) में।

५—अल्लाह तआला सपने की हालत में कलाम फ़रमाए। यह क़िस्म भी सही हदीसों से साबित है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

६—फ़रिश्ता सपने की हालत में आकर कलाम करे। मगर अन्तिम दो क़िस्मों से क़ुरआन मजीद ख़ाली है। पूरा क़ुरआन जागने की स्थिति में नाज़िल हुआ। अगरचे कुछ उलमा ने सूर: कौसर को आख़िरी क़िस्म से माना है लेकिन तहक़ीक़ करने वालों ने इसको रद्द कर दिया है और उन के (शक) संदेह का उचित जवाब दे दिया है। (इतक़ान)

क़ुरआन मजीद के बदफ़आत (कई बार) नाज़िल होने में यह भी हिक्मत थी कि इस में कुछ आयतें वे थीं जिन का किसी समय रद्द कर देना अल्लाह को मंज़ूर था। क़ुरआन मजीद में तीन प्रकार के मंसूख़ात हुए हैं। कुछ वे जिनका हुक्म भी मंसूख़ (रद्द) और तिलावत भी मंसूख़।

पहली मिसाल

لوكان لابن آدم واديا من مال لاحب ان يكون اليه الثاني ولو كان له الثاني لاحب

ان يكون اليهما الثالث ولا يملأ جوف ابن آدم الا التراب ويتوب الله على من تاب

सूर: लम यकुन में—'लव का-न लि इब्ने आ-द-म व दिय्यम मिम्मालिन् ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलय्हिस्सानी व लव का-न लहुस्सानी ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलय्हिमस्सालिसु व ला यमं लऊ जव्फ़ब्नि आ-द-मा इल्लत्ताराबु व यतूबुल्लाहु अला मन ता-ब' भी था।

दूसरी मिसाल

दुआ-ए-क़ुनूत भी क़ुरआन की दो सूर: थी। कुछ वे हैं जिन की तिलावत मंसूख़ हो गयी मगर हुक्म बाक़ी है जैसे कि आयते रजम, कि हुक्म इस का बाक़ी है मगर तिलावत इस की नहीं होती। ये दोनों क़िस्में क़ुरआन से निकाल दी गयी हैं और इनका लिखना भी क़ुरआन मजीद में जायज़ नहीं है। कुछ वे हैं जिन की तिलावत बाक़ी है मगर हुक्म मंसूख़ हो गया है। यह क़िस्म क़ुरआन मजीद में दाखिल है और इस की बहुत-सी मिसालें हैं। कुछ लोगों ने मुस्तक़िल किताबों में इन को जमा किया है। तफ़्सीर (टीका) के फ़न (कला) में उन से बहुत बहस होती है मगर यहां उन की तफ़्सील (विवरण) का अवसर नहीं। (तफ़्सीर इतक़ान)

जब शाफ़ए क़यामत (क़यामत के दिन सिफ़ारिश करने वाले) और उम्मत को पनाह देने वाले हुज़ूर सल्ल० ने रफ़ीक़े आला जल्ल मुजद्दहू की रहमत में सकूनत अख़्तियार फ़रमाई और वह्य का उतरना बंद हो गया। क़ुरआन मजीद किसी किताब में, जैसाकि आजकल है जमा नहीं था अलग-अलग चीज़ों पर सूरतें और आयतें लिखी हुई थीं और वे अलग-अलग लोगों के पास थीं। अधिकांश सहाबा को क़ुरआन मजीद पूरा ज़बानी याद था। सब से पहले क़ुरआन मजीद को एक जगह जमा करने का ख़्याल हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ आज़म रज़ि० के दिल में पैदा हुआ और अल्लाह ने उन के ज़रिए से अपने इस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैग़म्बर से किया था अर्थात क़ुरआन मजीद के हम हाफ़िज़ हैं इस का जमा करना और हिफ़ाज़त करना हमारे ज़िम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ अक्बर रज़ि० की ख़िलाफ़ते राशिदा का था। हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने उन की सेवा में अर्ज़ किया कि क़ुरआन के हाफ़िज़ शहीद होते जा रहे हैं और बहुत से यमामा की जंग में शहीद हो गए। मुझे डर है कि यदि यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा क़ुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अत: मैं उचित समझता हूं कि आप इस तरफ़ तवज्जोह दें और क़ुरआन मजीद के जमा करने का प्रबन्ध करें। हज़रत सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि जो काम नबी सल्ल० ने नहीं किया उस को हम कैसे कर सकते हैं ? हज़रत उमर फ़ारूक़ ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम यह बहुत अच्छा काम है। फिर कभी-कभी हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० इस की याद दिलाते रहे यहां तक कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० के दिले मुबारक में भी यह बात जम गयी। उन्होंने ज़ैद बिन साबित रज़ि० को तलब किया और यह सब क़िस्सा बयान करके फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद को जमा करने के लिए मैंने आप को चुना है, आप कातिबे वह्य (वह्य को लिखने वाले) थे और जवान व नेक हैं। उन्होंने भी वही बात कही कि जो काम नबी सल्ल० ने नहीं किया, उस को हम लोग कैसे कर सकते हैं? अन्त में वह भी राज़ी हो गए और उन्होंने बड़े अहतमाम (बहुत प्रबन्धित जिम्मेदारी) से क़ुरआन कजीद को जमा करना शुरू किया।

ज़ैद बिन साबित रज़ि० को चुने जाने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत जिब्रील अलैहिस्लाम से नबी सल्ल० क़ुरआन मजीद का दौर (पढ़ कर सुनना) किया करते थे और इंतक़ाल के साल में दो बार क़ुरआन मजीद का दौर हुआ और ज़ैद बिन साबित रज़ि० इस अन्तिम दौरे में शरीक थे और इस अन्तिम दौरे के बाद फिर कोई आयत मंसूख (रद्द) नहीं हुई। जितना क़ुरआन इस दौरे में पढ़ा गया, वह सब बाक़ी रहा अत: उनकोउन आयतों का ज्ञान था जिनकी तिलावत मंसूख़ हुई थी। (शरह सन्न:)

जब क़ुरआन मजीद सहाबा रज़ि० के प्रबन्ध से जमा हो चुका, हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने अपनी खिलाफ़त के ज़माने में उस की नज़र सानी (दोबारा देखना) की और जहां कहीं किताबत (लिखने में) ग़लती हो गयी थी उस को ठीक किया। सालों इस चिन्ता में रहे और कभी-कभी सहाबा रज़ि० से मुनाज़िरा भी किया। कभी सेहत इसी मक्तूब (लिखा हुआ) की ज़ाहिर होती थी, कभी इस के खिलाफ़, तो फ़ौरन उस को सही कर देते थे फिर जब ये सब दर्जे तै हो चुके तो हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने इस के पढ़ने-पढ़ाने की सख़्त व्यवस्था की और हाफ़िज सहाबा रज़ि० को दूर के देशों में क़ुरआन व फ़िक़्ह की शिक्षा के लिए भेजा, जिस का सिलसिला हम तक पहुंचा।

सच यह है कि हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० का एहसान इस बारे में पूरी उम्मते मुहम्मदिया (मुसलमानों) पर है। उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास क़ुरआन मौजूद है और हम उसकी तिलावत से लाभ उठाते हैं। इस एहसान की मकाफ़ात (बदला) किस से हो सकती है। ऐ अल्लाह ! अपने रिज़वान (ज्ञान) की ख़लअतें (इनाम) उन को प्रदान कर और ख़लअत व करामात का ताज उन के मुक़द्दस सर पर रख। आमीन।

फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस एहसान को और भी कामिल (पूरा) कर दिया। अपनी खिलाफ़त के ज़माने में उन्होंने इस मसहफ़ शरीफ़ (क़ुरआन) की सात नक़लें (प्रतिरयां) करा कर दूस-दूर के देशों में भेज दीं। और तिलावत क़िरआत (क़ुरआन पाठ करने के तरीक़ों) की वजह से जो मतभेद और झगड़े हो रहे थे और एक दूसरे की क़िरआत को हक़ के ख़िलाफ़ और ग़लत समझा जाता था, इन सब झगड़ों से इस्लाम को पाक कर दिया। केवल एक क़िरअत पर सब को सहमत कर दिया। अब अल्लाह के शुक्र से एक मज़बूत किताब मुसलमानों के पास है। कोई मज़हब दुनिया में इसकी मिसाल नहीं ला सकता। इन्जील व तौरात की हालत नाज़ुक है उनमें वह कमी-बेशी हुई कि ख़ुदा की पनाह। क़ुरआन की निस्बत (बारे में) विरोधियों को भी इक़रार है कि यह वही किताब है जिसकी निस्बत मुहम्मद सल्ल० ने ख़ुदा का कलाम होने का दावा किया था इस में किसी क़िस्म की कमी ज़्यादती उनके बाद नहीं हुई। वल्हम्दु लिल्लाह अल। ज़ालिक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुरआन मजीद में आयतों व सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने में है यह भी सहाबा रज़ि० ने दिया है मगर न अपनी राय व अनुमान में से, बल्कि नबी सल्ल० जिस तरतीब (ढंग) से पढ़ते थे और जो तरतीब उस मुबारक दौर में थी उसके थोड़ा भी ख़िलाफ़ नहीं किया, केवल दोसूरतोंकी तरतीब अलबत्ता सहावा रज़ि० अपने क़यास (अनुमान) से दी है। सूर: बराअत और अन्फाल, तो यह भी निश्चय भी लोहे महफ़ूज़ के ख़िलाफ़ न होगी। जिसका मुहाफ़िज़ इस क़दर कादिर व कवी (शक्तिशाली) हो उस में उसकी तरतीब भी इच्छा के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती।

कुछ और सहाबा जैसे इब्ने मसऊद रज़ि० और अबी बिन कअब रज़ि० ने भी क़ुरआन मजीद को जमा किया था। किसी की तरतीब उतरने के मुताबिक़ थी किसी की और किसी तरह। जगह-जगह वे आयतें जिनकी तिलावत मन्सूख़ थी भी इनमें किसी उद्देश्य से शामिल थी। कहीं-कहीं तफ़्सीरी शब्द उनमें लिखे हुए थे। इन सब मुसहफ़ों (नुस्ख़ों) को हज़रत उस्मान रज़ि० ने ले लिया वर्ना आगे चल कर इनकी वजह से सख़्त मतभेद पैदा होता। इसके अलावा यह सहमति शक्ति जो इस मसहफ़ के जमा करने में थी इन मुसहफ़ों में कहां। वह केवल एक ही व्यक्ति की मेहनत का नतीजा थे इस वजह से और भी ख़राबियां उनमें होंगी।

सहाबा रज़ि० के ज़माने में कुरआन मजीद में सूरतों के नाम, पारों के निशान आदि कुछ न थे, बल्कि अक्षरों पर बिन्दु (नुक़्ते) भी न दिए गए थे बल्कि कुछ सहाबा इसको बुरा समझते थे। वे चाहते थे कि मुसहफ़ में सिवाए क़ुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाए। अब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल असवद या हज़रत हसन बसरी रह० ने उस में नुकते बनाये और सूर: और पारों के नाम भी लिख दिए गये। उलमा इन सब चीज़ों के कारणों (जवाज़) पर सहमत हैं इस लिए कि ये ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिनके क़ुरआन होने का संदेह हो और मना उन चीज़ों का लिखना है जिनका क़ुरआन होने का शक (संदेह) पड़े।

ख़ुलूसेनीयत (सही नीयत) व क़ुरआन की तिलावत के आदाब

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, हर अमल का आधार नीयत पर है और हर व्यक्ति को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की है। तिलावत के समय वुज़ू के बाद पाक जगह में क़िब्ले की ओर हो कर यह ख़्याल करता हुआ तिलावत करे कि मैं तमाम मख़्लूक़ (जीव) के पैदा करने वाले का कलाम पढ़ रहा हूं जिसके अधिकार में मेरी जान है और रिज़्क के अस्बाब हैं। तिलावत को बिस्मिल्लाह से शुरू करे। बशारत (ख़ुशख़बरी) वाली आयतों पर ख़ुश हो और अज़ाब वाली आयतों पर रोए, या कम से कम रोना न आए तो रोने की सूरत बनाए। अगर बे वुज़ू हो तो ग़िलाफ़ (क़ुरआन जिस कपड़े में लिपटा होता है) या किसी और कपड़े से क़ुरआन को हाथ लगाए कि ऐसी सूरत में बिना इसके क़ुरआन को हाथ लगाना जाईज़ नहीं है। मगर बिना वुज़ू क़ुरआन का पढ़ना जायज़ है। तमाम उलमा की सहमति है कि बिना ग़ुस्ल किए अर्थात जनाबत की हालत वाले मर्द या हैज़ व निफ़ास वाली औरत को क़ुरआन का पढ़ना हराम है।

हज़रत आइशा रज़ि० नबी सल्ल० की कैफ़ियत बयान फ़रमाती हैं कि आप हर हाल में तिलावत फ़रमाया करते थे, वुज़ू की हालत में भी, बिना वुज़ू की हालत में भी, हां अलबत्ता जनाबत की हालत में न करते थे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुरआन मजीद की तिलावत में एक ख़ास समय तै कर लेना भी सही है। अधिकांश सहाबा फ़ज्र की नमाज़ के बाद क़ुरआन मजीद पढ़ा करते थे। समय तै कर लेने में नाग़ा (वक़्फ़ा) भी नहीं होता।

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिए किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नहीं है, हां इतना ज़रूरी है कि क़ुरआन मजीद सही पढ़ता हो। यदि इतनी योग्यता अपने में न देखे तो उसको ज़रूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे, या उस से पढ़ ले। (इतक़ान)

यह भी शर्त नहीं है कि क़ुरआन मजीद के मायने (अर्थ) समझ लेता हो। और यदि क़ुरआन मजीद में एराब (मात्राएं) न हों तब भी उसके सही एराब पढ़ लेने पर क़ादिर (सामर्थ) हो।

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत की नेमत केवल इन्सान को दी गयी है, शैतान आदि इसकी तिलावत पर क़ादिर नहीं है, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीब नहीं हुई। वे भी इस आशा में रहते हैं कि कोई इन्सान तिलावत करे और वे सुनें। हां मोमिन जिनको अलबत्ता यह नेमत मिली है और वे तिलावत पर कादिर (सामर्थ) हैं (नफ़तुल मरजान-इतक़ान)

शायद इससे हज़रत जिब्रील अलैहि० अलग हों, इस लिए कि उनकी निस्बत (बारे में) हदीसों में आया है कि हर रमज़ान में नबी सल्ल० से क़ुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रह० ने फ़तहुल बारी में व्याख्या कर दी है कि कभी वे पढ़ते थे और हज़रत (सल्ल०) सुनते थे और कभी आप (सल्ल०) पढ़ते थे और वे (जिब्रील अलैहि०) सुनते थे। (वल्लाहु आलम)

मस्नून है कि पढ़ने वाला शुरू करने से पहले,

'अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम- أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

—बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' ० بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

पढ़ ले और यदि पढ़ने के दौरान कोई दुनिया की बात करे तो उसके बाद फिर इसको पढ़ ले।

क़ुरआन मजीद की तिलावत मुसहफ़ (क़ुरआन) में देखकर ज़्यादा सवाब रखती है बजाए ज़बानी पढ़ने के। इस लिए कि वहां दो इबादतें होती हैं एक तिलावत, दूसरे क़ुरआन मजीद का दीदार (दर्शन)।

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में कोई बात करना या और किसी ऐसे काम में लगना जो दिल को दूसरी तरफ़ फेरे मकरूह है। क़ुरआन मजीद पढ़ते समय अपने को पूरी तरह उसी की तरफ़ लगा दे, न यह कि ज़बान से शब्द जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़याल।

क़ुरआन मजीद की हर सूरः के शुरू में बिस्मिल्लाह कह लेना मुस्तहब (बेहतर) है। मगर सूरः बराअत के शुरू में बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिए। पारा व अलम् में जो सूरः तौबा 'बरा अतुम्मिनल्लाहि' से शुरू है इस पर बिस्मिल्लाह नहीं लिखी है इस का हुक्म यह है कि यदि कोई ऊपर से पढ़ता चला आता है तो इस पर पहुंच कर बिस्मिल्लाह न पढ़े, वैसे ही शुरू कर दे और यदि किसी ने इसी जगह से शुरू किया है या कुछ सूरः पढ़ कर पढ़ना बन्द कर दिया था फिर बीच में से पढ़ना शुरू किया तो इन दोनों हालतों में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ना चाहिए।

बेहतर यह है कि क़ुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीब से पढ़े जिस तरतीब से क़ुरआन मजीद में लिखी हैं, हां बच्चों के लिए आसानी के उद्देश्य से सूरतों का बिना तरतीब पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारा अम्-म य-त-मा अलून में क़ायदा है बिना कराहत जायज़ है। (रद्दुल मुहतार)

और आयतों का बिना तरतीब पढ़ना आम सहमति से मना है। (इतक़ान)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुरआन मजीद की विभिन्न सूरतों की आयतों को एक साथ मिला कर पढ़ने को उलेमा ने मकरूह लिखा है इस वजह से कि हज़रत बिलाल रज़ि० को आप (सल्ल०) ने इस से मना फ़रमाया था। (इतक़ान आदि)

मगर मेरे ख़्याल में यह कराहत (मनाही) उस समय होगी जब इन आयतों की तिलावत सवाब की वजह से हो। इस लिए कि झाड़-फूंक के वास्ते विभिन्न आयतों का एक साथ पढ़ना नबी सल्ल० और उन के सहाबा से सही तरह से साबित है और हर एक आयत के गुण अलग-अलग हैं अतः जो खास असर हमें दरकार है वह जिन-जिन आयतों में होगा हम को उन का पढ़ना ज़रूरी है।

क़ुरआन मजीद अत्यन्त मधुर आवाज़ से पढ़ना चाहिए जिस से जितना हो सके। सही हदीसों में आया है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति क़ुरआन मजीद मधुर आवाज़ से न पढ़े, वह हम में से नहीं है। (दारमी) मगर जिस की आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है। और क़ुरआन क़िरअत के क़ायदों से पढ़ना चाहिए। राग से पढ़ना और गाना क़ुरआन मजीद का सहमत रूप से मकरूहे तह-रीमी है। क़ुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े। जल्दी-जल्दी पढ़ना भी मकरूह है।

जो व्यक्ति क़ुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उस को क़ुरआन मजीद पढ़ते समय उस के मायनों पर ग़ौर करना और हर मज़मून (विषय) के मुताबिक़ अपने में उस का असर पैदा करना सुन्नत है। जैसे, जब कोई व्यक्ति ऐसी आयत पढ़े जिसमें अल्लाह पाक की रहमत का ज़िक्र हो तो रहमत मांगे और अज़ाब का ज़िक्र हो तो पनाह मांगे। कोई जवाब मांगने वाला मज़मून हो तो उसका जवाब दे। जैसे हज़रत नबी सल्ल० सूरः वत्तीन के अन्त में जब पहुंचते तो 'बला व अना अला ज़ालि-क मिनश्शाहिदीन' पढ़ लेते (तिर्मिज़ी) या सूरः क़ियामत के अन्त में जब पहुंचते तो फ़रमाते कि—'बला' (तिर्मिज़ी) सूरः फ़ातिहा को जब खत्म करते तो आमीन कहते। लेकिन यह जवाब देना या दुआ मांगना उस समय मसनून है कि क़ुरआन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ में या तरावीह में न पढ़ा जाता हो। यदि फ़र्ज़ या तरावीह में पढ़ा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिए। (रद्दुल मुख़्तार)

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है। यदि रोना न आए तो अपनी संगदिली (पत्थरदिली) पर अफ़सोस करे।

सूरः वज़्ज़ुहा के बाद से अन्त तक हर सूरः के ख़त्म होने के बाद अल्लाहु अक्बर कहना मुस्तहब हैं। क़ुरआन मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ मांगना मुस्तहब है। इस लिए कि नबी सल्ल० से रिवायत है कि हर ख़त्म के बाद दुआ क़ुबूल होती है। (इतक़ान)

शबे क़द्र का बयान

हदीस से मालूम होता है कि शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ की अन्तिम ताक़ (दो से न कटने वाले हिन्दसे) रातों, इक्कीसवीं से सत्ताइसवीं तक है (अल-ग़ैबु अिन्दल्लाह) लेकिन हम २७ रमज़ान की रात शबे क़द्र मानते हैं। यह बहुत बरकत वाली रात है। हमें चाहिए कि इस मुबारक और बरकत वाली रात में दिल की गहराई व नेकनीयत के साथ क़ुरआन की तिलावत करें और अल्लाह से दुआ मांगे क्योंकि इस रात को हर बात का फ़ैसला होता है हर एक जानदार की जान व मौत, रिज़्क़ का अंदाज़ा होता है कि इतना शेष और इतना ख़त्म हो चुका है। बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ाबिले रश्क वह आदमी हैं कि जो रात और दिन के समय में क़ुरआन की तिलावत करता है। शबे मेअराज और शबे बराअत में भी क़ुरआन मजीद की तिलवात और इबादत करना अफ़्ज़ल (अच्छा) है इससे दिल की मुरादें (इच्छाएं) पूरी होती हैं और दुआएं क़ुबूल होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मनाज़िले क़ुरआन शरीफ़

क्रम सं०	सूरः	सूरः सं०	पृष्ठ सं०	पारः सं०	नाम पारः
१	अल-फ़ातिहः	१	१-१६२		
२	अल-माइदः	५	१६४-३२४	६	ला युहिब्बुल्लाह
३	यूनुस	१०	३२६-४४४	११	याअ तज़िरूना
४	बनी इस्राइल	१७	४४६-५७८	१५	सुब्हानल्लज़ी
५	अश शोअरा	२६	५८०-७०६	१९	वक़ालल्लज़ी-न
६	वस्साफ़्फ़ात	३७	७०८-८२०	२३	वमालि-य
७	क़ाफ़	५०	८२२-९७३	२६	हामीम

सजदाते तिलावत

क्रम सं०	पारा	सूरः	सजदे वाले शब्द	सजदे का स्थान	पृष्ठ सं०	आयत
१	९	अल आराफ़	यसजुदून	यसजुदून	२७६	२०६
२	१३	अर-रअ़द	वलिल्लाहि यस्जुदू	वल आसाल	३९६	१५
३	१४	अन-नह्ल	,,	मा युअ् मरू-न	४३०	४९-५०
४	१५	बनी इस्राईल	यखिररून लिलअ- -लकाने	खुशूआ	४६४	१०७-१०९
५	१६	मरयम	खर्रू सुजदा	व बुकया	४८८	५८
६	१७	अल हज	यसजुद लहु	मा-यशा-अ	५२८	१८
७	१७	अल हज' शाफ़ईयों में	वसजुदू	तुफ़्लिहून	५४०	७७
८	१९	अल फ़ुर्क़ान	असजुद्	नुफ़ूरा	५७८	६०
९	१९	नमल	अल्लाय सजुदू	रब्बिल अरशिल अज़ीम	६००	२५-२६
१०	२१	अस-सजदा	खर्रू असजुद	ला यस्तकबिरू-न	६६०	१५
११	२३	साद'	व खर्रू राकिआ	व अना-व	७२२	२४
१२	२४	हामीम सजदा	वसजुद् लिल्लाहि	ला यसमऊना	७६४	३७-३८
१३	२७	अन-नज्म	फ़स जुद्	वाअ बुद्	८४०	६२
१४	३०	अल-इन्शिक़ाक़	ला यह्जुदू-न	ला यस जुद्ना	९४६	२१
१५	३०	अल अलक़	वसजुद	वक़तरिब	९६२	१९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूर: २२ आयत ७७ पर इमाम शाफ़ई रह० के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रह० के नज़दीक नहीं है और सूर: ३८ आयत २४ पर इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक नहीं है। बहरहाल दोनों आलिमों के नज़दीक सज्दों की कुल तादाद १४ ही है।

क़ुरआन मजीद को कितने समय में ख़त्म किया जाए

अल्लाह के रसूल नबी सल्ल० ने फ़रमाया जिसने तीन दिन से कम में क़ुरआन मजीद ख़त्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफ़ा से नक़ल है कि जिसने हर साल में दो बार क़ुरआन मजीद ख़त्म किया उसने हक़ अदा किया। इस लिए हज़रत (सल्ल०) ने वफ़ात (इन्तक़ाल) के साल में दो ही बार ख़त्म किया था। हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस इबादत (उपासना) में कुछ बेहतरी नहीं है जिसमें समझ न हो और न उस क़िरअत (पढ़ने में) में जिस में फ़िक्र (सोच) न हो। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते है, अपने आप को क़ुरआन मजीद के ख़त्म करने की गिनती पर हावी न करो। बल्कि एक आयत का सोच कर पढ़ना सारी रात में दो क़ुरआन ख़त्म करने से बेहतर है।

हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि एक बार नबी सल्ल० हमारे साथ खड़े हुए तो आप (सल्ल०) यह आयत बड़ी देर तक पढ़ते रहे--

(इन तुअ़ज़्ज़िबहुम फ इन्नहुम अ़िबादुक)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने मुझे पांच दिन से कम समय में पूरा क़ुरआन मजीद ख़त्म करने की इजाज़त नहीं दी। (हदीस सही बुख़ारी)

तिलावत के सज्दों का बयान

सज्दए तिलावत उन्हीं लोगों पर अनिवार्य है जिन पर नमाज़ अनिवार्य है। क़ज़ा (छूट हुई) नमाज़ें, हैज़ (मासिक धर्म) वाली औरत पर वाजिब नहीं। अवैध (नाबालिग़) और ऐसे मजनूं (दीवाने) पर वाजिब नहीं जिसका जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से ज़्यादा हो गया, चाहे उसके बाद ख़त्म हो या नहीं। जिस मजनूं का जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से कम रहे, उस पर वाजिब है। इसी तरह मस्त और जुनबी (वह व्यक्ति जिस पर ग़ुस्ल वाजिब हो) पर भी।

तिलावत के सज्दे के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं अर्थात तहारत (पाकी) और सतर (अर्थात आवश्यक अंगों को ढाकना) और नीयत व क़िब्ले का सही होना। तहरीमा (तक्बीर) इसमें शर्त नहीं है। इसकी नीयत में आयत का तअय्युन (निर्धारण) शर्त नहीं कि यह सज्दा फ़लां आयत के कारण से है और यदि नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़ी जाए और तत्काल सज्दा किया जाए तो नीयत भी शर्त नहीं। (रद्दुल मुहतार)

जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद (ख़राब) हो जाती है उन चीज़ों से सज्दए सह्व (भूल का सज्दा) में भी ख़राबी आ जाती है और फिर इसका इआदा (दोबारा करना) वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है हां इस क़दर अन्तर है कि नमाज़ में क़हक़हा से वुज़ू टूट जाता है और इसमें क़हक़हे से वुज़ू नहीं टूटता और औरत की महाज़ात भी यहां मुफ़सिद (रुकावट) नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तिलावत का सज्दा यदि ख़ारिज नमाज़ (नमाज़ से बाहर) में वाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि तुरन्त अदा कर ले और यदि उस समय अदा न करे तब भी जायज़ है मगर मकरुह है और यदि नमाज़ में वाजिब हुआ तो उसका अदा करना तुरन्त वाजिब (अनिवार्य) है, देरी की इजाज़त नहीं है। (रद्दुल मुहतार)

ख़ारिजे नमाज़ (नमाज़ से बाहर) का सज्दा नमाज़ में और नमाज़ का ख़ारिज (बाहर) में, बल्कि दूसरी नमाज़ में भी अदा नहीं किया जा सकता। अतः कोई आदमी नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़े और सज्दा करना भूल जाए तो इसका गुनाह उस के ज़िम्मे (सर) होगा जिस की तदबीर (इलाज) इसके सिवा कोई नहीं कि तौबा करे, या अरहमुर्राहिमीन (रहम करने वाला) अपने फ़ज़्ल व करम (दया दृष्टि) से माफ़ फ़रमा देगा। (बहरुर्राईक़)

यदि कोई आदमी नमाज़ की हालत में किसी दूसरे से सज्दे की आयत सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज़ में हो या न हो यह सज्दा ख़ारिजे नमाज़(नमाज़ से बाहर)का समझा जाएगा और नमाज़ के अन्दर वह अदा नहीं किया जाएगा, बल्कि ख़ारिजे नमाज़ में।

यदि सज्दे की आयत तिलावत एक ही मज्लिस (सभा) में कई बार की जाए तो एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा और यदि एक सज्दे की आयत की तिलावत की जाए, फिर वही आयत अलग-अलग लोगों से सुनी जाए, तब भी एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा। यदि सुनने वालों की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा, चाहे पढ़ने वालों की मज्लिस बदल जाए या न बदले और यदि सुनने वालों की मज्लिस बदल जाए तो इस पर कई सज्दे वाजिब होंगे, चाहे पढ़ने वालों की बदले या न बदले। यदि पढ़ने की बदल जाएगी तो उस पर भी कई सज्दे वाजिब होंगे। (बहरुर्राइक़)

यदि एक सज्दे की आयत कई बार एक ही मज्लिस में पढ़ी जाए तो अख़्तियार (इच्छा) है कि सब के बाद सज्दा किया जाए या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने पहले और बाद की तिलावत के लिए काफ़ी होता है मगर एहतियात (सावधानी) इसमें है कि सबके बाद किया जाए। (बहरुर्राईक़)

यदि सज्दे की आयत नमाज़ में पढ़ी जाए और तुरन्त रुकूअ किया जाए या दो तीन आयतों के बाद और इस रुकूअ में झुकते समय सज्दे की नीयत भी कर ली जाए तो सज्दा अदा हो जाएगा और इसी तरह यदि सज्दे की आयत की तिलावत के बाद नमाज़ का सज्दा किया जाए, तब भी यह सज्दा अदा हो जाएगा और इसमें नीयत की भी ज़रूरत न होगी। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुहतार आदि)

जुमा और ईदैन (दोनों ईदें) और धीमी आवाज़ वाली नमाज़ों में सज्दे की आयत नहीं पढ़ना चाहिए, इसलिए कि सज्दा करने में मुक़्तदियों (नमाज़ पढ़ने वालों) के इश्तिबाह (संदेह) का डर है। (बहरुल राइक़)

किसी सूरः का पढ़ना और ख़ास कर (मुख्य रूप से) सज्दे की आयत को छोड़ देना मकरूह है। (बहरुल राइक़ आदि)

यदि हाज़िरीन (उपस्थित जन) वुज़ू सहित सज्दे के लिए मुस्तअिद (तैयार) न बैठे हों तो सज्दे की आयत का धीमी आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है इसलिए कि वे लोग इस समय सज्दा न करेंगे और दूसरे समय शायद भूल जाएं तो गुनहगार होंगे। (दुर्रे मुख़्तार आदि)

तिलावत के सज्दे का तरीक़ा यह है कि क़िब्ला रू (क़िब्ले की ओर होकर) नीयत करके अल्लाहु अक्बर कहे और सज्दा करे। फिर उठते समय अल्लाहु अक्बर कह कर उठे। और खड़े होकर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सज्दा करना मुस्तहब है। तिलावत का सज्दा कई लोग मिल कर भी कर सकते हैं इस तरह कि एक आदमी को इमाम की तरह आगे खड़ा करे और स्वयं मुक़्तदियों (नमाज़ अदा करने वाले) की तरह लाइन बना कर पीछे खड़े हों और उसकी पैरवी (अनुसरण) करें। यह सूरत असल में जमाअत की नहीं है। इसीलिए यदि इमाम का सज्दा किसी वजह से फ़ासिद (खराव) हो जाए तो मुक़्तदियों (पीछे वालों) का फ़ासिद (खराब) न होगा और इसी कारण से औरत का आगे खड़ा कर देना भी जायज़ है।

सज्दे की आयत यदि फ़र्ज़ नमाज़ों में पढ़ी जाए तो उसके सज्दे में नमाज़ वाले सज्दे में नमाज़ वाले सज्दे की तरह 'सुब्हा-न रब्बियल आला' कहना बेहतर है और नफ़्ल नमाज़ों में ख़ारिजे नमाज़ (नमाज़ से बाहर) में यदि पढ़ी जाए तो उस के सज्दे में अख़्तियार (इच्छा) है कि 'सुब्हाना रब्बियल आला कहे और तस्बीहें जो हदीसों में आयी हैं, वे पढ़ें। इस तस्बीह की तरह—

'सजदा वजही-य लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व सव्वरहू व वशक़्क़ समअहू व बसरहू बिहौलिही व क़ुव्वतिहि फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन०'

और दोनों को जमा कर ले तो और भी बेहतर है।

देवनागरी (हिंदी) में क़ुरआन मजीद को सही पढ़ने का तरीक़ा

अरबी अक्षरों की आवाज़ का देवनागरी वर्णमाला

ث सा स	ت ता त	ب बा ब	ا अलिफ़ अ
د दाल द	خ ख़ा ख़	ح हा ह	ج जीम ज
س सीन स	ز ज़ा ज़	ر रा र	ذ ज़ाल ज
ط तो त	ض ज़ाद ज़	ص साद स	ش शीन श
ف फ़ा फ़	غ ग़ैन ग़	ع अैन अ	ظ ज़ो ज
م मीम म	ل लाम ल	ك काफ़ क	ق क़ाफ़ क़
ء हम्ज़ा अ	ه हा ह	و वाव व	ن नून न
	ة गोल ते त	ى या य	

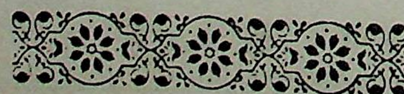
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अरबी रस्मुल्खत (लिपि) में तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) के नुकत-ए-नज़र (दृष्टि) से जो अक्षर होते हैं उन का चार्ट दिया गया है और ब्रैकेट ( ) में उन को पढ़ने की आवाज़ (तलफ़्फ़ुज़) भी दिया गया है।

चार्ट में आखिर के अक्षर (ة) गोल "ते" का प्रयोग शब्द में आखिर में होता है इस शब्द पर वक़्फ़ा (विराम) करने पर त् को ह् या विसर्ग (:) पढ़ा जाता है और विराम न लेने व पढ़ते चले जाने पर (ط) त् (ت 'त') के समान पढ़ा जाता है जैसे शफ़ाअत पर वक़्फ़ा करने पर शफ़ाअ: पढ़ा जायेगा। अगर किसी शब्द में गोल ता यानी त् हो और उसके बाद का अक्षर किसी नियम के आधीन ख़ामोश (मौन) हो जाये तो फिर त् अन्तिम अक्षर रह जाने के फलस्वरूप ठहराव लेते समय " : " में बदल जाएगा। जैसे ग़िशावतुन् में न् ग़ायब हो जाएगा और तब आख़िरी बचे अक्षर त् का विराम लेते समय : में बदल कर ग़िशाव: पढ़ा जाएगा।

नोट : पाठकों की सुविधा के लिए ज़रूरी क़ायदे (ग्रामर) मुखतसर कर के बयान किये जा रहे हैं क़ुरआन मजीद को अरबी के अलावा किसी दूसरी भाषा के रस्मुलख़त में लिखना या पढ़ना बहुत मुश्किल है। क्योंकि अरबी में लिखा कुछ होता है और पढ़ा कुछ जाता है। आयत पर वक़्फ किया जाता है इसलिए हम ने आयत पर हुरूफ़ को वक़्फ किया है और इबारत के अंदर बिल्कुल अरबी तरज़े अदा के मुताबिक़ देवनागरी में रूपांतर किया है और उसमें ठहरने और न ठहरने के रुमूज़ेऔक़ाफ की निशानियां भी दर्ज (अंकित) हैं और उन से मुतालिक (संबंधित) मालूमात अगले पन्नों पर दर्ज हैं। अलबत्ता जब तक खास अक्षरों के उच्चारण का सही ज्ञान न हो, तब तक लाअिल्म (न जानने वाला) के लिए यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि वह ज (ज़ाल), ज़ (ज़ाद) ज (ज़ो) और ज (ज़ा) को ज (जीम) की तरह हरगिज न पढ़ें। बजाए ज (जीम) के ये अक्षर ज़ (ज़ा) के ज़्यादा नज़दीक हैं। खास कर हिंदी जानने वालों को इन अक्षरों को समझ कर उनका सही उच्चारण सीखना चाहिए जैसे ث (सा), ح (बड़ी हा), خ (खा), ذ (ज़ाल), ز (ज़ा), ص (साद), ض (ज़ाद), ط (तो), ظ (ज़ो), ع (अैन), غ (ग़ैन), ف (फ़ा) और ق (क़ाफ़)। क़ुरआन मजीद को सही मखरज (उच्चारण) से क़िरअत (पाठ) करने के लिए कारीयों (क़ुरआन पाठ के विद्वानों) से सहायता लेनी चाहिए।

क़ुरआन मजीद के मतन को अरबी के अलावा हिंदी या किसी दूसरी भाषा के रस्मुलख़त में रूपांतर करने पर उलमा की रायों में मतभेद है। कुछ उलमा का ख़्याल है कि इस तरह करने से क़ुरआन मजीद के हरफ़ों की तहरीफ़ (कटौती) होती है और उनको भय (डर) है कि जिस तरह इंजील और तौरात तहरीफ़ हो गयी वैसे ही ख़ुदा न करे इस का भी वही हाल हो जबकि यह नामुम्किन है कड़ोरों हाफ़िज़ों को क़ुरआन मजीद मुंह ज़बानी याद है और इस (हिंदी) क़ुरआन में भी असल अरबी मतन की किताबत का सफ़ा बराबर में है। हम ने अशाअते इस्लाम और तब्लीग़ की नीयत से यह काम हिंदी में किया है कि जो हज़रात (लोग) किसी वजह से अरबी उर्दू की तालीम (शिक्षा) न हासिल (प्राप्त) कर सकें और वह क़ुरआन मजीद को पढ़ने के ख़्वाहिशमंद हैं वह फ़ायदा उठा सकें। मुसलमानों से गुज़ारिश है कि वह ख़ुद भी अरबी उर्दू सीखें और अपनी आने वाली नसल को खास कर अरबी उर्दू की तालीम दें।



CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ़िल्मे क़िरअ़त यानी मखारिजे हुरूफ़ का बयान (क़ुरआन के अक्षरों का उच्चारण संस्थान)

ه ، ا	अ, ह	हलक़ (कण्ठ) के अगले हिस्से से।
ع ، ح	अ, ह	बीच (मध्य) हलक़ से)।
خ ، غ	ख़, ग़	इंतेहा-ए-हलक़ (हलक़ के अन्तिम भाग से)
ق	क़	ज़बान की जड़ और ऊपर के तालू की मदद से।
ك	क	ज़बान के बीच और ऊपर के तालू से थोड़ा सा 'क़' (क़ाफ़) के मखरज (उच्चारण) से हट कर।
ی، ش، ج	ज, श, य	ज़बान के बीच के हिस्से और तालू के बीच हिस्से के संयोग से।
ض	ज़	ज़बान के किनारे और दांतों की गिरः के पास से यानी सारे किनारे ज़बान के लगाने से बाईं ओर के ऊपर दाढ़ों की जड़ से या दाहनी तरफ़ से, मगर बाईं तरफ़ से आसान है।
ل	ल	ज़बान की नोक और तालू के संयोग से।
ن	न	ज़बान के सिरे और ऊपर के दांतों के नीचे से।
ر	र	ज़बान के सिरे और ऊपर वाले सामने के दांतों के नीचे से 'न' के स्थान से कुछ आगे।
ط، د، ت	त, द, त	ज़बान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से मिला कर।
ث، ذ، ظ	ज, ज़, स	ज़बान की नोक और अगले दांतों के किनारे से।
ف	फ़	नीचे के होंठ के अन्दर ऊपर के दांतों के सिरे जब छूते हैं।
م، ب	ब, म	दोनों होंठों के बीच में से।
الف	अलिफ़	'अ' सिर्फ़ एक हवा है कि अन्दर से निकलती है।
ز، ص، س	स, स, ज	ज़बान की नोक और अगले दांतों के बीच से।
و	व	दोनों होठों को क़रीब लाकर भी 'फ़' की तरह छूना नहीं चाहिए।

क़ुरआन मजीद के रुमूज़े औक़ाफ़

हर एक भाषा के लोग जब बात-चीत करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं और कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़ियादा और इस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और सही मतलब समझने-समझाने में बहुत दखल है। क़ुरआन मजीद की इबारत (अरबी-लेख) भी बोल-चाल के अन्दाज़ में है इस लिये अहले इल्म (ज्ञानियों) ने इसके ठहरने, न ठहरने की अलामतें (चिह्न) मुक़र्रर किए हैं। जिन्हें 'रुमूज़े औक़ाफ़' कहते हैं। खास ध्यान रखने की बात यह है कि आम तौर पर सभी ज़बानों (भाषाओं) में ठहरने के निशान होते हैं, लेकिन क़ुरआन में ठहरने और न ठहरने दोनों तरह के निशान होते हैं। जैसा कि हम बोलते हैं 'उठो मत, बैठो' इस जुमले (वाक्य) में अगर कौमा लगा कर लिखें जैसे **'उठो, मत बैठो'** इस तरह लिखने और बोलने में उठने का हुक्म है और अगर इस जुमले को इस तरह लिखें जैसे **'उठो मत, बैठो'** इस तरह लिखने और पढ़ने में बैठने का हुक्म है, इस मिसाल से हमको खुद अंदाज़ा करना चाहिये कि अरबी जो क़ुरआन की भाषा है जिसके पढ़ने में किस क़द्र एहतियात (सावधानी) की ज़रूरत है और तिलावते क़ुरआन (क़ुरआन पाठ) में

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रुमूज़े आक़ाफ़ का लिहाज़ रखना किस क़द्र ज़रूरी है ताकि किताब की मंशा में फ़र्क न आने पाये। क़ुरआन मजीद के रुमूज़े औक़ाफ़ यह हैं (○) आयत, (م) मीम, (ط) तो, (ج) जीम, (ز) ज़ा, (ص) साद, (صلے) सले, (قف) क़ाफ़, (صل) सिल, (قف) क़ाफ़फ़े, (سكتة) सक्तः, (وقفه) वक़्फ़ः (لا) ला, (ق) काफ़, (۵) कूफ़ी आयत का निशान, (∴) मुआनिक़ा का निशान, (~ '١') मद, और (~ 'آ') बड़ी मद। इनको सिर्फ़ निशानियां समझना चाहिये। यह क़ुरआन के मत्न का हिस्सा नहीं है अगर हम इसको हिन्दी में लिखते तो ला इल्मी में या रवानी (तेजी) में कोई आयतों में शामिल पढ़ लेता इस भूल से सावधान रहने के लिये हम ने इन को अरबी रस्मुल्ख़त में किताबत (लिखाई) किया है।

रुमूज़ औक़ाफ़ से मुतालिक़ ज़रूरी मालूमात यह हैं—

○	( )	जहां बात पूरी होती है वहां (अरबी मत्न में) छोटा गोल दायरा बनाया जाता है यह हक़ीक़त में गोल ते (ة) है। यह वक़्फ़े-ताम की अलामत है यानी इस पर ठहरना चाहिये इस निशानी को आयत कहते हैं। पाठकों की सुविधा के लिये इस निशान के बीच आयत का नंबर (संख्या) भी दिया गया है जैसे आयत (२०)।
م	मीम्	यह वक़्फ़ लाज़िम का निशान है। इस पर ज़रूर ठहरना चाहिये अगर न ठहरा जाये तो अह्तमाल (भय) है कि मतलब उलट हो जाये। मिसाल उदाहरण के तौर पर कोई कहे—आओ, मत जाओ। इस तरह कहने में आने का हुक्म है और जाने की मनाई। लेकिन अगर कोई कहे—आओ मत, जाओ। तो मतलब पहले के बिल्कुल उल्ट हो जाता है इस आख़िरी जुमले में जाने का हुक्म है।
ط	तो	यह वक़्फ़े मुतलक़ का निशान है इस पर ठहरनाचाहिये। फिर भी यह ठहराव वहां होता है जहां ठहरने के बावजूद अभी कहने वाला कुछ और बात कहना चाहता है।
ج	जीम	यह वक़्फ़े जायज़ का निशान है। यहां ठहरना ज़्यादा बेहतर है, लेकिन न ठहरने को भी जायज़ (अनुमत) माना गया है।
ز	ज़े	यह वक़्फ़ मुजव्वज़ का निशान है। यहां न ठहरना ज़्यादा अच्छा है।
ص	साद	यह निशान वक़्फ़ मरख़्ख़स का है। यहां न ठहरना यानी मिला कर पढ़ना चाहिये, लेकिन अगर कोई थककर रुक जाये तो उसकी छूट है। ध्यान रहे कि, ز (ज़ा) की निस्बत (अपेक्षा) ص (साद) पर मिला कर पढ़ना ज़्यादा पसन्द किया गया है।
صلے	सले	यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।
ق	काफ़	यह क़ील-अलैहिल-वक़्फ़ का ख़ुलासा है। यहां नहीं ठहरना चाहिये।
صل	सल्	यह क़द-यू-सल का निशान है यहां कभी ठहरा भी जाता है, और कभी नहीं। लेकिन ठहरना बेहतर है।
قف	क़िफ़्	यह लफ़्ज़ (शब्द) क़िफ़् है यानी ठहर जाओ। यह निशान वहां इस्तेमाल किया जाता है जहां पढ़ने वाले को मिला कर पढ़ते चले जाने का अंदेशा हो।
س या سكتة	सीन या सक्तः	यह सक्तः का निशान है यहां मामूली (साधारण) सा ठहरना चाहिये, लेकिन सांस न टूटने पाए।
وقفه	वक़्फ़ः	यह लम्बे सक्तः का निशान है। यहां सक्तः के मुक़ाबले ज़ियादा ठहरना चाहिये, लेकिन सांस न टूटने पाए सक्तः और वक़्फ़ में सिर्फ़ यह फ़र्क है कि सक्तः में कम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

		ठहरना होता है, वक़्फ़: में ज़्यादा।
لا	ला	ला के मानी 'नहीं' के हैं। यह निशान कहीं आयत पर होता है और कहीं इबारत के अंदर। यह जब किन्हीं दो शब्दों के बीच में हो तो वहां हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिये। आयत के ऊपर हो तो इस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है, (हमने हिन्दी कम्पोज़ में आयत के निशान से पहले दिया है) एक राय है कि 'ठहर जाये,' दूसरी 'न ठहर जाये' लेकिन ठहरा जाये या न ठहरा जाये इस से मतलब में फ़र्क़ नहीं आता। ठहरना उसी जगह नहीं चाहिये जहां इबारत के अंदर लिखा हो।
ق ف / क	काफ़	यह कज़ालिक का निशान है यानी यहां यह समझना चाहिए कि इस से पहले जो निशान आ चुका है उसी के मुताबिक़ (अनुसार) यहां भी रुकना या न रुकना मुनासिब है।
۵	निशान	यह कूफ़ी आयत का निशान है और मतलब वही है जो ( ) आयत का है। **नोट—ध्यान रखना चाहिए कि जहां कई निशान एक साथ हों वहां उनमें से किसी भी निशान पर अमल किया जा सकता है लेकिन बाद वाले निशान का हुक्म मानना ज़्यादा उचित है**
∴ ∴	निशान	यह मुआनिक़: की अलामत है हमेशा यह दोहरा यानी दो जगह नज़र आयेगा। इसका मतलब यह है कि इनके बीच में लिखे शब्दों को चाहे इनसे पहले ही इबारत के साथ जोड़ कर पढ़ें और चाहे इनसे बाद वाली इबारत के साथ। दोनों मतलब जायज़ (मान्य) है। हासिल यह हुआ कि दोनों निशानों में से एक जगह ठहरे तो दूसरी जगह मिला कर पढ़े। न दोनों जगह ठहरा जा सकता है और न दोनों जगह मिलाया जा सकता है। यह मुआनिक़: दो तरह का होता है (१) अिन्दल् मुतअख़्ख़िरीन (२) अिन्दल मुतक़द्दमीन।
।	मद (छोटी)	यह छोटी मद का निशान है। मद को संस्कृत में 'प्लुत' कहते हैं जिस अक्षर पर यह निशान होगा उसको इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि तीन अलिफ़ के बराबर हो।
T	मद (बड़ी)	यह बड़ी मद का निशान है। जिस अक्षर पर यह निशान होगा उस को इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि चार बार के बराबर हो। जैसे लिखा हो وَجَآءَ (व-जा-अ) तो 'जा' जो कि ज+अ से बना है, के अ को ४ अ के बराबर खींचकर पढ़ना चाहिए। इसी तरह छोटी मद को भी ऊपर लिखे क़ायदे (नियम) के अनुसार पढ़ना चाहिए। बड़ी मद को पढ़ने का एक तरीक़ा और भी है। जैसे किसी शब्द के अक्षर पर बड़ी मद हो और उस के आगे (अलिफ़) हो और अलिफ़ के आगे 'ّ' (तश्दिद) हो तो इस को सात अलिफ़ के बराबर पढ़ना होगा जैसे وَلَا الضَّآلِّيْنَ (वलज़्-ज़ाल्लीन), सही मख़रज (शुद्ध पाठ) के लिए क़ारी (क़ुरआन पाठ के विद्वानों) से सहायता लेना चाहिए।
★	रुकूअ़	यह रुकूअ (विराम) का निशान है। अगर हाशिये पर ऐसा निशान '★ रु १/७/आ ६' लगा हो तो इसका मतलब है कि यह सूरः तौबा का पहला रुकूअ़ है, पारः १० का सातवां रुकूअ़ है और इस रुकूअ़ में ६ आयतें हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

●	पार: $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{2}$, $\frac{3}{4}$	हर पार: को पढ़ने की आसानी के लिए चार बराबर हिस्सों में बांट दिया गया है। रुबअ़ (चौथाई), निस्फ़ (आधा) और सुल्स (तीन चौथाई) पर यह निशान दिया गया है। इसी तरह पूरे क़ुरआन को सात मंज़िलों में बांटा गया है जो हर सफ़हः (पृष्ठ) पर दर्ज (अंकित) हैं।
⊛	आधा क़ुर्आन	यह निस्फ़ुल क़ुरआन (आधा क़ुरआन) का निशान है। देखिये पृष्ठ ४६८, सूर: कह्फ़ आयत १९।
□	सज्द:	यह सज्द: का निशान है। क़ुरआन मजीद में चौदह मुक़ाम ऐसे हैं जहां सज्द: करने की हिदायत है। पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्द: करना लाज़िम है। घुटने टेककर हाथों की हथेलियां और दोनों हाथ की पांचों उंगलियां ज़मीन पर रख कर और हाथों के बीच में माथा और नाक ज़मीन पर टेककर ज़बान से ख़ुदा की पाकीज़गी (पवित्रता) बयान करने को सज्द: कहते हैं। सज्द: की तस्बीह (सज्द: में पढ़ने वाले शब्द) हमने सज्द: तिलावत के बयान में दी है। (मुकद्दमा क़ुरआन मजीद पृष्ठ नं० १५)

क़ुरआन मजीद के रस्मुलख़त से सम्बन्धित ज़रूरी याद दहानी

(१) क़ुरआन मजीद की तहरीर (लिखाई) से बेख़बरी की वजह से अक्सर लोग क़ुरआन मजीद ग़लत पढ़ते हैं। चंद (कुछ) ज़रूरी मिसालें लिखी जा रही हैं। क़ुरआन मजीद के चंद अल्फ़ाज़ (शब्द) में (و) वाव लिखा जाता है लेकिन पढ़ा नहीं जाता जैसे (زكوٰة) ज़क्वात, (حيوٰة) हैवात को ज़कात या हयात पढ़ा जाता है यानी (و) वाव को न पढ़ना चाहिए और कुछ जगह (ى) य लिखी जाती है लेकिन पढ़ी नहीं जाती बल्कि उस के बदले में अलिफ़ पढ़ा जाता है जैसे (عيسىٰ موسىٰ) मुसाय ईसाय वग़ैर: को (عيسا موسا) मूसा, ईसा पढ़ना चाहिए इस को अलिफ़ मक़सूरा कहते हैं और बाज़ जगह अलिफ़ मक़सूरा की अलामत खड़े ज़बर (ا) के अलावा कुछ नहीं होती तो इस खड़े ज़बर को भी एक अलिफ़ के बराबर पढ़ना चाहिए जैसे (اسحٰق، رحمٰن) को (اسحاق، رحمان) रहमान, इस्हाक़ पढ़ना ज़रूरी है।

(२) यह बात याद रहे कि अरबी ज़ुबान में 'याये मजहूल नहीं होती। मगर क़ुरआन मजीद में सिर्फ़ एक जगह पार: १२ सूर: हूद रुकूअ ४, आयत ४१ में एक लफ़्ज़ मज्रीहा लिखा है उस का उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) मज्रीहा नहीं हे "मज्रेहा" है।

(३) नीचे लिखे दोनों लफ़्ज़ों में जो 'स़' है इसमें (हफ़्स) साद (स़) के नज़दीक सीन (स) पढ़ना चाहिये:— युब्सुतु—पार: २ सूर: बक़र: आयत २४५ में। बस्ततन्—पार: ८ सूर: अअ्राफ़ि आयत ६९ में।

(४) नीचे लिखे दोनों लफ़्ज़ों में जो (ص साद) 'स़' है इनमें (س सीन) 'स' और (ص) साद (स़) दोनों पढ़ने का इख़्तियार है:—हुमुल् मुसैतिरून—पार: २७ सूर: तूरि आयत ३७ में। बिमुसैतिरिन्—पार: ३० सूर: ग़ाशिय: आयत २२ में।

(५) क़ुत्बुजद्—क़, त़, ब, ज और द के मुतहर्रिक (हलन्त) अक्षर आने पर भी इनमें मामूली सा सस्वर जैसी हरकत पढ़ना चाहिए। जैसे 'अब्राहीम'। इसमें ब् को थोड़ा सा हिला कर उच्चारण करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(६) यह भी याद रहे कि क़ुरआने करीम में अक्सर जगह (ا) अलिफ़ लिखा जाता है मगर पढ़ा नहीं जाता जैसे कि (ا) अलिफ़ जो अलामत **जमा** के लिए हो जैसे قالوا (क़ालू'अ') में आख़री अलिफ़ पढ़ा नहीं जाता और أَنَا (अना) को أَنَ (अ-न) पढ़ा जाएगा मगर जब कहीं क़ुरआन मजीद में (ءَنَا) अना (हम्ज़ा, नुन, अलिफ़ से) लिखा हो वहां आख़री अलिफ़ ज़रूर पढ़ा जाएगा जैसे جَاءَنَا نَذِيرٌ जाअनान-जीरुन

'अना'—क़ुरआन मजीद मूल (मतन) में जहां पर अलिफ़् सहित 'अना' लिखा हुआ है, जो ज़मीर (सर्वनाम) है, वहां नून (न) के साथ का आखिरी अलिफ़् (ا) छोड़ कर 'अ-न' पढ़ना चाहिए। हिन्दी क़ुरआन मजीद के सफ़ा ४६४ लाईन २३, सफ़ा ५१२ लाईन २१, सफ़ा ५१८ लाईन १ सफ़ा ५२२ लाईन १६, सफ़ा ५३४ लाईन २४, सफ़ा ५४६ लाईन २७, सफ़ा ५०२ लाईन १६, सफ़ा ५६० लाईन २१, सफ़ा ५६० लाईन २, सफ़ा ६०२ लाईन १७, सफ़ा ६०२ लाईन २०, सफ़ा ६१० लाईन १५, सफ़ा ६३८ लाईन २१, सफ़ा ७२६ लाईन १४, सफ़ा ७२६ लाईन १६, सफ़ा ७२६ लाईन २४, सफ़ा ७२८ लाईन ४, सफ़ा ७४८ लाईन २१, सफ़ा ७५६ लाईन २२, सफ़ा ७८४ लाईन २, सफ़ा ७६६ लाईन २३, सफ़ा ८२६ लाईन ५, सफ़ा ८६६ लाईन २१, सफ़ा ८७४ लाईन १७, सफ़ा ६०० लाईन २२, सफ़ा ६३६ लाईन २५, सफ़ा ६७० लाईन ६, में 'अना' ज़मीर (सर्वनाम) है। पाठक वहां कोई निशान लगा लें ताकि उसे 'अ-न' पढ़ें न कि 'अना'। फिर ध्यान दिलाना जरूरी है कि 'अन' को हिन्दी-उर्दू के तर्ज़ पर 'अन्' न पढ़ें बल्कि अरबी-संस्कृत के तर्ज़ पर 'अ-न' सस्वर ही पढ़ें। लेकिन सूरत २५ 'अल्फ़ुर्क़ान' पारः १६ आयत ४६ पृष्ठ ५७६ पर 'अनासीय' में जो 'अना' है उसको 'अना' यानी अलिफ़् के साथ पढ़ना चाहिये, क्योंकि यह 'अना' ज़मीर (सर्वनाम) नहीं है।

क़ुरआन मजीद के वह मुक़ामात जिनमें (ا) अलिफ़् ज़ायद होने पर भी ख़ामोश (मौन) है जिनमें अलिफ़् का न पढ़ना जरूरी है।

सं०	नाम पारः	पारः	सूरः	रुकूअ	आयत	पृष्ठ	अरबी लिपि में	अरबी और नागरी में पढ़िए
१	तिल्कर्रुसुलु	(३)	(शुरू) आलि अिमरान	१	१	७४	अलिफ़ लाम् मीम् (१) अल्लाहु	अलिफ़ लाम् मीम् (१) अल्लाहु
२	लन्तनालू	(४)	आलि अिम्रान	१५	१४४	१०४	अफ़ा अिम्मात	अफ़ अिम्मात
३	,,	,,	,, ,,	१७	१५८	१०८	ला अिलल्लाहि	ल अिलल्लाहि
४	लायुहिब्बुल्लाहु	(६)	मा'अिदः	५	२६	१७४	अन् तबू'आ	अन् तबूअ
५	अिजा समिअू	(७)	अन्आमि	४	३४	२०४	मिन् नबाअिल्मुर्सलीन	मिन्नबअिल्मुर्सलीन
६	कालल्मलअू	(६)	अअराफ़ि	१३	१०३	२५६	मलाअिही	मलअिही
७	वअ्लमू	(१०)	सूरतुत्तौबः	७	४७	३०६	ला औज़अू	ल औज़अू
८	यअ़तज़िरून	(११)	यूनुस	८	७५	३४२	मलाअिही	मलअिही
६	,,	,,	,,	६	८३	३४२	मलाअिहिम	भलअिहिम्
१०	वमा मिन्दाब्बतिन्	(१२)	हूद	६	६८	३६२	अिन्न समूदा	अिन्न समूद
११	,,	,,	,,	६	६७	३६६	मलाअिही	मलअिही
१२	वमाउबर्रिअु	(१३)	रअदि	४	३०	३६८	अुममुल्-लितत्लुवा	अुममुल्-लितत्लुव
१३	सुब्हानल्लज़ी	(१५)	कह्फ़ि	२	१४	४६६	लन्नद् अुवा	लन्नद् अुव
१४	,,	(१५)	,,	४	२३	४६८	लिशाअिन्	लिशैअिन्
१५	,,	(१५)	,,	५	३८	४७२	लाकिन्ना हुवल्लाहु	लाकिन्न हुवल्लाहु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सं०	नाम पारः	पारः	सूरः	रुकूअ	आयत	पृष्ठ	अरबी लिपि में	अरबी और नागरी में पढ़िए
१६	अिक़्तरबलिन्नासि	(१७)	अंबिया'अि	३	३४	५१४	अफ़ाअिम्-मित्त	अफ़अिम्-मित्त
१७	क़द् अफ़्लहल्-मुअ्मिनून	(१८)	मुअमिनून	३	४६	५४६	मलाअिही	मलअिही
१८	व क़ालल्लज़ीन	(१६)	अल् फ़ुर्क़ानि	४	३८	५७६	समूदा व अस्हाबर्रस्सि	समूद व अस्हाबर्रस्सि
१६	,, ,,	(१६)	नम्लि	२	२१	६००	ला अज़्बहन्नहू	ल अज़्बहन्नहू
२०	अम्मन् ख़लक़स्-समावाति	(२०)	क़ससि	४	३२	६१८	मलाअिही	मलअिही
२१	,, ,,	,,	अन्कबूति	४	३८	६३६	आदंव्व समूदा	आदंव्व समूद
२२	अुत्लमा अूहिय	(२१)	रूमि	४	३६	६४८	लियर्बुवा	लियर्बुव
२३	व मालिय	(२३)	साफ़्फ़ाति	२	६६	७१२	ला अिलल् जहीमि	ल अिलल् जहीमि
२४	अिलैहि युरद्दु	(२५)	ज़ुख़्रुफ़ि	५	४६	७८२	मलाअिही	मलअिही
२५	हामीम्	(२६)	मुहम्मदिन्	१	४	८०६	व ला किल्लियब् लुवा	व ला किल्लियब्लुव
२६	,,	(२६)	,,	४	३१	८१०	व नब्लुवा अख़्बारकुम्	व नब्लुव अख़्बारकुम
२७	,,	(२६)	हुजुराति	२	११	८२०	बिअ्सलि-अस्मुल्-फ़ुसूक़ु	बिअ्स-लिस्मुल्-फ़ुसूक़ु
२८	क़ालफ़मा ख़त्बुकुम	(२७)	नज्मि	३	५१	८३८	व समूदा फ़मा	व समूद फ़मा
२६	क़द् समिअल्लाहु	(२८)	हशरि	२	१३	८७२	ला अन्तुम् सशद्दु	ल अन्तुम् अशद्दु
३०	तबारकल्लज़ी	(२६)	दह्रि	१	४	६२८	सलासिला	सलासिल
३१	,,	(२६)	,,	१	१५	६२८	कानत् क़वारीरा	कानत् क़वारीर
३२	,,	(२६)	,,	१	१६	६२८	क़वारीरामिन्	क़वारीर मिन्

तिलावत क़ुरआन मजीद के वक़्त रुमूज़ (विरमाविराम), अलामत (चिह्न) और हरकात सकनात (गीत स्थिरता) पर पूर्ण सावधानी से अमल करना चाहिए। क़ुरआन मजीद में बीस मुक़ामात ऐसे हैं कि सही लिखा होने पर भी पढ़ने की ज़रा सी असावधानी से बिना जाने-समझे आज्ञाओं के विरुद्ध आचरण ग्रहण हो जाता है, और जान बूझकर पढ़ने से बड़ा अज़ाब (महान दोष) बल्कि कुफ़्र तक नौबत पहुंच जाती है। मगर लाअिल्मी (अनभिज्ञता) में माफ़ है, क्योंकि लाअिल्मी में और तालीम की अवस्था में अल्लाह की तरफ़ से माफ़ी है। नीचे वह तमाम मुक़ाम दर्ज किये जाते हैं, पाठक ध्यान रखें :—

सं०	सूरः	आयत	पृष्ठ	सही	ग़लत
१	सूरतुल्-फ़ातिहः (१)··· ···	४	१	अिय्याक नअ्बुदु	अिया नअ्बुदु (बिलातश्दीद)
२	,, ,, (१)··· ···	६	१	अन् अम्त अलैहिम्	अन् अम्तु अलैहिम्
३	सूरः बक़रः (२) रुकूअ १५	१२४	२६	अिब्राहीम रब्बुहू	अिब्राहीमु रब्बहू
४	,, ,, ,, ३३	२५१	६०	कतल दावूद जालूत	कतल दावूद जालूतु
५	,, ,, आयतल्कुर्सी ,, ३४	२५५	६२	अल्लाहु ला अिलाह	आल्लाहु लाअिलाह (बिलामद)
६	,, ,, ,, ३६	२६१	६०	वल्लाहु युज़ाअिफ़ु	वल्लाहु युज़ाअफ़ु
७	,, निसा'अि (४) ,, २३	१६५	१६०	मुबश्शिरीन व मुन्ज़िरीन	मुबश्शरीन व मुन्ज़रीन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सं०	सूर:	आयत	पृष्ठ	सही	ग़लत
८	सूर: तौब: (९) ,, १	३	२९४	मिनल्-मुश्रिकीन व रसूलुहू	मिनल्-मुश्रिकीन व रसूलिही
९	,, बनीअिस्राईल (१७) २	१५	४४८	व मा कुन्ना मुअज्जिबीन	व मा कुन्ना मुअज्जबीन
१०	,, त़ाह़ा (२०) ,, ७	१२१	५०८	व असा आदमु रब्बहू	व असा आदम रब्बुहू
११	,, अम्बियाअि (२१) ,, ६	८७	५२४	अिन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन	अन्नी कुन्त मिनज्जालिमीन
१२	,, शुअ़राअि (२६) ,, ११	१९५	५९६	तिलकून मिनल् मुन्जिरीन	तिलकून मिनल् मुन्जरीन
१३	,, फ़ातिरिन् (३५) ,, ४	२८	६९६	यख़्शल्लाह मिन् अिबादि	यख़्शल्लाहु मिन् अिबादि
१४	,, साप़्फ़ाति (३७) ,, २	७२	७१४	फ़ीहिम मुन्जिरीन	फ़ीहिम् मुन्जरीन
१५	,, फ़त्ह़ि (४८) ,, ४	२७	८२२	लक़द् सदक़ल्लाहुं	लक़द् सदअल्लाहु
१६	,, ह़श्रि (५९) ,, ३	२४	८८०	मुसव्विरु	मुसव्वरु
१७	,, ह़ाक़्क़ति (६९) ,, १	३७	९१६	अिल्लल् ख़ातिअून	लिल्लल् ख़ातअून
१८	,, मुज़्ज़म्मिलि (७३) ,. १	१६	९२८	फ़असा फ़िर्औनुर्रसूल	फ़असा फ़िरऔनुर्रसूलु
१९	,, मुर्सलाति (७७) ,, २	४१	९४०	फ़ी जिलालिंव	फ़ी अला लिव्व
२०	,, नाज़िआति (७९),, २	४५	९४६	अिन्नमा अन्त मुन्जिरु	अिन्नमा अन्त मुन्जरु

क़ुरआन मजीद की सूरतों के ख़्वास (लाभ)

अगर कोई यह अक़ीदा रखे कि क़ुरआन मजीद अमलियात और तावीज़ात (तावीज़ गंडे) के लिए नाज़िल (उतरा) हुआ है तो यह जिहालत है और बड़ा गुनाह है क्योंकि क़ुरआन मजीद हक़ीक़त में ख़ुदा के हक़ूक़ जो लोगों पर हैं और लोगों के हक़ूक़ भी जो आपस में एक दूसरे पर हैं और उनके अदा करने या न करने के सबब जो नतीजे दुन्या में और मरने के बाद होने वाले हैं उन सब के बयान (गोष्ठ) के लिए ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। मगर इस के साथ ही बहुत सी आयतों और सूरतों को रसूले करीम (सल्ल०) सहाबा किराम और बुज़ुरगाने दीन अमलीयात के तौर पर मुसीबतों और बलाओं के दुर करने के लिए पढ़ते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी। जो आदमी किसी मतलब के लिए अमल पढ़ता हो और ज़ाहिरी कोशिश तकाज़ा-ए-आलमे अस्बाब (ख़ुदा के हुक्मों) के मुताबिक़ न करता हो तो वह यक़ीनन नाकाम होगा कि उस की मिसाल एक ऐसे मरीज़ (रोगी) की सी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज़ न करता हो बल्कि अमल पढ़ने का यह मतलब होता है कि अमल की वजह से ज़ाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। सब बुज़ुरगाने दीन का तजुर्बा है कि जिस आयत के मज़्मून (विषय) को जिस काम से मुनासिबत (उच्चित) पाई जाए तो वह आयत उस काम के लिए अमल के तौर पर पढ़ी जा सकती है जैसे क़ुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने दुआ की (अनुवाद) 'मूसा अ०' ने (फ़औन की हिदायत की तरफ़ जाते वक़्त) कहा ऐ ख़ुदा मेरे सीने को खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान फ़रमा और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे (ताकि बयान में सफ़ाई हो) और वह लोग मेरी बात को समझे इस आयत को हर शख़्स मुश्किल कामों की आसानी के लिए पढ़ सकता है और अपने ज़ेहन और अक़्ल (बुद्धि) के बढ़ने के लिए पढ़ सकता है। क़ुरआन का अमल करने में तख़सीसे-वक़्त और पढ़ने की तादाद की क़ैद नहीं है बल्कि हर शख़्स को चाहिए कि वह ख़ुद ईशा या सुबह की नमाज़ के बाद या कोई और वक़्त मुक़र्रर (निर्धारित) करके और पढ़ने की तादाद भी अपनी तरफ़ से कायम करके पढ़ा करें। अव्वल और आख़िर में दरूद हो और चीज़ को पाक रखें लेकिन यह बात तजुर्बों से साबित हुई है कि अगर कोई शख़्स क़ुरआन की आयत किसी नाजायज काम के लिए अमल के तौर पर इस्तेमाल में लावें तो वह कामयाब नहीं होगा और पागल हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सूरतों की तर्तीब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी

इस्लाम से पहले अरबों के विभिन्न मज़ाहिब (धर्म) और एतक़ाद (विश्वासों) थे। कुछ उनमें से बुत परस्त, कुछ ख़ुदा परस्त, कुछ ला मज़हब (अधर्मी) और ला साइबी, कुछ यहूदी और ईसाई थे। बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) अरब के क़दीम (प्राचीन) बाशिन्दों (निवासियों) में भी पायी जाती थी। आद, समूद, जदीस, जरहम ओला, अमलीक़ अव्वल आदि बुतों की परसितिश (पूजा) करते थे लेकिन उनके तफ़सीली हालाद (पूरे हालात) ज़माने के कारण हम को मिल नहीं सके। बाक़ी रहे अरब आरिबह और अरब मुस्तआरिबह, उनके बुत दो प्रकार के थे। एक मलाइक और अरवाह जो ग़ैर महसूस (अस्पर्श) ताक़तों से ताल्लुक़ रखते थे और दूसरी क़िस्म उन बुज़ुर्गों (पूर्वजों) की शक्ल के बुत तैयार किए गए थे जिन्होंने अपनी हयात (जीवन) के ज़मानों में नेक कामों से शोहरत (ख्याति) हासिल कर ली थी। यह गिरोह बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) के बावजूद उनको माअबूदे मतलक़ (वास्तविक उपास्य) न मानता था, बल्कि उनका एतक़ाद (विश्वास) यह था कि सांसारिक अधिकार उन बुज़ुर्गों (पूर्वजों) की रूहानी (आध्यात्मिक) ताक़तों को, जिनके ये बुत यादगार के तौर पर हमारे आगे मौजूद हैं, इस तरह से हासिल हैं कि वे हमारी हर हाजत (मुराद) व दरख़ास्त की ख़ुदा के यहां सिफ़ारिश कर सकते हैं और आख़िरत की निस्बत (बारे में) उनका यह ख्याल (विचार) था कि उनकी रूहानी ताक़तें (आध्यात्मिक शक्ति) ख़ुदा से उनके गुनाहों की माफ़ी कराएंगी। वे बुत जिनकी तमाम अरब परसितिश (पूजा) कर रहा था उनकी तफ़सील (विवरण) यह है।

१—हुबुल, २—वद, ३—सुवाअ, ४—यग़ूस, ५—यऊक़, ६—नसर, ७—उज़्ज़ा, ८—लात, ९—मनात।

ये ख़ास (मुख्य) क़बीलों के बुत थे। इन ९ बुतों की परसितिश (पूजा) तमाम अरब करता था। १०—दवार, ११—असाफ़, यह कोहे सफ़ा (सफ़ा नामक पहाड़) पर था। १२—नाइला, कोहे मरवह (मरवह पहाड़) पर था इन दो बुतों पर क़ुर्बानियां (बलि) की जाती थीं। १३—अवाअब, इस पर ऊंटों की क़ुर्बानी (बलि) की जाती थी। १४—काबे के अन्दर हज़रत इब्राहीम की तस्वीर थी और उनके हाथ में इस्तख़ारह (एक प्रकार का अमल) के तीर थे जो इज़लाम कहलाते थे और एक भेड़ का बच्चा उनके क़रीब (निकट) खड़ा था। हज़रत इस्माईल की मूरत (मूर्ति) ख़ाना काबा में रखी हुई थी।

१५—हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भी तस्वीरें और मूरतें (मूर्तियां) ख़ाना काबा में मौजूद थीं। वद, यग़ूस, यऊक़ और नसर अय्यामे जाहिलियत (अज्ञानता का दौर) अरब से बहुत पहले, बल्कि हज़रत नूह अलैहि० के पैदा होने से भी पूर्व उन बुज़ुर्गों (पूर्वजों) में से थे जो नेक कामों और ख़ुदा परस्ती (ईश्वर वादिता) में कामिल (पूर्ण) थे और जिनकी तस्वीरें पत्थरों पर मुनक़्क़श (अंकित) करके यादगार के लिए काबे के अन्दर रख दी थीं और इनको रुतबए माअबूदियत (पूज्य होने का दर्जा) देकर उनकी पूजा करने लगे। ख़ुदा परस्ती (ईश्वर भक्ति) भी किसी क़दर अरब जाहिलियत (अज्ञानता) में थी और यह दो तरह की थी। एक ग़ैर मालूम (अज्ञान) और पोशीदा (छिपी) क़ुदरत (ताक़त) को, जिसको वे अपने वजूद का ख़ालिक़ (रचियता) क़रार देते और मानते थे लेकिन शेष विचार उनके ला मज़हबी (अधर्मी) की ओर अधिक आकृष्ट थे। दूसरा गिरोह ख़ुदा को बरहक़ (सत्य) जानता था। क़ियामत, नजात, हश्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(हिसाब किताब का मैदान) बक़ाए रूह (रूह का जीवन) और उस के जज़ा व सज़ा (इनाम व अज़ाब) का क़ायल था। ला मज़हबी (अधर्मियों) का भी एक तरह का शोर व चर्चा अरब में पाया जाता था जो न बुतों को पूजते थे और न किसी किताब और इलहामी (आसमानी) मज़हब (धर्म) के मानने वाले थे। वे ख़ुदा और प्रलय के इन्कारी थे इसी वजह से इनाम व अजाब को भी न मानते थे। वे दुनिया को सदैव रहने वाली मानते थे। साईबी धर्म वाले यह अक़ीदा (विश्दास) रखते थे कि हमारा धर्म इलहामी (आसमानी) है और हम हज़रत शीश अलैहि० और इदरीस अलैहि० के पैरो (अनुयायी) हैं उन के यहां सात समय की नमाज़ और एक क़मरी (चांद) महीने का रोज़ा था ये जनाज़ें की नमाज़ पढ़ते थे। इन हालात से पता चलता है कि शायद उनका दावा सही हो। लेकिन यह ऐब (खराबी) उनमें आ गया था कि सबअ सय्यारे (तारे) की पूजा करते थे इसी के साथ ख़ाना काबा की बड़ी इज़्ज़त (आदर, सम्मान) करते थे। यहूदी धर्म अरब में ३५वीं शताब्दी हबूते आदम अलैहि० (पांचवी शतब्दी पूर्व मसीह के अनुसार) बख़्त नसर का हंगामा (जंग) हुआ। इसके कुछ दिनों बाद यहूदियों को इत्मीनान (सन्तोष) प्राप्त हुआ तो उन्होंने अपने धर्म को फैलाना शुरू कर दिया यहां तक कि धीरे धीरे ४०२६ हबूते आदम अलैहि० ३५४ पूर्व मसीह के अनुसार में ज़ूनिवास हमीरी बादशाहे यमन यहूदी हो गया और इससे यहूदियत को अरब में बड़ी तरक़्क़ी मिली। हबूते आदम अ० की तारीख़ न तो किसी पैग़म्बर ने बताई है और न ही ख़ुदा नें, अलबत्ता तौरात के आलिमों (विद्वानों) ने अपने अन्दाज़े से तौरात की ज़मीमों (परिशिष्ठों) और तफ़सीरों (टीकाओं) में इस को लिखा है। तीसरी सदी ईसवीं में ईसाई धर्म अरब में दाख़िल हुआ। जबकि पूर्वी कलीसा में खराबियां और बिदअतें (नई बातें) धीरे-धीरे रिवाज पा गयी थीं। आम मुअर्रिख़ीन (इतिहासकार) कहते हैं कि यह ज़माना ज़ूनिवास का था : इस धर्म का शेवा अधिक नजरान में हुआ और अरब में उस ने कुछ ज़्यादा रिवाज नहीं पाया। इनके अलावा बनू तमीम मजूसी और अधिकांश क़ुरैश जिन्दक़ा (गुमराह, भटके हुए) थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पैदाइश से पहले अरब में अधिकता से काहिन और नजूमी (ज्योतिषि) लोग थे और उन्होंने यह मशहूर (प्रसिद्ध) कर दिया था कि अनक़रीब (निकट ही) अरब में एक पैग़म्बर पैदा होने वाले हैं जिनके दीन का ग़लबा (प्रभाव) तमाम धर्मों पर होगा।

विलादत (पैदाइश)

आप (सल्ल०) के वालिद का नाम अब्दुल्लाह था। अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब के इन्तक़ाल (मृत्यु) के बाद बारहवीं रबीउल अव्वल को आमुल फ़ील (उस समय का सन) के पहले साल (अर्थात अबरह की चढ़ाई के ५५ दिन बाद) ४० जुलूसे किसराए नोशीरवां और ५७० ईसवीं में नबी सल्ल० पैदा हुए। अब्दुल मुत्तलिब ने आप की परवरिश (लालन पालन) की। क़बीला साअद में आपका ज़मानए रज़ाअत (दूध पीने का ज़माना) पूरा हुआ। हज़रत हलीमा रज़ि० ने दूध पिलाया और जब नबी सल्ल० चार साल के हुए और अपने रज़ाई भाइयों (दूध शरीक भाइयों) के साथ बकरियां चराने को गए थे तो फ़रिश्तों ने आकर आपका शिकम (सीना-ए-मुबारक) चाक करके क़ल्ब (दिल) को निकाला और उस से एक सियाह नुक़्ता (काला बिन्दु) अलग करके दिल को और आन्तों को धोया। जिस समय इस वाक़िए (घटना) की सूचना हलीमा को हुई तो वे इस डर से कि ख़ुदा जाने कोई और घटना पेश न आ जाए, आप को आप की वालिदा (मां) बीबी आमना के पास लायीं और इस घटना से आपको सूचित किया। बीबी आमना ने कहा कि तुम इन को ले जाओ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहां की आब व हवा (जलवायु) स्वभाव के अनुसार न होगी। मैं इस घटना से हरासां (आतंकित) नहीं हुई। अल्लाह ने उनको बहुत सी करामतें प्रदान फ़रमायी हैं। जब आपकी उम्र ६ साल की हुई तो बीबी आमना आपको मदीना अपने संबंधियों से मिलाने ले गयीं। वहां अबवा के स्थान पर बीबी आमना का इन्तक़ाल हो गया। इस तरह आप वालिद वालिदा दोनों की ओर से छोटी उम्र ही में यतीम हो गए और जब आठ साल के हुए तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने वफ़ात पायी। उस समय आपके दादा ने आपको परवरिश (पालने) के उद्देश्य से अपने लड़के अबू तालिब के सुपुर्द किया। अबू तालिब मुहब्बते पिदरी (पिता की मुहब्बत) से आपके साथ पेश आए। दूध पीने के दौर में और बचपन के दौर में आपकी अजीब हालत थी। अज्ञानत के तौर तरीक़ों से आप बिल्कुल बेज़ार (निराश) थे। लड़कों में नहीं खेलते थे। अल्लाह ने आपको तमाम आदाते खबीसा (बुरी आदतों) से अपनी पनाह में रखा। जब आपने तेरहवीं साल में क़दम रखा तो अबू तालिब के साथ शाम (सीरिया) की ओर सफ़र किया। बुसरा के स्थान पर बुहीरा राहिब के झोंपड़े के पास होकर गुज़रे बुहीरा राहिब ने आपके अन्दर आसारे नुबूवत (नुबूवत की निशानियां) को देख कर अपनी क़ौम को बुलाया और आपकी नुबूवत से उनको सूचित किया। फिर दोबारा आप (सल्ल०) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा (रज़ि०) की तिजारत का सामान लेकर उनके ग़ुलाम मैसरह के साथ शाम (सीरिया) गए। नसतुरा राहिब के पास से जिस समय आपका गुज़र हुआ, उसने आप सल्ल० में शाने नुबूवत (नुबूवत की शान) देखकर मैसरह को आपके हालात से सूचित किया। उसने वापसी के बाद हज़रत ख़दीजा को पूरे हालात से आगाह किया। हज़रत ख़दीजा ने आपसे विवाह करने का इरादा किया और अबू तालिब ने आपका निकाह ख़दीजा से कर दिया। नबी सल्ल० की उम्र शरीफ़ इस समय २५ साल थी। जब आप ३५ वर्ष के हुए तो क़ुरैश ने काबे को गिराकर दोबारा बनाना शुरू किया। जिस समय हजरे असवद (वह काला पत्थर जो काबे में लगा है) के रखने का अवसर आया तो आपस में सब लड़ने लगे। हर आदमी यह चाहता था कि हजरे असवद (काले पत्थर) को मैं अपने हाथ से रखूं। फिर कुछ सोच कर क़ुरैश एक होकर मश्विरा करने लगे। अबू उमय्या ने कहा कि बेहतर होगा कि पहले जो आदमी मस्जिद (काबे) में दाख़िल होगा उसे तुम लोग अपना हाकिम (जज) बनाओ। क़ुरैश इस बात पर राज़ी हो गए। इसी बीच नबी सल्ल० वहां आ गए। लोगों ने कहा कि यह अमीन (ईमानदार) है यह फ़ैसला करेंगे। आपने एक कपड़े में हजरे असवद (काले (पत्थर) को रख कर क़ुरैश से कहा, कि इस कपड़े के किनारों को पकड़ लो। किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) न होगी और न कोई झगड़ा बाक़ी रह जाएगा। अतएव क़ुरैश ने आपके कहने से कपड़े के किनारे पकड़ लिए। जिस समय हजरे अस्वद अपने मक़ाम (स्थान) के निकट पहुंचा, आपने अपने हाथ से लेकर उसको उसकी जगह पर रख दिया। इसके बाद नबी सल्ल० तहारत (पाकी) और इबादत अत्यन्त दृढ़ता से कोशिश फ़रमाने लगे। आपकी ज़ात पाक में एक आला दर्जे (उच्च दर्जे) का अख्लाक़ (आचरण) और सब्र व फ़साहत (धैर्य व शालीनता) थी। जवानी में ही आपको इबादत का शौक़ था। हज़रत ख़दीजा रज़ि० से कई कई दिन का खाना तैयार कराके अपने साथ ले जाया करते थे। पहाड़ों में ग़ारे हिरा (एक खोह का नाम) आदि में आप रात दिन कई कई दिनों तक मसरूफ़े इबादत (इबादत में लीन) रहते थे और आपको लोग अमीन (अमानतदार) कहा करते थे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नुबूवत

वह्य के उतरने से पूर्व नबी सल्ल० ने रोया-ए-सालिहात (सच्चे सपने) देखना शुरू किए। काहिनो (नजूमियों) और आसमानी किताबों के विद्वानों ने आपकी शान व नुबूवत के चर्चे व ज़िक्र करना शुरू कर दिए और नबी सल्ल० इबादत के ख़्याल से तन्हाई व ख़िलवत (अकेले) में ज़्यादा से ज़्यादा रहना पसन्द फ़रमाने लगे। अक्सर ग़ारे हिरा में तशरीफ़ ले जाते और वहीं दो-दो चार-चार रातें लगातार इबादते इलाही (अल्लाह की इबादत) में लगे रहते यहां तक कि आपकी पैदाइश के चालीसवें साल आप पर वह्य नाज़िल हुई। पहले फ़रिश्ता आदमी के रूप में आता था और आपसे बातें करता था और कभी आप पर इलक़ा (आप से आप वह्य का आना) हुआ करता था और किसी समय चादर या कोई और चीज़ लपेट कर लेट जाते थे और वह्य घंटी की आवाज़ की तरह नाज़िल होती थी। इस पिछली सूरत में आपको बहुत तक्लीफ़ होती थी जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है 'वहु-अ अ-शदू अला' (और वह मुझ पर अधिक सख़्त है) सख़्त जाड़े में आप पसीने पसीने हो जाते, मतलब यह कि जो वह्य आरम्भ में आप पर ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई वह यह थी—'इक़रा बिस्मि-रब्बिकल लज़ी ख़लक़० ख़लक़ल इन्सा-न मिन अ़लक़० इक़रा व रब्बिकल अक्रमुल्लज़ी अल्ल-म बिल क़लम, अल्लमल इन्साना मालम याअ़लम०'

बीबी ख़दीजा रज़ि० ने आप की बातों की तस्दीक़ (मान लेना) की और आप पर ईमान लायीं। इसके बाद नबी सल्ल० पर नमाज़ फ़र्ज़ (अनिवार्य) की गयी। हज़रत जिब्रील अलैहि० आए और वुज़ू करके पूरे अरकाने नमाज़ व तरकीब आपको नमाज़ पढ़ कर दिखायी। उसके बाद मेअ़राज की रात में आप मक्का से बैतुल मक़्दिस और फिर वहां से सातों आसमान और सदरतुल मुनतहा पर तशरीफ़ ले गए—'फ़ अवहा इला अवदहू मा अवहा'।

अर्थात—अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य भेजी। जो वह्य भेजी उसका ज़िक्र (मेअराज का) पन्द्रहवें पारे के शुरू में है।

See P. 33

कुरैश में इस्लाम की दावत

नबी सल्ल० ने अबू तालिब को इस्लाम की दावत दी। अबू तालिब ने कहा, मैं अपना और अपने बाप-दादा का दीन (धर्म) नहीं छोड़ सकता, अलबत्ता तुम्हारी वजह से यह होगा कि मैं तुम्हारा विरोध न करूंगा, उलमा-ए-सीर (पवित्र जीवनी लिखने वाले विद्वान) लिखते हैं कि सबसे पहले ख़दीजा रज़ि० ईमान लायीं। इसके बाद अबू बक्र व अली (रज़ि०) और ज़ैद बिन हारसा व बिलाल रज़ि०, फिर उमर बिन अम्बसा सलमा रज़ि० व ख़ालिद बिन सईद रज़ि० मुसलमान हुए। इन बुज़ुर्गों के बाद कुरैश के एक गिरोह ने इस्लाम को स्वीकार किया जिन को अल्लाह ने नबी सल्ल० की मुसाह-बत (निकटता) के लिये पूरी क़ौम में से बरगुज़ीदा (अहम माना) किया और इनमें से अधिकांश प्रसिद्ध व जन्नती हुए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० चूंकि रक़ीक़ुल कल्ब (नर्म दिल) महबूबे ख़लाइक़ (लोगों के प्रिय) नर्म स्वभाव और तिजारत करने वाले थे। लोगों की मदद करने का मादा (भावना) उनमें अधिक था। क़ुरैश आपसे ज़्यादा मानूस (मिले जुले) थे इस वजह से आपके हाथ पर बनू उमय्या में ही उस्मान बिन अफ़्फ़ाक, तलहा, साअ़द बिन अबी व क़ास और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ईमान लाए। इसके बाद अबू उबैदह रज़ि०, आमिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि०, अबू सलमा अब्दुल असद रज़ि०, सईद बिन ज़ैद रज़ि०, सईद की बीवी फ़ातिमा रज़ि०, (हज़रत उमर रज़ि० की बहन) सईद रज़ि० के बाप ज़ैद बिन अमरू रज़ि० इस्लाम में दाख़िल हुए। यह ज़ैद बिन अमरू वही हैं जिन्हों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ने अज्ञानता में बुतपरस्ती छोड़ दी थी। फिर उमैर रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० मुसलमान हुए। अब्दुल्लाह बिन मसऊद उक़्बा बिन मुईत की बकरियां चराते थे। एक दिन नबी सल्ल० उनकी बकरियों के गल्ले की ओर से होकर गुज़रे और उन की इजाज़त से बकरी का दूध आपने दोहा जिसका दूध बन्द हो गया था। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० यह मुअज्जिज़ह (चमत्कार) देख कर हैरान हो गए और उसी समय ईमान ले आए। इन के बाद जाफ़र बिन अबी तालिब और उन की बीवी और साइब बिन उस्मान रज़ि० और आमिर बिन फ़हीरह रज़ि०, उम्मार बिन यासिर और सुहैब (रज़ि०) इस्लाम लाए।

इस्लाम की दावत

इन बुज़ुर्गों के इस्लाम लाने से मुसलमानों की एक छोटी सी जमाअत हो गई जिसमें जवान लड़के, बूढ़े, औरतें सभी शामिल थे। लेकिन मुश्रिकों (अधर्मियों) के भय से जंगलों और पहाड़ों में चले जाते थे और वहीं नमाज़ें पढ़ते थे। क़ुरैश का कोई ऐसा जलसा न होता था जिसमें इस्लाम का और उनके इस्लाम लाने का उल्लेख न होता। वह्य के आने के तीसरे साल नबी सल्ल० को दावत देने का हुक्म हुआ। चुनांचे आप सफ़ा पहाड़ पर चढ़ गए और क़ुरैश को बुला कर उनसे मुख़ातिब (सम्बोधित) हो कर फ़रमाया—

"यदि मैं तुमको ख़बर दूं कि दुश्मन तुम पर सुबह को आएगा या शाम को, तो क्या तुम लोग मुझे सच्चा मानोगे? क़ुरैश ने कहा, हां। तब नबी सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम को डराता हूं आगे के सख़्त अज़ाब से। ख़ुदा के इन हुक्मों पर ईमान लाओ जो मेरे पास आए हैं। क़ुरैश इस कलाम को सुन कर अलग हो गए।"

फिर आपने आम हिदायत शुरू की। जब क़ुरैश ने देखा कि उनके बुतों की बुराइयां की जाती हैं और उनके पूजने पर रोक टोक की जाती है तो उनको बुरा लगा, वे सब के सब एक मकान में जमा हो कर नबी सल्ल० की दुश्मनी पर तैयार हो गए। अबू तालिब ने उनकी इस राए का विरोध किया और उनको इस काम से रोकने लगे, वे नबी सल्ल० की हिमायत पर तैयार हो गए। क़ुरैश अबू तालिब के विरोध से मजबूर हो कर न्याय कराने के लिए अबू तालिब के पास आए और अबू तालिब से नबी सल्ल० की ओर से तकलीफ़ पहुंचाने के बारे में बहस की और इस बात की इच्छा प्रकट की कि नबी सल्ल० को उनके यहां बुला कर इस नए काम से रोकें। चुनांचे नबी सल्ल० उनके बुलाने पर इस सभा में तशरीफ़ लाए। क़ुरैश ने अपने तर्क पेश किए। और यह कहा कि यदि आपको दौलत की ज़रूरत हो तो आप की इच्छा से ज़्यादा चन्दा जमा करके दे दें और यदि जवान सुन्दर औरत की ज़रूरत हो तो वह भी इसके साथ, और यदि इसके बावजूद फिर भी आप न मानें तो मुमकिन (सम्भव) है कि ख़ून-रेज़ी (रक्तपात) होगी और आपकी जान जाती रहेगी क्योंकि यह सारी कौम और मज़हब (धर्म) का मामला है।

तब जवाब में नबी सल्ल० ने क़ुरआन मजीद की कुछ आयत पढ़ कर इशारा फ़रमाया—

"ऐ चचा! मैं अपने इस काम को न छोड़ूंगा यहां तक कि अल्लाह उसको ज़ाहिर (स्पष्ट) करे या कि मैं स्वयं इसमें हलाक (ख़त्म) हो जाऊं।"

अबू तालिब यह सुन कर शान्त रहे, क़ुरैश की सभा ख़त्म हो गई। उस समय फिर आपने अबू तालिब से मुख़ातिब (सम्बोधित) होकर इस्लाम की दावत दी। अबू तालिब ने कहा, जो तुम्हारे दिल में है करो, लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं कभी ईमान न लाऊंगा और न अपने बाप दादा के दीन को छोड़ूंगा। यह बात मुझ से न होगी कि नमाज़ के समय मेरे चूतड़ मेरे सर से ऊंचा हो जाएं (अर्थात सज्दे में)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हब्शा की ओर हिजरत

जब क़ुरैश ने देखा कि नबी सल्ल० इस्लाम की दावत से बाज़ नहीं आते और मुसलमानों की जमाअत बढ़ती जाती है तो बनी हाशिम और बनू मुत्तलिब और कुल क़ुरैश ने जमा होकर नबी सल्ल० और सब मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने का अरद (वचन) किया। प्रत्यक्ष में इस वचन में बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब पेशवा (अगुवा) थे। लेकिन असल में अरब का हर क़बीला जो उस समय मक्का और उसके निकट में था इस अह्द व इक़रार में शामिल था। जहां ये लोग ग़रीब मुसलमानों को पाते, पत्थरों से मारते, तरह-तरह की तक्लीफ़ें देते थे, नमाज़ की हालत में ऊंटों, बकरियों की आंतें, गन्दगी ला-लाकर नमाज़ियों पर डालते थे। जब यह तक्लीफ़ों का सिलसिला सीमा पार कर गया तो आपने मुसलमानों को हब्शा की ओर हिजरत का हुक्म दिया। हब्शा के बादशाह और क़ुरैश के बीच तिजारत का सन्धिनामा था। वे प्रायः हब्शा के बादशाह की प्रशंसा किया करते थे। बहरहाल सबसे पहले हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० और उनकी पत्नी रुक़ैया बिन्त नबी सल्ल०, अबू हुज़ैफ़ा और उनकी पत्नी, ज़ुबैर बिन अवाम, मुसअब बिन उमैर, अबू सब्रह अब्दुल्लाह बिन मसऊद आमिर और उनकी पत्नी लैला और सुहैल रज़ि० इन बुज़ुर्गों ने हब्शा की ओर हिजरत फ़रमायी। इनके बाद फिर यके बाद दीगरे (एक के बाद एक) मुसलमानों ने हब्शा की ओर हिजरत करना शुरू कर दिया। इन्हीं लोगों के साथ जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० भी हिजरत कर गए, यहां तक कि हब्शा में मुहाजिरीन (हिजरत करने वालों) की तायदाद (संख्या) तीन सौ तक पहुंच गयी मुहाजिरीने अव्वल (प्रथम हिजरत करने वाले) का मुश्रिकीने मक्का (मक्का वालों) ने दूर तक पीछा किया, लेकिन नाकाम वापस आए। क़ुरैश ने जब यह देखा कि नबी सल्ल० की तक्लीफ़ व परेशानी में आपके कुछ रिश्तेदार रुकावट बनते हैं और विरोध करते हैं तो उन्होंने यह शेवा (रास्ता) अख़्तियार (अपनाया) किया कि जो मक्का में आता था उससे नबी सल्ल० की साहिरी, (जादूगरी) मजनूनियत (पागलपन) और कहावत (ज्योतिष) का ज़िक्र करते थे और आपके पास उसको आने से रोकते थे। इन लोगों का यह काम था कि ये लोग नबी सल्ल० और उन लोगों से जो ईमान ला चुके थे मसखरापन (मज़ाक उड़ाते) करते और तक्लीफ़ देते थे।

तायफ़ में इस्लाम की दावत

अल ग़रज़ (फल स्वरूप) हज़रत ख़दीजा रज़ि० के इन्तक़ाल (देहान्त) और अबू तालिब के इंतक़ाल के बाद मुश्रिकीने मक्का नबी सल्ल० के साथ हर समय इस्तहज़ा (मसखरा) और तक्लीफ़ देने पर तैयार रहते। एक दिन आप इस्लाम की दावत देने के उद्देश्य से तायफ़ की ओर तशरीफ़ ले गए और वहां के सरदारों अब्द या लैल बिन उमर और मसऊद व हबीब के पास बैठकर उनको इस्लाम लाने और इस्लाम की मदद करने की इस्तदा (प्रार्थना) की। इन तीनों ने अत्यन्त सख़्ती से आपको जवाब दिया। तो जब नबी सल्ल० इनके इस्लाम लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए तो उनको इस हाल के छुपाने के लिए इर्शाद फ़रमाया। लेकिन उन लोगों ने आपका कहा न माना। अराज़ल (क्रूर और बुरे) और छोटे-छोटे लड़कों को आपके पीछे लगा दिय।

उन लड़कों ने आपके पीछे तालियां बजानी शुरू कीं और ढेले मारने लगे, यहां तक कि आप एक बाग़ की दीवार की छाया में बैठ गए, और लड़के लोग लौट गए। जब आप को उन के शोर व ग़ुल से सुकून हासिल हो गया तो रात को खजूर के एक बाग़ में ठहर गए। आधी रात को जब आप (सल्ल०)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए तो कुछ जिन्न इस तरफ़ से होकर गुज़रे और उन्होंने इस मक़ाम (स्थान) पर ठहर कर क़ुरआन को सुना। इसके बाद नबी सल्ल० मक्का में दाखिल हुए।

मक्का वाले बदस्तूर (उसी तरह) आपकी अदावत (दुश्मनी) पर तुले हुए थे। क़ुरैश के रईसों में से किसी ने आपको अपनी हमसायगी (शरण) में न लिया। आखिरकार मुतअिम बिन अदी के जुवार (मकान) में आप ठहरे। तुफ़ैल बिन अमरू आपकी सेवा में हाज़िर हुए और ईमान लाए। अपनी क़ौम को इस्लाम की तरफ़ बुलाया, कुछ उनमें से ईमान लाए। नबी सल्ल० ने उनके लिए दुआ फ़रमायी। इब्ने हज़्म का बयान है कि इसके बाद मेअराज की घटना पेश आयी। पहले आप मक्का से बैतुलमुक़द्दस तशरीफ़ ले गए, फिर वहां से आसमानों पर गए और अम्बियाए किराम (नबियों) से मुलाक़ात की। जन्नत और सदरतुल मुन्तहा को सातवें आसमान पर देखा।

हज के मौसम में इस्लाम की दावत

जब नबी सल्ल० मुश्रिकीने मक्का के ईमान लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए और हज के मौसम में जो लोग इतराफ़) इधर-उधर) से आते थे उनके फरूद गाह (ठिकानों) पर तशरीफ़ ले जाते थे और उनको इस्लाम की दावत देते थे, क़ुरआन पढ़कर उनको सुनाते। इस्लाम की नुसरत (मदद) के लिए उनसे कहते, तो क़ुरैश इन मामलों में भी मुज़ाहमत (हस्तक्षेप व रुकावट) करते और आपकी मुज़म्मत (निंदा) करते फिरते थे। अबू लहब को इस काम में एक ख़ास दिलचस्पी थी। वह अपने सारे कामों को छोड़ कर आपके पीछे पड़ गया था। जिन लोगों को आप हज के मौसम में इस्लाम की दावत देते थे, कुछ उनमें से सुन कर सहूलियत (आसानी) से जवाब देते थे और कुछ एतराज़ (विरोध) करते और कुछ बतरीक़ तमुस्ख़ुर (मज़ाक़ उड़ाते हुए) यह कहते थे कि "हम इस शर्त पर ईमान लाएंगे कि तुम हमको मुल्क व हुकूमत दिलाओ।"

नबी सल्ल० यह सुन कर इर्शाद फ़रमाते थे कि यह काम अल्लाह का है, मैं इस का वायदा नहीं कर सकता। इसके बाद नबी सल्ल० सुवेद बिन अस्सामत के पास तशरीफ़ ले गए और उसको इस्लाम की दावत दी। सुवेद बिन सामत ने न तो इस्लाम स्वीकार किया और न सख़्ती से जवाब दिया। जब यह मदीना से वापस आया तो किसी लड़ाई में मारा गया। यह वाक़िआ (घटना) यौमे बआस (एक इतिहासिक घटना) के पहले का है। इसके बाद मक्का में अबुल हैसर अनस अपनी क़ौम बनू अब्दुल अशहल के एक गिरोह को लिए हुए क़ुरैश से ख़जरज वालों से मुक़ाबले के लिए हलफ़ (शपथ) लेने आया। नबी सल्ल० इस गिरोह के पास भी इस्लाम की दावत को तशरीफ़ लाए। इस गिरोह में से एक नवजवान ने जिसका नाम अयास बिन मआज़ था अपनी क़ौम से मुख़ातिब (संबोधित) होकर कहा, 'वल्लाह (क़सम ख़ुदा की) हम जिस काम के लिए आए हैं उससे यह अच्छा है।' अबुल हैसर ने यह सुन कर अयास को एक डांट दिलायी। अयास ख़ामोश हो गया और ये सब बे नील व मराम (बिना सफल हुए) मदीना को वापस आए। थोड़े दिनों बाद अयास का इन्तक़ाल हो गया। उलेमा-ए-सैर (सीरत लिखने वाले विद्वान) कहते हैं कि अयास बिन मआज़ ने इस्लाम पर इन्तक़ाल किया।

मदीना को हिजरत

जब मदीने में इस्लाम का ज़्यादा ज़ोर हो गया और मदीने वालों के मुसलमान हो जाने से मुसलमानों को एक शक्ति मिल गयी तो मक्का के मुश्रिक इस घटना से बहुत बरहम (क्रोधित) हुए और

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन्होंने मुसलमानों के सताने का अहद (प्रतिज्ञा) कर लिया। इससे मुसलमानों की तक्लीफ़ बढ़ गयी। उस समय जो सबसे पहले जिहाद (अल्लाह के दीन के लिए लड़ना) की आयत अल्लाह ने नाज़िल फ़रमायी, उसका अनुवाद यह है—

"और लड़ाई करो तुम उनसे ताकि न रहे शिर्क और हो कुल दीन अल्लाह का।"

इसके बाद नबी सल्ल० ने अल्लाह के हुक्म से अपने असहाब (साथियों) को मक्का से मदीना हिजरत कर जाने का इर्शाद फ़रमाया। सबसे पहले अबू सलमा रज़ि० मक्का से हिजरत कर गए। इनके बाद आमिर रज़ि० फिर कुल बनू जहश, उनके बाद अकशह बिन मुहसिन रज़ि० और एक गिरोह बनू असअद, जिनमें ज़ैनब बिन्त जहश रज़ि० उम्मुल मोमिनीन भी थीं और उनकी दोनों बहनें, हमनह और उम्मे हबीबा रज़ि० ने हिजरत की, इसके बाद उमर बिन ख़त्ताब व अयाश बिन अबी रबीनियह रज़ि० बीस सवारों के साथ मदीना को हिजरत कर गए। उमर बिन ख़त्ताब रोज़े रोशन (दिन दहाड़े) तमाम क़ुरैश के सामने मक्का से निकले और पुकार के कहा कि 'जिस किसी को अपनी पत्नी रांड (विधवा) करानी और अपने बच्चे यतीम कराने मंजूर हों तो वह उस पहाड़ के पीछे मुझसे मिले। मगर किसी को हिम्मत न हुई। फिर ज़ैद, सईद, ख़नीस (रज़ि०) और एक गिरोह बनू अदी हिजरत कर गए।

ये सब क़बा में रफ़ाअह बिन अब्दुल मुन्ज़र रज़ि० के मकान पर ठहरे। इनके बाद तलहा रज़ि०, सुहैब रज़ि०, हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०, ज़ैद बिन हारसह रज़ि० सहित और अबू मुरसिद ने हिजरत की और क़बा में ठहरे। फिर उस्मान एक जमाअत सहित हिजरत कर गए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने हिजरत की तैयारी की तो नबी सल्ल० ने रोका कि तुम्हारे हिजरत करने का हुक्म मेरे साथ हो गया है, इस लिए मेरा इन्तज़ार (प्रतिक्षा) करो।

धीरे-धीरे मक्का से सभी सहाबा मदीना में चले आए थे। नबी सल्ल० के पास मक्का में सिवाए अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० के और कोई बाक़ी न रहा था। नबी सल्ल० ख़ुदा के हुक्म का इन्तज़ार (प्रतिक्षा) कर रहे थे।

see P. 28

क़ुरैश का मश्विरा (परामर्श)

जब क़ुरैश ने इन बुज़ुर्गों के हिजरत कर जाने और मदीना वालों के इस्लाम लाने से यह समझ लिया कि ये लोग धीरे-धीरे सभी मदीना में चले गये और हस्बे ख़्वाहिश (इच्छानुसार) इनके पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० भी चले जाएंगे। तब क़ुरैश आपके बारे में मश्विरा करने के उद्देश्य से दारुल नदवा में जमा हुए। क़ुरैश के सब बड़े-बड़े आदमी भी मश्विरे में शरीक थे और इनके सिवा दूसरे क़बीलों के आदमी भी शरीक थे। इस जलसे (सभा) में बहुत कुछ बातें पेश हुईं। कुछ कहते थे कि मुहम्मद (सल्ल०) को क़ैद कर दो, कुछ कहते थे जला वतन (देश निकाला) कर दो। अबू जहल ने कहा कि क़बीलों से एक-एक आदमी इन्तख़ाब (चुनकर) करके क़त्ल कर दो। इस सूरत में। किसी ख़ास क़बीले पर क़त्ल का जुर्म न आएगा और न बनू अब्दे मनाफ़ इन सभों से लड़ सकेंगे, केवल ख़ून बहा (ख़ून का बदला अदा कर)दिया जाएगा। सभा में शरीक सभी लोगों ने इस राय को पसन्द किया और रात ही से इस पर अमल करने को तैयार हो गए।

नबी सल्ल० का मकान घेर लिया। अल्लाह ने वह्य द्वारा नबी सल्ल० को सूचित कर दिया। चुनांचे (अतएव) हज़रत अली रज़ि० को अपनी ख़्वाबगाह (सोने के कमरे) में सुला कर मकान के बाहर आए। अल्लाह ने उनकी आंखों पर उस समय पर्दे डाल दिए। नबी सल्ल० ने एक मुश्त (मुट्ठी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भर) खाक (मिट्टी) पर सूर: यासीन पहली आयतें 'फ़हुम ला युबसिरून' तक पढ़ कर उनकी तरफ़ फेंक दिया और आप अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० सहित मकान से बाहर तशरीफ़ लाए। अब्दुल्लाह बिन अरीक़त को उजरत (मज़दूरी) देकर रहबर (गाइड) मुक़र्रर (नियुक्त) किया। उसने यह कह दिया कि आम रास्ते को छोड़ कर ग़ैर माअरुफ़ (जो प्रसिद्ध न हो) रास्ते से मदीना ले जाए। अगरचे (यद्यपि) अब्दुल्लाह बिन अरीक़त काफ़िर था लेकिन इन दोनों बुज़ुर्गों ने उस पर एतमाद (भरोसा) कर लिया था।

ग़ारे सूर

नबी करीम सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० मकान से निकल कर रात ही को एक ग़ार (खोह) में जो जब्ले सूर (सूर नामक पहाड़) में था छिप गए। अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र प्रतिदिन ग़ार पर आते और मक्का वालों की बातों से सूचित कर जाते थे और आमिर बिन फ़हीरह रज़ि० (अबू बक्र का सेवक) उन बकरियों को अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र के पीछे-पीछे पांव के निशान मिटाने के लिए चराते हुए लाते और रात को वहीं रह जाते थे इस वजह से कि ज़रूरत भर दूध आदि आपको दे दिया जाए और असमा बिन्त अबू बक्र रोज़ाना मक्का से खाना लाकर खिला जाती थीं।

तमाम सावधानियों को पकड़े रहने के बावजूद क़ुरैश भी ढूंढ़ते हुए ग़ार तक पहुंच गए। चूंकि घने ग़ार (ग़ार के मुंह) पर मकड़ियों ने रात को जाला लगा रखा था। क़ुरैश ने यह सोचा कि यदि कोई अन्दर जाता तो जाला टूट जाता। इस वजह से मुतमईन (सन्तुष्ट) होकर वापस आए और सौ ऊंटों के इनाम का नबी सल्ल० और अबू बक्र रज़ि० की गिरफ़्तारी पर एलान (घोषणा) कर दिया।

जब ग़ार में तीन दिन नबी सल्ल० व अबू बक्र रज़ि० को गुज़र गए और क़ुरैश का तलाश का अभियान कम हो गया तब अब्दुल्लाह बिन अरीक़त इन दोनों बुज़ुर्गों के लिए सवारी लेकर आया और एक ऊंटनी अपने लिए भी लाया और असमा बिन्त अबी बक्र रास्ते के लिए खाना पका कर लायीं, लेकिन उजलत (जल्दी) में रस्सी लाना भूल गयी। जिससे बांधकर खाना लटका दिया जाता। असमा बिन्त अबी बक्र ने अपना निताक़ (कमरबन्द) फाड़ कर खाना लटकाया। इसी दिन से असमा बिन्त अबी बक्र ज़ातुन्न ताक़ीन की उपाधि से मशहूर हो गयीं।

मदीने का सफ़र

नबी सल्ल० एक नाक़ा (ऊंटनी) पर सवार हुए और दूसरी पर अबू बक्र सिद्दीक़ और उनके पीछे आमिर बिन फ़हीरह रज़ि० सवार हुए और अब्दुल्लाह बिन अरीक़त एक तीसरे ऊंट पर सवार हुआ। आम रास्ता छोड़कर एक ग़ैर मशहूर रास्ते को अपनाया। अबू बक्र सिद्दीक़ ने रवाना होते समय अपना कुल माल (जो लगभग छः हज़ार दिरहम था) अपने साथ ले लिया। पहले दिन से दूसरे दिन की ज़ुहर तक बराबर सफ़र करते रहे। ज़ुहर के समय एक मैदान में थोड़ी देर के लिए ठहर गए। इस बीच में सुराक़ा बिन मालिक (जो आप (सल्ल०) के गिरफ़्तार करने का वायदा कर चुका था) आ पहुंचा। नबी सल्ल० ने उसके हक़ में बददुआ की। उसी समय उसके घोड़े के चारों पांव ज़मीन में धंस गए। सुराक़ा मजबूर होकर नबी सल्ल० से अमान (माफ़ी) का ख़्वास्तगार (इच्छुक) हुआ। नबी सल्ल० ने उसको अमान दे दी और सुराक़ा ने वायदा किया कि मुझे अब जो भी आदमी मिलेगा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उसको वापस करता जाऊंगा। अत: सुराक़ा तो उस जगह से वापस हुआ। फिर जो नबी सल्ल० का पीछा करते हुए उसको मिलते जाते थे उनको वह वापस करता जाता था।

अब्दुल्लाह बिन अरीक़त नबी सल्ल० व अबू बक्र रज़ि० को लेकर साथ लिए हुए असफ़ले मक्का से निकल कर समुद्र के किनारे की ओर चला और असफ़ले असफ़ान से गुज़रता हुआ मज में पहुंचा। फिर वहां से उसके असफ़ल को तै करता हुआ क़दीर में आया। क़दीर से निकल कर उरूज होता हुआ अवाली मदीने से क़ुबा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) और अबू बक्र (रज़ि०) के साथ दाखिल हुआ। यह रास्ते का बड़ा जानने वाला था।

ज़कात व अज़ान

जिस समय नबी सल्ल० को मदीने में जमाव व इत्मीनान हासिल हो गया और आपके पास मुहाजिर व अन्सार जम हो गए, उस वक़्त ज़कात फ़र्ज़ की गयी और मुक़ीम की नमाज़ में दो रकअतें और बढ़ायी गयीं जिससे चार रकअतें पूरी हुईं। इससे पहले मक्का में दो ही रकअतें नमाज़ मुसाफ़िर व मुक़ीम के लिए थीं। फिर अब्दुल्लाह बिन सलाम जो यहूद के बहुत बड़े आलिम (विद्वान) थे, इस्लाम लाए। वजह यह हुई कि पहले-पहले जब उन्होंने नबी सल्ल० को देखा तो क़सम खाई कि इस व्यक्ति का चेहरा झूठे आदमी का चेहरा नहीं हो सकता। यहूदियों ने उसका साथ छोड़ दिया और ओस व खज़रज के कुछ लोगों को वहका कर मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) बना लिया जिनका काम यह था कि वे मुसलमानों से लड़ते थे और कुफ़्र की बातों पर इसरार (ज़िद) करते थे। इन मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई, वजद बिन क़ैस, हरस बिन सुहैल, अबाद बिन हनीफ़ थे और यहूदियों में से जो बज़ाहिर (प्रायक्ष में) इस्लाम के हमदर्द और छिपे तौर पर कुफ़्र में डूबे हुए थे वे ये थे—साअद बिन खनीस, ज़ैद, राफ़ेअ, रिफ़ाअह इब्ने ज़ैद, कनायह आदि मुसलमानों के दुश्मन थे।

मक्का की फ़तह

१० वीं रमज़ान ८ हिजरी को दस हज़ार सेना के साथ नबी सल्ल० मदीना से मक्का को फ़तह करने के उद्देश्य से रवाना हुए। इस सेना में एक हज़ार मर्द बनू सलीम के और एक हज़ार मुज़ीना के, चार सौ ग़फ़्फ़ार के, ४ सौ अस्लम के और बाक़ी क़ुरैश व असद व ततीम और मुहाजिर व अन्सार के ममालीन व कताइब थे। मदीना में कलसूम बिन हसीन बिन उतबा गफ़्फ़ारी ही आपके क़ायम मुक़ाम (कार्यवाहक) हुए।

जिस समय आप ज़ुल हलीफ़ा और कुछ कहते हैं कि हजफ़ह में पहुंचे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० मक्का से हिजरत करके मदीने को आते हुए मिले। नबी सल्ल० के फ़रमाने से अब्बास रज़ि० आप के साथ जिहाद के उद्देश्य से इस्लामी लश्कर के साथ मक्का को वापस हुए। आखिरकार मक्का बिना जंग के फ़तह हो गया और पूरे अरब की क़ौमें इस्लाम में दाखिल होना शुरू हुईं।

हज्जतुल विदाअ (अन्तिम हज)

इन वाक़िआत (घटनाओं) के बाद ज़िल-क़-अद का महीना आ गया। जब उसकी पांच रातें रह गयीं तो हज के इरादे से मदीना से रवाना हुए। आपके साथ मुहाजिरों, अन्सार और अरब के

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रईसों का एक गिरोह था और सौ ऊंट थे। मक्का में यक शम्बा (इतवार) के दिन जबकि चार दिन ज़िल हज के गुज़र चुके थे दाखिल हुए। अली बिन अबी तालिब रज़ि० भी जो नजरान में सदक़ा जमा करने को गए हुए थे, मक्का में आप से आ मिले और आपके साथ हज किया। आपने इस बार लोगों को मनासिके हज (हज के क़ायदे) की तालीम दी, उसके सुनन (तरीक़े) बतलाए, उनके लिए रहमत की दुआ की और अरफ़ात में एक लम्बा ख़ुत्बा दिया जिसमें बहुत सी हिदायतों के बाद ये अलफ़ाज़ (शब्द) भी थे—'मेरे बाद तुम काफ़िर न बनो कि एक दूसरे की गर्दनें मारते फिरो।'

नबी सल्ल० की अलालत (बीमारी)

सबसे पहले जिससे नबी सल्ल० पर अपने इन्तक़ाल (देहान्त) का हाल मुन्कशफ़ (स्पष्ट) हुआ वह अल्लाह का यह क़ौल (कथन) था—

'इज़ा जा'अ -नसरुल्लाहि वल फ़तहु ·····' ता आख़िर सूरः

इसके बाद सफ़र अरबी महीने ११ हिजरी सन ६४२ ईसवी के अनुसार दो रातें बाक़ी थीं कि आपके दर्द पैदा हुआ। आपने इस दर्द की हालत में यह इर्शाद किया कि बेशक (निस्संदेह) एक बंदे को अल्लाह ने अपने बन्दों में से दुनिया और उस चीज़ का जो उसके पास है (अर्थात आख़िरत) का इख़्तियार (स्वतंत्रता) दिया है। तो बन्दे ने उसको चुना जो उसके पास है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० इस फ़िक़रे (वाक्य) को सुन कर रो पड़े और यह कहा—'ऐ नबी सल्ल० ! हम आपका अपनी जानों और बच्चों से फ़िदया (सदक़ा) देते हैं।' इसके बाद आपने अपने सहाबा को जमा दिया और उनके हक़ में भलाई की दुआ की और आंखों से आंसू जारी होते रहे। इसी दौरान आपने फ़रमाया--

"मैं तुमको डरने की नसीहत करता हूं और ख़ुदा से, तुम्हारे लिए रहम (दया) की दरख़ास्त (प्रार्थना) करता हूं और उस की निगहबानी (देख-रेख) में तुम को छोड़ता हूं और तुम को उस के सुपुर्द (हवाले) करता हूं। (ऐ लोगो) मैं तुमको ख़ौफ़ (डर) और ख़ुशख़बरी (शुभ सूचना) दोनों सुनाता हूं कि तुम ख़ुदा के आदेशों में ज़्यादती न करो और उसके शहरों में ज़्यादती न करो और उस की मख़लूक़ (लोगों) पर ज़्यादती (जुल्म) न करो। क्योंकि ख़ुदा ने मुझ से भी और तुम से भी यह कहा है कि आख़िरत (परलोक) का घर (जन्नत) एक ऐसा मक़ाम (जगह) है कि जिसका मालिक केवल उन लोगों को बनाऊंगा जो ज़मीन में सरकशी (विद्रोह) के मुरतकिब (अपराधी) न हों और न ज़मीन में वे किसी क़िस्म (प्रकार) का फ़साद (दंगा) करते हों क्योंकि जन्नत पाक लोगों के लिए (उनके कर्मों का नतीजा) है और उसने कहा है कि क्या जहन्नम में मुतकब्बिर (घमंडी) लोगों के सिवा और भी होगा ? अर्थात न होगा) फिर आपने मस्जिद की तरफ़ के जितने दरवाज़े थे सभी को बन्द करने का हुक्म दे दिया केवल अबू बक्र के दरवाज़े को छोड़ कर। फिर यह कहा कि मैं किसी को अबू बक्र से ज़्यादा अपनी सोहबत (महफ़िल) में अफ़्ज़ल (श्रेष्ठ) नहीं जानता हूं और यदि मैं किसी को अपना ख़लील (दोस्त) बनाता तो अबू बक्र को अपना खलील (दोस्त) बनाता।"

वफ़ात (देहान्त)

इसके बाद फिर दर्द का इतना ज़ोर हुआ कि आप बेहोश हो गए। उम्मुहातुल मोमिनीन (आप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

की पत्नियां) और फ़ातिमा (रज़ि०) व अब्बास, अली रज़ि० सबके सब आपके गिर्द (पास) आकर जमा हो गए। इसी अर्से (बीच में) में नमाज़ का वक़्त आ गया। दर्द में कुछ कमी मालूम हुई बेहोशी जाती रही, लेकिन जोअफ़ (कमज़ोरी) से उठ न सकते थे। आपने हाज़िरीन (पास वालों) से मुख़ातिब (सम्बोधित) होकर फ़रमाया कि अबू बक्र रज़ि० को नमाज़ पढ़ाने के लिए कहो। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि वे एक ज़ईफ़ व रक़ीक़ुल क़ल्ब (कमज़ोर व थोड़े दिल वाले) आदमी हैं आपकी जगह पर खड़े होकर नमाज़ न पढ़ा सकेंगे, उमर रज़ि० को इस काम पर मामूर (लगा) फ़रमा दें आपने इससे इन्कार करके अबू बक्र रज़ि० को इमामत पर मामूर (खड़ा किया) किया और फ़रमाया कि ख़ुदा और मुसलमान अबू बक्र रज़ि० के सिवा और किसी पर राज़ी नहीं हैं।

फिर अबू बक्र रज़ि० ने आपकी अलालत (बीमारी) की हालत में तेरह नमाज़ें पढ़ायीं। फिर जबकि दोशम्बे (पीर) का दिन आया और यही दिन आपकी वफ़ात (देहान्त) का है सुबह की नमाज़ के समय आप सर मुबारक पर पट्टी बांधे हुए बाहर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त अबू बक्र लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। अबू बक्र ने पीछे हटने का क़स्द (इरादा) किया, आपने उनको अपने हाथ से दायीं तरफ़ बैठकर नमाज़ पढ़ाने का इशारा किया और ख़ुद (स्वयं) अबू बक्र के पीछे नमाज़ अदा की। इसके बाद लोगों की तरफ़ मुख़ातिब (सम्बोधित) होकर फ़रमाया—ऐ लोगो ! आग भड़की, फ़ित्ने आ गए तुमको मालूम रहे कि जिस चीज़ को क़ुरआन ने हलाल या हराम क़रार (ठहराया) दिया है उसके सिवा मैंने किसी चीज़ को हराम या हलाल क़रार नहीं दिया। फिर हज़रत आयशा रज़ि० के घर में आए और वहीं आप (सल्ल०) आप का इन्तिक़ाल (देहान्त) हो गया।

नबी सल्ल० का इन्तक़ाल होते ही सहाबा में एक अज़ीम (बड़ी) परेशानी फ़ैल गयी। उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० इस हादसए नागहानी (अचानक टूट पड़ने वाली घटना) से मुतहय्यर (हैरत) से हो गए। कुछ होश न रहा। तलवार खींच कर खड़े हो गए और बुलंद (ऊंची) आवाज़ से कहने लगे—'मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) कहते हैं कि हुज़ूर का इन्तक़ाल हो गया मगर वे झूठे हैं, बल्कि वे तो मूसा अलैहि० की तरह ख़ुदा से मिलने गए हैं थोड़ी देर में आ जाएंगे और जो कोई यह कहे कि नबी सल्ल० मर गए हैं मैं उस की गर्दन इस तलवार से उड़ा दूंगा।' उमर रज़ि० जोश में यह कहते जाते थे। किसी की मजाल (हिम्मत) न थी कि कोई आदमी उनसे यह कहता कि तुम तलवार म्यान में कर लो नबी सल्ल० का इन्तक़ाल हो गया है।

इसी दौरान यह दिल तोड़ने वाली घटना सुनकर अबू बक्र रज़ि० आ गए और सीधे हुजरए मुबारक में जाकर हजरत आयशा रज़ि० की गोद से सर मुबारक लेकर ग़ौर से देखकर कहा, 'मेरे मां बाप आप (सल्ल०) पर क़ुर्बान, बेशक (निस्संदेह) आप (सल्ल०) ने मौत का ज़ायक़ा (स्वाद) चखा जिस को अल्लाह ने आप के लिए लिखा था और अब हरगिज़ (कदापि) आप को मौत न आएगी—'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' कहते हुए बाहर आए।

उमर रज़ि० लोगों से वही बातें कह रहे थे कि अबू बक्र रज़ि० ने उमर से कहा—चुप रहो, उमर (रज़ि०) ने कुछ भी ख़्याल न किया। अबू बक्र दोबारा कहना मुनासिब (उचित) न समझ कर अलहदा (अलग) खड़े हो कर लोगों से मुख़ातिब (सम्बोधित) हुए। जितने आदमी उमर रज़ि० के पास जमा थे वे सब उन्हें अकेला छोड़ कर अबू बक्र रज़ि० के पास चले आए। उस समय उन्होंने अल्लाह की प्रशंसा के बाद यह ख़ुत्बा पढ़ा जिस का अनुवाद यह है—

"ऐ लोगो ! जो आदमी मुहम्मद (सल्ल०) की इबादत करता हो तो वे इन्तक़ाल कर गए और

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो ख़ुदा की इबादत करता हो तो वह ज़िंदा है।" फिर क़ुरआन की ये आयतें पढ़ीं जिस का अनुवाद यह है—

"मुहम्मद (सल्ल०) इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल है उनसे पहले और रसूल भी गुज़र चुके हैं, फिर क्या यदि वह मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम लोग उल्टे पांव फिर जाओगे ? याद रखो ! जो उल्टा फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नुक़सान न करेगा। अलबत्ता जो अल्लाह का शुक्र अदा करने वाले हैं उन्हें वह उसका इनाम देगा।"

अबू बक्र रज़ि० की ज़बान से इन आयतों का निकलना था कि लोगों के ख़्यालात (विचार और सोच) बदल गए और दफ़अतेन (अचानक) हैरत का आलम (वातावरण) ऐसे दूर हो गया कि गोया (जैसे) इससे पहले वह नहीं था। इस परिवर्तन से यह मालूम होता था कि सहाबा इस आयत के उतरने का हाल ही न जानते थे। उमर रज़ि० कहते हैं कि पहले मैंने अबू बक्र रज़ि० के कहने पर मुतलक़ (बिल्कुल) ख़्याल नहीं किया था लेकिन जिस वक़्त उन्होंने ये आयतें पढ़ी तो मुझे मालूम हुआ कि ये आयतें भी नाज़िल हुई हैं। मारे डर के मेरे पांव थर्रा गए और ज़मीन पर गिर पड़ा और मैंने यह समझ लिया कि आपका इन्तक़ाल हो गया। और आप हज़रत आयशा रज़ि० के मकान में उसी जगह पर जहां इन्तक़ाल फ़रमाया था क़ब्र शरीफ़ बनाकर रखे गए और आपके बाद तमाम मुसलमानों के इत्तिफ़ाक़ (राए) से हज़रत अबू बक्र रज़ि० ख़लीफ़ा मुक़र्रर (नियुक्त) हुए जिनमें मुहाजिर व अंसार सब शामिल थे।

दिन व तारीख़ व सन वफ़ात इन्तक़ाल

आपने ६३ साल की उम्र में १२ रबीउल अव्वल ११ हिजरी दोशम्बा (पीर) के दिन इन्तक़ाल फ़रयाया।

इस्लामी मज़हबी किताबें और हर क़िस्म के कुरआन मजीद तथा छपाई के हर काम के लिए हमारी ख़िदमात हासिल करें।

महमूद एण्ड कम्पनी

मरोल पाइप लाईन, बम्बई-५९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१ सूरतुल-फ़ातिहति ५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १२३ अक्षर, २५ शब्द
७ आयतें और १ रुकूअ हैं।



बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल-आ़लमीन (१)
अर्रह़्मानिर्रह़ीम (२) मालिकि यौमिद्दीन
(३) इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन (४)
इह्दिनस्-सिरात़ल्मुस्तक़ीम (५) सि़रात़ल्लज़ी-न
अनअ़म्-त अ़लैहिम् (६) ग़ैरिल्-मग़्ज़ूबि
अ़लैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन ★ (७)

१ सूरः फ़ातिहः ५

सूरः फ़ातिहा मक्की है और इस में सात आयतें हैं।

शुरू[1] ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है जो तमाम मख़्लूक़ात का परवरदिगार है।[2] (१) बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला, (२) इन्साफ़ के दिन का हाकिम,[3] (३) (ऐ परवरदिगार!) हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझी से मदद मांगते हैं, (४) हम को सीधे रास्ते पर चला, (५) उन लोगों का रास्ता जिन पर तू अपना फ़ज़्ल व करम करता रहा, (६) न उनका जिन पर ग़ुस्सा होता रहा और न गुमराहों का। ★ (७)

तर्जुमा

---

१. चूंकि हुक्म है कि क़ुरआन मजीद ख़ुदा का नाम लेकर शुरू किया जाए, इस लिए हमें 'बिस्मिल्लाह' के तर्जुमे के शुरू में 'कहो' का लफ़्ज़ जो छिपा हुआ है, लिख देना चाहिए था, मगर फिर सब जगह तर्जुमे में यह लफ़्ज़ लिखना पड़ता और इस में वह मज़ा न आता जो 'बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम' में है, इस लिए यह लफ़्ज़ छिपा ही रहने दिया।

२. इस सूरः को ख़ुदा ने बंदों की ज़ुबान में नाज़िल फ़रमायी है। मक़्सूद यह बात का सिखाना है कि वे इस तरह ख़ुदा से दुआ किया करें। हदीस शरीफ़ में आया है कि सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है और सब से अफ़्ज़ल दुआ 'अल-हम्दु लिल्लाह'।

३. इन्साफ़ के दिन से मुराद क़ियामत का दिन है, क्योंकि दूसरी जगह इर्शाद हुआ है, 'तुम को क्या मालूम है कि इन्साफ़ का दिन कौन-सा है, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम न आएगा और उस दिन ख़ुदा का ही हुक्म होगा'—अगरचे और दिनों का मालिक भी ख़ुदा ही है, मगर उस दिन को ख़ास इस लिए किया कि उस दिन ख़ुदा के सिवा किसी का हुक्म न चलेगा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

२ सूरतुल-ब-क़-रति़ ८७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २०००० अक्षर, ६०२१ शब्द, २८६ आयतें और ४० रुकूअ हैं।



बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ८ (१)
ज़ालिकल्किताबु ला रै - ब ज़ फ़ीहि ज़
हुदल्लिल्मुत्तक़ीन ५ (२) अल्लज़ी-न युअ्मिनू-न
बिल्ग़ैबि व युक़ीमूनस्स़ला-त़ व मिम्मा र-ज़क़्ना-
हुम् यून्फ़िक़ून ५ (३) वल्लज़ी-न यूअ्मिनू-न
बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन्
क़ब्लिक व बिल-आख़िरति़ हुम् यूक़िनून ५ (४)

.·. मु॰ अ़ि॰ मु ता ख़॰ १

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

२ सूरः बक़रः ८७

सूरः बक़रः मदनी है और इसमें दो सौ छियासी आयतें और चालीस रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ●

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलफ़ि-लाम-मीम०[1] (१) यह किताब (क़ुरआन मजीद) इसमें कुछ शक नहीं (कि ख़ुदा का कलाम है, ख़ुदा से) डरने वालों की रहनुमा[2] है, (२) जो ग़ैब[3] पर ईमान लाते और आदाब के साथ नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उन को दे रखा है, उसमें से ख़र्च करते हैं। (३) और जो किताब (ऐ मुहम्मद !) तुम पर नाज़िल हुई और जो किताबें तुम से पहले (पैग़म्बरों पर) नाज़िल हुयीं, सब पर ईमान लाते और आख़िरत का यक़ीन रखते हैं।[4] (४)

---

१. और इसी तरह के और हर्फ़, जो क़ुरआन मजीद की बहुत-सी सूरतों के शुरू में आये और जिन को 'हुरूफ़े मुक़त्तआत' कहते हैं, अस्‌रारे इलाही (अल्लाह के रहस्यों) में से हैं, उन पर बिना कुछ कहे-सुने ईमान लाना चाहिए। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के कुछ मानी नहीं बयान फ़रमाये, सिर्फ़ यह फ़रमाया है कि 'अलिफ़्' एक हर्फ़ है और 'लाम' एक हर्फ़ है और 'मीम' एक हर्फ़ है।

२. 'डरने वालों' का लफ़्ज़ इस बात की दलील लाता है कि जिन के दिलों में ख़ुदा का डर है, वही उस की हिदायत को मानते और वही इस किताब से फ़ायदा हासिल करते हैं और जो डर नहीं रखते, वे हिदायत की बातों की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं देते और इसी लिए यह किताब उन के लिए रहनुमा नहीं हो सकती।

३. 'ग़ैब' उस चीज़ को कहते हैं, जो आंख से छिपी हुई हो और इस जगह वे चीज़ें मुराद हैं, जिन की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है और जो नज़र से ओझल हैं—जैसे पुले सिरात, तराज़ू-ए-आमाल, बहिश्त और दोज़ख़ वग़ैरह।

४. आख़िरत से मुराद क़ियामत का दिन है, चूंकि वह दिन दुनिया के बाद आयेगा, इस लिए उस को आख़िरत कहते हैं और 'यौमुल आख़र' भी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उलाइ-क अला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (५)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़-रू सवाउन अलैहिम् अ अन्ज़र-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िहुम् ला
युअ्मिनून (६) ख़-त-मल्लाहु अला क़ुलूबिहिम् व अला सम्अिहिम् व अला
अब्सारिहिम् ग़िशावतुंव् व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम ★ (७) व मिनन्नासि
मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आख़िरि
व मा हुम् बि मुअ्मिनीन ▨ (८)
युख़ादिऊनल्ला-ह वल्लज़ी-न आमनू व मा
यख़्दऊ-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अुरून
(९) फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन्
फ़ ज़ा-द हुमुल्लाहु म-र-ज़न् व लहुम् अज़ाबुन्
अलीमुम् बिमा कानू यक्ज़िबून (१०)
व इज़ा क़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि
क़ालू इन्नमा नह्नु मुस्लिहून (११) अला
इन्नहुम् हुमुल् - मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला
यश्अुरून (१२) व इज़ा क़ी-ल लहुम्
आमिनू कमा आमनन्नासु क़ालू अनुअ्मिनु
कमा आमनस्सुफ़हाउ अला इन्नहुम्
हुमुस्सुफ़हाउ व लाकिल्ला यअ्-लमून (१३) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू
क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम् क़ालू इन्ना
म-अकुम् इन्नमा नह्नु मुस्तह्ज़िऊन (१४) अल्लाहु यस्तह्ज़िउ बिहिम् व
यमुद्दुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून (१५) उलाइकल्-लज़ीनश्-त-रवुज़्-ज़ला-ल-त्
बिल्हुदा फ़मा रबिहत् तिजारतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन (१६)
म-सलुहुम् क-म-सलिल्-लज़िस्तौक़-द नारन् फ़-लम्मा अज़ा-अत् मा हौलहू
ज-ह-बल्लाहु बिनूरिहिम् व त-र-कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्ला युब्सिरून (१७)
सुम्मुम् - बुक्मुन् - अुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिऊन (१८) औ क-सय्यिबिम्-
मिनस्समा-इ फ़ीहि ज़ुलुमातुंव-व रअ्दुंव-व बर्क़ुन् यज्अलू-न असाबिअहुम् फ़ी
आज़ानिहिम् मिनस्सवाअिक़ि ह-ज़-रल्मौति वल्लाहु मुहीतुम्-बिलकाफ़िरीन (१९)

الم　　البقرة ٢

أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون ۝ إن الذين كفروا
سواء عليهم ءأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ۝ ختم الله على
قلوبهم وعلى سمعهم وعلى أبصارهم غشاوة ولهم عذاب عظيم ۝
ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم الآخر وما هم بمؤمنين ۝
يخدعون الله والذين آمنوا وما يخدعون إلا أنفسهم وما
يشعرون ۝ في قلوبهم مرض فزادهم الله مرضا ولهم عذاب
أليم بما كانوا يكذبون ۝ وإذا قيل لهم لا تفسدوا في الأرض
قالوا إنما نحن مصلحون ۝ ألا إنهم هم المفسدون ولكن لا
يشعرون ۝ وإذا قيل لهم آمنوا كما آمن الناس قالوا أنؤمن كما
آمن السفهاء ألا إنهم هم السفهاء ولكن لا يعلمون ۝ وإذا لقوا
الذين آمنوا قالوا آمنا وإذا خلوا إلى شياطينهم قالوا إنا معكم إنما نحن
مستهزءون ۝ الله يستهزئ بهم ويمدهم في طغيانهم يعمهون ۝
أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى فما ربحت تجارتهم وما كانوا
مهتدين ۝ مثلهم كمثل الذي استوقد نارا فلما أضاءت ما حوله
ذهب الله بنورهم وتركهم في ظلمات لا يبصرون ۝ صم بكم عمي
فهم لا يرجعون ۝ أو كصيب من السماء فيه ظلمات ورعد وبرق
يجعلون أصابعهم في آذانهم من الصواعق حذر الموت والله محيط

ع ١ - وقف لازم

★रु. १/१ आ ७ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यही लोग अपने परवरदिगार (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही निजात पाने वाले हैं। (५) जो लोग काफ़िर हैं उन्हें तुम नसीहत करो या न करो, उन के लिए बराबर है,[1] वे ईमान नहीं लाने के। (६) ख़ुदा ने उन के दिलों और कानों पर मुहर लगा रखी है और उन की आंखों पर परदा (पड़ा हुआ) है।[2] और उन के लिए बड़ा अज़ाब तैयार है। (७) ★

और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, हालांकि वे ईमान नहीं रखते ▨ (८) ये (अपने घमंड में) ख़ुदा को और मोमिन को चकमा देते हैं, मगर (हक़ीक़त में) अपने सिवा किसी को चकमा नहीं देते और इस से बे-ख़बर हैं।[3] (९) इन के दिलों में (कुफ़्र का) रोग था। ख़ुदा ने उन का रोग और ज़्यादा कर दिया और उन के झूठ बोलने की वजह से उन को दुख देने वाला अज़ाब होगा। (१०) और जब उन से कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न डालो, तो कहते हैं कि हम तो इस्लाह (सुधार) करने वाले हैं। (११) देखो, ये बिला शुब्हा फ़साद पैदा करने वाले हैं, लेकिन ख़बर नहीं रखते।[4] (१२) और जब उन से कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान ले आए, तुम भी ईमान ले आओ, तो कहते हैं, भला, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आए हैं, उसी तरह हम भी ईमान ले आएं? सुन लो कि यही मूर्ख हैं, लेकिन नहीं जानते। (१३) और ये लोग जब मोमिनों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं और जब अपने शैतानों में जाते हैं तो (उन से) कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं और (मुहम्मद सल्ल० के मानने वालों से) तो हम हंसी किया करते हैं।[5] (१४) इन (मुनाफ़िक़ों) से ख़ुदा हंसी करता है और उन्हें मोहलत दिए जाता है कि शरारत व सरकशी में पड़े बहक रहे हैं।[6] (१५) ये वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत छोड़ कर गुमराही ख़रीदी, तो न तो उन की तिजारत ही ने कुछ नफ़ा दिया और न वे हिदायतयाब (हिदायत पाए हुए) ही हुए। (१६) उन की मिसाल उस शख़्स की-सी है, जिस ने (अंधेरी रात में) आग ज़लायी। जब आग ने उसके चारों तरफ़ की चीज़ें रोशन कीं, तो ख़ुदा ने उन लोगों की रोशनी ख़त्म कर दी और उन को अंधेरों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं देखते।[7] (१७) (ये) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं कि (किसी तरह सीधे रास्ते की तरफ़) लौट ही नहीं सकते। (१८) या उन की मिसाल मेंह (वर्षा) की-सी है कि आसमान से (बरस रहा हो और) उस में अंधेरे पर अंधेरा (छा रहा) हो और (बादल) गरज (रहा) हो और बिजली (कड़क रही) हो तो ये कड़क से (डर कर) मौत के डर से कानों में उंगलियां दे लें और ख़ुदा काफ़िरों को

---

१. इन्ज़ार के मानी डर की ख़बर सुनाने, ख़ौफ़ दिलाने, वाज़ व नसीहत और हिदायत करने, राह बताने और मुतनब्बह व आगाह करने के हैं। पहले मानी तो मशहूर हैं, वाज़ व नसीहत और हिदायत के मानी इस आयत से ज़ाहिर हैं। 'इन्नमा अन-त मुंज़िरुं व-व लि कुल्लि क़ौमिन हाद०' यानी ऐ पैग़म्बर! तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो और हर क़ौम में हिदायत करने वाले हो गुज़रे हैं।' इस का साफ़ मतलब यह है कि जिस तरह पहले हादी व रहनुमा आते रहे हैं और वे हर क़ौम में आते रहे हैं, इसी तरह तुम भी हिदायत करने वाले और रास्ता दिखाने वाले हो। इस जगह 'इन्ज़ार' से वाज़ व नसीहत के मानी ही मुनासिब हैं और वही तर्जुमे में अख़्तियार किया गया है।

२. दुनिया में इस क़िस्म के लोग भी मौजूद हैं जिन के दिल नसीहत का असर नहीं लेते और ईमानी नूर से रोशन नहीं होते, ऐसे लोग शक़ी-ए-अज़ली (हमेशा के बद-बख़्त) कहलाते हैं। ऐसों ही के हक़ में यह इर्शाद हुआ है कि उन को नसीहत करना या न करना बराबर है। दिलों और कानों पर मुहर लगने और आंखों पर परदा पड़ने से

(शेष पृष्ठ ९७५ पर)

★रु. १/१ आ ७ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यकादुल्बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सारहुम् ط कुल्लमा अज़ा-अ लहुम् मशौ फ़ीहि لا
व इज़ा अज़्-ल-म अ़लैहिम् क़ामू ط व लौ शा-अल्लाहु ल ज़-ह-ब बि सम्अ़िहिम्
व अब्सारिहिम् ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (२०)
या अय्युहन्नासुअ़-बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम्
तत्तक़ून ۷ (२१) अ़ल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुलअर्-ज़
फ़िराशंव्वस्समा-अ बिना ۚ अंव्-व अन्ज़-ल
मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्-र-ज बिही
मिनस्-स-मराति रिज़्-क़ल्लकुम् ج फ़ला तज्-अ़लू
लिल्लाहि अन्दादंव अन्तुम् तअ़्-लमून (२२)
व इन कुन्तुम् फ़ी रैबिम्मिम्मा नज़्ज़ल्ना
अ़ला अ़ब्दिना फ़अ्तू बिसूरतिम्-मिम्-
मिस्लिही ۚ वद्अू शुहदा - अ - कुम्
मिन्दूनिल्लाहि इन कुन्तुम् सादिक़ीन (२३)
फ़इल्लम् तफ़्अ़लू व लन् तफ़्अ़लू
फ़त्तक़ुन्नारल्लती वक़ूदुहन्नासु वल्हिजारतु ج
उअ़िद्दत् लिल्काफ़िरीन (२४) व
बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति
अन-न लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-
अन्हारु ط कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन्
स-म-रतिर्रिज़्क़न् ۷ क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन् क़ब्लु ۷ व उतू बिही
मुतशाबिहन् ط व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् - मुतह्हरतुंव-व हुम् फ़ीहा
ख़ालिदून (२५) इन्नल्ला-ह ला यस्तह़्यी अंय्यज़्रि-ब म-स-लम्मा बअूज़-तन् फ़मा
फ़ौक़हा ط फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़ यअ़-लमू-न अन्नहुल्ह़क़्क़ु मिर्रब्बिहिम्
व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ यक़ूलू-न माज़ा अरादल्लाहु बि हाज़ा म-स-लन् ▨
युज़िल्लु बिही कसीरंव-व यह्दी बिही कसीरन् ط व मा
युज़िल्लु बिही इल्लल् - फ़ासिक़ीन ۷ (२६) अ़ल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न
अ़ह्दल्लाहि मिम्बअ़्दि मीसाक़िही ۚ व यक़्तअ़ू-न मा अ - म - रल्लाहु
बिही अंय्यू-स-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि ط उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून (२७)

الٓمّٓ ٥ البقرة ٢

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَاۤ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙۗ وَ
اِذَاۤ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا
وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا
لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا
نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۠ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا
رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا
بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَسْتَحْىٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ
اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا
الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ مَاۤ
اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

منزل ١

★रु. २/२ आ १३ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(हर तरफ़ से) घेरे हुए है ।[1] (१९) क़रीब है कि बिजली (की चमक) उन की आंखों (की रोशनी) को उचक ले जाए। जब बिजली (चमकती और) उन पर रोशनी डालती है तो उस में चल पड़ते हैं और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े के खड़े रह जाते हैं और अगर ख़ुदा चाहता तो उनके कानों (के सुनने की ताक़त) और आंखों (के देखने की ताक़त, दोनों) को बर्बाद कर देता। बिला शुब्हा ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।(२०) ★

लोगो ! अपने परवरदिगार की इबादत करो, जिस ने तुमको और तुमसे पहले लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (उस के अज़ाब से) बचो। (२१) जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत बनाया और आसमान से मेंह बरसा कर तुम्हारे खाने के लिए क़िस्म-क़िस्म के मेवे-पैदा किए। पस किसी को ख़ुदा का हमसर (बराबर का) न बनाओ और तुम जानते तो हो। (२२) और अगर तुमको इस (किताब) में, जो उस ने अपने बंदे (मुहम्मद अरबी सल्ल०) पर नाज़िल फ़रमायी है, कुछ शक हो तो इसी तरह की एक सूरः तुम भी बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जो तुम्हारे मददगार हों, उन को भी बुला लो अगर तुम सच्चे हो।[2] (२३) लेकिन अगर (ऐसा) न कर सको और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर होंगे (और जो) काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है। (२४) और जो लोग ईमान ले आए और नेक अमल करते रहे, उन को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए (नेमत के) बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उन में से किसी क़िस्म का मेवा खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे यह तो वही है जो हम को पहले दिया गया था और उन को एक दूसरे से शक्ल में मिलते-जुलते मेवे दिए जाएंगे और वहां उन के लिए पाक बीवियां होंगी और वे बहिश्तों में हमेशा रहेंगे। (२५) ख़ुदा इस बात से नहीं शर्माता कि मच्छर या उस से बढ़ कर किसी चीज़ (जैसे मक्खी-मकड़ी वग़ैरह) की मिसाल बयान फ़रमाए। जो मोमिन हैं, वे यक़ीन करते हैं कि वह उन के परवरदिगार की तरफ़ से सच है और जो काफ़िर हैं, वे कहते हैं कि इस मिसाल से ख़ुदा चाहता क्या है ⁂ इस से (ख़ुदा) बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को हिदायत बख़्शता है और गुमराह भी करता है तो नाफ़रमानों ही को।[3] (२६) जो ख़ुदा के इक़रार को मज़बूत करने के बाद तोड़ देते हैं और जिस चीज़ (यानी रिश्तेदारी) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उसको तोड़े डालते हैं और ज़मीन में ख़राबी

---

१. यह मुनाफ़िक़ों के हाल की दूसरी मिसाल है। इस में दीने इस्लाम को मेंह (वर्षा) से तश्बीह (उपमा) दी गयी है। जिस तरह मेंह में अंधेरा और बिजली और गरज होती है, इसी तरह इस्लाम के शुरू में, भले ही कुछ परेशानियां और कठिनाइयां भी हों, लेकिन बाद में वह सरासर रहमत होता है। मुनाफ़िक़ों को इस्लाम से फ़ायदे पहुंचते तो उस के क़ायल हो जाते और जब कोई ऐसा हुक्म नाज़िल होता, जिसे वे सख़्त समझते तो सोचते कि बला नाज़िल हुई और यों डर जाते जैसे बिजली से डरा करते हैं। कड़क से डर कर कानों में उंगलियां दे लेने का मतलब यह है कि हुक्म की सख़्ती से घबरा कर उस पर अमल करने से हिचकिचाते और ऐसी तद्बीरें करने लगते कि मुश्किल में न फंस जाएं और उस से बच जाएं। कुछ लोगों ने कहा है कि क़ुरआन मजीद में जो कुफ़्र व शिर्क और उस पर डरावे और सज़ा का बयान और ख़ुदा के एक होने की रोशन दलीलें हैं, जिन की मिसाल अंधेरों और गरज और बिजली की है तो मुनाफ़िक़ों को डर पैदा होता है कि उन को सुन कर लोग कहीं ईमान लाने पर तैयार न हो जाएं और अपना मज़हब न छोड़ बैठें जो उनके नज़दीक मौत जैसा था और इसी वजह से वे अपने कानों में उंगलियां दे लेते कि क़ुरआन को सुन ही न सकें।

(शेष पृष्ठ ९७५ पर)

★रु. २/२ आ १३ ⁂ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कै-फ़ तक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़ अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम्
सुम्-म युह्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअून (२८) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम् मा
फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन-न सब्-अ़ समावातिन्
व हु-व बि कुल्लि शै-इन् अ़लीम ★ (२९) व इज़ क़ा-ल रब्बु-क लिलमलाइकति
इन्नी जाअिलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़ली-फ़-तन् क़ालू
अ तज्अ़लु फ़ीहा मंय्युफ़्सिदु फ़ीहा व
यस्फ़िकुद्दिमा-अ व नह्नु नुसब्बिहु बि ह़म्दि-क
व नुक़द्दिसु ल-क क़ा-ल इन्नी अअ़्-लमु मा
ला तअ़-लमून (३०) व अ़ल-ल-म आदमल्अस्मा-
अ कुल्लहा सुम्-म अ़-र-ज़हुम् अ़लल्मला-इकति
फ़-क़ा-ल अम्बिऊनी बि अस्मा-इ हा-उला-इ
इन कुन्तुम् सादिक़ीन (३१) क़ालू सुब्ह़ान-क
ला इल्-म लना इल्ला मा अ़ल्लम्तना
इन्न-क अन्तल्-अ़लीमुल्-ह़कीम (३२) क़ा-ल
या आदमु अम्बिअ्हुम् बिअस्मा-इहिम्
फ़ लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् क़ा-ल
अ-लम् अक़ुल्लकुम् इन्नी अअ़्-लमु ग़ैबस्समावाति
वल्अर्ज़ि व अअ़्-लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम्
तक्तुमून (३३) व इज़ क़ुल्ना लिल्-मला-इकतिस्जुदू लि आद-म फ़-स-ज-दू
इल्ला इब्लीस अबा वस्तक्-ब-र व का-न मिनल्काफ़िरीन (३४) व क़ुल्ना या
आदमुस्कुन् अन-त व ज़ौजुकल्जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग़-दन् हैसु शिअ्तुमा व ला
तक़्रबा हाज़िहिश्श-ज-र-त फ़ तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (३५) फ़ अज़ल्लहुमश्-शैतानु अ़न्हा
फ़-अख़्-र-ज-हुमा मिम्मा काना फ़ीहि व क़ुल्नह्बितू बअ़्-ज़ुकुम् लि बअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन्
व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव-व मता-उ़न् इला ह़ीन (३६) फ़-त-लक़्क़ा
आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ ता-ब अ़लैहि इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रह़ीम (३७)
क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअ़न् फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मन् तबि-अ़
हुदा-य फ़ ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम व ला हुम् यह़्ज़नून (३८) वल्लज़ी-न क-फ़रू व
कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इक अस्ह़ाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून ★ (३९)

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ثُمَّ اسْتَوٰۤی اِلَی السَّمَآءِ
فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ
جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَیَسْفِكُ
الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ
عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَی الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ
هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ
اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿٣٢﴾ قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ
اَبٰی وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٣٤﴾ وَقُلْنَا یٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٣٥﴾
فَاَزَلَّهُمَا الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ
فَتَابَ عَلَیْهِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِیْعًا فَاِمَّا یَاْتِیَنَّكُمْ
مِّنِّیْ هُدًی فَمَنْ تَبِعَ هُدَایَ فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾ یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا

★रु. ३/३ आ ९ ★रु. ४/४ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करते हैं, यही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। (२७) (काफ़िरो !) तुम खुदा के कैसे इन्कारी हो सकते हो, जिस हाल में कि तुम बे-जान थे, तो तुमको जान बख़्शी, फिर वही तुमको मारता है, फिर वही तुमको ज़िंदा करेगा, फिर उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (२८) वही तो है, जिसने सब चीज़ें, जो ज़मीन में हैं, तुम्हारे लिए पैदा कीं, फिर आसमानों की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, तो उनको ठीक सात आसमान बना दिया और वह हर चीज़ से ख़बरदार है। (२९) ★

और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूं। उन्होंने कहा, क्या तू उसमें ऐसे शख़्स को नायब बनाना चाहता है, जो ख़राबियां करे और कुश्त व ख़ून करता फिरे और हम तेरी तारीफ़ के साथ तस्बीह व तक़्दीस करते रहते हैं। (ख़ुदा ने) फ़रमाया, मैं वह बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। (३०) और उसने आदम को सब (चीजों के) नाम सिखाये, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने किया और फ़रमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। (३१) उन्होंने कहा, तू पाक है, जितना इल्म तूने हमें बख़्शा है, उसके सिवा हमें कुछ मालूम नहीं। बेशक तू दाना (सर्व ज्ञाता) (और) हिक्मत वाला है। (३२) (तब) ख़ुदा ने (आदम को) हुक्म दिया कि आदम ! तुम इन को उन (चीज़ों) के नाम बताओ। जब उन्होंने उनको उनके नाम बताये तो (फ़रिश्तों से) फ़रमाया, क्यों, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन की (सब) पोशीदा बातें जानता हूं और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो पोशीदा करते हो (सब) मुझको मालूम है। (३३) और जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो[१], तो वे सब सज्दे में गिर पड़े, मगर शैतान ने इंकार किया और ग़ुरूर (घमण्ड) में आकर काफ़िर बन गया।[२] (३४) और हमने कहा कि ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और जहां से चाहो, बे-रोक-टोक खाओ (पियो), लेकिन उस पेड़ के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाखिल) हो जाओगे। (३५) फिर शैतान ने दोनों को वहां से फिसला दिया और जिस (ऐश व निशात) में थे, उससे उनको निकलवा दिया। तब हमने हुक्म दिया कि (जन्नत से) चले जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त तक ठिकाना और मआश (रोज़ी) मुक़र्रर कर दिया गया है। (३६) फिर आदम ने अपने परवरदिगार से कुछ कलिमात (बोल) सीखे (और मांफ़ी मांगी) तो उसने उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया। बेशक वह माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। (३७) हमने फ़रमाया कि तुम सब यहां से उतर जाओ। जब तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत पहुंचे तो (उसकी पैरवी करना कि) जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की, उनको न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (३८) और जिन्होंने (उसको) क़ुबूल न किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे दोज़ख़ में जाने वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें रहेंगे। (३९) ★

---

१. सज्दा दो तरह का होता है, एक इबादत का, एक ताज़ीम (आदर) का, इबादत निहायत ज़िल्लत को कहते हैं और अल्लाह तआला नहीं चाहता कि इन्सान उस के सिवा किसी और के आगे ज़िल्लत अख़्तियार करे, इस से इंसान के शान की बुलंदी ज़ाहिर होती है कि ख़ुदा ने उस का अपने सिवा किसी और की इबादत करना जायज़ नहीं रखा। जो सज्दा ख़ुदा ने फ़रिश्तों से आदम को कराना चाहा था, वह ताज़ीम और इक्राम और एहतिराम का सज्दा था, जैसा यूसुफ़ के भाइयों ने यूसुफ़ को किया था। ऐसा सज्दा पहले मज़हबों में जायज़ था। दीने इस्लाम में ग़ैर-मशरूअ क़रार दिया गया यानी शरीअत ने नाजायज़ क़रार दिया। अब ऐसा सज्दा जायज़ नहीं।

(शेष पृष्ठ ९७६ पर)

★रु. ३/३ आ ९ ★रु. ४/४ आ. १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या बनी इस्‌रा-ईलज़्कुरू निअ़-मतियल्लती अन्‌अ़म्तु अ़लैकुम् व औफ़ू बि अ़ह्‌दी
ऊफ़ि बि अ़ह्‌दिकुम् ۚ व इय्या-य फ़र्हबून (४०) व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु
मुसद्‌दिक़ल्लिमा म-अ़कुम् व ला तकूनू अव्व-ल काफ़िरिम् - बिही ۖ व ला तश्तरू
बि आयाती स-म-नन् क़लीलंव् ۖ व इय्या-य फ़त्तक़ून (४१) व ला तल्बिसुल् हक़्-क़
बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्-क़ व अन्तुम् तअ़्-लमून
(४२) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त
वर्कअ़ू मअ़र्राकिअ़ीन (४३) अ तअ्मुरूनन्ना-स
बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम्
तत्लूनल्-किताब ۖ अ-फ़ला तअ़्-क़िलून (४४)
वस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति ۖ व इन्नहा
ल कबीरतुन् इल्ला अ़लल्ख़ाशिअ़ीन ۙ (४५)
अल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम्
व अन्नहुम् इलैहि राजिअ़ून ★●(४६)
या बनी इस्‌रा-ईलज़्कुरू निअ़्-मतियल्लती
अन्‌अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम्
अ़-लल्‌आ़लमीन (४७) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी
नफ़्सुन् अ़न् नफ़्सिन् शैअंव-व ला युक़्बलु
मिन्हा शफ़ाअ़तुंव-व ला युअ्ख़ज़ु मिन्हा अ़द्लुंव-व
ला हुम् युन्सरून (४८) व इज़ नज्जैनाकुम्

نعمتي التي انعمت عليكم واوفوا بعهدي اوف بعهدكم واياي فارهبون ﴿٤٠﴾
وامنوا بما انزلت مصدقا لما معكم ولا تكونوا اول كافر به ولا تشتروا باياتي
ثمنا قليلا واياي فاتقون ﴿٤١﴾ ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وانتم
تعلمون ﴿٤٢﴾ واقيموا الصلوة واتوا الزكوة واركعوا مع الركعين ﴿٤٣﴾ اتامرون الناس
بالبر وتنسون انفسكم وانتم تتلون الكتب افلا تعقلون ﴿٤٤﴾ واستعينوا بالصبر
والصلوة وانها لكبيرة الا على الخشعين ﴿٤٥﴾ الذين يظنون انهم ملقوا ربهم
وانهم اليه رجعون ﴿٤٦﴾ يبني اسراءيل اذكروا نعمتي التي انعمت عليكم
واني فضلتكم على العلمين ﴿٤٧﴾ واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا
ولا يقبل منها شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون ﴿٤٨﴾ واذ
نجينكم من ال فرعون يسومونكم سوء العذاب يذبحون ابناءكم و
يستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم ﴿٤٩﴾ واذ فرقنا بكم
البحر فانجينكم واغرقنا ال فرعون وانتم تنظرون ﴿٥٠﴾ واذ وعدنا
موسى اربعين ليلة ثم اتخذتم العجل من بعده وانتم ظلمون ﴿٥١﴾ ثم
عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون ﴿٥٢﴾ واذ اتينا موسى الكتب
والفرقان لعلكم تهتدون ﴿٥٣﴾ واذ قال موسى لقومه يقوم انكم ظلمتم
انفسكم باتخاذكم العجل فتوبوا الى باريكم فاقتلوا انفسكم ذلكم
خير لكم عند باريكم فتاب عليكم انه هو التواب الرحيم ﴿٥٤﴾ واذ قلتم

मिन् आलि फ़िर्औ़-न यसूमूनकुम् सू-अल्अ़ज़ाबि युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्‌यू-न
निसा-अकुम् ۖ व फ़ी ज़ालिकुम् बला-उम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (४९) व इज़ फ़-रक़्ना
बि कुमुल्बह्-र फ़ अन्-जैनाकुम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ़-न व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५०)
व इज़् वाअ़द्ना मूसा अर्बअ़ी-न लैलतन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्-अ़िज्-ल मिम्बअ़्दिही
व अन्तुम् ज़ालिमून (५१) सुम्-म अ़फ़ौना अ़न्कुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि-क लअ़ल्लकुम्
तश्कुरून (५२) व इज़ आतैना मूसल्किता-ब वल्फ़ुर्क़ा-न लअ़ल्लकुम् तह्तदून
(५३) व इज़ क़ा-ल मूसा लि क़ौमिही या क़ौमि इन्नकुम् ज़-लम्तुम् अन्फ़ुसकुम्
बित्तिख़ाज़िकुमुल्-इ़ज्-ल फ़ तूबू इला बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ुसकुम् ۖ ज़ालिकुम्
ख़ैरुल्लकुम् अ़िन्-द बारिइकुम् ۖ फ़-ता-ब अ़लैकुम् ۖ इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम (५४)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐ आले याक़ूब (बनी इस्राईल !) मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और उस इक़रार को पूरा करो जो तुम ने मुझ से किया था। मैं उस इक़रार को पूरा करूंगा, जो मैंने तुमसे किया था और मुझी से डरते रहो। (४०) और जो किताब मैंने (अपने रसूल मुहम्मद सल्ल० पर) नाज़िल की है, जो तुम्हारी किताब (तौरात) को सच्चा कहती है, उस पर ईमान लाओ और उसके पहले-पहले इन्कारी न बनो और मेरी आयतों में (घटा-बढ़ा कर के) उन के बदले थोड़ी-सी क़ीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) न हासिल करो और मुझी से ख़ौफ़ रखो। (४१) और हक़ को बातिल के साथ न मिलाओ और सच्ची बात को जान-बूझ कर न छिपाओ। (४२) और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और (ख़ुदा के आगे) झुकने वालों के साथ झुका करो। (४३) (यह) क्या (अक़्ल की बात है कि) तुम लोगों को नेकी करने को कहते हो और अपने आपको भुलाये देते हो, हालांकि तुम (ख़ुदा की) किताब भी पढ़ते हो, क्या तुम समझते नहीं ? (४४) और (रंज व तक्लीफ़ में) सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो और बेशक नमाज़ गरां (बोझ) है, मगर उन लोगों पर (गरां नहीं), जो इज्ज़ करने वाले (यानी अल्लाह का डर रखने वाले) हैं। (४५) जो यक़ीन किये हुए हैं कि वे अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं और उसकी तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। ★●
(४६) ऐ याक़ूब की औलाद ! मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और यह कि मैंने तुमको जहान (दुनिया) के लोगों पर फ़ज़ीलत दी थी। (४७) और उस दिन से डरो, जब कोई किसी के कुछ भी काम न आये और न किसी की सिफ़ारिश मंज़ूर की जाए और न किसी से किसी तरह का बदला क़ुबूल किया जाए और न लोग (किसी और तरह) मदद हासिल कर सकें। (४८) और (हमारे उन एहसानात को याद करो,) जब हमने तुम को फ़िर्औन[1] की क़ौम से मुख़्लिसी बख़्शी। वे (लोग) तुमको बड़ा दुख देते थे। तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियों को ज़िंदा रहने देते थे, और इसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बड़ी (सख़्त) आज़माइश थी। (४९) और जब हमने तुम्हारे लिए दरिया को फाड़ दिया, तो तुमको निजात दी और फ़िर्औन की क़ौम को डुबा दिया और तुम देख ही तो रहे थे। (५०) और जब हमने मूसा से चालीस रात का वायदा किया, तो तुमने उनके पीछे बछड़े को (माबूद) मुक़र्रर कर लिया और तुम ज़ुल्म कर रहे थे। (५१) फिर उसके बाद हमने तुमको माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक्र करो। (५२) और जब हमने मूसा को किताब और मोजज़े इनायत किये, ताकि तुम हिदायत हासिल करो। (५३) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि भाइयो, तुमने बछड़े को (माबूद) ठहराने में (बड़ा) ज़ुल्म किया है, तो अपने पैदा करने वाले के आगे तौबा करो और अपने आपको हिलाक कर डालो। तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है। फिर उसने तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दिया। वह बेशक माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। (५४) और जब तुमने

१. फ़िर्औन किसी ख़ास शख़्स का नाम न था, बल्कि उन वक़्तों में मिस्र के हर बादशाह को फ़िर्औन कहते थे। जो फ़िर्औन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वक़्त में था, उस का नाम वलीद बिन मुसअब बिन रय्यान था। कुछ ने मुसअब बिन रय्यान कहा है। कहते हैं कि लोगों ने फ़िर्औन से यह बात कही थी कि बनी इस्राईल एक ऐसे शख़्स के पैदा होने के इन्तिज़ार में हैं, जिस की वजह से वे फ़िर्औन के पंजे से रिहाई पाएंगे और उन को बहुत तरक़्क़ी हासिल होगी। यह सुन कर फ़िर्औन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल में जो लड़का पैदा हो, वह क़त्ल कर दिया जाए। कुछ कहते हैं कि फ़िर्औन ने एक सपना देखा था कि एक आग बैतुलमक़्दिस से निकल कर मिस्र

(शेष पृष्ठ १३ पर)

★रु. ५/५ आ ७ ●रुबुअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन् नुअ्मि-न ल-क हत्ता न-रल्ला-ह जह्रतन्
फ़- अ-ख़-ज़त्कुमुस्साअिक़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५५) सुम्-म ब-अ़स्नाकुम् मिम्बअ्दि
मौतिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (५६) व ज़ल्लल्ना अ़लैकुमुल्-ग़मा-म व
अन्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्मन्-न वस्सल्वा ط कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् ط
व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम्
यज़्लिमून (५७) व इज़् क़ुल्नद्ख़ुलू
हाज़िहिल्-क़र्य-त फ़ कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम्
र-ग़दंव्वद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदंव-व क़ूलू हित्ततुन्
नग़्फ़िर् लकुम् ख़तायाकुम् ط व
स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन (५८) फ़ बद्द-लल्लज़ी-न
ज़-लमू क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़ अन्ज़ल्-ना
अ़लल्लज़ी-न ज़-लमू रिज्ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा
कानू यफ़्सुक़ून ★ (५९) व इज़िस्तस्क़ा
मूसा लि क़ौमिही फ़ क़ुल्नज़्रिब् बि अ़साकल्-
ह-जर ط फ़न्फ़-ज-रत् मिन् हुस्-नता अ-श्-र-त अैनन् ط
क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम्-मश्रबहुम् ط
कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ्-सौ
फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (६०) व इज़ क़ुल्तुम्
या मूसा लन् नस्बि-र अ़ला तआमिंव्वाहिदिन्

يٰمُوسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ۝٥٥ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٥٦ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ
الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا
ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٥٧ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا
مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ
وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٨ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا
عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٥٩ وَاِذِ اسْتَسْقٰى ع
مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٦٠ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ
فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا
وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ؕ
اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ
وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝٦١ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع
وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

فदअ़ु लना रब्ब-क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल्-अर्-ज़ु मिम्बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा
व फ़ूमिहा व अ़-दसिहा व ब-स़लिहा ط क़ा-ल अ तस्तब्दिलूनल्लज़ी हु-व अद्ना बिल्लज़ी
हु-व ख़ैरुन् ط इह्बितू मिस्रन् फ़ इन-न लकुम् मा स-अल्तुम् ط व ज़ुरिबत्
अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल्मस्कनतु ق व बा-ऊ बि ग़ज़बिम्-मिनल्लाहि ط ज़ालि-क
बिअन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरिल्-
हक़्क़ि ط ज़ालि-क बिमा अ़सव्-व कानू यअ्-तदून ★ (६१) इन्नल्लज़ी-न
आमनू वल्लज़ी-न हादू वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न बिल्लाहि
वल्-यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़ लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द
रब्बिहिम् ج व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६२)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(मूसा से) कहा कि मूसा जब तक हम ख़ुदा को सामने न देख लेंगे, तुम पर ईमान नहीं लायेंगे, तो तुमको बिजली ने आ घेरा और तुम देख रहे थे। (५५) फिर मौत आ जाने के बाद हमने तुमको फिर से ज़िंदा कर दिया, ताकि एहसान मानो। (५६) और बादल का तुम पर साया किये रखा और (तुम्हारे लिए) मन्न व सलवा उतारते रहे कि जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको अता फ़रमायी हैं, उनको खाओ (पियो,) मगर तुम्हारे बुज़ुर्गों ने इन नेमतों की कुछ क़द्र न जानी (और) वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ते थे, बल्कि अपना ही नुक़्सान करते थे। (५७) और जब हमने (उन से) कहा कि इस गांव में दाख़िल हो जाओ और इसमें जहां से चाहो, ख़ूब खाओ (पियो) और (देखना) दरवाज़े में दाख़िल होना तो सज्दा करना और 'हित्ततुन' कहना, हम तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे। (५८) तो जो ज़ालिम थे, उन्हों ने इस लफ़्ज़ को, जिसका उनको हुक्म दिया था, बदल कर उसकी जगह और लफ़्ज़ कहना शुरू किया, पस हमने (उन) ज़ालिमों पर आसमान से अज़ाब नाज़िल किया, क्योंकि ना-फ़रमानियां किए जाते थे।[1] ★ (५९)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए (ख़ुदा से) पानी मांगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो। (उन्होंने लाठी मारी) तो फिर उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और तमाम लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम (करके पानी पी) लिया। (हमने हुक्म दिया कि) ख़ुदा की (अता फ़रमायी हुई) रोज़ी खाओ और पियो, मगर ज़मीन में फ़साद न करते फिरना। (६०) और जब तुमने कहा कि मूसा! हम से एक (ही) खाने पर सब्र नहीं हो सकता, तो अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए कि तरकारी और ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज़ (वग़ैरह) जो नबातात ज़मीन से उगती हैं, हमारे लिए पैदा कर दे। उन्होंने कहा कि भला उम्दा चीज़ें छोड़कर उनके बदले नाक़िस (ख़राब) चीज़ें क्यों चाहते हो? (अगर यही चीज़ें चाहिएं) तो किसी शहर में जा उतरो, वहां जो मांगते हो, मिल जाएगा और (आख़िरकार) ज़िल्लत (व रुसवाई) और मुहताजी (व बे-नवाई) उनसे चिमटा दी गयी और वे ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गये। यह इस लिए कि वे ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे और (उसके) नबियों को ना-हक़ क़त्ल कर देते थे। (यानी) यह इस लिए कि ना-फ़रमानी किये जाते और हद से बढ़े जाते थे। ★ (६१)

जो लोग मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई या सितारापरस्त (यानी कोई शख़्स, किसी क़ौम व मज़्हब का हो) जो ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, तो ऐसे लोगों को उन के (आमाल) का बदला ख़ुदा के यहां मिलेगा और (क़ियामत के दिन) उन को न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (६२) और जब हमने तुम से अह्द (कर)

(पृष्ठ ११ का शेष)

के घरों को आ लगी है, लेकिन बनी इस्राईल के घर उस से बच गये हैं। इसे सुन कर ताबीर (स्वप्न फल) बताने वालों ने यह बताया कि बनी इस्राईल में एक लड़का पैदा होगा, जो मिस्री हुकूमत ख़त्म करने की वजह बनेगा। इस डर से फ़िऔन ने वह हुक्म दिया था। इसी बीच मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और जिस अजीब तरीक़े से ख़ुदा ने उन को फ़िऔनियों के हाथ से बचाया, इस की तफ़्सील और जगहों पर है। आख़िर मूसा अलैहिस्सलाम फ़िऔनियों की तबाही और इस्राईलियों की मुख़्लिसी की वजह बने।

१. बनी इस्राईल जब मूसा अलैहिस्सलाम के साथ मिस्र से निकले थे, तो उन को हुक्म हुआ था कि अर्ज़े मुक़द्दस (पाक धरती) में जाओ। वह तुम्हारे बाप इस्राईल की मीरास है। वहां जो काफ़िर अमालीक़ रहते हैं, उन से

(शेष पृष्ठ १५ पर)

★रु. ६/६ आ १३ ★रु. ७/७ आ २

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् अ-ख़ज़्ना मीसाक़-कुम् व रफ़अ्-ना फ़ौक़-कुमुत्तू-र ط ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (६३) सुम्-म तवल्लैतुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि-क ج फ़ लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरीन (६४) व ल-क़द् अ़लिम्तुमुल्लज़ीनअ़्-तदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़-क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-द-तन् ख़ासि-ईन ج (६५) फ़-ज-अ़ल्नाहा नकालल्लिमा बै-न यदैहा व मा ख़ल्फ़हा व मौअि-ज-तल्-लिल्-मुत्तक़ीन (६६) व इज़् क़ा-ल मूसा लि क़ौमिही इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तज़्बहू ब-क़-र-तन् ط क़ालू अ तत्तख़िज़ुना हुज़ुवन् ط क़ा-ल अऊ़ज़ु बिल्लाहि अन् अकू-न मिनलजाहिलीन (६७) क़ालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य ط क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला - फ़ारिज़ुंव - व ला-बिक्रुन् ط अ़वानुम्बै-न ज़ालि-क ط फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून (६८) क़ालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मालौनुहा ط क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुन् सफ़्रा-उ ل फ़ाक़िउल्लौनुहा तसुर्रुन्नाज़िरीन (६९) क़ालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य ل इन्नल्-ब-क़-र तशाब-ह अ़लैना ط व इन्ना इन्शा-अल्लाहु ल-मुह्तदून (७०) क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला - ज़लूलुन् तुसीरुल्अर-ज़ व ला तस्क़िल्हर्-स ج मुसल्लमतुल्ला-शि-य-त फ़ीहा ط क़ालुल्आ-न जिअ्-त बिल्ह़क़्क़ि ط फ़-ज-बहूहा व मा कादू यफ़्अ़लून ★ (७१) व इज़् क़-तल्तुम् नफ़्सन् फ़द्दारअ्तुम् फ़ीहा ط वल्लाहु मुख़्रिजुम्मा कुन्तुम् तक्तुमून ج (७२) फ़ क़ुल्नज़्रिबूहु बि बअ़्ज़िहा ط कज़ालि-क युह़्यिल्लाहुल्मौता व युरीकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम् तअ़्-क़िलून (७३)

الم ٩ البقرة٢

يحزنون ۝ واذ اخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور خذوا ما اتينكم
بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون ۝ ثم توليتم من بعد ذلك فلولا
فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخسرين ۝ ولقد علمتم
الذين اعتدوا منكم في السبت فقلنا لهم كونوا قردة خسئين ۝
فجعلنها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للمتقين ۝
واذ قال موسى لقومه ان الله يامركم ان تذبحوا بقرة قالوا اتتخذنا
هزوا قال اعوذ بالله ان اكون من الجهلين ۝ قالوا ادع لنا ربك
يبين لنا ما هي قال انه يقول انها بقرة لا فارض ولا بكر عوان
بين ذلك فافعلوا ما تؤمرون ۝ قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها
قال انه يقول انها بقرة صفراء فاقع لونها تسر النظرين ۝ قالوا
ادع لنا ربك يبين لنا ما هي ان البقر تشبه علينا وانا ان شاء
الله لمهتدون ۝ قال انه يقول انها بقرة لا ذلول تثير الارض
ولا تسقي الحرث مسلمة لا شية فيها قالوا الئن جئت بالحق
فذبحوها وما كادوا يفعلون ۝ واذ قتلتم نفسا فادرءتم فيها ع
والله مخرج ما كنتم تكتمون ۝ فقلنا اضربوه ببعضها كذلك
يحي الله الموتى ويريكم ايته لعلكم تعقلون ۝ ثم قست قلوبكم
من بعد ذلك فهي كالحجارة او اشد قسوة وان من الحجارة

منزل

★रु. ८/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिया और तूर पहाड़ को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया) कि जो किताब हमने तुम को दी है, उसको ज़ोर से पकड़े रहो और जो उसमें (लिखा) है, उसे याद रखो, ताकि (अज़ाब से) महफ़ूज़ रहो। (६३) तो तुम इसके बाद (अह्द से) फिर गये और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो तुम घाटे में पड़ गये होते। (६४) और तुम उन लोगों को ख़ूब जानते हो, जो तुम में से हफ़्ते के दिन (मछली का शिकार करने) में हद से आगे बढ़ गये थे, तो हमने उनसे कहा कि ज़लील व ख़्वार बन्दर हो जाओ।[1] (६५) और इस क़िस्से को उस वक़्त के लोगों के लिए और जो उनके बाद आने वाले थे इबरत (सबक़) और परहेज़गारों के लिए नसीहत बना दिया। (६६) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि ख़ुदा तुमको हुक्म देता है कि एक बैल ज़िब्ह करो। वे बोले, क्या तुम हमसे हंसी करते हो? (मूसा ने) कहा कि मैं ख़ुदा की पनाह मांगता हूं कि नादान बनूं। (६७) उन्होंने कहा, अपने परवरदिगार से इल्तिजा (निवेदन) कीजिए कि वह हमें बताये कि वह बैल किस तरह का हो? (मूसा ने) कहा, परवरदिगार फ़रमाता है कि वह बैल न तो बूढ़ा हो और न बछड़ा, बल्कि उन के दर्मियान (यानी जवान) हो, सो जैसा तुम को हुक्म दिया गया है, वैसा करो। (६८) उन्होंने कहा, अपने परवरदिगार से दर्ख़्वास्त कीजिए कि हमको यह भी बता दे कि उसका रंग कैसा हो? मूसा ने कहा, परवरदिगार फ़रमाता है कि उसका रंग गहरा ज़र्द (पीला) हो कि देखने वालों (के दिल) को ख़ुश कर देता हो। (६९) उन्होंने कहा (इस बार) परवरदिगार से फिर दर्ख़्वास्त कीजिए कि हम को बता दे कि वह और किस-किस तरह का हो, क्योंकि बहुत से बैल हमें एक दूसरे से मिलते मालूम होते हैं। (फिर) ख़ुदा ने चाहा तो हमें ठीक बात मालूम हो जाएगी। (७०) मूसा ने कहा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि वह बैल काम में लगा हुआ न हो, न तो ज़मीन जोतता हो और न तो खेती को पानी देता हो, उसमें किसी तरह का दाग़ न हो। कहने लगे, अब तुमने सब बातें ठीक-ठीक बता दीं। ग़रज़ (बड़ी मुश्किल से) उन्होंने उस बैल को ज़िब्ह किया और वे ऐसा करने वाले थे नहीं। (७१) ★

और जब तुमने एक शख़्स को क़त्ल किया, तो उस (के बारे) में आपस में झगड़ने लगे, लेकिन जो बात तुम छिपा रहे थे, ख़ुदा उसको ज़ाहिर करने वाला था। (७२) तो हमने कहा कि इस बैल का कोई सा टुकड़ा मक़्तूल (जिसे क़त्ल किया गया) को मारो। 'इस तरह ख़ुदा मुर्दों को ज़िंदा करता है और तुम को अपनी (क़ुदरत की) निशानियां दिखाता है, ताकि तुम समझो।[2] (७३)

(पृष्ठ १३ का शेष)
जंग कर के उन को निकाल दो। ख़ुदा ने यह भी वायदा फ़रमाया था कि जंग में उन को फ़त्ह हासिल होगी, मगर उन्होंने जंग करने से हिम्मत हार दी, तो ख़ुदा ने उन को इस अज़ाब में मुब्तला किया कि चालीस वर्ष जंगल में परेशान घूमते रहे। चालीस वर्ष के बाद वे उस जंगल से निकले। उस वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम फ़ौत (इन्तिक़ाल) हो चुके थे। यूशेअ बिन नून अलैहिस्सलाम साथ थे। अब उन्होंने अमालक़ा से जंग की तो ख़ुदा ने फ़त्ह दी और हुक्म हुआ कि शहर के दरवाज़े में सज्दा कर के और 'हित्तुन' कह कर दाख़िल हो। हित्तुन् के मानी मग़्फ़िरत व इस्तग़्फ़ार के हैं यानी हमारे गुनाह माफ़ कर। मगर उन्होंने हित्तुन की जगह 'हिन्तः' यानी गेहूं कहा और बजाए सज्दे के सुरीन के बल दाख़िल हुए। इस ना-फ़रमानी और बे-अदबी की वजह से ख़ुदा ने फिर उन को अज़ाब में मुब्तला कर दिया।

१. यहूद को हुक्म था कि हफ़्ते के दिन की ताज़ीम (आदर) करें और उस में मछली का शिकार न करें, तो वे (शेष पृष्ठ ९७६ पर)

★रु. ८/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुम्-म क़-सत् क़ुलूबुकुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि-क फ़ हि-य कल्हिजारति औ अशद्दु
क़स्वतन्,व इन्-न मिनल्हिजारति लमा य-त-फ़ज्जरु मिन्हुल्अन्हारु,व इन्-न
मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ़ यख़्रुजु मिन्हुल्मा-उ,व इन्-न मिन्हा लमा
यह्बितु मिन् ख़श्यतिल्लाहि,व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्-मलून (७४)
अ-फ़-तत्मअ़ू-न अंय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् का-न
फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् यस्मऊ-न कलामल्लाहि
सुम्-म युहर्रिफ़ूनहू मिम्बअ़्दि मा अ-क़लूहु व
हुम् यअ़्-लमून (७५) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न
आमनू क़ालू आमन्ना,व इज़ा ख़ला
बअ़्-ज़ुहुम् इला बअ़्-ज़िन् क़ालू अतुहद्दिसू-न-हुम्
बिमा फ़-त-हल्लाहु अ़लैकुम् लियुहाज्जूकुम्
बिही अ़िन्-द रब्बिकुम्,अ-फ़ला तअ़्-क़िलून
(७६) अ-व ला यअ़्-लमू-न अन्नल्ला-ह तअ़्-लमु
मा युसिरू-न व मा युअ़्-लिनून (७७) व
मिन्हुम् उम्मिय्यू-न ला यअ़्-लमूनल्-किता-ब
इल्ला अमानिय-य व इन् हुम् इल्ला
यज़ुन्नून ● (७८) फ़वैलुल् - लिल्लज़ी - न
यक्तुबूनल्किता-ब बिऐदीहिम्,सुम्-म यक़ूलू-न
हाज़ा मिन् अ़िन्दिल्लाहि लियश्तरू बिही स-म-नन् क़लीलन्,फ़ वैलुल्लहुम्
मिम्मा क-त-बत् ऐदीहिम् व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून (७९) व क़ालू
लन् तमस्सनन्नारु इल्ला अय्यामम्-मअ़्-दूदतन्,क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अ़िन्दल्लाहि
अ़हदन् फ़-लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु अ़हदहू अम् तक़ूलू-न अ़-लल्लाहि मा ला तअ़्-लमून
(८०) बला मन् क-स-ब सय्यिअतंव-व अहातत् बिही ख़तीअतुहू फ़ उला-इ-क
अस्हाबुन्नारि,हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (८१) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति
उला-इक अस्हाबुल्जन्नति,हुम् फ़ीहा ख़ालिदून ★ (८२) व इज़् अ-ख़ज़्ना
मीसा-क़ बनी इस्रा-ईल ला तअ़्-बुदून इल्लल्ला-ह व बिल्वालिदैनि इह्सानंव-व
ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि व क़ूलू लिन्नासि हुस्नंव-व अक़ीमुस्सला-त व
आतुज़्ज़का-त,सुम्-म तवल्लैतुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्कुम् व अन्तुम् मुअ़्-रिज़ून (८३)

الٓمّٓ ١٠ البقرة ٢

لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَ
اِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾
اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ
اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا
فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ
بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوْا
لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ
يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ
سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا
اللّٰهَ ۟ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ
حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये, गोया वे पत्थर हैं, या उनसे भी ज़्यादा सख़्त और पत्थर तो कुछ ऐसे होते हैं कि उनमें से चश्मे फूट निकलते हैं और कुछ ऐसे होते हैं कि फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलने लगता है और कुछ ऐसे होते हैं कि ख़ुदा के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं और ख़ुदा तुम्हारे अमलों से बे-ख़बर नहीं। (७४) (मोमिनो !) क्या तुम उम्मीद रखते हो कि ये लोग तुम्हारे (दीन के) क़ायल हो जाएंगे, (हालांकि) उनमें से कुछ लोग कलामे ख़ुदा (यानी तौरात) को सुनते फिर उसके सुन लेने के बाद उसको जान-बूझ कर बदल देते रहे हैं।[1] (७५) और ये लोग जब मोमिनों से मिलते हैं, तो कहते हैं, हम ईमान ले आये हैं और जिस वक़्त आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं, जो बात ख़ुदा ने तुम पर ज़ाहिर फ़रमायी है, वह तुम उनको इस लिए बता देते हो कि (क़ियामत के दिन) उसी के हवाले से तुम्हारे परवरदिगार के सामने तुमको इल्ज़ाम दें। क्या तुम समझते नहीं ? (७६) क्या ये लोग यह नहीं जानते कि जो कुछ ये छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, ख़ुदा को (सब) मालूम है।[2] (७७) और कुछ उन में अनपढ़ हैं कि अपने बातिल ख़्यालों के सिवा (ख़ुदा की) किताब को जानते ही नहीं और वे सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं (७८) ●
तो उन लोगों पर अफ़सोस है जो अपने हाथ से तो किताब लिखते हैं और कहते यह हैं कि यह ख़ुदा के पास से (आयी) है, ताकि उसके बदले थोड़ी-सी क़ीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) हासिल कर लें। उन पर अफ़सोस है, इस लिए कि (बे-असल बातें) अपने हाथ से लिखते हैं और (फिर) उन पर अफ़सोस है, इसलिए कि ऐसे काम करते हैं। (७९) और कहते हैं कि (दोज़ख़ की आग) हमें कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकेगी। उनसे पूछो, क्या तुमने ख़ुदा से इक़रार ले रखा है कि ख़ुदा अपने इक़रार के ख़िलाफ़ नहीं करेगा। (नहीं) बल्कि तुम ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहते हो, जिन्हें तुम बिल्कुल नहीं जानते।[3] (८०) हां, जो बुरे काम करे और उसके गुनाह (हर तरफ़ से) उसको घेर लें तो ऐसे लोग दोज़ख़ (में जाने) वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें (जलते) रहेंगे। (८१) और जो ईमान लाएं और नेक काम करें वे जन्नत के मालिक होंगे और हमेशा उसमें (ऐश करते) रहेंगे। (८२) ★

और जब हमने बनी इस्राईल से अह्द लिया कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करना और मां-बाप और रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों के साथ भलाई करते रहना और लोगों से अच्छी बातें कहना और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहना तो कुछ लोगों के अलावा तुम सब (इस

---

१. ये लोग कुछ बहुत ही निडर थे। ख़ुदा के कलाम के बदल देने में भी कोई शर्म नहीं करते थे। तह्रीफ़ में इख़्तिलाफ़ है कि किस क़िस्म की थी। बाज़ कहते हैं कि लफ़्ज़ी थी, यानी लफ़्ज़ बदल देते थे। कुछ लोग कहते हैं कि तह्रीफ़ मानी में थी यानी मानी बिगाड़ देते थे। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी इसी के क़ायल हैं। कुछ कहते हैं लफ़्ज़ और मानी दोनों में थी, बहरहाल तमाम मुसलमान यहूदियों और ईसाइयों की किताबों को तह्रीफ़ की हुई और तब्दील की हुई मानते हैं और उन पर एतबार नहीं करते। मुसलमानों को इस बात पर फ़ख़्र है कि उन की आसमानी किताब में तह्रीफ़ नहीं हुई और हो सकती भी नहीं, क्योंकि ख़ुदा ने उस की हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ले ली है।

२. इन आयतों में मुनाफ़िक़ों का हाल बयान फ़रमाया गया है। कुछ मुनाफ़िक़ ऐसे भी थे कि हज़रत पैग़म्बर सल्ल० के आने की पेशीनगोई, जो उन की किताबों में लिखी हुई थी, और जो उन पर उन के गुनाहों की वजह से पहले अज़ाब नाज़िल होते रहे थे, वह मुसलमानों से बयान कर देते थे। तो और मुनाफ़िक़ उन से कहते कि तुम

(शेष पृष्ठ ६७७ पर)

● नि. १/२ ★रु. ९/९ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ अ-ख़ज़्ना मीसाक़कुम् ला तस्फ़िकू-न दिमाअकुम् व ला तुख़्रिजू-न अन्फ़ुसकुम्
मिन् दियारिकुम् सुम्-म अक़्रर्तुम् व अन्तुम् तश्हदून (८४) सुम्-म अन्तुम् हा उलाइ
तक़्तुलू-न अन्फ़ुसकुम् व तुख़्रिजू-न फ़रीक़म्-मिन्कुम् मिन् दियारिहिम् ॅ तज़ाहरू-न
अलैहिम् बिल्-इस्मि वल्-उद्वानि ॅ व इंय्यअ्तूकुम् उसारा तुफ़ादूहुम् व हु-व
मुहर्रमुन् अलैकुम् इख़्राजुहुम् ॅ अ-फ़-तुअ्मिनू-न
बिबअ्-ज़िल्-किताबि व तक्फ़ुरू-न बिबअ्ज़िन्
फ़ मा जज़ाउ मंय्यफ़्-अलु ज़ालि-क मिन्कुम् इल्ला
ख़िज़्युन् फ़िल्-हयातिद्दुन्या ॅ व यौमल्-क़ियामति
युरद्दून इला अशद्दिल्-अज़ाबि ॅ व मल्लाहु
बि ग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून (८५)
उलाइकल्लज़ीनश्-त - र - वुल्हयातद्दुन्या
बिल्आख़िरति ॅ फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्-अज़ाबु
व ला हुम् युन्सरून ★ (८६) व ल-क़द्
आतैना मूसल्किता-ब व क़फ़्फ़ैना मिम्बअ्दिही
बिर्रुसुलि ॅ व आतैना ईसब्-न मर्यमल्बय्यिनाति
व अय्यद्नाहु बि रूहिल्क़ुदुसि ॅ अ-फ़-कुल्लमा
जाअकुम् रसूलुम्बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्-
तक्बर्तुम् ॅ फ़ फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् ॅ व फ़रीक़न्
तक़्तुलून (८७) व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् ॅ बल् ल-अ-नहुमुल्लाहु बि कुफ़्रिहिम्
फ़ क़लीलम्मा युअ्मिनून (८८) व लम्मा जाअहुम् किताबुम्मिन् अिन्दिल्लाहि
मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अहुम् ॅ व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहू-न अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू
फ़ लम्मा जाअहुम् मा अ्-रफ़ू क-फ़रू बिही ॅ फ़ लअ्-नतुल्लाहि अ्-लल्-काफ़िरीन
(८९) बिअ्-स-मश्तरौ बिही अन्फ़ुसहुम् अंय्यक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़्यन्
अंय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अिबादिही ॅ फ़ बाऊ
बि ग़-ज़बिन् अ़ला ग़-ज़बिन् ॅ व लिल्काफ़िरी-न अज़ाबुम्-मुहीन (९०) व इज़ा
क़ी-ल लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नुअ्मिनु बिमा उन्ज़ि-ल अ़लैना
व यक्फ़ुरू-न बिमा वरा-अहू ॅ व हुवल्हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा म-अहुम् ॅ क़ुल्
फ़ लि-म तक़्तुलू-न अम्बियाअल्लाहि मिन् क़ब्लु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (९१)

الم البقرة ٢

معرضون ﴿٨٣﴾ وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ولا تخرجون أنفسكم
من دياركم ثم أقررتم وأنتم تشهدون ﴿٨٤﴾ ثم أنتم هؤلاء تقتلون أنفسكم
وتخرجون فريقا منكم من ديارهم تظاهرون عليهم بالإثم والعدوان
وإن يأتوكم أسارى تفادوهم وهو محرم عليكم إخراجهم أفتؤمنون ببعض
الكتب وتكفرون ببعض فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزي في الحيوة
الدنيا ويوم القيمة يردون إلى أشد العذاب وما الله بغافل عما تعملون ﴿٨٥﴾
أولئك الذين اشتروا الحيوة الدنيا بالآخرة فلا يخفف عنهم العذاب ولا
هم ينصرون ﴿٨٦﴾ ع ولقد آتينا موسى الكتب وقفينا من بعده بالرسل وآتينا
عيسى ابن مريم البينت وأيدنه بروح القدس أفكلما جاءكم رسول بما
لا تهوى أنفسكم استكبرتم ففريقا كذبتم وفريقا تقتلون ﴿٨٧﴾ وقالوا قلوبنا
غلف بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ﴿٨٨﴾ ولما جاءهم كتب من
عند الله مصدق لما معهم وكانوا من قبل يستفتحون على الذين
كفروا فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكفرين ﴿٨٩﴾ بئسما اشتروا
به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله بغيا أن ينزل الله من فضله على
من يشاء من عباده فباءو بغضب على غضب وللكفرين عذاب مهين ﴿٩٠﴾
وإذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا نؤمن بما أنزل علينا ويكفرون
بما وراءه وهو الحق مصدقا لما معهم قل فلم تقتلون أنبياء الله من

अह्द से) मुंह फेर कर बैठ गए। (८३) और जब हमने तुमसे अह्द लिया कि आपस में कुश्त व ख़ून न करना और अपने को उनके वतन से न निकालना, तो तुमने इक़रार कर लिया और तुम (इस बात के) गवाह हो। (८४) फिर तुम वही हो कि अपनों को क़त्ल भी कर देते हो और अपने में से कुछ लोगों पर गुनाह और ज़ुल्म से चढ़ाई करके उन्हें वतन से निकाल भी देते हो और अगर वे तुम्हारे पास क़ैद होकर आएं तो बदला देकर उनको छुड़ा भी लेते हो, हालांकि उन का निकाल देना ही तुमको हराम था। (यह) क्या (बात है कि) तुम (ख़ुदा की) किताब के कुछ हुक्मों को तो मानते हो और कुछ में इन्कार किये देते हो, तो जो तुममें से ऐसी हरकत करें, उनकी सज़ा इसके सिवा और क्या हो सकती है कि दुनिया की ज़िंदगी में तो रुसवाई हो और क़ियामत के दिन सख़्त से सख़्त अज़ाब में डाल दिए जाएं। और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा उनसे ग़ाफ़िल नहीं। (८५) ये वह लोग हैं, जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी, सो न तो उनसे अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उनको (और तरह की) मदद मिलेगी। (८६) ★

और हमने मूसा को किताब इनायत की और उन के पीछे एक के बाद दूसरा पैग़म्बर भेजते रहे और ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां बख़्शीं और रूहुल क़ुद्स (यानी जिब्रील) से उनको मदद दी, तो जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आये जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियों के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे। (८७) और कहते हैं, हमारे दिल पर्दे में हैं[1]। (नहीं) बल्कि ख़ुदा ने उनके कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है, पस ये थोड़े ही पर ईमान लाते हैं। (८८) और जब ख़ुदा के यहां से उनके पास किताब आयी, जो उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक़ करती है और वे पहले (हमेशा) काफ़िरों पर फ़त्ह मांगा करते थे, तो जिस चीज़ को वे ख़ूब पहचानते थे, जब उनके पास आ पहुंची, तो उससे क़ाफ़िर हो गये, पस काफ़िरों पर ख़ुदा की लानत। (८९) जिस चीज़ के बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह बहुत बुरी है यानी इस जलन से कि ख़ुदा अपने बन्दों में से, जिस पर चाहता है, अपनी मेहरबानी में से नाज़िल फ़रमाता है, ख़ुदा की नाज़िल की हुई किताब से कुफ़्र करने लगे, तो वें (उसके) ग़ज़ब पर ग़ज़ब में मुब्तला हो गये और काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने (अब) नाज़िल फ़रमायी है, उसको मानो तो कहते हैं कि जो किताब हम पर (पहले) नाज़िल हो चुकी है, हम तो उसी को मानते हैं (यानी) ये उस के सिवा और (किताब) को नहीं मानते, हालांकि वह (सरासर) सच्ची है और जो उन की (आसमानी) किताब है, उसकी भी तस्दीक़ करती है। (उन से) कह दो कि अगर तुम ईमान वाले होते तो ख़ुदा के पैग़म्बरों को पहले

---

१. यहूदी कहते थे कि हमारे दिल पर्दे में हैं यानी हम अपने दीन के सिवा किसी की बात समझ ही नहीं सकते। ख़ुदा ने फ़रमाया कि दिल पर्दे में नहीं हैं, बल्कि ख़ुदा ने कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है। दूसरी जगह फ़रमाया है कि 'बल त-ब-अल्लाहु अलैहा बिकुफ़्रिहिम' या उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, कुछ भी हो, बात ऐसी थी कि ईमान उन के दिलों में दाख़िल ही नहीं होता था और यह ख़ुदा के ग़ज़ब की निशानी है।

★रु० १०/१० आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् जा-अकुम् मूसा बिल्-बय्यिनाति सुम्मत्तखज़्तुमुल्‌अिज्-ल मिम्बअ़दिही
व अन्तुम् ज़ालिमून (९२) व इज़् अ-ख़ज़्ना मीसाक़कुम् व र-फ़अ्-ना
फ़ौक़कुमुत्तू-र ط ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वस्मअ़ू ط क़ालू समिअ्ना व अ़सैना
व उश्‌रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-अिज्-ल बिकुफ़्रिहिम् ط क़ुल् बिअ्-समा यअ्मुरुकुम्
बिही ईमानुकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन
(९३) क़ुल् इन् कानत् लकुमुद्दारुल्-
आख़िरतु अिन्दल्लाहि ख़ालि-स-तम्-मिन्दूनिन्नासि
फ़ त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन
(९४) व लंय्यतमन्नौहु अ-ब-दम् - बिमा
क़द्-द-मत् ऐदीहिम् ط वल्लाहु अ़लीमुम्-
बिज़्ज़ालिमीन (९५) व ल-त-जिदन्नहुम्
अह्‌रसन्नासि अ़ला हयातिन् ج व
मिनल्लज़ी-न अश्‌रकू ج यवद्दु अ-हदुहुम्
लौ युअम्मरु अल्-फ़ स-नतिन् ج व मा हु-व
बि मुज़ह्ज़िहिही मिनल्-अ़ज़ाबि अंय्युअम्मर ط
वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्-मलून ★ (९६)
क़ुल् मन् का-न अ़दुव्वल्लिजिब्री-ल फ़-इन्नहु

الٓمّٓ ١٢ البقرة ٢

قبل ان كنتم مؤمنين ۝ ولقد جاءكم موسى بالبينت ثم اتخذتم العجل
من بعده وانتم ظلمون ۝ واذ اخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور خذوا
ما اتينكم بقوة واسمعوا قالوا سمعنا وعصينا واشربوا في قلوبهم العجل
بكفرهم قل بئسما يامركم به ايمانكم ان كنتم مؤمنين ۝ قل ان
كانت لكم الدار الاخرة عند الله خالصة من دون الناس فتمنوا الموت
ان كنتم صدقين ۝ ولن يتمنوه ابدا بما قدمت ايديهم والله عليم
بالظلمين ۝ ولتجدنهم احرص الناس على حيوة ومن الذين اشركوا
يود احدهم لو يعمر الف سنة وما هو بمزحزحه من العذاب ان يعمر
والله بصير بما يعملون ۝ قل من كان عدوا لجبريل فانه نزله على
قلبك باذن الله مصدقا لما بين يديه وهدى وبشرى للمؤمنين ۝
من كان عدوا لله وملئكته ورسله وجبريل وميكل فان الله عدو
للكفرين ۝ ولقد انزلنا اليك ايت بينت وما يكفر بها الا الفسقون ۝
او كلما عهدوا عهدا نبذه فريق منهم بل اكثرهم لا يؤمنون ۝ و
لما جاءهم رسول من عند الله مصدق لما معهم نبذ فريق من الذين
اوتوا الكتب كتب الله وراء ظهورهم كانهم لا يعلمون ۝ واتبعوا ما تتلوا
الشيطين على ملك سليمن وما كفر سليمن ولكن الشيطين كفروا
يعلمون الناس السحر وما انزل على الملكين ببابل هاروت وماروت وما

مع ع

नज़्ज़लहू अ़ला क़ल्बि-क बि इज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व हुदव-व
बुश्‌रा लिल्मुअ्मिनीन (९७) मन् का-न अ़दुव्वल्लिल्लाहि व मलाइकतिही
व रुसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ़ इन्नल्ला-ह अ़दुव्वुल्-लिल्काफ़िरीन (९८)
व ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलै-क आयातिम्-बय्यिनातिन् ج व मा यक्फ़ुरु बिहा
इल्लल्फ़ासिक़ून (९९) अ-व कुल्लमा आ़हदू अ़ह्दन् न-ब-ज़हू फ़रीक़ुम्मिन्हुम् ط
बल् अक्सरुहुम् ला युअ्मिनून (१००) व लम्मा जा-अहुम् रसूलुम्-मिन्
अिन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अहुम् न-ब-ज़ फ़रीक़ुम्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब
किताबल्लाहि वरा-अ ज़ुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला यअ़-लमून ز (१०१)

∴ मु. अ़ि. मु. ता ख़. २ ★ रु. ११/११ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ही क्यों क़त्ल किया करते ? (९१) और मूसा तुम्हारे पास खुले हुए मोजज़े लेकर आये, तो तुम उनके (तूर पहाड़ पर जाने के) बाद बछड़े को माबूद बना बैठे और तुम (अपने ही हक़ में) ज़ुल्म करते थे। (९२) और जब हमने तुम (लोगों) से पक्का अह्द लिया और तूर पहाड़ को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया कि) जो किताब हमने तुमको दी है, उस को ज़ोर से पकड़ो और (जो तुम्हें हुक्म होता है, उसको) सुनो, तो वे (जो तुम्हारे बड़े थे) कहने लगे कि हम ने सुन तो लिया, लेकिन मानते नहीं और उनके कुफ़्र की वजह से बछड़ा (गोया) उनके दिलों में रच गया था। (ऐ पैग़म्बर ! उन से) कह दो कि अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हारा ईमान तुम को बुरी बात बताता है।[1] (९३) कह दो कि अगर आख़िरत का घर और लोगों (यानी मुसलमानों) के लिए नहीं और ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारे ही लिए मख़्सूस है, तो अगर सच्चे हो तो मौत की आरज़ू तो करो।[2] (९४) लेकिन इन आमाल की वजह से, जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं, ये कभी इसकी आरज़ू नहीं करेंगे और ख़ुदा ज़ालिमों को (ख़ूब) जानता है। (९५) बल्कि उनको तुम और लोगों से ज़िंदगी के कहीं॰लोभी देखोगे;॰यहां तक कि मुश्रिकों से भी। उनमें से हर एक यही ख़्वाहिश करता है कि काश ! वह हज़ार वर्ष जीता रहे, मगर इतनी लंबी उम्र उसको मिल भी जाए तो उसे अज़ाब से तो नहीं छुड़ा सकती और जो काम ये करते हैं, ख़ुदा उनको देख रहा है। (९६) ★

कह दो कि जो शख़्स जिब्रील का दुश्मन हो, (उसको ग़ुस्से में मर जाना चाहिए,) उसने तो (यह किताब) ख़ुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल पर नाज़िल की है, जो पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और ईमान वालों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (९७) जो शख़्स ख़ुदा का और उसके पैग़म्बरों का और जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हो, तो ऐसे क़ाफ़िरों का ख़ुदा दुश्मन है। (९८) और हमने तुम्हारे पास सुलझी हुई आयतें भेजी हैं और उनसे इंकार वही करते हैं जो बद-किरदार हैं। (९९) उन लोगों ने (जब-जब) ख़ुदा से पक्का अह्द किया तो उनमें से एक फ़रीक़ ने उसको (किसी चीज़ की तरह फेंक दिया।) हक़ीक़त यह है कि उनमें अक्सर बे-ईमान हैं। (१००) और जब उन के पास ख़ुदा की तरफ़ से पैग़म्बर (आख़िरी) आये और वह उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक़ करते हैं, तो जिन लोगों को किताब दी गयी थी, उनमें से एक जमाअत ने ख़ुदा की किताब को पीठ पीछे फेंक दिया, गोया वे जानते ही नहीं। (१०१) और उन

---

१. यानी ज़ाहिर में कहा कि हमने माना और चुपके से कहा कि न माना।

२. कहते थे कि जन्नत में हमारे सिवा कोई न जाएगा और हम को अज़ाब न होगा। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर तुम यक़ीनन बहिश्ती हो तो फिर मरने से क्यों डरते हो ?

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वत्तबअ़ू मा तत्लुश्शयातीनु अ़ला मुल्कि सुलैमा-न ‌ व मा क-फ़-र सुलैमानु व
लाकिन्नश्शयाती-न क-फ़रू युअ़ल्लिमूनन्नासस्-सिह्-र ‌ व मा उन्ज़ि-ल अ़लल्मलकैनि
बिबाबि-ल हारू-त व मारू-त ط व मा युअ़ल्लिमानि मिन् अ-हादिन् हत्ता यक़ूला इन्नमा
नह्नु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर् ط फ़ य-त-अ़ल्लमू-न मिन्हुमा मा युफ़र्रिक़ू-न बिही बैनल्-
मर-इ व ज़ौजिही ط व मा हुम् बिज़ार्री-न
बिही मिन् अ-हदिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط
व य-त-अ़ल्लमू-न मा यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अ़ु-
हुम् ط व ल-क़द् अ़लिमू ल-मनिश्तराहु मा लहू
फ़िलआख़िरति मिन् ख़लाक़िन् ط قف व
ल-बिअ्-स मा शरौ बिही अन्फ़ुसहुम् ط लौ कानू
यअ़्-लमून (१०२) व लौ अन्नहुम् आमनू
वत्तक़ौ लमसूबतुम्मिन् अ़िन्दिल्लाहि ख़ैरुन् ط
लौ कानू यअ़्-लमून ★ (१०३) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़ूलू राअ़िना व
क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मअ़ू ط व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन्
अलीमन् (१०४) मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू
मिन् अह्लिल् - किताबि व लल्मुश्रिकी-न
अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैकुम् मिन् ख़ैरिम्-मिर्रब्बिकुम् ط
वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह्मतिही मंय्यशाउ ط वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (१०५)
मा नन्सख़् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम्मिन्हा औ मिस्लिहा ط
अ-लम् तअ़्-लम् अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शै-इन् क़दीर (१०६) अ-लम् तअ़्-लम्
अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव-व
ला नसीर (१०७) अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन्
क़ब्लु ط व मंय्य-त-बद्दलिल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (१०८)
वद्-द कसीरुम्मिन् अह्लिल्किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम्बअ़्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् ج
ह-स-दम्मिन् अ़िन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्बअ़्दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हक़्क़ु फ़अ़्-फ़ू वस्फ़हू
हत्ता यअ़्तियल्लाहु बिअम्रिही ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शै-इन् क़दीर ●
(१०९) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त ط व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम्
मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि ط इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्-मलून बसीर (११०)

الٓمّٓ ١ — ١٣ — البقرة ٢

يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا
مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ
فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ؕ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ ع
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ
يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ
مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمْ
تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ
الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

मंज़िल १

★रु. १२/१२ आ ७ ● सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(गंदी बातों) के पीछे लग गये जो सुलेमान की सल्तनत के ज़माने में शैतान पढ़ा करते थे और सुलेमान ने बिल्कुल कुफ़्र की बात नहीं की, बल्कि शैतान ही कुफ़्र करते थे कि लोगों को जादू सिखाते थे और उन बातों के भी (पीछे लग गये) जो बाबिल शहर में दो फ़रिश्तों (यानी) हारूत और मारूत पर उतरी थीं और वे दोनों किसी को कुछ नहीं सिखाते थे, जब तक यह न कह देते कि हम तो आज़माइश (का ज़रिया) हैं, तुम कुफ़्र में न पड़ो। ग़रज़ लोग उनसे ऐसा (जादू) सीखते, जिससे मियां-बीवी में जुदाई डाल दें और ख़ुदा के हुक्म के सिवा वे इस (जादू) से किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे। और कुछ ऐसे (मंत्र) सीखते जो उन को नुक़्सान ही पहुंचाते और फ़ायदा कुछ न देते। और वह जानते थे कि जो शख़्स ऐसी चीज़ों (यानी जादू और मंत्र वग़ैरह) का ख़रीदार होगा, उस का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और जिस चीज़ के बदले में उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला, वह बुरी थी, काश ! वे (इस बात को) जानते। (१०२) और अगर वे ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ख़ुदा के यहां से बहुत अच्छा बदला मिलता। ऐ काश ! वे इसे जानते होते। (१०३)★

ऐ ईमान वालो ! (बात करते वक़्त ख़ुदा के पैग़म्बर से) 'राअिना' न कहा करो, 'उन्ज़ुर्ना' कहा करो और ख़ूब सुन रखो,[1] और काफ़िरों के लिए दुख देने वाला अज़ाब है। (१०४) जो लोग काफ़िर हैं, अह्ले किताब या मुश्रिक, वे इस बात को पसन्द नहीं करते कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ख़ैर (व बरकत) नाज़िल हो और ख़ुदा तो जिसको चाहता है, अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (१०५) हम जिस आयत को मंसूख़ कर देते या उसे भुला देते हैं, तो उससे बेहतर या वैसी ही और आयत भेज देते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि ख़ुदा हर बात पर क़ादिर है। (१०६) तुम्हें मालूम नहीं कि आसमानों और ज़मीन की बादशाहत ख़ुदा ही की है और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं। (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि अपने पैग़म्बर से उसी तरह के सवाल करो, जिस तरह के सवाल पहले मूसा से किये गये थे और जिस शख़्स ने ईमान (छोड़ कर उस) के बदले कुफ़्र लिया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) बहुत से अह्ले किताब अपने दिल की जलन से यह चाहते हैं कि ईमान ला चुकने के बाद तुम को फिर काफ़िर बना दें, हालांकि उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है, तो तुम माफ़ कर दो और दर गुज़र करो, यहां तक कि ख़ुदा अपना (दूसरा) हुक्म भेजें, बेशक ख़ुदा हर बात पर क़ादिर है।[2] (१०९)● और नमाज़ अदा करते रहो और ज़कात देते रहो और जो भलाई अपने लिए आगे भेज रखोगे, उस को ख़ुदा के यहां पा लोगे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख

---

१. प्यारे नबी सल्ल० की मज्लिस में यहूदी बैठते तो नबी सल्ल० के इर्शादों में से जो बात अच्छी तरह न समझ सकते और चाहते कि फिर सुनें तो 'राअिना' कहते, यानी हमारी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाइए और फिर इर्शाद कीजिए, मगर एक तो उनकी ज़ुबान में उस के मानी होते 'मूर्ख और घमंडी', दूसरे ज़रा ज़ुबान दबा कर कहते तो 'राईना' हो जाता यानी हमारा चरवाहा। मुसलमानों को इन शरीरों की बद-नीयती का हाल मालूम न था। वे भी उनसे सीखकर किसी वक़्त यह लफ़्ज़ कह देते। ख़ुदा ने फ़रमाया कि 'राअिना' का लफ़्ज़ जिसके कई मानी हो सकते हैं और कुछ मानी बुरे हैं, उसे मत इस्तेमाल किया करो। इस जगह 'उन्ज़ुर्ना' कहा करो। 'उन्ज़ुर्ना' के मानी भी यही हैं कि हमारी तरफ़ मुतवज्जह होजिए और फिर फ़रमाइये, मगर इस में दूसरे मानों का एह्तिमाल नहीं हो सकता।
२. आख़िर हुक्म पहुंचा कि यहूदियों को मदीने के नज़दीक से निकाल दो।

★रु॰ १२/१२ आ ७ ●सु॰ ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालू लंय्यद्ख़ुलल्जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नसारा ط तिल्-क अमानिय्युहुम् ط
क़ुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१११) बला ج मन् अस्-ल-म
वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-लहू अज्रुहू अिन्-द रब्बिही ص व ला ख़ौफ़ुन्
अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ★ (११२) व क़ालतिल्यहूदु लैसतिन्नसारा अला
शैइ व् ص- व क़ालतिन्नसारा लैसतिल्यहूदु
अला शैइ व् ط- व हुम् यत्लूनल् - किताब ط
कज़ालि-क क़ालल्लज़ी - न ला यअ्-लमू-न
मिस्-ल क़ौलिहिम् ج फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनहुम्
यौमल्क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून
(११३) व मन् अज़्लमु मिम्मम्-म-न-अ
मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्-क-र फ़ीहस्मुहू व सआ
फ़ी ख़राबिहा ط उला-इ-क मा का-न लहुम्
अंय्यद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ा - इफ़ीन ط लहुम्
फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव-व लहुम् फ़िलआख़िरति अज़ा-
बुन् अज़ीम (११४) व लिल्लाहिल्-मश्रिक़ु
वलमग़्रिबु ج फ़ अैनमा तुवल्लू फ़-सम् - म
वज्हुल्लाहि ط इन्नल्ला-ह वासिअुन् अलीम
(११५) व क़ालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व-ल-दन् لا
सुब्हानहू ط बल्लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط
कुल्लुल्लहू क़ानितून (११६) बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व इज़ा क़ज़ा
अम्रन् फ़इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (११७) व क़ालल्लज़ी-न ला यअ्-लमू-न
लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअ्तीना आयतुन् ط कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लिहिम् मिस्-ल क़ौलिहिम् ط तशाब-हत् क़ुलू - बुहुम् ط क़द् बय्यन्नल् - आयाति
लि क़ौमिंय्यूक़िनून (११८) इन्ना अरसल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरंव-व नज़ीरंव-व
ला तुस्अलु अन् अस्हाबिलजहीम (११९) व लन् तर्ज़ा अन्कल्यहूदु
व लन्नसारा हत्ता तत्तबि - अ मिल्लतहुम् ط क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्हुदा
व लइनित्तबअ्-त अह्वा - अहुम् बअ्-दल्लज़ी जा - अ-क मिनल्अिल्मि لا
मा ल - क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव - व ला नसीर ▨ (१२०)

البقرة ١٤ الٓمّٓ

وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصٰرٰى تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ قُلْ
هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ۝١١١ بَلٰى مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِندَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝١١٢ وَقَالَتِ الْيَهُودُ
لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلٰى شَيْءٍ وَهُمْ
يَتْلُونَ الْكِتٰبَ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝١١٣ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ
مَسٰجِدَ اللّٰهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعٰى فِي خَرَابِهَا أُولٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن
يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝١١٤
وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝١١٥
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ بَل لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَّهُ
قٰنِتُونَ ۝١١٦ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِذَا قَضٰى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن
فَيَكُونُ ۝١١٧ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ كَذٰلِكَ
قَالَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيٰتِ
لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝١١٨ إِنَّا أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحٰبِ
الْجَحِيمِ ۝١١٩ وَلَن تَرْضٰى عَنكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ
إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝١٢٠ الَّذِينَ آتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُونَهُ

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रहा है। (११०) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदियों और ईसाइयों के सिवा कोई बहिश्त में नहीं जाने का। ये उन लोगों के बातिल ख़्यालात हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन से) कह दो कि अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो। (१११) हां, जो ख़ुदा के आगे गरदन झुका दे (यानी ईमान ले आए) और वह भले काम करने वाला हो, तो उसका बदला उस के परवरदिगार के पास है और ऐसे लोगों को (क़ियामत के दिन) न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (११२) ★

और यहूदी कहते हैं कि ईसाई रास्ते पर नहीं और ईसाई कहते हैं कि यहूदी रास्ते पर नहीं, हालांकि वे किताबे (इलाही) पढ़ते हैं। इसी तरह बिल्कुल उन्हीं की-सी बात वे लोग कहते हैं जो (कुछ) नहीं जानते (यानी मुश्रिक), तो जिस बात में ये लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, ख़ुदा क़ियामत के दिन इसका उन में फ़ैसला कर देगा। (११३) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो ख़ुदा की मस्जिदों में ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किये जाने को मना करे और उनकी वीरानी में कोशिश करे। उन लोगों को कुछ हक़ नहीं कि उनमें दाख़िल हों, मगर डरते हुए। उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और आख़िरत में बड़ा अज़ाब। (११४) और पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है, तो जिधर तुम रुख़ करो, उधर ख़ुदा की ज़ात है। बेशक ख़ुदा वुस्अत वाला और बा-ख़बर है।[1] (११५) और ये लोग इस बात के क़ायल हैं कि ख़ुदा औलाद रखता है। (नहीं,) वह पाक है, बल्कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब उसी का है और सब उसके फ़रमांबरदार हैं। (११६) (वही) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जब कोई काम करना चाहता है, तो उस को इर्शाद फ़रमा देता है कि होजा, तो वह हो जाता है। (११७) और जो लोग (कुछ) नहीं जानते (यानी मुरिश्क), वे कहते हैं कि ख़ुदा हमसे कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह जो लोग उन से पहले थे, वे भी इन्हीं की-सी बातें किया करते थे। इन लोगों के दिल आपस में मिलते-जुलते हैं। जो लोग यक़ीन वाले हैं, उनके (समझाने के) लिए हमने निशानियां बयान कर दी हैं। (११८) (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमको सच्चाई के साथ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और दोज़ख़ियों के बारे में तुमसे कुछ पूछताछ न होगी। (११९) और तुमसे न तो यहूदी कभी ख़ुश होंगे और न ईसाई, यहां तक कि उनके मज़हब की पैरवी अख़्तियार कर लो। (उनसे) कह दो कि ख़ुदा की हिदायत (यानी दीने इस्लाम) ही हिदायत है और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम अपने पास इल्म (यानी ख़ुदा की वह्य) के आ जाने पर भी उनकी ख़्वाहिशों पर चलोगे, तो तुम को (ख़ुदा के अज़ाब से बचाने वाला) न कोई दोस्त

---

१. इस आयत के शाने नुज़ूल में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं। किसी ने कहा, यह आयत उस आयत से पहले नाज़िल हुई थी, जिस में काबे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म है यानी पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है। जिस तरफ़ तुम मुंह करोगे, ख़ुदा ही की तरफ़ होगा। कुछ ने कहा कि उन लोगों के हक़ में उतरी थी, जिन को काबे की दिशा मालूम न हुई और उन्होंने और तरफ़ नमाज़ पढ़ ली थी। ख़ुदा ने उन को बताया था कि ख़ुदा किसी तरफ़ मख़्सूस नहीं, इस लिए उन की नमाज़ हो गयी। मुजाहिद रह० कहते हैं कि जब आयत 'उद्अू नी अस्तजिब लकुम' नाज़िल हुई, तो लोगों ने पूछा कि हम किधर मुंह कर के दुआ मांगा करें। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ख़ुदा हर तरफ़ मौजूद है, जिस तरफ़ चाहो, मुंह कर के दुआ मांगा करो।

★रु. १३/१३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लज़ी-न आतैना-हुमुल्किता-ब यत्लूनहू हक़्-क़ तिलावतिही उला-इ-क युअ्मिनू-न
बिही व मंय्यक्फ़ुर् बिही फ़-उला-इ-क हुमुल्-ख़ासिरून ★ (१२१)
या बनी इस्रा-इलज़्कुरू निअ्-मतियल्लती अन्-अम्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम्
अ़-लल्-आ़लमीन (१२२) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न् नफ़्सिन् शैअंव्-व
ला युक़्बलु मिन्हा अ़द्लुंव्-व ला तन्फ़अुहा
शफ़ाअ़तुंव्-व ला हुम् युन्सरून (१२३) व
इज़िब्तला इब्राही-म रब्बुहू बिकलिमातिन्
फ़-अ-तम्महुन्-न क़ा-ल इन्नी जाअिलु-क लिन्नासि
इमामन् क़ा-ल व मिन् ज़ुर्रियती क़ा-ल ला
यनालु अ़ह्दिज़्ज़ालिमीन (१२४) व इज़्
जअ़ल्नल्बै-त मसाबतल्-लिन्नासि व अम्नन्
वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही-म मुसल्लन् व
अ़हिद्ना इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल
अन् तह्हिरा बैति-य लित्ता-इफ़ी-न वल्आ़किफ़ी-न
वर्रुक्कअ़िस्सुजूद (१२५) व इज़् क़ा-ल
इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ा ब-ल-दन्
आमिनंव्वर्ज़ुक़् अह्लहू मिनस्समराति मन्
आ-म-न मिन्हुम् बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि

حَقَّ تِلَاوَتِهٖ اُولٰٓئِكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَمَنْ یَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ⑫⑪
یٰبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَی
الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاتَّقُوْا یَوْمًا لَّا تَجْزِیْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَیْئًا وَّلَا یُقْبَلُ مِنْهَا
عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓی اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ
بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ قَالَ اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا قَالَ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ قَالَ
لَا یَنَالُ عَهْدِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا وَ
اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی وَعَهِدْنَآ اِلٰٓی اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ اَنْ
طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآئِفِیْنَ وَالْعٰكِفِیْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ
اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ
وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِیْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰی عَذَابِ
النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿١٢٦﴾ وَاِذْ یَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَیْتِ وَاِسْمٰعِیْلُ
رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَیْنِ لَكَ وَ
مِنْ ذُرِّیَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّكَ اَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِكَ وَیُعَلِّمُهُمُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَیُزَكِّیْهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ یَّرْغَبُ عَنْ
مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ وَلَقَدِ اصْطَفَیْنٰهُ فِی الدُّنْیَا وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ
لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰی

क़ा-ल व मन् क-फ़-र फ़ उमत्तिअुहू क़लीलन् सुम्-म अज़्तर्रुहू इला अ़ज़ाबिन्नारि
व बिअ्सलमसीर (१२६) व इज़् यर्फ़अु इब्राहीमुल्-क़वाअि-द मिनल्बैति
व इस्माअ़ीलु रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीअुल्-अ़लीम
(१२७) रब्बना वज्अ़ल्ना मुस्लिमैनि ल-क व मिन् ज़ुर्रिय्यतिना
उम्मतम्-मुस्लिमतल्लक व अरिना मनासि-कना व तुब् अ़लैना
इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम (१२८) रब्बना वब्अ़स् फ़ीहिम् रसूलम्मिन्हुम्
यत्लू अ़लैहिम् आयाति-क व युअ़ल्लिमु-हुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व युज़क्कीहिम्
इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम ★ (१२९) व मंय्यर्ग़बु अ़म्मिल्लति
इब्राही-म इल्ला मन् सफ़ि-ह नफ़्सहू व ल-क़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या
व इन्नहू फ़िल्आख़िरति लमिनस्सालिहीन (१३०) इज़् क़ा-ल
लहू रब्बुहू अस्लिम् क़ा-ल अस्लम्तु लिरब्बिल्आ़लमीन (१३१)

★रु. १४/१३ आ ९ ★रु. १५/१५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होगा, न कोई मददगार ▨ (१२०) जिन लोगों को हमने किताब दी है वे, उसको (ऐसा) पढ़ते हैं, जैसा उसके पढ़ने का हक़ है। यही लोग उस पर ईमान रखने वाले हैं, और जो लोग इसको नहीं मानते, वे घाटा पाने वाले हैं। (१२१) ★

ऐ बनी इस्राईल ! मेरे वे एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किये और यह कि मैंने तुमको दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी। (१२२) और उस दिन से डरो जब कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आए और न उससे बदला क़ुबूल किया जाए, और न उसको किसी की सिफ़ारिश कुछ फ़ायदा दे और न लोगों को (किसी और तरह की) मदद मिल सके। (१२३) और जब परवरदिगार ने कुछ बातों में इब्राहीम की आज़माइश की तो वह उनमें पूरे उतरे। ख़ुदा ने कहा कि मैं तुमको लोगों का पेशवा बनाऊंगा। उन्होंने कहा कि (परवरदिगार !) मेरी औलाद में से भी (पेशवा बनाइयो)। ख़ुदा ने फ़रमाया कि हमारा इक़रार ज़ालिमों के लिए नहीं हुआ करता।[1] (१२४) और जब हमने ख़ाना-ए-काबा को लोगों के लिए जमा होने और अम्न पाने की जगह मुक़र्रर किया और (हुक्म दिया कि) जिस मक़ाम पर इब्राहीम खड़े हुए थे, उसको नमाज की जगह बना लो। और इब्राहीम और इस्माईल को कहा कि तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों रुकूअ करने वालों और सज्दा करने वालों के लिए मेरे घर को पाक साफ़ रखा करो।[2] (१२५) और जब इब्राहीम ने दुआ की कि ऐ परवरदिगार ! इस जगह को अम्न का शहर बना और इसके रहने वालों में से जो ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएं, उनके खाने को मेवे अता कर, तो ख़ुदा ने फ़रमाया कि जो काफ़िर होगा, मैं उस को भी किसी क़दर मुतमत्तेअ करूंगा (फ़ायदा पहुंचने दूंगा) (मगर) फिर उसको (अज़ाबे) दोज़ख़ के (भुगतने के) लिए ना-चार कर दूंगा और वह बुरी जगह है। (१२६) और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की बुनियादें ऊंची कर रहे थे (तो दुआ किये जाते थे कि) ऐ हमारे परवरदिगार ! हमसे यह ख़िदमत क़ुबूल फ़रमा। बेशक तू सुनने वाला (और) जानने वाला है। (१२७) ऐ परवरदिगार ! हम को अपना फ़रमांबरदार बनाए रखियो और हमारी औलाद में से भी एक गिरोह को अपना ताबेअदार बनाते रहियो। और (परवरदिगार !) हमें हमारे तरीक़े इबादत के बता और हमारे हाल पर (रहम के साथ) तवज्जोह फ़रमा। बेशक तू तवज्जोह फ़रमाने वाला मेहरबान है। (१२८) ऐ परवरदिगार ! इन (लोगों) में इन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजियो, जो उनको तेरी आयत पढ़-पढ़ कर सुनाया करे और किताब और हिकमत सिखाया करे और उन (के दिलों) को पाक-साफ़ किया करे। बेशक तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।[3] (१२९) ★

और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेर सकता है, उसके अलावा, जो निहायत नादान हो। हमने उनको दुनिया में भी चुना था और आख़िरत में भी वह नेकों में होंगे। (१३०) जब उनसे उनके परवरदिगार ने फ़रमाया कि इस्लाम ले आओ, तो उन्होंने अर्ज़ की कि मैं दुनियाओं के रब के आगे

---

१. इसमें इख़्तिलाफ़ है कि यह आज़माइश नुबूवत से पहले थी या बाद में, और थी तो किस मामले में थी। कभी भी हो और किसी भी मामले में भी हो, वह इस मामले में पूरे निकले और ख़ुदा ने ख़ुश हो कर उनको लोगों का पेशवा बनाया, मगर यह भी फ़रमा दिया कि तुम्हारी औलाद में ज़ालिम भी होंगे और जो ऐसे होंगे उन को पेशवाई का दर्जा नहीं मिलेगा। जो नेक होंगे, वही पेशवा बनाये जाएंगे।

२. यानी नमाज़ पढ़ने वालों के वास्ते पाक करें काबे के घर को कि उसे अल्लाह तआला ने अपना घर कहा है।

३. जिन पैग़म्बर के लिए हज़रत इब्राहीम ने दुआ की थी, वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे। एक हदीस में आप ने फ़रमाया कि मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ हूं, ईसा अलै० की बशारत हूं, अपनी मां का ख़्वाब हूं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ्क़ूबु ط या बनी-य्य इन्नल्लाहस्तफ़ा
लकुमुद्दी-न फ़-ला तमूतुन-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून ط (१३२) अम् कुन्तुम्
शु-हदा-अ इज् ह्-ज़्-र यअ्क़ूबलमौतु ला इज् क़ा-ल लिबनीहि मा तअ्बुदू-न मिम्बअ्दी ط
क़ालू नअ्बुदु इला-ह्-क व इला-ह आबा-इ-क इब्राही-म व इस्माई-ल
व इस्हा-क़ इलाहंव-वाहिदंव-व नह्नु लहू
मुस्लिमून (१३३) तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़-लत् ج
लहा मा क-स-बत् व लकुम् मा क-सब्तुम् ج व
ला तुस्अलू-न अम्मा कानू यअ्-मलून (१३४) व
क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्तदू ط क़ुल्
बल् मिल्ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् ط व मा का-न
मिनल्-मुश्रिकीन् (१३५) क़ूलू आमन्ना
बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा
उन्ज़ि-ल इला इब्राही-म व इस्माई-ल व
इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब वल् अस्बाति व मा ऊति-य
मूसा व ई़सा व मा ऊति-यन्नबिय्यू-न
मिर्रब्बिहिम् ج ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-ह़दिम्
मिन्हुम् صلے व नह्नु लहू मुस्लिमून
(१३६) फ़ इन् आमनू बिमिस्लि मा
आमन्तुम् बिही फ़-क़दिह्तदौ ج व इन्

بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا
وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ۭ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَاۗىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
وَاِسْحٰقَ اِلٰــهًا وَّاحِدًا ښ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔــلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾ وَقَالُوْا كُوْنُوْا ھُوْدًا
اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ۭ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾
قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰھٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ
رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ڮ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا
بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اھْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا ھُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ
فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَھُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾ ۭ صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ
اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۡ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَاۗجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ
وَھُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ
تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰھٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا
ھُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۭ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً
عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ
لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔــلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾ ع

तवल्लौ फ़-इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन् ج फ़-स-यक्फ़ी-क-हुमुल्लाहु ج व हुवस्समीउ़ल्-
अ़लीम ط (१३७) सिब्ग़तल्लाहि ج व मन् अह्सनु मिनल्लाहि सिब्ग़तंव-व
नह्नु लहू आ़बिदून (१३८) क़ुल् अतुहा-ज्जूनना फ़िल्लाहि व हु-व रब्बुना व
रब्बुकुम् ج व लना अअ्-मालुना व लकुम् अअ्-मालुकुम् ج व नह्नु लहू मुख़्लिसून
(१३९) अम् तक़ूलू-न इन्-न इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब
वल्अस्बा-त कानू हूदन् औ नसारा ط क़ुल् अ अन्तुम् अअ्लमु अमिल्लाहु ط व
मन् अज़्लमु मिम्मन् क-त-म शहा-द-तन् अि़न्दहू मिनल्लाहि ط व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन्
अ़म्मा तअ्-मलून (१४०) तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़-लत् ج लहा मा क-स-बत्
व लकुम् मा क-सब्तुम् ج व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ्-मलून★ (१४१)

इताअत के लिए सर झुकाता हूं। (१३१) और इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी बात की वसीयत की और याक़ूब ने भी (अपने बेटों से यही कहा) कि बेटा! ख़ुदा ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द फ़रमाया है, तो मरना तो मुसलमान ही मरना। (१३२) भला जिस वक़्त याक़ूब वफ़ात पाने लगे, तो तुम उस वक़्त मौजूद थे, जब उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे? तो उन्होंने कहा कि आपके माबूद और आपके बाप-दादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ के माबूद की इबादत करेंगे, जो अकेला माबूद है। और हम उसी के हुक्मबरदार हैं। (१३३) यह जमाअत गुज़र चुकी, उन को उनके आमाल (का बदला मिलेगा) और तुमको तुम्हारे आमाल (का) और जो अमल वे करते थे, उनकी पूछ-गछ तुमसे नहीं होगी। (१३४) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ तो सीधे रास्ते पर लग जाओ। (ऐ पैग़म्बर! उनसे) कह दो, (नहीं), बल्कि (हम) दीने इब्राहीम (अख़्तियार किये हुए हैं), जो एक ख़ुदा के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे। (१३५) (मुसलमानो!) कहो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाए और जो (किताब) हम पर उतरी, उस पर और जो (सहीफ़े) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुए, उन पर और जो (किताबें) मूसा और ईसा को अता हुई उन पर और जो और पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ़ से मिलीं, उन पर (सब पर ईमान लाये)। हम उन पैग़म्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (ख़ुदा-ए-वाहिद) के फ़रमांबरदार हैं। (१३६) तो अगर ये लोग भी उसी तरह ईमान लायें, जिस तरह तुम ईमान ले आये हो, तो वे हिदायत पा जाएं और अगर मुंह फेर लें (और न मानें) तो वे (तुम्हारे) मुख़ालिफ़ हैं और उनके मुक़ाबले में तुम्हें ख़ुदा काफ़ी है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (१३७) (कह दो कि हमने) ख़ुदा का रंग (अख़्तियार कर लिया है) और ख़ुदा से बेहतर रंग किसका हो सकता है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं।[1] (१३८) (उन से कहो, क्या तुम ख़ुदा के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालांकि वही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है और हमको हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का) और हम ख़ास उसी की इबादत करने वाले हैं। (१३९) (ऐ यहूद व नसारा!) क्या तुम इस बात के क़ायल हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद यहूदी और ईसाई थे। (ऐ मुहम्मद! उनसे) कहो कि भला तुम ज़्यादा जानते हो या ख़ुदा?[2] और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा की गवाही को जो उस के पास (किताब में मौजूद) है, छिपाये और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो, ख़ुदा उससे ग़ाफ़िल नहीं।[3] (१४०) यह जमाअत गुज़र चुकी। उन को (वह) मिलेगा, जो उन्होंने किया और तुमको वह जो तुमने किया और जो अमल वे करते थे, उन की पूछ तुम से नहीं

---

१. ख़ुदा के रंग से मुराद उस का दीन इस्लाम है जो ख़ुदा की तौहीदे ख़ालिस सिखाता है और उसी को इबादत का मुस्तहिक़ बनाता है।

२. यहूद व नसारा हज़रत इब्राहीम और पैग़म्बरों को अपने मज़हब की तरफ़ मंसूब करते थे यानी उन्हें यहूदी या ईसाई कहते थे। ख़ुदा ने उन के इस क़ौल को रद्द कर दिया और फ़रमाया कि उन के हाल को तुम ज़्यादा जानते हो या ख़ुदा। ख़ुदा के इल्म में तो न वे यहूदी थे, न ईसाई, बल्कि अकेले ख़ुदा के फ़रमांबरदार और उन का मज़हब इस्लाम (यानी ख़ुदा की हुक्मबरदारी) था।

३. गवाही से मुराद इस बात की जानकारी है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, जिन का हाल उन की किताबों में लिखा हुआ था, लेकिन वे जान-बूझ कर उस को छिपाते थे और अल्लाह ने गवाही छिपाने वाले को निहायत ज़ालिम क़रार दिया।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दूसरा पारः स-यक़ूलु

सूरतुल्-बक़रति़ आयत १४२ से २५२

سیقول ۲ ١٧ البقرة ٢

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِىْ
كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٤٢ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ
الَّتِىْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى
عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٤٣ قَدْ نَرٰى
تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَ
اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤٤ وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٥ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَ
اِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝١٤٦ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝١٤٧ وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٤٨

منزل ١

स-यक़ूलुस्सुफ़हा-उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अन् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अलैहा ط क़ुल् लिल्लाहिल् - मश्रिक़ु वलमग़्रिबु ط यह्दी मंय्यशा-उ इला सि़रातिम् - मुस्तक़ीम (१४२) व कज़ालि-क ज-अ़ल्नाकुम् उम्मतंव-व-स-तल्लितकूनू शुहदा-अ अ़लन्नासि व यकूनर्रसूलु अ़लैकुम् शहीदन् ط व मा जअ़ल्नल्-क़िब्-ल-तल्लती कुन्-त अ़लैहा इल्ला लिनअ़्-ल-म मंय्यत्तबिअ़ुर्रसू-ल मिम्मंय्यन्क़लिबु अ़ला अ़क़िबैहि ط व इन् कानत् ल-कबीरतन् इल्ला अ़लल्लज़ी-न हदल्लाहु ط व मा कानल्लाहु लियुज़ी-अ ईमानकुम् ط इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल रऊफ़ुर्रही़म (१४३) क़द् नरा तक़ल्लु-ब वज्हि-क फ़िस्समा-इ ج फ़-ल-नुवल्लियन्न-क क़िब्लतन् तर्ज़ाहा ص फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-ह़रामि ط व हैसु मा कुन्तुम् फ़ वल्लू वुजूहकुम् शत्रहू ط व इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ल-यअ़्-लमू-न अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् ط व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ़्-मलून (१४४) व लइन् अतैतल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबि-अ़ू क़िब्ल-तक ج व मा अन्-त बि ताबिअ़िन् क़िब्लतहुम् ج व मा बअ़्ज़ुहुम् बि ताबिअ़िन् क़िब्ल-त बअ़्ज़िन् ط व लइनित्तबअ़्-त अह्वा-अ हुम् मिम्बअ़्दि मा जा-अ-क मिनलअ़िलमि ۙ इन्न-क इज़ल्-ल मिनज़्-ज़ालिमीन (१४५) अल्लज़ी-न आतैना - हुमुल्किता-ब यअ़्-रिफ़ूनहू कमा यअ़्-रिफ़ू-न अब्ना-अ हुम् ط व इन्-न फ़रीक़म्-मिन्हुम् ल-यक्तुमूनल्-हक़्-क व हुम् यअ़्-लमून (१४६) अल्ह़क़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ ला तकूनन्-न मिनलमुम्तरीन ★ (१४७)

व. ला. व. मं. ★रु. १७/१ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होगी (१४१) ★ मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर (पहले से चले आते) थे (अब) उससे क्यों मुंह फेर बैठे ? तुम कह दो कि पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है। वह जिसको चाहता है, सीधे रास्ते पर चलाता है। (१४२) और इसी तरह हमने तुम को उम्मते मोतदिल बनाया है,[1] ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और (आख़िरी) पैग़म्बर तुम पर गवाह बनें और जिस क़िब्ले पर तुम (पहले) थे, उसको हमने इसलिए मुक़र्रर किया था कि मालूम करें कि कौन (हमारे) पैग़म्बर का ताबेअ रहता है और कौन उल्टे पांव फिर जाता है और यह बात (यानी क़िब्ले की तब्दीली, लोगों को) बोझ मालूम हुई, मगर जिन को ख़ुदा ने हिदायत बख़्शी है, (वे इसे बोझ नहीं समझते) और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को यों ही खो दे। ख़ुदा तो लोगों पर बड़ा मेहरबान (और) रहमत वाला है। (१४३) (ऐ मुहम्मद !) हम तुम्हारा आसमान की तरफ़ मुंह फेर-फेर कर देखना देख रहे हैं।[2] सो हम तुमको उसी क़िब्ले की तरफ़, जिसको तुम पसन्द करते हो, मुंह करने का हुक्म देंगे। तो अपना मुंह मस्जिदे हराम (यानी ख़ाना-ए-काबा) की तरफ़ फेर लो। और तुम लोग जहां हुआ करो (नमाज़ पढ़ने के वक़्त) उसी मस्जिद की तरफ़ मुंह कर लिया करो। और जिन लोगों को किताब दी गयी है वे ख़ूब जानते हैं कि (नया क़िब्ला) उनके परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है और जो काम ये लोग करते हैं, ख़ुदा उन से बे-ख़बर नहीं।[3] (१४४) और अगर तुम इन अह्ले किताब के पास तमाम निशानियां भी लेकर आओ तो भी ये तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करें और तुम भी उनके क़िब्ले की पैरवी करने वाले नहीं और उनमें से भी कुछ-कुछ के क़िब्ले के पैरो नहीं और अगर तुम बावजूद इसके कि तुम्हारे पास दानिश (यानी वह्ये ख़ुदा) आ चुकी है, उनकी ख़्वाहिशों के पीछे चलोगे तो ज़ालिमों में (दाख़िल) हो जाओगे ▨ (१४५) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इन (आख़िरी पैग़म्बर) को इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचाना करते हैं, मगर एक फ़रीक़ इन में से सच्ची बात को जान-बूझ कर छिपा रहा है ▨ (१४६) (ऐ पैग़म्बर ! यह नया क़िब्ला) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है तुम हरगिज़ शक करने

---

१. उम्मते मोतदिल, जिस में न इफ़रात है, न तफ़रीत। ईसाइयों ने इफ़रात अपनाया कि हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा बना दिया और यहूदियों ने तफ़रीत किया किया कि उन की पैग़म्बरी को भी न माना। उम्मते मोतदिल (दर्मियानी राह वाले) ने न उन को हद से ज़्यादा बढ़ाया, न घटाया बल्कि उन के दर्जे पर रखा।

२. यानी इस ग़रज़ से मुंह फेर-फेर देखना कि कब काबे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म होता है, क्योंकि आप दिल से चाहते थे कि अपने दादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िब्ले की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ा करें।

३. हज़रत पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुह्र की नमाज़ की दो रक्अतें पढ़ी थीं कि यह आयत उतरी और हुक्म हुआ कि काबे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ो। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसी वक़्त नमाज़ के अन्दर काबे की तरफ़ फिर गये और दो रक्अतें बाक़ी काबे की तरफ़ पढ़ीं। इस मस्जिद को ज़ू क़िब्लतैन कहते हैं यानी दो क़िब्ले वाली।

★ रु. १६/१६ आ १२ ▨ व. ला. ▨ व. म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लि कुल्लिव्विज्हतुन् हु-व मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति ▨ ऐ-न मा तकूनू
यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीअन् ط इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (१४८)
व मिन् हैसु ख़-रज्-त फ़ वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि ط व इन्नहु
लल्हक़्क़ु मिर्रब्बिक ط व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून (१४९) व
मिन् हैसु ख़-रज्-त फ़ वल्लि वज्-ह-क शत्रल्-
मस्जिदिल् - हरामि ط व हैसु मा कुन्तुम्
फ़ वल्लू वुजूहकुम् शत्-रहू ٧ لि-अल्ला यकू-न
लिन्नासि अलैकुम् हुज्जतुन्
इल्लल्लजी-न ज़-लमू मिन्हुम् ق फ़ ला
तख़्शौहुम् वख़्शौनी ق व लि उतिम्-म निअ-मती
अलैकुम् व ल-अल्लकुम् तह्तदून
(१५०) कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्-
मिन्कुम् यत्लू अलैकुम् आयातिना व
युज़क्कीकुम् व युअल्लिमु-कुमुल्-किता-ब
वल्हिक्म-त व युअल्लिमुकुम् मा लम् तकूनू
तअ-लमून ط (१५१) फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्-
कुम् वश्कुरूली व ला तक्फ़ुरून ★(१५२)
या अय्युहल्लजी-न आमनुस्तअीनू बिस्सब्रि
वस्सलाति ط इन्नल्ला - ह म-अस्साबिरीन
(१५३) व ला तक़ूलू लिमंय्युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाह अम्वातुन् ط बल्
अह्याउंव-व लाकिल्ला तश्अुरून (१५४) व ल-नब्लुवन्नकुम् बि शैइम्-
मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअि व नक़्सिम्मिनल्-अम्वालि वल-अन्फ़ुसि वस्सम-राति ط
व बश्शिरिस्साबिरीन ٧(१५५) अल्लजी-न इज़ा असाबत्-हुम् मुसीबतुन्
क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून ط (१५६)
उलाइ-क अलैहिम् स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रह्मतुन् قف व उला-इ-क
हुमुल्मुह्तदून (१५७) इन्नस्सफ़ा वलमर्व-त मिन् शआ-इरिल्लाहि ج फ़ मन्
हज्जलबै-त अविअ्-त-म-र फ़ ला जुना-ह अलैहि अंय्यत्तव-व-फ़ बिहिमा ط
व मन् त-तव्-व-अ ख़ैरन् ٧ फ़-इन्नल्ला-ह शाकिरुन् अलीम (१५८)

سيقول ٢ — ١٨ — البقرة ٢

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ط وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ط وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ق إِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ق فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ق وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاذْكُرُوْنِيْ أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ط إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ أَمْوَاتٌ ط بَلْ أَحْيَاءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ط وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ۝ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ج فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ط وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا لا فَإِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वालों में न होना (१४७) ✦ और हर एक (फ़िर्क़े) के लिए एक दिशा (मुक़र्रर) है, जिधर वह (इबादत के वक़्त) मुंह किया करते हैं, तो तुम नेकियों में बाज़ी ले जाओ ▧ तुम जहां होगे, ख़ुदा तुम सब को जमा कर लेगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (१४८) और तुम जहां से निकलो[1] (नमाज़ में) अपना मुंह मस्जिदे मोहतरम की तरफ़ कर लिया करो। बे-शुब्हा वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है।[2] और तुम लोग जो कुछ करते हो, ख़ुदा उससे बे-ख़बर नहीं। (१४९) और तुम जहां से निकलो मस्जिदे मोहतरम की तरफ़ मुंह (कर के नमाज़ पढ़ा) करो और मुसलमानो! तुम जहां हुआ करो उसी (मस्जिद की तरफ़ रुख़ किया करो (यह ताकीद) इस लिए (की गयी है) कि लोग तुमको किसी तरह का इल्ज़ाम न दे सकें, मगर इनमें से जो ज़ालिम हैं (वे इल्ज़ाम दें तो दें)[3] सो उनसे मत डरना और मुझी से डरते रहना और यह भी मक़्सूद है कि मैं तुमको अपनी तमाम नेमतें बख़्शूं और यह भी कि तुम सीधे रास्ते पर चलो। ∴ (१५०) जिस तरह (और नेमतों के साथ) हमने तुम में तुम्हीं में से एक रसूल भेजे हैं जो तुमको हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और तुम्हें पाक बनाते और किताब (यानी क़ुरआन) और दानाई सिखाते हैं और ऐसी बातें बताते हैं जो तुम पहले नहीं जानते थे। ∴ (१५१) सो तुम मुझे याद किया करो, मैं तुम्हें याद किया करूंगा और मेरा एहसान मानते रहना और ना-शुक्री न करना। (१५२) ✦

ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो। बेशक ख़ुदा सब्र करने वालों के साथ है।[4] (१५३) और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे जाएं, उनके बारे में यह न कहना कि वे मरे हुए हैं (वे मुर्दा नहीं) बल्कि ज़िंदा हैं, लेकिन तुम नहीं जानते। (१५४) और हम किसी क़दर ख़ौफ़ और भूख और माल और जानों और मेवों के नुक़्सान से तुम्हारी आज़माइश करेंगे, तो सब्र करने वालों को (ख़ुदा की ख़ुश्नूदी की) ख़ुशख़बरी सुना दो। (१५५) इन लोगों पर जब कोई मुसीबत आती है, तो कहते हैं कि हम ख़ुदा ही का माल हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१५६) यही लोग हैं जिन पर उनके परवरदिगार की मेहरबानी और रहमत है और यही सीधे रास्ते पर हैं। (१५७) बेशक सफ़ा और मर्वः (पहाड़) (ख़ुदा की) निशानियों में से हैं, तो जो शख़्स ख़ाना-काबा का हज या उमरः[5] करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि दोनों का तवाफ़ करे। (बल्कि तवाफ़ एक क़िस्म का नेक काम है) और जो कोई नेक काम करे तो ख़ुदा क़द्र शनास (क़द्र समझने

---

१. मुसाफ़िरों के वास्ते।

२. यानी काबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ना सही है।

३. यहूद तो मुसलमानों को यह इल्ज़ाम देते थे कि हमारे दीन को तो नहीं मानते, मगर नमाज़ हमारे क़िब्ले की तरफ़ पढ़ते हैं और मुश्रिक यह इल्ज़ाम देते थे कि दावा तो इब्राहीम के दीन पर चलने का है, लेकिन उन के क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ नहीं पढ़ते, ख़ाना-ए-काबा के क़िब्ला मुक़र्रर कर देने से ये एतराज़ दूर हो गये।

४. यहां से इशारा इस तरफ़ है कि जिहाद में मेहनत उठाओ और मज़बूती अख़्तियार करो।

५. उमरः भी एक क़िस्म का हज है और इस में और हज में यह फ़र्क़ है कि हज ख़ास ज़िलहिज्जा के महीने में होता है और उमरः और महीनों में भी हो सकता है। दूसरे हज में एहराम बांधना, फिर अर्फ़े के दिन अरफ़ात में हाज़िर होना, फिर वहां से चल कर मश्अरुल हराम में रात रहना, फिर सुबह ईद को मिना में पहुंच कर कंकर फेंकना और हजामत बनवा कर एहराम उतारना और मक्के में जा कर काबे का तवाफ़ करना, फिर सफ़ा व मर्वः के दर्मियान (जो मक्के में दो पहाड़ियां हैं) दौड़ना वग़ैरह होता है और उमरः में सिर्फ़ एहराम बांधना, ख़ाना-काबा का तवाफ़ करना, सफ़ा और मर्वः के दर्मियान दौड़ना होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़ल्ना मिनल्बय्यिनाति वल्हुदा मिम्बअ्दि मा बय्यन्नाहु
लिन्नासि फ़िल्किताबि ॥ उलाइ-क यल्अनुहुमुल्लाहु व यल्अनुहुमुल्लाअिनून
(१५९) इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ़ उला-इ-क अतूबु अलैहिम् ७ व
अनत्तव्वाबुर्रहीम (१६०) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उला-इ-क
अलैहिम् लअ्-नतुल्लाहि वल्मलाइकति वन्नासि
अज्मअीन ॥ (१६१) ख़ालिदी-न फ़ीहा ७
ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला
हुम् युन्ज़रून (१६२) व इलाहुकुम्
इलाहुंव्वाहिदुन् ७ ला इला - ह इल्ला
हुवर्रह्मानुर्रहीम ★(१६३) इन - न फ़ी
ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि
वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़िल्बह्रि
बिमा यन्फ़अुन्ना-स व मा अन्ज़लल्लाहु
मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल्अर-ज़
बअ्-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि
दाब्बतिंव ७ - व तस्रीफ़िर्रियाहि
वस्सहाबिल्-मुसख़्ख़रि बैनस्समाइ वल्अर्ज़ि
ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (१६४) व
मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बूनहुम् क-हुब्बिल्लाहि
वल्लज़ी-न आमनू अशद्दु हुब्बलिल्लाहि ط व लौ य-रल्लज़ी-न ज़-लमू-इज़
यरौनल्-अज़ा-ब ॥ अन्नल्क़ुव्-व-त लिल्लाहि जमीअ़ंव-व अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अज़ाब
(१६५) इज़् तबर्र-अल्लज़ीनत्तुबिअू मिनल्लज़ीनत्त-बअू व र-अवुल्-अज़ा-ब व
तक़त्तअत् बिहिमुल्अस्बाब (१६६) व क़ालल्लज़ीनत्तबअू लौ अन्-न लना कर्रतन्
फ़ न-त-बर्र-अ मिन्हुम् कमा तबर्रअू मिन्ना ط कज़ालि-क युरीहिमुल्लाहु अअ्-मालहुम्
ह-सरातिन् अलैहिम् ط व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिनन्नार ★(१६७)

سیقول ۲ ١٩ البقرة ٢

وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ
اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۙ﴿۱۵۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ
اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا
وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ
اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿۱۶۱﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾
اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
الْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ
يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ
اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿۱۶۶﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ
يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ

منزل ۱

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाला) और जानने वाला है। (१५८) जो लोग हमारे हुक्मों और हिदायतों को, जो हमने नाज़िल की हैं, (किसी फ़सादी ग़रज से) छिपाते हैं, बावजूद कि हमने उनको लोगों के (समझाने के लिए) अपनी किताब में खोल-खोल कर बयान कर दिया है। ऐसों पर ख़ुदा और तमाम लानत करने वाले लानत करते हैं।[1] (१५९) हां, जो तौबा करते हैं और अपनी हालत दुरुस्त कर लेते और (इलाही हुक्मों को) साफ़-साफ़ बयान कर देते हैं, तो मैं उनके क़ुसूर माफ़ कर देता हूं और मैं बड़ा माफ़ करने वाला (और) रहम वाला हूं। (१६०) जो लोग काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे, ऐसों पर ख़ुदा की और फ़रिश्तों की और लोगों की, सब की लानत। (१६१) वे हमेशा इसी (लानत) में (गिरफ़्तार) रहेंगे। उन से न तो अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उन्हें कुछ मोहलत मिलेगी। (१६२) और (लोगो)! तुम्हारा माबूद ख़ुदा-ए-वाहिद है। उस बड़े मेहरबान (और) रहम वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। (१६३) ★

बेशक आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में और रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आने-जाने में और कश्तियों (और जहाज़ों) में, जो दरिया में, लोगों के फ़ायदे की चीज़ें लेकर रवां हैं और मेंह में जिसको ख़ुदा आसमान से बरसाता और उससे ज़मीन को मरने के बाद ज़िंदा (यानी खुश्क हुए पीछे सर-सब्ज़) कर देता है और ज़मीन पर हर क़िस्म के जानवर फैलाने में और हवाओं के चलाने में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान फिरे रहते हैं अक़्लमंदों के लिए (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं।[2] (१६४) और कुछ लोग ऐसे हैं जो ग़ैर ख़ुदा को (ख़ुदा का) शरीक बनाते[3] और उनसे ख़ुदा की-सी मुहब्बत करते हैं, लेकिन जो ईमान वाले हैं, वे तो ख़ुदा ही के सबसे ज़्यादा दोस्तदार हैं। और ऐ काश! ज़ालिम लोग जो बात अज़ाब के वक़्त देखेंगे, अब देख लेते कि सब तरह की ताक़त ख़ुदा ही को है और यह कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (१६५) उस दिन (कुफ़्र के) पेशवा अपने पैरुवों से बे-ज़ारी ज़ाहिर करेंगे और (दोनों) अज़ाबे (इलाही) देख लेंगे और उनके आपस के ताल्लुक़ात ख़त्म हो जाएंगे। (१६६) (यह हाल देख कर) पैरवी करने वाले (हसरत से) कहेंगे कि ऐ काश! हमें दुनिया में जाना नसीब होता कि जिस तरह ये तुमसे बेज़ार हो रहे हैं, इसी तरह हम भी इनसे बेज़ार हों। इस तरह ख़ुदा उनके अमल उन्हें हसरत बना कर दिखायेगा और वे दोज़ख़ से नहीं निकल सकेंगे। (१६७) ★

---

१. यह उन के हक़ में है जिन को इल्म ख़ुदा का पहुंचा और दुनिया की ग़रज के वास्ते छिपा रखा।

२. मक्के के काफ़िर कहते थे कि हम तीन सौ साठ ख़ुदा रखते हैं, उन से एक शहर का बन्दोबस्त ख़ूब नहीं हो सकता और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहते हैं कि मेरा एक ख़ुदा है, जो सारी दुनिया का काम बनाता है, सो कोई दलील लाए अपनी बात पर, तब हम सच जानें, सो अल्लाह तआला ने इस आयत में अपनी क़ुदरत की निशानियां बयान कीं।

३. यानी वे कहते हैं कि ख़ुदा-ए-तआला के बराबर ये भी हैं।

★रु. १९/३ आ ११ ★रु. २०/४ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िल्अर्ज़ि हलालन् तय्यिबंव्-व ला तत्तबिअू
ख़ुतुवातिश्शैतानि ᵇ इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्मुबीन (१६८) इन्नमा यअ्मुरुकुम्
बिस्सू-इ वल्फ़ह्शा-इ व अन् तक़ूलू अलल्लाहि मा ला तअ्-लमून (१६९)
व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअु मा
अल्फ़ैना अलैहि आबा-अना ᵇ अ-व-लौ का-न
आबा-उहुम् ला यअ्क़िलू-न शैअंव-व ला
यह्तदून (१७०) व म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू
क-म-सलिल्लज़ी यन्अिक़ु बिमा ला यस्मअु
इल्ला दुआ-अंव-व निदा-अन् ᵇ सुम्मुम्-
बुक्मुन् अुम्युन् फ़हुम् ला यअ्क़िलून (१७१)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन्
तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् वश्कुरू
लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्-बुदून
(१७२) इन्नमा हर्र-म अलैकुमुल्मै-त-त
वद्-द-म व लह्मल्ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल
बिही लि ग़ैरिल्लाहि ᶜ फ़ मनिज़्तुर् - र
ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आदिन् फ़-ला इस्-म
अलैहि ᵇ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१७३)
इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू - न मा अन्ज़लल्लाहु मिनल् - किताबि व यश्तरू - न
बिही स-म-नन् क़लीलन् ॥ उला-इ-क मा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम्
इल्लन्ना-र व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल् - क़ियामति व ला
युज़क्कीहिम् ᶜ व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (१७४) उला-इकल्लज़ीनश्त-र-
वुज़्ज़लाल-त बिल्हुदा वल्अज़ा-ब बिलमग़्फ़िरति ᶜ फ़ मा अस्ब - र हुम्
अलन्नार (१७५) ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह नज़्ज़लल्किता-ब बिल्-हक़्क़ि ᵇ
व इन्नल्लज़ीनख़्तलफ़ू फ़िल्किताबि ल-फ़ी शिक़ाक़िम्-बअीद ★ ● (१७६)

سيقول ۲   ۲۰   البقرة ۲

النَّارِ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ
بِالسُّوْۗءِ وَالْفَحْشَاۗءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَي اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ
لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا ۭ
اَوَلَوْ كَانَ اٰبَاۗؤُھُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَـيْــــًٔـا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَاۗءً وَّنِدَاۗءً ۭ صُمٌّۢ
بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ
لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَـمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰۗىِٕكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا
النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ښ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ
بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَھُمْ عَلَي النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ
الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍۢ
بَعِيْدٍ ۝ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْھَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

منزل ۱

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लोगो ! जो चीज़ें ज़मीन में हलाल-तैयब हैं, वे खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१६८) वह तो तुमको बुराई और बेहयाई ही के काम करने को कहता है और यह भी कि ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहो, जिनका तुम्हें (कुछ भी) इल्म नहीं। (१६९) और जब उन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उसकी पैरवी करो, तो कहते हैं (नहीं), बल्कि हम तो उसी चीज़ की पैरवी करेंगे, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे उनके बाप-दादा न कुछ समझते हों और न सीधे रास्ते पर हों (तब भी वे उन्हीं की पैरवी किए जाएंगे।) (१७०) जो लोग काफ़िर हैं, उनकी मिसाल उस शख़्स की-सी है जो किसी ऐसी चीज़ को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ सुन न सके। (ये) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं, कि (कुछ) समझ ही नहीं सकते। (१७१) ऐ ईमान वालो ! जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको अता फ़रमायी हैं, उनको खाओ और अगर ख़ुदा ही के बन्दे हो, तो (उस की नेमतों) का शुक्र भी अदा करो। (१७२) उसने तुम पर मरा हुआ जानवर और लहू[1] और सुअर का गोश्त और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए, हराम कर दिया है।[2] हां, जो ना-चार हो जाए (बशर्ते कि) ख़ुदा की नाफ़रमानी न करे और (ज़रूरत की) हद से बाहर न निकल जाए, उस पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम करने वाला है। (१७३) जो लोग (ख़ुदा की) किताब से उन (आयतों और हिदायतों) को जो उसने नाज़िल फ़रमायी हैं, छिपाते और उनके बदले थोड़ी-सी क़ीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) हासिल करते हैं, वे अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं। ऐसे लोगों से ख़ुदा क़ियामत के दिन न कलाम करेगा और न उन को (गुनाहों से) पाक करेगा। और उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब है। (१७४) ये वह लोग हैं, जिन्हों ने हिदायत छोड़कर गुमराही और बख़्शिश छोड़कर अज़ाब खरीदा। यह जहन्नम (की आग) को कैसा बर्दाश्त करने वाले हैं। (१७५) यह इसलिए कि ख़ुदा ने किताब सच्चाई के साथ नाज़िल फ़रमायी और जिन लोगों ने इस किताब में इख़्तिलाफ़ किया, वे ज़िद में

---

१. मरे हुए जानवरों में से मछली और टिड्डी, नबी सल्ल० की हदीस के मुताबिक़ हलाल और लहू में से जिगर और तिल्ली हलाल हैं।

२. यह तर्जुमा डिक्शनरी के मानी के लिहाज़ से किया गया है। डिक्शनरी में 'इह्लाल' (उहिल-ल) के मानी आवाज़ बुलंद करने के हैं। तफ़्सीर लिखने वाले, जो इस लफ़्ज़ के मानी में ज़िब्ह का लफ़्ज़ शामिल करते हैं, वे शाने-नुज़ूल के लिहाज़ से करते हैं, क्योंकि जाहिलियत में जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुक़र्रर किया जाता था ज़िब्ह करने के वक़्त भी उस पर उसी ग़ैर का नाम लिया जाता था, वरना हक़ीक़त में जो चीज़ ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुक़र्रर की जाए, चाहे वह जानवर हो या और कुछ, हराम है, इस लिए कि आयत में हर्फ़ 'मा', इस्तेमाल फ़रमाया गया है, जिस के मानी हैं 'जो चीज़' और वह आम है। ज़िब्ह, हैवान और चीज़ों को, चाहे वे खाने की हों या पहनने की, या और हर तरह इस्तेमाल करने की, सब को शामिल है। चूंकि लुग़त मुक़द्दम है इस लिए हम ने उसी मानी को लिया है। हराम व हलाल चीज़ों में नीयत को बड़ा दख़ल है, मसलन जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुक़र्रर किया गया हो, उस पर ज़िब्ह के वक़्त ख़ुदा का नाम लिया जाए या ग़ैर-ख़ुदा का, हराम होने के लिहाज़ से बराबर है। ख़ुदा का नाम लेने से वह हलाल न होगा। उलमा ने लिखा है कि अगर किसी मुसलमान ने कोई जानवर ग़ैर-ख़ुदा का क़रीबी बनने के लिए ज़िब्ह किया, तो वह इस्लाम से ख़ारिज हो गया और वह जानवर ऐसा होगा जैसे मुर्तद (इस्लाम से विमुख) का ज़िब्ह किया हुआ। बहरहाल नज़्र की नीयत ख़ुदा ही के लिए करनी चाहिए और ज़िब्ह करने के वक़्त उस पर 'वह्दहू ला शरी-क लहू' का नाम लेना चाहिए क्योंकि वह अपने साथ किसी को शरीक नहीं करना चाहता।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लैसल्बिर्-र अन् तुवल्लू वुजूहकुम् क़ि-ब-लल्-मश्रिक़ि वलमग़्रिबि व लाकिन्नल्बिर्-र
मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्आख़िरि वलमलाइकति वलकिताबि
वन्नबिय्यी-न ج व आतल्मा-ल अ़ला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकी-न
वब्नस्सबीलि ۷ वस्साइली-न व फ़िर्रिक़ाबि ج व अक़ामस्सला-त व
आतज़्ज़का-त ج वल्मूफ़ू-न बि अ़ह्दिहिम्
इज़ा आ़हदू ج वस्साबिरी-न फ़िल्
बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ व ही़नल्बअ्सि ط
उला-इकल्लज़ी-न स-दक़ू ط व उला-इक
हुमुल्मुत्तक़ून (१७७) या अय्युहल्लज़ी-न
आमनू कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़िसासु फ़िल्क़त्ला ط
अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्अ़ब्दु बिल्अ़ब्दि
वल्उन्सा बिल्उन्सा ط फ़ मन् अ़ुफ़ि-य लहू मिन्
अख़ीहि शैउन् फ़त्तिबाउम्-बिलमअ्-रूफ़ि व
अदा-उन् इलैहि बि इह्सानिन् ط ज़ालि-क
तख़्फ़ीफ़ुम् - मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन् ط
फ़ मनिअ्-तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् ع
अलीम (१७८) व लकुम् फ़िल्क़िसासि
हयातुंय्या उलिल्-अल्बाबि ल-अ़ल्लकुम् तत्तक़ून (१७९) कुति-ब अ़लैकुम्
इज़ा ह-ज़-र अ-ह्-दकुमुल्मौतु इन् त-र-क ख़ै-रनिल्-वसिय्यतु
लिल्वालिदैनि वल्अक़्रबी-न बिलमअ्-रूफ़ि ج हक़्क़न् अ़लल्मुत्तक़ीन ط (१८०)
फ़ मम्-बद्दलहू बअ्-द मा समि-अ़हू फ़ इन्नमा इस्मुहू अ़लल्लज़ी-न युबद्दिलूनहू ط
इन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम ط (१८१) फ़-मन् ख़ा-फ़ मिम्मूसिन् ज-न-फ़न्
औ इस्मन् फ़ अस्-ल-ह् बैनहुम् फ़ ला इस्-म अ़लैहि इन्नल्ला-ह
ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (१८२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुस्सियामु
कमा कुति-ब अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तत्तक़ून ۷ (१८३)

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ
وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ
الصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَ
الْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَكُمْ
فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ كُتِبَ
عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ اۨلْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝ؕ
فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ؕ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا
فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ع يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

★रु. २२/६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(आकर नेकी से) दूर (हो गए) हैं (१७६) ★ ● नेकी यही नहीं कि तुम पूरब या पच्छिम (को क़िब्ला समझकर उन) की तरफ़ मुंह कर लो, बल्कि नेकी यह है कि लोग ख़ुदा पर और फ़रिश्तों पर और ख़ुदा की किताब पर और पैग़म्बरों पर ईमान लायें और माल बावजूद अज़ीज़ रखने के रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दें और गरदनों (को छुड़ाने) में[1] ख़र्च करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और जब अह्द कर लें तो उसको पूरा करें और सख़्ती और तक्लीफ़ में और (लड़ाई के) मैदान में साबित क़दम रहें। यही लोग हैं जो (ईमान में) सच्चे हैं और यही हैं जो (ख़ुदा से) डरने वाले हैं। (१७७) मोमिनो! तुम को मक़्तूलों के बारे में क़िसास (यानी ख़ून के बदले ख़ून) का हुक्म दिया जाता है (इस तरह पर कि) आज़ाद के बदले आज़ाद (मारा जाए) और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम और औरत के बदले औरत[2] और अगर क़ातिल को उसके (मक़्तूल) भाई (के क़िसास में) से कुछ माफ़ कर दिया जाए,[3] तो (वारिस मक़्तूल को) पसंदीदा तरीक़े से (क़रारदाद की) पैरवी (यानी ख़ून बहा का मुतालबा) करना और (क़ातिल को) भले तरीक़े से अदा करना चाहिए। यह परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे लिए आसानी और मेहरबानी है, जो इसके बाद ज़्यादती करे, उसके लिए दुख का अज़ाब है। (१७८) और ऐ अक़्ल वालो! क़सास (के हुक्म) में (तुम्हारी) ज़िंदगानी है कि तुम (क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से) बचो। (१७९) तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुम में से किसी को मौत का वक़्त आ जाए तो अगर वह कुछ माल छोड़ जाने वाला हो तो मां-बाप और रिश्तेदारों के लिए दस्तूर के मुवाफ़िक़ वसीयत कर जाए, (ख़ुदा से) डरने वालों पर यह एक हक़ है। (१८०) जो शख़्स वसीयत को सुनने के बाद बदल डाले, तो उस (के बदलने) का गुनाह उन्हीं लोगों पर है, जो उस को बदलें और बेशक ख़ुदा सुनता जानता है।[4] (१८१) अगर किसी को वसीयत करने वाले की तरफ़ से (किसी वारिस की) तरफ़दारी या हक़तलफ़ी का डर हो तो अगर वह (वसीयत को बदलकर) वारिसों में सुलह करा दे, तो उस पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम वाला है। (१८२) ★

मोमिनो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं, जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गये थे,

---

१. गरदनों के छुड़ाने से मुराद ग़ुलामी वग़ैरह की क़ैद से आज़ाद कराना है।

२. यानी मक़्तूल के बदले क़ातिल ही क़त्ल किया जाए।

३. यानी ख़ून से दरगुज़र किया जाए और ख़ून के बदले ख़ून बहा क़रार पाए।

४. यानी अगर मुर्दा कह मरा था, पर देने वालों ने न दिया, तो मुर्दे पर गुनाह नहीं, वही गुनाहगार है।

★रु. २१/५ आ ६ ● रुबअ़ १/४ ★रु. २२/६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अय्यामम्-मअ्-दूदातिन् ط फ़ मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन्
फ़ अ़िद्दतुम्मिन् अय्यामिन् उख़र ط व अ-लल्लज़ी-न युतीक़ूनहू फ़िद्यतुन्
त़आमु मिस्कीनिन् ط फ़ मन् त-तव्व-अ ख़ैरन् फ़ हु-व ख़ैरुल्लहू ط व अन्
तसूमू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (१८४) शह्रु र-म-ज़ानल्लज़ी
उन्ज़ि-ल फ़ीहिल्क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व
बय्यिनातिम्-मिनल-हुदा वल्फ़ुर्क़ानि ج फ़-मन्
शहि-द मिन्कुमुश्शह्-र फ़ल्यसुम्हु ط व मन्
का-न मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़अ़िद्दतुम्मिन्
अय्यामिन् उख़र ط युरीदुल्लाहु बिकुमुल्
युस्-र व ला युरीदु बिकुमुल्-अ़ुस्र ز व
लि तुक्मिलुल्-अ़िद्द-त व लि तुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला
मा हदाकुम् व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१८५)
व इज़ा स-अ-ल-क अ़िबादी अ़न्नी फ़ इन्नी
क़रीबुन् ط उजीबु दअ़-व-तद्दाअ़ि इज़ा दआनि ل
फ़ल्यस्तजीबूली वल्युअ्मिनू बी लअ़ल्लहुम्
यर्शुदून (१८६) उहि़ल्-ल लकुम्
लैल-तस्सियामिर्र-फ़सु इला निसा-इकुम् ط

سيقول ٢ — ٢٢ — البقرة ٢

من قبلكم لعلكم تتقون ۝ اياما معدودت ط فمن كان
منكم مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر ط وعلى الذين
يطيقونه فدية طعام مسكين ط فمن تطوع خيرا فهو خير
له ط وان تصوموا خير لكم ان كنتم تعلمون ۝ شهر
رمضان الذى انزل فيه القران هدى للناس وبينت
من الهدى والفرقان ج فمن شهد منكم الشهر فليصمه ط
ومن كان مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر ط
يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ز ولتكملوا
العدة ولتكبروا الله على ما هدىكم ولعلكم تشكرون ۝
واذا سالك عبادى عنى فانى قريب ط اجيب دعوة الداع
اذا دعان ل فليستجيبوا لى وليؤمنوا بى لعلهم يرشدون ۝
احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم ط هن لباس
لكم وانتم لباس لهن ط علم الله انكم كنتم تختانون
انفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم ج فالـن باشروهن وابتغوا
ما كتب الله لكم ص وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط
الابيض من الخيط الاسود من الفجر صلے ثم اتموا الصيام
الى اليل ج ولا تباشروهن وانتم عكفون فى المسجد ط تلك

हुन्-न लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासुल्लहुन-न ط अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम्
तख़्तानू-न अन्फ़ुसकुम् फ़-ता-ब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् ج फ़ल्आ-न बाशिरू
हुन-न वब्तग़ू मा क-त-बल्लाहु लकुम् ص व कुलू वशरबू ह़त्ता य-त-बय्य-न
लकुमुल्ख़ैतुल् - अब्यज़ु मिनल्ख़ैतिल् - अस्वदि मिनल्फ़ज्रि صلے सुम्-म
अतिम्मुस्सिया-म इलल्लैलि ج व ला तुबाशिरू - हुन - न व अन्तुम्
आ़किफ़ू-न ل फ़िल्मसाजिदि ط तिल् - क हुदूदुल्लाहि फ़ - ला तक़्रबूहा ط
कज़ालि - क युबय्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून ط (१८७)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ताकि तुम परहेज़गार बनो।[१] (१८३) (रोज़ों के दिन) गिनती के कुछ दिन हैं, तो जो आदमी तुम में से बीमार हो, या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में रोज़ों की गिनती पूरी कर ले।[२] और जो लोग रोज़ा रखने की ताक़त रखें (लेकिन रखें नहीं), वे रोज़े के बदले मुहताज को खाना खिला दें।[३] और जो कोई शौक़ से नेकी करे तो उसके हक़ में ज़्यादा अच्छा है और अगर समझो तो रोज़ा रखना ही तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (१८४) (रोज़ों का महीना) रमज़ान का महीना (है) जिसमें क़ुरआन (अव्वल-अव्वल) नाज़िल हुआ, जो लोगों का रहनुमा है और जिस में हिदायत की खुली निशानियां हैं और (जो हक़ व बातिल को) अलग-अलग करने वाला है। तो जो कोई तुममें से इस महीने में मौजूद हो, चाहिए कि पूरे महीने के रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में (रखकर) उनकी गिनती पूरी कर ले, ख़ुदा तुम्हारे हक़ में आसानी चाहता है और सख़्ती नहीं चाहता और (यह आसानी का हुक्म) इसलिए (दिया गया है) कि तुम रोज़ों का शुमार पूरा कर लो और इस एहसान के बदले कि ख़ुदा ने तुमको हिदायत बख़्शी है, तुम उसको बुज़ुर्गी से याद करो और उसका शुक्र करो। (१८५) और (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में मालूम करें, तो (कह दो कि) मैं तो (तुम्हारे) पास हूं। जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी दुआ क़ुबूल करता हूं, तो उनको चाहिए कि मेरे हुक्मों को मानें और मुझ पर ईमान लाएं, ताकि नेक रास्ता पाएं। (१८६) रोज़ों की रातों में तुम्हारे लिए अपनी औरतों के पास जाना जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो।[४] ख़ुदा को मालूम है कि तुम (उनके पास जाने से) अपने हक़ में ख़ियानत करते थे, सो उसने तुम पर मेहरबानी की और तुम्हारी हरकतों से दरगुज़र फ़रमाया। अब (तुमको अख़्तियार है कि) उनसे मुबाशरत करो और ख़ुदा ने जो चीज़ तुम्हारे लिए लिख रखी है (यानी औलाद) उसको (ख़ुदा से) तलब करो और खाओ और पियो, यहां तक कि सुबह की सफ़ेद धारी (रात की) स्याह धारी से अलग नज़र आने लगे। फिर रोज़ा (रखकर) रात तक पूरा करो और जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ बैठे हो, तो उनसे मुबाशरत न करो। ये ख़ुदा की हदें हैं। उनके पास न जाना। इसी तरह ख़ुदा अपनी आयतें लोगों के (समझाने के लिए) खोल-खोलकर के बयान फ़रमाता है, ताकि वह परहेज़गार

---

१. यानी रोज़े से सलीक़ा आ जाए जी रोकने का, तो हर जगह रोक सको।

२. यानी जितने रोज़े न रखे हों, बीमारी और सफ़र के बाद उतने क़ज़ा रख ले।

३. इस आयत में तंदुरुस्त और ताक़तवर शख़्स पर रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं किया गया था, बल्कि रखने न रखने का अख़्तियार दिया गया, मगर इस के बाद की आयत से यह अख़्तियार ख़त्म कर दिया और रोज़ा ज़रूरी क़रार दे दिया गया।

४. यानी जिस तरह पोशाक का ताल्लुक़ जिस्म से होता ह, उसी तरह मर्द का ताल्लुक़ औरत से और औरत का मर्द से होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिलबातिलि व तुद्लू बिहा
इलल्हुक्कामि लि तअ्कुलू फ़रीक़म्मिन् अम्वालिन्नासि बिल्-इस्मि व अन्तुम्
तअ्-लमून★ (१८८) यस्अलून-क अनिल्-अहिल्लति ط क़ुल् हि - य मवाक़ीतु
लिन्नासि वल्हज्जि ط व लैसल्बिर्रु बि अन्तअ्तुल्-बुयू-त मिन् ज़ुहूरिहा
व ला किन्नल्बिर्-र मनित्तक़ा ج वअ्तुल्-
बुयू-त मिन् अब्वाबिहा ص वत्तक़ुल्ला-ह
ल-अल्लकुम् तुफ़्लिहून (१८९) व क़ातिलू
फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी - न युक़ातिलूनकुम्
व ला तअ्-तदू ط इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-
मुअ्-तदीन (१९०) वक़्तुलू - हुम् हैसु
सक़िफ़्तुमू हुम् व अख़्रिजू हुम् मिन् हैसु
अख़्रजूकुम् वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्क़त्लि ج
व ला तुक़ातिलू हुम् अिन्दल्-मस्जिदिल्-
हरामि हत्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि ج फ़ इन्
क़ातलूकुम् फ़क़्तुलू - हुम् ط कज़ालि - क
जज़ा - उल् - काफ़िरीन (१९१) फ़इनिन्तहौ
फ़ इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१९२) व क़ातिलू - हुम् हत्ता ला तकू - न
फ़ित्नतुंव - व यकूनद्दीनु लिल्लाहि ط फ़ इनिन्तहौ फ़ - ला अुद्वा-न इल्ला
अ़लज़्ज़ालिमीन (१९३) अश्शह्रुल् - हरामु बिश्शह्रिल् - हरामि वल्हुरुमातु
क़िसासुन् ط फ़-मनिअ्-तदा अ़लैकुम् फ़अ्-तदू अ़लैहि बिमिस्लि मअ्-तदा
अ़लैकुम् ص वत्तक़ुल्ला - ह वअ्-लमू अन्नल्ला - ह म-अ़ल्मुत्तक़ीन (१९४) व
अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व ला तुल्क़ू बि अैदीकुम् इलत्तह्लुकति
व अह्सिनू ۛ इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् - मुह्सिनीन (१९५)

حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا
بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ
مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ
فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ ج
فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ
فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ
فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ مع

★रु. २३/७ आ ६ ∴ मु. अ़ि मु त क़. १

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बनें। (१८७) और एक दूसरे का माल ना-हक़ न खाओ और न उसको (रिश्वत के तौर पर) हाकिमों के पास पहुंचाओ ताकि लोगों के माल का कुछ हिस्सा नाजायज़ तौर पर न खा जाओ और (इसे) तुम जानते भी हो। (१८८) ★

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुमसे नये चांद के बारे में पूछते हैं (कि घटता-बढ़ता क्यों है) ? कह दो कि वह लोगों के (कामों की मीयादें) और हज के वक़्त मालूम होने का ज़रिया है।[1] और नेकी इस बात में नहीं कि (एहराम की हालत में) घरों में उनके पिछवाड़े की तरफ़ से आओ, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गार हो और घरों में उनके दरवाज़ों से आया करो[2] और ख़ुदा से डरते रहो ताकि निजात पाओ। (१८९) और जो लोग तुमसे लड़ते हैं, तुम भी ख़ुदा की राह में उनसे लड़ो, मगर ज़्यादती न करना कि ख़ुदा ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (१९०) और उनको जहां पाओ, क़त्ल कर दो और जहां से उन्होंने तुमको निकाला है (यानी मक्के से) वहां से तुम भी उनको निकाल दो और (दीन से गुमराह करने का) फ़साद क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से कहीं बढ़कर है और जब तक वे तुम से मस्जिदे मोहतरम (यानी ख़ाना काबा) के पास न लड़ें, तुम भी वहां उनसे न लड़ना। हां, अगर वे तुम से लड़ें, तो तुम उनको क़त्ल कर डालो। क़ाफ़िरों की यही सज़ा है। (१९१) और अगर वे रुक जायें तो ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम करने वाला है। (१९२) और उनसे उस वक़्त तक लड़ते रहना कि फ़साद ख़त्म हो जाए और (मुल्क में) ख़ुदा ही का दीन हो जाए और अगर वे (फ़साद से) बाज़ आ जायें, तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं (करनी चाहिए)। (१९३) अदब का महीना अदब के महीने के मुक़ाबले का है और अदब की चीज़ें एक दूसरे का बदला हैं। पस अगर कोई तुम पर ज़्यादती करे, तो जैसी ज़्यादती वह तुम पर करे, वैसी ही तुम उस पर करो। और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा डरने वालों के साथ है।[3] (१९४) और ख़ुदा की राह में (माल) ख़र्च करो और अपने आप को हलाकत में न डालो ∴ और नेकी करो ∴ बेशक ख़ुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है।[4] (१९५) और ख़ुदा (की ख़ुश्नूदी)

---

१. 'अहिल्ला' 'हिलाल' की जमा है और हिलाल पहली तीन रातों के चांद को कहते हैं। चांद हक़ीक़त में एक है, मगर चूंकि वह घटता-बढ़ता रहता है, इस लिए गोया कई चांद हुए। इसी लिए उन को 'अहिल्ला' कहा गया है। इस के घटने-बढ़ने का फ़ायदा यह है कि जो लोग अन-पढ़ हैं उन को इस से महीना और तारीख़ और हज के वक़्त मालूम होते हैं। अगर एक हालत पर रहता तो इन लोगों को बड़ी मुश्किल पेश आती कि न महीना मालूम होता, न तारीख़। हिलाल को देख कर हर शख़्स महीना और तारीख़ और हज के वक़्त और कामों की मीयादें आसानी से मालूम कर सकता है।

२. अरब में दस्तूर था कि जब घर से निकल कर एहराम बांध लेते, और घर में आने की ज़रूरत वाक़े होती तो घर में दरवाज़े से न दाख़िल होते, बल्कि पिछवाड़े से कूद कर आते। ख़ुदा ने इस फ़ेल को दाख़िले नेकी न क़रार दिया और घर में दरवाज़े से आने का हुक्म फ़रमाया।

३. इज़्ज़त के महीने चार थे — ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब। और उन में लड़ाई नहीं की जाती थी। काफ़िर इन महीनों में लड़ाई करने लगते तो मुसलमान इन महीनों के अदब की वजह से लड़ाई से रुकते और हैरान होते कि क्या करें। ख़ुदा ने फ़रमाया कि अगर काफ़िर इन महीनों के अदब का ख़्याल रखें, तो तुम भी रखो और वे अदब को छोड़ दें और तुम पर ज़ुल्म करने लगें तो तुम भी उन से लड़ो और बदला लेने में कोताही न करो।

४. यानी जिहाद छोड़ कर न बैठो, इस में तुम्हारी हलाकत है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अतिम्मुल्हज्-ज वल्अुम्-र-त़ लिल्लाहि ط फ़ इन् उह़्सिर्तुम् फ़ मस्तै-स-र
मिनल्हद्यि ج व ला तह़्लिक़ू रुऊसकुम् ह़त्ता यब्लुग़ल् - हद्यु मह़िल्लहू ط
फ़ मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ बिही अज़म्-मिर्रअ्सिही फ़ फ़िद्यतुम्-
मिन् सियामिन् औ स-द-क़तिन् औ नुसुकिन् ج फ़ इज़ा अमिन्तुम् وقفه
फ़ मन् तमत्त-अ बिल्उम्रति इलल्हज्जि
फ़ - मस्तै-स-र मिनल्हद्यि ج फ़ मल्लम् यजिद्
फ़ सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल्ह़ज्जि व
सब्अतिन् इज़ा र-जअ्-तुम् ط ति-ल्-क अ-श-रतुन्
कामिलतुन् ط ज़ालि - क लिमल्लम् यकुन्
अह्लुहू ह़ाज़िरिल् - मस्जिदिल् - ह़रामि ط
वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब
★ (१९६) अल्ह़ज्जु अश्हुरुम् - मअ्-लूमातुन् ج
फ़ मन् फ़-र-ज़ फ़ीहिन्नल्-ह़ज्-ज फ़ला र-फ़-स
व ला फ़ु - सू - क़ ۙ व ला जिदा - ल
फ़िल्ह़ज्जि ط व मा तफ़्अ़लू मिन्
ख़ैरिय्यअ्‌ - लम्हुल्लाहु ▨ ط व तज़व्वदू
फ़ इन-न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा ز वत्तक़ूनि या
उलिल्-अल्बाब (१९७) लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तब्तग़ू منزل फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिकुम् ط
फ़ इज़ा अफ़ज़्तुम् मिन् अ-रफ़ातिन् फ़ज़्कुरुल्ला-ह अिन्दल्-मश्अरिल्-
ह़रामि ص वज़्कुरूहु कमा हदाकुम् ج व इन् कुन्तुम् मिन् क़ब्लिही
ल - मिनज़्ज़ाल्लीन (१९८) सुम्-म अफ़ीज़ू मिन् ह़ैसु अफ़ाज़न्नासु
वस्तग़्फ़िरुल्लाह ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रह़ीम (१९९) फ़ इज़ा क़ज़ैतुम्
मनासिककुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह क-ज़िक्रिकुम् आबा-अकुम् औ अशद्-द ज़िक्रन् ط
फ़ मिनन्नासि मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या व मा लहू फ़िल्-आख़िरति
मिन् ख़लाक़ (२००) व मिन्हुम् मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या
ह़-स-न-तंव-व फ़िल्-आख़िरति ह़-स-न-तंव्-व क़िना अ़ज़ाबन्नार (२०१) ●

سیقول ۲   ۴۴   البقرة ۲

الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ
فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ
اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۛ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَ
سَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ
حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَ
تَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۝ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۠ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ
مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ
رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के लिए हज और उमरे को पूरा करो और अगर (रास्ते में) रोक लिए जाओ तो जैसी क़ुर्बानी मुयस्सर हो (कर दो) और जब तक क़ुर्बानी अपनी जगह पर न पहुंच जाए, सर न मुंडाओ और अगर कोई तुम में बीमार हो या उसके सर में किसी तरह की तक्लीफ़ हो तो (अगर वह सर मुंडा ले तो) उसके बदले रोज़े रखे या सदक़ा दे या क़ुर्बानी करे। फिर जब (तक्लीफ़ दूर होकर) तुम मुतमइन हो जाओ तो जो (तुममें) हज के वक़्त तक उमरे में फ़ायदा उठाना चाहे, वह जैसी क़ुर्बानी मयस्सर हो करे और जिसको (क़ुर्बानी) न मिले, वह तीन रोज़े हज के दिनों में रखे और सात जब वापस हो। ये पूरे दस दिन हुए। यह हुक्म उस शख़्स के लिए है, जिसके बाल-बच्चे मक्के में न रहते हों और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है। (१९६) ★

हज के महीने (तै हैं जो) मालूम हैं।[1] तो जो शख़्स इन महीनों में हज की नीयत कर ले तो हज (के दिनों) में न औरतों से मिले, न कोई बुरा काम करे, न किसी से झगड़े और जो नेक काम तुम करोगे, वह ख़ुदा को मालूम हो जाएगा ▨ और ज़ादेराह (यानी रास्ते का ख़र्च) साथ ले जाओ क्योंकि बेहतर (फ़ायदा) ज़ादेराह (का) परहेज़गारी है और ऐ अक़्ल वालो! मुझसे डरते रहो। (१९७) इसका तुम्हें कुछ गुनाह नहीं कि (हज के दिनों में तिजारत के ज़रिए से) अपने परवरदिगार से रोज़ी तलब करो। और जब अरफ़ात से वापस होने लगो तो मशअरे हराम (यानी मुज़दलफ़े) में ख़ुदा का ज़िक्र करो। और इस तरह ज़िक्र करो जिस तरह उसने तुमको सिखाया और इससे पहले तुम लोग (इन तरीक़ों को) बिल्कुल नहीं जानते थे। (१९८) फिर जहां से और लोग वापस हों, वहीं से तुम भी वापस हो और ख़ुदा से बख़्शिश मांगो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला और रहमत करने वाला है। (१९९) फिर जब हज के तमाम अर्कान पूरे कर चुको तो (मिना में) ख़ुदा को याद करो, जिस तरह अपने बाप-दादा को याद किया करते थे, बल्कि उससे भी ज़्यादा। और कुछ लोग ऐसे हैं जो (ख़ुदा से) इल्तिजा करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम को (जो देना है) दुनिया ही में इनायत कर। ऐसे लोगों का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं। (२००) और कुछ ऐसे हैं कि दुआ करते हैं कि परवरगिदार! हम को दुनिया में भी नेमत अता फ़रमा और आख़िरत में भी नेमत बख़्शना और दोज़ख़ के अज़ाब से बचाए रखना। (२०१ ● यही लोग हैं जिनके लिए उन के कामों का

१. यानी शव्वाल, ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा के दस दिन।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उलाइ-क लहुम् नसीबुम्मिम्मा क-सबू ط वल्लाहु सरीअ़ुल् - हि़साब
(२०२) वज़्कुरुल्ला-ह फ़ी अय्यामिम्-मअ़्-दूदातिन् ط फ़ मन् त-अ़ज्ज-ल फ़ी
यौमैनि फ़ ला इस्-म अ़लैहि ج व मन् त-अख़्ख़-र फ़ ला इस्-म अ़लैहि
लि मनित्तक़ा ط वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्-लमू अन्नकुम् इलैहि तुह़्शरून (२०३)
व मिनन्नासि मंय्युअ़्-जिबु-क क़ौलुहू फ़िल्-
ह़यातिद्दुन्या व युश्हिदुल्ला-ह अ़ला मा फ़ी
क़ल्बिही ال व हु-व अलद्दुल्-ख़िस़ाम (२०४)
व इज़ा त-वल्ला सआ़ फ़िल्अर्ज़ि
लि युफ़्सि-द फ़ीहा व युह्लिकल्ह़र्-स वन्नस्-ल ط
वल्लाहु ला युह़िब्बुल्फ़साद (२०५) व
इज़ा क़ी-ल लहुत्तक़िल्ला-ह अ-ख़-ज़त्हुल्-
अ़िज़्ज़तु बिल्-इस्मि फ़ ह़स्बुहू जहन्नमु ط व
ल बिअ्सल्मिहाद (२०६) व मिनन्नासि
मंय्यश्री नफ़्सहुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि ط
वल्लाहु रऊफ़ुम्-बिल्अ़िबाद (२०७) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनुद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि
काफ़्फ़तन् ص व ला तत्तबिअ़ू

البقرة ٢ — ٢٥ — سيقول ٢

النَّارِ ﴿٢٠١﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾
وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ
عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا
أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللَّهَ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَإِذَا
تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ
بِالْإِثْمِ ۚ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۚ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَن
يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾ فَإِن زَلَلْتُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ
الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾ هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن
يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۚ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ آتَيْنَاهُم مِّنْ
آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَ
يَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا ۘ وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

ख़ुतुवातिश्शैतानि ط इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् - मुबीन (२०८) फ़ इन्
ज़-लल्तुम् मिम्बअ़्-दि मा जा-अत्कुमुल् - बय्यिनातु फ़अ़्-लमू अन्नल्ला-ह
अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम (२०९) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अंय्यअ्ति - य-हुमुल्लाहु
फ़ी ज़ु़ललिम्-मिनल्-ग़मामि वल्मला-इकतु व क़ुज़ियल्-अम्रु ط व इलल्लाहि
तुर्जअ़ुल्-उमूर ★ (२१०) सल् बनी इस्रा-ई-ल कम् आतैनाहुम् मिन्
आयतिम्-बय्यिनतिन् ط व मंय्युबद्दिल् निअ़्-मतल्लाहि मिम्बअ़्-दि मा जा-अत्हु
फ़ इन्नल्ला-ह शदीदुल् अ़िक़ाब (२११) ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रुल्-
ह़यातुद्दुन्या व यस्ख़रू-न मिनल्लज़ी-न आमनू ▨ वल्लज़ीनत्तक़ौ फ़ौक़हुम्
यौमल्-क़ियामति ط वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हि़साब (२१२)

★रु. २५/९ आ १४ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हिस्सा (यानी नेक बदला तैयार) है और ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला (और जल्द बदला देने वाला) है। (२०२) और (मिना के ठहरने के) दिनों में (जो) गिनती के (दिन) हैं, ख़ुदा को याद करो। अगर कोई जल्दी करे (और) दो ही दिन में (चल दे) तो उस पर भी कुछ गुनाह नहीं और जो बाद तक ठहरा रहे, उस पर भी कुछ गुनाह नहीं।[१] ये बातें उस शख़्स के लिए हैं जो (ख़ुदा से) डरे और तुम लोग ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि तुम सब उस के पास जमा किये जाओगे। (२०३) और कोई शख़्स तो ऐसा है जिसकी बातचीत दुनिया की ज़िन्दगी में तुमको भली मालूम होती है और वह अपने माफ़िज़्ज़मीर (जो कुछ ज़मीर यानी अन्तरात्मा में है) पर ख़ुदा को गवाह बनाता है, हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। (२०४) और जब पीठ फेरकर चला जाता है तो ज़मीन में दौड़ता फिरता है, ताकि उसमें फ़साद फैलाए और खेती को (बर्बाद) और (इन्सानों और हैवानों की) नस्ल को हलाक करे और ख़ुदा फ़साद को पसन्द नहीं करता। (२०५) और जब उससे कहा जाता है कि ख़ुदा से ख़ौफ़ करो तो घमण्ड उस को गुनाह में फंसा देता है, तो ऐसे को जहन्नम सज़ावार है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।[२] (२०६) और कोई शख़्स ऐसा है कि ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिए अपनी जान बेच डालता है और ख़ुदा बन्दों पर बहुत मेहरबान है।[३] (२०७) मोमिनो ! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो।[४] वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२०८) फिर अगर तुम रोशन हुक्मों के पहुंच जाने के बाद लड़खड़ा जाओ तो जान रखो कि ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (२०९) क्या ये लोग इसी बात के इंतिज़ार में हैं कि उन पर ख़ुदा (का अज़ाब) बादल के सायेबानों में आ नाज़िल हो और फ़रिश्ते भी (उतर आयें) और काम तमाम कर दिया जाए।[५] और सब कामों का रुजूअ ख़ुदा ही की तरफ़ है। (२१०) ★

(ऐ मुहम्मद !) बनी इस्राईल से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली निशानियां दीं और जो शख़्स ख़ुदा की नेमत को अपने पास आने के बाद बदल दे तो ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (२११) और जो काफ़िर हैं, उनके लिए दुनिया की जिंदगी ख़ुशनुमा कर दी गयी है और वे मोमिनों से मज़ाक़ करते हैं▨ लेकिन जो परहेज़गार हैं, वे क़ियामत के दिन उन पर ग़ालिब होंगे और ख़ुदा जिस को चाहता है, अनगिनत रोज़ी देता है। (२१२) (पहले तो सब) लोगों का एक ही

---

१. गिनती के दिनों से ईद के बाद के तीन दिन मुराद हैं, जिन को अय्यामे तशरीक़ कहते हैं। इन तीन दिनों यानी ११-१२ और १३ तारीख़ में ख़ुदा को याद करना चाहिए और अगर कोई सिर्फ़ दो दिन रह कर चला जाए, तो उसे अख़्तियार है।

२. यह हाल है मुनाफ़िक़ का कि ज़ाहिर में ख़ुशामद करे और अल्लाह को गवाह करे कि मेरे दिल में तुम्हारी मुहब्बत है और झगड़े के वक़्त कुछ कमी न करे और क़ाबू पाए तो लूट-मार मचा दे और मना करने से और ज़िद चढ़े और ज़्यादा गुनाह करे।

३. यह हाल है ईमान वाले का कि अल्लाह की ख़ुशी पर अपनी जान दे।

४. यानी बहकाने पर न चलो।

५. यानी हर एक को सज़ा मिले, उस के कामों के मुताबिक़।

★रु. २५/९ आ १४ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कानन्नासु उम्मतंव्वाहिद-तन् قف फ़ ब-अ-सल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबश्शिरी-न व
मुन्जिरी-न ق व अन्ज़-ल म-अहुमुल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि लियह्कु-म बैनन्नासि
फ़ी मख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ط व मख़्त-ल-फ़ फ़ीहि इल्लल्लजी-न ऊतूहु मिम्बअ़्दि
मा जा-अत्हुमुल्-बय्यिनातु बग़्यम्-बैनहुम् ج फ़ ह-दल्लाहुल्लजी-न आमनू
लिमख़्त-लफ़ू फ़ीहि मिनल्हक़्क़ि बि इज्निही
वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला
सिरातिम्-मुस्तक़ीम (२१३) अम् हसिब्तुम्
अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-तु व लम्मा यअ्तिकुम्
म-सलुल्लजी-न ख़लौ मिन क़ब्लिकुम् ط
मस्सत्-हुमुल्बअ्सा-उ वज़्ज़र्रा-उ व ज़ुल्ज़िलू
हत्ता यक़ूलर्-रसूलु वल्लजी-न आमनू म-अहू मता
नस्रुल्लाहि ط अला इन्-न नस्रल्लाहि
क़रीब (२१४) यस्अलून-क माज़ा
युन्फ़िक़ून ط क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन्
ख़ैरिन् फ़ लिल्-वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि
वब्निस्सबीलि ط व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही
अलीम (२१५) कुति-ब अलैकुमुल्-क़ितालु व हु-व कुर्हुल्लकुम् ج व
असा अन् तक्रहू शैअंव-व हु-व ख़ैरुल्लकुम् ج व असा अन् तुहिब्बू शैअंव-व
हु-व शर्रुल्लकुम् ط वल्लाहु यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून ★ (२१६)

سيقول ٢ ٢٦ البقرة ٢

وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً
وَّاحِدَةً قف فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ص وَاَنْزَلَ
مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ط
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ ج فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ
الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ط وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ ط مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ط اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ
فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ط وَ
مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ
وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ج وَعَسٰى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ج وَ
عَسٰى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ط قُلْ قِتَالٌ
فِيْهِ كَبِيْرٌ ط وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ق
وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ج وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ

منزل

★ रु. २६/१० आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मज़हब था। (लेकिन वे आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे) तो ख़ुदा ने (उनकी तरफ़) बशारत देने वाले और डर सुनाने वाले पैग़म्बर भेजे और उन पर सच्चाई के साथ किताबें नाज़िल कीं, ताकि जिन मामलों में लोग इख़्तिलाफ़ करते थे, उनका उनमें फ़ैसला कर दे। और इसमें इख़्तिलाफ़ भी उन्हीं लोगों ने किया जिनको किताब दी गयी थी, बावजूदे कि उन के पास खुले हुए हुक्म आ चुके थे। (और यह इख़्तिलाफ़ उन्होंने सिर्फ़) आपस की ज़िद से (किया) तो जिस हक़ बात में इख़्तिलाफ़ करते थे, ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से मोमिनों को उस की राह दिखा दी और ख़ुदा जिसको चाहता है, सीधा रास्ता दिखा देता है। (२१३) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि (यों ही) बहिश्त में दाख़िल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगों की-सी (मुश्किलें) तो पेश आयी ही नहीं। उनको (बड़ी-बड़ी) सख़्तियां और तक्लीफ़ें पहुंचीं और वे (परेशानियों में) हिला-हिला दिये गये, यहां तक कि पैग़म्बर और मोमिन लोग, जो उनके साथ थे, सब पुकार उठे कि कब ख़ुदा की मदद आएगी। देखो, ख़ुदा की मदद (बहुत) जल्द (आया चाहती) है। (२१४) (ऐ मुहम्मद!) लोग तुमसे पूछते हैं कि (ख़ुदा की राह में) किस तरह का माल ख़र्च करें। कह दो कि (जो चाहो ख़र्च करो, लेकिन) जो माल ख़र्च करना चाहो, वह (दर्जा-ब-दर्जा हक़ वालों, यानी) मां-बाप को और क़रीब के रिश्तेदारों को और यतीमों को और मुहताजों को और मुसाफ़िरों को (सबको दो) और जो भलाई तुम करोगे, ख़ुदा उसको जानता है। (२१५) (मुसलमानो!) तुम पर (ख़ुदा के रास्ते में) लड़ना फ़र्ज़ कर दिया गया है, वह तुम्हें ना-गवार तो होगा। मगर अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में भली हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे लिए नुक़सानदेह हो। और (इन बातों को) ख़ुदा ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते। (२१६) ★

★रु. २६/१०. आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यस्अलून-क अनिश्शह्रिल्-हरामि क़ितालिन् फ़ीहि ط क़ुल् क़ितालुन् फ़ीहि
कबीरुन् ط व सद्दुन् अन् सबीलिल्लाहि व कुफ़्रुम् बिही वलमस्जिदिल्-हरामि ق
व इख़्राजु अह्लिही मिन्हु अक्बरु अिन्दल्लाहि ج वल्फ़ित्नतु अक्बरु
मिनल्-क़त्लि ط व ला यज़ालू-न युक़ातिलूनकुम् हत्ता यरुद्दूकुम् अन् दीनिकुम्
इनिस्तताअू ط व मंय्यर्-तदिद् मिन्कुम्
अन् दीनिही फ़ यमुत् व हु-व काफ़िरुन्
फ़ उला-इ-क हबितत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-
आख़िरति ج व उला-इ-क अस्-हाबुन्नारि ج
हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२१७) इन्नल्लज़ी-न
आमनू वल्लज़ी-न हाजरू व जाहदू फ़ी
सबीलिल्लाहि لا उला-इ-क यर्जू-न
रह्मतल्लाहि ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (२१८)
यस्अलून-क अनिल्ख़म्रि वलमैसिरि ط क़ुल्
फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव-व मनाफ़िअु
लिन्नासि ز व इस्मुहुमा अक्बरु
मिन्नफ़्अिहिमा ط व यस्अलून-क मा ज़ा
युन्फ़िक़ू-न ۵ط क़ुलिल्अ़फ़्-व ط कज़ालि-क
युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ल-अ़ल्लकुम्

सيقول ٢ — ٢٧ — البقرة ٢

وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۚ
وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولٰئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولٰئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا
خٰلِدُونَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجٰهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللّٰهِ ۙ أُولٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١٨﴾
يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ نَفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۖ
قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْآيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ
خَيْرٌ ۖ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ
الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُؤْمِنَةٌ خَيْرٌ
مِنْ مُشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتّٰى
يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُؤْمِنٌ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ
أُولٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ وَاللّٰهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ
بِإِذْنِهِ ۖ وَيُبَيِّنُ آيٰتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۙ

منزل ١

त-त-फ़क्करून لا (२१९) फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ط व यस्अलून-क अनिल्-
यतामा ط क़ुल् इस्लाहुल्लहुम् ख़ैरुन् ط व इन् तुख़ालितूहुम्
फ़ इख़्वानुकुम् ط वल्लाहु यअ्लमुल्-मुफ़्सि-द मिनल्मुस्लिहि ط व लौ शा-अल्लाहु
ल-अअ्न-तकुम् ط इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (२२०) व ला तन्किहुल्
मुश्रिकाति हत्ता युअ्मिन-न ط व ल अ-म-तुम्-मुअ्मिन-तुन् ख़ैरुम्मिम्-मुश्रिकतिंव-व
लौ अअ्-ज-बत्कुम् ج व ला तुन्किहुल्-मुश्रिकी-न हत्ता युअ्मिनू ط व
ल अब्दुम्-मुअ्मिनुन् ख़ैरुम्मिम्-मुश्रिकिंव-व लौ अअ्-ज-बकुम् ط उला-इ-क यद्अू-न
इलन्नारि صلے वल्लाहु यद्अू इलल्जन्नति वलमग़्फ़िरति बि इज़्निही ج
व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२२१) ★

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुम से इज़्ज़त वाले महीनों में लड़ाई करने के बारे में पूछते हैं। कह दो कि इनमें लड़ना बड़ा (गुनाह) है और ख़ुदा की राह से रोकना और उस से कुफ़्र करना और मस्जिदे हराम (यानी ख़ाना-ए-काबा) में जाने से (बन्द करना) और मस्जिद वालों को उसमें से निकाल देना (जो ये काफ़िर करते हैं) ख़ुदा के नज़दीक उस से भी ज़्यादा (गुनाह) है और फ़िल्ना फैलाना ख़ून बहाने से भी बढ़कर है और ये लोग हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे, यहां तक कि अगर ताक़त रखें तो तुमको तुम्हारे दीन से फेर दें और जो कोई तुम में से अपने दीन से फिर (कर काफ़िर हो) जाएगा और काफ़िर ही मरेगा, तो ऐसे लोगों के आमाल दुनिया और आख़िरत, दोनों में बर्बाद हो जायेंगे और यही लोग दोज़ख़ (में जाने) वाले हैं, जिस में हमेशा रहेंगे। (२१७) जो लोग ईमान लाए और ख़ुदा के लिए वतन छोड़ गये और (काफ़िरों से) जंग करते रहे, वही ख़ुदा की रहमत के उम्मीदवार हैं और ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहमत करने वाला है। (२१८) (ऐ पैग़म्बर !) लोग तुम से शराब और जुए का हुक्म मालूम करते हैं। कह दो कि इन में नुक़्सान बड़े हैं और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, मगर उनके नुक़्सान फ़ायदों से कहीं ज़्यादा हैं।[1] और यह भी तुम से पूछते हैं कि (ख़ुदा की राह में) कौन सा माल ख़र्च करें? कह दो कि जो ज़रूरत से ज़्यादा हो। इस तरह ख़ुदा तुम्हारे लिए अपने हुक्मों को खोल-खोलकर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो। (२१९) (यानी) दुनिया और आख़िरत (की बातों) में (ग़ौर करो) और तुम से यतीमों के बारे में पूछते हैं, कह दो कि उन के (हालात का) सुधार बहुत अच्छाकाम है और अगर तुम उनसे मिल-जुल कर रहना (यानी ख़र्च इकट्ठा रखना) चाहो तो वे तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है कि ख़राबी करने वाला कौन है और सुधार करने वाला कौन और अगर ख़ुदा चाहता तो तुमको तक्लीफ़ में डाल देता। बेशक ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (२२०) और (मोमिनो !) मुश्रिक औरतों से जब तक कि ईमान न लाएं निकाह न करना, क्योंकि मुश्रिक औरत, चाहे तुमको कैसी ही भली लगे उससे मोमिन लौंडी बेहतर है और (इसी तरह) मुश्रिक मर्द, जब तक ईमान न लाएं, मोमिन औरतों को उनकी बीवी न बनाना, क्योंकि मुश्रिक (मर्द) से, चाहे वह तुमको कैसा ही भला लगे, मोमिन ग़ुलाम बेहतर है। ये (मुश्रिक, लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं और ख़ुदा अपनी मेहरबानी से बहिश्त और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है और अपने हुक्म लोगों से खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि नसीहत हासिल करें (२२१) ★

---

१. शुरू इस्लाम में शराब हराम न थी। मुसलमान उसे बिला झिझक पीते थे। जब यह आयत नाज़िल हुई तो जिन लोगों ने ख़्याल किया कि इस में नुक़्सान है, उन्होंने इस को छोड़ दिया और जिन लोगों ने समझा कि इस में फ़ायदे हैं, वे पीते रहे, फिर यह आयत उतरी कि, 'जब तुम मतवाले हुआ करो तो नमाज़ न पढ़ा करो।' तो जो शराब पिया करते थे, उन्होंने नमाज़ के वक़्त उस का पीना छोड़ दिया। इन आयतों से शराब की बुराई तो ज़ाहिर थी, लेकिन खुले तौर पर हराम न थी, फिर यह आयत उतरी कि ऐ ईमान वालो! शराब और जुआ और बुतों के थान और पांसे, ये सब नापाक काम, शैतानों के कामों में से हैं, सो इन से बचो ताकि निजात पाओ। इस से शराब साफ़ तौर पर हराम हो गयी। हज़रत उमर रज़ि० जो शराब के बारे में साफ़-साफ़ हुक्म के आ जाने की ख़्वाहिश रखते थे, जब उन्होंने यह आयत सुनी कि 'शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हें ख़ुदा की याद और नमाज़ से रोक दे, सो तुम को (उन से) बाज़ रहना चाहिए', तो फ़ौरन बोल उठे कि हम बाज़ रहे, हम बाज़ रहे।

★रु. २७/११ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व यस्अलून-क अ़निल्महीज़ि ۖ क़ुल् हु-व अ-जन् ۙ फ़अ्-तज़िलुन्निसा-अ
फ़िल्महीज़ि ۙ व ला तक़्रबू-हुन्-न ह़त्ता यत़्-हुर्-न ۚ फ़ इज़ा त-त़ह-हर्-न
फ़अ्तू-हुन-न मिन् हैसु अ-म-रकुमुल्लाहु ۗ इन्नल्ला-ह युह़िब्बुत्तव्वाबी-न
व युह़िब्बुल्-मु-त-त़हि्हरीन (२२२) निसा-उकुम् ह़र्सुल्लकुम् ۖ फ़अ्तू
ह़र्सकुम् अन्ना शिअ्तुम् ۫ व क़द्दिमू
लि अन्फ़ुसिकुम् ۗ वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू
अन्नकुम्मुलाक़ूहु ۗ व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन
(२२३) व ला तज्अलुल्ला-ह अुर्ज़तल्लि-
ऐमानिकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिहू
बैनन्नासि ۗ वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (२२४)
ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी
ऐमानिकुम् व लाकिय्युआख़िज़ुकुम् बिमा
क-स-बत् क़ुलूबुकुम् ۗ वल्लाहु ग़फ़ूरुन्
ह़लीम (२२५) लिल्लज़ी-न युअ्लू-न
मिन्निसा-इ-हिम् तरब्बुसु अर्ब-अ़ति अश्हुरिन् ۚ
फ़ इन् फ़ा-ऊ फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रह़ीम
(२२६) व इन् अ़-ज़-मुत्त़ला-क़ फ़-इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (२२७)
वल्मुत़ल्लक़ातु य-त-रब्बस्-न बि अन्फ़ुसिहिन्-न सला-स-त क़ुरू-इन् ۗ व ला
यहि़ल्लु लहुन्-न अंय्यक्तुम-न मा ख़-ल-क़ल्लाहु फ़ी अर्ह़ामिहिन-न इन् कुन्-न युअ्मिन्-न
बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि ۗ व बुअ़ूलतुहुन्-न अह़क़्क़ु बिरद्दिहिन-न फ़ी
ज़ालि-क इन् अरादू इस्लाह़न् ۗ व लहुन्-न मिस्लुल्लज़ी अ़लैहिन-न बिल्मअ्-रूफ़ि
व लिर्रिजालि अ़लैहिन्-न द-र-जतुन् ۗ वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम ★ (२२८)

البقرة ٢ ٢٨ سيقول ٢

وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ
حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝
نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا
بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ
فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
حَلِيْمٌ ۝ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ
فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ
اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ
وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ
كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ
فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ
تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ
اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और तुमसे हैज़ के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वह तो नजासत है, सो हैज़ के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो जायें, उनसे क़रीब न होओ। हां, जब पाक हो जाएं तो जिस तरीक़े से ख़ुदा ने तुम्हें इर्शाद फ़रमाया है, उनके पास जाओ। कोई शक नहीं कि ख़ुदा तौबा करने वालों और पाक-साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है। (२२२) तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, तो अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए (नेक अमल) आगे भेजो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि (एक दिन) तुम्हें उसके सामने हाज़िर होना है।[1] और (ऐ पैग़म्बर!) ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (२२३) और ख़ुदा (के नाम) को इस बात का हीला न बनाना कि (उसकी) क़समें खा-खाकर सुलूक करने और परहेज़गारी करने और लोगों में सुलह-सफ़ाई कराने से रुक जाओ और ख़ुदा सब कुछ सुनता और जानता है।[2] (२२४) ख़ुदा तुम्हारी बेकार क़स्मों पर तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा, लेकिन जो क़स्में तुम दिल के इरादे से खाओगे, उन पर पकड़ करेगा और ख़ुदा बख़्शने वाला, बुर्दबार है।[3] (२२५) जो लोग अपनी औरतों के पास जाने से क़सम खा लें, उनको चार महीने तक इन्तिज़ार करना चाहिए। अगर (इस अर्से में क़सम से) रुजूअ कर लें, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२२६) और अगर तलाक़ का इरादा कर लें, तो भी ख़ुदा सुनता और जानता है। (२२७) और तलाक़ वाली औरतें तीन हैज़[4] तक अपने आपको रोके रहें। और अगर वे ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उन को जायज़ नहीं कि ख़ुदा ने जो कुछ उन के पेट में पैदा किया है, उसको छिपायें और उन के खाविंद अगर फिर मुवाफ़क़त चाहें तो इस (मुद्दत) में वे उन को अपनी ज़ौजियत (बीवी बनाने) में ले लेने के ज़्यादा हक़दार हैं। और औरतों का हक़ (मर्दों पर) वैसा ही है जैसे दस्तूर के मुताबिक़ (मर्दों का) हक़ औरतों पर है। हां, मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत है और ख़ुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (२२८) ★

---

१. लफ़्ज़ों का लिहाज़ किया जाता तो तर्जुमा यों होना चाहिए था कि 'तुम्हें ख़ुदा से मिलना है, मगर जो तर्जुमा यहां किया गया है, वह मुहावरे के लिहाज़ से बहुत लतीफ़ है।

२. यानी इस बात की क़सम न खाओ कि मैं फ़्लां शख़्स से सुलूक नहीं करूंगा या फ़्लां नेक काम नहीं करूंगा। अगर ऐसी क़सम खा ली हो तो उस को तोड़ देना चाहिए और उस का कफ़्फ़ारा दे देना चाहिए।

३. 'बेकार क़सम' वह है जिस की नीयत न हो और बे-क़स्द व इरादा खायी जाए, जैसे कुछ लोग तकिया-ए-कलाम के तौर पर बात-बात में 'वल्लाह' 'बिल्लाह' कहा करते हैं। कुछ ने कहा, बेकार क़सम वह है जो गुस्से की हालत में खायी जाए या हलाल को हराम कर लिया जाए। ऐसी क़सम में कफ़्फ़ारा नहीं है। कुछ ने कहा, जो गुनाह की बात पर खायी जाए। कुछ ने कहा, जो मामले के वक़्त खायी जाए। बेचने वाला कहे, वल्लाह! यह चीज़ मैं इतने को नहीं बेचूंगा, ख़रीदने काला कहे, वल्लाह! मैं इतने को नहीं ख़रीदूंगा। बहरहाल बेकार क़स्मों पर पकड़ नहीं है।

४. जिस लफ़्ज़ का तर्जुमा हम ने हैज़ किया है, वह 'क़ुरू' है, जिस के मानी हैज़ और तुह्र (पाकी) दोनों हैं। इस बारे में इख़्तिलाफ़ रहा है कि यहां हैज़ मुराद है या तुह्र। सहाबा रज़ि० की एक जमाअत इस बात की क़ायल है कि क़ुरू के मानी तुह्र हैं। इमाम मालिक रह० और शाफ़ई का भी मज़हब यही है, मगर चारों ख़लीफ़ा और ताबईन का यह क़ौल है कि 'क़ुरू' से मुराद हैज़ है। इमाम अबू हनीफ़ा रह० का भी यही मज़हब है। इमाम

(शेष ५५ पर)

★रु. २८/१२ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अत्तलाक़ु मर्रतानि ج फ़ इम्साकुम्-बिमअ़-रूफ़िन् औ तस्रीहुम्-बि इह्सानिन् ط
व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअ्ख़ुज़ू मिम्मा आतैतुमूहुन-न शैअन् इल्ला
अंय्यख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि ط फ़ इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला युक़ीमा
हुदूदल्लाहि ط फ़ ला जुना-ह अ़लैहिमा फ़ीमफ़्तदत् बिही ط तिल्-क हुदूदल्लाहि
फ़-ला तअ्-तदूहा ج व मंय्य-त-अ़द्-द हुदूदल्लाहि
फ़ उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (२२९) फ़ इन्
तल्ल-क़हा फ़ ला तहिल्लु लहू मिम्बअ्-दु हत्ता
तन्कि-ह ज़ौजन् ग़ैरहू ط फ़ इन् तल्ल-क़हा
फ़-ला जुना-ह अ़लैहिमा अंय्य-त-राजआ इन्
ज़न्ना अंय्युक़ीमा हुदूदल्लाहि ط व तिल-क
हुदूदुल्लाह युबय्यिनुहा लि क़ौमिंय्यअ्-लमून
(२३०) व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-ब-लग़्-न
अ-ज-लहुन्-न फ़ अम्सिकूहुन्-न बिमअ्-रूफ़िन् औ
सर्रिहूहुन्-न बिमअ्-रूफ़िन् ص व ला तुम्सिकू हुन्-न
ज़िरारल्लितअ्-तदू ج व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क

سیقول ٢ — ٢٩ — البقرة ٢

افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ
اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٢٩ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْ بَعْدُ
حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ
اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ۝٢٣٠ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫
وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ
يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٢٣١ وَ
اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ
اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ
كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَ
اللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٢٣٢ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ
حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى الْوَارِثِ
مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا

منزل ١

फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू ط व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवन् ز -वज़्कुरू
निअ्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् व मा अन्-ज़-ल अ़लैकुम् मिनल्-किताबि वल्हिक्मति
यअिज़ुकुम् बिही ط वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह बि कुल्लि शै-इन् अ़लीम
★● (२३१) व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-ब-लग़्-न अ-ज-लहुन-न फ़ ला तअ्ज़ुलू
हुन्-न अंय्यन्किह्-न अज़्वाजहुन्-न इज़ा तराज़ौ बैनहुम् बिलमअ्रूफ़ि ط ज़ालि-क यूअ़ज़ु
बिही मन् का-न मिन्कुम् युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि ط ज़ालिकुम्
अज़्का लकुम् व अत्हरु ط वल्लाहु यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून (२३२)

★रु. २९/१३ आ ३ ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तलाक़ (सिर्फ़) दो बार है। (यानी जब दो बार तलाक़ दे दी जाए तो) फिर (औरतों को) या तो शाइस्ता तरीक़े से (निकाह में) रहने देना है या भलाई के साथ छोड़ देना और यह जायज़ नहीं कि जो मह्र तुम उन को दे चुके हो, उस में से कुछ वापस ले लो। हां, अगर बीवी व शौहर को ख़ौफ़ हो कि वे ख़ुदा की हदों को क़ायम नहीं रख सकेंगे, तो अगर औरत (ख़ाविंद के हाथ से) रिहाई पाने के बदले में कुछ दे डाले तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं। ये ख़ुदा की (मुक़र्रर की हुई) हदें हैं, उन से बाहर न निकलना और जो लोग ख़ुदा की हदों से बाहर निकल जायेंगे, वे गुनाहगार होंगे। (२२९) फिर अगर शौहर (दो तलाक़ों के बाद तीसरी) तलाक़ औरत को दे दे तो उस के बाद जब तक औरत किसी दूसरे शख़्स से निकाह न कर ले, (पहले शौहर) पर हलाल न होगी। हां, अगर दूसरा ख़ाविंद भी तलाक़ दे दे और औरत और पहला ख़ाविंद फिर एक दूसरे की तरफ़ रुजूअ कर लें तो उन पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि दोनों यक़ीन करें कि ख़ुदा की हदों को क़ायम रख सकेंगे और ये ख़ुदा की हदें हैं, इन को वह उन लोगों के लिए बयान फ़रमाता है, जो दानिश (सूझ-बूझ) रखते हैं। (२३०) और जब तुम औरतों को (दो बार) तलाक़ दे चुको और उन की इद्दत पूरी हो जाए तो उन्हें या तो अच्छे सुलूक से निकाह में रहने दो या शाइस्ता तरीक़े से रुख़्सत कर दो और इस नीयत से उन को निकाह में न रहने देना चाहिए कि उन्हें तक्लीफ़ दो और उन पर ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा वह अपना ही नुक़सान करेगा। और ख़ुदा के हुक्मों को हंसी (और खेल) न बनाओ। और ख़ुदा ने तुमको जो नेमतें बख़्शी हैं और तुम पर जो किताब और दानाई की बातें नाज़िल की हैं, जिन से वह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है, उन को याद करो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा हर चीज़ जानता है। (२३१)★●

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे चुको और उन की इद्दत पूरी हो जाए तो उन को दूसरे शौहरों के साथ, जब वे आपस में जायज़ तौर पर राज़ी हो जायें, निकाह करने से मत रोको। इस (हुक्म) से उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो तुम में ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता है, यह तुम्हारे लिए निहायत ख़ूब और बहुत पाकीज़गी की बात है और ख़ुदा जानता है और

(५३ का शेष)

अहमद रह० कहते हैं कि बड़े सहाबा इस के क़ायल हैं कि क़ुरू के मानी हैज़ हैं। जो लोग इस के क़ायल हैं कि क़ुरआन की आयत में क़ुरू से मुराद हैज़ है, उन की एक दलील यह भी है कि प्यारे नबी सल्ल० ने फ़ातिमा बिन्त जैश से फ़रमाया था कि 'दअिस्सला-त अय्या-म अक़राइकि' यानी हैज़ के दिनों में नमाज़ छोड़ दिया करो। हम ने इसी रिवायत की बुनियाद पर क़ुरू का तर्जुमा हैज़ किया है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्वालिदातु युर्ज़िअ्-न औलादहुन्-न ह़ौलैनि कामिलैनि लि मन् अरा-द अंय्युतिम्-मर्रज़ाअ्-त ط व अ़-लल्-मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन-न व किस्वतुहुन्-न बिलमअ्-रूफ़ि ط ला तुकल्लफ़ु नफ़्सुन् इल्ला वुस्अ़हा ج ला तुज़ार्-र-वालिदतुम्-बि व-लदिहा व ला मौलूदुल्लहू बि व-लदिहीج व अ़-लल्-वारिसि मिस्लु ज़ालि-क ج फ़ इन् अरादा फ़िसालन् अ़न्तराज़िम्मिन्हुमा व तशावुरिन् फ़ ला जुना-ह् अ़लैहिमा ط व इन् अरत्तुम् अन् तस्तर्ज़िअ़ू औलादकुम् फ़ ला जुना-ह् अ़लैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम् बिलमअ्-रूफ़ि ط वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्-लमू अन्नल्ला-ह बिमा तअ़्-मलू-न बसीर (२३३) वल्लज़ी-न यु-त-वफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंय्य-त-रब्बस्-न बिअन्फ़ुसिहिन्-न अर्ब-अ-त अश्हुरिंव-व अ़श्रन् ج फ़ इज़ा ब-लग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-ला जुना-ह् अ़लैकुम् फ़ीमा फ़-अ़ल-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न बिलमअ़्रूफ़ि ط वल्लाहु बिमा तअ़्-मलू-न ख़बीर (२३४) वला जुना-ह् अ़लैकुम् फ़ीमा अ़र्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित़्बतिन्निसा-इ औ अक्नन्तुम् फ़ी अन्फ़ुसिकुम् ط अ़लि-मल्लाहु अन्नकुम् स-तज़्कुरूनहुन-न व लाकिल्ला तुवाअ़िदूहुन-न सिर्रन् इल्ला अन् तक़ूलू क़ौलम् मअ़्-रूफ़न् ط व ला तअ़्-ज़िमू अ़ुक़्दतन्निकाहि ह़त्ता यब्लुग़ल्-किताबु अ-ज-लहू ط वअ़्-लमू अन्नल्ला-ह यअ़्-लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह़्ज़रूहु ج वअ्-लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् ह़लीम ع ★ (२३५) ला जुना-ह् अ़लैकुम् इन् त़ल्लक़्तुमुन्निसा-अ मालम् तमस्सूहुन् - न औ तफ़्रिज़ू लहुन् - न फ़रीज़-तंव्-व मत्तिअ़ू-हुन-न ج अ़-लल्मूसिअ़ि क़-द-रुहू व अ़लल्मुक़्तिरि क़-द-रुहू ج मताअ़म्-बिलमअ़्-रूफ़ि ج ह़क़्क़न् अ़लल्-मुह़्सिनीन (२३६) व इन् त़ल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन-न व क़द् फ़-रज़्तुम् लहुन्-न फ़रीज़-तन् फ़ निस्फ़ु मा फ़-रज़्तुम् इल्ला अंय्यअ़्-फ़ू-न औ यअ़्-फ़ुवल्लज़ी बियदिही अ़ुक़्दतुन्निकाहि ط व अन् तअ़्-फ़ू अक़्रबु लित्तक़्वा ط व ला तन्सवुल्फ़ज़्-ल बैनकुम् ط इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्-मलू-न बसीर (२३७)

سيقول ٢ ٣٠ البقرة ٢

جناح عليهما ط وان اردتم ان تسترضعوا اولادكم فلا جناح
عليكم اذا سلمتم ما اتيتم بالمعروف ط واتقوا الله واعلموا ان
الله بما تعملون بصير (٢٣٣) والذين يتوفون منكم ويذرون
ازواجا يتربصن بانفسهن اربعة اشهر وعشرا ج فاذا بلغن
اجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن في انفسهن بالمعروف ط
والله بما تعملون خبير (٢٣٤) ولا جناح عليكم فيما عرضتم به
من خطبة النساء او اكننتم في انفسكم ط علم الله انكم
ستذكرونهن ولكن لا تواعدوهن سرا الا ان تقولوا قولا
معروفا ط ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتب اجله ط
واعلموا ان الله يعلم ما في انفسكم فاحذروه ج واعلموا ان
الله غفور حليم (٢٣٥) لا جناح عليكم ان طلقتم النساء ما
لم تمسوهن او تفرضوا لهن فريضة ج ومتعوهن على الموسع
قدره وعلى المقتر قدره ج متاعا بالمعروف ج حقا على المحسنين (٢٣٦)
وان طلقتموهن من قبل ان تمسوهن وقد فرضتم لهن
فريضة فنصف ما فرضتم الا ان يعفون او يعفوا الذي بيده
عقدة النكاح ط وان تعفوا اقرب للتقوى ط ولا تنسوا الفضل
بينكم ط ان الله بما تعملون بصير (٢٣٧) حفظوا على الصلوت و

منزل

★रु. ३०/१४ आ ४

तुम नहीं जानते। (२३२) और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं, यह (हुक्म) उस शख़्स के लिए है जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे और दूध पिलाने वाली माओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़ बाप के ज़िम्मे होगा। किसी शख़्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं दी जाती, (तो याद रखो कि) न तो मां को उस के बच्चे की वजह से नुक़्सान पहुंचाया जाए और न बाप को उस की औलाद की वजह से नुक़्सान पहुंचाया जाए[1] और इसी तरह (नान-नफ़्क़ा) बच्चे के वारिस के ज़िम्मे है और अगर दोनों (यानी मां-बाप) आपस की रज़ामंदी और सलाह से बच्चों का दूध छुड़ाना चाहें, तो उनपर कुछ गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को दूध पिलवाना चाहो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि तुम दूध पिलाने वालियों को दस्तूर के मुताबिक़ उन का हक़ जो तुम ने देना तै किया था, दे दो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देख रहा है। (२३३) और जो लोग तुम में से मर जायें और औरतें छोड़ जायें तो औरतें चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें और जब (ये) इद्दत पूरी कर चुकें और अपने हक़ में पसंदीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखता है।[2] (२३४) अगर तुम इशारे की बातों में औरतों को निकाह का पैग़ाम भेजो या (निकाह की ख़्वाहिश को) अपने दिलों में छिपाए रखो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। ख़ुदा को मालूम है कि तुम उन से (निकाह का) ज़िक्र करोगे, मगर (इद्दत के दिनों में) इस के सिवा कि दस्तूर के मुताबिक़ कोई बात कह दो छिपे तौर पर, उन से क़ौल व क़रार न करना। और जब तक इद्दत पूरी न हो ले, निकाह का पक्का इरादा न करना और जान रखो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, ख़ुदा को सब मालूम है, तो उस से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला और इल्म वाला है। (२३५) ★

और अगर तुम औरतों को उन के पास जाने या उन का मह्र मुक़र्रर करने से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, हां, उनको दस्तूर के मुताबिक़ कुछ ख़र्च ज़रूर दो (यानी) मक़्दूर वाला अपनी ताक़त के मुताबिक़ दे और तंगदस्त अपनी हैसियत के मुताबिक़। नेक लोगों पर यह एक तरह का हक़ है। (२३६) और अगर तुम औरतों को उन के पास जाने से पहले तलाक़ दे दो, लेकिन मह्र मुक़र्रर कर चुके हो, तो आधा मह्र देना होगा। हां, अगर औरतें मह्र बख़्श दें या मर्द, जिन के हाथ में निकाह का अक़्द है (अपना हक़) छोड़ दें (और पूरा मह्र दे दें तो उनको अख़्तियार है) और अगर तुम मर्द लोग ही अपना हक़ छोड़ दो तो यह परहेज़गारी की बात है और आपस में भलाई करने को भूलना नहीं, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (२३७)

---

१. यानी मां अगर दूध पिलाने पर राज़ी न हो, तो उस से ज़बरदस्ती न की जाए और बाप से उस की ताक़त से ज़्यादा नफ़्क़ा (ख़र्चा) न मांगा जाए।

२. तलाक़ की इद्दत तीन हैज़ और सोग की इद्दत चार महीने दस दिन इस सूरत में है, जब हमल मालूम न हो और अगर हमल मालूम हो तो बच्चा होने के वक़्त तक है।

★रु.३०/१४ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हाफ़िज़ू अलस्स-ल-वाति वस्सलातिल्-वुस्ता ق व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन
(२३८) फ़-इन् ख़िफ़्तुम् फ़ रिजालन् औ रुक्बानन् ۚ फ़ इज़ा अमिन्तुम्
फ़ज़्कुरुल्ला-ह कमा अ़ल्ल-म-कुम् मालम् तकूनू तअ़्-लमून (२३९) वल्लज़ी-न
य-त-वफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंव्-व सिय्यतल्-लि अज़्वाजिहिम्
मताअ़न् इलल्हौलि ग़ै-र इख़राजिन् ۚ
फ़ इन् ख़-रज्-न फ़ ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ी मा
फ़-अ़ल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न मिम्मअ़्-रूफ़िन् ط
वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम (२४०) व
लिल्मुतल्लक़ाति मताअ़ुम् - बिल्मअ़्रूफ़ि ط
ह़क़्क़न् अ़लल्मुत्तक़ीन (२४१) कज़ालि - क
युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम्
तअ़्-क़िलून ★ (२४२) अ - लम् त - र
इलल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारि-हिम् व
हुम् उलूफ़ुन् ह-ज-रल्मौति ص फ़ . क़ा-ल
लहुमुल्लाहु मूतू قف सुम्-म अह्याहुम् ط
इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व

الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا
اَوْ رُكْبَانًا فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا
اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ
بِالْمَعْرُوْفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ
حَذَرَ الْمَوْتِ ۠ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ
وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ
مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ
قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَمَا
لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَاۗىِٕنَا ۭ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (२४३) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि
वअ़्-लमू अन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (२४४) मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह
क़र्ज़न् ह़-स-नन् फ़-युज़ाअ़िफ़हू लहू अज़्आफ़न् कसीर-तन् ط वल्लाहु यक़्बिज़ु
व यब्सुतु व इलैहि तुर्जअ़ून (२४५) अ-लम् त-र इलल्मल-इ
मिम्बनी इस्राई-ल मिम्बअ़्-दि मूसा ▨ इज् क़ालू लि नबिय्यिल्-
लहुमुब्अ़स् लना मलिकन्नुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ط क़ा-ल हल् अ़सैतुम्
इन् कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू ط क़ालू व मा लना
अल्ला नुक़ाति-ल फ़ी सबीलिल्लाहि व क़द् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना
व अब्ना - इना ط फ़ - लम्मा कुति - ब अ़लैहिमुल् - क़ितालु तवल्लौ
इल्ला क़लीलम्मिन्हुम् ط वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़्ज़ालिमीन (२४६)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(मुसलमानो !) सब नमाज़ें ख़ास तौर से बीच की नमाज़ (यानी अस्र की नमाज़) पूरे एहतिमाम के साथ अदा करते रहो।[1] और ख़ुदा के आगे अदब से खड़े रहा करो। (२३८) अगर तुम ख़ौफ़ की हालत में हो तो प्यादे या सवार (जिस हाल में हो, नमाज़ पढ़ लो) फिर जब अम्न (व इत्मीनान) हो जाए तो जिस तरीक़े से ख़ुदा ने तुम को सिखाया है, जो तुम पहले नहीं जानते थे, ख़ुदा को याद करो। (२३९) और जो लोग तुम में से मर जायें, और औरतें छोड़ जायें, वे अपनी औरतों के हक़ में वसीयत कर जायें कि उन को एक साल तक ख़र्च दिया जाए और घर से न निकाली जाएं। हां, अगर वे ख़ुद घर से निकल जाएं और अपने हक़ में पसन्दीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और ख़ुदा ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (२४०) और तलाक़ वाली औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक़ नान व नफ़्क़ा देना चाहिए। परहेज़गारों पर (यह भी) हक़ है। (२४१) इसी तरह ख़ुदा अपने हुक्मों को तुम्हारे लिए बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो। (२४२)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो (गिनती में) हज़ारों ही थे और मौत के डर से अपने घरों से निकल भागे थे, तो ख़ुदा ने उन को हुक्म दिया कि मर जाओ, फिर उन को ज़िन्दा भी कर दिया। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा लोगों पर मेहरबानी रखता है, लेकिन ज़्यादा लोग शुक्र नहीं करते। (२४३) और (मुसलमानो !) ख़ुदा की राह में जिहाद करो और जान रखो कि ख़ुदा (सब कुछ) सुनता (और सब कुछ) जानता है। (२४४) कोई है कि ख़ुदा को क़र्ज़े हस्ना (भला क़र्ज़) दे कि वह उस के बदले उस को कई हिस्से ज़्यादा देगा और ख़ुदा ही रोज़ी को तंग करता और (वही उसे) फैलाता है और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (२४५) भला तुम ने बनी इस्राईल की एक जमाअत को नहीं देखा, जिस ने मूसा के बाद अपने पैग़म्बर से कहा कि आप हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम ख़ुदा की राह में जिहाद करें। पैग़म्बर ने कहा कि अगर तुम को जिहाद का हुक्म दिया जाए तो अजब नहीं कि लड़ने से पहलू बचाओ। वे कहने लगे कि हम ख़ुदा की राह में क्यों न लड़ेंगे जब कि हम वतन से (निकाले) और बाल-बच्चों से जुदा कर दिए गए, लेकिन जब उनको जिहाद का हुक्म दिया गया तो कुछ लोगों के अलावा सब फिर गये और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (२४६) और पैग़म्बर ने उन से (यह भी) कहा कि ख़ुदा ने तुम पर तालूत को बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया है। वे बोले कि उसे हम पर बादशाही का हक़ कैसे हो सकता है, बादशाही के हक़दार तो हम हैं और उस के पास तो बहुत सी दौलत भी नहीं। पैग़म्बर ने कहा कि ख़ुदा ने उस को तुम पर (फ़ज़ीलत दी है और बादशाही के लिए) चुन रखा है। उसने उसे इल्म भी बहुत सा बख़्शा है और जिस्म भी (बड़ा अता किया है) और ख़ुदा (को अख़्तियार है), जिसे चाहे बादशाही बख़्शे। वह बड़ी वुसअत वाला और जानने वाला है। (२४७) और पैग़म्बर ने उन

---

१. पूरे एहतिमाम के साथ अदा करने से मुराद यह है कि नमाज़ को उस के वक़्तों में पढ़ते रहो। बीच की नमाज़ के बारे में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं। किसी ने कहा, ज़ुहर की नमाज़ मुराद है। किसी ने कहा इशा की, किसी ने कहा अस्र की, किसी ने कहा फ़ज्र की, मगर ज़्यादा सही यह है कि इस से अस्र की नमाज़ मुराद है, जैसा कि सही हदीसों में आया है।

★रु. ३१/१५ आ ७ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला-ह क़द् ब-अ-स लकुम् ता़लू-त मलिकन्ॱ
क़ालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अ़लैना व नह़्नु अह़क़्क़ु बिल्मुल्कि मिन्हु व
लम् युअ्-त स-अ-तम्-मिनल्मालि ॱ क़ा-ल इन्नल्लाहस्तफ़ाहु अ़लैकुम् व ज़ादहू
बस्त़-तन् फ़िल्इल्मि वल्जिस्मि ॱ वल्लाहु युअ्ती मुल्कहू मंय्यशा-उॱ

سيقول ٢ — ٣٢ — البقرة ٢

بلكًا قالوا اني يكون له الملك علينا ونحن احق بالملك منه ولم
يؤت سعة من المال قال ان الله اصطفه عليكم وزاده بسطة
في العلم والجسم والله يؤتي ملكه من يشاء والله واسع عليم ۝
وقال لهم نبيهم ان اية ملكه ان ياتيكم التابوت فيه سكينة
من ربكم وبقية مما ترك ال موسى وال هرون تحمله الملئكة
ان في ذلك لاية لكم ان كنتم مؤمنين ۝ فلما فصل طالوت
بالجنود قال ان الله مبتليكم بنهر فمن شرب منه فليس مني
ومن لم يطعمه فانه مني الا من اغترف غرفة بيده فشربوا
منه الا قليلا منهم فلما جاوزه هو والذين امنوا معه قالوا
لا طاقة لنا اليوم بجالوت وجنوده قال الذين يظنون انهم ملقوا
الله كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة باذن الله والله مع
الصبرين ۝ ولما برزوا لجالوت وجنوده قالوا ربنا افرغ علينا
صبرا وثبت اقدامنا وانصرنا على القوم الكفرين ۝ فهزموهم
باذن الله وقتل داود جالوت واته الله الملك والحكمة و
علمه مما يشاء ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض
لفسدت الارض ولكن الله ذو فضل على العلمين ۝
تلك ايت الله نتلوها عليك بالحق وانك لمن المرسلين ۝

वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (२४७) व क़ा-ल
लहुम् नबिय्युहुम् इन-न आय-त मुल्किही
अंय्यअ्तियकुमुत्ताबूतु फ़ीहि सकीनतुम्-
मिर्रब्बिकुम् व बक़िय्यतुम्-मिम्मा त-र-क आलु
मूसा व आलु हारू-न तह़्मिलुहुल्-मला-इकतुॱ
इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्लकुम् इन्
कुन्तुम् मुअ्मिनीन ★ (२४८) फ़ लम्मा
फ़-स़-ल त़ालूतु बिल्जुनूदि ॱ क़ा-ल इन्नल्ला-ह
मुब्तलीकुम् बि-न-ह़रिन् ॱ फ़ मन् शरि-ब
मिन्हु फ़ लै-स मिन्नी ॱ व मल्लम् यत़-अम्हु
फ़ इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिग़्त-र-फ़
ग़ुर्फ़तम्-बि यदिही ॱ फ़ शरिबू मिन्हु इल्ला
क़लीलम्-मिन्हुम् ॱ फ़ लम्मा जा-व-ज़हू हु-व वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू ॱ क़ालू
ला त़ाक़-त लनल्यौ-म बिजालू-त व जुनूदिही ॱ क़ालल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम्
मुलाक़ुल्लाहि ॱ कम्मिन् फ़िअतिन् क़लीलतिन् ग़-ल-बत् फ़ि-अतन् कसीरतम्
बि इज़्निल्लाहि ॱ वल्लाहु म-अ-स़्साबिरीन (२४९) व लम्मा ब-र-ज़ू लि जालू-त
व जुनूदिही क़ालू रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना स़ब्रंव-व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना
अ़-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन ॱ (२५०) फ़-ह-ज़मूहुम् बि इज़्निल्लाहि ॱ व क़-त-ल
दावूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्मुल-क वल्ह़िक्म-त व अ़ल्लमहू मिम्मा
यशाउ ॱ व लौ ला दफ़्अ़ुल्लाहिन्ना-स बअ़्ज़हुम् बिबअ़्ज़िल्-ल-फ़-स-दतिल
अर्ज़ु व लाकिन्नल्ला-ह ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्-आ़लमीन (२५१) तिल्-क
आयातुल्लाहि नत्लू हा अ़लै-क बिल्ह़क़्क़ि ॱ व इन्न-क लमिनल्-मुर्सलीन (२५२)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

से कहा कि उनकी बादशाही की निशानी यह है कि तुम्हारे पास एक सन्दूक़ आएगा जिस को फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे। उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तसल्ली (बख़्शने वाली चीज़) होगी और कुछ और चीज़ें भी होंगी जो मूसा और हारून छोड़ गये थे। अगर तुम ईमान रखते हो तो यह तुम्हारे लिए एक बड़ी निशानी है। (२४८) ★

ग़रज़ जब तालूत फ़ौजें ले कर रवाना हुआ तो उस ने (उन से) कहा कि ख़ुदा एक नहर से तुम्हारी आज़माइश करने वाला है। जो शख़्स उस में से पानी पी लेगा (उस के बारे में समझा जाएगा कि) वह मेरा नहीं और जो न पिएगा, वह (समझा जाएगा कि) मेरा है। हां, अगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले (तो ख़ैर, ज़ब वे लोग नहर पर पहुंचे) तो कुछ लोगों के सिवा सब ने पानी पी लिया। फिर जब तालूत और मोमिन लोग, जो उस के साथ, नहर के पार हो गये, तो कहने लगे कि आज हम में जालूत और उस के लश्कर से मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं। जो लोग यक़ीन रखते थे कि उन को ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है, वे कहने लगे कि कभी-कभी थोड़ी-सी जमाअत ने ख़ुदा के हुक्म से बड़ी जमाअत पर फ़त्ह हासिल की है और ख़ुदा सब्र करने वालों (जमाव वालों) के साथ है। (२४९) और जब वे लोग जालूत और उस की फ़ौज के मुक़ाबले में आए तो (ख़ुदा से) दुआ की, ऐ परवरदिवार ! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें (लड़ाई में) क़दमों से जमाये रख, और काफ़िरों की (फ़ौज) पर जीत दे। (२५०) तो तालूत की फ़ौज ने ख़ुदा के हुक्म से उन को हरा दिया और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर डाला। और ख़ुदा ने उस को बादशाही और दानाई बख़्शी और जो कुछ चाहा, सिखाया और ख़ुदा लोगों को एक दूसरे (पर चढ़ाई और हमला करने) से हटाता न रहता, तो मुल्क तबाह हो जाता, लेकिन ख़ुदा दुनिया वालों पर बड़ा मेहरबान है। (२५१) ये ख़ुदा की आयतें हैं जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं। (और ऐ मुहम्मद !) तुम बिला शुब्हा पैग़म्बरों में से हो। (२५२) ये पैग़म्बर (जो

★रु. ३२/१६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तीसरा पारः तिल्-करु सुलु

सूरतुल्-ब-क़-रति आयत २५३ से २८६

तिलकर्रुसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़हुम् अ़ला बअ्ज़िन् मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु
व र-फ़-अ बअ्-ज़हुम् द-रजातिन् ط व आतैना ई़सब्-न मर्यमल्-बय्यिनाति
व अय्यद्नाहु बि रूहिल्क़ुदुसि ط व लौ शा-अल्लाहु मक़्त-त-लल्लज़ी-न मिम्बअ्-दि-
हिम् मिम्बअ्दि मा जा-अत्-हुमुल्बय्यिनातु व लाकिनिख़्तलफ़ू फ़ मिन्हुम् मन्
आम-न व मिन्हुम् मन् क-फ़र ط व लौ
शा-अल्लाहु मक़्-त-तलू قف व लाकिन्नल्ला-ह
यफ़्अ़लु मा युरीद ★ (२५३) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा
र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला
बैअुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव्-व ला
शफ़ाअ़तुन् ط वल्काफ़िरू - न हुमुज़्ज़ालिमून
(२५४) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला
हु-व ج अल्हय्युल्क़य्यूमु ج ला तअ्ख़ुज़ुहू
सि-नतुंव्-व ला नौमुन् ط लहू मा फ़िस्समावाति
व मा फ़िल्अर्ज़ि ط मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अु
अ़िन्दहू इल्ला बि-इज़्निही ط यअ्-लमु
मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् ج
व ला युहीतू-न बिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ ج वसि-अ
कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज़ ج व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा ج व हुवल्
अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम (२५५) ला इक्रा - ह फ़िद्दीनि قف क़त्तबय्यनर्रुश्दु
मिनलग़य्यि ج फ़ मंय्यक्फ़ुर् बित्ताग़ूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्-
अ़ुर्वतिल्-वुस्क़ा ق लन्फ़िसा-म लहा ط वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम (२५६)

البقرة ٢ — ٣٣ — تلك الرسل ٣

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ
اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ
الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا
بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾
اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا
نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ
يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾
لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى
لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـئُهُمُ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हम वक़्त-वक़्त पर भेजते रहे) हैं, इन में से हम ने कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है कुछ ऐसे हैं जिन से ख़ुदा ने बातें कीं और कुछ के (दूसरे मामलों में) मर्तबे बुलंद किए और ईसा बिन मरयम को हम ने खुली हुई निशानियां अता कीं और रूहुल क़ुद्स ने उन को मदद दी[1] और अगर ख़ुदा चाहता तो उन से पिछले लोग अपने पास निशानियां आने के बाद आपस में न लड़ते, लेकिन उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया, तो उन में से कुछ तो ईमान ले आए और कुछ काफ़िर ही रहे। और अगर ख़ुदा चाहता तो ये लोग आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं, लेकिन ख़ुदा जो चाहता है, करता है।[2] (२५३)★

ऐ ईमान वालो ! जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस में से उस दिन के आने से पहले-पहले ख़र्च कर लो जिस में न (आमाल का) सौदा हो, न दोस्ती और सिफ़ारिश हो सके और कुफ़्र करने वाले लोग ज़ालिम हैं। (२५४) ख़ुदा, (वह सच्चा माबूद है कि) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। ज़िन्दा हमेशा रहने वाला, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। कौन है कि उस की इजाज़त के बग़ैर उस से (किसी की) सिफ़ारिश कर सके। जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो कुछ उन के पीछे हो चुका है, उसे सब मालूम है और वे उस की मालूमात में से किसी चीज़ पर दस्तरस (क़ाबू पाना) हासिल नहीं कर सकते, हां, जिस क़दर वह चाहता है (उसी क़दर मालूम करा देता है) उस की बादशाही (और इल्म) आसमान और ज़मीन सब पर हावी है और उसे उन की हिफ़ाज़त कुछ भी मुश्किल नहीं। वह बड़ा आली रुत्बा और जलीलुल क़द्र है। (२५५) दीने इस्लाम में ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत (साफ़ तौर पर ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है, तो जो शख़्स बुतों से एतक़ाद न रखे और ख़ुदा पर ईमान लाये, उस ने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड़ ली है जो कभी टूटने वाली नहीं और ख़ुदा (सब कुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है। (२५६) जो लोग

---

१. खुली हुई निशानियों से मुराद मुर्दों का ज़िंदा करना, बीमारों का अच्छा करना और पैदाइशी अंधों की आंखें रोशन करना है। रूहुल क़ुद्स से मुराद जिब्रील हैं जो हर जगह ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहा करते थे।

२. लड़ने और जंग-लड़ाई करने से मुराद इख़्तिलाफ़ है यानी अगर ख़ुदा चाहता तो उन में इख़्तिलाफ़ न होता, मगर उस ने उन का मुख़्तलिफ़ रहना ठीक समझा, इस लिए वे उन से मुत्तफ़िक़ न हुए।

व. लाज़िम ★रु. ३३/१ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी-न आमनू لا युख़्रिजुहुम मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ط
वल्लज़ी-न क-फ़रू औलिया-उ-हुमुत्तागूतु لا युख़्रिजूनहुम् मिनन्नूरि
इलज़्ज़ुलुमाति ط उला-इ-क अस्हाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून
★(२५७) अ-लम् त-र इलल्लज़ी हाज्-ज इब्राहीम फ़ी रब्बिही अन्
आताहुल्लाहुल्-मुल्क ∴ इज़् क़ा-ल
इब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह्यी व युमीतु لا
क़ा-ल अ-न उह्यी व उमीतु ط क़ा-ल
इब्राहीमु फ़-इन्नल्ला-ह यअ्ती बिश्शम्सि
मिनलमश्रिक़ि फ़अ्ति बिहा मिनल्-मग़्रिबि
फ़ बुहितल्लज़ी क-फ़र ط वल्लाहु ला
यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन ج (२५८) औ
कल्लज़ी मर्-र अला क़र्यतिंव-व हि-य ख़ावियतुन्
अला उरूशिहा ج क़ा-ल अन्ना युह्यी
हाज़िहिल्लाहु बअ्-द मौतिहा ج फ़-अमातहुल्लाहु
मि-अ-त आमिन् सुम्-म ब-अ-सहू ط क़ा-ल कम्
लबिस्-त ط क़ा-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ्-ज़
यौमिन् ط क़ा-ल बल्लबिस्-त मि-अ-त आमिन् फ़न्ज़ुर् इला तआमि-क व
शराबि-क लम् य-त-सन्नह ج वन्ज़ुर् इला हिमारि-क व लि-नज-अ-ल-क
आयतल्लिन्नासि वन्ज़ुर् इलल्अिज़ामि कै-फ़ नुन्शिज़ुहा सुम्-म नक्सूहा
लह्मन् ط फ़ लम्मा तबय्य-न लहू لا क़ा-ल अअ्-लमु अन्नल्ला-ह अला कुल्लि
शैइन् क़दीर (२५९) व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी
कै-फ़ तुह्यिल्मौता ط क़ा-ल अ-व लम् तुअ्मिन् ط क़ा-ल बला व
लाकिल्लियत्मइन्-न क़ल्बी ط क़ा-ल फ़ख़ुज़् अर-ब-अ-तम्-मिनत्तैरि फ़ सुर्हुन्-न
इलै-क सुम्मज्अल् अला कुल्लि ज-बलिम्-मिन्हुन्-न जुज़्अन् सुम्मद्उहुन्-न
यअ्तीन-क सअ्-यन् ط वअ्-लम् अन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (२६०) ★

تلك الرسل ٣ ٣٤ البقرة ٢

الطاغوت يخرجونهم من النور الى الظلمت اولئك اصحب
النار هم فيها خلدون ﴿٢٥٧﴾ الم تر الى الذى حاج ابرهم فى
ربه ان اتىه الله الملك اذ قال ابرهم ربى الذى يحى و
يميت قال انا احى و اميت قال ابرهم فان الله يأتى
بالشمس من المشرق فأت بها من المغرب فبهت الذى
كفر و الله لا يهدى القوم الظلمين ﴿٢٥٨﴾ او كالذى مر على
قرية وهى خاوية على عروشها قال انى يحى هذه الله بعد
موتها فاماته الله مائة عام ثم بعثه قال كم لبثت قال
لبثت يوما او بعض يوم قال بل لبثت مائة عام فانظر
الى طعامك وشرابك لم يتسنه وانظر الى حمارك و
لنجعلك اية للناس وانظر الى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها
لحما فلما تبين له قال اعلم ان الله على كل شىء قدير ﴿٢٥٩﴾
واذ قال ابرهم رب ارنى كيف تحى الموتى قال اولم تؤمن
قال بلى ولكن ليطمئن قلبى قال فخذ اربعة من الطير
فصرهن اليك ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم
ادعهن يأتينك سعيا واعلم ان الله عزيز حكيم ﴿٢٦٠﴾ مثل
الذين ينفقون اموالهم فى سبيل الله كمثل حبة انبتت سبع

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ईमान लाये हैं, उन का दोस्त ख़ुदा है कि उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाता है और जो काफ़िर हैं उन के दोस्त शैतान हैं कि उन को रोशनी से निकाल कर अंधेरे में ले जाते हैं। यही लोग दोज़खी हैं कि उस में हमेशा रहेंगे। (२५७)★

भला तुम ने उस शख़्स को नहीं देखा, जो इस (घमंड की) वजह से कि ख़ुदा ने उस को सल्तनत (राज्य) बख़्शी थी, इब्राहीम से परवरदिगार के बारे में झगड़ने लगा ▨ जब इब्राहीम ने ने कहा, मेरा परवरदिगार तो वह है, जो जिलाता और मारता है, वह बोला कि जिला और मार तो मैं भी सकता हूं। इब्राहीम ने कहा कि ख़ुदा तो सूरज को पूरब से निकालता है, आप उसे पच्छिम से निकाल दीजिए। (यह सुन कर) काफ़िर हैरान रह गया और ख़ुदा बे-इन्साफ़ों को हिदायत नहीं दिया करता।[1] (२५८) या इसी तरह उस शख़्स को (नहीं देखा) जिस का एक गांव में, जो अपनी छतों पर गिरा पड़ा था, इत्तिफ़ाक़ी गुज़र हुआ, तो उस ने कहा कि ख़ुदा इस (के बाशिंदों) को मरने के बाद किस तरह ज़िंदा करेगा, तो ख़ुदा ने उस की रूह क़ब्ज़ कर ली (और) सौ बरस तक (उस को मुर्दा रखा), फिर उस को जिला उठाया और पूछा तुम कितनी मुद्दत तक (मरे) रहे हो? उसने जवाब दिया कि एक दिन या इस से भी कम। ख़ुदा ने फ़रमाया, (नहीं), बल्कि सौ बरस (मरे) रहे हो और अपने खाने-पीने की चीज़ों को देखो कि (इतनी मुद्दत में बिलकुल ही) सड़ी-गली नहीं और अपने गधे को भी देखो, (जो मरा पड़ा है), ग़रज़ (इन बातों से) यह है कि हम तुम को लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत की) निशानी बनाएं और (गधे की) हड्डियों को देखो कि हम उन को कैसे जोड़ देते और उन पर (किस तरह) गोश्त-पोस्त चढ़ा देते हैं। जब ये वाक़िए उस ने देखे तो बोल उठा कि मैं यक़ीन करता हूं कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है।[2] (२५९) और जब इब्राहीम ने ख़ुदा से कहा कि ऐ परवरदिगार! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा? ख़ुदा ने फ़रमाया कि क्या तुम ने (इस बात को) बावर नहीं किया (यानी माना नहीं)? उन्हों ने कहा, क्यों नहीं, लेकिन (मैं देखना) इस लिए (चाहता हूं) कि मेरा दिल कामिल इत्मीनान हासिल कर ले। ख़ुदा ने फ़रमाया कि चार जानवर पकड़ कर अपने पास मंगा लो (और टुकड़े-टुकड़े करा दो) फिर उन का एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रखवा दो। फिर उन को बुलाओ तो वे तुम्हारे पास दौड़ते चले आएंगे और जान रखो कि ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (२६०)★

---

१. जिस शख़्स ने हज़रत इब्राहीम से झगड़ा किया वह बाबुल का बादशाह नमरूद था, जो लोगों से अपने आप को सज्दा कराता था। हज़रत इब्राहीम अलै० ने सज्दा करने से इन्कार किया तो उस ने वजह पूछी। उन्होंने कहा, मैं तो अपने ख़ुदा को सज्दा करता हूं। उस ने कहा, ख़ुदा कौन है? उन्होंने कहा, ख़ुदा वह है, जिस के हाथ में ज़िंदगी और मौत है, यानी जो ज़िंदगी-मौत का पैदा करने वाला है। काफ़िर इस बात को तो समझा नहीं, बोला कि मैं भी ज़िंदा कर सकता और मार सकता हूं। चुनांचे उस ने दो क़ैदियों को बुलवाया। एक, जिस का क़त्ल किया जाना ज़रूरी था, उस को माफ़ कर दिया यानी जान बख़्शी कर दी। दूसरा, जो क़ातिल न था, उस को मरवा डाला। तब हज़रत इब्राहीम ने यह देख कर कि यह बुरी समझ का है, उस से कहा कि अगर आप ख़ुदा हैं तो सूरज को, जो पूरब से निकला करता है, हुक्म दीजिए कि पच्छिम से निकले। इस का जवाब काफ़िर से कुछ न बन पड़ा और ला-जवाब हो कर रह गया।

२. हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० ने फ़रमाया कि यह क़िस्सा हज़रत उज़ैर पैग़म्बर का है और मशहूर भी यही है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि क-म-सलि हब्बतिन्
अम्ब-तत् सब् - अ सनाबि - ल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम्मि - अतु हब्बतिन् ط
वल्लाहु युज़ाअिफ़ु लिमंय्यशा - उ ط वल्लाहु वासिअुन् अलीम (२६१)
अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म ला युत्बिअू-न
मा अन्फ़क़ू मन्नंव्वला अ - ज़ल् لا - लहुम्
अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ج व ला
ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून
(२६२) क़ौलुम्मअरूफ़ुंव् - व मग़्फ़ि-रतुन्
ख़ैरुम्मिन् स - द - क़तिय्यत्बअुहा अज़न् ط
वल्लाहु ग़निय्युन् हलीम (२६३) या
अय्युहल्लज़ी - न आमनू ला तुब्तिलू
स-द-क़ातिकुम् बिलमन्नि वल्अज़ा لا कल्लज़ी
युन्फ़िक़ु मालहू रिआ - अन्नासि व ला
युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ط
फ़ म-सलुहू क-मसलि सफ़्वानिन् अलैहि
तुराबुन् फ़ असाबहू वाबिलुन् फ़-त-र-कहू सल्दन् ط
ला यक़्दिरू-न अला शैइम्मिम्मा क-सबू ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल्-काफ़िरीन
(२६४) व म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुमुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि
व तस्बीतम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् क-म-सलि जन्नतिम् - बिरब्वतिन् असाबहा
वाबिलुन् फ़-आतत् उकुलहा ज़िअ्फ़ैनि ج फ़ इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन्
फ़ - तल्लुन् ط वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (२६५) अ-य-वद्दु अ-हदुकुम् अन्
तकू-न लहू जन्नतुम्-मिन्नख़ीलिंव्-व अअ्-नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु لا
लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्समराति لا व असाबहुल्कि-ब-रु व लहू ज़ुर्रिय्यतुन्
ज़ुअफ़ा उ صلے फ़ असाबहा इअ्-सारुन् फ़ीहि नारुन् फ़ह्त - र - क़त् ط
कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति ल-अल्लकुम् त-त-फ़क्करून ★ (२६६)

تلك الرسل ٣ ٣٥ البقرة ٢

سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ
وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ
رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۗ لَا يَقْدِرُوْنَ
عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾ وَمَثَلُ
الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ
اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ ۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ
فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾ اَيَوَدُّ
اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो लोग अपना माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं, उन (के माल) की मिसाल उस दाने की-सी है, जिस से सात बालें उगें और हर एक बाल में सौ-सौ दाने हों और ख़ुदा जिस (के माल) को चाहता है, ज़्यादा करता है, वह बड़ी वुस्अत वाला और सब कुछ जानने वाला है। (२६१) जो लोग अपना माल ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर इस के बाद न इस ख़र्च का (किसी पर) एहसान रखते हैं और न (किसी को) तक्लीफ़ देते हैं, उन का बदला उन के परवरदिगार के पास (तैयार) है और (क़ियामत के दिन) न उन को कुछ डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (२६२) जिस ख़ैरात देने के बाद (लेने वाले को) तक्लीफ़ दी जाए, उस से तो नर्म बात कह देनी और (उस की बे-अदबी से) दरगुज़र करना बेहतर है और ख़ुदा बे-परवा और बुर्दबार है। (२६३) मोमिनो! अपने सद्क़ात (व ख़ैरात) एहसान रखने और तक्लीफ़ देने से उस शख़्स की तरह बर्बाद न कर देना, जो लोगों को दिखाने के लिए माल ख़र्च करता है और ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, तो उस (के माल) की मिसाल उस चट्टान की-सी है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हो और उस पर ज़ोर का मेंह[1] बरस कर उसे साफ़ कर डाले (इसी तरह) ये (दिखावा करने वाले) लोग अपने आमाल का कुछ भी बदला हासिल नहीं कर सकेंगे। और ख़ुदा ऐसे ना-शुक्रों को हिदायत नहीं दिया करता। (२६४) और जो लोग ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए ख़ुलूसे नीयत से अपना माल ख़र्च करते हैं, उन की मिसाल एक बाग़ की-सी है, जो ऊंची जगह पर वाक़े हो, (जब) उस पर मेंह पड़े तो सौगुना फल लाये और मेंह न भी पड़े, तो ख़ैर फुवार ही सही और ख़ुदा तुम्हारे कामों को देख रहा है। (२६५) भला तुम में कोई यह चाहता है कि खजूरों और अंगूरों का बाग़ हो, जिस में नहरें बह रही हों और उस के लिए हर क़िस्म के मेवे मौजूद हों और उसे बुढ़ापा आ पकड़े और उस के नन्हे-नन्हे बच्चे भी हों तो (यकायक) उस बाग़ पर आग का भरा हुआ बगोला (बवंडर) चले और वह जल (कर राख का ढेर हो) जाए। इस तरह ख़ुदा तुम से अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो और समझो। (२६६) ★

---

१. अरबी लफ़्ज़ 'वाबिल' है जो बड़ी-बड़ी बूंदों की बारिश (मेंह) को कहते हैं।
'तल्ल' ओस को भी कहते हैं और छोटी-छोटी और हल्की-हल्की बूंदों के मेंह यानी फुवार को भी कहते हैं और वह भी पेड़ों को भी हरा-भरा रखने के लिए काफ़ी होती है। हम ने तर्जुमे में फुवार अख़्तियार किया है।

★रु. ३६/४ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिन् तय्यिबाति मा क-सब्तुम् व मिम्मा
अख़्रज्ना लकुम् मिनल्अर्ज़ि ص व ला त-यम्ममुल्ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ू-न
व लस्तुम् बि आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि ط वअ्-लमू अन्नल्ला-ह
ग़निय्युन् ह़मीद (२६७) अश्शैतानु यअिदुकुमुल्-फ़क़्-र व यअ्मुरुकुम्
बिल्फ़ह़्शा-इ ج वल्लाहु यअिदुकुम्
मग़्फ़ि-र-तम्मिन्हु व फ़ज़्लन् ط वल्लाहु
वासिअुन् अ़लीम صلے (२६८)
युअ्तिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ ج व मंय्युअ्तल्-
हिक्म-त फ़-क़द् ऊति-य ख़ैरन् कसीरन् ط
व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-अल्बाब
(२६९) व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् न-फ़-क़तिन्
औ न-ज़र्तुम् मिन्नज़्रिन् फ़ इन्नल्ला-ह
यअ्-लमुहू ط व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन्
अन्सार (२७०) इन् तुब्दुस्स-द-क़ाति
फ़ निअिम्मा हि-य ج व इन् तुख़्फ़ूहा व
तुअ्तूहल्फ़ुक़रा-अ फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् ط
व युकफ़्फ़िरु अन्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम् ط
वल्लाहु बिमा तअ्-मलून ख़बीर (२७१) लै-स अ़लै-क हुदाहुम् व लाकिन्नल्ला-ह
यह्दी मंय्यशा-उ ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़ लि अन्फ़ुसिकुम् ط व मा
तुन्फ़िक़ू-न इल्लब्तिग़ा-अ वज्हिल्लाहि ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिंय्युवफ़्-फ़
इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (२७२) लिल्फ़ुक़रा-इल्लज़ी-न उह़्सिरू फ़ी
सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअू-न ज़र्बन फ़िल्अर्ज़ि ز यह़्सबुहुमुल्-जाहिलु अग़्निया-अ
मिनत्तअफ़्फ़ुफ़ि ج तअ्-रिफ़ुहुम् बि सीमाहुम् ج ला यस्अलूनन्ना-स इल्ह़ाफ़न् ط
व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम ★ ● (२७३)
अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रंव-व अ़लानि-य-तन् फ़ लहुम्
अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ج व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून ▨ (२७४)

تلك الرسل ٣ ٣٦ البقرة ٢

الخبيث منه تنفقون ولستم باخذيه الا ان تغمضوا فيه ط
واعلموا ان الله غني حميد ﴿٢٦٧﴾ الشيطن يعدكم الفقر و
يامركم بالفحشاء ج والله يعدكم مغفرة منه وفضلا ط والله
واسع عليم ﴿٢٦٨﴾ يؤتي الحكمة من يشاء ج ومن يؤت الحكمة فقد
اوتي خيرا كثيرا ط وما يذكر الا اولوا الالباب ﴿٢٦٩﴾ وما انفقتم من
نفقة او نذرتم من نذر فان الله يعلمه ط وما للظلمين من
انصار ﴿٢٧٠﴾ ان تبدوا الصدقت فنعما هي ج وان تخفوها وتؤتوها
الفقراء فهو خير لكم ط ويكفر عنكم من سياتكم ط والله بما تعملون
خبير ﴿٢٧١﴾ ليس عليك هدىهم ولكن الله يهدي من يشاء ط وما
تنفقوا من خير فلانفسكم ط وما تنفقون الا ابتغاء وجه الله ط
وما تنفقوا من خير يوف اليكم وانتم لا تظلمون ﴿٢٧٢﴾ للفقراء
الذين احصروا في سبيل الله لا يستطيعون ضربا في الارض ز
يحسبهم الجاهل اغنياء من التعفف ج تعرفهم بسيمهم ج لا
يسئلون الناس الحافا ط وما تنفقوا من خير فان الله به عليم ﴿٢٧٣﴾ ع
الذين ينفقون اموالهم باليل والنهار سرا وعلانية فلهم
اجرهم عند ربهم ج ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿٢٧٤﴾
الذين ياكلون الربوا لا يقومون الا كما يقوم الذي يتخبطه

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनो ! जो पाकीज़ा और उम्दा माल तुम कमाते हो, और जो चीज़ें हम तुम्हारे लिए ज़मीन से निकालते हैं, उन में से (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करो और बुरी और ना-पाक चीज़ें देने का इरादा न करना कि (अगर वे तुम्हें दी जाएं तो) इस के अलावा कि (लेते वक़्त) आंख बन्द कर लो, उन को कभी न लो और जान रखो कि ख़ुदा बे-परवा (और) तारीफ़ के क़ाबिल है। (२६७) (और देखना) शैतान (का कहा न मानना, वह) तुम्हें तंगदस्ती का ख़ौफ़ दिलाता और बे-हयाई के काम करने को कहता है और ख़ुदा तुम से अपनी बख़्शिश और रहमत का वायदा करता है और ख़ुदा बड़ी वुस्अत वाला (और) सब कुछ जानने वाला है। (२६८) वह जिस को चाहता है दानाई बख़्शता है और जिस को दानाई मिली, बेशक उस को बड़ी नेमत मिली और नसीहत तो वही लोग क़ुबूल करते हैं, जो अक़्लमंद हैं। (२६९) और तुम (ख़ुदा की राह में) जिस तरह का ख़र्च करो, या कोई नज़्र मानो[1] ख़ुदा उस को जानता है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।[2] (२७०) अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर में दो तो वह भी ख़ूब है, और अगर छिपे दो और दो भी ज़रूरतमंद को, तो वह ख़ूबतर है और (इस तरह का देना) तुम्हारे गुनाहों को भी दूर कर देगा और ख़ुदा को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (२७१) (ऐ मुहम्मद !) तुम उन लोगों की हिदायत के ज़िम्मेदार नहीं हो, बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत बख़्शता है और (मोमिनो !) तुम जो माल ख़र्च करोगे तो उस का फ़ायदा तुम्हीं को है और तुम जो ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और तुम्हारा कुछ नुक़्सान नहीं किया जाएगा। (२७२) (और हां, तुम जो ख़र्च करोगे तो) उन ज़रूरतमंदों के लिए जो ख़ुदा की राह में रुके बैठे हैं और मुल्क में किसी तरफ़ जाने की ताक़त नहीं रखते और मांगने में शर्म खाते हैं, यहां तक कि न मांगने की वजह से अनजान आदमी उन को मालदार ख़्याल करता है और तुम क़ियाफ़े (अनुमान) से उन को साफ़ पहचान लो (कि हाजतमंद हैं और शर्म की वजह से) लोगों से (मुंह फोड़ कर और) लिपट कर नहीं मांग सकते और तुम जो माल ख़र्च करोगे, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा उस को जानता है। (२७३)★●

जो लोग अपना माल रात और दिन और छिपे और ज़ाहिर (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते रहते हैं, उन का बदला परवरदिगार के पास है और उन को (क़ियामत के दिन) न किसी तरह का

---

१. नज़्र के लिए यह शर्त है कि ऐसे काम की नज़्र मानी जाए, जो कुछ शक्लों में फ़र्ज़ भी हो, जैसे नमाज़ और रोज़ा और सद्क़ा देने की नज़्र। नमाज़ तो हर दिन पांचों वक़्त की फ़र्ज़ है और रमज़ान के रोज़े भी फ़र्ज़ हैं और सद्क़े की शक्ल में से ज़कात फ़र्ज़ है। ऐसी चीज़ों की नज़्र सही है और अगर किसी ऐसी चीज़ की नज़्र मानी जाए, जो किसी शक्ल में फ़र्ज़ नहीं है, वह बातिल (ग़लत) है।

२. ज़ालिमों से वे लोग मुराद हैं, जो ख़ुदा की राह में माल नहीं ख़र्च करते या नज़्र को पूरा नहीं करते और अगर ख़र्च करते हैं तो दिखावे के लिए या बुरे कामों में ख़र्च करते हैं।

★रु. ३७/५ आ ७ ● रुबुअ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लज़ी-न यअ्कुलूनर्रिबा ला यक़ूमू-न इल्ला कमा यक़ूमुल्लज़ी य-त-ख़ब्बतुहुश्
शैतानु मिनल्मस्सि ط जालि-क बि अन्नहुम् क़ालू इन्नमल्बैअु
मिस्लुर्रिबा ▨ व अहल्लल्लाहुल्बै-अ़ व हर्रमर्रिबा ط फ़ मन् जा-अहू
मौअिज़तुम्-मिर्रब्बिही फ़न्तहा फ़ लहू मा स-लफ़ ط व अम्रुहू इलल्लाहि ط
व-मन् आ़-द फ़ उला-इ-क अस्हाबुन्नारि ج हुम्
फ़ीहा ख़ालिदून (२७५) यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा
व युर्बिस्स-द-क़ाति ط वल्लाहु ला युहिब्बु
कुल-ल कफ़्फ़ारिन् असीम (२७६)
इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व
अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त लहुम्
अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ج व ला
ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून
(२७७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह
व-ज़रू मा बक़ि-य मिनर्रिबा इन्
कुन्तुम् मुअ्मिनीन (२७८) फ़ इल्लम्

البقرة ٢ — ٣٧ — تلك الرسل ٣

الشيطن من المس ذلك بانهم قالوا انما البيع مثل الربوا م
واحل الله البيع وحرم الربوا فمن جاءه موعظة من
ربه فانتهى فله ما سلف وامره الى الله ومن عاد فاولئك
اصحب النار هم فيها خلدون ٢٧٥ يمحق الله الربوا ويربي
الصدقت والله لا يحب كل كفار اثيم ٢٧٦ ان الذين امنوا و
عملوا الصلحت واقاموا الصلوة واتوا الزكوة لهم اجرهم
عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ٢٧٧ يايها الذين
امنوا اتقوا الله وذروا ما بقي من الربوا ان كنتم مؤمنين ٢٧٨
فان لم تفعلوا فاذنوا بحرب من الله ورسوله وان تبتم
فلكم رءوس اموالكم لا تظلمون ولا تظلمون ٢٧٩ وان كان
ذو عسرة فنظرة الى ميسرة وان تصدقوا خير لكم ان كنتم
تعلمون ٢٨٠ واتقوا يوما ترجعون فيه الى الله ثم توفى كل
نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ٢٨١ يايها الذين امنوا اذا
تداينتم بدين الى اجل مسمى فاكتبوه وليكتب بينكم
كاتب بالعدل ولا يأب كاتب ان يكتب كما علمه الله
فليكتب وليملل الذي عليه الحق وليتق الله ربه ولا
يبخس منه شيئا فان كان الذي عليه الحق سفيها او

منزل

तफ़्अ़लू फ़अ्ज़नू बि हर्बिम्-मिनल्लाहि व रसूलिही ج व इन् तुब्तुम् फ़ लकुम्
रुऊसु अम्वालिकुम् ج ला तज़्लिमू-न व ला तुज़्लमून (२७९) व इन्
का-न ज़ू अुस्रतिन् फ़ नज़िरतुन् इला मैस-रतिन् ط व अन् तसद्दक़ू ख़ैरुल्लकुम्
इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (२८०) वत्तक़ू यौमन् तुर्जअू-न फ़ीहि इलल्लाहि
सुम्-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्-मा क-स-बत् व हुम् ला युज़्लमून ★ (२८१)

▨ व. लाज़िम ★ रु. ३८/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ौफ़ होगा और न ग़म ।¹ (२७४) जो लोग सूद खाते हैं, वे (क़ब्रों से) इस तरह (हवास खोये हुए) उठेंगे, जैसे किसी को जिन्न ने लिपट कर दीवाना बना दिया हो, यह इस लिए कि वे कहते हैं कि सौदा बेचना भी तो (नफ़ा के लिहाज़ से) वैसा ही है जैसे सूद (लेना) हालांकि सौदे को ख़ुदा ने हलाल किया है और सूद को हराम, तो जिस शख़्स के पास ख़ुदा की नसीहत पहुंची और वह (सूद लेने से) बाज़ आ गया, तो जो पहले हो चुका, वह उस का, और (क़ियामत में) उस का मामला ख़ुदा के सुपुर्द और जो फिर लेने लगा, तो ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं कि हमेशा दोज़ख़ में (जलते) रहेंगे ।² (२७५) ख़ुदा सूद को ना-बूद (यानी बे-बरकत) करता और ख़ैरात (की बरकत) को बढ़ाता है और ख़ुदा किसी ना-शुक्रे गुनाहगार को दोस्त नहीं रखता । (२७६) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे, उन को उन के कामों का बदला ख़ुदा के यहां मिलेगा और (क़ियामत के दिन) उन को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे । (२७७) मोमिनो ! ख़ुदा से डरो और अगर ईमान रखते हो तो जितना सूद बाक़ी रह गया है, उस को छोड़ दो । (२७८) अगर ऐसा न करो, तो ख़बरदार हो जाओ (कि तुम) ख़ुदा और रसूल से जंग करने के लिए (तैयार होते हो) और अगर तौबा कर लोगे (और सूद छोड़ दोगे) तो तुम को अपनी असल रक़म लेने का हक़ है, जिस में न औरों का नुक़सान, और न तुम्हारा नुक़सान । (२७९) और अगर क़र्ज़ लेने वाला तंगदस्त हो तो (उसे) फ़राख़ी (के हासिल होने) तक मोहलत (दो) और अगर (क़र्ज़ रक़म) बख़्श ही दो, तो तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, बशर्ते कि समझो । (२८०) और उस दिन से डरो, जबकि तुम ख़ुदा के हुज़ूर में लौट कर जाओगे और हर शख़्स अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला पायेगा और किसी का कुछ नुक़सान न होगा । (२८१) ★

---

१. ख़ैरात का बयान ख़त्म हुआ, अब आगे सूद को हराम फ़रमाया, जब ख़ैरात की ताकीद है, तो क़र्ज़ देना तो उस से ताकीदी है, फिर सूद क्यों लीजिए ।

२. अरब में सूद दो तरह से चलता था । एक क़र्ज़ पर, दूसरे बैअ़ पर । क़र्ज़ पर इस तरह कि रुपया देने वाला किसी को एक मुद्दत के लिए रुपए देता । जब वह मुद्दत ख़त्म हो जाती, तो क़र्ज़दार से रुपए तलब करता । उस के पास रुपया न होता और वह मोहलत मांगता तो क़र्ज़ पर सूद बढ़ा दिया जाता और उस को असल रक़म में शामिल कर के ज़्यादा मोहलत दी जाती । इसी तरह सूद पर सूद भी हो जाता और ज़्यादा मशहूर यही सूद था । बैअ़ पर इस तरह कि कोई शख़्स किसी के पास कोई चीज़ बेचता और उसी क़िस्म की चीज़ ख़रीदने वाले से बदले में लेता । हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गेहूं को गेहूं के बदले और नमक को नमक के बदले और जौ को जौ के बदले और खजूर को खजूर के बदले और चांदी को चांदी के बदले और सोने को सोने के बदले बेचो तो बराबर-बराबर बेचो यानी ज़्यादा लेना-देना सूद में दाख़िल है और ये दोनों क़िस्म के सूद हराम हैं । सूद खाने वाले कहते थे कि क़र्ज़ पर सूद लेना और सौदागरी करना एक-सी चीज़ें हैं । सौदागरी से भी नफ़े का मक़्सद होता है और सूद से भी नफ़े का मक़्सद होता है, पस नफ़ा के लिहाज़ से दोनों में कुछ फ़र्क़ नहीं, मगर अल्लाह तआला ने सूद को हराम किया है, क्योंकि यह मुरव्वत, एहसान और सुलूक के ख़िलाफ़ है । उस में एहसान, हमदर्दी और मदद करने की बहुत ताकीद फ़रमायी है और क़र्ज़ बिला सूद, जिस को क़र्ज़े हसना कहते हैं, एहसान में दाख़िल है । सौदागरी में जितना नफ़ा भी हासिल किया जाए, वह हलाल है, मगर सूद का एक पैसा भी हराम है, क्योंकि तंगदस्त मुसलमान एहसान और सुलूक के हक़दार और इस क़ाबिल होते हैं कि उन को क़र्ज़ दे कर उन की मदद की जाए, न यह कि उन से सूद लेकर उन का ख़ून पिया जाए ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तदायन्तुम् बि दैनिन् इला अ-जलिम्मुसम्मन्
फ़क्तुबूहु ط वल्यक्तुब् बैनकुम् कातिबुम्-बिल्अद्लि ص व ला यअ् - ब कातिबुन्
अंय्यक्तु-ब कमा अ़ल्लमहुल्लाहु फ़ल्यक्तुब् ج वल्युम्लिलिल्लज़ी अ़लैहिल्हक़्क़ु
वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू व ला यब्ख़स् मिन्हु शैअन् ط फ़ इन् कानल्लज़ी
अ़लैहिल्हक़्क़ु सफ़ीहन् औ ज़ईफ़न् औ
ला यस्ततीअ़ु अंय्युमिल्-ल हु-व फ़ल्युम्लिल्
वलिय्युहू बिल्अद्लि ط वस्तश्हिदू शहीदैनि
मिर्रिजालिकुम् ج फ़ इल्लम् यकूना रजुलैनि
फ़ रजुलुंव्वम्रअतानि मिम्मन् तर्ज़ौ-न
मिनश्शुहदा-इ अन् तज़िल्-ल इह्दाहुमा
फ़ तुज़क्कि-र इह्दाहुमल्-उख़्रा ط व ला
यअ्बश्शुहदा-उ इज़ा मा दुअू ط व ला
तस्अमू अन् तक्तुबूहु सग़ीरन् औ कबीरन्
इला अ - जलिही ط ज़ालिकुम् अक़्सतु
अ़िन्दल्लाहि व अक़्वमु लिश्शहादति व
अद्ना अल्ला तर्ताबू इल्ला अन् तकू-न
तिजारतन् हाज़ि-र-तन् तुदीरूनहा बैनकुम्
फ़-लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा ط व अश्हिदू इज़ा तबायअ़्-तुम् ص
व ला युज़ार-र कातिबुंव-व ला शहीदुन् ط व इन् तफ़्-अ़लू फ़ इन्नहू
फ़ुसूक़ुम्बिकुम् ط वत्तक़ुल्ला-ह ط व युअ़ल्लिमुकुमुल्लाहु ط वल्लाहु बि कुल्लि
शैइन् अ़लीम (२८२) व इन् कुन्तुम् अ़ला सफ़रिंव्वलम् तजिदू कातिबन्
फ़रिहानुम्-मक़्बूज़तुन् ط फ़ इन् अमि-न बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़न् फ़ल्युअद्दिल्लज़िअ्-
तुमि-न अमानतहू वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू ط व ला तक्तुमुश्शहाद-त ط व
मंय्यक्तुम्हा फ़ इन्नहू आसिमुन् क़ल्बुहू ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न अ़लीम
★ (२८३) लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व इन् तुब्दू
मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु ط फ़-यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ
व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (२८४)

تلك الرسل ٣ — ٣٨ — البقرة ٢

ضَعِيفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَ
اسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ
اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا
دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ
اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا
تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ
وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ
مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ
قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ
فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ
كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ

ع

منزل ١

★रु० ३९/७ आ/ २

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनो ! जब तुम आपस में किसी तै मुद्दत के लिए क़र्ज़ का मामला करने लगो, तो उस को लिख लिया करो और लिखने वाला तुम में (किसी का नुक़्सान न करे, बल्कि) इंसाफ़ से लिखे, साथ ही लिखने वाला जैसा उसे ख़ुदा ने सिखाया है, लिखने से इन्कार भी न करे और दस्तावेज़ लिख दे। और जो शख़्स क़र्ज़ ले, वही (दस्तावेज़ का) मज़्मून बोल कर लिखवाए और ख़ुदा से, कि उस का मालिक है, ख़ौफ़ करे और क़र्ज़ रक़म में से कुछ कम न लिखवाए और, अगर क़र्ज़ लेने वाला बे-अक़्ल या ज़ईफ़ (कमज़ोर, बूढ़ा) हो या मज़्मून लिखवाने की क़ाबिलियत न रखता हो, तो जो उस का वली हो, वह इंसाफ़ के साथ मज़्मून लिखवाए और अपने में से दो मर्दों को (ऐसे मामले के) गवाह कर लिया करो और अगर दो मर्द न हों, तो एक मर्द और दो औरतें, जिन को तुम गवाह पसन्द करो, (काफ़ी) हैं कि अगर उन में से एक भूल जाएगी, तो दूसरी उसे याद दिलाएगी और जब गवाह (गवाही के लिए) तलब किए जाएं तो इंकार न करें और क़र्ज़ थोड़ा हो या बहुत उस (की दस्तावेज़) के लिखने-लिखाने में काहिली न करना। यह बात ख़ुदा के नज़दीक इंसाफ़ के क़रीब है और गवाही के लिए भी यह बहुत सही तरीक़ा है। इस से तुम्हें किसी तरह का शक व शुब्हा न पड़ेगा। हां, अगर सौदा हाथ के हाथ हो, जो तुम आपस में लेते-देते हो, तो अगर (ऐसे मामले की) दस्तावेज़ न लिखो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और जब ख़रीद व फ़रोख़्त किया करो तो भी गवाह कर लिया करो और दस्तावेज़ के लिखने वाले और गवाह (मामला करने वालों का) किसी तरह का नुक़्सान न करें। अगर तुम (लोग) ऐसा करो तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात है और ख़ुदा से डरो और (देखो कि) वह तुम को (कैसी मुफ़ीद बातें) सिखाता है और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (२८२) और अगर तुम सफ़र पर हो और (दस्तावेज़) लिखने वाला मिल न सके तो (कोई चीज़) रेहन बा-क़ब्ज़ा रख कर (क़र्ज़ ले लो) और अगर कोई किसी को अमीन समझे (यानी रेहन के बग़ैर क़र्ज़ दे दे) तो अमानतदार को चाहिए कि अमानत वाले की अमानत अदा कर दे और ख़ुदा से जो उस का परवरदिगार है, डरे और (देखना,) गवाही को मत छिपाना, जो उस को छिपाएगा, वह दिल का गुनाहगार होगा और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (२८३)★

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है। तुम अपने दिलों की बात को ज़ाहिर करोगे तो, या छिपाओगे तो, ख़ुदा तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर वह जिसे चाहे, मग़्फ़िरत करे और जिसे चाहे अज़ाब दे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२८४) (ख़ुदा

★रु. ३६/७ आ/ २

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आम-नर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअ्मिनू-न ط कुल्लुन् आम-न
बिल्लाहि व मला-इकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही قف ला नुफ़र्रिक़ु बै-न
अ-ह़दिम्-मिर्रुसुलिही قف व क़ालू समिअ्ना व अ-तअ्ना ق ग़ुफ़रा-न-क रब्बना ط
व इलैकलमसीर (२८५) ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा
लहा मा क-स-बत् व अलैहा मक्त-स-बत् ط
रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ
अख़्तअ्ना ج रब्बना व ला तह़्मिल्
अलैना इस्रन् कमा ह़मल्तहू अ-लल्लज़ी-न
मिन् क़ब्लिना ج रब्बना व ला
तुह़म्मिल्ना मा ला ताक़-त लना बिही ج
वअ्-फ़ु अ़न्ना وقفة वग़्फ़िर - लना وقفة
वर्ह़म्ना وقفة अन् - त मौलाना फ़न्सुर्ना
अ-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन ★ (२८६)

تلك الرسل ٣ ٣٩ آل عمران ٣

أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ
الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۚ
أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَتَا آيَةٍ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الم ﴿١﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٣﴾ مِن
قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٤﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا
يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٥﴾ هُوَ الَّذِي
يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦﴾
هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ
الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ
مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ

منزل ١

३ सूरतु आलि इम्रान ८९

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के १५३२६ अक्षर, ३५४२ शब्द, २०० आयतें और २० रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ۚ (१) अल्लाहु ला इला - ह इल्ला हुव ۚ
-ल्हय्युल्क़य्यूम ط (२) नज़्ज़-ल अ़लैकल्किता-ब बिल्ह़क़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न
यदैहि व अन्ज़लत्तौरा-त वल्-इन्जील ۙ (३) मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि
व अन्ज़-लल्-फ़ुर्क़ान ط इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बि आयातिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन्
शदीदुन् ط वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (४) इन्नल्ला-ह ला यख़्फ़ा अ़लैहि
शैउन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ ط (५) हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम्
फ़िल्अर्ह़ामि कै-फ़ यशा-उ ط ला इला-ह इल्ला हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ह़कीम (६)

★रु. ४०/८ आ ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के) रसूल उस किताब पर जो उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और मोमिन भी सब ख़ुदा पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं कि) हम उस के पैग़म्बरों से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते। और वे (ख़ुदा से) अर्ज़ करते हैं कि हम ने (तेरा हुक्म) सुना और क़ुबूल किया। ऐ परवरदिगार! हम तेरी बख़्शिश मांगते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है। (२८५) ख़ुदा किसी शख़्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता। अच्छे काम करेगा तो उस को उन का फ़ायदा मिलेगा, बुरे करेगा तो उसे उन का नुक़्सान पहुंचेगा। ऐ परवरदिगार! अगर हम से भूल या चूक हो गयी हो तो हमारी पकड़ न कीजियो, ऐ परवरदिगार! हम पर ऐसा बोझ न डालियो, जैसा तूने हम से पहले लोगों पर डाला था। ऐ परवरदिगार! जितना बोझ उठाने की हम में ताक़त नहीं, उतना हमारे सर पर न रखियो और (ऐ परवरदिगार!) हमारे गुनाहों से दरगुज़र कर और हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा मालिक है और हम को काफ़िरों पर ग़ालिब फ़रमा। (२८६) ★

---

३ सूरः आले इम्रान ८९

सूर: आले इम्रान मदनी है और इस में दो सौ आयतें और बीस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम् (१) ख़ुदा, (जो माबूदे बर हक़ है) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, ज़िन्दा, हमेशा रहने वाला (२) उसने (ऐ मुहम्मद सल्ल०!) तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की, जो पहली (आसमानी) किताबों की तस्दीक़ करती है और उसी ने तौरात और इन्जील नाज़िल की। (३) (यानी) लोगों की हिदायत के लिए पहले (तौरात और इन्जील उतारी) और (फिर क़ुरआन, जो हक़ और बातिल को) अलग-अलग कर देने वाला (है,) नाज़िल किया। जो लोग ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते हैं, उन को सख़्त अज़ाब होगा। और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४) ख़ुदा (ऐसा ख़बर रखने वाला और देखने वाला है कि) कोई चीज़ उस से छिपी नहीं, न ज़मीन में, न आसमान में। (५) वही तो है जो (मां के पेट में) जैसी चाहता है, तुम्हारी शक्लें बनाता है। उस ग़ालिब हिक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। (६) वही तो

★रु. ४०/८ आ ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुवल्लज़ी अन्ज़-ल अलैकल्किता-ब मिन्हु आयातुम्-मुह्कमातुन् हुन-न उम्मुल्-
किताबि व उ-ख़रु मु-त-शाबिहातुन् ط फ़ अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैग़ुन्
फ़यत्तबिअ़ू-न मा तशाब - ह मिन्हुब्तिग़ा-अल्-फ़ित्नति वब्तिग़ा-अ तअ्वीलिही ج
व मा यअ़्-लमु तअ्वीलहू इल्लल्लाहु वर्-रासिख़ू-न फ़िल्-अ़िल्मि यक़ूलू-न
आमन्ना बिही لا कुल्लुम्मिन् अ़िन्दि
रब्बिना ج व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-
अल्बाब (७) रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना
बअ्-द इज़् हदैतना व हब् लना मिल्लदुन्-क
रह्-म-तन् ج इन्न-क अन्तल्वह्हाब (८)
रब्बना इन्न-क जामिअ़ुन्नासि लि यौमिल्ला रै-ब
फ़ीहि ط इन्नल्ला - ह ला युख़्लिफ़ुल्-मीआ़द
★ (९) इन्नल्लज़ी - न क - फ़रू लन्
तुग़्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला
औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ط व उला-इ-क
हुम् वक़ूदुन्नार لا (१०) क-दअ्बि आलि
फ़िर्औन لا वल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् ط
कज़्ज़बू बि आयातिना ج फ़ अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु
बि ज़ुनूबिहिम् ط वल्लाहु शदीदुल्-अ़िक़ाब
(११) क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू सतुग़्लबू-न व

تلك الرسل ٣ ٤٠ آل عمرٰن ٣

إِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ
وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ
النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۗ وَ
أُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾ كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ
كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾
قُلْ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلٰى جَهَنَّمَ ۗ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي
سَبِيلِ اللّٰهِ وَأُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۗ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ
حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۗ
لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾ الَّذِينَ
يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾

منزل

तुह्शरू-न इला जहन्नम ط व बिअ्सल्मिहाद (१२) क़द् का-न लकुम् आयतुन्
फ़ी फ़िअतैनिल-त-क़ता ط फ़ि - अतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व उख़्रा
काफ़िरतुंय्यरौनहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्अ़ैनि ط वल्लाहु युअय्यिदु बिनस्रिही
मंय्यशा-उ ط इन-न फ़ी ज़ालि-क ल अ़िब्रतल्लि-उलिल्-अब्सार (१३) ज़ुय्यि - न
लिन्नासि हुब्बुश्श-ह-वाति मिनन्निसा - इ वल्बनी-न वल्क़नातीरिल्-मुक़न्त-रति
मिनज़्ज़-हबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्-ख़ैलिल्-मुसव्वमति वल्अन्आमि वल्हर्सि ط ज़ालि-क
मताअ़ुल्-ह़यातिद्दुन्या ج वल्लाहु अ़िन्दहू हुस्नुल्मआब (१४) क़ुल् अ उनब्बिउकुम्
बि ख़ैरिम्मिन् ज़ालिकुम् ط लिल्लज़ीनत्तक़ौ अ़िन-द रब्बिहिम् जन्नातुन्
तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व अज़्वाजुम्-मुतह्हरतु व-व
रिज़्वानुम्-मिनल्लाहि ط वल्लाहु बसीरुम्-बिल्अिबाद ج (१५) अल्लज़ी-न यक़ूलू-न
रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व क़िना अ़ज़ाबन्नार ج (१६)

वक़्फ़ुन्नबी स. व. मंज़िल व. लाज़िम ★रु. १/९ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है, जिस ने तुम पर किताब उतारी, जिस की कुछ आयतें मुह्कम हैं (और) वही असल किताब हैं और कुछ मुतशाबेह[1] हैं, तो जिन लोगों के दिल में टेढ़ है, वे मुतशाबेह की पैरवी करते हैं, ताकि फ़ित्ने फैलाएं और असली मुराद ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता और जो लोग इल्म में कामिल होते हैं, वे यह कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाये, ये सब हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है और नसीहत तो अक़्लमंद ही क़ुबूल करते हैं। (७) ऐ परवरदिगार! जब तूने हमें हिदायत बख़्शी है तो इस के बाद हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर दीजियो और हमें अपने यहां से नेमत अता फ़रमा, तू तो बड़ा अता फ़रमाने वाला है। (८) ऐ परवरदिगार! तू उस दिन, जिस (के आने) में कुछ भी शक नहीं, सब लोगों को (अपने हुज़ूर में) जमा कर लेगा। बेशक ख़ुदा वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (९)★

जो लोग काफ़िर हुए (उस दिन) न तो उन का माल ही ख़ुदा (के अज़ाब) से उन को बचा सकेगा और न उन की औलाद ही (कुछ काम आयेगी) और ये लोग जहन्नम की आग का इंधन होंगे। (१०) इन का हाल भी फ़िऔनियों और उन से पहले के लोगों का-सा होगा, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, तो ख़ुदा ने उन को उन के गुनाहों की वजह से (अज़ाब में) पकड़ लिया था और ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (११) (ऐ पैग़म्बर!) काफ़िरों से कह दो कि तुम (दुनिया में भी) बहुत जल्द मग़लूब हो जाओगे और (आख़िरत में) जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे और वह बुरी जगह है। (१२) तुम्हारे लिए दो गिरोहों में, जो (बद्र की लड़ाई के दिन) आपस में भिड़ गये (ख़ुदा की क़ुदरत की शानदार) निशानी थी। एक गिरोह (मुसलमानों का था, वह) ख़ुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा गिरोह (काफ़िरों का था, वह) उन को अपनी आंखों से अपने-से दो गुना देख रहा था और ख़ुदा अपनी मदद से जिस को चाहता है, मदद देता है, जो बसारत वाले (खुली आंख वाले) हैं उन के लिए इस (वाक़िए) में बड़ा सबक़ है।[2] (१३) लोगों को उन की ख़्वाहिशों की चीज़ें यानी औरतें और बेटे और सोने और चांदी के बड़े-बड़े ढेर और निशान लगे हुए घोड़े और मवेशी और खेती-बाड़ी ज़ीनतदार मालूम होती हैं, (मगर) ये सब दुनिया ही की ज़िन्दगी के सामान हैं और ख़ुदा के पास बहुत अच्छा ठिकाना है। (१४) (ऐ पैग़म्बर! उन से) कहो कि भला मैं तुम को ऐसी चीज़ बताऊं, जो इन चीज़ों से कहीं अच्छी हो, (सुनो), जो लोग परहेज़गार हैं, उन के लिए ख़ुदा के यहां (बहिश्त के) बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वे हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा औरतें हैं और (सब से बढ़ कर) ख़ुदा की ख़ुश्नूदी और ख़ुदा (अपने नेक) बन्दों को देख रहा है। (१५) जो ख़ुदा से इल्तिजा करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम ईमान ले आए, सो हम को हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (१६) ये वह

---

१. मुह्कम वे आयतें हैं, जिन के एक माने हैं और साफ़ और खुले हुए हैं और मुतशाबेह वे आयतें हैं जिन में कई माने हो सकते हों और मतलब के कई पहलू हों। हक़ीक़त में मुराद तो एक ही माने होते हैं, मगर लफ़्ज़ और उन की तर्कीब कुछ ऐसी होती है कि दूसरे मानों की तरफ़ ज़ेहन जाने लगता है। ऐसी आयतों के माने अपनी राय से नहीं करने चाहिएं, क्योंकि आयतों के माने अपनी राय से करने पर कड़ा डरावा आया है और लोग इस से गुमराह होते हैं। कुछ लोगों ने कहा, मुतशाबेह वे आयतें हैं, जिन के माने मालूम नहीं हो सकते, जैसे हुरूफ़े मुक़त्तआत, जो सूरतों के शुरू में आते हैं जैसे अलिफ़्-लाम्-मीम् और हा-मीम् वग़ैरह। एक हदीस में आया है कि मुह्कमात पर अमल करो मुतशाबेह पर ईमान रखो।

(शेष ७९ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अस्साबिरी - न वस्सादिक़ी - न वल्क़ानिती - न वल्मुन्फ़िक़ी-न वल्मुस्तग़्फ़िरी-न
बिल्असहार (१७) शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व॰
वल्मला-इकतु व उलुल्अ़िल्मि क़ा-इमम्-बिल्क़िस्ति॰ ला इला-ह इल्ला
हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - हकीम॰ ● (१८) इन्नद्दी - न अ़िन्दल्लाहिल् - इस्लामु क़फ़

الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ
بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا
بِالْقِسْطِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ
النصف
الْاِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾
فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا وَاِنْ
ع ٢/١٠ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ وَ
وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ
الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ

व मख़्-त-ल-फ़ल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब इल्ला
मिम्बअ़्-दि मा जा-अ हुमुल्अ़िल्मु बग़्यम्बैनहुम्॰
व मंय्यक्फ़ुर् बि आयातिल्लाहि फ़ इन्नल्ला-ह
सरीअ़ुल्हिसाब (१९) फ़ इन् हाज्जू-क
फ़-क़ुल् अस्लम्तु वज्हि-य लिल्लाहि व
मनित्त-बअ़नि॰ व क़ुल् लिल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब
वल्-उम्मिय्यी-न अ अस्लम्तुम्॰ फ़ इन्
अस्लमू फ़-क़दिह्तदौ ॰ व इन् तवल्लौ
फ़ इन्नमा अ़लैकल्बलाग़ु ॰ वल्लाहु
बसीरुम्-बिल्अ़िबाद ★ (२०) इन्नल्लज़ी-न
यक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-
न बिग़ैरि हक़्क़िंव॰- व यक़्तुलूनल्लज़ी - न
यअ़्मुरू-न बिल्क़िस्ति मिनन्नासि॰ फ़ बश्शिर्हुम् बि अ़ज़ाबिन् अलीम
(२१) उला-इकल्लज़ी-न हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति॰ व
मा लहुम् मिनन्नासिरी-न (२२) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम्-मिनल्-
किताबि युद्औ़-न इला किताबिल्लाहि लि यह्कु-म बैनहुम् सुम्-म य-त-वल्ला
फ़रीक़ुम्मिन्हुम् व हुम् मुअ़्-रिज़ून (२३) ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ालू लन्
त-मस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम्-मअ़्-दूदातिंव्॰ व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा
कानू यफ़्तरून (२४) फ़-कै-फ़ इज़ा ज-मअ़्-नाहुम् लि यौमिल्-ला रै-ब फ़ीहि क़फ़
व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा क-स-ब-त व हुम् ला युज़्लमून (२५)

● नि· १/२ ★रु· २/१० आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लोग हैं जो (कठिनाइयों में) सब्र करते और सच बोलते और इबादत में लगे रहते और (खुदा की) राह में ख़र्च करते और सेहर के वक़्तों में गुनाहों की माफ़ी मांगा करते हैं। (१७) ख़ुदा तो इस बात की गवाही देता है कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं और फ़रिश्ते और इल्म वाले लोग, जो इंसाफ़ पर क़ायम हैं, ये भी (गवाही देते हैं कि) उस ग़ालिब हिक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।(१८)● दीन तो ख़ुदा के नज़दीक इस्लाम है और अह्ले किताब ने जो (इस दीन से) इख़्तिलाफ़ किया, तो इल्म हासिल होने के बाद आपस की ज़िद से किया और जो शख़्स ख़ुदा की आयतों को न माने, तो ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला और सज़ा देने वाला है। (१९) ऐ पैग़म्बर! अगर ये लोग तुम से झगड़ने लगें, तो कहना कि मैं और मेरी पैरवी करने वाले तो ख़ुदा के फ़रमांबरदार हो चुके और अह्ले किताब और अन-पढ़ लोगों से कहो कि क्या तुम भी (ख़ुदा के फ़रमांबरदार बनते और) इस्लाम लाते हो? अगर ये लोग इस्लाम ले आएं तो बेशक हिदायत पा लें और अगर (तुम्हारा कहा) न मानें, तो तुम्हारा काम सिर्फ़ ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा देना है। और ख़ुदा (अपने) बन्दों को देख रहा है। (२०)★

जो लोग ख़ुदा की आयतों को नहीं मानते और नबियों को ना-हक़ क़त्ल करते रहे हैं और जो इंसाफ़ करने का हुक्म देते हैं, उन्हें भी मार डालते हैं उन को दुख देने वाले अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो। (२१) ये ऐसे लोग हैं जिन के आमाल दुनिया और आख़िरत दोनों में बर्बाद हैं और उन का कोई मददगार नहीं (होगा)। (२२) भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को (ख़ुदा की) किताब (यानी तौरात) दी गई और वे (उस) अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाये जाते हैं, ताकि वह (उन के झगड़ों का) उन में फ़ैसला कर दे तो एक फ़रीक़ उन में से मुंह बना कर फेर लेता है। (२३) यह इस लिए कि ये इस बात के क़ायल हैं कि (दोज़ख की) आग हमें कुछ दिन के सिवा छू ही न सकेगी और जो कुछ ये दीन के बारे में बुहतान बांधते रहे हैं, उस ने उन को धोखे में डाल रखा है। (२४) तो उस वक़्त क्या हाल होगा, जब हम उन को जमा करेंगे, (यानी) उस दिन, जिस (के आने) में कुछ भी शक नहीं और हर नफ़्स अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला पाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (२५) कहो कि ऐ ख़ुदा! (ऐ) बादशाही के मालिक! तू जिस को चाहे बादशाही बख़्शे और जिससे चाहे, बादशाही छीन ले और जिस को चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे। हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ है। और बेशक तू हर चीज़

(७७ का शेष)

२. इस आयत में बद्र की लड़ाई की शक्ल बयान फ़रमायी है। बद्र एक जगह का नाम है, जो मक्के और मदीने के दर्मियान है। इस लड़ाई में मुसलमानों की तायदाद तीन सौ तेरह थी और काफ़िर उन से तिगुने यानी एक हज़ार के क़रीब थे। अल्लाह तआला ने काफ़िरों के दिल में दहशत डालने के लिए उन की आंखों में यह दिखाया कि मुसलमान उन से दोगुने यानी दो हज़ार के क़रीब हैं या यह कि काफ़िरों की तायदाद मुसलमानों की नज़रों में मुसलमानों से दोगुनी दिखायी दी यानी एक हज़ार के छः सौ छब्बीस ताकि मुसलमान काफ़िरों को अपनी दोगुनी तायदाद से ज़्यादा देख कर डर न जाएं और भाग न खड़े हों और दोगुनी तायदाद की शक्ल में भागना जायज़ नहीं। चुनांचे फ़रमाया है कि एक सौ क़दमों के मज़बूत मुसलमान दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब होंगे। मगर सही यही है कि काफ़िरों ने मुसलमानों को अपने से दोगुना देखा, न यह कि मुसलमानों ने काफ़िरों को अपने से दोगुना देखा। बहरहाल इस वाक़िए में ख़ुदा की क़ुदरत की निशानी है कि मुसलमान जो तीन सौ तेरह थे, वह ग़ालिब रहे और काफ़िर जो हज़ार के क़रीब थे, वे हार गये।

● नि. १/२ ★रु. २/१० आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुलिल्लाहुम-म मालिकलमुल्कि तुअ्तिलमुल्-क मन् तशा-उ व तन्ज़िअ़ुलमुल्-क
मिम्मन् तशा-उ ز व तुअिज़्ज़ु मन् तशा-उ व तुज़िल्लु मन् तशा-उ ط
बि यदिकलख़ैरु ط इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (२६) तूलिजुल्लै-ल
फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि ز व तुख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्मय्यिति

تلك الرسل ٣ ٧٢ ال عمران ٣

مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ
دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي
شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ
يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ
أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ قُلْ
إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ
اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ
إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

منزل

व तुख़्रिजुल् - मय्यि - त मिनल्हय्यि ز व
तर्ज़ुक़ु मन् तशा-उ बिग़ैरि हिसाब (२७)
ला यत्तख़िज़िल् - मुअ्मिनूनल् - काफ़िरी - न
औलिया - अ मिन्दूनिल् - मुअ्मिनीन ج व
मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क फ़-लै-स मिनल्लाहि फ़ी
शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन्हुम्
तुक़ातन् ط व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू ط व
इलल्लाहिलमसीर (२८) क़ुल् इन् तुख़्फ़ू
मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ्-लम्हुल्लाहु ط
व यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा
फ़िल्अर्ज़ि ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन्
क़दीर (२९) यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्मा
अ़मिलत् मिन् ख़ैरिम् - मुह़्ज़रंव ج व
मा अ़मिलत् मिन्सू - इन् ج त - वद्दुलौ अन् - न बैनहा व बैनहू
अ-म - दम् - बअ़ीदन् ط व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू ط वल्लाहु रऊफ़ुम् -
बिल्अ़िबाद ★(३०) क़ुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला - ह फ़त्तबिअ़ूनी
युह़्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (३१) क़ुल्
अतीअ़ुल्ला-ह वर्रसूल ج फ़ इन् तवल्लौ फ़ इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्काफ़िरीन (३२)
इन्नल्लाहस्तफ़ा आद-म व नूहंव्-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल अ़िम्रा-न
अ़-लल्-आ़लमीन ل (३३) ज़ुर्रिय्यतम्बअ्-ज़ुहा मिम्बअ्-ज़िन् ط वल्लाहु समीअ़ुन्
अ़लीम ج (३४) इज़ क़ालतिम-र-अतु अ़िम्रान रब्बि इन्नी नज़र्तु ल-क
मा फ़ी बत़्नी मुहर्ररन् फ़-त-क़ब्बल् मिन्नी ج इन्न-क अन्तस्-समीअ़ुल्-अ़लीम (३५)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पर क़ादिर है। (२६) तू ही रात को दिन में दाख़िल करता और तू ही दिन को रात में दाख़िल करता है। तू ही बे-जान से जानदार पैदा करता और तू ही जानदार से बे-जान पैदा करता है। और तू ही जिस को चाहता है, बे-हिसाब रोज़ी देता है। (२७) मोमिनों को चाहिए कि मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाएं और जो ऐसा करेगा, उस से ख़ुदा का कुछ (अह्द) नहीं। हां, अगर इस तरीक़े से तुम उन (की बुराई) से बचाव की शक्ल निकालो (तो हरज नहीं) और ख़ुदा तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है और ख़ुदा ही की तरफ़ (तुम को) लौट कर जाना है। (२८) (ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कह दो कि कोई बात तुम अपने दिलों में छिपाओ या उसे ज़ाहिर करो, ख़ुदा उस को जानता है और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, उस को सब की ख़बर है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (२९) जिस दिन हर शख़्स अपने आमाल की नेकी को मौजूद पा लेगा ∴ और उन की बुराई को भी ∴ (देख लेगा), तो आरज़ू करेगा कि ऐ काश ! उस में और इस बुराई में दूर का फ़ासला हो जाता और ख़ुदा तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है और ख़ुदा अपने बन्दों पर निहायत मेहरबान है। (३०) ★

(ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कह दो कि अगर तुम ख़ुदा को दोस्त रखते हो, तो मेरी पैरवी करो, ख़ुदा भी तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (३१) कह दो कि ख़ुदा और उसके रसूल का हुक्म मानो। अगर न मानें तो ख़ुदा भी काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (३२) ख़ुदा ने आदम और नूह और इब्राहीम के ख़ानदान और इम्रान के ख़ानदान को तमाम दुनिया के लोगों में चुन लिया था।[1] (३३) इनमें कुछ-कुछ की औलाद थे।[2] और ख़ुदा सुनने वाला और जानने वाला है। (३४) (वह वक़्त याद करने के लायक़ है), जब इम्रान की बीवी ने कहा कि ऐ परवरदिगार ! जो (बच्चा) मेरे पेट में है, मैं उस को तेरी नज़्र करती हूं। उसे दुनिया के कामों से आज़ाद रखूंगी। तू उसे मेरी तरफ़ से क़ुबूल फ़रमा। तू तो सुनने वाला (और) जानने वाला है। (३५) जब उनके यहां बच्चा पैदा हुआ, और जो कुछ

---

१. इम्रान से मुराद मरयम अलैहिस्सलाम के वालिद हैं, क्योंकि इस के बाद उन्हीं के क़िस्से का ज़िक्र किया गया है। कुछ कहते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद मुराद हैं कि उन का नाम भी इम्रान था, मगर पहला क़ौल तर्जीह के क़ाबिल है इस लिए कि इस के लिए क़रीना भी है।

२. जैसे इम्रान का ख़ानदान इब्राहीम अलै० की औलाद था और इब्राहीम का ख़ानदान नूह की औलाद था और नूह अलै० हज़रत आदम अलै० की औलाद थे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-लम्मा व-ज़-अ़त्हा क़ालत् रब्बि इन्नी वज़अ़्-तुहा उन्सा वल्लाहु
अअ़्-लमु बिमा व-ज़-अ़त् व लैसज़्-ज़-करु कल्उन्सा व इन्नी सम्मैतुहा
मर्य-म व इन्नी उअ़ीज़ुहा बि-क व ज़ुर्रिय्यतहा मिनश्शैतानिर्रजीम
(३६) फ़ त-क़ब्ब-ल लहा रब्बुहा वि क़बूलिन् ह़-सनिंव-व अम्ब-तहा नबातन्
ह़-स-नंव् व कफ़्फ़लहा ज़करिय्या
कुल्लमा द-ख़-ल अ़लैहा ज़-करिय्यल्-मिह़्रा-ब
व-ज-द अ़िन्दहा रिज़्क़न् क़ा-ल या मर्-यमु अन्ना
लकि हाज़ा क़ालत् हु-व मिन् अ़िन्दिल्लाहि
इन्नल्ला-ह यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि
ह़िसाब (३७) हुनालि-क दआ़ ज़-करिय्या
रब्बहू क़ा-ल रब्बि हब्ली मिल्लदुन्-क
ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-ब-तन् इन्न-क समीअ़ुद्दुआ़-इ
(३८) फ़-नादत्हुल्-मला-इकतु व हु-व
क़ा-इमुंय्युस़ल्ली फ़िल्-मह़्राबि
अन्नल्ला-ह युबश्शिरु-क बियह़्या मुसद्दिक़म्-
बिकलिमतिम्-मिनल्लाहि व सय्यिदंव-व

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ
اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿۳۶﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا
بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا
دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى
لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ﴿۳۷﴾ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي
الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ
سَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ
لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۴۰﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ
النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ
وَالْاِبْكَارِ ﴿۴۱﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۲﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَ
اسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿۴۳﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ
اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ

ह़सूरंव-व नबिय्यम्-मिनस्सालिह़ीन (३९) क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली
ग़ुलामुंव्-व क़द् ब-ल-ग़नियल्कि-बरु वम्र-अती आक़िरुन् क़ा-ल कज़ालिकल्लाहु
यफ़्अ़लु मा यशा-उ (४०) क़ा-ल रब्बिज्अ़ल्ली आ-य-तन् क़ा-ल आयतु-क
अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स-त अय्यामिन् इल्ला रम्ज़न् वज़्कुर्रब्ब-क कसीरंव्-व
सब्बिह़् बिल्अ़शिय्यि वल्इब्कार ★ (४१) व इज़् क़ालतिल्-मला-इकतु
या मर्-यमु इन्नल्लाहस्त़फ़ाकि व त़ह्ह-रकि वस्त़फ़ाकि अ़ला निसा-इल-आ़लमीन
(४२) या मर्यमुक़्नुती लि रब्बिकि वस्जुदी वर्कअ़ी मअ़र्राकिअ़ीन (४३) ज़ालि-क
मिन् अम्बा-इल्ग़ैबि नूह़ीहि इलैक व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् युल्क़ू-न
अक़्लामहुम् अय्युहुम् यक्फ़ुलु मर्यम व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् यख़्तसिमून (४४)

★रु. ४/१२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उनके यहां पैदा हुआ था, ख़ुदा को ख़ूब मालूम था, तो वह कहने लगीं कि परवरदिगार ! मेरे तो लड़की हुई है और (नज़्र के लिए) लड़का (मुनासिब था कि वह) लड़की की तरह (ना-तवां) नहीं होता।[1] और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको और उसकी औलाद को मर्दूद शैतान से तेरी पनाह में देती हूं। (३६) तो परवरदिगार ने उसको पसंदीदगी के साथ क़ुबूल फ़रमाया और उसे अच्छी तरह परवरिश किया और ज़करीया को उसका मुतकफ़्फ़िल (देख-भाल करने वाला) बनाया। ज़करीया जब कभी इबादतगाह में उसके पास जाते, तो उसके पास खाना पाते। (यह सूरत देख कर एक दिन मरयम से) पूछने लगे कि मरयम ! यह खाना तुम्हारे पास कहां से आता है ? वह बोलीं कि ख़ुदा के यहां से (आता है)। बेशक ख़ुदा जिसको चाहता है, बे-शुमार रोज़ी देता है। (३७) उस वक़्त ज़करीया ने अपने परवरदिगार से दुआ की (और) कहा कि परवरदिगार ! मुझे अपनी जनाब से नेक औलाद अता फ़रमा। तू बेशक दुआ सुनने (और क़ुबूल करने) वाला है। (३८) वह अभी इबादतगाह में खड़े नमाज़ ही पढ़ रहे थे कि फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि (ज़करीया !) ख़ुदा तुम्हें यह्या की ख़ुशख़बरी देता है, जो ख़ुदा के फ़ैज़ (यानी ईसा) की तस्दीक़ करेंगे, और सरदार होंगे और औरतों से चाव न रखने वाले और (ख़ुदा के) पैग़म्बर (यानी) नेक लोगों में होंगे। (३९) ज़करीया ने कहा, ऐ परवरदिगार ! मेरे यहां लड़का कैसे पैदा होगा कि मैं तो बूढ़ा हो चुका हूं और मेरी बीवी बांझ है। ख़ुदा ने फ़रमाया, इसी तरह, ख़ुदा जो चाहता है करता है। (४०) ज़करीया ने कहा कि परवरदिगार ! (मेरे लिए) कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा। ख़ुदा ने फ़रमाया निशानी यह है कि तुम लोगों से तीन दिन इशारे के सिवा बात न कर सकोगे। तो (उन दिनों में) अपने परवरदिगार की ज़्यादा से ज़्यादा याद और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करना। (४१)★

और जब फ़रिश्तों ने (मरयम से) कहा कि मरयम ! ख़ुदा ने तुमको चुना है और पाक बनाया है और दुनिया की औरतों में चुन लिया है। (४२) मरयम ! अपने परवरदिगार की फ़रमांबरदारी करना और सज्दा करना और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करना। (४३) (ऐ मुहम्मद !) ये बातें ग़ैब की ख़बरों में से हैं, जो हम तुम्हारे पास भेजते हैं और जब वे लोग अपने क़लम (क़ुरआ के तौर पर) डाल रहे थे कि मरयम का मुतकफ़्फ़िल कौन बने, तो तुम उनके पास नहीं थे और न उस वक़्त ही उनके पास थे, जब वे आपस में झगड़ रहे थे। (४४) (वह वक़्त

---

१. हज़रत मरयम अलै० की वालिदा ने यह समझा था कि लड़का पैदा होगा और इसी लिए नज़्र मानी थी कि मैं उस को दुनिया के कामों से आज़ाद कर के ख़ुदा की इबादत और बैतुलमक़्दिस की ख़िदमत के लिए फ़ारिग़ रखूंगी, मगर उन को क्या मालूम था कि लड़का होगा या लड़की। जब लड़की हुई तो ख़्याल किया कि नज़्र तो पूरी न हुई, क्योंकि दस्तूर था कि लड़का नज़्र किया जाए, तो कहने लगीं कि परवरदिगार ! मेरे तो लड़की हुई है और इबादत की ताक़त और मस्जिद की ख़िदमत के लिहाज़ से लड़की लड़के जैसी नहीं होती है। मगर ख़ुदा ने उस लड़की ही को क़ुबूल फ़रमाया। वह निहायत मुस्तैदी से ख़ुदा की इबादत किया करतीं और दीन की बातें सीखतीं। ख़ुदा ने उन को दुनिया की औरतों में चुन लिया और उन के पेट से एक ऊंचे क़िस्म के पैग़म्बर यानी ईसा अलैहिस्सलाम भी पैदा किए।

★रु. ४/१२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इज़् क़ालतिल्-मलाइकतु या मर्-यमु इन्नल्ला-ह युबश्शिरुकि बिकलिमतिम्-
मिन्हु- ۖ -स्मुहुलमसीहु ईसब्नु मर्य-म वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति
व मिनल्मुक़र्रबीन ۙ (४५) व युकल्लिमुन्ना-स फ़िलमह्दि व कह्लंव-व
मिनस्सालिहीन (४६) क़ालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व-लदुंव्-व लम्
यम्सस्नी ब-शरुन् ط क़ा-ल कज़ालिकिल्लाहु
यख़्लुक़ु मा यशा-उ ط इज़ा क़ज़ा अम्रन्
फ़ इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़ यकून (४७) व
युअल्लिमुहुल्-किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त
वलइन्जी-ल ج (४८) व रसूलन् इला
बनी इस्राई-ल ۙ अन्नी क़द् जिअ्तुकुम्
बि आयतिम्-मिर्रब्बिकुम् ۙ अन्नी अख़्लुक़ु
लकुम् मिनत्तीनि क-हैअतित्तैरि फ़ अन्फ़ुख़ु
फ़ीहि फ़ यकूनु तैरम्-बिइज़्निल्लाहि ج व
उब्रिउल्-अक्म-ह वल्अब-र-स व उह्यिल्मौता
बि इज़्निल्लाहि ج व उनब्बिउकुम्
बिमा तअ्कुलू-न व मा तद्दख़िरू-न ۙ फ़ी

ال عمرٰن ۳ — ۴۴ — تلک الرسل ۳

مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۴۴﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ
يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى
ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَيُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا
يَشَاۗءُ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۷﴾ وَيُعَلِّمُهُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿۴۸﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ
مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْــــَٔــةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ
وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ
بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ
رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۵۱﴾ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ
مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ

منزل ۱

बुयूतिकुम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ج
(४९) व मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न य-दय-य मिनत्तौराति व लि उहिल्-ल लकुम्
बअ्-ज़ल्लज़ी हुर्रि-म अलैकुम् व जिअ्तुकुम् बि आयतिम्-मिर्रब्बिकुम् قف
फ़-त्तक़ुल्ला-ह व अतीऊन (५०) इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्-बुदूहु ط
हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (५१) फ़ लम्मा अ-हस्-स ईसा मिन्हुमुलकुफ़्-र
क़ा-ल मन् अन्सारी इलल्लाहि ط क़ालल्हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि ج
आमन्ना बिल्लाहि ج वश्हद् बि अन्ना मुस्लिमून (५२) रब्बना
आमन्ना बिमा अन्ज़ल्-त वत्तबअ्-नर्रसू-ल फ़क्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (५३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भी याद करने के लायक़ है) जब फ़रिश्तों ने (मरयम से कहा) कि मरयम ! ख़ुदा तुमको अपनी तरफ़ से एक फ़ैज़ की ख़ुशख़बरी देता है, जिस का नाम मसीह (और मशहूर) ईसा बिन मरयम होगा (और जो) दुनिया और आख़िरत में बा-आब्रू और (ख़ुदा के) ख़ासों में से होगा। (४५) और मां की गोद में और बड़ी उम्र का होकर (दोनों) हालतों में लोगों से (एक ही तरह) बातें करेगा और नेकों में होगा। (४६) मरयम ने कहा, परवरदिगार ! मेरे यहां बच्चा कैसे होगा कि किसी इंसान ने मुझे हाथ तक तो लगाया नहीं। फ़रमाया कि ख़ुदा इसी तरह जो चाहता है, पैदा करता है। जब वह कोई काम करना चाहता है, तो इर्शाद फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाता है। (४७) और वह उन्हें लिखना (-पढ़ना) और दानाई और तौरात और इंजील-सिखाएगा। (४८) और (ईसा) बनी इस्राईल की तरफ़ पैग़ाम्बर (हो कर जाएंगे और कहेंगे) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं, वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी की मूर्ति, परिंदे की शक्ल की बनाता हूं, फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह ख़ुदा के हुक्म से (सच मुच) जानवर हो जाता है। और अब्रस (सफ़ेद दाग़ी) को तंदुरुस्त कर देता हूं और ख़ुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूं। और जो कुछ तुम खा कर आते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रखते हो, सब तुम को बता देता हूं। अगर तुम ईमान वाले हो, तो इन बातों में तुम्हारे लिए (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानी है। (४९) और मुझ से पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी, उसकी तस्दीक़ भी करता हूं और (मैं) इसलिए भी (आया हूं) कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम थीं, उनको तुम्हारे लिए हलाल कर दूं और मैं तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं, तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (५०) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। (५१) जब ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनकी तरफ़ से ना-फ़रमानी (और क़त्ल की नीयत) देखी, तो कहने लगे कि कोई है जो ख़ुदा का तरफ़दार और मेरा मददगार हो। हवारी बोले कि हम ख़ुदा के (तरफ़दार और आपके) मददगार हैं। हम ख़ुदा पर ईमान लाये और आप गवाह रहें कि हम फ़रमांबरदार हैं। (५२) ऐ परवरदिगार ! जो (किताब) तूने नाज़िल फ़रमायी है, हम उस पर ईमान ले आये और (तेरे) पैग़म्बर के ताबेदार हो चुके, तो हमको मानने वालों में लिख रख। (५३) और वे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व म-करू व म-क-रल्लाहु ط वल्लाहु ख़ैरुलमाकिरीन ★ ● (५४) इज्
क़ालल्लाहु या ओ़सा इन्नी मु-त-वफ़्फ़ी-क व राफ़िअु-क इलय्-य व
मुतह्हिरु-क मिनल्लज़ी-न क-फ़रू व जाअ़िलुल्लज़ीनत्तबअ़ू-क फ़ौक़ल्लज़ी-न क-फ़रू
इला यौमिल्क़ियामति ج सुम्-म इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़ अह्कुमु बैनकुम्

وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٥٣ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ
وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝٥٤ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰۤى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ
رَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٥٥ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ
نّٰصِرِيْنَ ۝٥٦ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٧ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ
الْحَكِيْمِ ۝٥٨ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٥٩ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْمُمْتَرِيْنَ ۝٦٠ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَ
اَنْفُسَكُمْ قف ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۝٦١ اِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦٢ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝٦٣
قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ
اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ

फ़ी मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (५५)
फ़ अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ उअ़ज़्ज़िबुहुम्
अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ز
व मा लहुम् मिन्नासिरीन (५६) व
अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति
फ़ युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् ط वल्लाहु ला
युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (५७) ज़ालि-क नत्लूहु
अ़लै-क मिनल्-आयाति वज़्ज़िक्रिल्-हकीम
(५८) इन्-न म-स-ल ओ़सा अ़िन्दल्लाहि
क म-सलि आद-म ط ख़-ल-क़हू मिन् तुराबिन्
सुम्-म क़ा-ल लहू कुन् फ़-यकून (५९)
अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ ला तकुम्मिनल्-
मुम्तरीन (६०) फ़ मन् हा-ज्ज-क फ़ीहि मिम्बअ़्-दि मा जा-अ-क मिनल्अ़िल्मि
फ़ क़ुल् तआ़लौ नद्अ़ु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा - अना व
निसा-अकुम् व अन्फ़ु-सना व अन्फ़ु-सकुम् قف सुम् - म नब्तहिल् फ़ नज्अ़ल्
लअ़्-न-तल्लाहि अ़-लल्काज़िबीन (६१) इन्-न हाज़ा ल हुवल् - क़-ससुल् - हक़्क़ु
व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु ط व इन्नल्ला-ह ल-हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् -
हकीम (६२) फ़ इन् तवल्लौ फ़ इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिलमुफ़्सिदीन
★ (६३) क़ुल् या अह्लल्किताबि तआ़लौ इला कलिमतिन्
सवा-इम् - बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ़् - बु-द इल्लल्ला - ह व ला
नुश्रि - क बिही शैअंव् - व ला यत्तख़ि-ज़ बअ़् - ज़ुना बअ़्-ज़न् अर्बाबम्मिन्
दूनिल्लाहि ط फ़ इन् तवल्लौ फ़ क़ूलुश्हदू बिअन्ना मुस्लिमून (६४)

★रु. ५/१३ आ १३ ●सु. ३/४ ★रु. ६/१४ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(यानी यहूदी, ईसा के क़त्ल के बारे में एक) चाल चले, और ख़ुदा भी (ईसा को बचाने के लिए) चाल चला और ख़ुदा ख़ूब चाल चलने वाला है। (५४) ★ ●

उस वक़्त ख़ुदा ने फ़रमाया कि ईसा ! मैं तुम्हारी दुनिया में रहने की मुद्दत पूरी करके तुम को अपनी तरफ़ उठा लूंगा और तुम्हें काफ़िरों (की सोहबत) से पाक कर दूंगा और जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे, उनको काफ़िरों पर क़ियामत तक फ़ाइक़ (यानी बढ़ कर और ग़ालिब) रखूंगा, फिर तुम सब मेरे पास लौट कर आओगे, तो जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे, उस दिन तुम में उनका फ़ैसला कर दूंगा। (५५) यानी जो काफ़िर हुए, उनको दुनिया और आख़िरत (दोनों में) सख़्त अज़ाब दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा। (५६) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को ख़ुदा पूरा-पूरा बदला देगा और ख़ुदा ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (५७) (ऐ मुहम्मद !) यह हम तुमको (ख़ुदा की) आयतें और हिक्मत भरी नसीहतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं। (५८) ईसा का हाल ख़ुदा के नज़दीक आदम का-सा है कि उसने (पहले) मिट्टी से उनका क़ालिब बनाया, फिर फ़रमाया कि (इंसान) हो जा, तो वह (इंसान) हो गये। (५९) (यह बात) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, सो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (६०) फिर अगर ये लोग ईसा के बारे में तुम से झगड़ा करें और तुमको हक़ीक़त तो मालूम ही हो चली है, तो उनसे कहना कि आओ, हम अपने बेटों और औरतों को बुलाएं, तुम अपने बेटों और औरतों को बुलाओ और हम ख़ुद भी आएं और तुम ख़ुद भी आओ फिर दोनों फ़रीक़ (ख़ुदा से) दुआ व इल्तिजा करें और झूठों, पर ख़ुदा की लानत भेजें। (६१) ये तमाम बयानात सही हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक ख़ुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (६२) तो अगर ये लोग फिर जाएं तो ख़ुदा मुफ़्सिदों (फ़साद फैलाने वालों) को ख़ूब जानता है। (६३)★

कह दो कि ऐ अह्ले किताब ! जो बात हमारे और तुम्हारे दर्मियान एक ही (मान ली गयी) है, उसकी तरफ़ आओ, वह यह कि ख़ुदा के सिवा हम किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाएं और हममें से कोई किसी को ख़ुदा के सिवा अपना कारसाज़ न समझे। अगर ये लोग (इस बात को) न मानें तो (उनसे) कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम

★रु. ५/१३ आ १३ ●सु. ३/४ ★रु. ६/१४ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अह्लल्किताबि लि-म तुहा-ज्जू-न फ़ी इब्राही-म व मा
उन्ज़िलतित्तौरातु वल्इन्जीलु इल्ला मिम्बअ्-दिही ꜗ अ-फ़-ला तअ्-क़िलून
(६५) हा अन्तुम् हा-उला-इ हाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही अिल्मुन्
फ़ लि-म तुहाज्जू-न फ़ी मा लै-स लकुम् बिही अिल्मुन् ꜗ वल्लाहु यअ्-लमु व

अन्तुम् ला तअ्-लमून (६६) मा का-न
इब्राहीमु यहूदिय्यंव्-व ला नस्रानिय्यंव्-व
लाकिन् का-न हनीफ़म्-मुस्लिमन् ꜗ व मा
का-न मिनल्-मुश्रिकीन (६७) इन-न
औलन्नासि बि इब्राही-म लल्लज़ीनत्तबअूहु
व हाज़न्नबिय्यु वल्लज़ी-न आमनू ꜗ वल्लाहु
वलिय्युल्-मुअ्मिनीन (६८) वद्दत्ता-इ-फ़तुम्-
मिन् अह्लिल्किताबि लौ युज़िल्लूनकुम् ꜗ
व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा
यश्अुरून (६९) या अह्लल्किताबि
लि-म तक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व अन्तुम्
तश्हदून (७०) या अह्लल्किताबि

تلك الرسل ٣   ٤٦   آل عمران ٣

دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ یٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِیْلُ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِیْمَا
لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْمَا لَیْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا وَّلَا نَصْرَانِیًّا وَّ
لٰكِنْ كَانَ حَنِیْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى
النَّاسِ بِاِبْرٰهِیْمَ لَلَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِیُّ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ
وَاللّٰهُ وَلِیُّ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٦٨﴾ وَدَّتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ
یُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا یُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا یَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾ یٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ ع ١٥
وَقَالَتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ عَلَى
الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾
وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ
اَنْ یُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ اَوْ یُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ
اِنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِ ۚ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿٧٣﴾
یَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ

منزل ١

लि-म तल्बिसूनल्हक़्-क़ बिल्बातिलि व तक्तुमूनल्-हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्-लमून
★ (७१) व क़ालत्ता-इफ़तुम्-मिन् अह्लिल्किताबि आमिनू बिल्लज़ी
उन्ज़ि-ल अ-लल्लज़ी-न आमनू वज्हन्नहारि वक्फ़ुरू आख़िरहू ल-अल्लहुम्
यर्जिअून (७२) व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि-अ दीनकुम्
क़ुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि ꜙ अंय्युअ्ता अ-हदुम्मिस्-ल मा ऊतीतुम् औ
युहाज्जूकुम् अिन्-द रब्बिकुम् ꜗ क़ुल् इन्नल्फ़ज़्-ल बि यदिल्लाहि
युअ्तीहि मंय्यशा-उ ꜗ वल्लाहु वासिअुन् अलीम (७३) यख़्तस्सु
बि रह्मतिही मंय्यशा-उ ꜗ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अज़ीम (७४)

★ रु. ७/१५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(ख़ुदा के) फ़रमांबरदार हैं। (६४) ऐ अह्ले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो, हालांकि तौरात और इंजील उनके बाद उतरी हैं (और वह पहले हो चुके हैं), तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते ? (६५) देखो, ऐसी बात में तो तुमने झगड़ा किया ही था, जिसका तुम्हें कुछ इल्म था भी, मगर ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम को कुछ भी इल्म नहीं और ख़ुदा जानता है और तुम नहीं जानते। (६६) इब्राहीम न तो यहूदी थे और न ईसाई, बल्कि सबसे बे-ताल्लुक़ होकर एक (ख़ुदा) के हो रहे थे और उसी के फ़रमांबरदार थे और मुश्रिकों में न थे। (६७) इब्राहीम से क़ुर्ब (क़रीबी ताल्लुक़) रखने वाले तो वे लोग हैं, जो उन की पैरवी करते हैं और यह पैग़ाबर (आख़िरी) और वे लोग जो ईमान लाये हैं, और ख़ुदा मोमिनों का कारसाज़ है। (६८) (ऐ इस्लाम मानने वालो !) कुछ अह्ले किताब इस बात की ख़्वाहिश रखते हैं कि तुमको गुमराह कर दें, मगर ये (तुमको क्या गुमराह करेंगे) अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और नहीं जानते। (६९) ऐ अह्ले किताब ! तुम ख़ुदा की आयतों से क्यों इंकार करते हो और तुम (तौरात को) मानते तो हो।[1] (७०) ऐ अह्ले किताब ! तुम सच को झूठ के साथ गड -मड क्यों करते हो ? और हक़ को क्यों छिपाते हो ? और तुम जानते भी हो। (७१) ★

और अह्ले किताब एक दूसरे से कहते हैं कि जो (किताब) मोमिनों पर नाज़िल हुई है, उस पर दिन के शुरू में तो ईमान ले आया करो और उसके आखिर में इंकार कर दिया करो, ताकि वे (इस्लाम से) हट जाएं। (७२) और अपने दीन की पैरवी करने वालों के सिवा किसी और के क़ायल न होना (ऐ पैग़ाम्बर !) कह दो कि हिदायत तो ख़ुदा ही की हिदायत है। (वे यह भी कहते हैं), यह भी (न मानना) कि जो चीज़ तुम को मिली है, वैसी किसी और को मिलेगी या वे तुम्हें ख़ुदा के सामने क़ायल-माक़ूल कर सकेंगे। यह भी कह दो कि बुज़ुर्गी ख़ुदा ही के हाथ में है। वह जिसे चाहता है, देता है और ख़ुदा वुस्अत वाला (और) इल्म वाला है। (७३) वह अपनी रहमत से जिस को चाहता है, ख़ास कर लेता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (७४) और

१. यानी तुम इक़रार करते हो कि तौरात और इन्जील कलाम ख़ुदा के हैं, फिर इस में जो आयतें तारीफ़ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैं, उन के क्यों इन्कारी होते हो ?

★रु. ७/१५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिन् अह़्लिल्किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बि क़िन्तारिंय्युअद्दिही इलै-क व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बि दीनारिल्ला युअद्दिही इलै-क इल्ला मा दुम्-त अलैहि क़ा-इमन् ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ालू लै-स अलैना फ़िल्उम्मिय्यी-न सबीलुन् व यक़ूलू-न अ-लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हुम् यअ्-लमून (७५) बला मन् औफ़ा बि अह़्दिही वत्तक़ा फ़-इन्नल्ला-ह युह़िब्बुल्-मुत्तक़ीन (७६) इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न बि अह़्दिल्लाहि व ऐमानिहिम् स-म-नन् क़लीलन् उला-इ-क ला ख़ला-क़ लहुम् फ़िल्आख़िरति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व ला यन्ज़ुरु इलैहिम् यौमल्क़ियामति व ला युज़क्कीहिम् व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (७७) व इन्-न मिन्हुम् ल फ़रीक़ंय्यल्वू-न अल्सि-न-तहुम् बिल्किताबि लि तह़्सबूहु मिनल्किताबि व मा हु-व मिनल्किताबि व यक़ूलू-न हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि व मा हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि व यक़ूलू-न अलल्लाहिल्कज़ि-ब व हुम् यअ्-लमून (७८) मा का-न लि ब-शरिन् अंय्युअ्तियहुल्लाहुल्-किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त सुम्-म यक़ू-ल लिन्नासि कूनू अिबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी-न बिमा कुन्तुम् तुअ़ल्लिमूनल्-किता-ब व बिमा कुन्तुम् तद्रुसून (७९) व ला यअ्मुरकुम् अन् तत्तख़िज़ुल्-मला-इ-क-त वन्नबिय्यी-न अर्बाबन् अ यअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि बअ्-द इज़् अन्तुम् मुस्लिमून★ (८०) व इज़् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसाक़न्नबिय्यी-न लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव-व ह़िक्मतिन् सुम्-म जा-अकुम् रसूलुम्-मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अकुम् ल-तुअ्मिनुन्-न बिही व ल तन्सुरुन्नहू क़ा-ल अ अक़्रर्तुम् व अ-ख़ज़्तुम् अला ज़ालिकुम् इस्री क़ालू अक़्रर्ना क़ा-ल फ़श्हदू व अ-न म-अकुम् मिनश्शाहिदीन (८१)

تلك الرسل ٣ ۸۷ ال عمرن ٣

اهل الكتب من ان تامنه بقنطار يؤده اليك ومنهم من
ان تامنه بدينار لا يؤده اليك الا ما دمت عليه قائما ذلك
بانهم قالوا ليس علينا في الاميين سبيل ويقولون على الله
الكذب وهم يعلمون ۝ بلى من اوفى بعهده واتقى فان
الله يحب المتقين ۝ ان الذين يشترون بعهد الله وايمانهم
ثمنا قليلا اولئك لا خلاق لهم في الاخرة ولا يكلمهم الله
ولا ينظر اليهم يوم القيمة ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم ۝
وان منهم لفريقا يلون السنتهم بالكتب لتحسبوه من
الكتب وما هو من الكتب ويقولون هو من عند الله وما
هو من عند الله ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون ۝
ما كان لبشر ان يؤتيه الله الكتب والحكم والنبوة ثم يقول
للناس كونوا عبادا لي من دون الله ولكن كونوا ربنيين بما
كنتم تعلمون الكتب وبما كنتم تدرسون ۝ ولا يامركم
ان تتخذوا الملئكة والنبيين اربابا ايامركم بالكفر بعد
اذ انتم مسلمون ۝ واذ اخذ الله ميثاق النبيين لما اتيتكم
من كتب وحكمة ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم
لتؤمنن به ولتنصرنه قال ءاقررتم واخذتم على ذلكم

★रु. ८/१६ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अह्ले किताब में से कोई तो ऐसा है कि अगर तुम उसके पास (रुपयों का) ढेर अमानत रख दो तो तुम को (फ़ौरन) वापस दे दे और कोई इस तरह का है कि अगर उसके पास एक दीनार भी अमानत रखो, तो जब तक उसके सर पर हर वक़्त खड़े न रहो, तुम्हें दे ही नहीं। यह इस लिए कि वे कहते हैं कि उम्मियों के बारे में हमारी पकड़ न होगी। ये ख़ुदा पर सिर्फ़ झूठ बोलते हैं और (इस बात को) जानते भी नहीं। (७५) हां, जो शख़्स अपने इक़रार को पूरा करे और ख़ुदा से डरे, तो ख़ुदा डरने वालों को दोस्त रखता है। (७६) जो लोग ख़ुदा के इक़रारों और अपनी क़समों (को बेच डालते हैं और उन) के बदले थोड़ी सी क़ीमत हासिल करते हैं, उनका आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं, उनसे ख़ुदा न तो कलाम करेगा और न क़ियामत के दिन उनकी तरफ़ देखेगा और न उनको पाक करेगा और उनको दुख देने वाला आज़ाब होगा। (७७) और इन (अह्ले किताब) में कुछ ऐसे हैं कि किताब (तौरात) को ज़ुबान मरोड़-मरोड़ कर पढ़ते हैं, ताकि तुम समझो कि जो कुछ वे पढ़ते हैं, किताब में से है, हालांकि वह किताब में से नहीं होता और कहते हैं कि वह ख़ुदा की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है, हालांकि वह ख़ुदा की तरफ़ से नहीं होता और ख़ुदा पर झूठ बोलते हैं और (यह बात) जानते भी हैं। (७८) किसी आदमी को मुनासिब नहीं कि ख़ुदा तो उसे किताब और हुकूमत और नुबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहे कि ख़ुदा को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ, बल्कि (उस के लिए यह कहना मुनासिब है कि ऐ अह्ले किताब!) तुम (उलेमा-ए-) रब्बानी हो जाओ, क्योंकि तुम (ख़ुदा की) किताब पढ़ते रहते हो। (७९) और उसको यह भी नहीं कहना चाहिए कि तुम फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा बना लो। भला जब तुम मुसलमान हो चुके तो क्या उसे मुनासिब है कि तुम्हें काफ़िर होने को कहे। (८०) ★

और जब ख़ुदा ने पैग़म्बरों से अह्द लिया कि जब मैं तुमको किताब और दानाई अता करूं, फिर तुम्हारे पास कोई पैग़म्बर आये, जो तुम्हारी किताब की तस्दीक़ करे तो तुम्हें ज़रूर उस पर ईमान लाना होगा और ज़रूर उस की मदद करनी होगी। और (अह्द लेने के बाद) पूछा कि भला तुम ने इक़रार किया और इस इक़रार पर मेरा ज़िम्मा लिया (या मुझे ज़ामिन ठहराया) उन्होंने, कहा (हां), हमने इक़रार किया। (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि तुम (इस अह्द व पैमान के) गवाह रहो

★रु. ८/१६आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़ मन् तवल्ला बअ्-द ज़ालि-क फ़ उला-इ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (८२) अ-फ़-ग़ै-र
दीनिल्लाहि यब्ग़ू-न व लहू अस्ल-म मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव-व
कर्हंव-व इलैहि युर्जअून (८३) क़ुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल
अलैना व मा उन्ज़ि-ल अला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क़ व
यअ्-क़ूब वल्अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व
अीसा वन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिक़ु
बै-न अ-ह़दिम्मिन्हुम् व नह़्नु लहू मुस्लिमून
(८४) व मंय्यब्तग़ि ग़ैरल्-इस्लामि दीनन्
फ़ लंय्युक़्ब-ल मिन्हु व हु-व फ़िल्आख़िरति
मिनल्ख़ासिरीन (८५) कै-फ़ यह्दिल्लाहु
क़ौमन् क-फ़रू बअ्-द ईमानिहिम् व शहिदू
अन्नर्रसू-ल ह़क़्क़ुंव-व जा-अ हुमुलबय्यिनातु
वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (८६)
उला-इ-क जज़ा-उहुम् अन्-न अलैहिम्
लअ्-न - तुल्लाहि वल्मला-इकति वन्नासि
अज्मअीन (८७) ख़ालिदी-न फ़ीहा
ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम्
युन्ज़रून (८८) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्बअ्दि ज़ालि-क व अस्लहू
फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (८९) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बअ्-द ईमानिहिम्
सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लन् तुक़्ब-ल तौबतुहुम् व उला-इ-क हुमुज़्ज़ा-ल्लून
(९०) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन्
अ-ह़दिहिम् - मिल् - उल्अर्ज़ि ज़-ह-बंव-व लविफ़्तदा बिही उला-इ - क
लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुंव-व मा लहुम् मिन्नासिरीन ★ (९१)

تلك الرسل ٣ ٤٨ آل عمران ٣

إصري قالوا أقررنا قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين ﴿٨١﴾
فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ﴿٨٢﴾ أفغير دين الله
يبغون وله أسلم من في السماوات والأرض طوعا وكرها
وإليه يرجعون ﴿٨٣﴾ قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل
على إبراهيم وإسماعيل وإسحاق ويعقوب والأسباط وما
أوتي موسى وعيسى والنبيون من ربهم لا نفرق بين
أحد منهم ونحن له مسلمون ﴿٨٤﴾ ومن يبتغ غير الإسلام دينا
فلن يقبل منه وهو في الآخرة من الخاسرين ﴿٨٥﴾ كيف يهدي
الله قوما كفروا بعد إيمانهم وشهدوا أن الرسول حق و
جاءهم البينات والله لا يهدي القوم الظالمين ﴿٨٦﴾ أولئك
جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين ﴿٨٧﴾
خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون ﴿٨٨﴾
إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور
رحيم ﴿٨٩﴾ إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا لن
تقبل توبتهم وأولئك هم الضالون ﴿٩٠﴾ إن الذين كفروا وماتوا
وهم كفار فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو
افتدى به أولئك لهم عذاب أليم وما لهم من ناصرين ﴿٩١﴾



CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूं। (८१) तो जो इसके वाद फिर जाएं, वे बद-किरदार हैं। (८२) क्या ये (काफ़िर) ख़ुदा के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब हैं, हालांकि सब आसमानों और ज़मीन वाले, खुशी या ज़बरदस्ती से ख़ुदा के फ़रमांबरदार हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (८३) कहो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाये और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो सहीफ़े (ग्रन्थ) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर उतरे और जो किताबें मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को परवरदिगार की तरफ़ से मिलीं, सब पर ईमान लाये। हम इन पैग़म्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (एक ख़ुदा) के फ़रमांबरदार हैं। (८४) और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा, वह उससे हरगिज़ नहीं क़ुबूल किया जाएगा और ऐसा शख़्स आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में होगा। (८५) ख़ुदा ऐसे लोगों को कैसे हिदायत दे जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये और (पहले) इस बात की गवाही दे चुके कि पैग़म्बर हक़ पर हैं और उनके पास दलीलें भी आ गयीं। और ख़ुदा बे-इंसाफ़ों को हिदायत नहीं देता। (८६) उन लोगों की सज़ा यह है कि उन पर ख़ुदा की और फ़रिश्तों की और इंसानों की सब की लानत हो। (८७) हमेशा इस लानत में (गिरफ़्तार) रहेंगे, उन से न तो अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (८८) हां, जिन्होंने उसके बाद तौबा की और अपनी हालत दुरुस्त कर ली, तो ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (८९) जो लोग ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गये, ऐसों की तौबा हरगिज़ क़ुबूल नहीं होगी और ये लोग गुमराह हैं (९०) जो लोग काफ़िर हुए और कुफ़्र ही की हालत में मर गये, वे अगर (निजात हासिल करना चाहें और) बदले में ज़मीन भर कर सोना दें तो हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा। इन लोगों को दुख देने वाला अज़ाब होगा और उन की कोई मदद नहीं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौथा पारः लन्तनालू

सूरतु आलि इम्रान आयत ९२ से २००

लन्तनालुल्बिर्र-र ह़त्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुह़िब्बून ᵭ व मा तुन्फ़िक़ू मिन्
शैइन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम (९२) कुल्लुत्तआ़मि का-न ह़िल्ललिलबनी
इस्रा-ई-ल इल्ला मा ह़र्-र-म इस्रा-ई-लु अ़ला नफ़्सिही मिन् क़ब्लि
अन्तुनज़्ज़लत्तौरातु ط क़ुल् फ़अ्तूबित्तौराति फ़त्लूहा इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन (९३)
फ़ मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब मिम्बअ्-दि
ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून ▨ (९४)
क़ुल् स़-द-क़ल्लाहु ﻗﻒ फ़त्तबिअ़ू मिल्ल-त
इब्राही-म ह़नीफ़न् ط व मा का-न
मिनलमुश्रिकीन (९५) इन्-न अव्व-ल
बैतिंव्वुज़ि-अ लिन्नासि लल्लज़ी बि बक्क-तु
मुबार-कंव्-व हुदल्-लिल्-आ़लमीन ج (९६) फ़ीहि
आयातुम्-बय्यिनातुम् - मक़ामु इब्राही - म ᵭ
व मन् द-ख़-लहू का-न आमिनन् ط व
लिल्लाहि अ़लन्नासि ह़िज्जुलबैति मनिस्तता-अ
इलैहि सबीलन् ط व मन् क-फ़-र
फ़ इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़निल्आ़लमीन (९७)
क़ुल् या अह्लल्किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न
बि आयातिल्लाहि ﺻﻠﮯ वल्लाहु शहीदुन्
अ़ला मा तअ्-मलून (९८) क़ुल् या
अह्लल्-किताबि लि - म तसुद्दू-न अ़न्
सबीलिल्लाहि मन् आम-न तब्ग़ूनहा अि-व-जंव्-व अन्तुम् शुहदा-उ ط व मल्लाहु
बि ग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्-मलून (९९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअ़ू
फ़रीक़म्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब यरुद्दूकुम् बअ्-द ईमानिकुम् काफ़िरीन (१००)
व कै-फ़ तक्फ़ुरू-न व अन्तुम् तुत्ला अ़लैकुम् आयातुल्लाहि व फ़ीकुम् रसूलुहू ط
व मंय्यअ्-तसिम् बिल्लाहि फ़-क़द् हुदि-य इला स़िरातिम्-मुस्तक़ीम ★ (१०१)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ
شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْٓ
اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِیْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ
حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ
لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿٩٦﴾ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ
بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَی
النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٩٧﴾ قُلْ یٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ
بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِیْدٌ عَلٰی مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ یٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ
شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنْ تُطِیْعُوْا فَرِیْقًا مِّنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ یَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِیْمَانِكُمْ
كٰفِرِیْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَیْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰی عَلَیْكُمْ اٰیٰتُ اللّٰهِ وَفِیْكُمْ
رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ یَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِیَ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿١٠١﴾

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करेगा (९१) ★ (मोमिनो !) जब तक तुम उन चीज़ों में से, जो तुम्हें प्यारी हैं, (ख़ुदा की राह में) ख़र्च न करोगे, कभी नेकी न हासिल कर सकोगे और जो चीज़ तुम ख़र्च करोगे, ख़ुदा उसको जानता है। (९२) बनी इस्राईल के लिए (तौरात के नाज़िल होने से) पहले खाने की सब चीज़ें हलाल थीं, उनके अलावा, जो याक़ूब ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं। कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढ़ो (यानी दलील पेश करो)।[1] (९३) जो इसके बाद भी ख़ुदा पर झूठी बात गढ़े, तो ऐसे लोग ही बे-इंसाफ़ हैं ▨ (९४) कह दो कि ख़ुदा ने सच फ़रमा दिया, पस इब्राहीमी दीन की पैरवी करो, जो सब से बे-ताल्लुक़ होकर एक (ख़ुदा) के हो रहे थे। और मुश्रिकों में से न थे। (९५) पहला घर जो लोगों (के इबादत करने) के लिए मुक़र्रर किया गया था, वही है जो मक्के में है, बरकत वाला और दुनिया के लिए हिदायत। (९६) इसमें खुली हुई निशानियां हैं, जिनमें से एक इब्राहीम के खड़े होने की जगह है।[2] जो शख़्स इस (मुबारक) घर में दाखिल हुआ, उसने अम्न पा लिया। और लोगों पर ख़ुदा का हक़ (यानी फ़र्ज़) है कि जो इस घर तक जाने की क़ुदरत रखे, वह इसका हज करे, और जो इस हुक्म की तामील न करेगा, तो ख़ुदा भी दुनिया वालों से बे-नियाज़ है। (९७) कहो कि ऐ अह्ले किताब! तुम ख़ुदा की आयतों से क्यों कुफ़्र करते हो और ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से बा-ख़बर है। (९८) कहो कि ऐ अह्ले किताब! तुम मोमिनों को ख़ुदा के रास्ते से क्यों रोकते हो और बावजूद इसके कि तुम इसे जानते हो, इसमें टेढ़ निकालते हो और ख़ुदा तुम्हारे कामों से बे-ख़बर नहीं। (९९) मोमिनो! अगर तुम अह्ले किताब के किसी फ़रीक़ का कहा मान लोगे, तो वे तुम्हें ईमान लाने के बाद काफ़िर बना देंगे। (१००) और तुम किस तरह कुफ़्र करोगे, जबकि तुम को ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती हैं और तुम में उसके पैग़म्बर मौजूद हैं। और जिसने ख़ुदा (की हिदायत की रस्सी) को मज़बूत पकड़ लिया, वह सीधे रास्ते लग गया। (१०१) ★

---

१. यहूदी प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते थे कि आप को दावा तो हज़रत इब्राहीम अलै० के तरीक़े पर चलने का है, लेकिन जो चीज़ें हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के ख़ानदान में, जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते थे, हराम थीं, उन को आप खाते हैं। ख़ुदा ने इसे रद्द किया और फ़रमाया कि तौरात नाज़िल होने से पहले खाने की सब चीज़ें याक़ूब अलैहिस्सलाम को हलाल थीं, मगर वह जो उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं, उस की सूरत यह है कि हज़रत याक़ूब एक गांव में रहते थे, वहां उन को अर्क़ुन्निसा का मर्ज़ हो गया, जिस की वजह से उन को बहुत तक्लीफ़ थी, तो उन्होंने नज़्र मानी कि जो चीज़ मुझ को बहुत पसन्द है, वह छोड़ दूंगा, चुनांचे ऊंट का गोश्त खाना छोड़ दिया। याक़ूब अलैहिस्सलाम के बेटों ने भी उन की पैरवी में ऊंट का गोश्त छोड़ दिया था। ग़रज़ तौरात के नाज़िल होने से पहले खाने की तमाम चीज़ें हज़रत याक़ूब पर हलाल थीं और ख़ुदा ने उन को उन पर हराम नहीं किया था। इस वजह से ख़ुदा ने फ़रमाया कि ऐ पैग़म्बर! यहूद से कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और दिखाओ कि इस में कहां लिखा है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वक़्त में ऊंट हराम था। हां, यहूदियों की नाफ़रमानियों और गुनाहों की वजह से कुछ चीज़ें उन पर हराम कर दी गयी थीं, और इस से उन को उन की शरारतों की सज़ा देनी थी।

२. 'मक़ामे इब्राहीम', जिस का तर्जुमा 'इब्राहीम के खड़े होने की जगह' किया गया है, एक पत्थर है, जिस पर खड़े हो कर काबे की दीवारें चुनते थे। कहते हैं कि इस पत्थर पर हज़रत इब्राहीम के क़दमों के निशान थे, मगर अब मिट गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह ह़क़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन-न इल्ला व
अन्तुम् मुस्लिमून (१०२) वअ़्-तसिमू बि ह़ब्लिल्लाहि जमीअंव-व ला तफ़र्रक़ू
वज़्कुरू निअ़्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् कुन्तुम् अअ़्-दा-अन् फ़ अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिकुम्
फ़ अस्बह़्तुम् बि निअ़्-मतिही इख़्वानन् ج व कुन्तुम् अ़ला शफ़ा ह़ुफ़्रतिम्-
मिनन्नारि फ़ अन्क़-ज़कुम् मिन्हा ط कज़ालि-क
युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम्
तह्तदून (१०३) वल्तकुम् - मिन्कुम्
उम्मतुंय्यद्अू-न इलल्ख़ैरि व यअ्मुरू-न
बिलमअ़्-रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि ط
व उला-इ-क हुमुल्-मुफ़्लिह़ून (१०४)
व ला तकूनू कल्लज़ी-न तफ़र्रक़ू वख़्त-लफ़ू
मिम्बअ़्-दि मा जा-अ-हुमुल्-बय्यिनातु ط व
उला-इ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम
لا (१०५) यौ - म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्-व
तस्वद्दु वुजूहुन् ج फ़ अम्मल्-लज़ीनस्-वद्दत्
वुजूहुहुम् قف अ-क-फ़र्तुम् बअ़्-द ईमानिकुम्
फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (१०६) व अम्मल्लज़ीनब्यज़्ज़त्
वुजूहुहुम् फ़फ़ी रह़्मतिल्लाहि ط हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (१०७) तिल्-क
आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्ह़क़्क़ि ط व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्लिल्-
आ़लमीन (१०८) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط
व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल् - उमूर ★ (१०९) कुन्तुम् ख़ै - र उम्मतिन्
उख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू-न बिलमअ़्-रूफ़ि व तन्हौ - न अ़निल्मुन्करि
व तुअ्मिनू - न बिल्लाहि ط व लौ आम-न अह़्लुल्-किताबि ल का - न
ख़ैरल्लहुम् ط मिन्हुमुल् - मुअ्मिनू - न व अक्सरु - हुमुल्फ़ासिक़ून (११०)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ۝١٠٢ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ
بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ
مِّنْهَا ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٠٣ وَ
لْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٠٤ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠٥ۙ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۣ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝١٠٦ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ
فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١٠٧ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٨ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝١٠٩ۧ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ
اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۭ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ مِنْهُمُ
الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝١١٠ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۭ وَ

ع ١١/٢

★रु. ११/ २ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनो ! ख़ुदा से डरो, जैसा कि उस से डरने का हक़ है और मरना तो मुसलमान ही मरना। (१०२) और सब मिल कर ख़ुदा की (हिदायत की) रस्सी को मज़बूत पकड़े रहना और अलग-अलग न होना और ख़ुदा की उस मेहरबानी को याद करो, जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी और तुम उसकी मेहरबानी से भाई-भाई हो गये और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुंच चुके थे, तो ख़ुदा ने तुम को इससे बचा लिया। इस तरह ख़ुदा तुम को अपनी आयतें खोल-खोल कर सुनाता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (१०३) और तुम में एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए, जो लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाए और अच्छे काम करने का हुक्म दे और बुरे कामों से मना करे, यही लोग हैं जो निजात पाने वाले हैं।[1] (१०४) और उन लोगों की तरह न होना जो अलग-अलग हो गये और खुले हुक्मों के आने के बाद एक दूसरे से (ख़िलाफ़ व) इख़्तिलाफ़ करने लगे। ये वह लोग हैं, जिनको (क़ियामत के दिन) बड़ा अज़ाब होगा (१०५) जिस दिन बहुत से मुंह सफ़ेद होंगे और बहुत से मुंह स्याह, तो जिन लोगों के मुंह स्याह होंगे, (उनसे ख़ुदा फ़रमायेगा), क्या तुम ईमान ला कर काफ़िर हो गये थे? सो (अब) इस कुफ़्र के बदले अज़ाब (के मज़े) चखो। (१०६) और जिन लोगों के मुंह सफ़ेद होंगे, वे ख़ुदा की रहमत (के बाग़ों) में होंगे और उनमें हमेशा रहेंगे। (१०७) ये ख़ुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सेहत के साथ पढ़ कर सुनाते हैं और अल्लाह अह्ले आलम पर ज़ुल्म नहीं करना चाहता। (१०८) और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और सब कामों का रुजूअ और अंजाम ख़ुदा ही की तरफ़ है। (१०९) ★

(मोमिनो!) जितनी उम्मतें (यानी क़ौमें) लोगों में पैदा हुईं, तुम उन सब से बेहतर हो कि नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से मना करते हो और ख़ुदा पर ईमान रखते हो और अगर अह्ले किताब भी ईमान ले आते, तो उन के लिए बहुत अच्छा होता। इन में ईमान लाने वाले भी हैं (लेकिन थोड़े,) और अक्सर ना-फ़रमान हैं। (११०) और ये

---

१. 'नेकी', जो लफ़्ज़ 'ख़ैर' का तर्जुमा किया गया है, उस से मुराद क़ुरआन मजीद की पैरवी है, ख़ुदा ने इस मामले को फ़र्ज़ क़रार दिया है कि मुसलमानों में हर ज़माने में ऐसी जमाअत होनी चाहिए जो भलाई की तरफ़ बुलाये, नेकियों का हुक्म दे और बुराइयों से रोके, ताकि लोग क़ुरआन पर चलें, अच्छे काम करें और बुराइयों से बचते रहें। यह हुक्म ऐसा है कि जिस पर बहुत तवज्जोह और कोशिश से अमल होना चाहिए ताकि लोग कामियाब बनने के हक़दार हो सकें। पर बड़े अफ़सोस की जगह है कि इस ज़माने में इस हुक्म पर अमल नहीं होता, इसी वजह से मुसलमानों की दीनी व दुनियावी हालत अच्छी नहीं रही। उन के हालात देख कर डर होता है कि कहीं ऐसा वक़्त न आ जाए कि ये दुआ करें और वह ख़ुदा के यहां से रद्द कर दी जाए, जैसा कि एक हदीस में आया है कि 'तुम लोगों को चाहिए कि नेक काम करने का हुक्म करो और बुरे कामों से मना करते रहो, नहीं तो उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है कि अल्लाह तआला तुम पर अज़ाब भेजेगा, फिर तुम ख़ुदा से दुआ मांगोगे और वह उसे क़ुबूल न करेगा। ख़ुदा मुसलमानों को तौफ़ीक़ बख़्शे कि उस के हुक्मों पर अमल करें, ताकि उस की रहमत के हक़दार हों और उस के अज़ाब से बचे रहें।

★रु. ११/ २ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इंय्युक़ातिलूकुम् युवल्लू - कुमुलअद्बा-र
लंय्यज़ुर्रू कुम् इल्ला अ-ज़न् ط व इंय्युक़ातिलूकुम्
सुम्-म ला युन्सरून (१११) ज़ुरिबत् अलैहिमुज़्ज़िल्लतु ऐनमा सुक़िफ़ू
इल्ला बि हब्लिम्-मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बा-ऊ बि ग़-ज़बिम्-मिनल्लाहि
व ज़ुरिबत् अलैहिमुल्-मस्कनतु ط ज़ालि-क बि अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू - न
बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनल्-अम्बिया-अ
बिग़ैरि हक़्क़िन् ط ज़ालि - क बिमा
अ-सव्-व कानू यअ्-तदून ق (११२) लैसू
सवा-अन् ط मिन् अह्लिल् - किताबि
उम्मतुन् क़ा-इमतुंय्यत्लू-न आयातिल्लाहि
आना-अल्लैलि व हुम् यस्जुदून (११३)
युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि
व यअ्मुरू-न बिलमअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न
अनिलमुन्करि व युसारिअू - न फ़िल्ख़ैराति ط
व उला-इ-क मिनस्सालिहीन (११४) व
मा यफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़ लंय्युक्फ़रूहु ط
वल्लाहु अलीमुम् - बिल्मुत्तक़ीन (११५)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अन्हुम्
अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ط व उला-इ - क
अस्हाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (११६) म-सलु मा युन्फ़िक़ू-न फ़ी
हाज़िहिल्-ह़यातिद्दुन्या क-म-सलि रीहिन् फ़ीहा सिर्रुन् असाबत् ह़र्-स क़ौमिन्
ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् फ़ अह्ल - कत्हु ط व मा ज़-ल - महुमुल्लाहु व लाकिन्
अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (११७) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू ला तत्तख़िज़ू
बितानतम् - मिन् दूनिकुम् ला यअ्लूनकुम् ख़बालन् ط वद्दू मा अनित्तुम् ج
क़द् ब - दतिल् - बग़्ज़ा-उ मिन् अफ़्वाहिहिम् صلے व मा तुख़्फ़ी सुदूरुहुम्
अक्बरु ط क़द् बय्यन्ना लकुमुल् - आयाति इन् कुन्तुम् तअ्-क़िलून (११८)

لن تنالوا ٤ ٥١ آل عمران ٣

إِنْ يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ
الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ مِنَ النَّاسِ وَ
بَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذَٰلِكَ
بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوا سَوَاءً مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ
قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوا
مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ
فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ
قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِنْ دُونِكُمْ لَا
يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ
وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنْتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम्हें हल्की-सी तक्लीफ़ के अलावा कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे और अगर तुमसे लड़ेंगे, तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उनको मदद भी (कहीं से) नहीं मिलेगी। (१११) ये जहां नज़र आएंगे, ज़िल्लत (को देखोगे कि) उनसे चिमट रही है, अलावा इसके कि ये ख़ुदा और (मुसलमान) लोगों की पनाह में आ जाएं। और ये लोग ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हैं और नादारी उनसे लिपट रही है, यह इस लिए कि ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे और (उस के) पैग़म्बरों को ना-हक़ क़त्ल कर देते थे। यह इस लिए कि ये नाफ़रमानी किए जाते और हद से बढ़े जाते थे। (११२) ये भी सब एक जैसे नहीं हैं। इन अह्ले किताब में कुछ लोग (ख़ुदा के हुक्म पर) क़ायम भी हैं, जो रात के वक़्त ख़ुदा की आयतें पढ़ते और (उसके आगे) सज्दे करते हैं। (११३) (और) ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते और अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नेकियों पर लपकते हैं और यही लोग नेक लोग हैं। (११४) और ये जिस तरह की नेकी करेंगे, उसकी ना-क़द्री नहीं की जाएगी और ख़ुदा परहेज़गारों को ख़ूब जानता है। (११५) जो लोग काफ़िर हैं, उनके माल और औलाद ख़ुदा के अज़ाब को हरगिज़ नहीं टाल सकेंगे और ये लोग दोज़ख़ी हैं कि हमेशा उसी में रहेंगे। (११६) ये जो माल दुनिया की ज़िंगदी में ख़र्च करते हैं, उसकी मिसाल हवा की-सी है, जिस में सख़्त सर्दी हो और वह ऐसे लोगों की खेती पर जो अपने आप पर ज़ुल्म करते थे, चले और उसे तबाह कर दे और ख़ुदा ने उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ये खुद अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं। (११७) मोमिनो! किसी ग़ैर (मज़हब के आदमी) को अपना राज़दार न बनाना। ये लोग तुम्हारी ख़राबी (और फ़ित्ना फैलाने) में किसी तरह की कोताही नहीं नहीं करते और चाहते हैं कि (जिस तरह हो,) तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचे। उन की ज़ुबानों से तो दुश्मनी ज़ाहिर हो ही चुकी है और जो (कपट) उनके सीनों में छिपे हैं, वे कहीं ज़्यादा हैं। अगर तुम अक़्ल रखते हो तो हमने तुमको अपनी आयतें खोल-खोल कर सुना दी हैं। (११८) देखो, तुम ऐसे (साफ़

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हा-अन्तुम् उला-इ तुहिब्बूनहुम् व ला युहिब्बूनकुम् व तुअ्मिनू-न बिल्किताबि
कुल्लिही ۚ व इजा लक़ूकुम् क़ालू आमन्ना ۖ व इजा ख़लौ
अज़्ज़ू अ़लैकुमुल्-अनामि-ल मिनल्ग़ैज़ि ۚ क़ुल् मूतू बि ग़ैज़िकुम् ۚ इन्नल्ला-ह
अ़लीमुम्-बि जातिस्सुदूर (११९) इन् तम्सस्कुम् ह़-स-नतुन् तसुअ्हुम् ۖ व इन्
तुसिब्कुम् सय्यिअतुंय्यफ़्रहू बिहा ۚ व इन्
तस्बिरू व तत्तक़ू ला यज़ुर्रुकुम् कैदुहुम्
शैअन् ۚ इन्नल्ला-ह बिमा यअ्मलू-न
मुहीत़ ★ (१२०) व इज् ग़दौ-त
मिन् अह्लि-क तुबव्वि-उल्-मुअ्मिनी-न
मक़ाअि-द लिल्क़िताल ۚ वल्लाहु समीअुन्
अ़लीम ۙ (१२१) इज् हम्मत्ता-इ-फ़तानि
मिन्कुम् अन् तफ़्शला ۙ वल्लाहु
वलिय्युहुमा ۚ व अ़लल्लाहि फ़ल्य-त-वक्कलिल्
मुअ्मिनून (१२२) व ल-क़द् न-स़-रकुमुल्लाहु
बि बद्रिंव-व अन्तुम् अजिल्लतुन् ۚ फ़त्तक़ुल्ला-ह
ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१२३) इज् तक़ूलु
लिल्-मुअ्मिनी-न अलंय्यक्फ़ि-यकुम् अंय्युमिद्दकुम्
रब्बुकुम् बिसलासति आलाफ़िम्-मिनल्
मला-इकति मुन्ज़लीन ۚ (१२४) बला ۙ इन् तस्बिरू व तत्तक़ू व
यअ्तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाजा युम्दिद्-कुम् रब्बुकुम् बि ख़म्सति आलाफ़िम्-
मिनल्-मला-इकति मुसव्विमीन ●(१२५) व मा ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा
लकुम् व लि ततूमइन-न क़ुलूबुकुम् बिही ۚ व मन्नस्रु इल्ला मिन् अिन्-
दिल्लाहिल्-अ़ज़ीज़िल्-ह़कीम ۙ (१२६) लि य-क़्-त-अ़ त़-र-फ़म्-मिनल्लजी-न
क-फ़रू औ यक्बितहुम् फ़ यन्क़लिबू ख़ा-इबीन (१२७) लै-स ल-क मिनल्अम्रि
शैउन् औ यतू-ब अ़लैहिम् औ युअ़ज़्ज़िबहुम् फ़ इन्नहुम् ज़ालिमून (१२८)
व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ۚ यग़्फ़िरु
लि मंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ ۚ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (१२९)

لن تنالوا ٤ ٥٢ آل عمرٰن ٣

كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۖ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ
مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ
يَّفْرَحُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿١٢٠﴾ وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۚ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾ اِذْ هَمَّتْ
طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ
يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ
تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ
بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا
بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ
اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ
يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ

منزل ١

★रु.१२/३ आ ११ ● रुबुअ् १/४ ★रु. १३/४ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिल) लोग हो कि उन लोगों से दोस्ती रखते हो, हालांकि वे तुमसे दोस्ती नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो (और वे तुम्हारी किताब को नहीं मानते) और जब तुमसे मिलते हैं, तो कहते हैं, हम ईमान ले आए और जब अलग होते हैं, तो तुम पर ग़ुस्से की वजह से उंगलियां काट-काट खाते हैं। (उनसे) कह दो कि (बद-बख़्तो !) ग़ुस्से में मर जाओ। ख़ुदा तुम्हारे दिलों की बातों को ख़ूब जानता है। (११९) अगर तुम्हें आसूदगी हासिल हो, तो उनको बुरी लगती है और अगर रंज पहुंचे तो ख़ुश होते हैं और अगर तुम तक्लीफ़ों की बर्दाश्त और (उन से) किनाराकशी करते रहोगे तो उनका फ़रेब तुम्हें कुछ भी नुक़्सान न पहुंचा सकेगा। ये जो कुछ करते हैं, ख़ुदा उस पर एहाता किए हुए है। (१२०)★

और (उस वक़्त को याद करो) जब तुम सुबह को अपने घर से रवाना हो कर ईमान वालों को लड़ाई के लिए मोर्चों पर (मौक़ा-बे-मौक़ा) तैनात करने लगे और ख़ुदा सब कुछ सुनता और जानता है। (१२१) उस वक़्त तुम में से दो जमाअतों ने जी छोड़ देना चाहा, मगर ख़ुदा उन का मददगार था और मोमिनों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए।[1] (१२२) और ख़ुदा ने बद्र की लड़ाई में भी तुम्हारी मदद की थी और उस वक़्त भी तुम बे-सर व सामान थे, पस ख़ुदा से डरो (और उन एहसानों को याद करो) ताकि शुक्र करो। (१२३) जब तुम मोमिनों से यह कह (कर उनके दिल बढ़ा) रहे थे कि क्या यह काफ़ी नहीं कि परवरदिगार तीन हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल कर के तुम्हें मदद दे। (१२४) हां, अगर दिल को मज़बूत रखो और (ख़ुदा से) डरते रहो और काफ़िर तुम पर जोश के साथ यकायकी हमला कर दें तो परवरदिगार पांच हज़ार फ़रिश्ते, जिन पर निशान होंगे, तुम्हारी मदद को भेजेगा (१२५) ● और उस मदद को तो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए बशारत (ख़ुश-ख़बरी) का (ज़रिया) बनाया, यानी इस लिए कि तुम्हारे दिलों को उस से तसल्ली हासिल हो, वरना मदद तो ख़ुदा ही की है, जो ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (१२६) (यह ख़ुदा ने) इस लिए (किया) कि काफ़िरों की एक जमाअत को हलाक या उन्हें ज़लील व मग़्लूब कर दे कि (जैसे आए थे, वैसे ही) नाकाम वापस जाएं। (१२७) (ऐ पैग़म्बर !) इस काम में तुम्हारा कुछ अख़्तियार नहीं। (अब दो शक्लें हैं) या ख़ुदा उनके हाल पर मेहरबानी करे या उन्हें अज़ाब दे कि ये ज़ालिम लोग हैं। (१२८) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है। वह जिसे चाहे बख़्श दे, और जिसे चाहे अज़ाब करे और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१२९) ★

---

१. बद्र की लड़ाई में जब काफ़िरों को हार और मोमिनों की जीत हुई, तो काफ़िरों ने अगले साल फ़ौज जमा कर के मदीने पर चढ़ाई की और उहद के क़रीब, जो मदीने के पास एक पहाड़ है, आ उतरे। हज़रत सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से मश्विरा लिया कि शहर से बाहर निकल कर लड़ना चाहिए या शहर के अन्दर रह कर? उन्होंने सलाह दी कि बाहर निकल कर लड़ना चाहिए, मगर अब्दुल्लाह बिन उबई ने, जो मुनाफ़िक़ों का सरदार था, मश्विरा दिया कि शहर में रहना चाहिए। हज़रत ने बाहर निकल कर लड़ना मुनासिब समझा, चुनांचे आप ने ख़ुद ज़िरह पहन ली और एक हज़ार सहाबा को साथ ले कर मदीना से बाहर निकले। अब्दुल्लाह भी लड़ाई में शरीक हुआ, मगर ना-ख़ुशी से, क्योंकि उस की सलाह नहीं मानी गयी थी। जब सौत नामी जगह पर (शेष पृष्ठ १०३ पर)

★रु. १२/३ आ ११ ●रुब्अ १/४ ★रु. १३/४ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्-आफ़म्-मुज़ा-अ-फ़-तन्
वत्तक़ुल्ला-ह ल-अल्लकुम् तुफ़्लिहून ८ (१३०) वत्तक़ुन्नारल्लती उअिद्दत्
लिलकाफ़िरीन ८ (१३१) व अतीअुल्ला-ह वर्रसू-ल ल-अल्लकुम् तुर्हमून
८ (१३२) व सारिअू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अर्ज़ुहस्-
समावातु वल्अर्ज़ु ۙ उअिद्दत् लिलमुत्तक़ीन
(१३३) अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न फ़िस्सर्रा-इ
वज़्ज़र्रा-इ वलकाज़िमीनल्-ग़ै-ज़ वल्आफ़ी - न
अनिन्नासि ط वल्लाहु युहिब्बुल् - मुह्सिनीन ج
(१३४) वल्लज़ी-न इज़ा फ़-अलू फ़ाहिश-तन्
औ ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् ज़-करुल्ला-ह फ़स्तग़्फ़रू
लि ज़ुनूबिहिम् ص व मंय्यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब
इल्लल्लाहु قف व लम् युसिर्रू अला
मा फ़-अलू व हुम् यअ्लमून (१३५)
उला-इ-क जज़ा-उ-हुम् मग़्फ़ि - रतुम् -
मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन्
तह्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदी - न फ़ीहा ط
व निअ्-म अज्रुल् - आमिलीन ط (१३६)

﴿ال عمران ٣﴾ ﴿٥٣﴾ ﴿لن تنالوا ٤﴾

غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲۹﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً
وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۳۱﴾
وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۳۳﴾
الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ فِی السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَالْعَافِیْنَ
عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً
اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ یَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَمْ یُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾
اُولٰٓىِٕكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ﴿۱۳۶﴾ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۳۷﴾ هٰذَا بَیَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۳۸﴾
وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۹﴾
اِنْ یَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ وَتِلْكَ الْاَیَّامُ
نُدَاوِلُهَا بَیْنَ النَّاسِ وَلِیَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَیَتَّخِذَ مِنْكُمْ
شُهَدَآءَ وَاللّٰهُ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَلِیُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا وَیَمْحَقَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۴۱﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا

منزل ١

क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिकुम् सुननुन् ۙ फ़ सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न
आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन (१३७) हाज़ा बयानुल्लिन्नासि व हुदंव-व मौअिज़तुल्-
लिलमुत्तक़ीन (१३८) व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ्लौ-न इन्
कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३९) इंय्यम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़-क़द् मस्सल्क़ौ-म क़र्हुम्-
मिस्लुहू ط व तिल्कल्-अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि ८ व लि यअ्-ल-मल्लाहुल्लज़ी-न
आमनू व यत्तख़ि-ज़ मिन्कुम् शुहदा-अ ط वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन
(१४०) व लि युमह्हिसल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यम्हृ-क़ल्-काफ़िरीन (१४१)

ऐ ईमान वालो ! दोगुना-चौगुना सूद न खाओ और ख़ुदा से डरो, ताकि निजात हासिल करो। (१३०) और (दोज़ख़ की) आग से बचो, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है। (१३१) और ख़ुदा और उस के रसूल की इताअत करो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (१३२) और अपने परवरदिगार की बख़्शिश और बहिश्त की तरफ़ लपको, जिस की चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो (ख़ुदा से) डरने वालों के लिए तैयार की गयी है। (१३३) जो आसूदगी और तंगी में (अपना माल ख़ुदा की राह में) खर्च करते हैं और ग़ुस्से को रोकते और लोगों के क़ुसूर माफ़ करते हैं और ख़ुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है। (१३४) और वह कि जब कोई खुला गुनाह या अपने हक़ में कोई और बुराई कर बैठते हैं तो ख़ुदा को याद करते और अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगते हैं और ख़ुदा के सिवा गुनाह बख़्श भी कौन सकता है ! और जान-बूझ कर अपने कामों पर अड़े नहीं रहते। (१३५) ऐसे ही लोगों का बदला परवरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश और बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) वे उस में हमेशा बसते रहेंगे और (अच्छे) काम करने वालों का बदला बहुत अच्छा है। (१३६) तुम लोगों से पहले भी बहुत से वाक़िआत गुज़र चुके हैं, तो तुम ज़मीन में सैर कर के देख लो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ। (१३७) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए खुला बयान और तक़्वा वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। (१३८) और देखो बे-दिल न होना और न किसी तरह का ग़म करना, अगर तुम (सच्चे) मोमिन हो, तो तुम ही ग़ालिब रहोगे। (१३९) अगर तुम्हें (हार खाने का) घाव लगा है, तो उन लोगों को भी ऐसा घाव लग चुका है और ये दिन हैं कि हम इन लोगों में बदलते रहते हैं, और इस से यह भी मक़्सूद था कि ख़ुदा ईमान वालों को अलग कर दे और तुम में से गवाह बनाए और ख़ुदा बे-इन्साफ़ों को पसन्द नहीं करता। (१४०) और यह भी मक़्सूद था कि ख़ुदा ईमान वालों को ख़ालिस (मोमिन) बना दे और काफ़िरों को नाबूद (ख़त्म) कर दे। (१४१) क्या तुम यह समझते हो कि (बे-आज़माइश) बहिश्त

(पृष्ठ १०१ का शेष)

पहुंचे तो अब्दुल्लाह लश्कर के एक हिस्से को ले कर लौट चला और उस के बहकाने से क़बीला ख़ज़रज में से बनू सलमा ने और क़बीला औस में से बनू हारिसा ने, जो फ़ौज के दाहिने-बाएं मोर्चे पर मुक़र्रर थे, हिम्मत हार देनी चाही, लेकिन ख़ुदा ने उन के दिलों को मज़बूत किया और वे मैदान में जमे रहे। इस आयत में इन्हीं दो जमाअतों, यानी बनू सलमा और बनू हारिसा का ज़िक्र है और उन्हीं के बारे में ख़ुदा ने फ़रमाया कि ख़ुदा उन का मददगार था।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अम् ह़सिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त़ व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू
मिन्कुम् व यअ्-ल-मस्स़ाबिरीन (१४२) व ल-क़द् कुन्तुम् तमन्नौनल्मौ-त मिन्
क़ब्लि अन् तल्क़ौहु ص फ़-क़द् रऔतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून ★ (१४३)
व मा मुह़म्मदुन् इल्ला रसूलुन् ج क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु ط

يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٤٢ وَلَقَدْ كُنْتُمْ
تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَ اَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ۝١٤٣ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ
اَفَاۤىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى
عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْــًٔا ۭ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝١٤٤ وَمَا
كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۭ وَمَنْ يُّرِدْ
ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۭ وَ
سَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۝١٤٥ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ
فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا
اسْتَكَانُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٤٦ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ
اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْۤ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ
اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٤٧ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ
الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤٨ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝١٤٩ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝١٥٠
سَنُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا
لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥١

منزل ١

अ-फ़-इम्मा-त औ क़ुतिलन्-क़लब्तुम् अ़ला
अअ्-क़ाबिकुम् ط व मंय्यन्क़लिब् अ़ला अ़क़िबैहि
फ़ लंय्यज़ुर्रल्ला-ह शैअन् ط व स-यज्ज़िल्लाहुश्-
शाकिरीन (१४४) व मा का-न लि नफ़्सिन्
अन् तमू - त इल्ला बि इज़्निल्लाहि
किताबम् - मुअज्जलन् ط व मंय्युरिद्
स - वाबद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा ج व
मंय्युरिद् स - वाबल् - आख़िरति़ नुअ्तिही
मिन्हा ط व स-नज्ज़िश्-शाकिरीन (१४५)
व क-अय्यिम्-मिन् नबिय्यिन् क़ात-ल لا म-अहू
रिब्बिय्यू-न कसीरुन् ج फ़ मा व-हनू लिमा
अस़ाबहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि व मा ज़अ़ुफ़ू व
मस्तकानू ط वल्लाहु युह़िब्बुस़्साबिरीन (१४६)
व मा का-न क़ौलहुम् इल्ला अन् क़ालू रब्बनग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व
इस्राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़लल्क़ौमिल् -
काफ़िरीन (१४७) फ़-आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्-न सवाबिल्-आख़िरति़ ط
वल्लाहु युह़िब्बुल् - मुह़्सिनीन ★ (१४८) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू
इन् तुती़अुल्लज़ी-न क-फ़रू यरुद्दूकुम् अ़ला अअ्-क़ाबिकुम् फ़ तन्क़लिबू ख़ासिरीन
(१४९) बलिल्लाहु मौलाकुम् ج व हु-व ख़ैरुन्नासिरीन (१५०) सनुल्क़ी फ़ी
क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब बिमा अश्रकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल्
बिही सुल्तानन् ج व मअ्वाहुमुन्नारु ط व बिअ्-स मस्वज़्ज़ालिमीन (१५१)

★रु. १४/५ आ १४ ★रु. १५/६ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

में जा दाखिल होगे, हालांकि अभी ख़ुदा ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही नहीं और (यह भी मक़्सूद है) कि वह साबित-क़दम रहने वालों को मालूम करे। (१४२) और तुम मौत (शहादत) के आने से पहले उस की तमन्ना किया करते थे, सो तुम ने उस को आंखों से देख लिया। (१४३) ★

और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो सिर्फ़ (ख़ुदा के) पैग़म्बर हैं। इन से पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं। भला अगर यह मर जाएं या मारे जाएं, तो तुम उल्टे पांव फिर जाओ? (यानी दीन से फिर जाओ?) और जो उल्टे पांव फिर जाएगा, तो ख़ुदा का कुछ नुक़्सान नहीं कर सकेगा और ख़ुदा शुक्रगुज़ारों को (बड़ा) सवाब देगा। (१४४) और किसी शख़्स में ताक़त नहीं कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर मर जाए। (उस ने मौत का) वक़्त मुक़र्रर कर के लिख रखा है और जो शख़्स दुनिया में (अपने आमाल का) बदला चाहे, उस को हम यहीं बदला दे देंगे। और जो आख़िरत में सवाब का तालिब हो, उस को वहां अज्र अता करेंगे। और हम शुक्रगुज़ारों को बहुत जल्द (बहुत अच्छा) बदला देंगे। (१४५) और बहुत से नबी हुए हैं जिन के साथ हो कर अक्सर अल्लाह वाले (ख़ुदा के दुश्मनों से) लड़े हैं, तो जो मुसीबतें उन पर ख़ुदा की राह में वाक़े हुईं, उनकी वजह से उन्हों ने न तो हिम्मत हारी और न बुज़दिली की, न (काफ़िरों से) दबे और ख़ुदा जमाव रखने वालों को दोस्त रखता है। (१४६) और (इस हालत में) उन के मुंह से कोई बात निकलती तो यही कि, ऐ परवरदिगार! हमारे गुनाह और ज़्यादतियां जो हम अपने कामों में करते रहे हैं, माफ़ फ़रमा और हम को साबित-क़दम रख और काफ़िरों पर फ़त्ह इनायत फ़रमा। (१४७) तो ख़ुदा ने उन को दुनिया में भी बदला दिया और आख़िरत में भी बहुत अच्छा बदला (देगा) और ख़ुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है। (१४८) ★

मोमिनो! अगर तुम काफ़िरों का कहा मान लोगे, तो वे तुम को उल्टे पांव फेर (कर मुर्तद कर) देंगे, फिर तुम बड़े घाटे में पड़ जाओगे। (१४९) (ये तुम्हारे मददगार नहीं हैं,) बल्कि ख़ुदा तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (१५०) हम बहुत जल्द काफ़िरों के दिलों में तुम्हारा रौब बिठा देंगे, क्योंकि ये ख़ुदा के साथ शिर्क करते हैं, जिस की उस ने कोई भी दलील नहीं उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, वह ज़ालिमों का बहुत बुरा ठिकाना है। (१५१) और

★रु. १४/५ आ १४ ★रु. १५/६ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् स-द-क़कुमुल्लाहु वअ्-दहू इज् तहुस्सूनहुम् बि इज्निही ج हत्ता
इज़ा फ़शिल्तुम् व तनाज़अ्-तुम् फ़िल्अम्रि व अ़सैतुम् मिम्बअ्दि मा अराकुम्
मा तुहिब्बू-न ط मिन्कुम् मंय्युरीदुद्-दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल् - आख़िर-तू ج
सुम्-म स-र-फ़कुम् अ़न्हुम् लि यब्तलि-यकुम् ج व ल - क़द् अ़फ़ा अ़न्कुम् ط
वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़-लल् - मुअ्मिनीन
(१५२) इज् तुस्अ़िदू-न व ला तल्वू-न
अ़ला अ-हदिंव्वर्रसूलु यद्ऊकुम् फ़ी उख़रा
कुम् फ़ असाबकुम् ग़म्मम् - बि ग़म्मिल्-
लिकैला तह्ज़नू अ़ला मा फ़ातकुम् व
ला मा असाबकुम् ط वल्लाहु ख़बीरुम् -
बिमा तअ्-मलून (१५३) सुम्-म अन्ज़-ल
अ़लैकुम् मिम्बअ्-दिल् - ग़म्मि अ-म-नतन्नुआ-
संय्यग़शा ता - इ - फ़ - तम् - मिन्कुम् ۙ व
ता-इ-फ़तुन् क़द् अहम्मतहुम् अन्फ़ुसुहुम्
यज़ुन्नू - न बिल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि ज़न्नल्-
जाहिलिय्यति ط यक़ूलू-न हल्लना मिनल्अम्रि
मिन् शैइन् ط क़ुल् इन्नल् - अम्-र कुल्लहू
लिल्लाहि ط युख़्फ़ू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दू-न ल - क ط यक़ूलू - न लौ
का-न लना मिनल्-अम्रि शैउम्मा क़ुतिल्ना हाहुना ط क़ुल् लौ कुन्तुम् फ़ी
बुयूतिकुम् ल ब-र-ज़ल्लज़ी-न कुति-ब अ़लैहिमुल्क़त्लु इला मज़ाजिअ़िहिम् ج व
लि यब्तलियल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम् व लि युमह्हि-स मा फ़ी क़ुलूबिकुम् ط
वल्लाहु अ़लीमुम्-बि ज़ातिस्सुदूर (१५४) इन्नल्लज़ी-न तवल्लौ मिन्कुम्
यौमल्-त-क़ल्-जम्आ़नि ۙ इन्नमस्तज़ल्ल-हुमुश्-शैतानु बि बअ्-ज़ि मा क-सबू ج
व ल-क़द् अ़-फ़ल्लाहु अ़न्हुम् ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् हलीम ★ (१५५)

لن تنالوا ٤ — ٥٥ — آل عمران

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا
فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا
تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ
صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓي اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا
مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ
اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ
هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ
شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ
صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا
اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा ने अपना वायदा सच्चा कर दिया (यानी) उस वक़्त जबकि तुम काफ़िरों को उस के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहां तक कि जो तुम चाहते थे, ख़ुदा ने तुम को दिखा दिया, इस के बाद तुम ने हिम्मत हार दी और (पैग़म्बर के) हुक्म में झगड़ा करने लगे और उस की ना-फ़रमानी की, कुछ तो तुम में से दुनिया की ख़्वाहिश कर रहे थे और कुछ आख़िरत के तालिब। उस वक़्त ख़ुदा ने तुम को उन (के मुक़ाबले) से फेर (कर भगा) दिया, ताकि तुम्हारी आज़माइश करे और उस ने तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दिया और ख़ुदा मोमिन पर फ़ज़्ल करने वाला है। (१५२) (वह वक़्त भी याद करने के लायक़ है,) जब तुम लोग दूर भागे जाते थे और किसी को पीछे फिर कर नहीं देखते थे और अल्लाह के रसूल तुम को तुम्हारे पीछे खड़े बुला रहे थे तो ख़ुदा ने तुम को ग़म पर ग़म पहुंचाया ताकि जो चीज़ तुम्हारे हाथ से जाती रही,या जो मुसीबत तुम पर वाक़ेअ हुई है, इस से तुम ग़मगीन न हो और ख़ुदा सब आमाल से ख़बरदार है।' (१५३) फिर ख़ुदा ने ग़म व रंज के बाद तुम पर तसल्ली नाज़िल फ़रमायी (यानी) नींद, कि तुम में से एक जमाअत पर छा गयी और कुछ लोग जिन के जान के लाले पड़ रहे थे, ख़ुदा के बारे में ना-हक़ कुफ़्र (के दिनों) जैसे गुमान करते थे और कहते थे कि भला हमारे अख़्तियार की कुछ बात है? तुम कह दो कि बेशक सब बातें अल्लाह ही के अख़्तियार में हैं, ये लोग (बहुत-सी बातें) दिलों में छिपा रखते थे, जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते थे। कहते थे कि हमारे बस की बात होती तो हम यहां क़त्ल ही न किये जाते। कह दो कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिनकी तक़्दीर में मारा जाना लिखा था, वे अपनी-अपनी क़त्ल गाहों की तरफ़ ज़रूर निकल आते। इस से ग़रज़ यह थी कि ख़ुदा तुम्हारे सीनों की बातों को आज़माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उन को ख़ालिस और साफ़ कर दे और ख़ुदा दिलों की बातों को ख़ूब जानता है। (१५४)

जो लोग तुम में से (उहुद के दिन) जबकि (मोमिनों और काफ़िरों की) दो जमाअतें एक दूसरे से गुथ गयीं, (लड़ाई से) भाग गये तो उन के कुछ कामों की वजह से शैतान ने उन को फिसला दिया, मगर ख़ुदा ने उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला (और) बुर्दबार है।

---

१. यह उहुद की लड़ाई का क़िस्सा है। इस लड़ाई में, शुरू-शुरू में तो मुसलमान ग़ालिब रहे, मगर बाद में हज़रत सल्ल० की ना-फ़रमानी की वजह से हार हो गयी। ना-फ़रमानी यह हुई थी कि हज़रत ने तीरन्दाज़ों की एक जमाअत को एक मोर्चे पर लगा कर हुक्म दिया कि तुम यहां खड़े रहना और हरगिज़ न लड़ना। वे लोग तो वहां खड़े हुए और बाक़ी फ़ौज लड़ाई में लग गयी। लड़ाई में अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद की और उन को ग़ल्बा दिया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत सल्ल० की जैसी मदद अल्लाह तआला ने उहद के दिन की, ऐसी किसी मौक़े पर नहीं की। जब मुसलमान जीते और काफ़िर हार कर भागने लगे तो, तीरंदाज़ों ने चाहा कि मोर्चा छोड़ कर जीत में शामिल हो जाएं और ग़नीमत का माल लें, तो वे मोर्चा छोड़ कर चल दिए।

(शेष पृष्ठ १०९ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ालू लि इख़्वानिहिम्
इज़ा ज़-रबू फ़िल्अर्ज़ि औ कानू ग़ुज़्ज़ल्लौ कानू अिन्दना मा मातू व मा
क़ुतिलू ج लि यज्अ़-लल्लाहु ज़ालि-क हस्-र-तन् फ़ी क़ुलूबिहिम् ط वल्लाहु
युह़्यी व युमीतु ط वल्लाहु बिमा तअ़्-मलू-न बसीर (१५६) व लइन्
क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम्
ल मग़्फ़ि-रतुम्-मिनल्लाहि व रह़्मतुन्
ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअ़ून (१५७) व लइम्
मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् ल - इलल्लाहि
तुह़्शरून (१५८) फ़ बिमा रह़्मतिम्-
मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् ج व लौ कुन-त
फ़ज़्ज़न् ग़लीज़लक़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन्
हौलिक ص फ़अ्-फ़ु अ़न्हुम् वस्तग़्फ़िर्-लहुम्
व शाविर्हुम् फ़िल्अम्रि ج फ़ इज़ा अ-ज़म-त
फ़-त-वक्कल् अ़-लल्लाहि ط इन्नल्ला-ह युहि़ब्बुल्-
मु-त-वक्किलीन (१५९) इंय्यन्सुर्-कुमुल्लाहु
फ़ ला ग़ालि-ब लकुम् ج व इंय्यख़्ज़ुल्कुम्
फ़-मन् ज़ल्लज़ी यन्सुरुकुम् मिम्बअ़्-दिही ط व
अ़-लल्लाहि फ़ल्य-त-वक्कलिल् - मुअ्मिनून
(१६०) व मा का-न लि नबिय्यिन् अंय्यग़ुल्-ल ط व मंय्यग़्लुल् यअ्ति बिमा
ग़ल्-ल यौमल्क़ियामति ج सुम-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्मा-क-स-बत् व हुम्
ला युज़्लमून (१६१) अ फ़ मनित्त-ब-अ़ रिज़्वानल्लाहि क-मम्बा-अ बि स-ख़तिम्-
मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु ط व बिअ्सलमसीर (१६२) हुम् द-र-जातुन्
अिन्दल्लाहि ط वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ़्-मलून (१६३) ल-क़द् मन्नल्लाहु
अ़-लल्-मुअ्मिनी-न इज़् ब-अ़-स फ़ीहिम् रसूलम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अ़लैहिम्
आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हि़क्म-त
व इन् कानू मिन् क़ब्लु ल - फ़ी ज़लालिम् - मुबीन ● (१६४)

لن تنالوا ٤ ٥٦ اٰل عمرٰن ٣

كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ
كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ
قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَئِنْ
قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ
مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ
لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ
فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾
اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ
يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا
كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۗ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ
اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۗ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا
مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾ اَوَلَمَّا

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(१५५) ★ मोमिनो ! उन लोगों जैसे ने होना, जो कुफ़ करते हैं और उन के (मुसलमान) भाई जब (ख़ुदा की राह में) सफ़र करें (और मर जाएं) या जिहाद को निकलें (और मारे जाएं) तो उन के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। इन बातों से मक़्सूद यह है कि ख़ुदा इन लोगों के दिलों में अफ़सोस पैदा कर दे और ज़िंदगी और मौत तो ख़ुदा ही देता है और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (१५६) और अगर तुम ख़ुदा के रास्ते में मारे जाओ या मर जाओ, तो जो (माल व मताअ़) लोग जमा करते हैं, उस से ख़ुदा की बख़्शिश और रहमत कहीं बेहतर है। (१५७) और अगर तुम मर जाओ, या मारे जाओ, ख़ुदा के हुज़ूर में ज़रूर इकट्ठे किये जाओगे। (१५८) (ऐ मुहम्मद !) ख़ुदा की मेहरबानी से, तुम्हारी तबियत इन लोगों के लिए नर्म वाक़े हुई है और अगर तुम बुरी तबियत के और सख़्त-दिल होते, तो ये तुम्हारे पास से भाग खड़े होते, तो उन को माफ़ कर दो और उन के लिए (ख़ुदा से) मग़्फ़िरत मांगो और अपने कामों में उन से मश्विरा लिया करो और जब (किसी काम का) पक्का इरादा कर लो तो ख़ुदा पर भरोसा रखो। बेशक ख़ुदा भरोसा रखने वालों को दोस्त रखता है। (१५९) अगर ख़ुदा तुम्हारा मददगार है, तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है कि तुम्हारी मदद करे और मोमिनों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें। (१६०) और कभी नहीं हो सकता कि (ख़ुदा के) पैग़म्बर ख़ियानत करें और ख़ियानत करने वालों को क़ियामत के दिन ख़ियानत की हुई चीज़ (ख़ुदा के सामने) ला हाज़िर करनी होगी। फिर हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और बे-इन्साफ़ी नहीं की जाएगी। (१६१) भला जो शख़्स ख़ुदा की ख़ुश्नूदी का ताबेअ हो, वह उस शख़्स की तरह ख़ियानत कर सकता है, जो ख़ुदा की ना-ख़ुशी में गिरफ़्तार हो और जिस का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरा ठिकाना है। (१६२) उन लोगों के ख़ुदा के यहां (अलग-अलग और मुख़्तलिफ़) दर्जे हैं और ख़ुदा उन के सब आमाल को देख रहा है। (१६३) ख़ुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उन में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजे, जो उन को ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उन को पाक करते और (ख़ुदा की) किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे (१६४) ● (भला यह)

(पृष्ठ १०७ का शेष)

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने जो उन के अफ़सर थे, उन को हर तरह मना किया, मगर उन्हों ने उन के कहने पर अमल न किया। इधर तो यह सूरत हुई, उधर ख़ालिद बिन वलीद ने, जो उस वक़्त काफ़िरों के साथ थे, पीछे से हमला कर दिया और इस से लड़ाई की शक्ल बदल गयी यानी जीतने वालों को हार और हार खाने वालों की जीत हुई। ख़ुद हज़रत सल्ल० का चेहरा-ए-मुबारक ज़ख़्मी हुआ, सामने के चार दांत टूट गये, ख़ूद सर में घुस गया और यह मशहूर हो गया कि आप शहीद हो गये, ग़रज़ मुसलमान भाग खड़े हुए। उस वक़्त आप फ़रमाते थे कि ऐ ख़ुदा के बन्दो ! मेरे पास आओ, मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं। जो कोई फिर काफ़िरों पर हमला करेगा, उस को जन्नत मिलेगी।

ग़म पर ग़म पहुंचाने से यह मुराद है कि एक तो ग़नीमत के माल सें महरूम हुए, क़त्ल और ज़ख़्मी किये गये, दूसरे हज़रत सल्ल० का शहीद होना सुना और काफ़िरों का ग़लबा देखा।

★रु. १६/७ आ ७ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-व लम्मा असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा क़ुल्तुम् अन्ना
हाजा क़ुल् हु-व मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिकुम् इन्नल्ला - ह अला कुल्लि
शैइन् क़दीर (१६५) व मा असाबकुम् यौमल्-त-क़ल् - जम्आनि फ़बि-इज्-
निल्लाहि व लि-यअ्-ल-मल्-मुअ्मिनीन (१६६) व लि-यअ्-ल-मल्लजी-न
नाफ़क़ू व क़ी - ल लहुम् तआलौ
क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद्फ़अू
क़ालू लौ नअ्-लमु क़ितालल् - लत्तबअ्-नाकुम्
हुम् लिल्कुफ़्रि यौमइजिन् अक़्रबु मिन्हुम्
लिल् - ईमानि यक़ूलू - न बिअफ़्वाहिहिम्
मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम् वल्लाहु अअ्-लमु
बिमा यक्तुमून (१६७) अल्लजी-न क़ालू
लि-इख़्वानिहिम् व क़-अदू लौ अताअूना मा
क़ुतिलू क़ुल् फ़द्रऊ अन् अन्फ़ुसिकुमुल्मौ-त
इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१६८) व ला
तह्स-बन्नल्लजी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि
अम्वातन् बल् अह्या - उन् अिन् - द
रब्बिहिम् युर्ज़क़ून (१६९) फ़रिही - न

آل عمران ٣ ٥٧ لن تنالوا ٤

أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا قُلْ هُوَ
مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝١٦٥ وَمَا أَصَابَكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ۝١٦٦ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ نَافَقُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا
قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ
لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا يَكْتُمُونَ ۝١٦٧ الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا
مَا قُتِلُوا قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝١٦٨
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ
عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝١٦٩ فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ
وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝١٧٠ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَ
فَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝١٧١ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا
لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝١٧٢ الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ
قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ
وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝١٧٣ فَانقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ

منزل ١

बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व यस्तब्शिरू - न बिल्लजी - न
लम् यल्हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम्
व ला हुम् यह्ज़नून (१७०) यस्तब्शिरू-न बिनिअ्-मतिम्-मिनल्लाहि व
फ़ज़्लिंव- व अन्नल्ला - ह ला युज़ीअु अज्रल् - मुअ्मिनीन ★ (१७१)
अल्लजीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्बअ् - दि मा असाबहुमुल्क़र्हु
लिल्लज़ी - न अह्सनू मिन्हुम् वत्तक़ौ अज्रुन् अज़ीम (१७२)
अल्लजी-न क़ा-ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स क़द् ज-मअू लकुम् फ़ख़्शौ हुम्
फ़ज़ादहुम् ईमानंव्-व क़ालू हस्बुनल्लाहु व निअ्-मल् - वकील (१७३)

व़. लाज़िम ★रु. १७/८ आ १६, ∴मु. अ़ि मु त क़. २

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क्या (बात है कि) जब (उहुद के दिन काफ़िरों के हाथ से) तुम पर मुसीबत वाक़ेअ हुई, हालांकि (बद्र की लड़ाई में) इस से दोगुनी मुसीबत तुम्हारे हाथ से उन पर पड़ चुकी है, तो तुम चिल्ला उठे कि (हाय) आफ़त (हम पर) कहां से आ पड़ी। कह दो कि यह तुम्हारी ही शामते-आमाल है, (तुम ने पैग़म्बर के हुक्म के ख़िलाफ़ किया) बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१६५) और जो मुसीबत तुम पर दोनों जमाअतों के मुक़ाबले के दिन वाक़ेअ हुई, सो ख़ुदा के हुक्म से (वाक़ेअ हुई) और इस से यह मक़्सूद था कि ख़ुदा मोमिनों को अच्छी तरह मालूम कर ले और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम कर ले। (१६६) और (जब) उन से कहा गया कि आओ ख़ुदा के रास्ते में लड़ो या (काफ़िरों के) हमलों को रोको, तो कहने लगे कि अगर हम को इस की ख़बर होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ रहते। ये उस दिन ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब थे। मुंह से वे बातें कहते हैं जो उन के दिल में नहीं हैं और जो कुछ ये छिपाते हैं, ख़ुदा उसे ख़ूब जानता है। (१६७) ये ख़ुद तो (लड़ाई से बच कर) बैठ ही रहे थे, मगर (जिन्होंने ख़ुदा की राह में जानें क़ुर्बान कर दीं) अपने (उन) भाइयों के बारे में भी कहते हैं कि अगर हमारा कहा मानते तो क़त्ल न होते। कह दो कि अगर सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को टाल देना। (१६८) जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गये, उन को मरे हुए न समझना, (वे मरे हुए नहीं हैं), बल्कि ख़ुदा के नज़दीक ज़िन्दा हैं और उनको रोज़ी मिल रही है। (१६९) जो कुछ ख़ुदा ने उन को अपने फ़ज़्ल से बख़्श रखा है, उस में ख़ुश हैं, और जो लोग उन के पीछे रह गये और (शहीद हो कर) उन में शामिल नहीं हो सके,[1] उन के बारे में ख़ुशियां मना रहे हैं कि (क़ियामत के दिन) उन को भी न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे ▨ (१७०) और ख़ुदा के इनामों और फ़ज़्ल से ख़ुश हो रहे हैं और इस से कि ख़ुदा मोमिनों का बदला बर्बाद नहीं करता (१७१) ★ ∴ जिन्होंने ज़ख़्म खाने के बावजूद ख़ुदा और रसूल (के हुक्म) को क़ुबूल किया, ∴ जो लोग इन में नेक और परहेज़गार हैं, उन के लिए बड़ा सवाब है। (१७२) (जब) उनसे लोगों ने आ कर बयान किया कि काफ़िरों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के) लिए (बड़ी फ़ौज) जमा की है, तो उन से डरो, तो उन का ईमान और ज़्यादा हो गया और कहने लगे हम को ख़ुदा काफ़ी है

१. यानी जो शहीद नहीं हुए और लड़ाई में लगे हुए हैं।

▨ व. लाज़िम ★ रु. १७/८ आ १६. ∴ मु. अ़ि मु त क़. २

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़न्क़लबू बि निअ्-मतिम्-मिनल्लाहि व फ़ज़्लिल्लम् यम्सस्हुम् सूउंव ला व-त्तबअू रिज़्वानल्लाहि ط वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अज़ीम (१७४) इन्नमा ज़ालिकुमुश्शैतानु युख़व्विफ़ु औलिया-अहू ص फ़ ला तख़ाफ़ू-हुम् व ख़ाफ़ूनि इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१७५) व ला यह़्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअू-न फ़िल्कुफ़्रि ج इन्नहुम् लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् ط युरीदुल्लाहु अल्ला यज्-अ-ल लहुम् ह़ज़्ज़न् फ़िल्आख़िरति ج व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम (१७६) इन्नल्लज़ीनश्त-र-वुल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् ج व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (१७७) व ला यह़्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल्लि-अन्फ़ुसिहिम् ط इन्नमा नुम्ली लहुम् लि यज़्दादू इस्मन् ج व लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन (१७८) मा कानल्लाहु लि य-ज़-रल्-मुअ्मिनी-न अ़ला मा अन्तुम् अ़लैहि ह़त्ता यमीज़ल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि ط व मा कानल्लाहु लि युत़्लि-अकुम् अ़लल्ग़ैबि व लाकिन्नल्ला-ह यज्तबी मिर्रुसुलिही मंय्यशा-उ ص फ़ आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही ج व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू फ़-लकुम् अज्रुन् अज़ीम (१७९) व ला यह़्सबन्नल्लज़ी-न यब्ख़लू-न बिमा आता-हुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हु-व ख़ैरल्लहुम् ط बल् हु-व शर्रुल्लहुम् ط सयुत़व्वक़ू-न मा बख़िलू बिही यौमल्क़ियामति ط व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर ★ (१८०) ल-क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह फ़क़ीरुंव्-व नह़्नु अग़्नियाउ ▧ सनक्तुबु मा क़ालू व क़त्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि ह़क़्क़िंव् ला व नक़ूलु ज़ूक़ू अज़ाबल्-ह़रीक़ (१८१)

آل عمران ٣ ۵٨ لن تنالوا ٤

سُوْءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ (١٧٤) اِنَّمَا
ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٧٥) وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ
اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (١٧٦) اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (١٧٧) وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (١٧٨) مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى
مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ (١٧٩)
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ
خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ (١٨٠) لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّ
نَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ
وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ (١٨١) ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ

منزل ١

★रु. १८/६/६ ▧ व लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और वह बहुत अच्छा कारसाज़ है। (१७३) फिर वे ख़ुदा की नेमतों और उस की मेहरबानी के साथ (ख़ुशी-ख़ुशी) वापस आए, उन को किसी तरह का नुक़्सान न पहुंचा और वे ख़ुदा की ख़ुश्नूदी के ताबेअ रहे और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (१७४) यह (ख़ौफ़ दिलाने वाला) तो शैतान है, जो अपने दोस्तों से डराता है, तो अगर तुम मोमिन हो, तो उन से मत डरना और मुझी से डरते रहना। (१७५) और जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, उन (की वजह) से ग़मगीन न होना, यह ख़ुदा का कुछ नुक़्सान नहीं कर सकते, ख़ुदा चाहता है कि आख़िरत में उन को हिस्सा न दे और उन के लिए बड़ा अज़ाब (तैयार) है। (१७६) जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र ख़रीदा, वे ख़ुदा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते और उन को दुख देने वाला अज़ाब होगा। (१७७) और काफ़िर लोग यह न ख़्याल करें कि हम जो उन को मुहलत दिए जाते हैं, तो यह उन के हक़ में अच्छा है। (नहीं, बल्कि) हम उन को इस लिए मुहलत देते हैं कि और गुनाह कर लें। आख़िरकार उन को ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (१७८) (लोगो!) जब तक ख़ुदा नापाक को पाक से अलग न कर देगा, मोमिनों को इस हाल में, जिस में तुम हो, हरगिज़ नहीं रहने देगा और अल्लाह तुम को ग़ैब की बातों से भी मुत्तला नहीं करेगा, हां, ख़ुद अपने पैग़म्बरों में से जिसे चाहता है, चुन लेता है, तो तुम ख़ुदा पर और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम को बड़ा बदला मिलेगा। (१७९) जो लोग माल में जो ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से उन को अता फ़रमाया है, बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं, वे इस बुख़्ल को अपने हक़ में अच्छा न समझें (वह अच्छा नहीं,) बल्कि उन के लिए बुरा है। वे जिस माल में बुख़्ल करते हैं, क़ियामत के दिन उस का तौक़ (हार) बना कर उन की गरदनों में डाला जाएगा और आसमानों और ज़मीन का वारिस ख़ुदा ही है और जो अमल तुम करते हो, ख़ुदा को मालूम है। (१८०) ★

अल्लाह ने उन लोगों का क़ौल सुन लिया है, जो कहते हैं कि ख़ुदा फ़क़ीर है और हम अमीर हैं, ▨ ये जो कहते हैं, हम इसको लिख लेंगे और पैग़म्बरों को जो ये ना-हक़ क़त्ल करते रहे हैं, उसको भी (लिख लेंगे) और (क़ियामत के दिन) कहेंगे कि जलती (आग के) अज़ाब के मज़े चखते रहो। (१८१)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बि ज़ल्लामिल्-लिल्अबीद
(१८२) अल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह अहि-द इलैना अल्ला नुअ्मि-न
लि रसूलिन् ह़त्ता यअ्ति-यना बि क़ुर्बानिन् तअ्कुलुहुन्नारु ط क़ुल् क़द्
जा-अकुम् रुसुलुम्मिन् क़ब्ली बिल्बय्यिनाति व बिल्लज़ी क़ुल्तुम् फ़ लि-म
क़तल्तुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१८३)
फ़ इन् कज़्ज़बू-क फ़-क़द् कुज़्ज़ि-ब रुसुलुम्मिन्
क़ब्लि-क जा-ऊ बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि
वल्किताबिल्-मुनीर (१८४) कुल्लु नफ़्सिन्
ज़ाइक़तुल्मौति ط व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ-न
उजूरकुम् यौमल्क़ियामति ط फ़ मन् ज़ुह़्ज़ि-ह़
अनिन्नारि व उद्ख़िलल्-जन्न-त फ़-क़द् फ़ा-ज़ ط
व मल्ह़यातुद्दुन्या इल्ला मताअुल् - ग़ुरूर
(१८५) ल-तुब-ल-वुन्-न फ़ी अम्वालिकुम् व
अन्फ़ुसिकुम् قف व ल तस्मअुन-न मिनल्लज़ी-न
ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्लज़ी-न
अश्रकू अ - ज़न् कसीरन् ط व इन्
तस्बिरू व तत्तक़ू फ़ इन्-न ज़ालि-क मिन्
अ़ज़्मिल्-उमूर (१८६) व इज़् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसाक़ल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब
लतुबय्यिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमूनहू ز फ़-न-बज़ूहु वरा-अ ज़ुहूरिहिम्
वश्तरौ बिही स-म-नन् क़लीलन् ط फ़ बिअ्-स मा यश्तरून (१८७) ला
तह़्सबन्नल्लज़ी-न यफ़्रह़ू-न बिमा अतव्-व युह़िब्बू-न अंय्युह़्मदू बिमा लम् यफ़्अलू
फ़ ला तह़्सबन्नहुम् बि मफ़ाज़तिम्-मिनल्-अ़ज़ाबि ج व लहुम् अ़ज़ाबुन्
अलीम (१८८) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लाहु अ़ला
कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (१८९) इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि
वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल-आयातिल्-लि उलिल्-अल्बाब ۚ (१९०)

إِنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۸۲﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ
اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ
جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۳﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ
وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ
اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾
لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۫ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ
تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ
مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۫
فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا
يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ
اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ
الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

منزل ۱

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह उन कामों की सज़ा है जो तुम्हारे हाथ आगे भेजते रहे हैं और ख़ुदा तो बन्दों पर बिल्कुल ज़ुल्म नहीं करता। (१८२) जो लोग कहते हैं कि ख़ुदा ने हमें हुक्म भेजा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हमारे पास ऐसी नियाज़ ले कर न आए, जिस को आग आ कर खा जाए, तब तक हम उस पर ईमान न लाएंगे। (ऐ पैग़म्बर! इन से) कह दो कि मुझ से पहले कई पैग़म्बर तुम्हारे पास खुली हुई निशानियां ले कर आए और वह (मोजज़ा) भी लाये, जो तुम कहते हो, तो अगर सच्चे हो तो तुम ने उन को क़त्ल क्यों किया?[1] (१८३) फिर अगर ये लोग तुम को सच्चा न समझें, तो तुम से पहले बहुत-से पैग़म्बर खुली हुई निशानियां और सहीफ़े (ग्रंथ) और रोशन किताबें ले कर आ चुके हैं और लोगों ने उन को भी सच्चा नहीं समझा। (१८४) हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुम को क़ियामत के दिन तुम्हारे आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, तो जो शख़्स जहन्नम की आग से दूर रखा गया और बहिश्त में दाख़िल किया गया, वह मुराद को पहुंच गया। और दुनिया की ज़िन्दगी तो धोखे का सामान है। (१८५) (ऐ ईमान वालो!) तुम्हारे माल व जान में तुम्हारी आज़माइश की जाएगी और तुम अह्ले किताब से और उन लोगों से, जो मुश्रिक हैं, बहुत-सी तक्लीफ़ की बातें सुनोगे तो अगर सब्र और परहेज़गारी करते रहोगे तो ये बड़ी हिम्मत के काम हैं। (१८६) और जब ख़ुदा ने उन लोगों से, जिन को किताब इनायत की गयी थी, इक़रार लिया कि (जो कुछ इस में लिखा है) उस में साफ़-साफ़ बयान करते रहना और (उस की किसी बात) को न छिपाना, तो उन्हों ने उस को पीठ पीछे डाल दिया और उस के बदले थोड़ी-सी क़ीमत हासिल की। ये जो कुछ हासिल करते हैं, बुरा है। (१८७) जो लोग अपने (ना-पसन्द) कामों से ख़ुश होते हैं और (पसन्दीदा काम) जो करते नहीं, उन के लिए चाहते हैं कि उन की तारीफ़ की जाए, उन के बारे में ख़्याल न करना कि वह अज़ाब से रुस्तगार हो जाएंगे (और उन्हें दर्द देने वाला अज़ाब होगा)। (१८८) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही की है और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (१८९) ★

बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने-जाने में

---

१. अल्लाह तआला ने कुछ पैग़म्बरों को यह मोजज़ा बख़्शा था कि उन की उम्मत के लोग जो क़ुर्बानी और नज़्र व नियाज़ ख़ुदा के लिए करते, तो उस को मैदान में रख देते। आसमान से आग आती और उस को जला देती, तो यह समझा जाता कि क़ुर्बानी ख़ुदा की जनाब में क़ुबूल हुई। यहूदी आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल० से कहने लगे कि ख़ुदा ने हम को यह हुक्म दे रखा है कि हम किसी पैग़म्बर पर ईमान न लाएं, जब तक यह मोजज़ा न देख लें, तो आप भी यह मोजज़ा दिखाएं। ख़ुदा ने फ़रमाया, तुम उन के जवाब में कह दो कि कई पैग़म्बर मुझ से पहले कई तरह के मोजज़े ले कर आए और यह मोजज़ा भी, जो तुम कहते हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तो इन पैग़म्बरों को क़त्ल क्यों करते रहे? मतलब यह कि पैग़म्बरों को झुठलाना और ना-फ़रमानी करना तुम्हारी आदत में दाख़िल है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लज़ी-न यज़्कुरूनल्ला-ह क़ियामंव-व क़ुअूदंव्-व अला जुनूबिहिम् व् य-त-फ़क्करू-न फ़ी
ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ع रब्बना मा ख़-लक़्-त हाज़ा बातिलन् ع सुब्हान - क
फ़ क़िना अज़ाबन्नार (१९१) रब्बना इन्न-क मन् तुद्ख़िलिन्ना-र फ़-क़द्
अख़्ज़ैतहू ط व मा लिज़्ज़ालिमी - न मिन् अन्सार (१९२) रब्बना इन्नना
समिअ्-ना मुनादियंय्युनादी लिल्ईमानि अन्
आमिनू बि रब्बिकुम् फ़ आमन्ना صلے ق
रब्बना फ़ग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर् अन्ना ع
सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना म-अल् - अब्रार
(१९३) रब्बना व आतिना मा वअत्तना
अला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना यौमल्-
क़ियामति ط इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल्-मीआद
(१९४) फ़स्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी
ला उज़ीअ़ु अ-म-ल आमिलिम्-मिन्कुम् मिन्
ज़-करिन् औ उन्सा ع बअ्-ज़ुकुम् मिम्बअ्-ज़िन् ع
फ़ल्लज़ी-न हाजरू व उ-ख़्रिजू मिन्
दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू
व क़ुतिलू लउकफ़्फ़िरन-न अन्हुम्
सय्यिआतिहिम् व ल उद्ख़िलन्न-हुम् जन्नातिन्

لن تنالوا ٦٠ ال عمران ٣

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ
فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ
فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ١٩١ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ
وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ اَنْصَارٍ ١٩٢ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِي
لِلْاِيمَانِ اَنْ اٰمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَ
كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ١٩٣ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا
عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ١٩٤
فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّي لَآ اُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ
ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَاُخْرِجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقٰتَلُوا وَقُتِلُوا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ١٩٥ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ١٩٦ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ١٩٧ لٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ١٩٨ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ
مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِينَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُونَ بِاٰيٰتِ

منزل ١

तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ع सवाबम्-मिन् अ़िन्दिल्लाहि ط वल्लाहु अ़िन्दहू ط
ह़ुस्नुस्सवाब (१९५) ला यग़ुर्रन्न-क तक़ल्लुबुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़िल्बलाद
(१९६) मताअ़ुन् क़लीलुन् قف सुम् - म मअ्वाहुम् जहन्न-मु ط व बिअ्सल्मिहाद
(१९७) लाकिनिल्-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-
अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा नुज़ुलम्मिन् अ़िन्दिल्लाहि ط व मा अ़िन्दल्लाहि
ख़ैरुल्लिल्-अब्रार ● (१९८) व इन्-न मिन् अह़्लिल्किताबि लमंय्युअ्मिनु
बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् व मा उन्ज़ि - ल इलैहिम् ख़ाशिअी - न

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (१९०) जो खड़े और बैठे और लेटे (हर हाल में) ख़ुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार! तू ने इस (मख़्लूक़) को बे-फ़ायदा नहीं पैदा किया। तू पाक है, तो (क़ियामत के दिन) हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचाइयो। (१९१) ऐ परवरदिगार! जिस को तूने दोज़ख़ में डाला, उसे रुस्वा किया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (१९२) ऐ परवरदिगार! हम ने एक पुकारने वाले को सुना कि ईमान के लिए पुकार रहा था, (यानी) अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये। ऐ परवरदिगार! हमारे गुनाह माफ़ फ़रमा और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर और हम को दुनिया से नेक बन्दों के साथ उठा। (१९३) ऐ परवरदिगार! तू ने जिन-जिन चीज़ों के हम से अपने पैग़म्बरों के ज़रिए से वायदे किये हैं, वह हमें अदा फ़रमा और क़ियामत के दिन हमें रुस्वा न कीजियो। कुछ शक नहीं कि तू वायदा के ख़िलाफ़ नहीं करता। (१९४) तो उन के परवरदिगार ने उन की दुआ क़ुबूल कर ली। (और फ़रमाया) कि मैं किसी अमल करने वाले के अमल को, मर्द हो या औरत ज़ाया नहीं करता। तुम एक दूसरे की जिन्स हो, तो जो लोग मेरे लिए वतन छोड़ गये और अपने घरों से निकाले गये और सताये गये और लड़े और क़त्ल किये गये, मैं उन के गुनाह दूर कर दूंगा और उन को बहिश्तों में दाख़िल करूंगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। (यह) ख़ुदा के यहां से बदला है और ख़ुदा के यहां अच्छा बदला है। (१९५) (ऐ पैग़म्बर!) काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना तुम्हें धोखा न दे। (१९६) (यह दुनिया का) थोड़ा-सा फ़ायदा है, फिर (आख़िरत में) तो उन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है।[1] (१९७) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे, उन के लिए बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) उन में हमेशा रहेंगे। (यह) ख़ुदा के यहां से (उन की)

---

१. यानी काफ़िर जो शहरों में तिजारत के लिए चलते-फिरते और बहुत-सा माल पैदा करते हैं, तुम इस का ख़्याल न करना और यह न समझना कि यह भारी फ़ायदा हैं, क्योंकि फ़ना होने वाला है और दुनिया के तमाम फ़ायदे, आख़िरत के सवाब के मुक़ाबले में बहुत कम हैं। उन काफ़िर ताजिरों और मालदारों का आख़िरत में ठिकाना दोज़ख़ है और ख़ुदा ने जो मुसलमानों के लिए तैयार कर रखा है, वे बहिश्त के बाग़ हैं, जिन के आराम बाक़ी हैं और हमेशा रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिल्लाहि ला यश्तरू-न बि आयातिल्लाहि स-म-नन् क़लीलन् उला-इ-क लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् इन्नल्ला-ह सरीअुल्हिसाब (१९९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू वत्तक़ुल्ला-ह ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ★(२००)



४ सूरतुन्निसा-इ ९२

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १६६६७ अक्षर, ३७२० शब्द, १७६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिव्वाहि़दतिंव्-व ख़-ल-क़ मिन्हा ज़ौजहा व बस्-स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव्-व निसा-अन् वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसा-अलू-न बिही वल्अर्हा-म इन्नल्ला-ह का-न अ़लैकुम् रक़ीबा (१) व आतुल्यतामा अम्वालहुम् व ला त-त-बद्दलुल्ख़बी-स बित्तय्यिबि व ला तअ्कुलू अम्वालहुम् इला अम्वालिकुम् इन्नहू का-न हूबन् कबीरा (२) व इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ता-ब लकुम् मिनन्निसा-इ मस्ना व सुला-स व रुबा-अ फ़ इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तअ्दिलू फ़ वाहि़द-तन् औ मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् जालि-क अद्ना अल्ला तअूलू (३) व आतुन्निसा-अ सदुक़ातिहिन्-न निह्-ल-तन् फ़ इन् तिब्-न लकुम् अन् शैइम्-मिन्हु नफ़्सन् फ़ कुलूहु हनी-अम्-मरी-आ (४) व ला तुअ्तुस्सुफ़-हा-अ अम्वालकुमुल्लती ज-अ-लल्लाहु लकुम् क़ियामंव्वर्ज़ुक़ू-हुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व क़ूलू लहुम् क़ौलम्मअ्-रूफ़ा (५)

لن تنالوا ٤ — ٩١ — النساء ٤

اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾
سُورَةُ النِّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَسِتٌّ وَسَبْعُونَ آيَةً وَأَرْبَعٌ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ
وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ
رَقِيبًا ﴿١﴾ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ ۖ
وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٢﴾
وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ
مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا
فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ﴿٣﴾ وَ
آتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ
نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا ﴿٤﴾ وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ
الَّتِي جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَ
قُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ﴿٥﴾ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेहमानी है और जो कुछ ख़ुदा के यहां है, वह नेकों के लिए बहुत अच्छा है। (१६८) ● और कुछ अह्ले किताब ऐसे भी हैं, जो ख़ुदा पर और उस (किताब) पर, जो तुम पर नाज़िल हुई, और उस पर जो उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और ख़ुदा के आगे आजिज़ी करते हैं और ख़ुदा की आयतों के बदले थोड़ी-सी क़ीमत नहीं लेते। यही लोग हैं, जिन का बदला उस के परवरदिगार के यहां तैयार है। और ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१६६) ऐ अह्ले ईमान! (काफ़िरों के मुक़ाबले में) साबित-क़दम रहो। और इस्तिक़ामत (जमाव) रखो और (मोर्चों पर) जमे रहो और ख़ुदा से डरो, ताकि मुराद हासिल करो। (२००) ★



४ सूरः निसा ६२

सूरः निसा मदनी है और इसमें एक सौ सतहत्तर आयतें और चौबीस रुकूअ हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो! अपने परवरदिगार से डरो, जिसने तुमको एक शख़्स से पैदा किया (यानी पहले) उस से उसका जोड़ा बनाया, फिर उन दोनों से कसरत से मर्द व औरत (पैदा करके धरती पर) फैला दिए और ख़ुदा से जिस के नाम को तुम ज़रूरत पूरी करने का ज़रिया बनाते हो, डरो, रिश्तेदारी (काट देने) से (बचो)। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम को देख रहा है। (१) और यतीमों का माल (जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो) इनके हवाले कर दो और उनके पाकीज़ा (और उम्दा) माल को (अपने ख़राब और) बुरे माल से न बदलो और न उनका माल अपने माल में मिला कर खाओ कि यह बड़ा सख़्त गुनाह है। (२) और अगर तुमको इस बात का डर हो कि यतीम लड़कियों के बारे में इंसाफ़ न कर सकोगे, तो उन के सिवा जो औरतें तुम को पसन्द हों, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार, उनसे निकाह कर लो और अगर इस बात का डर हो कि सब औरतों से बराबर का ब्यवहार न कर सकोगे, तो एक औरत (काफ़ी है) या लौंडी, जिस के तुम मालिक हो, इस से तुम बे-इन्साफ़ी से बच जाओगे। (३) और औरतों को उन के मह्र ख़ुशी से दे दिया करो, हां, अगर वे अपनी ख़ुशी से उसमें से कुछ तुम को छोड़ दें तो उसे ख़ुशी-ख़ुशी खा लो। (४) और बे-अक़्लों को उन का माल जिसे ख़ुदा ने तुम लोगों के लिए रोज़ी का ज़रिया बनाया है मत दो, (हां,) उसमें से उनको खिलाते

●सु. ३/४ ★रु. २०/११ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वब्तलुल् - यतामा ह़त्ता इज़ा ब-लग़ुन्निका-ह़ ج फ़ इन् आनस्तुम् मिन्हुम्
रुश्दन् फ़द्फ़अू इलैहिम् अम्वालहुम् ج व ला तअ्कुलूहा इस्राफ़ंव् - व
बिदारन् अंय्यक्बरू ط व मन् का-न ग़निय्यन् फ़ल्यस्तअ्-फ़िफ़् ج व मन् का-न
फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिलमअ् - रूफ़ि ط फ़ इज़ा द-फ़अ् - तुम् इलैहिम्
अम्वालहुम् फ़ अश्हिदू अ़लैहिम् ط व कफ़ा
बिल्लाहि ह़सीबा (६) लिर्रिजालि नसीबुम्-
मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्अक़्रबू-न ص व
लिन्निसा-इ नसीबुम्मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि
वल्अक़्रबू-न ص मिम्मा क़ल्-ल मिन्हु औ कसु-र ط
नसीबम्-मफ़्रूज़ा (७) व इज़ा ह-ज़-रल्
क़िस्म-तु उलुलक़ुर्बा वल्यतामा वलमसाकीनु
फ़र्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व क़ूलू लहुम् क़ौलम्
मअ्-रूफ़ा (८) वल्यख़्शल्लज़ी-न लौ त-रकू
मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्य-तन् ज़िआफ़न् ख़ाफ़ू
अ़लैहिम् ص फ़ल्यत्तक़ुल्ला - ह वल्यक़ूलू
क़ौलन् सदीदा (९) इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू-न
अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू-न
फ़ी बुतूनिहिम् नारन् ط व स-यस्लौ - न
सअ़ीरा ★ (१०) यूसी - कुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम् ق लिज़्ज़ - करि मिस्लु
ह़ज़्ज़िल्-उन्सयैनि ج फ़ इन् कुन्-न निसा-अन् फ़ौक़स्-नतैनि फ़ लहुन्-न सुलुसा मा
त-र-क ج व इन् कानत् वाह़ि-द-तन् फ़ लहन्निस्फ़ु ط व लि अ-ब-वैहि लि कुल्लि
वाह़िदिम्मिन्-हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् का-न लहू व-लदुन् ج फ़ इल्लम्
यकुल्लहू व-लदुंव्-व वरिसहू अ-बवाहु फ़ लि-उम्-मिहिस्सुलुसु ج फ़ इन् का-न लहू
इख़्वतुन् फ़ लि उम्-मिहिस्सुदुसु मिम्बअ्-दि वसिय्यतिंय्यूसी बिहा औदैन ط
आबा-उकुम् व अब्ना-उकुम् ला तद्रू-न अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अ़न् ط
फ़रीज़ - तम् - मिनल्लाहि ط इन्नल्ला - ह का - न अ़लीमन् ह़कीमा (११)

النكاح ج فان انستم منهم رشدا فادفعوا اليهم اموالهم ج
ولا تاكلوها اسرافا وبدارا ان يكبروا ط ومن كان غنيا
فليستعفف ج ومن كان فقيرا فلياكل بالمعروف ط فاذا
دفعتم اليهم اموالهم فاشهدوا عليهم ط وكفى بالله حسيبا ○
للرجال نصيب مما ترك الولدن والاقربون وللنساء نصيب
مما ترك الولدن والاقربون مما قل منه او كثر ط نصيبا
مفروضا ○ واذا حضر القسمة اولوا القربى واليتمى والمسكين
فارزقوهم منه وقولوا لهم قولا معروفا ○ وليخش الذين
لو تركوا من خلفهم ذرية ضعفا خافوا عليهم ص فليتقوا الله
وليقولوا قولا سديدا ○ ان الذين ياكلون اموال اليتمى
ظلما انما ياكلون في بطونهم نارا ط وسيصلون سعيرا ○ يوصيكم
الله في اولادكم ق للذكر مثل حظ الانثيين ج فان كن نساء
فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك ج وان كانت واحدة فلها النصف ط
ولابويه لكل واحد منهما السدس مما ترك ان كان له
ولد ج فان لم يكن له ولد وورثه ابوه فلامه الثلث ج فان
كان له اخوة فلامه السدس من بعد وصية يوصي بها
او دين ط اباؤكم وابناؤكم لا تدرون ايهم اقرب لكم نفعا ط

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और पहनाते रहो और उनसे मुनासिब बातें कहते रहो। (५) और यतीमों को बालिग़ होने तक काम-काज में लगाये रखो, फिर (बालिग़ होने पर) अगर उन में अक़्ल की पुख़्तगी देखो, तो उनका माल उनके हवाले कर दो और इस डर से कि वे बड़े हो जाएंगे (यानी बड़े होकर तुम से अपना माल वापस ले लेंगे) उसको फ़िज़ूलख़र्ची और ज़ल्दी में न उड़ा देना। जो शख़्स ख़ुशहाल हो उसको (ऐसे माल से क़तई तौर पर) परहेज़ रखना चाहिए और जो बद-हाल हो, वह मुनासिब तौर पर (यानी ख़िदमत के बराबर) कुछ ले ले और जब उन का माल उनके सुपुर्द करने लगो तो गवाह कर लिया करो और हक़ीक़त में तो ख़ुदा ही गवाह (और) हिसाब लेने वाला काफ़ी है। (६) जो माल मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरें, थोड़ा हो या बहुत, उसमें मर्दों का भी हिस्सा है और औरतों का भी। ये हिस्से (ख़ुदा के) मुक़र्रर किये हुए हैं। (७) और जब मीरास की तक़्सीम के वक़्त (ग़ैर वारिस) रिश्तेदार और यतीम और मुहताज आ जाएं, तो उन को भी उस में से कुछ दे दिया करो और मीठी बातों से पेश आया करो। (८) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए जो (ऐसी हालत में हों कि) अपने बाद नन्हें-नन्हें बच्चे छोड़ जाएं और उन को उन के बारे में डर हो (कि उनके मरने के बाद इन बेचारों का क्या हाल होगा) पस चाहिए कि ये लोग ख़ुदा से डरें और माक़ूल बात कहें। (९) जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तौर पर खाते हैं, वे अपने पेट में आंग भरते हैं और दोज़ख़ में डाले जाएंगे। (१०) ★

ख़ुदा तुम्हारी औलाद के बारे में तुम को इर्शाद फ़रमाता है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर है और अगर मरने वाले की औलाद सिर्फ़ लड़कियां ही हों (यानी दो या) दो से ज़्यादा, तो कुल तर्के में उन का दो तिहाई और अगर सिर्फ़ एक लड़की हो तो उस का हिस्सा आधा और मय्यत के मां-बाप का यानी दोनों में हर एक का तर्के में छठा हिस्सा, बशर्ते कि मय्यत के औलाद हो, और अगर औलाद न हो और सिर्फ़ मां-बाप ही उस के वारिस हों तो एक तिहाई मां का हिस्सा। और अगर मय्यत के भाई भी हों तो मां का छठा हिस्सा (और मय्यत के तर्के की यह तक़्सीम) वसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उसने की हो या क़र्ज़ के (अदा होने के बाद जो उसके ज़िम्मे हो, अमल में आएगी) तुम को मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप-दादों, बेटों-पोतों में से फ़ायदे के लिहाज़ से कौन तुम से ज़्यादा क़रीब है। ये हिस्से ख़ुदा के मुक़र्रर किये हुए हैं और ख़ुदा सब कुछ जानने वाला और हिक्मत वाला है। (११) और जो माल तुम्हारी औरतें छोड़ मरें, अगर

★रु० १/१२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लकुम् निस्फ़ु मा त-र-क अज़्वाजुकुम् इल्लम् यकुल्लहुन्-न व-लदुन् ج
फ़ इन् का-न लहुन्-न व-लदुन् फ़ लकुमुर्रुबुअ़ु मिम्मा त-रक्-न मिम्बअ्-दि
वसिय्यतिंय्यूसी-न बिहा औदैनिन् ط व लहुन्नर्रुबुअ़ु मिम्मा त-रक्तुम् इल्लम्
यकुल्लकुम् व-लदुन् ج फ़ इन् का-न लकुम् व-लदुन् फ़ लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा
तरक्तुम् मिम्बअ्-दि वसिय्यतिन् तूसू-न बिहा
औदैनिन् ط व इन्का-न रजुलुंय-यूरसु कलाल-तन्
अविम्र-अतुंव्-व लहू अख़ुन् औ उख़्तुन्
फ़ लि कुल्लि वाहिदिम्-मिन्हुमस्सुदुसु ج
फ़ इन् कानू अक्स-र मिन् ज़ालि-क फ़हुम्
शुरका-उ फ़िस्सुलुसि मिम्बअ्-दि वसिय्यतिय्यूसा
बिहा औदैनिन् ۙ ग़ै-र मुज़ार्रिन् ج
वसिय्यतम्-मिनल्लाहि ط वल्लाहु अलीमुन्
हलीम ط (१२) तिल्-क हुदूदुल्लाहि ط
व मंय्युतिअिल्ला-ह व रसूलहू युद्ख़िल्हु
जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु
ख़ालिदी-न फ़ीहा ط व ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-
अज़ीम (१३) व मंय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू

النساء ٤ ٦٣ لن تنالوا ٤

فريضة من الله ان الله كان عليما حكيما ⑪ ولكم نصف ما ترك
ازواجكم ان لم يكن لهن ولد فان كان لهن ولد فلكم الربع
مما تركن من بعد وصية يوصين بها او دين ولهن الربع
مما تركتم ان لم يكن لكم ولد فان كان لكم ولد فلهن
الثمن مما تركتم من بعد وصية توصون بها او دين وان
كان رجل يورث كللة او امراة وله اخ او اخت فلكل واحد
منهما السدس فان كانوا اكثر من ذلك فهم شركاء في الثلث
من بعد وصية يوصى بها او دين غير مضار وصية من الله
والله عليم حليم ⑫ تلك حدود الله ومن يطع الله ورسوله
يدخله جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها وذلك
الفوز العظيم ⑬ ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده
يدخله نارا خالدا فيها وله عذاب مهين ⑭ والتي ياتين
الفاحشة من نسائكم فاستشهدوا عليهن اربعة منكم فان
شهدوا فامسكوهن في البيوت حتى يتوفهن الموت او يجعل
الله لهن سبيلا ⑮ والذن ياتينها منكم فاذوهما فان تابا و
اصلحا فاعرضوا عنهما ان الله كان توابا رحيما ⑯ انما التوبة
على الله للذين يعملون السوء بجهالة ثم يتوبون من قريب

منزل ١

व य-त-अ़-द्-द हुदूदहु युद्ख़िल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा ص व लहू अ़ज़ाबुम्-
मुहीन★(१४) वल्लाती यअ्तीनल्-फ़ाहि-श-त मिन् निसा-इकुम् फ़स्तश्हिदू
अ़लैहिन्-न अर्ब-अ-तम्-मिन्कुम् ج फ़ इन् शहिदू फ़ अम्सिकू-हुन-न फ़िल्बुयूति हत्ता
य-त-वफ़्फ़ा-हुन्नल्मौतु औ यज-अ-लल्लाहु लहुन्-न सबीला (१५) वल्लज़ानि
यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ़ आज़ूहुमा ج फ़ इन् ताबा व अस्लहा फ़ अअ्-रिज़ू
अ़न्हुमा ط इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबर्रहीमा (१६) इन्नमत्तौबतु अ़-लल्लाहि
लिल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्सू-अ बि जहालतिन् सुम्-म यतूबू-न मिन् क़रीबिन्
फ़ उला-इ-क यतूबुल्लाहु अ़लैहिम् ط व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (१७)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन के औलाद न हो, तो उस में आधा हिस्सा तुम्हारा और अगर औलाद हो तो तर्के में तुम्हारा हिस्सा चौथाई। (लेकिन यह बांट) वसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उन्होंने की हो या क़र्ज़ के (अदा होने के बाद, जो उन के ज़िम्मे हो) की जाएगी और जो माल तुम (मर्द) छोड़ मरो, अगर तुम्हारे औलाद न हो तो तुम्हारी औरतों का उसमें चौथा हिस्सा। और अगर औलाद हो तो उन का आठवां हिस्सा। (ये हिस्से) तुम्हारी वसीयत (के पूरा करने के) बाद जो तुम ने की हो और क़र्ज़ के (अदा होने के बाद) बांटे जाएंगे। और अगर ऐसे मर्द या औरत की मीरास हो, जिसके न बाप हो, न बेटा, मगर उसके भाई या बहन हो तो उनमें से हर एक का छठा हिस्सा और अगर एक से ज़्यादा हों तो सब एक तिहाई में शरीक होंगे। (ये हिस्से भी) वसीयत व क़र्ज़ के अदा होने के बाद, बशर्तेकि उनसे मय्यत ने किसी का नुक़सान न किया हो (तक़सीम किये जाएंगे।) यह ख़ुदा का फ़रमान है और ख़ुदा निहायत इल्म वाला (और) निहायत हिल्म वाला है। (१२) ये (तमाम हुक्म) ख़ुदा की हदें हैं और जो आदमी ख़ुदा और उसके पैग़म्बर की फ़रमांबरदारी करेगा, ख़ुदा उसको जन्नतों में दाख़िल करेगा, जिन में नहरें बह रही हैं, वे उनमें हमेशा रहेंगे और यह बड़ी कामियाबी है। (१३) और जो ख़ुदा और उसके रसूल की ना-फ़रमानी करेगा, और उस की हदों से निकल जाएगा, उस को ख़ुदा दोज़ख़ में डालेगा, जहां वह हमेशा रहेगा और उस को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (१४)★

मुसलमानो! तुम्हारी औरतों में जो बद-कारी कर बैठें; उन पर अपने लोगों में चार आदमियों की गवाही लो। अगर वे (उन की बद-कारी की) गवाही दें, तो इन औरतों को घरों में बंद रखो, यहां तक कि मौत उन का काम तमाम कर दे या ख़ुदा उन के लिए कोई और रास्ता (पैदा) करे। (१५) और जो मर्द तुम में से बदकारी करें, तो उनको ईज़ा (तक्लीफ़) दो, फिर अगर वे तौबा कर लें और भले बन जाएं तो उनका पीछा छोड़ दो। बेशक ख़ुदा तौबा क़ुबूल करने वाला (और) मेहरबान है। (१६) ख़ुदा उन्हीं लोगों की तौबा क़ुबूल करता है, जो नादानी से बुरी हरकत कर बैठते हैं, फिर जल्द तौबा कर लेते हैं, पस ऐसे लोगों पर ख़ुदा मेहरबानी करता है और वह सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (१७) और ऐसे लोगों की तौबा क़ुबूल नहीं होती

★रु. २/१३ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लैसतित्तौबतु लिल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्-सय्यिआति ج हत्ता इज़ा ह-ज़-र
अ-ह्-द-हुमुलमौतु क़ा-ल इन्नी तुब्तुल्आ-न व लल्लज़ी-न यमूतू-न व हुम्
कुफ़्फ़ारुन् ط उला-इ-क अअ्-तद्ना लहुम् अज़ाबन् अलीमा (१८) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा-अ करहन् ط
व ला तअ्-ज़ुलूहुन्-न लि तज़्हबू बि बअ्-ज़ि
मा आतैतुमूहुन्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न
बि फ़ाहिशतिम्-मुबय्यिनतिन् ج व आशिरू
हुन्-न बिलमअ्-रूफ़ि ج फ़ इन् करिह्तुमूहुन्-न
फ़ असा अन् तक्रहू शैअंव्-व यज्-अ-लल्लाहु
फ़ीहि ख़ैरन् कसीरा (१९) व इन्
अरत्तुमुस्तिब्दा-ल ज़ौजिम्मका-न ज़ौजिंव् لا-व
आतैतुम् इह्दा-हुन्-न क़िन्तारन् फ़ ला
तअ्ख़ुज़ू मिन्हु शैअन् ط अ-तअ्ख़ुज़ूनहू
बुह्तानंव-व इस्मम्-मुबीना (२०) व
कै-फ़ तअ्ख़ुज़ूनहू व क़द् अफ़्ज़ा बअ्-ज़ुकुम्
इला बअ्-ज़िंव्-व अ-ख़ज्-न मिन्कुम् मीसाक़न्
ग़लीज़ा (२१) व ला तन्किहू मा
न-क-ह आबा-उकुम् मिनन्निसा-इ इल्ला मा क़द् स-लफ़ ط मन्ज़िल इन्नहू का-न
फ़ाहिशतंव-व मक़्तन् ط व सा-अ सबीला★ (२२) हुर्रिमत् अलैकुम्
उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ-ख़-वातुकुम् व अम्मातुकुम् व ख़ालातुकुम् व
बनातुल्अख़ि व बनातुल्-उख़्ति व उम्महातु-कुमुल्लाती अर्ज़अ्-नकुम् व
अ-ख़-वातुकुम् मिनर्रज़ाअ़ति व उम्महातु निसा-इकुम् व रबा-इबु-कुमुल्लाती
फ़ी हुजूरिकुम् मिन्-निसा-इकुमुल्लाती द-ख़ल्तुम् बिहिन्-न ز फ़ इल्लम् तकूनू
दख़ल्तुम् बिहिन्-न फ़ ला जुना-ह अलैकुम् ز व हला-इलु अब्ना-इ-
कुमुल्लज़ी-न मिन् अस्लाबिकुम् لا व अन् तज्मअ़ू बैनल्-उख़्तैनि
इल्ला मा क़द् स-लफ़ ط इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूर्रहीमा لا (२३)

النساء ٤ ٦٤ لن تنالوا ٤

فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ
لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ
تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ
كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ
يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ
فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾ وَاِنْ اَرَدْتُّمُ
اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا
مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾ وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَ
قَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾ وَ
لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً
وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَ
عَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِىْٓ اَرْضَعْنَكُمْ
وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِىْ فِىْ حُجُوْرِكُمْ
مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِىْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ
تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो (सारी उम्र) बुरे काम करते रहे, यहां तक कि जब उन में से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो उस वक़्त कहने लगे कि अब मैं तौबा करता हूं और न उनकी (तौबा क़ुबूल होती है) जो कुफ़्र की हालत में मरें। ऐसे लोगों के लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (१८) मोमिनो! तुमको जायज़ नहीं कि ज़बरदस्ती औरतों के वारिस बन जाओ और (देखना) इस नीयत से कि जो कुछ तुमने उन को दिया है उसमें से कुछ ले लो, उन्हें (घरों में) मत रोक रखना। हां अगर वे खुले तौर पर बद-कारी करें, (तो रोकना मुनासिब नहीं) और उनके साथ अच्छी तरह से रहो-सहो। अगर वह तुम को ना-पसन्द हों तो अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को ना-पसन्द करो और ख़ुदा उसमें बहुत-सी भलाई पैदा कर दे। (१९) और अगर तुम एक औरत को छोड़ कर दूसरी औरत करनी चाहो और पहली औरत को बहुत-सा माल दे चुके हो, तो उसमें से कुछ मत लेना। भला तुम ना-ज़ायज़ तौर पर और खुले ज़ुल्म से अपना माल उससे वापस लोगे? (२०) और तुम दिया हुआ माल किस तरह वापस ले सकते हो, जबकि तुम एक दूसरे के साथ सोहबत कर चुके हो और वे तुम से पक्का अह्द भी ले चुकी हैं। (२१) और जिन औरतों से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो, उन से निकाह मत करना, मगर (जाहिलियत में) जो हो चुका, (सो हो चुका), यह निहायत बे-हयाई और (ख़ुदा की) ना-ख़ुशी की बात थी और बहुत बुरा दस्तूर था। (२२) ★

तुम पर तुम्हारी माएं और बेटियां, बहनें और फूफियां और ख़ालाएं और भतीजियां और भांजियां और वे माएं, जिन्होंने तुम को दूध पिलाया हो,[1] और रज़ाई बहनें और सासें हराम कर दी गयी हैं और जिन औरतों से तुम सोहबत कर चुके हो, उन की लड़कियां, जिन्हें तुम पाला करते हो, (वे भी तुम पर हराम हैं,) हां अगर उनके साथ तुम ने सोहबत न की हो, तो (उनकी लड़कियों के साथ निकाह कर लेने में) तुम पर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे सगे बेटों की औरतें भी और दो बहनों का इकट्ठा करना भी (हराम है), मगर जो हो चुका, (सो हो चुका)[2] बेशक ख़ुदा बख़्शने

---

१. यानी दाइयां कि दूध पिलाने के एतबार से वे भी तुम्हारी माएं हैं।

२. हदीस शरीफ़ में फूफी और भतीजी और ख़ाला और भांजी का जमा करना भी हराम है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पांचवां पारः वल्मुह़्-स़नातु

सूरतुन्निसा-इ आयत २४ से १४७

वल्मुह़्स़नातु मिनन्निसा-इ इल्ला मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् ج किताबल्लाहि अ़लैकुम् ج व उह़िल-ल लकुम् मा वरा-अ ज़ालिकुम् अन् तब्तग़ू बि अम्वालिकुम् मुह़्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िह़ी-न ط फ़-मस्तम्तअ़्-तुम् बिही मिनहुन्-न फ़-आतूहुन्-न उजूरहुन्-न फ़री-ज़-तन् ط व ला जुना-ह़ अ़लैकुम् फ़ी मा तराज़ैतुम् बिही मिम्बअ़्-दिल्-फ़रीज़ति ط इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् ह़कीमा (२४) व मल्लम् यस्ततिअ़् मिन्कुम् त़ौलन् अंय्यन्किह़ल्-मुह़्स़नातिल्-मुअ्मिनाति फ़-मिम्मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् मिन् फ़-त-यातिकुमुल्-मुअ्मिनाति ط वल्लाहु अअ़्-लमु बि ईमानिकुम् ط बअ़्-ज़ुकुम् मिम्बअ़् - ज़िन् ج फ़न्किह़ूहुन्-न बि इज़्नि अह्लिहिन्-न व आतूहुन्-न उजूरहुन्-न बिलमअ़्-रूफ़ि मुह़्स़नातिन् ग़ै-र मुसाफ़िह़ातिंव्वला मुत्तख़ि-ज़ाति अख़्दानिन् ج फ़ इज़ा उह़्सिन्-न फ़ इन् अतै-न बि फ़ाह़िशतिन् फ़ अ़लैहिन्-न निस्फ़ु मा अ़-लल्-मुह़्स़नाति मिनल्अ़ज़ाबि ط ज़ालि-क लि मन् ख़शियल्-अ़-न-त मिन्कुम् ط व अन् तस्बिरू ख़ैरुल्लकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम ★ (२५) युरीदुल्लाहु लि युबय्यि-न लकुम् व यह्दियकुम् सु-नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् व यतू-ब अ़लैकुम् ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (२६) वल्लाहु युरीदु अंय्यतू-ब अ़लैकुम् व युरीदुल्लज़ी-न यत्तबिअ़ूनश्-श-हवाति अन् तमीलू मैलन् अ़ज़ीमा (२७) युरीदुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि-फ़ अ़न्कुम् ج व ख़ुलिक़ल्-इन्सानु ज़अ़ीफ़ा (२८)

والمحصنٰت ٥ ٦٥ النسآء ٤

الجزء ٥

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ
الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۵﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ ع ٤
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶﴾
وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۫ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿۲۷﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ
الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿۲۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۫ وَ

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाला (और) रहम वाला है। (२३) और शौहर वाली औरतें भी (तुम पर हराम हैं), मगर वे जो (क़ैद होकर लौंडियों की शक्ल में) तुम्हारे क़ब्ज़े में आ जाएं।[1] यह हुक्म ख़ुदा ने तुमको लिख दिया है और इन महरमात (यानी जो हराम कर दी गयीं) के अलावा और औरतें तुम को हलाल हैं, इस तरह से कि माल ख़र्च करके उनसे निकाह कर लो, बशर्ते कि (निकाह से) मक़्सूद पाकदामनी क़ायम रखनी हो, न कि शहूवत पूरी करनी हो। तो जिन औरतों से तुम फ़ायदा हासिल करो, उनका मह्र जो मुक़र्रर किया हो, अदा कर दो और अगर मुक़र्रर करने के बाद आपस की रज़ामंदी से मह्र में कमी-बेशी कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक ख़ुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२४) और जो शख़्स तुम में से मोमिन आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) से निकाह करने की क़ुद्रत न रखे, तो मोमिन लौंडियों में ही, जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आ गयी हों (निकाह कर ले) और ख़ुदा तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है। तुम आपस में एक दूसरे के हम-जिंस हो, तो उन लौंडियों के साथ उनके मालिकों से इजाज़त हासिल करके निकाह कर लो और दस्तूर के मुताबिक़ उन का मह्र भी अदा कर दो, बशर्ते कि पाकदामन हों, न ऐसी कि खुल्लम-खुल्ला बद-कारी करें और न पर्दे की आड़ में दोस्ती करना चाहें। फिर अगर निकाह में आकर बद-कारी कर बैठें, तो जो सज़ा आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) के लिए है, उनकी आधी उस को (दी जाए), यह (लौंडी के साथ निकाह करने की) इजाज़त उस शख़्स को है जिसे गुनाह कर बैठने का डर हो और अगर सब्र करो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२५) ★

ख़ुदा चाहता है कि (अपनी आयतें) तुम से खोल-खोल कर बयान फ़रमाए और तुम को अगले लोगों के तरीक़े बताए और तुम पर मेहरबानी करे और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२६) और ख़ुदा तो चाहता है कि तुम पर मेहरबानी करे और जो लोग अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलते हैं, वे चाहते हैं कि तुम सीधे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ो। (२७) ख़ुदा चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे और इंसान (क़ुद्रती तौर पर) कमज़ोर पैदा हुआ है। (२८)

---

१. यानी 'दारुल हर्ब' की औरतें अगर ख़ाविंद वाली हों, तो भी हराम नहीं, जबकि दारुल हर्ब से निकलें और उन के साथ ख़ाविंद न आएं, तब मुबाह (जायज़) हैं, अगर उन के ख़ाविंद भी मुसलमान हो जाएं, तो अपनी जोरू ले लें।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिलबातिलि इल्ला
अन् तकू-न तिजा-र-तन् अन् तराज़िम्-मिन्कुम् قف व ला तक़्तुलू अन्फ़ुसकुम् ط
इन्नल्ला-ह का-न बिकुम् रहीमा (२९) व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क अुद्वानंव्-व ज़ुल्मन्
फ़ सौ-फ़ नुस्लीहि नारन् ط व का-न ज़ालि-क अ-लल्लाहि यसीरा (३०) इन् तज्तनिबू
कबा-इ-र मा तुन्हौ-न अन्हु नुकफ़्फ़िर् अन्कुम्
सय्यिआतिकुम् व नुद्ख़िल्कुम् मुद्-ख़-लन् करीमा
(३१) व ला त-तमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु
बिही बअ्-ज़कुम् अ़ला बअ्-ज़िन् ط लिर्रिजालि
नसीबुम् - मिम्मक्तसबू ط व लिन्निसा - इ
नसीबुम्-मिम्मक्तसब-न ط वस्अलुल्ला - ह मिन्
फ़ज़्लिही ط इन्नल्ला-ह का-न बि कुल्लि शैइन्
अ़लीमा (३२) व लि कुल्लिन् ज-अ़ल्ना
मवालि-य मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्-
अक़्रबू-न ط वल्लज़ी-न अ-क़-दत् ऐमानुकुम् फ़ आतू-
हुम् नसीबहुम् ط इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि
शैइन् शहीद ★ (३३) अर्रिजालु क़व्वामू-न
अ़लन्निसा-इ बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ्-ज़हुम् अ़ला
बअ्-ज़िंव्-व बिमा अन्फ़क़ू मिन् अम्वालिहिम् ط

النسآء ۴ ٦٦ والمحصنت ۵

لَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ۝ اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ۝ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ
بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ
نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَ
الْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝ اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ
بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ
فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ
تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ
وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ۝ وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا
مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ
بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ۝ وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا
بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

منزل ۱

फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल् - लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहु ط वल्लाती
तख़ाफ़ू-न नुशूज़हुन-न फ़ अिज़ूहुन-न वह्जुरूहुन-न फ़िलमज़ाजिअि वज़्रिबूहुन-न ج फ़ इन्
अ-तअ्-नकुम् फ़ला तब्ग़ू अ़लैहिन्-न सबीला ط इन्नल्ला-ह का-न अ़लिय्यन् कबीरा (३४)
व इन् ख़िफ़्तुम् शिक़ा-क़ बैनिहिमा फ़ब्अ़सू ह़-क-मम्-मिन् अह्लिही व ह़-क-मम्-
मिन् अह्लिहा ج इंय्युरीदा इस्लाहंय्युवफ़्फ़िक़िल्लाहु बैनहुमा ط इन्नल्ला - ह
का-न अ़लीमन् ख़बीरा (३५) वअ्-बुदुल्ला-ह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्-
वालिदैनि इह्सानंव्-व बि ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारि ज़िल्क़ुर्बा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनो ! एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ।[1] हां, अगर आपस की रज़ामंदी से तिजारत का लेन-देन हो (और उनसे माली फ़ायदा हासिल हो जाए, तो वह जायज़ है) और अपने आप को हलाक न करो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम पर मेहरबान है। (२९) और जो सरकशी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा, हम उस को बहुत जल्द जहन्नम में दाख़िल करेंगे और यह ख़ुदा को आसान है। (३०) अगर तुम बड़े-बड़े गुनाहों से, जिनसे तुम को मना किया जाता है, बचोगे, तो हम तुम्हारे (छोटे-छोटे) गुनाह माफ़ कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त के मकानों में दाख़िल करेंगे। (३१) और जिस चीज़ में ख़ुदा ने तुम में से कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है, उसका लालच मत करो। मर्दों को उन कामों का सवाब है, जो उन्होंने किये, औरतों को उन कामों का सवाब है जो उन्होंने किये और ख़ुदा से उस का फ़ज़्ल (व करम) मांगते रहो। कुछ शक नहीं कि अल्लाह हर चीज़ को जानता है। (३२) और जो माल मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरें, तो (हक़दारों में बांट दो कि) हम ने हर एक के हक़दार मुक़र्रर कर दिए हैं और जिन लोगों से तुम अह्द कर चुके हो, उन को भी उनका हिस्सा दो।[1] बेशक ख़ुदा हर चीज़ के सामने है। (३३)★

मर्द औरतोंपर हाकिम व मुसल्लत हैं, इसलिए कि ख़ुदा ने कुछ को कुछ से अफ़ज़ल बनाया है। और इसलिए भी कि मर्द अपना माल ख़र्च करते हैं, तो जो नेक बीवियां हैं, वे मर्दों के हुक्म पर चलती हैं और उन के पीठ पीछे ख़ुदा की हिफ़ाज़त में (माल व आबरू की) खबरदारी करती हैं और जिन औरतों के बारे में तुम्हें मालूम हो कि सरकशी (और बद चलनी) करने लगी हैं, तो (पहले) उनको (ज़ुबानी) समझाओ, (अगर न समझें, तो) फिर उनके साथ सोना छोड़ दो। अगर इस पर भी न मानें तो मारो-पीटो और अगर फ़रमांबरदार हो जाएं तो फिर उनको तक्लीफ़ देने का कोई बहाना मत ढूंढो। बेशक ख़ुदा सबसे ऊंचा और जलीलुल क़द्र (ऊंची इज़्ज़त वाला) है। (३४) और अगर तुम को मालूम हो की मियां-बीवी में अन-बन है, तो एक मुंसिफ़, मर्द के ख़ानदान में से और एक मुंसिफ़ औरत के ख़ानदान में से मुक़र्रर करो। वे अगर सुलह करा देनी चाहेंगे, तो ख़ुदा उनमें मुवाफ़क़त पैदा कर देगा। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा सब कुछ जानता और सब बातों से ख़बरदार है। (३५) और ख़ुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और मां-बाप क़राबत वालों और यतीमों और मुहताजों और रिश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू के साथियों (यानी पास बैठने वालों) और मुसाफ़िरों और जो लोग तुम्हारे कब्ज़े में हों, सब के साथ एहसान करो कि ख़ुदा (एहसान, करने वालों को दोस्त रखता है और) घमंड करने वाले, बड़ाई मारने वाले को दोस्त नहीं रखता। (३६) जो ख़ुद भी बुख़्ल

---

१. अह्द करने से मुराद है दीनी भाई बनाना, ऐसे लोगों के लिए तर्का नहीं है। तर्का सिर्फ़ क़राबतदारों का हक़ है। दीनी भाइयों का हिस्सा यह है कि उन से मुहब्बत और दोस्ती रखी जाए और ज़रूरत के वक़्त उन की मदद की जाए। कुछ लोगों ने आयत का मतलब यह लिखा हैं कि अगर दीनी भाइयों को कुछ दिलाना मंज़ूर हो, तो उन के लिए वसीयत कर जाओ। पहले जो लोग गोद लिए जाते थे, वे वारिस ठहराये जाते थे, मगर अल्लाह तआला ने मीरास में उन का हिस्सा मुक़र्रर फ़रमाया, बल्कि उन का हिस्सा वसीयत में ठहराया है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहिबि बिल् जम्बि वब्निस्सबीलि ۙ व मा म-ल-कत्
ऐमानुकुम् ط इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा ۙ (३६)
अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि व यक्तुमू-न मा
आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ط व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्मुहीना
(३७) वल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् रिआ-अन्नासि व ला युअ्मिनू-न
बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल् - आख़िरि ط व मंय्यकुनिश् - शैतानु लहू
क़रीनन् फ़ सा-अ क़रीना (३८) व
माज़ा अ़लैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल्-
यौमिल् - आख़िरि व अन्फ़क़ू मिम्मा
र - ज़-क़हुमुल्लाहु ط व कानल्लाहु बिहिम्
अ़लीमा (३९) इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमु
मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ج व इन्तकु ह़-स-नतंय्युज़ा-
अिफ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन्
अ़ज़ीमा (४०) फ़ कै-फ़ इज़ा जिअ्ना
मिन् कुल्लि उम्मतिम्-बि शहीदिंव्-व जिअ्ना
बि-क अ़ला हा-उला-इ शहीदा ▨ ۙ (४१)
यौमइज़िंय्यवद्दुल्-लज़ी-न क-फ़रू व अ-स़-वुर्रसू-ल
लौ तुसव्वा बिहिमुल्अर्ज़ु ط व ला
यक्तुमूनल्ला-ह ह़दीसा ★ (४२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ^(मंज़िल)^ ला तक़्रबुस्-
स़ला-त़ व अन्तुम् सुकारा हत्ता तअ्-लमू मा तक़ूलू-न व ला जुनुबन्
इल्ला आ़बिरी सबीलिन् हत्ता तग़्तसिलू ط व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा
औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम्-मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ
लामस्तुमुन्निसा-अ फ़ लम् तजिदू मा-अन् फ़-त-यम्ममू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्स-
बि वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् ط इन्नल्ला-ह का-न अफ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (४३)

النسآء ۴ ۶۷ والمحصنٰت ۵

وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
فَخُوْرًا ۙ﴿۳۶﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ
مَا اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۳۷﴾
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ
اللّٰهُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ
وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾
فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ
شَهِيْدًا ﴿۴۱﴾ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى
بِهِمُ الْاَرْضُ ۗ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿۴۲﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَ
لَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۗ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ
فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ
اَيْدِيْكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۴۳﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا

وقف النبي صلى الله عليه وسلم ع ۶ ۲

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(कंजूसी) करें और लोगों को भी बुख़्ल सिखाएं और जो (माल) ख़ुदा ने उन को अपने फ़ज़्ल से अता फ़रमाया है, उसे छिपा-छिपा के रखें और हमने ना-शुक्रों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (३७) और ख़र्च भी करें तो (ख़ुदा के लिए नहीं, बल्कि) लोगों के दिखाने को और ईमान न ख़ुदा पर लाएं, न आख़िरत के दिन पर, (ऐसे लोगों का साथी शैतान है) और जिस का साथी शैतान हो, तो (कुछ शक नहीं कि) वह बुरा साथी है। (३८) और अगर ये लोग ख़ुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते और जो कुछ ख़ुदा ने उनको दिया था, उसमें से ख़र्च करते, तो उनका क्या नुक़्सान होता और ख़ुदा उन को ख़ूब जानता है। (३९) ख़ुदा किसी की ज़रा भी हक़तल-फ़ी नहीं करता और अगर नेकी (की) होगी तो उसको दो गुना कर देगा और अपने यहां से बड़ा बदला बख़्शेगा। (४०) भला उस दिन क्या हाल होगा, जब हम हर उम्मत में से अह्वाल बताने वाले को बुलाएंगे और तुमको उन लोगों का (हाल बताने को) गवाह तलब करेंगे ▨ (४१) उस दिन काफ़िर और पैग़म्बर के ना-फ़रमान आरज़ू करेंगे कि काश् उन को ज़मीन में दफ़्न करके मिट्टी बराबर कर दी जाती और ख़ुदा से कोई बात छिपा नहीं सकेंगे। (४२) ★

मोमिनो! जब तुम नशे की हालत में हो तो जब तक (उन लफ़्ज़ों को) जो मुंह से कहो, समझने (न) लगो, नमाज़ के पास न जाओ।[1] और जनाबत (ना-पाकी) की हालत में भी (नमाज़ के पास न जाओ), जब तक कि ग़ुस्ल (न) कर लो। हां, अगर सफ़र की हालत में रास्ता चले जा रहे हो (और पानी न मिलने की वजह से ग़ुस्ल न कर सको, तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से बैतुल ख़ला (टट्टी) से होकर आया हो, या तुम औरतों से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी लो और मुंह और हाथों का मसह (कर के तयम्मुम) कर लो। बेशक ख़ुदा माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है। (४३)

---

१. यह उस वक़्त का हुक्म है कि शराब के बारे में इस के हराम होने का हुक्म नाज़िल हुआ था।

▨ व. न वी स. ★रु. ६/३ आ ६

अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम्मिनल्-किताबि यश्तरूनज़्ज़ला-ल-त व
युरीदू-न अन् तज़िल्लुस्सबील ط (४४) वल्लाहु अअ्-लमु बि अअ्-दा-इकुम्
व कफ़ा बिल्लाहि वलिय्यंㅇ व्-व कफ़ा बिल्लाहि नसीरा (४५)
मिनल्लज़ी-न हादू युहर्रिफ़ूनल्-कलि-म अम्मवाज़िअिही व यक़ूलू-न समिअ्-ना
व अ़सैना वस्मअ्-ग़ै-र मुस्मअिंव्-व राअिना लय्यम्-
बि-अल्सिनति-हिम् व तअ्-नन् फ़िद्दीनि ط
व लौ अन्नहुम् क़ालू समिअ्-ना व अतअ्-ना
वस्मअ् वन्ज़ुर्ना ल का-न ख़ैरल्लहुम् व अक़्वम ᄂ
व लाकिल्ल-अ-न-हुमुल्लाहु बि कुफ़्रिहिम्
फ़ ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला (४६)
या अय्युहल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब आमिनू
बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिक़ल्लिमा म-अकुम्
मिन् क़ब्लि अन्नत्मि-स वुजूहन् फ़ नरुद्दहा
अला अद्बारिहा औ नल्-अ-नहुम् कमा
ल-अन्ना अस्हाबस्सब्ति ط व का-न
अम्रुल्लाहि मफ़्अूला (४७) इन्नल्ला-ह
ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु
मा दू-न ज़ालि-क लि मंय्यशाउ ج व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़ क़दिफ़्त
इस्मन् अज़ीमा (४८) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न युज़क्कू-न अन्फ़ुस
बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशाउ व लायुज़्लमू-न फ़तीला (४९
उन्ज़ुर् कै-फ़ यफ़्तरू-न अ़-लल्लाहिल्-कज़ि-ब ط व कफ़ा बि
इस्मम्-मुबीना ★ (५०) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊ-तू नसीबम्मि
किताबि युअ्मिनू-न बिल्जिब्ति वत्ताग़ूति व यक़ूलू-न लिल्लज़ी-न क-
हा-उला-इ अह्दा मिनल्लज़ी-न आमनू सबीला (५१) उला-इकल्लज़ी
ल-अ़-नहुमुल्लाहु ط व मंय्यल्अनिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू नसीरा ط (५२

النسآء ٤ ٦٨ والمحصنت ٥

نَصِيبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا
السَّبِيْلَ ۝٤٤ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآىِٕكُمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى
بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝٤٥ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ
وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا
بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَ
اسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ
بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٤٦ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا
فَنَرُدَّهَا عَلٰٓي اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۭ وَكَانَ
اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝٤٧ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا
دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا
عَظِيْمًا ۝٤٨ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ
يَّشَاۗءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝٤٩ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَي اللّٰهِ
الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝٥٠ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝٥١ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝٥٢ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन को किताब से हिस्सा दिया गया था कि वे गुमराही को ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ। (४४) और ख़ुदा तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और ख़ुदा ही काफ़ी कारसाज़ और काफ़ी मददगार है। (४५) और ये जो यहूदी हैं, उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं कि कलिमात (बातों) को उनकी जगहों से बदल देते हैं और कहते हैं कि हमने सुन लिया और नहीं माना और सुनिए, न सुनवाए जाओ और ज़ुबान को मरोड़ कर और दीन में तान की राह से (तुम से बात-चीत करते वक़्त) राअिना कहते हैं और अगर (यों) कहते कि हमने सुन लिया और मान लिया और (सिर्फ़) इस्मअ, और (राअिना की जगह) 'उन्ज़ुरनां'[1] (कहते) तो उन के हक़ में बेहतर होता और बात भी बहुत दुरुस्त होती। लेकिन ख़ुदा ने उनके कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है, तो ये कुछ थोड़े ही ईमान लाते हैं। (४६) ऐ किताब वालो! इसके पहले कि हम लोगों के मुंहों को बिगाड़ कर उन की पीठ की तरफ़ फेर दें या उन पर इस तरह लानत न करें, जिस तरह हफ़्ते वालों पर की थी। हमारी नाज़िल की हुई किताब पर, जो तुम्हारी किताब की भी तस्दीक़ करती है, ईमान ले आओ और ख़ुदा ने जो हुक्म फ़रमाया, सो (समझ लो कि) हो चुका।[2] (४७) ख़ुदा उस गुनाह को नहीं बख़्शेगा कि किसी को उस का शरीक बनाया जाए और उसके सिवा और गुनाह जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसने ख़ुदा का शरीक मुक़र्रर किया, उसने बड़ा बुहतान बांधा। (४८) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को पाकीज़ा कहते हैं। (नहीं,) बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है, पाकीज़ा करता है और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म नहीं होगा। (४९) देखो, ये ख़ुदा पर कैसा झूठ (तूफ़ान) बांधते हैं और यही खुला गुनाह काफ़ी है। (५०) ★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिन को किताब से हिस्सा दिया गया है कि बुतों और शैतान को मानते हैं और काफ़िरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग मोमिनों के मुक़ाबले में सीधे रास्ते पर हैं। (५१) यही लोग हैं, जिन पर ख़ुदा ने लानत की है और जिस पर ख़ुदा लानत करे, तो तुम

---

१. यहूदी जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जब कोई ऐसी बात पूछनी चाहते जो सुन न सके हों, तो 'राअिना' कहते। इस का तफ़्सीली बयान सूरः बक़रः में हुआ है और जब आप (सल्ल०) बात फ़रमाते तो वे लोग जवाब में कहते, हम ने सुन लिया यानी हम ने क़ुबूल किया, लेकिन धीरे से कहते कि नहीं माना और हज़रत से ख़िताब के वक़्त यह भी कहते कि सुनिए, न सुनवाए जाओ। ज़ाहिर में यह दुआ नेक है कि तुम ऐसे ग़ालिब रहो कि कोई तुम को बुरी बात न सुना सके, मगर दिल में यह मुराद रखते कि ख़ुदा करे तुम बहरे हो जाओ और कुछ न सुन सको। ख़ुदा ने फ़रमाया कि अगर ये लोग बजाए समिअना व असैना के समिअना व अतअना और इस्मअ ग़ैर मुस्मअिन की जगह सिर्फ़ 'इस्मअ्' और 'राअिना' की जगह 'उन्ज़ुर्ना' कहते तो उन के हक़ में बेहतर होता।

२. यानी ईमान लाओ पहले अज़ाब के आने से, जो शक्ल इन्सान की बदल कर हैवान की शक्ल हो जाए, जैसे यहूदियों में 'सनीचर वालों' की शक्लें बन्दर और सुअर की बन गयी थीं। 'सनीचर वालों' का क़िस्सा सूरः आराफ़ में आएगा।

★रु. ७/४ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अम् लहुम् नसीबुम्-मिनल्मुल्कि फ़ इज़ल्ला युअ्तूनन्ना-स नक़ीरा (५३)
अम् यह्सुदूनन्ना-स अ़ला मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही फ़-क़द् आतैना
आ-ल इब्राहीमल्-किता-ब वल्-हिक्म-त व आतैनाहुम् मुल्कन् अ़ज़ीमा
(५४) फ़ मिन्हुम् मन् आम-न बिही व मिन्हुम् मन् स़द्-द अ़न्हु ط व
कफ़ा बि जहन्न-म सअ़ीरा (५५) इन्नल्लज़ी-न
क-फ़रू बि आयातिना सौ-फ़ नुस्लीहिम्
नारन् ط कुल्लमा नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दलना
हुम् जुलूदन् ग़ैरहा लि यज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब ط
इन्नल्ला-ह का-न अ़ज़ीज़न् हकीमा ● (५६)
वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति सनुद्-
ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-
अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط
लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम्-मुतह्ह-रतुंव् व
नुद्ख़िलुहुम् ज़िल्लन् ज़लीला (५७)
इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तुअद्दुल्-
अमानाति इला अह्लिहा ۙ व इज़ा
ह-कम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्-
अ़द्लि ط इन्नल्ला-ह निअिम्मा यअिज़ुकुम् बिही ط इन्नल्ला-ह का-न
समीअम्-बसीरा (५८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व
अतीअुर्रसू-ल व उलिल्-अम्रि मिन्कुम् ج फ़ इन् तनाज़अ्-तुम् फ़ी शैइन्
फ़ रुद्दूहु इलल्लाहि वर्रसूलि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-
आख़िरि ط ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला ★ (५९) अ-लम् त-र
इलल्लज़ी-न यज़्अुमू-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा
उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क युरीदू-न अंय्यतहाकमू इलत्ताग़ूति व क़द् उमिरू
अंय्यक्फ़ुरू बिही ط व युरीदुश्शैतानु अंय्युज़िल्लहुम् ज़लालम्-बअ़ीदा (६०)

النسآء ٤ ٦٩ والمحصنت ٥

مِنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ
عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٤﴾ فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم
مَّن صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ﴿٥٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم بَدَّلْنَاهُمْ
جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ
وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ
إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ
اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن
تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن
قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَن
يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾ وَ

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उस का किसी को मददगार न पाओगे। (५२) क्या उनके पास बादशाही का कुछ हिस्सा है कि तो लोगों को तिल बराबर भी न देंगे। (५३) या जो ख़ुदा ने लोगों को अपने फ़ज़्ल से दे रखा है, उस पर जलते हैं, तो हमने इब्राहीम के ख़ानदान को किताब और दानाई अता फ़रमायी थी और बड़ी सल्तनत (हुकूमत) भी बख़्शी थी। (५४) फिर लोगों में से किसी ने तो उस किताब को माना और कोई उससे रुका (और हटा) रहा, तो उन न मानने वालों (के जलाने) को दोज़ख़ की जलती हुई आग काफ़ी है। (५५) जिन लोगों ने हमारी आयतों से कुफ़्र किया, उनको हम जल्द आग में दाख़िल करेंगे, जब उनकी खालें गल (और जल) जाएंगी, तो हम और खालें बदल देंगे, ताकि (हमेशा) अज़ाब का (मज़ा) चखते रहें। बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है ● (५६) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्तों में दाख़िल करेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे उन में हमेशा-हमेशा रहेंगे। वहां उन के लिए पाक बीवियां हैं और उन को हम घने साए में दाख़िल करेंगे। (५७) ख़ुदा तुम को हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानतें उन के हवाले कर दिया करो और जब लोगों में फ़ैसला करने लगो, तो इंसाफ़ से फ़ैसला किया करो। ख़ुदा तुम्हें बहुत ख़ूब नसीहत करता है। बेशक ख़ुदा सुनता और देखता है। (५८) मोमिनो! ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करो और जो तुम में से हुकूमत वाले हैं, उनकी भी और किसी बात में तुम में इख़्तिलाफ़ पैदा हो तो अगर ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो उसमें ख़ुदा और उसके रसूल (के हुक्म) की तरफ़ रुजूअ करो। यह बहुत अच्छी बात है और इस का अंजाम भी अच्छा है। (५९) ★

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो यह करते हैं कि जो (किताब) तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाज़िल हुईं, उन सब पर ईमान रखते हैं और चाहते यह हैं कि अपना मुक़दमा एक सरकश के पास ले जा कर फ़ैसला कराएं, हालांकि उन को हुक्म दिया गया था कि उस से एतक़ाद न रख और शैतान (तो यह) चाहता है कि उन को बहका कर रास्ते से

●रुबअ् १/४ ★रु० ८/५ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआलौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि
रअै-तल्-मुनाफ़िक़ी-न यसुद्दू-न अन्-क सुदूदा (६१) फ़ कै-फ़ इज़ा असाबत्हुम्
मुसीबतुम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् सुम्-म जा-ऊ-क यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि
इन् अ-रद्ना इल्ला इह्सानंव्-व तौफ़ीक़ा (६२) उला-इ-कल्लज़ी-न
यअ्-लमुल्लाहु मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़ अअ्-रिज़्
अन्हुम् व अिज़्हुम् व क़ुल्लहुम् फ़ी
अन्फ़ुसिहिम् क़ौलम्-बलीग़ा (६३) व मा
अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला लि युता-अ
बि इज़्निल्लाहि व लौ अन्नहुम् इज़्ज़-लमू
अन्फ़ुसहुम् जा-ऊ-क फ़स्तग़फ़रुल्ला-ह वस्तग़फ़-र
लहुमुर्रसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा (६४)
फ़ ला व रब्बि-क ला युअ्मिनू-न हत्ता
युहक्किमू-क फ़ीमा श-ज-र बैनहुम् सुम्-म ला
यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह-र-जम्मिम्मा क़ज़ै-त
व युसल्लिमू तस्लीमा (६५) व लौ अन्ना
क-तब्ना अलैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ुसकुम्
अविख़्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़-अलूहु इल्ला क़लीलुम्-मिन्हुम् व लौ
अन्नहुम् फ़-अलू मा यू-अज़ू-न बिही लका-न ख़ैरल्लहुम् व अशद्-द तस्बीतंव्
(६६) व इज़ल-ल-आतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अजरन् अज़ीमा (६७)
व ल-हदैनाहुम् सिरातम्-मुस्तक़ीमा (६८) व मंय्युतिअिल्ला-ह वर्रसू-ल
फ़ उला-इ-क म-अल्लज़ी-न अन्-अ-मल्लाहु अलैहिम् मिनन्नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ी-न
वश्शुहदा-इ वस्सालिही-न व हसु-न उला-इ-क रफ़ीक़ा (६९)
ज़ालिकल्-फ़ज़्लु मिनल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि अलीमा ★ (७०) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू ख़ुज़ू हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीआ (७१)

والمحصنت ٥ — النساء ٤

اذا قيل لهم تعالوا الى ما انزل الله والى الرسول رايت المنفقين
يصدون عنك صدودا (٦١) فكيف اذا اصابتهم مصيبة بما
قدمت ايديهم ثم جاءوك يحلفون بالله ان اردنا الا احسانا
وتوفيقا (٦٢) اولئك الذين يعلم الله ما في قلوبهم فاعرض
عنهم وعظهم وقل لهم في انفسهم قولا بليغا (٦٣) وما
ارسلنا من رسول الا ليطاع باذن الله ولو انهم اذ ظلموا
انفسهم جاءوك فاستغفروا الله واستغفر لهم الرسول لوجدوا
الله توابا رحيما (٦٤) فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما
شجر بينهم ثم لا يجدوا في انفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا
تسليما (٦٥) ولو انا كتبنا عليهم ان اقتلوا انفسكم او اخرجوا
من دياركم ما فعلوه الا قليل منهم ولو انهم فعلوا ما
يوعظون به لكان خيرا لهم واشد تثبيتا (٦٦) واذا لاتينهم
من لدنا اجرا عظيما (٦٧) ولهدينهم صراطا مستقيما (٦٨) ومن
يطع الله والرسول فاولئك مع الذين انعم الله عليهم من
النبين والصديقين والشهداء والصلحين وحسن اولئك
رفيقا (٦٩) ذلك الفضل من الله وكفى بالله عليما (٧٠) يايها الذين
امنوا خذوا حذركم فانفروا ثبات او انفروا جميعا (٧١) وان

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दूर डाल दे। (६०) और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उसी की तरफ़ (रुजूअ) करो और पैग़म्बर की तरफ़ आओ, तो तुम मुनाफ़िक़ों को देखते हो कि तुम से एराज़ करते और रुके जाते हैं। (६१) तो कैसी (शर्म की) बात हैं कि जब उनके आमाल (की शामत) से उन पर कोई मुसीबत वाक़ेअ होती है, तो तुम्हारे पास भागे आते हैं और क़स्में खाते हैं कि वल्लाह! हमारा मक़्सूद तो भलाई और मुवाफ़क़त था।[1] (६२) उन लोगों के दिलों में जो-जो कुछ है, ख़ुदा उसको ख़ूब जानता है। तुम उन (की बातों) का कुछ ख़्याल न करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बातें कहो, जो उन के दिलों पर असर कर जाएं। (६३) और हमने जो पैग़म्बर भेजा है, इसलिए भेजा है कि ख़ुदा के फ़रमान के मुताबिक़ उस का हुक्म माना जाए और ये लोग जब अपने हक़ में ज़ुल्म कर बैठे थे, अगर तुम्हारे पास आते और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते और (ख़ुदा के) रसूल भी उन के लिए बख़्शिश तलब करते तो ख़ुदा को माफ़ करने वाला (और) मेहरबान पाते। (६४) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! ये लोग जब तक अपने झगड़ों में तुम्हें मुन्सिफ़ न बनायें और जो फ़ैसला तुम कर दो उस से अपने दिल में तंग न हों, बल्कि उस को ख़ुशी से मान लें, तब तक मोमिन नहीं होंगे। (६५) और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर छोड़ कर निकल जाओ, तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते और अगर ये इस नसीहत पर कारबंद होते जो उनको की जाती है, तो उनके हक़ में बेहतर और (दीन) में ज़्यादा साबित क़दमी की वजह बनता। (६६) और हम उनको अपने यहां से बड़ा बदला भी देते। (६७) और सीधा रास्ता भी दिखाते। (६८) और जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल की इताअत करते हैं, वे (क़ियामत के दिन) उन लोगों के साथ होंगे, जिन पर ख़ुदा ने बड़ा फ़ज़्ल किया यानी नबी और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग।[2] और इन लोगों का साथ बहुत ही ख़ूब है। (६९) यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है और ख़ुदा जानने वाला काफ़ी है। (७०) ★

मोमिनो! (जिहाद के लिए) हथियार ले लिया करो, फिर या तो जमाअत-जमाअत हो कर

---

१. मदीने में एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ में झगड़ा हुआ। यहूदी ने कहा कि चलो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़ैसला कराएं। मुनाफ़िक़ ने कहा कि काब बिन अशरफ़ के पास चलो। यह शख़्स यहूद का सरदार था। इस इख़्तिलाफ़ की वजह यह थी कि यहूदी हक़ पर था और जानता था कि हज़रत इस मुक़दमे का फ़ैसला उस के हक़ में करेंगे, तो वह हज़रत ही के पास जाने पर ज़ोर देता था। मुनाफ़िक़ों में जो ज़ाहिर में मुसलमान और बातिन में काफ़िर था, आप के पास जाना नहीं चाहता था। आख़िर दोनों हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और हज़रत ने मुक़दमा यहूदी के हक़ में फ़ैसला किया। जब बाहर निकले तो मुनाफ़िक़ ने कहा कि हज़रत उमर के पास चलो जो वह फ़ैसला कर दें वह मुझे मंज़ूर हो। हज़रत उमर रज़ि० उन दिनों जनाब सरवरे कायनात के हुक्म से मदीने में क़ज़ा (जजी) करते थे। मुनाफ़िक़ ने ख़्याल किया कि हज़रत उमर रज़ि० ज़ाहिरी इस्लाम के धोखे में आ कर मेरा ख़्याल करेंगे। जब वहां गये तो यहूदी ने पहले माजरा बयान कर दिया और कह दिया कि हम हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हो आए हैं और उन्हों ने मेरा हक़ साबित कर दिया है। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि० ने मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दिया। उस के वारिस हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गये और ख़ून का दावा किया और क़स्में खाने लगे कि हम हज़रत उमर रज़ि० के पास सिर्फ़ इस लिए गये थे कि शायद वह सुलह करा दें, तब ये आयतें नाज़िल हुयीं।

(शेष पृष्ठ १३९ पर)

★रु. ९/६ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इन्-न मिन्कुम् ल-मल्-लयुबत्तिअन्-न ج फ़ इन् असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़ा-ल
क़द् अन्-अ-मल्लाहु अलय्-य इज़् लम् अकुम्-म-अहुम् शहीदा (७२) व लइन्
असाबकुम् फ़ज़्लुम्-मिनल्लाहि ल-यक़ूलन्-न क-अल्लम् तकुम्बैनकुम् व बैनहू
मवद्दतुंय्यालैतनी कुन्तु म-अहुम् फ़ अफ़ू-ज़ फ़ौज़न् अज़ीमा (७३) फ़ल्युक़ातिल्
फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न यश्रूनल्-ह़यातुद्दुन्या
बिल्आख़िरति ط व मंय्युक़ातिल् फ़ी
सबीलिल्लाहि फ़ युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़ सौ-फ़
नुअ्तीहि अज्रन् अज़ीमा (७४) व मा
लकुम् ला तुक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-
मुस्तज़्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्-
विल्दानिल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना अख़्रिज्ना
मिन् हाज़िहिल् - क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा ج
वज्अल्लना मिल्लदुन - क वलिय्यंव् - لا ج
वज्अल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा ط (७५)
अल्लज़ी - न आमनू युक़ातिलू-न फ़ी
सबीलिल्लाहि ج वल्लज़ी-न क-फ़रू युक़ातिलू-न
फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़ क़ातिलू औलिया - अश्शैतानि ج इन्-न कैदश्शैतानि
का-न ज़अीफ़ा ★ (७६) अ - लम् त - र इलल्लज़ी-न क़ी - ल लहुम्
कुफ़्फ़ू ऐदि-यकुम् व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त ج फ़-लम्मा कुति-ब
अलैहिमुल्-क़ितालु इज़ा फ़रीक़ुम्मिन्हुम् यख़्शौनन्ना-स क-ख़श्यतिल्लाहि औ
अशद्-द ख़श्य-तन् ج व क़ालू रब्बना लि - म क-तब्-त अलैनल्क़िता-ल
लौला अख़्ख़र्तना इला अ-जलिन् क़रीबिन् ط क़ुल् मताअुद्दुन्या क़लीलुन् ج
वल्-आख़िरतु ख़ैरुल्लिमनित्तक़ा قف व ला तुज़्लमू-न फ़तीला (७७)

مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ۝ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ
مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ
مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚۙ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
نَصِيْرًا ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا
اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ
وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۚ وَ
لَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ

★रु. १०/७ आ ६
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निकला करो या इकट्ठे कूच किया करो। (७१) और तुम में कोई ऐसा भी है कि (जान-बूझ कर) देर लगाता है, फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत पड़ जाए, तो कहता है कि ख़ुदा ने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की कि मैं उन में मौजूद न था। (७२) और अगर ख़ुदा तुम पर फ़ज़्ल करे तो इस तरह से कि गोया तुम में उस में दोस्ती थी ही नहीं, (अफ़सोस करता और) कहता है कि काश ! मैं भी उनके साथ होता तो बड़ा मक़्सूद हासिल करता। (७३) तो जो लोग आख़िरत (को ख़रीदते और उस) के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेचना चाहते हैं, उन को चाहिए कि ख़ुदा की राह में जंग करें और जो शख़्स ख़ुदा की राह में जंग करे, फिर शहीद हो जाए या ग़लबा पाए, हम बहुत जल्द उसको बड़ा सवाब देंगे।[1] (७४) और तुम को क्या हुआ है कि ख़ुदा की राह में और उन बे-बस मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए नहीं लड़ते, जो दुआएं किया करते हैं कि ऐ परवरदिगार ! हम को इस शहर से, जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं, निकाल कर कहीं और ले जा और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा हामी बना और अपनी ही तरफ़ से किसी को हमारा मददगार मुक़र्रर फ़रमा। (७५) जो मोमिन हैं, वे तो ख़ुदा के लिए लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं, वे बुतों के लिए लड़ते हैं, सो तुम शैतान के मददगारों से लड़ो (और डरो मत) क्यों कि शैतान का दांव बोदा होता है। (७६)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिनको (पहले यह) हुक्म दिया गया था कि अपने हाथों को (लड़ाई से) रोके रहो और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया, तो कुछ लोग उन में से लोगो से यों डरने लगे जैसे ख़ुदा से डरा करते हैं, बल्कि उस से भी ज़्यादा और बड़-बड़ाने लगे कि ऐ ख़ुदा ! तू ने हम पर जिहाद (जल्द) क्यों फ़र्ज़ कर दिया। थोड़ी मुद्दत और हमें क्यों मुहलत न दी ? (ऐ पैग़म्बर ! उनसे) कह दो, दुनिया का फ़ायदा बहुत थोड़ा है और बहुत अच्छी चीज़ तो परहेज़गार के लिए आख़िरत (की निजात) है और तुम पर धागे बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (७७) (ऐ जिहाद से डरने वालो !) तुम कहीं

(पृष्ठ १३७ का शेष)

२. सिद्दीक़ मुबालग़े का लफ़्ज़ है यानी बड़ा सच्चा, तो सिद्दीक़ बड़े सच्चे हुए। या सिद्दीक़ से वे लोग मुराद हैं जो नबियों की पैरवी में सब से बड़ा रुत्बा रखते हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को जो सिद्दीक़ कहते हैं, तो उन पर ये दोनों मानी सही उतरते हैं। शहीद वे जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं। हज़रत उमर रज़ि० और उस्मान रज़ि० और अली रज़ि० सब शहीद हैं। नेक लोग यानी आम नेकी वाले भले लोग। सब से ऊंचा दर्जा नबियों का है, फिर सिद्दीक़ों का, फिर शहीदों का, फिर नेक और भले लोगों का।

१. यानी मुसलमानों को चाहिए कि दुनिया की ज़िंदगी पर नज़र न रखें, आख़िरत चाहें और समझें कि अल्लाह के हुक्म में हर तरह नफ़ा हैं।

★रु. १०/७ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐ-न मा तकूनू युद्‌रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम्-मुशय्यदतिन् ط व
इन् तुसिब्हुम् ह़ - स - नतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अ़िन्दिल्लाहि ج व इन्
तुसिब्हुम् सय्यिअतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अ़िन्दि - क ط क़ुल् कुल्लुम् - मिन्
अ़िन्दिल्लाहि ط फ़ मा लि हा-उला-इल्-क़ौमि ला यकादू-न यफ़्क़हू-न ह़दीसा
(७८) मा असा-ब-क मिन् ह़-स-नतिन्
फ़ मिनल्लाहि لا व मा असा-ब-क मिन्
सय्यिअतिन् फ़ मिन्नफ़्सि-क ط व अर्सल्ना-क
लिन्नासि रसूलन् ط व कफ़ा बिल्लाहि
शहीदा (७९) मंय्युतिअ़िर्रसू-ल फ़-क़द्
अताअ़ल्ला-ह ج व मन् तवल्ला फ़ मा अर्सल्ना-क
अ़लैहिम् ह़फ़ीज़ा ط (८०) व यक़ूलू-न
ताअ़तुन् لا फ़ इज़ा ब-रज़ू मिन् अ़िन्दि-क
बय्य-त ता-इफ़तुम्-मिन्हुम् ग़ैरल्लज़ी तक़ूलु ط
वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न ج फ़ अअ्-रिज़्
अ़न्हुम् व त-वक्कल् अ़-लल्लाहि ط व कफ़ा
बिल्लाहि वकीला (८१) अ-फ़ला य-त-दब्बरूनल्-
क़ुर्‌आन ط व लौ का - न मिन् अ़िन्दि

النسآء ۴ ۸۲ والمحصنت ۵

فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ
كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
حَدِيْثًا ۞ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ
سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًا ۞ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۞ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ
طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۞ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ
وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۞ وَاِذَا
جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ
وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْ
لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۞
فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ
تَنْكِيْلًا ۞ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ
مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

منزل

ग़ैरिल्लाहि लवजदू फ़ीहिख़्तिलाफ़न् कसीरा (८२) व इज़ा जा-अहुम्
अम्रुम्मिनल्-अम्नि अविल्ख़ौफ़ि अज़ाअ़ू बिही ط व लौ रद्दूहु इलर्रसूलि व
इला उलिल्-अम्रि मिन्हुम् ल अ़लिमहुल्लज़ी-न यस्तम्बितूनहू मिन्हुम् ط
व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू लत्तबअ्-तुमुश्शैता-न इल्ला
क़लीला (८३) फ़ क़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ج ला तुकल्लफ़ु इल्ला
नफ़्स-क व ह़र्रिज़िल्-मुअ्मिनीन ج अ़-सल्लाहु अंय्यकुफ़्-फ़ बअ्सल्लज़ी-न क-फ़रू ط
वल्लाहु अशद्दु बअ्संव्-व अशद्दु तन्कीला (८४) मंय्यश्फ़अ्-शफ़ाअ़तन्
ह़-स-न-तुंय्यकुल्लहू नसीबुम्मिन्हा ج व मंय्यश्फ़अ् शफ़ा-अ़-तन् सय्यिअतुंय्यकुल्लहू
किफ़्लुम्मिन्हा ط व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्मुक़ीता (८५)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रहो, मौत तो तुम्हें आकर रहेगी, चाहे बड़े-बड़े महलों में रहो और उन लोगो को अगर कोई फ़ायदा पहुंचता है, तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ़ से है और कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो (ऐ मुहम्मद ! तुम से) कहते हैं कि यह (तक्लीफ़) आप की वजह से (हमें पहुंची) है। कह दो कि (रंज व राहत) सब अल्लाह ही की तरफ़ से है। इन लोगों को क्या हो गया है कि बात भी नहीं समझ सकते। (७८) (ऐ आदम की औलाद !) तुझ को जो फ़ायदा पहुंचे, वह ख़ुदा की तरफ़ से है और जो नुक्सान पहुंचे, वह तेरे ही (आमाल की शामत की) वजह से है और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुमको लोगों (की हिदायत) के लिए पैग़म्बर बना कर भेजा है और (इस बात का) ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। (७९) जो शख़्स रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा, तो बेशक उसने ख़ुदा की फ़रमांबरदारी की और जो ना-फ़रमां बरदारी करे तो ऐ पैग़म्बर ! तुम्हें हमने उनका निगहबान बना कर नहीं भेजा। (८०) और ये लोग मुंह से तो कहते हैं कि (आप की) फ़रमांबरदारी (दिल से मंजूर) है, लेकिन जब तुम्हारे पास से चले जाते हैं, तो उनमें से कुछ लोग रात को तुम्हारी बातों के ख़िलाफ़ मश्विरे करते हैं और जो मश्विरे ये करते हैं ख़ुदा उन को लिख लेता है, तो उनका कुछ ख़्याल न करो और ख़ुदा पर भरोसा रखो और ख़ुदा ही काफ़ी कारसाज़ है। (८१) भला ये क़ुरआन में ग़ौर क्यों नहीं करते ? अगर यह ख़ुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख़्तिलाफ़ पाते। (८२) और जब उन के पास अमल या ख़ौफ़ की कोई ख़बर पहुंचती है, तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसको पैग़म्बर और अपने सरदारों के पास पहुंचाते, तो खोज लगाने वाले उसकी खोज लगा लेते। और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी न होती, तो कुछ लोगों के अलावा सब शैतान की पैरवी करने वाले होते। (८३) तो (ऐ मुहम्मद !) तुम ख़ुदा की राह में लड़ो, तुम अपने सिवा किसी के ज़िम्मेदार नहीं हो।[1] और मोमिनों को भी उभारो। क़रीब है कि ख़ुदा काफ़िरों की लड़ाई को बन्द कर दे और ख़ुदा लड़ाई के एतबार से बहुत सख़्त है और सज़ा के लिहाज से भी बहुत सख़्त है। (८४) जो शख़्स नेक बात की सिफ़ारिश करे, तो उस (के सवाब) में से हिस्सा मिलेगा और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करे, उसको उस (के अज़ाब) में से हिस्सा मिलेगा और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (८५)

---

१. यानी तुम से औरों के बारे में नहीं पूछा जाएगा, क्योंकि हर आदमी अपने काम का ज़िम्मेदार है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा हुय्यीतुम् बितहि़य्यति़न् फ़हय्यू बिअह़्स-न मिन्हा औरुद्दूहा ط
इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् ह़सीबा ● (८६) अल्लाहु ला इला-ह
इल्ला हु-व ط ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्क़ियामति़ ला रै-ब फ़ीहि ط
व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि ह़दीसा ★ (८७) फ़ मा लकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ी-न
फ़िअतैनि वल्लाहु अर्कसहुम् बिमा क-सबू ط
अतुरीदू-न अन् तह्दू मन् अ-ज़ल्लल्लाहु ط
व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू
सबीला (८८) वद्दू लौ तक्फ़ुरू-न कमा
क-फ़रू फ़ तकूनू-न सवा-अन् फ़ ला तत्तख़िज़ू
मिन्हुम् औलिया-अ ह़त्ता युहाजिरू फ़ी
सबीलिल्लाहि ط फ़ इन् तवल्लौ
फ़ ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् ह़ैसु वजत्तुमूहुम् ص
व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलिय्यंव्-व ला
नसीरा ل (८९) इल्लल्लज़ी-न यसि़लू-न
इला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन्
औ जा-ऊकुम् ह़सि़रत् सुदूरुहुम्
अंय्युक़ातिलूकुम् औ युक़ातिलू क़ौमहुम् ط व लौ शा-अल्लाहु ल सल्ल-त़-हुम्
अ़लैकुम् फ़-ल-क़ातलूकुम् ج फ़ इनिअ्-त-ज़लूकुम् फ़ लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ
इलैकुमुस्स-लम ل फ़ मा ज-अ़-लल्लाहु लकुम् अ़लैहिम् सबीला (९०)
स-तजिदू-न आख़री-न युरीदू-न अंय्यअ्मनूकुम् व यअ्मनू क़ौमहुम् ط कुल्लमा
रुद्दू इलल्फ़ित्नति़ उर्किसू फ़ीहा ج फ़ इल्लम् यअ्-तज़िलूकुम् व युल्क़ू
इलैकुमुस्स-ल-म व यकुफ़्फ़ू ऐदियहुम् फ़ ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् ह़ैसु सक़िफ़्तुमूहुम्
ط व उला-इकुम् ज-अ़ल्ना लकुम् अ़लैहिम् सुल्तानम् - मुबीना ★ (९१)

النساء ٤ ٨٣ والمحصنت ٥

شَيْءٍ مُّقِيتًا ۝٨٥ وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ۗ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝٨٦ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝٨٧
فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُم بِمَا كَسَبُوا ۚ أَتُرِيدُونَ
أَن تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝٨٨
وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً ۖ فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ
أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَ
اقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ ۖ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ۝٨٩ إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ
أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ ۚ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ
يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝٩٠
سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا
رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا ۚ فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَ
يَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا
لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۝٩١ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا
خَطَأً ۚ وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जब तुम को कोई दुआ दे तो (जवाब में) तुम उस से बेहतर (कलमे) से (उसे) दुआ दो या उन्हीं लफ़्ज़ों से दुआ दो। बेशक ख़ुदा हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है● (८६) ख़ुदा वह सच्चा माबूद है कि उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह क़ियामत के दिन तुम सब को ज़रूर जमा करेगा और ख़ुदा से बढ़ कर बात का सच्चा कौन है? (८७)★

तो क्या वजह है कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गिरोह हो रहे हो, हाल यह है कि ख़ुदा ने उनके करतूतों की वजह से औंधा कर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि जिस शख़्स को ख़ुदा ने गुमराह कर दिया है, उस को रास्ते पर ले आओ? और जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराह कर दे, तुम उसके लिए कभी भी रास्ता नहीं पाओगे। (८८) वे तो यही चाहते हैं कि जिस तरह वे ख़ुद काफ़िर हैं, (उसी तरह) तुम भी काफ़िर हो कर (सब) बराबर हो जाओ, तो जब तक वे ख़ुदा की राह में वतन न छोड़ जाएं, उनमें से किसी को दोस्त न बनाना। अगर (वतन छोड़ने को) क़ुबूल न करे तो उन को पकड़ लो और जहां पाओ, क़त्ल कर दो और उन में से किसी को अपना साथी और मदद-गार न बनाओ। (८९) मगर जो लोग ऐसे लोगों से जा मिले हों, जिन में और तुम में (सुलह का) अह्द हो या इस हाल में कि उन के दिल तुम्हारे साथ या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से रुक गये हों, तुम्हारे पास आ जाएं (तो एहतराज़ ज़रूरी नहीं) और अगर ख़ुदा चाहता तो उन को तुम पर ग़ालिब कर देता, तो वे तुम से ज़रूर लड़ते। फिर अगर वे तुम से (लड़ने से) हट जाएं और लड़ें नहीं और तुम्हारी तरफ़ (सुलह का पैग़ाम) भेजें तो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए उन पर (ज़बरदस्ती करने की) कोई सबील मुक़र्रर नहीं की। (९०) तुम कुछ और लोग ऐसे भी पाओगे, जो यह चाहते हैं कि तुम से भी अम्न में रहें और अपनी क़ौम से भी अम्न में रहें, लेकिन जब, फ़ित्ना पैदा करने को बुलाये जाएं तो उसमें औंधे मुंह गिर पड़ें तो ऐसे लोग अगर तुम से (लड़ने से) न किनारा पकड़ें और न तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पैग़ाम) भेजें और न अपने हाथों को रोकें तो उन को पकड़ लो और जहां पाओ, क़त्ल कर दो। उन लोगों के मुक़ाबले में हमने तुम्हारे लिए खुली सनद मुक़र्रर कर

● नि. १/२ ★रु. ११/८ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा का-न लि मुअ्मिनिन् अंय्यक़्तु-ल मुअ्मिनन् इल्ला ख़-त्-अन् ᵓ व मन् क़-त-ल
मुअ्मिनन् ख़-त्-अन् फ़ तह़्रीरु र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिंव्-व दियतुम्-मुसल्लमतुन्
इला अह्लिही इल्ला अंय्यस्सद्दक़ू ᵇ फ़ इन् का-न मिन् क़ौमिन् अदुव्विल्लकुम्
व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ तह़्रीरु र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिन् ᵇ व इन् का-न मिन्
क़ौमिम्-बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् फ़ दि-यतुम्-
मुसल्लमतुन् इला अह्लिही व तह़्रीरु
र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिन् ᵓ फ़ मल्लम् यजिद्
फ़ सियामु शह्रैनि मुत - ताबिअ़ैनि ᶻ
तौबतम्मिनल्लाहि ᵇ व कानल्लाहु अ़लीमन्
ह़कीमा (९२) व मंय्यक़्तुल् मुअ्मिनम्-
मु-त-अ़म्मिदन् फ़ जज़ा-उहू जहन्नमु ख़ालिदन्
फ़ीहा ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व ल-अ़-नहूवअ़-द्-द-लहू
अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमा (९३) या अय्युहल्लज़ी-न
आमनू इज़ा ज़रब्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि
फ़ त-बय्यनू व ला तक़ूलू लि मन् अल्क़ा
इलैकुमुस्सला-म लस्-त मुअ्मिनन् ᵓ तब्तग़ू-न
अ़-र-ज़ल्-ह़यातिद्दुन्या ᶻ फ़ अ़िन्दिल्लाहि मग़ानिमु
कसीरतुन् ᵇ कज़ालि-क कुन्तुम् मिन् क़ब्लु फ़-मन्नल्लाहु अ़लैकुम् फ़ त-बय्यनू ᵇ इन्नल्ला-ह
का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (९४) ला यस्तविल्क़ाअ़िदू-न मिनल्मुअ्मिनी-न ग़ैरु
उलिज़्ज़ररि वल्मुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ᵇ
फ़ज़्ज़लल्लाहुल्-मुजाहिदी-न बि अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अ़-लल्क़ाअ़िदी-न
द-र-ज-तन् ᵇ व कुल्लंव्व - अ़ - दल्लाहुल्-ह़ुस्ना ᵇ व फ़ज़्ज़लल्लाहुल्-मुजाहिदीन
अ़-लल्-क़ाअ़िदी-न अज्रन् अ़ज़ीमा ᵛ (९५) द-र-जातिम्मिन्हु व मग़्फ़ि-र-तंव्-व
रह़्म-तन् ᵇ व कानल्लाहु ग़फ़ूर्रहीमा ★ (९६) इन्नल्लज़ी-न तवफ़्फ़ाहुमुल्-
मला-इकतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् क़ालू फ़ी-म कुन्तुम् ᵇ क़ालू कुन्ना मुस्तज़्-
अ़फ़ी-न फ़िल्अर्ज़ि ᵇ क़ालू अ-लम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासि-अ़-तन् फ़ तुहाजिरू
फ़ीहा ᵇ फ़ उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ᵇ व सा-अत् मसीरा ᵛ (९७)

النسآء ٤ — ٢ — والمحصنت ٥

إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا
وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ
مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾ لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ
وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ
أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾ دَرَجَاتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَحِيمًا ﴿٩٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ
كُنْتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ
اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۚ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दी है ★ (६१) और किसी मोमिन को मुनासिब नहीं कि मोमिन को मार डाले मगर भूल कर, और जो भूल कर भी मोमिन को मार डाले, तो (एक तो) एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद कर दे और (दूसरे) मक़्तूल के वारिसों को ख़ूंबहा दे। हां अगर वे माफ़ कर दें, (तो उन को अख़्तियार है)। अगर मक़्तूल तुम्हारे दुश्मनों की जमाअत में से हो और वह ख़ुद मोमिन हो, तो सिर्फ़ एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना चाहिए और अगर मक़्तूल ऐसे लोगों में से हो, जिन में और तुम में सुलह का अह्द हो तो मक़्तूल के वारिसों को ख़ूंबहा देना और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना चाहिए और जिस को यह न मिले, वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे। यह (कफ़्फ़ारा) ख़ुदा की तरफ़ से तौबा (क़बूल करने के लिए) है और ख़ुदा (सब कुछ) जानता और बड़ी हिक्मत वाला है। (६२) और जो शख़्स मुसलमान को जान-बूझ कर मार डालेगा, तो उस की सज़ा दोज़ख़ हैं, जिसमें वह हमेशा (जलता) रहेगा और ख़ुदा उस पर गज़बनाक होगा और उस पर लानत करेगा और ऐसे शख़्स के लिए उस ने बड़ा (सख़्त) अज़ाब तैयार कर रखा है। (६३) मोमिनो! जब तुम ख़ुदा की राह में बाहर निकला करो तो छान-बीन से काम लिया करो और जो शख़्स तुम से 'सलामु अलैक' करे, उससे यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं हो। और इससे तुम्हारी ग़रज़ यह हो कि दुनिया की ज़िंदगी का फ़ायदा हासिल करो। सो ख़ुदा के पास बहुत-सी ग़नीमतें हैं तुम भी तो पहले ऐसे ही थे, फिर ख़ुदा ने तुम पर एहसान किया, तो (आगे) छान-बीन कर लिया करो, और जो अमल तुम करते हो, ख़ुदा को सब की ख़बर है। (६४) जो मुसलमान (घरों में) बैठे रहते और लड़ने से जी चुराते हैं और कोई उज़्र नहीं रखते, वे और जो ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से लड़ते हैं, बे, दोनों बराबर नहीं हो सकते। ख़ुदा ने माल और जान से जिहाद करने वालों को, बैठे रहने वालों पर दर्जे में फ़ज़ीलत बख़्शी है, और (गो) नेक वायदा सब से है, लेकिन बड़े बदले के लिहाज से ख़ुदा ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर कहीं फ़ज़ीलत बख़्शी है, (६५) (यानी) ख़ुदा की तरफ़ से, दर्जों में और बख़्शिश में और रहमत में, और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला (और) मेहरबान है। (६६) ★

जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं, जब फ़रिश्ते उन की जान क़ब्ज़ करने लगते हैं, तो उनसे पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे। वे कहते हैं कि हम मुल्क में आजिज़ व नातवां थे। फ़रिश्ते कहते हैं, क्या ख़ुदा का मुल्क फ़राख़ नहीं था कि तुम उसमें हिजरत कर जाते? ऐसे लोगों का

★रु. १२/६ आ ४ ★रु. १३/१० आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इल्लल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्विल्दानि ला यस्ततीअू-न
हील-तंव्-व ला यह्तदू-न सबीला ॥(९८) फ़ उला-इ-क अ़सल्लाहु अंय्यअ्-फु-व
अ़न्हुम् ط व कानल्लाहु अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (९९) व मंय्युहाजिर फ़ी
सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुरा-ग़-मन् कसीरंव-व स-अ़-तन् ط व मंय्यख़्रुज्
मिम्बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि व
रसूलिही सुम्-म युद्रिक्हुल्मौतु फ़-क़द् व-क़-अ़
अज्रुहू अ़लल्लाहि ط व कानल्लाहु
ग़फ़ूरर्रहीमा ★(१००) व इज़ा
ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन्
अन् तक़्सुरू मिनस्सलाति صلے इन्
ख़िफ़्तुम् अंय्यफ़्ति-न - कुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ط
इन्नल्काफ़िरी-न कानू लकुम् अ़दुव्वम्-मुबीना
(१०१) व इज़ा कुन्-त फ़ीहिम्
फ़-अ-क़म्-त लहुमुस्सला-त फ़ल्तक़ुम् ता-इफ़तुम्
मिन्हुम् म-अ़-क वल्यअ्ख़ुज़ू अस्लि-ह-तहुम् قف
फ़ इज़ा स-जदू फ़ल्यकूनू मिंव्वरा-इकुम् ص
वल्तअ्ति ता-इफ़तुन् उख़रा लम् युसल्लू फ़ल्युसल्लू म-अ़-क वल्-
यअ्ख़ुज़ू हिज़्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् ج वद्दल्लज़ी-न क-फ़रू लौ तग़्फ़ुलू-न
अन् अस्लिहतिकुम् व अम्ति-अ़तिकुम् फ़ यमीलू-न अ़लैकुम् मैलतंव्वाहि-द-तन्
व ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् का-न बिकुम् अ-ज़म्-मिम्-म-तरिन्
कुन्तुम् मर्ज़ा अन् त-ज़-अू अस्लि-ह-तकुम् ج व ख़ुज़ू हिज़्-रकुम्
इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्मुहीना (१०२) फ़ इज़ा क़ज़ैतुमुस्सला-त
फ़ज़्कुरुल्ला-ह क़ियामंव्-व क़ुअूदंव्-व अ़ला जुनूबिकुम् ج फ़ इज़त्मअ्-नन्तुम्
फ़ अक़ीमुस्सला-त ج इन्नस्सला-त कानत् अ़लल्मुअ्मिनी-न किताबम्-मौक़ूता (१०३)

نَصِيرًا ﴿٩٧﴾ إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا
يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَّلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٨﴾ فَأُولَٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ
أَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِي
سَبِيلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيرًا وَّسَعَةً ۚ وَمَنْ يَّخْرُجْ
مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ
وَقَعَ أَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٠﴾ وَإِذَا ضَرَبْتُمْ
فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ إِنْ
خِفْتُمْ أَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ إِنَّ الْكٰفِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا
مُّبِينًا ﴿١٠١﴾ وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ
مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا أَسْلِحَتَهُمْ ۖ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَّرَآئِكُمْ
وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ
وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّنْ مَّطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰى أَنْ تَضَعُوٓا أَسْلِحَتَكُمْ ۚ
وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ أَعَدَّ لِلْكٰفِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾ فَإِذَا
قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا
اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ ۚ إِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتٰبًا

★रु. १४/११ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है। (९७) हां, जो मर्द और औरतें और बच्चे बे-बस हैं कि न तो कोई चारा कर सकते हैं और न रास्ता जानते हैं, (९८) क़रीब है कि ख़ुदा ऐसों को माफ़ करदे और ख़ुदा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है। (९९) और जो शख़्स ख़ुदा की राह में घर-बार छोड़ जाए, वह ज़मीन में बहुत सी जगह और फ़ैलाव पाएगा और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत कर के घर से निकल जाए, फिर उसको मौत आ पकड़े, तो उसका सवाब ख़ुदा के ज़िम्मे हो चुका और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१००) ★

और जब तुम सफ़र को जाओ, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ को कम कर के पढ़ो, बशर्ते कि तुमको डर हो कि काफ़िर लोग तुम को ईज़ा (तक्लीफ़) देंगे। बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।[1] (१०१) और (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम उन (मुजाहिदों के लश्कर) में हो और उन को नमाज़ पढ़ाने लगो, तो चाहिए कि एक जमाअत तुम्हारे साथ हथियारों से लैस होकर खड़ी रहे, जब वे सज्दा कर चुकें, तो परे हो जाएं, फिर दूसरी जमाअत, जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी (उनकी जगह आये और होशियार और हथियारों से लैस होकर) तुम्हारे साथ नमाज़ अदा करे। काफ़िर इस घात में हैं कि तुम ज़रा अपने हथियारों और सामानों से ग़ाफ़िल हो जाओ, तो तुम पर एकबारगी हमला कर दें। अगर तुम बारिश की वजह से तक्लीफ़ में हो या बीमार हो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि हथियार उतार रखो, मगर होशियार ज़रूर रहना। ख़ुदा ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०२) फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको, तो खड़े और बैठे और लेटे (हर हालत में) ख़ुदा को याद करो। फिर जब डर जाता रहे, तो (उस तरह से) नमाज़ पढ़ो (जिस तरह अम्न की हालत में पढ़ते हो) बेशक नमाज़ का मोमिनों पर (मुक़र्रर) वक़्तों में अदा करना

---

१. सफ़र, चाहे किसी ग़रज़ से हो, उस में नमाज़ की क़स्र करना यानी चार-चार रक्अतों की जगह दो-दो रक्अतें पढ़ना जायज़ है। आयत से तो यह पाया जाता है कि जब कुफ़्फ़ार से तक्लीफ़ पहुंचने का डर हो, तब क़स्र करना चाहिए, लेकिन सही हदीसों से साबित है कि मुसाफ़िर को अम्न की हालत में भी नमाज़ का क़स्र करना दुरुस्त है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आप ने ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ मिना में क़स्र कर के पढ़ी और उस वक़्त किसी तरह का ख़ौफ़ न था। तिर्मिज़ी में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हम ने सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्के और मदीने के बीच में अम्न की हालत में दो-दो रक्अत पढ़ी तो सफ़र में क़स्र को हज़रत की सुन्नत समझना चाहिए।

★रु. १४/११ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तहिनू फ़िब्तिग़ा - इल् - क़ौमि ط इन् तकूनू तअ्लमू - न
फ़ इन्नहुम् यअ्लमू - न कमा तअ्लमू - न ج व तर्जू - न मिनल्लाहि
मा ला यर्जू-न ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा ★(१०४) इन्ना
अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्ह़क़्क़ि लि - तह़्कु-म बैनन्नासि बिमा
अराकल्लाहु ط व ला तकुलिल्ख़ा-इनी-न
ख़सीमंव्- لا (१०५) वस्तग़्फ़िरिल्ला-ह ط
इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रह़ीमा ج (१०६)
व ला तुजादिल् अ़निल्लज़ी-न यख़्तानू-न
अन्फ़ुसहुम् ط इन्नल्ला - ह ला युह़िब्बु
मन् का - न ख़व्वानन् असीमंय्-ج
(१०७) -यस्तख़्फ़ू-न मिनन्नासि व ला
यस्तख़्फ़ू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अ़हुम् इज़्
युबय्यितू-न मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि ط
व कानल्लाहु बिमा यअ्मलू-न मुह़ीता
(१०८) हा-अन्तुम् हा-उला-इ जादल्तुम्
अ़न्हुम् फ़िल् - ह़यातिद् - दुन्या قف

مَّوْقُوْتًا ۝١٠٣ وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ
يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١٠٤ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَاۗىِٕنِيْنَ خَصِيْمًا ۝١٠٥ وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٠٦ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝١٠٧ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَ
لَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ
الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝١٠٨ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ
عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝١٠٩ وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ
ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١١٠ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا
يَكْسِبُهٗ عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١١١ وَمَنْ يَّكْسِبْ
خَطِيْۗــــَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـــــًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا
مُّبِيْنًا ۝١١٢ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ
اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ۭ
وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ
وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ۝١١٣ لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ

फ़ मंय्युजादिलुल्ला-ह अ़न्हुम् यौमल् - क़ियामति अम्मंय्यकूनु अ़लैहिम् वकीला
(१०९) व मंय्यअ्-मल् सू-अन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्-म यस्तग़्फ़िरिल्ला-ह
यजिदिल्ला-ह ग़फ़ूरर्रह़ीमा (११०) व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ़ इन्नमा
यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा (१११)
मंय्यक्सिब् ख़ती-अ-तन् औ इस्मन् सुम-म यर्मि बिही बरी-अन् फ़ क़दिह़्त-म-ल
बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना ★(११२) व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-
व रह़्मतुहू ल - हम्मत्ता-इ - फ़ - तुम् - मिन्हुम् अंय्युज़िल्लू - क ط व
युज़िल्लू - न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यज़ुर्रू-न - क मिन् शैइन् ط
अन्ज़-लल्लाहु अ़लैकल् - किता-ब वल्ह़िक्म - त व अ़ल्ल-म-क मा
तकुन् तअ् - लमु ط व का-न फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै - क अ़ज़ीमा ●(११३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़र्ज़ है। (१०३) और कुफ़्फ़ार का पीछा करने में सुस्ती न करना। अगर तुम बे-आराम होते हो, तो जिस तरह तुम बे-आराम होते हो, उसी तरह वे भी बे-आराम होते हैं। और तुम ख़ुदा से ऐसी-ऐसी उम्मीदें रखते हो, जो वे नहीं रख सकते और ख़ुदा सब कुछ जानता है (और) बड़ी हिक्मत वाला है। (१०४) ★

(ऐ पैग़म्बर!) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है ताकि ख़ुदा की हिदायतों के मुताबिक़ लोगों के मुक़दमों का फ़ैसला करो और (देखो) दग़ाबाज़ों की हिमायत में कभी बहस न करना। (१०५) और ख़ुदा से बख़्शिश मांगना। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[1] (१०६) और जो लोग अपने हम-जिसो की ख़ियानत करते हैं उनकी तरफ़ से बहस न करना, क्यों कि ख़ुदा ख़ियानत करने वालों और मुजि़रमों को दोस्त नहीं रखता। (१०७) ये लोगों से तो छिपते हैं और ख़ुदा से नहीं छिपते, हालांकि जब वे रातों को ऐसी बातों के मश्विरे किया करते हैं, जिसको वह पसन्द नहीं करता, तो उनके साथ हुआ करता है। और ख़ुदा उन के तमाम कामों पर एहाता किए हुए है। (१०८) भला तुम लोग दुनिया की ज़िंदगी में तो उनकी तरफ़ से बहस कर लेते हो, क़ियामत को उनकी तरफ़ से ख़ुदा के साथ कौन झगड़ेगा और कौन उनका वकील बनेगा? (१०९) और जो शख़्स कोई बुरा काम कर बैठे या अपने हक़ में ज़ुल्म कर ले, फिर ख़ुदा से बख़्शिश मांगे, तो ख़ुदा को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा। (११०) और जो कोई गुनाह करता है, तो उस का वबाल उसी पर है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१११) और जो शख़्स कोई क़ुसूर या गुनाह तो ख़ुद करे, लेकिन किसी बे-गुनाह पर उसका इत्तिहाम (आरोप) लगाये, तो उसने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (११२) ★

और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और मेहरबानी न होती, तो उन में से एक जमाअत तुमको बहकाने का इरादा कर ही चुकी थी और ये अपने सिवा (किसी को) बहका नहीं सकते और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते हैं। और ख़ुदा ने तुम पर किताब और दानाई नाज़िल फ़रमायी है और तुम्हें वे बातें सिखायी हैं, जो तुम जानते नहीं थे और तुम पर ख़ुदा का बड़ा फ़ज़्ल है ● (११३)

---

१. एक अन्सारी थे, उन की एक ज़िरह एक शख़्स तअ़मा बिन अबीरक़ ने चुरा ली। अन्सारी ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ कर फ़रियाद की। तअ़मा ने यह चालाकी की ज़िरह किसी और के घर में डलवा दी और यह कैफ़ियत अपने कुंबे वालों से बयान कर के कहने लगा कि तुम हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाओ और कहो कि तअ़मा बे-गुनाह है, उस ने ज़िरह नहीं चुराई, बल्कि दूसरे शख़्स ने चुराई है। आप तअ़मा की बे-गुनाही लोगों के सामने बयान फ़रमाएं। हज़रत ग़ैब के जानने वाले तो थे ही नहीं, ख़्याल फ़रमाया कि ये लोग सच कहते होंगे। आप ने खड़े हो कर उस की बे-गुनाही का एलान कर दिया, तब ख़ुदा ने ये आयतें नाज़िल फ़रमायीं कि तुम दग़ाबाज़ों और ख़ियानत करने वालों के तरफ़दार न बनो और उन की तरफ़ से बहस न करो, और ख़ुदा से माफ़ी मांगो। मुसलमान वकील जो चोरों, डाकुओं, ख़ियानत करने वालों और हर क़िस्म के मुजरिमों की तरफ़ से मुक़दमों में वकालत करते और झगड़ते हैं और अपनी लच्छेदार तक़रीरों और बहसों से उन को सज़ा से बचा लेते हैं, उन्हें अल्लाह के इस फ़रमान पर अमल करना चाहिए और जिन लोगों के बारे में मुक़दमे की रिपोर्ट पर नज़र कर के उन का दिल कह दे कि वे हक़ीक़त में मुजरिम हैं, उन की तरफ़ से वकालत नहीं करनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ला ख़ै-र फ़ी कसीरिम्-मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ-म-र बि स़-द-क़तिन् औ
मअ्-रूफ़िन् औ इस्लाहिम् - बैनन्नासि ط व मंय्यफ़् - अल् ज़ालि-कब्तिग़ा-अ
मर्ज़ातिल्लाहि फ़ सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (११४) व मंय्युशाक़िक़िर्रसू-ल
मिम्बअ्-दि मा तबय्य-न लहुल्हुदा व यत्तबिअ् ग़ै-र सबीलिल्-मुअमिनी-न नुवल्लिही
मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न-म ط व सा-अत्
मसीरा ★ (११५) इन्नल्ला-ह ला
यग़्फ़िरु अंय्युश-र-क बिही व यग़्फ़िरु मा
दू-न ज़ालि-क लि मंय्यशाउ ط व मंय्युश्रिक्
बिल्लाहि फ़-क़द् ज़ल-ल ज़लालम् बअ़ीदा (११६)
इंय्यद्अू-न मिन्दूनिही इल्ला इनासन् ج
व इंय्यद्अू-न इल्ला शैतानम् -मरीदल् لا
(११७) -ल-अ्-नहुल्लाहु ▨ व क़ा-ल
ल-अत्तख़िज़ंन्-न मिन् अ़िबादि-क नसीबम्-
मफ़्रूज़ंव- لا (११८) -व ल-उज़िल्लन्नहुम् व
ल उमन्नियन्नहुम् व ल आमुरन्नहुम् फ़-ल-युबत्ति-
कुन-न आज़ानल्-अन्आमि व ल-आमुरन्नहुम् फ़-
ल-युग़य्यिरुन-न ख़ल्क़ल्लाहि ط व मंय्यत्तख़िज़िश्-

النساء ٤ والمحصنت ٥

إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَنْ
يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾
وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ
سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾ ع
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ
وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِنْ يَدْعُونَ مِنْ
دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَعَنَهُ اللَّهُ ۘ
وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ﴿١١٨﴾ وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَ
لَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ
فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا
مَحِيصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَ
مَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ ۗ
مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

منزل ١

शैता-न वलिय्यम् - मिन् दूनिल्लाहि फ़ - क़द् ख़सि - र ख़ुस्रानम्-मुबीना
(११९) यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम् ط व मा यअ़िदुहुमुश्शैतानु इल्ला ग़ुरूरा
(१२०) उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ز व ला यजिदू-न अ़न्हा महीसा
(१२१) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन्
तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط वअ्-दल्लाहि
हक़्क़न् ط व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि क़ीला (१२२) लै-स बि अमानिय्यिकुम्
व ला अमानिय्यि अह्लिल्-किताबि ط मंय्यअ्-मल् सू - अंय्युज - ज़ बिही
व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव-व ला नसीरा (१२३)
व मंय्यअ्-मल् मिनस्सालिहाति मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन्
फ़ उला-इ-क यद्ख़ुलूनल् - जन्न-त व ला युज़्लमू-न नक़ीरा (१२४)

★रु. १७/१४ आ ३ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन लोगों के बहुत से मश्विरे अच्छे नहीं, हां, (उस शख़्स का मश्विरा अच्छा हो सकता है) जो ख़ैरात या नेक बात या लोगों में सुलह करने को कहे और जो ऐसे काम ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए करेगा, तो हम उसको बड़ा सवाब देंगे। (११४) और जो शख़्स सीधा रास्ता मालूम होने के बाद पैग़म्बर की मुख़ालफ़त करे और मोमिनों के रास्ते के सिवा और रास्ते पर चले, तो जिधर वह चलता है, हम उसे उधर ही चलने देंगे। और (क़ियामत के दिन) जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरी जगह है। (११५) ★

ख़ुदा उस गुनाह को नहीं बख़्शेगा कि किसी को उसका शरीक बनाया जाए और इसके सिवा (और गुनाह) जिसको चाहेगा, बख़्श देगा। और जिसने ख़ुदा के साथ शरीक बनाया, वह रास्ते से दूर जा पड़ा। (११६) ये जो ख़ुदा के सिवा पूजा करते हैं तो औरतों ही की, और पुकारते हैं तो शैतान सरकश ही को, (११७) जिस पर ख़ुदा ने लानत की है ▨ (जो ख़ुदा से) कहने लगा, मैं तेरे बन्दों से (ग़ैर ख़ुदा की नज़्र दिलवा कर माल का) एक मुक़र्रर हिस्सा ले लिया करूंगा। (११८) और उनको गुमराह करता और उम्मीदें दिलाता रहूंगा और यह सिखाता रहूंगा कि जानवरों के कान चीरते रहें और (यह भी) कहता रहूंगा कि वे ख़ुदा की बनायी हुई सूरतों को बदलते रहें और जिस शख़्स ने ख़ुदा को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाया, वह खुले नुक़सान में पड़ गया। (११९) वह उनको वायदे देता है और उम्मीदें दिलाता है और जो कुछ शैतान उन्हें वायदे देता है, वह धोखा ही धोखा है। (१२०) ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वह वहां से मुख़्लसी नहीं पा सकेंगे। (१२१) और जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उनको हम बहिश्तों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें जारी हैं। हमेशा-हमेशा उनमें रहेंगे, यह ख़ुदा का सच्चा वायदा है, और ख़ुदा से ज़्यादा बात का सच्चा कौन हो सकता है। (१२२) (निजात) न तो तुम्हारी आरज़ूओं पर है और न अह्ले किताब की आरज़ूओं पर। जो शख़्स बुरे अमल करेगा, उसे उसी (तरह) का बदला दिया जाएगा और वह ख़ुदा के सिवा न किसी को हिमायती पाएगा और न मददगार। (१२३) और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनका तिल बराबर भी हक़ न मारा जाएगा। (१२४) और उस शख़्स से किसका

★रु. १७/१४ आ ३ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मन् अह्सनु दीनम्मिम्मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुंव्वत्त-ब-अ
मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् ط वत्त-ख़-ज़ल्लाहु इब्राही-म ख़लीला (१२५)
व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु बि कुल्लि
शैइम्मुहीता ★ (१२६) व यस्तफ़्तून-क फ़िन्निसा-इ ط क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम्
फ़ीहिन्-न ۙ व मा युत्ला अलैकुम्
फ़िल्किताबि फ़ी यतामन्निसा-इल्लाती ला
तुअ्तूनहुन्-न मा कुति-ब लहुन्-न व तर्ग़बू-न
अन् तन्किहूहुन्-न वल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनल्-
विल्दानि ۙ व अन् तक़ूमू लिल्यतामा
बिल्क़िस्ति ط व मा तफ़्-अलू मिन् ख़ैरिन्
फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिही अलीमा (१२७)
व इनिम्र-अतुन् ख़ाफ़त् मिम्बअ्लिहा
नुशूज़न् औ इअ्-राज़न् फ़ ला जुना-ह अलैहिमा
अंय्युस्लिहा बैनहुमा सुल्हन् ط वस्सुल्हु
ख़ैरुन् ط व उह्ज़िरतिल्-अन्फ़ुसुश्शुह-ह ط
व इन् तुह्सिनू व तत्तक़ू फ़ इन्नल्ला-ह
का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (१२८) व लन् तस्ततीऊ अन् तअ्-दिलू बैनन्निसा-इ
व लौ ह-रस्तुम् फ़ ला तमीलू कुल्लल्मैलि फ़-त-ज़रूहा कल्मु-अल्लक़ति ط व इन्
तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (१२९) व इंय्य-त-फ़र्रक़ा
युग़्निल्लाहु कुल्लम्मिन् स-अतिही ط व कानल्लाहु वासिअन् हकीमा
(१३०) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व
ल-क़द् वस्सैनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याकुम्
अनित्तक़ुल्ला-ह ط व इन् तक्फ़ुरू फ़ इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति
व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु ग़निय्यन् हमीदा (१३१)

النسآء ٤ ٦٨ والمحصنٰت ٥

فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ
دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ
فِى النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِى
الْكِتٰبِ فِىْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِىْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ
وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَ
اَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ
اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ
خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا
بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا
كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾
وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا
حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दीन अच्छा हो सकता है जिस ने ख़ुदा के हुक्म को क़ुबूल किया और वह भले काम करने वाला भी है और इब्राहीम के दीन की पैरवी करने वाला भी है, जो यकसू (मुसलमान) थे और ख़ुदा ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया था। (१२५) और आसमान और ज़मीन में जो कुछ है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा हर चीज़ पर एहाता किये हुए है। (१२६) ★

(ऐ पैग़म्बर!) लोग तुमसे (यतीम) औरतों के बारे में फ़त्वा तलब करते हैं, कह दो कि ख़ुदा तुमको उनके (साथ निकाह करने के) मामले में इजाज़त देता है और जो हुक्म इस किताब में पहले दिया गया है, वह उन यतीम औरतों के बारे में है, जिनको तुम उनका हक़ तो देते नहीं और ख़्वाहिश रखते हो कि उनके साथ निकाह कर लो और (नीज़) बेचारे बेकस बच्चों के बारे में और यह (भी हुक्म देता है) कि यतीमों के बारे में इंसाफ़ पर क़ायम रहो और जो भलाई तुम करोगे, ख़ुदा उसको जानता है। (१२७) और अगर किसी औरत को अपने ख़ाविंद की तरफ़ से ज़्यादती या बे-रग़बती का डर हो, तो मियां-बीवी पर कुछ गुनाह नहीं कि आपस में किसी क़रारदाद पर सुलह कर लें। और सुलह ख़ूब (चीज़) है और तबीयतें तो बुख़्ल की तरफ़ मायल होती हैं।[1] और अगर तुम भले और परहेज़गार बनोगे, तो ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१२८) और तुम चाहे कितना ही चाहो, औरतों में हरगिज़ बराबरी नहीं कर सकोगे, तो ऐसा भी न करना कि एक ही की तरफ़ ढलक जाओ और दूसरी को (ऐसी हालत में) छोड़ दो कि गोया अधर में लटक रही है[2] और अगर आपस में मुवाफ़क़त कर लो और परहेज़गारी करो तो ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (१२९) और अगर मियां-बीवी (में मुवाफ़क़त न हो सके और) एक-दूसरे से जुदा हो जाएं तो ख़ुदा हर एक को अपनी दौलत से ग़नी कर देगा और ख़ुदा बड़ी फ़राख़ी वाला और हिक्मत वाला है। (१३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी गई थी, उनको भी और (ऐ मुहम्मद!) तुमको भी हमने ताकीदी हुक्म किया है कि ख़ुदा से डरते रहो और अगर कुफ़्र करोगे तो (समझ रखो कि) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा बे-परवाह और तारीफ़ के लायक़ है। (१३१)

---

१. यानी बुख़्ल और लालच इन्सान के मिज़ाज में दाख़िल हैं, वह अपना हक़ तो पूरा लेना चाहता है और दूसरे के हक़ की कुछ परवा नहीं करता। औरत तो चाहती है अपना हक़--खाना, कपड़ा और मकान पूरा ले और मर्द चाहता है कि बिला हक़ दिए अपना काम निकाले, लेकिन अगर औरत मर्द को ख़ुश करने के लिए अपना हक़ छोड़ दे तो मुनासिब है।

२. यानी न आसमान पर है, न ज़मीन पर, मतलब यह कि न शौहर वाली है कि शौहर से एहसान की उम्मीद हो, न आज़ाद है कि और शौहर कर ले।

★रु. १८/१५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ↄ व कफ़ा बिल्लाहि
वकीला (१३२) इ्ँय्यशअ्-युज़्हिब्कुम् अय्युहन्नासु व यअ्ति
बि आख़री-न ↄ व कानल्लाहु अ़ला ज़ालि-क क़दीरा (१३३) मन् का-न
युरीदु सवाबद्दुन्या फ़ अि़न्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आख़िरति ↄ व
कानल्लाहु समीअ़म्-बसीरा ★ (१३४)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न
बिल्क़िस्ति शुहदा-अ लिल्लाहि व लौ अ़ला
अन्फ़ुसिकुम् अविल्-वालिदैनि वल्अक़्रबी-न ج
इ्ँय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु
औला बिहिमा قف फ़ ला तत्तबिअ़ुल्-हवा
अन् तअ़्-दिलू ج व इन् तल्वू औ
तुअ़्-रिज़ू फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्-मलू-न
ख़बीरा (१३५) या अय्युहल्लज़ी-न
आमनू आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही
वल्-किताबिल्लज़ी नज़्ज़-ल अ़ला रसूलिही
वल्-किताबिल्लज़ी अन्ज़-ल मिन् क़ब्लु ↄ
व मंय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही
वल्-यौमिल्-आख़िरि फ़-क़द् ज़ल-ल ज़लालम्-बअ़ीदा (१३६) इन्नल्लज़ी-न
आमनू सुम-म क-फ़रू सुम-म आमनू सुम-म क-फ़रू सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लम्
यकुनिल्लाहु लि यग़्फ़ि-र लहुम् व ला लि यह्दियहुम् सबीला ↄ (१३७)
बश्शिरिल्-मुनाफ़िक़ी-न बि अन-न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा ↄ (१३८) अ्ल्लज़ी-न
यत्तख़िज़ूनल् - काफ़िरी - न औलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न ↄ अ-यब्तग़ू-न
अि़न्दहुमुल्-अि़ज़्ज़-त फ़-इन्नल्-अि़ज़्ज़-त लिल्लाहि जमीआ ↄ (१३९)

تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ
غَنِيًّا حَمِيْدًا ۝ وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ كَفٰی
بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَ يَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ
وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰی ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ
وَ لَوْ عَلٰۤی اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا
اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰی بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤی اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
وَ اِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ الْكِتٰبِ الَّذِیْ
نَزَّلَ عَلٰی رَسُوْلِهٖ وَ الْكِتٰبِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَ مَنْ
يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَ لَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ؕ ۝ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمَاۙ ۝ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ
اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ ۝ وَ قَدْ نَزَّلَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और (फिर सुन रखो कि) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (१३२) लोगो! अगर वह चाहे तो तुम को फ़ना कर दे और (तुम्हारी जगह) और लोगों को पैदा कर दे और ख़ुदा इस बात पर क़ुदरत रखता है। (१३३) जो शख़्स दुनिया (में) अमलों का बदला चाहता हो, तो ख़ुदा के पास दुनिया और आख़िरत (दोनों) के लिए बदला (मौजूद) है और ख़ुदा सुनता-देखता है। (१३४) ★

ऐ ईमान वालो! इन्साफ़ पर क़ायम रहो और ख़ुदा के लिए सच्ची गवाही दो, चाहे (इस में) तुम्हारा या तुम्हारे मां-बाप और रिश्तेदारों का नुक़्सान ही हो। अगर कोई अमीर है या फ़क़ीर, तो ख़ुदा उनका ख़ैरख़्वाह है। तो तुम नफ़्स की ख़्वाहिश के पीछे चल कर अद्ल (इन्साफ़) को न छोड़ देना। अगर तुम पेचदार शहादत दोगे या (शहादत से) बचना चाहोगे, तो (जान रखो) ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१३५) मोमिनो! ख़ुदा पर और उस के रसूल पर और जो किताबं उस ने अपने (आख़िरी) पैग़म्बर पर नाज़िल की है और जो किताबें इस से पहले नाज़िल की थीं, सब पर ईमान लाओ और जो शख़्स ख़ुदा और उस के फ़रिश्तों और उस की किताबों और उसके पैग़म्बरों और क़ियामत के दिन से इन्कार करे, वह रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ा। (१३६) जो लोग ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गए, उन को ख़ुदा न तो बख़्शेगा और न सीधा रास्ता दिखायेगा। (१३७) (ऐ पैग़म्बर!) मुनाफ़िक़ों (यानी दो-रुख़े लोगों) को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (१३८) जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या ये उन के यहां इज़्ज़त हासिल करनी चाहते हैं, तो इज़्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है। (१३९) और ख़ुदा ने तुम

★रु. १९/१६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़द् नज़्ज़-ल अ़लैकुम् फ़िल्किताबि अन् इज़ा समिअ़्-तुम् आयातिल्लाहि युक्फ़रु
बिहा व युस्तह्ज़उ बिहा फ़-ला तक़्अ़ुदू म-अ़हुम् ह़त्ता यख़ूज़ू फ़ी ह़दीसिन्
ग़ैरिही صلے इन्नकुम् इज़म्मिस्लुहुम् ط इन्नल्ला - ह जामिअ़ुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्-
काफ़िरी-न फ़ी जहन्न-म जमीअ़ा ۙ (१४०) अ्ल्लज़ी-न य-त-रब्बसू-न बिकुम् ج
फ़ इन् का-न लकुम् फ़त्हुम्-मिनल्लाहि
क़ालू अ-लम् नकुम्म - अ़कुम् صلے व
इन् का-न लिल्काफ़िरी - न नसीबुन् ۙ
क़ालू अ - लम् नस्तह्विज़् अ़लैकुम् व
नम्नअ़् - कुम् मिनल्-मुअ्मिनी-न ط फ़ल्लाहु
यह्कुमु बैनकुम् यौमल् - क़ियामति ط
व लंय्यज्अ़लल्लाहु लिल्-काफ़िरी-न अ़-लल्-
मुअ्मिनी-न सबीला ★(१४१) इन्नल्-
मुनाफ़िक़ी-न युख़ादिअ़ूनल्ला-ह व हु-व
ख़ादिअ़ुहुम् ج व इज़ा क़ामू इलस्स़लाति
क़ामू कुसाला ۙ युराऊनन्ना-स व ला
यज़्कुरूनल्ला-ह इल्ला क़लीला ۙ (१४२)
मुज़ब्ज़बी-न बै - न ज़ालि - क صلے ला
इला हा उला - इ ط व ला इला
हा उला-इ व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू सबीला (१४३) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल्
मुअ्मिनी-न ط अ तुरीदू - न अन् तज्अ़लू लिल्लाहि अ़लैकुम् सुल्तानम् -
मुबीना (१४४) इन्नल् - मुनाफ़िक़ी - न फ़िद्दर्किल्-अस्फ़लि मिनन्नारि ج
व लन् तजि-द लहुम् नसीरा ۙ (१४५) इल्लल्लज़ी-न ताबू व
अस्लहू वअ़्-त-समू बिल्लाहि व अख़्लसू दीनहुम् लिल्लाहि फ़ उला-इ-क
म-अ़ल् - मुअ्मिनी-न ط व सौ - फ़ युअ्तिल्लाहुल् - मुअ्मिनी - न अज्रन्
अ़ज़ीमा (१४६) मा यफ़्अ़लुल्लाहु बि अ़ज़ाबिकुम् इन् शकरतुम्
व आमन्तुम् ط व कानल्लाहु शाकिरन् अ़लीमा (१४७)

النسآء ٤ ٨٠ والمحصنت ٥

عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ
بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ
اِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ
جَمِيْعًا ۙ﴿١٤٠﴾ الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ
قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ
نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾
اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا
اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ
اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى
هٰٓؤُلَآءِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ
اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۙ﴿١٤٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ
تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾ مَا
يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(मोमिनों) पर अपनी किताब में (यह हुक्म) नाज़िल फ़रमाया है कि जब तुम (कहीं) सुनो कि ख़ुदा की आयतों से इन्कार हो रहा है और उन की हंसी उड़ाई जाती है तो जब तक वे लोग और बातें (न) करने लगें, उन के पास मत बैठो, वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को दोज़ख में इकट्ठा करने वाला है। (१४०) जो तुम को देखते रहते हैं, अगर ख़ुदा की तरफ़ से तुम को फ़त्ह मिले, तो कहते हैं, क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को (फ़त्ह) नसीब हो, तो (उस से) कहते हैं, क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं थे और तुम को मुसलमानों (के हाथ) से बचाया नहीं, तो ख़ुदा तुम में क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा और ख़ुदा काफ़िरों को मोमिनों पर हरगिज़ ग़लबा नहीं देगा। (१४१) ★

मुनाफ़िक़ (इन चालों से अपने नज़दीक) ख़ुदा को धोखा देते हैं, (ये उस को क्या धोखा देंगे) वह उन्हीं को धोखे में डालने वाला है और जब ये नमाज़ को खड़े होते हैं, तो सुस्त और काहिल होकर (सिर्फ़) लोगों के दिखाने को और ख़ुदा की याद ही नहीं करते, मगर बहुत कम। (१४२) बीच में पड़े लटक रहे हैं, न उनकी तरफ़ (होते हैं), न इन की तरफ़ और जिस को ख़ुदा भटकाए, तो तुम उसके लिए कभी भी रास्ता न पाओगे। (१४३) ऐ अह्ले ईमान! मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर ख़ुदा का खुला इल्ज़ाम लो? (१४४) कुछ शक नहीं कि मुनाफ़िक़ लोग दोज़ख के सब से नीचे के दर्जे में होंगे और तुम उनका किसी को मददगार न पाओगे। (१४५) हां, जिन्होंने तौबा की और अपनी हालत को दुरुस्त किया और ख़ुदा (की रस्सी) को मज़बूत पकड़ा और ख़ास ख़ुदा के फ़रमांबरदार हो गये, तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे और ख़ुदा बहुत जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। (१४६) अगर तुम (ख़ुदा के) शुक्रगुज़ार रहो और (उस पर) ईमान ले आओ तो ख़ुदा तुम को अज़ाब देकर क्या करेगा और ख़ुदा तो क़दरशनास और जानता-बूझता है। (१४७) ख़ुदा इस बात को पसंद नहीं करता कि

★रु. २०/१७ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छठा पारः लायुहि़ब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा-इ आयत १४८ से १७६

लायुहि़ब्बुल्लाहुल्-जह-र बिस्सू-इ मिनल्क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलि-म ط व कानल्लाहु
समीअ़न् अ़लीमा (१४८) इन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्-फ़ू अ़न् सू-इन्
फ़ इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् क़दीरा (१४९) इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व
रुसुलिही व युरीदू-न अंय्युफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलू-न नुअ्मिनु
बि बअ़्-ज़िंव्-व नक्फ़ुरु बि बअ़्-ज़िंव्-व युरीदू-न
अंय्यत्तख़िज़ू बै-न ज़ालि-क सबीला ۙ (१५०)
उलॉ-इ-क हुमुल् काफ़िरू-न ह़क़्क़न् ۚ व
अअ़्-तद्ना लिल्-काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्मुहीना
(१५१) वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व
रुसुलिही व-लम् युफ़र्रिक़ू बै-न अ-ह़दिम्-मिन्हुम्
उलॉ-इ-क सौ-फ़ युअ्तीहिम् उजूरहुम् ط व
कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रह़ीमा ★ (१५२)
यस्अलु-क अह्लुल्किताबि अन् तुनज़्ज़ि-ल
अ़लैहिम् किताबम्-मिनस्समा-इ फ़-क़द्
स-अलू मूसा अक्ब-र मिन् ज़ालि-क फ़ क़ालू
अरिनल्ला-ह जह्-र-तन् फ़ अ-ख़-ज़त्-हुमुस्साअि-
क़तु बि ज़ुल्मिहिम् ۚ सुम्मत्त-ख़-ज़ुल्-अिज-ल
मिम्बअ़्-दि मा जॉ-अत्-हुमुल्बय्यिनातु
फ़ अ़फ़ौना अ़न् ज़ालि-क ۚ व आतैना मूसा सुल्तानम्-मुबीना (१५३) व
र-फ़अ़्-ना फ़ौक़हुमुत्तू-र बि मीसाक़िहिम् व क़ुल्ना लहुमुद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदंव्-व क़ुल्ना
लहुम् ला तअ़्-दू फ़िस्सब्ति व अ-ख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा (१५४)
फ़ बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बि आयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल्
अम्बिया-अ बिग़ैरि ह़क़्क़िंव्-व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् ط बल्
त-ब-अ़ल्लाहु अ़लैहा बि कुफ़्रिहिम् फ़ ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला ۖ (१५५)
व बि कुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्-य-म बुह्तानन् अ़ज़ीमा ۙ (१५६)

لا يحب الله ٦ — ٨١ — النساء ٤

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ
سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ
نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ
ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰۗىِٕكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ يَسْـَٔــلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَاۗءِ
فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ
الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَ
رَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَاۗءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰي مَرْيَمَ بُهْتَانًا

منزل ١

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोई किसी को एलानिया बुरा कहे, मगर वह जो मज़्लूम हो और ख़ुदा (सब कुछ) सुनता (और) जानता है।[1] (१४८) अगर तुम लोग भलाई खुल्लम खुल्ला करोगे या छिपा कर या बुराई से दरगुज़र करोगे, तो ख़ुदा भी माफ़ करने वाला (और) क़ुदरत वाला है। (१४९) जो लोग ख़ुदा से और उस के पैग़म्बरों से कुफ़्र करते हैं और ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों में फ़र्क़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और ईमान और कुफ़्र के बीच में एक राह निकालनी चाहते हैं, (१५०) वे बिला किसी शक-शुब्हे के काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हम ने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१५१) और जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उन में से किसी में फ़र्क़ न किया (यानी सब को माना), ऐसे लोगों को वह बहुत जल्द उन (की नेकियों) का बदला अता फ़रमायेगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१५२) ★

(ऐ मुहम्मद !) अह्ले किताब तुम से दर्ख़्वास्त करते हैं कि तुम उन पर एक (लिखी हुई) किताब आसमान से उतार लाओ, तो ये मूसा से इस से भी बड़ी-बड़ी दर्ख़्वास्तें कर चुके हैं। (उन से) कहते थे, हमें ख़ुदा को ज़ाहिर (यानी आंखों से) दिखा दो, सो उन के गुनाह की वजह से, उन को बिजली ने आ पकड़ा। फिर खुली निशानियां आये पीछे, बछड़े को (माबूद) बना बैठे, तो उस से भी हम ने दर-गुज़र की और मूसा को खुला ग़लबा दिया। (१५३) और उस से अह्द लेने को हम ने उस पर तूर पहाड़ उठा खड़ा किया और उन्हें हुक्म दिया कि (शहर के) दरवाज़े में (दाखिल होना, तो) सज्दा करते हुए दाखिल होना और यह भी हुक्म दिया कि हफ़्ते के दिन (मछलियां पकड़ने) में हद से आगे (यानी हुक्म के ख़िलाफ़) न करना। ग़रज़ हम ने उन से मज़बूत अह्द लिया। (१५४) (लेकिन उन्हों ने अह्द को तोड़ डाला) तो उन के अह्द तोड़ देने और ख़ुदा की आयतों से कुफ़्र करने और नबियों को ना-हक़ मार डालने और यह कहने की वजह से कि हमारे दिलों पर पर्दे (पड़े हुए) हैं, (ख़ुदा ने उन को मर्दूद कर दिया और उन के दिलों पर पर्दे नहीं हैं), बल्कि उन के कुफ़्र की वजह से ख़ुदा ने उन पर मुहर कर दी है, तो ये कम ही ईमान लाते हैं। (१५५) और उन के कुफ़्र की वजह से और मरयम पर एक बड़ा बुहतान बांधने की वजह से (१५६) और यह

---

१. किसी की बुराई बयान करना और उस का ऐब ज़ाहिर करना कि इसी का नाम ग़ीबत है, बहुत बुरा है ख़ुदा को निहायत ना-पसंद है। हां, अगर किसी पर कोई ज़ुल्म है, तो उस का ज़ुल्म बयान करना और मज़्लूम का ज़ालिम को बुरा कहना मुनासिब है।

★रु. २१/१ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ौलिहिम् इन्ना क़-तल्नल्-मसी-ह् अीसब्-न मर्य-म रसूलल्लाहि ج व मा
क़-तलूहु व मा स्-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम् ط व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि
ल-फ़ी शक्किम्मिन्हु ط मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिन् इल्लत्तिबाअज़्ज़न्नि ج व
मा क़-तलूहु यक़ीना لا (१५७) बर्र-फ़-अहुल्लाहु इलैहि ط व कानल्लाहु अज़ीज़न्
हकीमा (१५८) व इम्मिन् अह्लिल्-
किताबि इल्ला ल-युअ्मिनन्-न बिही क़ब्-ल
मौतिही ج व यौमल्-क़ियामति यकूनु
अलैहिम् शहीदा ج (१५९) फ़ बिज़ुल्मिम्-
मिनल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना अलैहिम्
तय्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि सद्दिहिम्
अन् सबीलिल्लाहि कसीरा لا (१६०)
व अख़्ज़ि हिमुर्रिबा व क़द् नुहू अन्हु व
अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि ط
व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न मिन्हुम्
अज़ाबन् अलीमा (१६१) लाकिनिर्-
रासिख़ू-न फ़िल्-अिल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनू-न
युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा
उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क वल्मुक़ीमीनस्सला-त वल्-मुअ्तूनज़्ज़का-त वल्मुअ्मिनू-न
बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि ط उला-इ-क सनुअ्तीहिम् अज्रन् अज़ीमा
★ (१६२) इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना इला नूहिंव्वन्नबिय्यी-न
मिम्बअ्-दिही ج व औहैना इला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क़ व
यअ्क़ू-ब वल्-अस्बाति व अीसा व अय्यू-ब व यूनु-स व हारू-न व सुलैमा-न ج
व आतैना दावू-द ज़बूरा ج (१६३) व रुसुलन् क़द् क़-सस्नाहुम् अलै-क मिन्
क़ब्लु व रुसुलल्लम् नक़्सुस्हुम् अलै-क ط व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा ج
(१६४) रुसुलुम्-मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि
अ-लल्लाहि हुज्जतुम्-बअ्-दर्रुसुलि ط व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमा (१६५)

عَظِيمًا (١٥٦) وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ ج
وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ ط وَإِنَّ الَّذِينَ
اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ط مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ ج وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا (١٥٧) بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ط وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا (١٥٨) وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ
مَوْتِهِ ج وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا (١٥٩) فَبِظُلْمٍ مِّنَ
الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا (١٦٠) وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَ
أَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ط وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا (١٦١) لَّٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ
بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَ
الْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ط أُولَٰئِكَ
سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا (١٦٢) إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ
وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ ج وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ ج
وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا (١٦٣) وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ
وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ط وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا (١٦٤) رُّسُلًا

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहने की वजह से कि हम ने मरयम के बेटे ईसा मसीह को, जो ख़ुदा के पैग़म्बर (कहलाते थे,) क़त्ल कर दिया है, (ख़ुदा ने उन को मलऊन कर दिया) और उन्होंने ईसा को क़त्ल नहीं किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया, बल्कि उन को उन की-सी सूरत मालूम हुई और जो लोग उन के बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं, वे उन के हाल से शक में पड़े हुए हैं और बदगुमानी की पैरवी के सिवा उन को इस का कुछ भी इल्म नहीं और उन्हों ने ईसा को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, (१५७) बल्कि ख़ुदा ने उन को अपनी तरफ़ उठा लिया और ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (१५८) और कोई अह्ले किताब नहीं होगा, मगर उनकी मौत से पहले उनपर ईमान ले आयेगा और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होंगे। (१५९) तो हम ने यहूदियों के ज़ुल्मों की वजह से (बहुत-सी) पाकीज़ा चीज़ें, जो उन को हलाल थीं, उन प रहराम कर दीं।[1] और इस वजह से भी कि वे अक्सर ख़ुदा के रास्ते से (लोगों को) रोकते थे। (१६०) और इस वजह से भी कि मना किए जाने के बावजूद सूद लेते थे और इस वजह से भी कि लोगों का माल नाहक़ खाते थे और उन में से जो काफ़िर हैं, उन के लिए हम ने दर्द देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है, (१६१) मगर जो लोग उन में से इल्म में पक्के हैं और जो मोमिन हैं, वे इस (किताब) पर जो तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाज़िल हुई (सब पर) ईमान रखते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और ख़ुदा और आख़िरत के दिन को मानते हैं। उनको हम बहुत जल्द बड़ा बदला देंगे (१६२)★.

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी तरफ़ उसी तरह वह्य भेजी है, जिस तरह नूह और उन से पिछले पैग़म्बरों की तरफ़ भेजी थी और इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान की तरफ़ भी हम ने वह्य भेजी थी और दाऊद को हम ने ज़बूर भी इनायत की थी। (१६३) और बहुत से पैग़म्बर हैं, जिनके हालात हम तुम से पहले बयान कर चुके हैं, और बहुत से पैग़म्बर हैं जिनके हालात तुमसे बयान नहीं किये। और मूसा से तो ख़ुदा ने बातें भी की। (१६४) (सब) पैग़म्बरों को (ख़ुदाने) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों को ख़ुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१६५) लेकिन ख़ुदा ने जो (किताब) तुम पर

---

१. जी चीज़ें ख़ुदा ने उन लोगों पर हराम कर दी थीं, उन का बयान सूरः अन्आम आयत १४६ में है।

★रु. २२/२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लाकिनिल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़-ल इलै-क अन्ज़-लहू बि अ़िल्मिही ۚ वल्-मलाइ-कतु यश्हदू-न ط व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा ط (१६६) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व स़द्दू अन् सबीलिल्लाहि क़द् ज़ल्लू ज़लालम्-बअ़ीदा (१६७) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व ज़-लमू लम् यकुनिल्लाहु लि यग़्फ़ि-र लहुम्

व ला लि यह्दियहुम् त़रीक़ा ۙ (१६८) इल्ला तरी-क़ जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط व का-न ज़ालि-क अ़-लल्लाहि यसीरा (१६९) या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुर्रसूलु बिल्हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़ आमिनू ख़ैरल्लकुम् ط व इन् तक्फ़ुरू फ़ इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा (१७०) या अह्लल्किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू अ़-लल्लाहि इल्लल्-ह़क़्-क़ ط इन्नमल्-मसीहु अ़ीसब्नु मर्य-म रसूलुल्लाहि व कलिमतुहू ۚ अल्क़ाहा

مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾ لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰۤىِٕكَةُ يَشْهَدُوْنَ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾ اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰىهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۡ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ڟ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ۭ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۭ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰۗىِٕكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۭ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَ

इला मर्य-म व रूहुम्मिन्हु ز फ़ आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही व ला तक़ूलू सलासतुन् ط इन्तहू ख़ैरल्लकुम् ط इन्नमल्लाहु इलाहुंव्वाहिदुन् ط सुब्हानहू अंय्यकू-न लहू व-लदुन् ▨ लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला ★ (१७१) लंय्यस्तन्किफ़ल्-मसीहु अंय्यकू-न अ़ब्दल्-लिल्लाहि व लल्-मलाइकतुल्-मुक़र्रबू-न ط व मंय्यस्तन्किफ़् अन् अ़िबादतिही व यस्तक्बिर् फ़-स-यह़्शुरुहुम् इलैहि जमीआ़ (१७२) फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही ۚ व अम्मल्-लज़ीनस्तन्कफ़ू वस्तक्बरू फ़ युअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव् ۙ व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नस़ीरा (१७३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नाज़िल की है, उस की निस्बत ख़ुदा गवाही देता है कि उस ने अपने इल्म से नाज़िल की है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और गवाह तो ख़ुदा ही काफ़ी है। (१६६) जिन लोगों ने कुफ़ किया और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोका, वे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े। (१६७) जो लोग काफ़िर हुए और ज़ुल्म करते रहे, ख़ुदा उन को बख़्शने वाला नहीं और न उन्हें रास्ता ही दिखाएगा। (१६८) हां, दोज़ख़ का रास्ता, जिसमें वे हमेशा (जलते) रहेंगे और यह (बात) ख़ुदा को आसान है। (१६९) लोगो! ख़ुदा के पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ बात ले कर आए हैं, तो (उन पर) ईमान लाओ, (यही) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर कुफ़ करोगे तो (जान रखो कि) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१७०) ऐ अह्ले किताब! अपने दीन (की बात) में हद से न बढ़ो और ख़ुदा के बारे में हक़ के सिवा कुछ न कहो। मसीह (यानी) मरयम के बेटे ईसा (न ख़ुदा थे, न ख़ुदा के बेटे, बल्कि) ख़ुदा के रसूल और उस (की बशारत) का कलिमा थे, जो उस ने मरयम की तरफ़ भेजा था और उस की तरफ से एक रूह थे, तो ख़ुदा और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और (यह) न कहो (कि ख़ुदा) तीन (हैं, इस एतक़ाद से) बाज़ आओ कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। ख़ुदा ही अकेला माबूद है और इस से पाक है कि इस के औलाद हो। जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (१७१) ★

मसीह इस बात से आर (लाज-शर्म) नहीं रखते कि ख़ुदा के बन्दे हों और न मुक़र्रब फ़रिश्ते (आर रखते हैं) और जो शख़्स ख़ुदा का बन्दा होने को आर की वजह समझे और सरकशी करे तो ख़ुदा सब को अपने पास जमा कर लेगा। (१७२) तो जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, वह उन को उन का पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज्यादा भी इनायत करेगा और जिन्हों ने (बन्दा होने से) आर व इंकार और घमंड किया, उन को वह तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब

व. लाज़िम ★रु. २३/३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहन्नासु क़द् जा-अ कुम् बुर्हानुम्-मिर्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना इलैकुम्
नूरम्मुबीना (१७४) फ़ अम्मल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि वअ्-त-समू बिही फ़-स-युद्
ख़िलुहुम् फ़ी रह्मतिम् - मिन्हु व फ़ज़्लिव् - व यह्दीहिम् इलैहि
सिरातम् - मुस्तक़ीमा ط (१७५) यस्तफ़्तून - क ط क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम्
फ़िल्कलालति ط इनिम्रु-उन् ह-ल-क लै-स
लहू व-लदुंव्-व लहू उख़्तुन् फ़ लहा निस्फ़ु मा
त-रक ج व हु-व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा
व-लदुन् ط फ़ इन् का-न-तस्नतैनि फ़-लहुमस्-
सुलुसानि मिम्मा त-र-क ط व इन् कानू
इख़्वतर्रिजालंव्-व निसा-अन् फ़ लिज़्ज़-करि
मिस्लु हज़्ज़िल् - उन्सयैनि ط युबय्यिनुल्
लाहु लकुम् अन् तज़िल्लू ط वल्लाहु
बि कुल्लि शैइन् अलीम ★ (१७६)

५ सूरतुल्मा-इदति ११२

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १३४६४ अक्षर, २८४२ शब्द, १२० आयतें और १६ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

المآئدة ٥ ٨٤ لا يحب الله ٦

يَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۙ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾
يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا
مُّبِينًا ﴿١٧٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ
فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾
يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ
لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن
لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوا
إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
أَن تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾

سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ
إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ
مَا يُرِيدُ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ
الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ
فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

منزل ٢

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू औफ़ू बिल्अुक़ूदि ط उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-
अन्आमि इल्ला मा युत्ला अलैकुम् ग़ै-र मुहिल्लिस्सैदि व अन्तुम् हुरुमुन्,
इन्नल्ला-ह यह्कुमु मा युरीद (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहिल्लू
शआ-इरल्लाहि व लश्शह्रल्-हरा-म व लल्हद-य व लल्क़ला-इ-द व ला आम्मीनल्-
बैतल्-हरा-म यब्तग़ू-न फ़ज़्-लम्-मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन् ط व इज़ा ह-लल्तुम्
फ़स्तादू ط व ला यज्रिमन्नकुम् शन-आनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अनिल्-मस्जिदिल्-
हरामि अन् तअ्-तदू ▨ व तआवनू अ़-लल्बिर्रि वत्तक़्वा ص व ला तआवनू अ़-लल्-
इस्मि वल्अुद्वानि ص वत्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब ● (२)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देगा। (१७३) और ये लोग ख़ुदा के सिवा अपना हामी और मददगार न पाएंगे। (१७४) लोगो! तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास (रोशन) दलील आ चुकी है और हम ने (कुफ़ और भटकाव का अंधेरा दूर करने को) तुम्हारी तरफ़ चमकता हुआ नूर भेज दिया है। पस जो लोग ख़ुदा पर ईमान लाये और उस (के दीन की रस्सी) को मज़बूत पकड़े रहे, उन को वह अपनी रहमत और फ़ज़्ल (के बहिश्तों) में दाखिल करेगा और अपनी तरफ़ (पहुंचने का) सीधा रास्ता दिखाएगा। (१७५) (ऐ पैग़म्बर!) लोग तुम से (कलाला के बारे में ख़ुदा का) हुक्म मालूम करते हैं।[1] कह दो कि ख़ुदा कलाला के बारे में यह हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जाए, जिस के औलाद न हो (और न मां-बाप) और उस के बहन हो तो उस को भाई के तर्के में से आधा हिस्सा मिलेगा और अगर बहन मर जाए और उस के औलाद न हो तो उस के तमाम माल का वारिस भाई होगा और अगर (मरने वाले भाई की) दो बहनें हों तो दोनों को भाई के तर्के में से दो तिहाई और अगर भाई और बहन यानी मर्द और औरतें मिले-जुले वारिस हों तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर है, ख़ुदा (ये अह्काम) तुम से इस लिए बयान फ़रमाता है कि भटकते न फिरो और ख़ुदा हर चीज़ जानता है। (१७६)★

५ सूरः माइदः ११२

सूरः माइदः मदनी है और इस में एक सौ बीस आयतें और और सोलह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो! अपने इक़रारों को पूरा करो। तुम्हारे लिए चार पाए जानवर, (जो चरने वाले हैं,) हलाल कर दिए गये हैं, अलावा उन के जो तुम्हें पढ़ कर सुनाये जाते हैं, मगर (हज के) एहराम में शिकार को हलाल न जानना। ख़ुदा जैसा चाहता है, हुक्म देता है। (१) मोमिनो! ख़ुदा के नाम की चीज़ों की बे-हुर्मती न करना और न अदब के महीने की और न क़ुर्बानी के जानवरों की (जो ख़ुदा की नज़्र कर दिए गये हों और) जिनके गलों में पट्टे बंधे हों। और न उन लोगों की, जो इज़्ज़त के घर (यानी बैतुल्लाह) को जा रहे हों (और) अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल और उस की ख़ुश्नूदी की तलब रखते हों और जब एहराम उतार दो, तो (फिर अख़्तियार है कि) शिकार करो और लोगों की दुश्मनी इस वजह से कि उन्होंने तुमको इज़्ज़त वाली मस्जिद से रोका था, तुम्हें इस बात पर तैयार न करे कि तुम उन पर ज़्यादती करने लगो▨ और (देखो) नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म की बातों में मदद न किया करो और ख़ुदा से डरते

---

१. कलाला इसे कहते हैं कि जिस का बेटा और बाप न हो कि असल वारिस यही हैं तो उस वक़्त उस के भाई-बहन को बेटा-बेटी का हुक्म है और अगर सगे न हों तो यही हुक्म सौतेले का है। एक बहन तो आधा और दो बहन हों, तो तिहाई उस माल से जो छोड़ मरा और अगर भाई-बहन हों तो मर्द को दोहरा हिस्सा और औरत को इकहरा और जो निरे भाई हों तो उन को फ़रमाया कि वह बहन के माल के वारिस हों यानी हिस्सा तै नहीं, वह 'अस्बा' हैं। अगर बेटी हो और बहन हो तो हिस्सा बेटी को और बहन 'अस्बा' है यानी हिस्सेदारों से बचे तो अस्बा लेवे।

★रु. २४/४ आ ५ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुर्रिमत् अ़लैकुमुल्मैततु वद्दमु व लह़्मुल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लि ग़ैरिल्लाहि बिही वल्मुन्ख़निक़तु वल्मौक़ूज़तु वल्मुतरद्दियतु वन्नत़ीह़तु व मा अ-क-लस्सबुअ़ु इल्ला मा ज़क्कैतुम् قف व मा ज़ुबि-ह़ अ़-लन्नुसुबि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्-अज़्लामि ط ज़ालिकुम् फ़िस्क़ुन् ط अल्यौ-म य-इसल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ ला तख़्शौहुम् वख़्शौनि ط अल्यौ-म अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अ़लैकुम् निअ़्-मती व रज़ीतु लकुमुल्-इस्ला-म दीनन् ط फ़ मनिज़्तुर-र फ़ी मख़्-म-स़तिन् ग़ै-र मु-त-जानिफ़िल्लि इस्मिन् لا फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रह़ीम (३) यस्अलून-क माज़ा उह़िल्-ल लहुम् ط क़ुल् उह़िल्-ल लकुमुत्-त़य्यिबातु لا व मा अ़ल्लम्तुम् मिनल्-जवारिहि़ मुकल्लिबी-न तुअ़ल्लिमूनहुन्-न मिम्मा अ़ल्-ल-मकुमुल्लाहु ز फ़ कुलू मिम्मा अम्सक-न अ़लैकुम् वज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहि ص वत्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्ह़िसाब (४) अल्यौ-म उह़िल्-ल लकुमुत्त़य्यिबातु ط व त़आ़मुल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब हि़ल्लुल्लकुम् ص व त़आ़मुकुम् हि़ल्लुल्लहुम् ز वल्मुह़्स़नातु मिनल्-मुअ्मिनाति वल्मुह़्स़नातु मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुह़्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न व ला मुत्तख़िज़ी अख़्दानिन् ط व मंय्यक्फ़ुर् बिल्ईमानि फ़-क़द् ह़बि-त़ अ़-मलुहू ز व हु-व फ़िल्-आख़िरति मिनल्-ख़ासिरीन ★ (५)

لا يحب الله ٨٥ المآئدة ٥

شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۟ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ۭ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ۭ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۭ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۭ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ۭ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۡ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۭ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۠ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۡ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रहो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा का अज़ाब सख़्त है● (२) तुम पर मरा हुआ जानवर और (बहता) लहू और सुअर का गोश्त और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए और जो जानवर गला घुट कर मर जाए और जो चोट लगकर मर जाए और जो गिरकर मर जाए और जो सींग लग कर मर जाए, ये सब हराम हैं और वे जानवर भी, जिसको दरिंदे फाड़ खाएं, मगर जिसको तुम (मरने से पहले) ज़िब्ह कर लो और वे जानवर भी, जो थान पर ज़िब्ह किया जाए और यह भी कि पांसों[1] से क़िस्मत मालूम करो। ये सब गुनाह (के काम) हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से ना-उम्मीद हो गये हैं, तो उन से मत डरो और मुझी से डरते रहो (और) आज हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया, हां, जो शख़्स भूख में ना-चार हो जाए, (बशर्ते कि) गुनाह की तरफ़ मायल (झुकाव) न हो, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[2] (३) तुम से पूछते हैं कि कौन-कौन-सी चीज़ें उन के लिए हलाल हैं, (उन से) कह दो कि सब पाकीज़ा चीज़ें तुम को हलाल हैं। और वह शिकार भी हलाल है, जो तुम्हारे लिए उन शिकारी जानवरों ने पकड़ा हो, जिन को तुम ने सधा रखा हो और जिस (तरीक़े) से ख़ुदा ने तुम्हें (शिकार करना) सिखाया है (उस तरीक़े से) तुम ने उन को सिखाया हो, तो जो शिकार वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें, उस को खा लिया करो और (शिकारी जानवरों के छोड़ते वक़्त) ख़ुदा का नाम ले लिया करो। और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (४) आज तुम्हारे लिए सब पाकीज़ा चीज़ें हलाल कर दी गयीं और अह्ले किताब का खाना भी तुम को हलाल है और तुम्हारा खाना उन को हलाल है और पाकदामन मोमिन औरतें और पाकदामन अह्ले किताब औरतें भी (हलाल हैं), जब कि उन का मह्र दे दो और उन से अिफ़्फ़त (पाकदामनी) रखनी मक़्सूद हो, न खुली बद-कारी करनी और न छिपी दोस्ती करनी और जो शख़्स ईमान का मुन्किर हुआ, उस के अमल ज़ाया हो गये और वह आख़िरत में नुक़्सान पाने वालों में होगा। (५) ★

---

१. अरब जाहिलियत में यह काम करते थे कि तीन पांसे होते थे। एक पर लिखा था, यह काम कर, दूसरे पर 'मत कर', तीसरा ख़ाली था, यानी उस पर कुछ नहीं लिखा होता था। जब वे कोई काम करना चाहते तो पांसे डालते। अगर हुक्म निकलता, तो इस काम को करते, अगर इन्कार निकलता तो न करते और अगर ख़ाली निकलता, तो फिर डालते। बुख़ारी, मुस्लिम में आया है कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब काबे में दाख़िल हुए तो वहां इब्राहीम और इस्माईल अलै० की तस्वीरें पायीं। उन के हाथों में पांसे थे। आप ने फ़रमाया, ख़ुदा इन लोगों को हलाक करे। ये ख़ूब जानते हैं कि इब्राहीम और इस्माईल ने कभी पांसा नहीं फेंका। मुजाहिद कहते हैं कि वे पांसे जुआ खेलने के थे, मगर इस में कलाम है, क्योंकि ख़ुदा ने पांसों और जुए में फ़र्क़ किया है। पांसों को 'अज़लाम' कहा है, जुए को मैसर। हां, यों कहा जा सकता है कि कभी उन को इस्तिख़ारे में और कभी जुए में इस्तेमाल करते थे। ख़ुदा ने इस काम को गुनाह कहा और इस से रोका।

२. रिवायत है कि हातिम का बेटा अदी और ज़ैद बिन ख़ैल आंहज़रत सल्ल० के पास आये और कहा, या रसूलल्लाह! हम ऐसे मकान में हैं कि वहां कुत्ते शिकार करते हैं। हम उन में से कुछ को ज़िब्ह करते हैं और कुछ को पाल लेते हैं और कुछ को कुत्ते बर्बाद कर देते हैं। यह शिकार हलाल है या मुर्दार। इस पर अगली आयत उतरी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजूहकुम् व
ऐदि-यकुम् इलल्-मराफ़िक़ि वम्सहू बि रुऊसिकुम् वअर्जुलकुम् इलल्कअ्बैनि ط व
इन् कुन्तुम् जुनुबन् फ़त्तह-हरू ط व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ
जा-अ अ-ह़दुम्-मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू
मा-अन् फ़-त-यम्ममू सअ़ीदन् त़य्यिबन् फ़म्सहू
बि वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु ط मा
युरीदुल्लाहु लि यज्-अ-ल अ़लैकुम् मिन् ह़-रजिव्-व
लाकिंय्युरीदु लि युतह्हि-रकुम् व लि युतिम्-म
निअ्-म-तहू अ़लैकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून
(६) वज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् व
मीसाक़हुल्लज़ी वास - क़कुम् बिही ۙ इज़्
क़ुल्तुम् समिअ्-ना व अ-तअ्-ना ز वत्तक़ुल्ला-ह ط
इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बि - ज़ातिस्सुदूर (७)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न
लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्क़िस्ति ز व ला
यज्रिमन्नकुम् शनआनु क़ौमिन् अ़ला अल्ला

الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ
النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ
وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ
يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦ وَ
اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ
سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ؗ وَلَا
يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ
اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا

तअ् - दिलू ط इअ् - दिलू قف हु - व अक़्रबु लित्तक़्वा ز वत्तक़ुल्ला - ह ط
इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्-मलू-न (८) व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू
व अ़मिलुस्सालिह़ाति ۙ लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव - व अज्रुन् अ़ज़ीम (९)
वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इ-क अस्ह़ाबुल्-जह़ीम
(१०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् हम्-म
क़ौमुन् अंय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदियहुम् फ़-कफ़्-फ़ ऐदियहुम् अ़न्कुम् ج
वत्तक़ुल्ला-ह ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल् - मुअ्मिनून ★ (११)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनो ! तुम जब नमाज़ पढ़ने का इरादा किया करो, तो मुंह और कुहनियों तक हाथ[1] धो लिया करो और सर का मसह कर लिया करो और टख़्नों तक पांव (धो लिया करो) और अगर नहाने की ज़रूरत हो तो (नहा कर) पाक हो जाया करो और अगर बीमार हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से बैतुल-ख़ला (टट्टी) से हो कर आया हो या तुम औरतों से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हें पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लो और उस से मुंह और हाथों का मसह (यानी तयम्मुम) कर लो। ख़ुदा तुम पर किसी तरह की तंगी नहीं करना चाहता, बल्कि यह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेमतें तुम पर पूरी करे, ताकि तुम शुक्र करो। (६) और ख़ुदा ने तुम पर जो एहसान किये हैं, उन को याद करो और उस अह्द को भी, जिस का तुम से क़ौल लिया था, (यानी) जब तुम ने कहा था कि हम ने (ख़ुदा का हुक्म) सुन लिया और क़ुबूल किया और ख़ुदा से डरो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा दिलों की बातों (तक) को जानता है। (७) ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा के लिए इंसाफ़ की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगों की दुश्मनी तुम को इस बात पर तैयार न करे कि इंसाफ़ छोड़ दो। इंसाफ़ किया करो कि यही परहेज़गारी की बात है और ख़ुदा से डरते रहो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे तमाम कामों से ख़बरदार है। (८) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन से ख़ुदा ने वायदा फ़रमाया है कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अज्र है। (९) और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं। (१०) ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा ने जो तुम पर एहसान किया है, उस को याद करो, जब एक जमाअत ने इरादा किया कि तुम पर हाथ उठाएं, तो उस ने उन के हाथ रोक दिए और ख़ुदा से डरते रहो और मोमिनों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (११) ★

---

१. कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि इस्लाम के शुरू में हर नमाज़ के लिए वुज़ू करना वाजिब था, मगर बाद में वह भी वाजिब न रहा। एक हदीस में है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज़ के लिए वुज़ू किया करते थे, जब फ़त्हे मक्का का दिन आया तो आप ने वुज़ू कर के दोनों मोज़ों पर मसह किया और एक ही वुज़ू से कई नमाज़ें पढ़ीं। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आप ने वह काम किया है जो पहले कभी नहीं करते थे। आप ने फ़रमाया, मैं ने यह काम जान-बूझ कर किया है।

★रु. २/६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसा-क़ बनी इस्रा-ई-ल ج व ब-अ़स्ना मिन्हुमुस्नै-
अ़-श-र नक़ीबन् ط व क़ालल्लाहु इन्नी म-अ़कुम् ط लइन् अ-क़म्तुमुस्सला-त
वआतैतुमुज़्-ज़का-त व आमन्तुम् बि रुसुली व अ़ज़्ज़र्तुमूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्ला-ह
क़र्ज़न् ह़-स-नल्-ल उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल-उद्ख़िलन्नकुम्
जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ج
फ़-मन् क-फ़-र बअ़्-द ज़ालि-क मिन्कुम्
फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (१२) फ़ बिमा
नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् लअ़न्नाहुम् व ज-अ़ल्ना
क़ुलूबहुम् क़ासिय-तुन् ج युहर्रिफ़ूनलकलि-म
अ़म्मवाज़िअ़िही لا व नसू ह़ज़्ज़म्मिम्मा
ज़ुक्किरू बिही ج व ला तज़ालु तत्तलिअ़ु अ़ला
ख़ा-इनतिम्-मिन्हुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्हुम्
फ़अ़्-फ़ु अ़न्हुम् वस्फ़ह् ط इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-
मुह़्सिनी-न् (१३) व मिनल्लज़ी-न क़ालू इन्ना
नसारा अ-ख़ज़्ना मीसाक़हुम् फ़-नसू ह़ज़्ज़म्मिम्मा
ज़ुक्किरू बिही ص फ़ अग़्रैना बैनहुमुल्-अ़दाव-त
वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल् - क़ियामति ط व
सौ-फ़ युनब्बिउ-हुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअ़ून (१४) या अह़्लल्-
किताबि क़द् जा-अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम्मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ू-न
मिनल्किताबि व यअ़्-फ़ू अ़न् कसीरिन् ط क़द् जा-अकुम् मिनल्लाहि नूरुंव्-व
किताबुम्-मुबीन لا (१५) यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त-ब-अ़ रिज़्वानहू
सुबुलस्सलामि व युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि इज़्निही व
यह्दीहिम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (१६) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू
इन्नल्ला-ह हुवल्मसीह़ुब्नु मर्य-म ط क़ुल् फ़ मंय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन्
इन् अरा-द अंय्युह्लिकल्-मसीह़ब्-न मर्य-म उम्मह़ू व मन् फ़िल्अर्ज़ि
जमीअ़न् ط व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ط
यख़्लुक़ु मा यशा - उ ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१७)

المآئدة ٨٦ لا يحب الله

مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَ
اَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ⑫ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَ
جَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا
حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا
قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ⑬
وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا
ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ
وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ⑭ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ
جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ⑮ ۙ
يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ
الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ⑯ لَقَدْ
كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ
مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और ख़ुदा ने बनी इस्राईल से इक़रार लिया और उन में हम ने बारह सरदार मुक़र्रर किये फिर ख़ुदा ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अगर तुम नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहोगे और पैग़म्बरों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और ख़ुदा को क़र्ज़े हसना दोगे, तो मैं तुम से तुम्हारे गुनाह दूर कर दूंगा और तुम को बहिश्तों में दाखिल करूंगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, फिर जिस ने इस के बाद तुम में से कुफ़्र किया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१२) तो उन लोगों के अह्द तोड़ देने की वजह से हम ने उन पर लानत की, और उन के दिलों को सख़्त कर दिया। ये लोग कलिमात (किताब) को अपनी जगहों से बदल देते हैं और जिन बातों की उन को नसीहत की गयी थी, उन का भी एक हिस्सा भुला बैठे और थोड़े आदमियों के सिवा हमेशा उन की (एक न एक) ख़ियानत की खबर पाते रहते हो, तो उन की ख़ताएं माफ़ कर दो और (उन से) दर-गुज़र करो कि ख़ुदा एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (१३) और जो लोग (अपने को) कहते हैं कि हम नसारा हैं, हम ने उन से भी अह्द लिया था, मगर उन्हों ने भी उस नसीहत का, जो उन को की गयी थी, एक हिस्सा भुला दिया, तो हम ने उन के आपस में क़ियामत तक के लिए दुश्मनी और कीना डाल दिया और जो कुछ वे करते रहे, ख़ुदा बहुत जल्द उन को उस से आगाह करेगा। (१४) ऐ अह्ले किताब! तुम्हारे पास हमारे (आख़िरी) पैग़म्बर आ गये हैं कि जो कुछ तुम (ख़ुदा की) किताब में छिपाते थे, वह इस में से बहुत कुछ तुम्हें खोल-खोल कर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत-से क़ुसूर माफ़ कर देते हैं। बेशक तुम्हारे पास ख़ुदा की तरफ़ से नूर और रोशन किताब आ चुकी है, (१५) जिस से ख़ुदा अपनी रिज़ा पर चलने वालों को निजात के रास्ते दिखाता है और अपने हुक्म से अंधेरे में से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाता और उनको सीधे रास्ते पर चलाता है। (१६) जो लोग इस बात के क़ायल हैं कि ईसा बिन मरयम ख़ुदा हैं, वे बेशक काफ़िर हैं। (उन से) कह दो कि अगर ख़ुदा ईसा बिन मरयम और उन की वालिदा को और जितने लोग ज़मीन में हैं, सब को हलाक करना चाहे, तो उसके आगे किस की पेश चल सकती है? और आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब पर ख़ुदा ही की बादशाही है। वह जो चाहता है पैदा करता है और ख़ुदा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु अब्ना-उल्लाहि व अहिब्बा-उहू ط क़ुल् फ़-लि-म
युअज़्ज़िबुकुम् बि ज़ुनूबिकुम् ط बल् अन्तुम् बशरुम्मिम्मन् ख़-ल-क़ ط यग़्फ़िरु
लि मंय्यशा-उ व युअज़्ज़िबु मंय्यशा-उ ط व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि
व मा बैनहुमा ط व इलैहिल्-मसीर (१८) या अह्लल् - किताबि
क़द् जा-अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम्
अ़ला फ़त्रतिम्-मिनर्रुसुलि अन् तक़ूलू मा
जा-अना मिम्बशीरिंव्-व ला नज़ीरिन् ط
फ़-क़द् जा - अकुम् बशीरुंव्-व नज़ीरुन् ط
वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर
★ (१९) व इज़् क़ा - ल मूसा
लि क़ौमिही याक़ौमिज़्कुरू निअ़् - म-तल्लाहि
अ़लैकुम् इज़् ज-अ़-ल फ़ीकुम् अम्बिया-अ
व ज - अ़ - लकुम् मुलूकंव् صلے -व
आताकुम् मालम् युअ्ति अ-ह-दम्मिनल्-
आ़लमीन (२०) या क़ौमिद्ख़ुलुल्-अर्ज़ल्-
मुक़द्-द-स-तल्-लती क-त-बल्लाहु लकुम् व ला
तर्तद्दू अ़ला अद्बारिकुम् फ़-तन्क़लिबू
ख़ासिरीन (२१) क़ालू या मूसा इन-न फ़ीहा क़ौमन् जब्बारी-न صلے
व इन्ना लन् नद्ख़ुलहा हत्ता यख़्रुजू मिन्हा ج फ़ इंय्यख़्रुजू मिन्हा
फ़ इन्ना दाख़िलून (२२) क़ा-ल रजुलानि मिनल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न
अन-अ़-मल्लाहु अ़लैहिमद्ख़ुलू अ़लैहिमुलबा-ब ج फ़ इज़ा द-ख़ल्तुमूहु फ़-इन्नकुम्
ग़ालिबू - न ج व अ़ - लल्लाहि फ़ - त-वक्कलू इन् कुन्तुम् - मुअ्मिनीन
(२३) क़ालू या मूसा इन्ना लन्नद्ख़ुलहा अ - ब - दम् - मा दामू
फ़ीहा फ़ज़्हब् अन्-त व रब्बु-क फ़ क़ातिला इन्ना-हाहुना क़ाअ़िदून (२४)

مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾ وَ
قَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ
وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ
عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْ بَشِيْرٍ وَّلَا
نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ
اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ
كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۱﴾
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖۗ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى
يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ
الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا
دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१७) और यहूद और नसारा कहते हैं कि हम ख़ुदा के बेटे और उस के प्यारे हैं। कहो कि फ़िर वह तुम्हारी बद-आमालियों की वजह से तुम्हें अज़ाब क्यों देता है, (नहीं,) बल्कि तुम उस की मख़्लूक़ात में (दूसरों की तरह के) इंसान हो। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब दे और आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब पर ख़ुदा ही की हुकूमत है और (सब को) उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (१८) ऐ अह्ले किताब! (पैग़म्बरों के आने का सिलसिला जो एक अर्से तक कटा-सा रहा, तो) अब तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर आ गये हैं, जो तुम से (हमारे हुक्म) बयान करते हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी या डर सुनाने वाला नहीं आया, सो (अब) तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी और डर सुनाने वाले आ गये हैं और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१९) ★

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के कहा कि भाइयो! तुम पर ख़ुदा ने जो एहसान किये हैं, उन को याद करो कि उस ने तुम में पैग़म्बर पैदा किये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम को इतना कुछ इनायत किया कि दुनिया वालों में से किसी को नहीं दिया। (२०) तो भाइयो! तुम अर्ज़े मुक़द्दस (पाक धरती, यानी शाम मुल्क) में, जिसे ख़ुदा ने तुम्हारे लिए लिख रखा है, चल दाख़िल हो और (देखना, मुक़ाबले के वक़्त) पीठ न फेर देना, वरना नुक़सान में पड़ जाओगे। (२१) वे कहने लगे कि मूसा! वहां तो बड़े ज़बरदस्त लोग (रहते) हैं और जब तक वह इस धरती से निकल न जाएं, हम वहां जा नहीं सकते, हां, अगर वे वहां से निकल जाएं, तो हम जा दाख़िल होंगे। (२२) जो लोग (ख़ुदा से) डरते थे, उन में से दो शख़्स, जिन पर ख़ुदा की इनायत थी, कहने लगे कि इन लोगों पर दरवाज़े के रास्ते से हमले कर दो। जब तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गये तो फ़त्ह तुम्हारी है और ख़ुदा ही पर भरोसा रखो, बशर्ते कि ईमान वाले हो। (२३) वे बोले कि मूसा! जब तक वे लोग वहां हैं, हम कभी वहां नहीं जा सकते। (अगर लड़ना ही ज़रूरी है,) तो तुम और तुम्हारा

★रु. ३/७ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बैनना व
बैनल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (२५) क़ा-ल फ़ इन्नहा मुहर्रमतुन् अलैहिम्
अर्बई-न स-न-तुन् ꣸ यतीहू-न फ़िल्अर्ज़ि ꣸ फ़ ला तअ् - स अलल्-क़ौमिल्-
फ़ासिक़ीन ★ (२६) वत्लु अलैहिम् न-ब-अब्नै - आद - म बिल्हक़्क़ि
इज़् क़र्रबा क़ुर्बानन् फ़तुक़ुब्बि-ल मिन्
अ-हदिहिमा व लम् युत-क़ब्बल् मिनल् -
आख़रि ꣸ क़ा-ल ल-अक़्तुलन्न-क ꣸ क़ा - ल
इन्नमा य - त-क़ब्बलुल्लाहु मिनल्मुत्तक़ीन
● (२७) लइम्-ब-सत्-त इलय्-य य-द-क
लि तक़्तुलनी मा अना बि बासितिय्यदि-य
इलै-क लि अक़्तु-ल-क ꣸ इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह
रब्बल्-आलमीन (२८) इन्नी उरीदु अन्
तबू-अ बि इस्मी व इस्मि-क फ़-तकू-न मिन्
अस्हाबिन्नारि ꣸ व जालि-क जज़ा - उज़्-
जालिमीन ꣸ (२९) फ़-तव्व-अत् लहू
नफ़्सुहू क़त्-ल अख़ीहि फ़-क़-त-लहू फ़ अस्ब-ह
मिनलख़ासिरीन (३०) फ़-ब-अ-सल्लाहु
ग़ुराबंय्यब्हसु फ़िल्अर्ज़ि लि युरियहू कै-फ़
युवारी सौ-अ-त अख़ीहि ꣸ क़ा-ल यावैलता

[Arabic text box, p. ٨٩:]

فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِیْ
وَاَخِیْ فَافْرُقْ بَیْنَنَا وَبَیْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِیْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ
عَلَیْهِمْ اَرْبَعِیْنَ سَنَةً یَتِیْهُوْنَ فِی الْاَرْضِ فَلَا تَاْسَ عَلَی الْقَوْمِ
الْفٰسِقِیْنَ ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَاَ ابْنَیْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا
فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ یُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ
قَالَ اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿٢٧﴾ لَىِٕنْۢ بَسَطْتَّ اِلَیَّ یَدَكَ
لِتَقْتُلَنِیْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ یَّدِیَ اِلَیْكَ لِاَقْتُلَكَ اِنِّیْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ
الْعٰلَمِیْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِیْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ
النَّارِ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیْنَ ﴿٢٩﴾ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِیْهِ
فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿٣٠﴾ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا یَّبْحَثُ فِی
الْاَرْضِ لِیُرِیَهٗ كَیْفَ یُوَارِیْ سَوْءَةَ اَخِیْهِ قَالَ یٰوَیْلَتٰۤی اَعَجَزْتُ
اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِیَ سَوْءَةَ اَخِیْ فَاَصْبَحَ مِنَ
النّٰدِمِیْنَ ﴿٣١﴾ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ كَتَبْنَا عَلٰی بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ
مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ
جَمِیْعًا وَمَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا
بِالْبَیِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِی الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا
جَزٰٓؤُا الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَیَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ

منزل

अ अजज़्तु अन् अकू-न मिस्-ल हाज़लग़ुराबि फ़ उवारि-य सौ-अ-त अख़ी ꣸
फ़-अस् - ब - ह मिनन्नादिमीन ꣸ (३१) मिन् अजिल जालि - क ꣸
क-तब्ना अला बनी इस्रा-ई-ल अन्नहू मन् क़-त-ल नफ़्सम्-बिग़ैरि नफ़्सिन्
औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ क-अन्नमा क़-त-लन्ना-स जमीअन् ꣸ व मन् अह्याहा
फ़ क - अन्नमा अह्यन्ना - स जमीअन् ꣸ व ल-क़द् जा-अत्हुम् रुसुलुना
बिल्बय्यिनाति ꣸ सुम्-म इन्-न कसीरम्-मिन्हुम् बअ्-द जालि - क फ़िल्अर्ज़ि
ल मुस्रिफ़ून (३२) इन्नमा जज़ा-उल्लज़ी-न युहारिबूनल्ला-ह व रसूलहू व
यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-सादन् अंय्युक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्त-अ ऐदीहिम् व
अर् - जुलुहुम् मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनल्अर्ज़ि ꣸ जालि - क लहुम्
ख़िज़्युन् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्आख़िरति अज़ाबुन् अज़ीम ꣸ (३३)

★ रु. ४/८ आ ७ ▨ व. मंज़िल ● नि. १/२, ∴ मु. अ़ि मु ता ख़. ५ ▨ व. न बी स.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा जाओ और लड़ो, हम यहां बैठे रहेंगे। (२४) मूसा ने (ख़ुदा से) इल्तिजा की कि परवरदिगार! मैं अपने और अपने भाई के सिवा और किसी पर अख़्तियार नहीं रखता, तो हम में और इन ना-फ़रमान लोगों में जुदाई कर दे। (२५) ख़ुदा ने फ़रमाया कि वह मुल्क उन पर चालीस बरस तक के लिए हराम कर दिया गया (कि वहां जाने न पाएंगे और जंगल की) ज़मीन में परेशान फिरते रहेंगे, तो उन ना-फ़रमान लोगों के हाल पर अफ़सोस न करो (२६)★ और (ऐ मुहम्मद) उन को आदम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) के हालात (जो बिल्कुल सच्चे हैं) पढ़ कर सुनादो ▨ कि जब उन दोनों ने (ख़ुदा की जनाब में) कुछ नियाज़ें चढ़ायीं, तो एक की नियाज़ तो क़ुबूल हो गयी और दूसरे की क़ुबूल न हुई, (तब क़ाबील हाबील से) कहने लगा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। उस ने कहा कि ख़ुदा परहेज़गारी ही की (नियाज़) क़ुबूल फ़रमाया करता है। (२७)●

और अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिए मुझ पर हाथ चलाएगा, तो मैं तुझ को क़त्ल करने के लिए तुझ पर हाथ नहीं चलाऊंगा, मुझे तो अल्लाह रब्बुल आलमीन से डर लगता है। (२८) मैं चाहता हूं कि तू मेरे गुनाह में भी पकड़ा जाए और अपने गुनाह में भी, फिर दोज़ख़ वालों में से हो। और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (२९) मगर उस के नफ़्स ने उस को भाई के क़त्ल ही पर उभारा, तो उस ने उसे क़त्ल कर दिया और घाटा उठाने वालों में हो गया।[1] (३०) अब ख़ुदा ने एक कव्वा भेजा, जो ज़मीन कुरेदने लगा, ताकि उसे दिखाए कि अपने भाई की लाश को कैसे छिपाये। कहने लगा, ऐ हे! मुझ से इतना भी न हो सका कि इस कव्वे के बराबर होता कि अपने भाई की लाश को छिपा देता। फिर वह शर्मिन्दा हुआ। (३१)∴ इस (क़त्ल) की वजह से ▨ हम ने बनी इस्राईल पर यह हुक्म नाज़िल किया कि जो शख़्स किसी को (ना-हक़) क़त्ल करेगा (यानी) बग़ैर इस के कि जान का बदला जान लिया जाए या मुल्क में ख़राबी पैदा करने की सज़ा दी जाए, उसने गोया तमाम लोगों को क़त्ल किया और जो उस की ज़िंदगी की वजह बना, तो गोया तमाम लोगों की ज़िंदगी की वजह बना और उन लोगों के पास हमारे पैग़म्बर रोशन दलीलें ला चुके हैं। फिर इस के बाद भी इन में बहुत-से लोग मुल्क में एतदाल की हद से निकल जाते हैं। (३२) जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल से लड़ाई करें और मुल्क में फ़साद करने को दौड़ते फिरें, उन की यह सज़ा है कि क़त्ल कर दिए जाएं या सूली चढ़ा दिये जाएं या उन के एक-एक तरफ़ के हाथ और एक-एक तरफ़ के पांव काट दिए जाएं। यह तो दुनिया में उन की रुसवाई है और आख़िरत में उन के लिए बड़ा (भारी) अज़ाब

---

१. हज़रत आदम के जिन दो बेटों का यह क़िस्सा है, उन का नाम हाबील और क़ाबील था। यह बात मशहूर है कि हज़रत हव्वा के पेट से दो जुड़वां बच्चे पैदा होते थे, एक लड़का, एक लड़की। चूंकि ज़रूरत समझी जाती थी, इस लिए एक पेट के लड़के से दूसरे पेट की लड़की को और इस पेट की लड़की को उस पेट के लड़के से ब्याह देते थे। इत्तिफ़ाक़ यह हुआ कि क़ाबील के साथ जो लड़की पैदा हुई, वह बहुत ख़ूबसूरत थी और हाबील के साथ जो पैदा हुई, वह बदसूरत थी। तो क़ाबील ने चाहा कि उस की बहन का निकाह हाबील से न हो, बल्कि ख़ुद उसी से हो। आदम अलैहिस्सलाम ने कहा कि तुम दोनों नियाज़ करो, जिस की नियाज़ क़ुबूल हो, वह उस को मिले। हाबील ने नियाज़ में मोटी-ताज़ी बकरी दी और वह क़ुबूल हुई और क़ाबील ने अनाज की बाल दी, वह भी निकम्मी और ख़राब, वह क़ुबूल न हुई। उन दिनों नियाज़ के क़ुबूल होने की यह निशानी थी कि जो क़ुबूल होती उस को आग आसमान से उतर कर जला जाती। हाबील की नियाज़ को आग जला गयी और क़ाबील की

(शेष पृष्ठ १७७ पर)

★ रु. ४/८ आ ७ ▨ व. लाज़िम ● नि. १/२ ∴ मु. अ़ि मु ता ख़. ५ ▨ व. न बी स.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिन् क़ब्लि अन् तक़्दिरू अ़लैहिम् ج फ़अ्-लमू अन्नल्ला-ह
ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (३४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वब्तग़ू इलैहिल्-
वसी-ल-त़ व जाहिदू फ़ी सबीलिही ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (३५)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़ंव्-व मिस्लहू म-अ़हू
लि यफ़्तदू बिही मिन् अ़ज़ाबि यौमिल्-
क़ियामति मा तुक़ुब्बि-ल मिन्हुम् ج व
लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (३६) युरीदू-न
अंय्यख़्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी-न
मिन्हा ۚ व लहुम् अ़ज़ाबुम्मुक़ीम (३७)
वस्सारिक़ु वस्सारिक़तु फ़क़्तअ़ू ऐदियहुमा
जज़ा-अम्-बिमा क-सबा नकालम्-मिनल्लाहि ط
वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (३८) फ़-मन् ता-ब
मिम्बअ़्-दि ज़ुल्मिही व अस्-ल-ह् फ़-इन्नल्ला-ह
यतूबु अ़लैहि ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (३९)
अ-लम् तअ़्-लम् अनल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति
वल्अर्ज़ि ط युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यग़्फ़िरु
लि मंय्यशा-उ ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन्
क़दीर (४०) या अय्युहर्रसूलु ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअ़ू-न फ़िल्कुफ़्रि
मिनल्लज़ी-न क़ालू आमन्ना बि अफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ्मिन् क़ुलूबुहुम् ج
व मिनल्लज़ी-न हादू ج सम्माअ़ू-न लिल्कज़िबि सम्माअ़ू-न लि क़ौमिन्
आख़री-न ۙ लम् यअ्तू-क ط युहर्रिफ़ूनल्-कलि-म मिम्बअ़्-दि मवाज़िअ़िही ج
यक़ूलू-न इन् ऊतीतुम् हाज़ा फ़ ख़ुज़ूहु व इल्लम् तुअ्तौहु फ़ह्ज़रू ط व
मंय्युरिदिल्लाहु फ़ित्-न-तहू फ़ लन् तम्लि-क लहू मिनल्लाहि शैअन् ط
उला-इकल्लज़ी-न लम् युरिदिल्लाहु अंय्युतह्हि-र क़ुलूबहुम् ط लहुम् फ़िद्दुन्या
ख़िज़्युंव्-व लहुम् फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (४१)

لا يحب الله ٦ — ٩٠ — المآئدة ٥

يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا
مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۝٣٣ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣٤ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَ
جَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٣٥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ
مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٣٦
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۡ وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٣٧ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءً
بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٣٨ فَمَنْ تَابَ مِنْ
بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣٩
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ
يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤٠ يٰٓاَيُّهَا
الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۚ
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ
الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(तैयार) है। (३३) हां, जिन लोगों ने इस से पहले कि तुम्हारे क़ाबू आ जाएं, तौबा कर ली, तो जान रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (३४) ★

ऐ ईमान वालो! ख़ुदा से डरते रहो और उसका क़ुर्ब हासिल करने का ज़रिया खोजते रहो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि कामियाबी पाओ। (३५) जो लोग काफ़िर हैं, अगर उन के पास धरती (के तमाम ख़ज़ाने और उस) का सब माल व मताअ हो, और उस के साथ उतना ही और भी हो, ताकि क़ियामत के दिन अज़ाब से (छुटकारा पाने का) बदला दें, तो उन से क़ुबूल नहीं किया जाएगा और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (३६) (पूरी तरह) चाहेंगे कि आग से निकल जाएं, मगर उस से नहीं निकल सकेंगे और उन के लिए हमेशा का अज़ाब है। (३७) और जो चोरी करे, मर्द हो या औरत, उन के हाथ काट डालो। यह उन के फ़ेलों की सज़ा और ख़ुदा की तरफ़ से सीख है और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (३८) और जो शख़्स गुनाह के बाद तौबा करे और भला बन जाये तो ख़ुदा उस को माफ़ कर देगा। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (३९) क्या तुम को मालूम नहीं कि आसमानों और ज़मीन में ख़ुदा ही की सल्तनत है? जिस को चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे बख़्श दे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (४०) ऐ पैग़म्बर! जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, (कुछ तो) उन में से (हैं), जो मुंह से कहते हैं कि हम मोमिन हैं और (कुछ) उन में से हैं जो यहूदी हैं, उन की वजह से ग़मनाक न होना। ये ग़लत बातें बनाने के लिए जासूसी करते फिरते हैं और ऐसे लोग लोगों (के बहकाने) के लिए जासूस बने हैं, जो अभी तुम्हारे पास नहीं आए। (सही) बातों को उन की जगहों (पर साबित होने) के बाद बदल देते हैं और (लोगों से) कहते हैं कि अगर तुम को यही (हुक्म) मिले तो उसे क़ुबूल कर लेना और अगर यह न मिले तो उस में एहतराज़ करना और अगर किसी को ख़ुदा गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तुम कुछ भी ख़ुदा से (हिदायत का) अख़्तियार नहीं रखते। ये वह लोग हैं, जिन के दिलों को ख़ुदा ने पाक करना नहीं चाहा। उन के लिए दुनिया में भी ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ा अज़ाब है।[1] (४१) (ये) झूठी बातें बनाने के लिए जासूसी करने वाले और

(पृष्ठ १७५ का शेष)

उसी तरह पड़ी रही। तब क़ाबील को भाई से जलन पैदा हो गई और उस से कहने लगा कि मैं तुझ को क़त्ल कर के रहूंगा। चुनांचे उस ने उस को क़त्ल कर ही दिया। एक जमाअत का यह ख़्याल है कि नियाज़ का किया जाना औरत की वजह से न था, क़ुरआन के ज़ाहिर लफ़्ज़ों से भी यही पाया जाता है कि नियाज़ की वजह औरत न थी, बल्कि दोनों भाइयों ने नियाज़ की थी। एक की क़ुबूल हुई और दूसरे की ना-मक़्बूल हुई, अल्लाह ही बेहतर जाने।

१. यह आयत यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई है। तौरात में हुक्म था कि जो बद-कारी करे, उस को संगसार कर दिया जाए, मगर उन्हों ने इस हुक्म को बदल कर यह अमल जारी किया कि बद-फ़ेली करने वाले को कोड़े मारते और गधे पर सवारी करा कर रुसवा करते। जनाब सरवरे कायनात सल्ल० के वक़्त में कई वाक़िआत हुए कि वे उन को फ़ैसले के लिए आप के पास लाए। हिजरत के बाद यह वाक़िआ हुआ कि यहूदी ने एक यहूदिन से मुंह काला किया। यहूदियों ने आपस में कहा कि चलो इस का फ़ैसला हज़रत सल्ल० से करायें। अगर कोड़े लंगाने और मुंह काला करने का हुक्म दें, तो मान लेना चाहिए, नहीं तो नहीं। इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि (शेष १७९ पर)

★रु० ५/९ आ ८ ∴ मु. अ़ि मु. ता क़. ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सम्माअू-न लिल्कजिबि अक्कालू-न लिस्सुह़्ति़ ط फ़इन् जाऊ-क फ़ह़्कुम् बैनहुम्
औ अअ़्रिज़् अ़न्हुम् ج व इन् तुअ़्-रिज़् अ़न्हुम् फ़ लंय्यज़ुर्रू-क शैअन् ط
व इन् ह़-कम्-त फ़ह़्कुम् बैनहुम् बिल्क़िस्ति़ ط इन्नल्ला-ह युहि़ब्बुल्-मुक़्सि़तीन (४२)
व कै-फ़ युह़क्किमू-न-क व अि़न्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हु़क्मुल्लाहि सुम्-म
य-त-वल्लौ-न मिम्बअ़्-दि जालि-क ط व मा
उला-इ-क बिल्-मुअ़्मिनीन ★ (४३) इन्ना
अन्ज़ल्नत्तौरा-त़ फ़ीहा हुदंव्-व नूरुन् ج
यह़्कुमु बिहन्नबिय्यूनल्लज़ी-न अस्लमू
लिल्लज़ी-न हादू वर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह़्बारु
बि मस्तुह़्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू
अ़लैहि शुहदा-अ ج फ़-ला तख़्शवुन्ना-स वख़्शौनि
व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् क़लीलन् ط
व मल्लम् यह़्कुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु
फ़ उला-इ-क हुमुल्काफ़िरून (४४) व
क-तब्ना अ़लैहिम् फ़ीहा अन्नन्नफ़्-स
बिन्नफ़्सि ۙ वल्अै़-न बिल्अै़नि वल्-अन्-फ़
बिल्-अन्फ़ि वल्-अुज़ु-न बिल्-अुज़ुनि वस्सिन्-न बिस्सिन्नि ۙ वल्जुरू-ह़ क़िसा़सुन् ط
फ़ मन् त-स़द्-द-क़ बिही फ़हु-व कफ़्फ़ारतुल्लहू ط व मल्लम् यह़्कुम् बिमा
अन्ज़-लल्लाहु फ़ उला-इ-क हुमुज़्ज़ालिमून (४५) व क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम्
बि ई़सब्नि मर्य-म मुस़द्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति ص व आतैनाहुल्-
इन्जी-ल फ़ीहि हुदंव्-व नूरुंव ۙ-व मुस़द्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि
मिनत्तौराति व हुदंव्-व मौअि़ज़तल्-लिल्मुत्तक़ीन ط (४६)

إِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ۚ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ
لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ أَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ۚ
لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ أَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ
أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ۚ وَ
إِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾
وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ
مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ إِنَّآ أَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ
فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ أَسْلَمُوْا
لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ
كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ
اخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ
بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ
فِيْهَآ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ
فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ

منزل ٢

(रिश्वत का) हराम माल खाने वाले हैं। अगर ये तुम्हारे पास (कोई मुक़दमा फ़ैसला कराने को) आएं, तो तुम उन में फ़ैसला कर देना या ऐराज़ करना और अगर उन से ऐराज़ करोगे, तो वे तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और अगर फ़ैसला करना चाहो तो इंसाफ़ का फ़ैसला करना कि ख़ुदा इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (४२) और ये तुम से (अपने मुक़दमे) किस तरह फ़ैसला करायेंगे, जब कि ख़ुद उन के पास तौरात (मौजूद) है, जिस में ख़ुदा का हुक्म (लिखा हुआ) है। (ये उसे जानते हैं,) फिर इस के बाद उस से फिर जाते हैं। और ये लोग ईमान ही नहीं रखते। (४३) ★

बेशक हमीं ने तौरात नाज़िल फ़रमायी, जिस में हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक़ नबी, जो (ख़ुदा के) फ़रमांबरदार थे, यहूदियों को हुक्म देते रहे हैं, और मशाइख़ और उलेमा भी, क्यों कि वे ख़ुदा की किताब के निगहबान मुक़र्रर किये गये थे और इस पर गवाह थे (यानी अल्लाह के हुक्म पर यक़ीन रखते थे), तो तुम लोगों से मत डरना और मुझी से डरते रहना और मेरी आयतों के बदले थोड़ी-सी क़ीमत न लेना और जो ख़ुदा के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं। (४४) और हम ने उन लोगों के लिए तौरात में यह हुक्म लिख दिया था कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और सब ज़ख़्मों का इसी तरह बदला है, लेकिन जो शख़्स बदला माफ़ कर दे, वह उस के लिए कफ़्फ़ारा होगा और जो ख़ुदा के नाज़िल फ़रमाये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग बे-इंसाफ़ हैं। (४५) और इन पैग़म्बरों के बाद उन्हीं के क़दमों पर हम ने ईसा बिन मरयम को भेजा, जो अपने से पहले की किताब तौरात की तस्दीक़ करते थे और उन को इंजील इनायत की, जिस में हिदायत और नूर है और तौरात की जो इस से पहली (किताब) है, तस्दीक़ करती है और परहेज़गारों को राह बताती और नसीहत करती है। (४६)

(पृष्ठ १७७ का शेष)
यहूद हज़रत के पास आए और बयान किया कि इन में से एक मर्द ने औरत से बदकारी की है। इस बारे में क्या इर्शाद है ? आप ने फ़रमाया कि तौरात में क्या लिखा है ? उन्हों ने कहा कि हम तो कोड़े मारते और रुसवा करते हैं। आप ने फ़रमाया कि तौरात लाओ। तौरात लायी गयी और एक शख़्स पढ़ने लगा। जब इस आयत पर गुज़र हुआ, जिस में बद-कारी की सज़ा रज्म यानी संगसार करना लिखा था, तो उस पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे की आयतें पढ़ दीं। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने, जो तौरात के बड़े माहिर थे, अर्ज़ किया कि आप हुक्म दें कि यह हाथ उठाए। हाथ उठाया तो उस के नीचे रज्म की आयत थी। हज़रत ने रज्म का हुक्म फ़रमा दिया और दोनों संगसार कर दिए गये। इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि उन के संगसार के वक़्त मैं भी मौजूद था। मैं ने मर्द को देखा कि औरत पर झुक-झुक जाता था और उस को पत्थर से बचाता था।

★रु. ६/१० आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्-यह्कुम् अह्लुल्-इन्जीलि बिमा अन्ज़-लल्लाहु फ़ीहि ط व मल्लम्
यह्कुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु फ़ उला-इ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (४७) व

अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनल्-

किताबि व मुहैमिनन् अलैहि फ़ह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु व
ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् अम्मा जा-अ-क

मिनल् - हक़्क़ि ط लि कुल्लिन् ज - अल्ना
मिन्कुम् शिर्अ-तंव्-व मिन्हाजन् ط व लौ

शा-अल्लाहु ल ज-अ-लकुम् उम्मतंव्वाहिदतंव्-व
लाकिल्-लि यब्लु-व-कुम् फ़ी मा आताकुम्

फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति ط इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम्

जमीअ़न् फ़ युनब्बि-उकुम् बिमा कुन्तुम्

फ़ीहि तख़्तलिफ़ून ﻻ (४८) व
अनिह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु

व ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् वह़्ज़रहुम्

अंय्यफ़्तिनू-क अम्बअ्-ज़ि मा अन्ज़-लल्लाहु

इलै-क ط फ़-इन् तवल्लौ फ़अ्-लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युसीबहुम् बि बअ्-ज़ि
ज़ुनूबिहिम् ط व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि ल-फ़ासिक़ून (४९) अ-फ़-हुक्मल्-

जाहिलिय्यति यब्ग़ू-न ط व मन् अह्सनु मिनल्लाहि हुक्मल्लिक़ौमिय्यूक़िनून
★ (५०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-यहू-द वन्नसारा
औलिया-अ ▨ बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ط व मंय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम्-
फ़ इन्नहू मिन्हुम् ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (५१)

لا يحب الله ٦ — ٩٢ — المآئدة ٥

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ
هُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا
مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ
لٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۙ۝ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ
بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝
اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى
اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

وقف غفران — منزل ٢

★रु. ७/११ आ ७ ▨ व. लाज़िम , व. गु., व. म.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और अह्ले इंजील को चाहिए कि जो हुक्म ख़ुदा ने उस में नाज़िल फ़रमाये हैं, उस के मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो ख़ुदा के नाज़िल किये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न देगा, तो ऐसे लोग ना-फ़रमान हैं। (४७) और (ऐ पैग़म्बर !) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और उन (सब) पर शामिल है, तो जो हुक्म ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उस के मुताबिक़ उन का फ़ैसला करना और हक़, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उस को छोड़ कर उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना। हम ने तुम में से हर एक (फ़िर्क़े) के लिए एक दस्तूर और एक तरीक़ा मुक़र्रर किया है और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सब को एक ही शरीअत पर कर देता, मगर जो हुक्म उस ने तुम को दिए हैं, उन में वह तुम्हारी आज़माइश करनी चाहता है, सो नेक कामों में जल्दी करो। तुम सब को ख़ुदा की तरफ़ लौट कर जाना है, फिर जिन बातों में तुम को इख़्तिलाफ़ था, वह तुम को बता देगा। (४८) और (हम फिर ताकीद करते हैं कि) जो (हुक्म) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उसी के मुताबिक़ उन में फ़ैसला करना और उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना और उन से बचते रहना कि किसी हुक्म से, जो ख़ुदा ने तुम पर नाज़िल फ़रमाया है, ये कहीं तुम को बहका न दें। अगर ये न माने तो जान लो कि ख़ुदा चाहता है कि उन के कुछ गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत नाज़िल करे और अक्सर लोग तो ना-फ़रमान हैं। (४९) क्या ये जाहिलियत के ज़माने के हुक्म के ख़्वाहिशमंद हैं ? और जो यक़ीन रखते हैं, उन के लिए ख़ुदा से अच्छा हुक्म किस का है ? (५०) ★

ऐ ईमान वालो ! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ ▧ ये एक दूसरे के दोस्त हैं। और जो शख़्स तुम में से उन को दोस्त बनाएगा, वह भी उन्हीं में से होगा। बेशक ख़ुदा ज़ालिम लोगों को

★रु. ७/११ आ ७ ▧ व. लाज़िम व. गु व. मं.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-त-रल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुंय्युसारिअू-न फ़ीहिम् यक़ूलू-न नख़्शा अन्
तुसीबना दा-इरतुन् ط फ़ अ-सल्लाहु अंय्यअ्ति-य बिल्फ़त्हि औ अम्रिम्-मिन्
अिन्दिही फ़युस्बिहू अला मा असर्रू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन ط (५२)
व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू अ हा-उला-इल्लज़ी-न अक़्समू बिल्लाहि जह-द
ऐमानिहिम् ٧ इन्नहुम् ल-म-अकुम् ط हबितत्
अअ्-मालुहुम् फ़ अस्बहू ख़ासिरीन ● (५३)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मंय्यर्तद्-द मिन्कुम्
अन् दीनिही फ़-सौ-फ़ यअ्तिल्लाहु
बि क़ौमिंय्युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू ٧
अज़िल्लतिन् अ-लल्-मुअ्मिनी-न अअिज़्ज़तिन्
अ-लल्काफ़िरी-न ز युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि
व ला यख़ाफ़ू-न लौम-त लाइमिन् ط
ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ ط
वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (५४)
इन्नमा वलिय्युकुमुल्ला-हु व रसूलुहू वल्लज़ी-न
आमनुल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त
व हुम् राकिअून (५५) व मंय्य-त-वल्लल्ला-ह
व रसूलहू वल्लज़ी-न आमनू फ़ इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुलग़ालिबून ★ (५६)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-लज़ीनत्तख़ज़ू दीनकुम् हुज़ुवंव्-व
लअिबम्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् वल्कुफ़्फ़ा-र औलिया-अ ج
वत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (५७) व इज़ा नादैतुम्
इलस्सलातित्-त-ख़ज़ूहा हुज़ुवंव-व लअिबन् ط ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ौमुल्ला
यअ्-क़िलून (५८) क़ुल् या अह्लल्किताबि हल् तन्क़िमू-न मिन्ना
इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना
व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लु ٧ व अन-न अक्स-रकुम् फ़ासिक़ून (५९)

المآئدة ٥ ٩٣ لا يحب الله ٦

مَرَضٌ يُسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ
فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى
مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ؕ ﴿۵۲﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ
يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَ
يُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ز يُجَاهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ
يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
هُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ
حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾
وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۵۸﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ
اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ

منزل ٢

हिदायत नहीं देता। (५१) तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) मर्ज़ है, तुम उन को देखोगे कि उन में दौड़-दौड़ के मिले जाते हैं। कहते हैं कि हमें डर है कि कहीं हम पर ज़माने की गर्दिश न आ जाए। सो क़रीब है कि ख़ुदा फ़त्ह भेजे या अपने यहां से कोई अम्र (नाज़िल फ़रमाए), फिर ये अपने दिल की बातों पर, जो छिपाया करते थे, शर्मिन्दा हो कर रह जाएंगे। (५२) (उस वक़्त) मुसलमान (ताज्जुब से) कहेंगे कि क्या ये वही हैं, जो ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़समें खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उन के अमल अकारत गए और वह घाटे में पड़ गए● (५३) ऐ ईमान वालो! अगर तुम में से कोई अपने दीन से फिर जाएगा, तो ख़ुदा ऐसे लोग पैदा कर देगा, जिन को वह दोस्त रखे और जिसे वे दोस्त रखें। और जो मोमिनों के हक़ में नर्मी करें और काफ़िरों से सख़्ती से पेश आएं, ख़ुदा की राह में जिहाद करें, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरें, यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, वह जिसे चाहता है, देता है। और ख़ुदा बड़े फैलाव वाला और जानने वाला है। (५४) तुम्हारे दोस्त तो ख़ुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिन लोग ही हैं, जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और (ख़ुदा के आगे) झुकते हैं। (५५) और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिनों से दोस्ती करेगा तो (वह ख़ुदा की जमाअत में दाख़िल होगा और) ख़ुदा की जमाअत ही ग़लबा पाने वाली है। (५६) ★

ऐ ईमान वालो! जिन लोगों को तुम से पहले किताबें दी गयी थीं, उन को और काफ़िरों को जिन्हों ने तुम्हारे दीन को हंसी और खेल बना रखा है, दोस्त न बनाओ और मोमिन हो तो ख़ुदा से डरते रहो। (५७) और जब तुम लोग नमाज़ के लिए अज़ान देते हो, तो ये उसे भी हंसी और खेल बनाते हैं। यह इस लिए कि समझ नहीं रखते। (५८) कहो कि अह्ले किताब! तुम हम में बुराई ही क्या देखते हो, इस के सिवा कि हम ख़ुदा पर और जो (किताब) हम पर नाज़िल हुई, उस पर और जो (किताबें) पहले नाज़िल हुईं, उन पर ईमान लाए हैं और तुम में अक्सर बद-किरदार हैं। (५९)

●सु. ३/४ ★रु. ८/१२ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् हल् उनब्बिउकुम् बि शर्रिम्मिन् ज़ालि-क मसूब-तन् अिन्दल्लाहि ط मल्ल-अ-न-
हुल्लाहु व ग़ज़ि-ब अलैहि व ज-अ-ल मिन्हुमुल्-क़िर-द-त वल्ख़नाज़ी-र व
अ-ब-दत्ताग़ू-त ط उला-इ-क शर्रुम्मकानंव्-व अज़ल्लु अन् सवा-इस्सबील (६०)
व इज़ा जा-ऊकुम् क़ालू आमन्ना व क़द्द-ख़लू बिलकुफ़्रि व हुम् क़द् ख़-रजू
बिही ط वल्लाहु अअ्-लमु बिमा कानू
यक्तुमून (६१) व तरा कसीरम्-मिन्हुम्
युसारिअू-न फ़िल्इस्मि वल्अुद्वानि व
अक्लिहिमुस्सुह्-त ط ल-बिअ्-स मा कानू
यअ्-मलून (६२) लौला यन्हाहुमुर्-रब्बानिय्यू-न
वल्-अह्बारु अन् क़ौलिहिमुल्-इस्-म व
अक्लिहिमुस्सुह्-त ط ल बिअ्-स मा कानू
यस्नअून (६३) व क़ालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि
मग़्लूलतुन् ط ग़ुल्लत् ऐदीहिम् व
लुअिनू - बिमा क़ालू ▨ बल् यदाहु
मब्सूततानि ۙ युन्फ़िक़ु कै - फ़ यशा - उ ط
व-ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल

فٰسِقُوْنَ ۝٥٩ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ
وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝٦٠
وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا
بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ۝٦١ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٦٢ لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ
الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝٦٣ وَقَالَتِ
الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ
يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا
لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٦٤ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا
عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٦٥ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ
لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ

وقف لازم

منزل ٢

इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन् ط व अल्क़ैना बैनहुमुल् - अदा-व-त
वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल् - क़ियामति ط कुल्लमा औक़दू नारल् - लिल्हर्बि
अत्-फ़ - अ - हल्लाहु ۙ व यस्औ - न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् ط वल्लाहु ला
युहिब्बुल्-मुफ़्सिदीन (६४) व लौ अन्-न अह्लल्-किताबि आमनू वत्तक़ौ
ल-कफ़्फ़र्ना अन्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-अद्ख़ल्नाहुम् जन्नातिन्नअीम (६५)
व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम्
मिर्रब्बिहिम् ल अ-क-लू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् ط मिन्हुम्
उम्मतुम्-मुक़्तसिदतुन् ط व कसीरुम्-मिन्हुम् सा-अ मा यअ् - मलून ★ (६६)

▨ व. लाज़िम ★रु. ६/१३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहो कि मैं तुम्हें बताऊं कि ख़ुदा के यहां इस से भी बुरा वदला (सज़ा) पाने वाले क़ौन हैं, वे लोग हैं, जिन पर ख़ुदा ने लानत की और जिन पर वह ग़ज़बनाक हुआ और (जिन को) उन में से बन्दर और सुअर बना दिया और जिन्हों ने शैतान की पूजा की। ऐसे लोगों का बुरा ठिकाना है और वे सीधे रास्ते से बहुत दूर हैं। (६०) और जब ये लोग तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालांकि कुफ़्र ले कर आते हैं और उसी को ले कर जाते हैं। और जिन बातों को ये छिपाए रखते हैं, ख़ुदा उन को ख़ूब जानता है। (६१) और तुम देखोगे कि उन में अक्सर गुनाह और ज़्यादती और हराम खाने में जल्दी कर रहे हैं। बेशक ये जो कुछ करते हैं बुरा करते हैं। (६२) भला उन के मशाइख़ और उलेमा उन्हें गुनाह की बातों और हराम खाने से मना क्यों नहीं करते हैं। (६३) और यहूद कहते हैं कि ख़ुदा का हाथ (गरदन से) बंधा हुआ है (यानी अल्लाह बख़ील है), उन्हीं के हाथ बांधे जाएं और ऐसा कहने की वजह से उन पर लानत हो ▨ (उस का हाथ बंधा हुआ नहीं), बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हैं। वह जिस तरह (और जितना) चाहता है, ख़र्च करता है।[1] और (ऐ मुहम्मद!) यह (किताब) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई, इस से उन में से अक्सर की शरारत और इन्कार बढ़ेगा और हम ने उन की आपसी दुश्मनी और कपट को क़ियामत तक के लिए डाल दिया है। ये जब लड़ाई के लिए आग जलाते हैं, ख़ुदा उस को बुझा देता है और यह मुल्क में फ़साद के लिए दौड़े फिरते हैं और ख़ुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (६४) और अगर अह्ले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते, तो हम उनसे उनके गुनाह मिटा देते और उनको नेमत के बाग़ों में दाख़िल करते। (६५) और अगर वे तौरात और इंजील को और जो (और किताबें) उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुईं, उन को क़ायम रखते, तो (उन पर रोज़ी वर्षा की तरह बरसती कि) अपने ऊपर से और पांवों के नीचे से खाते। इन में कुछ लोग दर्मियानी रास्ता अपनाने वाले हैं और बहुत से ऐसे हैं जिन के अमल बुरे हैं। (६६)★

---

१. उन लोगों का अजब हाल था, कभी अल्लाह तआला को फ़क़ीर कहते और अपने आप को ग़नी। यानी जब मालदार थे, तो अपने आप को ग़नी कहते थे और ख़ुदा को फ़क़ीर। अब जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झुठलाने और उन की मुख़ालफ़त करने से उन को ग़रीबी ने आ घेरा, तो यों चिल्लाने लगे कि ख़ुदा बख़ील है और बुख़्ल की वजह से हम पर से अपने अता का हाथ खींच लिया है। अल्लाह तआला ने इन बे-अदबियों की वजह से उन पर लानत की और फ़रमाया कि हमारे तो दोनों हाथ खुले हैं और जिस तरह चाहते हैं, ख़र्च करते हैं।

▨ व. लाज़िम ★रु. ९/१३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क ط व इल्लम् तफ़्अल् फ़-मा-बल्लग़्-त रिसाल-तहू ط वल्लाहु यअ्-सिमु-क मिनन्नासि ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमल् - काफ़िरीन (६७) क़ुल् या अह्लल् - किताबि लस्तुम् अ़ला शैइन् ह़त्ता तुक़ीमुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् ط व ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन् ج फ़ ला तअ्-स अ़-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन (६८) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिह़न् फ़ ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६९) ल-क़द् अ-ख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्रा-ई-ल व अर्सल्ना इलैहिम् रुसुलन् ط कुल्लमा जा-अहुम् रसूलुम्-बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुहुम् ل फ़रीक़न् कज़्ज़बू व फ़रीक़ंय्यक़्तुलून ق (७०) व ह़सिबू अल्ला तकू-न फ़ित-नतुन् फ़ अ़मू व सम्मू सुम्-म ताबल्लाहु अ़लैहिम् सुम्-म अ़मू व सम्मू कसीरुम्-मिन्हुम् वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्-मलून (७१) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म ط व क़ालल्मसीहु या बनी इस्रा-ई-लअ्-बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् ط इन्नहू मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् ह़र्रमल्लाहु अ़लैहिल्-जन्न-त व मअ्वाहुन्नारु ط व मा लिज़्ज़ालिमी - न मिन् अन्सार (७२) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह सालिसु सलासतिन् ▨ व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुंव्वाहिदुन् ط व इल्लम् यन्तहू अ़म्मा यक़ूलू-न ल-य-मस्सन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (७३).

لا یحب اللہ ٦ ۹۵ المآئدۃ ٥

وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ
يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾
قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَ
الْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَ
النَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْۤ
اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا
لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْۤا
اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا
وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ
الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ
يٰبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ
بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ
مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐ पैग़म्बर ! जो इर्शाद ख़ुदा की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं, सब लोगों को पहुंचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम ने ख़ुदा के पैग़ाम पहुंचाने में कोताही की (यानी पैग़म्बरी का फ़र्ज़ अदा न किया) और ख़ुदा तुम को लोगों से बचाए रखेगा। बेशक ख़ुदा मुन्किरों को हिदायत नहीं देता। (६७) कहो कि ऐ अह्ले किताब ! जब तक तुम तौरात और इंजील को और जो (और किताबें) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम लोगों पर नाज़िल हुईं, उन को क़ायम न रखोगे, कुछ भी राह पर नहीं हो सकते और (यह क़ुरआन) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, इस से उन में से अक्सर की सर-कशी और कुफ़्र और बढ़ेगा, तो तुम काफ़िरों की क़ौम पर अफ़सोस न करो। (६८) जो लोग ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएंगे और नेक अमल करेंगे, चाहे वे मुसलमान हों या यहूदी या सितारा परस्त या ईसाई, उन को (क़ियामत के दिन) न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (६९) हम ने बनी इस्राईल से अह्द भी लिया और उन की तरफ़ पैग़म्बर भी भेजे, (लेकिन) जब कोई पैग़म्बर उन के पास ऐसी बातें ले कर आता, जिन को उन के दिल नहीं चाहते थे, तो वह (नबियों की) एक जमाअत को तो झुठला देते और एक जमाअत को क़त्ल कर देते थे। (७०) और यह ख़्याल करते थे कि (इस से उन पर) कोई आफ़त नहीं आने की, तो वे अंधे और बहरे हो गये फिर ख़ुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमायी, (लेकिन) फिर उन में से बहुत से अंधे और बहरे हो गए और ख़ुदा उन के सब कामों को देख रहा है। (७१) वे लोग बे-शुबहा काफ़िर हैं, जो कहते हैं कि मरयम के बेटे (ईसा) मसीह ख़ुदा हैं, हालांकि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इस्राईल ! ख़ुदा ही की इबादत करो, जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी, (और जान रखो कि) जो शख़्स ख़ुदा के साथ शिर्क करेगा, ख़ुदा उस पर बहिश्त को हराम कर देगा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (७२) वे लोग (भी) काफ़िर हैं, जो इस बात के क़ायल हैं कि ख़ुदा तीन में का तीसरा है ▨ हालांकि उस एक माबूद के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। अगर ये लोग ऐसे क़ौल (व अक़ीदों) से बाज़ नहीं आएंगे, तो उन में जो काफ़िर हुए हैं, वे तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब पाएंगे। (७३) तो ये क्यों ख़ुदा

▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-फ़-ला यतूबू-न इलल्लाहि व यस्तग़्फ़िरूनहू ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (७४)
मल्मसीहुब्नु मर्य-म इल्ला रसूलुन् ج क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु ط व
उम्मुहू सिद्दीक़तुन् ط काना यअ्कुलानित्तआ-म ط उन्ज़ुर् कै-फ़ नुबय्यिनु
लहुमुल्आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्फ़कून (७५) क़ुल् अ-तअ्-बुदू-न मिन्
दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व
ला नफ़्अन् ط वल्लाहु हुवस्समीअुल् -
अ़लीम (७६) क़ुल् या अह्लल्-किताबि
ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल्-हक़्क़ि व
ला तत्तबिअ़ू अह्वा-अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू
मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरंव्-व ज़ल्लू
अन् सवा - इस्सबील ★ (७७)
लुअिनल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-बनी इस्रा-ई-ल
अ़ला लिसानि दाऊ-द व ईसब्नि मर्य-म ط
ज़ालि-क बिमा अ़-सव्-व कानू यअ्-तदून (७८)
कानू ला य-त-नाहौ-न अ़म्मुन्करिन् फ़-अ़-लूहु ط
ल बिअ्-स मा कानू यफ़्अ़लून (७९) तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-त-वल्लौनल्लज़ी-न
क-फ़रू ط ल-बिअ्-स मा क़द्दमत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु
अ़लैहिम् व फ़िल्अ़ज़ाबि हुम् ख़ालिदून (८०) व लौ कानू युअ्मिनू-न
बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा उन्ज़ि-ल इलैहि मत्तख़ज़ूहुम् औलिया-अ व लाकिन्-न
कसीरम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (८१) ल-त-जिदन्-न अशद्दन्नासि अ़दावतल्-लिल्लज़ी-न
आमनुल्-यहू-द वल्लज़ी-न अश्रकू ج व ल - तजिदन्-न अक़्र-बहुम्
मवद्दतल्-लिल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा ط ज़ालि-क बि अन्-न
मिन्हुम् क़िस्सीसी-न व रुह्बानंव्-व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (८२)

لايحب الله ٦ ٩٦ للآيدة ٥
مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ
كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا
تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا
عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى
لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾
كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾
تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ
اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَ
الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا
نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾
منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के आगे तौबा नहीं करते और उस से गुनाहों की माफ़ी नहीं मांगते। और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (७४) मसीह बिन मरयम तो सिर्फ़ (ख़ुदा के) पैग़म्बर थे, उन से पहले भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके थे और उन की वालिदा (मरयम ख़ुदा की वली और) सच्ची फ़रमांबरदार थीं। दोनों (इंसान थे और) खाना खाते थे। देखो, हम इन लोगों के लिए अपनी आयतें किस तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं, फिर (यह) देखो कि ये किधर उलटे जा रहे हैं। (७५) कहो कि तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ की क्यों पूजा करते हो, जिस को तुम्हारे नफ़ा और नुक़्सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं और ख़ुदा ही (सब कुछ) सुनता-जानता है (७६) कहो कि अह्ले किताब! अपने दीन (की बात) में ना-हक़ मुबालग़ा न करो और ऐसे लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलो, जो (ख़ुद भी) पहले गुमराह हुए और भी अक्सरों को गुमराह कर गये और सीधे रास्ते से भटक गये। (७७) ★

जो लोग बनी इस्राईल में काफ़िर हुए, उन पर दाऊद और ईसा बिन मरयम की ज़ुबान से लानत की गयी, यह इस लिए कि ना-फ़रमानी करते थे और हद से आगे बढ़ जाते थे। (७८) (और) बुरे कामों से जो वे करते थे, एक दूसरे को रोकते नहीं थे। बिला शुब्हा वे बुरा करते थे। (७९) तुम उन में से बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं। उन्हों ने जो कुछ अपने वास्ते आगे भेजा है, बुरा है (वह यह) कि ख़ुदा उन से ना-ख़ुश हुआ और वे हमेशा अज़ाब में (पड़े) रहेंगे। (८०) और अगर वे ख़ुदा पर और पैग़म्बर पर और जो किताब उन पर नाज़िल हुई थी, उस पर यक़ीन रखते तो उन लोगों को दोस्त न बनाते, लेकिन उन में अक्सर बद-किरदार हैं। (८१) (ऐ पैग़म्बर!) तुम देखोगे कि मोमिनों के साथ सब से ज़्यादा दुश्मनी करने वाले यहूदी और मुश्रिक हैं और दोस्ती के लिहाज़ से मोमिनों से क़रीब-तर उन लोगों को पाओगे, जो कहते हैं कि हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में आलिम भी हैं और मशाइख़ भी और वे तकब्बुर नहीं करते। (८२)

और जब इस (किताब) को सुनते हैं, जो (सब से पिछले) पैग़म्बर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुई तो तुम देखते हो कि उन की आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं, इस लिए कि उन्हों ने हक़ बात पहचान ली और वे (ख़ुदा की जनाब में) अर्ज़ करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम ईमान लाए, तो हम को मानने वालों में लिख ले। (८३) और हमें क्या हुआ है कि

★रु. १०/१४ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सातवां पारः वइज़ासमिअू

सूरतुल्मा-इदति आयत ८३ से १२०

व इज़ा समिअू मा उन्ज़ि-ल इलर्रसूलि तरा अअ्-युनहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दमअि मिम्मा
अ-रफ़ू मिनल्हक़्क़ि ८ यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (८३)
व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्हक़्क़ि॥ व नत्मअु
अंय्युद्ख़ि-लना रब्बुना म-अल्-क़ौमिस्सालिहीन (८४) फ़-असाबहुमुल्लाहु बिमा क़ालू
जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ८ व ज़ालि-क जज़ा-उल् मुह्सिनीन (८५) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इ-क अस्हाबुल्-जहीम
★ (८६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहर्रिमू तय्यिबाति मा अ-हल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्-तदू८ इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुअ्-तदीन
(८७) व कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्- वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (८८) ला युआख़िज़ु-कुमुल्लाहु बिल्लग्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिय्युआख़िज़ुकुम् बिमा अक़्क़त्तुमुल्-ऐमा-न८ फ़-कफ़्फ़ारतुहू इत्आमु अ-श-रति मसाकी-न

وإذا سمعوا ٩٧ المائدة

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ
الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ
الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَ
نَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾ فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ
بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ
جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾ وَ
كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ
مُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم
بِمَا عَقَّدتُّمُ الْأَيْمَانَ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ
أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَن
لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ
وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٨٩﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ وَالْأَزْلَامُ
رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٠﴾ إِنَّمَا
يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

منزل ٢

मिन् औसति मा तुत्अिमू-न अह्लीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तह्रीरु र-क़-बतिन्८
फ़ मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन् ८ ज़ालि-क कफ़्फ़ारतु
ऐमानिकुम् इज़ा ह-लफ़्तुम् ८ वह्फ़ज़ू ऐमानकुम् ८ कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु
लकुम् आयातिही ल-अल्लकुम् तश्कुरून. (८९) या अय्युहल्लज़ी-न
आमनू इन्नमल्ख़म् - रु वल्मैसिरु वल्अन्साबु वल्अज़्लामु
रिज्सुम्मिन् अ-मलिश्शैतानि फ़ज्तनिबूहु ल - अल्लकुम् तुफ़्लिहून (९०)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा पर और हक़ बात पर, जो हमारे पास आयी है, ईमान न लाएं। और हम उम्मीद रखते हैं कि परवरदिगार हम को नेक बन्दों के साथ बहिश्त में दाख़िल करेगा। (८४) तो ख़ुदा ने उन को इस कहने के बदले (बहिश्त के) बाग़ अता फ़रमाये, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे हमेशा उन में रहेंगे और भले लोगों का यही बदला है। (८५) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं। (८६) ★

मोमिनो! जो पाकीज़ा चीज़ें ख़ुदा ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उनको हराम न करो और हद से न बढ़ो कि ख़ुदा हद से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता। (८७) और हलाल पाक रोज़ी ख़ुदा ने तुमको दी है, उसे खाओ और ख़ुदा से, जिस पर ईमान रखते हो, डरते रहो। (८८) ख़ुदा तुम्हारी बे-इरादा[1] क़समों की तुमसे पकड़ न करेगा,[2] लेकिन पुख़्ता क़समों पर (जिनके खिलाफ़ करोगे, तो) पकड़ लेगा, तो उस का कफ़्फ़ारा दस मुहताजों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है, जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो या उन को कपड़े देना या एक ग़ुलाम आज़ाद करना, और जिस को यह न मिले, वह तीन रोज़े रखे। यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है, जब तुम क़सम खा लो (और उसे तोड़ दो) और (तुम को) चाहिए कि अपनी क़स्मों की हिफ़ाज़त करो। इस तरह ख़ुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम शुक्र करो। (८९) ऐ ईमान वालो! शराब और जुआ और बुत और पांसे (ये सब) नापाक काम शैतान के अमलों से हैं, सो

---

१. जैसे कोई दूर से किसी आदमी को देखे और कहे कि ख़ुदा की क़सम यह तो अब्दुल्लाह है, मगर हक़ीक़त में अब्दुल्लाह न हो या जैसे कुछ लोगों की आदत होती है कि बिला इरादा—'ला वल्लाह' या 'बला वल्लाह' या 'वल्लाह', 'बिल्लाह' कहते हैं। ऐसी क़स्मों पर कोई पकड़ नहीं है।

२. जैसे कोई आदमी क़सम खाये कि मैं कभी मांस नहीं खाऊंगा, या निकाह नहीं करूंगा।

★रु. ११/१ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नमा युरीदुश्शैतानु अंय्यूक़ि-अ बैनकुमुल्अदाव-त वल्बग़्ज़ा-अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व
यसुद्दकुम् अन् ज़िक्रिल्लाहि व अनिस्सलाति फ़ हल् अन्तुम् मुन्तहून (९१) व
अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल वह्ज़रू फ़ इन् तवल्लैतुम् फ़अ्-लमू अन्नमा अला
रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन (९२) लै-स अ-लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति

وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَاَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى
رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا
وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ وَمَنْ
قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ
ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ
ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ
فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ
وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا
دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ
ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

منزل ٢

जुनाहुन् फ़ीमा तअिमू इज़ा मत्तक़व्-व
आमनू व अमिलुस्सालिहाति सुम्मत्तक़व्-व
आमनू सुम्मत्तक़व्-व अह्सनू वल्लाहु
युहिब्बुल् - मुह्सिनीन ★(९३) या
अय्युहल्-लज़ी-न आमनू ल-यब्लुवन्-न-कुमुल्लाहु
बि शैइम्-मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व
रिमाहुकुम् लि यअ्-ल-मल्लाहु मंय्यख़ाफ़ुहू बिल्ग़ैबि
फ़-मनिअ्-तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन्
अलीम (९४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू
ला तक़्तुलुस्सै - द व अन्तुम् हुरुमुन्
व मन् क़-त-लहू मिन्कुम् मुतअ़म्मिदन्
फ़ जज़ा-उम्-मिस्लु मा क़-त-ल मिनन्न-अमि
यह्कुमु बिही ज़वा अद्लिम् - मिन्कुम्
हद्यम्-बालिग़ल्-कअ्-बति औ कफ़्फ़ारतुन् तआमु मसाकी-न औ अद्लु ज़ालि-क
सियामल्-लि यज़ू-क़ व-बा-ल अम्रिही अफ़ल्लाहु अम्मा स-लफ़ व मन्
आ-द फ़ यन्तक़िमुल्लाहु मिन्हु वल्लाहु अज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (९५)
उहि़ल् - ल लकुम् सैदुलबह्रि व तआमुहू मताअ़ल्लकुम् व लिस्सय्यारति
व हुर्रि - म अलैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन् वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी
इलैहि तुह्शरून (९६) ज-अ-लल्लाहुल् - कअ् - बतल् - बैतल् - हरा-म
क़ियामल्लिन्नासि वश्शह्रल् - हरा - म वल्हद-य वल्क़ला - इ - द
ज़ालि-क लि तअ्-लमू अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा
फ़िल्अर्ज़ि व अन्नल्ला-ह बि कुल्लि शैइन् अलीम (९७)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन से बचते रहना, ताकि निजात पाओ। (९०) शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हें ख़ुदा की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो तुम को (इन कामों से) बाज़ रहना चाहिए।[1] (९१) और ख़ुदा की फ़रमांबरदारी और (ख़ुदा के) रसूल की इताअत करते रहो और डरते रहो। अगर मुंह फेरोगे तो जान रखो कि हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का खोल कर पहुंचा देना है। (९२) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन पर उन चीज़ों का कुछ गुनाह नहीं जो वह खा चुके, जब कि उन्होंने परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम किए। फिर परहेज़ किया और भले काम किए और ख़ुदा भला करने वालों को दोस्त रखता है। (९३) ★

मोमिनो ! किसी क़दर शिकार से, जिन को तुम हाथों और नेज़ों से पकड़ सको, ख़ुदा तुम्हारी आज़माइश करेगा, (यानी एहराम की हालत में शिकार के मना करने से), ताकि मालूम करे कि उस से ग़ायबाना कौन डरता है, तो जो उस के बाद ज़्यादती करे, उस के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (९४) मोमिनो ! जब तुम एहराम की हालत में हो, तो शिकार न मारना और जो तुम में से जान-बूझ कर उसे मारे तो (या तो उस का) बदला (दे और वह यह है कि) उसी तरह का चारपाया, जिसे तुम में से दो एतबार वाले आदमी तै कर दें, क़ुर्बानी (करे और यह क़ुर्बानी) काबे पहुंचायी जाए, या कफ़्फ़ारा (दे और वह) मिस्कीनों को खाना खिलाना (है) या उस के बराबर रोज़े रखे ताकि अपने काम की सज़ा (का मज़ा) चखे (और) जो पहले हो चुका, वह ख़ुदा ने माफ़ कर दिया और जो फिर (ऐसा काम) करेगा, तो ख़ुदा उस से बदला लेगा और ख़ुदा ग़ालिब और बदला लेने वाला है। (९५) तुम्हारे लिए दरिया (की चीज़ों) का शिकार और उन का खाना हलाल कर दिया गया है, (यानी) तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए और जंगल (की चीज़ों) का शिकार जब तक तुम एहराम की हालत में रहो, तुम पर हराम है और ख़ुदा से, जिस के पास तुम (सब) जमा किये जाओगे, डरते रहो। (९६) ख़ुदा ने इज़्ज़त के घर (यानी) काबे को लोगों के लिए अम्न की वजह मुक़र्रर फ़रमाया है और इज़्ज़त के महीनों को और क़ुर्बानी को और उन जानवरों को, जिन के गले में पट्टे बंधे हों, यह इस लिए कि तुम जान लो कि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, ख़ुदा सब को जानता है और यह कि ख़ुदा को हर चीज़ का इल्म है। (९७) जान

१. यह तर्जुमा हम ने 'फ़ हल अन्तुम मुन्तहून' का किया है और इस में सवाल नहीं है। इस में हुक्म ही हमारे नज़दीक सही है।

★रु. १२/२ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्अिक़ाबि व अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ط (९८)
मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ु ط वल्लाहु यअ्-लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून
(९९) क़ुल् ला यस्तविल्ख़बीसु वत्तय्यिबु व लौ अअ्-ज-ब-क कस्रतुल्-ख़बीसि ج
फ़त्तक़ुल्ला-ह या उलिल्अल्बाबि ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ★ (१००) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तस्अलू अ़न्
अश्या-अ इन् तुब्-द लकुम् तसुअ्कुम् ج व
इन् तस्अलू अ़न्हा ही-न युनज़्ज़लुल्-क़ुर्-आनु
तुब्-द लकुम् ط अ़फ़ल्लाहु अ़न्हा ط
वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (१०१) क़द्
स-अ-लहा क़ौमुम्मिन् क़ब्लिकुम् सुम्-म अस्बहू
बिहा काफ़िरीन (१०२) मा ज-अ़-लल्लाहु
मिम्बहीरतिंव्-व ला सा-इबतिंव-व ला
वसीलतिंव्-व ला हामिंव्-لا-व लाकिन्नल्-
लज़ी-न क-फ़रू यफ़्तरू-न अ़-लल्लाहिल्-
कज़ि-ब ط व अक्सरुहुम् ला यअ्-क़िलून
(१०३) व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ
इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि
क़ालू हस्बुना मा व-जद्ना अ़लैहि
आबा-अना ط अ-व लौ का-न आबा-उहुम् ला यअ्-लमू-न शैअंव्-व ला यह्तदून
(१०४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अ़लैकुम् अन्फ़ुसकुम् ج ला यज़ुर्रुकुम्
मन् ज़ल्-ल इज़ह्तदैतुम् ط इलल्लाहि मर्जिउ़कुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम्
बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१०५) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू शहादतु बैनिकुम्
इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु हीनल्-वसिय्यतिस्नानि ज़वा अ़द्लिम्-मिन्कुम्
औ आख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-असाबत्कुम्
मुसीबतुल्मौति ط तह्बिसूनहुमा मिम्बअ्-दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि
इनिर्तब्तुम् ला नश्तरी बिही स-म-नंव्-व लौ का-न ज़ाक़ुर्बा لا व ला
नक्तुमु शहा-दःतु لا ल्लाहि इन्ना इज़ल्लमिनल्-आसिमीन (१०६)

المآئدة ٥ — ٩٩ — واذا سمعوا ٧

رَحِيمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾
قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ يٰأُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَسْأَلُوا
عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ
تُبْدَ لَكُمْ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِنْ
قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كٰفِرِينَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ
وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ ۙ وَلٰكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۖ
وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلٰى مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ وَ
إِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ اٰبَاؤُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۖ
لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ
إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ أَوْ
اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ
الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ
لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ إِنَّا
إِذًا لَمِنَ الْاٰثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ عُثِرَ عَلٰى أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُومٰنِ

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रखो कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है और यह कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान भी है (६८) पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ (ख़ुदा का पैग़ाम) पहुंचा देना है और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और कुछ छिपाते हो, ख़ुदा को सब मालूम है। (६६) कह दो कि ना-पाक और पाक चीज़ें बराबर नहीं होतीं, गो ना-पाक चीज़ों की ज़्यादती तुम्हें ख़ुश ही लगे, तो अक़्ल वालो ! ख़ुदा से डरते रहो, ताकि कामियाबी हासिल करो (१००) ★ मोमिनो ! ऐसी चीज़ों के बारे में मत सवाल करो कि अगर (उन की हक़ीक़तें) तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर क़ुरआन के नाज़िल होने के दिनों में ऐसी बातें पूछोगे, तो तुम पर ज़ाहिर भी कर दी जाएंगी। (अब तो) ख़ुदा ने ऐसी बातों (के पूछने) से दर-गुज़र फ़रमाया है और ख़ुदा बख़्शने वाला बुर्दबार है। (१०१) इस तरह की बातें तुम से पहले लोगों ने भी पूछी थीं (मगर जब बतायी गयीं तो) फिर उन के इंकारी हो गये। (१०२) ख़ुदा ने न तो बहीरा[1] कुछ चीज़ बनाया है और न साइबा[2] और न वसीला[3] और न हाम[4] बल्कि काफ़िर ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हैं और ये अक्सर अक़्ल नहीं रखते।[5] (१०३) और जब इन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उस की ओर अल्लाह के रसूल की तरफ़ रुजू करो, तो कहते हैं कि जिस तरीक़े पर हम ने अपने बाप-दादा को पाया है, वही हमें काफ़ी है। भला अगर उन के बाप-दादा, न तो कुछ जानते हों और न सीधे रास्ते पर हों, (तब भी ?) (१०४) ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों की हिफ़ाज़त करो। जब तुम हिदायत पर हो, तो कोई गुमराह तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। तुम सब को ख़ुदा की तरफ़ से लौट कर जाना है। उस वक़्त वह तुम को तुम्हारे सब कामों से जो (दुनिया में) किये थे, आगाह करेगा (और उन का बदला देगा।) (१०५) मोमिनो ! जब तुम में से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो शहादत (गवाही, का निसाब) यह है कि वसीयत के वक़्त तुम (मुसलमानों) में से दो मर्द अद्ल वाले (यानी एतबार वाले) गवाह हों, या अगर (मुसलमान न मिलें और) तुम सफ़र कर रहे हो और (उस वक़्त) तुम पर मौत की मुसीबत वाक़ेअ हो तो किसी दूसरे मज़हब के दो (शख़्सों को) गवाह (कर लो)। अगर तुम को उन गवाहों के बारे में कुछ शक हो, तो उन को (अस्र की) नमाज़ के बाद खड़ा करो और दोनों ख़ुदा की क़स्में खाएं कि हम शहादत का बदला नहीं लेंगे, गो हमारा रिश्तेदार ही हो और न हम अल्लाह की गवाही को छिपाएंगे, अगर ऐसा करेंगे, तो गुनाहगार

---

१. ऊंटनी जो बुतों की नज़्र की जाती थी, उस के कान फाड़ कर छोड़ देते थे और कोई उस का दूध दूह नहीं सकता था।

२. जानवर जो बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था और उस पर बोझ नहीं लादते थे।

३. ऊंटनी जो अव्वल उम्र में ऊपर तले दो मादा बच्चे देती, उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे।

४. ऊंट जिस की नस्ल से कुछ बच्चे ले कर सवारी वग़ैरह का काम लेना छोड़ देते थे।

५. काफ़िरों ने बहीरा और साइबा और वसीला और हाम तो ख़ुद मुक़र्रर कर रखे थे और यह कहते थे कि यह इब्राहीमी शरीअत के हुक्म हैं और इन से अल्लाह का क़ुर्ब हासिल होता है। ख़ुदा ने फ़रमाया, यह सब झूठ और ख़ुदा पर बुहतान है। उस ने न किसी जानवर का नाम वहीरा वग़ैरह रखा, न उस को शरई हैसियत दी, न इसे क़ुर्बत का ज़रिया क़रार दिया।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़इन् अुसि - र अ़ला अन्नहुमस्तहक़्क़ा इस्मन् फ़आख़रानि यक़ूमानि
मक़ामहुमा मिनल्लज़ीनस्-तहक़्-क़ अ़लैहिमुल्-औलयानि फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि
ल-शहादतुना अहक़्क़ु मिन् शहादति - हिमा व मअ़् - तदैना ج इन्ना
इज़ल्लमिनज़्-आलिमीन (१०७) ज़ालि-क अद्ना अंय्यअ्तू बिश्शहादति अ़ला
वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्-द
ऐमानुम्बअ़् - द ऐमानिहिम् ط वत्तक़ुल्ला - ह
वस्मअ़ू ط वल्लाहु ला यह्दिल् - क़ौमल् -
फ़ासिक़ीन★(१०८) यौ-म यज्मअुल्लाहुर्-
रुसु - ल फ़ - यक़ूलु माज़ा उजिब्तुम् ط
क़ालू ला अ़िल्-म लना ط इन्न-क अन्-त
अ़ल्लामुल्ग़ुयूब (१०९) इज़् क़ालल्लाहु
या अ़ीसब्-न मर्यमज़्कुर् निअ़्-मती अ़लै-क व
अ़ला वालिदति - क ▧ इज़् अय्यत्तु - क
बिरूहिल्क़ुदुसि قف तुकल्लिमुन्ना - स फ़िल्मह्दि
व कह्लन् ج व इज़् अ़ल्लम्तुकल् -
किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल ج
व इज़् तख़्लु-क़ु मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि बि-इज़्नी मع फ़ तन्फ़ुख़ु फ़ीहा
फ़तकूनु तैरम् - बि - इज़्नी व तुब्रि-उल्-अक्-म-ह वल्-अब्-र-स बि-इज़्नी ج
व इज़् तुख़्रिजुल्मौता बि-इज़्नी ج व इज़् क - फ़फ़्तु बनी इस्रा - ई-ल
अ़न्-क इज़् जिअ्तहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् इन्
हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (११०) व इज़् औहैतु इलल्-हवारिय्यी-न
अन् आमिनू बी व बि-रसूली ج क़ालू आमन्ना वश्हद् बि-अन्नना मुस्लिमून
(१११) इज़् क़ालल्-हवारिय्यू-न या अ़ीसब्-न मर्य-म हल् यस्ततीअु रब्बु-क
अंय्युनज़्ज़ि-ल अ़लैना मा-इ-द-तम्-मिनस्समा-इ ط क़ालत्तक़ुल्ला - ह इन् कुन्तुम्
मुअ्मिनीन (११२) क़ालू नुरीदु अन् नअ्कु-ल मिन्हा व तत्म-इन्-न क़ुलूबुना
व नअ़्-ल-म अन् क़द् सदक़्तना व नकू-न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन●(११३)

واذا سمعوا ٧   ١٠٠   المآئدة ٥

مقامهما من الذين استحق عليهم الاوليٰن فيقسمٰن بالله
لشهادتنا احق من شهادتهما وما اعتدينا ۖ انا اذا لمن
الظلمين ۝ ذلك ادنى ان يأتوا بالشهادة على وجهها او يخافوا
ان ترد ايمان بعد ايمانهم ۗ واتقوا الله واسمعوا ۗ والله لا يهدي
القوم الفسقين ۝ يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا اجبتم ۖ
قالوا لا علم لنا ۖ انك انت علام الغيوب ۝ اذ قال الله يعيسى
ابن مريم اذكر نعمتي عليك وعلى والدتك ۘ اذ ايدتك بروح
القدس ۛ تكلم الناس في المهد وكهلا ۖ واذ علمتك الكتب و
الحكمة والتورىة والانجيل ۖ واذ تخلق من الطين كهيئة الطير
باذني فتنفخ فيها فتكون طيرا باذني وتبرئ الاكمه والابرص
باذني ۖ واذ تخرج الموتى باذني ۖ واذ كففت بني اسراءيل عنك
اذ جئتهم بالبينت فقال الذين كفروا منهم ان هذا الا سحر
مبين ۝ واذ اوحيت الى الحواريين ان امنوا بي وبرسولي ۚ
قالوا امنا واشهد باننا مسلمون ۝ اذ قال الحواريون
يعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك ان ينزل علينا مائدة
من السماء ۖ قال اتقوا الله ان كنتم مؤمنين ۝ قالوا نريد ان
نأكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم ان قد صدقتنا ونكون

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होंगे। (१०६) फिर अगर मालूम हो जाए कि इन दोनों ने (झूठ बोल कर) गुनाह हासिल किया है तो जिन लोगों का उन्हों ने हक़ मारना चाहा था, उन में से उन की जगह और दो गवाह खड़े हों, जो (मय्यत से) क़रीबी ताल्लुक़ात रखते हों, फिर वे ख़ुदा की क़स्में खाएं कि हमारी गवाही उन की गवाही से बहुत सच्ची है और हम ने कोई ज़्यादती नहीं की, ऐसा किया हो, तो हम बे-इंसाफ़ हैं। (१०७) इस तरीक़े से बहुत क़रीब है कि ये लोग सही-सही गवाही दें या इस बात से डरें कि (हमारी) क़स्में उन की क़स्मों के बाद रद्द कर दी जाएंगी। और ख़ुदा से डरो और (उस के हुक्मों को कान खोल कर सुनो और) ख़ुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०८) ★

(वह दिन याद रखने के लायक़ है) जिस दिन ख़ुदा पैग़म्बरों को जमा करेगा, फिर उनसे पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब मिला था। वे अर्ज़ करेंगे कि हमें कुछ मालूम नहीं। तू ही ग़ैब की बातों को जानता है। (१०९) जब ख़ुदा (ईसा से) फ़रमाएगा कि ऐ ईसा बिन मरयम! मेरे उन एहसानों को याद करो, जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किए ▨ जब मैंने रूहुल क़ुदुस (यानी जिब्रील) से तुम्हारी मदद की। तुम झूले में और जवान होकर एक ही नस्क़ पर लोगों से बातें करते थे और जब मैं ने तुम को किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बना कर उस में फूंक मार देते थे, तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगता था और पैदाइशी अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले मेरे हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से (ज़िंदा कर के क़ब्र से) निकाल खड़ा करते थे और जब मैं ने बनी इस्राईल (के हाथों) को तुम से रोक दिया, जब तुम उन के पास खुले निशान ले कर आए, तो जो उन में से काफ़िर थे, कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (११०) और जब मैंने हवारियों की तरफ़ हुक्म भेजा कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ। वे कहने लगे कि (परवरदिगार!) हम ईमान लाये, तो गवाह रहियो कि हम फ़रमांबरदार हैं।[1] (१११) (वह क़िस्सा भी याद करो) जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि हम पर आसमान से (खाने का) ख़्वान नाज़िल करे? उन्हों ने कहा कि अगर ईमान रखते हो तो ख़ुदा से डरो। (११२) वे बोले कि हमारी यह ख़्वाहिश है कि हम उस में से खाएं और हमारे दिल तसल्ली पाएं और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा है और हम इस (ख़्वान के नाज़िल होने पर) गवाह रहें ● (११३) (तब)

---

१. हज़रत ईसा की पैरवी करने वाले और मदद करने वाले यानी साथी हवारी कहलाते थे। हवारी हक़ीक़त में धोबी को कहते हैं और वे लोग भी ज़्यादातर धोबी थे। आजकल यह लफ़्ज़ ज़्यादा आम हो गया है और दूसरे लोगों के साथियों के लिए भी इसे बोलने लगे हैं।

★रु. १४/४ आ ८ ▨ व. लाज़िम ● रुबअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल अ़ीसब्नु मर्यमल्लाहुम-म रब्बना अन्ज़िल अ़लैना मा-इद-तम्-
मिनस्समा-इ तकूनु लना अ़ीदलि-अव्वलिना व आखिरिना व आयतम्-मिन्-क
वर्ज़ुक़्ना व अन्-त ख़ैरुर्राज़िक़ीन (११४) क़ालल्लाहु इन्नी मुनज़्ज़िलुहा
अ़लैकुम् ج फ़-मंयक्फ़ुर् बअ्-दु मिन्कुम् फ़-इन्नी उ-अ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबल्ला उ-अ़ज़्ज़ि-
बुहू अ-ह-दम्मिनल् - आ़लमीन ★ (११५)
व इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसब-न मर्य-म अ
अन्-त क़ुल्-त लिन्नासित्-तख़िज़ूनी व उम्मि-य
इलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि ط क़ा-ल
सुब्हा़न-क मा यकूनु ली अन् अक़ू-ल मा
लै-स ली ق बिह़क़्क़िन् ط ▨ इन्
कुन्तु क़ुल्तुहू फ़-क़द् अ़लिम्तहू ط तअ्-लमु
मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ्-लमु मा
फ़ी नफ़्सि-क ط इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल्-
ग़ुयूब (११६) मा क़ुल्तु लहुम् इल्ला
मा अमर्तनी बिही अनिअ़्-बुदुल्ला-ह रब्बी
व रब्बकुम् ج व कुन्तु अ़लैहिम् शहीदम्मा
दुम्तु फ़ीहिम् ج फ़-लम्मा तवफ़्फ़ैतनी
कुन्-त अन्तर्रक़ी-ब अ़लैहिम् ط व अन्-त अ़ला
कुल्लि शैइन् शहीद (११७) इन्
तुअ़ज़्ज़िब्हुम् फ़-इन्नहुम् अ़िबादु-क ج व इन् तग़्फ़िर् लहुम् फ़-इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-
ह़कीम (११८) क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़अुस्सादिक़ी-न सिद्क़ुहुम् ط लहुम्
जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط रज़ियल्लाहु
अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु ط ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (११९) लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति
वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्-न ط व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (१२०)

عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ
عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ
وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ
يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾
وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ
اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ
بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ
نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾
اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾
قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّخَمْسٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ؕ

६ सूरतुल् अन्आ़मि ५५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १२६३५ अक्षर, ३१०० शब्द, १६५ आयतें और २० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व ज-अ़-लज़्ज़ुलुमाति
वन्नू-र ط सुम्मल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् यअ्-दिलून (१)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ईसा बिन मरयम ने दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर आसमान से ख़्वान नाज़िल फ़रमा कि हमारे लिए (वह दिन) ईद क़रार पाए यानी हमारे अगलों और पिछलों (सब) के लिए और वह तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमें रिज़्क़ दे, तू बेहतर रिज़्क़ देने वाला है (११४) ख़ुदा ने फ़रमाया, मैं तुम पर ज़रूर ख़्वान नाज़िल फ़रमाऊंगा, लेकिन जो इस के बाद तुम में से कुफ़्र करेगा, उसे ऐसा अज़ाब दूंगा कि दुनिया वालों में किसी को ऐसा अज़ाब न दूंगा।[1] (११५) ★

और (उस वक़्त को भी याद रखो) जब ख़ुदा फ़रमाएगा, ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि ख़ुदा के सिवा मुझे और मेरी मां को माबूद मुक़र्रर करो? वह कहेंगे कि तू पाक है, मुझे कब मुनासिब था कि मैं ऐसी बात कहता, जिस का मुझे कुछ हक़ नहीं ▨ अगर मैं ने ऐसा कहा होगा, तो तुझ को मालूम होगा, (क्यों कि) जो बात मेरे दिल में है, तू उसे जानता है और जो तेरे ज़मीर में है, उसे मैं नहीं जानता, बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला है। (११६) मैं ने उन से कुछ नहीं कहा, अलावा इस के, जिस का तू ने हुक्म दिया है, वह यह है कि तुम ख़ुदा की इबादत करो, जो मेरा और तुम्हारा सब का परवरदिगार है और जब तक मैं उन में रहा उन (के हालात) की ख़बर रखता रहा। जब तू ने मुझे दुनिया से उठा लिया तो तू उन का निगरां था और तू हर चीज़ से ख़बरदार है। (११७) अगर तू उन को अज़ाब दे, तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर बख़्श दे तो (तेरी मेहरबानी है।) बेशक तू ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (११८) ख़ुदा फ़रमायेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उन की सच्चाई ही फ़ायदा देगी। उन के लिए बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा-हमेशा उन में बसते रहेंगे। ख़ुदा उन से ख़ुश है और वे ख़ुदा से ख़ुश हैं, यह बड़ी कामियाबी है। (११९) आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन (दोनों) में है, सब पर ख़ुदा ही की बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१२०) ★

६ सूरः अन्आम ५५

सूरः अन्आम मक्की है और इस में एक सौ पैंसठ आयतें और बीस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को मुनासिब है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरा और रोशनी बनायी, फिर भी काफ़िर (और चीज़ों को) ख़ुदा के बराबर ठहराते

१. ये हवारी या तो ज़रूरतमंद थे या दिल के इत्मीनान के लिए उन्हों ने माइदः (ख़्वान) उतरने की दर्ख़्वास्त की थी। कुछ भी हो ख़ुदा ने उन पर खाने का ख़्वान नाज़िल फ़रमाया। तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि ख़्वान इतवार के दिन नाज़िल हुआ था, जो ईसाइयों की ईद है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तीनित् सुम्-म क़ज़ा अ-ज-लन् ط व अ-जलुम्-
मुसम्मन् अिन्दहू सुम्-म अन्तुम् तम्तरून (२) व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व
फ़िल्अर्ज़ि ط यअ् - लमु सिर्रकुम् व जह-रकुम् व यअ्-लमु मा तक्सिबून
(३) व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम्-मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला

ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ① هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ طِينٍ
ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۖ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ۖ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ ② وَهُوَ
اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۖ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ③
وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ④
فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ⑤ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ
فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَ
جَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا
مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ⑥ وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ
فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑦
وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ
لَا يُنظَرُونَ ⑧ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا
يَلْبِسُونَ ⑨ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ
سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑩ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ
ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ⑪ قُلْ لِّمَن مَّا فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ قُل لِّلَّهِ ۚ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑫

कानू अन्हा मुअ्-रिज़ीन (४) फ़-क़द् कज़्ज़बू
बिल्हक़्क़ि लम्मा जा - अहुम् ط फ़सौ - फ़
यअ्तीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन
(५) अ-लम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन्
क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि
मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा-अ
अलैहिम् मिद्रारंव्-व ज-अ़ल्नल्-अन्हा-र
तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़ - अह्लक्नाहुम्
बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्बअ्-दिहिम् क़र्नन्
आख़रीन (६) व लौ नज़्ज़ल्ना अलै-क
किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़-ल-मसूहु बिऐदीहिम्
ल-क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला
सिह्रुम्-मुबीन (७) व क़ालू लौला
उन्ज़ि-ल अलैहि म-लकुन् ط व लौ अन्ज़ल्ना म-ल-कल्-लक़ुज़ियल्-अम्रु सुम्-म
ला युन्ज़रून (८) व लौ ज-अ़ल्नाहु म-ल-कल्ल-जअ़ल्नाहु रजुलंव्-व ल-लबस्ना
अलैहिम् मा यल्बिसून (९) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि - अ बिरुसुलिम् - मिन्
क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन
★ (१०) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्मन्ज़ुरू कै - फ़ का-न आक़िबतुल्-
मुकज़्ज़िबीन (११) क़ुल् लिमम्मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط क़ुल् लिल्लाहि ط
क-त-ब अला नफ़्सिहिर्रह्-म-त ط ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्क़ियामति ला
रै-ब फ़ीहि ط अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (१२)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (१) वही तो है, जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर (मरने का) एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और एक मुद्दत उस के यहां और है, फिर भी तुम (ऐ काफ़िरो! ख़ुदा के बारे में) शक करते हो। (२) और आसमान और ज़मीन में वही (एक) ख़ुदा है, तुम्हारी छिपी और खुली, सब बातें जानता है, और तुम जो अमल करते हो, सब का जानकार है। (३) और ख़ुदा की निशानियों में से कोई निशानी उन लोगों के पास नहीं आती, मगर ये उस से मुंह फेर लेते हैं। (४) जब उन के पास हक़ आया, तो उस को भी झुठला दिया, सो उन को उन चीज़ों का जिन का ये मज़ाक़ उड़ाते हैं, बहुत जल्द अंजाम मालूम हो जाएगा। (५) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर दिया, जिन के पांव मुल्क में ऐसा जमा दिए थे कि तुम्हारे पांव भी ऐसे नहीं जमाए और उन पर आसमान से लगातार मेंह बरसाया और नहरें बना दीं जो उन में (मकानों के) नीचे बह रही थीं। फिर उन को उन के बाद गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और उन के बाद और उम्मतें पैदा कर दीं। (६) और अगर हम तुम पर काग़ज़ों पर लिखी हुई किताब नाज़िल करते और ये उसे अपने हाथों से टटोल लेते तो जो काफ़िर हैं वह यही कह देते कि यह तो (साफ़ और) खुला जादू है। (७) और कहते हैं कि इन (पैग़म्बर) पर फ़रिश्ता क्यों नाज़िल न हुआ, (जो उन की तस्दीक़ करता)। अगर हम फ़रिश्ता नाज़िल करते, तो काम ही का फ़ैसला हो जाता, फिर उन्हें (बिल्कुल) मोहलत न दी जाती। (८) और हम किसी फ़रिश्ते को भेजते, तो उस मर्द की सूरत में भेजते और जो शुब्हा (अब) करते हैं, उसी शुब्हे में उन्हें फिर डाल देते।[१] (९) और तुम से पहले भी पैग़म्बरों के साथ मज़ाक़ होता रहा है, सो जो लोग उन में से मज़ाक़ किया करते थे, उन को मज़ाक़ की सज़ा ने आ घेरा। (१०) ★

कहो कि (ऐ रिसालत के इंकारियो!) मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ। (११) (उन से) पूछो कि आसमान और ज़मीन में जो कुछ है, किस का है? कह दो ख़ुदा का। उसने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को लाज़िम कर लिया है। वह तुम सब को क़ियामत के दिन, जिसमें कुछ भी शक नहीं, ज़रूर जमा करेगा। जिन लोगों ने अपने को नुक़्सान

---

१. मुश्रिकों ने कहा था कि पैग़म्बर फ़रिश्ता क्यों नहीं आता, इस पर हक़ तआला ने यह फ़रमाया कि जैसे अब आदमी की पैग़म्बरी के क़ायल नहीं हैं, उस वक़्त भी ताना करते कि यह तुम्हारी तरह का आदमी है।

★रु. १/७ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लहू मा स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि ط व हुवस्समीउल्-अलीम
(१३) क़ुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िज़ु वलिय्यन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व
हु-व युत्‌इमु व ला युत्‌अमु ط क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अकू-न अव्व-ल मन्
अस्ल-म व ला तकूनन्-न मिनलमुश्रिकीन (१४) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन्
अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम
(१५) मंय्युस्रफ़् अ़न्हु यौमइज़िन्
फ़-क़द् रहि़महू ط व ज़ालिकल्फ़ौज़ुल्मुबीन
(१६) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन्
फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व ط व
इंय्यम्सस-क बिख़ैरिन् फ़हु-व अ़ला कुल्लि
शैइन् क़दीर (१७) व हुवल्क़ाहिरु
फ़ौ-क़ अ़िबादिही ط व हुवल्-ह़कीमुल्-
ख़बीर (१८) क़ुल् अय्यु शैइन् अक्बरु
शहा-द-तन् ط क़ुलिल्लाहु قف शहीदुम्-
बैनी व बैनकुम् قف व ऊहि़-य इलय्-य
हाज़ल्क़ुर्-आनु लिउन्ज़िर-कुम् बिही व
मम्-ब-ल-ग़ ط अइन्नकुम् ल-तश्हदू-न अन्-न
म-अल्लाहि आलि-ह-तन् उख़्रा ط क़ुल् ला अश्हदु ج क़ुल् इन्नमा हु-व
इलाहुंव्वाहि़दुंव्-व इन्ननी बरी-उम्-मिम्मा तुश्रिकून (१९)
अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्-रिफ़ूनहू कमा यअ्-रिफ़ू-न अब्ना-अहुम्
अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून ★ (२०) व
मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही ط
इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (२१) व यौ-म नह़्शुरुहुम् जमीअ़न्
सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू ऐ-न शुरका-उकुमुल्लज़ी-न कुन्तुम्
तज़्अ़ुमून (२२) सुम्-म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् इल्ला अन् क़ालू
वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन (२३) उन्ज़ुर् कै-फ़ कज़बू
अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (२४)

الانعام ٦ ١٠٣ وَلَوْ اَنَّنَا ٧

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ١٣ قُلْ اَغَيْرَ
اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۭ قُلْ
اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ١٤
قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ١٥ مَنْ
يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ١٦ وَاِنْ
يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۭ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ١٧ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ
الْخَبِيْرُ ١٨ قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۭ قُلِ اللّٰهُ ڐ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَ
بَيْنَكُمْ ڐ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۭ اَىِٕنَّكُمْ
لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰي ۭ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا
هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ١٩ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ٢٠ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰي عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ
بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ٢١ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ
نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَاۗؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ٢٢
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ٢٣
اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ٢٤

منزل ٢

व. लाज़िम व. लाज़िम ★ रु. २/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

में डाल रखा है, वे ईमान नहीं लाते। (१२) और जो मख़्लूक़ रात और दिन में बसती है, सब उसी की है और वह सुनता-जानता है। (१३) कहो, क्या मैं ख़ुदा को छोड़ कर किसी और को मददगार बनाऊं कि (वही तो) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है और वही (सब को) खाना देता है और ख़ुद किसी से खाना नहीं लेता।[1] (यह भी) कह दो कि मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं सब से पहले इस्लाम लाने वाला हूं और यह कि तुम (ऐ पैग़म्बर!) मुश्रिकों में न होना। (१४) (यह भी) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फ़रमानी करूं, तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है। (१५) जिस शख़्स से उस दिन अज़ाब टाल दिया गया, उस पर ख़ुदा ने (बड़ी) मेहरबानी फ़रमायी और यह खुली कामियाबी है। (१६) और अगर ख़ुदा तुम को कोई सख़्ती पहुंचाए, तो इस के सिवा उस को कोई दूर करने वाला नहीं और अगर नेमत (व राहत) अता करे तो (कोई उस को रोकने वाला नहीं), वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (१७) और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वह हकीम और ख़बरदार है। (१८) उन से पूछो कि सब से बढ़ कर (इंसाफ़ के क़रीब) किस की गवाही है। कह दो कि ख़ुदा ही मुझ में और तुम में गवाह है और यह क़ुरआन मुझ पर इस लिए उतारा गया है कि इसके ज़रिए से तुम को और जिस शख़्स तक वह पहुंच सके उस को आगाह कर दूं। क्या तुम इस वात की गवाही देते हो कि ख़ुदा के साथ और भी माबूद हैं। (ऐ मुहम्मद!) कह दो कि मैं तो ऐसी गवाही नहीं देता। कह दो कि सिर्फ़ वही एक माबूद है और जिन को तुम लोग शरीक बनाते हो, मैं उन से बेज़ार हूं ▨ (१९) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इन (हमारे पैग़म्बर) को इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचाना करते हैं, ▨ जिन्होंने अपने आप को नुक़्सान में डाल रखा है, वे ईमान नहीं लाते। (२०)★

और उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है, जिसने ख़ुदा पर झूठ गढ़ा या उसकी आयतों को झुठलाया। कुछ शक नहीं कि ज़ालिम लोग निजात नहीं पाएंगे। (२१) और जिस दिन हम सब लोगों को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से पूछेंगे कि (आज) वे तुम्हारे शरीक कहां हैं, जिन का तुम्हें दावा था? (२२) तो उन से कुछ उज़्र (बहाना) न बन पड़ेगा (और) इस के अलावा (कुछ चारा न होगा) कि कहें, ख़ुदा की क़सम! जो हमारा परवरदिगार है, हम शरीक नहीं बनाते थे। (२३) देखो, वे अपने ऊपर कैसा झूठ बोले और जो कुछ ये झूठ गढ़ा करते थे, सब उन से जाता

१. क्योंकि वह खाने-पीने की ज़रूरत से पाक है। उसे इस की ज़रूरत ही नहीं।

▨ व. लाज़िम ▨ व. लाज़िम ★रु. २/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअ़ु इलै-क ८ व ज-अ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन्
अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन् ᵇ व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल्ला
युअ्मिनू बिहा ᵇ ह़त्ता इज़ा जा-ऊ-क युजादिलून-क यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू
इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (२५) व हुम् यन्हौ-न अन्हु
व यन्औ-न अन्हु ८ व इंय्युह्लिकू-न
इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अ़ुरून (२६)
व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़लन्नारि
फ़क़ालू यालैतना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़ि-ब
बिआयाति रब्बिना व नकू-न मिनल्-
मुअ्मिनीन (२७) बल् बदा लहुम् मा
कानू युख़्फ़ू-न मिन् क़ब्लु ᵇ व लौ रुद्दू
ल-आ़दू लिमा नूहु अन्हु व इन्नहुम्
लकाज़िबून (२८) व क़ालू इन् हि-य
इल्ला हयातुनद्दुन्या व मा नह़्नु
बिमब्अ़ूसीन (२९) व लौ तरा इज़्
वुक़िफ़ू अ़ला रब्बिहिम् ᵇ क़ा-ल अलै-स
हाज़ा बिल्ह़क़्क़ि ᵇ क़ालू बला व रब्बिना ᵇ क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा
कुन्तुम् तक्फ़ुरून ★ (३०) क़द् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि ᵇ
ह़त्ता इज़ा जा-अत्-हुमुस्साअ़तु बग़्-त-तन् क़ालू या ह़स्-र-तना अ़ला
मा फ़र्रत़्ना फ़ीहा ᵛ व हुम् यह़्मिलू-न औज़ारहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम् ᵇ
अला सा-अ मा यज़िरून (३१) व मल्ह़यातुद्दुन्या इल्ला लअिबुंव्-व
लह्वुन् ᵇ व लद्दारुल्-आख़िरतु ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न ᵇ अ-फ़ला
तअ्क़िलून (३२) क़द् नअ़्-लमु इन्नहू ल-यह़्ज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलू-न फ़-इन्नहुम्
ला युकज़्ज़िबू-न-क व लाकिन्नज़्ज़ालिमी-न बिआयातिल्लाहि यज्हदून
(३३) व ल-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम्मिन् क़ब्लि-क फ़-स-बरू अ़ला मा
कुज़्ज़िबू व ऊज़ू ह़त्ता अताहुम् नस़्रुना ८ व ला मुबद्दि-ल
लिकलिमातिल्लाहि ८ व ल-क़द् जा-अ-क मिन् न-बइल्-मुर्सलीन (३४)

الانعام ٦ ١٠٤ وإذا سمعوا ٧

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ
وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْئَوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ
اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا
يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ
بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ
وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا
بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع
قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى
ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّ
لَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ
نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रहा। (२४) और उन में कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी (बातों की) तरफ़ कान रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर तो परदे डाल दिए हैं कि उन को समझ न सकें और कानों में बोझ पैदा कर दिया है (कि सुन न सकें) और अगर ये तमाम निशानियां भी देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं, यहां तक कि जब तुम्हारे पास तुम से बहस करने को आते हैं, तो जो काफ़िर हैं, कहते हैं, यह (क़ुरआन) और कुछ भी नहीं, सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियां हैं। (२५) वे इस से (और को भी) रोकते हैं और ख़ुद भी परे रहते हैं, मगर (इन बातों से) अपने आप ही को हलाक करते हैं और (इस से) बे-ख़बर हैं। (२६) काश, तुम (उन को उस वक़्त) देखो, जब ये दोज़ख़ के किनारे खड़े किये जाएंगे और कहेंगे कि ऐ काश ! हम फिर (दुनिया में) लौटा दिए जाएं, ताकि अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाएं नहीं और मोमिन हो जाएं। (२७) हां, ये जो कुछ पहले छिपाया करते थे, (आज) उन पर ज़ाहिर हो गया और अगर ये (दुनिया में) लौटाए भी जाएं, तो जिन (कामों) से उनको मना किया गया था, वही फिर करने लगें। कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं। (२८) और कहते हैं कि हमारी जो दुनिया की जिंदगी है, बस यही (ज़िंदगी) है और हम (मरने के बाद) फिर ज़िंदा नहीं किये जाएंगे। (२९) और काश ! तुम (उन को उस) वक़्त देखो, जब ये अपने परवरदिगार के सामने खड़े किये जाएंगे और वह फ़रमाएगा, क्या यह (दोबारा ज़िंदा होना) हक़ नहीं, तो कहेंगे, क्यों नहीं, परवरदिगार की क़सम ! (बिल्कुल हक़ है।) ख़ुदा फ़रमाएगा, अब कुफ़्र के बदले (जो दुनिया में करते थे) अज़ाब (के मज़े) चखो। (३०) ★

जिन लोगों ने ख़ुदा के सामने हाज़िर होने को झूठ समझा, वे घाटे में आ गये, यहां तक कि जब उन पर क़ियामत यकायक आ मौजूद होगी, तो बोल उठेंगे कि (हाय !) उस ख़ता पर अफ़सोस है, जो हमने क़ियामत के बारे में की और वह अपने (आमाल के) बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, जो बोझ ये उठा रहे हैं, बहुत बुरा है। (३१) और दुनिया की ज़िंदगी तो एक खेल और मशग़ला है और बहुत अच्छा घर तो आख़िरत का घर है (यानी) उन के लिए, जो (ख़ुदा से) डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं ? (३२) हम को मालूम है कि इन काफ़िरों की बातें तुम्हें रंज पहुंचाती हैं, (मगर) ये तुम्हें झुठलाते नहीं, बल्कि ज़ालिम ख़ुदा की आयतों से इंकार करते हैं। (३३) और तुम से पहले भी पैग़म्बर झुठलाए जाते रहे, तो वे झुठलाने और तक्लीफ़ देने पर सब्र करते रहे, यहां तक कि उन के पास हमारी मदद पहुंचती रही और ख़ुदा की बातों को कोई भी बदलने वाला नहीं। और तुम को पैग़म्बरों (के अह्वाल) की ख़बर पहुंच चुकी है, (तो तुम भी

★रु. ३/९ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इन् का-न कबु-र अलै-क इअ्-राज़ुहुम् फ़इनिस्त-तअ्-त अन् तब्तग़ि-य
न-फ़-क़न् फ़िल्अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़िस्समाइ फ़-तअ्तियहुम् बिआयतिन्
व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-म-अहुम् अ़-लल्हुदा फ़ला तकूनन्-न मिनल्-जाहिलीन
● (३५) इन्नमा यस्तजीबुल्लज़ी-न यस्मअू-न ▧ वल्मौता यब्असुहुमुल्लाहु
सुम्-म इलैहि युर्जअून ▧ (३६) व क़ालू
लौला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही
क़ुल् इन्नल्ला-ह क़ादिरुन् अ़ला अंय्युनज़्ज़ि-ल
आयतंव्-व लाकिन्-न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून
(३७) व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि
व ला ताइरिंय्यतीरु बिजनाहैहि इल्ला
उ-ममुन् अम्सालुकुम् मा फ़र्रत़्ना फ़िल्-
किताबि मिन् शैइन् सुम्-म इला रब्बिहिम्
युह़्शरून (३८) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू
बिआयातिना सुम्मुंव्-व बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति
मंय्य-श - इल्लाहु युज़्लिल्हु व मंय्यशअ्
यज्अ़ल्हु अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (३९)

الانعام ١٠٥ واذا سمعوا

لكلمت الله ولقد جاءك من نباى المرسلين ﴿٣٤﴾ وان كان كبر
عليك اعراضهم فان استطعت ان تبتغى نفقا فى الارض او
سلما فى السماء فتاتيهم باية ولو شاء الله لجمعهم على
الهدى فلا تكونن من الجهلين ﴿٣٥﴾ انما يستجيب الذين يسمعون
والموتى يبعثهم الله ثم اليه يرجعون ﴿٣٦﴾ وقالوا لولا نزل عليه
اية من ربه قل ان الله قادر على ان ينزل اية ولكن اكثرهم
لا يعلمون ﴿٣٧﴾ وما من دابة فى الارض ولا طير يطير بجناحيه
الا امم امثالكم ما فرطنا فى الكتب من شىء ثم الى ربهم
يحشرون ﴿٣٨﴾ والذين كذبوا باياتنا صم وبكم فى الظلمت من
يشا الله يضلله ومن يشا يجعله على صراط مستقيم ﴿٣٩﴾ قل
ارءيتكم ان اتكم عذاب الله او اتتكم الساعة اغير الله
تدعون ان كنتم صدقين ﴿٤٠﴾ بل اياه تدعون فيكشف ما
تدعون اليه ان شاء وتنسون ما تشركون ﴿٤١﴾ ولقد ارسلنا الى
امم من قبلك فاخذنهم بالباساء والضراء لعلهم يتضرعون ﴿٤٢﴾
فلولا اذ جاءهم باسنا تضرعوا ولكن قست قلوبهم وزين
لهم الشيطن ما كانوا يعملون ﴿٤٣﴾ فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا
عليهم ابواب كل شىء حتى اذا فرحوا بما اوتوا اخذنهم بغتة

क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि औ अततकुमुस्साअ़तु अग़ैरल्लाहि
तद्अू-न इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४०) बल् इय्याहु तद्अू-न फ़-यक्शिफ़ु
मा तद्अू-न इलैहि इन् शा-अ व तन्सौ-न मा तुश्रिकून ★ (४१)
व ल - क़द् अर्सल्ना इला उममिम्मिन् क़ब्लि - क फ़ - अ - ख़ज़्नाहुम्
बिल्बअ्साइ वज़्ज़र्राइ ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़र्रअ़ून (४२) फ़लौला इज़्
जाअहुम् बअ्सुना तज़र्रअ़ू व लाकिन् क़ - सत् क़ुलूबुहुम् व ज़य्-य-न
लहुमुश्शैतानु मा कानू यअ्-मलून (४३) फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू
बिही फ़ - तह़्ना अ़लैहिम् अब्वा - ब कुल्लि शैइन् ह़त्ता इज़ा
फ़रिहू बिमा ऊतू अ-ख़ज़्नाहुम् बग़्-त-तन् फ़-इज़ा हुम् मुब्लिसून (४४)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सब्र से काम लो)। (३४) और अगर उन का एराज़ तुम पर बोझ होता है, तो अगर ताक़त हो तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूंढ निकालो या आसमान में सीढ़ी (तलाश करो), फिर उन के पास कोई मोजज़ा लाओ और अगर ख़ुदा चाहता तो सब को हिदायत पर जमा कर देता, पस तुम हर गिज़ ना-दानों में न होना ● (३५) बात यह है कि (हक़ को) क़ुबूल वही करते हैं, जो सुनते भी हैं ▨ और मुर्दों को तो ख़ुदा (क़ियामत ही को) उठाएगा, फिर उसी की तरफ़ लौटकर जाएंगे।[1] (३६) ▨ और कहते हैं कि उन पर उन के परवरदिगार के पास से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि ख़ुदा निशानी उतारने पर क़ुदरत रखता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३७) और ज़मीन में जो चलने फिरने वाला (हैवान) या दो परों से उड़ने वाला जानवर है, उन की भी तुम लोगों की तरह जमाअतें हैं। हमने किताब (यानी लौहे मह्फ़ूज़) में किसी चीज़ (के लिखने) में कोताही नहीं की, फिर सब अपने परवरदिगार की तरफ़ जमा किये जाएंगे। (३८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, वे बहरे और गूंगे हैं। (इसके अलावा) अंधेरे में (पड़े हुए), जिसको ख़ुदा चाहे, गुमराह कर दे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर चला दे। (३९) कहो, (काफ़िरो!) भला देखो तो, अगर तुम पर ख़ुदा का अज़ाब आ जाए या क़ियामत आ मौजूद हो, तो क्या तुम (ऐसी हालत में) ख़ुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर सच्चे हो (तो बताओ)। (४०) (नहीं) बल्कि, (मुसीबत के वक़्त तुम) उसी को पुकारते हो, तो जिस दुख के लिए उसे पुकारते हो, वह अगर चाहता है, तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक़्त) उन्हें भूल जाते हो। (४१) ★

और हमने तुम से पहले बहुत-सी उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे, फिर (उन की ना-फ़रमानियों की वजह से) हम उन्हें सख़्तियों और तक्लीफ़ों में पकड़ते रहे, ताकि आजिज़ी करें। (४२) तो जब उन पर अज़ाब आता रहा, क्यों नहीं आजिज़ी करते रहे, मगर उन के तो दिल ही सख़्त हो गये थे और जो वे काम करते थे, शैतान उन को (उन की नज़रों में) सजा कर दिखाता था। (४३) फिर जब उन्होंने उस नसीहत को, जो उन को की गयी थी भुला दिया, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों से जो उन को दी गयी थीं, ख़ूब ख़ुश हो गये, तो हमने उन को यकायक पकड़ लिया और वे उस वक़्त ना-उम्मीद हो कर रह गये। (४४) ग़रज़

---

१. यानी तुम्हारी बात तो वही लोग क़ुबूल करते हैं जो सुनते भी हैं और ये कुफ़्फ़ार तो मुर्दा दिल हैं, ये कब सुनने लगे। इन मुर्दों को तो ख़ुदा क़ियामत ही के दिन उठाएगा और उन के आमाल का बदला देगा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़क़ुति़ - अ दाबिरुल् - क़ौमिल्लज़ी-न ज़-लमू ؕ वल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल् -
आ़लमीन (४५) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अ-ख़-ज़ल्लाहु सम्अ़कुम् व अब्सा़रकुम्
व ख़-त-म अ़ला क़ुलूबिकुम् मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही ؕ
उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति सुम् - म हुम् यस्दिफ़ून (४६) क़ुल्
अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि
बग़्-त-तन् औ जह्-र-तन् हल् युह्लकु इल्लल्-
क़ौमुज़्ज़ालिमून (४७) व मा नुर्सिलुल्-
मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न ؗ
फ़-मन् आम-न व अस्-ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन्
अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (४८)
वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल्-
अ़ज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून (४९) क़ुल्
ला अक़ूलु लकुम् अि़न्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि
व ला अअ्-लमुल्ग़ै-ब व ला अक़ूलु लकुम्
इन्नी म-लकुन् ؗ इन् अत्तबिअु इल्ला
मा यूहा इलय् - य ؕ क़ुल् हल्

الانعام ٦ ١٠٦ واذا سمعوا ٧

فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝٤٤ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٥ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَ
خَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ
نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ۝٤٦ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ
اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٤٧ وَمَا
نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٤٨ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٤٩ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ
خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا
مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝٥٠ ع
وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٥١ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ
مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٢ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ مَنَّ
اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝٥٣ وَاِذَا جَآءَكَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ

यस्तविल्अअ्-मा वल्बसीरु ؕ अ-फ़ला त-त-फ़क्करून ★ (५०) मंज़िल व अन्ज़िर्
बिहिल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अंय्युह्शरू इला रब्बिहिम् लै-स लहुम् मिन् दूनिही
वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअुल्-ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (५१) व ला तत़्रुदिल्लज़ी-न
यद्अू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति़ वल्अ़शिय्यि युरीदू-न वज्हहू ؕ मा अ़लै - क
मिन् हि़साबिहिम् मिन् शैइंव्-व मा मिन् हि़साबि-क अ़लैहिम् मिन्
शैइन् फ़-तत़्रुदहुम् फ़-तकू-न मिनज़्ज़ालिमीन (५२) व कज़ालि-क फ़-तन्ना
बअ़् - ज़हुम् बिबअ़् - ज़िल् -लियक़ूलू अ-हा-उला-इ मन्नल्लाहु अ़लैहिम्
मिम्बैनिना ؕ अलैसल्लाहु बिअअ्-ल-म बिश्शाकिरीन (५३) व इज़ा
जाअ-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिआयातिना फ़क़ुल् सलामुन् अ़लैकुम् क-त-ब रब्बुकुम्
अ़ला नफ़्सिहिर्रह्-म-त ؗ अन्नहू मन् अ़मि-ल मिन्कुम् सूअम् - बिजहालतिन्
सुम्-म ता-ब मिम्बअ्-दिही व अस्-ल-ह़ फ़-अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम (५४)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी और सब तारीफ़ ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (४५) (इन काफ़िरों से) कहो कि भला देखो तो, अगर ख़ुदा तुम्हारे कान और आंखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो ख़ुदा के सिवा कौन-सा माबूद है जो तुम्हें ये नेमतें फिर बख़्शे ? देखो हम किस-किस तरह अपनी आयतें बयान करते हैं। फिर भी ये लोग मुंह फेरे जाते हैं। (४६) कहो कि भला बताओ तो अगर तुम पर ख़ुदा का अज़ाब बेख़बरी में या ख़बर आने के बाद आये, तो क्या ज़ालिम लोगों के सिवा कोई और भी हलाक होगा ? (४७) और हम जो पैग़म्बरों को भेजते रहे हैं, तो ख़ुशख़बरी सुनाने और डराने को, फिर जो शख़्स ईमान लाये और भला आदमी हो जाए, तो ऐसे लोगों को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (४८) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन की ना-फ़रमानियों की वजह से उन्हें अज़ाब होगा। (४९) कह दो कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के ख़ज़ाने हैं और न (यह कि) मैं ग़ैब जानता हूं और न तुम से यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। मैं तो सिर्फ़ उस हुक्म पर चलता हूं जो मुझे (ख़ुदा की तरफ़ से) आता है, कह दो कि भला अंधा और आंख वाले बराबर होते हैं ? तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते ? (५०) ★

और जो लोग ख़ौफ़ रखते हैं कि अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर किये जाएंगे (और जानते हैं कि) उस के सिवा न तो कोई उनका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला, उन को इस (क़ुरआन) के ज़रिए से नसीहत करो ताकि परहेज़गार बनें। (५१) और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से दुआ करते हैं और उस की ज़ात की तलब में हैं, उन को (अपने पास से) मत निकालो। उनके हिसाब (आमाल) की जवाब देही तुम पर कुछ नहीं और तुम्हारे हिसाब की जवाब देही उन पर कुछ नहीं। (पस ऐसा न करना) अगर उन को निकालोगे, तो ज़ालिमों में हो जाओगे।[1] (५२) और इसी तरह हमने कुछ लोगों की कुछ से आज़माइश की है कि (जो दौलतमंद हैं, वे ग़रीबों के बारे में) कहते हैं, क्या यही लोग हैं, जिन पर ख़ुदा ने हम में से फ़ज़्ल किया है। (ख़ुदा ने फ़रमाया) भला ख़ुदा शुक्र करने वालों को नहीं जानता। (५३) और जब तुम्हारे पास ऐसे लोग आया करें, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो (उनसे) 'सलामु अलैकुम' कहा करो। ख़ुदा ने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को ज़रूरी कर लिया है कि जो कोई तुम में से नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठे, फिर उसके बाद तौबा कर ले और भला हो जाए, तो वह

---

१. साद बिन अबी वक़्क़ास रिवायत करते हैं कि यह आयत हम छः आदमियों के हक़ में उतरी है यानी साद रज़ि० और इब्ने मस्ऊद रज़ि० और सुहैब रज़ि० और बिलाल रज़ि० और अम्मार रज़ि० और मिक़्दाद रज़ि० के हक़ में। हम लोग रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते तो क़रीब हो कर बैठते और बातें सुनते। क़ुरैश के कुफ़्फ़ार को यह बात ना-गवार हुई तो उन्हों ने आप से कहा कि हमारा दिल आप की बातें सुनने को तो चाहता है, लेकिन हम को इन ग़ुलामों के साथ बैठते हुए शर्म आती है। पस जब हम आप के पास आया करें तो आप उन को उठा दिया कीजिए और जब चले जाया करें, तो फिर आप को अख़्तियार है, उन को अपने पास बिठा लिया करें। आप ने इस बात को मान लिया, तो उन्हों ने कहा कि आप हमें इस मज़्मून की एक तहरीर लिख दीजिए। आप ने काग़ज़ मंगवाया और हज़रत अली रज़ि० को लिखने के लिए बुलाया। इतने में हज़रत जिब्रील यह आयत ले कर आए कि अगरचे ख़ुदा की तलब वाले ग़रीब हैं, लेकिन उन का ध्यान रखना चाहिए, तब से आप सल्ल० हमारा बहुत ध्यान रखने लगे।

★रु. ५/११ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी - न सबीलुल् - मुज्रिमीन
★ (५५) क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ् - बुदल्लज़ी - न तद्अू - न मिन्
दूनिल्लाहि ط क़ुल् ला अत्तबिअू अह्वा - अकुम् ج क़द् ज़लल्तु इज़ंव्-व
मा अ-न मिनल्-मुह्तदीन (५६) क़ुल् इन्नी अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी
व कज़्ज़ब्तुम् बिही ط मा अिन्दी मा
तस्तअ् - जिलू - न बिही ط इनिल् - हुक्मु
इल्ला लिल्लाहि ط यक़ुस्सुल्-हक़्-क़ व हु-व
खैरुल्फ़ासिलीन (५७) क़ुल् लौ अन्-न
अिन्दी मा तस्तअ्-जिलू-न बिही लक़ुज़ियल्-
अम्रु बैनी व बैनकुम् ط वल्लाहु
अअ्-लमु बिज़्ज़ालिमीन (५८) व अिन्दहू
मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यअ्-लमुहा इल्ला हु-व ط
व यअ्-लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बह्रि ط व मा
तस्क़ुतु मिंव्व-र - क़तिन् इल्ला यअ्-लमुहा
व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला
रत्बिंव्-व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम्-
मुबीन (५९) व हुवल्लज़ी य-त-वफ़्फ़ाकुम् बिल्लैलि व यअ्-लमु मा
जरह्तुम् बिन्नहारि सुम्-म यब्असुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ-जलुम् - मुसम्मन् ج
सुम्-म इलैहि मर्जिअुकुम् सुम्-म युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून
★ (६०) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ - क़ अिबादिही व युर्सिलु अ़लैकुम्
ह़-फ़-ज-तन् ط हत्ता इज़ा जा - अ अह़-दकुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रुसुलुना व
हुम् ला युफ़र्रितून (६१) सुम्-म रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि ط
अला लहुल्हुक्मु قف व हु - व अस्रअुल्-हासिबीन (६२) क़ुल् मंय्युनज्जीकुम्
मिन् ज़ुलमातिल् - बर्रि वल्बह्रि तद्अूनहू तज़र्रुअंव - व खुफ़्य-तन् ج लइन्
अन्जाना मिन् हाज़िही ल-न-कूनन्-न मिनश्शाकिरीन (६३) क़ुलिल्लाहु
युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुश्रिकून (६४)

واذا سمعوا ١٠٧ الانعام

الرحمة ۙ انه من عمل منكم سوءا بجهالة ثم تاب من بعده و
اصلح فانه غفور رحيم ﴿٥٤﴾ وكذلك نفصل الايت ولتستبين
سبيل المجرمين ﴿٥٥﴾ قل اني نهيت ان اعبد الذين تدعون من
دون الله قل لا اتبع اهواءكم قد ضللت اذا وما انا من
المهتدين ﴿٥٦﴾ قل اني على بينة من ربي وكذبتم به ما عندي
ما تستعجلون به ان الحكم الا لله يقص الحق وهو خير الفصلين ﴿٥٧﴾
قل لو ان عندي ما تستعجلون به لقضي الامر بيني وبينكم والله
اعلم بالظلمين ﴿٥٨﴾ وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها الا هو ويعلم ما
في البر والبحر وما تسقط من ورقة الا يعلمها ولا حبة في ظلمت
الارض ولا رطب ولا يابس الا في كتب مبين ﴿٥٩﴾ وهو الذي يتوفكم
باليل ويعلم ما جرحتم بالنهار ثم يبعثكم فيه ليقضى اجل مسمى
ثم اليه مرجعكم ثم ينبئكم بما كنتم تعملون ﴿٦٠﴾ وهو القاهر
فوق عباده ويرسل عليكم حفظة حتى اذا جاء احدكم
الموت توفته رسلنا وهم لا يفرطون ﴿٦١﴾ ثم ردوا الى الله مولىهم
الحق الا له الحكم وهو اسرع الحسبين ﴿٦٢﴾ قل من ينجيكم
من ظلمت البر والبحر تدعونه تضرعا وخفية لئن انجنا
من هذه لنكونن من الشكرين ﴿٦٣﴾ قل الله ينجيكم منها ومن

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बख़्शने वाला मेहरबान है। (५४) और इसी तरह हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं (ताकि तुम लोग उन पर अमल करो) और इस लिए कि गुनाहगारों का रास्ता ज़ाहिर हो जाए। (५५) ★

(ऐ पैग़म्बर! कुफ़्फ़ार से) कह दो कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे उनकी इबादत से मना किया गया है। (यह भी) कह दो कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं करूंगा, ऐसा करूं, तो गुमराह हो जाऊं और हिदायत पाये हुए लोगों में न रहूं। (५६) कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार की रोशन दलील पर हूं और तुम उस को झुठलाते हो। जिस चीज़ (यानी अज़ाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, वह मेरे पास नहीं है। (ऐसा) हुक्म अल्लाह ही के अख़्तियार में है, वह सच्ची बात बयान फ़रमाता है और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (५७) कह दो कि जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, अगर वह मेरे अख़्तियार में होती, तो मुझ में और तुम में फ़ैसला हो चुका होता और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (५८) और उसी के पास ग़ैब की कुंजियां हैं, जिन को उस के सिवा कोई नहीं जानता और उसे जंगलों और नदियों की सब चीज़ों का इल्म है और कोई पत्ता नहीं झड़ता, मगर वह उस को जानता है और ज़मीन के अंधेरों में कोई दाना और कोई हरी और सूखी चीज़ नहीं है, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (५९) और वही तो है जो रात को (सोने की हालत में) तुम्हारी रूह क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो, उस की ख़बर रखता है, फिर तुम्हें दिन को उठा देता है, ताकि (यही सिलसिला जारी रख कर ज़िंदगी की) तै मुद्दत पूरी कर दी जाए, फिर तुम (सब) को उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (उस दिन) वह तुम को तुम्हारे अमल, जो तुम करते हो (एक-एक कर के) बताएगा★ (६०) और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है और तुम पर निगहबान मुक़र्रर किए रखता है, यहां तक कि जब तुम में से किसी की मौत आती है, तो हमारे फ़रिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे किसी तरह की कोताही नहीं करते। (६१) फिर (क़ियामत के दिन तमाम) लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह के पास वापस बुलाये जाएंगे। सुन लो कि हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (६२) कहो, भला तुम को जंगलों और नदियों के अंधेरों से कौन ख़लासी देता है, (जब) कि तुम उसे आजिज़ी और (दिल में) छिपी नियाज़मंदी से पुकारते हो (और कहते हो), अगर ख़ुदा हम को इस (तंगी) से निजात बख़्शे, तो हम उस के बहुत शुक्रगुज़ार हों। (६३) कहो कि ख़ुदा ही तुम को इस (तंगी) से और हर सख़्ती से निजात बख़्शता है, फिर (तुम) उस के साथ शिर्क करते हो। (६४) कह दो कि वह (इस पर भी) क़ुदरत रखता है

★रु. ६/१२ आ ५ ★रु. ७/१३ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् हुवल्क़ादिरु अ़ला अंय्यब्-अ-स अ़लैकुम् अ़ज़ाबम्-मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन्
तह़्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि-सकुम् शिय-अंव्-व युज़ी-क़ बअ्-ज़कुम् बअ्-स बअ्-ज़िन्,
उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति ल-अ़ल्लहुम् यफ़्क़हून (६५) व कज़्ज़-ब
बिही क़ौमु-क व हुवल्ह़क़्क़ु ط क़ुल् लस्तु अ़लैकुम् बिवकील ط (६६)
लिकुल्लि न-बइम् - मुस्तक़र्रुंव्-व सौ - फ़
तअ्-लमून (६७) व इज़ा रऐतल्लज़ी-न
यख़ूज़ू-न फ़ी आयातिना फ़-अअ्-रिज़् अ़न्हुम्
ह़त्ता यख़ूज़ू फ़ी ह़दीसिन् ग़ैरिही ط व
इम्मा युन्सियन्नकश्-शैतानु फ़ला तक़्अुद्
बअ्-दज़्ज़िक्रा म-अ़ल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (६८)
व मा अ़-लल्लज़ी-न यत्तक़ू-न मिन्
ह़िसाबिहिम् मिन् शैइंव - व लाकिन्
ज़िक्रा ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (६९) व
ज़रिल्लज़ीनत्-त-ख़ज़ू दीनहुम् लअिबंव - व
लह्वंव् - व ग़र्रत्हुमुल् - ह़यातुद्दुन्या व
ज़क्किर-बिही अन् तुब्-स-ल नफ़्सुम्-बिमा
क-स-बत् ق लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि
वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअुन् ج व इन् तअ्-दिल् कुल्-ल अ़द्लिल्ला युअ्ख़ज़्
मिन्हा ط उला - इकल्लज़ी - न उब्सिलू बिमा क - सबू ج लहुम् शराबुम् -
मिन् ط ह़मीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून ★(७०) क़ुल्
अ-नद्अ़ू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अ़ला
अअ्-क़ाबिना बअ्-द इज़् हदानल्लाहु कल्लज़िस्तह्वत्हुश्-शयातीनु फ़िल्अर्ज़ि
ह़ैरा-न ص लहू अस्ह़ाबुंय्यद्अ़ूनहू इलल्-हुदअ्तिना ط क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि
हुवल्हुदा ط व उमिर्ना लिनुस्लि - म लिरब्बिल् - आ़लमीन ۘ (७१)
व अन् अक़ीमुस्सला-त वत्तक़ूहु ط व हुवल्लज़ी इलैहि तुह़्शरून (७२)

الانعام ٦ ١٠٨ واذا سمعوا ٧

كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ
عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ
بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾
وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ
مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ
الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ
اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا
شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ
عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى
الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ
هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कि तुम पर ऊपर की तरफ़ से या तुम्हारे पांव के नीचे से अज़ाब भेजे या तुम्हें फ़िर्क़ा-फ़िर्क़ा कर दे और एक को दूसरे (से लड़ा कर आपस) की लड़ाई का मज़ा चखा दे। देखो हम अपनी आयतों को किस-किस तरह बयान करते हैं, ताकि ये लोग समझें। (६५) और इस (क़ुरआन) को तुम्हारी क़ौम ने झुठलाया, हालांकि वह हक़ है, कह दो कि मैं तुम्हारा दारोग़ा नहीं हूं। (६६) हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और तुम को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (६७) और जब तुम ऐसे लोगों को देखो, जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा बकवास कर रहे हों, तो उन से अलग हो जाओ, यहां तक कि वे और बातों में लग जाएं और अगर (यह बात) शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो। (६८) और परहेज़गारों पर उन लोगों के हिसाब की कुछ भी जवाबदेही नहीं, हां नसीहत, ताकि वे भी परहेज़गार हों। (६९) और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है और दुनिया की ज़िंदगी ने उन को धोखे में डाल रखा है, उन से कुछ काम न रखो। हां, इस (क़ुरआन) के ज़रिए से नसीहत करते रहो, ताकि (क़ियामत के दिन) कोई अपने आमाल की सज़ा में हलाकत में न डाला जाए, (उस दिन) ख़ुदा के सिवा न तो कोई उसका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला और अगर वह हर चीज़, (जो धरती पर है,) मुआवज़े (के तौर पर) देना चाहे, तो वह उस से क़ुबूल न हो। यही लोग हैं कि अपने आमाल के वबाल में हलाकत में डाले गये उन के लिए पीने को खौलता हुआ पानी और दुख देने वाला अज़ाब है, इस लिए कि कुफ़्र करते थे। (७०) ★

कहो, क्या हम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारें, जो न हमारा भला कर सके न बुरा और जब हम को ख़ुदा ने सीधा रास्ता दिखा दिया, तो (क्या) हम उल्टे पांव फिर जाएं? (फिर हमारी ऐसी मिसाल हो) जैसे किसी जिन्नात ने जंगल में भुला दिया हो (और वह) हैरान (हो रहा हो) और उस के कुछ साथी हों जो उस को रास्ते की तरफ़ बुलाएं कि हमारे पास चला आ। कह दो कि रास्ता तो वही है, जो ख़ुदा ने बताया है और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम अल्लाह, रब्बुल आलमीन के फ़रमांबरदार हों। (७१) और यह (भी) कि नमाज़ पढ़ते रहो और उस से डरते रहो और वही तो है, जिस के पास तुम जमा किये

★रु. ८/१४ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्ह़क़्क़ि व यौ-म यक़ूलु कुन्
फ़-यकून ● क़ौलुहुल्-ह़क़्क़ु व लहुल्मुल्कु यौ-म युन्फ़ख़ु
फ़िस्सूरि आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहादति व हुवल्-ह़कीमुल्-ख़बीर (७३) व
इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लिअबीहि आज़-र अ-तत्तख़िज़ु अस्नामन् आलिह-तन्
इन्नी अरा-क व क़ौम-क फ़ी ज़लालिम्-
मुबीन (७४) व कज़ालि-क नुरी इब्राही-म
म-ल-कूतस्समावाति वल्अर्ज़ि व लियकू-न
मिनल्मूक़िनीन (७५) फ़-लम्मा जन-न
अ़लैहिल्लैलु रआ कौक-बन् क़ा-ल हाज़ा
रब्बी फ़लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ला
उहि़ब्बुल्-आफ़िलीन (७६) फ़-लम्मा र-अल्-
क़-म-र बाज़िग़न् क़ा-ल हाज़ा रब्बी
फ़लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल लइल्लम् यह्दिनी
रब्बी ल-अकूनन्-न मिनल्-क़ौमिज़्ज़ाल्लीन
(७७) फ़-लम्मा र-अश्शम-स बाज़िग़-तन् क़ा-ल
हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरु फ़-लम्मा
अ-फ़-लत् क़ा-ल याक़ौमि इन्नी बरीउम्-मिम्मा
तुश्रिकून (७८) इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य
लिल्लज़ी फ़-त़-रस्समावाति वल्अर्-ज़ ह़नीफ़ंव-व मा अ-न मिनल्मुश्रिकीन
(७९) व ह़ाज्जहू क़ौमुहू क़ा-ल अतुह़ाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि
व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकू-न बिही इल्ला अय्यशा-अ रब्बी शैअन्
वसि-अ़ रब्बी कुल-ल शैइन् अ़िल्मन् अ-फ़-ला त-त-ज़क्करून (८०) व कै-फ़
अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ू-न अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा
लम् युनज़्ज़िल् बिही अ़लैकुम् सुल्त़ानन् फ़अय्युल्-फ़रीक़ैनि अह़क़्क़ु बिल्-
अम्नि इन् कुन्तुम् तअ़-लमून ▨ (८१) अल्लज़ी-न आमनू व लम्
यल्बिसू ईमानहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइ-क लहुमुल्-अम्नु व हुम् मुह्तदून
★ (८२) व तिल-क ह़ुज्जतुना आतैनाहा इब्राही-म अ़ला क़ौमिही
नर्फ़अ़ु द-र-जातिम्-मन् नशाउ इन्-न रब्ब-क ह़कीमुन् अ़लीम (८३)

الانعام ٦ — ١٠٩ — وإذا سمعوا ٧

الْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ
يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٧٣﴾ وَإِذْ قَالَ
إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٧٤﴾ وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا
رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ
هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا
أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي
فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ
قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا
أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾
وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ
الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ
نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जाओगे । (७२) और वही तो है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को तद्बीर से पैदा किया है और जिस दिन वह फ़रमायेगा कि होजा तो (हश्र बरपा) हो जाएगा● उस का इर्शाद बर-हक़ है और जिस दिन सूर फूंका जाएगा (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी। वही छिपे और ज़ाहिर (सब) का जानने वाला है और वही हिक्मत वाला और ख़बर वाला है। (७३) और (वह वक़्त भी याद करने के लायक़ है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा कि तुम बुतों को क्या माबूद बनाते हो। मैं देखता हूं कि तुम और तुम्हारी क़ौम खुली गुमराही में हो।[1] (७४) और हम इस तरह इब्राहीम को आसमान और ज़मीन के अजाइबात दिखाने लगे, ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जाएं। (७५) (यानी) जब रात ने उन को (अंधेरे के परदे) से ढांप लिया, तो (आसमान में) एक सितारा नज़र पड़ा। कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है। जब वह ग़ायब हो गया तो कहने लगे कि मुझे ग़ायब हो जाने वाले पसन्द नहीं। (७६) फिर जब चांद को देखा कि चमक रहा है, तो कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है। लेकिन जब वह भी छिप गया, तो बोल उठे कि अगर मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता नहीं दिखाएगा, तो मैं उन लोगों में हो जाऊंगा, जो भटक रहे हैं। (७७) फिर जब सूरज को देखा कि जगमगा रहा है, तो कहने लगे, मेरा परवरदिगार यह है, यह सब से बड़ा है, मगर जब वह भी डूब गया तो कहने लगे, लोगो! जिन चीज़ों को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, मैं उन से बे-ज़ार हूं। (७८) मैंने सब से यक्सू होकर अपने को उसी ज़ात की तरफ़ मुतवज्जह किया, जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं। (७९) और उन की क़ौम उन से बहस करने लगी, तो उन्होंने कहा कि तुम मुझ से ख़ुदा के बारे में (क्या) बहस करते हो, उसने तो मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया है। और जिन चीज़ों को तुम उस का शरीक बनाते हो, मैं उन से नहीं डरता। हां, जो मेरा परवरदिगार कुछ चाहे। मेरा परवरदिगार अपने इल्म से हर चीज़ पर एहाता किये हुए है, क्या तुम ख़्याल नहीं करते? (८०) भला में उन चीज़ों से, जिन को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, कैसे डरूं, जब कि तुम इस से नहीं डरते कि ख़ुदा के साथ शरीक बनाते हो, जिसकी उसने कोई सनद नाज़िल नहीं की। अब दोनों फ़रीक़ में से कौन-सा फ़रीक़ अम्न (और दिल के सुकून) का हक़दार है, अगर समझ रखते हो (तो बताओ)▨ (८१) जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को (शिर्क के) ज़ुल्म से गड्-मड् नहीं किया, उन के लिए अम्न (और दिल का सुकून) है और वही हिदायत पाने वाले हैं। (८२)★

और यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उन की क़ौम के मुक़ाबले में अता की थी। हम जिसके चाहते हैं, दर्जे बुलंद कर देते हैं। बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला और इल्म

---

१. क़ुरआन मजीद से तो हज़रत इब्राहीम के वालिद का नाम आज़र मालूम होता है, लेकिन तौरात में उन का नाम तारिख़ लिखा है और नसब व तारीख़ के उलमा के नज़दीक भी उन का यही नाम है। तफ़्सीर लिखने वालों ने इस के जवाब में कहा है, शायद उन के दो नाम होंगे, एक आज़र, दूसरा तारिख़ या एक नाम होगा, दूसरा लक़ब। फिर यह कि आज़र फ़ारसी लफ़्ज़ है और इस का मतलब 'बूढ़ा आदमी' है। पस यह भी हो सकता है कि 'अबी हि आज़र' से यह मुराद हो कि उन्हों ने बूढ़े बाप से कहा, कुछ लोगों ने कहा कि आज़र बुत का नाम था, शायद इस वजह से कि हज़रत इब्राहीम के वालिद उन की बहुत खिदमत करते हों, उन को भी आज़र कहने लगे। बहरहाल जो वजह भी हो, उन्हें आज़र भी कहते थे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्-क़ू-ब ط कुल्लन् हदैना ج व नूहन् हदैना
मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रिय्यतिही दाऊ-द व सुलैमा-न व अय्यू-ब व यूसु-फ़ व मूसा
व हारू-न ط व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन ۙ (८४) व ज़-करिय्या व
यह्या व ईसा व इल्या-स ط कुल्लुम्-मिनस्सालिहीन ۙ (८५) व इस्-
माई-ल वल्य-स्-अ व यूनु-स व लूतन् ط
व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अ-लल् - आलमीन ۙ
(८६) व मिन् आबाइहिम् व
ज़ुर्रियातिहिम् व इख़्वानिहिम् ج वज् -
तबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम्-
मुस्तक़ीम (८७) ज़ालि-क हुदल्लाहि
यह्दी बिही मंय्यशाउ मिन् अिबादिही ط
व लौ अश्रकू ल-हबि-त अन्हुम् मा कानू
यअ्-मलून (८८) उलाइकल्लज़ी-न आतैना
हुमुल्-किता-ब वल्हुक् - म वन्नुबुव्व - त ج
फ़इंय्यक्फ़ुर् बिहा हा-उला-इ फ़-क़द् वक्कल्ना
बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन (८९)
उला-इकल्लज़ी - न हदल्लाहु फ़बिहुदा - हुमुक्तदिह ط क़ुल् ला अस्अलुकुम्
अलैहि अज्रन् ط इन् हु - व इल्ला ज़िक्रा लिल् - आलमीन ★ (९०)
व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही इज़् क़ालू मा अन्ज़लल्लाहु अला
ब-शरिम्मिन् शैइन् ط क़ुल् मन् अन्ज़लल् - किताबल्लज़ी जा - अ बिही
मूसा नूरंव-व हुदल्-लिन्नासि तज्अलूनहू क़राती-स तुब्दूनहा व तुख़्फू - न
कसीरन् ج व अुल्लिम्तुम् मा लम् तअ् - लमू अन्तुम् व ला
आबा-उकुम् ط क़ुलिल्लाहु ۙ सुम्-म ज़र्हुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्अबून (९१)
व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुम्-मुसद्दिक़ुल्लज़ी बै-न यदैहि व
लितुन्ज़ि-र उम्मल्क़ुरा व मन् हौलहा ط वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्-
आख़िरति युअ्मिनू-न बिही व हुम् अला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (९२)

وإذا سمعوا ٧ — ١١٠ — الانعام ٦

وَيَعْقُوبَ كُلًّا هَدَيْنَا وَنُوحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَ
سُلَيْمٰنَ وَاَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسٰى وَهٰرُونَ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيسٰى وَاِلْيَاسَ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِينَ ۝ وَاِسْمٰعِيلَ
وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِينَ ۝ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ
وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِي بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَلَوْ اَشْرَكُوا لَحَبِطَ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِينَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ
وَالنُّبُوَّةَ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا
بِكٰفِرِينَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ قُلْ لَّآ
اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِينَ ۝ وَمَا قَدَرُوا
اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ
اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِي جَآءَ بِهٖ مُوسٰى نُورًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهٗ
قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوٓا اَنْتُمْ وَ
لَآ اٰبَآؤُكُمْ قُلِ اللّٰهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ
اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ
مَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى
صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाला है। (८३) और हमने उन को इस्हाक़ और याक़ूब बख़्शे (और) सब को हिदायत दी और पहले नूह को भी हिदायत दी थी और उनकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को भी और हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८४) और ज़करीया और यह्या और ईसा और इल्यास को भी। ये सब भले लोग थे। (८५) और इस्माईल और अल-यसअ् और यूनुस और लूत को भी और उन सब को दुनिया के लोगों पर फ़ज़ीलत बख़्शी थी। (८६) और किसी-किसी को उन के बाप-दादा और औलाद और भाइयों में से भी और उन को चुन भी लिया था और सीधा रास्ता भी दिखाया था! (८७) यह ख़ुदा की हिदायत है। इस पर अपने बन्दों में से जिसे चाहे चलाये। और अगर वे लोग शिर्क करते, तो जो अमल वे करते थे, सब बर्बाद हो जाते। (८८) ये वह लोग थे, जिन को हमने किताब और हुक्म (शरीअत) और नबूवत अता फ़रमायी थी। अगर ये (कुफ़्फ़ार) इन बातों से इन्कार करें तो हमने उन पर (ईमान लाने के लिए) ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिए हैं कि वे उन से कभी इन्कार करने वाले नहीं। (८९) ये वह लोग हैं जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी थी, तो तुम उन्हीं की हिदायत की पैरवी करो। कह दो कि मैं तुम से इस (क़ुरआन) का बदला नहीं मांगता। यह तो दुनिया के लोगों के लिए सिर्फ़ नसीहत है। (९०) ★

और उन लोगों ने ख़ुदा की क़द्र जैसी जाननी चाहिए थी, न जानी। जब उन्होंने कहा कि ख़ुदा ने इंसान पर (वह्य और किताब वग़ैरह) कुछ भी नाज़िल नहीं किया। कहो कि जो किताब मूसा ले कर आये थे, उसे किसने नाज़िल किया था, जो लोगों के लिए नूर और हिदायत थी और जिसे तुमने अलग-अलग पन्नों (पर नक़ल) कर रखा है। उन (के कुछ हिस्से) को तो ज़ाहिर करते हो और अक्सर को छिपाते हो। तुम को वे बातें सिखायी गयीं, जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादा। कह दो (इस किताब को) ख़ुदा ही ने (नाज़िल किया था), फिर उन को छोड़ दो कि अपनी बेहूदा बकवास में खेलते रहें। (९१) और (वैसी ही) यह किताब है, जिसे हमने नाज़िल किया है, बरकत वाली, जो अपने से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करती है और (जो) इस लिए (नाज़िल की गयी है) कि तुम मक्के और उसके आस-पास के लोगों को आगाह कर दो और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वे उस किताब पर भी ईमान रखते हैं और वे अपनी

★रु॰ १०/१६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ क़ा-ल ऊहि-य इलय्-य
व लम् यू-ह् इलैहि शैउंव्-व मन् क़ा-ल सउन्ज़िलु मिस्-ल मा अन्ज़लल्लाहु
व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न फ़ी ग़-मरातिल् - मौति वल्मलाइकतु बासितू
ऐदीहिम् ج अख़्रिजू अन्फ़ुसकुम् ط अल्यौ - म तुज्ज़ौ - न अ़ज़ाबल्हूनि बिमा
कुन्तुम् तक़ूलू-न अ़-लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व
कुन्तुम् अ़न् आयातिही तस्तक्बिरून
(९३) व ल - क़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा
कमा ख़-लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व तरक्तुम्
मा ख़व्वल्नाकुम् वरा - अ ज़ुहूरिकुम् ج
व मा नरा म-अकुम् शु-फ़आ-अकुमुल्लज़ी-न
ज़-अम्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शुरका-उ ط
लक़त्तक़त्त-अ बैनकुम् व ज़ल्-ल अ़न्कुम् मा
कुन्तुम् तज़्अुमून ★ (९४) इन्नल्ला-ह
फ़ालिक़ुल् - हब्बि वन्नवा ط युख़्रिजुल्हय्-य
मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुलमय्यिति मिनल्हय्यि ط
ज़ालिकुमुल्लाहु फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (९५)
फ़ालिक़ुल् - इस्बाहि ج व ज-अ़-लल्लै - ल
स-क-नंव्वशशम्-स वल्क़-म-र हुस्बानन् ط ज़ालि-क
तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (९६) व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुन्नुजू - म
लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्रि ط क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति
लिक़ौमिय्यअ़-लमून (९७) व हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् मिन् नफ़्सिव्वाहिदतिन्
फ़मुस्तक़र्रुंव् - व मुस्तौदअुन् ط क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति लिक़ौमिय्यफ़्क़हून
(९८) व हुवल्लज़ी अन्ज़ - ल मिनस्समा - इ मा-अन् ج फ़-अख़्रज्ना
बिही नबा-त कुल्लि शैइन् फ़ - अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु
हब्बम् - मुतराकिबन् ج व मिनन्नख़्लि मिन् - तल्अ़िहा क़िन्वानुन्
दानियतुंव्-व जन्नातिम्मिन् अअ्-नाबिंव्वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मुश्तबिहंव्-व ग़ै-र
मुतशाबिहिन् ط उन्ज़ुरू इला समरिही इज़ा अस्म - र व यन्अ़िही ط
इन् - न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल् - लिक़ौमिय्युअ्मिनून (९९)

الانعام ٦ ولو اسمعوا

اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ
بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ
بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ٩٣
وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ
وَرَاۗءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَاۗءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ
فِيْكُمْ شُرَكٰۗؤُا ۭ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ٩٤
اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۭ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ
مِنَ الْحَيِّ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ٩٥ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ
سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ٩٦ وَهُوَ
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ قَدْ
فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ٩٧ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ
وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ٩٨
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ
فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ
طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ
مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ

منزل ٢

★रु. ११/१७ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नमाज़ों की (पूरी) ख़बर रखते हैं। (६२) और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े या यह कहे कि मुझ पर वह्य आयी है, हालांकि उस पर कुछ भी वह्य न आयी हो और जो यह कहे कि जिस तरह की किताब ख़ुदा ने नाज़िल की है, उस तरह की मैं भी बना लेता हूं और काश ! तुम उन ज़ालिम (यानी मुश्रिक) लोगों को उस वक़्त देखो, जब मौत की सख़्तियों में (पड़े) हों और फ़रिश्ते (उन की तरफ़ अज़ाब के लिए) हाथ बढ़ा रहे हों कि निकालो अपनी जानें, आज तुम को ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा दी जाएगी, इसलिए कि तुम ख़ुदा पर झूठ बोला करते थे और उस की आयतों से सरकशी करते थे। (६३) और जैसा हमने तुम को पहली बार पैदा किया था, ऐसा ही आज अकेले हमारे पास आए और जो (माल व मताअ) हमने तुम्हें अता फ़रमाया था, वह सब अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे सिफ़ारिशियों को भी नहीं देखते, जिन के बारे में तुम ख़्याल करते थे कि वे तुम्हारे (शफ़ीअ यानी शफ़ाअत करने वाले और हमारे) शरीक हैं। (आज) तुम्हारे आपस के सब ताल्लुक़ात ख़त्म हो गये और जो दावे तुम किया करते थे, सब जाते रहे। (६४) ★

बेशक ख़ुदा ही दाने और गुठली को फाड़ (कर उन से पेड़ वग़ैरह) उगाता है, वही जानदार को बे-जान से निकालता है और वही बे-जान का जानदार से निकालने वाला है। यही तो ख़ुदा है, फिर तुम कहां बहके फिरते हो ? (६५) वही (रात के अंधेरे से) सुबह की रोशनी फाड़ निकालता है और उसी ने रात को आराम (की वजह ठहराया और सूरज और चांद को गिन्ती (का ज़रिया) बनाया है। ये ख़ुदा के (मुक़र्रर किये हुए) अन्दाज़े हैं, जो ग़ालिब (और) इल्म वाला है। (६६) और वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाये, ताकि जगलों और नदियों के अंधेरों में उन से रास्ते मालूम करो। अक़्ल वालों के लिए हमने अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (६७) और वही तो है, जिसने तुम को एक शख़्स से पैदा किया, फिर (तुम्हारे लिए) एक ठहरने की जगह है और एक सुपुर्द होने की।[1] समझने वालों के लिए हम ने (अपनी) आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (६८) और वही तो है जो आसमान से वर्षा बरसाता है। फिर हम ही (जो बर्षा बरसाते हैं) उस में हर तरह की हरियाली उगाते हैं, फिर उस में से हरी-हरी कोंपलें निकालते हैं और इन कोंपलों में से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए दाने निकालते हैं और ख़जूर के गाभे में से लटकते हुए गुच्छे और अंगूरों के बाग़ और ज़ैतून और अनार, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते। ये चीज़ें जब फलती हैं, तो उन के फलों पर और (जब पकती हैं तो) उन के पकने पर नज़र करो। इन में उन लोगों के लिए जो ईमान लाते है (ख़ुदा की क़ुदरत की

१. यानी एक मुद्दत तक दुनिया में ज़िंदा रखे जाते, फिर ज़मीन में दफ़्न हो कर ख़ुदा के सुपुर्द किये जाते हो।

★रु. ११/१७ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ज-अ़लू लिल्लाहि शुरका-अल्जिन्-न व ख़-ल-क़हुम् व ख़-रक़ू लहू बनी-न व
बनातिम् - बिग़ैरि अ़िल्मिन् ط सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यसिफ़ून
★ (१००) बदीअ़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط अन्ना यकूनु लहू व-लदुं व्-व लम्
तकुल्लहू साहिबतुन् ط व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् ج व हु-व बिकुल्लि शैइन्
अ़लीम (१०१) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ج
ला इला-ह इल्ला हु-व ج ख़ालिक़ु
कुल्लि शैइन् फ़अ्-बुदूहु ج व हु-व अ़ला
कुल्लि शैइंव्वकील (१०२) ला तुद्रिकुहुल्-
अब्सारु ز व हु-व युद्रिकुल् - अब्सा-र ز
व हुवल्लतीफ़ुल्-ख़बीर (१०३) क़द्
जा-अकुम् बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् ج फ़-मन्
अब्स़-र फ़लिनफ़्सिही ج व मन् अ़मि-य
फ़अ़लैहा ط व मा अ-न अ़लैकुम्
बिहफ़ीज (१०४) व कज़ालि - क
नुसर्रिफ़ुल्-आयाति व लियक़ूलू द-रस्-त व
लिनुबय्यिनहू लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (१०५)
इत्तबिअ़् मा ऊहि-य इलै-क मिर्रब्बि-क ج

الانعام ٦ — ١١٢ — واذا سمعوا ٧

ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَ
خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾
لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾
قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ
وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا
جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا
الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ
زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا
جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا
لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع

منزل ٢

ला इला-ह इल्ला हु-व ج व अअ्-रिज़् अ़निल्मुश्रिकीन (१०६) व लौ
शा - अल्लाहु मा अश्रकू ط व मा ज-अ़ल्ना - क अ़लैहिम् हफ़ीज़न् ج
व मा अन्-त अ़लैहिम् बिवकील (१०७) व ला तसुब्बुल्लज़ी-न यद्अू-न
मिन् दूनिल्लाहि फ़यसुब्बुल्ला-ह अ़द्-वम्-बिग़ैरि अ़िल्मिन् ط कज़ालि-क
ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ़-म-लहुम् ص सुम्-म इला रब्बिहिम् मर्जिअ़ुहुम्
फ़युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (१०८) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द
ऐमानिहिम् लइन् जा-अत्हुम् आयतुल्लयुअ्मिनुन्-न बिहा ط क़ुल् इन्नमल् -
आयातु अ़िन्दल्लाहि व मा युश्अ़िरुकुम् ۙ अन्नहा इज़ा जा - अत् ला
युअ्मिनून (१०९) व नुक़ल्लिबु अफ़्इ-द-तहुम् व अब्सारहुम् कमा लम्
युअ्मिनू बिही अव्व-ल मर्रतिंव्-व न-ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून ★ (११०)

★रु. १२/१८ आ ६ ★रु. १३/१९ आ १०

बहुत-सी) निशानियां हैं। (९९) और उन लोगों ने जिन्नों को ख़ुदा का शरीक ठहराया, हालांकि उन को उसी ने पैदा किया और बे-समझे (झूठ-बुहतान) उस के लिए बेटे और बेटियां बना खड़ी कीं। वह इन बातों से जो वे उस के बारे में बयान करते हैं, पाक है और उसकी शान उन से बुलंद है। (१००) ★

(वही) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (है), उस के औलाद कहां से हो, जबकि उस की बीवी ही नहीं और उस ने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ की ख़बर रखता है। (१०१) यही (ख़ूबियां रखने वाला) ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। (वही) हर चीज़ का पैदा करने वाला (है), तो उसी की इबादत करो और वह हर चीज़ का निगरां है। (१०२) (वह ऐसा है कि) निगाहें उस का इद्राक नहीं कर सकतीं और वह निगाहों का इद्राक कर सकता है और वह भेद जानने वाला ख़बरदार है। (१०३) (ऐ मुहम्मद ! उन से कह दो कि) तुम्हारे (पास) परवरदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलीलें पहुंच चुकी हैं, तो जिस ने (उन को आंख खोलकर) देखा, उस ने अपना भला किया और जो अंधा बना रहा, उस ने अपने हक़ में बुरा किया और मैं तुम्हारा निगहबान नहीं हूं। (१०४) और हम इसी तरह अपनी आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं, ताकि काफ़िर यह न कहें कि तुम (ये बातें अह्ले किताब से) सीखे हुए हो और ताकि समझने वाले लोगों के लिए तश्रीह कर दें।[1] (१०५) और जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास आता है, उसी की पैरवी करो। उस (परवरदिगार) के सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से किनारा करो। (१०६) और अगर ख़ुदा चाहता तो ये लोग शिर्क न करते और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम को उन पर निगहबान मुक़र्रर नहीं किया और न तुम उन के दारोग़ा हो। (१०७) और जिन लोगों को ये मुश्रिक ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न कहना कि ये भी कहीं ख़ुदा को बे-अदबी से बे-समझे बुरा (न) कह बैठें। इस तरह हमने हर एक फ़िर्क़े के आमाल (उन की नज़रों में) अच्छे कर दिखाये हैं। फिर उनको अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, तब वह उन को बतायेगा कि वे क्या-क्या किया करते थे। (१०८) और ये लोग ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़समें खाते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आये, तो वे उस पर ज़रूर ईमान ले आएं। कह दो कि निशानियां तो सब ख़ुदा ही के पास हैं और (मोमिनो !) तुम्हें क्या मालूम है, (ये तो ऐसे बद-बख़्त हैं कि उनके पास) निशानियां आती जाएं, तब भी ईमान न लाएं। (१०९) और हम उन के दिलों और आंखों को उलट देंगे (तो) जैसे ये इस (क़ुरआन) पर पहली बार ईमान नहीं लाये, (वैसे फिर न लाएंगे) और उन को छोड़ देंगे कि अपनी सरकशी में बहकते रहें। (११०) ★

---

१. जिस तरीक़े पर क़ुरआन मजीद में आयतें फेर-फेर कर बयान की गयी हैं, वह ऐसा नहीं है कि कोई यह कह सके कि ये मज़्मून किसी शख़्स से सीखे गये हैं। कहीं ख़ुदा की क़ुदरत का बयान है, कहीं उस की हस्ती और वह्दानियत की ज़ोरदार दलीलें हैं। कहीं ईमान वालों को बशारतें सुनायी गयी हैं, कहीं कुफ़्फ़ार को डराया गया है। कहीं नेक अमल करने के लिए हुक्म दिया गया है, कहीं बुरे आमाल से मना किया गया है, कहीं नसीहतें हैं, कहीं हिक्मतें हैं। ग़रज़ तरह-तरह के बयान है और इसी लिए इर्शाद हुआ है कि हम इसी तरह (अपनी) आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं ताकि यह न कहें कि आंहज़रत सल्ल० ने ये बातें यहूदी उलेमा से या किसी दूसरे से सीखी हैं।

★रु. १२/१८ आ ६ ★रु. १३/१९ आ १०

आठवां पारः वलौ अन्नना

सूरतुल्-अन्आमि आयत १११ से १६७

व लौ अन्नना नज़्ज़ल्ना इलैहिमुल्-मलाइक-त् व कल्लमहुमुल्-मौता व ह्-शर्ना
अ़लैहिम् कुल-ल शैइन् क़ुबुलम्मा कानू लियुअ्मिनू इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु व
लाकिन-न अक्सरहुम् यज्हलून (१११) व कज़ालि-क ज-अ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन्
अ़दुव्वन् शयातीनल्-इन्सि वल्जिन्नि यूही बअ्-ज़ुहुम् इला बअ्-ज़िन् ज़ुख़रुफ़ल्क़ौलि
ग़ुरूरन् ط व लौ शा-अ रब्बु-क मा फ़-अलूहु
फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (११२) व
लितस्ग़ा इलैहि अफ़्इ-दतुल्लज़ी-न ला
युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति व लियर्ज़ौहु
व लियक़्तरिफ़ू मा हुम् मुक़्तरिफ़ून (११३)
अ-फ़-ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी ह्-क-मंव्-व हुवल्लज़ी
अन्-ज़-ल इलैकुमुल् - किता-ब मुफ़स्स़लन् ط
वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्-लमू-न अन्नहू
मुनज़्ज़लुम्-मिर्रब्बि-क बिल्ह़क़्क़ि फ़ला तकूनन्-न
मिनल्मुम्तरीन (११४) व तम्मत् कलिमतु
रब्बि-क सिद्क़ंव्-व अ़द्लन् ط ला मुबद्दि-ल
लिकलिमातिही ج व हुवस्समीअ़ुल् - अ़लीम
(११५) व इन् तुतिअ् अक्स-र मन्

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ
الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ
وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى
اِلَيْهِ اَفْئِدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا
مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ
اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ
مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾
فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ وَ
مَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ
مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ
بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾

फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लू-क अ़न् सबीलिल्लाहि ط इंय्यत्तबिअ़ू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन्
हुम् इल्ला यख़्रुसून (११६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु मंयज़िल्लु अ़न् सबीलिही ج
व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह्तदीन (११७) फ़कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि
अ़लैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही मुअ्मिनीन (११८) व मा लकुम् अल्ला
तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि व क़द् फ़स्स़-ल लकुम् मा ह़र्-र-म अ़लैकुम्
इल्ला मज़्तुरिर्तुम् इलैहि ط व इन्-न कसीरल्-लयुज़िल्लू-न बिअह्वाइहिम्
बिग़ैरि अ़िल्मिन् ط इन् - न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिल्मुअ्-तदीन (११९)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और अगर हम उन पर फ़रिश्ते भी उतार देते और मुर्दे भी उन से बातें करने लगते और हम सब चीज़ों को उनके सामने ला मौजूद भी कर देते, तो भी ये ईमान लाने वाले न थे इल्ला मा शाअल्लाह। बात यह है कि ये अक्सर नादान हैं। (१११) और इसी तरह हमने शैतान-इंसानों और जिन्नों—को हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया था। वे धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में मुलम्मा की बातें डालते रहते थे और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो वे ऐसा न करते, तो उन को और जो कुछ ये गढ़ते हैं, उसे छोड़ दो। (११२) और (वे ऐसे काम) इस लिए भी (करते थे) कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल उन की बातों पर मायल हों और वे उन्हें पसंद करें और जो काम वे करते थे, वही करने लगें। (११३) (कहो) क्या मैं ख़ुदा के सिवा और इंसाफ़ करने वाला ढूंढूं, हालांकि उस ने तुम्हारी तरफ़ मतलब साफ़ करने वाली किताब भेजी है। और जिन लोगों को हमने किताब (तौरात) दी, वे जानते हैं कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ पर नाज़िल हुई कि तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (११४) और तुम्हारे परवरदिगार की बातें सच्चाई और इंसाफ़ में पूरी हैं। उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं और वह सुनता-जानता है। (११५) और अक्सर लोग, जो ज़मीन पर आबाद हैं, (गुमराह हैं)। अगर तुम उन का कहना मान लोगे, तो वे तुम्हें ख़ुदा का रास्ता भुला देंगे। ये सिर्फ़ ख़्याल के पीछे चलते और निरे अटकल के तीर चलाते हैं। (११६) तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटके हुए हैं और उन को भी ख़ूब जानता है जो रास्ते पर चल रहे हैं। (११७) तो जिस चीज़ पर (ज़िब्ह के वक़्त) ख़ुदा का नाम लिया जाए, अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो, तो उसे खा लिया करो। (११८) और वजह क्या है कि जिस चीज़ पर ख़ुदा का नाम लिया जाए, तुम उसे खाओ, हालांकि जो चीज़ें उसने तुम्हारे लिए हराम ठहरा दी हैं, वह एक-एक कर के बयान कर दी हैं। (बेशक उन को नहीं खाना चाहिए) मगर इस सूरत में कि उन के (खाने के) लिए ना-चार हो जाओ और बहुत से लोग बे-समझे बूझे अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों से लोगों को बहका रहे हैं। कुछ शक नहीं कि ऐसे लोगों को, जो (ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई) हद से बाहर निकल जाते हैं, तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है। (११९) और ज़ाहिरी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व जरू ज़ाहिरल्-इस्मि व बातिनहू ط इन्नल्लज़ी-न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्ज़ौ-न
बिमा कानू यक़्तरिफ़ून (१२०) व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि
अलैहि व इन्नहू लफ़िस्कुन् ط व इन्नश्शयाती-न लयूहू-न इला औलियाइहिम्
लियुजादिलूकुम् ج व इन् अ-तअ् - तुमूहुम् इन्नकुम् लमुश्रिकून ★ (१२१)
अ-व-मन् का-न मैतन् फ़-अह्यैनाहु व ज-अ़ल्ना
लहू नूरंय्यम्शी बिही फ़िन्नासि क-मम्-म-सलुहू
फ़िज़्ज़ुलुमाति लै-स बिख़ारिजिम् - मिन्हा ط
कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिलकाफ़िरी-न मा कानू
यअ्-मलून (१२२) व कज़ालि-क ज-अ़ल्ना फ़ी
कुल्लि क़र्यतिन् अकाबि-र मुज्रिमीहा
लियम्कुरू फ़ीहा ط व मा यम्कुरू-न इल्ला
बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्अुरून (१२३) व
इज़ा जा - अत्हुम् आयतुन् क़ालू लन्
नुअ्मि-न हत्ता नुअ्ता मिस्-ल मा ऊति-य
रुसुलुल्लाहि ط ▓ अल्लाहु अअ् - लमु हैसु
यज्अलु रिसाल-तहू ط सयुसीबुल्लज़ी-न अज्रमू-
सग़ारुन् अिन्दल्लाहि व अ़ज़ाबुन् शदीदुम्-
बिमा कानू यम्कुरून (१२४) फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यह्दियहू यश्रह्
सद्रहू लिल्इस्लामि ج व मंय्युरिद् अंय्युज़िल्लहू यज्अल् सद् - रहू
ज़य्यिक़न् ह-र-जन् क-अन्नमा यस्सअ्-अदु फ़िस्समाइ ط कज़ालि-क यज्अलुल्लाहुर्रिज-स
अ-लल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (१२५) व हाज़ा सिरातु रब्बि-क मुस्तक़ीमन् ط
क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्यज़्ज़क्करून (१२६) लहुम् दारुस्सलामि अिन्-द
रब्बिहिम् व हु-व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (१२७) व यौ-म यह्शुरुहुम्
जमीअन् ج यामअ् - शरल्जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम् मिनल्इन्सि ج व क़ा - ल
औलियाउहुम् मिनल्इन्सि रब्ब-नस्तम्त-अ् बअ्-ज़ुना बिबअ्-ज़िव्-व ब - लग़्ना
अ-ज-ल-नल्लज़ी अज्जल-त लना ط क़ालन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदी - न फ़ीहा
इल्ला मा शा-अल्लाहु ط इन् - न रब्ब - क हकीमुन् अलीम (१२८)

الانعام ٦ | ١١٤ | ولو اننا ٨

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ۝ وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ
اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـئِهِمْ
لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ۝ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا
فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى
الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا
فِيْهَا ؕ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَاِذَا جَآءَتْهُمْ
اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؕ اَللّٰهُ
اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ
وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ۝ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ
يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ
ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ
عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ
وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ
قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓـؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ

★रु. १४/१ आ ११ ▓ व. लाज़िम व. मंज़िल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और पोशीदा (हर तरह का) गुनाह छोड़ दो। जो लोग गुनाह करते हैं, वह बहुत जल्द अपने किए की सज़ा पायेंगे। (१२०) और जिस चीज़ पर ख़ुदा का नाम न लिया जाए, उसे मत खाओ कि उस का खाना गुनाह है।[1] और शैतान (लोग) अपने साथियों के दिलों में यह बात डालते हैं कि तुम से झगड़ा करें और अगर तुम लोग उनके कहे पर चले तो बेशक तुम भी मुश्रिक हुए। (१२१)★

भला जो पहले मुर्दा था, फिर हमने उस को ज़िंदा किया और उसके लिए रोशनी कर दी, जिस के ज़रिए से वह लोगों में चलता-फिरता है, कहीं उस शख़्स जैसा हो सकता है, जो अंधेरे में पड़ा हुआ हो और उस से निकल ही न सके। इसी तरह काफ़िर जो अमल कर रहे हैं, वे उन्हें अच्छे मालूम होते हैं। (१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े मुजरिम पैदा किये कि उनमें मक्कारियां करते रहें और जो मक्कारियां ये करते हैं, उनका नुक़्सान उन्हीं को है और (इससे) बे-ख़बर हैं। (१२३) और जब उन के पास कोई आयत आती है, तो कहते हैं कि जिस तरह की रिसालत ख़ुदा के पैग़म्बरों को मिली है, जब तक उसी तरह की रिसालत हम को न मिले, हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे▨इसको ख़ुदा ही ख़ूब जानता है कि (रिसालत का कौन-सा महल है और) वह अपनी पैग़म्बरी किसे इनायत फ़रमाए। जो लोग जुर्म करते हैं, उन को ख़ुदा के यहां ज़िल्लत और कड़ा अज़ाब होगा, इस लिए कि मक्कारियां करते थे। (१२४) तो जिस शख़्स को ख़ुदा चाहता है कि हिदायत बख़्शे, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है कि गुमराह करे, उस का सीना तंग और घुटा हुआ कर देता है, गोया वह आसमान पर चढ़ रहा है। इस तरह ख़ुदा उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते, अज़ाब भेजता है। (१२५) और यही तुम्हारे परवरदिगार का सीधा रास्ता है। जो लोग ग़ौर (विचार) करने वाले हैं, उनके लिए हमने अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (१२६) उन के लिए उन के आमाल के बदले में परवरदिगार के यहां सलामती का घर है और वही उनका दोस्तदार है। (१२७) और जिस दिन वह सब (जिन्न व इंस) को जमा करेगा (और फ़रमाएगा कि) ऐ जिन्नो के गिरोह! तुम ने इंसानों से बहुत (फ़ायदे) हासिल किये, तो जो इंसानों में उन के दोस्तदार होंगे, वे कहेंगे कि परवरदिगार! हम एक-दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे[2] और (आख़िर) इस वक़्त को पहुंच गये, जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर किया था। ख़ुदा फ़रमायेगा (अब) तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है। हमेशा उसमें (जलते) रहोगे, मगर जो ख़ुदा चाहे, बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला और ख़बरदार है। (१२८)

---

१. यानी जिस जानवर के ज़िब्ह करने के वक़्त ख़ुदा का नाम न लिया गया हो, उस का खाना हराम है। इमाम शाफ़ई रह० कहते हैं कि ख़ुदा का नाम न लिए जाने से यह मुराद है कि जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए ज़िब्ह किया जाए, ऐसे ही जानवर का खाना गुनाह है और इस की दलील उन के नज़दीक इसी सूरः की आयत १४५ है। इस में तो कुछ शक ही नहीं कि ग़ैर-अल्लाह के लिए किया गया ज़िब्ह हराम है, लेकिन एक जमाअते सहाबा, ताबईन और फ़ुक़हा का यह मज़हब है कि जिस जानवर पर ज़िब्ह करते वक़्त अल्लाह का नाम न लिया गया हो, चाहे भूल कर, चाहे जान-बूझ कर, उस का खाना भी हराम है। हां, एक हदीस से जो हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत की गयी है, यह मालूम होता हैं कि अगर किसी जानवर के बारे में यह मालूम न हो कि ज़िब्ह के वक़्त उस पर ख़ुदा का नाम लिया गया है या नहीं, तो ख़ुदा का नाम ले कर उस का खाना जायज़ है। हदीस यों है कि कुछ लोगों ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! कुछ लोग हमारे पास गोश्त लाते हैं और हम नहीं जानते कि उस पर अल्लाह का नाम लिया गया है या नहीं। आप ने फ़रमाया कि तुम उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो और खा लिया करो।

२. जिन्नों से आदमियों का फ़ायदा उठाना यह है कि नफ़्स की आरज़ूओं की तरफ़ राह दिखायी आदमियों को और जिन्नों का आदमियों से फ़ायदा यह है कि आदमी जिन्नों के ताबेदार हो गये।

★रु. १४/१ आ ११ ▨व. लाज़िम व. मंज़िल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्ज़ौ-न
व कज़ालि-क नुवल्ली बअ्-ज़ज़्ज़ालिमी-न बअ्-ज़म्-बि ू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि
यामअ्-शरल्जिन्नि वल्इन्सि अ-लम् यअ्तिकुम् ाती-न लयूहू-न इला औलियाइहिम्
आयाती व युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिक़ इन्नकुम् लमुश्रिकून ★ (१२१)
अन्फ़ुसिना व ग़र्रत्हुमुल्-हयातुद्दुन्या व श
कानू काफ़िरीन (१३०) ज़ालि-क अल्लम्
यकुर्रब्बु - क मुह्लिकल्क़ुरा बिज़ुल्मिव - व
अह्लुहा ग़ाफ़िलून (१३१) व लिकुल्लिन्
द-र-जातुम्-मिम्मा अ़मिलू ط व मा रब्बु-क
बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ्-मलून (१३२) व
रब्बुकल् - ग़नियु ज़ुर्रह्मति ط इंय्य - शअ्
युज़्हिब्कुम् व यस्तख़्लिफ़् मिम्बअ्-दि-कुम् मा
यशाउ कमा अन्श-अकुम् मिन् ज़ुर्रिय्यति
क़ौमिन् आख़रीन ط (१३३) इन्न मा
तूअ़दू - न लआतिंव ۙ - व मा अन्तुम्
बिमुअ्-जिज़ीन (१३४) क़ुल् या क़ौमिअ्-मलू
अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् ج फ़सौ-फ़
तअ्-लमू-न ۙ मन् तकूनु लहू आ़क़िबतुद्दारि ط इन्नहू ला منزل युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून
(१३५) व ज-अ़लू लिल्लाहि मिम्मा ज़-र-अ मिनल्हर्सि वल्अन्आ़मि नसीबन्
फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बिज़अ़्-मिहिम् व हाज़ा लिशुरकाइना ج फ़मा का-न
लिशुरकाइहिम् फ़ला यसिलु इलल्लाहि ج व मा का-न लिल्लाहि फ़हु-व
यसिलु इला शुरकाइहिम् ط सा - अ मा यह्कुमून (१३६) व
कज़ालि-क ज़य्य-न लिकसीरिम् - मिनल्मुश्रिकी - न क़त् - ल औलादिहिम्
शुरकाउहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अ़लैहिम् दीनहुम् ط व लौ
शाअल्लाहु मा फ़ - अ़लूहु फ़ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (१३७)

الانعام ٦ ١١٤ ولواننا ٨

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ۚ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ۝ وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ
اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ۗ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ
لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ۝ اَوَمَنعشر الْجِنِّ
فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ كُمْ اٰيٰتِيْ وَ
الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِّا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْ هُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكَ
فِيْهَا ۚ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝ وَ
اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى مَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَ
اَعْلَمُ حَيْثُ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ
مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ
لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ اِنَّهٗ لَا
يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ
نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ
لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى
شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا

★रु. १५/२ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और इसी तरह हम ज़ालिमों को, उनके अमाल की वजह से, जो वे करते थे, एक दूसरे पर मुसल्लत कर देते हैं। (१२९) ★

ऐ जिन्नों और इंसानों की जमाअत ! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आते रहे ? जो मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर सुनाते और उस दिन के सामने आ मौजूद होने से डराते थे। वे कहेंगे कि (परवरदिगार!) हमें अपने गुनाहों का इक़रार है। इन लोगों को दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा था और (अब) ख़ुद अपने ऊपर गवाही दी कि कुफ़्र करते थे। (१३०) (ऐ मुहम्मद !) यह (जो पैग़म्बर आते रहे और किताबें नाज़िल होती रहीं तो इस लिए कि तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे और वहां के रहने वालों को (कुछ भी) ख़बर न हो। (१३१) और सब लोगों के आमाल के लिहाज़ से दर्जे मुक़र्रर हैं और जो काम ये लोग करते हैं, ख़ुदा उन से बे-ख़बर नहीं। (१३२) और तुम्हारा परवरदिगार बे-परवा (और) रहमत वाला है। अगर चाहे (तो ऐ बन्दो !) तुम्हें ख़त्म कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे, तुम्हारा जानशीं बनाये, जैसा तुम को भी दूसरे लोगों की नस्ल से पैदा किया है। (१३३) कुछ शक नहीं कि जो वायदा तुम से किया जाता है, वह पूरा होने वाला है और तुम (ख़ुदा को) मग़्लूब नहीं कर सकते। (१३४) कह दो कि लोगो ! तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किये जाता हूं। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि आख़िरत में (बहिश्त) किस का घर होगा। कुछ शक नहीं कि मुश्रिक निजात नहीं पाने के। (१३५) और (ये लोग) ख़ुदा ही की पैदा की हुई चीज़ों यानी खेत और चौपायों में ख़ुदा का भी एक हिस्सा मुक़र्रर करते हैं और अपने (झूठे) ख़्याल से कहते हैं कि यह (हिस्सा) तो ख़ुदा का और यह हमारे शरीक (यानी बुतों) का, तो जो हिस्सा उन के शरीकों का होता है, वह तो ख़ुदा की तरफ़ नहीं जा सकता और जो हिस्सा ख़ुदा का होता है, वह उन के शरीकों की तरफ़ जा सकता है। यह कैसा बुरा इंसाफ़ है।[1] (१३६) इसी तरह बहुत से मुश्रिकों को उन के शरीकों ने उन के बच्चों को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया है, ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उन के दीन को उन पर गड्-मड्ड कर दें। और अगर ख़ुदा चाहता तो वे ऐसा न करते, तो उन को छोड़ दो कि वह जानें और उन का झूठ। (१३७)

---

१. इस आयत में ख़ुदा मुश्रिकों की बुराई करता है कि उन्हों ने तरह-तरह की कुफ़्र व शिर्क की रस्में निकाली हैं, जिन में औरों को ख़ुदा का शरीक बनाया है। मख़्लूक़ तो ख़ुदा की और उसी में से एक हिस्सा ख़ुदा का मुक़र्रर करते यानी खेती और फलों और चारपायों में एक हिस्सा ख़ुदा और दूसरा हिस्सा बुतों को ठहराते। इस से बढ़ कर यह बेवक़ूफ़ी कि बुतों को ख़ुदा के मुक़ाबले में आगे रखते, इस तरह से कि अगर बुतों के हिस्से में से कुछ ख़र्च हो जाता तो उतना ख़ुदा के हिस्से में से ले लेते और अगर ख़ुदा के हिस्से में से कुछ ख़र्च हो जाता, तो बुतों के हिस्से में से न लेते और कहते कि ख़ुदा ग़नी है और बुत फ़क़ीर हैं।

★रु. १५/२ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालू हाज़िही अन्आमुंव्-व ह़र्सुंत् ह़िज्‌रुल् ᵇला यत्अमुहा इल्ला मन्
नशाउ बिज़अ्-मिहिम् व अन्आमुन् ह़ुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्आमुल्ला
यज़्कुरूनस्मल्लाहि अ़लैहफ़्तिरा-अन् अ़लैहि ᵇ स-यज्ज़ीहिम् बिमा कानू यफ़्तरून
(१३८) व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाज़िहिल्-अन्आमि ख़ालिसतुल्-लिज़ुकूरिना

الانعام ٦ — ١١٦ — ولو اننا ٨

عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۖ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾
وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ
بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ
اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوْا
مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى
اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۭ
اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۭ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا
مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ
وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ
مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا
تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ
كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۭ
قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ
الْاُنْثَيَيْنِ ۭ نَبِّـُٔـوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ
اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ

व मुहर्रमुन् अ़ला अज़्वाजिना ᶜ व
इंय्यकुम्मैत-तुन् फ़हुम् फ़ीहि शुरकाउ ᵇ
स्यज्ज़ीहिम् वस्फ़हुम् ᵇ इन्नहू ह़कीमुन्
अ़लीम (१३९) क़द् ख़सिरल्लज़ी-न
क़-तलू औलादहुम् स-फ़्-हम्-बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व
ह़र्रमू मा र-ज़-क़हुमुल्लाहुफ़्तिरा-अन्
अ़-लल्लाहि ᵇ क़द् ज़ल्लू व मा कानू
मुह्तदीन★●(१४०) व हुवल्लज़ी
अन्श-अ जन्नातिम्-मअ्‌रूशातिंव्-व ग़ै-र
मअ्‌रूशातिंव्-वन्नख़्-ल वज़्ज़र्-अ़ मुख़्तलिफ़न्
उकुलुहू वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मु-तशाबिहंव्-व
ग़ै-र मु-तशाबिहिन् ᵇ कुलू मिन् स़मरिही
इज़ा अस्म-र व आतू ह़क़्क़हू यौ-म ह़सादिही सक्ते व ला तुस्रिफ़ू ᵇ
इन्नहू ला युह़िब्बुल्मुस्रिफ़ीन ᵘ (१४१) व मिनल्-अन्आमि ह़मूल-तंव्-व
फ़र्शन् ᵇ कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि ᵇ
इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन ᵘ (१४२) समानि-य-त अज़्वाजिन् ᶜ
मिनज़्ज़अ्-निस्नैनि व मिनल्मअ्‌ज़िस्नैनि ᶜ क़ुल्आज़्ज़-करैनि ह़र्-र-म
अमिल्‌उन्सयैनि अम्मश्-त-म-लत् अ़लैहि अर्ह़ामुल्-उन्सयैनि ᵇ नब्बिऊनी
बिअ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ᵘ (१४३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और अपने ख़्याल से यह भी कहते हैं कि ये चारपाए और खेती मना है। उसे उस शख़्स के सिवा,
जिसे हम चाहें, कोई न खाये, और (कुछ) चारपाए ऐसे हैं, कि उन की पीठ पर चढ़ना मना कर
दिया गया है और कुछ मवेशी ऐसे हैं, जिन पर (ज़िब्ह करते वक़्त) ख़ुदा का नाम नहीं लेते। सब
ख़ुदा पर झूठ है। वह बहुत जल्द उन को उन के झूठ का बदला देगा। (१३८) और यह भी कहते
हैं कि जो बच्चा इन चारपायों के पेट में है, वह ख़ास हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों को
उस का खाना हराम है और अगर वह बच्चा मरा हुआ हो, तो सब उस में शरीक हैं (यानी उसे
मर्द और औरतें सब खाएं) बहुत जल्द ख़ुदा उन को उन के ढकोसलों की सज़ा देगा। बेशक वह
हिक्मत वाला ख़बरदार है।[1] (१३९) जिन लोगों ने अपनी औलाद को बे-वक़ूफ़ी से, बे-समझी से
क़त्ल किया और ख़ुदा पर झूठ गढ़ कर के उस की दी हुई रोज़ी को हराम ठहराया, वे घाटे में पड़
गये। वे बे-शुब्हा गुमराह हैं और हिदायत पाए हुए नहीं हैं। (१४०) ★●

और ख़ुदा ही तो है जिस ने बाग़ पैदा किए, छतरियों पर चढ़ाए हुए भी और जो छतरियों पर
नहीं चढ़ाये हुए, वह भी और खजूर और खेती, जिन के तरह-तरह के फल होते हैं और ज़ैतून और
अनार जो (कुछ बातों में) एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं और (कुछ बातों में) नहीं मिलते, जब ये
चीज़ें फलें तो उन के फल खाओ और जिस दिन (फल तोड़ो और खेती) काटो, तो ख़ुदा का हक़ भी
उस में से अदा करो। और बे-जा न उड़ाना कि ख़ुदा बे-जा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं
रखता। (१४१) और चारपायों में बोझ उठाने वाले (यानी बड़े-बड़े) भी पैदा किये और ज़मीन
से लगे हुए (यानी छोटे-छोटे) भी। (पस) ख़ुदा की दी हुई रोज़ी खाओ और शैतान के क़दमों पर
न चलो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४२) (ये बड़े-छोटे चारपाए) आठ क़िस्म के (हैं), दो
(-दो) भेड़ों में से और दो(-दो) बकरियों में (यानी एक-एक नर और एक-एक मादा)। (ऐ
पैग़म्बर ! उन से) पूछो कि (ख़ुदा ने दोनों(के)नरों को हराम किया है या दोनों (की) मादिनों को
या जो बच्चा मादिनों के पेट में लिपट रहा हो उसे, अगर सच्चे हो तो मुझे सनद से बताओ। (१४३)

---

१. मुश्रिकों ने एक यह भी रस्म निकाल रखी है कि अगर जानवर ज़िब्ह किया जाए और उस के पेट में से बच्चा निकले तो अगर बच्चा ज़िंदा निकले, मर्दों को उस का खाना हलाल और औरतों को हराम और अगर मुर्दा निकले तो मर्दों और औरतों सब के लिए हलाल।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिनल् - इबिलिस्नैनि व मिनल् - ब-क़रिस्नैनि ♭ क़ुल् आज़्ज़-करैनि ह़र्र-म
अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-म-लत् अ़लैहि अर्ह़ामुल्-उन्सयैनि अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ
इज़् वस़्स़ाकुमुल्लाहु बिहाज़ा ८ फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़ - लल्लाहि
कज़िबल्-लियुज़िल्लन्ना-स बिग़ैरि अ़िलमिन् ♭ इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन
★ (१४४) क़ुल् ला अजिदु फ़ी मा
ऊह़ि-य इलय्-य मुह़र्रमन् अ़ला ता़अिमिय्यत्-
अ़मुहू इल्ला अंय्यकू-न मैत-तन् औ द-मम्-
मस्फ़ूहन् औ लह्-म ख़िन्ज़ीरिन् फ़-इन्नहू रिज्सुन्
औ फ़िस्क़न् उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही ८
फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िव्-व ला आदिन् फ़इन्-न
रब्ब-क ग़फ़ूरुर्रह़ीम (१४५) व अ़-लल्-
लज़ी-न हादू ह़र्रम्ना कुल्-ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन् ८
व मिनल्ब-क़रि वल्ग़-नमि ह़र्रम्ना अ़लैहिम्
शुह़ूमहुमा इल्ला मा ह़-म-लत् ज़ुहूरुहुमा
अविल्ह़वाया औ मख़्-त-लत़ बि-अ़ज़्मिन् ♭
ज़ालि - क जज़ैनाहुम् बिबग़्यिहिम् ﺻﻠﮯ व
इन्ना ल-सादिक़ून (१४६) फ़इन् कज़्ज़बू-क फ़क़ुर्रब्बुकुम् ज़ू रह़्मतिंव्वा-
सिअ़तिन् ८ व ला युरद्दु बअ्सुहू अ़निल्क़ौमिल्-मुज्रिमीन (१४७) स-य-क़ूलुल्लज़ी-न
अश्रकू लौ शा-अल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबा-उना व ला ह़र्रम्ना
मिन् शैइन् ♭ क-ज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ह़त्ता ज़ाक़ू बअ्-सना ♭
क़ुल् हल् अिन्दकुम् मिन् अ़िलमिन् फ़तुख़्रिजूहु लना ♭ इन् तत्तबिअ़ू - न
इल्लज़्ज़न्-न व इन् अन्तुम् इल्ला तख़्रुसून (१४८) क़ुल् फ़लिल्लाहिल्-
ह़ुज्जतुल्-बालिग़तु ८ फ़लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअ़ीन (१४९) क़ुल्
हलुम्-म शुहदा-अकुमुल्लज़ी-न यश्हदू-न अन्नल्ला-ह ह़र्र-म हाज़ा ८ फ़इन् शहिदू
फ़ला तश्हद् म-अ़हुम् ८ व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना
वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व हुम् बिरब्बिहिम् यअ्-दिलून ★ (१५०)

الانعام ١١٥ ولوانّنا ٨

أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ
اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَا أَجِدُ فِي
مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ
دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٥﴾
وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا
عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ
ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ
رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾
سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا
مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ
قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَ
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ
هَٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾ قُلْ

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और दो(-दो) ऊंटों में से और दो-(दो) गायों में से, (उन के बारे में भी उन से) पूछो कि (ख़ुदा ने) दोनों (के) नरों को हराम किया है, या दोनों (की) मादिनों को या जो बच्चा मादिनों के पेट में लिपट रहा है, उस को। भला जिस वक़्त ख़ुदा ने तुम को इस का हुक्म दिया था, तुम उस वक़्त मौजूद थे ? तो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े ताकि बे-जाने-बूझे लोगों को गुमराह करे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१४४) ★

कहो कि जो हुक्म मुझ पर नाज़िल हुए हैं, मैं उन में कोई चीज़, जिसे खाने वाला खाये, हराम नहीं पाता, इस के अलावा कि वह मरा हुआ जानवर हो या बहता लहू या सुअर का गोश्त कि ये सब नापाक हैं या कोई गुनाह की चीज़ हो कि उस पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो और अगर कोई मजबूर हो जाए, लेकिन न तो ना-फ़रमानी करे और न हद से बाहर निकल जाए, तो तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४५) और यहूदियों पर हम ने सब नाख़ून वाले जानवर हराम कर दिए थे और गायों और बकरियों से उन की चर्बी हराम कर दी थी, सिवा इस के, जो उन की पीठ पर लगी हो या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो यह सज़ा हम ने उन को उन की शरारत की वजह से दी थी और हम तो सच कहने वाले हैं।[1] (१४६) और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएं, तो कह दो कि तुम्हारा परवरदिगार फैली रहमत वाला है, मगर उस का अज़ाब गुनाहगार लोगों से नहीं टलेगा। (१४७) जो लोग शिर्क करते हैं, वे कहेंगे कि अगर ख़ुदा चाहता, तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा (शिर्क करते) और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। इसी तरह उन लोगों ने झुठलाया था, जो उन से पहले थे, यहां तक कि हमारे अज़ाब का मज़ा चख कर रहे। कह दो, क्या तुम्हारे पास कोई सनद है ? (अगर है) तो उसे हमारे सामने निकालो। तुम सिर्फ़ ख़्याल के पीछे चलते और अटकल के तीर चलाते हो। (१४८) कह दो कि ख़ुदा ही की हुज्जत ग़ालिब है। अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (१४९) कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो बताएं कि ख़ुदा ने ये चीज़ें हराम की हैं, फिर अगर वे (आ कर) गवाही दें, तो तुम उन के साथ गवाही न देना और न उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी करना, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और (बुतों को) अपने परवरदिगार के बराबर ठहराते हैं। (१५०) ★

---

१. जिन चीज़ों को ख़ुदा ने यहूदियों पर उन के ज़ुल्म और शरारत और सरकशी की वजह से हराम किया था, जिस का कुछ बयान सूरः निसा की आयत १६० में है, उन की तफ़सील इस आयत में है। वे एक तो वह जानवर थे, जिन की उंगलियां फटी हुई हों, जैसे ऊंट और शुतुर मुर्ग़ और बतख़ या खुर वाले जानवर, जैसे गोर ख़र या पंजे वाले दरिंदे और गाय और बकरी की चर्बी, सिवा उस चर्बी के, जो उन की पीठ पर या ओझड़ी में लगी हुई हो या हड्डी से मिली हुई हो जैसे हाथ-पांव या पसली या आंख या कान की चर्बी कि यह हलाल थी।

★रु. १७/४ आ ४ ★रु. १८/५ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् तआलौ अत्लु मा ह़र्र-म रब्बुकुम् अ़लैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व
बिल्वालिदैनि इह्सानन् ج व ला तक़्तुलू औलादकुम् मिन् इम्लाक़िन् ط
नह्नु नर्ज़ुक़ुकुम् व इय्याहुम् ج व ला तक़्रबुल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा
व मा ब-त़न ج व ला तक़्तुलुन्नफ़्सल्लती ह़र्-र्मल्लाहु इल्ला बिल्ह़क़्क़ि ط
ज़ालिकुम् वस़्स़ाकुम् बिही ल-अ़ल्लकुम्
तअ्-क़िलून (१५१) व ला तक़्रबू
मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह़्सनु
ह़त्ता यब्लु-ग़ अशुद्दहू ج व औफ़ुल्कै-ल
वल्मीज़ा-न बिल्क़िस्ति ج ला नुकल्लिफ़ु
नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा ج व इज़ा
क़ुल्तुम् फ़अ्-दिलू व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा ج
व बि-अ़ह्दिल्लाहि औफ़ू ط ज़ालिकुम्
वस़्स़ाकुम् बिही ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून لا
(१५२) व अन्-न हाज़ा स़िराती मुस्तक़ीमन्
फ़त्तबिअ़ूहु ج व ला तत्तबिअ़ुस्-सुबु-ल
फ़-त-फ़र्र-क़ बिकुम् अ़न् सबीलिही ط ज़ालिकुम्
वस़्स़ाकुम् बिही ल-अ़ल्लकुम् तत्तक़ून (१५३) सुम्-म आतैना मूसल्किता-ब
तमामन् अ़-लल्लज़ी अह़्-स-न व तफ़्स़ीलल्लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव-व रह़्मतुल्ल-अ़ल्लहुम्
बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् युअ्मिनून ★(१५४) व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु
मुबारकुन् फ़त्तबिअ़ूहु वत्तक़ू ल-अ़ल्लकुम् तुर्ह़मून لا (१५५) अन् तक़ूलू
इन्नमा उन्ज़िलल्-किताबु अ़ला त़ाइफ़तैनि मिन् क़ब्लिना ص व इन्
कुन्ना अ़न् दिरासतिहिम् लग़ाफ़िलीन لا (१५६) औ तक़ूलू लौ अन्ना
उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् ج फ़-क़द् जा-अकुम्
बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व रह़्मतुन् ج फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन्
कज़्-ज़-ब बिआयातिल्लाहि व स़-द-फ़ अ़न्हा ط स-नज्ज़िल्लज़ी-न यस़्दिफ़ू-न
अ़न् आयातिना सू-अल्-अ़ज़ाबि बिमा कानू यस़्दिफ़ून (१५७)

ولو اننا ٨ ١١٨ الانعام ٦

تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾
وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ
وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ
وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا
فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ
وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾ ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا
عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً
لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ
فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ
الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ
لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى
مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहो कि (लोगो!) आओ मैं तुम्हें वे चीज़ें पढ़ कर सुनाऊं, जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम कर दी हैं, (उन के बारे में उस ने इस तरह इर्शाद फ़रमाया है) कि किसी चीज़ को ख़ुदा का शरीक न बनाना और माँ-बाप से (बद-सुलूकी न करना, बल्कि) सुलूक करते रहना और नादारी (के ख़तरे) से अपनी औलाद को क़त्ल न करना, क्योंकि तुम को और उन को हमीं रोज़ी देते हैं और बे-हयाई के काम ज़ाहिर हों या छिपे हुए, उन के पास न फटकना। और किसी जान (वाले) को जिस के क़त्ल को ख़ुदा ने हराम कर दिया है, क़त्ल न करना, मगर जायज़ तौर पर (यानी) जिस का शरीअत हुक्म दे। इन बातों की वह तुम्हें ताकीद फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। (१५१) और यतीम के माल के पास भी न जाना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत पसंदीदा हो, यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो। हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते, मगर उस की ताक़त के मुताबिक़ और जब (किसी के बारे में) कोई बात कहो, तो इंसाफ़ से कहो, गो वह (तुम्हारा) रिश्तेदार ही हो और ख़ुदा के अह्द को पूरा करो। इन बातों का ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम नसीहत करो। (१५२) और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम उसी पर चलना और और रास्तों पर न चलना कि (उन पर चल कर) ख़ुदा के रास्ते से अलग हो जाओगे। इन बातों का ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम परहेज़गार बनो। (१५३) (हां) फिर (सुन लो कि) हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि उन लोगों पर जो भले हैं, नेमत पूरी कर दें और (उस में) हर चीज़ का बयान (है) और हिदायत (है) और रहमत है, ताकि (उन की उम्मत के) लोग अपने परवरदिगार के सामने ज़ाहिर होने का यक़ीन करें। (१५४) ★

और (ऐ कुफ़्र करने वालो!) यह किताब भी हमीं ने उतारी है बरकत वाली, तो उस की पैरवी करो और (ख़ुदा से) डरो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाए। (१५५) (और इस लिए उतारी है) कि (तुम यों न) कहो कि हम से पहले दो ही गिरोहों पर किताबें उतरी हैं और हम उन के पढ़ने से (मजबूर और) बे-ख़बर थे। (१५६) या (यह न) कहो कि अगर हम पर भी किताब नाज़िल होती तो हम उन लोगों के मुक़ाबले कहीं सीधे रास्ते पर होते, सो तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से दलील और हिदायत और रहमत आ गयी है। तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो ख़ुदा की आयतों को झुठलाये और उन से (लोगों को) फेरे। जो लोग हमारी आयतों से फेरते हैं, इस फेरने की वजह से हम उन को बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे। (१५७) ये इस

★रु. १९/६ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-य-हुमुल्-मला-इकतु औ यअ्ति-य रब्बु-क औ
यअ्ति-य बअ्-ज़ु आयाति रब्बि-क ط यौ-म यअ्ती बअ्-ज़ु आयाति रब्बि-क ला यन्फ़अु
नफ़्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् क़ब्लु औ क-स-बत् फ़ी ईमानिहा
ख़ैरन् ط क़ुलिन-तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून (१५८) इन्नल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम्
व कानू शि-य-अ़ल्लस्-त मिन्हुम् फ़ी शैइन् ط
इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम् - म
युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ़्-अ़लून (१५९)
मन् जा-अ बिल्ह़-स-नति फ़-लहू अ़श्रु
अम्सालिहा ج व मन् जा-अ बिस्सय्यिअति
फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला
युज़्-लमून (१६०) क़ुल् इन्ननी हदानी
रब्बी इला सिरातिम् - मुस्तक़ीम ج
दीनन् क़ि-य-मम्मिल्-ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् ج
व मा का-न मिनलमुश्रिकीन (१६१)
क़ुल् इन्-न सलाती व नुसुकी व मह़्या-य
व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् - आ़लमीन ع
(१६२) ला शरी-क लहू ج व बिज़ालि-क उमिरतु व अ-न अव्वलुल्-
मुस्-लिमीन (१६३) क़ुल् अ-ग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बंव्-व हु-व रब्बु कुल्लि
शैइन् ط व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् इल्ला अ़लैहा ج व ला
तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़ - र उख़्रा ج सुम - म इला रब्बिकुम् मर्जिअ़ुकुम्
फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (१६४) व हुवल्लज़ी
ज-अ़-लकुम् ख़ला-इफ़ल्-अर्ज़ि व र-फ़-अ़ बअ्-ज़कुम् फ़ौ-क़ बअ्-ज़िन्
द-र-जातिल्-लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम् ط इन्-न रब्ब-क सरीअ़ुल्-
अिक़ाबि ⁂ व इन्नहू ल - ग़फ़ूरुर्रह़ीम ★ ● (१६५)

الانعام ٦ ١١٩ ولو اننا ٨

يَصۡدِفُوۡنَ عَنۡ اٰيٰتِنَا سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ بِمَا كَانُوۡا يَصۡدِفُوۡنَ ﴿١٥٧﴾
هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ تَاۡتِيَهُمُ الۡمَلٰٓـئِكَةُ اَوۡ يَاۡتِىَ رَبُّكَ اَوۡ يَاۡتِىَ
بَعۡضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ‌ؕ يَوۡمَ يَاۡتِىۡ بَعۡضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنۡفَعُ نَفۡسًا
اِيۡمَانُهَا لَمۡ تَكُنۡ اٰمَنَتۡ مِنۡ قَبۡلُ اَوۡ كَسَبَتۡ فِىۡۤ اِيۡمَانِهَا خَيۡرًا ‌ؕ
قُلِ انْتَظِرُوۡۤا اِنَّا مُنۡتَظِرُوۡنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ فَرَّقُوۡا دِيۡنَهُمۡ وَكَانُوۡا
شِيَعًا لَّسۡتَ مِنۡهُمۡ فِىۡ شَىۡءٍ ‌ؕ اِنَّمَاۤ اَمۡرُهُمۡ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمۡ
بِمَا كَانُوۡا يَفۡعَلُوۡنَ ﴿١٥٩﴾ مَنۡ جَآءَ بِالۡحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشۡرُ اَمۡثَالِهَا‌ ۚ
وَمَنۡ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجۡزٰٓى اِلَّا مِثۡلَهَا وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿١٦٠﴾
قُلۡ اِنَّنِىۡ هَدٰٮنِىۡ رَبِّىۡۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۚ دِيۡنًا قِيَمًا مِّلَّةَ
اِبۡرٰهِيۡمَ حَنِيۡفًا‌ ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿١٦١﴾ قُلۡ اِنَّ صَلَاتِىۡ
وَنُسُكِىۡ وَمَحۡيَاىَ وَمَمَاتِىۡ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ‏ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ‌ ۚ
وَبِذٰلِكَ اُمِرۡتُ وَاَنَا اَوَّلُ الۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿١٦٣﴾ قُلۡ اَغَيۡرَ اللّٰهِ اَبۡغِىۡ
رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىۡءٍ ‌ؕ وَلَا تَكۡسِبُ كُلُّ نَفۡسٍ اِلَّا عَلَيۡهَا ‌ۚ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزۡرَ اُخۡرٰى‌ ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمۡ مَّرۡجِعُكُمۡ فَيُنَبِّئُكُمۡ
بِمَا كُنۡتُمۡ فِيۡهِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ جَعَلَكُمۡ خَلٰٓـئِفَ
الۡاَرۡضِ وَرَفَعَ بَعۡضَكُمۡ فَوۡقَ بَعۡضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبۡلُوَكُمۡ فِىۡ مَاۤ
اٰتٰٮكُمۡ‌ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيۡعُ الۡعِقَابِ ‌ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١٦٥﴾

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के सिवा और किस बात के इन्तिज़ार में हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएं या ख़ुद तुम्हारा परवरदिगार आये या तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियां आयें (मगर) जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियां आ जाएंगी, तो जो शख़्स पहले ईमान नहीं लाया होगा, उस वक़्त उसे ईमान लाना कुछ फ़ायदा नहीं देगा या अपने ईमान (की हालत) में नेक अमल नहीं किये होंगे, (तो गुनाहों से तौबा करना मुफ़ीद न होगा। (ऐ पैग़म्बर ! उन से) कह दो कि तुम भी इंतिज़ार करो, हम भी इंतिज़ार करते हैं। (१५८) जिन लोगों ने अपने दीन में (बहुत से) रास्ते निकाले और कई-कई फ़िर्क़े हो गये, उनसे तुमको कुछ काम नहीं। उन का काम ख़ुदा के हवाले। फिर जो-जो कुछ वे करते रहे हैं, वह उन को (सब) बतायेगा।[1] (१५९) जो कोई (ख़ुदा के हुज़ूर) नेकी ले कर आयेगा, उस की वैसी दस नेकियां मिलेंगी और जो बुराई लाएगा उसे सज़ा वैसी ही मिलेगी और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (१६०) कह दो कि मुझे मेरे परवरदिगार ने सीधा रास्ता दिखा दिया है (यानी सही दीन) मज़हब इब्राहीम का, जो एक (ख़ुदा) ही की तरफ़ के थे, और मुश्रिकों में से न थे। (१६१) (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरी जीना और मेरा मरना सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। (१६२) जिस का कोई शरीक नहीं और मुझ को इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सब से अव्वल फ़रमांबरदार हूं। (१६३) कहो, क्या मैं ख़ुदा के सिवा और परवरदिगार खोजूं ? और वही तो हर चीज़ का मालिक है। और जो कोई (बुरा) काम करता है, तो उस का नुक़्सान उसी को होता है। और कोई शख़्स किसी (के गुनाह) का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम सब को अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, तो जिन-जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे, वह तुम को बतायेगा। (१६४) और वही तो है, जिस ने ज़मीन में तुम को अपना नायब बनाया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किये ताकि जो कुछ उस ने तुम्हें बख़्शा है, उस में तुम्हारी आज़माइश करे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अज़ाब देने वाला मेहरबान भी है। (१६५) ★ ●

---

१. दीन में तफ़रक़ा डालना और कई-कई फ़िर्क़े बन जाना ख़ुदा को सख़्त ना-पसन्द है। इसी लिए फ़रमाया है कि जिन लोगों ने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कई-कई फ़िर्क़े बन गये, (ऐ पैग़म्बर !) उन से तुम्हारा कोई मतलब नहीं। अल्लाह तआला की मर्ज़ी तो यह है कि सब लोग एक दीन (यानी इस्लाम) पर जो सच्चा दीन है, चलें और उस की हिदायतों पर अमल करें, मगर कोई किसी रास्ते पर चलता है, कोई किसी पर। किसी ने कोई तरीक़ा अख़्तियार किया है, किसी ने कोई राह और आपस में इत्तिफ़ाक़ की जगह नफ़रत व अदावत पैदा हो जाती है। कुछ शक नहीं कि इन बातों की वजह यह है कि वे क़ुरआन को ग़ौर से नहीं पढ़ते और उस के अह्काम पर नहीं चलते। अगर अल्लाह तआला के मक़्सद को समझ लिया जाए तो इख़्तिलाफ़ व तफ़र्क़े का नाम व निशान न रहे।

★रु. २०/७ आ ११● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७ सूरतुल् अअ़्राफ़ि ३९

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १४६३५ अक्षर, ३३८७ शब्द, २०६ आयत और २४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम्-साद् ८ (१) किताबुन् उन्ज़ि - ल इलै-क फ़ला
यकुन् फ़ी स़द्रि-क ह़-रजुम्-मिन्हु लितुन्ज़ि-र बिही व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन
(२) इत्तबिअ़ू मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिअ़ू मिन्
दूनिही औलिया-अ ৮ क़लीलम्-मा त-ज़क्करून (३) व कम् मिन् क़र्यतिन्
अह्लक्नाहा फ़जा-अहा बअ्सुना ब-यातन् औ
हुम् क़ा-इलून (४) फ़मा का-न दअ्-वाहुम्
इज़् जा-अहुम् बअ्सुना इल्ला अन् क़ालू
इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (५) फ़-ल-नस्अलन्नल्-
लज़ी-न उर्सि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल्-
मुर्सलीन ৮ (६) फ़-ल-नक़ुस़्स़न्-न अ़लैहिम्
बिअि़ल्मिव्-व मा कुन्ना ग़ा-इबीन (७)
वल्वज़्नु यौमइज़ि-निल् - ह़क़्क़ु ८ फ़ - मन्
सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़ - उलाइ-क हुमुल्-
मुफ़्लिहून (८) व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू
फ़-उला - इकल्लज़ी - न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम्
बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून (९)

سورة الاعراف مكية وهى مائتان وست ايات واربع وعشرون ركوعا

بسم الله الرحمن الرحيم

المص ۝١ كتب انزل اليك فلا يكن فى صدرك حرج منه
لتنذر به وذكرى للمؤمنين ۝٢ اتبعوا ما انزل اليكم
من ربكم ولا تتبعوا من دونه اولياء قليلا ما تذكرون ۝٣
وكم من قرية اهلكنها فجاءها باسنا بياتا او هم قائلون ۝٤
فما كان دعوىهم اذ جاءهم باسنا الا ان قالوا انا كنا
ظلمين ۝٥ فلنسئلن الذين ارسل اليهم ولنسئلن المرسلين ۝٦
فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين ۝٧ والوزن يومئذ
الحق فمن ثقلت موازينه فاولئك هم المفلحون ۝٨ ومن
خفت موازينه فاولئك الذين خسروا انفسهم بما كانوا
بايتنا يظلمون ۝٩ ولقد مكنكم فى الارض وجعلنا لكم فيها
معايش قليلا ما تشكرون ۝١٠ ولقد خلقنكم ثم صورنكم
ثم قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا الا ابليس لم يكن
من السجدين ۝١١ قال ما منعك الا تسجد اذ امرتك قال انا
خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين ۝١٢ قال
فاهبط منها فما يكون لك ان تتكبر فيها فاخرج انك من

व ल-क़द् मक्कन्नाकुम् फ़िल्अर्ज़ि व ज-अ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि-श ৮
क़लीलम्मा तश्कुरून ★ (१०) व ल - क़द् ख़ - लक़्नाकुम् सुम् - म
स़व्वरनाकुम् सुम् - म क़ुल्ना लिल्मला - इकतिस्जुदू लि-आद-म फ़-स-जदू
इल्ला इब्ली - स ৮ लम् यकुम् - मिनस्साजिदीन (११) क़ा - ल मा
म-न-अ-क अल्ला तस्जु-द इज़् अमरतु-क ৮ क़ा - ल अ-न ख़ैरुम् - मिन्हु ८
ख़-लक़्तनी मिन् नारिंव्-व ख़-लक़्तहू मिन् त़ीन (१२) क़ा-ल फ़ह्बित़-त मिन्हा
फ़मा यकूनु ल-क अन् त-त-कब्ब-र फ़ीहा फ़ख़्रुज् इन्न-क मिनस़्स़ाग़िरीन (१३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७ सूर: आराफ़ ३९

सूर: आराफ़ मक्की है और इस में दो सौ छ: आयतें और चौबीस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम् स्वाद्। (१) (ऐ मुहम्मद ! यह) किताब (जो) तुम पर नाज़िल हुई है, इस से तुम को तंगदिल नहीं होना चाहिए। (यह नाज़िल) इस लिए (हुई है) कि तुम इस के ज़रिए से (लोगों को) डर सुनाओ और (यह) ईमान वालों के लिए नसीहत है। (२) (लोगो !) जो (किताब) तुम पर तुम्हारे परवरदिगार के यहां से नाज़िल हुई है, उस की पैरवी करो और इस के सिवा और साथियों की पैरवी न करो (और) तुम कम ही नसीहत क़ुबूल करते हो। (३) और कितनी ही बस्तियां हैं कि हम ने तबाह कर डालीं, जिन पर हमारा अज़ाब (या तो रात को) आता था, जबकि वे सोते थे, या (दिन को) जब वे क़ैलूला (यानी दोपहर को आराम) करते थे। (४) तो जिस वक़्त उन पर अज़ाब आता था, उन के मुंह से यही निकलता था कि (हाय !) हम (अपने ऊपर) ज़ुल्म करते रहे। (५) तो जिन लोगों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गये, हम उन से भी पूछेंगे और पैग़म्बरों से भी पूछेंगे। (६) फिर अपने इल्म से उन के हालात बयान करेंगे और हम कहीं ग़ायब तो नहीं थे। (७) और उस दिन (आमाल का) तुलना बर-हक़ है, तो जिन लोगों के (अमलों के) वज़न भारी होंगे, वे तो निजात पाने वाले हैं। (८) और जिन के वज़न हल्के होंगे, तो यही लोग हैं, जिन्हों ने अपने को घाटे में डाला, इस लिए कि हमारी आयतों के बारे में बे-इंसाफ़ी करते थे। (९) और हमीं ने ज़मीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और इस में तुम्हारे लिए रोज़ी के सामान पैदा किए (मगर) तुम कम ही शुक्र करते हो। (१०) ★

और हमीं ने तुम को (शुरू में मिट्टी से) पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत-शक्ल बनायी, फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो, तो (सब ने) सज्दा किया, लेकिन इब्लीस, कि वह सज्दा करने वालों में (शामिल) न हुआ। (११) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, जब मैं ने तुझ को हुक्म दिया, तो किस चीज़ ने तुझे सज्दा करने से रोका। उस ने कहा कि मैं इस से अफ़ज़ल हूं। मुझे तू ने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से बनाया है। (१२) फ़रमाया, तू (बहिश्त से) उतर जा। तुझे मुनासिब नहीं कि यहां घमंड करे, पस निकल जा, तू ज़लील है। (१३) उस ने कहा कि

★रु. १/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्असून (१४) क़ा-ल इन्न-क मिनल्मुन्ज़रीन
(१५) क़ा-ल फ़बिमा अग्वै-तनी ल-अक़्अुदन्-न लहुम् सिरात-कल्-मुस्तक़ीम ला
(१६) सुम्-म ल-आतियन्नहुम् मिम्बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अन्
ऐमानिहिम् व अन् शमा-इलिहिम् ط व ला तजिदु अक्स-रहुम् शाकिरीन

الصّٰغِرِينَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾
ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَ
يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ
لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ
هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾
وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا
الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ
لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٜ
وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا
بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى
حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ ع
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ

منزل ٢

(१७) क़ालख़्रुज् मिन्हा मज़्ऊमम्-
मद्हूरन् ط ल-मन् तबि-अ-क मिन्हुम् ल-अम्-ल-अन्-न
जहन्न-म मिन्कुम् अज्मअीन (१८) व
या आदमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकलजन्न-त फ़कुला
मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा
हाज़िहिश्श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्ज़ालिमीन
(१६) फ़-वस्-व-स लहुमश्शैतानु लियुब्दि-य
लहुमा मा वूरि-य अन्हुमा मिन् सौआतिहिमा
व क़ा-ल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अन्
हाज़िहिश्श-ज-रति इल्ला अन् तकूना म-लकैनि
औ तकूना मिनल्ख़ालिदीन (२०) व
क़ास-महुमा इन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन ला
(२१) फ़-दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् ج फ़-लम्मा ज़ाक़श्श-ज-र-त ब-दत् लहुमा
सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अलैहिमा मिंव्-व-रक़िल्-जन्नति ط व
नादाहुमा रब्बुहुमा अ-लम् अन्-हकुमा अन् तिल्कुमश्श-ज-रति व अक़ुल्लकुमा
इन्नश्शैता-न लकुमा अदुव्वुम्-मुबीन (२२) क़ाला रब्बना ज़-लम्ना
अन्फ़ुसना سکتہ व इल्लम् तग़्फ़िर्लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनलख़ासिरीन
(२३) क़ालह्बितू बअ्-ज़ुकुम् लिबअ्-ज़िन् अदुव्वुन् ج व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि
मुस्तक़र्-रुंव्-व मताअुन् इला हीन (२४) क़ा-ल फ़ीहा तह्यौ-न व फ़ीहा
तमूतू-न व मिन्हा तुख़्रजू-न ★ (२५) या बनी आद-म क़द् अन्ज़ल्ना
अलैकुम् लिबासुंय्युवारी सौआतिकुम् व रीशन् ط व लिबासुत्तक़्वा ला ज़ालि-क
ख़ैरुन् ط ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि ल-अल्लहुम् यज़्ज़क्करून (२६)

मुझे उस दिन तक मुहलत अता फ़रमा, जिस दिन लोग (क़ब्रों से) उठाए जाएंगे। (१४) फ़रमाया, (अच्छा,) तुझ को मुहलत दी जाती है। (१५) (फिर) शैतान ने कहा कि मुझे तो तू ने मलऊन किया ही है। मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर उन (को गुमराह करने) के लिए बैठूंगा। (१६) फिर उन के आगे से और पीछे से और दाएं से और बाएं से (ग़रज़ हर तरफ़ से) आऊंगा (और उन की राह मारूंगा) और तू उन में अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा। (१७) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, निकल जा यहां से पाजी मर्दूद। जो लोग उन में से तेरी पैरवी करेंगे, मैं (उन को और तुझ को जहन्नम में डाल कर) तुम सब से जहन्नम को भर दूंगा। (१८) और (हम ने) आदम (से कहा कि) तुम और तुम्हारी बीवी बहिश्त में रहो-सहो और जहां से चाहो (और जो चाहो) खाओ, मगर इस पेड़ के पास न जाना, वरना गुनाहगार हो जाओगे। (१६) तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उन के सतर की चीज़ें, जो उन से छिपी थीं, खोल दे और कहने लगा कि तुम को तुम्हारे परवरदिगार ने पेड़ से सिर्फ़ इस लिए मना किया है कि तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या हमेशा जीते न रहो। (२०) और उन से क़सम खा कर कहा कि मैं तो तुम्हारा भला चाहने वाला हूं। (२१) ग़रज़ (मर्दूद ने) धोखा दे कर उन को (गुनाह की तरफ़) खींच ही लिया, जब उन्होंने उस पेड़ (के फल) को खा लिया, तो उन के सतर की चीज़ खुल गयीं और वह बहिश्त से (पेड़ों के) पत्ते (तोड़-तोड़ कर) अपने ऊपर चिपकाने (और सतर छिपाने) लगे। तब उन के परवरदिगार ने उन को पुकारा कि क्या मैं ने तुम को इस पेड़ (के पास जाने) से मना नहीं किया था और बता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है। (२२) दोनों कहने लगे कि परवरदिगार! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमें नहीं बख़्शेगा और हम पर रहम नहीं करेगा, तो हम तबाह हो जाएंगे। (२३) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, (तुम सब बहिश्त से) उतर जाओ। (अब से) तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए एक (ख़ास) वक़्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िंदगी का) सामान (कर दिया गया) है। (२४) (यानी) फ़रमाया कि उसी में तुम्हारा जीना होगा और उसी में मरना, उसी में से (क़ियामत को ज़िंदा कर के) निकाले जाओगे। (२५) ★

ऐ बनी आदम! हम ने तुम पर पोशाक उतारी कि तुम्हारा सतर ढांके और (तुम्हारे बदन को) ज़ीनत (दे) और (जो) परहेज़गारी का लिबास (है)। वह सब से अच्छा है। ये ख़ुदा की निशानियां हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें। (२६) ऐ बनी आदम! (देखना कहीं) शैतान तुम्हें

★रु. २/६ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या बनी आद-म ला यफ़्तिनन्नकुमुश्शैतानु कमा अख़्-र-ज अ - ब-वैकुम्
मिनल्जन्नति यन्ज़िअ़ु अ़न्हुमा लिबा-सहुमा लियुरि - यहुमा सौआतिहिमा ط
इन्नहू यराकुम् हु-व व क़बीलुहू मिन् हैसु ला तरौनहुम् ط इन्ना ज-अ़ल्नश्-
शयाती-न औलिया-अ लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (२७) व इज़ा फ़-अ़लू

الاعراف ۷ ۱۲۲ ولو اننا ۸

التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۲۶ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ
عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۚ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۚ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۲۷
وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۚ
قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۚ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۲۸
قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۛ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۲۹ فَرِيْقًا
هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۚ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۳۰ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۳۱ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۳۲ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ
مَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۳۳ وَلِكُلِّ

منزل ۲

फ़ाहि-श-तन् क़ालू व-जद्ना अ़लैहा आबा-अना
वल्लाहु अ-म-रना बिहा ط क़ुल् इन्नल्ला-ह
ला यअ्मुरु बिल्फ़ह्-शा-इ ط अ - तक़ूलू-न
अ़-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (२८) क़ुल्
अ-म - र रब्बी बिल्क़िस्ति قف व अक़ीमू
वुजूहकुम् अ़िन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्वद्अ़ूहु
मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ط कमा ब-द-अकुम्
त-अ़ूदून ط (२९) फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न्
हक़्-क़ अ़लैहिमुज़्ज़लालतु ط इन्नहुमुत्त-ख़ज़ुश्-
शयाती-न औलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व
यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून (३०) या
बनी आद-म ख़ुज़ू ज़ीन-तकुम् अ़िन्-द कुल्लि
मस्जिदिंव् - व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू ج इन्नहू ला युहिब्बुल् -
मुस्रिफ़ीन ★ (३१) क़ुल् मन् हर् - र-म ज़ीनतल्लाहिल्लती अख़्-र-ज
लिअ़िबादिही वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्क़ि ط क़ुल् हि-य लिल्लज़ी - न
आमनू फ़िल् - हयातिद्दुन्या ख़ालि-स - तंय्यौमल् - क़ियामति ط कज़ालि - क
नुफ़स्सिलुल् - आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (३२) क़ुल् इन्नमा हर् - र-म
रब्बियल् - फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब - त - न वल्इस्-म
वल्बग़् - य बिग़ैरिल्हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल्
बिही सुल्तानंव्-व अन् तक़ूलू अ़-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (३३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बहका न दे, जिस तरह तुम्हारे मां-बाप को (बहका कर) बहिश्त से निकलवा दिया और उन से उन के कपड़े उतरवा दिए, ताकि उन से सतर उन को खोल कर दिखा दे। वह और उस के भाई तुम को ऐसी जगह से देखते रहते हैं, जहां से तुम उन को नहीं देख सकते। हम ने शैतानों को उन्हीं लोगों का साथी बनाया है, जो ईमान नहीं रखते। (२७) और जब कोई बे-हयाई का काम करते हैं, तो कहते हैं कि हम ने अपने बुज़ुर्गों को इसी तरह करते देखा है और ख़ुदा ने भी हम को यही हुक्म दिया है। कह दो कि ख़ुदा बे-हयाई के काम करने का हुक्म हरगिज़ नहीं देता। भला तुम ख़ुदा के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो, जिस का तुम्हें इल्म नहीं। (२८) कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो इन्साफ़ करने का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज़ के वक़्त सीधा (क़िब्ले की तरफ़) रुख़ किया करो और ख़ास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो। उस ने जिस तरह तुम को शुरू में पैदा किया था, उसी तरह तुम फिर पैदा होगे। (२९) एक फ़रीक़ को तो उस ने हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो चुकी। इन लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बना लिया और समझते (यह) हैं कि हिदायत पाये हुए हैं। (३०) ऐ बनी आदम! हर नमाज़ के वक़्त अपने को मुज़य्यन (सुसज्जित) किया करो।[1] और खाओ और पियो और बे-जा न उड़ाओ कि ख़ुदा बे-जा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं रखता। (३१) ★

पूछो तो, कि जो ज़ीनत (व आराइश) और खाने (-पीने) की पाक चीज़ें ख़ुदा ने अपने बन्दों के लिए पैदा की हैं, उन को हराम किस ने किया है? कह दो कि ये चीज़ें दुनिया की ज़िंदगी में ईमान वालों के लिए हैं और क़ियामत के दिन ख़ास उन्हीं का हिस्सा होंगी। इसी तरह ख़ुदा अपनी आयतें समझने वालों के लिए खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है।[2] (३२) कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो बे-हयाई की बातों को, ज़ाहिर हों या छिपी हुई और गुनाह को और ना-हक़ ज़्यादती करने को हराम किया है और इस को भी कि तुम किसी को ख़ुदा का शरीक बनाओ, जिस की उस ने कोई सनद नाज़िल नहीं की और इस को भी कि ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहो, जिन का तुम्हें

---

१. ज़ीनत उस चीज़ को कहते हैं, जिस से सजावट की जाए जैसे लिबास। इब्ने अब्बास कहते हैं कि जाहिलियत के ज़माने में लोग काबे का तवाफ़ नंगे करते थे। ख़ुदा ने उस से मना फ़रमाया और हुक्म दिया कि जब तवाफ़ को या मस्जिद में नमाज़ को आओ, तो कपड़ा पहन कर आओ, नंगे न आओ। इस से नमाज़ में पर्दे की चीज़ों को ढांकना फ़र्ज़ हो गया। इल्म वालों के नज़दीक हर हालत में सतरे औरत ढांकना फ़र्ज़ है, चाहे आदमी तन्हा ही क्यों न हो। कुछ ने कहा कि सजाने से मुराद कंघी करना और ख़ुश्बू लगाना है, मगर वही पहली बात सही है। और अगर कंघी भी कर ली जाए और ख़ुश्बू भी लगा ली जाए तो सजावट पर सजावट है। 'खाओ और पियो' के इर्शाद से मक़्सद ख़ुदा की नेमतों से फ़ायदा उठाना है यानी पाकीज़ा और सुथरी चीज़ों से, जो ख़ुदा ने तुम्हारे ही लिए पैदा की हैं फ़ायदा उठाओ और ख़ुदा का शुक्र अदा करो। एक हदीस में आया है कि खाओ और पियो और पहनो और सद्क़ा दो, लेकिन न बे-जा उड़ाओ, न इतराओ, क्योंकि अल्लाह तआला को यह बात भली लगती है कि अपनी नेमत अपने बंदे पर देखे। जिस तरह पाक रोज़ी के खाने-पीने की इजाज़त है, उसी तरह बे-जा उड़ाने से मना किया गया है यानी बे-ज़रूरत खाना या पेट-भरे की हालत में खाना कि यह ज़्यादा है, फ़िज़ूल-ख़र्ची में दाख़िल है। यह आयत फ़िज़ूल ख़र्ची करने वालों के हक़ में एक डरावा है।

२. इस आयत से पाया जाता है कि जिस तरह खाने-पीने की चीज़ों और माल का उड़ाना हराम है, इसी तरह उन को छोड़ देना और उन से फ़ायदा न उठाना भी ख़ुदा को ना-पसन्द है और सच पूछो तो यह ख़ुदा की नेमतों

(शेष पृष्ठ २४३ पर)

★रु. ३/१० आ ६

व लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन्८ फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न
सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून (३४) या बनी आद-म इम्मा यअ्तियन्नकुम्
रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती ८ फ़-मनित्तक़ा व अस्-ल-ह़
फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून (३५) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू
बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा उला-इ-क
अस्ह़ाबुन्नारि ८ हुम् फ़ीहा ख़ालिदून
(३६) फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा
अ़-लल्लाहि क़ज़िबन् औ कज़्ज़-ब
बिआयातिही ८ उला-इ-क यनालुहुम्
नसीबुहुम् मिनल्-किताबि ८ ह़त्ता इज़ा
जा-अत्हुम् रुसुलुना य-त-वफ़्फ़ौनहुम् ८
क़ालू ऐ-न मा कुन्तुम् तद्अू-न मिन्
दूनिल्लाहि ८ क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व
शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू
काफ़िरीन (३७) क़ालद्ख़ुलू फ़ी उममिन्
क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिकुम् मिनल्जिन्नि
वल्इन्सि फ़िन्नारि ८ कुल्लमा द-ख़-लत् उम्मतुल्-ल-अ-नत् उख़्तहा ८
ह़त्ता इज़द्दारकू फ़ीहा जमीअ़न् ८ क़ालत् उख़्राहुम् लिऊलाहुम्
रब्बना हा-उला-इ अ-ज़ल्लूना फ़-आतिहिम् अ़ज़ाबन् ज़िअ्-फ़म्-मिनन्नारि
क़ा-ल लिकुल्लिन् ज़िअ्-फ़ुंव्-व लाकिल्ला तअ्लमून (३८) व क़ालत् ऊलाहुम्
लिउख़्राहुम् फ़मा का-न लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब
बिमा कुन्तुम् तक्सिबून ★ (३९) इन्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना
वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तह़ु लहुम् अब्वाबुस्समा-इ व ला
यद्ख़ुलूनल्जन्न-त ह़त्ता यलिजल्-ज-मलु फ़ी सम्मिल्-ख़ियाति ८ व
कज़ालि-क नज्ज़ि-ल-मुज्रिमीन (४०) लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादुंव्-व
मिन्-फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन् ८ व कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (४१)

ولوأننا ٨ ١٢٣ الاعراف ٧

أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ
يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنِ
اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ أُولَٰئِكَ
يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ
قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَ
شَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝ قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ
لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ
رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَلَٰكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ ع
إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ
السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

منزل ٢

★रु. ४/११ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुछ इल्म नहीं। (३३) और हर एक फ़िर्क़े के लिए (मौत का) एक वक़्त मुक़र्रर है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो न तो एक घड़ी देर कर सकते हैं, न जल्दी। (३४) ऐ बनी आदम! (हम तुम को यह नसीहत हमेशा करते रहे हैं कि) जब हमारे पैग़म्बर तुम्हारे पास आया करें और हमारी आयतें तुम को सुनाया करें (तो उन पर ईमान लाया करो कि) जो शख़्स (उन पर ईमान ला कर) ख़ुदा से डरता रहेगा और अपनी हालत ठीक रखेगा, तो ऐसे लोगों को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (३५) और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे सर-ताबी की, वही दोज़ख़ी हैं कि हमेशा उस में (जलते) रहेंगे। (३६) तो उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन है, जो ख़ुदा पर झूठ बांधे या उस की आयतों को झुठलाये, उन को उन के नसीब का लिखा मिलता ही रहेगा, यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) जान निकालने आएंगे, तो कहेंगे कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारा करते थे, वे (अब) कहां हैं? वे कहेंगे, (मालूम नहीं) कि वे हम से (कहां) ग़ायब हो गये? और इक़रार करेंगे कि बेशक वे काफ़िर थे। (३७) तो ख़ुदा फ़रमाएगा कि जिन्नों और इन्सानों की जो जमाअतें तुम से पहले हो गुज़री हैं, उन्हीं के साथ तुम भी जहन्नम में दाख़िल हो जाओ। जब एक जमाअत (वहां) दाख़िल होगी तो अपनी (मज़हबी) बहन (यानी अपनी जैसी दूसरी जमाअत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस में दाख़िल हो जाएंगे, तो पिछली जमाअत पहली के बारे में कहेगी कि ऐ परवरदिगार! इन्हीं लोगों ने हम को गुमराह किया था, तो इन को जहन्नम की आग का दोगुना अज़ाब दे। ख़ुदा फ़रमाएगा कि (तुम) सब को दोगुना (अज़ाब दिया जाएगा), मगर तुम नहीं जानते। (३८) और पहली जमाअत पिछली से कहेगी कि तुम को हम पर कुछ भी फ़ज़ीलत न हुई, तो जो (अमल) तुम किया करते थे, उसके बदले में अज़ाब के मज़े चखो। (३९) ★

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से सर-ताबी की, उन के लिए न आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगे और न वे बहिश्त में दाख़िल होंगे, यहां तक कि ऊंट सूई के नाके में से निकल जाए।[1] और गुनाहगारों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (४०) ऐसे लोगों के लिए (नीचे) बिछौना भी जहन्नम (की आग) का होगा और ऊपर से ओढ़ना भी (इसी का) और ज़ालिमों को

(पृष्ठ २४१ का शेष)

की ना-शुक्री है। अगर ख़ुदा किसी को अच्छी क़िस्म की चीज़ें खाने-पीने-पहनने को दे, तो वह उन को छोड़ कर मामूली चीज़ों को क्यों अपनाये? ऐसा करना ख़ुदा की सुन्नत के ख़िलाफ़ है। उस ने तमाम खाने-पीने और पहनने की और ज़ेब व ज़ीनत की चीज़ें हलाल की हैं और जब तक कोई शरअी मजबूरी रुकावट न बने, उन से फ़ायदा उठाना चाहिए। इमाम फ़रूरुद्दीन राज़ी रह० कहते हैं कि इस आयत में हर क़िस्म के लिबास और ज़ेवर दाख़िल हैं। अगर मर्दों के लिए सोने और रेशम का पहनना हराम न होता तो आयत के आम होने से इस का मतलब उन पर सही ठहरता। ग़रज़ खाने-पीने और ज़ीनत की बेहतर और अच्छी चीज़ों को ज़ुह्द (दुनिया को छोड़ देने) की बुनियाद पर छोड़ देना ग़लती है। हां, अगर कोई ख़ाकसारी के जज़्बे से अच्छे कपड़े न पहने और फटे-पुराने पहनने लगे, तो जायज़ है।

१. यह हक़ीक़त से मुताल्लिक़ है कि न ऊंट सूई के नाके में से निकल सके, न कुफ़्फ़ार बहिश्त में दाख़िल हों।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लज़ी - न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला
वुस्-अ़हा उला-इ-क अस्ह़ाबुल्जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (४२) व
न-ज़अ्-ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन् तह़्तिहिमुल्-अन्हारु
व क़ालुल्-ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा व मा कुन्ना लिनह्-तदि-य
लौला अन् हदानल्लाहु ल-क़द् जा-अत्
रुसुलु रब्बिना बिल्ह़क़्क़ि व नूदू अन्
तिल्कुमुल्-जन्-नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम्
तअ्-मलून ● (४३) व नादा अस्ह़ाबुल्-
जन्नति अस्ह़ाबन्नारि अन् क़द् व-जद्-ना मा
व-अ़दना रब्बुना ह़क़्क़न् फ़-हल् वजत्तुम् मा
व-अ़द रब्बुकुम् ह़क़्क़न् क़ालू न - अ़म्
फ़-अज़्-ज़न मुअज़्ज़िनुम्-बैनहुम् अल्लअ्-नतुल्लाहि
अ़-लज़्ज़ालिमीन (४४) अल्लज़ी-न यसुद्दू-न
अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-व-जन्
व हुम् बिल्आख़िरति काफ़िरून
▩ (४५) व बैनहुमा ह़िजाबुन् व अ़-लल्-
अअ्-राफ़ि रिजालुंय्यअ्-रिफ़ू-न कुल्लम् - बिसीमाहुम् व नादौ अस्ह़ाबल् -
जन्नति अन् सलामुन् अ़लैकुम् लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअ़ू - न
(४६) व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ा - अ अस्ह़ाबिन्नारि
क़ालू रब्बना ला तज्-अ़ल्ना म-अ़ल् - क़ौमिज़्ज़ालिमीन ★(४७) व
नादा अस्ह़ाबुल् - अअ्-राफ़ि रिजालंय्यअ्-रिफ़ू-न-हुम् बिसीमाहुम् क़ालू मा
अग़्ना अ़न्कुम् जम्अ़ुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून (४८)
अ - हा - उला - इल्लज़ी - न अक़्सम्तुम् ला यनलुहुमुल्लाहु बिरह़् - मतिन्
उद्ख़ुलुल्-जन्न-त ला ख़ौफ़ुन् अ़लैकुम् व ला अन्तुम् तह़्-ज़नून (४९)

ولواننا ٨   ١٢٤   الاعراف ٧

لا نكلف نفسا الا وسعها اولٓئك اصحب الجنة هم فيها
خلدون ﴿٤٢﴾ ونزعنا ما في صدورهم من غل تجري من
تحتهم الانهر وقالوا الحمد لله الذي هدىنا لهذا وما كنا
لنهتدي لولا ان هدىنا الله لقد جاءت رسل ربنا بالحق
ونودوا ان تلكم الجنة اورثتموها بما كنتم تعملون ﴿٤٣﴾
ونادى اصحب الجنة اصحب النار ان قد وجدنا ما وعدنا
ربنا حقا فهل وجدتم ما وعد ربكم حقا قالوا نعم فاذن
مؤذن بينهم ان لعنة الله على الظلمين ﴿٤٤﴾ الذين يصدون
عن سبيل الله ويبغونها عوجا وهم بالاخرة كفرون ﴿٤٥﴾ و
بينهما حجاب وعلى الاعراف رجال يعرفون كلا بسيمىهم و
نادوا اصحب الجنة ان سلم عليكم لم يدخلوها وهم يطمعون ﴿٤٦﴾
واذا صرفت ابصارهم تلقاء اصحب النار قالوا ربنا لا تجعلنا
مع القوم الظلمين ﴿٤٧﴾ ونادى اصحب الاعراف رجالا يعرفونهم
بسيمىهم قالوا ما اغنى عنكم جمعكم وما كنتم تستكبرون ﴿٤٨﴾
اهؤلاء الذين اقسمتم لا ينالهم الله برحمة ادخلوا الجنة لا
خوف عليكم ولا انتم تحزنون ﴿٤٩﴾ ونادى اصحب النار اصحب
الجنة ان افيضوا علينا من الماء او مما رزقكم الله قالوا ان

منزل ٢

●सु. ३/४ ▩व. लाज़िम ★रु. ५/१२ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हम ऐसी ही सज़ा देते हैं। (४१) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और हम (अमलों के लिए) किसी शख़्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ देते ही नहीं। ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं (कि) उस में हमेशा रहेंगे। (४२) और जो कीने (कपट) उन के सीनों में होंगे, हम सब निकाल डालेंगे उन के (महलों के) नीचे नहरें बह रही होंगी। और कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने हम को यहां का रास्ता दिखाया और अगर ख़ुदा हम को रास्ता न दिखाता तो हम रास्ता न पा सकते। बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक़ बात ले कर आये थे और उस (दिन) मुनादी कर दी जाएगी कि तुम उन आमाल के बदले में जो (दुनिया में) करते थे, इस बहिश्त के वारिस बना दिये गये हो ● (४३) और जन्नत वाले दोज़ख़ियों से पुकार कर कहेंगे कि जो वायदा हमारे परवरदिगार ने हम से किया था, हम ने उसे सच्चा पा लिया। भला जो वायदा तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से किया था, तुम ने भी उसे सच्चा पाया ? वे कहेंगे, हां, तो (उस वक़्त) उन में एक पुकारने वाला पुकार देगा कि बे-इन्साफ़ों पर ख़ुदा की लानत, (४४) जो ख़ुदा की राह से रोकते और उस में कजी ढूंढते और आख़िरत से इंकार करते थे ▨ (४५) उन दोनों, यानी जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान (आराफ़ नाम की) एक दीवार होगी, और आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे जो सब को उन की सूरतों से पहचान लेंगे, तो वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो। ये लोग (अभी) जन्नत में दाख़िल तो नहीं हुए होंगे, मगर उम्मीद रखते होंगे। (४६) और जब उन की निगाहें पलट कर दोज़ख़ वालों की तरफ़ जाएंगी, तो अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! इस को ज़ालिम लोगों के साथ (शामिल) न कीजिये। (४७) ★

और आराफ़ वाले (काफ़िर) लोगों को, जिन्हें उन की सूरतों से शनाख़्त करते होंगे, पुकारेंगे और कहेंगे (कि आज) न तो तुम्हारी जमाअत ही तुम्हारे कुछ काम आयी और न तुम्हारा तकब्बुर (यानी घमंड ही फ़ायदेमंद हुआ)। (४८) (फिर मोमिनों की तरफ़ इशारा कर के कहेंगे) क्या ये वही लोग हैं, जिन के बारे में तुम क़स्में खाया करते थे कि ख़ुदा अपनी रहमत से उन की दस्तगीरी नहीं करेगा, (तो मोमिनो !) तुम बहिश्त में दाख़िल हो जाओ। तुम्हें कुछ डर नहीं और न तुम को

●सु. ३/४ ▨ व. लाज़िम ★रु. ५/१२ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व नादा अस्ह़ाबुन्नारि अस्ह़ाबल्-जन्नति अन् अफ़ीज़ू अ़लैना मिनल्मा-इ औ
मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु ط क़ालू इन्नल्ला - ह ह़र्र-महुमा अ़ - लल्काफ़िरीन॥
(५०) अल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लह्वंव्-व लअि़बंव्-व ग़र्रतहुमुल्-ह़यातुद्दुन्या ج
फ़ल्यौ-म नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा-अ यौमिहिम् हाज़ा ﻻ व मा कानू
बिआयातिना यज्ह़दून (५१) व ल-क़द्
जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अ़ला
अि़ल्मिन् हुदव्-व रह़्-म-तल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून
(५२) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला तअ्वीलहू ط
यौ-म यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुल्लज़ी-न नसूहु
मिन् क़ब्लु क़द् जा-अत् रुसुलु रब्बिना
बिल्ह़क़्क़ ج फ़ - हल्लना मिन् शु-फ़-आ-अ
फ़-यश्फ़अू लना औ नुरद्दु फ़-नअ्-म-ल ग़ैरल्लज़ी
कुन्ना नअ्-मलु ط क़द् ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व
ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून★(५३)
इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति
वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा
अ़ - लल्अ़र्शि ^क़फ़^ युग़शिलैलन्नहा - र यत्लुबुहू
ह़सीसंव्-व वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजू - म मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही ط अला
लहुल्ख़ल्क़ु वल्-अम्रु ط तबा-र-कल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन (५४) उद्अू रब्बकुम्
त-ज़र्रुअ़ंव्-व ख़ुफ़्य-तन् ط इन्नहू ला युह़िब्बुल्-मुअ्-तदीन ج (५५) व ला
तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा वद्अूहु ख़ौफ़ंव्-व त़-म-अ़न् ط इन्-न
रह़्मतल्लाहि क़रीबुम्-मिनल्मुह़्सिनीन (५६) व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया-ह़
बुश्रम्-बै-न यदै रह़्मतिही ط ह़त्ता इज़ा अ-क़ल्लत् सह़ाबन् सिक़ालन्
सुक़्नाहु लि-ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्मा-अ फ़-अख़्-रज्ना बिही मिन्
कुल्लिस्स-म-राति ط क-ज़ालि-क नुख़्रिजुल्मौता ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (५७)

ولو اننا ٨ ١٢٥ الاعراف ٧

اللّٰهُ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٠ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا
وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ
هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝٥١ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ
عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا
تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ
جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ
اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٥٣ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ
النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ
اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٥٤ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ
تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٥٥ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٦ وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ
يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝٥٧ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ

منزل ٢

★रु. ६/१३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुछ रंज व ग़म होगा। (४६) और दोज़ख़ी जन्नतियों से (गिड़गिड़ा कर) कहेंगे किसी क़दर हम पर पानी बहाओ या जो रोज़ी ख़ुदा ने तुम्हें दी है, उन में से (कुछ हमें भी दो)। वे जवाब देंगे कि ख़ुदा ने बहिश्त का पानी और रोज़ी काफ़िरों पर हराम कर दी है, (५०) जिन्हों ने अपने दीन को तमाशा और खेल बना रखा था और दुनिया की ज़िंदगी ने उन को धोखे में डाल रखा था, तो जिस तरह ये लोग उस दिन के आने को भूले हुए थे और हमारी आयतों से मुंकिर हो रहे थे, उसी तरह आज हम भी उन्हें भुला देंगे।[1] (५१) और हम ने उन के पास किताब पहुंचा दी है, जिस को इल्म व दानिश के साथ खोल-खोल कर बयान कर दिया है (और) वह मोमिन लोगों के लिए हिदायत और रहमत है। (५२) क्या ये लोग उस से अज़ाब के वायदे के इंतिज़ार में हैं? जिस दिन वह वायदा आ जाएगा, तो जो लोग उस को पहले से भूले हुए होंगे, वे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक़ ले कर आये थे। भला (आज) हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें या हम (दुनिया में) फिर लौटा दिए जाएं कि जो (बुरा) अमल हम (पहले) करते थे, (वह न करें, बल्कि) उन के सिवा और (नेक) अमल करें। बेशक उन लोगों ने अपना नुक़्सान किया और जो कुछ ये झूठ गढ़ा करते थे, उन से सब जाता रहा। (५३) ★

कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार ख़ुदा ही है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया फिर अर्श पर जा ठहरा।[2] वही रात को दिन का लिबास पहनाता है कि वह उसके पीछे दौड़ता चला आता है और उसी ने सूरज और चांद और सितारों को पैदा किया। सब उसी के हुक्म के मुताबिक़ काम में लगे हुए हैं। देखो सब मख़्लूक़ भी उसी की है और हुक्म भी (उसी का है)। यह ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन बड़ी बरकत वाला है। (५४) (लोगो!) अपने परवरदिगार से आजिज़ी से और चुपके-चुपके दुआएं मांगा करो। वह हद से बढ़ने बालों को दोस्त नहीं रखता। (५५) और मुल्क में इस्लाह के बाद ख़राबी न करना और ख़ुदा से ख़ौफ़ करते हुए और उम्मीद रख कर दुआएं मांगते रहना। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा की रहमत नेकी करने वालों से क़रीब है। (५६) और वही तो है जो अपनी रहमत (यानी बारिश) से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी (बना कर) भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी-भारी बादलों को उठा लाती है, तो हम उस को एक मरी हुई बस्ती की तरफ़ हांक देते हैं। फिर बादल में मेंह (वर्षा) बरसाते हैं, फिर मेंह से हर तरह के फल पैदा करते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को (ज़मीन से) ज़िंदा कर के बाहर निकालेंगे। (ये आयतें इस लिए बयान

---

१. ख़ुदा तो भूलने वाला नहीं है। मतलब यह है कि हम उन के साथ ऐसा मामला करेंगे जैसे कोई किसी को भुला देता है, यानी वे दोज़ख़ में जलते रहेंगे और हम उन को पूछेंगे भी नहीं।

२. असल लफ़्ज़ 'इस्तवा' इस्तेमाल हुआ है, जिस का मतलब डिक्शनरी में बुलंद होने और ठहरने के हैं। चारों इमाम और तमाम मुहद्दिसों का ख़ुदा के बारे में यह मज़हब है कि वह अर्श पर मुस्तवी यानी ठहरा हुआ है और वह ठहरना ऐसा है, जो उस की शान के लायक़ है और जिस की असल सूरत मालूम नहीं। अल्लाह तआला की जो सिफ़तें हैं, उन पर लफ़्ज़ तो वही बोले जाते हैं, जो मख़्लूक़ की सिफ़तों पर बोले जाते हैं, जैसे ख़ुदा को भी कहते हैं कि देखता है, इन्सान को भी कहते हैं कि देखता है। ख़ुदा को भी कहते हैं कि सुनता है, इन्सान को भी कहते हैं कि सुनता है, लेकिन ख़ुदा का देखना और सुनना और तरह का है। मख़्लूक़ की सिफ़तों का ख़ुदा की सिफ़तों से कोई मेल नहीं और क़ुरआन की यह आयत इस पर दलील है—'लैं-स कमिस्लि-ही शैउन' – यानी कोई उस के मिस्ल नहीं। पस जब कोई चीज़ ख़ुदा जैसी नहीं तो ख़ुदा को 'मुजस्सम' कैसे कह सकते हैं?

(शेष पृष्ठ २४६ पर)

★रु. ६/१३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल-ब-लदुत्तय्यिबु यख़्रुजु नबातुहू बिइज़्नि रब्बिही ^ज^ वल्लजी ख़बु - स ला
यख़्रुजु इल्ला नकिदन् ^ط^ कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यश्कुरून ★ (५८)
ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-क़ा-ल याक़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम्
मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ^ط^ इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा - ब यौमिन् अज़ीम
(५९) क़ालल्मलउ मिन् क़ौमिही इन्ना
ल-नरा-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (६०) क़ा-ल
या क़ौमि लै-स बी ज़लालतुंव्-व लाकिन्नी
रसूलुम् - मिर्रब्बिल् - आल - मीन (६१)
उबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम्
व अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून (६२)
अ-व अजिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्-
रब्बिकुम् अला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम्
वलितत्तक़ू व ल-अल्लकुम् तुर्हमून (६३)
फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अहू
फ़िल्फ़ुल्कि व अग़्रक़्नल्लज़ी - न कज़्ज़बू
बिआयातिना ^ط^ इन्नहुम् कानू क़ौमन् अमीन
★ (६४) व इला आदिन् अख़ाहुम्

وَالَّذِیْ خَبُثَ لَا یَخْرُجُ اِلَّا نَکِدًا ؕ کَذٰلِکَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ
یَّشْکُرُوْنَ ۝ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰی قَوْمِهٖ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَکُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْکُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ۝
قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىکَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۝ قَالَ یٰقَوْمِ
لَیْسَ بِیْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰکِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اُبَلِّغُکُمْ
رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَاَنْصَحُ لَکُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ اَوَعَجِبْتُمْ
اَنْ جَآءَکُمْ ذِکْرٌ مِّنْ رَّبِّکُمْ عَلٰی رَجُلٍ مِّنْکُمْ لِیُنْذِرَکُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَ
لَعَلَّکُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ فَکَذَّبُوْهُ فَاَنْجَیْنٰهُ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ فِی الْفُلْکِ
وَاَغْرَقْنَا الَّذِیْنَ کَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ کَانُوْا قَوْمًا عَمِیْنَ ۝ وَ
اِلٰی عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَکُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىکَ
فِیْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّکَ مِنَ الْکٰذِبِیْنَ ۝ قَالَ یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ
سَفَاهَةٌ وَّلٰکِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اُبَلِّغُکُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ
وَاَنَا لَکُمْ نَاصِحٌ اَمِیْنٌ ۝ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَکُمْ ذِکْرٌ مِّنْ رَّبِّکُمْ
عَلٰی رَجُلٍ مِّنْکُمْ لِیُنْذِرَکُمْ ؕ وَاذْکُرُوْۤا اِذْ جَعَلَکُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَکُمْ فِی الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْکُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ
لَعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ

हूदन् ^ط^ क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला - ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ^ط^
अ-फ़ला तत्तक़ून (६५) क़ालल्-मलउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही इन्ना
ल-नरा-क फ़ी सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुन्नु-क मिनल्-काज़िबीन (६६) क़ा-ल
या क़ौमि लै-स बी सफ़ाह-तुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम्-मिर्रब्बिल्-आल-मीन (६७)
उबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अना लकुम् नासिहुन् अमीन (६८)
अ-व अजिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्रब्बिकुम अला रजुलिम्-मिन्कुम्
लियुन्ज़ि-रकुम् ^ط^ वज़्कुरू इज़् ज-अ-लकुम् ख़ु-ल-फ़ा-अ मिम्बअ् - दि क़ौमि
नूहिंव्-व ज़ादकुम् फ़िल्ख़ल्क़ि बस्त-तुन् ^ج^ फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि ल-अल्लकुम्
तुफ़्लिहून (६९) क़ालू अजिअ्तना लिनअ्-बुदल्ला-ह वह्-दहू व न-ज़-र मा का-न
यअ्-बुदु आबा-उना ^ج^ फ़अ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (७०)

★रु. ७/१४ आ ५ ★रु. ८/१५ आ ६.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

की जाती हैं) ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (५७) जो ज़मीन पाकीज़ा (है), उस में से सब्ज़ा भी परवरदिगार के हुक्म से (अच्छा ही) निकलता है और जो ख़राब है, उस में से जो कुछ निकलता है, नाक़िस (ख़राब) होता है। इसी तरह हम आयतों को शुक्रगुज़ार लोगों के लिए फेर-फेर कर बयान करते हैं★(५८) हम ने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो उन्हों ने (उस से) कहा, ऐ मेरी बिरादरी के लोगो! ख़ुदा की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है। (५९) तो जो उन की क़ौम में सरदार थे, वे कहने लगे कि हम तुम्हें खुली गुमराही में (पड़े) देखते हैं। (६०) उन्हों ने कहा, ऐ क़ौम! मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं है, बल्कि मैं दुनिया के परवरदिगार का पैग़म्बर हूं। (६१) तुम्हें अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचाता हूं और तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही करता हूं और मुझ को ख़ुदा की तरफ़ से ऐसी बातें मालूम हैं, जिन से तुम बे-ख़बर हो। (६२) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शख़्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुमको डराये और ताकि तुम परहेज़गार बनो और ताकि तुम पर रहम खाया जाए। (६३) मगर उन लोगों ने उन को झुठलाया, तो हम ने नूह को और जो उन के साथ कश्ती में सवार थे, उन को तो बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था, उन्हें डुबा दिया। कुछ शक नहीं कि वे अंधे लोग थे। (६४) ★

और (इसी तरह) आद क़ौम की तरफ़ उन के भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा कि भाइयो! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं? (६५) तो उन की क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे, कहने लगे कि तुम हमें बेवक़ूफ़ नज़र आते हो और हम तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं। (६६) उन्हों ने कहा कि भाइयो! मुझ में बेवक़ूफ़ी की कोई बात नहीं है, बल्कि मैं रब्बुल आलमीन का पैग़म्बर हूं। (६७) मैं तुम्हें ख़ुदा के पैग़ाम पहुंचाता हूं और तुम्हारा अमानतदार ख़ैर-ख़्वाह हूं। (६८) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शख़्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुम्हें डराये और याद तो करो जब उस ने तुम को नूह की क़ौम के बाद सरदार बनाया और तुम्हें फैलाव ज़्यादा दिया, पस ख़ुदा की नेमतों को याद करो, ताकि निजात हासिल करो। (६९) वे कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इस लिए आये हो कि हम अकेले ख़ुदा ही की इबादत करें और जिन को हमारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं, उनको छोड़ दें? तो अगर सच्चे हो, तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, उसे ले आओ। (७०)

(पृष्ठ २४७ का शेष)

मुजस्सम चीज़ की कैफ़ियत मालूम होती है और ख़ुदा की किसी सिफ़त की कैफ़ियत मालूम नहीं। कोई शख़्स नहीं बता सकता कि ख़ुदा का देखना-सुनना किस तरह का है, क्योंकि न उस की ऐसी आंखें हैं, जिस तरह की हम रखते हैं, न ऐसे कान जिस तरह के हमारे हैं। पस जब उस का देखना और सुनना ही ऐसा है कि उस की कैफ़ियत मालूम नहीं और वह उसी तरह का होगा, जैसा उस की शान है, तो उस के ठहरने की सूरत भी किसी को मालूम नहीं और वह भी उसी तरह का होगा, जैसे उस की शान को जंचता हो। हैरत की बात है कि लोग ख़ुदा में दूसरी सिफ़तें तो जानते हैं, उन से उस को मुजस्सम क़रार नहीं देते, हालांकि मख़्लूक़ में उन सिफ़तों के लिए 'जिस्मियत' लाज़िम है, लेकिन 'इस्तवा' के लिए उस का मुजस्सम होना क़रार देते हैं और इस वजह से उस

(शेष पृष्ठ २५१ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल क़द् व-क़-अ अलैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव्-व ग़-ज़-बुन् ط अतुजादिलूननी फ़ी अस्मा-इन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबा-उकुम् मा नज़्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् ط फ़न्तज़िरू इन्नी म-अकुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन (७१) फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू बि-रह्मतिम्-मिन्ना व क़-तअ्-ना दाबिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन (७२) ★ व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ▨ क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ط क़द् जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् ط हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आय-तन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला त-मस्सूहा बिसू-इन् फ़यअ्-ख़ु-ज़कुम् अज़ाबुन् अलीम (७३) वज़्कुरू इज़् ज-अ-लकुम् ख़ु-लफ़ा-अ मिम्बअ्-दि आदिंव्-व बव्व-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ू-न मिन् सुहूलिहा क़ुसूरंव्-व तन्हितूनल्-ज़िबा-ल बुयूतन् ج फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि व ला तअ्-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (७४) क़ालल्म-लउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिमन् आम-न मिन्हुम् अतअ्-लमू-न अन्-न सालिहम्-मुर्सलुम्-मिर्रब्बिही ط क़ालू इन्ना बिमा उर्सि-ल बिही मुअ्मिनून (७५) क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना बिल्लज़ी आमन्तुम् बिही काफ़िरून (७६) फ़-अ-क़रुन्नाक़-त व अतौ अन् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू यासालिहुअ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनल्-मुर्सलीन (७७) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुर्रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (७८)

الاعراف ٧ ١٢٧ ولو اننا ٨

ما كان يعبد اباؤنا فأتنا بما تعدنا ان كنت من الصدقين ۝٧٠
قال قد وقع عليكم من ربكم رجس وغضب اتجادلونني
في اسماء سميتموها انتم واباؤكم ما نزل الله بها من
سلطن فانتظروا اني معكم من المنتظرين ۝٧١ فانجينه
والذين معه برحمة منا وقطعنا دابر الذين كذبوا بايتنا و
ما كانوا مؤمنين ۝٧٢ والى ثمود اخاهم صلحا قال يقوم اعبدوا
الله ما لكم من اله غيره قد جاءتكم بينة من ربكم هذه
ناقة الله لكم اية فذروها تاكل في ارض الله ولا تمسوها
بسوء فياخذكم عذاب اليم ۝٧٣ واذكروا اذ جعلكم خلفاء
من بعد عاد وبواكم في الارض تتخذون من سهولها قصورا
وتنحتون الجبال بيوتا فاذكروا الاء الله ولا تعثوا
في الارض مفسدين ۝٧٤ قال الملا الذين استكبروا
من قومه للذين استضعفوا لمن امن منهم اتعلمون
ان صلحا مرسل من ربه قالوا انا بما ارسل به مؤمنون ۝٧٥
قال الذين استكبروا انا بالذي امنتم به كفرون ۝٧٦
فعقروا الناقة وعتوا عن امر ربهم وقالوا يصلح ائتنا بما
تعدنا ان كنت من المرسلين ۝٧٧ فاخذتهم الرجفة

منزل ٢

★ रु. ९/१६ आ ८ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हूद ने कहा कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब (का नाज़िल होना) मुक़र्रर हो चुका है। क्या तुम मुझ से ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने (अपनी तरफ़ से) रख लिए हैं, जिन की ख़ुदा ने कोई सनद नाज़िल नहीं की, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (७१) फिर हम ने हूद को और जो लोग उन के साथ थे, उन को निजात बख़्शी और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया था, उन की जड़ काट दी और वे ईमान लाने वाले थे ही नहीं। (७२) ★

और समूद क़ौम की तरफ़ उन के भाई सालेह को भेजा, (तो) सालेह ने कहा कि ऐ क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक मोजज़ा आ चुका है, (यानी) यही ख़ुदा की ऊंटनी तुम्हारे लिए मोजज़ा है, तो उसे (आज़ाद) छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में चरती फिरे और तुम उसे बुरी नीयत से हाथ भी न लगाना वरना दर्दनाक अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा। (७३) और याद तो करो जब उस ने तुम को आद क़ौम के बाद सरदार बनाया और ज़मीन पर आबाद किया कि नर्म ज़मीन से (मिट्टी ले कर) महल बनाते हो और पहाड़ों को काट-छांट कर घर बनाते हो, पस ख़ुदा की नेमतों को याद करो, ज़मीन में फ़साद न करते फिरो। (७४) तो उन की क़ौम में सरदार लोग जो घमंड रखते थे, ग़रीब लोगों से, जो उनमें से ईमान ले आये थे, कहने लगे, भला तुम यक़ीन करते हो कि सालेह अपने परवरदिगार की तरफ़ से भेजे गये हैं? उन्हों ने कहा, हां, जो चीज़ वह दे कर भेजे गये हैं, हम उस पर बिला शुब्हा ईमान रखते हैं। (७५) तो घमंडी (सरदार) कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान लाये हो, हम तो उस को नहीं मानते। (७६) आख़िर उन्हों ने ऊंटनी (की कूंचों) को काट डाला और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि सालेह! जिस चीज़ से तुम हमें डराते थे, अगर तुम (ख़ुदा के) पैग़म्बर हो, तो उसे हम पर ले आओ। (७७) तो उन को भूंचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (७८) फिर सालेह उन से (ना-उम्मीद हो कर)

(पृष्ठ २४९ का शेष)

की तावील करना ज़रूरी समझते हैं। फिर इस के बावजूद सब उसको हर जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज़्यादा क़रीब भी समझते हैं। अगर ख़ुदा को अर्श पर ठहरने की वजह से उसे 'मुजस्सम' क़रार दिया जाए, तो वह सब जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज़्यादा नज़दीक कैसे माना जा सकता है। मुजस्सम महदूद होता है और जो हर जगह हाज़िर हो, वह ग़ैर महदूद। पस महदूद, ग़ैर-महदूद कैसे हो सकता है? बहरहाल अल्लाह तआला मुजस्सम नहीं। उस की जितनी सिफ़तें हैं, उन की वह सूरत नहीं जो इन्सान की सूरतों की हैं, इस लिए इन्सानी सिफ़तों को अल्लाह तआला की सिफ़तों पर नहीं सोचा जा सकता और इसी लिए उस को मुजस्सम नहीं कह सकते।

ग़रज़ यह कि ख़ुदा ने जिन बातों को अपनी सिफ़त क़रार दिया है, उन को मानना चाहिए और उन की वह सूरत नहीं समझनी चाहिए जो मख़्लूक़ की सिफ़तों की होती है।

वह तख़्त, जिस को अर्श कहते हैं, उस की सूरत मालूम नहीं कि वह किस तरह का है, तो उस पर अल्लाह तआला के ठहरने की क्या सूरत मालूम हो सकती है?

★रु. ९/१६ आ ८ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-त-वल्ला अन्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाल-त़ रब्बी
व नसह़्तु लकुम् व लाकिल्ला तुहि़ब्बूनन्नासि़ही़न (७९) व लूतन्
इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल्-फ़ाहि़श-त़ मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन्
अ-ह़दिम्-मिनल्-आ़लमीन (८०) इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्रिजा-ल शह्-व-तम्-मिन्
दूनिन्निसा-इ ♭ बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून
(८१) व मा का-न जवा-ब क़ौमिही
इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजूहुम् मिन्
क़र्यतिकुम् ८ इन्नहुम् उनासुंय्य-त - त़ह्हरून
(८२) फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्-
र - अ-तहू कानत् मिनल्ग़ाबिरीन
(८३) व अम्त़र्ना अ़लैहिम् म-त़-रन्♭
फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का - न आ़क़िबतुल्-मुज्रिमीन
★ (८४) व इला मद्य - न अख़ाहुम्
शुअ़ैबन्♭ क़ा-ल या क़ौमिअ़्-बुदुल्ला-ह मा
लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ♭ क़द्
जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकम् फ़औफ़ुल्कै-ल
वल्मीज़ा - न व ला तब्ख़सुन्ना - स अश्या - अ हुम् व ला तुफ़्सिदू
फ़िल्अर्ज़ि बअ् - द इस्लाहिहा ♭ ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम्
मुअ्मिनीन ८ (८५) व ला तक़्अुदू बिकुल्लि सि़रातिन् तूअिदू-न व
तसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्ग़ूनहा अि़-व-जन्
वज़्कुरू इज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़-कस्-स - रकुम् ० वन्ज़ुरू कै - फ़
का-न आ़क़िबतुल् - मुफ़्सिदीन (८६) व इन् का - न ता-इफ़तुम् -
मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व ता - इफ़तुल्लम् युअ्मिनू
फ़स्बिरू ह़त्ता यह़्कुमल्लाहु बैनना ८ व हु - व ख़ैरुल्-हा़किमीन (८७)

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَا تُحِبُّونَ النّٰصِحِينَ ﴿٧٩﴾
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِينَ ﴿٨٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَآءِ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ إِلَّآ أَنْ قَالُوٓا
أَخْرِجُوهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَأَنْجَيْنٰهُ
وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
مَّطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾ وَإِلٰى
مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
إِلٰهٍ غَيْرُهٗ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾
وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوٓا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا
فَكَثَّرَكُمْ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِنْ
كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوا بِالَّذِيٓ أُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ
يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

★रु. १०/१७ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फिरे और कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! मैं ने तुम को ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की, मगर तुम (ऐसे हो कि ख़ैरख़्वाहों को दोस्त ही नहीं रखते। (७९) और (इसी तरह जब हमने) लूत को (पैग़म्बर बना कर भेजा, तो) उस वक़्त उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा, तुम ऐसी बे-हयाई का काम क्यों करते हो कि तुम से पहले अह्ले आलम में से किसी ने इस तरह का काम नहीं किया। (८०) यानी नफ़्स की ख़्वाहिश पूरा करने के लिए औरतों को छोड़ कर लौंडों पर गिरते हो। हक़ीक़त यह है कि तुम लोग हद से निकल जाने वाले हो। (८१) तो उन से इस का जवाब कुछ न बन पड़ा और बोले, तो यह बोले कि इन लोगों (यानी लूत और उन के घर वालों) को अपने गांव से निकाल दो (कि) ये लोग पाक बनना चाहते हैं। (८२) तो हम ने उन को और उन के घर वालों को बचा लिया, मगर उन की बीवी (न बची) कि वह पीछे रहने वालों में थी। (८३) और हम ने उन पर (पत्थरों का) मेंह बरसाया, सो देख लो कि गुनाहगारों का कैसा अंजाम हुआ। (८४) ★

और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को भेजा, (तो) उन्हों ने कहा कि ऐ क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करो। अगर तुम ईमान वाले हो तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे हक़ में बेहतर है।[1] (८५) और हर रास्ते पर मत बैठा करो कि जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाता है, उसे तुम डराते और ख़ुदा की राह से रोकते और उस में टेढ़ ढूंढते हो और (उस वक़्त को) याद करो, जब तुम थोड़े-से थे तो ख़ुदा ने तुम को बड़ी जमाअत बना दिया और देख लो कि ख़राबी पैदा करने वालों का अंजाम कैसा हुआ।[2] (८६) और अगर तुम में से एक जमाअत मेरी रिसालत पर ईमान ले आयी है और एक जमाअत ईमान नहीं लायी; तो सब्र किये रहो, यहां तक कि ख़ुदा हमारे-तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८७)

---

१. ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करने से यह मुराद है कि जिस ज़मीन में गुनाह के काम होते थे, हराम चीज़ों को हलाल कर लिया जाता था, क़त्ल व ख़ूंरेज़ी होती थी, जब उस में पैग़म्बर आये और उन्हों ने लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाया तो उस का सुधार हो गया। अब उस भली ज़मीन में ऐसे काम न करो, जिन से यह समझा जाए कि सुधार ख़राबी में बदल गया और उस में फ़साद हो रहा है।

२. वे लोग डाकू और लूट-मार करने वाले थे। रास्तों पर बैठ कर लोगों को डराते थे कि अगर तुम हम को माल न दोगे तो हम तुम को क़त्ल कर डालेंगे या रास्ते से मुराद वे रास्ते हैं, जो हज़रत शुऐब की तरफ़ जाते थे। वे लोग उन रास्तों पर बैठ जाते थे और जिस शख़्स को उस तरफ़ जाते देखते थे, उस को डराते-धमकाते थे कि तुम शुऐब के पास क्यों जाते हो। वह झूठा मक्कार है, ख़ुदा का पैग़म्बर नहीं, ख़ुदा की राह से रोकने से मुराद हज़रत शुऐब के पास जाने और मोमिन बनने से मना करना है।

★रु. १०/१७ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-त-वल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाल-त़ रब्बी
व नसह्तु लकुम् व लाकिल्ला तुहि़ब्बूनन्नासिह़ीन (७९) व लूतन्
इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल्-फ़ाहि़श-त़ मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन्
अ-ह़दिम्-मिनल्-आ़लमीन (८०) इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्रिजा-ल शह्-व-त़म्-मिन्
दूनिन्निसा-इ ط बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून
(८१) व मा का-न जवा-ब क़ौमिही
इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजूहुम् मिन्
क़र्यतिकुम् ج इन्नहुम् उनासुंय्य-त - त़हहरून
(८२) फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्-
र - अ-तहू صلے कानत् मिनलग़ाबिरीन
(८३) व अम्त़र्ना अ़लैहिम् म-त़-रन् ط
फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का - न आ़क़िबतुल्-मुज्रिमीन
★ (८४) व इला मद्य - न अख़ाहुम्
शुअ़ैबन् ط क़ा-ल या क़ौमिअ़्-बुदुल्ला-ह मा
लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ط क़द्
जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकम् फ़औफ़ुलकै-ल
वलमीज़ा - न व ला तब्ख़सुन्ना - स अश्या - अ हुम् व ला तुफ़्सिदू
फ़िल्अर्ज़ि बअ़् - द इस़्लाहि़हा ط जालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम्
मुअ्मिनीन ج (८५) व ला तक़्अुदू बिकुल्लि स़िरातिन् तूअ़िदू-न व
तसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्ग़ूनहा अ़ि-व-जन् ج
वज़्कुरू इज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़-कस़्-स - रकुम् ص वन्ज़ुरू कै - फ़
का-न आ़क़िबतुल् - मुफ़्सिदीन (८६) व इन् का - न त़ा-इफ़तुम् -
मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व त़ा - इफ़तुल्लम् युअ्मिनू
फ़स्बिरू ह़त्ता यह़्कुमल्लाहु बैनना ج व हु - व ख़ैरुल्-हाकिमीन (८७)

ولواننا ٨ ١٢٨ الاعراف ٧

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّونَ النّٰصِحِينَ ﴿٧٩﴾
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِينَ ﴿٨٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَآءِ ۚ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَنْ قَالُوٓا
أَخْرِجُوهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَأَنْجَيْنٰهُ
وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا امْرَأَتَهُۥ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾ وَإِلٰى
مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
إِلٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾
وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللّٰهِ مَنْ آمَنَ بِهِۦ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوٓا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا
فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِنْ
كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ آمَنُوا بِالَّذِيٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ
يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

منزل ٢

★रु. १०/१७ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फिरे और कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! मैं ने तुम को ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की, मगर तुम (ऐसे हो कि ख़ैरख़्वाहों को दोस्त ही नहीं रखते। (७९) और (इसी तरह जब हमने) लूत को (पैग़म्बर बना कर भेजा, तो) उस वक़्त उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा, तुम ऐसी बे-हयाई का काम क्यों करते हो कि तुम से पहले अह्ले आलम में से किसी ने इस तरह का काम नहीं किया। (८०) यानी नफ़्स की ख़्वाहिश पूरा करने के लिए औरतों को छोड़ कर लौंडों पर गिरते हो। हक़ीक़त यह है कि तुम लोग हद से निकल जाने वाले हो। (८१) तो उन से इस का जवाब कुछ न बन पड़ा और बोले, तो यह बोले कि इन लोगों (यानी लूत और उन के घर वालों) को अपने गांव से निकाल दो (कि) ये लोग पाक बनंना चाहते हैं। (८२)तो हम ने उन को और उन के घर वालों को बचा लिया, मगर उन की बीवी (न बची) कि वह पीछे रहने वालों में थी। (८३) और हम ने उन पर (पत्थरों का) मेंह बरसाया, सो देख लो कि गुनाहगारों का कैसा अंजाम हुआ। (८४) ★

और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को भेजा, (तो) उन्हों ने कहा कि ऐ क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करो। अगर तुम ईमान वाले हो तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे हक़ में बेहतर है।[1] (८५) और हर रास्ते पर मत बैठा करो कि जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाता है, उसे तुम डराते और ख़ुदा की राह से रोकते और उस में टेढ़ ढूंढते हो और (उस वक़्त को) याद करो, जब तुम थोड़े-से थे तो ख़ुदा ने तुम को बड़ी जमाअत बना दिया और देख लो कि ख़राबी पैदा करने वालों का अंजाम कैसा हुआ।[2] (८६) और अगर तुम में से एक जमाअत मेरी रिसालत पर ईमान ले आयी है और एक जमाअत ईमान नहीं लायी; तो सब्र किये रहो, यहां तक कि ख़ुदा हमारे-तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८७)

---

१. ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करने से यह मुराद है कि जिस ज़मीन में गुनाह के काम होते थे, हराम चीज़ों को हलाल कर लिया जाता था, क़त्ल व ख़ूंरेज़ी होती थी, जब उस में पैग़म्बर आये और उन्हों ने लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाया तो उस का सुधार हो गया। अब उस भली ज़मीन में ऐसे काम न करो, जिन से यह समझा जाए कि सुधार ख़राबी में बदल गया और उस में फ़साद हो रहा है।

२. वे लोग डाकू और लूट-मार करने वाले थे। रास्तों पर बैठ कर लोगों को डराते थे कि अगर तुम हम को माल न दोगे तो हम तुम को क़त्ल कर डालेंगे या रास्ते से मुराद वे रास्ते हैं, जो हज़रत शुऐब की तरफ़ जाते थे। वे लोग उन रास्तों पर बैठ जाते थे और जिस शख़्स को उस तरफ़ जाते देखते थे, उस को डराते-धमकाते थे कि तुम शुऐब के पास क्यों जाते हो। वह झूठा मक्कार है, ख़ुदा का पैग़म्बर नहीं, ख़ुदा की राह से रोकने से मुराद हज़रत शुऐब के पास जाने और मोमिन बनने से मना करना है।

★रु. १०/१७ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नवां पारः क़ालल्मलउ

सूरतुल्-अअ्राफ़ि आयत ८८ से २०६

क़ालल्-मलउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्न-क याशुअ़ैबु वल्लज़ी-न
आमनू म-अ-क मिन् क़र्यतिना औ ल-त-अूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना क़ा-ल अ-व लौ
कुन्ना कारिहीन (८८) क़दिफ़्तरैना अ-लल्लाहि कज़िबन् इन् अ़ुद्ना
फ़ी मिल्लतिकुम् बअ्-द इज़् नज्जानल्लाहु मिन्हा व मा यकूनु लना अन्
नअ़ू - द फ़ीहा इल्ला अंय्यशा - अल्लाहु
रब्बुना वसि-अ् रब्बुना कुल्-ल शैइन्
अ़िल्मन् अ् - लल्लाहि त-वक्कलना
रब्बनफ़्तह् बैनना व बै - न क़ौमिना
बिल्हक़्क़ि व अन्-त ख़ैरुल्फ़ातिहीन (८९)
व क़ालल्-मलउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही
लइनित्तबअ्-तुम् शुअ़ैबन् इन्नकुम् इज़ल-ल
ख़ासिरून (९०) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुर्-रज्फ़तु
फ़ - अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन
(९१) अल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् क-अल्लम्
यग़्नौ फ़ीहा अल् - लज़ी - न
कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कानू हुमुल्ख़ासिरीन (९२)
फ़-त-वल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि
ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व
न-सह्तु लकुम् फ़-कै-फ़ आसा अ़ला क़ौमिन् काफ़िरीन ★ (९३) व
मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् - मिन् नबिय्यिन् इल्ला अ-ख़ज़्ना अह्लहा
बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ ल-अ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअ़ून (९४) सुम्-म बद्दल्ना मकानस्-
सय्यिअतिल्-ह-स-न-त हत्ता अ-फ़व्-व क़ालू क़द् मस्-स आबा-अनज़्-ज़र्रा-उ
वस्सर्रा-उ फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बग़्-त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (९५) व लौ
अन्-न अह्लल्क़ुरा आमनू वत्तक़ौ ल-फ़-तह्ना अ़लैहिम् ब-र-कातिम्-मिनस्समा इ
वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज़्ज़बू फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून (९६)

قال الملا ۹ — ۱۲۹ — الاعراف ۷

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ
كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ
يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ
رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿۸۹﴾ وَ
قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۹۰﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۱﴾
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا
كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۲﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ
رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۹۳﴾ وَ
مَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ
لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿۹۴﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا
وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹۵﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ
بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا

∴ मु. अि मु. त क़. ★ रु. ११/१ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(तो) उन की क़ौम में जो लोग सरदार और बड़े आदमी थे, वे कहने लगे कि शुऐब ! (या तो) हम तुम को और जो लोग तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं, उन को अपने शहर से निकाल देंगे या तुम हमारे मज़हब में आ जाओ। उन्हों ने कहा, चाहे हम (तुम्हारे दीन से) बे-ज़ार ही हों (तो भी ?) (८८) अगर हम इस के बाद कि ख़ुदा हमें इस से निजात बख़्श चुका है, तुम्हारे मज़हब में लौट जाएं, तो बेशक हम ने ख़ुदा पर झूठ इफ़्तरा बांधा और हमें मुनासिब नहीं कि हम उस में लौट जाएं। हां, ख़ुदा जो हमारा परवरदिगार है, वह चाहे तो (हम मजबूर हैं), हमारे परवरदिगार का इल्म हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। हमारा ख़ुदा ही पर भरोसा है। ऐ परवरदिगार ! हम में और हमारी क़ौम में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८९) और उन की क़ौम में से सरदार लोग जो काफ़िर थे, कहने लगे कि (भाइयो !) अगर तुम ने शुऐब की पैरवी की तो बेशक तुम घाटे में पड़ गये। (९०) तो उन को भूंचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (९१) (ये लोग) जिन्हों ने शुऐब को झुठलाया था; ऐसे बर्बाद हुए कि गोया वे उन में कभी आबाद ही न हुए थे। (ग़रज़) जिन्हों ने शुऐब को झुठलाया वे घाटे में पड़ गये। (९२) तो शुऐब उन में से निकल आये और कहा कि भाइयो ! मैं ने तुम को अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचा दिए हैं, और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की थी, तो मैं काफ़िरों पर (अज़ाब नाज़िल होने से) रंज व ग़म क्यों करूं ? (९३) ★

और हम ने किसी शहर में कोई पैग़म्बर नहीं भेजा, मगर वहां के रहने वालों को जो ईमान न लाये, दुखों और मुसीबतों में डाल दिया, ताकि वे आजिज़ी और ज़ारी करें। (९४) फिर हम ने तक्लीफ़ को आसूदगी (ख़ुशहाली) से बदल दिया, यहां तक कि (माल व औलाद में) ज़्यादा हो गये तो कहने लगे कि इसी तरह रंज व राहत हमारे बड़ों को भी पहुंचता रहा है, तो हम ने उन को यकायक पकड़ लिया और वे (अपने हाल में) बे-ख़बर थे। (९५) अगर इन बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेज़गार हो जाते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतों (के दरवाज़े) खोल देते, मगर उन्हों ने तो झुठलाया, सो उन के आमाल की सज़ा में हम ने उन को पकड़

: मु. अि मु. ता ख़. १५ ★रु. ११/१ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-फ़-अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्तियहुम् बअ्सुना बयातंव्-व हुम् ना-इमून
(९७) अ-व अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्तियहुम् बअ्सुना ज़ुहंव्वहुम् यल्-अबून
(९८) अ-फ़अ्मिनू मक्रल्लाहि८ फ़ला यअ्मनु मक्रल्लाहि इल्लल्क़ौमुल्-
ख़ासिरून★ (९९) अ-व लम् यह्दि लिल्लज़ी-न यरिसूनल्अर-ज़ मिम्बअ्-दि
अह्लिहा अल्लौ नशा - उ अ-सब्नाहुम्
बिज़ुनूबिहिम्८ व नत्बअु अला क़ुलूबिहिम्
फ़हुम् ला यस्मअून (१००) तिल्कल्क़ुरा
नक़ुस्सु अलै-क मिन् अम्बा-इहा८ व ल-क़द्
जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति८ फ़मा
कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू मिन्
क़ब्लु८ कज़ालि - क यत्बअुल्लाहु अला
क़ुलूबिल्काफ़िरीन (१०१) व मा व-जद्ना
लि-अक्सरिहिम् मिन् अ्-ह्दिन्८ व इंव्व-
जद्ना अक्सरहुम् लफ़ासिक़ीन (१०२)
सुम्-म ब-अस्ना मिम्बअ्-दिहिम् मूसा
बिआयातिना इला फ़िर्औ-न व म-लइही
फ़-ज़-लमू बिहा८ फ़न्ज़ुर् कै - फ़ का-न

الاعراف ١٣٠ قال الملاء ٩

وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝ اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى
وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ
اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَسْمَعُوْنَ ۝ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ
وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ
لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ
بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ
مُّبِيْنٌ ۝ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ
اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ
حٰشِرِيْنَ ۝ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ

منزل

आक़िबतुल्-मुफ़्सिदीन (१०३) व क़ा-ल मूसा या फ़िर्औनु इन्नी रसूलुम्-
मिर्रब्बिल्-आलमीन८ (१०४) हक़ीक़ुन् अला अल्ला अक़ू-ल अ-लल्लाहि
इल्लल्हक़्-क़८ क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यिनतिम्-मिर्रब्बिकुम् फ़अर्सिल् मअि-य बनी
इस्रा-ई-ल८ (१०५) क़ा-ल इन् कुन्-त जिअ्-त बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा
इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (१०६) फ़-अल्क़ा असाहु फ़इज़ा हि-य सुअ्-बानुम्-
मुबीन८ (१०७) व न-ज़-अ य-दहू फ़इज़ा हि - य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन
★ (१०८) क़ालल्मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुन्
अलीम८(१०९) युरीदु अंय्युख़्रिजकुम् मिन् अर्ज़िकुम्८ फ़ माज़ा तअ्मुरून
(११०) क़ालू अर्जिह व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्-मदाइनि हाशिरीन
(१११) यअ्तू-क बिकुल्लि साहिरिन् अलीम (११२) व जा-अस्-स-ह-रतु
फ़िर्औ-न क़ालू इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्ग़ालिबीन (११३)

★रु० १२/२ आ ६ ★रु० १३/३ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिया। (९६) क्या बस्तियों के रहने वाले इस से बे-ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात को आए और वे (बे-ख़बर) सो रहे हों। (९७) और क्या शहर वाले निडर हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ नाज़िल हो और वे खेल रहे हों। (९८) क्या ये लोग ख़ुदा के दांव का डर नहीं रखते? (सुन लो कि) ख़ुदा के दांव से वही लोग निडर होते हैं जो घाटा पाने वाले हैं। (९९) ★

क्या इन लोगों को जो अह्ले ज़मीन के (मर जाने के) बाद ज़मीन के मालिक होते हैं, यह बात हिदायत की वजह नहीं बनी कि अगर हम चाहें तो उन के गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत डाल दें और उन के दिलों पर मुहर लगा दें कि कुछ सुन ही न सकें। (१००) ये बस्तियां हैं, जिन के कुछ हालात हम तुम को सुनाते हैं, और उन के पास उन के पैग़म्बर निशानियां ले कर आए, मगर वे ऐसे नहीं थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों, उसे मान लें। इसी तरह ख़ुदा काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है। (१०१) और हम ने उन में से अक्सरों में (अह्द का निबाह) नहीं देखा और उन में अक्सरों को (देखा तो) बदकार ही देखा। (१०२) फिर इन (पैग़म्बरों) के बाद हम ने मूसा को निशानियां दे कर फ़िऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उन्हों ने उन के साथ कुफ़्र किया। सो देख लो, कि ख़राबी करने वालों का अंजाम क्या हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िऔन! मैं रब्बुल आलमीन का पैग़म्बर हूं। (१०४) मुझ पर वाजिब है कि ख़ुदा की तरफ़ से जो कुछ कहूं, सच ही कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूं। सो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने की रुख़्सत दे दीजिए। (१०५) फ़िऔन ने कहा कि अगर तुम निशानी ले कर आए हो, तो अगर सच्चे हो, तो लाओ (दिखाओ)। (१०६) मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी, तो वह उसी वक़्त खुला अज़दहा (हो गया), (१०७) और अपना हाथ बाहर निकाला तो उसी दम देखने वालों की निगाहों में सफ़ेद बर्राक़ (था), (१०८) ★

तो फ़िऔन की क़ौम में जो सरदार थे, वे कहने लगे कि यह बड़ा अल्लामा जादूगर है। (१०९) इस का इरादा यह है कि तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल दे, भला तुम्हारी क्या सलाह है? (११०) उन्हों ने (फ़िऔन से) कहा कि फ़िलहाल मूसा और उस के भाई के मामले को माफ़ रखिए और शहरों में नक़ीब रवाना कर दीजिए, (१११) कि तमाम माहिर जादूगरों को आप के पास ले आएं। (११२) (चुनांचे ऐसा ही किया गया) और जादूगर फ़िऔन के पास आ पहुंचे और कहने लगे, कि अगर हम जीत गये, तो हमें सिला (इनाम) अता किया जाए। (११३) (फ़िऔन ने)

★रु. १२/२ आ ६ ★रु. १३/३ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल न-अम् व इन्नकुम् लमिनल्-मुक़र्रबीन (११४) क़ालू या मूसा इम्मा
अन् तुल्क़ि-य व इम्मा अन्नकू-न नह्नुल्-मुल्क़ीन (११५) क़ा-ल अल्क़ू
फ़-लम्मा अल्क़ौ स-हरू अअ्-युनन्नासि वस्तर्हबूहुम् व जा-ऊ बिसिह्रिन् अज़ीम
(११६) व औहैना इला मूसा अन् अल्क़ि अस़ाक़ ८ फ़इज़ा हि-य
तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून ८ (११७) फ़
व-क़-अल्-हक़्क़ु व ब-त़-ल मा कानू यअ्-मलून ८
(११८) फ़ग़ुलिबू हुनालि - क वन्क़लबू
साग़िरीन ८ (११९) व उल्क़ियस्स-ह्-रतु
साजिदीन (१२०) क़ालू आमन्ना
बिरब्बिल् - आलमीन ॥ (१२१) रब्बि
मूसा व हारून (१२२) क़ा-ल फ़िर्औनु
आमन्तुम् बिही क़ब्-ल अन् आज-न लकुम् ८
इन् - न हाज़ा ल - मक्रुम् - मकर्तुमूहु
फ़िल्मदीनति लितुख़्रिजू मिन्हा अह्-लहा ८
फ़सौ-फ़ तअ्-लमून (१२३) ल-उ-क़त्ति-अन्-न
ऐदियकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन्

الاعراف ١٣١ قال الملأ ٩

قَالُوٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝١١٣ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ
الْمُقَرَّبِيْنَ ۝١١٤ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ
الْمُلْقِيْنَ ۝١١٥ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ
وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ۝١١٦ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا
هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝١١٧ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١١٨
فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۝١١٩ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝١٢٠
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٢١ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝١٢٢ قَالَ فِرْعَوْنُ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى
الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝١٢٣ لَاُقَطِّعَنَّ
اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝١٢٤
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝١٢٥ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ۝١٢٦ وَقَالَ
الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ
وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۗ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَ
اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۝١٢٧ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ
اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ۝١٢٨ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا

सुम्-म लउसल्लिबन्नकुम् अज्-मईन (१२४) क़ालू इन्ना इला रब्बिना
मुन्क़लिबून ८ (१२५) व मा तन्क़िमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना
बिआयाति रब्बिना लम्मा जा-अत्ना ॥ रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना स़ब्रंव्-व
तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन ★ (१२६) व क़ालल्मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न
अ-त-ज़रु मूसा व क़ौमहू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व य-ज़-र-क व आलिह-त-क
क़ा - ल सनुक़त्तिलु अब्ना - अहुम् व नस्तह्यी निसा - अहुम् ८ व इन्ना
फ़ौक़हुम् क़ाहिरून (१२७) क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिस्तअ़ीनू बिल्लाहि
वस्बिरू ८ इन्नल्अर् - ज़ लिल्लाहि यूरिसुहा मंय्यशा - उ मिन्
अिबादिही ॥ वल्आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन (१२८) क़ालू ऊज़ीना मिन् क़ब्लि
अन् तअ्ति-यना व मिम्बअ्-दि मा जिअ्तना ॥ क़ा-ल अ़सा रब्बुकुम् अंय्युह्लि-क
अ़दुव्वकुम् व यस्तख़्लि-फ़कुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्-मलून ★ (१२९)

★ रु. १४/४ आ १८ ★ रु. १५/५ आ ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहा, हां (ज़रूर) और (उस के अलावा) तुम मुक़र्रिबों में दाखिल कर लिए जाओगे। (११४) (जब दोनों फ़रीक़ मुक़र्रर दिन को जमा हुए, तो) जादूगरों ने कहा कि मूसा या तो तुम (जादू की चीज़) डालो या हम डालते हैं। (११५) (मूसा ने) कहा, तुम ही डालो, जब उन्होंने (जादू की चीज़ें) डालीं तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया, (यानी नज़रबन्दी कर दी) और (लाठियों और रस्सियों के सांप बना-बना कर) उन्हें डरा-डरा दिया और बड़ा भारी जादू दिखाया। (११६) (उस वक़्त) हम ने मूसा की तरफ वह्य भेजी कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो, वह फ़ौरन (सांप बन कर) जादूगरों के बनाए हुए सांपों को (एक-एक कर के) निगल जाएगी। (११७) (फिर) तो हक़ साबित हो गया और जो कुछ फ़िऔनी करते थे, वातिल हो गया। (११८) और वे मग़्लूब हो गए और ज़लील हो कर रह गए। (११९) (यह सूरत देख कर) जादूगर सज्दे में गिर पड़े। (१२०) और कहने लगे कि हम जहान के परवरदिगार पर ईमान लाए, (१२१) (यानी) मूसा और हारून के परवरदिगार पर। (१२२) फ़िऔन ने कहा कि इस से पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आए? बेशक यह फ़रेब है, जो तुम ने मिल कर शहर में किया है, ताकि शहर वालों को यहां से निकाल दो। सो बहुत जल्द (इस का नतीजा) मालूम कर लोगे। (१२३) मैं (पहले तो) तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरे तरफ़ के पांव कटवा दूंगा, फ़िर तुम सब को सूली चढ़वा दूंगा। (१२४) वह बोले कि हम तो अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१२५) और उस के सिवा तुझ को हमारी कौन-सी बात बुरी लगी है कि जब हमारे परवरदिगार की निशानियां हमारे पास आ गयीं, तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ परवदिगार! हम पर सब्र व इस्तिक़ामत के दहाने खोल दे और हमें (मारियो तो) मुसलमान ही मारियो। (१२६) ★

और फ़िऔन की क़ौम में जो सरदार[1] थे, कहने लगे कि क्या आप मूसा और उस की क़ौम को छोड़ दीजिएगा कि मुल्क में ख़राबी करें और आप से और आप के माबूदों से हाथ खींच लें। वह बोले कि हम उन के लड़कों को क़त्ल कर डालेंगे और लड़कियों को ज़िंदा रहने देंगे और बे-शुब्हा हम उन पर ग़ालिब हैं। (१२७) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा से मदद मांगो और साबित क़दम रहो। ज़मीन तो ख़ुदा की है और वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उस का मालिक बनाता है और आख़िर भला तो डरने वालों का है। (१२८)

---

१. रिवायत में है कि फ़िऔन ख़ल्क़ को अपनी बंदगी का हुक्म करता था और आप सितारों को पूजता था और अपनी शक्ल के बुत बनवा कर क़ौम को देता था कि तुम उन की पूजा करो, ताकि वे बुत तुम को मुझ से नज़दीक कर दें और सरदारों ने फ़िऔन को याद दिलायी मूसा के क़त्ल की, जो उन्होंने उस की क़ौम के एक आदमी का किया था।

★रु. १४/४ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् अ-ख़ज़्ना आ-ल फ़िर्औ-न बिस्सिनी-न व नक़्सिम्-मिनस्स-मराति
ल-अ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (१३०) फ़इज़ा जा-अत्हुमुल्-ह़-स-नतु क़ालू लना
हाज़िही ϭ व इन् तुसिब्हुम् सय्यिअतुं य्यत्तय्यरू बिमूसा व मम्म-अ़हू ♭
अला इन्नमा ता-इरुहुम् अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्स़रहुम् ला
यअ्-लमून (१३१) व क़ालू मह्मा
तअ्तिना बिही मिन् आयतिल्-लितस-ह़-रना
बिहा ♭ फ़मा नह़्नु ल-क बिमुअ्मिनीन
(१३२) फ़-अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ा-न
वल्जरा-द वल्क़ुम्म-ल वज़्ज़फ़ादि-अ वद्-द-म
आयातिम्-मुफ़स़्स़लातिन् क़फ़ फ़स्तक्बरू व
कानू क़ौमम्-मुज्रिमीन (१३३) व लम्मा
व-क़-अ अ़लैहिमुर्रिज्ज़ु क़ालू या मूसद्अु लना
रब्ब-क बिमा अ़हि-द अ़िन्द-क ϭ लइन्
क-श-फ़्-त अ़न्नर्रिज्-ज़ लनुअ्मिनन्-न ल-क व
लनुर्सिलन्-न म-अ़-क बनी इस्रा-ई-ल ϵ
(१३४) फ़-लम्मा क-शफ़्ना अ़न्हुमुर्रिज्-ज़
इला अ-जलिन् हुम् बालिग़ूहु इज़ा हुम्
यन्कुसून (१३५) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़्रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बिअन्नहुम्
कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (१३६) व औरस्नल्-
क़ौमल्लज़ी-न कानू युस्तज़्अफ़ू-न मशारि-क़ल्-अर्ज़ि व मग़ारिबहल्लती बारक्ना
फ़ीहा ♭ व तम्मत् कलिमतु रब्बिकल्हुस्ना अ़ला बनी इस्रा-ई-ल ϵ
बिमा स़-बरू ♭ व दम्मर्ना मा का-न यस्नअु फ़िर्औनु व क़ौमुहू व मा
कानू यअ्-रिशून ●(१३७) व जावज़्ना बि बनी इस्रा-ईलल्-बह़्-र फ़-अतौ
अ़ला क़ौमिंय्यअ्-कुफ़ू-न अ़ला अस्नामिल्लहुम् ϭ क़ालू या मूसज्अ़ल् लना
इलाहन् कमा लहुम् आलिहतुन् ♭ क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून (१३८)

جِئْتَنَا قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى
الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۱۲۹ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ
بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۱۳۰ فَاِذَا
جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا
بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۭ اَلَآ اِنَّمَا طٰۗئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۱۳۱ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا
نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۱۳۲ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَ
الْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۣ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۱۳۳ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَىِٕنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ
وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۱۳۴ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ
اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۱۳۵ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۱۳۶ وَاَوْرَثْنَا
الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا
الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ
بِمَا صَبَرُوْا ۭ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا
يَعْرِشُوْنَ ۱۳۷ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ

●रुबअ् १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वे बोले कि तुम्हारे आने से पहले भी हम को तक्लीफ़ें पहुंचती रहीं और आने के बाद भी। मूसा ने कहा कि क़रीब है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और उस की जगह तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो ★ (१२९) और हम ने फ़िऔनियों को क़हतों और मेवों के नुक़्सान में पकड़ा ताकि नसीहत हासिल करें। (१३०) तो जब उन को सुख हासिल होता तो कहते कि हम इस के हक़दार हैं और अगर सख़्ती पहुंचती तो मूसा और उन के साथियों की बद-शगूनी बताते। देखो, उन की बद-शगूनी ख़ुदा के यहां (तै) है, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (१३१) और कहने लगे कि तुम हमारे पास (चाहे) कोई भी निशानी लाओ, ताकि उस से हम पर जादू करो, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१३२) तो हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियां और जुएं और मेंढक और ख़ून कितनी खुली हुई निशानियां भेजीं, मगर वे तकब्बुर (घमंड) ही करते रहे और वे लोग थे ही गुनाहगार। (१३३) और जब उन पर अज़ाब आता तो कहते कि मूसा हमारे लिए अपने परवरदिगार से दुआ करो, जैसा उस ने तुम से अह्द कर रखा है, अगर तुम हम से अज़ाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान भी लाएंगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ जाने (की इजाज़त) देंगे। (१३४) फिर जब हम एक मुद्दत के लिए, जिस तक उन को पहुंचना था, उन से अज़ाब दूर कर देते, तो वह अह्द को तोड़ डालते। (१३५) तो हम ने उन से बदला ले कर ही छोड़ा कि उन को दरिया में डुबो दिया, इस लिए कि वे हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बे-परवाई करते थे।[1] (१३६) और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, उनको (शाम यानी सीरिया की) ज़मीन के पूरब व पच्छिम का, जिसमें हम ने बरकत दी थी, वारिस कर दिया और बनी इस्राईल के बारे में उन के सब्र की वजह से तुम्हारे परवरदिगार का नेक वायदा पूरा हुआ और फ़िऔन की क़ौम वाले जो (महल) बनाते और (अंगूर के बाग़) जो छतरियों पर चढ़ाते थे, सब को हम ने तबाह कर दिया ● (१३७) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया से पार उतारा, तो वह ऐसे लोगों के पास जा पहुंचे जो अपने बुतों (की इबादत) के लिए बैठे रहते थे। (बनी इस्राईल) कहने लगे कि मूसा, जैसे इन लोगों के माबूद हैं, हमारे लिए भी माबूद बना दो। मूसा ने कहा कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो। (१३८) ये लोग जिस (काम) में (फंसे हुए) हैं,

---

१. ये सब बलाएं उन पर आयीं एक-एक हफ़्ते के फ़र्क़ से। अव्वल हज़रत मूसा फ़िऔन को कह आये कि अल्लाह तुम पर यह बला भेजेगा, वही बला आती, फिर परेशान हो जाते और हज़रत मूसा की ख़ुशामद करते। उन की दुआ से दूर हो जाती और फिर इन्कारी हो जाते। आख़िर को वबा पड़ी। आधी रात को सारे शहर में हर शख़्स का पहला बेटा मर गया। वह मुर्दों के ग़म में फंस गये। हज़रत मूसा अपनी क़ौम को ले कर शहर से निकल गये। फिर कई दिन के बाद फ़िऔन फ़ौज समेत ग़र्क़ हो गया।

★रु. १५/५ आ ३ ●रुबअ् १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्-न हा-उला-इ मुतब्बरुम्मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम्मा कानू यअ्-मलून
(१३९) क़ा-ल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहंव्-व-हु-व फ़ज़्ज़-लकुम् अ़-लल्-
आलमीन (१४०) व इज़् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमूनकुम्
सू-अल्अ़ज़ाबि ج युक़त्तिलू-न अब्ना-अ-कुम् व यस्तह्यू-न निसा-अ-कुम् ط व फ़ी

ज़ालिकुम् बला-उम् - मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम
★ (१४१) व वाअ़द्ना मूसा सलासी-न
लैल-तंव्-व अत्मम्नाहा बिअ़शिरन् फ़-तम्-म
मीक़ातु रब्बिही अर्बओ़-न लैल-तन् ج व
क़ा-ल मूसा लिअख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी
क़ौमी व अस्लिह व ला तत्तबिअ़् सबीलल्-
मुफ़्सिदीन (१४२) व लम्मा जा-अ मूसा
लिमीक़ातिना व कल्ल-महू रब्बुहू ﻻ क़ा-ल
रब्बि अरिनी अन्ज़ुर् इलै-क ط क़ा-ल लन्
तरानी व लाकिनिन्ज़ुर् इलल् - ज-बलि
फ़इनिस्त-क़र्-र मकानहू फ़सौ - फ़ तरानी ج
फ़-लम्मा त-जल्ला रब्बुहू लिल्-ज-बलि ज-अ़-लहू

قال الملأ ٩ ١٣٣ الاعراف ٧

يَعْكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوا۟ يَٰمُوسَى ٱجْعَل لَّنَآ إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ
ءَالِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ (١٣٨) إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبَٰطِلٌ
مَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ (١٣٩) قَالَ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ (١٤٠) وَإِذْ أَنجَيْنَٰكُم مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ
ٱلْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِى ذَٰلِكُم بَلَآءٌ
مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ (١٤١) ع وَوَٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَٰثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَٰهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَٰتُ رَبِّهِۦٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ
هَٰرُونَ ٱخْلُفْنِى فِى قَوْمِى وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ ٱلْمُفْسِدِينَ (١٤٢)
وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقَٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ رَبُّهُۥ ۙ قَالَ رَبِّ أَرِنِىٓ أَنظُرْ
إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَن تَرَىٰنِى وَلَٰكِنِ ٱنظُرْ إِلَى ٱلْجَبَلِ فَإِنِ ٱسْتَقَرَّ
مَكَانَهُۥ فَسَوْفَ تَرَىٰنِى ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُۥ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُۥ دَكًّا وَخَرَّ
مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحَٰنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا۠ أَوَّلُ
ٱلْمُؤْمِنِينَ (١٤٣) قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ إِنِّى ٱصْطَفَيْتُكَ عَلَى ٱلنَّاسِ بِرِسَٰلَٰتِى
وَبِكَلَٰمِى فَخُذْ مَآ ءَاتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ ٱلشَّٰكِرِينَ (١٤٤) وَكَتَبْنَا لَهُۥ
فِى ٱلْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا۟ بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُو۟رِيكُمْ دَارَ
ٱلْفَٰسِقِينَ (١٤٥) سَأَصْرِفُ عَنْ ءَايَٰتِىَ ٱلَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِى ٱلْأَرْضِ

منزل ٢

दक्कंव्-व ख़र्-र मूसा स़अ़िक़न् ج फ़-लम्मा अफ़ा-क़-क़ा-ल सुब्हान - क तुब्तु
इलै-क व अ-न अव्वलुल्-मुअ्मिनीन (१४३) क़ा-ल या मूसा इन्निस्त़फ़ैतु-क
अ़लन्नासि बिरिसालाती व बिकलामी ﺻﻠﮯ फ़ख़ुज़् मा आतैतु-क व कुम् -
मिनश्शाकिरीन (१४४) व क-तब्ना लहू फ़िल्अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम्-
मौअ़िज़तंव् - व तफ़्सीलल् - लिकुल्लि शैइन् ج फ़ - ख़ुज़्-हा बिक़ुव्वतिंव्वअ्मुर्
क़ौम-क यअ्ख़ुज़ू बिअह्सनिहा ط स-उरीकुम् दारल् - फ़ासिक़ीन (१४५)

★रु. १६/६ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वह बरबाद होने वाला है और जो काम ये करते हैं, सब बेहूदा हैं। (१३९) (और यह भी) कहा कि भला मैं ख़ुदा के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद खोजूं हालांकि उस ने तुम को तमाम दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है। (१४०) और (हमारे उन एहसानों को याद करो) जब हम ने तुम को फ़िऔनियों (के हाथ) से निजात बख़्शी, वे लोग तुम को बड़ा दुख देते थे। तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियां ज़िन्दा रहने देते थे और इस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सख़्त आज़माइश थी। (१४१) ★

और हम ने मूसा से तीस रात की मीयाद मुक़र्रर की और दस (रातें) और मिला कर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया, तो उस के परवरदिगार की चालीस रात की मीयाद पूरी हो गयी। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरे (तूर पहाड़ पर जाने के) बाद तुम मेरी क़ौम में जानशीन हो, (उन की) इस्लाह करते रहना और शरीरों के रास्ते पर न चलना।[१] (१४२) और जब मूसा हमारे मुक़र्रर किए हुए वक़्त पर (तूर पहाड़ पर) पहुंचे और उन के परवरदिगार ने उन से कलाम किया तो कहने लगे कि ऐ परवरदिगार! तू मुझे (जलवा) दिखा कि मैं तेरा दीदार (भी) देखूं। परवरदिगार ने फ़रमाया कि तुम मुझे हरगिज़ न देख सकोगे। हां, पहाड़ की तरफ़ देखते रहो, अगर यह अपनी जगह क़ायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे। जब उन का परवरदिगार पहाड़ पर ज़ाहिर हुआ तो (रब के अन्वार की तजल्ली ने) उस को रेज़ा-रेज़ा कर दिया और मूसा बे-होश हो कर गिर पड़े। जब होश में आये तो कहने लगे कि तेरी ज़ात पाक है और मैं तेरे हुज़ूर में तौबा करता हूं और जो ईमान लाने वाले हैं उन में सब से अव्वल हूं। (१४३) (ख़ुदा ने (फ़रमाया, मूसा! मैं ने तुम को अपने पैग़ाम और अपने कलाम से लोगों से मुम्ताज़ किया है, तो जो मैं ने तुम को अता किया है, उसे पकड़ रखो और (मेरा) शुक्र बजा लाओ। (१४४) और हम ने (तौरात की) तख़्तियों में उन के लिए हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी, फिर (इर्शाद फ़रमाया कि) इसे ज़ोर से पकड़े रहो और अपनी क़ौम से भी कह दो कि इन बातों को, जो इस में (दर्ज हैं और) बहुत बेहतर हैं, पकड़े रहें। मैं बहुत जल्द तुम को ना-फ़रमान लोगों का घर

---

१. ख़ुदा ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को चालीस रातों के लिए बुलाया था, ताकि उन को तौरात इनायत की जाए। इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा ने मुझे तीस रात के लिए तलब फ़रमाया है। मैं तुम में अपने भाई हारून को अपनी जगह छोड़े जाता हूं। जब मूसा अलैहिस्सलाम वहां से तशरीफ़ ले गये, तो अल्लाह तआला ने दस रातें और बढ़ा दीं। इस आख़िरी दस दिन में बनी इस्राईल बछड़े की पूजा कर के गुमराह हो गये। चुनांचे सामरी के बछड़ा बनाने का क़िस्सा आगे आता है। जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था कि मैं तुम में अपने भाई हारून को जानशीन करता हूं, इसी तरह हज़रत हारून से कहा कि आप मेरी क़ायम मक़ामी कीजिएगा और इन लोगों की इस्लाह करते रहिएगा ताकि कोई फ़साद न होने पाए।

★रु. १६/६ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

स-अस्रिफ़ु अ़न् आयातियल्लज़ी-न य-त-कब्बरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-ह़क़्क़ि व
इंय्यरौ कुल् - ल आयतिल्ला - युअ्मिनू बिहा व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला
यत्तख़िज़ूहु सबीलन् व इंय्यरौ सबीलल्ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलन्
ज़ालि-क बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (१४६)
वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल्-
आख़िरति ह़बितत् अअ्-मालुहुम् हल् युज्ज़ौ-न
इल्ला मा कानू यअ्-मलून ★ (१४७)
वत्त-ख़-ज क़ौमु मूसा मिम्बअ्-दिही मिन्
हुलिय्यिहिम् अ़िज्लन् ज-स-दल्लहू ख़ुवारुन्
अ-लम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला
यह्दीहिम् सबीला ▨ इत्तख़ज़ूहु व कानू
ज़ालिमीन (१४८) व लम्मा सुक़ि-त़ फ़ी
ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू
क़ालू लइल्लम् यर्ह़म्ना रब्बुना व
यग़्फ़िर्लना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन (१४९)
व लम्मा र-ज-अ़ मूसा इला क़ौमिही
ग़-ज़्-बा-न असिफ़न् क़ा - ल बिअ्-समा
ख़-लफ़्तुमूनी मिम्बअ् - दी अ अ़जिल्तुम् अम-र रब्बिकुम् व अल्क़ल् -
अल्वा-ह़ व अ-ख़-ज बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू इलैहि क़ालब्-न उम्-म
इन्नल् - क़ौमस्तज़् - अ़फ़ूनी व कादू यक़्तुलूननी फ़ला तुश्मित्
बियल्-अअ्-दा-अ व ला तज्-अ़ल्नी म-अ़ल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (१५०) क़ा-ल
रब्बिग़्फ़िर्ली व लि - अख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रह़्मति-क व अन्-त
अर्ह़मुर्-राहिमीन ★ (१५१) इन्नल्लज़ीनत्तख़ज़ुल् - अ़िज्-ल स - यनालुहुम्
ग़-ज़बुम्मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िल्ह़यातिद्दुन्या व कज़ालि-क नज्ज़िल्-
मुफ़्तरीन (१५२) वल्लज़ी-न अ़मिलुस्सय्यिआति सुम्-म ताबू मिम्बअ्-दिहा
व आमनू इन्-न रब्ब - क मिम्बअ् - दिहा ल - ग़फ़ूरुर्रह़ीम (१५३)

قال الملأ ١٣٤ الأعراف

بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَإِن يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ
الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ
سَبِيلًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا
غَافِلِينَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِن
بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا
يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا
سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا
رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٤٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ
قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِن بَعْدِي ۖ
أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ
إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي
فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ
رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾
إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾ وَالَّذِينَ عَمِلُوا
السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ

منزل ٢

★रु. १७/७ आ ६ ▨ व. लाजिम ★रु. १८/८ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिखाऊंगा। (१४५) जो लोग ज़मीन में ना-हक़ घमंड करते हैं, उन को अपनी आयतों से फेर दूंगा। अगर ये सब निशानियां भी देख लें, तब भी उन पर ईमान न लाएं और अगर रास्ती का रास्ता देखें तो उसे (अपना) रास्ता न बनाएं। और अगर गुमराही की राह देखें तो उसे रास्ता बना लें। यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उस से ग़फ़लत करते रहे। (१४६) और जिन लोगों ने हमारी आयतों और आख़िरत के आने को झुठलाया, उन के आमाल बर्बाद हो जाएंगे। ये जैसे अमल करते हैं वैसा ही उन को बदला मिलेगा। (१४७) ★

और मूसा की क़ौम ने मूसा के बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया। (वह) एक जिस्म (था) जिस में से बैल की आवाज़ निकलती थी। उन लोगों ने यह न देखा कि वह न उन से बात कर सकता है और न उन को रास्ता दिखा सकता है ▨ उस को उन्होंने (माबूद) बना लिया और (अपने हक़ में) ज़ुल्म किया।[1] (१४८) और जब वे शर्मिंदा हुए और देखा कि गुमराह हो गये हैं, तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार हम पर रहम नहीं करेगा और हम को माफ़ नहीं फ़रमायेगा तो हम बर्बाद हो जाएंगे। (१४९) और जब मूसा अपनी क़ौम में निहायत ग़ुस्से और अफ़सोस की हालत में वापस आये तो कहने लगे कि तुमने मेरे बाद बहुत ही बुरा काम किया। क्या तुम ने अपने परवरदिगार का हुक्म (यानी मेरा अपने पास आना) जल्द चाहा। (यह कहा) और (ग़ुस्से की तेज़ी से तौरात की) तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई के सर (के बालों) को पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगे। उन्होंने कहा कि भाई जान! लोग तो मुझे कमज़ोर समझते थे और क़रीब था कि क़त्ल कर दें, तो ऐसा काम न कीजिए कि दुश्मन मुझ पर हंसें और मुझे ज़ालिम लोगों में मत मिलाइए। (१५०) तब उन्होंने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे और मेरे भाई को माफ़ फ़रमा और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है। (१५१) ★

(ख़ुदा ने फ़रमाया कि) जिन लोगों ने बछड़े को माबूद बना लिया था, उन पर परवरदिगार का ग़ज़ब वाक़े होगा और दुनिया की ज़िंदगी में ज़िल्लत (नसीब होगी) और हम झूठ गढ़ने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१५२) और जिन्होंने बुरे काम किए, फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए, तो कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इस के बाद (बख़्श देगा कि वह)

---

१. ऐसा मालूम होता है कि मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोग अक़्ल व होश से काम नहीं लेते थे। मूसा अलैहिस्सलाम के तूर पहाड़ पर चले जाने के बाद, एक शख़्स सामरी नाम का, जो उन्हीं लोगों में से था, उन से कहने लगा कि मैं तुम को एक ख़ुदा बना देता हूं, उस की पूजा किया करना। उन्हों ने यह बात मान ली तो उस ने सोने के गहने इकट्ठा किये और उस को गला कर बछड़ा बनाया और उस के मुंह में हज़रत जिब्रील के घोड़े के पांव के तले की मुट्ठी भर मिट्टी, जो उस को मिल गयी थी, डाल दी। वह गाय की-सी आवाज़ करने लगा। सामरी ने कहा, लो यह ख़ुदा है, इस की पूजा करो। वे उस की पूजा करने लगे। ख़ुदा फ़रमाता है कि उन्हों ने इतना न सोचा कि यह कैसा माबूद है, जो न कलाम करने की ताक़त रखता है और न हिदायत कर सकता है, भला बछड़ा क्या और ख़ुदा क्या? और जो यह फ़रमाया कि मूसा की क़ौम ने मूसा के बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया, हालांकि बछड़ा सामरी ने बनाया था, तो इस वजह से है कि सामरी उन्हीं में से था और सब उस के इस काम से ख़ुश थे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लम्मा स-क-त अम्मूसल्ग़-ज़बु अ-ख़-ज़ल् - अल्वा-ह् ص व फ़ी नुस्ख़तिहा
हुदंव्-व रह्मतुल्-लिल्लज़ी-न हुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून (१५४) वख़्ता-र मूसा
क़ौमहू सब्ओ़-न रजुलल् लिमीक़ातिना ج फ़-लम्मा अ-ख़-ज़त्-हुमुर्रज्-फ़तु क़ा-ल
रब्बि लौ शिअ्-त अह्-लक्तहुम् मिन् क़ब्लु व इय्या-य ط अतुह्लिकुना बिमा
फ़-अ-लस्सुफ़हाउ मिन्ना ج इन् हि-य इल्ला
फ़ित्नतु - क ط तुज़िल्लु बिहा मन् तशाउ
व तह्दी मन् तशाउ ط अन्-त वलिय्युना
फ़ग़्फ़िर्लना वर्हम्ना व अन्-त ख़ैरुल्ग़ाफ़िरीन
(१५५) वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या
ह़-स-न-तंव्-व फ़िल्आख़िरति इन्ना हुद्ना
इलै-क ط क़ा-ल अ़ज़ाबी उसीबु बिही मन्
अशाउ ج व रह्मती वसि-अ़त् कुल् - ल
शैइन् ط फ़-स-अक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न
व युअ्तूनज़्ज़का-त वल्लज़ी-न हुम् बिआयातिना
युअ्मिनून ج (१५६) अल्लज़ी - न
यत्तबिऊ़नर् - रसूलन्नबिय्यल् - उम्मिय्यल्लज़ी

ع ٩ ٩

قال الملاء ١٣٥ الاعراف ٧

رَحِيمٌ ﴿١٥٣﴾ وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي
نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾ وَاخْتَارَ
مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ
رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي
مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾
وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ
قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ
فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا
يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ
مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَ
يَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ
وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا
بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٧﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ
فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ

منزل ٢

यजिदूनहू मक्तूबन् अ़िन्दहुम् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि ز यअ्मुरुहुम्
बिल्मअ्-रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तय्यिबाति व
युहर्रिमु अ़लैहिमुल्-ख़बाइ-स व य - ज़-अ़ु अ़न्हुम् इस्रहुम् वल्अग़्लालल्लती
कानत् अ़लैहिम् ط फ़ल्लज़ी-न आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व न-स़-रूहु
वत्तबऊ़न्नूरल्लज़ी उन्ज़ि-ल म-अ़हू لا उलाइ-क हुमुल् - मुफ़्लिहून ★ (१५७)
क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अ़ - निल्लज़ी लहू
मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ج ला इला - ह इल्ला हु - व युह्यी व
युमीतु ص फ़ - आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्नबिय्यिल् - उम्मिय्यिल्लज़ी
युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिऊ़हु ल-अ़ल्लकुम् तह्तदून (१५८)

★रु. १९/९ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बख़्शने वाला मेहरबान है। (१५३) और जब मूसा का गुस्सा दूर हुआ तो (तौरात की) तख़्तियां उठा लीं और जो कुछ उन में लिखा था, वह उन लोगों के लिए, जो अपने परवरदिगार से डरते हैं, हिदायत और रहमत थी। (१५४) और मूसा ने उस मीआद पर, जो हमने मुक़र्रर की थी, अपनी क़ौम के सत्तर आदमी चुन (कर के तूर पहाड़ पर हाज़िर) किए। जब उन को ज़लज़ले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा कि ऐ परवरदिगार! अगर तू चाहता तो उन को और मुझ को पहले ही से हलाक कर देता। क्या तू इस काम की सज़ा में, जो हम में से बे-अक़्ल लोगों ने किया है, हमें हलाक कर देगा। यह तो तेरी आज़माइश है। इस से तू जिस को चाहे, गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत बख़्शे, तू ही हमारा कारसाज़ है, तो हमें (हमारे गुनाह) बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है। (१५५) और हमारे लिए इस दुनिया में भी, भलाई लिख दे और आख़िरत में, भी हम तेरी तरफ़ रुजू हो चुके। फ़रमाया कि जो मेरा अज़ाब है, उसे तो जिस पर चाहता हूं नाज़िल करता हूं और जो मेरी रहमत है, वह हर चीज़ को शामिल है। मैं इस को उन लोगों के लिए लिख दूंगा जो परहेज़गारी करते, और ज़कात देते और हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं। (१५६) वे जो (मुहम्मद, अल्लाह के) रसूल के जो नबी-ए-उम्मी हैं, पैरवी करते हैं, जिन की (ख़ूबियों) को वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं, वे उन्हें नेक काम का हुक्म देते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और पाक चीज़ों को उन के लिए हलाल करते हैं और नापाक चीज़ों को उन पर हराम ठहराते हैं और उन पर से बोझ और तौक़ जो उन (के सर) पर (और गले में) थे, उतारते हैं, तो जो लोग उन पर ईमान लाए और उन का साथ दिया और उन्हें मदद दी और जो नूर उन के साथ नाज़िल हुआ है, उसकी पैरवी की, वही मुराद पाने वाले हैं। (१५७) ★

(ऐ मुहम्मद!) कह दो कि लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ ख़ुदा का भेजा हुआ (यानी उस का रसूल) हूं। (वह) जो आसमानों और ज़मीन का बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही ज़िंदगी बख़्शता और वही मौत देता है, तो ख़ुदा पर और उस के रसूल पैग़म्बर उम्मी पर, जो ख़ुदा पर और उसके तमाम कलाम पर ईमान रखते हैं, ईमान लाओ और उनकी पैरवी करो, ताकि

★रु. १९/९ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्-दिलून (१५९)
व क़त्तअ्-ना-हुमुस्नतै-अश्-र-त अस्बातन् उम-मन् ᵇ व औहैना इला मूसा
इजिस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बिअसाकल् - ह्-जर ᶜ फ़म्ब-ज-सत् मिन्हुस्नता
अश्-र-त अ्नन् ᵇ क़द् अलि - म कुल्लु उनासिम्-मश्रबहुम् ᵇ व ज़ल्लल्ना
अलैहिमुल्-ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अलैहिमुल्-
मन्-न वस्सल्वा ᵇ कुलू मिन् तय्यिबाति मा
र-ज़क़्नाकुम् ᵇ व मा ज़-लमूना व लाकिन्
कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (१६०) व
इज़् क़ी-ल लहुमुस्कुनू हाज़िहिल्क़र्य-त व
कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् व क़ूलू
हित्ततुं व्वद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदन्-नग़्फ़िर् लकुम्
ख़तीआतिकुम् ᵇ स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन (१६१)
फ़-बद्-द-लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् क़ौलन्
ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अर्सल्ना अलैहिम्
रिज्-ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा कानू यज़्लिमून
★ (१६२) वस्-अल्हुम् अनिल्क़र्यतिल्लती
कानत् हाज़िर-तल् - बह्रि ▨ इज़् यअ् - दू - न फ़िस्सब्ति इज़् तअ्तीहिम्
हीतानुहुम् यौ-म सब्तिहिम् शुर्रअंव् - व यौ - म ला यस्बितू - न ᵛ ला
तअ्तीहिम् ᶜ कज़ालि - क ᶜ नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुक़ून ● (१६३)
व इज़् क़ालत् उम्मतुम् - मिन्हुम् लि-म तअिज़ू - न क़ौम-नि -ल्लाहु
मुह्लिकुहुम् औ मुअज़्ज़िबुहुम् अज़ाबन् शदीदा ᵇ क़ालू मअ्-ज़ि-र-तन् इला
रब्बिकुम् व ल-अल्लहुम् यत्तक़ून (१६४) फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू
बिही अन्जैनल्लज़ी-न यन्हौ-न अनिस्सू-इ व अ-ख़ज़-नल्लज़ी - न ज़ - लमू
बिअज़ाबिम्-बईसिम्-बिमा कानू यफ़्सुक़ून (१६५) फ़ - लम्मा अतौ
अम्मा नुहू अन्हु क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-द-तन् ख़ासिईन (१६६)

ذال الملا ٩ ١٣٦ الاعراف ٧

وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾ وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا
إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْبَجَسَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ
الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ
وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا
هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا
الْبَابَ سُجَّدًا نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾ وَاسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي
كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ
يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾ وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ
اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ
عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

منزل ٢

★रु. २०/१० आ ५ ▨ व. लाज़िम ∴ मु. अ़ि मु त क़. ६ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हिदायत पाओ। (१५८) और मूसा की क़ौम में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक़ का रास्ता बताते और उसी के साथ इंसाफ़ करते हैं। (१५९) और हमने उनको (यानी बनी इस्राईल को) अलग-अलग करके बारह क़बीले (और) बड़ी-बड़ी जमाअतें बना दिया और जब मूसा से उन की क़ौम ने पानी तलब किया तो हम ने उनकी तरफ़ वह्य भेजी कि अपनी लाठी पत्थर पर मार दो, तो उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया और हमने उनके (सरों पर) बादल को सायबान बनाये रखा और उन पर मन्न व सल्वा उतारते रहे (और उन से कहा कि) जो पाकीज़ा चीज़ें हम तुम्हें देते हैं, उन्हें खाओ और उन लोगों ने हमारा कुछ नुक़्सान नहीं किया, बल्कि (जो) नुक़्सान (किया) वह अपना ही किया। (१६०) और (याद करो) जब उन से कहा गया कि इस शहर में रहो-बसो, और इस में जहां से जी चाहे खाना (पीना) और (हां शहर में जाना तो) 'हित्तुन' कहना और दरवाज़े में दाखिल होना तो सज्दा करना। हम तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे। (१६१) मगर जो उन में ज़ालिम थे, उन्होंने उस लफ़्ज़ को, जिस का उन को हुक्म दिया गया था, बदल कर उसकी जगह और लफ़्ज़ कहना शुरू किया, तो हमने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस लिए कि ज़ुल्म करते थे। (१६२) ★

और उनसे उस गांव का हाल तो पूछो, जो दरिया के किनारे वाक़ेअ था ▨ जब ये लोग हफ़्ते के दिन के बारे में हद से आगे निकल जाने लगे (यानी) उस वक़्त कि उन के हफ़्ते के दिन मछलियां उनके सामने पानी के ऊपर आतीं और जब हफ़्ते का दिन न होता, तो न आतीं, इसी तरह हम ∴ उन ∵ लोगों को उनकी ना-फ़रमानियों की वजह से आज़माइश में डालने लगे। (१६३) ● और जब उनमें से एक जमाअत ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो, जिन को ख़ुदा हलाक करने वाला या सख़्त अज़ाब देने वाला है, तो उन्होंने कहा, इसलिए कि तुम्हारे परवरदिगार के सामने माज़रत कर सकें (यानी मजबूरी ज़ाहिर कर सकें) और अजब नहीं कि वे परहेज़गारी अपनाएं। (१६४) जब उन्होंने इन बातों को भुला दिया, जिन की उन को नसीहत की गयी थी, तो जो लोग बुराई से मना करते थे, उनको हमने निजात दी और जो ज़ुल्म करते थे, उनको बुरे अज़ाब में पकड़ लिया कि नाफ़रमानी किये जाते थे। (१६५) ग़रज़ जिन (बुरे) आमाल से उनको मना किया गया था, जब वे उन (पर इस्रार और हमारे हुक्म) से गरदनकुशी करने लगे, तो हम ने उन को हुक्म दिया कि ज़लील बन्दर हो जाओ। (१६६) और (उस वक़्त को याद करो) जब तुम्हारे

★रु. २०/१० आ ५ ▨ व. लाज़िम ∴ मु. अ़ि मु ता ख़. ६ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बु-क ल-यब्-अ-सन्-न अ़लैहिम् इला यौमिल्क़ियामति मंय्यसूमुहुम्
सूअल्अ़ज़ाबि ꠰ इन्-न रब्ब-क ल-सरीअुल् - अ़िक़ाबि ꠰ व इन्नहू ल - ग़फ़ूरुर्-
रहीम (१६७) व क़त्तअ्-नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि उ-म-मन् ꠰ मिन्हुमुस्सालिहू-न व
मिन्हुम् दू-न ज़ालि-क ꠰ व बलौनाहुम् बिल्ह़-स-नाति वस्सय्यिआति ल-अ़ल्लहुम्
यर्जिअ़ून (१६८) फ़-ख़-ल-फ़ मिम्बअ़्-दि-हिम्
ख़ल्फ़ुंव्वरिसुल्-किता-ब यअ्ख़ुज़ू-न अ़-र-ज़
हाज़ल्अद्ना व यक़ूलू-न स-युग़्फ़रु लना ꠰ व
इंय्यअ्तिहिम् अ़-र-ज़ुम् - मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु ꠰
अ-लम् युअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाक़ुल्-किताबि
अल्ला यक़ूलू अ़-लल्लाहि इल्लल्ह़क़्-क़ व द-रसू
मा फ़ीहि ꠰ वद्दारुल्आख़िरतु ख़ैरुल्लिल्लज़ी-न
यत्तक़ू-न ꠰ अ-फ़ला तअ़्-क़िलून (१६९) वल्-
लज़ी-न युमस्सिकू-न बिल्किताबि व अक़ामुस्-
सला-त ꠰ इन्ना ला नुज़ीअ़ु अज्रल्-मुस्लिहीन
(१७०) व इज़् न-तक़्नल्ज-ब-ल फ़ौक़हुम्
क-अन्नहू ज़ुल्लतुंव्-व ज़न्नू अन्नहू वाक़िअ़ुम्-
बिहिम् ꠰ ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि ल - अ़ल्लकुम्
तत्तक़ून ★ (१७१) व इज़् अ-ख़-ज़ रब्बु-क मिम्बनी आद-म मिन् ज़ुहूरिहिम्
ज़ुर्रिय्यतहुम् व अश्ह - दहुम् अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ꠰ अ - लस्तु बिरब्बिकुम् ꠰
क़ालू बला ꠰ शहिद्ना ꠰ अन् तक़ूलू यौमल् - क़ियामति इन्ना
कुन्ना अ़न् हाज़ा ग़ाफ़िलीन ꠰ (१७२) औ तक़ूलू इन्नमा अश्-र-क
आबाउना मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्-मिम्बअ़्-दिहिम् ꠰ अ- फ़-तुह्-लिकुना
बिमा फ़-अ़-लल्-मुब्तिलून (१७३) व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति
व ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (१७४) वत्लु अ़लैहिम् न-ब-अल्लज़ी आतैनाहु
आयातिना फ़न्स-ल-ख़ मिन्हा फ़-अत्ब-अ़हुश्-शैतानु फ़-का-न मिनल्ग़ावीन (१७५)

الاعراف ٧ — ١٣٧ — قال الملأ ٩

خٰسِئِيْنَ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ
يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ښ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ
دُوْنَ ذٰلِكَ ۡ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا
الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ۭ
اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ۭ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۭ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّا لَا
نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى ڔ
شَهِدْنَا ڔ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ
تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ
اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

★रु. २१/११ आ ९ ∵ मु. अ़ि मु ता ख़. ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

परवरदिगार ने (यहूद को) आगाह कर दिया था कि वह उन पर क़ियामत तक ऐसे शख़्स को मुसल्लत रखेगा, जो उन को बुरी-बुरी तक्लीफ़ें देता रहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अज़ाब करने वाला है और वह बख़्शने वाला मेहरबान भी है। (१६७) और हमने उन को जमाअत-जमाअत कर के मुल्क में बिखरा दिया। कुछ उन में भले काम करने वाले हैं और कुछ और तरह वे (यानी बुरे) और हम आरामों और तक्लीफ़ों (दोनों) से उन की आज़माइश करते रहे ताकि (हमारी तरफ़) रुजूअ करें। (१६८) फिर उन के बाद ना-ख़लफ़ उनके क़ायम मक़ाम हुए, जो किताब के वारिस बने। यह (बे-झिझक) इस बे-क़ीमत दुनिया का माल व मताअ ले लेते हैं और कहते हैं कि हम बख़्श दिए जाएंगे। और (लोग ऐसों पर तान करते हैं) अगर उन के सामने भी वैसा ही माल आ जाता है, तो वह भी उसे ले लेते हैं। क्या उन से किताब के बारे में अह्द नहीं लिया गया कि ख़ुदा पर सच के सिवा और कुछ नहीं कहेंगे और जो कुछ इस (किताब) में है, उस को उन्होंने पढ़ भी लिया है और आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिए बेहतर है, क्या तुम समझते नहीं? (१६९) और जो लोग किताब को मज़बूत पकड़े हुए हैं, और नमाज़ का इल्तिज़ाम रखते हैं (उन को हम बदला देंगे कि) हम भले लोगों का बदला बर्बाद नहीं करते। (१७०) और जब हमने उन (के सरों) पर पहाड़ उठा खड़ा किया, गोया वह सायबान था और उन्होंने ख़्याल किया कि वह उन पर गिरता है, तो (हमने कहा कि) जो हमने तुम्हें दिया है, उसे ज़ोर से पकड़े रहो और जो इसमें लिखा है, उस पर अमल करो ताकि बच जाओ। (१७१) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने बनी आदम से यानी उन की पीठों से उन की औलाद निकाली, तो उन से ख़ुद उनके मुक़ाबले में इक़रार करा लिया (यानी उन से पूछा कि) क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूं? वे कहने लगे, क्यों नहीं, हम गवाह हैं (कि तू हमारा परवरदिगार है)। (यह इक़रार इस लिए कराया था) कि क़ियामत के दिन (कहीं यों न) कहने लगो कि हम को इस की ख़बर ही न थी। (१७२) या यह (न) कहो कि शिर्क तो पहले हमारे बड़ों ने किया था और हम तो उन की औलाद थे (जो) उन के बाद (पैदा हुए) तो क्या जो काम अह्ले बातिल करते रहे, उस के बदले तू हमें हलाक करता है। (१७३) और इसी तरह हम (अपनी) आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, ताकि ये रुजू करें। (१७४) और उन को उस शख़्स का हाल पढ़ कर सुना दो, जिस को हमने अपनी आयतें अता फ़रमायीं, तो उसने उनको उतार दिया, फिर शैतान उस के पीछे लगा,

★रु. २१/११ आ ९: मु. अ़ि मु ता ख़. ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लौ शिअ्ना ल-र-फ़अ्-नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्-ल-द इलल्अर्ज़ि वत्त-ब-अ
हवाहु ६ फ़-म-सलुहू क-म - सलिलकलिब ७ इन् तह्मिल् अलैहि यल्हस् औ
तत्रुक्हु यल्हस् ь ज़ालि - क म-सलुल् - क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिनाह
फ़क़्सुसिल्-क़-स़-स़ ल-अ़ल्लहुम् य-त-फ़क्करून (१७६) सा-अ म-स-ल-निल्-क़ौमुल्लज़ी-न

مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ
بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾ سَآءَ مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ
كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾ وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ
بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ
اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ
بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ
يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۟ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾
اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ
مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ

कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ुसहुम् कानू
यज़्लिमून (१७७) मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्-
मुह्तदी ६ व मंय्युज़्लिल् फ़ - उलाइ - क
हुमुल्ख़ासिरून (१७८) व ल-क़द् ज़-रअ्ना
लिज-हन्न-म कसीरम् - मिनल्जिन्नि वल् -
इन्सि लहुम् क़ुलूबुल् - ला - यफ़्क़हू - न
बिहा व लहुम् अअ्-युनुल्-ला-युब्सिरू - न
बिहा व लहुम् आज़ानुल् - ला-यस्मअू-न
बिहा ь उलाइ-क कल्अन्आमि बल् हुम्
अज़ल्लु ь उलाइ - क हुमुल्ग़ाफ़िलून
(१७९) व लिल्लाहिल् - अस्माउल्-
हुस्ना फ़द्अूहु बिहा व ज़रुल्लज़ी - न
युल्हिदू - न फ़ी अस्माइही ь स - युज्ज़ौ-न
मा कानू यअ्-मलून (१८०) व मिम्मन् ख़-लक़्ना उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व
बिही यअ्-दिलून★ (१८१) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना स-नस्तद्रिजुहुम्
मिन् हैसु ला यअ्-लमून (१८२) व उम्ली लहुम् इन - न
कैदी मतीन (१८३) अ-व लम् य-त-फ़क्करू मा बिस़ाहिबिहिम् मिन्
जिन्नतिन् ь इन् हु-व इल्ला नज़ीरुम्मुबीन (१८४) अ-व लम् यन्ज़ुरू फ़ी
म-ल-कूतिस्-समावाति वल्अर्ज़ि व मा ख़-ल-क़ल्लाहु मिन् शैइंव्-व अन् असा
अंय्यकू-न क़दिक़्-त-र-ब अ-जलुहुम् ६ फ़बिअय्यि ह़दीसिम्बअ्-दहू युअ्मिनून (१८५)

★रु० २२/१२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तो वह गुमराहों में हो गया। (१७५) और अगर हम चाहते तो इन आयतों से उस (के दर्जे) को बुलंद कर देते, मगर वह तो पस्ती की तरफ़ मायल हो गया और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चल पड़ा, तो उस की मिसाल कुत्ते की-सी हो गयी कि अगर सख़्ती करो, तो ज़ुबान निकाले रहे और यों ही छोड़ दो, तो भी ज़ुबान निकाले रहे। यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो (उन से) यह क़िस्सा बयान कर दो, ताकि वे फ़िक्र करें। (१७६) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन की मिसाल बुरी है और उन्होंने नुक़्सान (किया, तो) अपना ही किया। (१७७) जिस को ख़ुदा हिदायत दे, वही हिदायत पर है और जिस को गुमराह करे, तो ऐसे ही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। (१७८) और हम ने बहुत से जिन्न और इंसान दोज़ख़ के लिए पैदा किये हैं, उन के दिल हैं, लेकिन उनसे समझते नहीं और उन की आंखें हैं, मगर उन से देखते नहीं। और उन के कान हैं, पर उन से सुनते नहीं। ये लोग (बिल्कुल) चारपायों की तरह हैं बल्कि उन से भी भटके हुए। यही वे हैं जो गफ़्लत में पड़े हुए हैं। (१७९) और ख़ुदा के सब नाम अच्छे ही अच्छे हैं, तो उस को उसके नामों से पुकारा करो और जो लोग उसके नामों में टेढ़ (अपनाया) क़रते हैं, उन को छोड़ दो। वे जो कुछ कर रहे हैं, बहुत जल्द उस की सज़ा पाएंगे। (१८०) और हमारी मख़्लूक़ात में से एक वे लोग हैं, जो हक़ का रास्ता बताते हैं और उसी के साथ इंसाफ़ करते हैं। (१८१) ★

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन को तर्तीब से इस तरीक़े से पकड़ेंगे कि उन को मालूम ही न होगा। (१८२) और मैं उन को मुहलत दिए जाता हूं, मेरी तद्बीर (बड़ी) मज़बूत है। (१८३) क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि उन के साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को (किसी तरह का भी) जुनून नहीं है। वह तो ज़ाहिर-जहूर डर सुनाने वाले हैं। (१८४) क्या उन्होंने आसमान व ज़मीन की बादशाही में और जो चीज़ें ख़ुदा ने पैदा की हैं, उन पर नज़र नहीं की और इस बात पर (ख़्याल नहीं किया) कि अजब नहीं उन (की मौत) का वक़्त नज़दीक पहुंच गया हो, तो इस के बाद वह और किस बात पर ईमान लाएंगे। (१८५) जिस शख़्स को ख़ुदा

★रु. २२/१२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मंय्युज़्-लिलिल्लाहु फ़ला हादि-य लहू ط व य-ज़-रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून
(१८६) यस्-अलू-न-क अ़निस्साअ़ति अय्या-न मुर्साहा ط क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा
अ़िन् - द रब्बी ج ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु - व ▨ सक़ुलत्
फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط ला तअ्तीकुम् इल्ला बग़्त - तन् ط यस्अलून - क
क-अन्न-क ह़फ़िय्युन् अ़न्हा ط क़ुल् इन्नमा
अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि
ला यअ्-लमून (१८७) क़ुल् ला अम्लिकु
लिनफ़्सी नफ़्अंव्-व ला ज़र्रन् इल्ला मा
शाअल्लाहु ط व लौ कुन्तु अअ्-लमुल्ग़ै-ब
लस्तक्सर्तु मिनलख़ैरि ج व मा
मस्सनियस्सूउ ج इन् अ-न इल्ला
नज़ीरुंव् - व बशीरुल् - लिक़ौमिंय्युअ्मिनून
★ (१८८) हुवल्लज़ी ख़ - ल-क़कुम् मिन्
नफ़्सिव्वाहि़दतिंव्-व ज-अ़-ल मिन्हा ज़ौजहा
लियस्कु-न इलैहा ج फ़-लम्मा त - ग़श्शाहा
ह़-म-लत् ह़म्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़-मर्रत बिही ج
फ़-लम्मा अस्क़लद्-द-अ़-वल्ला-ह रब्बहुमा लइन् आतैतना सा़लिह़ल्-ल-नकूनन्-न
मिनश्शाकिरीन (१८९) फ़-लम्मा आताहुमा सा़लिह़न् ज-अ़ला लहू शु-रका-अ
फ़ीमा आताहुमा ج फ़-त-आ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून (१९०) अयुश्रिकू-न
मा ला यख़्लुक़ु शैअंव्-व हुम् युख़-लक़ून ج (१९१) व ला यस्ततीऊ-न
लहुम् नस्रंव्-व ला अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून (१९२) व इन् तद्ऊहुम्
इलल्हुदा ला यत्तबिऊकुम् ط सवाउन् अ़लैकुम् अ - दऔतुमूहुम् अम्
अन्तुम् सा़मितून (१९३) इन्नल्लज़ी-न तद्ऊ-न मिन् दूनिल्लाहि अ़िबादुन्
अम्सालुकुम् फ़द्ऊहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् इन् कुन्तुम् सा़दिक़ीन (१९४)

قال الملا ٩ — ١٣٩ — الاعراف ٧

حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ
وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ
مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ؕ
ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ
حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ
وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِيَ
السُّوْٓءُ ۛ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ
اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ
الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ
فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ
يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ
اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

منزل ٢

▨ व. लाज़िम व. मंज़िल ∴ मु. अ़ि मु ता ख़. ८ ★रु. २३/१३ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं और वह उन (गुमराहों) को छोड़े रखता है कि अपनी सरकशी में पड़े बहकते रहें। (१८६) (ये लोग) तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि इस के वाक़ेअ होने का वक़्त कब है। कह दो कि इस का इल्म तो मेरे परवरदिगार ही को है। वही उसे उस के वक़्त पर ज़ाहिर कर देगा ※ वह आसमान और ज़मीन में एक भारी बात होगी और यकायक तुम पर आ जाएगी। यह तुम से इस तरह पूछते हैं कि गोया तुम इस को अच्छी तरह जानते हो। कहो कि इस का इल्म तो ख़ुदा ही को है, लेकिन अक्सर लोग यह नहीं जानते। (१८७) कह दो कि मैं अपने फ़ायदे और नुक़्सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो ख़ुदा चाहे और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता, तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता∴और मुझ को कोई तक्लीफ़ न पहुंचती,∴ मैं तो मोमिनों को डर और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं। (१८८) ★

वह ख़ुदा ही तो है, जिसने तुम को एक शख़्स से पैदा किया, और उस से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उस से राहत हासिल करे, सो जब वह उस के पास जाता है, तो उसे हल्का-सा हमल रह जाता है और वह उसके साथ चलती-फिरती है। फिर जब कुछ बोझा मालूम करती (यानी बच्चा पेट में बड़ा होता) है तो दोनों (मियां-बीवी) अपने परवरदिगार ख़ुदा-ए अज़्ज़ व जल्ल से इल्तिजा करते हैं कि अगर तू हमें सही व सालिम (बच्चा) देगा, तो हम तेरे शुक्रगुज़ार होंगे। (१८९) जब वह उनको सही व सालिम (बच्चा) देता है, तो उस (बच्चे) में जो वह उन को देता है, उसका शरीक मुक़र्रर करते हैं। जो वे शिर्क करते हैं, ख़ुदा का (रुत्बा) इस से बुलंद है।[1] (१९०) क्या वे ऐसों को शरीक बनाते हैं, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और ख़ुदा पैदा किये जाते हैं। (१९१) और न उन की मदद की ताक़त रखते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१९२) अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ, तो तुम्हारा कहा न मानें, तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन को बुलाओ या चुपके हो रहो। (१९३) (मुश्रिको!) जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वह (तुम्हारी) तरह के बन्दे ही हैं, (अच्छा) तुम उन को पुकारो, अगर सच्चे हो तो चाहिए कि वह

---

१. इस आयत की तफ़्सीर में तमाम तफ़्सीर लिखने वालों को बड़ी मुश्किल पेश आयी कि इस को हज़रत आदम व हव्वा का क़िस्सा समझ कर ख़्याल किया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से भी शिर्क का बड़ा गुनाह हुआ, हालांकि नबी शिर्क से मासूम होते हैं। तो कुछ ने इस सवाल को इस तरह हल किया है कि यह गुनाह सिर्फ़ हव्वा से हुआ न कि आदम से, यह तो सिर्फ़ कहने का अन्दाज़ है जैसा कि और जगहों पर इस्तेमाल हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-लहुम् अर्जुलुंय्यम्शू-न बिहा अम् लहुम् ऐदिंय्यब्तिशू-न बिहा अम्
लहुम् अअ्-युनुंय्युब्सिरू-न बिहा अम् लहुम् आज़ानुंय्यस्मअू-न बिहा,
क़ुलिद्अू शुरका-अकुम् सुम्-म कीदूनि फ़ला तुन्ज़िरून (१९५) इन्-न
वलिय्यि-यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल्-किता-ब व हु-व य-त-वल्लस्सालिहीन
(१९६) वल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिही
ला यस्ततीअू-न नस्रकुम् व ला अन्फ़ुसहुम्
यन्सुरून (१९७) व इन् तद्अूहुम्
इलल्हुदा ला यस्मअू व तराहुम्
यन्ज़ुरू-न इलै-क व हुम् ला युब्सिरून
(१९८) ख़ुज़िल्अफ़्-व वअ्मुर् बिल्अुर्फ़ि व
अअ्-रिज़् अनिल्जाहिलीन (१९९) व इम्मा
यन्ज़ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअिज़्
बिल्लाहि इन्नहू समीअुन् अलीम
(२००) इन्नल्लज़ीनत्तक़ौ इज़ा मस्सहुम्
ताइफ़ुम्-मिनश्शैतानि त-ज़क्करू फ़-इज़ा
हुम् मुब्सिरून (२०१) व इख़्वानु-
हुम् यमुद्दूनहुम् फ़िल्ग़य्यि सुम्-म ला युक़्सिरून (२०२) व इज़ा लम्
तअ्तिहिम् बिआयतिन् क़ालू लौलज्तबैतहा क़ुल् इन्नमा अत्तबिअु
मा यूहा इलय्-य मिर्रब्बी हाज़ा बसाइरु मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व
रह्मतुल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (२०३) व इज़ा क़ुरिअल्-क़ुर्आनु फ़स्तमिअू लहू
व अन्सितू ल-अल्लकुम् तुर्हमून (२०४) वज़्कुर्रब्ब-क फ़ी नफ़्सि-क
तज़र्रुअंव्-व ख़ीफ़-तंव्-व-दूनल्जह्रि मिनल्क़ौलि बिल्ग़ुदुव्वि वल्आसालि व ला
तकुम्मिनल्-ग़ाफ़िलीन (२०५) इन्नल्लज़ी-न अिन्-द रब्बि-क ला यस्तक्बिरू-न
अन् अिबादतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून ★ ● ☐ (२०६)

قال الملاو ١٤٠ الاعراف ٧

صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ
بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا
قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾ اِنَّ وَلِیِّۦَ اللّٰهُ
الَّذِیْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٧﴾
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ
وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٩٨﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ
الْجٰهِلِيْنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ
الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ
فِی الْغَیِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾ وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا
اجْتَبَيْتَهَا قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَیَّ مِنْ رَّبِّیْ هٰذَا بَصَآئِرُ
مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ وَاِذَا قُرِئَ
الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
فِیْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ
الْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ السجدة

منزل ٢

★ रु. २४/१४ आ १८ ● सु. ३/४ ☐ सज्दः १

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम को जवाब भी दें। (१६४) भला उन के पांव हैं, जिन से चलें या हाथ हैं, जिन से पकड़ें या आंखें हैं जिन से देखें या कान हैं, जिन से सुनें ? कह दो कि अपने शरीकों को बुला लो और मेरे बारे में (जो) तद्बीर (करनी हो) कर लो और मुझे कुछ मुहलत भी न दो (फिर देखो कि) वह मेरा क्या कर सकते हैं ? (१६५) मेरा मददगार तो ख़ुदा ही है जिस ने (हक़) किताब नाज़िल की और नेक लोगों का वही दोस्तदार है। (१६६) और जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वह न तुम्हारी ही मदद की ताक़त रखते हैं और न ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१६७) और अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ, तो सुन न सकें और तुम उन्हें देखते हो कि (देखने में) आंखें खोले तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं, मगर (सच में) कुछ नहीं देखते। (१६८) (ऐ मुहम्मद !) अफ़्व (माफ़ करना) अख़्तियार करो और नेक काम करने का हुक्म दो और जाहिलों से किनारा कर लो। (१६६) और अगर शैतान की तरफ़ से तुम्हारे दिल में किसी तरह कोई वस्वसा पैदा हो तो ख़ुदा से पनाह मांगो, बेशक वह सुनने वाला (और) सब कुछ जानने वाला है। (२००) जो लोग परहेज़गार हैं, जब उन को शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा पैदा होता है तो चौंक पड़ते हैं और (दिल की आंखें खोल कर) देखने लगते हैं। (२०१) और इन (कुफ़्फ़ार) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे जाते हैं, फिर (उस में किसी तरह की) कोताही नहीं करते। (२०२) और जब तुम उन के पास (कुछ दिनों तक) कोई आयत नहीं लाते, तो कहते हैं कि तुमने (अपनी तरफ़ से) क्यों नहीं बना ली। कह दो कि मैं तो उसी हुक्म की पैरवी करता हूं, जो मेरे परवरदिगार की तरफ़ से मेरे पास आता है। यह (क़ुरआन) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से दानिश व बसीरत और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (२०३) और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो तवज्जोह से सुना करो और ख़ामोश रहा करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (२०४) और अपने परवरदिगार को दिल ही दिल में आजिज़ी और ख़ौफ़ से और पस्त आवाज़ से, सुबह व शाम याद करते रहो, और (देखना) ग़ाफ़िल न होना। (२०५) जो लोग तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं, वे उस की इबादत से गरदन कुशी नहीं करते और उस पाक ज़ात को याद करते और उसके आगे सज्दे करते रहते हैं।[1] (२०६) ★ ● □

---

१. इस आयत की तिलावत से सज्दा फ़र्ज़ होता है, जो कर लेना चाहिए।

★रु. २४/१४ आ १८ ●सु. ३/४ □सज्दः १

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८ सूरतुल्अन्फ़ालि ८८

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ५५२२ अक्षर, १२५३ शब्द, ७५ आयत और १० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

यस्-अलून - क अ़निल्-अन्फ़ालि ط क़ुलिल् - अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि ج
फ़त्तक़ुल्ला-ह व अस्लिहू ज़ा-त बैनिकुम् ص व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू इन्
कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१) इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु
वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ा तुलियत् अ़लैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् इमानंव-व
अ़ला रब्बिहिम् य-त - वक्कलून ع (२)
अ़ल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला - त़ व मिम्मा
र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून ط (३) उलाइ-क
हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न् ط लहुम् द-रजातुन्
अ़िन्-द रब्बिहिम् व मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन्
करीम ج (४) कमा अख़्-र-ज-क रब्बु-क
मिम्बैति - क बिल्हक़्क़ि ص व इन - न
फ़रीक़म्मिनल् - मुअ्मिनी - न लकारिहून ز
(५) युजादिलून-क फ़िल्हक़्क़ि बअ़्-द मा
त-बय्य-न क-अन्नमा युसाक़ू-न इलल्मौति व
हुम् यन्ज़ुरून ط (६) व इज़् यअ़िदु-
कुमुल्लाहु इह्दत्ता - इफ़तैनि अन्नहा
लकुम् व तं-वद्दू-न अन्-न ग़ै-र ज़ातिश्शौकति

الانفال ١٣١ قال الملا

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۗ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ
وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۗ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ۝ كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا
يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى
الطَّاۗىِٕفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ
لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ
رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝
وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَىِٕنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ
اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ

तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अंय्युहिक़्क़ल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही व यक़्त-अ़
दाबिरल्-काफ़िरीन ز (७) लियुहिक़्क़ल्-हक़्-क़ व युब्तिलल् - बाति-ल व
लौ करिहल्-मुज्रिमून ج (८) इज़् तस्तग़ीसू-न रब्बकुम् फ़स्तजा-ब लकुम्
अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम्-मिनल्-मलाइकति मुर्दिफ़ीन (९) व मा
ज-अ़-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लितत्मइन्-न बिही क़ुलूबुकुम् ج व मन्नस्
इल्ला मिन् अ़िन्दिल्लाहि ط इन्नल्ला - ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम ★ (१०)

★रु. १/१५ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८ सूरः अन्फ़ाल ८८

सूरः अन्फ़ाल मदनी है और इसमें पचहत्तर आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद ! मुजाहिद लोग) तुमसे ग़नीमत के बारे में सवाल करते हैं (कि क्या हुक्म है।) कह दो कि ग़नीमत ख़ुदा और उसके रसूल का माल है, तो ख़ुदा से डरो और आपस में सुलह रखो और अगर ईमान रखते हो तो ख़ुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो। (१) मोमिन तो वे हैं कि जब ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है, तो उन के दिल डर जाते हैं और जब उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो उन का ईमान और बढ़ जाता है और वे अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (२) (और) वे जो नमाज़ पढ़ते हैं और जो माल हमने उन को दिया है, उसमें से ये (नेक कामों) में ख़र्च करते हैं। (३) यही सच्चे मोमिन हैं और उन के लिए परवरदिगार के यहां (बड़े-बड़े) दर्जे और बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (४) (उन लोगों को अपने घरों से उसी तरह निकलना चाहिए था) जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुमको तद्बीर के साथ अपने घर से निकाला और (उस वक़्त) मोमिनों की एक जमाअत ना-ख़ुश थी (५) वे लोग हक़ बात में उस के ज़ाहिर हुए पीछे तुम से झगड़ने लगे, गोया मौत की तरफ़ धकेले जाते हैं और देख रहे हैं। (६) और (उस वक़्त को याद करो) जब ख़ुदा तुम से वायदा करता था। कि (अबू सुफ़ियान और अबूजहल के) दो गिरोहों में से एक गिरोह तुम्हारे (क़ाबू में) हो जाएगा और तुम चाहते थे कि जो क़ाफ़िला (बे-शान व) शौकत (यानी बे-हथियार) है, वह तुम्हारे हाथ आ जाएगा और ख़ुदा चाहता था कि अपने फ़रमान से हक़ को क़ायम रखे और काफ़िरों की जड़ काट कर (फेंक) दे,[1] (७) ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दे, गो मुश्रिक ना-ख़ुश ही हों। (८) जब तुम अपने परवरदिगार से फ़रियाद करते थे, तो उसने तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर ली (और फ़रमाया) कि (तसल्ली रखो), हम हज़ार फ़रिश्तों से जो एक-दूसरे के पीछे आते जाएंगे तुम्हारी मदद करेंगे। (९) और इस मदद को ख़ुदा ने सिर्फ़ बशारत बनाया था कि तुम्हारे दिल इस से इत्मीनान हासिल करें और मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से है। बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१०) ★

---

१. ये आयतें बद्र की लड़ाई से मुताल्लिक़ हैं। कुछ तारीख़ लिखने वालों और तफ़्सीर लिखने वालों ने इस लड़ाई की यह वजह लिखी है कि वह क़ाफ़िला, जो अबू सुफ़ियान शाम से ले कर आ रहा था, उस को प्यारे नबी सल्ल० और उन के सहाबियों रज़ि० ने यह ख़्याल कर के कि लोग बहुत कम हैं और माल बहुत ज़्यादा है, लूट लेने के इरादे से कूच किया था। जब यह ख़बर मक्का के क़ुरैश को पहुंची, तो बहुत सी फ़ौज ले कर क़ाफ़िले को बचाने के लिए निकले और बद्र नामी जगह पर लड़ाई शुरू हो गयी। लड़ाई का नतीजा यह था कि क़ुरैश के सत्तर आदमी मारे गये और इतने ही गिरफ़्तार हुए। जो माल व अस्बाब वह छोड़ कर भाग आये थे, वह सब मुसलमानों के हाथ आया। मगर क़ुरआनी आयतों से साफ़ मालूम होता है कि रसूले ख़ुदा सल्ल० को मक्का के क़ुरैश का मदीने पर चढ़ाई करने का हाल पहले मालूम हो चुका था और इस के बाद आप ने उन के मुक़ाबले के लिए कूच फ़रमाया था। बेशक कुछ सहाबा किराम की राय होगी कि शाम के क़ाफ़िले को लूट लिया जाए और इसी गिरोह के बारे में ख़ुदा ने फ़रमाया कि तुम बे-शान व शौकत गिरोह को लेना चाहते हो, मगर ख़ुदा ने इस राय को मंज़ूर न (शेष २८१ पर)

★रु. १/१५ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इज् युग़श्शीकुमुन्नुआ-स अ-म-न-तम्-मिन्हु व युनज़्ज़िलु अलैकुम् मिनस्समा-इ
मा-अल्-लियुतह्हि-रकुम् बिही व युज़्हि-ब अन्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लि-यर्बि-त
अला क़ुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल्अक़्दाम ط (११) इज् यूही रब्बु-क
इलल्-मला-इकति अन्नी म-अ़कुम् फ़-सब्बितुल्लज़ी-न आमनू ط स-उल्क़ी फ़ी
क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल्-
अअ्-नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान ط
(१२) ज़ालि-क बिअन्-नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह
व रसूलहू ج व मंय्युशाक़िक़िल्ला-ह व
रसूलहू फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब (१३)
ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्-न लिल्काफ़िरी-न
अज़ाबन्नार (१४) या अय्युहल्लज़ी-न
आमनू इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू
ज़ह्-फ़न् फ़ला तुवल्लूहुमुल्-अद्बार ج
(१५) व मंय्युवल्लिहिम् यौ-म-इज़िन्
दुबुरहू इल्ला मुतहर्रिफ़ल्-लिक़ितालिन् औ
मुत-हय्यिज़न् इला फ़ि-अतिन् फ़-क़द् बा-अ
बिग़-ज़बिम्-मिनल्लाहि व मअ्वाहु
ज-हन्-नमु ط व बिअ्-सल्-मसीर (१६) फ़-लम् तक़्तुलूहुम् व लाकिन्नल्ला-ह
क़-त-लहुम् ص व मा रमै-त इज् रमै-त व लाकिन्नल्ला-ह र-मा ج व
लियुब्लियल्-मुअ्मिनी-न मिन्हु बला-अन् ह-स-नन् ط इन्नल्ला-ह समीअुन्
अलीम (१७) ज़ालिकुम् व अन्नल्ला-ह मूहिनु कैदिल्काफ़िरीन (१८) इन्
तस्तफ़्तिहू फ़-क़द् जा-अकुमुल्-फ़त्हु ج व इन् तन्तहू फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् ج व
इन् तअूदू नअुद् ج व लन् तुग़्नि-य अन्कुम् फ़िअतुकुम् शैअंव्-व कसुरत्
व अन्नल्ला-ह म-अल्-मुअ्मिनीन ★ (१९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू
अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तवल्लौ अन्हु व अन्तुम् तस्मअून ؕ (२०)

أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَ
يُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ
الْأَقْدَامَ ⑪ إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِينَ آمَنُوا سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ⑫ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑬ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ
النَّارِ ⑭ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا
تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ⑮ وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ
أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ
جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑯ فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ
وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ
مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ⑰ ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ
مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ⑱ إِن تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ
وَإِن تَنتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِن تَعُودُوا نَعُدْ وَلَن تُغْنِيَ
عَنكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ⑲
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ

★रु. २/१६ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जब उसने (तुम्हारी) तस्कीन के लिए अपनी तरफ़ से तुम्हें नींद (की चादर) उढ़ा दी और तुम पर आसमान से पानी बरसा दिया ताकि तुम को उससे (नहला कर) पाक कर दे और शैतानी नजासत को तुम से दूर कर दे और इसलिए भी कि तुम्हारे दिलों को मज़बूत करदे और इससे तुम्हारे पांव जमाए रखे। (११) जब तुम्हारा परवरदिगार फ़रिश्तों को इर्शाद फ़रमाता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम मोमिनों को तसल्ली दो कि साबित क़दम रहें। मैं अभी-अभी काफ़िरों के दिलों में रौब व हैबत डाले देता हूं, तो उन के सर मार (कर) उड़ा दो और उन का पोर-पोर मार कर (तोड़) दो। (१२) यह (सज़ा) इस लिए दी गयी कि उन्होंने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है, तो ख़ुदा भी सख़्त अज़ाब देने वाला है। (१३) यह (मज़ा तो यहां) चखो और यह (जाने रहो) कि काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब (भी तैयार) है। (१४) ऐ ईमान वालो ! जब लड़ाई के मैदान में कुफ़्फ़ार से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन से पीठ न फेरना। (१५) और जो शख़्स लड़ाई के दिन इस सूरत के सिवा कि लड़ाई के लिए किनारे-किनारे चले (यानी हिक्मते अमली से दुश्मन को मारे) या अपनी फ़ौज में जा मिलना चाहे, उन से पीठ फेरेगा तो (समझो कि) वह ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गया और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत ही बुरी जगह है। (१६) तुम लोगों ने उन (कुफ़्फ़ार) को क़त्ल नहीं किया, बल्कि ख़ुदा ने उन्हें क़त्ल किया और (ऐ मुहम्मद !) जिस वक़्त तुम ने कंकरियां फेंकी थीं, तो वह तुम ने नहीं फेंकी थी, बल्कि अल्लाह ने फेंकी थी। इस से यह ग़रज़ थी कि मोमिनों को अपने (एहसानों) से अच्छी तरह आज़मा ले। बेशक ख़ुदा सुनता-जानता है। (१७) (बात) यह (है), कुछ शक नहीं कि ख़ुदा काफ़िरों की तद्बीर को कमज़ोर कर देने वाला है। (१८) (काफ़िरो !)अगर तुम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर) फ़त्ह चाहते हो, तो तुम्हारे पास फ़त्ह आ चुकी। (देखो) अगर तुम (अपने फ़ेल से) रुक जाओ तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर फिर (ना-फ़रमानी) करोगे, तो हम भी फिर (तुम्हें अज़ाब) करेंगे और तुम्हारी जमाअत, वह कितनी ही बड़ी हो, तुम्हारे कुछ भी काम न आयेगी और ख़ुदा तो मोमिनों के साथ है ★(१९)

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो और उससे रू-गरदानी न करो

(पृष्ठ २७९ का शेष)

फ़रमाया और यही चाहा कि हथियारों से लैस फ़ौज से जंग करें और बहादुरी दिखा कर फ़त्ह हासिल करें, चुनांचे ऐसा ही हुआ। इस लड़ाई की वजह, जो ज़्यादा सही लगती है, यह है कि मक्का के क़ुरैश को मुहाजिरों और मदीने के अंसार के साथ कड़ी दुश्मनी थी और वे हमेशा उन को तक्लीफ़ पहुंचाने पर तैयार रहते थे, तो हुज़ूर सल्ल० अपने दुश्मनों के हालात और इरादों से आगाह रहने के लिए कभी-कभी मक्का के चारों तरफ़ आदमी रवाना फ़रमाते। चुनांचे एक बार नख़ला नामी जगह को, जो मक्का और ताइफ़ के बीच वाक़ेअ है, आप ने कुछ लोगों को रवाना किया, जिन के सरदार आप के फूफीज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन जह्श थे। नख़ला एक निहायत ख़तरनाक जगह थी और वहां जाने में बहुत ख़तरा था। आप ने अब्दुल्लाह को एहतियात के साथ एक सील मुहर परचा दिया और फ़रमाया कि मक्के की तरफ़ बराबर चले चलो। तीन दिन के बाद इस परचे को खोल कर पढ़ना और जो कुछ उस में लिखा है, उस पर अमल करना। परचे में लिखा था, 'नख़ला तक चले जाओ और वहां पहुंच कर छिपे तौर पर क़ुरैश के हालात मालूम करो और हमारे पास उन की ख़बर लाओ।' मगर वहां

(शेष पृष्ठ २८३ पर)

★रु. २/१६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तकूनू कल्लज़ी-न क़ालू समिअ्-ना व हुम् ला यस्मअून (२१) इन्-न
शर्रद्दवाब्बि अिन्दल्लाहिस्सुम्मुल्-बुक्मुल्लज़ी-न ला यअ्-क़िलून (२२) व लौ
अ़लिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल्-ल अस्म-अ़हुम् ط व लौ अस्म-अ़हुम् ल-त-वल्लव्वहुम्
मुअ्-रिज़ून (२३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा
दआकुम् लिमा युह़्यीकुम् ج वअ्-लमू
अन्नल्ला-ह यहूलु बैनल्मर्इ व क़ल्बिही व
अन्नहू इलैहि तुह़्शरून (२४) वत्तक़ू
फ़ित्-न-तल्ला-तुसीबन्नल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्कुम्
ख़ास्सतन् ج वअ्-लमू अन्नल्ला - ह शदीदुल्-
अिक़ाब (२५) वज़्कुरू इज़् अन्तुम्
क़लीलुम्-मुस्तज़्-अफ़ून फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ू-न
अंय्य-त-ख़त्त-फ़-कुमुन्नासु फ़-आवाकुम् व अय्य-
दकुम् बिनस्रिही व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति
ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (२६) या अय्युहल्लज़ी-न
आमनू ला तख़ूनुल्ला-ह वर्रसू-ल व तख़ूनू
अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ्-लमून (२७)
वअ्-लमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुंव्-व अन्नल्ला - ह
अिन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम ★ (२८) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू इन्
तत्तक़ुल्ला-ह यज्-अ़ल्लकुम् फ़ुर-क़ानंव्-व युकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व
यग़्फ़िर् लकुम् ط वल्लाहु ज़ुल् - फ़ज़्लिल् - अ़ज़ीम (२९) व इज़्
यम्कुरु बिकल्लज़ी-न क-फ़रू लियुस्बितू-क औ यक़्तुलू-क औ युख़्रिजू-क
व यम्कुरू-न व यम्कुरुल्लाहु ط वल्लाहु ख़ैरुल् - माकिरीन (३०) व
इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ्-ना लौ नशाउ ल-क़ुल्ना
मिस्-ल हाज़ा ۙ इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् - अव्वलीन (३१)

قال الملأ ٩ ١٤٣ الانفال ٨

أَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ
لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ
لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا
تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾
وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ
أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ﴿٣٠﴾
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ

★रु. ३१७आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और तुम सुनते हो। (२०) और उन लोगों जैसे न होना जो कहते हैं कि हम ने (ख़ुदा का हुक्म) सुन लिया, मगर (हक़ीक़त में) नहीं सुनते। (२१) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा के नज़दीक तमाम जानदारों से बद-तर बहरे गूंगे हैं, जो कुछ नहीं समझते। (२२) और अगर ख़ुदा उन में नेकी (का माद्दा) देखता तो उन को सुनने की तौफ़ीक़ बख़्शता और अगर (हिदायत की सलाहियत के बग़ैर) समाअत देता तो वे मुंह फेर कर भाग जाते। (२३) मोमिनो! ख़ुदा और उस के रसूल का हुक्म क़ुबूल करो, जब कि ख़ुदा के रसूल तुम्हें ऐसे काम के लिए बुलाते हैं, जो तुम को ज़िंदगी (हमेशा की) बख़्शता है और जान रखो कि ख़ुदा आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल हो जाता है और यह भी कि तुम सब उस के रू-ब-रू जमा किये जाओगे। (२४) और उस फ़ित्ने से डरो, जो ख़ुसूसियत के साथ उन्हीं लोगों पर वाक़ेअ न होगा, जो तुम में गुनाहगार हैं और जान रखो कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है। (२५) और (उस वक़्त को) याद करो, जब तुम ज़मीन (मक्का) में थोड़े और कमज़ोर समझे जाते थे और डरते रहते थे कि लोग तुम्हें उड़ा (न) ले जाएं (यानी बे-घर-बार न कर दें) तो उस ने तुम को जगह दी और अपनी मदद से तुम को ताक़त बख़्शी और पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं, ताकि (उस का) शुक्र करो। (२६) ऐ ईमान वालो! न तो ख़ुदा और रसूल की अमानत में ख़ियानत करो और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करो और तुम (इन बातों को) जानते हो। (२७) और जान रखो कि तुम्हारा माल और औलाद बड़ी आज़माइश है और यह कि ख़ुदा के पास (नेकियों का) बड़ा सवाब है। (२८) ★

मोमिनो! अगर तुम ख़ुदा से डरोगे, तो वह तुम्हारे लिए फ़र्क़ करने वाली चीज़ पैदा कर देगा (यानी तुम को मुम्ताज़ कर देगा) और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल वाला है। (२९) और (ऐ मुहम्मद! उस वक़्त को याद करो) जब काफ़िर लोग तुम्हारे बारे में चाल चल रहे थे कि तुम को क़ैद कर दें या जान से मार डालें या (वतन से) निकाल दें तो (इधर से) वे चाल चल रहे थे और (उधर) ख़ुदा चाल चल रहा था और ख़ुदा सब से बेहतर चाल चलने वाला है। (३०) और जब उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं तो कहते हैं, (यह कलाम) हमने सुन लिया है, अगर हम चाहें तो इसी तरह का (कलाम) हम भी कह दें और यह है

(पृष्ठ २८१ का शेष)

और ही मामला पेश आया, कि उन के नख़्ले में पहुंचने के दो दिन बाद क़ुरैश का एक छोटा-सा क़ाफ़िला तायफ़ से तिजारत का माल लिए हुए आ पहुंचा। अब्दुल्लाह और उन के साथियों को इर्शादे नबवी और इस परचे का ख़्याल न रहा और उन्हों ने उन लोगों पर हमला कर दिया। नतीजा यह हुआ कि अम्र बिन अब्दुल्लाह हज़रमी जो मक्के के सरदारों में से था, तीर से मारा गया और हकम बिन केसान और उस्मान बिन अब्दुल्लाह मख़्ज़ूमी गिरफ़्तार हो गये। जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल० ने उन लोगों को इस हरकत पर बहुत मलामत की और क़ैदियों को भी छोड़ दिया और अब्दुल्लाह बिन हज़रमी का ख़ून बहा भी अपने पास से दे दिया। मगर मक्का वालों के कपट की आग बग़ैर भड़के न रही और उन्हों ने साढ़े नौ सौ के क़रीब लड़ने के तजुर्बेकार योद्धा जमा किये, जिन में से तीन सौ के पास घोड़े और बाक़ी के पास सवारी और बोझ ढोने के लिए सात सौ ऊंट थे। इस के अलावा किसी ने यह हवाई उड़ा दी कि जनाब रसूलुल्लाह अबू सुफ़ियान वाले क़ाफ़िले को जो शाम से मक्के को आ रहा है, लूटने का इरादा रखते हैं। इस ख़बर से उन का ग़ुस्सा और भी भड़क उठा और वे फ़ौरन मदीना पर हमला करने के लिए निकल खड़े हुए। इधर मदीने में यह ख़बर पहुंच चुकी थी कि मक्का के क़ुरैश बहुत ज़ोर-शोर से

(शेष पृष्ठ २८५ पर)

★रु. ३/१७ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् क़ालुल्लाहुम्-म इन् का-न हाज़ा हुवल्हक़्-क़ मिन् अिन्दि-क फ़-अम्तिर्
अलैना हिजा-र-तम्-मिनस्समाइ अविअ्तिना बिअज़ाबिन् अलीम (३२)
व मा कानल्लाहु लियुअज़्ज़िबहुम् व अन्-त फ़ीहिम् ط व मा कानल्लाहु
मुअज़्ज़िबहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून (३३) व मा लहुम् अल्ला युअज़्ज़िब-
हुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू-न अनिल्-मस्जिदिल्-
हरामि व मा कानू औलिया-अहू ط इन्
औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तक़ू-न व लाकिन्-न
अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (३४) व मा
का-न सलातुहुम् अिन्दलबैति इल्ला मुकाअंव्-व
तस्दि-य-तन् ط फ़-ज़ूक़ुल् - अज़ा - ब बिमा
कुन्तुम् तक्फ़ुरून (३५) इन्नल्लज़ी-न
क-फ़रू युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् लियसुद्दू अन्
सबीलिल्लाहि ط फ़-स-युन्फ़िक़ू-न-हा सुम् - म
तकूनु अलैहिम् हस्-र-तन् सुम्-म युग़्लबू-न ط
वल्लज़ी-न क-फ़रू इला ज - हन्न - म
युह्शरून لا (३६) लियमीज़ल्लाहुल् -
ख़बी-स मिनत्तय्यिबि व यज्-अ-लल्-ख़बी-स
बअ्-ज़हू अला बअ्-ज़िन् फ़-यर्कुमहू जमीअन्

قال الملا ۹ — ۱۴۴ — الانفال ۸

هذا ان هذا الا اساطير الاولين ﴿۳۱﴾ واذ قالوا اللهم ان
كان هذا هو الحق من عندك فامطر علينا حجارة من السماء
او ائتنا بعذاب اليم ﴿۳۲﴾ وما كان الله ليعذبهم وانت فيهم ط
وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون ﴿۳۳﴾ وما لهم الا
يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام وما كانوا
اولياءه ط ان اولياؤه الا المتقون ولكن اكثرهم لا يعلمون ﴿۳۴﴾
وما كان صلاتهم عند البيت الا مكاء وتصدية ط فذوقوا
العذاب بما كنتم تكفرون ﴿۳۵﴾ ان الذين كفروا ينفقون
اموالهم ليصدوا عن سبيل الله ط فسينفقونها ثم تكون
عليهم حسرة ثم يغلبون ە والذين كفروا الى جهنم
يحشرون ﴿۳۶﴾ لا ليميز الله الخبيث من الطيب ويجعل الخبيث
بعضه على بعض فيركمه جميعا فيجعله في جهنم ط اولئك
هم الخسرون ﴿۳۷﴾ قل للذين كفروا ان ينتهوا يغفر لهم
ما قد سلف ج وان يعودوا فقد مضت سنت الاولين ﴿۳۸﴾
وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله
لله ج فان انتهوا فان الله بما يعملون بصير ﴿۳۹﴾ وان
تولوا فاعلموا ان الله مولىكم ط نعم المولى ونعم النصير ﴿۴۰﴾

منزل ۲

फ़ - यज्अ - लहू फ़ी जहन्न-म ط उला - इ - क हुमुल्ख़ासिरून ★ (३७)
क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू इय्यन्तहू युग़्फ़र् लहुम् मा क़द् स - लफ़ ج व
इंय्यअूदू फ़-क़द् म-ज़त् सुन्नतुल् - अव्वलीन (३८) व क़ातिलू - हुम्
हत्ता ला तकू - न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि ج फ़इनिन्तहौ
फ़इन्नल्ला-ह बिमा यअ् - मलू - न बसीर (३९) व इन् तवल्लौ
फ़अ्-लमू अन्नल्ला-ह मौलाकुम् ط निअ्-मलमौला व निअ्-मन्नसीर (४०)

★रु.४/१८ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ही क्या, सिर्फ़ अगले लोगों की हिकायतें है। (३१) और जब उन्होंने कहा कि ऐ ख़ुदा! अगर यह (क़ुरआन) तेरी तरफ़ बरहक़ है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई और तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब भेज। (३२) और ख़ुदा ऐसा न था कि जब तक तुम उन में थे, उन्हें अज़ाब देता और न ऐसा था कि वे बख़्शिश मांगे और उन्हें अज़ाब दे। (३३) और (अब) उन के लिए कौन-सी वजह है कि वह उन्हें अज़ाब न दे, जबकि वह मस्जिदे मोहतरम (में नमाज़ पढ़ने) से रोकते हैं और वे उस मस्जिद के मुतवल्ली भी नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ परहेज़गार हैं, लेकिन उन में के अक्सर नहीं जानते, (३४) और उन लोगों की नमाज़ ख़ाना-ए-काबा के पास सीटियां और तालियां बजाने के सिवा कुछ न थी, तो तुम जो कुफ़्र करते थे, अब उस के बदले अज़ाब (का मज़ा) चखो। (३५) जो लोग काफ़िर हैं, अपना माल ख़र्च करते हैं कि (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोकें, सो अभी और ख़र्च करेंगे मगर आख़िर वह (ख़र्च करना) उनके लिए अफ़सोस (की वजह) होगा और वे मग़्लूब हो जाएंगे। और काफ़िर लोग दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाएंगे, (३६) ताकि ख़ुदा पाक को ना-पाक से अलग कर दे और ना-पाक को एक दूसरे पर रख कर एक ढेर बना दे। फिर उस को दोज़ख़ में डाल दे। यही लोग घाटा पाने वाले हैं। (३७) ★

(ऐ पैग़म्बर!) कुफ़्फ़ार से कह दो कि अगर वे अपने फ़ेलों से बाज़ आ जाएं तो जो हो चुका, वह उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा और अगर फिर (वही हरकतें) करने लगेंगे तो अगले लोगों का (जो) तरीक़ा जारी हो चुका है (वही उन के हक़ में बरता जाएगा), (३८) और उन लोगों से लड़ते रहो, यहां तक कि फ़ित्ना (यानी कुफ़्र का फ़साद) बाक़ी न रहे और दीन सब ख़ुदा ही का हो जाए और अगर बाज़ आ जाएं तो ख़ुदा उन के कामों को देख रहा है। (३९) और अगर रू-गरदानी करें तो जान रखो कि ख़ुदा तुम्हारा हिमायती है (और) वह ख़ूब हिमायती और ख़ूब मददगार है। (४०)

(पृष्ठ २८३ का शेष)

मदीने पर चढ़ाई की तैयारियां कर रहे हैं। ऐसी हालत में ज़रूरी था कि रसूले ख़ुदा सल्ल० अपनी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम फ़रमाते, तो आप ने तीन सौ तेरह आदमियों के साथ मदीने से कूच फ़रमाया, जिन में से एक या दो के पास घोड़े थे और बाक़ी के पास सिर्फ़ सत्तर ऊंट थे, जिन पर बारी-बारी तीन-तीन, चार-चार आदमी सवार होते थे। चुनांचे ख़ुद जनाब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० और ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० एक ही ऊंट पर बारी-बारी सवार होते रहे। जब बद्र के मक़ाम पर पहुंचे तो क़ुरैश से लड़ाई हुई, जिस में उन के सत्तर आदमी मारे गये और इतने ही गिरफ़्तार हुए और बहुत-सा माल व अस्बाब मुसलमानों के हाथ आया। मक़्तूलों में अबू जह्ल, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, हंज़ला बिन सुफ़ियान, नौफ़ुल और अबुल बख़्तरी वग़ैरह चौबीस आदमी क़ुरैश के सरदारों में से थे, जिन में से इब्ने हिशाम की रिवायत के मुताबिक़ नौ को हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया था। मुसलमानों में से सिर्फ़ चौदह आदमी मारे गये, जिन में छः मुहाजिर और आठ अंसार थे। क़ुरआन की आयतों को देखो, पांचवीं आयत से मालूम होता है कि नबी सल्ल० अभी मदीने ही में थे और कूच नहीं फ़रमाया था कि सहाबा रज़ि० में इख़्तिलाफ़ हो गया। कुछ लड़ाई को पसन्द करते थे और कुछ ना-पसन्द करते थे। छठी आयत से मालूम होता है कि मुसलमान मक्का के क़ुरैश की इस भारी फ़ौज से हिचकिचाते थे, जो उन्हों ने मदीने पर हमले की ग़रज़ से जमा की थी वरना तिजारत के क़ाफ़िले को लूट लेने के इरादे से तक्लीफ़ करना किसी सूरत में भी मौत की तरफ़

(शेष पृष्ठ २८७ पर)

★रु. ४/१८ आ ९

दसवां पारः वअ्-लमू

सूरतुल्-अन्फ़ालि आयत ४१ से ७५

वअ्-लमू अन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैइन् फ़-अन्-न लिल्लाहि ख़ुमुसहू व लिर्रसूलि
व लिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि ॥ इन् कुन्तुम्
आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना यौमल्फ़ुर्क़ानि
यौमल्-त-क़ल्-जम्आ़नि ॥ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (४१) इज़्

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ
وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ اِنْ كُنْتُمْ
اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی
الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٤١﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا
وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ
لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿٤٢﴾ اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا وَلَوْ
اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
سَلَّمَ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾ وَاِذْ یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَیْتُمْ
فِیْٓ اَعْیُنِكُمْ قَلِیْلًا وَّیُقَلِّلُكُمْ فِیْٓ اَعْیُنِهِمْ لِیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا
كَانَ مَفْعُوْلًا وَاِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا لَقِیْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾
وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِیْحُكُمْ
وَاصْبِرُوْا اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ
خَرَجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَیَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِیْلِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطٌ ﴿٤٧﴾ وَاِذْ زَیَّنَ لَهُمُ

अन्तुम् बिल्-अुद्वतिद्दुन्या व हुम् बिल्-अुद्वतिल्-
क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़-ल मिन्कुम् ॥ व लौ
तवा-अ़त्तुम् लख़्त-लफ़्तुम् फ़िल्मीआ़दि ॥
व लाकिल्-लियक़्-ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न
मफ़्-अूलल्- लियह्लि-क मन्
ह-ल-क अम्बय्यिनतिंव्-व यह्या मन् ह़य्-य
अम्बय्यिनतिन् ॥ व इन्नल्ला-ह ल-समीअ़ुन्
अ़लीम ॥ (४२) इज़् युरीकहुमुल्लाहु
फ़ी मनामि-क क़लीलन् ॥ व लौ अराकहुम्
कसीरल्-ल फ़शिल्तुम् व ल-तनाज़अ़्-तुम् फ़िल्अम्रि
व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म ॥ इन्नहू अ़लीमुम्-
बिज़ातिस्सुदूर (४३) व इज़् युरीकुमूहुम्
इज़िल्तक़ैतुम् फ़ी अअ़्-युनिकुम् क़लीलंव्-व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ़्-युनिहिम्
लियक़्-ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्-अ़ूलन् ॥ व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-उमूर
★ (४४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुम् फ़ि-अ-तन् फ़स्बुतू
वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (४५) व अतीअ़ुल्ला-ह
व रसूलहू व ला तनाज़अ़ू फ़-तफ़्शलू व तज़्-ह-ब रीहुकुम्
वस्बिरू ॥ इन्नल्ला-ह म-अ़स्साबिरीन (४६) व ला तकूनू
कल्लज़ी-न ख़-र-जू मिन् दियारिहिम् ब-त़रंव्-व रिआअन्नासि व यसुद्दू-न
अ़न् सबीलिल्लाहि ॥ वल्लाहु बिमा यअ़्-मलू-न मुहीत़ (४७)

★रु. ५/१ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जान रखो कि जो चीज़ तुम (कुफ़्फ़ार से) लूट कर लाओ उसमें से पांचवां हिस्सा ख़ुदा का और उस के रसूल का और क़राबतदारों का और यतीमों का और मुहताजों का और मुसाफ़िरों का है। अगर तुम ख़ुदा पर और उस (मदद) पर ईमान रखते हो, जो (हक़ व बातिल में) फ़र्क़ करने के दिन (यानी बद्र की लड़ाई में) जिस दिन दोनों फ़ौजों में मुठभेड़ हो गयी, अपने बन्दे (मुहम्मद) पर नाज़िल फ़रमायी और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (४१) जिस वक़्त तुम (मदीने से) क़रीब के नाके पर थे और काफ़िर दूर के नाके पर और क़ाफ़िला तुम से नीचे (उतर गया) था और अगर तुम (लड़ाई के लिए) आपस में क़रारदाद कर लेते तो तै किये हुए वक़्त पर (जमा होने) में आगे-पीछे हो जाता, लेकिन ख़ुदा को मंज़ूर था कि जो काम हो कर रहने वाला था, उसे कर ही डाले, ताकि जो मेरे बसीरत पर (यानी यक़ीनी जान कर) मरे और जो जीता रहे, वह भी बसीरत पर (यानी हक़ पहचान कर) जीता रहे और कुछ शक नहीं कि ख़ुदा सुनता-जानता है। (४२) उस वक़्त ख़ुदा ने ख़्वाब में काफ़िरों को थोड़ी तायदाद में दिखाया और अगर बहुत कर के दिखाता तो तुम लोग जी छोड़ देते और (जो) काम (सामने था, उस) में झगड़ने लगते, लेकिन ख़ुदा ने (तुम्हें इस से) बचा लिया। बेशक बह सीनों की बातों तक को जानता है। (४३) और उस वक़्त जब तुम एक दूसरे के मुक़ाबले में हुए तो काफ़िरों को तुम्हारी नज़रों में थोड़ा कर के दिखाता था, और तुम को उन की निगाहों में थोड़ा कर के दिखाता था, ताकि ख़ुदा को जो काम करना मंज़ूर था, उसे कर डाले और सब कामों का रुजू ख़ुदा ही की तरफ़ है। (४४) ★

मोमिनो! जब (कुफ़्फ़ार की) किसी जमाअत स तुम्हारा मुक़ाबला हो, तो साबित क़दम रहो और ख़ुदा को बहुत याद करो, ताकि मुराद हासिल करो। (४५) और ख़ुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो और आपस में झगड़ा न करना कि (ऐसा करोगे तो) तुम बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारा इक़बाल जाता रहेगा और सब्र से काम लो कि ख़ुदा सब्र करने वाले का मददगार है। (४६) और उन लोगों जैसे न होना, जो इतराते हुए (यानी हक़ का मुक़ाबला करने के लिए) और लोगों को दिखाने के लिए घरों से निकल आये और लोगों को ख़ुदा की राह से रोकते हैं। और जो आमाल

(पृष्ठ २८५ का शेष)

हांका ज़ाना नहीं हो सकता। सातवीं आयत में दो गिरोहों का ज़िक्र है, एक जो लड़ाइ का साज़ व सामान नहीं रखता था और वह अबू सुफ़ियान का तिजारत का क़ाफ़िला था, जो शाम से आ रहा था। दूसरा गिरोह मक्का के क़ुरैश यानी अबू जह्ल का लश्कर था, जिस की तायदाद बहुत ज़्यादा थी और जिस के साथ बहुत-सा जंग का सामान था, ग़रज़ बे-हथियार लोगों पर हमला करना तो ख़ुदा को मंज़ूर और पसंद न था, हथियारों से लैस फ़ौज का मुक़ाबला किया गया, तो उस के वायदे के मुताबिक़ मुसलमानों को फ़तह हासिल हुई।

★रु. ५/१ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् व क़ा-ल ला ग़ालि-ब लकुमुल्यौ-म
मिनन्नासि व इन्नी जारुल्लकुम् ج फ़-लम्मा तराअतिल् - फ़ि-अतानि न-क-स
अला अक़िबैहि व क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन्कुम् इन्नी अरा मा ला तरौ-न
इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह ط वल्लाहु शदीदुल् - अिक़ाब ★(४८) इज़् यक़ूलुल्-
मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी - न फ़ी क़ुलूबिहिम्
म-र-ज़ुन् ग़र्-र हाउला-इ दीनुहुम् ط व
मंय्य-त-वक्कल् अ-लल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन्
हकीम (४९) व लौ तरा इज़्
य-त-वफ़्फ़ल्लज़ी - न क-फ़रू-ل -लमलाइकतु
यज़्रिबू - न वुजूहहुम् व अद्बारहुम् ج व
ज़ूक़ू अज़ाबल्-हरीक़ (५०) ज़ालि-क बिमा
क़द-द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स
बिज़ल्लामिल् - लिल्अबीद ل (५१)
क-दअ्बि आलि फ़िर्औ-न ل वल्लज़ी- - न
मिन् क़ब्लिहिम् ط क-फ़रू बिआयातिल्लाहि
फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् ط इन्नल्ला-ह
क़विय्युन् शदीदुल् अिक़ाब (५२) ज़ालि-क
बि-अन्नल्ला-ह लम् यकु मुग़य्यिरन्-निअ्-म-तन् अन्-अ-महा अला क़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू
मा बिअन्फ़ुसिहिम् ل व अन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम ل (५३) क-दअ्बि
आलि फ़िर्औ - न ل वल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् ط क़ज़्ज़बू बिआयाति
रब्बिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ-न ج व
कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन (५४) इन्-न शर्रद-दवाब्बि अिन्दल्लाहिल्लज़ी-न क-फ़रू
फ़हुम् ला युअ्मिनून ع (५५) अल्लज़ी-न आहत्-त मिन्हुम् सुम्-म यन्क़ुज़ू-न
अह्-दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिंव्-व-हुम् ला यत्तक़ून (५६) फ़-इम्मा तस्क़फ़न्नहुम्
फ़िल्हर्बि फ़-शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् ल-अल्लहुम् यज़्ज़क्करून (५७)

الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَ
اِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ
اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ وَاللّٰهُ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ
يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾ كَدَاْبِ
اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ
اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ
اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا
بِاَنْفُسِهِمْ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ
وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ
عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ
مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾
فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ

★रु. ६/ २ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ये करते हैं, ख़ुदा उन पर एहाता किये हुए है। (४७) और जब शैतानों ने उन के आमाल उन को सजा कर दिखाये और कहा कि आज के दिन लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब न होगा और मैं तुम्हारा साथी हूं, (लेकिन) जब दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबले में (आ खड़ी) हुईं तो पसपा हो कर चल दिया और कहने लगा कि मुझे तुम से कोई वास्ता नहीं। मैं तो ऐसी चीज़ें देख रहा हूं, जो तुम नहीं देख सकते। मुझे तो ख़ुदा से डर लगता है और ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (४८) ★

उस वक़्त मुनाफ़िक़ और (काफ़िर), जिन के दिलों में मर्ज़ था कहते थे कि उन लोगों को उन के दीन ने घमंड में डाल रखा है और जो शख़्स ख़ुदा पर भरोसा रखता है, तो ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (४९) और काश ! तुम उस वक़्त (की कैफ़ियत) देखो, जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जानें निकालते हैं, उन के मुंहों और पीठों पर (कोड़े और हथोड़े वग़ैरह) मारते (हैं और कहते) हैं कि (अब) आग के अज़ाब (का मज़ा) चखो। (५०) यह उन (आमाल) की सज़ा है, जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे हैं और यह (जान रखो) कि ख़ुदा बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता। (५१) जैसा हाल फ़िऔ़नियों का और उन से पहले लोगों का (हुआ था, वैसा ही उन का हुआ कि) उन्होंने ख़ुदा की आयतों से कुफ़्र किया, तो ख़ुदा ने उनके गुनाहों की सज़ा में उन को पकड़ लिया। बेशक ख़ुदा ज़बरदस्त और सख़्त अज़ाब देने वाला है। (५२) यह इस लिए कि जो नेमत ख़ुदा किसी क़ौम को दिया करता है, जब तक वे ख़ुद अपने दिलों की हालत न बदल डालें, ख़ुदा उसे बदला नहीं करता। और इस लिए कि ख़ुदा सुनता-जानता है। (५३) जैसा हाल फ़िऔ़नियों और उन से पहले लोगों का (हुआ था, वैसा ही उनका हुआ), उन्हों ने अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके गुनाहों की वजह से हलाक कर डाला और फ़िऔ़नियों को डुबा दिया और वे सब ज़ालिम थे। (५४) जानदारों में सब से बद-तर ख़ुदा के नज़दीक वे लोग हैं जो काफ़िर हैं, सो वे ईमान नहीं लाते। (५५) जिन लोगों से तुम ने (सुलह) का अह्द किया है, फिर वे हर बार अपने अह्द को तोड़ डालते हैं और (ख़ुदा से) नहीं डरते। (५६) अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उनको पीछे (से मदद दे रहे) हों, वे उनको देख कर भाग जाएं। अजब नहीं कि उन को (इस से) इबरत (सबक़) हो। (५७) और अगर तुम को किसी क़ौम से

★रु. ६/२ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इम्मा तख़ाफ़न्-न मिन् क़ौमित् ख़ियान-तन् फ़म्बिज़् इलैहिम् अला
सवाइन् ط इन्नल्ला - ह ला युहि़ब्बुल् - ख़ा - इनीन ★ (५८) व ला
यह्सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू स-बक़ू ط इन्नहुम् ला युअ्-जिज़ून (५९) व अअि़द्दू
लहुम् मस्त-तअ्-तुम् मिन् क़ुव्वतिंव्-व मिर्रिबाति़ल्ख़ैलि तुर्हिबू-न बिही अ़दुव्वल्लाहि
व अ़दुव्वकुम् व आख़री-न मिन् दूनिहिम् ج
ला तअ्-लमूनहुम् ج अल्लाहु यअ्-लमुहुम् ط
व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ी
सबीलिल्लाहि युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम्
ला तुज़्लमून (६०) व इन् ज-नहू
लिस्सलिम फ़ज्नह् लहा व त - वक्कल्
अ़ - लल्लाहि ط इन्नहू हुवस्समीअ़ुल् - अ़लीम
(६१) व इंय्युरीदू अंय्यख़्दअ़ू-क फ़इन्-न
ह़स्बकल्लाहु ط हुवल्लज़ी अय्य - द - क
बिनस्रिही व बिल् - मुअ्मिनीन لا (६२)
व अल्ल - फ़ बै - न क़ुलूबिहिम् ط लौ
अन्फ़क़् - त मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म् - मा
अल्लफ़-त बै-न क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला-ह अल्ल - फ़ बैनहुम् ط इन्नहू
अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम (६३) या अय्युहन्नबिय्यु ह़स्बुकल्लाहु व मनित्त-ब-अ़-क
मिनल्-मुअ्मिनीन ★ (६४) या अय्युहन्नबिय्यु ह़र्रिज़िल् - मुअ्मिनी - न
अ़ - लल् - क़ितालि ط इंय्यकुम् - मिन्कुम् अ़िश्रू - न साबिरू - न यग़्लिबू
मि-अतैनि ج व इंय्यकुम् - मिन्कुम् मि-अतुंय्यग़्लिबू अल्फ़म् - मिनल्लज़ी - न
क-फ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (६५) अल्आ - न ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु
अ़न्कुम् व अ़लि - म अन् - न फ़ीकुम् ज़अ़् - फ़न् ط फ़इंय्यकुम् - मिन्कुम्
मि-अतुन् साबिरतुंय्यग़्लिबू मि - अतैनि ج व इंय्यकुम् - मिन्कुम्
अल्फ़ुंय्यग़्लिबू अल्फ़ैनि बिइज़्निल्लाहि ط वल्लाहु म - अ़स्साबिरीन (६६)

الانفال ٨ ١٤٧ واعلموا ١٠

يذكرون ﴿٥٧﴾ وإما تخافن من قوم خيانة فانبذ إليهم على
سواء إن الله لا يحب الخائنين ﴿٥٨﴾ ولا يحسبن الذين
كفروا سبقوا إنهم لا يعجزون ﴿٥٩﴾ وأعدوا لهم ما استطعتم
من قوة ومن رباط الخيل ترهبون به عدو الله وعدوكم و
آخرين من دونهم لا تعلمونهم الله يعلمهم وما تنفقوا
من شيء في سبيل الله يوف إليكم وأنتم لا تظلمون ﴿٦٠﴾ و
إن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله إنه هو السميع
العليم ﴿٦١﴾ وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله هو
الذي أيدك بنصره وبالمؤمنين ﴿٦٢﴾ وألف بين قلوبهم
لو أنفقت ما في الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم ولكن
الله ألف بينهم إنه عزيز حكيم ﴿٦٣﴾ يا أيها النبي حسبك الله
ومن اتبعك من المؤمنين ﴿٦٤﴾ يا أيها النبي حرض المؤمنين
على القتال إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين
وإن يكن منكم مائة يغلبوا ألفا من الذين كفروا بأنهم قوم
لا يفقهون ﴿٦٥﴾ الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا
فإن يكن منكم مائة صابرة يغلبوا مائتين وإن يكن
منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله والله مع الصابرين ﴿٦٦﴾

منزل ٢

★रु. ७/३ आ १० ★रु. ८/४ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दग़ाबाज़ी का ख़ौफ़ हो तो (उन का अह्द) उन्हीं की तरफ़ फेंक दो (और) बराबर (का जवाब दो)। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा दग़ाबाज़ों को दोस्त नहीं रखता। (५८) ★

और काफ़िर यह न ख़्याल करें कि वे भाग निकले हैं। वे (अपनी चालों से हम को हरगिज़) आजिज़ नहीं कर सकते। (५९) और जहां तक हो सके (फ़ौज की जमईयत के) ज़ोर से और घोड़ों के तैयार रखने से उन के (मुक़ाबले) के लिए मुस्तैद रहो कि उस से ख़ुदा के दुश्मनों और तुम्हारे दुश्मनों और उन के सिवा और लोगों पर, जिन को तुम नहीं जानते और ख़ुदा जानता है, हैबत बैठी रहेगी, और तुम जो कुछ ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करोगे उस का सवाब तुम को पूरा-पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा ज़रा नुक़्सान नहीं किया जाएगा। (६०) और अगर ये लोग सुलह की तरफ़ मायल हों, तुम भी उस की तरफ़ मायल हो जाओ और ख़ुदा पर भरोसा रखो। कुछ शक नहीं कि वह सब कुछ सुनता (और) जानता है। (६१) और अगर यह चाहें कि तुम को फ़रेब दें, तो ख़ुदा तुम्हें किफ़ायत करेगा। वही तो है, जिस ने तुम को अपनी मदद से और मुसलमानों (की जमाअत) से ताक़त पहुंचायी। (६२) और उनके दिलों में उल्फ़त (मुहब्बत) पैदा कर दी और अगर तुम दुनिया भर की दौलत ख़र्च करते, तब भी उन के दिलों में उल्फ़त पैदा न कर सकते, मगर ख़ुदा ही ने उनमें उल्फ़त डाल दी। बेशक वह ज़बर्दस्त (और) हिक्मत वाला है। (६३) ऐ नबी! ख़ुदा तुम को और मोमिनों को, जो तुम्हारे पैरो हैं, काफ़ी है। (६४) ★

ऐ नबी! मुसलमानों को जिहाद पर उभारो। अगर तुम में २० आदमी साबित क़दम रहने वाले होंगे, तो दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे और अगर सौ (ऐसे) होंगे, तो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे, इस लिए कि काफ़िर ऐसे लोग हैं कि कुछ भी समझ नहीं रखते। (६५) अब ख़ुदा ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम में किसी क़दर कमज़ोरी है। पस अगर तुम में एक सौ साबित क़दम रहने वाले होंगे, तो दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे और अगर एक हज़ार होंगे, तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे और ख़ुदा साबित क़दम रहने वालों का मददगार है।[1] (६६) पैग़म्बर को मुनासिब नहीं कि उसके क़ब्ज़े में क़ैदी रहें,

---

१. साबित क़दम रहने वालों से मुराद बहादुर और मज़बूत दिल हैं और हक़ीक़त में जिहाद करना भी बहादुरों का काम है और बहादुरी ईमानी क़ूवत से बढ़ती है। जितना ईमान ज़्यादा होता है, उतनी ही बहादुरी ज़्यादा होती है। इसी लिए हज़रत सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक अह्द के मोमिनों के बारे में यह इर्शाद हुआ है कि अगर तुम में बीस बहादुर होंगे तो दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे और ईमान की इसी ताक़त की बुनियाद पर कुछ लोगों ने इसे 'हुक्म' माना है यानी ईमान वालों को ख़ुदा का हुक्म यह है कि अगर काफ़िर उन से दस गुने भी हों, तब भी उन के मुक़ाबले में जमे रहें। अपने से दो गुने कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में साबित क़दम रहने का हुक्म इस ताक़त की और भी कमज़ोरी की वजह से है। चुनांचे इसी लिए बाद की आयत में यह इर्शाद हुआ कि, 'अब ख़ुदा ने तुम से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक हज़ार होंगे तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे। अब अगर दो गुने काफ़िर मुक़ाबले पर हों, तो हरगिज़ नहीं भागना चाहिए यानी कम से कम एक सौ मोमिन को दो सौ काफ़िरों पर भारी होना चाहिए और एक हज़ार को दो हज़ार पर।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मा का-न लिनबिय्यिन् अंय्यकू-न लहू अस्रा ह़त्ता युस्ख़ि-न फ़िल्अर्ज़ि ۚ तुरीदू-न
अ़-र-ज़द्दुन्या ۖ वल्लाहु युरीदुल्-आख़ि-र-तः ۚ वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम
(६७) लौला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क़ ल-मस्सकुम् फ़ीमा अ-ख़ज़्तुम्
अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (६८) फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् ह़लालन् तय्यिबंव्-व
वत्तक़ुल्ला-ह ۚ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रह़ीम
★ (६९) या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल्
लिमन् फ़ी ऐदीकुम् मिनल्अस्रा ۙ
इंय्यअ़-लमिल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम् ख़ैरंय्युअ्तिकुम्
ख़ैरम्मिम्मा उख़ि-ज मिन्कुम् व यग़्फ़िर्
लकुम् ۚ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम (७०) व
इंय्युरीदू ख़ियान-त-क फ़-क़द् ख़ानुल्ला-ह
मिन् क़ब्लु फ़-अम्क-न मिन्हुम् ۚ वल्लाहु
अ़लीमुन् ह़कीम (७१) इन्नल्लज़ी-न
आमनू व हाजरू व जाहदू बिअम्वालिहिम्
व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न
आवव्-व न-सरू उलाइ-क बअ़्-ज़ुहुम्
औलिया-उ बअ़्-ज़िन् ۚ वल्लज़ी-न आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम्
मिंव्वलायतिहिम् मिन् शैइन् ह़त्ता युहाजिरू ۚ व इनिस्तन्सरूकुम्
फ़िद्दीनि फ़-अ़लैकुमुन्नस्रु इल्ला अ़ला क़ौमिम्बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् ۚ
वल्लाहु बिमा तअ़्-मलू-न बसीर (७२) वल्लज़ी-न क-फ़रू बअ़्-ज़ुहुम्
औलिया-उ बअ़्-ज़िन् ۚ इल्ला तफ़्अ़लूहु तकुन् फ़ित्-न-तुन् फ़िल्अर्ज़ि
व फ़सादुन् कबीर ۚ (७३) वल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू
फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उलाइ-क हुमुल्-
मुअ्मिनू-न ह़क़्क़न् ۚ लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (७४)

الانفال ٨　　١٤٨　　واعلموا ١٠

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ
تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا
اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٩﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي
أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ
خَيْرًا مِمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٠﴾ وَ
إِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا
أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا
مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ
فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ
أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ
كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ

منزل ٢

★रु. ९/५ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जब तक (काफ़िरों को क़त्ल कर के) ज़मीन में कसरत से ख़ून (न) बहा दे। तुम लोग दुनिया के माल के तालिब हो और ख़ुदा आख़िरत (की भलाई) चाहता है और ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (६७) अगर ख़ुदा का हुक्म पहले न हो चुका होता, तो जो (फ़िद्या) तुम ने लिया है, उसके बदले तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होता। (६८) तो ग़नीमत का जो माल तुम को मिला है, उसे खाओ (कि वह तुम्हारे लिए) पाक-हलाल (है) और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (६९) ★

ऐ पैग़म्बर! जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में (गिरफ़्तार) हैं, उनसे कह दो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे दिलों में नेकी मालूम करेगा, तो जो (माल) तुम से छिन गया है, उस से बेहतर तुम्हें इनायत फ़रमाएगा। और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (७०) और अगर ये लोग तुम से दग़ा करना चाहेंगे तो ये पहले ही ख़ुदा से दग़ा कर चुके हैं, तो उसने उन को (तुम्हारे) क़ब्ज़े में कर दिया और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (७१) जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से लड़े, वे और जिन्होंने (हिजरत करने वालों को) जगह दी और उन की मदद की, वे आपस में एक दूसरे के साथी हैं। और जो लोग ईमान तो ले आये, लेकिन हिजरत नहीं की, तो जब तक वे हिजरत न करें, तुम को उन के साथ से कुछ वास्ता नहीं। और अगर वे तुमसे दीन (के मामलों) में मदद तलब करें तो तुम को मदद करनी ज़रूरी है, मगर उन लोगों के मुक़ाबले में कि तुम में और उन में (सुलह का) अह्द हो, (मदद नहीं करनी चाहिए) और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (७२) और जो लोग काफ़िर हैं (वे भी) एक दूसरे के साथी हैं, तो (मोमिनो!) अगर तुम यह (काम) न करोगे तो मुल्क में फ़ित्ना बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद मचेगा। (७३) और जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और ख़ुदा की राह में लड़ाइयां करते रहे और जिन्होंने (हिजरत करने वालों को) जगह दी और उनकी मदद की, यही लोग सच्चे मुसलमान हैं। उन के लिए (ख़ुदा

★रु. ९/५ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लजी-न आमनू मिम्बअ्-दु व हाजरू व जाहदू म-अकुम् फ़उलाइ-क मिन्कुम् ♭ व उलुल् - अर्हामि बअ्- ज़ुहुम् औला बिबअ्- ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि ♭ इन्नल्ला - ह बिकुल्लि शैइन् अ्लीम ★ ● (७५)

التوبة ٩   ١٧٩   واعلموا ١٠

وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي
كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾
سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا
بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١﴾
فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي
اللَّهِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ﴿٢﴾ وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى
النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَ
رَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣﴾ إِلَّا
الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ
يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٤﴾ فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ
حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ
مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا
سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥﴾ وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ

منزل ٢

९ सूरतुत्तौबति ११३

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ११३६० अक्षर, २५३७ शब्द, १२९ आयतें और १६ रुकूअ़ हैं।

बराअतुम्मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनलमुश्रिकीन ♭ (१) फ़सीहू फ़िल्अर्ज़ि अर्ब-अ-त् अश्हुरिंव्वअ्-लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्- जिज़िल्लाहि ♭ व अन्नल्ला-ह मुख़्ज़िलकाफ़िरीन (२) व अज़ानुम्मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल्-ह़ज्जिल्-अक्बरि अन्नल्ला-ह बरीउम् मिनल् - मुश्रिकी - न ♭ व रसूलुहू ♭ फ़-इन् तुब्तुम् फ़हु - व ख़ैरुल्लकुम् ♭ व इन् तवल्लैतुम् फ़अ्-लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्-जिज़िल्लाहि ♭ व बश्शिरिल्लज़ी-न क-फ़रू बिअ़ज़ाबिन् अलीम ♭ (३) इल्लल्लज़ी - न आ़हत्तुम् मिनल्-मुश्रिकी-न सुम्-म लम् यन्क़ुसूकुम् शैअंव्-व लम् युज़ाहिरू अ़लैकुम् अ-ह़-दन् फ़-अतिम्मू इलैहिम् अ़ह्दहुम् इला मुद्दतिहिम् ♭ इन्नल्ला - ह युह़िब्बुल् - मुत्तक़ी-न (४) फ़इज़न्-स-ल - ख़ल् - अश्हुरुल्-हुरुमु फ़क़्तुलुल्-मुश्रिकी-न हैसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह़्सुरूहुम् वक़्अ़ुदू लहुम् कुल्-ल मर्सदिन् फ़इन् ताबू व अक़ामुस् - सला - त् व आतवुज़्ज़का - त् फ़ख़ल्लू सबीलहुम् ♭ इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर्रहीम (५) व इन् अ - ह़दुम्मिनल् - मुश्रिकीनस्तजा-र - क फ़ - अजिर्हु ह़त्ता यस्म-अ कलामल्लाहि सुम् - म अब्लिग़्हु मअ्-म - नहू ♭ ज़ालि-क बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्-लमून ★ (६)

★रु. १०/६ आ ६ ● रुबअ़ १/४ ★रु. १/७ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के यहां) बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (७४) और जो लोग बाद में ईमान लाये और बतन से हिजरत कर गये और तुम्हारे साथ हो कर जिहाद करते रहे, वे भी तुम्हीं में से हैं और रिश्तेदार ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (७५) ★ ●

९ सूरः तौबा ११३

सूरः तौबा मदनी है और इस में एक सौ उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ हैं।

(ऐ मुसलमानो ! अब)[1] ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ से मुश्रिकों से, जिन से तुम ने अह्द (समझौता) कर रखा था, बे-ज़ारी (और जंग की तैयारी) है। (१) तो (मुश्रिको ! तुम) ज़मीन में चार महीने[2] चल फिर लो और जान रखो कि तुम ख़ुदा को आजिज़ न कर सकोगे और यह भी कि ख़ुदा काफ़िरों को रुसवा करने वाला है। (२) और हज्जे अक्बर के दिन ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ से लोगों को आगाह किया जाता है कि ख़ुदा मुश्रिकों से बेज़ार है और उस का रसूल भी (उन से दस्तबरदार है)। पस अगर तुम तौबा कर लो, तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और न मानो (और ख़ुदा से मुक़ाबला करो) तो जान रखो कि तुम ख़ुदा को हरा नहीं सकोगे और (ऐ पैग़म्बर !) काफ़िरों को दुख देने वाले अज़ाब की खबर सुना दो। (३) अल-बत्ता, जिन मुश्रिकों के साथ तुम ने अह्द किया हो, और उन्होंने तुम्हारा किसी तरह का क़ुसूर न किया हो और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की हो, तो जिस मुद्दत तक उनके साथ अह्द किया हो, उसे पूरा करो (कि) ख़ुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (४) जब इज़्ज़त के महीने गुज़र जाएं, तो मुश्रिकों को जहां पाओ, क़त्ल कर दो और पकड़ लो और घेर लो और हर घात की जगह पर उनकी ताक में बैठे रहो, फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने लगें, तो उन की राह छोड़ दो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) और अगर कोई मुश्रिक तुम से पनाह चाहता हो, तो उसको पनाह दो, यहां तक कि ख़ुदा का कलाम सुनने लगे, फिर उसको अम्न की जगह वापस पहुंचा दो, इस लिए कि ये बे-ख़बर लोग हैं। (६) ★

---

१. इस सूरः के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गयी और इस की बहुत-सी वजहें बयान की गयी हैं। हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि बिस्मिल्लाह में अमान है, क्योंकि इस में ख़ुदा का नाम इस ख़ूबी के साथ लिया जाता है, जो अमान का काम करने वाला है यानी रहमत और यह सूरः लड़ाई और जंग और अमान उठाने के लिए नाज़िल हुई है, इस लिए इस में बिस्मिल्लाह नहीं है। कुछ ने कहा कि अरब की आदत थी कि जब उन में और किसी क़ौम में समझौता होता था और वे उस को तोड़ना चाहते थे, तो इस बारे में जो ख़त कि उस क़ौम को लिखते थे, उस पर बिस्मिल्लाह नहीं लिखते थे। जब कुफ़्फ़ार ने वह अह्द (समझौता), जो मुसलमानों ने ख़ुदा के हुक्म से उन के साथ किया था, तोड़ डाला, तो ख़ुदा ने मुसलमानों से फ़रमाया कि तुम को भी अपने अह्द पर क़ायम रहना ज़रूरी नहीं। पस चूंकि इस सूरः में अह्द तोड़ डाला गया है और इस के नाज़िल होने पर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को मुश्रिकों के पास भेजा। उन्हों ने यह सूरः उन को सुना दी और उन से कह दिया कि अब समझौता टूट चुका है। चार महीने के बाद हर जगह तुम लोगों से जंग है, इस लिए उन की आदत के मुताबिक़ उस के शुरू में 'बिस्मिल्लाह' नहीं लिखी। इन के अलावा भी कई क़ौल हैं, मगर ज़्यादा सही पहला क़ौल मालूम होता है।

२. ज़िल हिज्जा की दसवीं तारीख़ से रबीउल अव्वल आख़िर की दसवीं तक।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कै-फ़ यकूनु लिलमुश्रिकी-न अ़ह्दुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्-द रसूलिही इल्लल्-
लज़ी-न आ़हत्तुम् अ़िन्दल्-मस्जिदिल्-ह़रामि ج फ़-मस्तक़ामू लकुम् फ़स्तक़ीमू
लहुम् ط इन्नल्ला-ह युह़िब्बुल्-मुत्तक़ीन (७) कै-फ़ व इंय्यज़्हरू अ़लैकुम्
ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन् ط युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाहिहिम्
व तअ्बा क़ुलूबुहुम् ج व अक्सरुहुम्
फ़ासिक़ून ج (८) इश्तरौ बिआयातिल्लाहि
स-म-नन् क़लीलन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिही ط
इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्-मलून (९)
ला यर्क़ुबू-न फ़ी मुअ्मिनिन् इल्लंव्-व ला
ज़िम्म-तन् ط व उलाइ-क हुमुल्मुअ्-तदून
(१०) फ़इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त
व आतवुज़्ज़का-त फ़इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि ط
व नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून
(११) व इन्-नकसू ऐमानहुम् मिम्बअ्-दि
अ़ह्दिहिम् व त-अ़नू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू
अइम्म-तल्-कुफ़्रि ٧ इन्नहुम् ला
ऐमा-न लहुम् ल-अ़ल्लहुम् यन्तहून (१२)

التوبة ٩ ١٥٠ واعلموا ١٠

بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ (٦) كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ
اللّٰهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عٰهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ (٧)
كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً
يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبٰى قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فٰسِقُونَ (٨)
اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (٩) لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً
وَأُولٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ (١٠) فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا
الزَّكٰوةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُونَ (١١)
وَإِن نَّكَثُوا أَيْمَانَهُم مِّن بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ
فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنتَهُونَ (١٢)
أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَ
هُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللّٰهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ
إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (١٣) قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِأَيْدِيكُمْ وَ
يُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ (١٤)
وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللّٰهُ عَلٰى مَن يَشَاءُ وَاللّٰهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ (١٥) أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِينَ

منزل ٢

अला तुक़ातिलू-न क़ौमन्-न-कसू ऐमानहुम् व हम्मू बिइख़्राजिर्रसूलि व
हुम् ब-दऊकुम् अव्व-ल मर्रतिन् ط अ-तख़्शौनहुम् ج फ़ल्लाहु अ-ह़क़्क़ु अन्
तख़्शौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३) क़ातिलू-हुम् युअ़ज़्ज़िब्-हुमुल्लाहु
बिऐदीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अ़लैहिम् व यश्फ़ि सुदू-र
क़ौमिम्-मुअ्मिनीन ٧ (१४) व युज़्हिब् ग़ै-ज़ क़ुलूबिहिम् ط व
यतूबुल्लाहु अ़ला मंय्यशाउ ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (१५)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भला मुश्रिकों के लिए (जिन्होंने अह्द तोड़ डाला), ख़ुदा और उसके रसूल के नज़दीक अह्द किस तरह क़ायम रह सकता है,[1] हां, जिन लोगों के साथ तुम ने मस्जिदे मोहतरम (यानी ख़ाना-ए-काबा) के नज़दीक अह्द किया है अगर वे (अपने अह्द पर) क़ायम रहें, तो तुम भी अपने क़ौल व क़रार (पर) क़ायम रहो। बेशक ख़ुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (७) (भला उन से अह्द) किस तरह (पूरा किया जाए, जब उन का हाल यह है) कि अगर तुम पर ग़लबा पा लें, तो न क़राबत का लिहाज़ करें, न अह्द का, यह मुंह से तो तुम्हें ख़ुश कर देते हैं, लेकिन उनके दिल (इन बातों को) क़ुबूल नहीं करते और उन में अक्सर ना-फ़रमान हैं। (८) ये ख़ुदा की आयतों के बदले थोड़ा सा फ़ायदा हासिल करते और लोगों को ख़ुदा के रास्ते से रोकते हैं। कुछ शक नहीं कि जो काम ये करते हैं, बुरे हैं। (९) ये लोग किसी मोमिन के हक़ में न तो रिश्तेदारी का पास करते हैं, न अह्द का और ये हद से आगे बढ़ जाने वाले हैं। (१०) अगर ये तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने लगें, तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और समझने वाले लोगों के लिए हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं। (११) और अगर अह्द करने के बाद अपनी क़स्में को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ताने करने लगें, तो उन कुफ़्र के पेशवाओं से जंग करो, (ये बे-ईमान लोग हैं और) इन की क़स्मों का कुछ एतबार नहीं है। अजब नहीं कि (अपनी हरकतों से) बाज़ आ जाएं। (१२) भला तुम ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो, जिन्होंने अपनी क़स्मों को तोड़ डाला और (ख़ुदा के) पैग़म्बर के निकालने का पक्का इरादा कर लिया और उन्होंने तुम से (किया गया अह्द तोड़ना) शुरू किया। क्या तुम ऐसे लोगों से डरते रहो, हालांकि डरने के लायक़ ख़ुदा है, बशर्ते कि ईमान रखते हो। (१३) उन से (ख़ूब) लड़ो। ख़ुदा उन को तुम्हारे हाथों से अज़ाब में डालेगा और रुसवा करेगा और तुम को उन पर ग़लबा देगा और मोमिन लोगों के सीनों को शिफ़ा बख़्शेगा। (१४) और उन के दिलों से ग़ुस्सा दूर करेगा और जिस पर चाहेगा, रहमत करेगा और

---

१. हुदैबिया में कुफ़्फ़ार के साथ दस वर्ष का समझौता हुआ था और इस शर्त पर सुलह क़रार पायी थी कि जो लोग मुसलमानों की पनाह में हैं, उन पर न मक्के वाले ख़ुद हमला करेंगे और न हमला करने वालों की मदद करेंगे और जो लोग मक्के वालों की पनाह में हैं, उन पर मुसलमान न हमला करेंगे और न हमला करने वालों की मदद करेंगे, मगर क़ुरैश ने अपना अह्द तोड़ डाला। यानी बनूबक्र ने जो मक्के वालों की पनाह में थे, ख़ुज़ामा पर, जो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पनाह में थे चढ़ाई कर दी और क़ुरैश ने उन की मदद की। यह वाक़िआ होने पर ख़ुज़ामा में से एक शख़्स अम्र बिन सालिम नाम का हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मक्के के काफ़िरों ने अपना अह्द तोड़ डाला, तब आप ने फ़रमाया, मैं तुम्हारी मदद करूंगा। ग़रज़ आप को मक्के वालों से जंग करनी पड़ी। चुनांचे आप ने सन् ०८ हि० में उन पर चढ़ाई की और मक्का फ़त्ह कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अम् ह़सिब्तुम् अन् तुत्रकू व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लजी-न जाहदू मिन्कुम् व
लम् यत्तख़िज़ू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनी-न वलीज-तन्
वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ्-मलून ★ (१६) मा का-न लिल्मुश्रिकी-न
अंय्यअ्-मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि ط उलाइ-क
ह़बितत् अअ्-मालुहुम् ج व फ़िन्नारि
हुम् ख़ालिदून (१७) इन्नमा यअ्-मुरु
मसाजिदल्लाहि मन् आम-न बिल्लाहि
वल्-यौमिल्-आख़िरि व अक़ामस्सला-त व
आतज़्ज़का-त व लम् यख़्-श इल्लल्ला-ह
फ़-असा उलाइ-क अंय्यकूनू मिनल्-मुह्तदीन
(१८) अ-ज-अ़ल्तुम् सिक़ाय-तल्-ह़ाज्जि
व अ़िमार-तल्-मस्जिदिल्-ह़रामि क-मन्
आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व
जा-ह-द फ़ी सबीलिल्लाहि ط ला यस्तवू-न
अ़िन्दल्लाहि ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-
ज़ालिमी-न ▨ (१९) अल्लज़ी-न आमनू व
हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ل
अअ्-ज़मु द-र-ज-तन् अ़िन्दल्लाहि ط व उलाइ-क हुमुल्-फ़ाइज़ून (२०)
युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह़्मतिम्मिन्हु व रिज़्वानिंव्-व जन्नातिल्लहुम् फ़ीहा
नअ़ीमुम्-मुक़ीम ل (२१) ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط इन्नल्ला-ह
अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम (२२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला
तत्तख़िज़ू आबा-अकुम् व इख़्वानकुम् औलिया-अ इनिस्तह़ब्बुल्कुफ़्-र
अ़-लल्ईमानि ط व मंय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (२३)

واعلموا ١٠　　١٥١　　التوبة ٩

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا
الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ
لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ
اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ
مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ
اٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ
الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا
يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾
يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا
نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۙ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ
اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ
وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ

ع　　وقف لازم

منزل ٢

★ रु. २/८ आ १०　▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (१५) क्या तुम लोग यह ख़्याल करते हो कि (बे-आज़माइश) छोड़ दिये जाओगे और अभी तो ख़ुदा ने ऐसे लोगों को अलग किया ही नहीं, जिन्हों ने तुम में से जिहाद किये और ख़ुदा और उसके रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दोस्त नहीं बनाया और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१६) ★

मुश्रिकों को मुनासिब नहीं कि ख़ुदा की मस्जिदों को आबाद कर, जबकि वे अपने आप पर कुफ़्र की गवाही दे रहे हैं। उन लोगों के सब अमल बेकार हैं, और ये हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (१७) ख़ुदा की मस्जिदों को तो वे लोग आबाद करते हैं, जो ख़ुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते हैं और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते हैं और ख़ुदा के सिवा किसी से नहीं डरते। यही लोग, उम्मीद है कि हिदायत पाये हुए लोगों में (दाख़िल) हों। (१८) क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिदे मोहतरम (यानी खाना-ए-काबा) को आबाद करना उस शख़्स के अमल जैसा ख़्याल किया है जो ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है और ख़ुदा की राह में जिहाद करता है ? ये लोग ख़ुदा के नज़दीक बराबर नहीं हैं और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं किया करता ▨ (१९) जो लोग ईमान लाये और वतन छोड़ गये और ख़ुदा की राह में माल और जान से जिहाद करते रहे, ख़ुदा के यहां इन के दर्जे बहुत बड़े हैं और वही मुराद को पहुंचने वाले हैं। (२०) उनका परवरदिगार उनको अपनी रहमत की और ख़ुश्नूदी की और बहिश्तों की ख़ुश-ख़बरी देता है, जिन में उन के लिए हमेशा-हमेशा की नेमतें हैं। (२१) (और वे) उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा के यहां बड़ा बदला तैयार है। (२२) ऐ ईमान वालो ! अगर तुम्हारे (मां-) बाप और (बहन-) भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसंद करें, तो उनसे दोस्ती न रखो और जो उन से दोस्ती रखेंगे, वे ज़ालिम हैं। (२३) कह दो कि अगर तुम्हारे बाप

★रु. २/८ आ १० ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् इन् का-न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम्
व अ़शीरतुकुम् व अम्वालु निक़्-त-रफ़्तुमूहा व तिजारतुन् तख़्शौ-न कसादहा
व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अ-ह़्-ब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन्
फ़ी सबीलिही फ़-त-रब्बसू ह़त्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही ط वल्लाहु ला
यह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन ★ (२४) ल-क़द्
न-स़-र-कुमुल्लाहु फ़ी मवात़ि-न कसीरतिंव् لا -व
यौ-म हुनैनिन् لا इज़् अअ्-ज-बत्कुम्
कस्-रतुकुम् फ़-लम् तुग़्नि अ़न्कुम् शैअंव्-व
ज़ाक़त् अ़लैकुमुल्अर्ज़ु बिमा रहुबत् सुम्-म
वल्लैतुम् मुद्बिरीन ج (२५) सुम्-म
अन्ज़-लल्लाहु सकीन-तहू अ़ला रसूलिही व
अ़-लल्-मुअ्मिनी-न व अन्ज़-ल जुनूदल्लम् तरौहा
व अ़ज़्ज़बल्लज़ी-न क-फ़रू ط व ज़ालि-क
जज़ाउल्काफ़िरीन (२६) सुम्-म यतूबुल्लाहु
मिम्बअ़्-दि ज़ालि-क अ़ला मंय्यशाउ ط वल्लाहु
ग़फ़ूरुर्रह़ीम (२७) या अय्युहल्लज़ी-न
आमनू इन्नमल्-मुश्रिकू-न न-जसुन् फ़ला
यक़्रबुल्-मस्जिदल्-ह़रा-म बअ़्-द आ़मिहिम् हाज़ा ج व इन् ख़िफ़्तुम् अ़ै-ल-तन्
फ़सौ-फ़ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शा-अ ط इन्नल्ला-ह अ़लीमुन्
ह़कीम (२८) क़ातिलुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल्-
आख़िरि व ला युह़र्रिमू-न मा ह़र्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनू-न
दीनल्ह़क़्क़ि मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ह़त्ता युअ़्-तुल्-जिज़्-य-त अ़ंय्यदिंव-व हुम्
स़ाग़िरून ★(२९) व क़ालतिल्-यहूदु उ़ज़ैरुनिब्नुल्लाहि व क़ालतिन्नस़ारल्-
मसीहुब्नुल्लाहि ط ज़ालि-क क़ौलुहुम् बि-अफ़्वाहिहिम् ج युज़ाहिऊ-न क़ौलल्लज़ी-न
क-फ़रू मिन् क़ब्लु ط क़ात-लहुमुल्लाहु ج अन्ना युअ-फ़कून (३०)

واعلموا ١٠ ١٥٢ التوبة ٩

كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ
فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ
حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ
عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا
لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾
ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ
عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ
اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا

منزل ٢

★रु. ३/९ आ ८ ★रु. ४/१० आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और बेटे और भाई और औरतें और खानदान के आदमी और माल, जो तुम कमाते हो और तिजारत, जिस के वन्द होने से डरते हो, और मकान, जिनको पसंद करते हो, ख़ुदा और उस के रसूल से और ख़ुदा की राह में जिहाद करने से, तुम्हें ज़्यादा अज़ीज़ हों, तो ठहरे रहो, यहां तक कि ख़ुदा अपना हुक्म (यानी अज़ाब) भेजे। और ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (२४) ★

ख़ुदा ने बहुत-से मौक़ों पर तुम को मदद दी है। और हुनैन (की लड़ाई) के दिन, जबकि तुम को अपनी (जमाअत की) ज़्यादती पर फ़ख़्र था, तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आये और ज़मीन बावजूद (इतनी बड़ी) फ़राख़ी के, तुम पर तंग हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर फिर गये। (२५) फिर ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर पर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमायी (तुम्हारी मदद को फ़रिश्तों के) लश्कर, जो तुम्हें नज़र नहीं आते थे, (आसमान से) उतारे और काफ़िरों को अज़ाब दिया और कुफ़्र करने वालों की यही सज़ा है। (२६) फिर ख़ुदा इस के बाद जिस पर चाहे, मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमाये और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[1] (२७) मोमिनो! मुश्रिक तो पलीद हैं, तो इस वर्ष के बाद वे ख़ाना-ए-काबा के पास न जाने पाएं और अगर तुम को ग़रीबी का डर हो, तो ख़ुदा चाहेगा, तो तुम को अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। बेशक ख़ुदा सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (२८) जो लोग अह्ले किताब में से ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते और न आख़िरत के दिन पर (यक़ीन रखते हैं) और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं, जो ख़ुदा और उसके रसूल ने हराम की हैं और न दीने हक़ को क़ुबूल करते हैं, उन से जंग करो, यहां तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जिज़्या दें। (२९) ★

और यहूद कहते हैं कि उज़ैर ख़ुदा के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह ख़ुदा के बेटे हैं। यह उन के मुंह की बातें हैं। पहले काफ़िर भी इसी तरह की बातें कहा करते थे, ये भी उन्हीं की रीस करने लगे हैं। ख़ुदा इनको हलाक करे, ये कहां बहके फिरते हैं। (३०) इन्होंने अपने उलेमा और

---

१. इन आयतों में ख़ुदा ने उन मेहरबानियों का इज़्हार फ़रमाया है, जो मुसलमानों पर की थीं। जब मक्का फ़त्ह हो चुका और मक्का वाले इस्लाम ले आये, तो जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर पहुंची कि हवाज़िन क़बीले के लोग हुनैन में आप के साथ लड़ाई करने को जमा हैं। यह वाक़िआ सन् ०८ हि० का है। हवाज़िन एक तीरंदाज़ क़ौम थी और हुनैन एक वादी है जो मक्के और तायफ़ के दर्मियान वाक़ेअ है। मुसलमानों की फ़ौज ग्यारह या बारह या सोलह हज़ार थी और काफ़िर सिर्फ़ चार हज़ार। इन्हें अपनी फ़ौज की ज़्यादती पर घमंड हो गया कि काफ़िर हैं ही क्या। उन को तो यों ही मार कर भगा देंगे। ख़ुदा को घमंड पसन्द न था। जब ये दुश्मन की तरफ़ चले तो वे जंगल के रास्तों और पहाड़ के दर्रों में बड़ी मुस्तैदी से उन की घात में लगे हुए थे। हज़रत सल्ल० मय सहाबा रज़ि० के सुबह के अंधेरे में मैदान में उतरे थे कि उन्हों ने यकायक तीरंदाज़ी शुरू कर दी। तलवारें खींच कर यकबारगी ऐसा हमला किया कि मुसलमानों की फ़ौज बिखर गयी, मगर हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि अपने ख़च्चर पर सवार थे, उसी तरह जमें रहे और उस को दुश्मनों की तरफ़ बढ़ाया। आप के चचा अब्बास रज़ि० रकाब पकड़े हुए थे और दूसरी रकाब अबू सुफ़ियान बिन हर्स बिन अब्दुल

(शेष पृष्ठ ३०३ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इत्तख़ज़ू अह़्बारहुम् व रुह्बानहुम् अर्बाबम्मिन दूनिल्लाहि वल्मसीह़ब् - न
मर्-य-म ج व मा उमिरू इल्ला लियअ्-बुदू इलाहंव्वाहिदन् ج ला इला-ह
इल्ला हु-व ط सुब्ह़ानहू अम्मा युश्रिकून (३१) युरीदू-न अंय्युत़्फ़िऊ
नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम् व यअ्बल्लाहु इल्ला अंय्युतिम्-म नूरहू व लौ
करिहल्-काफ़िरून (३२) हुवल्लज़ी अर्स-ल
रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्ह़क़्क़ि
लियुज़्हिरहू अलद्दीनि कुल्लिही لا व
लौ करिहल् - मुश्रिकून ●(३३) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न कसीरम्मिनल्-
अह़्बारि वर्रुह्बानि ल-यअ्कुलू-न अम्वालन्नासि
बिल्बात़िलि व यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि ط
वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज़्ज़-ह-ब वल्-फ़िज़्ज़-त़ व
ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि لا
फ़ - बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम لا
(३४) यौ-म युह़्मा अ़लैहा फ़ी नारि
ज-हन्-न-म फ़तुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व
जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम् ط हाज़ा मा
क-नज़्तुम् लि-अन्फ़ुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्निज़ून (३५) इन् - न
अ़िद्दतश्शुहूरि अ़िन्दल्लाहिस्ना-अ-श्-र शह्रन् फ़ी किताबिल्लाहि यौ - म
ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर् - ज़ मिन्हा अर्ब-अ़तुन् ह़ुरुमुन् ط ज़ालिकद्दीनुल् -
क़य्यिमु لا फ़ला तज़्लिमू फ़ीहिन् - न अन्फ़ुसकुम् व क़ातिलुल्-मुश्रिकी - न
काफ़्फ़-तन् कमा युक़ातिलूनकुम् काफ़्फ़-तन् ط वअ् - लमू अन्नल्ला - ह
म - अ़ल्मुत्तक़ीन (३६) इन्नमन्नसीउ ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्रि युज़ल्लु
बिहिल्लज़ी-न क-फ़रू युहिल्लूनहू आमंव्-व युह़र्रिमूनहू आमल्-लियुवातिउ
अ़िद्-द - त़ मा ह़र्रमल्लाहु फ़युहिल्लू मा ह़र्रमल्लाहु ط ज़ुय्यि - न लहुम्
सूउ अअ् - मालिहिम् ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल् - काफ़िरीन ★(३७)

واعلموا ١٠ ١٥٣ التوبة ٩

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا
اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣١ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يُّطْفِــُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ
وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٣٢ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ
دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٣٣
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ
النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ
اَلِيْمٍ ۝٣٤ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ
وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْنِزُوْنَ ۝٣٥ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ
اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڏ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ
كَاۗفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۗفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ
الْمُتَّقِيْنَ ۝٣٦ اِنَّمَا النَّسِيْۗءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِــُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۭ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْۗءُ اَعْمَالِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا

النصف

منزل ٢

● नि. १/२ ★रु. ५/११ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मशाइख़ (बुज़ुर्गों) और मसीह इब्ने मरयम को अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना लिया, हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करें। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। और वह उन लोगों के शरीक मुक़र्रर करने से पाक है। (३१) ये चाहते हैं कि ख़ुदा के नूर को अपने मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें और ख़ुदा अपने नूर को पूरा किये बग़ैर रहने का नहीं, अगरचे काफ़िरों को बुरा ही लगे। (३२) वही तो है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा, ताकि उस (दीन) को (दुनिया के) तमाम दीनों पर ग़ालिब करे, अगरचे काफ़िर ना-ख़ुश ही हों। **(३३)** ● मोमिनो !(अह्ले किताब के) बहुत-से आलिम और मशाइख़ लोगों का माल ना-हक़ खाते और (उन को) ख़ुदा की राह से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उस को ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते, उन को उस दिन के दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो, (३४) जिस दिन वह माल दोज़ख़ की आग में (ख़ूब) गर्म किया जाएगा, फिर उस में इन (बख़ीलों) की पेशानियां और पहलू और पीठें दाग़ी जाएंगी (और कहा जाएगा कि) यह वही है, जो तुम ने अपने लिए जमा किया था, सो जो तुम जमा करते थे, (अब) उसका मज़ा चखो। (३५) ख़ुदा के नज़दीक महीने गिनती में (बारह हैं, यानी) उस दिन (से) कि उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया। ख़ुदा की किताब में (वर्ष के) बारह महीने (लिखे हुए) हैं। उन में से चार महीने[1] अदब के हैं। यही दीन (का) सीधा रास्ता है। तो इन (महीनों) में (ना-हक़ ख़ूंरेज़ी से) अपने आप पर ज़ुल्म न करना और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो, जैसे वे सब के सब तुम से लड़ते हैं और जान रखो कि ख़ुदा परहेज़गारों के साथ है। (३६) अम्न के किसी महीने को हटा कर आगे-पीछे कर देना कुफ़्र में बढ़ती करता है। इस से काफ़िर गुमराही में पड़े रहते हैं। एक साल तो उस को हलाल समझ लेते हैं और दूसरे साल हराम, ताकि अदब के महीनों की, जो ख़ुदा ने मुक़र्रर किये है, गिनती पूरी कर लें और जो ख़ुदा ने मना किया है, उसको जायज़ कर लें। उन के बुरे अमल उन को भले दिखायी देते हैं और ख़ुदा काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (३७) ★

(पृष्ठ ३०१ का शेष)

मुत्तलिब के हाथ में थी। वह ख़च्चर को रोकते थे कि तेज़ न चले। हज़रत अपना नामे मुबारक ले-ले कर मुसलमानों को पुकारते थे कि ख़ुदा के बंदो! कहां जाते हो, मेरी तरफ़ आओ। मैं ख़ुदा का रसूल हूं। यह भी फ़रमाते थे कि 'अनन्नबीयु ला कज़िब० अनब्नु अब्दिल मुत्तलिब'। लिखा है कि सौ के क़रीब सहाबी साबित क़दम रहे, बाक़ी सब के पांव उखड़ गये। आप ने अपने चचा अब्बास से, कि वह बुलंद आवाज़ थे, इर्शाद फ़रमाया कि ख़ूब ज़ोर से पुकारें। वह पुकारने लगे तो लोग हज़रत की तरफ़ रुजू हुए। जब कुछ लोग इस तरह पर जमा हो गये, तो हज़रत ने उन को हमला करने का हुक्म दिया। चुनांचे इस हमले में हवाज़िन को हार हुई। इस लड़ाई में ख़ुदा ने मुसलमानों की मदद के लिए फ़रिश्तों का लश्कर भेजा, जो मुसलमानों की तसल्ली की वजह बना। ग़रज़ ख़ुदा ने मुसलमानों को उन के इतराने और घमंड करने पर चेतावनी दे कर उन्हें जिताया। इस लड़ाई में कुफ़्फ़ार के क़त्ल और गिरफ़्तारी के अलावा बहुत-सा माल हाथ आया। कहते हैं कि इस से ज़्यादा कोई बड़ी ग़नीमत हाथ नहीं आयी थी।

१. ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मा लकुम् इज़ा क़ी-ल लकुमुन्फ़िरू फ़ी
सबीलिल्लाहिस्साक़ल्तुम् इलल्अर्ज़ि ط अ-रज़ीतुम् बिल्-ह्यातिद्दुन्या मिनल्-
आख़िरति ج फ़-मा मताअुल्-ह्यातिद्दुन्या फ़िल्आख़िरति इल्ला क़लील (३८)
इल्ला तन्फ़िरू युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव् ۵ - व यस्तब्दिल्
क़ौमन् ग़ै-रकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन् ط
वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (३९)
इल्ला तन्सुरूहु फ़-क़द् न-स-रहुल्लाहु इज़्
अख़-र-जहुल्लज़ी-न क-फ़रू सानियस्नैनि इज़्
हुमा फ़िल्ग़ारि इज़् यक़ूलु लिसाहिबिही
ला तह्-ज़न् इन्नल्ला-ह म-अ़ना ج
फ़-अन्-ज़-लल्लाहु सकी-न-तहू अ़लैहि व अय्यदहू
बिजुनूदिल्लम् तरौहा व ज-अ़-ल कलिमतल्-
लज़ी-न क-फ़रुस्सुफ़्ला ط व कलिमतुल्लाहि
हियल्अुल्या ط वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम
(४०) इन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़ंव्-व सिक़ालंव्-व
जाहिदू बिअम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी
सबीलिल्लाहि ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन्
कुन्तुम् तअ़्लमून (४१) लौ का-न अ़-र-ज़न् क़रीबंव्-व स-फ़-रन् क़ासिदल्लत्तबअ़ू-क
व लाकिम्-बअ़ुदत् अ़लैहिमुश्शुक़्क़तु ط व स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लविस्त-तअ़्ना
ल-ख़-रज्ना म-अ़कुम् ج युह्लिकू-न अन्फ़ुसहुम् ج वल्लाहु यअ़्-लमु इन्नहुम्
ल-काज़िबून ★ (४२) अ़-फ़ल्लाहु अ़न्-क ج लि-म अज़िन्-त लहुम् ह़त्ता
य-त-बय्य-न ल-कल्लज़ी-न स-दक़ू व तअ़्-ल-मल्काज़िबीन (४३) ला
यस्तअ़्ज़िनु-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि अंय्युजा-हिदू
बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ط वल्लाहु अ़लीमुम्-बिलमुत्तक़ीन (४४)

يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ
لَكُمُ انْفِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا
قَلِيْلٌ ۝٣٨ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا
غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٩
اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِىَ
اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِى الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ
مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ
كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِىَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝٤٠ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤١ لَوْ كَانَ
عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ
الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ
يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٤٢ عَفَا اللّٰهُ
عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝٤٣ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝٤٤

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनो ! तुम्हें क्या हुआ है कि जब तुम से कहा जाता है कि ख़ुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकलो, तो तुम (काहिली की वजह से) ज़मीन पर गिरे जाते हो (यानी घरों से निकलना नहीं चाहते) ? क्या तुम आख़िरत (की नेमतों) को छोड़ कर दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हो बैठे हो ? दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे तो आखिरत के मुक़ाबले बहुत ही कम हैं। (३८) अगर तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुमको बड़ी तक्लीफ़ का अज़ाब देगा और तुम्हारी जगह और लोग पैदा कर देगा (जो ख़ुदा के पूरे फ़रमांबरदार होंगे) और तुम उस को कुछ नुक़्सान न पहुंचा सकोगे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (३९) अगर तुम पैग़म्बर की मदद न करोगे तो ख़ुदा उन का मददगार है। (वह वक़्त तुमको याद होगा) जब उन को काफ़िरों ने घरों से निकाल दिया, (उस वक़्त) दो (ही शख़्स थे, जिन) में (एक अबूबक्र थे), दूसरे (ख़ुद अल्लाह के रसूल), जब वे दोनों (सौर के) ग़ार में थे, उस वक़्त पैग़म्बर अपने साथी को तसल्ली देते थे कि ग़म न करो, ख़ुदा हमारे साथ है, तो ख़ुदा ने उन पर तस्कीन नाज़िल फ़रमायी और उन को ऐसी फ़ौजों से मदद दी, जो तुम को नज़र नहीं आते थे और काफ़िरों की बात को पस्त कर दिया और बात तो ख़ुदा ही की बुलंद है और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (४०) तुम हल्के हो या बोझल (यानी माल व अस्बाब थोड़ा रखते हो या बहुत, घरों से) निकल आओ और ख़ुदा के रास्ते में माल और जान से लड़ो। यही तुम्हारे हक़ में अच्छा है, बशर्ते कि समझो। (४१) अगर ग़नीमत का माल आसानी से हासिल हो जाने वाला और सफ़र भी हल्का-सा होता, तो तुम्हारे साथ (शौक़ से) चल देते, लेकिन सफ़र उनको दूर (का) नज़र आया, (तो उज़्र करेंगे) और ख़ुदा की क़स्में खाएंगे कि अगर हम ताक़त रखते, तो आपके साथ निकल खड़े होते। ये (ऐसे उज़्रों से) अपने आप को हलाक कर रहे हैं और ख़ुदा जानता है कि ये झूठे हैं। (४२) ★

ख़ुदा तुम्हें माफ़ करे। तुमने इससे पहले कि, वे लोग भी ज़ाहिर हो जाते, जो सच्चे हैं और वे भी तुम्हें मालूम हो जाते जो झूठे हैं, उन को इजाज़त क्यों दी ? (४३) जो लोग ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वे तुम से इजाज़त नहीं मांगते (कि पीछे रह जाएं, बल्कि चाहते हैं कि) अपने माल और जान से जिहाद करें और ख़ुदा डरने वालों को जानता है। (४४)

★रु. ६/१२ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नमा यस्तअ्जिनुकल्लजी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि
वर्ताबत् क़ुलूबुहुम् फ़हुम् फ़ी रैबिहिम् य-त-रद्ददून (४५) व लौ अरादुल्-
ख़ुरू-ज ल-अ-अद्दू लहू अ़द्दतंव्-व लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआसहुम् फ़-सब्-ब-तहुम् व
क़ीलक़्अुदू मअल्क़ाअिदीन (४६) लौ ख़-रजू फ़ीकुम् मा ज़ादूकुम् इल्ला
ख़बालंव्-व ल औज़अ़ू ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुल्-
फ़ित-न-तु ج व फ़ीकुम् सम्माअ़ू-न लहुम् ط
वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़्ज़ालिमीन (४७)
ल-क़दिब्त-ग़वुल्-फ़ित्-न-तु मिन् क़ब्लु व
क़ल्लबू ल-कल्-उमू-र हत्ता जा-अल्हक़्क़ु
व ज-ह-र अम्रुल्लाहि व हुम् कारिहून
(४८) व मिन्हुम् मंय्यक़ूलुअ्-ज़ल्ली व
ला तफ़्तिन्नी ط अला फ़िल्फ़ित - नति
स-क़तू ط व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम्
बिलकाफ़िरीन (४९) इन् तुसिब्-क ह-स-नतुन्
तसुअ्हुम् ج व इन् तुसिब्-क मुसीबतुंय्यक़ूलू
क़द् अ - ख़ज़्ना अम - रना मिन् क़ब्लु
व य-त - वल्लव्वहुम् फ़रिहून (५०)

التوبة ١٥٥ واعلموا

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ
قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ
لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ
اقْعُدُوا مَعَ الْقٰعِدِينَ ﴿٤٦﴾ لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا
وَلَأَوْضَعُوا خِلٰلَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمّٰعُونَ لَهُمْ
وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِالظّٰلِمِينَ ﴿٤٧﴾ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا
لَكَ الْأُمُورَ حَتّٰى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُونَ ﴿٤٨﴾ وَ
مِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا
وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكٰفِرِينَ ﴿٤٩﴾ إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ
تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا
مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا
كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰىنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾
قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ
بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا
فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا
لَنْ يُتَقَبَّلَ مِنْكُمْ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِينَ ﴿٥٣﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ
أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللّٰهِ وَبِرَسُولِهِ وَ

منزل ٢

क़ुल्लंय्युसीबना इल्ला मा क-त-बल्लाहु लना ج हु-व मौलाना ج व अ़-लल्लाहि
फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (५१) क़ुल् हल् त-रब्बसू-न बिना इल्ला
इह्दल् - हुस - नयैनि ط व नह्नु न-त-रब्बसु बिकुम् अंय्युसी-ब - कुमुल्लाहु
बिअ़ज़ाबिम् - मिन् अि़न्दिही औ बिऐदीना صلے फ़ - त - रब्बसू इन्ना
म-अ़कुम् मु-त - रब्बिसून (५२) क़ुल् अन्फ़िक़ू तौअ़न् औ करहल्-
लंय्युत - क़ब्ब - ल मिन्कुम् ط इन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमन् फ़ासिक़ीन (५३)
व मा म-न-अ़हुम् अन् तुक़्ब-ल मिन्हुम् न-फ़-क़ातुहुम् इल्ला अन्नहुम्
क - फ़रू बिल्लाहि व बिरसूलिही व ला यअ्तूनस्सला - त इल्ला व
हुम् कुसाला व ला युन्फ़िक़ू - न इल्ला व हुम् कारिहून (५४)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इजाज़त वही लोग मांगते हैं, जो ख़ुदा पर और पिछले दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं, सो वे अपने शक में डांवा-डोल हो रहे हैं। (४५) और अगर वे निकलने का इरादा करते हैं तो उसके लिए सामान तैयार करते, लेकिन ख़ुदा ने उनका उठना (और निकलना) पसन्द न किया, तो उनको हिलने-जुलने ही न दिया और (उनसे) कह दिया गया कि जहां (माज़ूर) बैठे हैं, तुम भी उन के साथ बैठे रहो। (४६) अगर वे तुम में (शामिल होकर) निकल भी खड़े होते तो, तुम्हारे हक़ में शरारत करते और तुम में फ़साद डलवाने की ग़रज़ से दौड़े-दौड़े फिरते और तुम में उन के जासूस भी हैं और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (४७) ये पहले भी फ़साद चाहने वाले रहे हैं और बहुत-सी बातों में उलट-फेर करते रहे हैं, यहां तक कि हक़ आ पहुंचा और ख़ुदा का हुक्म ग़ालिब हुआ और वे बुरा मानते ही रह गये। (४८) और उन में कोई ऐसा भी है, जो कहता है कि मुझे तो इजाज़त ही दीजिए और आफ़त में न डालिए। देखो, ये आफ़त में पड़ गये हैं और दोज़ख़ सब काफ़िरों को घेरे हुए है। (४९) (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम को आराम (व सुख) मिलता है, तो उन को बुरा लगता है और अगर कोई कठिन (घड़ी आ) पड़ती है, तो कहते हैं कि हमने अपना काम पहले ही (ठीक) कर लिया था और ख़ुशियां मनाते लौट जाते हैं। (५०) कह दो कि हम को कोई मुसीबत नहीं पहुंच सकती, उस के अलावा, जो ख़ुदा ने हमारे लिए लिख दी हो। वही हमारा कारसाज़ है और मोमिनों को ख़ुदा ही का भरोसा रखना चाहिए। (५१) कह दो कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में से एक के इंतिज़ार में हो और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के इंतिज़ार में हैं कि ख़ुदा (या तो) अपने पास से तुम पर कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से अज़ाब दिलवाये तो तुम भी इंतिज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करते हैं। (५२) कह दो कि तुम (माल) ख़ुशी से ख़र्च करो या ना-ख़ुशी से, हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा। तुम नाफ़रमान लोग हो। (५३) और उन के ख़र्च (मालों) के क़ुबूल होने में कोई चीज़ रोक नहीं बनी, सिवा इसके कि उन्होंने ख़ुदा से और उसके रसूल से कुफ़्र किया और नमाज़ को आते हैं, तो सुस्त व काहिल हो कर और ख़र्च करते हैं तो ना-ख़ुशी से। (५४) तुम उन के माल और औलाद से ताज्जुब न करना।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़ला तुअ्-जिब-क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् ط इन्नमा युरीदुल्लाहु
लियु-अ़्ज़िबहुम् बिहा फ़िल्ह़यातिद्दुन्या व तज़्-ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम्
काफ़िरून (५५) व यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम् ط व मा हुम्
मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् क़ौमुंय्यफ़्रक़ून (५६) लौ यजिदू-न मल्ज-अन् औ
मग़ारातिन् औ मुद्द-ख़-लल्-ल वल्लौ इलैहि व
हुम् यज्महून (५७) व मिन्हुम्
मंय्यलमिज़ु-क फ़िस्स़-द-क़ाति ج फ़-इन् उअ्-तू
मिन्हा रज़ू व इल्लम् युअ्-तौ मिन्हा
इज़ा हुम् यस्ख़तून (५८) व लौ अन्नहुम्
रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू لا
व क़ालू ह़स्बुनल्लाहु सयुअ्तीनल्लाहु
मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू لا
इन्ना इलल्लाहि राग़िबून ★ (५९)
इन्नमस्स़-द-क़ातु लिल्फ़ुक़राइ वल्मसाकीनि
वल्आमिली-न अलैहा वल्मुअल्लफ़ति क़ुलूबु-
हुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमी-न व फ़ी
सबीलिल्लाहि वब्निस्सबीलि ط फ़री-ज़्-तम्-
मिनल्लाहि ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (६०) व मिन्हुमुल्लज़ी-न
युअ्ज़ूनन्नबिय्-य व यक़ूलू-न हु-व उज़ुनुन् ط क़ुल् उज़ुनु ख़ैरिल्लकुम्
युअ्मिनु बिल्लाहि व युअ्मिनु लिल्-मुअ्मिनी-न व रह़्मतुल्-लिल्लज़ी-न
आमनू मिन्कुम् ط वल्लज़ी-न युअ्ज़ू-न रसूलल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन्
अलीम (६१) यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् ج वल्लाहु
व रसूलुहू अ-ह़क़्क़ु अंय्युर्ज़ूहु इन् कानू मुअ्मिनीन (६२)
अ-लम् यअ्-लमू अन्नहू मंय्युहादिदिल्ला-ह व रसूलहू फ़अन्-न लहू
ना-र ज-हन्न-म ख़ालिदन् फ़ीहा ط ज़ालिकल्-ख़िज़्युल्-अ़ज़ीम ● (६३)

واعلموا ١٠　　　١٥٦　　　التوبة ٩

لَا يَأْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝٥٤
فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٥٥
وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ ۝٥٦ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا
اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝٥٧ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ فَاِنْ
اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝٥٨ وَ
لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ
سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩ ع
اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ
قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ
فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦٠ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
النَّبِىَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٦١ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٦٢
اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ

منزل ٢

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा चाहता है कि इन चीज़ों से दुनिया की ज़िंदगी में उन को अज़ाब दे और (जब) उन की जान निकले, तो (उस वक़्त भी) वे काफ़िर ही हों। (५५) और ख़ुदा की क़स्में खाते हैं कि वे तुम्हीं में से हैं हालांकि वे तुम में से नहीं हैं। असल यह है कि ये डरपोक लोग हैं। (५६) अगर उन को कोई बचाव की जगह (जैसे क़िला) या ग़ार व मग़ाक या (ज़मीन के अंदर) घुसने की जगह मिल जाए, तो उसी तरह रस्सियां तुड़ाते हुए भाग जाएं। (५७) और उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि सदक़ों (की तक़्सीम) में तुम पर ताना ज़नी करते हैं। अगर उन को उसमें से (अच्छा-भला कुछ) मिल जाए तो ख़ुश रहें और अगर (इस क़दर) न मिले तो झट ख़फ़ा हो जाएं। (५८) और अगर वे इस पर ख़ुश रहते जो ख़ुदा और उसके रसूल ने उनको दिया था और कहते कि हमें ख़ुदा काफ़ी है और ख़ुदा अपने फ़ज़्ल से और पैग़म्बर (अपनी मेहरबानी से) हमें (फिर) दे देंगे और हमें तो ख़ुदा ही की ख़्वाहिश है, (तो उन के हक़ में बेहतर होता)। (५९) ★

सदक़े (यानी ज़कात व ख़ैरात) तो मुफ़्लिसों और मुहताजों और सदक़ात के लिए काम करने वालों का हक़ है और उन लोगों का जिन के दिलों का रखना मंज़ूर है और ग़ुलामों के आज़ाद कराने में और क़र्ज़दारों (के क़र्ज़ अदा करने में) और ख़ुदा की राह में और मुसाफ़िरों (की मदद) में (भी यह माल ख़र्च करना चाहिए। ये हुक़ूक़) ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर कर दिए गये हैं और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (६०) और इन में कुछ ऐसे हैं, जो पैग़म्बर को ईज़ा (तक्लीफ़) देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स निरा कान है।[1] (उन से) कह दो कि (वह) कान (है, तो) तुम्हारी भलाई के लिए। वह ख़ुदा का और मोमिनों (की बात) का यक़ीन रखता है और जो लोग तुम में ईमान लाये हैं, उन के लिए रहमत है और जो लोग रसूले ख़ुदा को रंज पहुंचाते हैं, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब (तैयार) है। (६१) मोमिनो ! ये लोग तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़स्में खाते हैं, ताकि तुम को ख़ुश कर दें, हालांकि अगर ये (दिल से) मोमिन होते, तो ख़ुदा और और उसके पैग़म्बर ख़ुश करने के ज़्यादा हक़दार हैं ● (६२) क्या इन लोगों को मालूम नहीं कि जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल से मुक़ाबला करता है, तो उसके लिए जहन्नम की आग (तैयार) है, जिस में वह हमेशा (जलता) रहेगा, यह बड़ी रुसवाई है। (६३) मुनाफ़िक़ डरते रहते हैं कि उन

---

१. कुछ मुनाफ़िक़ जनाब सरवरे कायनात को ईज़ा देते थे यानी कहते थे कि ये तो निरे कान हैं। जो कोई उन से बात कह देता है, उस को हमारे हक़ में सच जान लेते हैं और जब हम आ कर क़सम खा लेते हैं तो हमें सच्चा जानते हैं। ख़ुदा ने फ़रमाया कि यह बात नहीं कि वह हक़ व बातिल में तमीज़ नहीं करते, बल्कि सच्चे को झूठे से ख़ूब पहचानते हैं, लेकिन अमलन दरगुज़र करते हैं और जो मुनाफ़िक़ ऐसी बात कह कर पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईज़ा देते हैं, उन को सख़्त अज़ाब होगा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह्ज़रुल् मुनाफ़िक़ू-न अन् तुनज़्ज़-ल अलैहिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बिमा फ़ी
क़ुलूबिहिम् ط क़ुलिस्तह्ज़िऊ ج इन्नल्ला-ह मुख़्रिजुम् - मा तह्ज़रून (६४)
व लइन् स-अल्तहुम् ल-यक़ूलुन्-न इन्नमा कुन्ना नख़ूज़ु व नल्अबु ط क़ुल्
अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन (६५) ला
तअ्-तज़िरू क़द् क-फ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम् ط
इन्नअ् - फ़ु अन् ताइफ़तिम् - मिन्कुम्
नुअज़्ज़िब् ताइ-फ़ - तम् - बिअन्नहुम् कानू
मुज्रिमीन ★ (६६) अल्मुनाफ़िक़ू - न
वल्मुनाफ़िक़ातु बअ् - ज़ुहुम् मिम्बअ्-ज़िन् ⁂
यअ्मुरू-न बिल्मुन्करि व यन्हौ-न अनिल्मअ्-रूफ़ि
व यक़्बिज़ू - न ऐदियहुम् ط नसुल्ला - ह
फ़-नसि-यहुम् ط इन्नल्-मुनाफ़िक़ी - न हुमुल् -
फ़ासिक़ून (६७) व-अ-दल्लाहुल्-मुनाफ़िक़ी-न
वल्मुनाफ़िक़ाति वल्कुफ़्फ़ा-र ना-र ज-हन्न-म
ख़ालिदी-न फ़ीहा ط हि - य हस्बुहुम् ج व
ल-अ - नहुमुल्लाहु ج व लहुम् अज़ाबुम्मुक़ीम لا
(६८) कल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् कानू अशद् - द मिन्कुम् क़ुव्वतंव्-व
अक्स-र अम्वालंव् - व औलादन् ط फ़स्तम्तअू बिख़लाक़िहिम् फ़स्तम्तअ् - तुम्
बिख़लाक़िकुम् क-मस-तम्त-अल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् बिख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम्
कल्लज़ी ख़ाज़ू ط उलाइ-क हबितत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ج
व उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून (६९) अ-लम् यअ्तिहिम् न-ब-उल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द لا व क़ौमि इब्राही-म व
अस्हाबि मद्-य-न वल्मुअ्तफ़िकाति ط अ-ततहुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति ج फ़मा
कानल्लाहु लि-यज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (७०)

التوبة ٩　　١٥٧　　واعلموا ١٠

جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ
أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ
اسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ
كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ
إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا
مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ۘ
يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ
أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٦٧﴾
وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٦٨﴾
كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَ
أَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا
اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي
خَاضُوا ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۙ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ

ربع ۔ وقف لازم

منزل ٢

★रु. ८/१४ आ ७ ⁂ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(के पैग़म्बर) पर कहीं कोई ऐसी सूरत (न) उतर आये कि उनके दिल की बातों का उन (मुसलमानों) पर ज़ाहिर कर दे। कह दो कि हंसी किये जाओ। जिस बात से तुम डरते हो, ख़ुदा उस को ज़रूर ज़ाहिर कर देगा। (६४) और अगर तुम उन से (इस बारे में) पूछो, तो कहेंगे कि हम तो यों ही बात-चीत और दिल्लगी करते थे कहो, क्या तुम ख़ुदा और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसी करते थे? (६५) बहाने मत बनाओ, तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो। अगर हम तुम में से एक जमाअत को माफ़ कर दें तो दूसरी जमाअत को सज़ा भी देंगे, क्योंकि वे गुनाह करते रहे हैं। (६६) ★

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक दूसरे के हम जिंस (यानी एक ही तरह के) हैं, कि बुरे काम करने को कहते और नेक कामों से मना करते और (ख़र्च करने से) हाथ बन्द किये रहते हैं, उन्होंने ख़ुदा को भुला दिया तो ख़ुदा ने भी उन को भुला दिया। बेशक मुनाफ़िक़ ना-फ़रमान हैं। (६७) अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से जहन्नम की आग का वायदा किया है, जिसमें हमेशा (जलते) रहेंगे। वही उन के लायक़ हैं और ख़ुदा ने उन पर लानत कर दी है और उनके लिए हमेशा का अज़ाब (तैयार) है। (६८) (तुम मुनाफ़िक़ लोग) उन लोगों की तरह हो, जो तुम से पहले हो चुके हैं, वह तुम से बहुत ताक़तवर और माल व औलाद में कहीं ज़्यादा थे, तो वे अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके सो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके हैं, उसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठा लिया और जिस तरह वे बातिल में डूबे रहे, उसी तरह तुम बातिल में डूबे रहे। ये वह लोग हैं, जिन के अमल दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो गये। और यही नुक़्सान उठाने वाले हैं। (६९) क्या इन को उन लोगों (के हालात) की ख़बर नहीं पहुंची, जो इन से पहले थे (यानी नूह और आद और समूद की क़ौम और इब्राहीम की क़ौम और मद्यन वाले, उलटी हुई बस्तियों वाले, उन के पास पैग़म्बर निशानियां ले-ले कर आए और ख़ुदा तो ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (७०)

★रु. ८/१४ आ ७ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्मुअ्मिनू-न वल्मुअ्मिनातु बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ▨ यअ्मुरू-न
बिल्-मअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युक़ीमूनस्सला-त़ व युअ्तूनज़्ज़का-त़ व
युतीअूनल्ला-ह व रसूलहू ط उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाहु ط इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन्
ह़कीम (७१) व-अ़-दल्लाहुल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री
मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व
मसाकि-न त़य्यि-ब-तन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन् ط
व रिज़्वानुम्-मिनल्लाहि अक्बरु ط
ज़ालि-क हुवल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम ★ (७२)
या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र
वल्मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम् ط व
मअ्वाहुम् जहन्नमु ط व बिअ्सल्मसीर
(७३) यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि मा क़ालू ط
व ल-क़द् क़ालू कलि-म-तल्-कुफ़्रि व क-फ़रू
बअ्-द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम्
यनालू ج व मा न-क़मू इल्ला अन्
अग़्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही ج

التوبة ٩ ١٥٨ واعلموا ١٠

وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ٧٠ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ٧١ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ
عَدْنٍ ۭ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٧٢
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ٧٣ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۭ
وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا
بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ
فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ
اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ٧٤ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىِٕنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ٧٥ فَلَمَّآ
اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ٧٦

وقف لازم

ع ٩

منزل

फ़इंय्यतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् ج व इंय्य-त-वल्लौ युअ़ज़्ज़िब्-हुमुल्लाहु अ़ज़ाबन्
अलीमन् ۙ फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ج व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिव्वलिय्यिंव्वला
नसीर (७४) व मिन्हुम् मन् आ़ह-दल्ला-ह लइन् आताना मिन्
फ़ज़्लिही ल-नस्सद्द-क़न्-न व ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (७५) फ़-लम्मा
आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व त-व-ल्लव्-व हुम् मुअ्-रिज़ून (७६)

▨ व. लाज़िम ★रु. ९/१५ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं कि अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और ख़ुदा और उस के पैग़म्बर की इताअत करते हैं। यही लोग हैं, जिन पर ख़ुदा रहम करेगा, बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (७१) ख़ुदा ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से बहिश्तों का वायदा किया है, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (वे) उनमें हमेशा रहेंगे और हमेशा-हमेशा की बहिश्तों में उम्दा मकानों का (वायदा किया है) और ख़ुदा की रज़ामंदी तो सब से बढ़ कर नेमत है। यही बड़ी कामियाबी है। (७२) ★

ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और बुरी जगह है। (७३) ये ख़ुदा की क़स्में खाते हैं कि उन्होंने (तो कुछ) नहीं कहा, हालांकि उन्होंने कुफ़्र का कलिमा कहा है और ये इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो गये हैं और ऐसी बात का क़स्द कर चुके हैं, जिस पर क़ुदरत नहीं पा सके और उन्होंने (मुसलमानों में) ऐब ही कौन-सा देखा है, सिवा इस के कि ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से और उसके पैग़म्बर ने (अपनी मेहरबानी से) उन को दौलतमंद कर दिया है, तो अगर ये लोग तौबा कर लें, तो उन के हक़ में बेहतर होगा और अगर मुंह फेर लें, तो ख़ुदा उन को दुनिया और आख़िरत में दुख देने वाला अज़ाब देगा और ज़मीन में उनका कोई दोस्त और मददगार न होगा। (७४) और उनमें कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने ख़ुदा से अह्द किया था कि अगर वह हम को अपनी मेहरबानी से (माल) अता फ़रमाएगा, तो हम ज़रूर ख़ैरात किया करेंगे और नेक लोगों में हो जाएंगे। (७५) लेकिन जब ख़ुदा ने उनको अपने फ़ज़्ल से (माल) दिया तो उसमें बुख़्ल करने लगे और (अपने अह्द से) रू-गरदानी कर के फिर बैठे। (७६) तो ख़ुदा

व. लाज़िम ★रु. ९/१५ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-अअ़्-क़-बहुम् निफ़ाक़न् फ़ी क़ुलूबिहिम् इला यौमि यल्क़ौनहू बिमा अख़्-लफ़ुल्ला-ह
मा व-अ़दूहु व बिमा कानू यक्ज़िबून (७७) अ-लम् यअ़्-लमू अन्नल्ला-ह
यअ़्-लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अ़ल्लामुलग़ुयूब ج (७८) अल्लज़ी-न
यल्मिज़ूनल्-मुत्तव्विई-न मिनल्-मुअ्मिनी - न फ़िस्स-द - क़ाति वल्लज़ी - न
ला यजिदू-न इल्ला जुह्-दहुम् फ़-यस्ख़रू-न
मिन्हुम् ط सख़िरल्लाहु मिन्हुम् ز व
लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (७९) इस्तग़्फ़िर्
लहुम् औ ला तस्तग़्फ़िर् लहुम् ط इन्
तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्अ़ी - न मर्र-तन्
फ़-लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम् ط ज़ालि-क बिअन्नहुम्
क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही ط वल्लाहु
ला यह्दिल्क़ौमल् - फ़ासिक़ीन ★ (८०)
फ़रिहल्-मुख़ल्लफ़ू-न बिमक़्अ़दिहिम् ख़िला-फ़
रसूलिल्लाहि व करिहू अंय्युजाहिदू
बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्-
लाहि व क़ालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि ط

وٱعلموا ١٠ — ١٥٩ — التوبة ٩

فأعقبهم نفاقا في قلوبهم إلى يوم يلقونه بما أخلفوا الله
ما وعدوه وبما كانوا يكذبون ۝ ألم يعلموا أن الله يعلم
سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب ۝ الذين
يلمزون المطوعين من المؤمنين في الصدقت والذين
لا يجدون إلا جهدهم فيسخرون منهم سخر الله منهم
ولهم عذاب أليم ۝ استغفر لهم أو لا تستغفر لهم إن
تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم ذلك
بأنهم كفروا بالله ورسوله والله لا يهدي القوم الفسقين ۝
فرح المخلفون بمقعدهم خلف رسول الله وكرهوا أن
يجهدوا بأموالهم وأنفسهم في سبيل الله وقالوا لا
تنفروا في الحر قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا
يفقهون ۝ فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا
يكسبون ۝ فإن رجعك الله إلى طائفة منهم فاستأذنوك
للخروج فقل لن تخرجوا معي أبدا ولن تقاتلوا معي
عدوا إنكم رضيتم بالقعود أول مرة فاقعدوا مع الخلفين ۝
ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره
إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فسقون ۝ ولا

منزل ٢

क़ुल् नारु ज-हन्न-म अशद्दु हर्रन् ط लौ कानू यफ़्क़हून (८१) फ़ल्-यज़्हकू
क़लीलंव्वल्-यब्कू कसीरन् ج जज़ा - अम् - बिमा कानू यक्सिबून (८२)
फ़इर्-र-ज - अ़कल्लाहु इला ता-इफ़तिम्-मिन्हुम् फ़स्तअ्ज़नू - क लिल्ख़ुरूजि
फ़क़ुल्लन् तख़्रुजू मअि-य अ-ब-दंव्-व लन् तुक़ातिलू मअि-य अ़दुव्वन् ط इन्नकुम्
रज़ीतुम् बिल्क़ुअ़ूदि अव्व-ल मर्रतिन् फ़क्अ़ुदू म-अ़ल्-ख़ालिफ़ीन (८३) व ला
तुसल्लि अ़ला अ-हदिम्मिन्हुम् मा-त अ-ब-दंव्-व ला तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही ط
इन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फ़ासिक़ून (८४)

★ रु॰ १०/१६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ने उसका अंजाम यह किया कि उस दिन तक के लिए, जिस में वे ख़ुदा के सामने हाज़िर होंगे, उन के दिलों में निफ़ाक़ डाल दिया, इस लिए कि उन्होंने ख़ुदा से जो वायदा किया था, उस के ख़िलाफ़ किया और इसलिए कि वे झूठ बोलते थे। (७७) क्या उनको मालूम नहीं कि ख़ुदा उन भेदों और मश्विरों तक को जानता है और यह कि वह ग़ैब की बातें जानने वाला है। (७८) जो (ताक़त वाले) मुसलमान दिल खोलकर ख़ैरात करते हैं और जो (बेचारे ग़रीब) सिर्फ़ उतना ही कमा सकते हैं, जितनी मज़दूरी करते (और उस थोड़ी-सी कमाई में से भी खर्च करते) हैं, उन पर जो (मुनाफ़िक़) तान करते और हंसते हैं, ख़ुदा उन पर हंसता है और उन के लिए तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब (तैयार) है।[1] (७९) तुम उन के लिए बख़्शिश मांगो या न मांगो, (बात एक है) अगर उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश मांगोगे, तो भी ख़ुदा उन को नहीं बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्होंने ख़ुदा और उसके रसूल से कुफ़्र किया और ख़ुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (८०) ★

जो लोग (तबूक की लड़ाई) में पीछे रह गये, वे पैग़म्बर (की मर्ज़ी) के ख़िलाफ़ बैठे रहने से ख़ुश हुए और इस बात को ना-पसंद किया कि ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से जिहाद करें और (औरों से भी) कहने लगे कि गर्मी में मत निकलना। (उन से) कह दो कि दोज़ख़ की आग इस से कहीं ज़्यादा गर्म है। काश! ये (इस बात) को समझते। (८१) ये दुनिया में) थोड़ा-सा हंस लें और (आख़िरत में) उनको उन आमाल के बदले, जो करते रहे हैं, बहुत-सा रोना होगा। (८२) फिर अगर ख़ुदा तुम को उन में से किसी गिरोह की तरफ़ ले जाए और वह तुम से निकलने की इजाज़त तलब करें, तो कह देना कि तुम मेरे साथ हरगिज़ नहीं निकलोगे और न मेरे साथ (मदद-गार हो कर) दुश्मन से लडाई करोगे। तुम पहली बार बैठे रहने से ख़ुश हुए तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। (८३) और (ऐ पैग़म्बर!) इन में से कोई मर जाए तो कभी उस (के जनाज़े) पर नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर (जा कर) खड़े होना। ये ख़ुदा और उस के रसूल के साथ कुफ़्र करते रहे और मरे भी तो ना-फ़रमान (ही मरे), (८४) और उन के माल और

---

१. जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैरात के लिए हुक्म फ़रमाया तो मोमिन अपनी-अपनी ताक़त के मुताबिक़ माल लाने लगे। कोई तो बहुत-सा रुपया लाया और कोई अनाज। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ चार हज़ार दिरहम लाये और कहा कि मेरे पास आठ हज़ार दिरहम थे। चार हज़ार मैं अल्लाह तआला को क़र्ज़ देने के लिए ले आया हूं और चार हजार तो बीवी-बच्चों के ख़र्च के लिए छोड़ आया हूं। आसिम के पास रुपया न था, वह चार सेर ग़ल्ला लाये, वह भी जौ और कहने लगे कि मैं मज़दूरी कर के आठ सेर जौ लाया था, चार सेर ख़ैरात करता हूं और चार सेर बच्चों के लिए रखे हैं। यह हालत देख कर मुनाफ़िक़ ताने देने और मज़ाक़ उड़ाने लगे। अब्दुर्रहमान को तो कहने लगे कि इस ने दिखावे के लिए इतना माल दे दिया है, ताकि लोग तारीफ़ करें और आसिम के बारे में कहने लगे कि इन मियां को देखो, न सोना, न चांदी, जौ ही उठा लाए कि नाम ख़ैरात करने वालों में होगा --

हम भी लहू लगा के शहीदों में मिल गये

भला जौ क्या और ख़ैरात क्या और ख़ुदा को इन जवों की ज़रूरत ही क्या है? ख़ुदा ने फ़रमाया कि जिस तरह से मुनाफ़िक़ मुसलमानों से मज़ाक़ करते हैं, ख़ुदा भी इन को अज़ाब दे कर उन के मज़ाक़ का जवाब देगा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तुअ़् - जिब - क अम्वालुहुम् व औलादुहुम् ط इन्नमा युरीदुल्लाहु
अंय्यु-अ़्ज़्जिबहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज़्-ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (८५)
व इज़ा उन्ज़ि-लत् सूरतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू म-अ़ रसूलि
हिस्-तअ्-ज-न-क उलुत्तौलि मिन्हुम् व क़ालू ज़र्ना नकुम्म-अ़ल्-क़ाअ़िदीन (८६)
रज़ू बिअंय्यकूनू म-अल्-ख़वालिफ़ि व तुबि-अ़
अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (८७)
लाकिनिर्रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म - अ़हू
जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ط
व उलाइ-क लहुमुल्ख़ैरातु ۏ व उलाइ-क
हुमुल्मुफ़्लिहून (८८) अ-अ़द्दल्लाहु लहुम्
जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु
ख़ालिदी - न फ़ीहा ط ज़ालिकल् - फ़ौज़ुल् -
अ़ज़ीम ★ (८९) व जा-अल्-मुअ़ज़्ज़िरू-न
मिनल्-अअ़्-राबि लियुअ - ज़-न लहुम् व
क़-अ़-दल्लज़ी-न क-ज़बुल्ला - ह व रसूलहू ط
सयुसीबुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन्
अलीम (९०) लै-स अ़-लज़्ज़ुअ़फ़ा-इ व ला अ़-लल्मर्ज़ा व ला अ़-लल्लज़ी-न
ला यजिदू-न मा युन्फ़िक़ू-न ह़-रजुन् इज़ा न-स़हू लिल्लाहि व रसूलिही ط मा
अ़ - लल् - मुह़्सिनी - न मिन् सबीलिन् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम ۷ (९१)
व ला अ़-लल्लज़ी-न इज़ा मा अतौ-क लितह़्मि-लहुम् क़ुल्-त ला अजिदु
मा अह़्मिलुकुम् अ़लैहि ۏ त-वल्लव्-व अअ़्-युनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अ़ि ह़-ज़-नन्
अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून ط (९२) इन्नमस्सबीलु अ़ - लल्लज़ी - न
यस्तअ्ज़िनू-न - क व हुम् अग़्निया - उ ۏ रज़ू बिअंय्यकूनू मअल्ख़वालिफ़ि ۷
व त़ - ब - अल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यअ़् - लमून (९३)

تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا
فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِذَآ اُنْزِلَتْ
سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا
الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا
مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ
وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ
الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا
عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا
عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ
تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾
اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ
يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

★रु. ११/१७ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

औलाद से ताज्जुब न करना। इन चीज़ों से ख़ुदा यह चाहता है कि उन को दुनिया में अज़ाब करे और (जब) उन की जान निकले तो (उस वक़्त भी) ये काफ़िर ही हों। (८५) और जब कोई सूरः नाज़िल होती है कि ख़ुदा पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ हो कर लड़ाई करो, तो जो उन में दौलतमंद हैं, वे तुम से इजाज़त तलब करते हैं और कहते हैं कि हमें तो रहने ही दीजिए कि जो लोग घरों में रहेंगे, हम भी उन के साथ रहें। (८६) ये इस बात से ख़ुश हैं कि औरतों के साथ, जो पीछे रह जाती हैं (घरों में बैठे) रहें। उन के दिलों पर मुहर लगा दी गयी है, तो ये समझते ही नहीं। (८७) लेकिन पैग़म्बर और जो लोग उन के साथ ईमान लाये, सब अपने माल और जान से लड़े। इन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं।[1] और यही मुराद पाने वाले हैं। (८८) ख़ुदा ने उन के लिए बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे, यह बड़ी कामियाबी है। (८९)। ★

और सहरा नशीनों में से भी कुछ लोग उज़्र करते हुए (तुम्हारे पास) आये कि उन को भी इजाज़त दी जाए और उन्हों ने ख़ुदा और उन के रसूल से झूठ बोला, वे (घर में) बैठे रहे। सो जो लोग उन में से काफ़िर हुए हैं, उन को दुख देने वाला अज़ाब पहुंचेगा। (९०) न तो बूढ़ों पर कुछ गुनाह है और न बीमारों पर और न उन पर जिन के पास ख़र्च मौजूद नहीं (कि जिहाद में शरीक हों, यानी) जबकि ख़ुदा और उस के रसूल की भलाई चाहने वाले (और दिल से उन के साथ) हों। भले लोगों पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं है और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (९१) और न उन (बे सर व सामान) लोगों पर (इल्ज़ाम है कि तुम्हारे पास आए कि उन को सवारी दो और तुम ने कहा कि मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं, जिस पर तुम को सवार करूं, तो वह लौट गए और इन ग़म से कि उन के पास ख़र्च मौजूद न था, उन की आंखों से आंसू बह रहे थे। (९२) इल्ज़ाम तो उन लोगों पर है जो दौलतमंद हैं और (फिर) तुम से इजाज़त तलब करते हैं (यानी) इस बात से ख़ुश हैं कि औरतों के साथ जो पीछे रह जाती हैं (घरों में बैठ) रहें। ख़ुदा ने उन के दिलों पर मुहर

१. यानी उन के वास्ते दोनों दुनिया की नेकियां हैं, दुनिया में फ़त्ह और ग़नीमत का माल और आख़िरत में करामत और बहिश्त।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग्यारहवां पारः यअ्-तज़िरून

सूरतुत्तौबति आयत ९४ से १२९

यअ्-तज़िरू-न इलैकुम् इज़ा र-जअ्-तुम् इलैहिम् ط क़ुल्ला तअ्-तज़िरू लन्नुअ्मि-न
लकुम् क़द् नब्ब-अ-नल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम् ط व स-य-रल्लाहु अ-म-लकुम् व
रसूलुहू सुम्-म तुरद्दू-न इला आलिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिउकुम् बिमा
कुन्तुम् तअ्-मलून (९४) स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् इज़न्क़लब्तुम् इलैहिम्
लितुअ्-रिज़ू अन्हुम् ط फ़-अअ्-रिज़ू अन्हुम् ط
इन्नहुम् रिज्सुंव् - व मअ्वाहुम्
जहन्नमु ج जज़ा-अम् - बिमा कानू यक्सिबून
(९५) यह्लिफ़ू-न लकुम् लितरज़ौ
अन्हुम् ج फ़-इन् तर्ज़ौ अन्हुम्
फ़इन्नल्ला-ह ला यर्ज़ा अनिल् - क़ौमिल्-
फ़ासिक़ीन (. ९६) अल्अअ्-राबु अशद्दु
कुफ़्रंव्-व निफ़ाक़ंव्-व अज्दरु अल्ला यअ्-लमू
हुदू-द मा अन्ज़लल्लाहु अला रसूलिही ط
वल्लाहु अलीमुन् हकीम (९७) व
मिनल्अअ्-राबि मंय्यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु
मग़्रमंव -व य-त-रब्बसु बिकुमुद्दवाइर ط
अलैहिम् दाइरतुस्सौइ ط वल्लाहु समीअुन्
अलीम (९८) व मिनल्अअ्-राबि मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि
व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् अिन्दल्लाहि व स - ल-वातिर्रसूलि ط
अला इन्नहा क़ुर् - बतुल्लहुम् ط सयुद्ख़िलुहुमुल्लाहु फ़ी रह्मतिही ط
इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (९९) वस्साबिक़ूनल्-अव्वलू-न मिनल्मुहाजिरी - न
वल्अन्सारि वल्लज़ीनत्त - ब - अू - हुम् बिइह्सानिर् - रज़ियल्लाहु अन्हुम्
व रज़ू अन्हु व अ-अद्-द लहुम् जन्नातिन् तज्री तह-तहल्-अन्हारु
ख़ालिदी - न फ़ीहा अ-ब - दन् ط ज़ालिकल् - फ़ौज़ुल् - अज़ीम (१००)

يعتذرون ١١ ١٩١ التوبة ٩

يعتذرون اليكم اذا رجعتم اليهم ط قل لا تعتذروا لن
نؤمن لكم قد نبانا الله من اخباركم ط وسيرى الله عملكم
ورسوله ثم تردون الى علم الغيب والشهادة فينبئكم بما
كنتم تعملون ﴿٩٤﴾ سيحلفون بالله لكم اذا انقلبتم اليهم
لتعرضوا عنهم ط فاعرضوا عنهم ط انهم رجس وماوىهم جهنم
جزاء بما كانوا يكسبون ﴿٩٥﴾ يحلفون لكم لترضوا عنهم فان
ترضوا عنهم فان الله لا يرضى عن القوم الفسقين ﴿٩٦﴾ الاعراب
اشد كفرا ونفاقا واجدر الا يعلموا حدود ما انزل الله على
رسوله ط والله عليم حكيم ﴿٩٧﴾ ومن الاعراب من يتخذ ما ينفق
مغرما ويتربص بكم الدوائر ط عليهم دائرة السوء ط والله
سميع عليم ﴿٩٨﴾ ومن الاعراب من يؤمن بالله واليوم الاخر
ويتخذ ما ينفق قربت عند الله وصلوت الرسول ط الا انها
قربة لهم ط سيدخلهم الله في رحمته ط ان الله غفور رحيم ﴿٩٩﴾ ع ١٢
والسبقون الاولون من المهجرين والانصار والذين اتبعوهم
باحسان رضي الله عنهم ورضوا عنه واعد لهم جنت تجري
تحتها الانهر خلدين فيها ابدا ط ذلك الفوز العظيم ﴿١٠٠﴾ وممن
حولكم من الاعراب منفقون ط ومن اهل المدينة مردوا

منزل

★रु. १२/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लगा दी है। पस वे समझते नहीं। (९३) जब तुम उन के पास वापस जाओगे, तो तुम से उज़्र करेंगे। तुम कहना कि उज़्र मत करो, हम हरगिज़ तुम्हारी बात नहीं मानेंगे। ख़ुदा ने हम को तुम्हारे सब हालात बता दिए हैं और अभी ख़ुदा और उस का रसूल तुम्हारे अमलों को (और) देखेंगे, फिर तुम ग़ायब व हाज़िर के जानने वाले (एक ख़ुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे। और जो अमल तुम करते रहे हो, वह सब तुम्हें बताएगा। (९४) जब तुम उन के पास लौट कर जाओगे, तो तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़स्में खाएंगे, ताकि तुम उनको दरगुज़र करो, सो उन की तरफ़ तवज्जोह न करना। ये ना-पाक हैं और जो काम ये करते रहे हैं, उन के बदले उन का ठिकाना दोज़ख़ है। (९५) ये तुम्हारे आगे क़स्में खाएंगे, ताकि तुम उन से ख़ुश हो जाओ, लेकिन अगर तुम उन से ख़ुश हो जाओगे, तो ख़ुदा तो नाफ़रमान लोगों से ख़ुश नहीं होता। (९६) देहाती लोग सख़्त काफ़िर और सख़्त मुनाफ़िक़ हैं और इस क़ाबिल हैं कि जो (शरीअत से) अह्काम ख़ुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाए हैं, उन्हें जानते (ही) न हों और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (९७) और कुछ देहाती हैं कि जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसे जुर्माना समझते हैं और तुम्हारे हक़ में मुसीबतों के इन्तिज़ार में हैं। उन्हीं पर बुरी मुसीबत (वाक़ेअ) हो और ख़ुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है। (९८) और कुछ देहाती ऐसे हैं कि ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं, उस को ख़ुदा की क़ुर्बत और पैग़म्बर की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। देखो वह बे-शुब्हा उन के क़ुर्बत (की वजह) है। ख़ुदा उन को बहुत जल्द अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला है। (९९) ★

जिन लोगों ने सबक़त की (यानी सब से) पहले (ईमान लाए) मुहाजिरों में से भी और अन्सार में से भी और जिन्हों ने भले लोगों के साथ उन की पैरवी की, ख़ुदा उन से ख़ुश है और वे ख़ुदा से ख़ुश हैं और उन के लिए बाग़ तैयार किए हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) हमेशा उन में रहेंगे। यह कामियाबी है। (१००) और तुम्हारे पास-पड़ोस के कुछ देहाती मुनाफ़िक़ हैं∴और कुछ मदीने वाले भी निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं,∴तुम उन्हें नहीं जानते, हम जानते हैं। हम उन को दोहरा अज़ाब देंगे, फिर वह बड़े अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (१०१) और कुछ और लोग हैं कि अपने

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिम्मन् हौलकुम् मिनल्अअ्-राबि मुनाफ़िक़ू-न ط व मिन् अह्लिल्-
मदीनति قف ▨ म-रदू अलन्निफ़ाक़ि قف ला तअ्-लमुहुम् ط नह्नु
नअ्-लमुहुम् ط सनु-अ़ज़्ज़िबुहुम् मर्रतैनि सुम्-म युरद्दू-न इला अ़ज़ाबिन् अ़ज़ीम ج
(१०१) व आख़रूनअ्-त-रफ़ू बिज़ुनूबिहिम् ख़-लतू अ-म-लन् सालिहंव्-व आख़-र
सय्यिअन् ط अ-सल्लाहु अंय्यतू-ब अ़लैहिम् ط
इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१०२) ख़ुज़् मिन्
अम्वालिहिम् स-द-क़-तन् तुतह्हिरुहुम् व
तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम् ط
इन्-न सला-त-क स-कनुल्लहुम् ط वल्लाहु
समीअुन् अ़लीम (१०३) अ-लम् यअ्-लमू
अन्नल्ला-ह हु-व यक़्बलुत्तौब-त अन् अ़िबादिही
व यअ्ख़ुज़ुस्स-द-क़ाति व अन्नल्ला-ह
हुवत्तव्वाबुर्रहीम (१०४) व क़ुलिअ्-मलू
फ़-स-य-रल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू वल्-
मुअ्मिनू-न ط व सतुरद्दू-न इला आ़लिमिल्ग़ैबि
वश्शहादति फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम्
तअ्-मलून ج (१०५) व आख़रू-न मुर्जौ-न
लिअम्रिल्लाहि इम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम् ط वल्लाहु
अ़लीमुन् हकीम (१०६) वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मस्जिदन् ज़िरारंव्-व कुफ़्रंव्-व
तफ़्रीक़म्-बैनल्मुअ्मिनी-न व इर्सादल्लिमन् हार-बल्ला-ह व रसूलहू मिन्
क़ब्लु ط व ल-यह्लिफ़ुन्-न इन् अरद्ना इल्लल्-हुस्ना ط वल्लाहु यश्हदु
इन्नहुम् ल-काज़िबू-न (१०७) ला तक़ुम् फ़ीहि अ-ब-दन् ط ल-मस्जिदुन् उस्सि-स
अ़लत्तक़्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अहक़्क़ु अन् तक़ू-म फ़ीहि ط फ़ीहि
रिजालुंय्युहिब्बू-न अंय्यत-तह्हरू ط वल्लाहु युहिब्बुल्-मुत्तह-हिरीन (१०८)
अ फ़-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि व रिज़्वानिन् ख़ैरुन्
अम् मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़न्हा-र
बिही फ़ी नारि ज-हन्न-म ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (१०९)

يعتذرون ١١ ١٦٢ التوبة ٩

عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ط نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ط سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ
يُرَدُّونَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۝١٠١ وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا
عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ط عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ط اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠٢ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا
وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ط اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ط وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١٠٣ اَلَمْ
يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ
اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝١٠٤ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ
رَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ط وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٠٥ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَ
اِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠٦ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا
ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ط وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَا اِلَّا الْحُسْنٰى ط وَاللّٰهُ يَشْهَدُ
اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٠٧ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ط لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى
مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ط فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ط
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝١٠٨ اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ
اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ
فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠٩ لَا

منزل ٢

∴ मु. अ़ि मु. ता क़. ५ ▨ व. मंज़िल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गुनाहों का (साफ़) इक़रार करते हैं। उन्हों ने अच्छे और बुरे अमलों को मिला-जुला दिया था। क़रीब है कि ख़ुदा उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमाये। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१०२) उन के माल में से ज़कात क़ुबूल कर लो कि उस से तुम उन को (ज़ाहिर में) भी पाक और (बातिन में भी) पाकीज़ा करते हो और उन के हक़ में दुआ-ए-ख़ैर करो कि तुम्हारी दुआ उन की तस्दीक़ की वजह है और ख़ुदा सुनने वाला जानने वाला है। (१०३) क्या ये लोग नहीं जानते कि ख़ुदा ही अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल फ़रमाता और सद्क़ात (व ख़ैरात) लेता है और बेशक ख़ुदा ही तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है। (१०४) और उन से कह दो कि अमल किये जाओ, ख़ुदा और उस का रसूल और मोमिन (सब) तुम्हारे अमलों को देख लेंगे और तुम ग़ायब व हाज़िर के जानने वाले (एक ख़ुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे। फिर जो कुछ करते रहे हो, वह सब तुम को बता देगा। (१०५) और कुछ और लोग हैं, जिन का काम ख़ुदा के हुक्म पर रुका हुआ है, चाहे उन को अज़ाब दे और चाहे माफ़ कर दे और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (१०६) और (उन में ऐसे भी हैं), जिन्हों ने इस ग़रज़ से मस्जिद बनायी है कि नुक़्सान पहुंचाएं और कुफ़्र करें और मोमिनों में फूट डालें और जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल से पहले जंग कर चुके हैं उन के लिए घात की जगह बनाएं और क़स्में खाएंगे कि हमारा मक़्सूद तो सिर्फ़ भलाई थी, मगर ख़ुदा गवाही देता है कि वे झूठे हैं। (१०७) तुम इस (मस्जिद) में कभी (जा कर) खड़े भी न होना, अल-बत्ता वह मस्जिद जिस की बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गयी है, इस क़ाबिल है कि इस में जाया (और नमाज़ पढ़ाया) करो। इस में ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसन्द करते हैं और ख़ुदा पाक रहने वाले ही को पसन्द करता है। (१०८) भला जिस शख़्स ने अपनी इमारत की बुनियाद ख़ुदा के ख़ौफ़ और उस की रज़ामंदी पर रखी, वह अच्छा है या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद गिर जाने वाली खाई के किनारे पर रखी कि वह उस को दोज़ख़ की आग में ले कर गिरी।[1] और ख़ुदा

---

१. मदीने में एक मस्जिद थी जो मस्जिदे क़बा के नाम से मशहूर थी। हज़रत सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर हफ़्ते के दिन वहां तश्रीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते। मुनाफ़िक़ों ने चाहा कि उस के मुक़ाबले में अपनी एक अलग मस्जिद बनाएं। इस की बुनियाद यह हुई कि मदीने में आंहज़रत के तश्रीफ़ ले जाने से पहले एक शख़्स अबू आमिर नाम का रहता था जो जाहिलियत के ज़माने में ईसाई हो गया था, निहायत टेढ़े मिज़ाज का आदमी था। वह आप के मदीना में तश्रीफ़ ले जाने पर इस्लाम तो क्या लाता, आप का खुल्लम-खुल्ला दुश्मन हो गया और वहां से निकल कर मक्के के काफ़िरों से जा मिला और उन को आंहज़रत से लड़ने पर उभारा। चुनांचे उहुद की लड़ाई हुई और वह उस में काफ़िरों के साथ था, फिर रोम के बादशाह के पास चला गया और उस से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले के लिए मदद चाही। उस ने मदद का वायदा कर लिया। यह उस के पास ठहरा रहा और मदीने के काफ़िरों को लिख भेजा कि रोम से बहुत जल्द एक लश्कर आता है, जो मुसलमानों को तबाह कर देगा। तुम एक मज़बूत जगह बना रखो, जहां वह शख़्स, जो उस के पास से पैग़ाम पहुंचाने आया करे, क़ियाम किया करे, तो उन लोगों ने मस्जिदे क़बा के पास ही एक मस्जिद बनानी शुरू की। इस मस्जिद को मस्जिदे ज़रार कहते हैं। जब वह तैयार हो चुकी, तो मुनाफ़िक़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे कि हम ने बीमारों और कमज़ोरों के लिए, साथ ही बरसात के ख़्याल से एक मस्जिद बनायी है। आप वहां तश्रीफ़ ले चलें और नमाज़ पढ़ें और बरकत की दुआ करें, ताकि वहां

(शेष पृष्ठ ३२३ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ला यज़ालु बुन्यानुहुमुल्लज़ी बनौ री-ब-तन् फ़ी क़ुलूबिहिम् इल्ला अन्
त-क़त्त-अ क़ुलूबुहुम् ط वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम ★ (११०) इन्नल्लाहश्तरा
मिनल्मुअ्मिनी-न अन्फ़ु-स-हुम् व अम्वालहुम् बिअन्-न लहुमुल्जन्न-त ط युक़ातिलू-न
फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-यक़्तुलू-न व युक़्तलू-न قف वअ्-दन् अ़लैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति
वल्इन्जीलि वल्क़ुर्आनि ط व मन् औफ़ा
बिअ़ह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू
बिबैअिकुमुल्लज़ी बायअ् - तुम् बिही ط व
ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीम (१११)
अत्ता - इबूनल् - आ़बिदूनल् - हामिदूनस् -
सा - इहूनर् - राकिअूनस् - साजिदूनल् -
आमिरू-न बिलमअ्-रूफ़ि वन्नाहू-न अ़निलमुन्करि
वल्हाफ़िज़ू - न लिहुदूदिल्लाहि ط व
बश्शिरिल् - मुअ्मिनीन (११२) मा का-न
लिन्नबिय्यि वल्लज़ी-न आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू
लिलमुश्रिकी-न व लौ कानू उली क़ुर्बा
मिम्बअ्-दि मा त-बय्य-न लहुम् अन्नहुम्
अस्हाबुलजहीम (११३) व मा कानस्तिग़्फ़ारु

يعتذرون ١١ ١٦٣ التوبة ٩

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ
وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَ
مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ
وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ
الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ
مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ
إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ
قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى
النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ
مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ

منزل ٢

इब्राही - म लिअबीहि इल्ला अम्मौअिदतिंव् - व - अ् - दहा इय्याहु
फ़-लम्मा त-बय्य-न लहू अन्नहू अ़दुव्वुलिल्लाहि तबर्र-अ मिन्हु ط इन्-न इब्राही-म
ल-अव्वाहुन् हलीम (११४) व मा कानल्लाहु लियुज़िल्-ल क़ौमम्-बअ्-द
इज़् हदाहुम् हत्ता युबय्यि - न लहुम् मा यत्तक़ू-न ط इन्नल्ला-ह बिकुल्लि
शैइन् अ़लीम (११५) इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط युह्यी
व युमीतु ط व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर
(११६) ल-क़त्ताबल्लाहु अ़-लन्नबिय्यि वल्मुहाजिरी-न वल्-अन्सारिल्लज़ीनत्तब-अूहु
फ़ी साअ़तिल्-अुस्रति मिम्बअ्-दि मा का-द यज़ीग़ु क़ुलूबु फ़रीक़िम्-मिन्हुम्
सुम्-म ता-ब अ़लैहिम् ط इन्नहू बिहिम् रऊफ़ुर्रहीम (११७)

★रु० १३/२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०९) यह इमारत, जो उन्हों ने बनायी हैं, हमेशा उन के दिलों में शक भरी बेचैनी (की वजह) रहेगी, मगर यह कि उन के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (११०) ★

ख़ुदा ने मोमिनों से उन की जानें और उन के माल ख़रीद लिए हैं (और इस के) बदले में उन के लिए बहिश्त (तैयार की) है। ये लोग ख़ुदा की राह में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे जाते भी हैं। यह तौरात और इंजील और क़ुरआन में सच्चा वायदा है, जिस का पूरा करना उसे ज़रूर है और ख़ुदा से ज़्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है, तो जो सौदा तुम उस से किया है, उस से ख़ुश रहो और यही बड़ी कामियाबी है। (१११) तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ करने वाले, सज्दा करने वाले, नेक कामों का हुक्म देने वाले और बुरी बातों से मना करने वाले, ख़ुदा की हदों की हिफ़ाज़त करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) और ऐ पैग़म्बर मोमिनों को (बहिश्त की) ख़ुशख़बरी सुना दो। (११२) पैग़म्बर और मुसलमानों को मुनासिब नहीं कि जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि मुश्रिक दोज़ख़ी हैं, तो उन के लिए बख़्शिश मांगें, गो वे उन के क़राबतदार (रिश्तेदार) ही हों। (११३) और इब्राहीम का अपने बाप के लिए बख़्शिश मांगना तो एक वायदे की वजह से था, जो वह उस से कर चुके थे, लेकिन जब उन को मालूम हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है, तो उस से बे-ज़ार हो गये। कुछ शक नहीं कि इब्राहीम बड़े नर्म दिल और बुर्दबार थे। (११४) और ख़ुदा ऐसा नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे, जब तक उन को वह चीज़ न बता दे, जिस से वह परहेज़ करें। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (११५) ख़ुदा ही है, जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। वही ज़िंदगानी बख़्शता और मौत देता है, ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं है। (११६) बेशक ख़ुदा ने पैग़म्बर पर मेहरबानी की और मुहाजिरों और अन्सार पर, जो बावजूद इस के कि उन में से कुछ-एक के दिल जल्द फिर जाने को थे, कठिन घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे, फिर ख़ुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमायी। बेशक वह उन से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करने वाला और मेहरबान है। (११७) और उन तीनों पर भी,

---

(पृष्ठ ३२१ का शेष)

जमाअत क़ायम हो जाए। आप को उस वक़्त तक बिल्कुल इल्म न था कि यह मस्जिद किस नीयत और किस ग़रज़ से बनायी गयी है। इस लिए आप ने फ़रमाया कि अब तो हम सफ़र में जा रहे हैं, जब वापस आएंगे, तब इन्शाअल्लाह वहां नमाज़ पढ़ेंगे। जब आप तबूक की लड़ाई से वापस हुए और मदीना पहुंचने में एक-आध दिन का रास्ता रह गया तो यह आयत नाज़िल हुई जिस से आप को मालूम हो गया कि मुनाफ़िक़ों का मक़सद इस मस्जिद के बनाने से, मुसलमानों को मस्जिदे क़ुबा से, जिस की बुनियाद तक़वा पर रखी गयी थी, अलग करना और उन में फूट डालना था, तब आप ने हुक्म दिया कि हमारे पहुंचने से पहले वह मस्जिद ढा दी जाए और जला दी जाए। चुनांचे इस हुक्म की तामील की गयी और मस्जिद ढा दी गयी और जला दी गयी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अ-लस् - सलासतिल्-लज़ी-न ख़ुल्लिफ़ू ᵇ हत्ता इज़ा ज़ाक़त् अलैहिमुल् -
अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अलैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्ला मल्ज-अ
मिनल्लाहि इल्ला इलैहि ᵇ सुम्-म ता - ब अलैहिम् लियतूबू ᵇ इन्नल्ला - ह
हुवत्तव्वाबुर्रहीम ★ (११८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व कूनू
म-अस्सादिक़ीन (११९) मा का-न
लिअह्लिल्-मदीनति व मन् हौल - हुम्
मिनल्अअ्-राबि अंय्य-त-ख़ल्लफ़ू अर्रसूलिल्लाहि
व ला यर्ग़बू बिअन्फ़ुसिहिम् अन्
नफ़्सिही ᵇ ज़ालि - क बिअन्नहुम् ला
युसीबुहुम् ज़-मउंव्-व ला न-स-बुंव्-व ला
मख़्म-स-तुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला य-त्-ऊ-न
मौतिअंय्यग़ीज़ुल्-कुफ़्फ़ा-र व ला यनालू-न
मिन् अदुव्विन्नैलन् इल्ला कुति-ब लहुम्
बिही अ - मलुन् सालिहुन् ᵇ इन्नल्ला - ह
ला युज़ीअु अज्रल् - मुह्सिनीन ˡᵃ
(१२०) व ला युन्फ़िक़ू-न न-फ़-क़-तन्
सग़ीरतंव्-व ला कबीरतंव्-व ला यक़्तअू-न
वादियन् इल्ला कुति - ब लहुम् लियज्ज़ि-य-हुमुल्लाहु अह्-स-न मा कानू
यअ्-मलून (१२१) व मा कानल् - मुअ्मिनू-न लियन्फ़िरू काफ़्फ़तन् ᵇ
फ़लौला न - फ़ - र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम् - मिन्हुम् ताइफ़तुल् -
लिय-त-फ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौमहुम् इज़ा रजअू इलैहिम्
ल - अल्लहुम् यह्ज़रून ★ (१२२) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू
क़ातिलुल्लज़ी - न यलूनकुम् मिनल्कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्-ज़ - तन् ᵇ
वअ् - लमू अन्नल्ला-ह मअ़ल्मुत्तक़ीन ● (१२३) व इज़ा मा उन्ज़िलत्
सूरतुन् फ़मिन्हुम् मंय्यक़ूलु अय्युकुम् ज़ादत्हु हाज़िही ईमानन् ᵇ
फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़-ज़ादत्-हुम् ईमानंव्-व-हुम् यस्तब्शिरून (१२४)

رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۭ حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ
عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ
لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ۭ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ
الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ
نَّفْسِهٖ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ
عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا
يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَاۗفَّةً ۭ فَلَوْلَا نَفَرَ
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَاۗىِٕفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا
قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا
الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ
اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ

★रु० १४/३ आ ८ ★रु० १५/४ आ ४ ● रुबअ् १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिन का मामला मुलतवी किया गया था, यहां तक कि ज़मीन अपने फैलाव के बाद भी उन पर तंग हो गयी और उन की जानें भी उन पर दूभर हो गयीं और उन्हों ने जान लिया कि ख़ुदा के हाथ से ख़ुद उस के सिवा कोई पनाह नहीं। फिर (ख़ुदा) ने उन पर मेहरबानी की ताकि तौबा करें। बेशक ख़ुदा तौबा करने वाला मेहरबान है।[1] (११८) ★

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो। (११९) मदीना वालों को और जो उन के आस-पास देहाती रहते हैं, उन को मुनासिब न था कि ख़ुदा के पैग़म्बर से पीछे रह जाएं और न यह कि अपनी जानों को उन की जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखें। यह इस लिए कि उन्हें ख़ुदा की राह में जो तक्लीफ़ पहुंचती है, प्यास की या मेहनत की या भूख की या वे ऐसी जगह चलते हैं कि काफ़िरों को ग़ुस्सा आये या दुश्मनों से कोई चीज़ लेते हैं तो हर बात पर नेक अमल लिखा जाता है। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा भलों का बदला बर्बाद नहीं करता। (१२०) और (इसी तरह) वे जो ख़र्च करते हैं, थोड़ा या बहुत, या कोई मैदान तै करते हैं, तो यह सब कुछ उन के लिए (भले कामों में) लिख लिया जाता है, ताकि ख़ुदा उनको उनके अमलों का बहुत अच्छा बदला दे। (१२१) और यह तो हो नहीं सकता कि मोमिन सब के सब निकल आएं, तो यों क्यों न किया कि हर एक जमाअत में से कुछ लोग निकल जाते ताकि दीन (का इल्म सीखते और उस) में समझ पैदा करते और जब अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आते तो उन को डर सुनाते ताकि वे हज़्र करते। (१२२) ★

ऐ ईमान वालो ! अपने नज़दीक के (रहने वाले) काफ़िरों से जंग करो और चाहिए कि वह तुम में सख़्ती (यानी मेहनत और लड़ाई की ताक़त) मालूम करें और जान रखो कि ख़ुदा परहेज़गारों के साथ है। (१२३) ● और जब कोई सूरः नाज़िल होती है तो कुछ मुनाफ़िक़ (मज़ाक़ उड़ाते और) पूछते हैं कि इस सूरः ने तुम में से किस का ईमान ज़्यादा किया है ? सो जो ईमान वाले हैं, उन का तो ईमान ज़्यादा किया और वे ख़ुश

---

१. ये तीन शख़्स भी उन्हीं लोगों में हैं, जो तबूक की लड़ाई से पीछे रह गये थे और जनाब रिसालत मआब के साथ लड़ाई में नहीं गये थे। तबूक एक क़स्बे का नाम है, जो शाम और वादिल क़ुरा के दर्मियान वाक़ेअ है। इस लड़ाई से पीछे रह जाने वाले तीन क़िस्म के लोग थे—१. एक मुनाफ़िक़, ये बे-ईमान भला क्यों घर से निकलने लगे थे। उन्हों ने तरह-तरह के हीले-बहाने किये और इस वजह से ख़ुदा ने उन पर सख़्त लानत व तान की, २. दूसरे मुसलमान जो किसी मजबूरी से पीछे रह गये थे, ३. तीसरे यही तीन शख़्स जो किसी मजबूरी से न गये। तो जिन शख़्सों ने अपने क़ुसूरों को मान लिया, उन को माफ़ कर दिया गया, मगर इन तीन शख़्सों का मामला सज़ा के तौर पर पचास दिन तक मुलतवी रखा गया। ये तीन शख़्स मुरारा बिन रबीअ, काब बिन मालिक और हिलाल बिन उमैया थे। इन दिनों में इन पर ऐसी सख़्त हालत गुज़री कि उसे मौत से भी बद-तर समझते थे। आख़िर सच कहने की वजह से उन के क़ुसूर भी माफ़ कर दिए गये।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अम्मल्लजी - न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन् फ़-ज़ादत्हुम् रिज्-सन् इला
रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफ़िरून (१२५) अ-व ला यरौ-न अन्नहुम्
युफ़्तनू-न फ़ी कुल्लि आमिम्-मर्र-तन् औ मर्रतैनि सुम्-म ला यतूबू-न व ला हुम्
यज्जक्करून (१२६) व इज़ा मा उन्ज़ि-लत् सूरतुन् न-ज़-र बअ्-ज़ुहुम्
इला बअ् - ज़िन् ط हल् यराकुम् मिन्
अ-ह़दिन् सुम्मन्स-रफ़ू ط स़-र-फ़ल्लाहु क़ुलूबहुम्
बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (१२७)
ल-क़द् जा-अ कुम् रसूलुम्-मिन् अन्फ़ुसिकुम्
अ़ज़ीज़ुन् अ़लैहि मा अ़नित्तुम् ह़रीसुन्
अ़लैकुम् बिलमुअ्मिनी - न रऊफ़ुर्रहीम
(१२८) फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल्
ह़स् - बियल्लाहु ﺻﻠﮯ ला इला - ह
इल्ला हु-व ط अ़लैहि त-वक्कल्तु व हु-व
रब्बुल् - अ़र्शिल् - अ़ज़ीम ★ (१२९)

يونس ١٠ — ١٦٥ — يعتذرون ١١

هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ
رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ
يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ
يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ط
هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ط صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا
عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ﺻﻠﮯ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّتِسْعُ اٰيَاتٍ وَّاَحَدَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ
اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ
لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ط مَا مِنْ شَفِيْعٍ
اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ط اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾

منزل ٣

१० सूरतु यूनुस ५१

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७७३३ अक्षर, १८६१ शब्द, १०९ आयतें और ११ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़्-लाम्-रा क़फ़ तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-ह़कीम (१) अ-का-न
लिन्नासि अ़-ज-बन् अन् औह़ैना इला रजुलिम्-मिन्हुम् अन् अन्ज़िरिन्ना-स
व बश्शिरिल्लजी-न आमनू अन्-न लहुम् क़-द-म सिद्क़िन् अ़िन्-द रब्बिहिम् ▨
क़ालल्काफ़िरू-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुम्-मुबीन (२) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी
ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़-लल्-अ़र्शि
युदब्बिरुल् - अम् - र ط मा मिन् शफ़ीअ़िन् इल्ला मिम्बअ् - दि
इज़्निही ط जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ्-बुदूहु ط अ-फ़ला त - जक्करून (३)

★रु. १६/५ आ ७ ▨ व. न बी स.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होते हैं। (१२४) और जिनके दिलों में मर्ज़ है, उनके हक़ में गंदगी पर गंदगी ज़्यादा की और वे मरे भी तो काफ़िर के काफ़िर। (१२५) क्या ये देखते नहीं कि ये हर साल एक या दो बारबला में फंसा दिए जाते हैं, फिर भी तौबा नहीं करते और न नसीहत पकड़ते हैं। (१२६) और जब कोई सूर: नाज़िल होती है, तो एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं (और पूछते हैं कि) भला तुम्हें कोई देखता है? फिर जाते हैं। ख़ुदा ने उन के दिलों को फेर रखा है, क्योंकि ये ऐसे लोग हैं कि समझ से काम नहीं लेते। (१२७) (लोगो!) तुम्हारे पास तुम ही में से एक पैग़म्बर आए हैं। तुम्हारी तक्लीफ़ उन को बोझ जान पड़ती है और तुम्हारी भलाई के बड़े ख़्वाहिशमंद हैं। और ईमान वालों पर निहायत मुहब्बत करने वाले (और) मेहरबान हैं। (१२८) फिर अगर ये लोग फिर जाएं (और न मानें) तो कह दो कि ख़ुदा मुझे काफ़ी है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और वही बड़े अर्श का मालिक है। (१२९) ★



१० सूर: यूनुस ५१

सूर: यूनुस मक्की है और इस में एक सौ नौ आयतें और ग्यारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह्म वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह बड़ी दानाई (हिक्मत) की किताब की आयतें हैं। (१) क्या लोगों को ताज्जुब हुआ कि हम ने उन्हीं में से एक मर्द को हुक्म भेजा कि लोगों को डर सुना दो और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो कि उन के परवरदिगार के यहां उन का सच्चा दर्जा है▨ (ऐसे आदमी के बारे में) काफ़िर कहते हैं कि यह तो खुला जादूगर है। (२) तुम्हारा परवरदिगार तो ख़ुदा ही है, जिस ने आसमान और ज़मीन छ: दिन में बनाए, फिर अर्श (तख़्ते शाही) पर क़ायम हुआ। वही हर एक काम का इन्तिज़ाम करता है कोई (उस के पास) उस की इजाज़त हासिल किए बग़ैर (किसी) की सिफ़ारिश नहीं कर सकता। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो। भला

★रु. १६/५ आ ७　▨ व. न बी स.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इलैहि मर्जिअुकुम् जमीअन्‌ ط वअ् - दल्लाहि ह़क़्क़न्‌ ط इन्नहू यब्दउल् -
ख़ल्-क सुम् - म युअीदुहू लियज्‌ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
बिल्‌क़िस्ति़ ط वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् शराबुम्-मिन् ह़मीमिंव्-व अज़ाबुन्
अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून (४) हु-वल्लज़ी ज-अ-लश्शम्-स ज़ियाअंव्वल्क़-म-र
नूरंव्-व क़द्-द-रहू मनाज़ि-ल लितअ्-लमू
अ-द-दस्सिनी-न वल्‌हिसा-ब ط मा ख़-ल-क़ल्लाहु
ज़ालि - क इल्ला बिल्‌ह़क़्क़ि ج युफ़स्सिलुल्-
आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (५) इन्-न
फ़िख़्‌तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा
ख़-ल-क़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्‌अर्ज़ि
लआयातिल्लिक़ौमिंय्यत्तक़ून (६) इन्नल्लज़ी-न
ला यर्जू-न लिक़ा-अना व रज़ू बिल्‌ह़यातिद्दुन्या
वत्म-अन्नू बिहा वल्लज़ी - न हुम् अन्
आयातिना ग़ाफ़िलून ۙ (७) उलाइ-क
मअ्‌वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून (८)
इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
यह्‌दीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् ج तज्‌री मिन् तह़्‌तिहिमुल् - अन्हारु
फ़ी जन्नातिन्नअीम (९) दअ्-वाहुम् फ़ीहा सुब्ह़ान-कल्लाहुम्-म व तह़िय्यतुहुम्
फ़ीहा सलामुन्‌ ج व आख़िरु दअ्-वाहुम् अनिल्‌ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल्-
आलमीन★(१०) व लौ युअ़ज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश् - शर्रस्तिअ्-जा-ल-हुम्
बिल्ख़ैरि लक़ुज़ि-य इलैहिम् अ-जलुहुम् ط फ़-न - ज़रुल्लज़ी-न ला यर्जू - न
लिक़ा - अना फ़ी तुग़्‌यानिहिम् यअ्-महून (११) व इज़ा मस्सल् -
इन्सानज़्ज़ुर्रु द - आना लिजम्बिही औ क़ाअिदन् औ क़ाइमन्
फ़-लम्मा क-शफ़्ना अन्हु ज़ुर्रहू मर्-र क-अल्लम् यद्‌अुना इला ज़ुर्रिम्मस्सहू
कज़ालि-क ज़ुय्यि - न लिल्मुस्रिफ़ी-न मा कानू यअ् - मलून (१२)

يونس ١٠ ١٦٦ يعتذرون ١١

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ
شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ الَّذِيْ
جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ
السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا
يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ
عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا
سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ
لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝١١ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ
قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ
كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٢ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ

منزل ٣

★रु. १/६ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम ग़ौर क्यों नहीं करते ? (३) उसी के पास तुम सब को लौट कर जाना है। ख़ुदा का वायदा सच्चा है, वही ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि ईमान वालो और नेक काम करने वालों को इंसाफ़ के साथ बदला दे। और जो काफ़िर हैं उन के लिए पीने को बहुत गर्म पानी और दर्द देने वाला अज़ाब होगा, क्यों कि (ख़ुदा से) इंकार करते थे। (४) वही तो है जिस ने सूरज को रोशन और चांद को मुनव्वर (नूर) बनाया और चांद की मंज़िलें मुक़र्रर कीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और (कामों का) हिसाब मालूम करो। यह (सब कुछ) ख़ुदा ने तद्बीर से पैदा किया है। समझने वालों के लिए वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है। (५) रात और दिन के (एक दूसरे के पीछे) आने-जाने में और जो चीज़ें ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन में पैदा की हैं (सब में) डरने वालों के लिए निशानियां हैं। (६) जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं और दुनिया की ज़िंदगी से ख़ुश और उसी पर मुत्मइन हो बैठे और हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हो रहे हैं। (७) उन का ठिकाना उन (आमाल) की वजह से, जो वे करते हैं, दोज़ख़ है। (८) (और) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन को परवरदिगार उन के ईमान की वजह से (ऐसे महलों की) राह दिखाएगा (कि) उन के नीचे नेमत के बाग़ों में नहरें बह रही होंगी। (९) (जब वे) उन में (उन की नेमतों को देखेंगे, तो बे-साख़्ता) कहेंगे, सुब्हानल्लाह और आपस में उन की दुआ 'सलामुन् अलैकुम' होगी और उन का आख़िरी क़ौल यह (होगा) कि ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन की हम्द (और उस का शुक्र) है। (१०) ★

और अगर ख़ुदा लोगों की बुराई में जल्दी करता, जिस तरह वे भलाई चाहने में जल्दी करते हैं, तो उन की (उम्र की) मीयाद पूरी हो चुकी होती सो जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं, उन्हें हम छोड़े रखते हैं कि अपनी सर-कशी में बहकते रहें। (११) और जब इंसान को तक्लीफ़ पहुंचती है तो लेटा और बैठा और खड़ा (हर हाल में) हमें पुकारता है, फिर जब हम तक्लीफ़ को इस से दूर कर देते हैं तो (बे-लिहाज़ हो जाता और) इस तरह गुज़र जाता है कि गोया किसी तक्लीफ़ पहुंचने पर हमें कभी पुकारा ही न था। इसी तरह हद से निकल जाने वालों का उन के

★रु. १/६ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् अह्लक्नल्-क़ुरू-न मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़-लमू व जा-अत्हुम्
रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व मा कानू लियुअ्मिनू कज़ालि - क नज्ज़िल्-
क़ौमल्-मुज्रिमीन (१३) सुम्-म ज-अ़ल्नाकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि मिम्बअ्-दि
हिम् लिनन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्-मलून (१४) व इज़ा तुत्ला अलैहिम् आयातुना
बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी - न ला यर्जू-न
लिक़ा-अनअ्ति बिक़ुर्आनिन् ग़ैरि हाज़ा
औ बद्दिल्हु क़ुल् मा यकूनु ली अन्
उबद्दिलहू मिन् तिल्क़ाइ नफ़्सी इन्
अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय् - य
इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब
यौमिन् अ़ज़ीम (१५) क़ुल् लौ शा-अल्लाहु
मा तलौतुहू अ़लैकुम् व ला अद्राकुम्
बिही फ़ - क़द् लबिस्तु फ़ीकुम्
अ़ुमुरम्मिन् क़ब्लिही अ-फ़ला तअ्-क़िलून
(१६) फ़ - मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा
अ - लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़ - ब

يعتذرون ١١ ١٦٧ يونس ١٠

مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا
لِيُؤْمِنُوْا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ
فِى الْاَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ
اَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِىْ اِنْ
اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ فَقَدْ
لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ
يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ
شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَ
لَا فِى الْاَرْضِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ
اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ
بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ
مِّنْ رَّبِّهٖ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾
وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِىْٓ
اٰيَاتِنَا قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ

बिआयातिही इन्नहू ला युफ़्लिहुल् - मुज्रिमून (१७) व यअ् - बुदू-न
मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अ़ुहुम् व यक़ूलू-न हाउलाइ
शुफ़-आउना अ़िन्दल्लाहि क़ुल् अतुनब्बिऊनल्ला - ह बिमा ला यअ् - लमु
फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून
(१८) व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव्वाहि-द - तन् फ़ख़् - त - लफ़ू
व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् फ़ी मा फ़ीहि
यख़-तलिफ़ून (१९) व यक़ूलू - न लौला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-
मिर्रब्बिही फ़क़ुल् इन्नमल् - ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू इन्नी
म-अ़कुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन ★ (२०) व इज़ा अ - ज़क़्नन्ना-स रह्-म-तम्-
मिम्बअ् - दि ज़र्रा-अ मस्सत्हुम् इज़ा लहुम् मक्-रुन् फ़ी आयातिना
क़ुलिल्लाहु अस्-रअ़ु मक्रन् इन्-न रुसुलना यक्तुबू-न मा तम्कुरून (२१)

★ रु. २/७ आ १०

आमाल सजा कर दिखाए गए हैं। (१२) और तुम से पहले हम कई उम्मतों को, जब उन्हों ने ज़ुल्म अख़्तियार किया, हलाक कर चुके हैं और उन के पास पैग़म्बर खुली निशानियां ले कर आये, मगर वे ऐसे न थे कि ईमान लाते। हम गुनाहगार लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (१३) फिर हम ने उन के बाद तुम लोगों को मुल्क में ख़लीफ़ा बनाया, ताकि देखें कि तुम कैसे काम करते हो। (१४) और उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं, वे कहते हैं कि (या तो) इस के सिवा कोई और क़ुरआन (बना) लाओ या इस को बदल दो। कह दो कि मुझ को अख़्तियार नहीं है कि इसे अपनी तरफ़ से बदल दूं। मैं तो उसी हुक्म का ताबेअ हूं जो मेरी तरफ़ आता है। अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फ़रमानी करूं, तो मुझे बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब से ख़ौफ़ आता है। (१५) (यह भी) कह दो कि अगर ख़ुदा चाहता तो (न तो) मैं ही यह (किताब) तुम को पढ़ कर सुनाता और न वही तुम्हें इस के बारे में बताता। मैं इस से पहले तुम में एक उम्र रहा हूं (और कभी एक कलिमा भी इस तरह का नहीं कहा), भला तुम समझते नहीं। (१६) तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े और उस की आयतों को झुठलाए। बेशक गुनाहगार कामियाबी नहीं पाएंगे। (१७) और ये (लोग) ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं, जो न उन का कुछ बिगाड़ ही सकती हैं और न कुछ भला ही कर सकती हैं और कहते हैं कि ये ख़ुदा के पास हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं। कह दो, क्या तुम ख़ुदा को ऐसी चीज़ बताते हो, जिस का वजूद उसे न आसमानों में मालूम होता है और न ज़मीन में। वह पाक है और (उस की शान) उन के शिर्क करने से बहुत बुलंद है। (१८)और (सब) लोग (पहले) एक ही उम्मत (यानी एक ही मिल्लत पर) थे। फिर अलग-अलग हो गए और अगर एक बात जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से पहले हो चुकी है, न होती, तो जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते हैं, उन में फ़ैसला कर दिया जाता। (१९) और कहते हैं कि इस पर उन के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि ग़ैब (का इल्म) तो ख़ुदा ही को है, सो तुम इंतिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं। (२०) ★

और जब हम लोगों को तक्लीफ़ पहुंचने के बाद (अपनी) रहमत (से सुख) का मज़ा चखाते हैं, तो वे हमारी आयतों में ही हीले करने लगते हैं। कह दो कि ख़ुदा बहुत जल्द हीला करने वाला है। और जो हीले तुम करते हो, हमारे फ़रिश्ते उन को लिखते जाते हैं। (२१) वही तो है जो तुम

★रु. २/७ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुवल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह़्रि ط ह़त्ता इज़ा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि
व जरै-न बिहिम् बिरीहि़न् त़य्यिबतिंव्-व फ़रिह़ू बिहा जाअत्हा रीह़ुन्
आसिफ़ुंव्-व जा-अहुमुल्-मौजु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व ज़न्नू अन्नहुम् उह़ी-त
बिहिम् ۙ द-अ-वुल्ला - ह मुख़्लिसी - न लहुद्दीन-न ۚ लइन् अन्जैतना मिन्
हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (२२)
फ़-लम्मा अन्जाहुम् इज़ाहुम् यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि
बिग़ैरिल्ह़क़्क़ि ط या अय्युहन्नासु इन्नमा
बग़्युकुम् अला अन्फ़ुसिकुम् ۙ मताअल् -
ह़यातिद्दुन्या ۡ सुम् - म इलैना मर्जिअुकुम
फ़नुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्‌-मलून (२३)
इन्नमा म - सलुल्-ह़यातिद्दुन्या कमा-इन्
अन्ज़ल्नाहु मिनस्समाइ फ़ख़्-त-ल-त़ बिही
नबातुल्अर्ज़ि मिम्मा यअ्‌कुलुन्नासु
वल् - अन्आमु ط ह़त्ता इज़ा
अ-ख़-ज़तिल्-अर्-ज़ु ज़ुख़्-रुफ़हा वज़्ज़य्य-नत्
व ज़न्-न अह़्लुहा अन्नहुम् क़ादिरू - न
अलैहा ۙ अताहा अम्रुना लैलन् औ
नहारन् फ़-ज-अल्नाहा ह़सीदन् क-अल्लम् तग़्-न बिल् - अम्सि ط कज़ालि-क
नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (२४) वल्लाहु यद्अू इला
दारिस्सलामि ط व यह्दी मंय्यशाउ इला सि़राति़म्मुस्तक़ीम (२५)
लिल्लज़ी-न अह़्सनुल्हुस्ना व ज़िया-द-तुन् ط व ला यर्हक़ु वुजूहहुम् क़-त-रुंव्-व
ला ज़िल्लतुन् ط उलाइ - क अस़्ह़ाबुल् - जन्नति़ ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून
(२६) वल्लज़ी-न क-सबुस्सय्यिआति जज़ाउ सय्यिअति़म् - बिमिस्लिहा ۙ व
तर्हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् ط मा लहुम् मिनल्लाहि मिन् आसि़मिन् ج क - अन्नमा
उग़्शियत् वुजूहुहुम् क़ि-त़-अम्-मिनल्लैलि मुज़्लिमन् ط उलाइ - क अस़्ह़ाबुन्नारि
हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२७) व यौ-म नह़्शुरुहुम् जमीअन् सुम्-म नक़ूलु
लिल्लज़ी - न अश्रकू मकानकुम् अन्तुम् व शुरकाउकुम् ج फ़ - ज़य्यल्ना
बैनहुम् व क़ा-ल शुरकाउ - हुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअ्‌-बुदून (२८)

يعتذرون ١١ ١٦٨ يونس ١٠

الذي يسيركم في البر والبحر حتى إذا كنتم في الفلك وجرين بهم
بريح طيبة وفرحوا بها جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من
كل مكان وظنوا أنهم أحيط بهم دعوا الله مخلصين له الدين
لئن أنجيتنا من هذه لنكونن من الشكرين ۝ فلما أنجاهم إذا هم
يبغون في الأرض بغير الحق يأيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم
متاع الحيوة الدنيا ثم إلينا مرجعكم فننبئكم بما كنتم تعملون ۝
إنما مثل الحيوة الدنيا كماء أنزلنه من السماء فاختلط به نبات
الأرض مما يأكل الناس والأنعام حتى إذا أخذت الأرض زخرفها
وازينت وظن أهلها أنهم قدرون عليها أتاها أمرنا ليلا أو
نهارا فجعلنها حصيدا كأن لم تغن بالأمس كذلك نفصل الأيت
لقوم يتفكرون ۝ والله يدعوا إلى دار السلم ويهدي من يشاء
إلى صراط مستقيم ۝ للذين أحسنوا الحسنى وزيادة ولا يرهق
وجوههم قتر ولا ذلة أولئك أصحب الجنة هم فيها خلدون ۝
والذين كسبوا السيات جزاء سيئة بمثلها وترهقهم ذلة
ما لهم من الله من عاصم كأنما أغشيت وجوههم قطعا من
اليل مظلما أولئك أصحب النار هم فيها خلدون ۝ ويوم نحشرهم
جميعا ثم نقول للذين أشركوا مكانكم أنتم وشركاؤكم فزيلنا

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

को जंगल और दरिया में चलने-फिरने और सैर करने की तौफ़ीक़ देता है, यहां तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और कश्तियां पाकीज़ा हवा (के नर्म-नर्म झोंकों) से सवारों को ले कर चलने लगती हैं और वे उन से ख़ुश होते हैं, तो यकायकी ज़न्नाटे की हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ़ से उन पर (जोश मारती हुई) आने लगती हैं और वे ख़्याल करते हैं कि (अब तो) लहरों में घिर गए, तो उह वक़्त ख़ालिस ख़ुदा ही की इबादत कर के उससे दुआ मांगने लगते हैं कि (ऐ ख़ुदा!) अगर तू हम को इस से निजात बख़्शे तो हम (तेरे) बहुत ही शुक्रगुज़ार हों। (२२) लेकिन जब वह उन को निजात दे देता है, तो मुल्क में ना-हक़ शरारत करने लगते हैं। लोगो ! तुम्हारी शरारत का वबाल तुम्हारी ही जानों पर होगा, तुम दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे उठा लो, फिर तुम को हमारे ही पास लौट कर आना है। उस वक़्त तुम को बताएंगे, जो कुछ तुम किया करते थे। (२३) दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल मेंह की-सी है कि हम ने उस को आसमान से बरसाया। फिर उस के साथ सब्ज़ा, जिसे आदमी और जानवर खाते हैं, मिल कर निकला, यहां तक कि ज़मीन सब्ज़े से ख़ुशनुमा (हुई) और सज गयी और ज़मीन वालों ने ख़्याल किया कि वह इस पर पूरा क़ब्ज़ा रखते हैं, यकायक रात को या दिन को हमारे (अज़ाब का हुक्म) आ पहुंचा, तो हम ने उस को काट (कर ऐसा कर) डाला कि गोया कल वहां कुछ था ही नहीं। जो लोग ग़ौर करने वाले हैं, उन के लिए हम (अपनी क़ुदरत की) निशानियां इसी तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं। (२४) और ख़ुदा सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिस को चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। (२५) जिन लोगों ने भले काम किए, उन के लिए भलाई है और (कुछ) और भी। और उन के मुंहों पर न तो स्याही छाएगी और न रुसवाई। यही जन्नती हैं कि उस में हमेशा रहेंगे। (२६) और जिन्हों ने बुरे काम किये, तो बुराई का बदला वैसा ही होगा और उन के मुंहों पर ज़िल्लत छा जाएगी और कोई उन को ख़ुदा से बचाने वाला न होगा। उन के मुंहों (की स्याही का हाल होगा कि उन) पर गोया अंधेरी रात के टुकड़े उढ़ा दिए गए हैं। यही दोज़ख़ी हैं कि हमेशा उस में रहेंगे। (२७) और जिस दिन हम इन सब को जमा कर देंगे, फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी-अपनी जगह ठहरे रहो, तो हम उन में फूट डाल देंगे उन के शरीक (उन से) कहेंगे कि तुम हम को तो नहीं पूजा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनना व बैनकुम् इन् कुन्ना अन् अिबादतिकुम्
लग़ाफ़िलीन (२९) हुनालि-क तब्लू कुल्लु नफ़्सिम्मा अस्-ल-फ़त् व
रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-ह़क़्क़ि व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून ★● (३०)
क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि अम्मंय्यम्लिकुस्-सम्-अ वल्-अब्सा-र व
मंय्युख़्रिजुल्ह़य-य मिनलमय्यिति व युख़्रिजुल्-
मय्यि-त मिनल्ह़य्यि व मंय्युदब्बिरुल्-अम्-र ط
फ़-स-यक़ूलूनल्लाहु ج फ़क़ुल् अ-फ़ला
तत्तक़ून (३१) फ़-ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-
ह़क़्क़ु ج फ़माज़ा बअ्-दल्-ह़क़्क़ि
इल्लज़्ज़लालु صلے फ़-अन्ना तुस्रफ़ून
(३२) क-ज़ालि-क ह़क़्क़त् कलिमतु रब्बि-क
अ़-लल्लज़ी-न फ़-सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून
(३३) क़ुल् हल् मिन् शुरकाइकुम्
मंय्यब्दउल्-ख़ल-क़ सुम्-म युअीदुहू ط क़ुलिल्लाहु
यब्दउलख़ल-क़ सुम्-म युअीदुहू फ़-अन्ना तुअ्फ़कून
(३४) क़ुल् हल् मिन् शुरकाइकुम्
मंय्यह्दी इलल्ह़क़्क़ि ط क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्ह़क़्क़ि ط अ-फ़-मंय्यह्दी
इलल्ह़क़्क़ि अह़क़्क़ु अंय्युत्त-ब-अ अम्मल्ला यहिद्दी इल्ला अंय्युह्दा ج फ़मा
लकुम् قف कै-फ़ तह्कुमून (३५) व मा यत्तबिअु अक्सरुहुम् इल्ला ज़न्नन् ط
इन्नज़्ज़न-न ला युग़्नी मिनलह़क़्क़ि शैअन् ط इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा
यफ़्-अलून (३६) व मा का-न हाज़ल्क़ुर्आनु अंय्युफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व
लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सीलल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि
मिर्रब्बिल्-आ़लमीन قف (३७) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ط क़ुल् फ़अ्-तू बिसूरतिम्-
मिस्लिही वद्ऊ मनिस्त-तअ्-तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३८)

يعتذرون ١١ ١٦٩ يونس ١٠

بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاۤؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ
تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّاۤ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ
يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ
فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْۤا
اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَاۤىِٕكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۗ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَاۤىِٕكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ ۗ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ
لِلْحَقِّ ۗ اَفَمَنْ يَّهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْۤ
اِلَّاۤ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۗ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا
ظَنًّا ۗ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْــًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۗ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करते थे। (२८) हमारे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। हम तुम्हारी पूजा से बिल्कुल बे-ख़बर थे। (२९) वहां हर आदमी (अपने आमाल की), जो उस ने आगे भेजे होंगे, बुहतान आज़माइश कर लेगा।[1] और वे अपने सच्चे मालिक की तरफ़ लौट जाएंगे और जो कुछ वे बांधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (३०) ★ ●

(उन से) पूछो कि तुम को आसमान व ज़मीन में रोज़ी कौन देता है या (तुम्हारे) कानों और आंखों का मालिक कौन है और बे-जान से जानदार कौन पैदा करता है और जानदार से बे-जान कौन पैदा करता है और दुनिया के कामों का इन्तिज़ाम कौन करता है। झट कह देंगे कि अल्लाह, तो कहो कि फिर तुम (ख़ुदा से) डरते क्यों नहीं? (३१) यही ख़ुदा तो तुम्हारा परवरदिगारे बर-हक़ है और हक़ बात के ज़ाहिर होने के बाद गुमराही के सिवा है ही क्या? तो तुम कहां फिर जाते हो? (३२) इसी तरह ख़ुदा का इर्शाद इन ना-फ़रमानों के हक़ में साबित हो कर रहा कि ये ईमान नहीं लाएंगे। (३३) (उन से) पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि मख़्लूक़ात को पहले पैदा करे (और) फिर उस को दोबारा बनाये। कह दो कि ख़ुदा ही पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा तो तुम कहां उलटे जा रहे हो? (३४) पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कौन ऐसा है कि हक़ का रास्ता दिखाए। कह दो कि ख़ुदा ही हक़ का रास्ता दिखाता है, भला जो हक़ का रास्ता दिखाए, वह इस क़ाबिल है कि उस की पैरवी की जाए या वह कि जब तक कोई उसे रास्ता न बताए, रास्ता न पाए। तो तुम को क्या हुआ है, कैसा इंसाफ़ करते हो? (३५) और उन में के अक्सर सिर्फ़ ज़न (गुमान) की पैरवी करते हैं। और कुछ शक नहीं कि हक़ के मुक़ाबले में कुछ भी कारआमद नहीं हो सकता। बेशक ख़ुदा तुम्हारे (तमाम) कामों को जानता है। (३६) और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि ख़ुदा के सिवा कोई उस को अपनी तरफ़ से बना लाए। हां, (हां, यह ख़ुदा का कलाम है), जो (किताबें) इन से पहले (की) हैं, उन की तस्दीक़ करता है और उन्हीं किताबों की (इस में) तफ़्सील है। इस में शक नहीं (कि) यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। (३७) क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने उस को अपनी तरफ़ से बना लिया है। कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम भी इस तरह की एक सूरः बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिन को तुम बुला सको, बुला भी लो। (३८) हक़ीक़त यह है कि जिस चीज़ के इल्म पर ये

१. यानी जब उस को उस के आमाल का बदला मिलेगा, तब उसे मालूम हो जाएगा कि उस ने दुनिया में कैसे काम किए थे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बल् कज़्ज़बू बिमा लम् युहीतू बिअिल्मिही व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्-वीलुहू
कज़ालि-क कज़्ज-बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतुज़्ज़ालिमीन
(३९) व मिन्हुम् मंय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअ्मिनु बिही
व रब्बु-क अअ्-लमु बिल्मुफ़्सिदीन ★(४०) व इन् कज़्ज़बू-क फ़क़ुल्
ली अ-मली व लकुम् अ-मलुकुम्
अन्तुम् बरीऊ-न मिम्मा अअ्-मलु व अना
बरीउम्-मिम्मा तअ्-मलून (४१) व
मिन्हुम् मंय्यस्तमिऊ-न इलै-क अ-फ़-अन्-त
तुस्मिउस्-सुम्-म व लौ कानू ला यअ्-क़िलून
(४२) व मिन्हुम् मंय्यन्ज़ुरु इलै-क
अ-फ़-अन्-त तह्दिल्उम्-य व लौ कानू ला
युब्सिरून (४३) इन्नल्ला-ह ला
यज़्लिमुन्ना-स शैअव्-व लाकिन्नन्ना-स अन्फ़ुसहुम्
यज़्लिमून (४४) व यौ-म यह्शुरुहुम्
क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा-अ-तम्-
मिनन्नहारि य-त-आरफ़ू-न बैनहुम् क़द्
ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्लाहि
व मा कानू मुह्तदीन (४५) व इम्मा नुरियन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी
नअिदुहुम् औ न-त-वफ़्फ़-यन्न-क फ़-इलैना मर्जिअुहुम् सुम्मल्लाहु
शहीदुन् अला मा यफ़-अलून (४६) व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन्
फ़इज़ा जा-अ रसूलुहुम् क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून
(४७) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४८) क़ुल्
ला अम्लिकु लिनफ़्सी ज़र्-रंव्-व ला नफ़्-अन् इल्ला मा शाअल्लाहु
लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरू-न
साअ-तंव्-व ला यस्तक़्दिमून (४९) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अताकुम्
अज़ाबुहू बयातन् औ नहारम्-माज़ा यस्तअ्-जिलु मिन्हुल्-मुज्रिमून (५०)

يعتذرون ١١ ١٨٠ يونس ١٠

مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا
بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾
وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ
وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ
تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ
يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ
نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا
يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ
اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ
لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

★रु. ४/६ आ १०

क़ाबू नहीं पा सके, उस को (नादानी से) झुठला दिया और अभी इस की हक़ीक़त उन पर खुली ही नहीं। इसी तरह जो लोग इन से पहले थे, उन्हों ने झुठलाया था, सो देख लो ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ। (३९) और इन में से कुछ तो ऐसे हैं कि इस पर ईमान ले आते हैं और कुछ ऐसे हैं कि ईमान नहीं लाते। और तुम्हारा परवरदिगार शरीरों को ख़ूब जानता है। (४०) ★

और अगर यह तुम्हें झुठलाएं, तो कह दो कि मुझ को मेरे अमल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे अमल (का)। तुम मेरे अमलों के जवाबदेह नहीं हो और मैं तुम्हारे अमलों का जवाबदेह नहीं हूं। (४१) और इन में कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे, अगरचे कुछ भी (सुनते,) समझते न हों। (४२) और कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ देखते हैं, तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे, अगरचे कुछ भी देखते (भालते) न हों।[1] (४३) ख़ुदा तो लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता, लेकिन लोग ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं (४४) और जिस दिन ख़ुदा उन को जमा करेगा (तो वे दुनिया के बारे में ऐसा ख़्याल करेंगे कि) गोया (वहां) घड़ी भर दिन से ज़्यादा रहे ही नहीं थे (और) आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे भी। जिन लोगों ने ख़ुदा के सामने हाज़िर होने को झुठलाया, वे घाटे में पड़ गये और राहयाब न हुए। (४५) अगर हम कोई अज़ाब, जिस का इन लोगों से वायदा करते हैं, तुम्हारी आंखों के सामने (नाज़िल) करें या (इस वक़्त, जब) तुम्हारी जिंदगी की मुद्दत पूरी कर दें, तो उन को हमारे ही पास लौट कर आना है। फिर जो कुछ ये कर रहे हैं, ख़ुदा उस को देख रहा है। (४६) और हर एक उम्मत की तरफ़ पैग़म्बर भेजा गया, जब उन का पैग़म्बर आता है, तो उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया जाता। (४७) और ये कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब का) यह वायदा (है, वह आयेगा) कब? (४८) कह दो कि मैं तो अपने नुक़्सान और फ़ायदे का भी कुछ अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो ख़ुदा चाहे। हर एक उम्मत के लिए (मौत का) एक वक़्त मुक़र्रर है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते और न जल्दी कर सकते हैं। (४९) कह दो कि भला देखो तो अगर उस का अज़ाब तुम पर (यकायक) आ जाए, रात को या दिन को, तो फिर गुनाहगार किस बात की जल्दी करेंगे। (५०) क्या जब वह आ

---

१. यानी उन का तुम्हारी तरफ़ कान लगाना या नज़र करना उन को कुछ फ़ायदा नहीं देगा, क्योंकि उन की मिसाल बहरों और अंधों की-सी है कि न सुन सकें, न देख सकें, ख़ास तौर से इस हालत में कि अक़्ल और समझ से कोरे हों। बहरे को इशारे से समझा सकते हैं, अंधे को आवाज़ से बता सकते हैं, मगर जो अक़्ल ही न रखे, उस को किसी तरह समझाना भी नफ़ा नहीं देता। मतलब यह है कि लोग न शौक़ और तवज्जोह से तुम्हारी बातों को सुनते हैं, न यक़ीन रखते हैं, इस लिए इन का हिदायत पाना कठिन है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-सुम्-म इज़ा मा व-क़-अ़ आमन्तुम् बिही ط आल्आ-न व क़द् कुन्तुम् बिही
तस्तअ्-जिलून (५१) सुम्-म क़ी-ल लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-ख़ुल्दि
हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (५२) व यस्तम्बिऊन-क
अहक़्क़ुन् हु-व ط ▨ क़ुल् ई व रब्बी इन्नहू लहक़्क़ुन् ج ▨ व मा
अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन ★(५३) व लौ
अन्-न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़-ल-मत् मा फ़िल्अर्ज़ि
लफ़्-त-दत् बिही ط व असर्रुन्नदा-म-त लम्मा
र-अवुल्-अ़ज़ा-ब ج व क़ुज़ि-य बैनहुम्
बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (५४)
अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति
वल्अर्ज़ि ط अला इन्-न वअ्-दल्लाहि ह़क़्क़ु व्-व
लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (५५)
हु-व युह़्यी व युमीतु व इलैहि तुर्जअ़ून
(५६) या अय्युहन्नासु क़द् जा-अत्कुम्
मौअि-ज़-तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाउल्लिमा
फ़िस्सुदूरि ه व हुदंव-व रह़्-मतुल्-
लिल्मुअ्मिनीन (५७) क़ुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरह़्मतिही फ़बिज़ालि-क
फ़ल्-यफ़्रह़ू ط हु-व ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअ़ून (५८) क़ुल् अ-रऐतुम् मा
अन्ज़-लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्क़िन् फ़-ज-अ़ल्तुम् मिन्हु ह़रामंव्-व ह़लालन् ط क़ुल्
आल्लाहु अज़ि-न लकुम् अम् अ़-लल्लाहि तफ़्तरून (५९) व मा ज़न्नुल्लज़ी-न
यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब यौमल्-क़ियामति ط इन्नल्ला-ह लज़ू
फ़ज़्लिन् अ़-लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून★(६०) व मा
तकूनु फ़ी शअ्निंव्-व मा तत्लू मिन्हु मिन् क़ुरआनिंव्-व ला तअ्-मलू-न मिन्
अ़-मलिन् इल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन् इज़् तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि ط व मा
यअ़्-ज़ुबु अ़र्रब्बि-क मिम्मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व ला
अस्-ग़-र मिन् ज़ालि-क व ला अक्ब-र इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (६१)

يونس ١٠ — ١٨١ — يعتذرون ١١

مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝٥٠ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلْآنَ
وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝٥١ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ
الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝٥٢ وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ
قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝٥٣ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ
نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝٥٤ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝٥٥ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٥٦ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ
جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى
وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝٥٧ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا
هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ۝٥٨ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ
رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۖ أَمْ عَلَى
اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝٥٩ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝٦٠
وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ
عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ
رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ

▨ व. न वी स. ▨ व. न बी स. ★रु. ५/१० आ १३ ★रु. ६/११ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जाएगा, तब उस पर ईमान लाओगे (उस वक़्त कहा जाएगा कि) और अब (ईमान लाये ?) इसी के लिए तो तुम जल्दी मचाया करते थे। (५१) फिर ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो। (अब) तुम उन्हीं (आमाल) का बदला पाओगे, जो (दुनिया में) करते रहे। (५२) और तुम से पूछते हैं कि क्या यह सच है ▨ कह दो, हां, ख़ुदा की क़सम ! सच है ▨ और तुम (भाग कर ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकोगे★(५३) और अगर हर एक ना-फ़रमान शख़्स के पास धरती की तमाम चीज़ें हों तो (अज़ाब से बचने के) बदले में (सब) दे डाले और जब वे अज़ाब देखेंगे तो (पछताएंगे और) नदामत को छिपाएंगे और उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और (किसी तरह का) उन पर ज़ुल्म नहीं होगा। (५४) सुन रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और यह भी सुन रखो कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (५५) वही जान बख़्शता और (वही) मौत देता है और तुम लोग उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (५६) लोगो ! तुम्हारे पास परवरदिगार की तरफ़ से नसीहत और दिलों की बीमारियों की शिफ़ा और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत आ पहुंची है। (५७) कह दो कि (यह किताब) ख़ुदा के फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी से (नाज़िल हुई है,) तो चाहिए कि लोग इस से ख़ुश हों। यह उस से कहीं बेहतर है, जो वे जमा करते हैं। (५८) कहो कि भला देखो तो, ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जो रोज़ी उतारी, तो तुम ने उस में से (कुछ को) हराम ठहराया और (कुछ को) हलाल, (उन से) पूछो, क्या ख़ुदा ने तुम्हें इस का हुक्म दिया है या तुम ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हो ? (५९) और जो लोग ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हैं, वे क़ियामत के दिन के बारे में क्या ख़्याल रखते हैं ? बेशक ख़ुदा लोगों पर मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (६०) ★

और तुम जिस हाल में होते हो, या क़ुरआन में से कुछ पढ़ते हो, या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उस में लग जाते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है, न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ उस से छोटी है या बड़ी, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (६१) सुन रखो कि जो ख़ुदा के

▨ व. नबी स. ▨ व. नबी स. ★ रु. ५/१० आ १३ ★ रु. ६/११ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अला इन्-न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ۚ
(६२) अल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून ط (६३) लहुमुल्बुश्रा
फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ط ला तब्दी - ल लिकलिमातिल्लाहि ط
ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीम ط (६४) व ला यह्ज़ुन् - क क़ौलुहुम्
इन्नल्अिज़्ज़ - त लिल्लाहि जमीअ़न् ط
हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम (६५) अला इन्-न
लिल्लाहि मन् फ़िस्समावाति व मन्
फ़िल्अर्ज़ि ط व मा यत्तबिअ़ुल्लज़ी - न
यद-ऊ़-न मिन् दूनिल्लाहि शु - रका - अ ط
इंय्यत्तबिऊ़-न इल्लज़् - ज़न्-न व इन्
हुम् इल्ला यख़्रुसून (६६) हुवल्लज़ी
ज-अ़-ल लकुमुल्लै - ल लितस्कुनू फ़ीहि
वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क
लआयातिल - लिक़ौमिंय्यस्मअ़ून (६७)
क़ालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व - ल - दन् सुब्हानहू ط
हुवल्ग़निय्यु ط लहू मा फ़िस्समावाति
व मा फ़िल्अर्ज़ि ط इन् अ़िन्दकुम् मिन्
सुल्तानिम्-बिहाज़ा ط अ तक़ूलू-न अ़-लल्लाहि मा ला तअ्‌-लमून (६८) क़ुल्
इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़-लल्लाहिल् - कज़ि - ब ला युफ़्लिहून ط (६९)
मताअ़ुन् फ़िद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअ़ुहुम् सुम्-म नुज़ीक़ुहुमुल्-अ़ज़ाबश्शदी-द
बिमा कानू यक्फ़ुरून ★ ● (७०) वत्लु अ़लैहिम् न-ब-अ नूहिन् ▨ इज़्
क़ा-ल लिक़ौमिही या क़ौमि इन् का-न कबु-र अ़लैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी
बिआयातिल्लाहि फ़-अ़-लल्लाहि त-वक्कल्तु फ़-अज्मिअ़ू अम्रकुम् व शुरका-अ
कुम् सुम्-म ला यकुन् अम्रुकुम् अ़लैकुम् ग़ुम्म-तन् सुम्मक़्ज़ू इलय्-य व ला
तुन्ज़िरून (७१) फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़मा स-अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् ط इन्
अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि ۙ व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन (७२)

يونس ١٠ — ١٧٢ — يعتذرون ١١

ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (٦١) اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٦٢) ۚ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (٦٣) ط لَهُمُ الْبُشْرٰى
فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ط لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ط ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (٦٤) ط وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ط هُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٦٥) اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ط
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ط اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا
الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ (٦٦) هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ
لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ط اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ (٦٧)
قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ط هُوَ الْغَنِىُّ ط لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِى الْاَرْضِ ط اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ط اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ (٦٨) قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا
يُفْلِحُوْنَ (٦٩) ط مَتَاعٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ
الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ (٧٠) ع وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِىْ وَتَذْكِيْرِىْ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَىَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ (٧١) فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ط اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ

وقف لازم

ع

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दोस्त हैं, उनको न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (६२) (यानी) वे जो ईमान लाये और परहेज़गार रहे, (६३) उन के लिए दुनिया की ज़िंदगी में भी ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में भी, ख़ुदा की बातें बदलती नहीं, यही तो बड़ी कामियाबी है। (६४) और (ऐ पैग़म्बर !) उन लोगों की बातों में ग़मज़दा न होना (क्योंकि) इज़्ज़त सब ख़ुदा ही की है। वह (सब कुछ) सुनता (और) जानता है। (६५) सुन रखो कि जो मख़्लूक़ आसमानों में है और जो लोग ज़मीन में हैं, सब ख़ुदा ही के (बन्दे और उस के मख़्लूक़) हैं और यह जो ख़ुदा के सिवा (अपने बनाए हुए) शरीकों को पुकारते हैं, वे (किसी और चीज़ के) पीछे नहीं चलते, सिर्फ़ ज़न के पीछे चलते हैं और सिर्फ़ अटकलें दौड़ा रहे हैं। (६६) वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि इस में आराम करो और रोशन दिन बनाया, (ताकि उस में काम करो) जो लोग सुनने (का माद्दा) रखते हैं, उन के लिए उन में निशानियां हैं। (६७) (कुछ लोग) कहते हैं कि ख़ुदा ने बेटा बना लिया है। उस की ज़ात (औलाद से) पाक है (और) वह बे-नियाज़ है। जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है, (ऐ झूठ गढ़ने वालो !) तुम्हारे पास इस (झूठी बात) की कोई दलील नहीं है। तुम ख़ुदा के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो जो जानते नहीं ? (६८) कह दो कि जो लोग ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधते हैं, फ़लाह (कामियाबी) नहीं पाएगे। (६९) उन के लिए जो फ़ायदे हैं, दुनिया में (हैं), फिर उन को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है। उस वक़्त हम उन को कड़े अज़ाब (के मज़े) चखाएंगे, क्योंकि कुफ़्र (की बातें) किया करते थे। (७०) ● ★

और उन को नूह का क़िस्सा पढ़ कर सुना दो जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! अगर तुम को मेरा तुम में रहना और ख़ुदा की आयतों से नसीहत करना ना-गवार हो, तो मैं तो ख़ुदा पर भरोसा रखता हूं। तुम अपने शरीकों के साथ मिल कर एक काम (जो मेरे बारे में करना चाहो) मुक़र्रर कर लो और वह तुम्हारी तमाम जमाअत (को मालूम हो जाए और किसी) से पोशीदा न रहे, फिर वह काम मेरे हक़ में कर गुज़रो और मुझे मुहलत न दो। (७१) और अगर तुम ने मुंह फेर लिया तो (तुम जानते हो कि) मैंने तुम से कुछ मुआवज़ा नहीं मांगा। मेरा मुआवज़ा तो ख़ुदा के ज़िम्मे है और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं फ़रमांबरदारों में रहूं। (७२) लेकिन उन लोगों ने

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-नज्जैनाहु व मम्म-अ़हू फ़िल्फ़ुलिक व ज-अ़ल्नाहुम् ख़लाइ-फ़ व
अग़्-रक़्-नल्लज़ी-न क़ज़्ज़बू बिआयातिना ८ फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल् -
मुन्ज़रीन (७३) सुम्-म ब-अ़स्ना मिम्बअ़्-दिही रुसुलन् इला क़ौमिहिम्
फ़जाऊ-हुम् बिलबय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू बिही मिन्
क़ब्लु ७ कज़ालि-क नत़्बअ़ु अ़ला क़ुलूबिल्-
मुअ़्-तदीन (७४) सुम्-म ब-अ़स्ना मिम्बअ़्-दिहिम्
मूसा व हारू-न इला फ़िर्औ-न व
म-लइही बिआयातिना फ़स्तक्बरू व कानू
क़ौमम् - मुज्रिमीन (७५) फ़ - लम्मा
जाअ-हुमुल् - ह़क़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू
इन्-न हाज़ा ल-सिह़्रुम्-मुबीन (७६)
क़ा-ल मूसा अ-तक़ूलू-न लिल्ह़क़्क़ि लम्मा
जा - अकुम् ७ असिह़्रुन् हाज़ा ७ व ला
युफ़्लिहुस् - साह़िरून (७७) क़ालू
अजिअ्तना लितल्फ़ि-तना अ़म्मा व-जद्ना
अ़लैहि आबा-अना व तकू - न लकुमल्-
किब्रियाउ फ़िल्अर्ज़ि ७ व मा नह़्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन (७८) व क़ा-ल
फ़िर्औनुअ्तूनी बिकुल्लि साह़िरिन् अ़लीम (७९) फ़-लम्मा जा-अस्-स-ह़-रतु
क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (८०) फ़-लम्मा अल्क़ौ
क़ा - ल मूसा मा जिअ्तुम् बिहिस्सिह़्रु ७ इन्नल्ला - ह सयुब्तिलुहू
इन्नल्ला-ह ला युस्लिहु अ़-म-लल्मुफ़्सिदीन (८१) व युह़िक़्क़ुल्लाहुल्-ह़क़्-क़
बिकलिमातिही व लौ करिहल् - मुज्रिमून ★(८२) फ़मा आम - न
लिमूसा इल्ला ज़ुर्रिय्यतुम्-मिन् क़ौमिही अ़ला ख़ौफ़िम्मिन् फ़िर्औ-न व
मल-इहिम् अंय्यफ़्ति-नहुम् ७ व इन्-न फ़िर्औ-न ल - आ़लिन् फ़िल्अर्ज़ि ८ व
इन्नहू लमिनल्मुस्रिफ़ीन (८३) व क़ा-ल मूसा या क़ौमि इन् कुन्तुम्
आमन्तुम् बिल्लाहि फ़-अ़लैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (८४)

يعتذرون ١١ ١٨٣ يونس ١٠

اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٧٢ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِی الْفُلْكِ
وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَیْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِیْنَ ۝٧٣ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰی قَوْمِهِمْ
فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِیُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ
كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰی قُلُوْبِ الْمُعْتَدِیْنَ ۝٧٤ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ
مُّوْسٰی وَهٰرُوْنَ اِلٰی فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰیٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا مُّجْرِمِیْنَ ۝٧٥ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا
لَسِحْرٌ مُّبِیْنٌ ۝٧٦ قَالَ مُوْسٰۤی اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ
هٰذَا ؕ وَلَا یُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝٧٧ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا
عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِیَآءُ فِی الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا
بِمُؤْمِنِیْنَ ۝٧٨ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِیْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِیْمٍ ۝٧٩ فَلَمَّا
جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤی اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٨٠ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا
قَالَ مُوْسٰی مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَیُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
یُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِیْنَ ۝٨١ وَیُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨٢ فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤی اِلَّا ذُرِّیَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰی خَوْفٍ
مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ یَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِی
الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِیْنَ ۝٨٣ وَقَالَ مُوْسٰی یٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ

★रु. ८/१३ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उनको झुठलाया, तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ नाव में सवार थे, सबको (तूफ़ान से) बचा लिया और उन्हें (ज़मीन में) ख़लीफ़ा बना दिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन को ग़र्क़ कर दिया, तो (देख लो कि) जो लोग डराए गये थे, उन का कैसा अंजाम हुआ। (७३) फिर नूह के बाद हम ने और पैग़म्बर अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे, तो वे उन के पास खुली निशानियां ले कर आये, मगर वे लोग ऐसे न थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके थे, उस पर ईमान ले आते। इसी तरह हम ज़्यादती करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (७४) फिर उन के बाद हम ने मूसा और हारून को अपनी निशानियां दे कर फ़िऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उन्हों ने तकब्बुर (घमंड) किया और वे गुनाहगार लोग थे। (७५) तो जब उन के पास हमारे यहां से हक़ आया, तो कहने लगे कि यह खुला जादू है। (७६) मूसा ने कहा, क्या तुम हक़ के बारे में, जब वह तुम्हारे पास आये, यह कहते हो कि यह जादू है, हालांकि जादूगर फ़लाह नहीं पाने के। (७७) वे बोले, क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि (जिस राह) पर हम अपने बाप-दादा को पाते रहे हैं, उस से हम को फेर दो और (इस) देश में तुम दोनों ही की सरदारी हो जाए और हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (७८) और फ़िऔन ने हुक्म दिया कि सब माहिर जादूगरों को हमारे पास ले आओ। (७९) जब जादूगर आये, तो मूसा ने उन से कहा कि जो तुम को डालना हो, डालो। (८०) जब उन्हों ने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो मूसा ने कहा कि जो चीज़ें तुम (बना कर) लाये हो, जादू है। ख़ुदा इस को अभी नेस्त व नाबूद कर देगा। ख़ुदा शरीरों के काम संवारा नहीं करता। (८१) और ख़ुदा अपने हुक्म से सच को सच ही कर देगा, अगरचे गुनाहगार बुरा ही मानें। (८२) ★

तो मूसा पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क़ौम में से कुछ लड़के (और वह भी) फ़िऔन और उस के दरबारियों से डरते-डरते कि कहीं वह उन को आफ़त में न फंसा दे। और फ़िऔन मुल्क में मुतकब्बिर व मुतग़ल्लिब और (कित्र व कुफ़्र में) हद से बढ़ा हुआ था। (८३) और मूसा ने कहा कि भाइयो ! अगर तुम ख़ुदा पर ईमान लाये हो तो अगर (दिल से) फ़रमांबरदार हो तो उसी

★रु. ८/१३ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-क़ालू अ् - लल्लाहि त-वक्कल्ना ج रब्बना ला तज्-अल्ना फ़ित-न-तुल्लिल्-
क़ौमिज़्ज़ालिमीन ۙ (८५) व नज्जिना बिरह्मति - क मिनल्-क़ौमिल्-
काफ़िरीन (८६) व औहैना इला मूसा व अख़ीहि अन-तबव्वआ लिक़ौमि-
कुमा बिमिस् - र बुयूतंव्वज्अलू बुयूतकुम् क़िब्लतंव्-व अक़ीमुस्सला-त ط व
बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (८७) व क़ा-ल
मूसा रब्बना इन्न-क आतै-त फ़िर्औ-न व
म-ल-अहू ज़ीनतंव् - व अम्वालन् फ़िल्-
हयातिद्दुन्या ۙ रब्बना लियुज़िल्लू अन्
सबीलि-क ج रब्बनत्मिस् अला अम्वालिहिम्
वश्दुद् अला क़ुलूबिहिम् फ़ला युअ्मिनू
हत्ता य-र-वुल्-अज़ाबल् - अलीम (८८)
क़ा-ल क़द् उजीबद्दअ्-वतु-कुमा फ़स्तक़ीमा
व ला तत्तबिअ़ान्नि सबीलल्लज़ी-न ला
यअ्-लमून (८९) व जावज़्ना बिबनी
इस्राईलल्-बह्-र फ़-अतब-अहुम् फ़िर्औनु
व जुनूदुहू बग्यंव्-व अद्वन् ط हत्ता इज़ा
अद्-र-कहुल् - ग़ - र्क़ु ۙ क़ा - ल आमन्तु
अन्नहू ला इला - ह इल्लल्लज़ी आम-नत् बिही बनू इस्राई - ल व
अना मिनल्-मुस्लिमीन (९०) आल्आ-न व क़द् असै-त क़ब्लु व
कुन्-त मिनल्-मुफ़्सिदीन (९१) फ़ल्यौ-म नुनज्जी-क बि-ब-दनि-क लितकू-न
लिमन् ख़ल्फ़-क आयतुन् ط व इन्-न कसीरम् - मिनन्नासि अन् आयातिना
लग़ाफ़िलून ★ (९२) व ल - क़द् बव्वअ्ना बनी इस्राई-ल मुबव्व-अ
सिद्क़िंव्-व र - ज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति ج फ़-मख़्त - लफ़ू हत्ता जा-अहुमुल्-
अिल्मु ط इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल् - क़ियामति फ़ीमा कानू
फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (९३) फ़इन् कुन् - त फ़ी शक्किम्-मिम्मा अन्ज़ल्ना
इलै-क फ़स्अलिल्लज़ी-न यक़्-रऊनल् - किता-ब मिन् क़ब्लि - क ج ल - क़द्
जा-अकल् - हक़्क़ु मिर्रब्बि - क फ़ला तकूनन्-न मिनलमुम्तरीन ۙ (९४)

يونس ١٠ — ١٤٤ — يعتذرون ١١

اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝٨٤ فَقَالُوْا عَلَى
اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٥ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ
تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٧ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ
مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى
يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٨٨ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَ
لَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨٩ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ
الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ
وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٩٠ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝٩١ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ
اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝٩٢ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا
اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝٩٣ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ

★रु. ९/१४ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पर भरोसा रखो। (८४) तो बोले कि हम ख़ुदा ही पर भरोसा रखते हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! हम को ज़ालिम लोगों के हाथ से आज़माइश में न डाल। (८५) और अपनी रहमत से काफ़िरों की क़ौम से निजात बख़्श। (८६) और हम ने मूसा और उस के भाई की तरफ़ वह्य भेजी कि अपने लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ और अपने घरों को क़िब्ला (यानी मस्जिदें) ठहराओ और नमाज़ पढ़ो और मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (८७) और मूसा ने कहा, ऐ परवरदिगार! तू ने फ़िऔंन और उस के सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में (बहुत-सा) साज़ व सामान, धन-दौलत दे रखा है, ऐ परवरदिगार! इन का मआल (अंजाम) यह है कि तेरे रास्ते से गुमराह कर दें। ऐ परवरदिगार! इन के माल को बर्बाद कर दे और इन के दिलों को सख़्त कर दे कि ईमान न लाएं, जब तक दर्दनाक अज़ाब न देख लें। (८८) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर ली गयी, तो तुम साबित-क़दम रहना और बे-अक़्लों के रास्ते न चलना। (८९) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया से पार कर दिया, तो फ़िऔंन और उस के लश्कर ने सरकशी और तअद्दी से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उस को ग़र्क़ (के अज़ाब) ने आ पकड़ा तो कहने लगा, मैं ईमान लाया कि जिस (ख़ुदा) पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मैं फ़रमांबरदारों में हूं। (९०) (जवाब मिला कि) अब (ईमान लाता है,) हालांकि तू पहले नाफ़रमानी करता रहा और फ़साद फैलाने वाला बना रहा? (९१) तो आज हम तेरे बदन को (दरिया से) निकाल लेंगे, ताकि तू पिछलों के लिए इबरत (सबक़) हो और बहुत से लोग हमारी निशानियों से बे-ख़बर हैं। (९२) ★

और हम ने बनी इस्राईल को रहने को उम्दा जगह दी और खाने को पाकीज़ा चीज़ें अता कीं, लेकिन वह बावजूद इल्म हासिल होने के इख़्तिलाफ़ करते रहे। बेशक जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, तुम्हारा परवरदिगार! क़ियामत के दिन उन में उन बातों का फ़ैसला कर देगा। (९३) अगर तुम को इस (किताब के) बारे में, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है, कुछ शक हो, तो जो लोग तुम से पहले की (उतरी हुई) किताबें पढ़ते हैं, उन से पूछ लो। तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ आ चुका है, तो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (९४) और न उन लोगों में

★रु. ९/१४ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तकूनन्-न मिनल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि फ़-तकू-न मिनल्ख़ासिरीन
(९५) इन्नल्लज़ी-न ह़क़्क़त् अ़लैहिम् कलिमतु रब्बि-क ला युअ्मिनून ॥
(९६) व लौ जा-अत्हुम् कुल्लु आयतिन् ह़त्ता य-रवुल्-अ़ज़ाबल्-अलीम
(९७) फ़-लौला कानत् क़र्यतुन् आम-नत् फ़-न-फ़-अ़हा ईमानुहा इल्ला
क़ौ-म यूनुस ط लम्मा आमनू क - शफ़्ना
अ़न्हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्-ह़यातिद्दुन्या
व मत्तअ्-नाहुम् इला ह़ीन (९८) व लौ
शा-अ रब्बु-क ल-आम-न मन् फ़िल्अर्ज़ि
कुल्लुहुम् जमीअ़न् ط अ-फ़-अन्-त तुक्रिहुन्ना-स
ह़त्ता यकूनू मुअ्मिनीन (९९) व मा
का-न लिनफ़्सिन् अन् तुअ्मि-न इल्ला
बिइज़्निल्लाहि ط व यज्अ़लुर्रिज - स
अ़-लल्लज़ी-न ला यअ्-क़िलून (१००)
क़ुलिन्ज़ुरू माज़ा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط
व मा तुग़्निल्-आयातु वन्नुज़ुरु अ़न्
क़ौमिल्-ला युअ्मिनून (१०१) फ़-हल्
यन्तज़िरू-न इल्ला मिस्-ल अय्यामिल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम् ط क़ुल्
फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन (१०२) सुम्-म नुनज्जी
रुसुलना वल्लज़ी - न आमनू कज़ालि - क ج ह़क़्क़न् अ़लैना नुन्जिल् -
मुअ्मिनीन ★ (१०३) क़ुल् या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी
शक्किम् - मिन् दीनी फ़ला अअ्-बुदुल्लज़ी-न तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि
व लाकिन् अअ् - बुदुल्लाहल्लज़ी य - त - वफ़्फ़ाकुम् صلے ج व उमिर्तु अन्
अकू - न मिनल् - मुअ्मिनीन ۙ (१०४) व अन् अक़िम् वज्ह - क
लिद्दीनि ह़नीफ़न् ج व ला तकूनन् - न मिनल् - मुश्रिकीन (१०५)

يعتذرون ١١ ١٨٥ يونس ١٠

أنزلنا إليك فسئل الذين يقرءون الكتب من قبلك لقد جاءك
الحق من ربك فلا تكونن من الممترين ﴿٩٤﴾ ولا تكونن من
الذين كذبوا بايت الله فتكون من الخسرين ﴿٩٥﴾ إن الذين
حقت عليهم كلمت ربك لا يؤمنون ﴿٩٦﴾ ولو جاءتهم كل
اية حتى يروا العذاب الأليم ﴿٩٧﴾ فلولا كانت قرية امنت
فنفعها إيمانها إلا قوم يونس لما امنوا كشفنا عنهم عذاب
الخزي في الحيوة الدنيا ومتعنهم إلى حين ﴿٩٨﴾ ولو شاء ربك
لامن من في الأرض كلهم جميعا أفانت تكره الناس حتى
يكونوا مؤمنين ﴿٩٩﴾ وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن
الله ويجعل الرجس على الذين لا يعقلون ﴿١٠٠﴾ قل انظروا
ماذا في السموت والأرض وما تغني الايت والنذر عن
قوم لا يؤمنون ﴿١٠١﴾ فهل ينتظرون إلا مثل أيام الذين
خلوا من قبلهم قل فانتظروا إني معكم من المنتظرين ﴿١٠٢﴾
ثم ننجي رسلنا والذين امنوا كذلك حقا علينا ننج المؤمنين ﴿١٠٣﴾
قل يايها الناس إن كنتم في شك من ديني فلا أعبد الذين
تعبدون من دون الله ولكن أعبد الله الذي يتوفكم و
أمرت أن أكون من المؤمنين ﴿١٠٤﴾ وأن أقم وجهك للدين

منزل ٣

★रु. १०/१५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होना, जो ख़ुदा की आयतों को झुठलाते हैं, नहीं तो नुक़सान उठाओगे। (९५) जिन लोगों क बारे में ख़ुदा (के अज़ाब) का हुक्म क़रार पा चुका है, वे ईमान नहीं लाने के, (९६) जब तक कि दर्दनाक अज़ाब न देख लें, चाहे उन के पास हर (तरह की) निशानी आ जाए। (९७) तो कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान लाती तो उस का ईमान उसे नफ़ा देता, हां, यूनुस की क़ौम कि जब ईमान लायी तो हम ने दुनिया की ज़िंदगी में उन से ज़िल्लत का अज़ाब दूर कर दिया और एक मुद्दत तक (दुनिया के फ़ायदों से) उन को नवाज़ा। (९८) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो जितने लोग ज़मीन पर हैं, सब के सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो कि वे मोमिन हो जाएं। (९९) हालांकि किसी शख़्स को क़ुदरत नहीं है कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर ईमान लाये और जो लोग बे-अक़्ल हैं, उन पर वह (कुफ़्र व ज़िल्लत) की नजासत डालता है। (१००) (इन कुफ़्फ़ार से) कहो कि देखो तो आसमानों और ज़मीन में क्या-क्या कुछ है, मगर जो लोग ईमान नहीं रखते, उन की निशानियां और डरावे कुछ काम नहीं आते। (१०१) जैसे (बुरे) दिन इन से पहले लोगों पर गुज़र चुके हैं। उसी तरह के (दिनों के) ये इन्तिज़ार में हैं। कह दो कि तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (१०२) और हम अपने पैग़म्बरों को और मोमिनों को निजात देते रहे हैं। इसी तरह हमारा ज़िम्मा है कि मुसलमानों को निजात दें। (१०३)★

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि लोगो ! अगर तुम को मेरे दीन में किसी तरह का शक हो तो (सुन रखो कि) जिन लोगों की तुम ख़ुदा के सिवा इबादत करते हो, मैं उन की तो इबादत नहीं करता, बल्कि मैं ख़ुदा की इबादत करता हूं जो तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और मुझ को यही हुक्म हुआ है कि ईमान लाने वालों में हूं। (१०४) और यह कि (ऐ मुहम्मद ! सब से) यकसू होकर (इस्लाम) दीन की पैरवी किए जाओ और मुश्रिकों में हरगिज़ न होना। (१०५) और ख़ुदा को

★रु. १०/१५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तद्‌अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु-क व ला यज़ुर्रु-क ج फ़-इन्
फ़-अल्-त फ़इन्न-क इज़म्-मिनज़्ज़ालिमीन (१०६) व इंय्यम्‌सस्‌कल्लाहु
बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व ج व इंय्युरिद-क बिख़ैरिन् फ़ला
राद्-द लिफ़ज़्लिही ط युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन् अिबादिही ط व हुवल्
ग़फ़ूरुर्रहीम (१०७) क़ुल् या अय्युहन्नासु
क़द् जा-अकुमुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम् ج
फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी
लिनफ़्सिही ج व मन् ज़ल-ल फ़-इन्नमा
यज़िल्लु अलैहा ج व मा अ-न अलैकुम्
बिवकील ط (१०८) वत्तबिअ्‌ मा यूहा
इलै-क वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु صلے
व हु-व ख़ैरुल्‌हाकिमीन ★ (१०९)

يعتذرون ١١ — ١٨٦ — هود ١١

حنيفا ج ولا تكونن من المشركين ١٠٥ ولا تدع من دون الله ما
لا ينفعك ولا يضرك ج فان فعلت فانك اذا من الظلمين ١٠٦ وان
يمسسك الله بضر فلا كاشف له الا هو ج وان يردك بخير فلا راد
لفضله ط يصيب به من يشاء من عباده ط وهو الغفور الرحيم ١٠٧
قل يايها الناس قد جاءكم الحق من ربكم ج فمن اهتدى
فانما يهتدي لنفسه ج ومن ضل فانما يضل عليها ج و
ما انا عليكم بوكيل ط ١٠٨ واتبع ما يوحى اليك واصبر حتى
يحكم الله صلے وهو خير الحكمين ١٠٩ ع
سورة هود مكية وهي مائة وثلث وعشرون اية وعشر ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
الر قف كتب احكمت ايته ثم فصلت من لدن حكيم خبير ١ الا
تعبدوا الا الله ط انني لكم منه نذير وبشير ٢ وان استغفروا ربكم
ثم توبوا اليه يمتعكم متاعا حسنا الى اجل مسمى ويؤت
كل ذي فضل فضله ط وان تولوا فاني اخاف عليكم عذاب
يوم كبير ٣ الى الله مرجعكم ج وهو على كل شيء قدير ٤
الا انهم يثنون صدورهم ليستخفوا منه ط الا حين يستغشون
ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون ج انه عليم بذات الصدور ٥

منزل ٣

११ सूरतु हूदिन् ५२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७६२४ अक्षर, १६३६ शब्द, १२३ आयतें और १० रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ़्-लाम्-रा قف किताबुन्
उह्किमत् आयातुहू सुम्-म फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीर لا (१)
अल्ला तअ्‌बुदू इल्लल्ला-ह ط इन्ननी लकुम् मिन्हु नज़ीरुंव्‌-व बशीरुंव- لا (२)
व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युमत्तिअ्‌-कुम् मताअन् ह-स-नन्
इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्‌-व युअ्‌ति कुल-ल ज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू ط व इन्
त-वल्लौ फ़इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् कबीर (३) इलल्लाहि
मर्जिअुकुम् ج व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर (४) अला इन्नहुम्
यस्नू-न सुदूरहुम् लि-यस्तख़्फ़ू मिन्हु ط अला ही-न यस्तग़्शू-न सियाबहुम् لا
यअ्‌लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्‌लिनू-न ج इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (५)

★रु० ११/१६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छोड़ कर ऐसी चीज़ को न पुकारना, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सके और न कुछ बिगाड़ सके। अगर ऐसा करोगे, तो ज़ालिमों में हो जाओगे। (१०६) और अगर ख़ुदा तुम को कोई तक्लीफ़ पहुंचाए, तो उस के सिवा इस का कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुम से भलाई करनी चाहे तो उस के फ़ज़्ल को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपने बन्दों में से, जिसे चाहता है फ़ायदा पहुंचाता है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (१०७) कह दो कि लोगो! तुम्हारे परवरदिगार के यहां से तुम्हारे पास हक़ आ चुका है, तो जो कोई हिदायत हासिल करता है, तो हिदायत से अपने ही हक़ में भलाई करता है और जो गुमराही अख़्तियार करता है, तो गुमराही से अपना ही नुक़्सान करता है और मैं तुम्हारा वकील नहीं हूं। (१०८) और (ऐ पैग़म्बर!) तुम को जो हुक्म भेजा जाता है, उस की पैरवी किये जाओ और (तक्लीफ़ों पर) सब्र करो, यहां तक कि ख़ुदा फ़ैसला कर दे। वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (१०९) ★



११ सूरः हूद ५२

सूरः हूद मक्की है और इस में एक सौ तेईस आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह वह किताब है, जिस की आयतें मुस्तहकुम हैं और हकीम व ख़बीर ख़ुदा की तरफ़ से तफ़्सील से बयान कर दी गयी हैं, (१) (वह यह) कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो और मैं उस की तरफ़ से तुम को डर सुनाने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं। (२) और यह कि अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगों और उस के आगे तौबा करो। वह तुम को एक मुक़र्रर वक़्त तक नेक पूंजी से बहरा मंद करेगा (नवाज़ेगा) और हर बुज़ुर्गी वाले को उस की बुज़ुर्गी (की दाद) देगा और अगर रू-गरदानी करोगे तो मुझे तुम्हारे बारे में (क़ियामत के) बड़े दिन के अज़ाब का डर है। (३) तुम (सब) को ख़ुदा की तरफ़ लौट कर जाना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (४) देखो, यह अपने सीनों को दोहरा करते हैं, ताकि ख़ुदा से पर्दा करें। सुन रखो, जिस वक़्त ये कपड़ों में लिपट कर पड़ते हैं (तब भी) वह उन की छिपी और खुली बातों को जानता है। वह तो

★रु. ११/१६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बारहवां पारः व मा मिन् दाब्बतिन्

सूरतु हूदिन् आयत ६ से १२३

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अ-लल्लाहि रिज़्-क़ुहा व यअ्-लमु
मुस्तक़र्रहा व मुस्तौद - अ़हा ط कुल्लुन् फ़ी किताबिम्-मुबीन (६) व
हु-वल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व का-न अर्शुहू
अ-लल्माइ लि-यब-लुवकुम् अय्युकुम् अह़्सनु अ-म-लन् ط व लइन् क़ुल्-त इन्नकुम्
मब्ऊसू-न मिम्बअ्-दिल्-मौति ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न
क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह़्रुम्मुबीन
(७) व लइन् अख़्ख़र्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब
इला उम्मतिम्-मअ्-दूदतिल्-ल-यक़ूलुन्-न मा
यह़्बिसुहू ط अला यौ-म यअ्तीहिम् लै-स
मस़्रूफ़न् अ़न्हुम् व ह़ा-क़ बिहिम् मा कानू
बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (८) व लइन्
अ-ज़क्-नल्-इन्सा-न मिन्ना रह़्-म-तन् सुम्-म
न-ज़अ्-नाहा मिन्हु ج इन्नहू ल-यऊसुन् कफ़ूर
(९) व लइन् अ-ज़क़्नाहु नअ्-मा-अ बअ्-द
ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न ज़-ह-बस्सय्यिआतु
अ़न्नी ط इन्नहू ल-फ़रिहुन् फ़ख़ूर لا (१०)
इल्लल्लज़ी-न स़-बरू व अ़मिलुस़्स़ालिह़ाति ط
उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव् - व अज्रुन्
कबीर (११) फ़ ल-अ़ल्ल-क तारिकुम्बअ्-ज़ मा यूह़ा इलै-क व ज़ाइ-कुम्-
बिही स़द्रु-क अंय्यक़ूलू लौला उन्ज़ि-ल अ़लैहि कन्ज़ुन् औ जा-अ म-अ़हू
म-लकुन् ط इन्नमा अन् - त नज़ीरुन् ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइंव् - वकील ط
(१२) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ط क़ुल् फ़अ्तू बिअ़श्रि सु - वरिम् - मिस्लिही
मुफ़्त-र-यातिंव्वद्अू मनिस-त-तअ्-तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन
(१३) फ़इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फ़अ्-लमू अन्नमा उन्ज़ि-ल बिअ़िल्मिल्लाहि
व अल्ला इला - ह इल्ला हु-व ج फ़ - हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१४)

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا
وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ
اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ
الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ
لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨ وَ
لَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ۝٩
وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ
عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝١٠ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝١١ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ
وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ
مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝١٢ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٣ فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝١٤
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا

★ रु. १/१ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिलों तक की बातों से आगाह है। (५) और ज़मीन पर कोई चलने-फिरने वाला नहीं, मगर उस की रोज़ी ख़ुदा के ज़िम्मे है, वह जहां रहता है, उसे भी जानता है और जहां सौंपा जाता है, उसे भी। यह सब कुछ रोशन किताब में (लिखा हुआ) है। (६) और वही तो है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में बनाया और (उस वक़्त) उस का अर्श पानी पर था। (तुम्हारे पैदा करने से) मक़्सूद यह है कि वह तुम को आज़माये कि तुम में अमल के लिहाज़ से कौन बेहतर है और अगर तुम कहो कि तुम लोग मरने के बाद (ज़िंदा कर के) उठाए जाओगे, तो काफ़िर कह देंगे कि यह तो खुला जादू है। (७) और अगर एक तै मुद्दत तक हम उन पर अज़ाब को रोक दें, तो कहेंगे कि कौन-सी चीज़ अज़ाब को रोके हुए है। देखो, जिस दिन वह उन पर वाक़ेअ होगा, (फिर) टलने का नहीं और जिस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं, वह उन को घेर लेगी। (८) ★

और अगर हम इंसान को अपने पास से नेमत बख़्शें, फिर उस से उसको छीन लें, तो ना-उम्मीद (और) ना-शुक्रा (हो जाता) है। (९) और अगर तक्लीफ़ पहुंचने के बाद आसाइश (आराम, सुख) का मज़ा चखाएं, तो (ख़ुश हो कर) कहता है कि (आ-हा) सब सख़्तियां मुझ से दूर हो गयीं। बेशक वह ख़ुशियां मनाने वाला (और) फ़ख़्र करने वाला है। (१०) हां, जिन्हों ने सब्र किया और नेक अमल किये, यही हैं जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा बदला है। (११) शायद तुम कुछ चीज़ वह्य में से जो तुम्हारे पास आती है, छोड़ दो और इस (ख़्याल) से तुम्हारा दिल तंग हो कि (काफ़िर) यह कहने लगें कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं नाज़िल हुआ या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया? ऐ मुहम्मद! तुम तो सिर्फ़ नसीहत करने वाले हो और ख़ुदा हर चीज़ का निगेहबान है। (१२) ये क्या कहते हैं कि इस ने क़ुरआन ख़ुद से बना लिया है? कह दो कि अगर सच्चे हो तो तुम भी ऐसी दस सूरतें बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिस-जिस को बुला सकते हो, बुला भी लो। (१३) अगर वे तुम्हारी बात क़ुबूल न करें तो जान लो कि वह ख़ुदा के इल्म से उतरा है और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम्हें भी इस्लाम ले आना चाहिए।[1] (१४)

---

१. यह आम लोगों से ख़िताब है, जो इस्लाम नहीं लाते थे, यानी जब क़ुरआन मजीद का यह एजाज़ देख चुके हो कि कोई शख़्स ऐसा कलाम नहीं बना सकता, तो तुम को भी उसे मानना चाहिए कि ख़ुदा का कलाम है और इस्लाम ले आना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मन् का-न युरीदुल्-ह़यातद्दुन्या व ज़ी-न-तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम् अअ्-मालहुम्
फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून (१५) उलाइकल्लज़ी-न लै-स लहुम्
फ़िल्आख़िरति इल्लन्नारु व ह़बि-त़ मा स-नअू फ़ीहा व बातिलुम्मा कानू
यअ्-मलून (१६) अ-फ़-मन् का-न अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बिही व यत्लूहु
शाहिदुम्-मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु
मूसा इमामंव्-व रह्-म - तन् ط उलाइ - क
युअ्मिनू - न बिही ط व मंय्यक्फ़ुर् बिही
मिनल् - अह्ज़ाबि फ़न्नारु मौअिदुहू
फ़ला-तकु फ़ी मिर्यतिम् - मिन्हु ق इन्नहुल्-
ह़क़्क़ु मिर्रब्बि-क व लाकिन-न अक्सरन्नासि ला
युअ्मिनून (१७) व मन् अज़्लमु मिम्-
मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् ط उलाइ-क
युअ्-रज़ू-न अ़ला रब्बिहिम् व यक़ूलुल्-अश्हादु
हाउलाइल्लज़ी-न क-ज़बू - अ़ला रब्बिहिम् ج
अला लअ् - नतुल्लाहि अ़ - लज़्ज़ालिमीन ⅃
(१८) अल्लज़ी-न यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि
व यब्ग़ूनहा अि़ - व - जन् ط व
हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (१९) उलाइ-क लम् यकूनू मुअ़्जिज़ी-न
फ़िल्अर्ज़ि व मा का - न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया - अ
युज़ा-अफ़ु लहुमुल् - अ़ज़ाबु ط मा कानू यस्तती़अूनस्सम्-अ व मा कानू
युब्सिरून (२०) उलाइकल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा
कानू यफ़्तरून (२१) ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल्-अख़्सरून
(२२) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अख़् - बतू इला
रब्बिहिम् ⅃ उलाइ - क अस्ह़ाबुल् - जन्नति ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२३)
म-सलुल्-फ़रीक़ैनि कल्-अअ़् - मा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअि़ ط हल्
यस्तवियानि म-स-लन् ط अ-फ़ला तज़क्करून ★ (२४) व ल-क़द् अर्-सल्ना
नूह़न् इला क़ौमिही ز इन्नी लकुम् नज़ीरुम् - मुबीन ⅃ (२५)

ومامن دآبة ١٢ — ١٦٨ — هود ١١

وهم فيها لا يبخسون ⑮ أولئك الذين ليس لهم في الآخرة
إلا النار وحبط ما صنعوا فيها وبطل ما كانوا يعملون ⑯ أفمن
كان على بينة من ربه ويتلوه شاهد منه ومن قبله كتب
موسى إماما ورحمة أولئك يؤمنون به ومن يكفر به من
الأحزاب فالنار موعده فلا تك في مرية منه إنه الحق من
ربك ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ⑰ ومن أظلم ممن افترى
على الله كذبا أولئك يعرضون على ربهم ويقول الأشهاد هؤلاء
الذين كذبوا على ربهم ألا لعنة الله على الظلمين ⑱ الذين
يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا وهم بالآخرة هم
كفرون ⑲ أولئك لم يكونوا معجزين في الأرض وما كان لهم
من دون الله من أولياء يضعف لهم العذاب ما كانوا يستطيعون
السمع وما كانوا يبصرون ⑳ أولئك الذين خسروا أنفسهم و
ضل عنهم ما كانوا يفترون ㉑ لا جرم أنهم في الآخرة هم
الأخسرون ㉒ إن الذين آمنوا وعملوا الصلحت وأخبتوا إلى
ربهم أولئك أصحب الجنة هم فيها خلدون ㉓ مثل الفريقين
كالأعمى والأصم والبصير والسميع هل يستوين مثلا أفلا
تذكرون ㉔ ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إني لكم نذير مبين ㉕

वक़्फ़ लाज़िम — منزل ३ मंज़िल ३

▨ व. लाज़िम ★ रु. २/२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो लोग दुनिया की ज़िंदगी और उस की ज़ेब व ज़ीनत के तालिब हों, हम उन के आमाल का बदला उन्हें दुनिया ही में दे देते हैं और इस में उन का हक़ नहीं मारा जाता। (१५) ये वह लोग हैं, जिनके लिए आख़िरत में (जहन्नम की) आग के सिवा और कुछ नहीं और जो अमल उन्हों ने दुनिया में किए, सब बर्बाद और जो कुछ वे करते रहे, सब झूठ। (१६) भला जो लोग अपने परवरदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलील रखते हों और उन के साथ एक (आसमानी) गवाह भी उस की तरफ़ से हो और उस से पहले मूसा की किताब हो, जो पेशवा और रहमत है, (तो क्या वे क़ुरआन पर ईमान नहीं लाएंगे?) यही लोग तो उस पर ईमान लाते हैं। और जो कोई और फ़िर्क़ों में से इस का इंकारी हो, तो उस का ठिकाना आग है तो तुम इस (क़ुरआन) से शक में न होना, यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१७) और इस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े, ऐसे लोग ख़ुदा के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही लोग हैं, जिन्हों ने अपने परवरदिगार पर झूठ बोला था, सुन रखो कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है। (१८) जो ख़ुदा के रास्ते से रोकते हैं और उस में टेढ़ चाहते हैं और वे आख़िरत से भी इंकार करते हैं, (१९) ये लोग ज़मीन में (कहीं भाग कर ख़ुदा को) हरा नहीं सकते और न ख़ुदा के सिवा कोई उन का हिमायती है, (ऐ पैग़म्बर!) उन को दोगुना अज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि ये (कुफ़्र की ज़्यादती की वजह से तुम्हारी बात) नहीं सुन सकते थे और न (तुम को) देख सकते थे। (२०) यही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और जो कुछ ये गढ़ा करते थे, उनसे जाता रहा। (२१) बिला शुब्हा ये लोग आख़िरत में सब से ज़्यादा नुक़्सान पाने वाले हैं। (२२) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये और अपने परवरदिगार के आगे आजिज़ी की, यही जन्नत वाले हैं, हमेशा उस में रहेंगे। (२३) दोनों फ़िर्क़ों (यानी काफ़िर व मोमिन) की मिसाल ऐसी है, जैसे एक अंधा-बहरा हो और एक देखता-सुनता, भला दोनों का हाल बराबर हो सकता है? फिर तुम सोचते क्यों नहीं? (२४) ★

और हम ने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा (तो उन्हों ने उन से कहा) कि मैं तुम को खोल-खोल कर डर सुनाने (और यह पैग़ाम पहुंचाने) आया हूं, (२५) कि ख़ुदा के सिवा किसी की

व. लाज़िम ★रु. २/२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला-ह ط इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् अलीम
(२६) फ़-क़ालल्-म-ल-उल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा नरा-क इल्ला
ब-श-रम्-मिस-लना व मा नराकत्-त-ब-अ-क इल्लल्लज़ी-न हुम् अराज़िलुना
बादियर्रअ्यि ج व मा नरा लकुम् अलैना मिन् फ़ज़्लिम्-बल् नज़ुन्नुकुम्
काज़िबीन (२७) क़ा-ल या क़ौमि अ-रएतुम्
इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व
आतानी रह् - म - तम् - मिन् अिन्दिही
फ़ - अुम्मियत् अलैकुम् ط अनुल्ज़िमुकुमू - हा
व अन्तुम् लहा कारिहून (२८) व या
क़ौमि ला अस् - अलुकुम् अलैहि मालन् ط
इन् अजि़र-य इल्ला अ-लल्लाहि व मा
अ-न बितारिदिल्लज़ी - न आमनू ط इन्नहुम्
मुलाक़ू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम्
क़ौमन् तज्-हलून (२९) व या क़ौमि
मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम् ط
अ-फ़ला त-ज़क्करून (३०) व ला अक़ूलु
लकुम् अिन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्-लमुल्-ग़ै-ब व ला अक़ूलु इन्नी
मलकुंव्-व ला अक़ूलु लिल्लज़ी-न तज़्दरी अअ्-युनुकुम् लय्युअ्ति-य-हुमुल्लाहु
ख़ैरन् ط अल्लाहु अअ् - लमु बिमा फ़ी अन्फ़ुसिहिम् صلے इन्नी इज़ल्-
लमिनज़्-ज़ालिमीन (३१) क़ालू या नूहु क़द् जादल्-तना फ़-अक्सर-त
जिदालना फ़अ्-तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (३२)
क़ा-ल इन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा-अ व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन
(३३) व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स - ह लकुम्
इन् कानल्लाहु युरीदु अंय्युग़्वि - य - कुम् ط हु - व रब्बुकुम् قف व
इलैहि तुर्जअून ط (३४) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ط क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू
फ़-अ-लय् - य इज्रामी व अ-न बरीउम् - मिम्मा तुजिरमून (३५) ★

وما من دآبة ١٢ ١٦٩ سورة هود

اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ اَلِیْمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ
الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَ مَا نَرٰىكَ
اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ ۚ وَ مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا
مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ
كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ اٰتٰىنِیْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّیَتْ
عَلَیْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَ اَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَ یٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ
عَلَیْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ
اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ لٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَ یٰقَوْمِ مَنْ
یَّنْصُرُنِیْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ لَاۤ اَقُوْلُ
لَكُمْ عِنْدِیْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَ لَاۤ اَقُوْلُ اِنِّیْ مَلَكٌ
وَّ لَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ تَزْدَرِیْۤ اَعْیُنُكُمْ لَنْ یُّؤْتِیَهُمُ اللّٰهُ خَیْرًا ؕ اَللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّیْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا یٰنُوْحُ
قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِیْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا یَاْتِیْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ﴿٣٣﴾
وَ لَا یَنْفَعُكُمْ نُصْحِیْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ یُرِیْدُ
اَنْ یُّغْوِیَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ
قُلْ اِنِ افْتَرَیْتُهٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَ اَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾

★रु. ३ /३ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे में दर्दनाक अज़ाब का डर है। (२६) तो उन की क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे, कहने लगे कि हम तुम को अपने ही जैसा एक आदमी देखते हैं और यह भी देखते हैं कि तुम्हारी पैरवी करने वाले वही लोग हुए हैं, जो हम में निचले दर्जे के हैं और वह भी ज़ाहिर राय से (न कि ग़ौर व फ़िक्र से) और हम तुम में अपने ऊपर किसी तरह की फ़ज़ीलत नहीं देखते, बल्कि तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं। (२७) उन्हों ने कहा कि ऐ क़ौम! देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलील रखता हूं और उस ने मुझे अपने यहां से रहमत बख़्शी हो, जिस की हक़ीक़त तुम से छिपा रखी गयी है, तो क्या हम इस के लिए तुम्हें मजबूर कर सकते हैं और तुम हो कि उस से ना-ख़ुश हो रहे हों। (२८) और ऐ क़ौम! मैं इस (नसीहत) के बदले तुम से माल व ज़र की ख़्वाहिश नहीं रखता हूं, मेरा बदला तो ख़ुदा के ज़िम्मे है और जो लोग ईमान लाए हैं, मैं उन को निकालने वाला भी नहीं हूं। वह तो अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग ना-दानी कर रहे हो। (२९) और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं उन को निकाल दूं तो ख़ुदा (के अज़ाब) से (बचाने के लिए) कौन मेरी मदद कर सकता है? भला तुम ग़ौर क्यों नहीं करते? (३०) मैं न तुम से यह कहता हूं कि मेरे पास ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं और न यह कि मैं ग़ैब जानता हूं और न यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं और न उन लोगों के बारे में, जिन को तुम नीची नज़र से देखते हो, यह कहता हूं कि ख़ुदा उन को भलाई (यानी आमाल का नेक बदला) नहीं देगा, जो उन के दिलों में है, इसे ख़ुदा ख़ूब जानता है। अगर मैं ऐसा कहूं तो बे-इन्साफ़ों में हूं। (३१) उन्हों ने कहा कि नूह! तुम ने हम से झगड़ा तो किया और झगड़ा भी बहुत किया, लेकिन अगर सच्चे हो, तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, वह हम पर ला नाज़िल करो। (३२) नूह ने कहा कि इस को तो ख़ुदा ही चाहेगा, तो नाज़िल करेगा और तुम (उस को किसी तरह) हरा नहीं सकते। (३३) और अगर मैं यह चाहूं कि तुम्हारी ख़ैरख़्वाही करूं और ख़ुदा यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरी ख़ैरख़्वाही तुम को कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती। वही तुम्हारा परवरदिगार है और तुम्हें उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (३४) क्या ये कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) ने क़ुरआन अपने दिल से बना लिया है? कह दो कि अगर मैं ने दिल से बना लिया है, तो मेरे गुनाह का वबाल मुझ पर और जो गुनाह तुम करते हो, उस की ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूं। (३५) ★

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ऊहि-य इला नूहिन् अन्नहू लंय्युअ्मि-न मिन् क़ौमि-क इल्ला मन् क़द्
आम-न फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यफ़्-अलून صلے ج (३६) वस्नअिल्-
फ़ुल-क बिअअ्-युनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू ج
इन्नहुम् मुग़रक़ून (३७) व यस्-नअुल्फ़ुल-क قف व कुल्लमा मर्-र अलैहि
म - ल - उम्मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु ط
क़ा-ल इन् तस्ख़रू मिन्ना फ़इन्ना नस्ख़रु
मिन्कुम् कमा तस्ख़रून ط (३८) फ़सौ-फ़
तअ्-लमू-न لا मंय्यअ्तीहि अज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि
व यहिल्लु अलैहि अज़ाबुम् - मुक़ीम
(३९) हत्ता इज़ा जा-अ अम्रुना व
फ़ारत्तन्नूरु لا क़ुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन्
कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला
मन् स-ब - क़ अलैहिल् - क़ौलु व मन्
आम-न ط व मा आम-न म-अहू इल्ला
क़लील (४०) व क़ालर्कबू फ़ीहा
बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा ط

هود ١١ ١٨٠ وما من دآبة ١٢

وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ
فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ
وَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ
الْفُلْكَ ۣ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۭ قَالَ اِنْ
تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ
مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾ حَتّٰٓى
اِذَا جَاۗءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ
اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ۭ وَمَآ
اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ۭ
اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۣ
وَنَادٰي نُوْحُۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ
مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَاۗءِ ۭ قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ
فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَاۗءَكِ وَيٰسَمَاۗءُ
اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَاۗءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَي الْجُوْدِيِّ وَ
قِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَنَادٰي نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ
ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾

इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम (४१) व हि-य तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन्
कल्जिबालि قف व नादा नूहुनिब्नहू व का-न फ़ी मअ्-ज़िलि-य्याबुनय्यर्कम्म-अना
व ला तकुम्म-अल्-काफ़िरीन (४२) क़ा-ल स-आवी इला जबलिंय्यअ्-सिमुनी
मिनलमाइ ط क़ा - ल ला आसिमल्यौ - म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला
मर्रहि-म ج व हा-ल बैनहुमल् - मौजु फ़का-न मिनलमुग़्रक़ीन (४३) व
क़ी-ल या अर्ज़ुब्लअी मा-अकि व यासमा-उ अक़्लिअी व ग़ीज़ल्-माउ
व क़ुज़ियल् - अम्रु वस्तवत् अ - लल्जूदिय्यि व क़ी-ल बुअ् - दल्लिल्-
क़ौमिज़्ज़ालिमीन ● (४४) व नादा नूहुर्रब्बहू फ़क़ा-ल रब्बि इन्नब्नी मिन्
अह्ली व इन्-न वअ्-द-कल्-हक़्क़ु व अन्-त अह्कमुल्-हाकिमीन (४५)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और नूह की तरफ़ वह्य की गयी कि तुम्हारी क़ौम में जो लोग ईमान ला चुके, (ला चुके), उनके सिवा और कोई ईमान नहीं लाएगा, तो जो काम ये कर रहे हैं, उन की वजह से ग़म न खाओ। (३६) और एक कश्ती हमारे हुक्म से हमारे सामने बनाओ और जो लोग ज़ालिम हैं, उनके बारे में हम से कुछ न कहना, क्योंकि वे ज़रूर ग़र्क़ कर दिए जाएंगे। (३७) तो नूह ने कश्ती बनानी शुरू कर दी और जब उन की क़ौम के सरदार उनके पास से गुज़रते तो उनका मज़ाक़ उड़ाते। वह कहते कि अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो, तो जिस तरह तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो, उसी तरह (एक वक़्त) हम भी तुम्हारा मज़ाक उड़ाएंगे। (३८) और तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब आता है, जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है? (३९) यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा औरतन्नूर जोश मारने लगा तो हमने (नूह को) हुक्म दिया कि हर क़िस्म (के जानदारों) में से जोड़ा-जोड़ा (यानी) दो (दो जानवर—एक-एक नर और एक-एक मादा) ले लो और जिस शख़्स के बारे में हुक्म हो चुका है (कि हलाक हो जाएगा) उस को छोड़ कर अपने घर वालों को और जो ईमान लाया हो, उसको कश्ती में सवार कर लो और उनके साथ ईमान बहुत ही कम लोग लाए थे। (४०) (नूह ने) कहा कि ख़ुदा का नाम लेकर (कि उसी के हाथ में) उस का चलना और ठहरना (है), उस में सवार हो जाओ। बेशक मेरा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (४१) और वह उनको लेकर (तूफ़ान की) लहरों में चलने लगी, (लहरें क्या थीं), गोया पहाड़ (थे)। उस वक़्त नूह ने अपने बेटे को कि (कश्ती से) अलग था, पुकारा कि बेटा! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों में शामिल न हो। (४२) उसने कहा कि मैं (अभी) पहाड़ से जा लगूंगा, वह मुझे पानी से बचा लेगा। उन्होंने कहा कि आज ख़ुदा के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं (और न कोई बच सकता है,) मगर जिस पर ख़ुदा रहम करे। इतने में दोनों के दर्मियान लहर आ, रोक बन गयी और वह डूब कर रह गया। (४३) और हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान! थम जा, तो पानी ख़ुश्क हो गया और काम तमाम कर दिया गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठहरी और कह दिया गया कि बे-इंसाफ़ लोगों पर लानत ●(४४) और नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और कहा कि परवरदिगार! मेरा बेटा भी मेरे घर वालों में है, (तो उस को भी निजात दे), तेरा वायदा सच्चा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा - ल या नूह् इन्नहू लै - स मिन् अह्लिक ᶜ इन्नहू अ़ - मलुन् ग़ैरु सा़लिहिन् ﷺ फ़ला तस - अलिन मा लै - स ल - क बिही अिल्मुन् ᵇ इन्नी अअिज़ु-क अन् तकू-न मिनल्-जाहिलीन (४६) क़ा-ल रब्बि इन्नी अअूज़ुबि-क अन् अस्अ - ल-क मा लै-स ली बिही अिल्मुन् ᵇ व इल्ला तग़्फ़िर् ली व तर्हम्नी अकुम्मिनल् - ख़ासिरीन (४७) क़ी - ल यानूहुह्बित् बिसलामिम्-मिन्ना व ब-र-कातिन् अ़लै-क व अ़ला उम-मिम् - मिम्मम् - म - अक ᵇ व उम-मुन् सनुमत्तिअ़ुहुम् सुम्-म य-मस्सुहुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (४८) तिल्-क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहा इलै - क ᶜ मा कुन्-त तअ्-लमुहा अन्-त व ला क़ौमु-क मिन् क़ब्लि हाज़ा ᵇ फ़स्बिर् ᵇ इन्नल् - आ़क़ि-ब-त लिलमुत्तक़ीन★ (४९) व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन् ᵇ क़ा-ल या क़ौमिअ़-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ᵇ इन् अन्तुम् इल्ला मुफ़्तरून (५०) या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज-रन् ᵇ इन् अजि्र-य इल्ला अ़-लल्लज़ी फ़-त़-रनी ᵇ अ-फ़ला तअ़-क़िलून (५१) व या क़ौमिस-तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युर्सिलिस्-समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव-व यज़िद्कुम् क़ुव्व-तन् इला क़ुव्वतिकुम् व ला त-त-वल्लौ मुजि्रमीन (५२) क़ालू या हूदु मा जिअ्-तना बिबय्यिनतिंव्-व मा नह्नु बितारिकी आलिहतिना अ़न् क़ौलि-क व मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन (५३) इन्नक़ूलु इल्लाअ्-तरा-क बअ्-ज़ु आलिहतिना बिसूइन् ᵇ क़ा-ल इन्नी उश्हिदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकून ᵛ (५४) मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअ़न् सुम्-म ला तुन्ज़िरून (५५) इन्नी त-वक्कल्तु अ़-लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम् ᵇ मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आख़िज़ुम्-बिनासि़-यतिहा ᵇ इन्-न रब्बी अ़ला सि़रातिम् - मुस्तक़ीम (५६)

ومامن دآبة ١٢ ١٨١ هود ١١

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْئَلْنِ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۗ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ
اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ
عَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۗ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾
تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ
مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ
هُوْدًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا
مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۗ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ
فَطَرَنِيْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ
يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا
عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ
بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۗ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ
مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾
اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۗ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۗ
اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ

منزل ٣

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है और तू सब से बेहतर हाकिम है। (४५) ख़ुदा ने फ़रमाया कि नूह ! वह तेरे घर वालों में नहीं है। वह तो नाशाइस्ता (ना-ज़ेबा) अमल है, तो जिस चीज़ की तुमको हक़ीक़त मालूम नहीं, उसके बारे में मुझ से सवाल ही न करो और मैं तुमको नसीहत करता हूं कि नादान न बनो। (४६) नूह ने कहा, परवरदिगार ! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं कि ऐसी चीज का तुझ से सवाल करूं, जिस की मुझे हक़ीक़त मालूम नहीं और अगर तू मुझे नहीं बख़्शेगा, और मुझ पर रहम नहीं करेगा, तो मैं तबाह हो जाऊंगा। (४७) हुक्म हुआ कि नूह ! हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ (जो) तुम पर और तुम्हारे साथ की जमाअतों पर (नाज़िल की गयी है) उतर आओ और कुछ और जमाअतें होंगी, जिन को हम (दुनिया के फ़ायदों से) नवाज़ेंगे, फिर उन को हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा। (४८) ये (हालात) तमाम ग़ैब की ख़बरों में से हैं, जो हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं और इससे पहले न तुम ही इनको जानते थे और न तुम्हारी क़ौम (ही इन को जानती थी), ∴तो सब्र करो∴कि अंजाम परहेज़गारों ही का (भला) है। (४९) ★

और हमने आद की तरफ़ उन के भाई हूद को (भेजा)। उन्होंने कहा कि मेरी क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम (शिर्क करके ख़ुदा पर) सिर्फ़ बुहतान बांधते हो। (५०) मेरी क़ौम ! मैं इस (वाज़ व नसीहत) का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो उसके ज़िम्मे है, जिस ने मुझे पैदा किया। भला, तुम समझते क्यों नहीं ? (५१) और ऐ क़ौम ! अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगो, फिर उसके आगे तौबा करो। वह तुम पर आसमान से मूसलाधार मेंह बरसाएगा और तुम्हारी ताक़त पर ताक़त बढ़ाएगा और (देखो) गुनाहगार बनकर रू-गरदानी न करो। (५२) वे बोले, हूद ! तुम हमारे पास कोई ज़ाहिर दलील नहीं लाए और हम (सिर्फ़) तुम्हारे कहने से न अपने माबूदों को छोड़ने वाले हैं और न तुम पर ईमान लाने वाले हैं। (५३) हम तो यह समझते हैं कि हमारे किसी माबूद ने तुम्हें आसेब पहुंचा (कर दीवाना कर) दिया है। उन्होंने कहा कि मैं ख़ुदा को गवाह करता हूं और तुम भी गवाह रहो कि जिन को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, उन से बेज़ार हूं। (५४) (यानी जिन की) ख़ुदा के सिवा (इबादत करते हो, तो) तुम सब मिल कर मेरे बारे में (जो) तद्बीर (करनी चाहो,) कर लो और मुझे मोहलत न दो। (५५) मैं ख़ुदा पर, जो मेरा और तुम्हारा (सब का) परवरदिगार है, भरोसा रखता हूं (ज़मीन पर) जो चलने फिरने वाला है, वह उसको चोटी से पकड़े हुए है। बेशक मेरा परवरदिगार सीधे रास्ते पर है। (५६) अगर तुम रू-गरदानी करोगे, तो जो पैग़ाम

∴ मु. अ़ि मु. ता क़.६ ★ रु. ४/४ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़द् अब्-लग़्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम्ᵇ व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन् ग़ै-रकुम्ᶜ व ला तज़ुर्रूनहू शैअन्ᵇ इन्-न रब्बी अला कुल्लि शैइन् ह़फ़ीज़ (५७) व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह़्मतिम्-मिन्नाᶜ व नज्जैनाहुम् मिन् अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ (५८) व तिल्-क आ़दुन् ज-ह़दू बिआयाति रब्बिहिम् व अ़सौ रुसुलहू वत्तबअ़ू अम्-र कुल्लि जब्बारिन् अ़नीद (५९) व उत्बिअ़ू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ़्-न-तंव्-व यौमल्-क़ियामतिᵇ अला इन्-न आ़दन् क-फ़रू रब्बहुम्ᵇ अला बुअ़्-दल्लिआ़दिन् क़ौमि हूद★(६०) व इला समू-द अख़ाहुम् स़ालिह़न्▨ क़ा-ल याक़ौमिअ़्-बुदुल्-ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहूᵇ हु-व अन्श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि वस्तअ़्-म-र-कुम् फ़ीहा फ़स्तग़्फ़िरूहु सुम्-म तूबू इलैहिᵇ इन्-न रब्बी क़रीबुम्-मुजीब (६१) क़ालू या स़ालिह़ु क़द् कुन्-त फ़ीना मर्जुव्वन् क़ब्-ल हाज़ा अ-तन्हाना अन् नअ़्-बु-द मा यअ़्-बुदु आबाउना व इन्नना लफ़ी शक्किम्मिम्मा तद्अ़ूना इलैहि मुरीब (६२) क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह़्-म-तन् फ़मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू फ़मा तज़ीदूननी ग़ै-र तख़्सीर (६३) व या क़ौमि हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आय-तन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला त-मस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ुज़कुम् अ़ज़ाबुन् क़रीब (६४) फ़-अ़-क़रूहा फ़-क़ा-ल त-मत्तअ़ू फ़ी दारिकुम् सलास-त अय्यामिन्ᵇ ज़ालि-क वअ़्-दुन् ग़ैरु मक्ज़ूब (६५) फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना स़ालिहंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह़्मतिम्-मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिइज़िन्ᵇ इन्-न रब्ब-क हुवल्क़विय्युल्-अ़ज़ीज़ (६६)

وما من دابة ١٢ ١٨٢ هود ١١

بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ
رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾ وَ
تِلْكَ عَادٌ ۟ۙ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ
جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٥٩﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ
اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ
صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ
مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ
قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰنَآ
اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾
قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾
وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَ
لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ
تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ
اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ
يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا

★रु. ५/५ आ ११ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेरे हाथ तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, वह मैं ने तुम्हें पहुंचा दिया है और मेरा परवरदिगार तुम्हारी जगह और लोगों को ला बसाएगा और तुम ख़ुदा का कुछ भी नुक़्सान नहीं कर सकते। मेरा परवरदिगार तो हर चीज़ पर निगेहबान है। (५७) और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुंचा तो हमने हूद को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उन्हें भारी अज़ाब से निजात दी। (५८) ये (वही) आद हैं, जिन्होंने ख़ुदा की निशानियों से इन्कार किया और उसके पैग़म्बरों की ना-फ़रमानी की और हर मुतकब्बिर व सर-कश का कहा माना। (५९) तो इस दुनिया में भी उनके पीछे लानत लगी रही और क़ियामत के दिन भी (लगी रहेगी)। देखो आद ने अपने परवरदिगार से कुफ़्र किया (और) सुन रखो हूद की क़ौम पर फिटकार है। (६०) ★

और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह को (भेजा) ▨ तो उन्होंने कहा कि क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया और उसमें आबाद किया, तो उस से मग़्फ़िरत मांगो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार नज़दीक (भी है और दुआ का) क़ुबूल करने वाला (भी) है। (६१) उन्होंने कहा कि सालेह! इस से पहले हम तुम से (कई तरह की) उम्मीदें रखते थे। (अब वे ख़त्म हो गयीं) क्या तुम हम को उन चीज़ों को पूजने से मना करते हो, जिन को हमारे बुज़ुर्ग पूजते आए हैं? और जिस बात की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, इस में हमें ज़बरदस्त शुब्हा है। (६२) सालेह ने कहा, क़ौम! भला देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से खुली दलील पर हूं और उसने मुझे अपने यहां से (नुबूवत की) नेमत बख़्शी हो, तो अगर मैं ख़ुदा की ना-फ़रमानी करूं, तो उसके सामने मेरी मदद करेगा? तुम तो (कुफ़्र की बातों से) मेरा नुक़्सान करते हो। (६३) और (यह भी कहा कि) ऐ क़ौम! यह ख़ुदा की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी (यानी मोजज़ा) है तो इसको छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में (जहां चाहे) चरे और उसको किसी तरह की तक्लीफ़ न देना, वरना तुम्हें जल्द अज़ाब आ पड़ेगा। (६४) मगर उन्होंने उसकी कूंचे काट डालीं, तो (सालेह ने) कहा कि अपने घरों में तीन दिन (और) फ़ायदे उठा लो। यह वायदा है कि झूठा न होगा। (६५) जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने सालेह को और जो लोग उन के साथ ईमान लाये थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से (बचाए रखा)। बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक़तवर

★रु. ५/५ आ ११ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अ-ख़-ज़ल्लज़ी-न ज़-ल-मुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन ॥ (६७)
क-अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ط अला इन्-न समू - द क - फ़रू रब्बहुम् ط अला
बुअ्-दल्लि-समूद ★ (६८) व ल-क़द् जा-अत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा
क़ालू सलामन् ط क़ा-ल सलामुन् फ़मा लबि-स अन् जा - अ बिअिज्लिन्
हनीज (६९) फ़-लम्मा रआ ऐदियहुम्
ला तसिलु इलैहि नकि-रहुम् वऔज-स
मिन्हुम् ख़ीफ़-तुन् ط क़ालू ला त-ख़फ़् इन्ना
उर्सिल्ना इला क़ौमि लूत ط (७०)
वम्र-अतुहू क़ाइमतुन् फ़-ज़हिकत् फ़-बश्शर्ना-
हा बिइस्हा - क़ ॥ व मिंव्वराइ
इस्हा-क़ यअ्-क़ूब (७१) क़ालत् यावैलता अ
अलिदु व अ-न अजूज़ु व्-व हाज़ा बअ्-ली
शैख़न् ط इन् - न हाज़ा लशैउन् अजीब
(७२) क़ालू अ-तअ्-जबी-न मिन् अम्रिल्लाहि
रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुहू अलैकुम्
अह्लल्बैति ط इन्नहू हमीदुम् - मजीद
(७३) फ़-लम्मा ज़-ह-ब अन् इब्राहीमर् - रौअु व जा-अत्हुल् - बुश्रा
युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत ط (७४) इन्-न इब्राही-म ल-हलीमुन् अव्वाहुम्-
मुनीब (७५) या इब्राहीमु अअ्-रिज़् अन् हाज़ा ج इन्नहू क़द् जा-अ
अम्रु रब्बिक ج व इन्नहुम् आतीहिम् अज़ाबुन् ग़ैरु मर्दूद (७६) व
लम्मा जा-अत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अंव्-व क़ा-ल
हाज़ा यौमुन् असीब (७७) व जा-अहू क़ौमुहू युह्रअू-न इलैहि ط व
मिन् क़ब्लु कानू यअ्-मलूनस् - सय्यिआति ط क़ा - ल या क़ौमि हाउलाइ
बनाती हुन्-न अत्हरु लकुम् फ़त्तक़ुल्ला - ह व ला तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़ैफ़ी ط
अलै-स मिन्कुम् रजुलुर्रशीद (७८) क़ालू ल-क़द् अलिम्-त मा लना फ़ी
बनाति-क मिन् हक़्क़िन् ج व इन्न - क ल-तअ्-लमु मा नुरीद (७९)

وما من دآبة ١٢ — ١٨٣ — هود ١١

الصيحة فاصبحوا في ديارهم جثمين ﴿٦٧﴾ كان لم يغنوا فيها ط الا
ان ثمودا كفروا ربهم ط الا بعدا لثمود ﴿٦٨﴾ ولقد جاءت رسلنا
ابرهيم بالبشرى قالوا سلما ط قال سلم فما لبث ان جاء بعجل
حنيذ ﴿٦٩﴾ فلما را ايديهم لا تصل اليه نكرهم واوجس منهم
خيفة ط قالوا لا تخف انا ارسلنا الى قوم لوط ﴿٧٠﴾ وامراته قائمة
فضحكت فبشرنها باسحق ومن وراء اسحق يعقوب ﴿٧١﴾ قالت
يويلتى ءالد وانا عجوز وهذا بعلي شيخا ط ان هذا لشيء عجيب ﴿٧٢﴾
قالوا اتعجبين من امر الله رحمت الله وبركته عليكم اهل
البيت ط انه حميد مجيد ﴿٧٣﴾ فلما ذهب عن ابرهيم الروع و
جاءته البشرى يجادلنا في قوم لوط ﴿٧٤﴾ ان ابرهيم لحليم
اواه منيب ﴿٧٥﴾ يابرهيم اعرض عن هذا ج انه قد جاء
امر ربك ج وانهم اتيهم عذاب غير مردود ﴿٧٦﴾ ولما جاءت
رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا وقال هذا يوم عصيب ﴿٧٧﴾
وجاءه قومه يهرعون اليه ط ومن قبل كانوا يعملون السيات ط
قال يقوم هؤلاء بناتي هن اطهر لكم فاتقوا الله ولا تخزون
في ضيفي ط اليس منكم رجل رشيد ﴿٧٨﴾ قالوا لقد علمت ما
لنا في بنتك من حق ج وانك لتعلم ما نريد ﴿٧٩﴾ قال لو ان لي

★रु॰ ६/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और ज़बरदस्त है। (६६) और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था, उनको चिंघाड़ (की शक्ल में अज़ाब) ने आ पकड़ा, तो वे घरों में औंधे पड़े रह गये, (६७) गोया कभी उन में बसे ही न थे। सुन रखो कि समूद ने अपने परवरदिगार से कुफ़्र किया और सुन रखो समूद पर फिटकार है। (६८) ★

और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी[1] लेकर आए, तो सलाम कहा। उन्होंने भी (जवाब में) सलाम कहा। अभी कुछ देर भी नहीं हुई थी कि (इब्राहीम) एक भुना हुआ बछड़ा ले आए (६९) जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं जाते (यानी वह खाना नहीं खाते) तो उन को अजनबी समझ कर दिल में डरे। (फ़रिश्तों ने) कहा कि डरिए नहीं, हम लूत की क़ौम को तरफ़ (उन के हलाक करने को) भेजे गये हैं। (७०) और इब्राहीम की बीवी (जो पास) खड़ी थी, हंस पड़ी, तो हम ने उसको इस्हाक़ के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी। (७१) उस ने कहा, ऐ हे! मेरे बच्चा होगा? मैं तो बुढ़िया हूं और यह मेरे मियां भी बूढ़े हैं। यह तो बड़ी अजीब बात है। (७२) उन्होंने कहा, क्या तुम ख़ुदा की क़ुदरत से ताज्जुब करती हो? ऐ अह्ले बैत! तुम पर ख़ुदा की रहमत और उसकी बरकतें हैं। वह तारीफ़ के लायक़ और बुज़ुर्गवार है। (७३) जब इब्राहीम से डर जाता रहा और उन को ख़ुशख़बरी भी मिल गयी, तो लूत की क़ौम के बारे में लगे हम से बहस करने।[2] (७४) बेशक इब्राहीम बड़े तहम्मुल वाले, नर्मदिल और रुजू करने वाले थे। (७५) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो। तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुंचा है और इन लोगों पर अज़ाब आने वाला है, जो कभी नहीं टलने का। (७६) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये, तो वह उन (के आने) से ग़मनाक और तंग दिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बड़ी मुश्किल का दिन है। (७७) और लूत की क़ौम के लोग उनके पास बे-तहाशा दौड़ते हुए आए और ये लोग पहले ही से गन्दा काम किया करते थे। लूत ने कहा कि ऐ क़ौम! यह (जो) मेरी (क़ौम की) लड़कियां हैं, ये तुम्हारे लिए (जायज़ और) पाक हैं, तो ख़ुदा से डरो और मेरे मेहमानों के (बारे) में मेरी आबरू न खोओ। क्या तुम में से कोई भी शायस्ता (शिष्ट) आदमी नहीं! (७८) वे बोले, तुम को मालूम है कि तुम्हारी (क़ौम की) बेटियों की हमें कोई ज़रूरत नहीं और जो हमारी ग़रज़ है उसे तुम (ख़ूब) जानते हो। (७९) लूत ने कहा कि ऐ काश! मुझ में

१. जो फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी ले कर आए थे, वे जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील थे और ख़ूबसूरत नवजवान की शक्ल में आए थे। हज़रत इब्राहीम ने उन को मुअज़्ज़िज़ मेहमान समझ कर उन के लिए एक मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़िब्ह किया और उसके कबाब बना कर उन के पास लाये। हज़रत इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा ने जब देखा कि इब्राहीम मेहमानों की ख़ातिर और सत्कार करते हैं, तो ख़ुद भी उन की ख़िदमत के लिए आ खड़ी हुयीं। मेहमानों का यह हाल कि खाना सामने रखा है और उन के हाथ खाने की तरफ़ जाते ही नहीं, यह हाल देख कर हज़रत इब्राहीम के दिल में डर पैदा हुआ कि ये लोग किसी बुरे इरादे से न आये हों, क्योंकि उन लोगों की आदत थी कि जब कोई मेहमान आता और मेज़बान के यहां खाना न खाता, तो वह यह ख़्याल करते कि यह नेक नीयत से नहीं आया, बल्कि किसी बुरे इरादे से आया है। मेहमानों ने कहा, डरिए नहीं, हम ख़ुदा के फ़रिश्ते हैं और लूत की क़ौम को हलाक करने के लिए भेजे गए हैं। फ़रिश्तों का यह क़ौल सुन कर बीबी सारा हंस पड़ीं। फिर फ़रिश्तों ने बीबी सारा को हज़रत इस्हाक़ और हज़रत इस्हाक़ के बाद हज़रत याक़ूब के पैदा होने की ख़ुशख़बरी सुनायी, तो वह मारे ख़ुशी के बे-साख़्ता हंस पड़ीं।

२. जब हज़रत इब्राहीम को फ़रिश्तों के आने की वजह मालूम हुई और उन की बीवी को हज़रत इस्हाक़ की

(शेष पृष्ठ ३६५ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल लौ अन्-न ली बिकुम् क़ुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन् शदीद (८०)
क़ालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि-क लंय्यसिलू इलै-क फ़-अस्रि बिअह्लि-क
बिक़ित्अिम्-मिनल्लैलि व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-ह़दुन् इल्लम्-र-अ-तक ط
इन्नहू मुसीबुहा मा असाबहुम् ط इन्-न मौअि-द-हुमुस्सुब्हु ط अलैसस्सुब्हु
बिक़रीब (८१) फ़-लम्मा जा-अ
अम्रुना ज-अ़ल्ना आलियहा साफ़िलहा व
अम्तर्ना अ़लैहा हि़जा-र-तम्-मिन्
सिज्जीलिम् ۙ- मन्ज़ूदिम् ۙ- (८२)
मुसव्वम्-तन् अि़न्-द रब्बि-क ط व मा हि-य
मिनज़्ज़ालिमी-न बिबअ़ीद ● ★ (८३)
व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअै़बन् ط
क़ा-ल या क़ौमिअ़्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन्
इलाहिन् ग़ैरुहू ط व ला तन्क़ुसुल्-
मिक्या-ल वल्मीज़ा-न इन्नी अराकुम्
बिख़ैरिंव्-व इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब
यौमिम्मुहीत़ (८४) व या क़ौमि
औफ़ुल्-मिक्या-ल वलमीज़ा-न बिल्क़िस्ति
व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (८५)
बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनी-न ج व मा अन
अ़लैकुम् बिह़फ़ीज़ (८६) क़ालू या शुअै़बु अ-स़लातु-क तअ्-मुरु-क अन् नत-रु-क
मा यअ़्-बुदु आबाउना औ अन् नफ़्-अ़-ल फ़ी अम्वालिना मा नशाउ ط
इन्न-क ल-अन्तल्-ह़लीमुर्रशीद (८७) क़ा-ल या क़ौमि अ र-ऐतुम् इन्
कुन्तु अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व र-ज-क़नी मिन्हु रिज़-क़न् ह़-स-नन् ط व
मा उरीदु अन् उख़ालिफ़कुम् इला मा अन्हाकुम् अ़न्हु ط इन् उरीदु
इल्लल्-इस्ला-ह मस्त-त़अ़्-तु ط व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि ط अ़लैहि
त-वक्कल्तु व इलैहि उनीब (८८) व या क़ौमि ला यजिरमन्नकुम्
शिक़ाक़ी अंय्युसीबकुम् मिस्लु मा असा-ब क़ौ-म नूहिन् औ क़ौ-म हूदिन् औ
क़ौ-म सालिहि़न् ط व मा क़ौमु लूति़म्-मिन्कुम् बिबअ़ीद (८९)

وما من دآبة ١٢ ١٨٤ هود ١١

بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِیْٓ اِلٰی رُكْنٍ شَدِیْدٍ ۝٨٠ قَالُوْا یٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ
لَنْ یَّصِلُوْٓا اِلَیْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّیْلِ وَلَا یَلْتَفِتْ مِنْكُمْ
اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِیْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ
اَلَیْسَ الصُّبْحُ بِقَرِیْبٍ ۝٨١ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِیَهَا سَافِلَهَا
وَاَمْطَرْنَا عَلَیْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّیْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ۝٨٢ۙ مُّسَوَّمَةً
عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِیَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ بِبَعِیْدٍ ۝٨٣ وَاِلٰی مَدْیَنَ اَخَاهُمْ
شُعَیْبًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا
الْمِكْیَالَ وَالْمِیْزَانَ اِنِّیْٓ اَرٰىكُمْ بِخَیْرٍ وَّاِنِّیْٓ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ
یَوْمٍ مُّحِیْطٍ ۝٨٤ وَیٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْیَالَ وَالْمِیْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا
النَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ۝٨٥ بَقِیَّتُ اللّٰهِ
خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ۝٨٦ قَالُوْا
یٰشُعَیْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا یَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ
فِیْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِیْمُ الرَّشِیْدُ ۝٨٧ قَالَ یٰقَوْمِ
اَرَءَیْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَرَزَقَنِیْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ
وَمَآ اُرِیْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰی مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِیْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ
مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِیْقِیْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَیْهِ اُنِیْبُ ۝٨٨
وَیٰقَوْمِ لَا یَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِیْٓ اَنْ یُّصِیْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ

منزل ٣

★रु. ७/७ आ १५ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम्हारे मुक़ाबले की ताक़त होती या मैं किसी मज़बूत क़िले में पनाह पकड़ सकता। (८०) फ़रिश्तों ने कहा कि लूत! हम तुम्हारे परवरदिगार के फ़रिश्ते हैं। ये लोग हरगिज़ तुम तक नहीं पहुंच सकेंगे, तो कुछ रात रहे ये अपने घर वालों को लेकर चल दो और तुम में से कोई शख़्स पीछे फिर कर न देखे, मगर तुम्हारी बीवी कि जो आफ़त उन पर पड़ने वाली है, वही उस पर पड़ेगी। उनके (अज़ाब के) वायदे का वक़्त सुबह है और क्या सुबह कुछ दूर है? (८१) तो जब हमारा हुक्म आया, हमने उस (बस्ती) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर पत्थर की तह-ब-तह कंकरियां बरसायीं, (८२) जिन पर तुम्हारे परवरदिगार के यहां से निशान किये हुए थे और वह (बस्ती इन) ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं ●★(८३)और मदयन' की तरफ़ उनके भाई शुऐब को (भेजा), तो उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। और नाप-तौल में कमी न किया करो। मैं तो तुम को ख़ुशहाल देखता हूं और (अगर तुम ईमान न लाओगे, तो) मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अज़ाब का डर है, जो तुम को घेर कर रहेगा। (८४) और क़ौम! नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में ख़राबी करते न फिरो। (८५) अगर तुम को (मेरे कहने का) यक़ीन हो तो ख़ुदा का दिया हुआ नफ़ा ही तुम्हारे लिए है और मैं तुम्हारा निगेहबान नहीं हूं। (८६) उन्होंने कहा, शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि जिन को हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं, हम उनको छोड़ दें या अपने माल से जो काम लेना चाहें, न लें। तुम बड़े नर्म दिल और रास्तबाज़ हो। (८७) उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम! देखो तो, अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से रोशन दलील पर हूं और उस ने अपने यहां से मुझे नेक रोज़ी दी हो। (तो क्या मैं उनके खिलाफ़ करूंगा?) और मैं नहीं चाहता कि जिस बात से मैं तुम्हें मना करूं, ख़ुद मैं उसको करने लगूं, मैं तो जहां तक मुझ से हो सके (तुम्हारे मामलों की) इस्लाह चाहता हूं और (इस बारे में) मुझे तौफ़ीक़ का मिलना ख़ुदा ही (के फ़ज़्ल) से है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं। (८८) और ऐ क़ौम! मेरी मुख़ालफ़त तुम से कोई ऐसा काम न करा दे कि जैसी मुसीबत नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर वाक़ेअ हुई थी, वैसी ही मुसीबत तुम पर वाक़ेअ हो और लूत की क़ौम (का ज़माना तो) तुम से कुछ दूर नहीं। (८९)

(पृष्ठ ३६३ का शेष)

बशारत भी मिल गयी और उन का डर भी दूर हो गया, तो वह हज़रत लूत के बारे में फ़रिश्तों से बातें करने लगे, जिस को ख़ुदा ने अपने से मुताल्लिक़ फ़रमाया है। वे बातें यह थीं कि जब फ़रिश्तों ने कहा कि हम लूत के गांव को तबाह करने आये हैं, तो हज़रत इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गांव को तबाह करोगे, जिस में तीन सौ मोमिन रहते हैं। फ़रिश्तों से कहा, नहीं। फिर इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गांव को हलाक करोगे, जिस में चालीस मोमिन हैं? कहा नहीं। फिर उन्होंने कहा, भला जिस गांव में तीस या बीस या दस या पांच मोमिन हों, क्या तुम उस को भी हलाक करोगे? कहा, नहीं। फिर उन्हों ने कहा कि अगर उस गांव में एक ही मोमिन हो, तब भी उसे तबाह कर दोगे? कहा, नहीं। तब इब्राहीम ने कहा कि उस गांव में तो लूत हैं। उन्हों ने कहा, जो-जो उस में हैं, मालूम हैं। हम लूत को और उन के घर वालों को तो बचा लेंगे, पर उन की औरत नहीं बचेगी। हज़रत इब्राहीम, चूंकि बहुत नर्म दिल थे, इस लिए चाहते थे कि इन लोगों के अज़ाब में देर हो जाए, तो अच्छा

(शेष पृष्ठ ३६७ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि ط इन-न रब्बी रहीमुंव्वदूद (९०)
क़ालू या शुअैबु मा नफ़्क़हु कसीरम्-मिम्मा तक़ूलु व इन्ना ल-नरा-क फ़ीना
ज़ईफ़न् ج व लौला रहतु-क ल-र-जम्ना-क قلے व मा अन्-त अलैना
बि-अज़ीज़ (९१) क़ा-ल या क़ौमि अ-रहती अ-अज़्ज़ु अलैकुम् मिनल्लाहि ط
वत्तख़ज़्तुमूहु वरा-अकुम् ज़िह्रिय्यन् ط इन्-न
रब्बी बिमा तअ्-मलू-न मुहीत (९२) व
या क़ौमिअ्-मलू अला मकानतिकुम् इन्नी
आमिलुन् ط सौ-फ़ तअ्-लमून لا मंय्यअ्तीहि
अज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व मन् हु-व काज़िबुन् ط
वर्तक़िबू इन्नी म-अकुम् रक़ीब (९३)
व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना शुअैबंव्वल्-
लज़ी-न आमनू म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना
व अ-ख़-ज़तिल्लज़ी-न ज़-ल-मुस्सैहतु फ़-अस्बहू
फ़ी दियारिहिम् जासिमीन لا (९४)
क-अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ط अला बुअ्-दल्-
लि मद-य-न कमा बअिदत् समूद ★ (९५)
व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन لا (९६)
इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़त्तबअू अम्-र फ़िर्औ-न ج व मा अम्रु
फ़िर्औ-न बिरशीद (९७) यक़्दुमु क़ौमहू यौमल्-क़ियामति फ़-औ-र-द
हुमुन्ना-र ط व बिअ्सल्-विर्दुल्-मौरूद (९८) व उत्बिअू फ़ी
हाज़िही लअ्-नतंव्-व यौमल्-क़ियामति ط बिअ्सर्रिफ़्दुल्-मर्फ़ूद (९९)
ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अलै-क मिन्हा क़ाइमुंव्-व हसीद
(१००) व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् फ़मा अग़्-नत्
अन्-हुम् आलिहतुहुमुल्लती यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल्लम्मा
जा-अ अम्रु रब्बि-क ط व मा ज़ादूहुम् ग़ै-र तत्बीब (१०१)

وما من دآبة ١٢ ١٨٥ هود ١١

أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُم بِبَعِيدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۭ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوا يٰشُعَيْبُ مَا
نَفْقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرٰىكَ فِينَا ضَعِيفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ
لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَا أَنتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُم
مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٩٢﴾
وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ
عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا
جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ
الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جٰثِمِينَ ﴿٩٤﴾ كَأَن لَّمْ
يَغْنَوْا فِيهَا ۭ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ﴿٩٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
مُوسٰى بِآيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِ فَاتَّبَعُوا
أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾ وَأُتْبِعُوا فِي
هٰذِهِ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ
أَنبَاءِ الْقُرٰى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَّحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ
وَلٰكِن ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ
مِن دُونِ اللّٰهِ مِن شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۭ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ﴿١٠١﴾

★ रु. ८/८ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार रहम वाला और मुहब्बत वाला है।' (९०) उन्होंने कहा कि शुऐब ! तुम्हारी बहुत सी बातें हमारी समझ में नहीं आतीं और हम देखते हैं कि तुम हम में कमज़ोर भी हो और अगर तुम्हारे भाई-बंद न होते, तो हम तुमको संगसार कर देते और तुम हम पर (किसी तरह भी) ग़ालिब नहीं हो। (९१) उन्होंने कहा कि क़ौम ! क्या मेरे भाई-बंदों का दबाव तुम पर ख़ुदा से ज़्यादा है और उसको तुम ने पीठ पीछे डाल रखा है। मेरा परवरदिगार तो तुम्हारे सब अमाल पर एहाता किये हुए है। (९२) और मेरी क़ौम ! तुम अपनी जगह काम किये जाओ, मैं (अपनी जगह) काम किये जाता हूं। तुमको बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि रुसवा करने वाला अज़ाब किस पर आता है और झूठा कौन है और तुम भी इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं। (९३) और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा तो हमने शुऐब को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उन को तो अपनी रहमत से बचा लिया और जो ज़ालिम थे, उनको चिंघाड़ ने आ दबोचा, तो वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (९४) गोया उनमें कभी बसे ही न थे। सुन रखो कि मदयन पर (वैसी ही) फिटकार है, जैसी समूद पर फिटकार थी। (९५) ★

और हमने मूसा को अपनी निशानियां और रोशन दलील देकर भेजा। (९६) (यानी) फ़िऔन और उसके सरदारों की तरफ़, तो वह फ़िऔन ही के हुक्म पर चले और फ़िऔन का हुक्म दुरुस्त नहीं था। (९७) वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के आगे-आगे चलेगा और उनको दोज़ख़ में जा उतारेगा और जिस मक़ाम पर वे उतारे जाएंगे, वह बुरा है। (९८) और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गयी और क़ियामत के दिन भी (पीछे लगी रहेगी), जो इनाम उन को मिला है, बुरा है। (९९) ये (पुरानी) बस्तियों के थोड़े से हालात हैं, जो हम तुम से बयान करते हैं। इन में से कुछ तो बाक़ी हैं और कुछ का तहस-नहस हो गया। (१००) और हमने उन लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया, ग़रज़ जब तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुंचा, तो जिन माबूदों को, वे ख़ुदा के सिवा पुकारा करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आए और तबाह करने के सिवा उनके हक़ में और कुछ न कर सके। (१०१) और

(पृष्ठ ३६५ का शेष)

है। शायद वे ईमान ले आएं और बद-फ़ेलियों से रुक जाएं। फ़रिश्तों ने इब्राहीम से कहा, यह ख़्याल छोड़ दीजिए, उन के लिए अज़ाब का हुक्म हो चुका है और अज़ाब हो कर रहेगा।

१. मदयन हज़रत इब्राहीम के बेटे का नाम था, फिर उन की औलाद में से एक क़बीले का यह नाम हो गया। इस जगह यही क़बीला मुराद है।

१. 'वदूद' (मुहब्बत वाला) यानी बंदों को दोस्त रखे या बंदे उस को दोस्त रखें। क़ुत्बुल अब्रार मौलाना याक़ूब चर्ख़ी क़द्-स सिर्रहू 'शरहे' 'अस्माउल्लाह' में वदूद के मानी इस तरह बयान किये हैं कि तमाम ख़ल्क़ के साथ नेकी का दोस्त रखने वाला और उन दिलों का दोस्त कि जो हक़ की तरफ़ झुके हुए हैं, यानी वह नेकी को दोस्त रखता है और नेक लोग उस को दोस्त रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व कज़ालि-क अख़्ज़ु रब्बि-क इज़ा अ-ख़-ज़ल्क़ुरा व हि-य ज़ालिमतुन् ط इन्-न अख़्-ज़हू अलीमुन् शदीद (१०२) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिमन् ख़ा-फ़ अज़ाबल्-आख़िरति ط ज़ालि-क यौमुम् - मज्मूअुल् - लहुन्नासु व ज़ालि - क यौमुम्मश्हूद (१०३) व मा नु-अख़्ख़िरुहू इल्ला लिअ - जलिम्-मअ-दूद ط

(१०४) यौ-म यअ्ति ला त-कल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बिइज़्निही ج फ़मिन्हुम् शक़िय्युंव-व सअीद (१०५) फ़-अम्मल्लज़ी-न शक़ू फ़फ़िन्नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव-व शहीक़ ل (१०६) ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा - अ रब्बु-क ط इन्-न रब्ब-क फ़अ - आलुलिलमा युरीद (१०७) व अम्मल्लज़ी-न सुअिदू फ़फ़िल्जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा - अ रब्बु-क ط अ़ता-अन् ग़ै-र मज्ज़ूज़ (१०८) फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम्मिम्मा यअ्-बुदु हा-उलाइ ط मा यअ्-बुदू - न इल्ला कमा

وكذلك اخذ ربك اذا اخذ القرى وهى ظالمة ط ان اخذه
اليم شديد ۝١٠٢ ان فى ذلك لاية لمن خاف عذاب الاخرة ط ذلك
يوم مجموع له الناس وذلك يوم مشهود ۝١٠٣ وما نؤخره الا
لاجل معدود ۝١٠٤ يوم يات لا تكلم نفس الا باذنه ج فمنهم
شقى وسعيد ۝١٠٥ فاما الذين شقوا ففى النار لهم فيها زفير و
شهيق ۝١٠٦ خلدين فيها ما دامت السموت والارض الا ما شاء
ربك ط ان ربك فعال لما يريد ۝١٠٧ واما الذين سعدوا ففى الجنة
خلدين فيها ما دامت السموت والارض الا ما شاء ربك ط عطاء
غير مجذوذ ۝١٠٨ فلا تك فى مرية مما يعبد هؤلاء ط ما يعبدون
الا كما يعبد اباؤهم من قبل ط وانا لموفوهم نصيبهم غير
منقوص ۝١٠٩ ع ولقد اتينا موسى الكتب فاختلف فيه ط ولولا كلمة
سبقت من ربك لقضى بينهم ط وانهم لفى شك منه مريب ۝١١٠
وان كلا لما ليوفينهم ربك اعمالهم ط انه بما يعملون خبير ۝١١١
فاستقم كما امرت ومن تاب معك ولا تطغوا ط انه بما تعملون
بصير ۝١١٢ ولا تركنوا الى الذين ظلموا فتمسكم النار لا وما لكم
من دون الله من اولياء ثم لا تنصرون ۝١١٣ واقم الصلوة
طرفى النهار وزلفا من اليل ط ان الحسنت يذهبن السيات ط

यअ्-बुदु आबाउहुम् मिन् क़ब्लु ط व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम् ग़ै - र मन्क़ूस ★ (१०९) व-ल-क़द् आतैना मूसल्किता - ब फ़ख़्तुलि - फ़ फ़ीहि ط व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् ط व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (११०) व इन् - न कुल्ललल्लम्मा लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बु-क अअ्-मालहुम् ط इन्नहू बिमा यअ्-मलू-न ख़बीर (१११) फ़स्तक़िम् कमा उमिर-त व मन् ता-ब म-अक व ला तत़्ग़ौ ط इन्नहू बिमा तअ्-मलू-न बसीर (११२) व ला तर्कनू इलल्लज़ी-न ज़-लमू फ़-त-मस्सकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ सुम्-म ला तुन्सरून (११३) व अक़िमिस्सला-त त़-र - फ़यिन्नहारि व ज़ु-ल्-फ़म् - मिनल्लैलि ط इन्नल् - ह-स-नाति युज़्हिब्नस्-सय्यिआति ط ज़ालि-क ज़िक्रा लिज़्ज़ाकिरीन ج (११४)

★रु. ९/९ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम्हारा परवरदिगार जब ना-फ़रमान बस्तियों को पकड़ा करता है, तो उस की पकड़ इसी तरह की होती है। बेशक उसकी पकड़ दुख देने वाली (और) सख़्त है। (१०२) इन (क़िस्सों) में उस शख़्स के लिए, जो आख़िरत के अज़ाब से डरे, इब्रत है। यह वह दिन होगा, जिसमें सब लोग इकट्ठे किए जाएंगे और यही वह दिन होगा, जिसमें सब (ख़ुदा के सामने) हाजिर किए जाएंगे। (१०३) और हम उसके लाने में एक तै वक़्त तक ताख़ीर कर रहे हैं। (१०४) जिस दिन वह आ जाएगा, तो कोई शख़्स ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर बोल भी नहीं सकेगा। फिर उनमें से कुछ बद-बख़्त होंगे और कुछ नेक-बख़्त। (१०५) तो जो बद-बख़्त होंगे वे दोजख़ में (डाल दिए जाएंगे), उस में उनको चिल्लाना और धाड़ना होगा। (१०६) (और) जब तक आसमान व ज़मीन हैं, हमेशा उसी में रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, कर देता है। (१०७) और जो नेक-बख़्त होंगे, वे बहिश्त में (दाख़िल किए जाएंगे और) जब तक आसमान और ज़मीन हैं, हमेशा इसी में रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे, यह (ख़ुदा की) बख़्शिश है, जो कभी ख़त्म नहीं होगी। (१०८) तो ये लोग, जो (ग़ैर-ख़ुदा की) पूजा करते हैं, उस से तुम शक में न पड़ना, ये इसी तरह पूजा करते हैं, जिस तरह पहले से इन के बाप-दादा पूजा करते आये हैं और हम उन को उन का हिस्सा पूरा-पूरा बग़ैर कुछ घटाए-बढ़ाए देने वाले हैं। (१०९) ★

और हमने मूसा को किताब दी, तो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और वे तो इस से भारी शुब्हे में (पड़े हुए) हैं। (११०) और तुम्हारा परवरदिगार इन सब को (क़ियामत के दिन) उन के आमाल का पूरा-पूरा बदला देगा। बेशक जो अमल ये करते हैं, वह उसे जानता है। (१११) सो (ऐ पैग़म्बर !) जैसा तुम को हुक्म होता है (उस पर) तुम और जो लोग तुम्हारे साथ तौबा कर चुके हैं, क़ायम रहो और हद से आगे न जाना। वह तुम्हारे सब अमल देख रहा है। (११२) और जो लोग ज़ालिम हैं, उन की तरफ़ मायल न होना, नहीं तो तुम्हें (दोजख़ की) आग आ लिपटेगी और ख़ुदा के सिवा तुम्हारे और दोस्त नहीं हैं। अगर तुम ज़ालिमों की तरफ़ मायल हो गये, तो फिर तुम को (कहीं से) मदद न मिल सकेगी। (११३) और दिन के दोनों सिरों (यानी सुबह और शाम के वक़्तों में और रात की चंद पहली) साअतों में नमाज़ पढ़ा करो। कुछ शक नहीं कि नेकियां गुनाहों को दूर कर देती हैं, यह उनके लिए नसीहत है, जो नसीहत

24

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्-रल्-मुह्सिनीन (११५) फ़लौला का-न
मिनल्क़ुरूनि मिन् क़ब्लिकुम् उलू बक़िय्यतिय्यन्हौ-न अ़निल्फ़सादि फ़िल्अर्ज़ि
इल्ला क़लीलम्-मिम्मन् अन्जैना मिन्हुम् ج वत्त - ब - अ़ल्लज़ी-न ज़लमू मा
उत्रिफ़ू फ़ीहि व कानू मुज्रिमीन (११६) व मा का - न रब्बु-क
लियुह्लिकल्-क़ुरा बिज़ुल्मिव् - व अह्लुहा
मुस्लिहून (११७) व लौ शा-अ रब्बु-क
ल-ज-अ़-लन्ना-स उम्मतंव्वाहिद-तंव् - व ला
यज़ालू-न मुख़्तलिफ़ीन ۙ (११८) इल्ला
मर्रहि-म रब्बुक ط व लिज़ालि-क ख़-ल-क़
हुम् ط व तम्मत् कलिमतु रब्बि - क ल
अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि
अज्-मअ़ीन (११९) व कुल्लन् नक़ुस्सु
अ़लै-क मिन् अम्बाइर्रुसुलि मा नुसब्बितु
बिही फ़ुआ-द - क ج व जा - अ-क फ़ी
हाज़िहिल्-हक़्क़ु व मौअ़िज़तु व्-व ज़िक्रा
लिल्मुअ्मिनीन (१२०) व क़ुल् लिल्लज़ी-न
ला युअ्मिनूनअ्-मलू अ़ला मकानतिकुम् ط
इन्ना आ़मिलून ۙ (१२१) वन्तज़िरू ج इन्ना मुन्तज़िरून (१२२) व
लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलैहि युर्जअुल्-अम्रु कुल्लुहू फ़अ्-बुद्हु व
त-वक्कल् अ़लैहि ط व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्-मलून ★ (१२३)

يوسف ١٢ ١٨٧ وما من دآبة ١٢

ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ
وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ
رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ
رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الرُّسُلِ
مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاۗءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ ۭ
اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ
وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾ ع
سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّاثْنَا عَشَرَ رُكُوْعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ

منزل ٣

१२ सूरतु यूसु-फ़ ५३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७४११ अक्षर, १८०८ शब्द, १११ आयत और १२ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम. ●

अलिफ़् - लाम् - रा قف तिल - क आयातुल् - किताबिल् - मुबीन
(१) इन्ना अन्ज़ल्नाहु क़ुर-आनन् अ़-रबिय्यल्-ल-अ़ल्लकुम् तअ्-क़िलून (२)

★रु. १०/१० आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुबूल करने वाले हैं। (११४) और सब्र किये रहो कि ख़ुदा नेक लोगों का बदला बर्बाद नहीं करता। (११५) तो जो उम्मतें तुम से पहले गुज़र चुकी हैं, उनमें ऐसे होशमंद क्यों न हुए, जो मुल्क में ख़राबी करने से रोकते, हां (ऐसे) थोड़े से (थे), जिन को हम ने उन में से मुख़्लिसी बख़्शी और जो ज़ालिम थे, उन्हीं बातों के पीछे लगे रहे, जिन में ऐश व आराम था और वे गुनाहों में डूबे हुए थे। (११६) और तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं है कि बस्तियों में, जबकि वहां के रहने वाले नेक हों ज़ुल्म के तौर पर तबाह कर दे। (११७) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो तमाम लोगों को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वे हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। (११९) मगर जिन पर तुम्हारा परवरिगार रहम करे और इसी लिए उस ने उनको पैदा किया है और तुम्हारे परवरदिगार का क़ौल पूरा हो गया कि मैं दोज़ख़ को जिन्नों और इंसानों, सब से भर दूंगा। (१२०) ऐ (मुहम्मद !) और पैग़म्बरों के वे सब हालात जो हम तुम से बयान करते हैं, उन से हम तुम्हारे दिल को क़ायम रखते हैं और इन (क़िस्सों) में तुम्हारे पास हक़ पहुंच गया और (यह) मोमिनों के लिए नसीहत और इब्रत है। (१२०) और जो लोग ईमान नहीं लाए उन से कह दो कि तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, हम (अपनी जगह) अमल किये जाते हैं। (१२१) और (आमाल के नतीजे का) तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं। (१२२) और आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ों का इल्म ख़ुदा ही को है और तमाम मामलों का पलटना उसी की तरफ़ है, तो उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार उस से बे-ख़बर नहीं। (१२३) ★



१२ सूरः यूसुफ़ ५३

सूरः यूसुफ़ मक्की है और इसमें एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम-रा, यह रोशन किताब की आयतें हैं। (१) हमने इस क़ुरआन को अरबी में नाज़िल किया है, ताकि तुम समझ सको। (२) (ऐ पैग़म्बर !) हम इस क़ुरआन के ज़रिए से, जो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नह्नु नक़ुस्सु अलै-क अह्-स-नल्-क़-ससि बिमा औहैना इलै-क हाज़ल्-
क़ुर्आ-न ^ व इन् कुन्-त मिन् क़ब्लिही लमिनल्ग़ाफ़िलीन (३) इज़्
क़ा-ल यूसुफ़ु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी र-ऐतु अ-ह्-द अ-श-र कौकबव्वश्शम-स
वल्क़-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (४) क़ा-ल या बुनय्-य ला तक़्सुस्
रुअ-या-क अला इख़्वति-क फ़-यकीदू ल-क
कैदन् ७ इन्नश्शैता-न लिल्इन्सानि अदुव्वुम्-
मुबीन (५) व कज़ालि-क यज्तबी-क
रब्बु-क व युअल्लिमु-क मिन् तअ्वीलिल्-
अहादीसि व युतिम्मु निअ्-म-तहू अलै-क व
अला आलि यअ्-क़ू-ब कमा अतम्महा अला
अ-बवै-क मिन् क़ब्लु इब्राही-म व
इस्हा-क़ ७ इन्-न रब्ब-क अलीमुन् हकीम
★(६) ल-क़द् का-न फ़ी यूसु-फ़ व
इख़्वतिही आयातुल्लिस्-सा-इलीन (७)
इज़् क़ालू ल-यूसुफ़ु व अख़ूहु अहब्बु
इला अबीना मिन्ना व नह्नु उस्बतुन् ७
इन-न अबाना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन ^ (८) उक़्तुलू यूसु-फ़
अवित्रहूहु अर-ज़य्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम्बअ्-दिही क़ौमन्
सालिहीन (९) क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् ला तक़्तुलू यूसु-फ़ व अल्क़ूहु फ़ी
ग़याबतिल्-जुब्बि यल्तक़ित्हु बअ्-ज़ुस्-सय्यारति इन् कुन्तुम् फ़ाअिलीन (१०)
क़ालू या अबाना माल-क ला तअ्मन्ना अला यूसु-फ़ व इन्ना लहू
लनासिहून (११) अर्सिल्हु म-अना ग़दंय्यर्तअ व यल-अब् व इन्ना लहू
लहाफ़िज़ून (१२) क़ा-ल इन्नी ल-यह्ज़ुनुनी अन् तज़्हबू बिही व
अख़ाफ़ु अंय्यअ्कुलहुज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अन्हु ग़ाफ़िलून (१३) क़ालू
लइन् अ-क-लहुज़्ज़िअ्बु व नह्नु उस्बतुन् इन्ना इज़ल्लख़ासिरून (१४)

اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ
يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ
فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ وَكَذٰلِكَ
يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ
عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَ
اِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖۤ
اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَ
نَحْنُ عُصْبَةٌ ۭ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۨ ۝ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ
اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا
صٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ قَاۗىِٕلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ
الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا
مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰي يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا
يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا
بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝ قَالُوْا لَىِٕنْ
اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ
وَاَجْمَعُوْۤا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ

★रु. १/११ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हमने तुम्हारी तरफ़ भेजा है, तुम्हें एक बहुत अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं और तुम इस से पहले बे-ख़बर थे। (३) जब यूसुफ़ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा! मैं ने (ख़्वाब में) ग्यारह सितारों और सूरज और चांद को देखा है। देखता (क्या) हूं कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। (४) उन्होंने कहा कि बेटा! अपने ख़्वाब का ज़िक्र अपने भाइयों से न करना, नहीं तो वे तुम्हारे हक़ में फ़रेब की की चाल चलेंगे। कुछ शक नहीं कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५)और इसी तरह ख़ुदा तुम्हें बर्गुज़ीदा (चुना हुआ ख़ास) करेगा और (ख़्वाब की) बातों की ताबीर का इल्म सिखाएगा और जिस तरह उस ने अपनी नेमत पहले तुम्हारे दादा, परदादा इब्राहीम और इस्हाक़ पर पूरी की थी, उसी तरह तुम पर और याक़ूब की औलाद पर पूरी करेगा। बेशक तुम्हारा परवरदिगार (सब कुछ) जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (६) ★

हां, यूसुफ़ और उन के भाइयों (के क़िस्से) में पूछने वालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं।[१] (७) जब उन्होंने (आपस में) तज़्किरा किया कि यूसुफ़ और उसका भाई अब्बा को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, हालांकि हम जमाअत (की जमाअत) हैं। कुछ शक नहीं कि अब्बा खुली ग़लती पर हैं।[२] (८) तो यूसुफ़ को (या तो जान से) मार डालो या किसी मुल्क में फेंक आओ, फिर अब्बा की तवज्जोह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाएगी और इसके बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे। (९) उन में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को जान से न मारो, किसी गहरे कुएं में डाल दो कि कोई राह चलता आदमी निकाल (कर और मुल्क में) ले जाएगा। अगर तुम को करना है (तो यों करो)। (१०) (यह मश्विरे कर के वे याक़ूब से) कहने लगे कि अब्बा जान! क्या वजह है कि आप यूसुफ़ के बारे में हमारा एतबार नहीं करते, हालांकि हम उस के ख़ैरख़्वाह हैं। (११) कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि ख़ूब मेवे खाये और खेले-कूदे। हम उस के निगहबान हैं। (१२) उन्होंने कहा कि यह बात मुझे ग़मनाक किये देती है कि तुम उसे ले जाओ (यानी वह मुझ से जुदा हो जाए) और मुझे यह ख़ौफ़ है कि तुम (खेल में) उस से ग़ाफ़िल हो जाओ और उसे भेड़िया खा जाए। (१३) वे कहने लगे कि अगर हमारी मौजूदगी में, कि हम एक ताक़तवर जमाअत हैं, भेड़िया

---

१. यहूदियों ने जनाब रिसालत मआब से कहा कि हमें उन पैग़म्बर का हाल बताइए, जो शाम में रहते थे और उन का बेटा मिस्र की तरफ़ निकाल दिया गया था। वह बेटे के ग़म में इतना रोते रहे कि आंख की रोशनी जाती रही। कहते हैं कि उस वक़्त मक्का में कोई शख़्स अह्ले किताब में से न था और न कोई ऐसा आदमी था जो पिछले नबियों के हालात का इल्म रखता हो। इस लिए यहूदियों ने एक शख़्स को मदीने से यह सवाल करने को हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मक्का में भेजा, तब ख़ुदा ने यह सूरः नाज़िल फ़रमायी।

२. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई थे, जिन में से दस तो सौतेले थे और एक सगे। उन का नाम बिन यामीन था और यह सब में छोटे थे। यहां 'इस के भाई' से मुराद यही बिन यामीन हैं।

★रु. १/११ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-लम्मा ज-हबू बिही व अज-मअू अंय्यज-अ़लूहु फ़ी ग़याबतिल्-जुब्बि ج व
औहैना इलैहि ल-तुनब्बि-अन्न-हुम् बिअम्रिहिम् हाज़ा व हुम् ला यश-अुरून
(१५) व जाऊ अबाहुम् अ़िशाअंय्यब-कून ط (१६) क़ालू या अबाना
इन्ना ज-हब्ना नस्तबिक़ु व त-रक्ना यूसु-फ़ अ़िन्-द मताअ़िना फ़-अ-क-लहुज़्-

بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾ وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾
قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ
الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى
قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ
جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا
وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۭ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۭ وَ
اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ
وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ
لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۭ وَكَذٰلِكَ
مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۭ
وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا
بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ
هَيْتَ لَكَ ۭ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْٓ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ۭ
كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْۗءَ وَالْفَحْشَاۗءَ ۭ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾
وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۭ

ज़िअ्बु ج व मा अन्-त बिमुअ्मिनिल्लना
व लौ कुन्ना सादिक़ीन ● (१७) व जाऊ
अ़ला क़मीसिही बिदमिन् कज़िबिन् ط
क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम्
अम्-रन् ط फ़-सब्रुन् जमीलुन् ط वल्लाहुल्-
मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून (१८) व
जा-अत् सय्यारतुन् फ़-अर्सलू वारि-दहुम्
फ़-अद्ला दल्-वहू ط क़ा-ल या बुश्रा हाज़ा
ग़ुलामुन् ط व अ-सर्रूहु बिज़ा-अ़तन् ط
वल्लाहु अ़लीमुम्-बिमा यअ़्मलून (१९)
व शरौहु बि-स-मनिम्-बख़्सिन् दराहि-म
मअ़्-दूदतिन् ج व कानू फ़ीहि मिनज़्-
ज़ाहिदीन ★ (२०) व क़ालल्लज़िश्तराहु मिम्मिस्-र लिम-र-अतिही अक्रिमी
मस्-वाहु अ़सा अंय्यन्फ़-अ़ना औ नत्तख़ि-ज़हू व-ल-दन् ط व कज़ालि-क मक्कन्ना
लियूसु-फ़ फ़िल्अर्ज़ि ز व लिनु-अ़ल्लिमहू मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि ط वल्लाहु
ग़ालिबुन् अ़ला अम्रिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून (२१) व
लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्दहू आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्-मन् ط व कज़ालि-क नज्ज़िल्-
मुह्सिनीन (२२) व रा-व-दत्-हुल्लती हु-व फ़ी बैतिहा अ़न् नफ़्सिही व
ग़ल्ल-क़तिल्-अब-वा-ब व क़ालत् है-त लक ط क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि इन्नहू रब्बी
अह्-स-न मस्वा-य ط इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (२३) व ल-क़द् हम्मत्
बिही ج व हम्-म बिहा लौला अर्रआ बुर्हा-न रब्बिही ط कज़ालि-क लिनस्रि-फ़
अ़न्हुस्सू-अ वल्-फ़ह्शा-अ ط इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुख़्लसीन (२४)

● सु. ३/४ ★ रु. २/१२ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri.

खा गया, तो हम बड़े नुक़्सान में पड़ गये। (१४) ग़रज़ जब वे उस को ले गये और इस पर एक राय हो गये कि उसको गहरे कुएं में डाल दें, तो हमने यूसुफ़ की तरफ़ वह्य भेजी कि (एक वक़्त ऐसा आएगा कि) तुम उन को इस व्यवहार से आगाह करोगे और उनको (इस वह्य की) कुछ ख़बर न होगी। (१५) (यह हरकत करके) वे रात के वक़्त बाप के पास रोते हुए आये, (१६) (और) कहने लगे कि अब्बाजान! हम तो दौड़ने और एक दूसरे से आगे निकलने में लग गये और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ गये तो भेड़िया खा गया और आप हमारी बात को, गो हम सच ही कहते हों, मान कर न देंगे ● (१७) और उनके कुरते पर झूठ-मूठ का लहू भी लगा लाये। याक़ूब ने कहा (कि हक़ीक़त यों नहीं है), बल्कि तुम अपने मन से (यह) बात बना लाये हो।[1] अच्छा सब्र (कि वही) ख़ूब (है) और जो तुम बयान करते हो, उसके बारे में ख़ुदा ही से मदद चाहिये। (१८) (अब ख़ुदा की शान देखो कि उस कुएं के क़रीब) एक क़ाफ़िला आया और उन्होंने (पानी के लिये) अपना सक़्क़ा भेजा। उस ने कुएं में डोल लटकाया (तो यूसुफ़ उससे लटक गये)। वह बोला, ज़हे क़िस्मत! यह तो (निहायत हसीन) लड़का है और उसको क़ीमती सरमाया समझ कर छिपा लिया और जो कुछ वे करते थे, ख़ुदा को सब मालूम था। (१९) और उसको थोड़ी-सी क़ीमत (यानी) गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला और उन्हें उन (के बारे) में कुछ लालच भी न था। (२०) ★

और मिस्र में जिस शख़्स[2] ने उस को ख़रीदा, उसने अपनी बीवी से, (जिस का नाम ज़ुलेखा था) कहा कि इस को इज़्ज़त व इक्राम से रखो। अजब नहीं कि यह हमें फ़ायदा दे या हम इसे अपना बेटा बना लें। इस तरह हमने यूसुफ़ को (मिस्र की) धरती पर जगह दी और गरज यह थी कि हम उन को (ख़्वाब की) बातों की ताबीर सिखाएं और ख़ुदा अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (२१) और जब वह अपनी जवानी को पहुंचे तो हमने उनको हिक्मत और इल्म दिया और भले लोगों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं। (२२) तो जिस औरत के घर में वह रहते थे उसने उन को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा और दरवाज़े बन्द करके कहने लगी, (यूसुफ़!) जल्दी आओ। उन्होंने कहा कि ख़ुदा पनाह में रखे, वह (यानी तुम्हारे मियां) तो मेरे आक़ा हैं, उन्होंने मुझे अच्छी तरह से रखा है, (मैं ऐसा ज़ुल्म नहीं कर सकता,) बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह नहीं पाएंगे। (२३) और उस औरत ने उनका क़स्द किया और उन्होंने उसका क़स्द किया।[3] अगर वह अपने परवरदिगार की निशानी न देखते (तो जो होता, होता,) यों इसलिए (किया गया) कि हम उनसे बुराई और बे-हयाई को रोक दें। बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से थे। (२४)

---

१. कुरते पर झूठ-मूठ का लहू लगा लाये, ताकि यह समझा जाए कि भेड़िया सचमुच खा गया है, लेकिन यह ख़्याल न किया कि भेड़िया सचमुच खा जाता, तो भेड़िए के दांतों से कुरता भी फट जाता, हालांकि वह बिल्कुल सालिम था। जब इन मक्कारों ने हज़रत याक़ूब से आ कर कहा कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया, तो उन्हों ने कुरता ही देख कर समझ लिया कि ये झूठ कहते हैं और कहा, भेड़िया तो बड़ा अक़्लमंद था कि यूसुफ़ को तो खा गया और कुरता न फटने दिया।

२. उस शख़्स का नाम क़ुत्फ़ीर था। कुछ लोगों ने लुत्फ़ीर कहा है। यह मिस्र के बादशाह का, जिस का नाम रय्यान बिन वलीद था, वज़ीर था और उस का लक़ब 'अज़ीज़' था।

३. ज़ुलेख़ा का क़स्द जैसा होगा, ज़ाहिर है, क्योंकि वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुस्न व जमाल पर फ़रेफ़्ता हो

(शेष पृष्ठ ३७७ पर)

वस्त-ब-क़ल्बा-ब व क़द्-दत् क़मी-सहू मिन् दुबुरिंव्-व अल्फ़या सय्यि-दहा ल-दल्बाबि ҍ
क़ालत् मा जज़ा-उ मन् अरा-द बि-अह्लि-क सूअन् इल्ला अंय्युस्ज-न औ
अज़ाबुन् अलीम (२५) क़ा-ल हि-य रा-व-दत्नी अन् नफ़्सी व शहि-द
शाहिदुम्-मिन् अह्लिहा ८ इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् क़ुबुलिन् फ़-स-द-क़त्
व हु-व मिनल्काज़िबी-न (२६) व इन्
का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् फ़-क-ज़-बत्
व हु-व मिनस्-सादिक़ीन (२७) फ़-लम्मा
रआ क़मी-सहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् क़ा-ल
इन्नहू मिन् कैदि-कुन्-न ҍ इन्-न कै-द-कुन्-न
अज़ीम (२८) यूसुफ़ु अअ्-रिज़् अन्
हाज़ा سكتة वस्तग़्फ़िरी लिज़म्बिकि صلے
इन्नकि कुन्ति मिनल्-ख़ातिईन ★ (२९)
व क़ा-ल निस्-वतुन् फ़िल्-मदीनतिम्-र-अतुल्-
अज़ीज़ि तुराविदु फ़ताहा अन्
नफ़्सिही ८ क़द् श-ग़-फ़हा हुब्बन् ҍ इन्ना
ल-न-राहा फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (३०)

قالت ما جزاء من اراد باهلك سوءا الا ان يسجن او عذاب
اليم ﴿٢٥﴾ قال هى راودتنى عن نفسى وشهد شاهد من اهلها
ان كان قميصه قد من قبل فصدقت وهو من الكذبين ﴿٢٦﴾
وان كان قميصه قد من دبر فكذبت وهو من الصدقين ﴿٢٧﴾
فلما را قميصه قد من دبر قال انه من كيدكن ان كيدكن
عظيم ﴿٢٨﴾ يوسف اعرض عن هذا سكتة واستغفرى لذنبك
انك كنت من الخطئين ﴿٢٩﴾ وقال نسوة فى المدينة امرات العزيز
تراود فتها عن نفسه قد شغفها حبا انا لنرها فى ضلل مبين ﴿٣٠﴾
فلما سمعت بمكرهن ارسلت اليهن واعتدت لهن متكا واتت
كل واحدة منهن سكينا وقالت اخرج عليهن فلما راينه اكبرنه
وقطعن ايديهن وقلن حاش لله ما هذا بشرا ان هذا الا ملك
كريم ﴿٣١﴾ قالت فذلكن الذى لمتننى فيه ولقد راودته عن
نفسه فاستعصم ولئن لم يفعل ما امره ليسجنن وليكونا
من الصغرين ﴿٣٢﴾ قال رب السجن احب الى مما يدعوننى اليه
والا تصرف عنى كيدهن اصب اليهن واكن من الجهلين ﴿٣٣﴾
فاستجاب له ربه فصرف عنه كيدهن انه هو السميع العليم ﴿٣٤﴾
ثم بدا لهم من بعد ما راوا الايت ليسجننه حتى حين ﴿٣٥﴾

منزل ٣

फ़-लम्मा समिअत् बिमक्रिहिन्-न अर्स-लत् इलैहिन्-न व अअ्-त-दत् लहुन्-न मुत्त-क-अंव्-व
आतत् कुल्-ल वाहिदतिम्-मिन्हुन्-न सिक्कीनंव्-व क़ालतिख़्-रुज् अलैहिन्-न
फ़-लम्मा रऐनहू अक्बर-नहू व क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न व क़ुल-न हा-श लिल्लाहि
मा हाज़ा ब-शरन् ҍ इन् हाज़ा इल्ला म-लकुन् करीम (३१)
क़ालत् फ़ज़ालिकुन्-नल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि ҍ व ल-क़द् रावत्तुहू अन्
नफ़्सिही फ़स्तअ्-सम ҍ व लइल्लम् यफ़्-अल् मा आमुरुहू लयुस्जनन्-न व
ल-यकूनम्-मिनस्साग़िरीन (३२) क़ा-ल रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्-य मिम्मा
यद्-ऊननी इलैहि ८ व इल्ला तस्रिफ़् अन्नी कै-द-हुन्-न अस्बु
इलैहिन्-न व अकुम्मिनल्-जाहिलीन (३३) फ़स्तजा-ब लहू रब्बुहू फ़-स-र-फ़
अन्हु कैदहुन्-न ҍ इन्नहू हुवस्समीअुल्-अलीम (३४) सुम्-म बदा लहुम्
मिम्बअ्-दि मा र-अवुल्-आयाति ल-यस्जुनुन्नहू हत्ता हीन ★ (३५)

★रु. ३/१३ आ ६ ★रु. ४/१४ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ भागे (आगे यूसुफ़, पीछे ज़ुलेख़ा) और औरत ने उनका कुरता पीछे से (पकड़ कर जो खींचा, तो) फाड़ डाला और दोनों को दरवाज़े के पास औरत का ख़ाविंद मिल गया, तो औरत बोली कि जो शख़्स तुम्हारी बीवी के साथ बुरा इरादा करे, उस की इस के सिवा क्या सज़ा है कि या तो क़ैद किया जाए या दुख का अज़ाब दिया जाए। (२५) यूसुफ़ ने कहा, उसी ने मुझ को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा था। उस के क़बीले में से एक फ़ैसला करने वाले ने यह फ़ैसला किया कि अगर उसका कुरता आगे से फटा हो, तो यह सच्ची और यूसुफ़ झूठा। (२६) और अगर कुरता पीछे से फटा हो तो यह झूठी और वह सच्चा। (२७) जब उसका कुरता देखा (तो) पीछे से फटा था, (तब उसने ज़ुलेख़ा से कहा) कि यह तुम्हारा ही फ़रेब है और कुछ शक नहीं कि तुम औरतों के फ़रेब बड़े (भारी) होते हैं। (२८) यूसुफ़ ! इस बात का ख़्याल न कर और (ज़ुलेख़ा) तू अपने गुनाह की बख़्शिश माग, बेशक ख़ता तेरी ही है। (२९) ★

और शहर में औरतें बातें करने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को अपनी तरफ़ मायल करना चाहती है और उसकी मुहब्बत उसके दिल में घर कर गयी है। हम देखते हैं कि वह खुली गुमराही में है। (३०) जब ज़ुलेख़ा ने इन औरतों की (बातें, जो हक़ीक़त में यूसुफ़ के दीदार के लिए एक) चाल (थी) सुनी तो उनके पास (दावत का) पैग़ाम भेजा और उनके लिए एक महफ़िल सजायी और (फल काटने के लिए) हर एक को एक-एक छुरी दी और (यूसुफ़ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ। जब औरतों ने उनको देखा तो उन (के हुस्न) का रौब ऐसा छा गया कि (फल काटते-काटते) अपने हाथ काट लिए। और बे-साख़्ता बोल उठीं कि सुब्हानल्लाह ! (यह हुस्न !) यह आदमी नहीं, कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। (३१) तब ज़ुलेख़ा ने कहा, यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे ताने देती थीं और बेशक मैं ने उस को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा, मगर यह बचा रहा और अगर यह वह काम न करेगा, जो मैं इसे कहती हूं, तो क़ैद कर दिया जाएगा और ज़लील होगा। (३२) यूसुफ़ ने दुआ की कि परवरदिगार ! जिस काम की तरफ़ ये मुझे बुलाती हैं, उस के मुक़ाबले में मुझे क़ैद पसन्द है ओर अगर तू मुझ से उन के फ़रेब को न हटायेगा, तो मैं उन की तरफ़ मायल हो जाऊंगा और नादानों में दाखिल हो जाऊंगा। (३३) तो ख़ुदा ने उन की दुआ क़ुबूल कर ली और उन से औरतों का मक्र ख़त्म कर दिया। बेशक वह सुनने (और) जानने वाला है। (३४) फिर बावजूद इस के कि वे लोग निशान देख चुके थे, उन की राय यही ठहरी कि कुछ दिनों के लिए उन को क़ैद ही कर दें। (३५) ★

(पृष्ठ ३७५ का शेष)

रही थी, मगर यूसुफ़ का क़स्द ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि वह ऐसे काम से ख़ुदा की पनाह मांगते हैं और अमानत में ख़ियानत करने को ज़ुल्म समझते हैं और यह कह कर ज़ुलेख़ा का कहा नहीं मानते। वह उस के इस्रार से उस की तरफ़ झुक तो गये, लेकिन किसी रज़ामंदी, चाव और दिल से नहीं, बल्कि बे-मन से और जब क़स्द इन्सानी तबीयत के तक़ाज़े से न हो और उस में इरादा न शामिल हो यानी सिर्फ़ ख़्याल ही ख़्याल हो, इस पर पकड़ नहीं। ज़ुलेख़ा के क़स्द में दिल का चाव शामिल था, इस्रार था और यूसुफ़ के क़स्द में चाव न था। दोनों के क़स्द में बड़ा फ़र्क़ था। अव्वल तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़स्द चाव का न था, फिर उन्होंने परवरदिगार की कोई निशानी देख ली, तो वह क़स्द भी जाता रहा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व द-ख़-ल म-अ़हुस्सिज्-न फ़-तयानि क़ा-ल अ-ह़दुहुमा इन्नी अरानी अअ्सिरु ख़म्-रन् व क़ालल्-आख़रु इन्नी अरानी अह़्मिलु फ़ौ-क़ रअ्-सी ख़ुब-ज़न् तअ - कुलुत्तै़रु मिन्हु नब्बिअ् - ना बितअ् - वीलिही इन्ना नरा - क मिनल्मुह़्सिनीन (३६) क़ा-ल ला यअ्तीकुमा त़आमुन् तुर्ज़क़ानिही इल्ला नब्बअ्-तुकुमा बितअ - वीलिही क़ब् - ल अंय्यअ - ति - यकुमा ज़ालिकुमा मिम्मा अ़ल्ल-मनी रब्बी इन्नी तरक्तु मिल्ल-तृ क़ौमिल्ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (३७) वत्तबअ्तु मिल्ल-त आबाई इब्राही - म व इस्हा-क़ व यअ्-क़ू-ब मा का-न लना अन् नुश्रि - क बिल्लाहि मिन् शैइन् ज़ालि-क मिन् फ़ज़्लिल्लाहि अ़लैना व अ़-लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (३८) या साहि़बयिस्-सिज्नि अ-अर्बाबुम्-मुत-फ़र्रिक़ू-न ख़ैरुन् अमिल्लाहुल्-वाहि़दुल्-क़ह्हार (३९) मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिही इल्ला अस्मा-अन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़ - लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि अ - म - र अल्ला तअ्-बुदू इल्ला इय्याहु ज़ालिकद-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (४०) या साहि़बयिस्-सिज्नि अम्मा अह़दुकुमा फ़-यस्क़ी रब्बहू ख़म् - रन् व अम्मल् - आख़रु फ़युस् - लबु फ़ - तअ्कुलुत्तै़रु मिर्रअ - सिही क़ुज़ियल् - अम्रुल्लज़ी फ़ीहि तस्तफ़्तियान (४१) व क़ा-ल लिल्लज़ी ज़न् - न अन्नहू नाजिम् - मिन्हुमज़ - कुर्नी अ़िन् - द रब्बि - क फ़-अन्साहुश्शैतानु ज़िक् - र रब्बिही फ़ - लबि - स फ़िस्सिज्नि बिज़्-अ सिनीन★ (४२)

يوسف ١٢ — ١٩١ — ومامن دآبة ١٢

ودخل معه السجن فتين قال احدهما اني ارىني اعصر خمرا
وقال الاخر اني ارىني احمل فوق راسي خبزا تاكل الطير منه
نبئنا بتاويله انا نرىك من المحسنين ۝٣٦ قال لا ياتيكما
طعام ترزقنه الا نبأتكما بتاويله قبل ان ياتيكما ذلكما
مما علمني ربي اني تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم
بالاخرة هم كفرون ۝٣٧ واتبعت ملة اباءي ابرهيم واسحق
ويعقوب ما كان لنا ان نشرك بالله من شيء ذلك من فضل
الله علينا وعلى الناس ولكن اكثر الناس لا يشكرون ۝٣٨
يصاحبي السجن ءارباب متفرقون خير ام الله الواحد القهار ۝٣٩
ما تعبدون من دونه الا اسماء سميتموها انتم واباؤكم
ما انزل الله بها من سلطن ان الحكم الا لله امر الا تعبدوا
الا اياه ذلك الدين القيم ولكن اكثر الناس لا يعلمون ۝٤٠
يصاحبي السجن اما احدكما فيسقي ربه خمرا واما الاخر
فيصلب فتاكل الطير من راسه قضي الامر الذي فيه
تستفتين ۝٤١ وقال للذي ظن انه ناج منهما اذكرني عند
ربك فانسه الشيطن ذكر ربه فلبث في السجن بضع سنين ۝٤٢
وقال الملك اني ارى سبع بقرت سمان ياكلهن سبع عجاف

ع ٥ ١٥

★रु. ५/१५ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और उन के साथ दो और जवान भी जेल में दाख़िल हुए। एक ने उन में से कहा कि (मैं ने ख़्वाब देखा हैं।) देखता (क्या) हूं कि शराब (के लिए अंगूर) निचोड़ रहा हूं। दूसरे ने कहा कि (मैं ने भी ख़्वाब देखा है।) मैं यह देखता हूं कि अपने सर पर रोटियां उठाये हुए हूं और जानवर उन में से खा रहे हैं (तो) हमें उन की ताबीर बता दीजिए कि हम तुम्हें नेक देखते हैं। (३६) यूसुफ़ ने कहा कि जो खाना तुम को मिलने वाला है, वह आने नहीं पायेगा कि मैं इस से पहले तुम को उन की ताबीर बता दूंगा। यह उन (बातों) में से हैं, जो मेरे परवरदिगार ने मुझे सिखायी हैं। जो लोग ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते और आख़िरत के दिन का इन्कार करते हैं, मैं उन का मज़हब छोड़े हुए हूं। (३७) और अपने बाप-दादा, इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के मज़हब पर चलता हूं हमें मुनासिब नहीं है कि किसी चीज़ को ख़ुदा के साथ शरीक बनाएं। यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, हम पर भी और लोगों पर भी। लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (३८) मेरे जेलख़ाने के साथियो! भला कई जुदा-जुदा आक़ा अच्छे या (एक) ख़ुदा-ए-यक्ता व ग़ालिब। (३९) जिन चीज़ों को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, वे सिर्फ़ नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। ख़ुदा ने उन की कोई सनद नाज़िल नहीं की। (सुन रखो कि) ख़ुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है। उस ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (४०) मेरे जेल के साथियो! तुम में से एक (जो पहला ख़्वाब बयान करने वाला है, वह) तो अपने आक़ा को शराब पिलाया करेगा और जो दूसरा है, वह सूली दिया जाएगा और जानवर उस का सर खा-खा जाएंगे। जो बात तुम मुझ से पूछते थे, उस का फ़ैसला हो चुका है। (४१) और दोनों शख़्सों में से जिस के बारे में (यूसुफ़ ने) ख़्याल किया कि वह रिहाई पा जाएगा, उस से कहा कि अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र भी करना, लेकिन शैतान ने उन का अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया और यूसुफ़ कई वर्ष जेलख़ाने ही में रहे। (४२) ★

★रु. ५/१५ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालल्मलिकु इन्नी अरा सब्-अ ब-क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन्
अिजाफ़ुंव्-व सब्-अ सुम्बुलातिन् ख़ुज़िरंव - व उख़ - र याबिसातिन्ʻ या
अय्युहल्मलउ अफ़्तूनी फ़ी रुअ्या-य इन् कुन्तुम् लिर्रुअ्या तअ्-बुरून (४३)
क़ालू अज़्ग़ासु अह़्लामिन्ʻ व मा नह़्नु बितअ्वीलिल् - अह़्लामि
बिआलिमीन (४४) व क़ालल्लज़ी नजा
मिन्हुमा वद्द-क-र बअ्-द उम्मतिन् अना
उनब्बिउकुम् बितअ्वीलिही फ़ - अर्सिलून
(४५) यूसुफ़ु अय्युहस्सिद्दीक़ु अफ़्तिना फ़ी
सब्अि ब-क़-रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न
सब्अुन् अिजाफ़ुंव् - व सब्अि सुम्बुलातिन्
ख़ुज़िरंव् - व उख़ - र याबिसातिल्लअल्ली
अर्जिअु इलन्नासि ल-अल्लहुम् यअ्-लमून
(४६) क़ा-ल तज़्-रअू-न सब्-अ सिनी-न
द-अ-बन्ʻ फ़मा ह़सत्तुम् फ़-ज़रूहु फ़ी
सुम्बुलिही इल्ला क़लीलम् - मिम्मा
तअ्कुलून (४७) सुम्-म यअ्ती मिम्बअ्-दि
ज़ालि-क सब्अुन् शिदादुंय्यअ्कुल-न मा क़द्दम्तुम् लहुन्-न इल्ला क़लीलम्-
मिम्मा तुह़्सिनून (४८) सुम्-म यअ्ती मिम्बअ्-दि ज़ालि-क आमुन् फ़ीहि
युग़ासुन्नासु व फ़ीहि यअ् - सिरून ★ (४९) व क़ालल् - मलिकुअ्तूनी
बिही ʻ फ़लम्मा जा - अहुर् - रसूलु क़ालर्जिअ् - इला रब्बि - क फ़स्अल्हु
मा बालुन्-निस्वतिल्लाती क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न ʻ इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न
अलीम (५०) क़ा-ल मा ख़त्बुकुन्-न इज़् रावत्तुन-न यूसु - फ़ अन्
नफ़्सिही ʻ क़ुल् - न हा - श लिल्लाहि मा अलिम्ना अलैहि मिन् सूइन्ʻ
क़ालतिम्-र-अतुल् - अज़ीज़िल्आ - न ह़स्-ह़-सल् - ह़क़्क़ु अ-न रावत्तुहू अन्
नफ़्सिही व इन्नहू लमिनस्सादिक़ीन (५१) ज़ालि-क लियअ्-ल-म अन्नी
लम् अख़ुन्हु बिल्ग़ैबि व अन्नल्ला-ह ला यह्दी कैदल्ख़ाइनीन (५२)

وسبع سنبلت خضر واخر يبست يايها الملا افتوني في
رءياي ان كنتم للرءيا تعبرون ٤٣ قالوا اضغاث احلام و
ما نحن بتاويل الاحلام بعلمين ٤٤ وقال الذي نجا منهما
وادكر بعد امة انا انبئكم بتاويله فارسلون ٤٥ يوسف ايها
الصديق افتنا في سبع بقرت سمان ياكلهن سبع عجاف
وسبع سنبلت خضر واخر يبست لعلي ارجع الى الناس
لعلهم يعلمون ٤٦ قال تزرعون سبع سنين دابا فما حصدتم
فذروه في سنبله الا قليلا مما تاكلون ٤٧ ثم ياتي من بعد
ذلك سبع شداد ياكلن ما قدمتم لهن الا قليلا مما
تحصنون ٤٨ ثم ياتي من بعد ذلك عام فيه يغاث الناس و
فيه يعصرون ٤٩ وقال الملك ائتوني به فلما جاءه
الرسول قال ارجع الى ربك فسئله ما بال النسوة التي
قطعن ايديهن ان ربي بكيدهن عليم ٥٠ قال ما خطبكن
اذ راودتن يوسف عن نفسه قلن حاش لله ما علمنا
عليه من سوء قالت امرات العزيز الئن حصحص الحق
انا راودته عن نفسه وانه لمن الصدقين ٥١ ذلك
ليعلم اني لم اخنه بالغيب وان الله لا يهدي كيد الخائنين ٥٢

★रु. ६/१६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और बादशाह ने कहा कि मैं (ने ख़्वाब देखा है।) देखता (क्या) हूं कि सात मोटी गायें हैं, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और (सात) सूखी। ऐ सरदारो! अगर तुम ख़्वाबों की ताबीर दे सकते हो, तो मुझे मेरे ख़्वाब की ताबीर बताओ। (४३) उन्हों ने कहा, ये तो परेशान से ख़्वाब हैं और हमें ऐसे ख़्वाबों की ताबीर नहीं आती। (४४) अब वह शख़्स, जो दोनों क़ैदियों में से रिहाई पा गया था और जिसे मुद्दत के बाद वह बात याद आ गयी, बोल उठा कि मैं आप को उसकी ताबीर (ला) बताता हूं। मुझे (जेलख़ाने) जाने की इजाज़त दीजिए। (४५) (ग़रज़ वह यूसुफ़ के पास आया और कहने लगा) यूसुफ़! ऐ बड़े सच्चे (यूसुफ़!) हमें (इस ख़्वाब की ताबीर) बताइए कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालियां हरी हैं और सात सूखी ताकि मैं लोगों के पास जा (कर ताबीर बताऊं), अजब नहीं कि वे (तुम्हारी क़द्र) जानें। (४६) उन्हों ने कहा कि तुम लोग सात साल लगातार खेती करते रहोगे, तो जो (अनाज) काटो तो थोड़े से अनाज के सिवा, जो खाने में आए, उसे बालियों ही में रहने देना। (४७) फिर इस के बाद (सूखे के) सात सख़्त (साल) आएंगे कि जो (अनाज) तुम ने जमा कर रखा होगा, वे उस सब को खा जाएंगे, सिर्फ़ वही थोड़ा-सा रह जाएगा, जो तुम एहतियात से रख छोड़ोगे। (४८) फिर इस के बाद एक साल ऐसा आएगा कि ख़ूब मेंह बरसेगा और लोग उस में रस निचोड़ेंगे★(४९) (यह ताबीर सुन कर) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को मेरे पास ले आओ। जब क़ासिद उन के पास गया, तो उन्हों ने कहा कि अपने आक़ा के पास वापस जाओ और उन से पूछो कि उन औरतों का क्या हाल है, जिन्हों ने अपने हाथ काट लिए थे। बेशक मेरा परवरदिगार उन के मक्रों को ख़ूब जानता है। (५०) बादशाह ने (औरतों से) पूछा कि भला उस वक़्त क्या हुआ था, जब तुमने यूसुफ़ को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा। सब बोल उठीं कि 'हाशा लिल्लाह' हम ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम की। अज़ीज़ की औरत ने कहा कि अब सच्ची बात तो ज़ाहिर हो ही गयी है। (असल यह है कि) मैं ने उस को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा था और वह बेशक सच्चा है। (५१) (यूसुफ़ ने कहा कि मैंने) यह बात इस लिए (पूछी है) कि अज़ीज़ को यक़ीन हो जाए कि मैं ने उस की पीठ पीछे उस की (अमानत में) ख़ियानत नहीं की और ख़ुदा ख़ियानत करने वालों के मक्रों को (सीधा) रास्ता नहीं दिखाता। (५२) और मैं अपने आप को

★रु. ६/१६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेरहवां पारः व मा उबर्रिउ

सूरतु यूसु-फ़ आयत ५३ से १११

व मा उबर्रिउ नफ़्सी ج इन्नन्नफ़-स ल-अम्मारतुम्-बिस्सू-इ इल्ला मा रहि-म रब्बी ط इन्-न रब्बी ग़फ़ूरुर्रहीम (५३) व क़ालल्-मलिकुअ्तूनी बिही अस्तख़्लिस्हु लिनफ़्सी ج फ़-लम्मा कल्ल-महू क़ा-ल इन्नकल्-यौ-म लदैना मकीनुन् अमीन (५४) क़ालज्अल्नी अला ख़ज़ाइनिल्-अर्ज़ि ج इन्नी हफ़ीज़ुन् अलीम (५५) व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ़ फ़िल्अर्ज़ि ج य-त-बव्वउ मिन्हा हैसु यशाउ ط नुसीबु बिरह्-मतिना मन् नशाउ व ला नुज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (५६) व ल-अज्रुल्-आख़िरति ख़ैरुल्लिल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून ★ (५७) व जा-अ इख़्वतु यूसु-फ़ फ़-द-ख़लू अलैहि फ़-अ-र-फ़हुम् व हुम् लहू मुन्किरून (५८) व लम्मा जह्-ह-ज़-हुम् बिजहाज़िहिम् क़ालअ्तूनी बि-अख़िल्लकुम् मिन् अबीकुम् ج अला तरौ-न अन्नी ऊफ़िल्-कै-ल व अना ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (५९) फ़इल्लम् तअ्तूनी बिही फ़ला कै-ल लकुम् अिन्दी व ला तक़्रबून (६०) क़ालू सनुराविदु अन्हु अबाहु व इन्ना लफ़ाअिलून (६१) व क़ा-ल लिफ़ित्यानिहिज्-अलू बिज़ा-अ-तहुम् फ़ी रिहालिहिम् ल-अल्लहुम् यअ्-रिफ़ूनहा इज़न्क़-लबू इला अह्लिहिम् ल-अल्लहुम् यर्जिअून (६२) फ़-लम्मा र-ज-अू इला अबीहिम् क़ालू या अबाना मुनि-अ मिन्नल्कैलु फ़-अर्सिल् म-अना अख़ाना नक्तल् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (६३) क़ा-ल हल् आमनुकुम् अलैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अला अख़ीहि मिन् क़ब्लु ط फ़ल्लाहु ख़ैरुन् हाफ़िज़ंव्-व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन (६४)

يوسف ١٢ ١٩٣ وما ابرئ ١٣

وما ابرئ نفسي ان النفس لامارة بالسوء الا ما رحم ربي
ان ربي غفور رحيم ۝ وقال الملك ائتوني به استخلصه لنفسي
فلما كلمه قال انك اليوم لدينا مكين امين ۝ قال اجعلني
على خزائن الارض اني حفيظ عليم ۝ وكذلك مكنا ليوسف
في الارض يتبوا منها حيث يشاء نصيب برحمتنا من نشاء
ولا نضيع اجر المحسنين ۝ ولاجر الاخرة خير للذين امنوا
وكانوا يتقون ۝ وجاء اخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم و
هم له منكرون ۝ ولما جهزهم بجهازهم قال ائتوني باخ
لكم من ابيكم الا ترون اني اوفي الكيل وانا خير المنزلين ۝
فان لم تاتوني به فلا كيل لكم عندي ولا تقربون ۝ قالوا
سنراود عنه اباه وانا لفاعلون ۝ وقال لفتيانه اجعلوا
بضاعتهم في رحالهم لعلهم يعرفونها اذا انقلبوا الى اهلهم
لعلهم يرجعون ۝ فلما رجعوا الى ابيهم قالوا يابانا منع منا
الكيل فارسل معنا اخانا نكتل وانا له لحافظون ۝ قال
هل امنكم عليه الا كما امنتكم على اخيه من قبل فالله
خير حافظا وهو ارحم الرحمين ۝ ولما فتحوا متاعهم وجدوا
بضاعتهم ردت اليهم قالوا يابانا ما نبغي هذه بضاعتنا ردت

★ रु. ७/१ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पाक-साफ़ नहीं कहता, क्यों कि नफ़्से अम्मारा (इंसान को) बुराई ही सिखाता रहता है, मगर यह कि मेरा परवरदिगार रहम करे। बेशक मेरा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (५३) बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे अपना ख़ास मुसाहिब बनाऊंगा। फिर जब उन से बातें कीं तो कहा कि आज से तुम हमारे यहां दर्जे वाले और एतबार वाले हो। (५४) (यूसुफ़ ने) कहा, मुझे इस मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दीजिए, क्यों कि मैं हिफ़ाज़त भी कर सकता हूं और इस काम को जानता हूं। (५५) इस तरह हम ने यूसुफ़ को मुल्क (मिस्र) में जगह दी और वह उस मुल्क में जहां चाहते थे। रहते थे हम अपनी रहमत जिस पर चाहते हैं, करते हैं और नेक लोगों के अज्र को बर्बाद नहीं करते। (५६) और जो लोग ईमान लाए और डरते रहे, उन के लिए आख़िरत का अज्र बहुत बेहतर है। (५७) ★

और यूसुफ़ के भाई (कन्आन से मिस्र में ग़ल्ला ख़रीदने के लिए) आए तो यूसुफ़ के पास गये तो यूसुफ़ ने उनको पहचान लिया और वह उनको न पहचान सके। (५८) जब यूसुफ़ ने उनके लिए उन का सामान तैयार कर दिया तो कहा कि (फिर आना तो) जो बाप की तरफ़ से तुम्हारा एक और भाई है, उसे भी मेरे पास लेते आना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं नाप भी पूरी-पूरी देता हूं और मेहमानदारी भी ख़ूब करता हूं। (५९) और अगर तुम उसे मेरे पास न लाओगे, तो न तुम्हें मेरे यहां से ग़ल्ला मिलेगा, और न तुम मेरे पास ही आ सकोगे। (६०) उन्हों ने कहा कि हम उस के बारे में उसके वालिद से तज़्किरा करेंगे और हम यह (काम) करके रहेंगे। (६१) और (यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कहा कि उन का सरमाया (यानी ग़ल्ले की क़ीमत) उन के शलीतों में रख दो। अजब नही कि जब ये अपने बाल-बच्चों में जाएं तो उसे पहचान लें (और) अजब नहीं कि ये फिर यहां आएं। (६२) जब वे अपने बाप के पास वापस गए तो कहने लगे कि अब्बा! (जब तक हम बिन यामीन को साथ न ले जाएं) हमारे लिए ग़ल्ले की पाबंदी कर दी गयी है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हम फिर अनाज लाएं और हम इस के निगेहबान हैं। (६३) (याक़ूब ने) कहा कि मैं इस के बारे में तुम्हारा एतबार नहीं करता, मगर वैसा ही जैसा पहले इस के भाई के बारे में किया था, सो ख़ुदा ही बेहतर निगेहबान है और वह सब से ज़्यादा रहम

★रु. ७/१ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लम्मा फ़-तहू मताअहुम् व-जदू बिज़ा-अ-तहुम् रुद्दत् इलैहिम् ط क़ालू
या अबाना मा नब्ग़ी ط हाज़िही बिज़ाअतुना रुद्दत् इलैना ج व नमीरु
अह्-लना व नह़्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कै-ल बओरिन् ط ज़ालि-क कैलुं य्यसीर
(६५) क़ा-ल लन् उर्सि-लहू म-अकुम् ह़त्ता तुअ्तूनि मौसिक़म्-मिनल्लाहि
ल-तअ्तुन्ननी बिही इल्ला अंय्युहा-त बिकुम् ج
फ़-लम्मा आतौहु मौसिक़हुम् क़ालल्लाहु अला
मा नक़ूलु वकील (६६) व क़ा-ल या
बनिय्-य ला तद्ख़ुलू मिम्बाबिंव्वाहिदिंव्वद्ख़ुलू
मिन् अब्वाबिम् - मुतफ़र्रिक़तिन् ط
व मा उग़्नी अन्कुम् मिनल्लाहि मिन्
शैइन् ط इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि ط
अलैहि तवक्कल्तु ج व अलैहि
फ़ल-य-त-वक्कलिल्-मु-त-वक्किलून (६७) व
लम्मा द-ख़-लू मिन् हैसु अ-म-रहुम् अबूहुम् ط
मा का-न युग़्नी अन्हुम् मिनल्लाहि मिन्
शैइन् इल्ला हाज-तन् फ़ी नफ़्सि यअ्-क़ू-ब

وما أبرئ ١٣ ١٩٣ يوسف ١٢

إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ذَٰلِكَ كَيْلٌ
يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ
لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ
مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا
مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا
لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ
حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا
حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ
أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ﴿٧٠﴾ قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾
قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ
زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا
كُنَّا سَارِقِينَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ﴿٧٤﴾ قَالُوا جَزَاؤُهُ
مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَأَ
بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ

منزل ٣

क़ज़ाहा ط व इन्नहू लज़ू अ़िलमिल्लिमा अ़ल्लम्नाहु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि
ला यअ्-लमून ★ (६८) व लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि
अख़ाहु क़ा-ल इन्नी अ-न अख़ू-क फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यअ्-मलून
(६९) फ़-लम्मा जह्-ह-ज़-हुम् बिजहाज़िहिम् ज-अ-लस्सिक़ाय-त फ़ी रह़्लि
अख़ीहि सुम्-म अज़्ज़ - न मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहल्-ओरु इन्नकुम् लसारिक़ून
(७०) क़ालू व अक़्बलू अ़लैहिम् माज़ा तफ़्क़िदून (७१) क़ालू
नफ़्क़िदु सुवाअ़ल्-मलिकि व लिमन् जा - अ बिही ह़िम्लु बओरिंव - व
अना बिही ज़ओम (७२) क़ालू तल्लाहि ल - क़द् अ़लिम्तुम् मा
जिअ्ना लिनुफ़्सि-द फ़िल्अर्ज़ि व मा कुन्ना सारिक़ीन (७३) क़ालू
फ़मा जज़ाउहू इन् कुन्तुम् काज़िबीन (७४) क़ालू जज़ाउहू
मंव्वुजि-द फ़ी रह़्लिही फ़हु-व जज़ाउहू ط कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (७५)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करने वाला है। (६४) और जब उन्हों ने अपना सामान देखा कि उन का सरमाया उन को वापस कर दिया गया है' कहने लगे, अब्बा! हमें (और) क्या चाहिए? (देखिए) यह हमारी पूंजी हमें वापस कर दी गयी है। अब हम अपने बाल-बच्चों के लिए फिर ग़ल्ला लाएंगे और अपने भाई की निगेहबानी करेंगे और एक ऊंट बोझ ज़्यादा लाएंगे (कि) यह अनाज (जो हम लाए हैं) थोड़ा है। (६५) (याक़ूब ने) कहा कि जब तक तुम ख़ुदा का अह्द न दो कि उस को मेरे पास (सही व सालिम) ले आओगे, मैं इसे हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजने का, मगर यह कि तुम घेर लिए जाओ (यानी बे-बस हो जाओ तो मजबूरी है)। जब उन्हों ने उन से अह्द कर लिया, तो (याक़ूब) ने कहा कि जो क़ौल व क़रार हम कर रहे हैं, उस का ख़ुदा वकील (ज़ामिन) है। (६६) और हिदायत की कि बेटा! एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना और मैं ख़ुदा की तक़्दीर तो तुम से नहीं रोक सकता। (बेशक) हुक्म उसी का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसे वालों को उसी पर भरोसा रखना चाहिए। (६७) और जब वे उन-उन जगहों से दाख़िल हुए, जहां-जहां से (दाख़िल होने के लिए) बाप ने उन से कहा था तो वह तद्बीर ख़ुदा के हुक्म को ज़रा भी टाल नहीं सकती थी। हां, वह याक़ूब के दिल की ख़्वाहिश थी, जो उन्हों ने पूरी की थी और बेशक वह इल्म वाले थे, क्यों कि हम ने उन को इल्म सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६८)★

और जब वे लोग यूसुफ़ के पास पहुंचे तो यूसुफ़ ने अपने सगे भाई को अपने पास जगह दी और कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूं तो जो सुलूक ये (हमारे साथ) करते रहे हैं, इस पर अफ़सोस न करना। (६९) जब उन का सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के शलीते में गिलास रख दिया, फिर (जब वे आबादी से बाहर निकल गये तो) एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि क़ाफ़िले वालो! तुम तो चोर हो।[१] (७०) वे उन की तरफ़ मुतवज्जह हो कर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ खोयी गयी है। (७१) वह बोले कि बादशाह (के पानी पीने) का गिलास खोया गया है और जो शख़्स उस को ले आए, उस के लिए एक ऊंट बोझ (इनाम) और मैं उस का ज़ामिन हूं। (७२) वे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! तुम को मालूम है कि हम (इस) मुल्क में इस लिए नहीं आए कि ख़राबी करें और न हम चोरी किया करते हैं। (७३) बोले कि अगर तुम झूठे निकले (यानी चोरी साबित हुई) तो उस की सज़ा क्या है? (७४) उन्हों ने कहा कि उस की सज़ा यह कि जिस के शलीते में वह मिले, वही उस का बदल क़रार दिया जाए। हम ज़ालिमों को यही सज़ा

१. पुकारने वाले ने उन को सच में चोर समझा था, क्योंकि उन को यह मालूम न था कि हज़रत यूसुफ़ अलैहि-स्सलाम ने यह तद्बीर की है.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-ब-द-अ बिऔअि़यतिहिम् क़ब्-ल विआ-इ अख़ीहि सुम्मस्तख़-र-जहा मिंव्विआइ
अख़ीहि ط कज़ालि-क किद्ना लियूसु-फ़ ط मा का-न लियअ्ख़ु-ज अख़ाहु
फ़ी दीनिलमलिकि इल्ला अंय्यशाअल्लाहु ط नर्फ़अु द-र-जातिम्-मन
नशाउ ط व फ़ौ-क़ कुल्लि ज़ी अि़लमिन् अ़लीम (७६) क़ालू
इंय्यस्रिक़् फ़-क़द् स-र-क़ अख़ुल्लहू मिन्
क़ब्लु ج फ़-असर्रहा यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही
व लम् युब्दिहा लहुम् ج क़ा-ल अन्तुम्
शर्रुम्-मकानन् ج वल्लाहु अअ्-लमु बिमा
तसि़फ़ून (७७) क़ालू या अय्युहल्-अज़ीज़ु
इन-न लहू अ-बन् शैख़न् कबीरन् फ़ख़ुज़्
अ-ह़-दना मकानहू ج इन्ना नरा-क
मिनलमुह्सिनीन (७८) क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि
अन्नअ्ख़ु-ज़ इल्ला मंव्व-जद्ना मता-अ़ना
अि़न्दहू ۙ इन्ना इज़ल्लज़ालिमून
★ (७९) फ़-लम्मस्तै-असू मिन्हु ख़-लसू
नजिय्यन् ط क़ा-ल कबीरुहुम् अ-लम् तअ्-लमू
अन-न अबाकुम् क़द् अ-ख़-ज़ अ़लैकुम् मौसिक़म्-
मिनल्लाहि व मिन् क़ब्लु मा फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसु-फ़ ج फ़-लन् अब्-र-ह़ल्-अर-ज़
ह़त्ता यअ्ज़-न ली अबी औ यह्कुमल्लाहु ली ج व हु-व ख़ैरुल्-ह़ाकिमीन
(८०) इर्जिअू इला अबीकुम् फ़क़ूलू या अबाना इन्नब-न-क स-र-क़ ج
व मा शहिद्ना इल्ला बिमा अ़लिम्ना व मा कुन्ना लिलग़ैबि ह़ाफ़िज़ीन
(८१) वस्-अलिल्-क़र्यतल्लती कुन्ना फ़ीहा वल्-ई़रल्लती अक़्बल्ना
फ़ीहा ط व इन्ना लसा़दिक़ून (८२) क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम्
अम्रन् ط फ़-सब-रुन् जमीलुन् ط अ़-सल्लाहु अंय्यअ्तियनी बिहिम् जमीअ़न् ط
इन्नहू हुवल्-अ़लीमुल्-ह़कीम (८३) व त-वल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या अ-सफ़ा
अ़ला यूसु-फ़ वब्यज़्ज़त् अ़ैनाहु मिनल्हुज़्नि फ़हु-व कज़ीम (८४) क़ालू तल्लाहि
तफ़्-तउ तज़्कुरु यूसु-फ़ ह़त्ता तकू-न ह़-र-ज़न् औ तकू-न मिनल्-हालिकीन (८५)

كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ نَشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۝
قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسَرَّهَا يُوسُفُ فِي
نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ مَكَانًا وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
تَصِفُونَ ۝ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا
مَكَانَهُ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا
مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذًا لَظَالِمُونَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْأَسُوا مِنْهُ ع
خَلَصُوا نَجِيًّا قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ
مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ
حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝ ارْجِعُوا
إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝ وَاسْأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ
الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ
أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا إِنَّهُ
هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ
وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَأُ
تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ۝

★रु. ९/३ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिया करते हैं। (७५) फिर यूसुफ़ ने अपने भाई के शलीते से पहले उन के शलीतों को देखना शुरू किया। फिर अपने भाई के शलीते में से उस को निकाल लिया। इस तरह हम ने यूसुफ़ के लिए तद्बीर की (वरन्) बादशाह के क़ानून के मुताबिक़ वह ख़ुदा की मशीयत के सिवा अपने भाई को नहीं ले सकते थे।[1] हम जिस के चाहते हैं दर्जे बुलन्द करते हैं और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बढ़ कर है। (७६) (यूसुफ़ के भाइयों ने) कहा कि अगर इस ने चोरी की हो तो (कुछ अजब नहीं कि) इस के एक भाई ने भी पहले चोरी की थी।[2] यूसुफ़ ने इस बात को अपने दिल में छिपाए रखा और उन पर ज़ाहिर न होने दिया (और) कहा कि तुम बड़े बद-क़माश (दुष्ट) हो और जो तुम बयान करते हो, ख़ुदा उसे ख़ूब जानता है (७७) वे कहने लगे कि ऐ अज़ीज़ ! इस के वालिद बहुत बूढ़े हैं (और इस से बहुत मुहब्बत रखते हैं) तो (उस को छोड़ दीजिए और) उस की जगह हम में से किसी को रख लीजिए, हम देखते हैं कि आप एहसान करने वाले हैं। (७८) (यूसुफ़ ने) कहा कि ख़ुदा पनाह में रखे कि जिस शख़्स के पास हम ने अपनी चीज़ पायी है, उस के सिवा किसी और को पकड़ लें। ऐसा करें तो हम (बड़े) बे-इंसाफ़ हैं। (७९)★

जब वे इस से ना-उम्मीद हो गये तो अलग हो कर सलाह करने लगे। सब से बड़े ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे वालिद ने तुम से ख़ुदा का अह्द लिया है और इस से पहले भी तुम यूसुफ़ के बारे में क़ुसूर कर चुके हो, तो जब तक वालिद साहब मुझे हुक्म न दें, मैं तो इस जगह से हिलने का नहीं या ख़ुदा मेरे लिए कोई और तद्बीर करे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८०) तुम सब वालिद साहब के पास जाओ और कहो कि अब्बा ! आप के साहबज़ादे ने (वहां जा कर) चोरी की और हम ने तो अपने जानते आप से (उस के ले आने का) अह्द किया था, मगर हम ग़ैब (की बातों) के (जानने और) याद रखने वाले तो नहीं थे। (८१) और जिस बस्ती में हम (ठहरे) थे, वहां से (यानी मिस्र वालों से) और जिस क़ाफ़िले में आए हैं, उस से पूछ लीजिए और हम (इस बयान में) बिल्कुल सच्चे हैं। (८२) (जब उन्हों ने यह बात याक़ूब से आ कर कही तो) उन्हों ने कहा (कि हक़ीक़त यों नहीं है,) बल्कि यह बात तुम ने अपने दिल से बना ली है, तो सब्र ही बेहतर है। अजब नहीं कि ख़ुदा इन सब को मेरे पास ले आए। बेशक वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (८३) फिर उन के पास से चले गये और कहने लगे कि हाय अफ़सोस, यूसुफ़ ! (हाय अफ़सोस !) और रंज व दुख में (इस क़दर रोये कि) उन की आंखें सफ़ेद हो गयीं और उन का दिल ग़म से भर रहा था। (८४) बेटे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम ! अगर आप यूसुफ़ को इसी तरह याद ही करते रहेंगे, तो या तो बीमार हो जाएंगे या जान ही दे

---

१. इब्राहीमी शरीअत में चोर की सज़ा यह थी कि जिस की चोरी की हो, उस को एक वर्ष तक मम्लूक ग़ुलाम बना कर रखा जाए, इस के बाद छोड़ दिया जाए। यही सज़ा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने बयान की और इसी के मुताबिक़ बिन यामीन को ले लिया गया, वरना मिस्र का क़ानून तो यह था कि चोर को मारें-पीटें और चोरी के माल से दोगुना जुर्माना ले लें और यह क़ानून इजाज़त नहीं देता था कि जिस के पास से चीज़ निकले, उस को पकड़ लिया जाए। ग़रज़ यह तद्बीर हज़रत यूसुफ़ ने इस लिए की थी कि उन को मालूम था कि याक़ूब की शरीअत में चोर की सज़ा उसे गिरफ़्तार कर के एक साल तक ग़ुलाम बना रखना है और इसी से वह अपने मक़सद में कामियाब रहे।

२. उस के एक भाई से उन की मुराद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम थे, क्योंकि बिन यामीन और यूसुफ़ एक मां से थे और

(शेष पृष्ठ ३८९ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि व अअ्-लमु मिनल्लाहि मा
ला तअ्-लमून (८६) या बनिय्यज्हबू फ़ त-हस्ससू मिय्युसु-फ व अख़ीहि व ला
तै-असू मिर्‌रौहिल्लाहि ط इन्नहू ला यै-असु मिर्‌रौहिल्लाहि इल्लल्-क़ौमुल्-
काफ़िरून (८७) फ़-लम्मा द-ख़लू अलैहि क़ालू या अय्युहल्-अज़ीज़ु मस्सना
व अह्-ल-नज़्ज़ुर्रु व जिअ्ना बिबिज़ाअतिम्-
मुज़्जातिन् फ़-औफ़ि लनल्कै-ल व त-सद-दक्
अलैना ط इन्नल्ला-ह यज्ज़िल्-मु-त-सद्दिक़ीन
(८८) क़ा-ल हल् अलिम्तुम् मा फ़-अल्तुम्
बियूसु-फ़ व अख़ीहि इज् अन्तुम्
जाहिलून (८९) क़ालू अ-इन्न-क ल-अन्-त
यूसुफ़ु ط क़ा - ल अ-न यूसुफ़ु व हाज़ा
अख़ी ے क़द् मन्नल्लाहु अलैना ط
इन्नहू मंय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़इन्नल्ला-ह
ला युज़ीअु अजरल्-मुह्सिनीन (९०)
क़ालू तल्लाहि ल-क़द् आस-र-कल्लाहु अलैना
व इन् कुन्ना ल - ख़ातिईन (९१)

يوسف ١٢ — ١٩٦ — وما ابرئ ١٣

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾
يَا بَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَيْأَسُوا مِنْ رَوْحِ
اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَيْأَسُ مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا
دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا
بِبِضَاعَةٍ مُزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ
يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَ
أَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾ قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ
وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَ
إِنْ كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَذَا فَأَلْقُوهُ عَلَى
وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ
الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾
قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ
أَلْقَاهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا
خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

क़ा-ल ला तस्री-ब अलैकुमुल् - यौ - म ط यग़्फ़िरुल्लाहु लकुम् ے व हु - व
अर्हमुर-राहिमीन (९२) इज्हबू बिक़मीसी हाज़ा फ़-अल्क़ूहु अला वज्हि
अबी यअ्ति बसीरन् ج वअ्तूनी बिअह्लिकुम् अज्मईन ★ (९३)
व लम्मा फ़-स-लतिल्‌ईरु क़ा-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ़ लौला
अन् तुफ़न्निदून (९४) क़ालू तल्लाहि इन्न-क लफ़ी ज़लालिकल्-क़दीम ● (९५)
फ़-लम्मा अन् जा-अल्-बशीरु अल्क़ाहु अला वज्हिही फ़र्तद् - द बसीरन् ج
क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्लकुम् ج इन्नी अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून
(९६) क़ालू या अबानस्तग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ातिईन (९७)
क़ा-ल सौ-फ़ अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी ط इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (९८)

★रु. १०/४ आ १४ ● रुबअ् १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दगे। (८५) उन्हों ने कहा कि मैं तो अपने ग़म व दुख को ख़ुदा से ही ज़ाहिर करता हूं और ख़ुदा की तरफ़ से वह बातें जानता हूं, जो तुम नहीं जानते। (८६) बेटा! (यों करो कि एक बार फिर) जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई को खोजो और ख़ुदा की रहमत से ना-उम्मीद न हो कि ख़ुदा की रहमत से बे-ईमान लोग ना-उम्मीद हुआ करते हैं। (८७) जब वे यूसुफ़ के पास गए तो कहने लगे कि अज़ीज़! हमें और हमारे बाल-बच्चों को बड़ी तक्लीफ़ हो रही है और हम थोड़ी सी पूंजी लाए हैं। आप हमें (इस के बदले) पूरा अनाज दीजिए और ख़ैरात कीजिए कि ख़ुदा ख़ैरात करने वालों को सवाब देता है। (८८) (यूसूफ़ ने) कहा, कि तुम्हें मालूम है कि जब तुम ना-दानी में फंसे हुए थे तो तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या किया था? (८९) वे बोले, क्या तुम्हीं यूसुफ़ हो? उन्हों ने कहा, हां मैं ही यूसुफ़ हूं और (बिन यामीन की तरफ़ इशारा कर के कहने लगे,) यह मेरा भाई है। ख़ुदा ने हम पर बड़ा एहसान किया है। जो शख़्स ख़ुदा से डरता और सब्र करता है तो ख़ुदा नेक लोगों का बदला बर्बाद नहीं करता। (९०) वे बोले, ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा ने तुम को हम पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और बेशक हम ख़ताकार थे। (९१) (यूसुफ़ ने) कहा कि आज के दिन (से) तुम पर कुछ इताब (व मलामत) नहीं है। ख़ुदा तुम को माफ़ करे और वह बहुत रहम करने वाला है। (९२) यह मेरा कुरता ले जाओ और इसे वालिद साहब के मुंह पर डाल दो। उन की रोशनी वापस आ जाएगी और अपने तमाम बाल-बच्चों को मेरे पास ले आओ★ (९३) और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) रवाना हुआ, तो उन के वालिद कहने लगे कि अगर मुझ को यह न कहो कि (बूढ़ा) बहक गया है, तो मुझे तो यूसुफ़ की बू आ रही है। (९४) वे बोले कि ख़ुदा की क़सम! आप उसी पुरानी ग़लती में पड़े हुए हैं● (९५) जब ख़ुशख़बरी देने वाला आ पहुंचा तो कुरता याक़ूब के मुंह पर डाल दिया और उन की रोशनी लौट आयी, (और बेटों से कहने लगे), क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से वे बातें जानता हूं, जो तुम नहीं जानते। (९६) बेटों ने कहा कि अब्बा! हमारे लिए हमारे गुनाह की मग़्फ़िरत मांगिए, बेशक हम ख़ताकार थे। (९७) उन्हों ने कहा कि मैं अपने परवरदिगार से तुम्हारे लिए बख़्शिश मांगूगा।

(पृष्ठ ३८७ का शेष)

वे दूसरी माओं से, मगर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कभी चोरी नहीं की और यूसुफ़ जैसा शख़्स चोरी कर सकता ही नहीं। जिस वाक़िए को उन लोगों ने चोरी क़रार दिया, वह यों हुआ था कि जब यूसुफ़ पैदा हुए, तो उन की फूफी उन की परवरिश करने लगीं और वह उन से निहायत मुहब्बत रखती थीं। जब आप कुछ साल के हुए तो याक़ूब अलैहिस्सलाम बहन के पास आए और कहा कि अब यूसुफ़ को दे दो। वह उन को अपने से दम भर जुदा करना भी गवारा नहीं कर सकती थीं। उन्हों ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं इस को अपने से अलग नहीं करूंगी। तुम इसे कुछ मुद्दत और मेरे पास रहने दो, ताकि मैं इसे देख-देख कर दिल ठंडा करती रहूं। जब याक़ूब अलैहिस्सलाम बहन के पास से बाहर चले गये तो उन्हों ने यूसुफ़ को अपने पास रखने की क्या तद्बीर की कि हज़रत इस्हाक़ का एक पटका उन के पास था, जो मीरास के तौर पर उस शख़्स को मिलता था, जो सब में बड़ा होता था और चूंकि याक़ूब अलैहिस्सलाम की यह बहन सब में बड़ी थीं, इस लिए वह उन को मिला था, तो उन्हों ने वह पटका यूसुफ़ की कमर से बांध दिया और मशहूर यह किया कि पटका गुम हो गया है और उसे खोजना शुरू किया। जब खोजने पर न मिला तो कहा कि घर वालों की जामा तलाशी करनी चाहिए। जामा तलाशी की तो यूसुफ़ की कमर से बंधा हुआ मिला। तब कहा कि उस ने मेरी चोरी की है, इस लिए मैं इसे छोड़ने की नहीं और इस

(शेष पृष्ठ ३९१ पर)

★रु. १०/४ आ १४ ● रुबुअ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि अ-बवैहि व क़ालद्ख़ुलू
मिस्-र इन्शाअल्लाहु आमिनीन ط (९९) व र-फ़-अ़ अ-बवैहि अ़-लल्-
अ़र्शि व ख़र्रू लहू सुज्जदन् ج व क़ा-ल या अ-बति हाज़ा तअ्वीलु
रुअ्या-य मिन् क़ब्लु ز क़द् ज-अ़-लहा रब्बी ह़क़्क़न् ط व क़द् अह्-स-न
बी इज़् अख़्-र-जनी मिनस्सिज्नि व जा-अ
बिकुम् मिनल्बद्वि मिम्बअ्-दि अन्
न-ज़-ग़श्शैतानु बैनी व बै-न इख़्वती ط
इन्-न रब्बी लतीफ़ुल्लिमा यशाउ ط
इन्नहू हुवल्-अ़लीमुल्-ह़कीम (१००)
रब्बि क़द् आतैतनी मिनल्मुल्कि व
अ़ल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिल्-अह़ादीसि ج
फ़ातिरस्समावाति वल्अर्ज़ि قف अन-त
वलिय्यी फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ج त-वफ़्फ़नी
मुस्लिमंव्-व अल्-हिक़्नी बिस्सालिह़ीन (१०१)
ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूह़ीहि
इलै-क ج व मा कुन्-त लदैहिम् इज़्
अज-मअू अम्-रहुम् व हुम् यम्कुरून (१०२) व मा अक्सरुन्नासि व लौ
ह़-रस्-त बिमुअ्मिनीन (१०३) व मा तस-अलुहुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् ط
इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल्लिल्-आ़लमीन ★ (१०४) व क-अय्यिम्मिन्
आयतिन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि यमुर्रू-न अ़लैहा व हुम् अ़न्हा मुअ्-रिज़ून
(१०५) व मा युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला वं हुम् मुश्रिकून
(१०६) अ-फ़-अमिनू अन् तअ्-ति-यहुम् ग़ाशि-यतुम्-मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि
औ-तअ्ति-य-हुमुस्साअ़तु बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (१०७) क़ुल्
हाज़िही सबीली अद्अू इलल्लाहि قف ▨ अ़ला बसीरतिन् अ-न व
मनित्त-ब-अ़नी ط व सुब्ह़ानल्लाहि व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन (१०८)

يوسف ١٢ ١٩٨ وما ابرئ ١٣

فلما دخلوا على يوسف اوى اليه ابويه وقال ادخلوا مصر ان
شاء الله امنين ﴿٩٩﴾ ورفع ابويه على العرش وخروا له سجدا و
قال يابت هذا تاويل رءياى من قبل قد جعلها ربى حقا
وقد احسن بى اذ اخرجنى من السجن وجاء بكم من البدو
من بعد ان نزغ الشيطن بينى وبين اخوتى ان ربى لطيف
لما يشاء انه هو العليم الحكيم ﴿١٠٠﴾ رب قد اتيتنى من الملك
وعلمتنى من تاويل الاحاديث فاطر السموت والارض انت
ولى فى الدنيا والاخرة توفنى مسلما والحقنى بالصلحين ﴿١٠١﴾
ذلك من انباء الغيب نوحيه اليك وما كنت لديهم اذ
اجمعوا امرهم وهم يمكرون ﴿١٠٢﴾ وما اكثر الناس ولو
حرصت بمؤمنين ﴿١٠٣﴾ وما تسئلهم عليه من اجر ان هو الا ذكر
للعلمين ﴿١٠٤﴾ وكاين من اية فى السموت والارض يمرون
عليها وهم عنها معرضون ﴿١٠٥﴾ وما يؤمن اكثرهم بالله الا
وهم مشركون ﴿١٠٦﴾ افامنوا ان تاتيهم غاشية من عذاب الله
او تاتيهم الساعة بغتة وهم لا يشعرون ﴿١٠٧﴾ قل هذه سبيلى
ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى وسبحن الله و
ما انا من المشركين ﴿١٠٨﴾ وما ارسلنا من قبلك الا رجالا

★रु. ११/५ आ ११ ▨ व. न वी स.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (९८) जब (ये सब लोग) यूसुफ़ के पास पहुंचे, तो यूसुफ़ ने अपने मां-बाप को अपने पास बिठाया और कहा कि मिस्र में दाख़िल हो जाइए। ख़ुदा ने चाहा तो अम्न व सुकून से रहिएगा। (९९) और अपने मां-बाप को तख़्त पर बिठाया और सब यूसुफ़ के आगे सज्दे में गिर पड़े और (उस वक़्त) यूसुफ़ ने कहा, अब्बा जान! यह मेरे उस ख़्वाब की ताबीर है, जो मैं ने पहले (बचपन में) देखा था। मेरे परवरदिगार ने उसे सच कर दिया और उस ने मुझ पर (बहुत से) एहसान किए हैं कि मुझ को जेलख़ाने से निकाला और इस के बाद कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में फ़साद डाल दिया था, आप को गांव से यहां लाया। बेशक मेरा परवरदिगार जो चाहता है तद्बीर से करता है। वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१००) (जब ये सब बातें हो लीं, तो यूसुफ़ ने ख़ुदा से दुआ की कि) ऐ मेरे परवरदिगार! तू ने मुझ को हुकूमत से नवाज़ा और ख़्वाबों की ताबीर का इल्म बख़्शा। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया व आख़िरत में मेरा कारसाज़ है। तू मुझे (दुनिया से) अपनी इताअत (की हालत) में उठाइयो और आख़िरत में अपने नेक बंदों में दाख़िल कीजियो। (१०१) (ऐ पैग़म्बर!) ये ख़बरें ग़ैब में से हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं और जब यूसुफ़ के भाइयों ने अपनी बात पर इत्तिफ़ाक़ किया था और वे फ़रेब कर रहे थे, तो तुम उनके पास तो न थे। (१०२) और बहुत से आदमी, गो तुम (कितनी ही) ख़्वाहिश करो, ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१०३) और तुम उनसे इस (ख़ैर-ख़्वाही) का कुछ बदला भी तो नहीं मांगते। यह क़ुरआन और कुछ नहीं तमाम दुनिया के लिए नसीहत है। (१०४) ★

और आसमान व ज़मीन में बहुत-सी निशानियां हैं, जिन पर ये गुज़रते हैं और इनसे मुंह छिपाते हैं। (१०५) और ये अक्सर ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते, मगर (उसके साथ) शिर्क करते हैं।[1] (१०६) क्या ये (इस बात) से बे-ख़ौफ़ हैं कि उन पर ख़ुदा का अज़ाब नाज़िल हो कर उन को ढांप ले या उन पर यकायक क़ियामत आ जाए और उन्हें ख़बर भी न हो। (१०७) कह दो कि मेरा रास्ता तो यह है मैं ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूं ▨ (यक़ीन के मुताबिक़) समझ-बूझ कर मैं भी (लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूं) और मेरी पैरवी करने वाले भी और ख़ुदा पाक है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं

(पृष्ठ ३८९ का शेष)
तद्बीर से उन को अपने पास रख लिया। चूंकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर चोरी का इल्ज़ाम था, इस लिए याक़ूब अलैहिस्सलाम भी मजबूर थे और बेटे को बहन से नहीं ले सकते हैं, ग़रज़ यूसुफ़ फूफी के पास रहते और परवरिश पाते रहे, यहां तक कि फूफी का इन्तिक़ाल हो गया। भला यह वाक़िआ चोरी है और कोई शख़्स इसे सुन कर कह सकता है कि हज़रत यूसुफ़ ने चोरी की थी? तफ़्सीर लिखने वालों ने इस के सिवा कई और बातें लिखी हैं। जैसे, घर में एक मुर्ग़ी थी, वह उन्हों ने फ़क़ीर को दे दी थी या दस्तरख़्वान से खाना ले जाते थे और मुहताजों को दे आते थे, मगर ये बातें ऐसी हैं जिन्हें देख कर चोरी नहीं कहा जा सकता और सच तो यह है कि यूसुफ़ अलै० पर चोरी का इल्ज़ाम सिर्फ़ झूठ है। यूसुफ़ के भाइयों को तो झूठ बोलने में झिझक थी ही नहीं, तफ़्सीर लिखने वालों ने भी ऐसी झूठी बातों को चोरी क़रार देने और उन को यूसुफ़ से मुताल्लिक़ कर देने की ग़लती की है।

१. यानी ख़ुदा को मानते भी हैं और यह जानते भी हैं कि ज़मीन व आसमान और जो कुछ उन में है, उन का पैदा करने वाला और मालिक वही है, मगर साथ ही बुतों की पूजा भी करते हैं या उन को ख़ुदा की बराबरी का भी ठहराते हैं। यह खुला हुआ शिर्क है। इस तरीक़े पर ख़ुदा को मानने वाला मोमिन नहीं कहलाता, मुश्रिक (शेष पृष्ठ ३६३ पर)

★रु० ११/५ आ ११ ▨ व० न बी स०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्क़ुरा ७ अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्जुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ७ व ल-दारुल् - आख़िरति ख़ैरुल्लिल्-लज़ीनत्तक़ौ ७ अ - फ़ला तअ़-क़िलून (१०९) ह़त्ता इज़स्तै-अ-सर् - रुसुलु व ज़न्नू अन्नहुम् क़द् कुज़िबू जा-अहुम् नस्रुना ॥ फ़नुज्जि-य मन् नशाउ ७ व ला युरद्दु बअ्-सुना अ़निल्-क़ौमिल्-मुज्रिमीन (११०) ल-क़द् का-न फ़ी क़ससिहिम् अ़िब्रतुल् - लिउलिल् - अल्बाबि ७ मा का - न ह़दीसंय्युफ़्तरा व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै - न यदैहि व तफ़्सी-ल कुल्लि शैइंव् - व हुदंव - व रह्-म-तुल् - लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (१११)

१३ सूरतुर्रअ़्-दि ९६

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ३६१४ अक्षर, ८६३ शब्द, ४३ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

अलिफ़् - लाम्-मीम्-रा قف तिल - क आयातुल् - किताबि ७ वल्लज़ी उन्ज़ि - ल इलै - क मिर्रब्बिकल् - ह़क़्क़ु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (१) अल्लाहुल्लज़ी र-फ़-अस्-समावाति बिग़ैरि अ़-म-दिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अ़-लल्अ़र्शि व सख़्ख़रश्-शम-स वल्क़ - म - र ७ कुल्लुंय्यज्री लि - अ-जलिम् - मुसम्मन् ७ युदब्बिरुल्-अम-र युफ़स्सिलुल्-आयाति ल-अ़ल्लकुम् बिलिक़ाइ रब्बिकुम् तूक़िनून (२) व हुवल्लज़ी मद्दल्-अर्-ज़ व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि - य व अन्हारन् ७ व मिन् कुल्लिस्समराति ज - अ़ - ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल् - लैलन्नहा-र ७ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् - लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (३)

الرعد ١٣ ١٩٨ وما ابرئ ١٣

نُوحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ١٠٩ حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا
اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَاۗءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاۗءُ ۭ وَلَا
يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ١١٠ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ
عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ
تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى
وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ١١١
سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗمّۗرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۭ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ١ اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ
عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ
يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ
تُوْقِنُوْنَ ٢ وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۭ
وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ٣ وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ

منزل ٣

★रु० १२/६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हूं। (१०८) और हम ने तुम से पहले बस्तियों के रहने वालों में से मर्द ही भेजे थे। जिन की तरफ़ हम वह्य भेजते थे, क्या इन लोगों ने देश में (घूमना-फिरना) नहीं किया कि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम क्या हुआ और मुत्तक़ियों के लिए आख़िरत का घर बहुत अच्छा है। क्या तुम समझते नहीं? (१०९) यहां तक कि जब पैग़म्बर ना-उम्मीद हो गये और उन्हों ने ख़्याल किया कि (अपनी) मदद के बारे में जो बात उन्हों ने कही थी, उस में वे सच्चे न निकले। तो उनके पास हमारी मदद आ पहुंची। फिर जिसे हम ने चाहा, बचा दिया और हमारा अज़ाब उतर कर गुनाहगार लोगों से फिरा नहीं करता। (११०) उन के क़िस्से में अक़्लमंदों के लिए सबक़ है। यह (क़ुरआन) ऐसी बात नहीं है जो (अपने दिल से) बना ली गयी हो, बल्कि जो किताबें इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक़ (करने वाला) है और हर चीज़ की तफ़्सील (करने वाला) और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (१११) ★

१३ सूरः रअ़्द ९६

सूरः राद मक्की है और इस में ४३ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम्-रा, (ऐ मुहम्मद!) ये (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं और जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१) ख़ुदा वही तो है, जिस ने स्तूनों के बग़ैर आसमान, जैसा कि तुम देखते हो, (इतने) ऊंचे बनाये, फिर अर्श पर जा ठहरा और सूरज और चांद को काम में लगा दिया। हर-एक एक तै मीयाद तक घूम रहा है। वही (दुनिया के) कामों का इंतिज़ाम करता है। (इस तरह) वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता है कि तुम अपने परवरदिगार के रू-ब-रू जाने का यक़ीन करो। (२) और वह वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और उस में पहाड़ और दरिया पैदा किए और हर तरह के मेवों की दो-दो क़िस्में बनायीं। वही रात को दिन का लिबास पहनाता है। ग़ौर करने वालों के लिए इस में बहुत

(पृष्ठ ३९१ का शेष)
कहलाता है और शिर्क ऐसा गुनाह है, जो कभी नहीं बख़्शा जाएगा। (अल्लाह तआला हमें उस से पनाह दे)। कुछ लोगों ने इस आयत को मुनाफ़िक़ों पर चस्पां किया है कि ज़ाहिर में वे मोमिन थे और अन्दर से मुश्रिक। कुछ लोगों ने कहा है कि इस से मुराद अह्ले किताब हैं यानी यहूदी और ईसाई कि वे ख़ुदा को भी मानते हैं और साथ ही उज़ैर और ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा भी कहते हैं और यह शिर्क है, क्योंकि ख़ुदा औलाद से पाक है। कुछ लोगों ने कहा है कि ऐसे दिखावट करने वाले लोग मुराद हैं कि वे ख़ुदा पर ईमान रखते हैं, लेकिन चूंकि ख़ास अमल ख़ुदा के लिए नहीं करते, बल्कि दिखावे के लिए करते हैं और दिखावे के लिए अमल करना शिर्क में दाख़िल है, इस लिए वे मुश्रिक हैं। शेख़ सादी रह० के मुताबिक़ जो सिफ़तें ख़ुदा की ज़ात से मख़्सूस हैं, उन के बारे में यह एतक़ाद रखना कि वे किसी और में भी पायी जाती हैं, यह भी शिर्क है और आज-कल जो मुसलमान ख़ुदा के भी क़ायल हैं और साथ ही क़ब्र-परस्ती, पीर-परस्ती और ताज़िया परस्ती भी करते हैं उन में और इसी तरह की और चीज़ों में ख़ुदा के-से तसर्रुफ़ात मानते हैं, इस आयत में वे भी शामिल हैं। अल्लाह तआला मुसलमानों को तौफ़ीक़ बख़्शे कि वे उस को इस तरह जानें और उस पर इस तरह ईमान रखें कि उस में शिर्क बिल्कुल न मिला हो, उन का ईमान शिर्क से बिल्कुल पाक हो और वे ख़ालिस मोमिन हों।

★रु. १२/६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व फ़िल्अर्ज़ि क़ि-त़-अुम्-मु-तजाविरातुं व-व जन्नातुम्-मिन् अअ्-नाबिंव्-व ज़र्अुं व-व
नख़ीलुन् सिन्वानुं व्-व ग़ैरु सिन्वानिंय्युस्क़ा बिमाइंव्वाहि़दिन् व नुफ़ज़्ज़िलु
बअ्-ज़हा अ़ला बअ्-ज़िन् फ़िल्उकुलि ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्-
क़िलून (४) व इन् तअ्-जब् फ़-अ्-जबुन् क़ौलुहुम् अ इज़ा कुन्ना तुराबन्
अ इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन् ط
उलाइकल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् ج व
उलाइकल् - अग़्लालु फ़ी अअ्-नाक़िहिम् ج
व उलाइ-क अस्ह़ाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा
ख़ालिदून (५) व यस्तअ्-जिलून-क बिस्-
सय्यिअति क़ब्-लल्-ह़-स-नति व क़द् ख़-लत्
मिन् क़ब्लिहिमुल् - मसुलातु ط व इन् - न
रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिल्-लिन्नासि अ़ला
ज़ुल्मिहिम् ج व इन-न रब्ब-क ल-शदीदुल्-
अिक़ाब (६) व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौला
उन्ज़ि - ल अ़लैहि आयतुम् - मिर्रब्बिही ط
इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरुंव्-व लिकुल्लि क़ौमिन्
हाद ★ (७) अल्लाहु यअ्-लमु मा तह़्मिलु कुल्लु उन्सा व मा
तग़ीज़ुल् - अर्ह़ामु व मा तज़्दादु ط व कुल्लु शैइन् अिन्दहू बिमिक़्दार
(८) आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल् - कबीरुल्-मु-त-आ़ल (९) सवाउम् -
मिन्कुम् मन् अ-सर्रल्-क़ौ-ल व मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व मुस्तख़्फ़िम्-
बिल्लैलि व सारिबुम् - बिन्नहार (१०) लहू मुअक़्क़िबातुम्-मिम्बैनि
यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही यह़्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिल्लाहि ط इन्नल्ला - ह
ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् ह़त्ता युग़य्यिरू मा बि - अन्फ़ुसिहिम् ط व
इज़ा अरादल्लाहु बिक़ौमिन् सू-अन् फ़ला म-रद्-द लहू ج व मा लहुम्
मिन् दूनिही मिंव्वाल (११) हुवल्लज़ी युरीकुमुल्बर-क़ ख़ौफ़ंव-व त़-म-अ़ंव-व
युन्शिउस् - सह़ाबस् - सिक़ाल ج (१२) व युसब्बिहुर्रअ् - दु बिह़म्दिही
वल्मलाइकतु मिन् ख़ीफ़तिही ج व युर्सिलुस्सवाअि - क़ फ़युसीबु बिहा
मंय्यशाउ व हुम् युजादिलू-न फ़िल्लाहि ج व हु-व शदीदुल्-मिह़ाल ط (१३)

وما ابرئ ۱۳ ۱۹۹ الرعد ۱۳

وَجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى
بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۴ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا
ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ
فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۵ وَ
يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۶ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۷ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى
وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَىْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۸ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۹ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ
وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۱۰ لَهٗ
مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ
بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۱۱ هُوَ
الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۱۲
وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ

★रु. १/७ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सी निशानियां हैं। (३) और ज़मीन में कई तरह के क़तात हैं, एक दूसरे से मिले हुए और अंगूर के बाग़ और खेती और खजूर के पेड़, कुछ की बहुत सी शाखें होती है और कुछ की इतनी नहीं होतीं (इस के बावजूद कि) पानी सब को एक ही मिलता है और हम कुछ मेवों को कुछ पर लज़्ज़त में बढ़ा देते हैं। इस में समझने वालों के लिए बहुत-सी निशानियां हैं। (४) अगर तुम अजीब बात सुननी चाहो तो काफ़िरों का यह कहना अजीब है कि जब हम (मर कर) मिट्टी हो जाएंगे तो क्या फिर से पैदा होंगे। यही लोग हैं जो अपने परवरदिगार से मुंकिर हुए हैं और यही हैं जिन की गरदनों में तौक़ होंगे, और यही दोज़ख वाले हैं कि हमेशा उस में (जलते) रहेंगे। (५) और ये लोग भलाई से पहले तुम से बुराई के जल्द चाहने वाले (यानी अज़ाब चाहने वाले) हैं, हालांकि उन से पहले अज़ाब (वाक़ेअ) हो चुके हैं और तुम्हारा परवरदिगार लोगों को उन की बे-इंसाफ़ियों के बावजूद माफ़ करने वाला है और बेशक तुम्हारा परवरदिगार सख़्त अज़ाब देने वाला है। (६)और काफ़िर लोग कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर उस के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी कियों नाज़िल नहीं हुई।[1] सो (ऐ मुहम्मद!) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो और हर एक क़ौम के लिए रहनुमा हुआ करता है। (७) ★

ख़ुदा ही उस बच्चे को जानता है, जो औरत के पेट में होता है और पेट के सुकड़ने और बढ़ने को भी (जानता है) और हर चीज़ का उस के यहां एक अन्दाज़ा मुक़र्रर है। (८) वह छिपे और खुले का जानने वाला है। सब से बुज़ुर्ग (और) बुलंद रुत्बा है। (९) कोई तुम में से चुपके से बात कहे या पुकार कर या रात को कहीं छिप जाए या दिन (की रोशनी) में खुल्लम-खुल्ला चले-फिरे (उस के नज़दीक) बराबर है। (१०) उस के आगे और पीछे ख़ुदा के चौकीदार हैं, जो ख़ुदा के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं। ख़ुदा उस (नेमत) को, जो किसी क़ौम को (हासिल) है, नहीं बदलता, जब तक कि वह अपनी हालत को न बदले और जब ख़ुदा किसी क़ौम के साथ बुराई का इरादा करता है, तो फिर वह फिर नहीं सकती और ख़ुदा के सिवा उन का कोई मददगार नहीं होता। (११) और वही तो है जो तुम को डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता और भारी-भारी बादल पैदा करता है। (१२) और राद और फ़रिश्ते सब उस के डर से उस की तस्बीह व तह्मीद करते रहते हैं[2] और वही बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा भी देता है और वे ख़ुदा के

१. मक्का के काफ़िर कहते थे कि जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी अज़दहा होती थी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दे को ज़िन्दा करते थे, वैसा ही काम यह नबी सल्ल० क्यों नहीं करते ?

२. राद नाम है एक फ़रिश्ते का, जो बदली का रखवाला है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लहू दअ़-वतुल्-ह़क़्क़ि ط वल्लज़ी-न यद्‌अ़ू-न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू-न लहुम्
बिशैइन् इल्ला कबासिति कफ़्फ़ैहि इलल्-मा-इ लियब-लु-ग़ फ़ाहु व मा हु-व
बिबालिग़िही ط व मा दुआ़उल् - काफ़िरी - न इल्ला फ़ी ज़लाल (१४)
व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़िस्समावाति वल्‌अर्ज़ि तौअ़ंव-व कर्‌हंव-व ज़िलालुहुम्
बिलग़ुदुव्वि वल् - आसाल □(१५) क़ुल्
मर्रब्बुस्समावाति वल्‌अर्ज़ि ط क़ुलिल्लाहु
क़ुल् अ - फ़त्त - ख़ज़्तुम् मिन् दूनिही
औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम्
नफ़्‌अ़ंव्-व ला ज़र्रन् ط क़ुल् हल् यस्तविल्-
अअ़् - मा वल्बसीरु ۙ अम् हल्
तस्तविज़्ज़ुलुमातु वन्नूरु ۚ अम् ज - अ़लू
लिल्लाहि शु-रका-अ ख़-लक़ू क-ख़ल्क़िही
फ़ - तशाबहल् - ख़ल्क़ु अ़लैहिम् ج क़ुलिल्लाहु
ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हुवल्-वाहिदुल् -
क़ह्हार (१६) अन्ज़ - ल मिनस्समाइ
मा-अन् फ़ सालत् औदियतुम्-बिक़-दरिहा
फ़ह़्-त-मलस्सैलु ज़-ब-दर्-राबियन् ط व मिम्मा यूक़िदू-न अ़लैहि फ़िन्नारिब्तिग़ा-अ
हिल्यतिन् औ मताअ़िन् ज़-ब-दुम् - मिस्लुहू ط कज़ालि - क यज़्रिबुल्लाहुल्-
ह़क़्-क़ वल्बाति-ल ۚ फ़-अम्मज़् - ज़-बदु फ़ - यज-हबु जुफ़ा-अन् ج व अम्मा
मा यन्फ़अ़ुन्ना - स फ़ - यम्कुसु फ़िल्अर्ज़ि ط कज़ालि - क यज़्रिबुल्लाहुल् -
अम्साल ط (१७) लिल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिमुल् - ह़ुस्ना ط
▨ वल्लज़ी - न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन - न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि
जमीअ़ंव्-व मिस्लहू म - अ़हू लफ़्तदौ बिही ط उलाइ - क लहुम् सूउल्-
हिसाबि ۙ व मअ्वाहुम् ज - हन्नमु ط व बिअ्सल् - मिहाद
★● (१८) अ-फ़-मंय्यअ्-लमु अन्नमा उन्ज़ि-ल इलै - क मिर्रब्बिकल् - ह़क़्क़ु
क-मन् हु - व अअ़् - मा ط इन्नमा य-त-ज़क्करु उलुल्-अल्बाब ۙ (१९)

الرعد ١٣ ٢٠٠ وما ابرئ ١٣

فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ۚ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾
لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ
بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۚ وَمَا
دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿١٤﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۩ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ
لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ
هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ ۗ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ
فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ
زَبَدًا رَابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ
اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾
أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ

□ सजदः २ ▨ व. न बी स. ★ रु. २/८ आ ११ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बारे में झगड़ते हैं और वह बड़ी ताक़त वाला है। (१३) सूदमंद पुकारना तो उसी का है और जिन को ये लोग उस के सिवा पुकारते हैं, वह उन की पुकार को किसी तरह क़ुबूल नहीं करते, मगर उस शख़्स की तरह जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैला दे, ताकि (दूर ही से) उस के मुंह तक आ पहुंचे, हालांकि वह (उस तक कभी भी) नहीं आ सकता और (इसी तरह) काफ़िरों की पुकार बेकार है। (१४) और जितनी मख़्लूक़ आसमानों और ज़मीन में है, ख़ुशी से या ज़बरदस्ती से ख़ुदा के आगे सज्दा करती है और उन के साए भी सुबह व शाम सज्दा करते हैं [1] (१५) उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार कौन है? (तुम ही उन की तरफ़ से) कह दो कि ख़ुदा फिर (उन से) कहो कि तुम ने ख़ुदा को छोड़ कर ऐसे लोगों को क्यों कारसाज़ बनाया है जो ख़ुद अपने नफ़ा-नुक़्सान का भी कुछ अख़्तियार नहीं रखते? (यह भी) पूछो, क्या अंधा और आंखों वाला बराबर है? या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है? भला उन लोगों ने जिन को ख़ुदा का शरीक मुक़र्रर किया है, क्या उन्होंने ख़ुदा की-सी मख़्लूक़ात पैदा की है, जिस की वजह से उन की मख़्लूक़ात मुश्तबह हो गयी है। कह दो कि ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह यक्ता (और) ज़बरदस्त है। (१६) उसी ने आसमान से मेंह बरसाया, फिर उस से अपने-अपने अन्दाज़े के मुताबिक़ नाले बह निकले, फिर नाले पर फूला हुआ झाग आ गया और जिस चीज़ को ज़ेवर या कोई और सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही भाग होता है। इस तरह ख़ुदा हक़ और बातिल की मिसाल बयान फ़रमाता है। सो झाग तो सूख कर ख़त्म हो जाता है। और (पानी) जो लोगों को फ़ायदा पहुंचाता है, वह ज़मीन में ठहरा रहता है। इस तरह ख़ुदा (सही और ग़लत की) मिसालें बयान फ़रमाता है, (ताकि तुम समझो)। (१७) जिन लोगों ने ख़ुदा के हुक्म को क़ुबूल किया, उन की हालत बहुत बेहतर होगी और जिन्हों ने इस को क़ुबूल न किया अगर धरती के सब ख़ज़ाने उन के अख़्तियार में हों, तो वे सब के सब और उन के साथ उतने ही और, (निजात) के बदले में ख़र्च कर डालें, (मगर निजात कहां?) ऐसे लोगों का हिसाब भी बुरा होगा और उन का ठिकाना भी दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है। (१८) ★ ●

भला जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक़ है, वह उस शख़्स की तरह है, जो अंधा है? और समझते तो वही हैं, जो अक़्लमंद

---

१. जो यक़ीन लाया अल्लाह पर, वह ख़ुशी से सर रखता है उस के हुक्म पर और जो न यक़ीन लाया आख़िर उस पर भी उसी का हुक्म जारी है और परछाइयां सुबह-शाम ज़मीन पर फैल जाती हैं, यही है उन का सज्दा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ़ल्लज़ी-न यूफ़ू-न बिअ़ह्दिल्लाहि व ला यन्क़ुज़ूनल् - मीसाक़ ﻻ (२०)
वल्लज़ी-न यसि़लू-न मा अ-म-रल्लाहु बिही अंय्यूस़-ल व यख़्शौ-न रब्बहुम् व
यख़ाफ़ू-न सूअल्-हि़साब ط (२१) वल्लज़ी-न स़-बरुब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिम्
व अक़ामुस्स़ला-त़ व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् सिर्-रंव-व अलानि-य-तंव-व
यद्रऊ-न बिल् - ह़-स-नति़स् - सय्यि-अ-त़
उलाइ - क लहुम् उक़्बद्दार ﻻ (२२)
जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलूनहा व मन् स़-ल-ह़
मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व
ज़ुर्रिय्यातिहिम् वलमलाइकतु यद्ख़ुलू - न
अ़लैहिम् मिन् कुल्लि बाब ج (२३)
सलामुन् अ़लैकुम् बिमा स़-बर्तुम् फ़निअ़्-म
उ़क़्बद्दार ط (२४) वल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न
अ़ह - दल्लाहि मिम्बअ़-दि मीसाक़िही व
यक़्तअ़ू-न मा अ-म-रल्लाहु बिही अंय्यूस़-ल
व युफ़्सिदू - न फ़िल्अर्ज़ि ﻻ उलाइ - क
लहुमुल्लअ़्-नतु व लहुम् सूउद्दार (२५)

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝١٩ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا
يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝٢٠ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ
وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝٢١ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝٢٢ جَنَّاتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ
وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ۝٢٣ سَلَامٌ عَلَيْكُم بِمَا
صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝٢٤ وَالَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن
بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝٢٥ اللَّهُ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَوٰةُ
الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝٢٦ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي
إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ۝٢٧ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ
أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝٢٨ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ۝٢٩ كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ

अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु ط व फ़रिह़ू बिल-
ह़यातिद्दुन्या ط व मल् - ह़यातुद्दुन्या फ़िल् - आख़िरति इल्ला मता-अ़
★ (२६) व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौला उन्ज़ि - ल अ़लैहि आयतुम् -
मिर्रब्बिही ط क़ुल् इन्नल्ला - ह युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी इलैहि मन्
अनाब ع (२७) अल्लज़ी - न आमनू व तत्मइन्नु क़ुलूबुहुम्
बिज़िक - रिल्लाहि ط अला बिज़िक - रिल्लाहि तत्मइन्नुल् - क़ुलूब ط (२८)
अल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्स़ालिह़ाति तूबा लहुम् व हु़स्नु मआब (२९)
कज़ालि-क अर्सल्ना-क फ़ी उम्मतिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहा उ-ममुल्-लितत-लु-व
अ़लैहिमुल्लज़ी औहैना इलै - क व हुम्-यक्फ़ुरू-न बिर्रह़्मानि ط क़ुल् हु-व
रब्बी ला इला-ह इल्ला हु-व ج अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि मताब (३०)

★रु. ३/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (१६) जो ख़ुदा के अ़ह्द को पूरा करते हैं और इक़रार को नहीं तोड़ते। (२०) और जिन (क़राबतदारों) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उन को जोड़े रखते और अपने परवरदिगार से डरते रहते और बुरे हिसाब से ख़ौफ़ रखते हैं। (२१) और जो परवरदिगार की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए (मुसीबतों पर) सब्र करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से छिपे और ज़ाहिर ख़र्च करते हैं और नेकी से बुराई को दूर करते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए आक़िबत का घर है, (२२) (यानी) हमेशा रहने के बाग़, जिन में वे दाख़िल होंगे और उन के बाप-दादा और बीवियों और औलाद में से जो नेक होंगे, वे भी (बहिश्त में जाएंगे) और फ़रिश्ते (बहिश्त के) हर एक दरवाज़े से उन के पास आएंगे, (२३) (और कहेंगे) तुम पर रहमत हो (यह) तुम्हारी साबित क़दमी का बदला है और आक़िबत का घर ख़ूब (घर) है। (२४) और जो लोग ख़ुदा से पक्का अ़ह्द कर के उस को तोड़ डालते और जिन (क़राबत के रिश्तों) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उन को काट डालते हैं और मुल्क में फ़साद करते हैं, ऐसों पर लानत है और उनके लिए घर भी बुरा है। (२५) ख़ुदा जिस की चाहता है, रोज़ी फैला देता है, और जिस की चाहता है तंग कर देता है और काफ़िर लोग दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हो रहे हैं और दुनिया की ज़िंदगी में आख़िरत (के मुक़ाबले) में (बहुत) थोड़ा फ़ायदा है। (२६)★

और काफ़िर कहते हैं कि इस (पैग़म्बर पर) उस के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि ख़ुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जो (उस की तरफ़) रुजू होता है, उस को अपनी तरफ़ का रास्ता दिखाता है।[1] (२७) (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल ख़ुदा की याद से आराम पाते हैं (उन को) और सुन रखो कि ख़ुदा की याद से दिल आराम पाते हैं। (२८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए ख़ुशहाली और उम्दा ठिकाना है। (२६) (जिस तरह हम और पैग़म्बर भेजते रहे हैं) उसी तरह (ऐ मुहम्मद) हम ने तुम को इस उम्मत में, जिस से पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, भेजा है, ताकि तुम उन को वह (किताब) जो हम ने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, पढ़ कर सुना दो और ये लोग रहमान को नहीं मानते। कहो, वही तो मेरा परवरदिगार है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। मैं उसी पर भरोसा

१. यानी ईमान की तौफ़ीक़ देता है बग़ैर मोजज़ा दिखाए उस को, जो कोई उस की तरफ़ आजिज़ी करता है और ख़ुदा की तरफ़ सब को छोड़ कर फिरता है।

★रु. ३/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लौ अन्-न क़ुर्आनन् सुय्यिरत् बिहिल्-जिबालु औ क़ुत्तिअ़त् बिहिल्-
अर - ज़ु औ कुल्लि - म बिहिलमौता ♭ बल् लिल्लाहिल् - अम्रु जमीअ़न् ♭
अ-फ़-लम् यै-असिल्लज़ी-न आमनू अल्लौ यशाउल्लाहु ल-ह-दन्ना-स जमीअ़न् ♭ व
ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू तुसीबुहुम् बिमा स़-न-अू क़ारिअ़तुन् औ तहुल्लु
क़रीबम्मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति - य
वअ्-दुल्लाहि ♭ इन्नल्ला - ह ला युख़्लिफ़ुल्-
मीआ़द ★ (३१) व ल - क़दिस्तुहज़ि-य
बिरुसुलिम् - मिन् क़ब्लि - क फ़ अम्लैतु
लिल्लज़ी-न क-फ़रू सुम-म अ-ख़ज़-तुहुम्
फ़कै-फ़ का-न अ़िक़ाब (३२) अ-फ़-मन् हु-व
क़ाइमुन् अ़ला कुल्लि नफ़्सिम् - बिमा
क-स-बत् ᑕ व ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रका-अ ♭
क़ुल् सम्मूहुम् ♭ अम् तुनब्बिऊनहू बिमा
ला यअ्-लमु फ़िल्अर्ज़ि अम् बिज़ाहिरिम्-
मिनल्क़ौलि ♭ बल् ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी - न
क-फ़रू मक्रुहुम् व सुद्दू अ़निस्सबीलि ♭

بِالرَّحْمٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾
وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ
الْمَوْتٰى ۗ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۗ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ
لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى
يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ
بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۗ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا
لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۗ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۗ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ
بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ
السَّبِيْلِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ عَذَابٌ فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ
اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ
النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ
مِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۗ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ
اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۗ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ

व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (३३) लहुम् अ़ज़ाबुन् फ़िल्-
ह़यातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशक़्क़ु ᑕ व मा लहुम् मिनल्लाहि
मिंव्वाक़ (३४) म-स़लुल्-जन्नतिल्लती वुअ़िदल् - मुत्तक़ू - न ♭ तज्री मिन्
तह़्तिहल्-अन्हारु ♭ उकुलुहा दाइमुंव - व ज़िल्लुहा ♭ तिल-क अुक़्बल्लज़ीनत्तक़व्-
व उक़्बल् - काफ़िरीनन्नार (३५) वल्लज़ी - न आतैनाहुमुल् -
किता-ब यफ़्रहू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मिनल्-अह़्ज़ाबि मंय्युन्किरु
बअ़् - ज़हू ♭ क़ुल् इन्नमा उमिर्तु अन् अअ़्-बुदल्ला-ह व ला उश्रि-क
बिही ♭ इलैहि अद्अू व इलैहि मआब (३६) व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु
हुक्मन् अ-रबिय्यन् ♭ व ल - इनित्तबअ़्-त अह़्वा-अहुम् बअ़्-द मा जा-अ-क
मिनल्-अ़िल्मि ♭ मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव-व ला वाक़ ★ (३७)

★रु. ४/१० आ ५ ★रु. ५/११ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रखता हूं और उसी की तरफ़ रुजू करता हूं। (३०) और अगर कोई क़ुरआन ऐसा होता कि उस (के असर से) पहाड़ चल पड़ते या ज़मीन फ़ट जाती या मुर्दों से कलाम कर सकते (तो यही क़ुरआन इन ख़ूबियों वाला होता मगर) बात यह है कि सब बातें ख़ुदा के अख़्तियार में हैं, तो क्या मोमिनों को इस से इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर ख़ुदा चाहता तो सब लोगों को हिदायत के रास्ते पर चला देता और काफ़िरों पर हमेशा उन के आमाल के बदले बला आती रहेगी या उन के मकानों के क़रीब नाज़िल होती रहेगी, यहां तक कि ख़ुदा का वायदा आ पहुंचे। बेशक ख़ुदा वायदा ख़िलाफ़ नहीं करता। (३१) ★

और तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ होता रहा है, तो हम ने काफ़िरों को मोहलत दी, फिर पकड़ लिया, सो (देख लो कि) हमारा अज़ाब कैसा था। (३२) तो क्या जो (ख़ुदा हर) नफ़्स के आमाल का निगरां (व निगहबान) है (वह बुतों की तरह बे-इल्म व बे-ख़बर हो सकता है) और उन लोगों ने ख़ुदा के शरीक मुक़र्रर कर रखे हैं। उन से कहो कि (ज़रा) उन के नाम तो लो। क्या तुम उसे ऐसी चीज़ें बताते हो जिस को वह ज़मीन में (कहीं भी) मालूम नहीं करता या (सिर्फ़) ज़ाहिरी (बातिल और झूठी) बात के (पीछे चलते हो)। असल यह है कि काफ़िरों को उन के फ़रेब ख़ूबसूरत मालूम होते हैं और वे (हिदायत के) रास्ते से रोक लिए गए हैं और जिसे ख़ुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं। (३३) उन को दुनिया की ज़िंदगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही सख़्त है और उन को ख़ुदा (के अज़ाब से) कोई भी बचाने वाला नहीं। (३४) जिस बाग़ का मुत्तक़ियों से वायदा किया गया है, उस की ख़ूबियां ये हैं कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उस के फल हमेशा (क़ायम रहने वाले) हैं और उस के साए भी। यह उन लोगों का अंजाम है, जो मुत्तक़ी हैं और काफ़िरों का अंजाम दोज़ख़ है। (३५) और जिन लोगों को हम ने किताब दी है, वे उस (किताब) से जो तुम पर नाज़िल हुई है, ख़ुश होते हैं और कुछ फ़िर्क़े, जिन की कुछ बातें नहीं भी मानते। कह दो कि मुझ को यही हुक्म हुआ है कि ख़ुदा ही की इबादत करूं और उस के साथ (किसी को) शरीक न बनाऊं। मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मुझे
26 लौटना है। (३६) और इसी तरह हम ने इस क़ुरआन को अरबी ज़ुबान का फ़रमान नाज़िल किया है और अगर तुम इल्म (व दानिश) आने के बाद उन लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे चलोगे तो ख़ुदा के सामने कोई न तुम्हारा मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (३७) ★

★रु. ४/१० आ ५ ★रु. ५/११ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम्-मिन् क़ब्लि-क व ज-अल्ना लहुम् अज़्वाजंव्-व
ज़ुर्रिय्य-तन् ط व मा का-न लिरसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआयतिन् इल्ला
बिइज़्निल्लाहि ط लिकुल्लि अ-जलिन् किताब (३८) यम्हुल्लाहु मा
यशाउ व युस्बितु ج व अिन्दहू उम्मुल्-किताब (३९) व इम्मा
नुरियन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ
न-त-वफ़्फ़-यन्न-क फ़-इन्नमा अलैकल्-बलाग़ु
व अलैनल्-हिसाब (४०) अ-व लम् यरौ
अन्ना नअ्तिल्-अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन्
अत्राफ़िहा ط वल्लाहु यह्कुमु ला
मुअक़्क़ि-ब लिहुक्मिही ط व हु-व
सरीअुल्-हिसाब (४१) व क़द्
म-क-रल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिल्-
मक्रु जमीअन् ط यअ्-लमु मा तक्सिबु
कुल्लु नफ़्सिन् ط व स-यअ्-लमुल्-कुफ़्फ़ारु
लिमन् अुक़्बद्दार (४२) व यक़ूलुल्लज़ी-न
क-फ़रू लस्-त मुर्सलन् ط क़ुल् कफ़ा
बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम् لا व
मन् अिन्दहू अिल्मुल्-किताब ★ (४३)

ابرٰهیم ۱۴ — ۲۰۳ — وما ابرئ ۱۳

حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ
مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ
قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ
يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ
وَيُثْبِتُ ښ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ
نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝ اَوَ
لَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا
مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۭ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۭ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۭ وَسَيَعْلَمُ
الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۭ
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝
سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثِنْتَانِ وَخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗرٰ ۣ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ڏ
بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِۨ ۝
الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَي الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ

منزل ۳

१४ सूरतु इब्राही-म ७२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३६०१ अक्षर, ८४५ शब्द, ५२ आयतें और ७ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अलिफ़्-लाम्-रा قف किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क लितुख़्रिजन्ना-स
मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि لا बिइज़्नि रब्बिहिम् इला सिरातिल्-
अज़ीज़िल्-हमीद لا (१) अल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा
फ़िल्अर्ज़ि ط व वैलुल्लिल्-काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् शदीद لا (२) अन्
अल्लज़ी-न यस्तहिब्बूनल्-हयातद्दुन्या अ-लल्-आख़िरति व यसुद्दू-न (३)
सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-व-जन् ط उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-बअीद

★रु. ६/१२ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम से पहले भी पैग़म्बर भेजे थे और उनको बीवियां और औलाद भी दी थी और किसी पैग़म्बर के अख़्तियार की बात न थी कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाए। क़ज़ा (का) हर (हुक्म किताब में) लिखा हुआ है। (३८) ख़ुदा जिस को चाहता है, मिटा देता है और (जिस को चाहता है) क़ायम रखता है और उसी के पास असल किताब है। (३९) और अगर हम कोई अज़ाब, जिस का उन लोगों से वायदा करते हैं, तुम्हें दिखाएं (यानी तुम्हारे सामने उन पर नाज़िल करें) या तुम्हारी ज़िंदगी की मुद्दत पूरी कर दें (यानी) तुम्हारे इंतिक़ाल के बाद अज़ाब भेजें, तो तुम्हारा काम (हमारे हुक्मों का) पहुंचा देना है और हमारा काम हिसाब लेना है। (४०) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते चले आते हैं।[1] और ख़ुदा (जैसा चाहता है) हुक्म करता है, कोई उस के हुक्म का रद्द करने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। (४१) जो लोग उन से पहले थे, वे भी (बहुतेरी) चालें चलते रहे, सो चाल तो सब अल्लाह ही की है। हर नफ़्स जो कुछ कर रहा है, वह उसे जानता है और काफ़िर जल्द मालूम करेंगे कि आक़िबत का घर (यानी अच्छाई का अंजाम) किस के लिए है ? (४२) और काफ़िर लोग कहते हैं कि तुम (ख़ुदा के) रसूल नहीं हो। कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा और वह शख़्स, जिस के पास (आसमानी) किताब का इल्म है,[2] गवाह काफ़ी है। (४३)★

१४ सूरः इब्राहीम ७२

सूरः इब्राहीम मक्की है और इस में ५२ आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह एक (पुरनूर) किताब (है), इस को हम ने तुम पर इस लिए नाज़िल किया है कि लोगों को अंधेरे से निकाल कर रोशनी की तरफ ले जाओ (यानी) उन के परवरदिगार के हुक्म से ग़ालिब और तारीफ़ के क़ाबिल (ख़ुदा) के रास्ते की तरफ़। (१) वह ख़ुदा कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब उसी का है और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब (की वजह) से ख़राबी है, (२) जो आख़िरत के मुक़ाबले दुनिया को पसन्द करते और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोकते और उस में टेढ़ चाहते हैं। ये लोग परले सिरे की गुमराही में हैं। (३) और हम ने कोई

१. ज़मीन के घटाने से यह मुराद है कि कुफ़्र मुल्क से कम होता जाता और इस्लाम फैलता जाता है। किसी ने कहा कि देहात वीरान हुए जाते हैं। किसी ने कहा कि जानें और फल और मेवे ज़ाया हो रहे हैं।

२. जिस के पास किताब का इल्म है, उस से मुराद या तो अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो अह्ले किताब में से थे और जिन्हों ने हज़रत की रिसालत की गवाही दी थी और इस्लाम ले आये थे, चुनांचे वह इस बात के क़ायल भी थे कि यह आयते इलाही के हक़ में नाज़िल हुई है या आम अह्ले किताब मुराद हैं जिन की पिछली किताबों से आप की गवाही मालूम है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला बिलिसानि क़ौमिही लियुबय्यि-न लहुम् ط
फ़युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा - उ व यह्दी मंय्यशाउ ط व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम
(४) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना अन् अख़्रिज् क़ौम-क मिनज़्-
ज़ुलुमाति इलन्नूरि ۙ व ज़क्किर्हुम् बिअय्यामिल्लाहि ط इन् - न फ़ी
ज़ालि-क लआयातिल्लिकुल्लि सब्बारिन्
शकूर (५), व इज़् क़ा - ल मूसा
लिक़ौमिहिज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम्
इज़् अन्जाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ - न
यसूमूनकुम् सूअल्-अज़ाबि व युज़ब्बिहू-न
अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू - न निसा-अकुम् ط
व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् - मिर्रब्बिकुम्
अज़ीम ★ (६) व इज़् त - अज़्ज़ - न
रब्बुकुम् लइन् श-कर्तुम् ल-अज़ीदन्नकुम् व
लइन् क-फ़र्तुम् इन्-न अज़ाबी ल-शदीद
(७) व क़ा-ल मूसा इन् तक्फ़ुरू
अन्तुम् व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् ۙ
फ़इन्नल्ला-ह लग़निय्युन् हमीद (८) अ-लम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लिकुम् क़ौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द ۛ वल्लज़ी-न मिम्बअ् - दिहिम् ط
ला यअ् - लमुहुम् इल्लल्लाहु ط जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रद्दू
ऐदि-यहुम् फ़ी अफ़्वाहिहिम् व क़ालू इन्ना क - फ़र्ना बिमा उर्सिल्तुम्
बिही व इन्ना लफ़ी शक्किम् - मिम्मा तद्ऊनना इलैहि मुरीब ● (९)
क़ालत् रुसुलुहुम् अफ़िल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि ط यद्ऊकुम्
लियग़्फ़ि-र लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़ि-रकुम् इला अ - जलिम् -
मुसम्मन् ط क़ालू इन् अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना ط तुरीदू-न अन् तसुद्दूना
अम्मा का-न यअ्-बुदु आबाउना फ़अ्-तूना बिसुल्तानिम् - मुबीन (१०)

وما ابرئ ١٣ — ٢٠٢ — ابراهيم ١٤

سَبِيلِ اللّٰهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولٰٓئِكَ فِي ضَلٰلٍ بَعِيدٍ [٣] وَمَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ اللّٰهُ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ [٤] وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا مُوسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّورِ ۙ
وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ [٥]
وَاِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ
مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ اَبْنَآءَكُمْ وَ
يَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ [٦] وَاِذْ
تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ
لَشَدِيدٌ [٧] وَقَالَ مُوسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ
جَمِيعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ [٨] اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ
اِلَّا اللّٰهُ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوٓا اَيْدِيَهُمْ فِيٓ اَفْوَاهِهِمْ
وَقَالُوٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَآ
اِلَيْهِ مُرِيبٍ [٩] قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۚ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى
اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ تُرِيدُونَ اَنْ

★ रु. १/१३ आ ६ :- मु. अ़ि मु त क़. ६ ● मु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पैग़म्बर नहीं भेजा, मगर अपनी क़ौम की ज़ुबान बोलता था,[1] ताकि उन्हें (ख़ुदा के हुक्म) खोल-खोल कर बता दे, फिर ख़ुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है, (४) और हम ने मूसा को अपनी निशानियां दे कर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाओ और उन को ख़ुदा के दिन याद दिलाओ,[2] इस में उन लोगों के लिए जो सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले हैं, (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (५) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा ने जो तुम पर मेहरबानियां की हैं, उन को याद करो, जब कि तुम को फ़िऔन की क़ौम (के हाथ) से मुख़्लिसी दी। वे लोग तुम्हें बुरे अज़ाब देते थे और तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और औरत ज़ात यानी तुम्हारी लड़कियों को ज़िंदा रहने देते थे और उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बडी (सख़्त) आज़माइश थी, (६) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने (तुम को) आगाह किया कि अगर शुक्र करोगे, तो मैं तुम्हें ज्यादा दूंगा और अगर नाशुक्री करोगे तो (याद रखो कि) मेरा अज़ाब (भी) सख़्त है। (७) और मूसा ने (साफ़-साफ़) कह दिया कि अगर तुम और जितने और लोग ज़मीन में हैं, सब के सब नाशुक्री करो, तो ख़ुदा भी बे-नियाज़ (और) तारीफ़ के क़ाबिल है। (८) भला तुम को उन लोगों (के हालात) की ख़बर नहीं पहुंची जो तुम से पहले थे (यानी) नूह और आद और समूद की क़ौमः और जो उन के बाद थे, ∴ जिन का इल्म ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं। (जब) उन के पास पैग़म्बर निशानियां ले कर आए तो उन्हों ने अपने हाथ उन के मुंहों पर रख दिए (कि ख़ामोश रहो) और कहने लगे कि हम तो तुम्हारी रिसालत को नहीं मानते और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, हम उस से भारी शक में हैं ● (९) उन के पैग़म्बरों ने कहा, क्या (तुम को) ख़ुदा (के बारे) में शक है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। वह तुम्हें इस लिए बुलाता है कि तुम्हारे गुनाह बख़्शने और (फ़ायदा पहुंचाने के लिए) एक मुक़र्रर मुद्दत तक तुम को मोहलत दे। वे बोले तुम तो हमारे ही जैसे आदमी हो, तुम्हारा यह मंशा है कि जिन चीज़ों को हमारे वड़े पूजते रहे हैं, उन (के पूजने) से हम को वन्द कर दो तो (अच्छा!) कोई खुली दलील लाओ (यानी मोजज़ा

१. काफ़िर कहते थे कि और ज़ुबान में क़ुरआन उतरता, तो हम यक़ीन करते, यह तो उस शख़्स की बोली है, शायद आप कह लाता हो, इस का यह जवाब है।

२. ख़ुदा के दिनों से मुराद वे वाक़िए हैं जो उस की तरफ़ से ज़ाहिर होते रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इन् नह़्नु इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् व लाकिन्नल्ला-ह
यमुन्नु अ़ला मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही ط व मा का-न लना अन्-नअ्ति-यकुम्
बिसुल्त़ानिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-
मुअ्मिनून (११) व मा लना अल्ला न-त-वक्क-ल अ़-लल्लाहि व क़द् हदाना
सुबुलना ط व ल-नस्बिरन्-न अ़ला मा
आज़ैतुमूना ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-
य-त-वक्कलिल्-मुत-वक्किलून ★ (१२) व
क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिरुसुलिहिम्
लनुख़्रिजन्नकुम् मिन् अर्ज़िना औ ल-तअ़ूदुन्-न
फ़ी मिल्लतिना ط फ़औहा इलैहिम्
रब्बुहुम् लनुह्लिकन्नज़्-ज़ालिमीन ۙ (१३)
व लनुस्किनन्न-कुमुल्-अर्-ज़ मिम्बअ्-दिहिम् ط
ज़ालि-क लिमन् ख़ा-फ़ मक़ामी व ख़ा-फ़
वअ़ीद (१४) वस्तफ़्तहू व ख़ा-ब
कुल्लु जब्बारिन् अ़नीदिम् ۙ (१५)
मिंव्वराइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्-
माइन् स़दीदिंय्- ۙ (१६) य-त-जर्रअुहू
व ला यकादु युसीग़ुहू व यअ्तीहिल्-मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व मा हु-व
बिमय्यितिन् ط व मिंव्वराइही अ़ज़ाबुन् ग़लीज़ (१७) म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू
बिरब्बिहिम् अअ्-मालुहुम् क-रमादि-नि-श्तद्दत् बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन् आ़सिफ़िन् ط
ला यक़्दिरू-न मिम्मा क-सबू अ़ला शैइन् ط ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद
(१८) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिलह़क़्क़ि ط इंय्यशअ्
युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद ۙ (१९) व मा ज़ालि-क
अ़-लल्लाहि बिअ़ज़ीज़ (२०) व ब-रज़ू लिल्लाहि जमीअ़न् फ़-क़ालज़्ज़ुअ़फ़ाउ
लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-ब-अ़न् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अ़न्ना
मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि मिन् शैइन् ط क़ालू लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम् ط
सवाउन् अ़लैना अ-जज़िअ्-ना अम् स़-बर्ना मा लना मिम्महीस़ ★ (२१)

وما ابرئ ١٣ ٢٠٥ ابرهيم ١٤

تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾ قَالَتْ
لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ
مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ
جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾
يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ
مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ
لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَبَرَزُوْا
لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिखलाओ)। (१०) पैग़म्बरों ने उन से कहा कि हां, हम तुम्हारे ही जैसे आदमी हैं, लेकिन ख़ुदा अपने बन्दों में से, जिस पर चाहता है (नुबूवत का) एहसान करता है और हमारे अख़्तियार की बात नहीं कि हम ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर तुम को (तुम्हारी फ़रमाइश के मुताबिक़) मोजज़ा दिखाएं और ख़ुदा ही पर मोमिनों को भरोसा रखना चाहिए। (११) और हम क्यों न ख़ुदा पर भरोसा रखें हालांकि उस ने हम को हमारे (दीन के सीधे) रास्ते बताए हैं, और जो तक्लीफ़ें तुम हम को देते हो, उस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (१२) ★

और जो काफ़िर थे उन्हों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि (या तो) हम तुम को अपने मुल्क से बाहर निकाल देंगे या हमारे मज़हब में दाख़िल हो जाओ। तो परवरदिगार ने उन की तरफ़ वह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे। (१३) और उन के बाद तुम को उस ज़मीन में आबाद कर देंगे। यह उस शख़्स के लिए है जो (क़ियामत के दिन) मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरे अज़ाब से ख़ौफ़ करे। (१४) और पैग़म्बरों ने (ख़ुदा से अपनी) फ़त्ह चाही, तो हर सरकश, ज़िद्दी, ना-मुराद रह गया। (१५) उस के पीछे दोज़ख़ है और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा, (१६) वह उस को घूंट-घूंट पिएगा और गले से नहीं उतार सकेगा और हर तरफ़ से उसे मौत आ रही होगी, मगर वह मरने में नहीं आएगा और उस के पीछे सख़्त अज़ाब होगा। (१७) जिन लोगों ने अपने परवरदिगार से कुफ़्र किया, उन के आमाल की मिसाल राख की-सी है कि आंधी के दिन उस पर ज़ोर की हवा चले (और) उसे उड़ा ले जाए, (इसी तरह) जो काम वे करते रहे, उन पर उन को कुछ क़ुदरत न होगी। यही तो परले सिरे की गुमराही है। (१८) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को तद्बीर से पैदा किया है, अगर वह चाहे, तो तुम को नाबूद कर दे और (तुम्हारी जगह) नयी मख़्लूक़ पैदा कर दे।(१९) और यह ख़ुदा को कुछ भी मुश्किल नहीं। (२०) और (क़ियामत के दिन) सब लोग ख़ुदा के सामने खड़े होंगे, तो (अक़्ल के) कमज़ोर (पैरवी करने वाले अपने) घमंडी (सरदारों) से कहेंगे कि हम तो तुम्हारी पैरवी करने वाले थे। क्या तुम ख़ुदा का कुछ अज़ाब हम पर से हटा सकते हो? वे कहेंगे कि अगर ख़ुदा हम को हिदायत करता तो हम तुम को हिदायत करते। अब हम घबराएं या सब्र करें, हमारे हक़ में बराबर है। कोई जगह (भागने

★रु. २/१४ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल्-अम्रु इन्नल्ला-ह व-अ.दकुम् वअ.दल्ह़क़्क़ि
व वअत्तुकुम् फ़-अख़्लफ़्तुकुम् ط व मा का-न लि-य अ.लैकुम् मिन् सुल्तानिन्
इल्ला अन् दऔतुकुम् फ़स्तजब्तुम् ली ج फ़ला तलूमूनी व लूमू
अन्फ़ुसकुम् ط मा अ-न बिमुस्रिख़िकुम् व मा अन्तुम् बिमुस्रिख़िय्-य ط
इन्नी क-फ़र्तु बिमा अश-रक्तुमूनि मिन्
क़ब्लु ط इन्नज़्ज़ालिमी - न लहुम् अ.ज़ाबुन्
अलीम (२२) व उद्ख़िलल्लज़ी-न
आमनू व अ.मिलुस्सालिहाति जन्नातिन्
तजरी मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न
फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् ط तह़िय्यतुहुम्
फ़ीहा सलाम (२३) अ-लम् त-र कै-फ़
ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् कलि-म-तन् तयि-ब-तन्
क-श-ज-रतिन् तय्यिबतिन् अस्लुहा साबितु व्-व
फ़र्अुहा फ़िस्समाइ ﻻ (२४) तुअ्ती
उकुलहा कुल् - ल ह़ीनिम् - बिइज़्नि
रब्बिहा ط व यज़्रिबुल्लाहुल् - अम्सा - ल
लिन्नासि ल-अ.ल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२५) व म-सलु कलिमतिन् ख़बीसतिन्
क-श-जरतिन् ख़बीसति-नि-ज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़िल्अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रार
(२६) युसब्बितुल्लाहुल - लज़ी-न आमनू बिल् - क़ौलिस्साबिति फ़िल् -
ह़यातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ج व युज़िल्लुल्लाहुज़् - ज़ालिमी - न वقف व
यफ़्-अ.लुल्लाहु मा यशाउ ★ (२७) अ-लम् त - र इलल्लज़ी-न बद्दलू
निअ्.-म-तल्लाहि कुफ़्रंव्-व अह़ल्लू क़ौमहुम् दारल्बवार ﻻ (२८) जहन्न-म ج
यस्लौनहा ط व बिअ्सल्क़रार (२९) व ज-अ.लू लिल्लाहि अन्दादल्-लियुज़िल्लू
अन् सबीलिही ط क़ुल् त-मत्तअू फ़ - इन्-न मसीरकुम् इलन्नार (३०)

وما ابرئ ١٣ ٢٠٦ ابرهيم ١٤

تبعا فهل انتم مغنون عنا من عذاب الله من شيء قالوا لو
هدنا الله لهدينكم سواء علينا اجزعنا ام صبرنا ما لنا من
محيص ﴿٢١﴾ وقال الشيطن لما قضي الامر ان الله وعدكم وعد
الحق ووعدتكم فاخلفتكم وما كان لي عليكم من سلطن الا
ان دعوتكم فاستجبتم لي فلا تلوموني ولوموا انفسكم ما انا
بمصرخكم وما انتم بمصرخي اني كفرت بما اشركتمون من قبل
ان الظلمين لهم عذاب اليم ﴿٢٢﴾ وادخل الذين امنوا وعملوا
الصلحت جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها باذن
ربهم تحيتهم فيها سلم ﴿٢٣﴾ الم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة
طيبة كشجرة طيبة اصلها ثابت وفرعها في السماء ﴿٢٤﴾ تؤتي
اكلها كل حين باذن ربها ويضرب الله الامثال للناس
لعلهم يتذكرون ﴿٢٥﴾ ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت
من فوق الارض ما لها من قرار ﴿٢٦﴾ يثبت الله الذين امنوا
بالقول الثابت في الحيوة الدنيا وفي الاخرة ويضل الله
الظلمين ويفعل الله ما يشاء ﴿٢٧﴾ الم تر الى الذين بدلوا نعمت الله
كفرا واحلوا قومهم دار البوار ﴿٢٨﴾ جهنم يصلونها وبئس القرار ﴿٢٩﴾
وجعلوا لله اندادا ليضلوا عن سبيله قل تمتعوا فان مصيركم

منزل

★ रु. ४/१६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और) रिहाई की हमारे लिए नहीं है★(२१) जब (हिसाब-किताब का काम) फ़ैसला हो चुकेगा, तो शैतान कहेगा (जो) वायदा ख़ुदा ने तुम से किया था, (वह तो) सच्चा (था) और (जो) वायदा मैं ने तुम से किया था, वह झूठा था और मेरा तुम पर किसी तरह का ज़ोर नहीं था। हां, मैं ने तुम को (गुमराही और बातिल की तरफ़) बुलाया, तो तुम ने (जल्दी से और बे-दलील) मेरा कहना मान लिया तो, (आज) मुझे मलामत न करो, अपने आप ही को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फ़रियादरसी कर सकता हूं और न तुम मेरी फ़रियादरसी कर सकते हो। मैं इस बात से इंकार करता हूं कि तुम पहले मुझे शरीक बनाते थे। बेशक जो ज़ालिम हैं, उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२२) और जो ईमान लाये और नेक अमल किये, वे बहिश्तों में दाख़िल किये जाएंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, अपने परवरदिगार के हुक्म से हमेशा उन में रहेंगे, वहां उन की साहब-सलामत सलाम होगा। (२३) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ने पाक बात की कैसी मिसाल बयान फ़रमायी है, (वह ऐसी है) जैसे पाक पेड़, जिस की जड़ मज़बूत (यानी ज़मीन को पकड़े हुए) हो और शाखें आसमान में।[1] (२४) अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक़्त फल आता (और मेवे देता) हो और ख़ुदा लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (२५) और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की-सी है, (न जड़ मज़बूत न शाखें ऊंची) ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ कर फेंक दिया जाए, उस को ज़रा भी क़रार (व सबात) नहीं।[2] (२६) ख़ुदा मोमिनों (के दिलों) को (सही और) पक्की बात से दुनिया की ज़िंदगी में भी मज़बूत रखता है और आख़िरत में भी (रखेगा) और ख़ुदा बे-इन्साफ़ों को गुमराह कर देता है और ख़ुदा जो चाहता है, करता है। (२७)★

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हों ने ख़ुदा के एहसान को ना-शुक्री से बदल दिया और अपनी क़ौम को तबाही के घर में उतारा। (२८) (वह घर) दोज़ख़ है, (सब ना-शुक्रे) उस में दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (२९) और उन लोगों ने ख़ुदा के शरीक मुक़र्रर किये कि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करें। कह दो कि (कुछ दिन) फ़ायदे उठा लो। आख़िरकार

---

१. पाक बात से मुराद कलिमा-ए-तौहीद 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है। फ़रमाया कि कलिमा-ए-तौहीद की मिसाल उस पाक पेड़ की-सी है, जिस की जड़ ज़मीन में मज़बूत हो और उस की शाखें बुलंदी में आसमान तक पहुंची हुई हों और हर मौसम में फल देता हो। कलिमा-ए-तौहीद की जड़ भी दिलों में क़ायम व मुस्तहकम होती है और उस की शाखें यानी अमल आसमान पर चढ़ते रहते हैं और उन की बरकत हर वक़्त हासिल होती रहती है।

२. ना-पाक बात से मुराद शिर्क का कलिमा है। फ़रमाया शिर्क के कलिमे की मिसाल ऐसे पेड़ की है, जिस की जड़ ज़मीन पर से उखाड़ दी गयी हो, उसे ज़रा क़रार व सबात न हो यानी शिर्क का कलिमा बिल्कुल बे-असल होता है, न उस के लिए मज़बूत दलील होती है, न शिर्क के कामों की क़ुबूलियत होती है, न उस में ख़ैर व बरकत होती है।

★रु. ३/१५ आ ६ ★रु. ४/१६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् लिअिबादियल्-लज़ी-न आमनू युक़ीमुस्सला-त व युन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाहुम्
सिर्-रंव्-व अलानियतम्-मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व
ला ख़िलाल (३१) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्-ज़-ल
मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अख़-र-ज बिही मिनस्स - मराति रिज़्क़ल्लकुम् व
सख़्ख़-र लकुमुल्फ़ुल-क लितज्रि-य फ़िल्बह्रि
बिअम्रिही व सख़्ख़ - र लकुमुल् -
अन्हार (३२) व सख़्ख़-र लकुमुश्शम-स
वल्क़-म-र दाइबैनि व सख़्ख़-र लकुमुल्-
लै - ल वन्नहार (३३) व आताकुम्
मिन् कुल्लि मा स - अल्तुमूहु व इन्
तअुद्दू निअ - म-तल्लाहि ला तुह्सूहा
इन्नल् - इन्सा - न ल - ज़लूमुन् कफ़्फ़ार
★ (३४)व इज़् क़ा - ल इब्राहीमु
रब्बिज्-अल् हाज़ल्ब-ल-द आमिनंव्वज्नुब्नी
व बनिय्-य अन् नअ्-बुदल्-अस्नाम (३५)
रब्बि इन्नहुन् - न अज़्-लल्-न कसीरम्-
मिनन्नासि फ़-मन् तबि-अनी फ़-इन्नहू मिन्नी व मन् असानी फ़इन्न-क
ग़फ़ूरुर्रहीम (३६) रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती बिवादिन् ग़ैरि-
ज़ी ज़र्अिन् अिन्-द बैतिकल्-मुहर्रमि रब्बना लियुक़ीमुस्सला-त फ़ज्-अल्
अफ़्इ-द-त-म् मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्ज़ुक़-हुम् मिनस्स-मराति ल-अल्लहुम्
यश्कुरून (३७) रब्बना इन्न-क तअ्-लमु मा नुख़्फ़ी व मा नुअ्-लिनु व
मा यख़्फ़ा अ-लल्लाहि मिन् शैइन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ (३८)
अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी व-ह-ब ली अ-लल्किबरि इस्माअी-ल व इस्हा-क़
इन्-न रब्बी ल-समीअुद्दुआइ (३९) रब्बिज् - अल्नी मुक़ीमस्सलाति व
मिन् ज़ुर्रिय्यती रब्बना व त - क़ब्बल् दुआइ (४०) रब्बनग़्फ़िर्ली
व लिवालिदय-य व लिल्मुअ्मिनी-न यौ-म यक़ूमुल् - हिसाब ★ (४१)

وما ابرئ ٢٠٧ ابراهيم ١٤

اِلَى النَّارِ ۝ قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا
خِلٰلٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي
الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۚ وَاِنْ
تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝ وَاِذْ
قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ
الْاَصْنَامَ ۝ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ
فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ
مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ
مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا
نُعْلِنُ ۚ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۚ اِنَّ رَبِّيْ
لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَ
تَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

★रु. ५/१७ आ ७ ★रु. ६/१८ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम को दोज़ख़ की तरफ़ लौट कर जाना है। (३०) (ऐ पैग़म्बर!) मेरे मोमिन बन्दों से कह दो कि नमाज़ पढ़ा करें और उस दिन के आने से पहले, जिस में न (आमाल) का सौदा होगा और न दोस्ती (काम आएगी) हमारे दिए हुए माल में से छिपे और ज़ाहिर ख़र्च करते रहें। (३१) ख़ुदा ही तो है, जिस ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से मेंह बरसाया, फिर उस से तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किए और कश्तियों (और जहाज़ों) को तुम्हारे फ़रमान के तहत किया, ताकि दरिया (और समुन्दर) में उस के हुक्म से चलें और नहरों को भी तुम्हारे फ़रमान के तहत किया। (३२) और सूरज और चांद को तुम्हारे लिए काम में लगा दिया कि दोनों (दिन-रात) एक दस्तूर पर चल रहे हैं और रात और दिन को भी तुम्हारे लिए काम में लगा दिया। (३३) और जो कुछ तुम ने मांगा, सब में से तुम को इनायत किया और अगर ख़ुदा के एहसान गिनने लगो तो गिन न सको, (मगर लोग नेमतों का शुक्र नहीं करते)। कुछ शक नहीं कि इंसान बड़ा बे-इंसाफ़ और ना-शुक्रा है। (३४) ★

और जब इब्राहीम ने दुआ की कि मेरे परवरदिगार! इस शहर को (लोगों के लिए) अम्न की जगह बना दे[1] और मुझे और मेरी औलाद को इस बात से कि बुतों की पूजा करने लगें, बचाए रख। (३५) ऐ परवरदिगार! उन्हों ने बहुत से लोगों को गुमराह किया है, सो जिस शख़्स ने मेरा कहा माना, वह मेरा और जिस ने मेरी ना-फ़रमानी की, तो तू बख़्शने वाला मेहरबान है। (३६) ऐ परवरदिगार! मैं ने अपनी औलाद (मक्का के) मैदान में, जहां खेती नहीं, तेरे इज़्ज़त (व अदब) वाले घर के पास ला बसायी है, ऐ परवरदिगार! ताकि ये नमाज़ पढ़ें, तो लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि उन की तरफ़ झुके रहें और उन को मेवों से रोज़ी दे ताकि (तेरा) शुक्र करें। (३७) ऐ परवरदिगार! जो बात हम छिपाते और ज़ाहिर करते हैं, तू सब जानता है और ख़ुदा से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं, (न) ज़मीन में, न आसमान में। (३८) ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने मुझ को बड़ी उम्र में इस्माईल और इस्हाक़ बख़्शे। बेशक मेरा परवरदिगार दुआ सुनने वाला है। (३९) ऐ परवरदिगार! मुझ को (ऐसी तौफ़ीक़ इनायत) कर कि नमाज़ पढ़ता रहूं और मेरी औलाद को भी (यह तौफ़ीक़ बख़्श), ऐ परवरदिगार! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा। (४०) ऐ परवरदिगार! हिसाब (-किताब) के दिन मुझ को और मेरे मां-बाप को और मोमिनों को मग़फ़िरत कीजियो, (४१) ★

---

१. यानी इलाही! मक्का को सब बलाओं और आफ़तों से अमान में रख।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तह्स-बन्नल्ला-ह ग़ाफ़िलन् अम्मा यअ् - मलुज़्ज़ालिमू - न ط इन्नमा
युअख़्ख़िरुहुम् लियौमिन् तश्ख़सु फ़ीहिल्-अब्सार ۝ (४२) मुह्तिअी - न
मुक़्निअी-रुऊसिहिम् ला यर्तद्दु इलैहिम् तर - फ़ुहुम् ج व अफ़् - इदतुहुम्
हवा-अ् ط (४३) व अन्ज़िरिन्ना-स यौ-म यअ्तीहिमुल्-अज़ाबु फ़-यक़ूलुल्-
लज़ी-न ज़-लमू रब्बना अख़्ख़िर्ना इला
अ-जलिन् क़रीबिन् ۝ नुजिब् दअ्-व-त-क व
नत्तबिअिर्-रुसु-ल ط अ-व लम् तकूनू अक़्सम्तुम्
मिन् क़ब्लु मा लकुम् मिन् ज़वालिव ۝
(४४) व स-कन्तुम् फ़ी मसाकिनिल्लज़ी-न
ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् व त-बय्य-न लकुम् कै-फ़
फ़-अ़ल्ना बिहिम् व ज़-रब्ना लकुमुल्-
अम्-साल (४५) व क़द् म-करू मक्रहुम्
व अ़िन्दल्लाहि मक्रुहुम् ط व इन् का-न
मक्रुहुम् लि-तज़ू-ल मिन्हुल्-जिबाल (४६)
फ़ला तह्-स-बन्नल्ला-ह मुख़्लि-फ़ वअ्-दिही
रुसुलहू ط इन्नल्ला - ह अज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ा -
म ط (४७) यौ-म तुबद्दलुल्-अर्ज़ु ग़ैरल्अर्ज़ि वस्समावातु व ब - रज़ू
लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (४८) व त - रल्मुजिरमी - न यौमइज़िम्-
मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद ج (४९) सराबीलुहुम् मिन् क़तिरानिंव-व तग़्शा वुजूह-
हुमुन्नार ۝ (५०) लियज़्ज़ियल्लाहु कुल-ल नफ़्सिम्-मा क-स-बत् ط इन्नल्ला-ह
सरीअुल्-हिसाब (५१) हाज़ा बलाग़ुल्लिन्नासि व लियुन्ज़रू बिही व
लियअ्-लमू अन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहिदुंव-व लि-यज़्ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब ★ (५२)

الحجر ١٥ — ٣٠٨ — وما ابرئ ١٣

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۙ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ
تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۝٤٢ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ۝٤٣ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ
فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ
وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۭ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۝٤٤
وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ۝٤٥ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ
اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۭ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝٤٦ فَلَا تَحْسَبَنَّ
اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۭ ۝٤٧ يَوْمَ تُبَدَّلُ
الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝٤٨
وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۚ ۝٤٩ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ
قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۙ ۝٥٠ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٥١ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَ
لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٥٢
سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١

منزل

१५ सूरतुल् हिज्र ५४

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के २६०७ अक्षर, ६६३ शब्द, ६६ आयतें और ६ रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ़्-लाम्-रा قف तिल-क आयातुल्-किताबि व क़ुर्आनिम्-मुबीन (१)

★रु. ६/१९ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और (मोमिनो !) मत ख़्याल करना कि ये ज़ालिम जो अमल कर रहे हैं, ख़ुदा उन से बे-ख़बर है। वह उन को उस दिन तक मुहलत दे रहा है, जबकि (दहशत की वजह से) आंखें खुली की खुली रह जाएंगी, (४२) (और लोग) सर उठाए हुए (क़ियामत के मैदान की तरफ़) दौड़ रहे होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ लौट न सकेंगी और उन के दिल (मारे डर के) हवा हो रहे होंगे। (४३) और लोगों को उस दिन से आगाह कर दो, जब उन पर अज़ाब आ जाएगा, तब ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें थोड़ी सी मोहलत की मुद्दत अता कर, ताकि हम तेरी (तौहीद की) दावत क़ुबूल करें और (तेरे) पैग़म्बरों के पीछे चलें। (तो जवाब मिलेगा) क्या तुम पहले क़स्में नहीं खाया करते थे कि तुम को (उस हाल से जिस में तुम हो) ज़वाल (और क़ियामत को आमाल का हिसाब) नहीं होगा। (४४) और जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते थे, तुम उन के मकानों में रहते थे और तुम पर ज़ाहिर हो चुका था कि हम ने उन लोगों के साथ किस तरह (का मामला) किया था और तुम्हारे (समझाने) के लिए मिसालें भी बयान कर दी थीं। (४५) और उन्हों ने (बड़ी-बड़ी) तद्बीरें कीं और उन की (सब) तद्बीरें ख़ुदा के यहां (लिखी हुई) हैं, गो वे तद्बीरें ऐसी (ग़ज़ब की) थीं कि उन से पहाड़ भी टल जाएं। (४६) तो ऐसा ख़्याल न करना कि ख़ुदा ने जो अपने पैग़म्बरों से वायदा किया है, उस के ख़िलाफ़ करेगा। बेशक ख़ुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४७) जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान भी (बदल दिए जाएंगे) और सब लोग ख़ुदा-ए-यगाना व ज़बरदस्त के सामने निकल खड़े होंगे। (४८) और उस दिन तुम गुनाहगारों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं। (४९) उन के कुरते गंधक के होंगे और उन के मुंहों को आग लिपट रही होगी। (५०) यह इस लिए कि ख़ुदा हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दे, बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (५१) यह (क़ुरआन) लोगों के नाम (ख़ुदा का पैग़ाम) है, ताकि उन को उस से डराया जाए और ताकि वे जान लें कि वही अकेला माबूद है और ताकि अक़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (५२) ★

१५ सूरः हिज्र ५४

सूरः हिज्र मक्की है और इस में ९९ आयतें और छः रुकूअ हैं !

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह (ख़ुदा की) किताब और रोशन क़ुरआन की आयतें हैं। (१) किसी वक़्त

★रु. ७/१९ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौदहवां पारः रु-बमा

सूरतुल्-हिज्र आयत २ से ९९

रु-बमा य-वद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ कानू मुस्लिमीन (२) ज़र्हुम् यअ्कुलू व
य-त-मत्तअ़ू व युल्हि-हिमुल्-अ-मलु फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (३) व मा अह-लक्ना
मिन् क़र्यतिन् इल्ला व लहा किताबुम्-मअ्-लूम (४) मा तस्बिक़ु मिन्
उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (५) व क़ालू या अय्युहल्लज़ी
नुज़्ज़ि - लं अलैहिज़् - ज़िक्रु इन्न - क
ल-मज्नून ط (६) लौ मा तअ्तीना
बिलमलाइकति इन् कुन-त मिनस्सादिक़ीन
(७) मा नुनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-तु इल्ला
बिल्हक़्क़ि व मा कानू इज़म्मुन्ज़रीन
(८) इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़्-ज़िक-र व
इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (९) व ल-क़द्
अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी शि-यअिल्-
अव्वलीन (१०) व मा यअ्तीहिम् मिर्-
रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन
(११) कज़ालि-क नस्लुकुहू फ़ी क़ुलूबिल्-
मुज्रिमीन ۙ (१२) ला युअ्मिनू-न बिही
व क़द् ख़-लत् सुन्नतुल्-अव्वलीन (१३)

الحجر١٥ ٢٠٩ ربما١٤

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٢ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوْا وَ
يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣ وَ مَآ اَهْلَكْنَا مِنْ
قَرْيَةٍ اِلَّا وَ لَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ
مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥ وَ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ
لَمَجْنُوْنٌ ۝٦ لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧
مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ مَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝٨ اِنَّا نَحْنُ
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝٩ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ
شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٠ وَ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١
كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ قَدْ
خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَ لَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا
فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٤ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ
مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥ وَ لَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ زَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٦
وَ حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝١٧ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ
فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝١٨ وَ الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَ اَلْقَيْنَا فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝١٩ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا
مَعَايِشَ وَ مَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝٢٠ وَ اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا
خَزَآئِنُهٗ وَ مَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٢١ وَ اَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ

منزل٣

व लौ फ़-तह्ना अलैहिम् बाबम्-मिनस्समाइ फ़-ज़ल्लू फ़ीहि यअ्-रुजून ۙ (१४)
लक़ालू इन्नमा सुक्किरत् अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमुम्-मस्हूरून ★ (१५)
व ल-क़द् ज-अल्ना फ़िस्समाइ बुरूजंव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन ۙ (१६) व
हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्-रजीम ۙ (१७) इल्ला मनिस्त-र-क़स्सम-अ
फ़-अत-ब-अहू शिहाबुम्-मुबीन (१८) वल्अर्-ज़ म-दद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा
रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून (१९) व ज-अल्ना
लकुम् फ़ीहा मआयि-श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन (२०) व इम्मिन् शैइन्
इल्ला अिन्दना ख़ज़ाइनुहू ✓ व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि क़-दरिम्-मअ्-लूम (२१)

★रु० १/१ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

काफ़िर लोग आरज़ू करेंगे कि ऐ काश ! वे मुसलमान होते । (२) (ऐ मुहम्मद !) उन को उन के हाल पर रहने दो कि खा लें और फ़ायदे उठा लें और (लम्बी) उम्मीद उन को (दुनिया में) फंसाए रहे । बहुत जल्द उन को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा । (३) और हम ने कोई बस्ती हलाक नहीं की, मगर उस का वक़्त लिखा हुआ और तै था । (४) कोई जमाअत अपनी (वक़्त की) मुद्दत से न आगे निकल सकती है, न पीछे रह सकती है । (५) और (काफ़िर) कहते हैं कि ऐ शख़्स ! जिस पर नसीहत (की किताब) नाज़िल हुई है, तू तो दीवाना है । (६) अगर तू सच्चा है, तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता ? (७) (कह दो) हम फ़रिश्तों को नाज़िल नहीं किया करते, मगर हक़ के साथ और उस वक़्त उन को मोहलत नहीं मिलती । (८) बेशक यह (किताब) नसीहत हम ही ने उतारी है और हम ही इस के निगेहबान हैं । (९) और हम ने तुम से पहले लोगों में भी पैग़म्बर भेजे थे । (१०) और उन के पास कोई पैग़म्बर नहीं आता था, मगर वे उस का मज़ाक़ उड़ाते थे । (११) इसी तरह हम (इस झूठ और गुमराही) को गुमराहों के दिलों में दाखिल कर देते हैं । (१२) सो वे इस पर ईमान नहीं लाते और पहलों का रवैया भी यही रहा है, (१३) और अगर हम आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दें और वे उस में चढ़ने भी लगें, (१४) तो भी यही कहें कि हमारी आंखें नशीली हो गयी हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है । (१५) ★

और हम ही ने आसमान में बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिए उस को सजा दिया । (१६) और हर शैतान, धुत्कारे हुए से उसे महफ़ूज़ कर दिया । (१७) हां, अगर कोई चोरी से सुनना चाहे, तो चमकता हुआ अंगारा उस के पीछे लपकता है । (१८) और ज़मीन को भी हम ही ने फैलाया और उस पर पहाड़ (बना कर) रख दिए और उस में हर एक संजीदा चीज़ उगायी । (१९) और हम ही ने तुम्हारे लिये और उन लोगों के लिए, जिन को तुम रोज़ी नहीं देते, उस में रोज़ी के सामान पैदा किए । (२०) और हमारे यहां हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं और हम उन को मुनासिब मिक़्दार में

★रु. १/१ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अर्सल्नर्रिया-ह़ ल-वाक़ि-ह़ फ़-अन्ज़लना मिनस्समाइ माअन् फ़ - अस्क़ैना
कुमूहु ج व मा अन्तुम् लहू बिख़ाज़िनीन (२२) व इन्ना ल - नह़्नु
नुह़्यी व नुमीतु व नह़्नुल्-वारिसून (२३) व ल - क़द् अ़लिम्नल्-
मुस्तक़्दिमी-न मिन्कुम् व ल-क़द् अ़लिम्-नल्-मुस्तअ्-ख़िरीन (२४) व इन्-न
रब्ब-क हु-व यह़्शुरुहुम् ط इन्नहू हकीमुन्
अ़लीम ★ (२५) व ल-क़द् ख़-लक़्नल्-
इन्सा-न मिन् स़ल्स़ालिम्मिन् ह़ - म-इम्-
मस्नून ج (२६) वल्जान् - न ख़-लक़्नाहु
मिन् क़ब्लु मिन्नारिस्-समूम (२७) व
इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिलमलाइकति इन्नी
ख़ालिक़ुम् - ब-श-रम्मिन् स़ल्स़ालिम् - मिन्
ह़-म-इम्-मस्नून (२८) फ़इज़ा सव्वैतुहू
व न-फ़ख़्तु फ़ीहि मिर्-रूह़ी फ़-क़ऊ़ लहू
साजिदीन (२९) फ़-स-ज-दल् - मलाइकतु
कुल्लुहुम् अज्मअ़ून لا (३०) इल्ला
इब्ली-स ط अबा अंय्यकू-न म-अस्-साजिदीन
(३१) क़ा-ल या इब्लीसु माल-क अल्ला तकू-न म-अस्-साजिदीन (३२)
क़ा-ल लम् अ-कुल्लि-अस्जु-द लिब-शरिन् ख़-लक़्तहू मिन् स़ल्स़ालिम् - मिन्
ह़-म-इम्-मस्नून (३३) क़ा-ल फ़ख़्-रुज् मिन्हा फ़इन्न-क रजीमुंव्- لا (३४)
व इन्-न अ़लैकल्-लअ़्-न-तु इला यौमिद्दीन (३५) क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी
इला यौमि युब्-अ़सून (३६) क़ा-ल फ़इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन لا (३७)
इला यौमिल्-वक़्तिल् - मअ़्-लूम (३८) क़ा-ल रब्बि बिमा अग़्वैतनी
लउज़य्यिनन्-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व ल-उग़्वियन्नहुम् अज्-मई़न لا (३९) इल्ला
अ़िबाद-क मिन्-हुमुल्-मुख़्-लसीन (४०) क़ा-ल हाज़ा स़िरातुन् अ़लय्-य मुस्तक़ीम
(४१) इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनित्तब-अ़-क मिनल्-
ग़ावीन (४२) व इन्-न जहन्न-म लमौअ़िदुहुम् अज-मई़न وقف لازم (४३) लहा
सब-अ़तु अब्वाबिन् ط लिकुल्लि बाबिम् - मिन्हुम् जुज़्उम् - मक़्सूम ★(४४)

ربما ١٤ — ٢١٠ — الحجر ١٥

فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾
وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ
مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ
حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ
مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾ وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾
فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَسَجَدَ
الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ
السّٰجِدِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣٢﴾
قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ
الدِّيْنِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ
لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَكَ
مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿٤١﴾ اِنَّ
عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٤٢﴾
وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ

منزل ٣

★रु. २/२ आ १० ★रु. ३/३ आ १९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उतारते रहते हैं। (२१) और हम ही हवाएं चलाते हैं (जो बादलों के पानी से) भरी हुई (होती हैं) और हम ही आसमान से मेंह बरसाते हैं और हम ही तुम को उस का पानी पिलाते हैं और तुम तो उस का ख़ज़ाना नहीं रखते, (२२) और हम ही ज़िंदगी बख़्शते और हम ही मौत देते हैं और हम ही सब के वारिस (मालिक) हैं, (२३) और जो लोग तुम में पहले गुज़र चुके हैं, हम को मालूम हैं और जो पीछे आने वाले हैं, वे भी हम को मालूम हैं, (२४) और तुम्हारा परवरदिगार (क़ियामत के दिन) उन सब को जमा करेगा, वह बड़ा जानने वाला (और) ख़बरदार है। (२५) ★

और हम ने इन्सानों को खनखनाते सड़े हुए गारे से पैदा किया है, (२६) और जिन्नों को इन से भी पहले बे-धुएं की आग से पैदा किया था, (२७) और तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं खनखनाते हुए सड़े हुए गारे से एक बशर बनाने वाला हूं। (२८) जब उस को (इंसानी शक्ल में) ठीक कर लूं और उस में अपनी (क़ीमती चीज़ यानी) रूह फूंक दू, तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (२९) तो फ़रिश्ते तो सब के सब सज्दे में गिर पड़े! (३०) मगर शैतान कि उसने सज्दा करने वालों के साथ होने से इंकार कर दिया, (३१) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि इब्लीस तुझ को क्या हुआ कि कि तू सज्दा करने में शामिल न हुआ। (३२) (उस ने) कहा, मैं ऐसा नहीं हूं कि इंसान को, जिस को तू ने खनखनाते सड़े हुए गारे से बनाया है, सज्दा करूं। (३३) ख़ुदा ने फ़रमाया, यहां से निकल जा, तू मर्दूद है। (३४) और तुझ पर क़ियामत के दिन तक लानत (बरसेगी)। (३५) (उस ने) कहा कि परवरदिगार! मुझे उस दिन तक मोहलत दे, जब लोग (मरने के बाद) ज़िंदा किए जाएंगे। (३६) फ़रमाया कि तुझे मोहलत दी जाती है। (३७) मुक़र्रर वक़्त (यानी क़ियामत) के दिन तक। (३८) (उस ने) कहा कि परवरदिगार! जैसा तू ने मुझे रास्ते से अलग किया है, मैं भी ज़मीन में लोगों के लिए (गुनाहों को) सजा कर दिखाऊंगा और सब को बहकाऊंगा। (३९) हां, उन में जो तेरे मुख़्लिस बन्दे है, (उन पर क़ाबू चलना मुश्किल है)। (४०) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि मुझ तक (पहुंचने का) यही सीधा रास्ता है। (४१) जो मेरे (मुख़्लिस) बन्दे हैं, उन पर तुझे कुछ क़ुदरत नहीं (कि उन को गुनाह में डाल सके) हां, बद राहों में से जो तेरे पीछे चल पड़े। (४२) और उन सब के वायदे की जगह जहन्नम है। (४३) उस के सात दरवाज़े हैं।[1] हर एक दरवाज़े के लिए उन में से जमाअतें तक़्सीम कर दी गयी हैं। (४४) ★

---

१. इब्ने अब्बास कहते हैं कि दरवाज़ों से मुराद तब्क़े हैं यानी दोज़ख़ के नीचे-ऊपर सात तब्क़े और मंज़िलें हैं। पहला तब्क़ा जहन्नम है, दूसरा लज़्ज़ा, तीसरा हुतमा, चौथा सईर, पांचवां सक़र, छठा जहीम, सातवां हाविया। क़तादा ने कहा कि ये दर्जे अमल के लिहाज से हैं, मगर इसका इल्म ख़ुदा ही को है कि किस तरह के अमल और अक़ीदे के लिए कौन-सा तब्क़ा है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नल्मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव - व अ़ुयून ط (४५) उद्ख़ुलूहा बिसलामिन्
आमिनीन (४६) व न-ज़अ्-ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् इख़्-वानन्
अ़ला सुरुरिम्-मु-त-क़ाबिलीन (४७) ला यमस्सुहुम् फ़ीहा न-स-बुंव्-व मा हुम्
मिन्हा बिमुख़्रजीन (४८) नब्बिअ् अ़िबादी अन्नी अ-नल् - ग़फ़ूरुर्रहीम ﻻ
(४९) व अन्-न अ़ज़ाबी हुवल्अ़ज़ाबुल्-
अलीम (५०) व नब्बिअ्हुम् अ़न् ज़ैफ़ि
इब्राहीम ▨ (५१) इज़् द - ख़लू
अ़लैहि फ़-क़ालू सलामन् ط क़ा - ल इन्ना
मिन्कुम् वजिलून (५२) क़ालू ला
तौजल् इन्ना नुबश्शिरु - क बिग़ुलामिन्
अ़लीम (५३) क़ा-ल अ-बश्शर्तुमूनी अ़ला
अम्मस्सनियल् - कि-बरु फ़बि-म. तुबश्शिरून
(५४) क़ालू बश्शर्ना-क बिल्हक़्क़ि फ़ला
तकुम्मिनल्-क़ानितीन (५५) क़ा-ल व
मंय्यक़्नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज़्ज़ाल्लून
(५६) क़ा-ल फ़ मा ख़त्बुकुम् अय्युहल्-
मुर्सलून (५७) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम् - मुज्रिमीन ﻻ
(५८) इल्ला आ-ल लूतिन् ط इन्ना लमुनज्जूहुम् अज् - मअ़ीन ﻻ (५९)
इल्लम्-र-अ-तहू क़द्दर्ना ﻻ इन्नहा लमिनल्-ग़ाबिरीन ★ (६०) फ़ - लम्मा
जा-अ आ-ल लूति-निल्-मुर्सलून ﻻ (६१) क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुम्-मुन्करून
(६२) क़ालू बल् जिअ्ना-क बिमा कानू फ़ीहि यम्तरून (६३) व अतैना-क
बिल्हक़्क़ि व इन्ना लसादिक़ून (६४) फ़ अस्रि बिअह्लि-क बिक़ित्अ़िम्
मिनल्लैलि वत्तबिअ् अद्बारहुम् व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-ह-दुंव्वम्ज़ू हैसु
तुअ्-मरून (६५) व क़ज़ैना इलैहि ज़ालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउलाइ
मक़्तूअ़म् - मुस्बिहीन (६६) व जा-अ अह्लुल् - मदीनति यस्तब्शिरून
(६७) क़ा-ल इन् - न हाउलाइ ज़ैफ़ी फ़ ला तफ़्ज़हून ﻻ (६८)

ربما ١٤ ٢١١ الحجر ١٥

بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ۝٤٤ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٤٥
اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ۝٤٦ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ
اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝٤٧ لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ
مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ۝٤٨ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٤٩ وَ
اَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ۝٥٠ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ۝٥١
اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ۝٥٢ قَالُوْا
لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝٥٣ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓي اَنْ
مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝٥٤ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْقٰنِطِيْنَ ۝٥٥ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّاۗلُّوْنَ ۝٥٦
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٧ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ
مُّجْرِمِيْنَ ۝٥٨ اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٥٩ اِلَّا امْرَاَتَهٗ
قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٦٠ فَلَمَّا جَاۗءَ اٰلَ لُوْطِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٦١
قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٦٢ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝٦٣
وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٦٤ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ
وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ۝٦٥
وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَاۗءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ۝٦٦
وَجَاۗءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝٦٧ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ ضَيْفِيْ فَلَا

▨ व. लाज़िम ★ रु. ४/४ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो मुत्तक़ी हैं, बाग़ों और चश्मों में होंगे। (४५) (उन से कहा जाएगा कि) उन में सलामती (और सुकून) से दाख़िल हो जाओ, (४६) और उन के दिलों में जो कदूरत (गंदगी) होगी, उसको हम निकाल (कर साफ़ कर) देंगे, (गोया) भाई-भाई तख़्तों पर एक-दूसरे के सामने बैठे हुए हैं। (४७) न उन को वहां कोई तक्लीफ़ पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। (४८) (ऐ पैग़म्बर!) मेरे बन्दों को बता दो कि मैं बड़ा बख़्शने वाला (और) मेहरबान हूं। (४९) और यह कि मेरा अज़ाब भी दर्द देने वाला अज़ाब है। (५०) और उन को कोई इब्राहीम के मेहमानों के हालात सुना दो ▨ (५१) वह इब्राहीम के पास आए तो सलाम कहा, (उन्हों ने) कहा, हमें तो तुम से डर लगता है। (५२) (मेहमानों ने) कहा कि डरिये नहीं, हम आप को एक दानिशमंद लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं। (५३) (वह) बोले कि जब मुझे बुढ़ापे ने आ पकड़ा, तो तुम ख़ुशख़बरी देने लगे। अब किस बात की ख़ुशख़बरी देते हो। (५४) (उन्हों ने) कहा कि हम आप को सच्ची ख़ुश-ख़बरी देते हैं। आप मायूस न होजिए। (५५) (इब्राहीम ने) कहा कि ख़ुदा की रहमत से (मैं मायूस क्यों होने लगा, इस से) मायूस होना गुमराहों का काम है। (५६) फिर कहने लगे कि फ़रिश्तो! तुम्हें (और) क्या काम है? (५७) (उन्हों ने) कहा कि हम एक गुनाहगार क़ौम की तरफ़ भेजे गये हैं (कि उस को अज़ाब करें), (५८) मगर लूत के घर वाले कि उन सब को हम बचा लेंगे। (५९) अल-बत्ता उन की औरत (कि) उस के लिए हम ने ठहरा दिया है कि वह पीछे रह जाएगी। (६०) ★

फिर जब फ़रिश्ते लूत के घर गये, (६१) तो लूत ने कहा, तुम तो अनजान से लोग हो। (६२) वे बोले कि (नहीं), बल्कि हम आप के पास वह चीज़ ले कर आए हैं, जिस में लोग शक करते थे।[1] (६३) और हम आप के पास यक़ीनी बात ले कर आए हैं और हम सच कहते हैं। (६४) तो आप कुछ रात रहे-से अपने घर वालों को ले निकलें और ख़ुद उन के पीछे चलें और आप में से कोई शख़्स पीछे मुड़ कर न देखे और जहां आप को हुक्म हो, वहां चले जाइए। (६५) और हम ने लूत की तरफ़ वह्य भेजी कि इन लोगों की जड़ सुबह होते-होते काट दी जाएगी। (६६) और शहर वाले (लूत के पास) ख़ुश-ख़ुश (दौड़े) आए। (६७) (लूत ने) कहा कि ये मेरे मेहरबान हैं, (कहीं

१. यानी हम ऊपर से आदमी नहीं, फ़रिश्ते हैं। क़ौम पर अज़ाब लाए हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वत्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ून (६९) क़ालू अ-व लम् नन्-ह-क अ़निल्-आलमीन
(७०) क़ा-ल हाउलाइ बनाती इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन ط (७१)
ल-अ़म्रु-क इन्नहुम् लफ़ी सक-रतिहिम् यअ़्-महून (७२) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु
मुश्रिक़ीन ۙ (७३) फ़-ज-अ़ल्ना आ़लियहा साफ़िलहा व अम्तर्ना अ़लैहिम्
हिजा-र-तम् - मिन् सिज्जील ط (७४)
इन्-न फ़ी ज़ालि - क लआयातिल्लिल् -
मु-त-वस्सिमीन (७५) व इन्नहा लबिसबीलिम्-
मुक़ीम (७६) इन्-न फ़ी ज़ालि - क
ल-आयतल्लिल् - मुअ्मिनीन ط (७७) व
इन् का-न अस्हाबुल्-ऐकति ल-ज़ालिमीन ۙ
(७८) फ़न्-त - क़म्ना मिन्हुम् ▩ व
इन्नहुमा लबिइमामिम् - मुबीन ط
★ (७९) व ल-क़द् कज्ज-ब अस्हाबुल् -
हिज्रिल्-मुर्सलीन ۙ (८०) व आतैनाहुम्
आयातिना फ़-कानू अ़न्हा मुअ़् - रिज़ीन ۙ
(८१) व कानू यन्हितू-न मिनल्जिबालि
बुयूतन् आमिनीन (८२) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु
मुस्बिहीन ۙ (८३) फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून ط (८४)
व मा ख़-लक़्नस्-समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि ط
व इन्नस्सा-अ-त लआतियतुन् फ़स्फ़हिस्-सफ़्हल्-जमील (८५) इन्-न रब्ब-क
हुवल्-ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (८६) व ल-क़द् आतैना-क सब्अ़म्मिनल्-मसानी
वल्-क़ुरआनल्-अ़ज़ीम (८७) ला तमुद्दन्-न अ़ैनै-क इला मा मत्तअ़्-ना
बिही अज़्वाजम्-मिन्हुम् व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् वख़्फ़िज़् जना-ह-क लिल्-
मुअ्मिनीन (८८) व क़ुल् इन्नी अ-नन्नज़ीरुल् - मुबीन ج (८९) कमा
अन्ज़ल्ना अ़-लल्-मुक़्तसिमीन ۙ (९०) अल्लज़ी-न ज-अ़ - लुल् - क़ुरआ - न
अ़िज़ी-न (९१) फ़-व रब्बि-क ल-नस्अ-लन्नहुम् अज्मअ़ीन ۙ (९२) अ़म्मा कानू
यअ़्-मलून ● (९३) फ़स्दअ़्-बिमा तुअ्मरु व अअ़्-रिज़् अ़निल्-मुश्रिकीन (९४)

تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ
لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا
عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ
الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾ وَ
كَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ
مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ
فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ
اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ
اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ
اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾
فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا

▩ व. लाज़िम ★रु. ५/५ आ १६ ● रुबअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन के बारे में) मुझे रुसवा न करना। (६८) और ख़ुदा से डरो और मेरी बे-आबरुई न कीजियो। (६९) वे बोले, क्या हम ने तुम को सारे जहान (की हिमायत व तरफ़दारी) से मना नहीं किया? (७०) (उन्हों ने) कहा कि अगर तुम्हें करना ही है, तो यह मेरी (क़ौम की) लड़कियां हैं, (इन से शादी कर लो।) (७१) (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारी जान की क़सम! वे अपनी मस्ती में मदहोश (हो रहे) थे। (७२) सो उन को सूरज निकलते-निकलते चिंघाड़ ने आ पकड़ा। (७३) और हम ने उस (शहर) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर खंगर की पथरियां बरसायीं। (७४) बेशक इस (क़िस्से) में सूझ-बूझ वालों के लिए निशानी है। (७५) और वह (शहर) अब तक सीधे रास्ते पर (मौजूद) है।[1] (७६) बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए निशानी है। (७७) और बन के रहने वाले (यानी शुऐब की क़ौम के लोग) भी गुनाहगार थे। (७८) तो हम ने उन से भी बदला लिया और ये दोनों शहर खुले रास्ते पर (मौजूद) हैं। (७९)★

और हिज्र (की वादी) के रहने वालों ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया।[2] (८०) हम ने उन को अपनी निशानियां दीं और वे उन से मुंह फेरते रहे। (८१) और वे पहाड़ों को काट-छांट कर घर बनाते थे (कि) अम्न (व इत्मीनान) से रहेंगे। (८२) तो चीख़ ने उन को सुबह होते-होते आ पकड़ा। (८३) और जो काम वे करते थे, वे उन के कुछ भी काम न आये। (८४) और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो (मख़्लूक़ात) उन में हैं, उस को तद्बीर के साथ पैदा किया है और क़ियामत तो ज़रूर आ कर रहेगी, तो तुम (उन लोगों से) अच्छी तरह से दर-गुज़र करो। (८५) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार ही (सब कुछ) पैदा करने वाला (और) जानने वाला है। (८६) और हम ने तुम को सात (आयतें), जो (नमाज़ में) दोहरा कर पढ़ी जाती हैं (यानी सूरः अल-हम्दु) और अज़्मत वाला क़ुरआन अता फ़रमाया है। (८७) और हम ने काफ़िरों की कई जमाअतों को, जो (दुनिया के फ़ायदों से) नवाज़ा है, तुम उन की तरफ़ (रग़बत से) आंख उठा कर न देखना और न उनके हाल पर ग़म करना और मोमिनों से ख़ातिर और तवाज़ो से पेश आना, (८८) और कह दो कि मैं तो एलानिया डर सुनाने वाला हूं, (८९) (और हम इन काफ़िरों पर इसी तरह अज़ाब नाज़िल करेंगे), जिस तरह उन लोगों पर नाज़िल किया, जिन्होंने तक़्सीम कर दिया। (९०) यानी क़ुरआन को (कुछ मानने और कुछ न मानने से) टुकड़े-टुकड़े कर डाला। (९१) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! हम उन से ज़रूर पूछ-ताछ करेंगे, (९२) उन कामों की, जो वे करते रहे (९३) ● पस जो हुक्म तुम को (ख़ुदा की तरफ़ से) मिला है वह (लोगों को) सुना दो और

१. मक्का से शाम को जाते हुए वह बस्ती राह पर नज़र आती थी।

२. हिज्र के रहने वालों से मुराद समूद की क़ौम है। हिज्र मदीने और शाम के दर्मियान एक बस्ती थी। समूद की क़ौम वहां रहती थी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्ना कफ़ैनाकल् - मुस्तह्ज़िईन ꠰꠰ (९५) अ्ल्लज़ी-न यज-अ्लू-न म-अ्ल्लाहि
इलाहन् आख़-र ℓ फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (९६) व ल-क़द् नअ्-लमु अन्न-क यज़ीक़ु
स़द्रु-क बिमा यक़ूलून ꠰꠰ (९७) फ़-सब्बिह़् बिह़म्दि रब्बि-क व कुम्-
मिनस्साजिदीन ꠰꠰ (९८) वअ्-बुद् रब्ब-क ह़त्ता यअ्ति-य-कल्-यक़ीन ★ (९९)

रुबमा १४ ٢١٣ النحل ١٦

تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٩٤ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ۝٩٥
الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٩٦ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ۝٩٧ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ۝٩٨ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ۝٩٩
سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّثَمَانٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوْعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝١ يُنَزِّلُ
الْمَلٰۤىِٕكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا
اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ
تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ
مُّبِيْنٌ ۝٤ وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا
تَاْكُلُوْنَ ۝٥ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦
وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ
اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا
وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا
جَآىِٕرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٩ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝١٠ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

منزل ٣

१६ सूरतुन्नह्-लि ७०

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७६७४ अक्षर, १८७१ शब्द, १२८ आयतें और १६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

अता अम्रुल्लाहि फ़ ला तस्तअ्-जिलूहु ꜗ
सुब्ह़ानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (१)
युनज़्ज़िलुल् - मलाइ - क-त़ बिर्रूहि़ मिन्
अम्रिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही
अन् अन्ज़िरू अन्नहू ला इला-ह इल्ला
अ-न फ़त्तक़ून (२) ख़-ल-क़स्-समावाति
वल्अर् - ज़ बिल्ह़क़्क़ि ꜗ तआ़ला अ़म्मा
युश्रिकून (३) ख़-ल-क़ल्-इन्सा-न मिन् नुत़्फ़तिन् फ़इज़ा हु-व ख़सीमुम्-
मुबीन (४) वल्-अन्आ़-म ख़-ल-क़हा ℓ लकुम् फ़ीहा दिफ़्उव्-व मनाफ़िअ़ु व
मिन्हा तअ्-कुलून ꠰꠰ (५) व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ह़ी-न तुरीहू-न व ह़ी-न
तस्रहून ꠰꠰ (६) व तह़्मिलु अस्क़ालकुम् इला ब-लदिल्लम् तकूनू बालिग़ीहि
इल्ला बिशिक़्क़िल्-अन्फ़ुसि ꜗ इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम ꠰꠰ (७) वल्ख़ै-ल
वल्बिग़ा-ल वल्ह़मी-र लितर्कबूहा व ज़ी-न - तुन् ꜗ व यख़्लुक़ु मा ला
तअ् - लमून (८) व अ़् - लल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जाइरुन् ꜗ
व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्-मअ़ीन ★ (९) हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्-
समाइ माअल्लकुम् मिन्हु शराबुव्-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून (१०)

★रु. ६/६ आ २० ★रु. १/७ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुश्रिकों का (ज़रा) ख़्याल न करो। (९४) हम तुम्हें उन लोगों की (बुराई) से बचाने के लिए जो तुम से मज़ाक़ करते हैं, काफ़ी हैं। (९५) जो ख़ुदा के साथ और माबूद क़रार देते हैं, सो बहुत जल्द उन को (इन बातों का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (९६) और हम जानते हैं कि उन की बातों से तुम्हारा दिल तंग होता है, (९७) तो तुम अपने परवरदिगार की तस्बीह कहते और (उस की) ख़ूबियां बयान करते रहो और सज्दा करने वालों में दाख़िल रहो। (९८) और अपने परवरदिगार की इबादत किये जाओ, यहां तक कि तुम्हारी मौत (का वक़्त) आ जाए। (९९) ★

१६ सूरः नह्ल ७०

सूरः नह्ल मक्की है और इस में १२८ आयतें और सोलह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ख़ुदा का हुक्म (यानी अज़ाब गोया) आ ही पहुंचा तो (काफ़िरो!) इस के लिए जल्दी मत करो। ये लोग जो (ख़ुदा का) शरीक बनाते हैं, वह इस से पाक और बाला-तर है। (१) वही फ़रिश्तों को पैग़ाम दे कर अपने हुक्म से अपने बन्दों में से, जिस के पास चाहता है, भेजता है कि (लोगों को) बता दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मुझी से डरो। (२) उसी ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, उस की ज़ात इन (काफ़िरों) के शिर्क से ऊंची है। (३) उसी ने इंसान को नुत्फ़े से बनाया, मगर वह उस (पैदा करने वाले) के बारे में एलानिया झगड़ने लगा, (४) और चारपायों को भी उसी ने पैदा किया, उस में तुम्हारे लिए जड़ावल[1] और बहुत से फ़ायदे हैं और इन में से कुछ को तुम खाते भी हो। (५) और जब शाम को उन्हें (जंगल से) लाते हो और जब सुबह को (जंगल) चराने ले जाते हो, तो उन से तुम्हारी इज़्ज़त व शान है। (६) और (दूर-दूर के) इन शहरों में जहां तुम मशक़्क़त भरी तक्लीफ़ के बग़ैर नहीं पहुंच सकते, वे तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं। कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार निहायत शफ़्क़त (मुहब्बत) वाला मेहरबान है। (७) और उसी ने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो और (वह तुम्हारे लिए) रौनक़ व ज़ीनत (भी हैं) और वह (और चीज़ें भी) पैदा करता है, जिन की तुम को ख़बर नहीं। (८) और सीधा रास्ता तो ख़ुदा तक जा पहुंचता है और कुछ रास्ते टेढ़े हैं, (वे उस तक नहीं पहुंचते) और अगर वह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते पर चला देता। (९) ★

वही तो है जिस ने आसमान से पानी बरसाया, जिसे तुम पीते हो और उस से पेड़ भी (हरे-भरे होते हैं), जिन में तुम अपने चारपायों को चराते हो। (१०) उसी पानी से वह तुम्हारे लिए

१. जाड़े के सामान को जड़ावल कहते हैं।

★रु. ६/६ आ २० ★रु. १/७ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

युम्बितु लकुम् बिहिज़्-ज़र्-अ़ वज़्ज़ैतू-न वन्नख़ी-ल वल्-अअ़्-ना-ब व मिन्
कुल्लिस्स-मराति b इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतल्-लिक़ौमिय्य-त-फ़क्करून (११)
व सख़्ख़-र लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र ll वश्शम्-स वल्क़-म-र b वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम्-
बि-अमरिही b इन् - न फ़ी ज़ालि - क लआयातिल् - लिक़ौमिय्यअ़् - क़िलन ll
(१२) व मा ज़-र-अ लकुम् फ़िल्अर्ज़ि
मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू b इन्-न फ़ी ज़ालि-क
ल-आयतल् - लिक़ौमिय्यंज़्ज़क्करून (१३)
व हुवल्लज़ी सख़्ख़-रल्-बह़्-र लि-तअ्कुलू
मिन्हु लह़्-मन् त़रिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू मिन्हु
ह़िल्-य-तन् तल्बसूनहा ८ व त-रल्फ़ुल् - क
मवाख़ि-र फ़ीहि व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही
व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१४) व अल्क़ा
फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व
अन्हारंव्-व सुबुलल्-ल-अ़ल्लकुम् तह् - तदून
(१५) व अ़लामातिन् b व बिन्नज्मि हुम्
यह्तदून (१६) अ-फ़-मंय्यख़्लुक़ु क-मल्ला
यख़्लुक़ु b अ-फ़ला त-ज़क्करून (१७) व इन् त-अ़ुद्दू निअ़्-म-तल्लाहि ला तुह़्सूहा b
इन्नल्ला-ह ल-ग़फ़ूरुर्-रह़ीम (१८) वल्लाहु यअ़्लमु मा तुसिर्रू-न व मा
तुअ़्लिनून (१९) वल्लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यख़्लुक़ू-न शैअंव्-व
हुम् युख़्लक़ून b (२०) अम्वातुन् ग़ैरु अह़्याइन् ८ व मा यश्अ़ुरू - न ll
अय्या - न युब्अ़सून ★ (२१) इलाहुकुम् इलाहुंव्वाह़िदुन् ८ फ़ल्लज़ी - न ला
युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति क़ुलूबुहुम् मुन्कि-रतुंव्-व हुम् मुस्तक्बिरून (२२) ला
ज-र-म अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ़्-लिनू-न b इन्नहू ला- युह़िब्बुल्-
मुस्तक्बिरीन (२३) व इज़ा क़ी-ल लहुम् माज़ा अन्-ज़ - ल रब्बुकुम् ll
क़ालू असातीरुल् - अव्वलीन ll (२४) लियह़्मिलू औज़ारहुम्
कामि-ल - तंय्यौमल् - क़ियामति ll व मिन् औज़ारिल्लज़ी - न युज़िल्लूनहुम्
बिग़ैरि अ़िल्मिन् b अला सा - अ मा यज़िरून ★ (२५)

النحل ١٦ — ٢١٤ — ربما ١٤

الزرع والزيتون والنخيل والاعناب ومن كل الثمرات ان في
ذلك لاية لقوم يتفكرون ⑪ وسخر لكم اليل والنهار والشمس
والقمر والنجوم مسخرت بامره ان في ذلك لايت لقوم
يعقلون ⑫ وما ذرا لكم في الارض مختلفا الوانه ان في ذلك
لاية لقوم يذكرون ⑬ وهو الذي سخر البحر لتاكلوا منه لحما
طريا وتستخرجوا منه حلية تلبسونها وترى الفلك مواخر
فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون ⑭ والقى في الارض
رواسي ان تميد بكم وانهرا وسبلا لعلكم تهتدون ⑮ وعلمت
وبالنجم هم يهتدون ⑯ افمن يخلق كمن لا يخلق افلا
تذكرون ⑰ وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها ان الله لغفور
رحيم ⑱ والله يعلم ما تسرون وما تعلنون ⑲ والذين يدعون
من دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون ⑳ اموات غير
احياء وما يشعرون ايان يبعثون ㉑ الهكم اله واحد
فالذين لا يؤمنون بالاخرة قلوبهم منكرة وهم مستكبرون ㉒
لا جرم ان الله يعلم ما يسرون وما يعلنون انه لا يحب
المستكبرين ㉓ واذا قيل لهم ماذا انزل ربكم قالوا اساطير
الاولين ㉔ ليحملوا اوزارهم كاملة يوم القيمة ومن اوزار

★रु. २/८ आ १२ ★रु. ३/६ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर (और अनगिनत पेड़) उगाता है और हर तरह के फल (पैदा करता है), और ग़ौर करने वालों के लिए इस में (अल्लाह की क़ुदरत की बड़ी) निशानी है। (११) और उसी ने तुम्हारे लिए रात और दिन और सूरज और चांद को काम में लगाया और उसी के हुक्म से सितारे भी काम में लगे हुए हैं, समझने वालों के लिए, इस में (ख़ुदा की क़ुदरत की बहुत सी) निशानियां हैं। (१२) और जो तरह-तरह के रंगों की चीज़ें उस ने ज़मीन में पैदा कीं, (सब तुम्हारे फ़रमान के तहत कर दीं), नसीहत पकड़ने वालों के लिए इस में निशानी है। (१३) और वही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे अख़्तियार में किया ताकि उस में से ताज़ा गोश्त खाओ और उस से ज़ेवर (वग़ैरह) निकालो, जिसे तुम पहनते हो और तुम देखते हो कि कश्तियां दरिया में पानी को फाड़ती चली जाती हैं और इस लिए भी (दरिया को तुम्हारे अख़्तियार में किया) कि तुम ख़ुदा के फ़ज़्ल से रोज़ी तलाश करो और ताकि उस का शुक्र अदा करो। (१४) और उसी ने ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए कि तुम को ले कर कहीं झुक न जाए और नहरें और रास्ते बना दिए ताकि एक जगह से दूसरी जगह तक (आसानी से) जा सको। (१५) और (रास्तों में) निशानात बना दिए और लोग सितारों से भी रास्ते मालूम करते हैं। (१६) तो जो (इतनी मख़्लूक़ात) पैदा करे, क्या वह ऐसा है, जो कुछ भी पैदा न कर सके? तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते? (१७) और अगर तुम ख़ुदा की नेमतों को गिनना चाहो, तो गिन न सको। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१८) और जो कुछ तुम छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हो, सब ख़ुदा जानता है। (१९) और जिन लोगों को ये ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, वे कोई चीज़ भी तो नहीं बना सकते, बल्कि ख़ुद उन को और बनाते हैं। (२०) (वे) लाशें हैं, बे-जान, उन को यह भी तो मालूम नहीं कि उठाए कब जाएंगे। (२१) ★

तुम्हारा माबूद तो अकेला ख़ुदा है, तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल इंकार कर रहे हैं और वे सर-कश हो रहे हैं। (२२) ये जो कुछ छिपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, ख़ुदा ज़रूर उस को जानता है। वह सर-कशी को हरगिज़ पसंद नहीं करता। (२३) और जब इन (काफ़िरों से) कहा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या उतारा है, तो कहते हैं कि (वे तो) पहले लोगों की हिकायतें हैं। (२४) (ऐ पैग़म्बर! उन को बकने दो) ये क़ियामत के दिन अपने (आमाल के) पूरे बोझ भी उठाएंगे और जिन को यह बे-तहक़ीक़ गुमराह करते हैं, उन के बोझ भी (उठाएंगे)। सुन रखो कि जो बोझ ये उठा रहे हैं, बुरे हैं। (२५) ★

★रु. २/८ आ १२ ★रु. ३/९ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़द् म-क-रल्लजी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अ-तल्लाहु बुन्यानहुम् मिनल्-क़वाअिदि फ़-ख़र्-र अ़लैहिमुस्सक़्फ़ु मिन् फ़ौक़िहिम् व अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (२६) सुम्-म यौमल्क़ियामति युख़्ज़ीहिम् व यक़ूलु ऐ-न शुरकाइयल्-लज़ी-न कुन्तुम् तुशाक़्क़ू-न फ़ीहिम् ط क़ालल्लज़ी - न ऊतुल्-अ़िल्-म इन्नल् - ख़िज़्यल्-यौ-म वस्सू - अ अ़-लल्-काफ़िरीन (२७) अ्ल्लज़ी - न त - तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइकतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् फ़-अल्क़वुस्स-ल-म मा कुन्ना नअ्-मलु मिन् सूइन् ط बला इन्नल्ला - ह अ़लीमुम् - बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (२८) फ़द्ख़ुलू अब्वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी - न फ़ीहा ط फ़-लबिअ्-स मस्वल् मु-त-कब्बिरीन (२९) व क़ी-ल लिल्लज़ीनत्तक़ौ माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम् ط क़ालू ख़ैरन् ط लिल्लज़ी - न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद् - दुन्या ह्-स-नतुन् ط व ल-दारुल्-आख़िरति ख़ैरुन् ط व लनिअ्-म दारुल्-मुत्तक़ीन (३०) जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलूनहा तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न ط कज़ालि - क यज्ज़िल्लाहुल् - मुत्तक़ीन (३१) अ्ल्लज़ी-न त-त-वफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइकतु तय्यिबी-न यक़ूलू-न सलामुन् अ़लैकुमुद्ख़ुलुल् - जन्न - त बिमा कुन्तुम् तअ् - मलून (३२) हल् यन्ज़ुरू - न इल्ला अन् तअ्तियहुमुल् - मलाइकतु औ यअ्ति - य अम्रु रब्बि-क ط कज़ालि-क फ़-अ़-लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (३३) फ़-असाबहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (३४)

ربما ١٤ ٢١٥ النحل ١٦

الذين يضلونهم بغير علم ألا ساء ما يزرون ﴿٢٥﴾ قد مكر الذين
من قبلهم فأتى الله بنيانهم من القواعد فخر عليهم السقف
من فوقهم وأتىهم العذاب من حيث لا يشعرون ﴿٢٦﴾ ثم يوم
القيمة يخزيهم ويقول أين شركاءي الذين كنتم تشاقون
فيهم قال الذين أوتوا العلم إن الخزي اليوم والسوء على الكفرين ﴿٢٧﴾
الذين تتوفىهم الملئكة ظالمي أنفسهم فألقوا السلم ما كنا نعمل
من سوء بلى إن الله عليم بما كنتم تعملون ﴿٢٨﴾ فادخلوا أبواب
جهنم خلدين فيها فلبئس مثوى المتكبرين ﴿٢٩﴾ وقيل للذين
اتقوا ماذا أنزل ربكم قالوا خيرا للذين أحسنوا في هذه
الدنيا حسنة ولدار الأخرة خير ولنعم دار المتقين ﴿٣٠﴾ جنت
عدن يدخلونها تجري من تحتها الأنهر لهم فيها ما يشاءون
كذلك يجزي الله المتقين ﴿٣١﴾ الذين تتوفىهم الملئكة طيبين
يقولون سلم عليكم ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون ﴿٣٢﴾ هل
ينظرون إلا أن تأتيهم الملئكة أو يأتي أمر ربك كذلك فعل
الذين من قبلهم وما ظلمهم الله ولكن كانوا أنفسهم
يظلمون ﴿٣٣﴾ فأصابهم سيات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به
يستهزءون ﴿٣٤﴾ وقال الذين أشركوا لو شاء الله ما عبدنا من

★रु. ४/१० आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन से पहले लोगों ने भी (ऐसी ही) मक्कारियां की थीं, तो ख़ुदा (का हुक्म) उन की इमारत के स्तूनों पर आ पहुंचा और छत उन पर उन के ऊपर से गिर पड़ी। और (ऐसी तरफ़ से) उन पर अज़ाब आ वाक़ेअ हुआ, जहां से उन को ख़्याल भी न था। (२६) फिर वह उन को क़ियामत के दिन भी ज़लील करेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहां हैं, जिन के बारे में तुम झगड़ा करते थे? जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहेंगे कि आज काफ़िरों की रुसवाई और बुराई है। (२७) (उन का हाल यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की रूहें क़ब्ज़ करने लगते हैं (और ये) अपने ही हक़ में ज़ुल्म करने वाले (होते हैं) तो इताअतगुज़ार व फ़रमांबरदार हो जाते हैं (और कहते हैं) कि हम कोई बुरा काम नहीं करते थे। हां, जो कुछ तुम किया करते थे, ख़ुदा ख़ूब जानता है। (२८) सो दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहोगे, अब तकब्बुर (घमंड) करने वालों का बुरा ठिकाना है। (२९) और (जब) परहेज़गारों से पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है, तो कहते हैं कि बेहतरीन (कलाम)। जो लोग भले हैं, उन के लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर तो बहुत अच्छा है और परहेज़गारों का घर बहुत ख़ूब है। (३०) (वह) हमेशा के बहिश्त (हैं) जिन में वे दाख़िल होंगे, उन के नीचे नहरें बह रही हैं वहां जो चाहेंगे, उन के लिए मयस्सर होगा। ख़ुदा परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देता है। (३१) (उन की हालत यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की जानें निकालने लगते हैं और ये (कुफ़्र व शिर्क से) पाक होते हैं, तो "सलामुन अलैकुम" कहते हैं (और कहते हैं कि) जो अमल तुम किया करते थे. उन के बदले में बहिश्त में दाख़िल हो जाओ। (३२) क्या ये (काफ़िर) इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते उन के पास (जान निकालने) आएं या तुम्हारे परवदिगार का हुक्म (अज़ाब का) आ पहुंचे। इसी तरह उन लोगों ने किया था जो उन से पहले थे और ख़ुदा ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (३३) तो उन के आमाल के बुरे बदले मिले और जिस चीज़ के साथ वे ठट्ठे किया करते थे, उस ने उन को (हर तरफ़ से) घेर लिया। (३४) ★

★रु. ४/१० आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ाललल्लजी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अ-बद्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन्
नह्नु व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् ꞩ कज़ालि-क
फ़-अ-लल्लजी - न मिन् क़ब्लिहिम् ꞩ फ़ - हल् अ-लर्रुसुलि इल्लल् - बलागुल्-
मुबीन (३५) व ल-क़द् ब-अस्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन् अनिअ-बुदुल्ला-ह
वज्तनिबुत् - ताग़ू - त ꞩ फ़मिन्हुम् मन्
ह - दल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक़्क़त्
अलैहिज़्ज़लालतु ꞩ फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि
फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन
(३६) इन् तह्रिस् अला हुदाहुम्
फ़-इन्नल्ला-ह ला यह्दी मंय्युज़िल्लु व मा
लहुम् मिन्नासिरीन (३७) व अक़्समू
बिल्लाहि जह् - द ऐमानिहिम् ꞩ ला
यब्असुल्लाहु मंय्यमूतु ꞩ बला वअ्-दन् अलैहि
हक़्क़ंव्-व लाकिन - न अक्सरन्नासि ला
यअ्-लमून ꞩ (३८) लियुबय्यि-न लहुमुल्लज़ी
यख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि व लियअ्-ल-मल्लजी-न क-फ़रू
अन्नहुम् कानू काज़िबीन (३९) इन्नमा
क़ौलुना लिशैइन् इज़ा अ-रद्नाहु अन् नक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून ★ (४०)
वल्लजी-न हाजरू फ़िल्लाहि मिम्बअ्-दि मा ज़ुलिमू लनुबव्विअन्नहुम् फ़िद्दुन्या
ह्-स-न - तन् ꞩ व ल - अज्रुल् - आख़िरति अक्बरु ▨ लौ कानू यअ् - लमून ꞩ
(४१) अल्लजी-न स-बरू व अला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (४२) व मा
अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन्नूही इलैहिम् फ़स्-अलू अह्लज़्ज़िक्रि
इन् कुन्तुम् ला तअ्-लमून ꞩ (४३) बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि ꞩ व अन्ज़ल्ना
इलैकज़्ज़िक-र लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज़्ज़ि-ल इलैहिम् व ल-अल्लहुम् य-त-फ़क्करून
● (४४) अ-फ़-अमिनल्लजी - न म-करुस्सय्यिआति अंय्यख़्सिफ़ल्लाहु बिहिमुल्-
अर्-ज़ औ यअ्ति-य-हुमुल् - अज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून ꞩ (४५)

ربما ١٤ ٢١٦ النحل ١٦

دُونِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ
شَيْءٍ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ
عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ۭ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ
يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ
لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ۭ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ۝ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ
نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا
ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ
كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ وَمَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۭ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا
السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और मुश्रिक कहते हैं कि अगर ख़ुदा चाहता तो न हम ही उस के सिवा किसी चीज़ को पूजते और न हमारे बड़े ही (पूजते) और न उस के (फ़रमान के) बग़ैर हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। (ऐ पैग़म्बर !) इसी तरह इन से अगले लोगों ने किया था, तो पैग़म्बरों के ज़िम्मे (ख़ुदा के हुक्मों को) खोल कर पहुंचा देने के सिवा और कुछ नहीं। (३५) और हम ने हर जमाअत में पैग़म्बर भेजा कि ख़ुदा ही की इबादत करो और बुतों (की पूजा करने) से बचो, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी और कुछ ऐसे हैं, जिन पर गुमराही साबित हुई, सो ज़मीन पर चल-फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (३६) अगर तुम इन (काफ़िरों) को हिदायत के लिए ललचाओ, तो जिस को ख़ुदा गुमराह कर देता है, उस को हिदायत नहीं दिया करता और ऐसे लोगों का कोई मददगार भी नहीं होता। (३७) और ये ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़स्में खाते हैं कि जो मर जाता है, ख़ुदा उसे (क़ियामत के दिन क़ब्र से) नहीं उठाएगा। हरगिज़ नहीं ! यह (ख़ुदा का वायदा) सच्चा है और इस का पूरा करना उसे ज़रूर है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (३८) ताकि जिन बातों में ये इख़्तिलाफ़ करते हैं, वह उन पर ज़ाहिर कर दे और इस लिए कि काफ़िर जान लें कि वे झूठे थे। (३९) जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो हमारी बात यही है कि उस को कह देते हैं कि "हो जा" तो वह हो जाती है। (४०)★

और जिन लोगों ने ज़ुल्म सहने के बाद ख़ुदा के लिए वतन छोड़ा, हम उन को दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का बदला तो बहुत बड़ा है ▨ काश ! वे (उसे) जानते। (४१) यानी वे लोग जो सब्र करते हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (४२) और हम ने तुम से पहले मर्दों ही को पैग़म्बर बना कर भेजा था, जिन की तरफ़ हम वह्य भेजा करते थे। अगर तुम लोग नहीं जानते, तो अह्ले किताब से पूछ लो। (४३) (और उन पैग़म्बरों को) दलीलें और किताबें दे कर (भेजा था) और हम ने तुम पर भी यह किताब नाज़िल की है ताकि जो (इर्शादात) लोगों पर नाज़िल हुए हैं, वह उन पर ज़ाहिर कर दे और ताकि वे ग़ौर करें ●(४४) क्या जो लोग बुरी-बुरी चालें चलते हैं, इस बात से बे-ख़ौफ़ हैं कि ख़ुदा उन को ज़मीन में धंसा दे या (ऐसी तरफ़ से) उन पर अज़ाब आ जाए जहां से उन को ख़बर ही न हो। (४५) या उन को चलते-फिरते पकड़ ले।

★रु. ५/११ आ ६ ▨ व. लाज़िम ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

औ यअ्ख़ुजहुम् फ़ी तक़ल्लुबिहिम् फ़मा हुम् बिमुअ्-जिज़ीन لا (४६) औ
यअ्ख़ुजहुम् अ़ला तख़व्वुफ़िन् ط फ़-इन्-न रब्बकुम् ल - रऊफ़ुर्रहीम (४७)
अ व लम् यरौ इला मा ख़-ल-क़ल्लाहु मिन् शैइंय्य-तफ़य्यउ ज़िलालुहू अ़निल्-
यमीनि वश्शमाइलि सुज्जदल् - लिल्लाहि व हुम् दाख़िरून (४८) व
लिल्लाहि यस्जुदु मा फ़िस्समावाति व
मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् दाब्बतिंव्वल्-मलाइकतु
व हुम् ला यस्तक्बिरून (४९) यख़ाफ़ू-न
रब्बहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् व यफ़्-अ़लू-न मा
युअ्-मरून ★ □ (५०) व क़ालल्लाहु ला
तत्तख़िज़ू इलाहैनिस्नैनि ج इन्नमा हु - व
इलाहुंव्वाहिदुन् ج फ़इय्या - य फ़र्हबून
(५१) व लहू मा फ़िस्समावाति
वल्अर्ज़ि व लहुद्दीनु वासिबन् ط अ-फ़-ग़ैरल्लाहि
तत्तक़ून (५२) व मा बिकुम् मिन्
निअ्-मतिन् फ़मिनल्लाहि सुम् - म इज़ा
मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़-इलैहि तज्अरून ج (५३)

ربما ١٤ ٢١٧ النحل

حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ
أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ أَوَلَمْ يَرَوْا
إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ
سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ يَخَافُونَ
رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا
إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ وَلَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ
وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ
ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ
لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ وَيَجْعَلُونَ
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ
تَفْتَرُونَ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ
أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ لِلَّذِينَ لَا
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ وَهُوَ الْعَزِيزُ

सुम्-म इज़ा क-श-फ़ज़्ज़ुर-र अ़न्कुम् इज़ा फ़रीक़ुम् - मिन्कुम् बिरब्बिहिम्
युश्रिकून لا (५४) लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ط फ़-त - मत्तअू قف फ़सौ - फ़
तअ्-लमून (५५) व यज्-अ़लू-न लिमा ला यअ्-लमू-न नसीबम् मिम्मा र-ज़क़्ना-
हुम् ط तल्लाहि ल-तुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तफ़्तरून (५६) व यज्अ़लू-न
लिल्लाहिल्-बनाति सुब्हानहू لا व लहुम् मा यश्तहून (५७) व इज़ा
बुश्शि-र अ-ह़दुहुम् बिल्उन्सा ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम ج (५८)
य-त-वारा मिनल्-क़ौमि मिन् सूइ मा बुश्शि-र बिही ط अ-युम्सिकुहू अ़ला
हूनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि ط अला सा - अ मा यह्कुमून (५९)
लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति म - स-लुस्सौइ ج व लिल्लाहिल् -
म - सलुल् - अअ् - ला ط व हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - ह़कीम ★ (६०)

★रु. ६/१२ आ १० □ सजदः ३ ★रु. ७/१३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वे (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते। (४६) या जब उन को अज़ाब का डर पैदा हो गया हो, तो उन को पकड़ ले। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बहुत शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है। (४७) क्या उन लोगों ने ख़ुदा की मख़्लूक़ात में से ऐसी चीज़ें नहीं देखीं, जिन के साए दाएं से (बाएं को) और बाएं से (दाए को) लौटते रहते हैं, (यानी) ख़ुदा के आगे आजिज़ हो कर सज्दे में पड़े रहते हैं। (४८) और तमाम जानदार जो आसमानों में हैं, सब ख़ुदा के आगे सज्दे करते हैं और फ़रिश्ते भी और ये तनिक भी घमंड नहीं करते। (४९) और अपने परवरदिगार से, जो उन के ऊपर है, डरते हैं और जो उन को इर्शाद होता है, उस पर अमल करते हैं। (५०) ★□

और ख़ुदा ने फ़रमाया है कि दो-दो माबूद न बनाओ। माबूद वही एक है, तो मुझी से डरते रहो। (५१) और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है और उसी की इबादत ज़रूरी है तो तुम ख़ुदा के सिवा औरों से क्यों डरते हो? (५२) और जो नेमतें तुम को मिली हैं, सब ख़ुदा की तरफ़ से हैं, फिर जब तुम को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है, तो उसी के आगे चिल्लाते हो। (५३) फिर जब वह तुम को तक्लीफ़ से दूर कर देता है तो कुछ लोग तुम में से ख़ुदा के साथ शरीक करने लगते हैं। (५४) ताकि जो (नेमतें) हम ने उन को अता फ़रमायी हैं, उन की ना-शुक्री करें तो (मुश्रिको!) दुनिया में फ़ायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (५५) और हमारे दिए हुए माल में से ऐसी चीज़ों का हिस्सा मुक़र्रर करते हैं, जिन को जानते ही नहीं। (काफ़िरो!) ख़ुदा की क़सम जो कि तुम झूठ गढ़ते हो, उसकी तुम से ज़रूर पूछ होगी, (५६) और ये लोग ख़ुदा के लिए तो बेटियां तज्वीज़ करते हैं (और) वह उन से पाक है और अपने लिए (बेटे), जो पसंदीदा (और दिल पसंद) हैं, (५७) हालांकि जब उन में से किसी को बेटी (के पैदा होने की) ख़बर मिलती है, तो उस का मुंह (ग़म की वजह से) काला पड़ जाता है और (उस के दिल को तो देखो तो) वह दुखी हो जाता है। (५८) और इस बुरी ख़बर से (जो वह सुनता है) लोगों से छिपता-फिरता है (और सोचता है) कि क्या ज़िल्लत बर्दाश्त कर के लड़की को ज़िंदा रहने दे या ज़मीन में गाड़ दे। देखो, ये जो तज्वीज़ करते हैं, बहुत बुरी है। (५९) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन्हीं के लिए बुरी बातें (मुनासिब) हैं और ख़ुदा को बुलंद सिफ़त (ज़ेब देती है) और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (६०) ★

★रु. ६/१२ आ १० □ सजदः ३ ★रु. ७/१३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लौ युआख़िज़ुल्-लाहुन्-ना-स बिज़ुलिमिहिम् मा त-र-क अलैहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिय्यु-अख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मत् ج फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून (६१) व यज्-अलू-न लिल्लाहि मा यक्-रहू-न व तसिफ़ु अल्सिनतु-हुमुल्-कज़ि-ब अन्-न लहुमुल्-हुस्ना ط ला ज-र-म अन्-न लहुमुन्ना-र व अन्नहुम् मुफ़्-रतून (६२) तल्लाहि ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् - मिन् क़ब्लि-क फ़-ज़य्य-न लहुमुश्-शैतानु अअ्-मालहुम् फ़हु-व वलिय्युहुमुल्-यौ-म व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (६३) व मा अन्ज़ल्ना अलैकल्-किता-ब इल्ला लितुबय्यि-न लहुमुल्लज़िख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ﻻ व हुदंव् - व रह्-म-तल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (६४) वल्लाहु अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़ - अह्या बिहिल्अर-ज़ बअ्-द मौतिहा ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-य-तल्लिक़ौमिंय्यस्मअ़ून★(६५) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि ल-अिब-र-तन् ط नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्-बैनि फ़र्सिंव्-व दमिल्-ल-ब-नन् ख़ालिसन् साइग़ल्-लिश्शारिबीन (६६) व मिन् स-म-रातिन्-नख़ीलि वल्अअ्-नाबि तत्तख़िज़ू-न मिन्हु स-क-रंव्-व रिज़्क़न् ह्-स-नन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिक़ौमिंय्यअ्-क़िलून (६७) व औहा रब्बु-क इलन्नह्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्शजरि व मिम्मा यअ्-रिशून ﻻ (६८) सुम्-म कुली मिन् कुल्लिस्स - मराति फ़स्लुकी सुबु - ल रब्बिकि ज़ुलुलन् ط यख़्रुजु मिम् - बुतूनिहा शराबुम् - मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्लिन्नासि ط इन् - न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिक़ौमिय्य-त-फ़क्करून (६९)

النحل ١٦ — ٢١٨ — ربما ١٤

الْحَكِيْمُ ۝٦٠ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ
دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا
يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٦١ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ
وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ
النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ۝٦٢ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝٦٣ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا
فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٦٤ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ۝٦٥ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ
مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝٦٦ وَمِنْ
ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۭ
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٦٧ وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ
اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝٦٨ ثُمَّ كُلِىْ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا
شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٦٩ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ڒ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى

منزل ٣

★रु० ८/१४ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और अगर ख़ुदा लोगों को उन के ज़ुल्म की वजह में पकड़ने लगे, तो एक जानदार को ज़मीन पर न छोड़े लेकिन उन को एक मुक़र्रर वक़्त तक मोहलत दिए जाता है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो एक घड़ी न पीछे रह सकते हैं, न आगे बढ़ सकते हैं। (६१) और ये ख़ुदा के लिए ऐसी चीज़ें तज्वीज़ करते हैं, जिन को ख़ुदा ना-पसन्द करते हैं और ज़ुबान से झूठ बके जाते हैं कि उन को (क़ियामत के दिन) भलाई (यानी निजात) होगी। कुछ शक नहीं कि उन के लिए (दोज़ख़ की) आग (तैयार) है और ये (दोज़ख़ में) सब से आगे भेजे जाएंगे। (६२) ख़ुदा की क़सम ! हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे, तो शैतान ने उन के (बुरे) अमल उन को सजा कर दिखाए, तो आज भी वही उन का दोस्त है और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (६३) और हम ने जो तुम पर किताब नाज़िल की है, तो इस के लिए कि जिस मामले में इन लोगों को इख़्तिलाफ़ है, तुम उन का फ़ैसला कर दो और (यह) मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (६४) और ख़ुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा किया। बेशक इस में सुनने वालों के लिए निशानी है। (६५) ★

और तुम्हारे लिए चारपायों में भी सबक़ (हासिल करने और ग़ौर करने की) जगह है कि उन के पेटों में जो गोबर और लहू है, उस से हम तुम को ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए ख़ुशगवार है। (६६) और खजूर और अंगूर के मेवों से भी (तुम पीने की चीज़ें तैयार करते हो) कि उन से शराब बनाते हो और अच्छी रोज़ी (खाते हो), जो लोग समझ रखते हैं, उन के लिए इन (चीज़ों) में (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानी है। (६७) और तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियों को इर्शाद फ़रमाया कि पहाड़ों में और पेड़ों में और ऊंची-ऊंची छतरियों में, जो लोग बनाते हैं, घर बना।[1] (६८) और हर क़िस्म के मेवे खा और अपने परवरदिगार के साफ़ रास्तों पर चली जा। उस के पेट से पीने की चीज़ निकलती है, जिस के मुख़्तलिफ़ रंग होते हैं, उस में लोगों (के कई मर्ज़ों) की शिफ़ा है। बेशक सोचने वालों के लिए उस में भी निशानी है। (६९) और ख़ुदा

१. ऊंची-ऊंची छतरियों से मुराद वे छतरियां हैं, जो अंगूर की बेल चढ़ाने के लिए डाली जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् सुम्-म य-त - वफ़्फ़ाकुम् قف व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला
अर्ज़लिल् अुमुरि लिकै ला यअ्-ल-म बअ्-द अिल्मिन् शैअन् ط इन्नल्ला-ह अलीमुन्
क़दीर ★ (७०) वल्लाहु फ़ज़्ज़-ल बअ्-ज़कुम् अला बअ् - ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ ج
फ़-मल्लज़ी-न फ़ुज़्ज़िलू बिराद्दी-रिज़्क़िहिम् अला मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़हुम्
फ़ीहि सवाउन् ط अ - फ़-बिनिअ् - मतिल्लाहि
यज्हदून (७१) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिन्
अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन्
अज़्वाजिकुम् बनी-न व ह-फ़-द-तंव्-व र-ज़-क़कुम्
मिनत्तय्यिबाति ط अ-फ़-बिल्बातिलि युअ्मिनू - न
व बिनिअ् - मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून لا
(७२) व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा
ला यम्लिकु लहुम् रिज़्क़म्-मिनस्समावाति
वल्अर्ज़ि शैअंव्-व ला यस्ततीअून ج (७३)
फ़-ला तज़्रिबू लिल्लाहिल् - अम्सा - ल ط
इन्नल्ला-ह यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून
(७४) ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् अब्दम्-मम्लूकल्-
ला यक़्दिरु अला शैइंव्-व मर्रज़क़्नाहु मिन्ना रिज़्क़न् ह-स-नन् फ़हु-व युन्फ़िक़ु
मिन्हु सिर्रंव् - व जह्रन् ط हल् यस्तवू-न ط अल्हम्दु लिल्लाहि ط बल्
अक्सरु-हुम् ला यअ्-लमून (७५) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लर्-रजुलैनि अ-हदुहुमा
अब्कमु ला यक़्दिरु अला शैइंव्-व हु-व कल्लुन् अला मौलाहु لا ऐनमा युवज्जिह्हु
ला यअ्ति बिख़ैरिन् ط हल् यस्तवी हु-व لا व मंय्यअ्मुरु बिल्अद्लि لا
व हु-व अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ★ (७६) व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति
वल्अर्ज़ि ط व मा अम्रुस्साअ़ति इल्ला क - लम्हिल् - ब-सरि औ हु - व
अक़रबु ط इन्नल्ला - ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (७७) वल्लाहु
अख़्-र-जकुम् मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ्-ल-मू-न शैअंव्-व ज-अ-ल
लकुमुस्सम् - अ वलअब्सा - र वलअफ़्इ-द-त لا ल-अल्लकुम् तश्कुरून (७८)

النحل ١٦ — ٢١٩ — ربما ١٤

ع ٩ / ١٥

اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَیْ لَا یَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَیْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ ﴿٧٠﴾
وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰی بَعْضٍ فِی الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِیْنَ فُضِّلُوْا
بِرَآدِّیْ رِزْقِهِمْ عَلٰی مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَهُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ
اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِیْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ
یُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ یَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَیَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَا لَا یَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَیْـًٔا وَّلَا
یَسْتَطِیْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ وَ
اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا یَقْدِرُ
عَلٰی شَیْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ یُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا
وَّجَهْرًا ؕ هَلْ یَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَیْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا یَقْدِرُ عَلٰی شَیْءٍ
وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰی مَوْلٰىهُ ۙ اَیْنَمَا یُوَجِّهْهُّ لَا یَاْتِ بِخَیْرٍ ؕ هَلْ
یَسْتَوِیْ هُوَ ۙ وَمَنْ یَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿٧٦﴾

ع ١٠ / ١٦

وَلِلّٰهِ غَیْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ
الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٧٧﴾ وَاللّٰهُ
اَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَیْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ

منزل

★ रु. ९/१५ आ ५ ★ रु. १०/१६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ही ने तुम को पैदा किया, फिर वहां तुम को मौत देता है और तुम में कुछ ऐसे होते हैं कि निहायत ख़राब उम्र को पहुंच जाते हैं और (बहुत कुछ) जानने के बाद हर चीज़ से बे-इल्म हो जाते हैं। बेशक (ख़ुदा सब कुछ) जानने वाला (और) क़ुदरत वाला है। (७०)★

और ख़ुदा ने रोज़ी (और दौलत) में कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है तो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी है, वे अपनी रोज़ी अपने मम्लूकों को तो दे डालने वाले हैं नहीं कि सब उस में बराबर हो जाएं, तो क्या ये लोग अल्लाह की नेमत के इंकारी हैं? (७१) और ख़ुदा ही ने तुम में से तुम्हारे लिए औरतें पैदा कीं और औरतों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए और खाने को तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें दीं, तो क्या ये बे-असल चीज़ों पर एतक़ाद रखते और ख़ुदा की नेमतों से इंकार करते हैं? (७२) और ख़ुदा के सिवा ऐसों को पूजते हैं, जो उन को आसमानों और ज़मीन में रोज़ी देने का ज़रा भी अख़्तियार नहीं रखते और न (किसी और तरह की) क़ुदरत रखते हैं। (७३) तो (लोगो!) ख़ुदा के बारे में (ग़लत) मिसालें न बनाओ। (सही मिसालों का तरीक़ा) ख़ुदा ही जानता है और तुम नहीं जानते। (७४) ख़ुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि एक ग़ुलाम है जो (बिल्कुल) दूसरे के अख़्तियार में है और किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और एक ऐसा शख़्स है, जिस को हम ने अपने यहां से (बहुत-सा) माल बेहतर अता फ़रमाया है और वह उस में से (रात-दिन) छिपे और खुले ख़र्च करता है, तो क्या दोनों शख़्स बराबर हैं? (हरगिज़ नहीं) अलहम्दु लिल्लाह! लेकिन इन में से अक्सर लोग समझ नहीं रखते। (७५) और ख़ुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि दो आदमी हैं एक उन में से गूंगा (और दूसरे की मिल्क) है, (बे-अख़्तियार व कमज़ोर) कि किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और अपने मालिक को दूभर हो रहा है। वह जहां उसे भेजता है (ख़ैर से कभी) भलाई नहीं लाता। क्या ऐसा (गूंगा-बहरा) और वह शख़्स जो (सुनता-बोलता और) लोगों को इंसाफ़ करने का हुक्म देता है और ख़ुद सीधे रास्ते पर चल रहा है, दोनों बराबर हैं?[1] (७६) ★

और आसमानों और ज़मीन का इल्म ख़ुदा ही को है और (ख़ुदा के नज़दीक) क़ियामत का आना यों ही है, जैसे आंख का झपकना, बल्कि (उस से भी) जल्दतर। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (७७) और ख़ुदा ही ने तुम को तुम्हारी मांओं के पेट से पैदा किया कि तुम कुछ नहीं जानते थे और उस ने तुम को कान और आंखें और दिल (और उन के अलावा और)

---

१. यानी ख़ुदा के दो बन्दे, एक बहुत निकम्मा, न हिल सके, न चल सके, जैसा कि गूंगा ग़ुलाम, दूसरा रसूल जो अल्लाह की राह बतावे हज़ारों को और आप बन्दगी पर क़ायम रहे, उस की पैरवी करना बेहतर है या इस की?

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-लम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समाइ ᑲ मा युम्सिकुहुन्-न
इल्लल्लाहु ᑲ इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् - लिक़ौमिय्युअ्मिनून (७९)
वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम् स-क-नंव्-व ज-अ़-ल लकुम् मिन् जुलूदिल्-
अन्आ़मि बुयूतन् तस्तख़िफ़्फ़ूनहा यौ-म ज़अ़्-निकुम् व यौ-म इक़ामतिकुम् ᒼ
व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व
अश्आ़रिहा असासंव्-व मताअ़न् इलाह़ीन
(८०) वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिम्मा
ख़-ल-क़ ज़िलालंव्-व ज-अ़-ल लकुम् मिनल्जिबालि
अक्नानंव्-व ज-अ़-ल लकुम् सराबी - ल
तक़ीकुमुल्ह़र् - र व सराबी-ल तक़ीकुम्
बअ्-सकुम् ᑲ कज़ालि-क युतिम्मु निअ्-मतहू
अ़लैकुम् ल-अ़ल्लकुम् तुस्लिमून (८१)
फ़-इन् त-वल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलागुल्-
मुबीन (८२) यअ्-रिफ़ू-न निअ्-म-तल्लाहि
सुम् - म युन्किरूनहा व अक्सरुहुमुल् -
काफ़िरून ★(८३) व यौ - म नब्अ़सु
मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्-म ला युअ्ज़नु लिल्लज़ी-न क-फ़रू व ला
हुम् युस्तअ्-तबून (८४) व इज़ा र-अल्लज़ी-न ज़ - लमुल्-अ़ज़ा-ब फ़ला
युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् व ला हुम् युन्ज़रून (८५) व इज़ा र-अल्लज़ी-न
अश्रकू शु-रका - अहुम् क़ालू रब्बना हाउलाइ शु-र-काउनल्-लज़ी-न कुन्ना
नद्अू मिन् दूनि - क ᑫ फ़-अल्क़ौ इलैहिमुल्क़ौ-ल इन्नकुम् ल - काज़िबून ᑫ
● (८६) व अल्क़ौ इलल्लाहि यौमइज़ि-निस् - स - लम व ज़ल् - ल
अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (८७) अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि
ज़िद्नाहुम् अ़ज़ाबन् फ़ौक़ल् - अ़ज़ाबि बिमा कानू युफ़्सिदून (८८)

السمع والابصار والافدة لعلكم تشكرون ﴿٧٨﴾ الم يروا
الى الطير مسخرت في جو السماء ما يمسكهن الا الله ان
في ذلك لايت لقوم يؤمنون ﴿٧٩﴾ والله جعل لكم من
بيوتكم سكنا وجعل لكم من جلود الانعام بيوتا تستخفونها
يوم ظعنكم ويوم اقامتكم ومن اصوافها واوبارها
واشعارها اثاثا ومتاعا الى حين ﴿٨٠﴾ والله جعل لكم مما
خلق ظللا وجعل لكم من الجبال اكنانا وجعل لكم
سرابيل تقيكم الحر وسرابيل تقيكم باسكم كذلك يتم
نعمته عليكم لعلكم تسلمون ﴿٨١﴾ فان تولوا فانما عليك
البلغ المبين ﴿٨٢﴾ يعرفون نعمت الله ثم ينكرونها واكثرهم
الكفرون ﴿٨٣﴾ ويوم نبعث من كل امة شهيدا ثم لا يؤذن
للذين كفروا ولا هم يستعتبون ﴿٨٤﴾ واذا را الذين ظلموا
العذاب فلا يخفف عنهم ولا هم ينظرون ﴿٨٥﴾ واذا را
الذين اشركوا شركاءهم قالوا ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين
كنا ندعوا من دونك فالقوا اليهم القول انكم لكذبون ﴿٨٦﴾
والقوا الى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا
يفترون ﴿٨٧﴾ الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله زدنهم

منزل ٣

★रु. ११/१७ आ ७ ● मु० ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अंग दिए, ताकि तुम शुक्र करो। (७८) क्या इन लोगों ने परिंदों को नहीं देखा कि आसमान की हवा में घिरे हुए (उड़ते रहते) हैं। उन को ख़ुदा ही थामे रखता है। ईमान वालों के लिए इस में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (७९) और ख़ुदा ही ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाया। और उसी ने चौपायों की खालों से तुम्हारे डेरे बनाए, जिन को तुम हल्का देख कर और हज़र सफ़र (ठहरने की हालत) में काम में लाते हो और उन की ऊन और रेशम और बालों से तुम सामान और बरतने की चीज़ें (बनाते हो, जो) मुद्दत तक (काम देती हैं।) (८०) और ख़ुदा ही ने तुम्हारे (आराम के) लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साए बनाए और पहाड़ों में ग़ारें बनायीं और कुरते बनाये, जो तुम को गर्मी से बचाएं और (ऐसे) कुरते (भी) जो तुम को जंग (के हथियारों के नुक़्सान) से बचाये रखें। इसी तरह ख़ुदा अपना एहसान तुम पर पूरा करता है, ताकि तुम फ़रमां-बरदार बनो। (८१) और अगर ये लोग मुंह मोड़ें तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा काम सिर्फ़ खोल कर सुना देना है। (८२) ये ख़ुदा की नेमतों को जानते हैं, मगर (जान कर) उन से इंकार करते हैं और ये अक्सर ना-शुक्रे हैं। (८३)★

और जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह (यानी पैग़म्बर) खड़ा करेंगे तो न तो कुफ़्फ़ार को बोलने की) इजाज़त मिलेगी और न उन के उज़्र क़ुबूल किए जाएंगे। (८४) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब देख लेंगे, तो फिर न तो उन के अज़ाब ही में कमी की जाएगी और न उन को मोहलत ही दी जाएगी। (८५) और जब मुश्रिक अपने (बनाये हुए) शरीकों को देखेंगे, तो कहेंगे कि परवर-दिगार! ये वही हमारे शरीक हैं, जिन को हम तेरे सिवा पुकारा करते थे, तो वे (उन के कलाम को रद्द कर देंगे और) उन से कहेंगे कि तुम तो झूठे हो● (८६) और उस दिन ख़ुदा के सामने सिर झुका देंगे और जो तूफ़ान वे बांधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (८७) जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोका, हम उन को अज़ाब पर अज़ाब देंगे, इस लिए कि

★रु. ११/१७ आ ७ ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व यौ-म नब्असु फ़ी कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अलैहिम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् व
जिअ्-ना बि-क शहीदन् अला हाउलाइ ط व नज़्ज़ल्ना अलैकल्-किता - ब
तिब्यानल्-लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्मतंव्-व बुश्रा लिल्मुस्लिमीन ★(८९)
इन्नल्ला - ह यअ्मुरु बिलअद्लि वल्इह्सानि व ईताइ ज़िल्क़ुर्बा व
यन्हा अनिल् - फ़ह्शाइ वल्मुन्करि
वल्बग़्यि ج यअिज़ुकुम् ल - अल्लकुम्
त-ज़क्करून (९०) व औफ़ू बिअह्दिल्लाहि
इज़ा आहत्तुम् व ला तन्क़ुज़ुल्-ऐमा-न
बअ्-द तौकीदिहा व क़द् ज-अल्तुमुल्ला-ह
अलैकुम् कफ़ीलन् ط इन्नल्ला-ह यअ् - लमु
मा तफ़-अलून (९१) व ला तकूनू कल्लती
न-क़-ज़त् ग़ज़्-लहा मिम्बअ्-दि क़ुव्वतिन्
अन्कासन् ط तत्तख़िज़ू-न ऐमानकुम् द-ख़-लम्-
बैनकुम् अन् तकू-न उम्मतुन् हि-य अर्बा मिन्
उम्मतिन् ط इन्नमा यब्लूकुमुल्लाहु
बिही ط व ल-युबय्यिनन्-न लकुम् यौमल् -

ربما ١٤ ٢٢١ النحل ١٦

عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ (٨٨) وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ
كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا
عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى
وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ (٨٩) اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ
الْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (٩٠) وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا
عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ (٩١) وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ
نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا
بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ
وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ (٩٢) وَلَوْ
شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٩٣) وَلَا
تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا
السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (٩٤)
وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٩٥) مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ

منزل ٣

क़ियामति मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (९२) व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ-लकुम्
उम्मतंव्वाहि-द-तंव् - व लाकिंय्युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ ط व
ल-तुस्अलुन्-न अम्मा कुन्तुम् तअ्-मलून (९३) व ला तत्तख़िज़ू ऐमानकुम्
द-ख़-लम्-बैनकुम् फ़-तज़िल्-ल क़-दमुम्-बअ्-द सुबूतिहा व तज़ूक़ुस्सू-अ बिमा
स-दत्तुम् अन् सबीलिल्लाहि ج व लकुम् अज़ाबुन् अज़ीम (९४) व
ला तश्तरू बि - अह्दिल्लाहि स-म - नन् क़लीलन् ط इन्नमा अिन्दल्लाहि
हु - व ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ् - लमून (९५) मा अिन्दकुम्
यन्फ़दु व मा अिन्दल्लाहि बाक़िन् ط व ल - नज्ज़ियन्नल्लज़ी - न
स - बरू अज्रहुम् बि - अह्सनि मा कानू यअ् - मलून (९६)

★रु. १२/१८ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शरारत किया करते थे। (८८) और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत में से ख़ुद उन पर गवाह खड़े करेंगे और (ऐ पैग़म्बर!) तुम को इन लोगों पर गवाह लाएंगे। और हम ने तुम पर (ऐसी) किताब नाज़िल की है कि (इस में) हर चीज़ का बयान (तफ़्सील से) है। और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और बशारत है। (८९)★

ख़ुदा तुम को इंसाफ़ और एहसान करने और रिश्तेदारों को (ख़र्च से मदद) देने का हुक्म देता है और बे-हयाई और ना-माक़ूल कामों से और सर-कशी से मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम याद रखो। (९०) और जब ख़ुदा से पक्का अह्द करो तो उस को पूरा करो और जब पक्की क़स्में खाओ तो उन को मत तोड़ो कि तुम ख़ुदा को अपना ज़मानतदार मुक़रर कर चुके हो और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को जानता है। (९१) और उस औरत की तरह न होना जिस ने मेहनत से तो सूत काता फिर उस को तोड़ कर टकड़े-टुकड़े कर डाला कि तुम अपनी क़स्मों को आपस में इस बात का ज़रिया वनाने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज़्यादा ग़ालिब रहे। बात यह है कि ख़ुदा तुम्हें इस से आज़माता है और जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, क़ियामत को उन की हक़ीक़त तुम पर ज़ाहिर कर देगा। (९२) और अगर ख़ुदा चाहता, तो तुम (सब) को एक ही जमाअत बना देता लेकिन वह जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और जो अमल तुम करते हो, (उस दिन) उन के बारे में तुम से ज़रूर पूछा जाएगा। (९३) और अपनी क़स्मों को आपस में इस बात का ज़रिया न बनाओ कि (लोगों के) क़दम जम चुकने के बाद लड़-खड़ा जाएं और इस वजह से कि तुम ने लोगों को ख़ुदा के रास्ते से रोका, तुम को बुराई का मज़ा चखना पड़े और बड़ा सख़्त अज़ाब मिले। (९४) और ख़ुदा से जो तुम ने अह्द किया है (उस को मत बेचो और) उस के बदले थोड़ी सी क़ीमत न लो (क्योंकि वायदा पूरा करने का) जो (बदला) ख़ुदा के यहां मुक़र्रर है, वह अगर समझो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। (९५) जो कुछ तुम्हारे पास है, वह ख़त्म हो जाता है, और जो ख़ुदा के पास है, वह बाक़ी है (कि कभी ख़त्म नहीं होगा) और जिन लोगों ने सब्र किया, हम उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। (९६) जो शख़्स

★रु. १२/१८ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् ज-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्‌मिनुन् फ़-लनुह़्यियन्नहू
ह़यातन् तय्यि-ब-तन् ط व-ल - नज्ज़ियन्नहुम् अज्रहुम् बिअह़्सनि मा कानू
यअ्‌-मलून (९७) फ़इजा क़ - रअ्‌तल् - क़ुरआ-न फ़स्तअिज़् बिल्लाहि
मिनश्शैतानिर्-रजीम (९८) इन्नहू लै-स लहू सुल्तानुन् अ-लल्लजी - न
आमनू व अला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (९९)
इन्नमा सुल्तानुहू अ-लल्लजी-न य-त-वल्लौनहू
वल्लजी-न हुम् बिही मुश्रिकून ★ (१००)
व इजा बद्दल्ना आ-यतम् - मका - न
आयतिंव ॽ- वल्लाहु अअ् - लमु बिमा
युनज़्ज़िलु क़ालू इन्नमा अन्-त मुफ़्तरिन् ط
बल् अक्सरुहुम् ला यअ्‌-लमून (१०१)
क़ुल् नज़्ज़-लहू रूहुल् - क़ुदुसि मिर्रब्बि-क
बिल्ह़क़्क़ि लियुसब्बितल्लजी-न आमनू व
हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुस्लिमीन (१०२)
व ल-क़द् नअ्‌-लमु अन्नहुम् यक़ूलू-न इन्नमा
युअ़ल्लिमुहू ब - शरुन् ط लिसानुल्लजी
युल्ह़िदू-न इलैहि अअ्‌-जमिय्युंव्-व हाजा लिसानुन् अ-रबिय्युम्-मुबीन (१०३)
इन्नल्लजी - न ला युअ्‌मिनू-न बिआयातिल्लाहि ॽ ला यह्दीहिमुल्लाहु व
लहुम् अज़ाबुन् अलीम (१०४) इन्नमा यफ़्तरिल् - कज़िबल्लजी-न ला
युअ्‌मिनू-न बिआयातिल्लाहि ط व उलाइ-क हुमुल्-काज़िबून (१०५) मन्
क-फ़-र बिल्लाहि मिम्बअ्‌-दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रि-ह व क़ल्बुहू
मुत-मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्मन् श-र-ह़ बिल्कुफ़्रि सद्-रन् फ़-अलैहिम्
ग़ - ज़बुम् - मिनल्लाहि ط व लहुम् अज़ाबुन् अ़ज़ीम (१०६)
जालि - क बि - अन्नहुमुस्त - ह़ब्बुल् - ह़यातद्दुन्या अ - लल् - आख़िरति ॽ
व अन्नल्ला - ह ला यह्दिल् - क़ौमल् - काफ़िरीन (१०७)

ربما ٢٢٢ النحل

الذين صبروا اجرهم باحسن ما كانوا يعملون ۝ من عمل
صالحا من ذكر او انثى وهو مؤمن فلنحيينه حيوة طيبة
ولنجزينهم اجرهم باحسن ما كانوا يعملون ۝ فاذا قرات
القران فاستعذ بالله من الشيطن الرجيم ۝ انه ليس له
سلطن على الذين امنوا وعلى ربهم يتوكلون ۝ انما سلطنه
على الذين يتولونه والذين هم به مشركون ۝ واذا بدلنا
اية مكان اية والله اعلم بما ينزل قالوا انما انت مفتر
بل اكثرهم لا يعلمون ۝ قل نزله روح القدس من
ربك بالحق ليثبت الذين امنوا وهدى وبشرى للمسلمين ۝
ولقد نعلم انهم يقولون انما يعلمه بشر لسان الذى
يلحدون اليه اعجمى وهذا لسان عربى مبين ۝ ان
الذين لا يؤمنون بايت الله لا يهديهم الله ولهم عذاب
اليم ۝ انما يفترى الكذب الذين لا يؤمنون بايت
الله واولئك هم الكذبون ۝ من كفر بالله من بعد
ايمانه الا من اكره وقلبه مطمئن بالايمان ولكن
من شرح بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله ولهم
عذاب عظيم ۝ ذلك بانهم استحبوا الحيوة الدنيا على

منزل

★रु. १३/१९ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उस को (दुनिया में) पाक (और आराम की) ज़िंदगी से ज़िंदा रखेंगे और (आख़िरत में) उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे। (९७) और जब तुम क़ुरआन पढ़ने लगो तो शैतान मर्दूद से पनाह मांग लिया करो, (९८) कि जो मोमिन हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, उन पर उस का कुछ ज़ोर नहीं चलता। (९९) उस का ज़ोर उन्हीं लोगों पर चलता है, जो उस को साथी बनाते हैं, और उस के (वस्वसे की) वजह से (ख़ुदा के साथ) शरीक मुक़र्रर करते हैं। (१००)★

और जब हम कोई आयत किसी आयत की जगह बदल देते हैं और ख़ुदा जो कुछ नाज़िल फ़रमाता है उसे ख़ूब जानता है, तो (काफ़िर) कहते हैं तुम तो (यों ही) अपनी तरफ़ से बना लाते हो। सच तो यह है कि उन में अक्सर नादान हैं। (१०१) कह दो कि इस को रूहुल क़ुद्स तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सच्चाई के साथ ले कर नाज़िल हुए हैं ताकि यह (क़ुरआन) मोमिनों को साबित क़दम रखे और हुक्म मानने वालों के लिए तो (यह) हिदायत और बशारत है। (१०२) और हमें मालूम है कि ये कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) को एक शख़्स सिखा जाता है मगर जिस की तरफ़ (तामील का) ताल्लुक़ जोड़ते हैं उस की ज़ुबान तो अजमी है और यह साफ़ अरबी ज़ुबान है। (१०३) जो लोग ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन को ख़ुदा हिदायत नहीं देता और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (१०४) झूठ तो वही लोग गढ़ते हैं, जो ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते और वही झूठे हैं। (१०५) जो शख़्स ईमान लाने के बाद ख़ुदा के साथ कुफ़्र करे, वह नहीं जो (कुफ़्र पर जबरदस्ती) मजबूर किया जाए और उस का दिल ईमान के साथ मुत्मईन हो, बल्कि वह जो (दिल से और) दिल खोल कर कुफ़्र करे, तो ऐसों पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उन को बड़ा सख़्त अज़ाब होगा। (१०६) यह इसलिए कि उन्हों ने दुनिया की ज़िंदगी को आख़िरत के मुक़ाबले में अज़ीज़ रखा और इस लिए कि ख़ुदा काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं

★रु. १३/१९ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उला-इकल्लजी-न त़-ब-अ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व सम्अ़िहिम् व अब्स़ारिहिम् ج
व उलाइ-क हुमुल्ग़ाफ़िलून (१०८) ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति
हुमुल्ख़ासिरून (१०९) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न हाजरू मिम्बअ़्-दि मा
फ़ुतिनू सुम्-म जाहदू व स़-बरू ل इन्-न रब्ब-क मिम्बअ़्-दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रह़ीम

★ (११०) यौ-म तअ्ती कुल्लु नफ़्सिन्
तुजादिलु अ़न्नफ़्सिहा व तुवफ़्फ़ा कुल्लु
नफ़्सिम्मा अ़मिलत् व हुम् ला युज़्-लमून
(१११) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् क़र्-य-तन्
कानत् आमि-न-तम् - मुत्मइन्नतंय्यअ्तीहा
रिज़-क़ुहा र-ग़ - दम्मिन् कुल्लि मकानिन्
फ़-क-फ़-रत् बि-अन्अ़ुमिल्लाहि फ़-अज़ा-क़-हल्लाहु
लिबासल्जूअ़ि वल्ख़ौफ़ि बिमा
कानू यस् - नअ़ून (११२) व ल-क़द्
जाअहुम् रसूलुम् - मिन्हुम् फ़ - कज़्ज़बूहु
फ़ अ-ख़-ज़-हुमुल्-अ़ज़ाबु व हुम् ज़ालिमून
(११३) फ़कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु

النحل ١٦ — ٣٢٣ — ربما ١٤

الْاٰخِرَةِ ۚ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾
ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا
وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَاْتِىْ
كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً
مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ
بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا
يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪
وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ
عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ
فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَ
لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا
حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ

منزل

ह़लालन् त़य्यिबंव ص - वश्कुरू निअ़् - म - तल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु
तअ़्-बुदून (११४) इन्नमा ह़र्-र-म अ़लैकुमुलमैत-त वद्-द-म व लह़्मल्-ख़िन्ज़ीरि
व मा उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही ج फ़-मनिज़्तु़र-र ग़ै-र बाग़िंव-व ला
आ़दिन् फ़ - इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर् - रह़ीम (११५) व ला तक़ूलू
लिमा तसिफ़ु अल - सि-नतुकुमुल् - कज़ि - ब हाज़ा हलालुंव् - व हाज़ा
ह़रामुल् - लितफ़्तरू अ़ - लल्लाहिल् - कज़ि - ब ط इन्नल्लज़ी - न
यफ़्तरू - न अ़ - लल्लाहिल् - कज़ि - ब ला युफ़्लिह़ून ط (११६)
मताअ़ुन् क़लीलुंव् ص - व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (११७)

★रु. १४/२० आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देता। (१०७) यही लोग हैं, जिन के दिलों पर और कानों पर और आंखों पर ख़ुदा ने मुहर लगा रखी है और यही ग़फ़्लत में पड़े हुए हैं। (१०८) कुछ शक नहीं कि ये आख़िरत में घाटा उठाने वाले होंगे। (१०९) फिर जिन लोगों ने तक्लीफ़ें उठाने के बाद वतन छोड़ा, फिर जिहाद किये और जमे रहे, तुम्हारा परवरदिगार उन को बेशक इन (आज़माइशों) के बाद बख़्शने वाला (और उन पर) रहमत करने वाला है। (११०)★

जिस दिन हर नफ़्स (शख़्स, जीव) अपनी तरफ़ से झगड़ा करने आएगा और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी का नुक़्सान नहीं किया जाएगा। (१११) और ख़ुदा एक बस्ती की मिसाल बयान फ़रमाता है कि (हर तरह) अम्न-चैन से वसती थी, हर तरफ़ से फैलाव के साथ रोज़ी चली आती थी, मगर उन लोगों ने ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री की, तो ख़ुदा ने उन के आमाल की वजह से उन को भूख और ख़ौफ़ का लिबास पहना कर (ना-शुक्री का) मज़ा चखा दिया। (११२) और उन के पास उन्हीं में से एक पैग़म्बर आया, तो उन्हों ने उस को झुठलाया, सो उन को अज़ाब ने आ पकड़ा और वे ज़ालिम थे। (११३) पस ख़ुदा ने जो तुम को पाक हलाल रोज़ी दी है, उसे खाओ और अल्लाह की नेमतों का शुक्र करो, अगर उसी की इबादत करते हो। (११४) उस ने तुम पर मुर्दार और लहू और सुअर का गोश्त हराम कर दिया है और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए (उस को भी), हां अगर कोई ना-चार हो जाए तो बशर्ते कि गुनाह करने वाला न हो और न हद से निकलने वाला हो, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (११५) और यों ही झूठ, जो तुम्हारी ज़ुबान पर आ जाए, मत कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधने लगो। जो लोग ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधते हैं, उन का भला नहीं होगा। (११६) (झूठ का) फ़ायदा तो थोड़ा सा है, मगर (उस के बदले) उनको दर्दनाक अज़ाब (बहुत) होगा। (११७) और जो चीज़ें हम तुमको

★रु. १४/२० आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अ-लल्लज़ी-न हादू ह़र्रम्ना मा क़-स़स़्ना अ़लै-क मिन् क़ब्लु ج व मा
ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (११८) सुम्-म इन्-न
रब्ब-क लिल्लज़ी-न अ़मिलुस्सू-अ बिजहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्बअ्-दि ज़ालि-क व
अस्-लहू ۩ इन्-न रब्ब-क मिम्बअ्-दिहा ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम ★ (११९)
इन्-न इब्राही-म का-न उम्म-तन्
क़ानितल्-लिल्लाहि ह़नीफ़न् ط व
लम् यकु मिनल्-मुश्रिकीन ۩ (१२०)
शाकिरल्-लि-अन्-अुमिही ط इज्तबाहु व
हदाहु इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (१२१)
व आतैनाहु फ़िद्दुन्या ह़-स-न-तन् ط व
इन्नहू फ़िल्आख़िरति लमिनस्-सालिहीन ط
(१२२) सुम्-म औहैना इलै-क अनित्तबिअ्-
मिल्ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् ط व मा का-न
मिनल्-मुश्रिकीन (१२३) इन्नमा
जुअिलस्-सब्तु अ़-लल्-लज़ीनख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ط
व इन्-न रब्ब-क ल-यह़्कुमु बैनहुम्
यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (१२४) उद्अु इला
सबीलि रब्बि-क बिल्हिक्मति वल्मौअिज़तिल्-ह़-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लती
हि-य अह़्सनु ط इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अन् सबीलिही व
हु-व अअ्-लमु बिल्मुह-तदीन (१२५) व इन् आ़क़ब्तुम् फ़-आ़क़िबू बिमिस्लि
मा अूक़िब्तुम् बिही ط व लइन् स़-बर्तुम् लहु-व ख़ैरुल्लिस्साबिरीन (१२६)
वस्बिर् व मा स़ब्रु-क इल्ला बिल्लाहि व ला तह़्-ज़न्
अ़लैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्-कुरून (१२७)
इन्नल्ला-ह म-अ़ल्लज़ीनत्-त-क़ौवल्लज़ी-न हुम् मुह़्सिनून ★ (१२८)

النحل ١٦ — ٢٢٤ — ربما ١٤

اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ
مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾
ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ اِنَّ
اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۗ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾
شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۗ اِجْتَبٰهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيْنٰهُ
فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ
اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۗ وَاِنَّ
رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾
اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ
جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا
بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۗ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾
وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ
فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ
الَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾

منزل

★रु. १५/२१ आ ९ ★रु. १६/२२ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पहले बयान कर चुके हैं वह यहूदियों पर ह़राम कर दी थीं और हम ने उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही अपने आप पर ज़ुल्म किया करते थे। (११८) फिर जिन लोगों ने नादानी से बुरा काम किया, फिर उसके बाद तौबा की और नेक हो गये, तो तुम्हारा परवरदिगार (उन को) तौबा करने और नेक हो जाने के बाद उन को बख़्शने वाला और (उन पर) रहमत करने वाला है। (११९)★

बेशक इब्राहीम (लोगों के) इमाम (और) ख़ुदा के फ़रमांबरदार थे, जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे।[1] (१२०) उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे। ख़ुदा ने उन को चुन लिया था और (अपनी) सीधी राह पर चलाया था। (१२१) और हम ने उन को दुनिया में भी ख़ूबी दी थी और वह आख़िरत में भी नेक लोगो में होंगे। (१२२) फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वह्य भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी अख़्तियार करो, जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे। (१२३) हफ़्ते (शनिवार) का दिन तो उन्हीं लोगों के लिए मुक़र्रर किया गया था, जिन्हों ने उस में इख़्तिलाफ़ किया और तुम्हारा परवरदिगार क़ियामत के दिन उन बातों का फ़ैसला कर देगा, जिन से वे इख़्तिलाफ़ करते थे। (१२४) (ऐ पैग़म्बर!) लोगों को दानिश और नेक नसीहत से अपने परवरदिगार के रास्ते की तरफ़ बुलाओ और बहुत ही अच्छे तरीक़े से उन से मुनाज़रा करो। जो उस के रास्ते से भटक गया तुम्हारा परवरदिगार उसे भी ख़ूब जानता है और जो रास्ते पर चलने वाले हैं, उन्हें भी ख़ूब जानता है। (१२५) अगर उन को तक्लीफ़ देनी चाहो, तो उतनी ही दो, जितनी तक्लीफ़ तुम को उन से पहुंची और अगर सब्र करो, तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत अच्छा है। (१२६) और सब्र ही करो और तुम्हारा सब्र भी ख़ुदा ही की मदद से है और उन के बारे में ग़म न करो और जो ये बुरी चालें चलते हैं, उस से तंगदिल न हो। (१२७) कुछ शक नहीं कि जो परहेज़गार हैं और जो नेक और भले हैं, ख़ुदा उन का मददगार है। (१२८)★

१. यानी हलाल और हराम में और दीन की बातों में असल मिल्लते इब्राहीम है और सब लोग जो कहते हैं आप को 'हनीफ़' और शिर्क करते हैं, वे आप की राह पर नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पन्द्रहवां पारः सुब्हानल्लज़ी

१७ सूरतु बनी इस्राई-ल ५०

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ६७१० अक्षर १५८२ शब्द, १११ आयतें और १२ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सुब्हानल्लज़ी अस्रा बिअ़ब्दिही लैलम्मिनल् - मस्जिदिल् - ह़रामि इलल् -
मस्जिदिल् - अक़्स़ल्लज़ी बारक्ना ह़ौलहू लिनुरियहू मिन् आयातिना
इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-बस़ीर (१) व आतैना मूसल्-किता-ब व ज-अ़ल्नाहु
हुदल्लिबनी इस्राई - ल अल्ला तत्तख़िज़ू मिन् दूनी वकीला ط (२)
ज़ुर्रिय्य-त़ मन् ह़-मल्ना म-अ़ नूह़िन् ط इन्नहू
का-न अ़ब्दन् शकूरा (३) व क़ज़ैना
इला बनी इस्राई - ल फ़िल्किताबि
लतुफ़्सिदुन्-न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल-तअ़्-लुन्-न
अ़ुलुव्वन् कबीरा (४) फ़-इज़ा जा-अ
वअ़्-दु ऊलाहुमा ब-अ़स्ना अ़लैकुम् अ़िबादल्लना
उली बअ़्सिन् शदीदिन् फ़ जासू
ख़िलालद्दियारि ط व का-न वअ़्-दम्-मफ़्अ़ूला
(५) सुम्-म र-दद्ना लकुमुल्कर्र-त़ अ़लैहिम्
व अम्दद्नाकुम् बि-अम्वालिव्-व बनी-न व
ज-अ़ल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा (६) इन्
अह़्-सन्तुम् अह़्-सन्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम्
व इन् अ-सअ्-तुम् फ़-लहा ط फ़ - इज़ा
जा-अ वअ़्-दुल्आख़िरति लियसूऊ वुजूहकुम् व लियद्ख़ुलुल्-मस्जि-द कमा
द-ख़लूहु अव्व-ल मर्रतिंव्-व लियुतब्बिरू मा अ़लौ तत्बीरा (७) अ़सा रब्बुकुम्
अंय्यर्-ह़-मकुम् ج व इन् अ़ुत्तुम् अ़ुद्ना ▨ व ज-अ़ल्ना ज-हन्न-म लिल्काफ़िरी-न
ह़स़ीरा (८) इन्-न हाज़ल्क़ुर्आ-न यह्दी लिल्लती हि-य अक़्वमु व युबश्शिरुल्-
मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ़्-मलूनस्-स़ालिह़ाति अन्-न लहुम् अज्-रन् कबीरा ل (९)

سبحٰن الذی ١٥ — ٢٢٥ — بنی اسرآءیل ١٧

سورۃ بنی اسرآءیل مکیۃ وھی مائۃ و احد عشرۃ اٰیۃ و اثنا عشر رکوعا
بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
سبحٰن الذی اسرٰی بعبدہ لیلا من المسجد الحرام
الی المسجد الاقصا الذی بٰرکنا حولہ لنریہ من اٰیٰتنا
انہ ھو السمیع البصیر ١ و اٰتینا موسی الکتٰب و جعلنٰہ
ھدی لبنی اسرآءیل الا تتخذوا من دونی وکیلا ٢ ذریۃ
من حملنا مع نوح انہ کان عبدا شکورا ٣ و قضینا الی
بنی اسرآءیل فی الکتٰب لتفسدن فی الارض مرتین و لتعلن
علوا کبیرا ٤ فاذا جآء وعد اولٰھما بعثنا علیکم عبادا لنا
اولی باس شدید فجاسوا خلٰل الدیار و کان وعدا مفعولا ٥
ثم رددنا لکم الکرۃ علیھم و امددنٰکم باموال و بنین و
جعلنٰکم اکثر نفیرا ٦ ان احسنتم احسنتم لانفسکم
و ان اساتم فلھا فاذا جآء وعد الاٰخرۃ لیسوءا وجوھکم
و لیدخلوا المسجد کما دخلوہ اول مرۃ و لیتبروا ما علوا
تتبیرا ٧ عسی ربکم ان یرحمکم و ان عدتم عدنا و جعلنا
جھنم للکٰفرین حصیرا ٨ ان ھٰذا القراٰن یھدی للتی
ھی اقوم و یبشر المؤمنین الذین یعملون الصٰلحٰت ان

▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१७ सूरः बनी इस्राईल ५०

सूरः बनी इस्राईल मक्की है और इस में एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है !

वह (ज़ात) पाक है, जो एक रात अपने बन्दे को मस्जिदुल हराम (यानी ख़ाना काबा) से मस्जिदे अक़्सा (यानी बैतुल मक़्दिस) तक, जिस के चारों तरफ़ हम ने बरकतें रखी हैं, ले गया, ताकि हम उसे अपनी (क़ुदरत की) निशानियां दिखाएं। बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (१) और हम ने मूसा को किताब इनायत की थी और उस को बनी इस्राईल के लिए रहनुमा मुक़र्रर किया था कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराना। (२) ऐ उन लोगों की औलाद! जिन को हम ने नूह के साथ (किश्ती में) सवार किया था ! बेशक नूह (हमारे) शुक्र-गुज़ार बन्दे थे। (३) और हम ने किताब में बनी इस्राईल से कह दिया था कि तुम ज़मीन में दो बार फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे। (४) पस जब पहले (वायदे) का वक्त आया, तो हम ने अपने सख़्त लड़ाई लड़ने वाले बन्दे तुम पर मुसल्लत कर दिए और वे शहरों के अन्दर फैल गये और वह वायदा पूरा हो कर रहा। (५) फिर हम ने दूसरी बार तुम को उन पर ग़लबा दिया और माल और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुम को बड़ी जमाअंत बना दिया (६) अगर तुम भला करोगे तो अपनी जानों के लिए करोगे और अगर बुरा करोगे तो (उन का) वबाल भी तुम्हारी ही जानों पर होगा, फिर जब दूसरे (वायदे) का वक़्त आया (तो हम ने फिर अपने बन्दे भेजे) ताकि तुम्हारे चेहरों को बिगाड़ दें और जिस तरह पहली बार मस्जिद (बैतुल मक़्दिस) में दाखिल हो गये थे, उसी तरह फिर उस में दाखिल हो जाएं और जिस चीज़ पर ग़लबा पाएं उसे तबाह कर दें। (७) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही (हरकतें) करोगे तो हम भी वही (पहला-सा सुलूक) करेंगे ▨ और हमने जहन्नम को काफ़िरों के लिए क़ैदख़ाना बना रखा है। (८) यह क़ुरआन वह रास्ता दिखाता है, जो सब से सीधा है और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं, ख़ुशख़बरी देता है कि उन के लिए बड़ा अज्र है। (९) और

▨ व. ला.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति अअ्-तद्ना लहुम् अ़ज़ाबन्
अलीमा ★ (१०) व यद्अुल् - इन्सानु बिश्शर्रि दुआ-अहू बिल्ख़ैरि ♭ व
कानल्-इन्सानु अ़जूला (११) व ज-अ़ल्नल्लै-ल वन्नहा-र आयतैनि फ़-महौना
आयतल्लैलि व ज-अ़ल्ना आयतन्नहारि मुब्सि-र-तल् - लि-तब्तग़ू फ़ज़्लम्मिर्-
रब्बिकुम् व लितअ्-लमू अ़-द-दस्सिनी-न
वल्हिसा-ब ♭ व कुल्-ल शैइन् फ़स्सल्नाहु
तफ़्सीला (१२) व कुल्-ल इन्सानिन्
अल्ज़म्नाहु ताइ-रहू फ़ी अुनुक़िही ♭ व
नुख़्रिजु लहू यौमल्-क़ियामति किताबंय्यल्क़ाहु
मन्शूरा (१३) इक़्रअ् किता-ब - क ♭
कफ़ा बिनफ़्सिकल्-यौ-म अ़लै-क हसीबा ♭
(१४) मनिह्तदा फ़इन्नमा यह्तदी
लिनफ़्सिही ♭ व मन् ज़ल् - ल फ़-इन्नमा
यज़िल्लु अ़लैहा ♭ व ला तज़िरु
वाज़ि-रतुंव्विज़्-र उख़रा ♭ व मा कुन्ना
मुअ़ज़्ज़िबी-न हत्ता नब्-अ-स रसूला (१५)
व इज़ा अ-रद्ना अन्नुह्लि-क क़र्य-तन् अ-मर्ना मुत-रफ़ीहा फ़-फ़-सक़ू फ़ीहा
फ़-हक़्-क़ अ़लैहल्क़ौलु फ़-दम्मर्नाहा तद्मीरा (१६) व कम् अह्-लक्ना
मिनल्क़ुरूनि मिम्बअ्-दि नूहिन् ♭ व कफ़ा बिरब्बि-क बिज़ुनूबि अ़िबादिही
ख़बीरम्-बसीरा (१७) मन् का-न युरीदुल्-आ़जि-ल-त अ़ज्जल्ना लहू
फ़ीहा मा नशाउ लिमन् नुरीदु सुम्-म-ज-अ़ल्ना लहू जहन्न-म ♭ यस्लाहा
मज़्मूमम्-मद्हूरा (१८) व मन् अरादल् - आख़ि-र-त व सआ़ लहा
सअ्-यहा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़उलाइ-क का-न सअ्-युहुम् मश्कूरा (१९)

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ ١٥ ٢٢٦ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْل

لَهُمْ اَجْرًا كَبِیْرًا ۙ﴿۹﴾ وَّ اَنَّ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ﴿۱۰﴾ وَ یَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَیْرِ ؕ
وَ كَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿۱۱﴾ وَ جَعَلْنَا الَّیْلَ وَ النَّهَارَ اٰیَتَیْنِ
فَمَحَوْنَاۤ اٰیَةَ الَّیْلِ وَ جَعَلْنَاۤ اٰیَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِیْنَ وَ الْحِسَابَ ؕ وَ كُلَّ شَیْءٍ
فَصَّلْنٰهُ تَفْصِیْلًا ﴿۱۲﴾ وَ كُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ ؕ
وَ نُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ
كَفٰى بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا ﴿ؕ۱۴﴾ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ؕ وَ لَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَ مَا كُنَّا مُعَذِّبِیْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾
وَ اِذَاۤ اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْیَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِیْهَا فَفَسَقُوْا فِیْهَا
فَحَقَّ عَلَیْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِیْرًا ﴿۱۶﴾ وَ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ
الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَ كَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا
بَصِیْرًا ﴿۱۷﴾ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِیْهَا مَا نَشَآءُ
لِمَنْ نُّرِیْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ یَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَ مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ سَعٰى لَهَا سَعْیَهَا وَ هُوَ
مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْیُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ

★रु. १/१ आ १०
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह भी (बताता है) कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०)★

और इंसान जिस तरह (जल्दी से) भलाई मांगता है, इसी तरह बुराई मांगता है और इंसान जल्दबाज़ (पैदा हुआ) है। (११) और हम ने दिन और रात को दो निशानियां बनाया है, रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को रोशन, ताकि तुम अपने परवरदिगार का फ़ज़्ल (यानी) रोज़ी तलाश करो और वर्षों की गिनती और हिसाब जानो और हम ने हर चीज़ की (अच्छी तरह) तफ़्सील कर दी है। (१२) और हमने हर इंसान के आमाल को (किताब की सूरत में) उस के गले में लटका दिया है और क़ियामत के दिन (वह) किताब उसे निकाल दिखाएंगे, जिसे वह खुला देखेगा। (१३) कहा जाएगा (कि) अपनी किताब पढ़ ले, तू आज अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफ़ी है। (१४) जो शख़्स हिदायत अपनाता है, तो अपने लिए अपनाता है और जो गुमराह होता है, तो गुमराही का नुक़सान भी उसी को होगा और कोई शख़्स किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा और जब तक हम पैग़म्बर न भेज लें, अज़ाब नहीं दिया करते। (१५) और जब हमारा इरादा किसी बस्ती के हलाक करने का हुआ तो वहां के ख़ुशहाल लोगों को (गंदी बातों पर) लगा दिया, तो वे ना-फ़रमानियां करते रहे। फिर उस पर (अज़ाब का) हुक्म साबित हो गया और हमने उसे हलाक कर डाला। (१६) और हमने नूह के बाद बहुत सी उम्मतों को हलाक कर डाला और तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने वाला काफ़ी है। (१७) जो शख़्स दुनिया (की ख़ुशहाली) का ख़्वाहिशमंद हो तो हम उस में से जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं, जल्द दे देते हैं, फिर उस के लिए जहन्नम को (ठिकाना) मुक़र्रर कर रखा है, जिस में नफ़रीन सुन कर और (ख़ुदा की दरगाह से) रांदा हो कर दाख़िल होगा। (१८) और जो शख़्स आख़िरत की तलब में हो और उस में इतनी कोशिश करे जितनी वह कर सकता है और वह मोमिन भी हो तो ऐसे ही लोगों की कोशिश ठिकाने लगती है। (१९) हम उन को और उन

★रु. १/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुल्लन्नुमिद्दु हाउलाइ व हाउलाइ मिन् अता - इ रब्बि - क ط व मा
का-न अताउ रब्बि-क मह्ज़ूरा (२०) उन्ज़ुर् कै-फ़ फ़ज़्ज़लना बअ्-ज़हुम् अला
बअ्-ज़िन् ط व लल्आख़िरतु अक्बरु द-र-जातिंव-व अक्बरु तफ़्ज़ीला (२१) ला
तज्अल् म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-तक़्अु-द मज़्मूमम्-मख़्ज़ूला ★ (२२)
व क़ज़ा रब्बु-क अल्ला तअ्-बुदू इल्ला
इय्याहु व बिल् - वालिदैनि इह्सानन् ط
इम्मा यब्लुग़न्-न अिन्दकल्-कि-ब-र अ-ह्दुहुमा
औ किलाहुमा फ़ला तक़ुल्लहुमा उफ़्फ़िंव्-व ला
तन्हर्हुमा व क़ुल्लहुमा क़ौलन् करीमा
(२३) वख़्फ़िज़् लहुमा जनाहज़्-ज़ुल्लि
मिनर्रह्मति व क़ुर्रब्बिर् - ह्म्हुमा कमा
रब्बयानी सग़ीरा ط (२४) रब्बुकुम्
अअ् - लमु बिमा फ़ी नुफ़ूसिकुम् ط इन्
तकूनू सालिही-न फ़-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न
ग़फ़ूरा (२५) व आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू
वल्मिस्की-न वब्नस्सबीलि व ला तुबज़्ज़िर्
तब्ज़ीरा (२६) इन्नल् - मुबज़्ज़िरी - न कानू इख़्वानश् - शयातीनि ط
व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफ़ूरा (२७) व इम्मा तुअ् - रिज़न-न
अन्हुमुब्तिग़ा-अ रह्मतिम्-मिर् - रब्बि-क तर्जूहा फ़-क़ुल्लहुम् क़ौलम्-मैसूरा
(२८) व ला तज-अल् य-द-क मग़्लूल-तन् इला अुनुक़ि-क व ला तब्सुतहा
कुल्लल्बस्ति फ़-तक़्अु-द मलूमम्-मह्सूरा (२९) इन्-न रब्ब-क यब्सुतुर्रिज़-क़
लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु ط इन्नहू का-न बिअिबादिही ख़बीरम् - बसीरा
★(३०) व ला तक़्तुलू औलादकुम् ख़श् - य - त इम्लाक़िन् ط नह्नु
नर्ज़ुक़ुहुम् व इय्याकुम् ط इन-न क़त्-लहुम् का-न ख़ित्-अन् कबीरा (३१)
व ला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का-न फ़ाहि-श-तन् ط व सा-अ सबीला (३२)

سبحٰن الذی ۱۵ ۲۲۸ بنی اسرآءیل ۱۷

وَّهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾
اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ
وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا
مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ
وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ
الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ
لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ
الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ
عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿۲۸﴾
وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ
خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً
كَبِيْرًا ﴿۳۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾

★रु. २/२ आ १२ ★रु. ३/३ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

को, सब को तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शिश से मदद देते हैं और तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शिश (किसी से) रुकी हुई नहीं। (२०) देखो हम ने किस तरह कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और आख़िरत दर्जों में (दुनिया से) बहुत बरतर और बरतरी में कहीं बढ़ कर है। (२१) और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि मलामतें सुन कर और बेकस हो कर बैठे रह जाओगे। (२२)★

और तुम्हारे परवरदिगार ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। और मां-बाप के साथ भलाई करते रहो। अगर उन में से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन को उफ़ तक न कहना और न उन्हें झिड़कना और उन से बात अदब के साथ करना।[1] (२३) और नियाज़मंदी के साथ उन के आगे झुके रहो और उन के हक़ में दुआ करो कि ऐ परवरदिगार! जैसा उन्हों ने मुझे बचपन में (मुहब्बत से) पाला-पोसा है, तू भी उन (के हाल) पर रहमत फ़रमा। (२४) जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, तुम्हारा परवरदिगार उसे अच्छी तरह जानता है। अगर तुम नेक होगे, तो वह रुजूअ लाने वालों को बख़्श देने वाला है। (२५) और रिश्तेदारों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को उन का हक़ अदा करो और फ़िज़ूलख़र्ची से माल न उड़ाओ। (२६) कि फ़िज़ूलख़र्ची करने वाले तो शैतान के भाई हैं और शैतान अपने परवरदिगार (की नेमतों) का कुफ़्रान करने वाला (यानी ना-शुक्रा) है। (२७) और अगर तुम अपने परवरदिगार की रहमत के इन्तिज़ार में, जिस की तुम्हें उम्मीद हो, उन (हक़दारों) की तरफ़ तवज्जोह न कर सको, तो उन से नर्मी से बात कह दिया करो।[2] (२८) और अपने हाथ को न तो गरदन से बंधा हुआ (यानी बहुत तंग) कर लो (कि किसी को कुछ दो ही नहीं) और न बिल्कुल खोल ही दो (कि सभी कुछ दे डालो और अंजाम यह हो) कि मलामत किए हुए और निचले हो कर बैठ जाओ। (२९) बेशक तुम्हारा परवरदिगार, जिस की रोज़ी चाहता है, फैला देता है और (जिस की रोज़ी चाहता है) तंग कर देता है। वह अपने बन्दों से ख़बरदार है और (उनको) देख रहा है★(३०)

और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से क़त्ल न करना, (क्योंकि) उन को और तुम को हम ही रोज़ी देते हैं। कुछ शक नहीं कि इन का मार डालना सख़्त गुनाह है। (३१) और ज़िना

---

१. यानी रंज व अफ़सोस और ना-ख़ुशी का कलिमा मुंह से न निकालना और न घुड़कना-झिड़कना और यह जो फ़रमाया कि बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन को उफ़ तक न कहना, यह इस लिए कि बुढ़ापे में मां-बाप की कुछ क़द्र और परवाह नहीं की जाती। उन की इज़्ज़त, अदब और एहतराम करना, चाहे वे जवान हों या बूढ़े, दोनों हालतों में फ़र्ज़ है। इन्सानियत और सआदतमंदी का तक़ाज़ा भी यही है कि मां-बाप को ख़ुश रखा जाए, उन का अदब किया जाए। वह शख़्स निहायत ख़ुशनसीब है, जो मां-बाप की ख़िदमत करे और उन को ख़ुश रखे।

२. यानी देने को कुछ पास नहीं है और हाथ तंग होने की वजह से उन की तरफ़ तवज्जोह नहीं कर सकते और चाहते यह हो कि ख़ुदा दे तो उन को दो। तो इस शक्ल में उन को नर्मी से समझा दिया करो कि ख़ुदा के फ़ज़्ल से माल हाथ आता है तो तुम को भी देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ला तक़्तुलुन्-नफ़्सल्लती हर्र-मल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि ؕ व मन् क़ुति-ल
मज़्लूमन् फ़-क़द् ज-अल्ना लिवलिय्यिही सुल्तानन् फ़ला युस्रिफ़्-फ़िल्क़त्लि ؕ
इन्नहू का-न मन्सूरा (३३) व ला तक़्रबू मालल् - यतीमि इल्ला
बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु - ग़ अशुद्दहू ۖص व औफ़ू बिल्अह्दि ۚ
इन्नल्अह् - द का - न मस्ऊला (३४)
व औफ़ुल्कै-ल इज़ा किल्तुम् व ज़िनू
बिल् - क़िस्तासिल् - मुस्तक़ीमि ؕ ज़ालि - क
ख़ैरुंव-व अह्सनु तअ्-वीला (३५) व ला
तक़्फ़ु मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् ؕ
इन्नस्सम्-अ वल्ब-स-र वल्फ़ुआ - द कुल्लु
उलाइ-क का-न अन्हु मस्ऊला (३६)
व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-र-हन् ۚ इन्न-क
लन् तख़्रिक़ल्-अर्-ज़ व लन् तब्लुग़ल्-जिबा-ल
तूला (३७) कुल्लु ज़ालि-क का-न सय्यिउहू
अिन्-द रब्बि-क मक्रूहा (३८) ज़ालि-क
मिम्मा औहा इलै-क रब्बु-क मिनल्हिक्मति ؕ
व ला तज्अल् म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़ तुल्क़ा फ़ी ज-हन्न-म मलूमम्-
मद्हूरा (३९) अ-फ़-अस्फ़ाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-ख़-ज़ मिनल्-मलाइकति
इनासन् ؕ इन्नकुम् ल - तक़ूलू-न क़ौलन् अज़ीमा ★ (४०) व ल - क़द्
सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल् - क़ुरआनि लि - यज़्ज़क्करू ؕ व मा यज़ीदुहुम् इल्ला
नुफ़ूरा (४१) क़ुल् लौ का-न म-अहू आलिहतुन् कमा यक़ूलू-न इज़ल्लब्तग़ौ
इला ज़िल्अर्शि सबीला (४२) सुब्हानहू व तआला अम्मा यक़ूलू-न
अुलुव्वन् कबीरा (४३) तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्-सब्अु वल्अर्ज़ु व मन्
फ़ीहिन् - न ؕ व इम्मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्ला
तफ़्क़हू - न तस्बीहहुम् ؕ इन्नहू का - न हलीमन् ग़फ़ूरा (४४)

سبحٰن الذی ١٥ ٢٢٨ بنی اسرآءیل ١٧

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا
فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
مَنْصُوْرًا ۝٣٣ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى
يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝٣٤ وَاَوْفُوا
الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ
اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝٣٥ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ
وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝٣٦ وَلَا تَمْشِ فِي
الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝٣٧
كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝٣٨ ذٰلِكَ مِمَّاۤ اَوْحٰى
اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ
جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝٣٩ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝٤٠ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝٤١ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ
كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ۝٤٢ سُبْحٰنَهٗ وَ
تَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝٤٣ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ
وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ
تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝٤٤ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا

منزل ٤

★रु. ४/४ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के पास भी न जाना कि वह बे-हयाई और बुरी राह है। (३२) और जिस जानदार का मारना ख़ुदा ने हराम किया है, उसे क़त्ल न करना मगर जायज़ तौर पर (यानी शरीअत के फ़त्वे के मुताबिक़) और जो शख़्स ज़ुल्म से क़त्ल किया जाए, हम ने उस के वारिस को अख़्तियार दिया है (कि ज़ालिम क़ातिल से बदला ले) तो उस को चाहिए कि क़त्ल (के क़िसास) में ज़्यादती न करे कि वह मंसूर व फ़त्हयाब है। (३३) और यतीम के माल के पास भी न फटकना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत बेहतर हो, यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और अहद (वायदे) को पूरा करो कि अहद के बारे में ज़रूर पूछ होगी। (३४) और जब (कोई चीज़) नाप कर देने लगो, तो पैमाना पूरा भरा करो और (जब तोल कर दो, तो) तराज़ू सीधी रख कर तोला करो। यह बहुत अच्छी बात है और अंजाम के लिहाज़ से भी बहुत बेहतर है। (३५) और (ऐ बन्दे!) जिस चीज़ का तुझे इल्म नहीं, उस के पीछे न पड़ कि कान और आंख और दिल इन सब (अंगों) से ज़रूर पूछ-ताछ होगी। (३६) और ज़मीन पर अकड़ कर (और तन कर) मत चल कि तू ज़मीन को फाड़ तो नहीं डालेगा और न लंबा हो कर पहाड़ों (की चोटी) तक पहुंच जाएगा। (३७) इन सब (आदतों) की बुराई तेरे परवरदिगार के नज़दीक बहुत ना-पसन्द है। (३८) (ऐ पैग़म्बर!) यह उन (हिदायतों) में से हैं जो ख़ुदा ने हिक्मत की बातें तुम्हारी तरफ़ वह्य की हैं और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि (ऐसा करने से) मलामत किया हुआ और (ख़ुदा की दरगाह से) धुत्कारा हुआ बना कर जहन्नम में डाल दिए जाओगे। (३९) (मुश्रिको!) क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम को तो लड़के दिए और ख़ुद फ़रिश्तों को बेटियां बनाया। कुछ शक नहीं कि (यह) तुम बड़ी (ना-मुनासिब) बात कहते हो। (४०) ★

और हम ने इस क़ुरआन में तरह-तरह की बातें बयान की हैं, ताकि लोग नसीहत पकड़ें, मगर वे इस से और बिदक जाते हैं। (४१) कह दो कि अगर ख़ुदा के साथ और माबूद होते, जैसा कि ये कहते हैं, तो वे ज़रूर (ख़ुदा-ए-) मालिके अर्श की तरफ़ (लड़ने-भिड़ने के लिए) रास्ता निकालते। (४२) वह पाक है और जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस से (इस का रुत्बा) बहुत ऊंचा है। (४३) सातों आसमान और ज़मीन और जो लोग उन में हैं, सब उसी की तस्बीह करते हैं और (मख़्लूक़ात में से) कोई चीज़ नहीं मगर उस की तारीफ़ के साथ तस्बीह करती है, लेकिन तुम उन की तस्बीह को नहीं समझते. बेशक वह बुर्दबार (और) बख़्शने वाला है। (४४) और जब

★रु. ४/४ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा क़-रअ्तल्-क़ुर्आ-न ज-अ़ल्ना बै-न-क व बैनल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति ह़िजाबम्-मस्तूरा (४५) व ज-अ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्-रन् व इज़ा ज़-कर्-त रब्ब-क फ़िल्क़ुर्आनि वह़्-दहू वल्लौ अ़ला अद्बारिहिम् नुफ़ूरा (४६) नह़्नु अअ्-लमु बिमा यस्तमिअू-न बिही इज़् यस्तमिअू-न इलै-क व इज़् हुम् नज्वा इज़् यक़ूलुज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्ह़ूरा (४७) उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला ●(४८) व क़ालू अ इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव-व रुफ़ातन् अ इन्ना ल-मब्अूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा (४९) क़ुल् कूनू ह़िजा-र-तन् औ ह़दीदा (५०) औ ख़ल्क़म्-मिम्मा यक्बुरु फ़ी सुदूरिकुम् फ़-स-यक़ूलू-न मंय्युअीदुना क़ुलिल्लज़ी फ़-त-रकुम् अव्व-ल मर्रतिन् फ़ सयुन्ग़िज़ू-न इलै-क रुऊसहुम् व यक़ूलू-न मता हु-व क़ुल् अ़सा अंय्यकू-न क़रीबा (५१) यौ-म यद्अूकुम् फ़-तस्तजीबू-न बिह़म्दिही व तज़ुन्नू-न इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीला ★(५२) व क़ुलि लिअ़िबादी यक़ूलुल्लती हि-य अह़्सनु इन्नश्शैता-न यन्ज़ग़ु बैनहुम् इन्नश्शैता-न का-न लिल्इन्सानि अ़दुव्वम्-मुबीना (५३) रब्बुकुम् अअ्-लमु बिकुम् इंय्यशअ् यर्ह़म्कुम् औ इंय्यशअ् युअ़ज़्ज़िब्कुम् व मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् वकीला (५४) व रब्बु-क अअ्-लमु बिमन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व ल-क़द् फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़न्नबिय्यी-न अ़ला बअ्-ज़िंव-व आतैना दावू-द ज़बूरा (५५) क़ुलिद्अुल्लज़ी-न ज़-अ़म्तुम् मिन् दूनिही फ़ला यम्लिकू-न कश्-फ़ज़्ज़ुर्रि अ़न्कुम् व ला तह़्वीला (५६)

بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓي اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٥٢﴾ وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम क़ुरआन पढ़ा करते हो, तो हम तुम में और उन लोगों में जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हिजाब (पर्दा) पर हिजाब कर देते हैं। (४५) और उन के दिलों पर पर्दा डाल देते हैं कि उसे समझ न सकें और उन के कानों में बोझ पैदा कर देते हैं और जब तुम क़ुरआन में अपने परवरदिगार यकता का ज़िक्र करते हो, तो वे बिदक जाते और पीठ फेर कर चल देते हैं। (४६) ये लोग जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं; तो जिस नीयत से ये सुनते हैं, हम उसे ख़ूब जानते हैं और जब ये फ़ुसी करते हैं, (यानी) जब ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक ऐसे शख़्स की पैरवी करते हो, जिस पर जादू किया गया है। (४७) देखो, उन्हों ने किस-किस तरह की तुम्हारे बारे में बातें बनायीं, सो ये गुमराह हो रहे हैं और रास्ता नहीं पा सकते ●(४८) और कहते हैं कि जब हम (मर कर बोसीदा) हड्डियां और चूर-चूर हो जाएंगे, तो क्या नये सिरे से पैदा हो कर उठेंगे। (४९) कह दो कि (चाहे तुम) पत्थर हो जाओ या लोहा, (५०) या कोई और चीज़, जो तुम्हारे नज़दीक (पत्थर लोहे से भी) बड़ी (सख़्त) हो, (झट कहेंगे) कि (भला) हमें दोबारा कौन जिलाएगा? कह दो वही जिस ने पहली बार पैदा किया, तो (ताज्जुब से) तुम्हारे आगे सर हिलाएंगे और पूछेंगे कि ऐसा कब होगा? कह दो उम्मीद है कि जल्द होगा। (५१) जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की तारीफ़ के साथ जवाब दोगे और ख़्याल करोगे कि तुम (दुनिया में) बहुत कम (मुद्दत) रहे। (५२) ★

और मेरे बन्दों से कह दो कि (लोगों से) ऐसी बातें कहा करें, जो बहुत पसंदीदा हों, क्योंकि शैतान (बुरी बातों से) उन में फ़साद डलवा देता है। कुछ शक नहीं कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५३) तुम्हारा परवरदिगार तुम को ख़ूब जानता है। अगर चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे और हम ने तुम को उन पर दारोग़ा (बना कर) नहीं भेजा। (५४) और जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, तुम्हारा परवरदिगार उन्हें ख़ूब जानता है। और हमने कुछ पैग़म्बरों को कुछ पर फ़ज़ीलत बख़्शी और दाऊद को ज़बूर दी। (५५) कहो कि (मुश्रिको!) जिन लोगों के बारे में तुम्हें (माबूद होने का) ख़्याल है, उन को बुला देखो। वह तुम से तक्लीफ़ के दूर करने या उस को बदल देने का कुछ अख़्तियार नहीं रखते। (५६) ये लोग,

●रुबुअ् १/४ ★रु. ५/५ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उलाइकल्लज़ी-न यद्अू-न यब्तग़ू-न इला रब्बिहिमुल् - वसी-ल - त़ अय्युहुम्
अक़रबु व यर्जू-न रह़्म-तहू व यख़ाफ़ू-न अज़ाबहू ط इन्-न अज़ा-ब रब्बि-क
का-न मह़्ज़ूरा (५७) व इम्मिन् क़र्यतिन् इल्ला नह़्नु मुह्लिकूहा क़ब्-ल
यौमिल्क़ियामति औ मुअज़्ज़िबूहा अज़ाबन् शदीदा ط का - न ज़ालि - क
फ़िल्किताबि मस्तूरा (५८) व मा
म-न-अ्ना अन्नुर्सि-ल बिल्आयाति इल्ला अन्
कज़्ज़ - ब बिहल् - अव्वलू-न ط व आतैना
समूदन्ना-क़-त मुब्सि-र-तन् फ़-ज़-लमू बिहा ط व
मा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तख़्वीफ़ा
(५९) व इज़् क़ुलना ल-क इन्-न रब्ब-क
अह़ा-त़ बिन्नासि ط व मा ज-अ़ल्नर्रुअ-यल्लती
अरैना - क इल्ला फ़ित-न-तल् - लिन्नासि
वश्श-ज-र-तल् - मल्अून-त फ़िल्क़ुर्आनि ط व
नुख़व्विफ़ुहुम् ج फ़मा यज़ीदुहुम् इल्ला
तुग़यानन् कबीरा ★ (६०) व इज़्
क़ुलना लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआद - म
फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स ط क़ा-ल अ अस्जुदु लिमन् ख़-लक़्-त तीना ج (६१)
क़ा-ल अ-रऐ-त-क हाज़ल्लज़ी कर्रम्-त अ-लय-य ز लइन् अख़्ख़र्तनि इला
यौमिल्क़ियामति ल-अह़-तनिकन्-न ज़ुर्रिय्य-तहू इल्ला क़लीला (६२) क़ालज़्हब्
फ़-मन् तबि-अ-क मिन्हुम् फ़-इन्-न ज-हन्न-म जज़ाउकुम् जज़ाअम्-मौफ़ूरा (६३)
वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्त-तअ्-त मिन्हुम् बिसौति-क व अज्लिब् अलैहिम् बिख़ैलि-क व
रजिलि-क व शारिक्हुम् फ़िल्अम्वालि वल्औलादि व अ़िद्हुम् ط व मा
यअ़िदुहुमुश्-शैतानु इल्ला ग़ुरूरा (६४) इन्-न अिबादी लै-स ल-क अलैहिम्
सुल्तानुन् ط व कफ़ा बिरब्बि-क वकीला (६५) रब्बुकुमुल्लज़ी युज़्जी लकुमुल्फ़ुल्-क
फ़िल्बह़्रि लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही ط इन्नहू का-न बिकुम् रह़ीमा (६६)

سبحن الذي ١٥ ٢٢٠ بني اسراءيل ١٧

الى ربهم الوسيلة ايهم اقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه ان
عذاب ربك كان محذورا ٥٧ وان من قرية الا نحن مهلكوها قبل
يوم القيمة او معذبوها عذابا شديدا كان ذلك في الكتب
مسطورا ٥٨ وما منعنا ان نرسل بالايت الا ان كذب بها الاولون
واتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها وما نرسل بالايت الا
تخويفا ٥٩ واذ قلنا لك ان ربك احاط بالناس وما جعلنا الرءيا
التي ارينك الا فتنة للناس والشجرة الملعونة في القران و
نخوفهم فما يزيدهم الا طغيانا كبيرا ٦٠ واذ قلنا للملئكة اسجدوا
لادم فسجدوا الا ابليس قال ءاسجد لمن خلقت طينا ٦١ قال
ارءيتك هذا الذي كرمت علي لئن اخرتن الى يوم القيمة
لاحتنكن ذريته الا قليلا ٦٢ قال اذهب فمن تبعك منهم فان
جهنم جزاؤكم جزاء موفورا ٦٣ واستفزز من استطعت منهم
بصوتك واجلب عليهم بخيلك ورجلك وشاركهم في الاموال
والاولاد وعدهم وما يعدهم الشيطن الا غرورا ٦٤ ان عبادي
ليس لك عليهم سلطن وكفى بربك وكيلا ٦٥ ربكم الذي
يزجي لكم الفلك في البحر لتبتغوا من فضله انه كان بكم
رحيما ٦٦ واذا مسكم الضر في البحر ضل من تدعون الا اياه

ع ٨ ٦

منزل

★रु. ६/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिन को (ख़ुदा के सिवा) पुकारते हैं, वे ख़ुद अपने परवरदिगार के यहां (तक़र्रुब का) ज़रिया तलाश करते हैं कि कौन उन में (ख़ुदा का) ज़्यादा मुक़र्रब (होता) है और उस की रहमत के उम्मीदवार रहते हैं और उस के अज़ाब से ख़ौफ़ रखते हैं। बेशक तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब डरने की चीज़ है। (५७) और (कुफ़्र करने वालों की) कोई बस्ती नहीं मगर क़ियामत के दिन से पहले हम उसे हलाक कर देंगे या सख़्त अज़ाब से मुअज़्ज़ब करेंगे। यह किताब (यानी तक़्दीर) में लिखा जा चुका है। (५८) और हम ने निशानियां भेजनी इसलिए बन्द कर दीं कि अगले लोगों ने उन को झुठलाया था और हम ने समूद को ऊंटनी (सालेह की नुबूवत की खुली) निशानी दी, तो उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया और हम जो निशानियां भेजा करते हैं, तो डराने को। (५९) जब हम ने तुम से कहा कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों को एहाता किए हुए है और जो नुमाइश हम ने तुम्हें दिखायी, उस को लोगों के लिए आज़माइश किया और इसी तरह (थूहर के) पेड़ को, जिस पर क़ुरआन में लानत की गयी और हम उन्हें डराते हैं तो उन को उस से बड़ी (सख़्त) सरकशी पैदा हुई है। (६०)★

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने न किया, बोला, भला मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूं, जिस को तू ने मिट्टी से पैदा किया है। (६१) (और तान के तौर पर) कहने लगा कि देख तो यही वह है जिसे तू ने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है। अगर तू मुझ को क़ियामत के दिन तक की मोहलत दे, तो मैं थोड़े से शख़्सों के सिवा उस की (तमाम) औलाद की जड़ काटता रहूंगा। (६२) ख़ुदा ने फ़रमाया (यहां से) चला जा। जो शख़्स इन में से तेरी पैरवी करेगा, तो तुम सब की सज़ा जहन्नम है (और वह) पूरी सज़ा (है)। (६३) और उन में से जिस को बहका सके, अपनी आवाज़ से बहकाता रह और उन पर अपने सवारों और प्यादों को चढ़ा कर लाता रह और उन के माल और औलाद में शरीक होता रह और उन से वायदे करता रह और शैतान जो वायदे उन से करता है, सब धोखा है। (६४) जो मेरे (मुख़्लिस) बन्दे हैं, उन पर तेरा कुछ ज़ोर नहीं और ऐ (पैग़म्बर!) तुम्हारा परवरदिगार कारसाज़ काफ़ी है। (६५) तुम्हारा परवरदिगार वह है, जो तुम्हारे लिए दरिया में किश्तियां चलाता है, ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो। बेशक वह तुम पर मेहरबान है। (६६) और जब तुम को

★रु. ६/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़िलबह़्रि ज़ल्-ल मन् तद्‌ऊ - न इल्ला इय्याहु
फ़-लम्मा नज्जाकुम् इलल्बर्रि अअ्-रज़्तुम् व कानल्-इन्सानु कफ़ूरा (६७)
अ-फ़-अमिन्तुम् अंय्यख़्सि-फ़ बिकुम् जानिबल्-बर्रि औ युर्सि-ल अलैकुम् हासिबन्
सुम्-म ला तजिदू लकुम् वकीला (६८) अम् अमिन्तुम् अंय्युई-दकुम्

فلما نجىكم الى البر اعرضتم وكان الانسان كفورا ۝٦٧ افامنتم
ان يخسف بكم جانب البر او يرسل عليكم حاصبا ثم لا تجدوا لكم
وكيلا ۝٦٨ ام امنتم ان يعيدكم فيه تارة اخرى فيرسل عليكم
قاصفا من الريح فيغرقكم بما كفرتم ثم لا تجدوا لكم علينا به
تبيعا ۝٦٩ ولقد كرمنا بنى ادم وحملنهم فى البر والبحر ورزقنهم
من الطيبت وفضلنهم على كثير ممن خلقنا تفضيلا ۝٧٠ يوم
ندعوا كل اناس بامامهم فمن اوتى كتبه بيمينه فاولىك
يقرءون كتبهم ولا يظلمون فتيلا ۝٧١ ومن كان فى هذه اعمى فهو
فى الاخرة اعمى واضل سبيلا ۝٧٢ وان كادوا ليفتنونك عن الذى
اوحينا اليك لتفترى علينا غيره واذا لاتخذوك خليلا ۝٧٣ ولو
لا ان ثبتنك لقد كدت تركن اليهم شيا قليلا ۝٧٤ اذا لاذقنك
ضعف الحيوة وضعف الممات ثم لا تجد لك علينا نصيرا ۝٧٥ وان
كادوا ليستفزونك من الارض ليخرجوك منها واذا لا يلبثون
خلفك الا قليلا ۝٧٦ سنة من قد ارسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد
لسنتنا تحويلا ۝٧٧ اقم الصلوة لدلوك الشمس الى غسق اليل و
قران الفجر ان قران الفجر كان مشهودا ۝٧٨ ومن اليل فتهجد به
نافلة لك عسى ان يبعثك ربك مقاما محمودا ۝٧٩ وقل رب ادخلنى

منزل ٤

फ़ीहि ता-र-तन् उख़्रा फ़युर्सि-ल अलैकुम्
क़ासिफ़म्-मिनर्रीहि फ़ - युग़रिक़-कुम् बिमा
क-फ़र्तुम् सुम्-म ला तजिदू लकुम् अलैना
बिही तबीआ (६९) व ल-क़द् कर्रम्ना
बनी आद-म व ह़ - मल्नाहुम् फ़िल्बर्रि
वल्बह़्रि व र-ज़क़्नाहुम् मिनत्-तय्यिबाति
व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अला कसीरिम् - मिम्मन्
ख़-लक़्ना तफ़्ज़ीला ★(७०) यौ-म नद्‌ऊ
कुल्-ल उनासिम् - बिइमामिहिम् फ़ - मन्
ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़उलाइ-क
यक़्रऊ-न किताबहुम् व ला युज़्लमू-न
फ़तीला (७१) व मन् का-न फ़ी हाज़िही
अअ्-मा फ़हु-व फ़िल्आख़िरति अअ्-मा व अज़ल्लु सबीला (७२) व इन् कादू
ल-यफ़्तिनू-न-क अनिल्लज़ी औहैना इलै - क लितफ़्तरि-य अलैना ग़ैरहू
व इज़ल्लत्तख़-ज़ू-क ख़लीला (७३) व लौला अन् सब्बत्ना-क ल-क़द्
कित्-त तर्कनु इलैहिम् शैअन् क़लीला (७४) इज़ल्-ल अ - ज़क़्ना-क
ज़िअ्-फ़ल्-ह़याति व ज़िअ्-फ़ल्-ममाति सुम्-म ला तजिदु ल-क अलैना नसीरा
(७५) व इन् कादू ल-यस्तफ़िज़्ज़ू-न-क मिनल्अर्ज़ि लियुख़्रिजू-क मिन्हा
व इज़ल्ला यल्बसू-न ख़िलाफ़-क इल्ला क़लीला (७६) सुन्न-त मन् क़द्
अर्सल्ना क़ब्ल-क मिर्रुसुलिना व ला तजिदु लिसुन्नतिना तह़्वीला ★(७७)
अक़िमिस्सला-त लिदुलूकिश्-शम्सि इला ग़-सक़िल्लैलि व क़ुर्आनल् - फ़ज्रि
इन-न क़ुर्आनल्-फ़ज्रि का-न मश्हूदा (७८) व मिनल्लैलि फ़-त-हज्जद् बिही
नाफ़ि-ल-तल्ल-क असा अंय्यब्अ-स-क रब्बु - क मक़ामम्-मह़्मूदा (७९)

★रु. ७/७ आ १०. ★रु. ८/८ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दरिया में तक्लीफ़ पहुंचती है (यानी डूबने का ख़ौफ़ होता है) तो जिन को तुम पुकारा करते हो सब उस (परवरदिगार) के सिवा गुम हो जाते हैं। फिर जब वह तुम को (डूबने से) बचा कर ख़ुश्की की तरफ़ ले जाता है, तो तुम मुंह फेर लेते हो और इंसान है ही ना-शुक्रा। (६७) क्या तुम (इस से) बे-ख़ौफ़ हो कि ख़ुदा तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ (ले जा कर ज़मीन में) धंसा दे या तुम पर संगरेज़ों की भरी हुई आंधी चला दे, फिर तुम अपना कोई निगहबान न पाओ। (६८) या (इस से) बे-ख़ौफ़ हो कि तुम को दूसरी बार दरिया में ले जाए, फिर तुम पर तेज़ हवा चलाए और तुम्हारे कुफ़्र की वजह से तुम्हें डुबो दे। फिर तुम उस ग़र्क़ की वजह से अपने लिए कोई हमारा (पीछा करने वाला) न पाओ। (६९) और हम ने बनी आदम को इज़्ज़त बख़्शी और उन को जंगल और दरिया में सवारी दी और पाकीज़ा रोज़ी अता की और अपनी बहुत-सी मख़्लूक़ात पर फ़ज़ीलत दी। (७०) ★

जिस दिन हम सब लोगों को उन के पेशवाओं के साथ बुलाएंगे, तो जिन (के आमाल) की किताब उन के दाहिने हाथ में दी जाएगी, वह अपनी किताब को (ख़ुश हो-हो कर) पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (७१) और जो शख़्स इस (दुनिया) में अंधा हो, वह आख़िरत में भी अंधा होगा, और (निजात के) रास्ते से बहुत दूर, (७२) और ऐ पैग़म्बर! जो वह्य हम ने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, क़रीब था कि ये (काफ़िर) लोग तुम को इस से बिचला दें, ताकि तुम इस के सिवा और बातें हमारे बारे में बना लो और उस वक़्त वह तुम को दोस्त बना लेते।[1] (७३) और अगर हम तुम को साबित क़दम न रहने देते तो तुम किसी क़दर उन की तरफ़ मायल होने ही लगे थे। (७४) उस वक़्त हम तुम को ज़िंदगी में भी (अज़ाब का) दोगुना और मरने पर भी दोगुना अज़ाब चखाते, फिर तुम हमारे मुक़ाबले में किसी को अपना मददगार न पाते। (७५) और क़रीब था कि ये लोग तुम्हें ज़मीन (मक्का) से फिसला दें ताकि तुम्हें वहां से देश निकाला दे दें और उस वक़्त तुम्हारे पीछे यह भी न रहते, मगर कम। (७६) जो पैग़म्बर हम ने तुम से पहले भेजे थे, उन का (और उन के बारे में हमारा, यही) तरीक़ा रहा है और तुम हमारे तरीक़े में तब्दीली न पाओगे। (७७) ★

(ऐ मुहम्मद!) सूरज के ढलने से रात के अंधेरे तक (ज़ुहर, अस्र, मग़िरब, इशा की) नमाज़ें और सुबह को क़ुरआन पढ़ा करो, क्यों कि सुबह के वक़्त क़ुरआन का पढ़ना मूजिबे हुज़ूर (फ़रिश्ता) है। (७८) और रात के हिस्से में जागा करो (और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो)। (यह रात का जागना) तुम्हारे लिए ज़्यादती (की वजह) है, और (तहज्जुद की नमाज़ तुम को नफ़्ल) है क़रीब है कि ख़ुदा तुम को मक़ामे महमूद में दाख़िल करे। (७९) और कहो कि ऐ परवरदिगार! मुझे

---

१. काफ़िर कहते थे कि इस कलाम में नसीहत की बातें अच्छी हैं, मगर हर जगह शिर्क पर ऐब रखा है, यह बदल डाल, तो हम इस सब को मानें।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ुर्रब्बि अद्ख़िल्नी मुद्-ख़-ल सिद्क़िंव्-व अख़्रिज्नी मुख़्-र-ज सिद्क़िंव्वज्-अल्
ली मिल्लदुन् - क सुल्तानन् नसीरा (८०) व क़ुल् जा-अल् - हक़्क़ु
व ज़-ह-क़ल्-बातिलु ♭ इन्नल्बाति-ल का-न ज़हूक़ा (८१) व नुनज़्ज़िलु
मिनल्क़ुर्आनि मा हु-व शिफ़ाउंव्-व रह्-मतुल्लिल् - मुअ्मिनी-न ♭ व ला
यज़ीदुज़्ज़ालिमी-न इल्ला ख़सारा (८२)
व इज़ा अन्-अम्ना अ-लल्इन्सानि अअ्-र-ज़
व नआ बिजानिबिही ᒐ व इज़ा मस्सहुश्-
शर्रु का-न यऊसा (८३) क़ुल् कुल्लुंय्यअ्-मलु
अला शाकिलतिही ♭ फ़-रब्बुकुम् अअ्-लमु
बिमन् हु-व अह्दा सबीला ★(८४) व
यस्-अलून-क अनिर्रूहि ♭ क़ुलिर्रूहु मिन्
अम्रि रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्अिल्मि
इल्ला क़लीला (८५) व लइन् शिअ्ना
ल-नज़्-ह-बन्-न बिल्लज़ी औहैना इलै-क सुम्-म
ला तजिदु ल-क बिही अलैना वकीला♭
(८६) इल्ला रह्-म-तम् - मिर्-रब्बि-क♭
इन्-न फ़ज़्लहू का-न अलै-क कबीरा (८७)
क़ुल्-ल इनिज्-त-म-अ़तिल्-इन्सु वल्जिन्नु अला अंय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल्-
क़ुर्आनि ला यअ्तू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ्-ज़ुहुम् लिबअ्-ज़िन् ज़हीरा (८८)
व ल-क़द् सर्रफ़्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन्
फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा (८९) व क़ालू लन् नुअ्मि-न ल-क
हत्ता तफ़्जु-र लना मिनल्अर्ज़ि यम्बूआ♭(९०) औतकू-न ल-क जन्नतुम्मिन्
नख़ीलिंव्-व अि-नबिन् फ़तुफ़ज्जिरल्-अन्हा-र ख़िलालहा तफ़्जीरा♭(९१)
औ तुस्क़ितस्समा-अ कमा ज़-अम्-त अलैना कि-स-फ़न् औ तअ्ति-य बिल्लाहि
वल्मलाइकति क़बीला♭(९२) औ यकू-न ल-क बैतुम्मिन् ज़ुख़्रुफ़िन् औ तर्क़ा
फ़िस्समाइ♭ व लन् नुअ्मि-न लिरुक़िय्यि-क हत्ता तुनज़्ज़ि-ल अलैना किताबन्
नक़्रउहू♭ क़ुल् सुब्हा-न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब-श-रर्-रसूला★(९३)

سُبْحٰنَ الَّذِیْ ١٥ ٢٣٢ بنی اسرآءیل ١٧

مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ
سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا ۝ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ
زَهُوْقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۙ وَلَا
یَزِیْدُ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَ
نَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ یَـُٔوْسًا ۝ قُلْ كُلٌّ یَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ
فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِیْلًا ۝ وَیَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ
الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَمَآ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِیْلًا ۝ وَلَىِٕنْ
شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًا ۝
اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَیْكَ كَبِیْرًا ۝ قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ
الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ یَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ
لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؗ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَقَالُوْا لَنْ
نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ یَنْۢبُوْعًا ۝ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ
مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِیْرًا ۝ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ
كَمَا زَعَمْتَ عَلَیْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓىِٕكَةِ قَبِیْلًا ۝ اَوْ یَكُوْنَ
لَكَ بَیْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِی السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ
حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَیْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا

منزل

★रु. ९/९ आ ७ ★रु. १०/१० आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(मदीने में) अच्छी तरह दाख़िल कीजियो और (मक्के से) अच्छी तरह निकालियो और अपने यहां से ज़ोर व क़ूवत को मेरा मददगार बनाइयो। (८०) और कह दो कि हक़ आ गया और बातिल नाबूद हो गया. बेशक बातिल नाबूद होने वाला है। (८१) और हम क़ुरआन (के ज़रिए) से वह चीज़ नाज़िल करते हैं, जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है और ज़ालिमों के हक़ में तो इस से नुक़्सान ही बढ़ता है। (८२) और जब हम इंसान को नेमत बख़्शते हैं, तो मुंह फेर लेता और पहलू फेर लेता है और जब उसे सख़्ती पहुंचती है तो ना-उम्मीद हो जाता है। (८३) कह दो कि हर शख़्स अपने तरीक़े के मुताबिक़ अमल करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार उस शख़्स को ख़ूब जानता है, जो सब से ज़्यादा सीधे रास्ते पर है। (८४)★

और तुम से रूह के बारे में सवाल करते हैं। कह दो कि वह मेरे परवरदिगार की एक शान है और तुम लोगों को (बहुत ही) कम इल्म दिया गया है। (८५) और अगर हम चाहें तो जो (किताब) हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं, उसे (दिलों से) मिटा दें। फिर तुम उस के लिए हमारे मुक़ाबले में किसी को मददगार न पाओ। (८६) मगर (उस का क़ायम रहना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। कुछ शक नहीं कि तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है। (८७) कह दो कि अगर इन्सान और जिन्न इस बात पर जमा हों कि इस क़ुरआन जैसा बना लाएं, तो इस जैसा न ला सकें, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हों। (८८) और हम ने इस क़ुरआन में सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, मगर अक्सर लोगों ने इंकार करने के सिवा क़ुबूल न किया। (८९) और कहने लगे कि हम तुम पर ईमान नहीं लाएंगे, जब तक कि (अजीब व ग़रीब बातें न दिखाओ, यानी या तो) हमारे लिए ज़मीन में से चश्मा जारी कर दो, (९०) या तुम्हारा खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो और उस के बीच में नहरें बहा निकालो, (९१) या जैसा तुम कहा करते हो हम पर आसमान के टुकड़े ला गिराओ या ख़ुदा और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने ले आओ। (९२) या तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी नहीं मानेंगे, जब तक कि कोई किताब न लाओ, जिसे हम पढ़ भी लें। कह दो कि मेरा परवरदिगार पाक है। मैं तो सिर्फ़ एक पैग़ाम पहुंचाने वाला इंसान हूं। (९३)★

★रु. ९/९ आ ७ ★रु. १०/१० आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा म-न-अन्ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जा-अ-हुमुल्-हुदा इल्ला अन् क़ालू अ-ब-अ-सल्लाहु
ब-श-रर्-रसूला (९४) क़ुल् लौ का-न फ़िल्अर्ज़ि मलाइकतु य्यम्शू-न मुत्मइन्नी-न
ल-नज़्ज़ल्ना अलैहिम् मिनस्समाइ म-ल-कर्रसूला (९५) क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि
शहीदम्-बैनी व बैनकुम् ط इन्नहू का-न बिअिबादिही ख़बीरम्-बसीरा

سبحٰن الذی ١٥ ٢٣٣ بنی اسرآءیل ١٧

رسولا ﴿٩٤﴾ وما منع الناس ان یؤمنوا اذ جاءهم الهدى الا ان قالوا
ابعث الله بشرا رسولا ﴿٩٤﴾ قل لو كان فی الارض ملٰٓىكة یمشون
مطمىٕنین لنزلنا علیهم من السماء ملكا رسولا ﴿٩٥﴾ قل كفى
بالله شهیدا بینی وبینكم انه كان بعباده خبیرا بصیرا ﴿٩٦﴾ ومن
یهد الله فهو المهتد ومن یضلل فلن تجد لهم اولیاء من
دونه ونحشرهم یوم القیٰمة على وجوههم عمیا وبكما وصما ماوٰىهم
جهنم كلما خبت زدنٰهم سعیرا ﴿٩٧﴾ ذلك جزاؤهم بانهم كفروا باٰیٰتنا
وقالوا ءاذا كنا عظاما ورفاتا ءانا لمبعوثون خلقا جدیدا ﴿٩٨﴾ اولم
یروا ان الله الذی خلق السمٰوٰت والارض قادر على ان یخلق
مثلهم وجعل لهم اجلا لا ریب فیه فابى الظٰلمون الا كفورا ﴿٩٩﴾
قل لو انتم تملكون خزاىٕن رحمة ربی اذا لامسكتم خشیة الانفاق
وكان الانسان قتورا ﴿١٠٠﴾ ولقد اٰتینا موسى تسع اٰیٰت بینٰت فسٴل
بنی اسرآءیل اذ جاءهم فقال له فرعون انی لاظنك یٰموسى
مسحورا ﴿١٠١﴾ قال لقد علمت ما انزل هؤلاء الا رب السمٰوٰت والارض
بصاىٕر وانی لاظنك یٰفرعون مثبورا ﴿١٠٢﴾ فاراد ان یستفزهم
من الارض فاغرقنٰه ومن معه جمیعا ﴿١٠٣﴾ وقلنا من بعده
لبنی اسرآءیل اسكنوا الارض فاذا جاء وعد الاٰخرة جئنا بكم

منزل ٤

(९६) व मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्मुह्तदि ج व
मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहुम् औलिया-अ
मिन्दूनिही ط व नह्शुरुहुम् यौमल्क़ियामति
अला वुजूहिहिम् अुम्यंव-व बुक्मंव-व सुम्मन् ط
मअ्वाहुम् जहन्नमु ط कुल्लमा ख़-बत्
ज़िद्नाहुम् सअीरा ● (९७) ज़ालि-क जज़ाउ
हुम् बिअन्नहुम् क-फ़रू बिआयातिना व
क़ालू अ इज़ा कुन्ना अिज़ामंव-व रुफ़ातन्
अ इन्ना ल-मब्अूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा (९८)
अ-व-लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति
वल्अर्-ज़ क़ादिरुन् अला अंय्यख़्लु-क़ मिस्-लहुम्
व ज-अ-ल लहुम् अ-ज-लल्-ला रै-ब फ़ीहि ط
फ़-अ-बज़्ज़ालिमू-न इल्ला कुफ़ूरा (९९) क़ुल् लौ अन्तुम् तम्लिकू-न ख़ज़ाइ-न
रह्मति रब्बी इज़ल्-ल अम्-सक्तुम् ख़श-य-तल्-इन्फ़ाक़ि ط व कानल्-
इन्सानु क़तूरा ★ (१००) व ल-क़द् आतैना मूसा तिस्-अ आयातिम्-
बय्यिनातिन् फ़स्अल् बनी इस्राई-ल इज़् जाअहुम् फ़क़ा-ल लहू
फ़िर्औनु इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या मूसा मस्हूरा (१०१) क़ा-ल ल-क़द्
अलिम्-त मा अन्ज़-ल हाउलाइ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि
बसाइ-र ج व इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या फ़िर्औनु मस्बूरा (१०२) फ़-अरा-द
अंय्यस्तफ़िज़्ज़हुम् मिनल्अर्ज़ि फ़-अग़्रक़्नाहु व मम्म-अहू जमीअं व्-
(१०३) व क़ुल्ना मिम्बअ्-दिही लिबनी इस्राईलस्कुनुल्-अर्-ज़
फ़इज़ा जा-अ वअ्-दुल्-आख़िरति जिअ्ना बिकुम् लफ़ीफ़ा ط (१०४)

● नि. १/२ ★रु. ११/११ आ. ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जब लोगों के पास हिदायत आ गयी तो उन को ईमान लाने से इस के सिवा कोई चीज़ रुकावट न हुई कि कहने लगे कि क्या ख़ुदा ने आदमी को पैग़म्बर कर के भेजा है। (९४) कह दो कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते (कि इस में) चलते-फिरते (और) आराम करते (यानी बसते) तो हम उन के पास फ़रिश्तों को पैग़म्बर बना कर भेजते। (९५) कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। वही अपने बन्दों से ख़बरदार (और उनको) देखने वाला है। (९६) और जिस शख़्स को ख़ुदा हिदायत दे, वही हिदायत पाया हुआ है और जिन को गुमराह करे तो तुम अल्लाह के सिवा उन के दोस्त नहीं पाओगे और हम उन को क़ियामत के दिन औंधे मुंह अंधे-गूंगे और बहरे (बना कर) उठाएंगे। और उन का ठिकाना दोज़ख़ है। जब (उस की आग) बुझने को होगी तो हम उन को (अज़ाब देने) के लिए और भड़का देंगे● (९७) यह उन की सज़ा है, इस लिए कि वे हमारी आयतों से कुफ़्र करते थे और कहते थे कि जब हम (मर कर सड़ी-गली) हड्डियां और चूरा-चूरा हो जाएंगे तो क्या नये सिरे से पैदा किये जाएंगे? (९८) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, इस बात की क़ुदरत रखता है कि उन जैसे (लोग) पैदा कर दे और उस ने उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है, जिस में कुछ भी शक नहीं। तो ज़ालिमों ने इंकार करने के सिवा (उसे) क़ुबूल न किया। (९९) कह दो कि अगर मेरे परवरदिगार की रहमत के ख़ज़ाने तुम्हारे हाथ में होते, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से (उन को) बन्द रखते और इंसान दिल का बहुत तंग है। (१००)★

और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियां दीं, तो बनी इस्राईल से मालूम कर लो कि जब वह उन के पास आए तो फ़िऔन ने उन से कहा कि मूसा! मैं ख़्याल करता हूं कि तुम पर जादू किया गया है। (१०१) उन्हों ने कहा कि तुम यह जानते हो कि आसमानों और ज़मीन के परवरदिगार के सिवा उन को किसी ने नाज़िल नहीं किया (और वह भी तुम लोगों के) समझाने को और ऐ फ़िऔन! मैं ख़्याल करता हूं कि तुम हलाक हो जाओगे। (१०२) तो उस ने चाहा कि उन को (मिस्र की) धरती से निकाल दे, तो हम ने उस को और जो उस के साथ थे, सब को डुबो दिया। (१०३) और उस के बाद बनी इस्राईल से कहा कि तुम इस मुल्क में रहो-सहो, फिर जब आख़िरत का वायदा आ जाएगा, तो हम तुम सब को जमा कर के ले जाएंगे। (१०४) और हम ने

● नि. १/२ ★रु. ११/११ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व बिल्हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल्हक़्क़ि न-ज़ल ط व मा अर्सल्ना-क इल्ला
मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा ▨ (१०५) व क़ुर्आनन् फ़-रक़्नाहु लि-तक़्र-अहू अलन्नासि
अला मुक्सिंव्-व नज़्ज़ल्नाहु तन्ज़ीला (१०६) क़ुल् आमिनू बिही औ ला
तुअ्मिनू ط इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्अिल्-म मिन् क़ब्लिही इज़ा युत्ला अलैहिम्
यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि सुज्जदा ۙ (१०७)
व यक़ूलू-न सुब्हा-न रब्बिना इन् का-न
वअ्-दु रब्बिना ल-मफ़्ऊला (१०८) व
यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि यब्कू-न व यज़ीदुहुम्
ख़ुशूआ □ (१०९) क़ुलिद्उल्ला-ह अविद्उर्
रह्मा-न ط अय्यम्-मा तद्ऊ फ़-लहुल्-
अस्माउल्-हुस्ना ج व ला तज्-हर्
बिसलाति-क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा
वब्तग़ि बै-न ज़ालि-क सबीला (११०)
व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम्
यत्तख़िज़् व-ल-दंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन्
फ़िल्मुल्कि व-लम् यकुल्लहू वलिय्युम्-
मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा ★ (१११)

الكهف ٢٣٣ سبحن الذي

لَفِيفًا ﴿١٠٤﴾ وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَ
نَذِيرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ﴿١٠٦﴾
قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ
وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ
خُشُوعًا ﴿١٠٩﴾ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي
الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾
سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعَشْرُ آيَاتٍ اثْنَا عَشَرَ رُكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۜ ﴿١﴾
قَيِّمًا لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِنْ لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ
يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾ مَاكِثِينَ فِيهِ أَبَدًا ﴿٣﴾
وَيُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا
لِآبَائِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾
فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ﴿٦﴾

منزل ٤

१८ सूरतुल्-कह्फ़ ६९

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ६६२० अक्षर, १२०१ शब्द, ११० आयतें और १२ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अला अ़ब्दिहिल्-किता-ब व लम्
यज्अ़ल्लहू अि-व-जा ۜ (१) क़य्यिमल्-लियुन्ज़ि-र बअ्-सन् शदीदम्-
मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्-सालिहाति अन्-न
लहुम् अज्-रन् ह-स-नम्-ۙ (२) माकिसी-न फ़ीहि अ-ब-दंव्-ۙ (३)
व युन्ज़िरल्लज़ी-न क़ालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व-ल-दन् ق (४) मा लहुम् बिही
मिन् अिल्मिंव्-व ला लि-आबाइहिम् ط कबुरत् कलि-म-तुन् तख़्रुजु मिन्
अफ़्वाहिहिम् ط इंय्यक़ूलू-न इल्ला कज़िबा (५) फ़-ल-अल्ल-क बाख़िअुन्
नफ़्स-क अला आसारिहिम् इल्लम् युअ्मिनू बिहाज़ल्हदीसि अ-स-फ़ा (६)

▨ व. लाज़िम □ सज्दः ४ ★ रु. १२/१२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इस क़ुरआन को सच्चाई के साथ नाज़िल किया है और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को सिर्फ़ खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है ▨ (१०५) और हम ने क़ुरआन को जुज़-जुज़ कर के नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों को ठहर-ठहर कर, पढ़ कर सुनाओ और हम ने उस को आहिस्ता-आहिस्ता उतारा है। (१०६) कह दो कि तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, (यह हक़ है) जिन लोगों को इस से पहले इल्म (किताब) दिया गया है, जब वह उन को पढ़ कर सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं, (१०७) और कहते हैं कि हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा हो कर रहा। (१०८) और वे ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और रोते जाते हैं और इस से उन को और ज़्यादा आजिज़ी पैदा होती है ☐ (१०९) कह दो कि तुम (ख़ुदा को) अल्लाह (के नाम से) पुकारो या रहमान (के नाम से), जिस नाम से पुकारो, उस के सब नाम अच्छे हैं, और न नमाज़ बुलंद आवाज़ से पढ़ो और न धीरे, बल्कि उस के बीच का तरीक़ा अख़्तियार करो।[1] (११०) और कहो कि सब तारीफ़ ख़ुदा ही को है, जिस ने न तो किसी को बेटा बनाया है और न उसकी बादशाही में कोई शरीक है और न इस वजह से कि वह आजिज़ व नातवां है, कोई उस का मददगार है और उस को बड़ा जान कर उस की बड़ाई करते रहो। (१११)★



१८ सूरः कहफ़ ६९

सूरः कह्फ़ मक्की है और इस में एक सौ दस आयतें और बारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को है, जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (यह) किताब नाज़िल की और इस में किसी तरह की टेढ़ (और पेचीदगी) न रखी, (१) (बल्कि) सीधी (और आसान उतारी) ताकि (लोगों को) सख़्त अज़ाब से जो उस की तरफ़ से (आने वाला) है, डराए और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं, खुशख़बरी सुनाए कि उन के लिए (उन के कामों का) नेक बदला (यानी बहिश्त) है। (२) जिस में वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। (३) और उन लोगों को भी डराए, जो कहते हैं कि ख़ुदा ने (किसी को) बेटा बना लिया है। (४) उन को इस बात का कुछ भी इल्म नहीं और न उन के बाप-दादा ही को था। (यह) बड़ी सख़्त बात है, जो उन के मुंह से निकलती है (और कुछ शक नहीं कि) ये जो कुछ कहते हैं, सिर्फ़ झूठ है। (५) (ऐ पैग़म्बर !) अगर ये इस कलाम पर ईमान न लाएं, तो शायद तुम उनके पीछे रंज करके अपने आप को हलाक कर

१. अल्लाह का नाम रहमान लोग जानते थे, इस पर यह फ़रमाया कि नाम बहुतेरे हैं, अल्लाह वही एक है और पुकारने की नमाज़ में बहुत चिल्लाना भी नहीं और बहुत दबी आवाज़ भी नहीं। बीच की चाल पसंद रहे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्ना ज-अल्ना मा अ़-लल्अर्ज़ि ज़ी-नतल्लहा लिनब्लु-वहुम् अय्युहुम् अह्सनु
अ़-मला (७) व इन्ना ल-जाअिलू-न मा अलैहा स़अीदन् जुरुज़ा ط (८)
अम् ह़सिब्-त अन्-न अस्हाबलकह्फ़ि वर्रक़ीमि कानू मिन् आयातिना अ़-ज-बा
(९) इज़् अवल्फ़ित्यतु इलल्-कह्फ़ि फ़-क़ालू रब्बना आतिना मिल्लदुन-क
रह्-म-तंव्-व हय्यिअ् लना मिन् अम्रिना र-शदा
(१०) फ़-ज़रब्ना अला आज़ानिहिम्
फ़िल्-कह्फ़ि सिनी-न अ़-द-दा ﻻ (११)
सुम्-म ब-अ़स्नाहुम् लिनअ़-ल-म अय्युहल्हिज़्बैनि
अह्सा लिमा लबिसू अ-मदा ★ (१२)
नह्नु नक़ुस्सु अलै-क न-ब-अहुम् बिल्ह़क़्क़ि ط
इन्नहुम् फ़ित्यतुन् आमनू बिरब्बिहिम् व
ज़िद्नाहुम् हुदंव्-صلے (१३) व
र-बत़्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् इज़् क़ामू फ़-क़ालू
रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि लन्नद्अु-व
मिन्दूनिही इलाहल्लक़द् क़ुल्ना इज़न्
श-त़-त़ा (१४) हाउलाइ क़ौमुनत्त-ख़ज़ू
मिन् दूनिही आलिह-तन् ط लौला यअ्तू-न
अलैहिम् बिसुल्तानिम्-बय्यिनिन् ط फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि
कज़िबा ط (१५) व इज़िअ्-त-ज़ल्तुमूहुम् व मा यअ्बुदू-न इल्लल्ला-ह
फ़अ्-वू इलल्कह्फ़ि यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम् मिर्रह्मतिही व युहय्यिअ् लकुम् मिन्
अम्रिकुम् मिर्फ़क़ा (१६) व-त-रश्-शम-स इज़ा त़-ल-अत्-तज़ावरु अन्
कह्फ़िहिम् ज़ातल्यमीनि व इज़ा ग़-र-बत्-तक़्रिज़ुहुम् ज़ातश्शिमालि व हुम् फ़ी
फ़ज्-वतिम्-मिन्हु ط ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि ط मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्मुह्तदि
व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहू वलिय्यम्-मुर्शिदा ★ (१७) व तह्सबुहुम्
ऐक़ाज़ंव्वहुम् रुक़ूदुंव्-صلے व नुक़ल्लिबुहुम् ज़ातल्यमीनि व ज़ातश्-
शिमालि صلے व कल्बुहुम् बासित़ुन् ज़िराअैहि बिल्वसीदि ط लवित्त़लअ्-त
अलैहिम् ल-वल्लै-त मिन्हुम् फ़िरारंव्-व लमुलिअ्-त मिन्हुम् रुअ्-बा (१८)

سبحن الذي ١٥ ٢٣٥ الكهف ١٨

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝
وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ
وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۝ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا
رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا
عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ
الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم
بِالْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝ وَرَبَطْنَا عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَن نَّدْعُوَ مِن
دُونِهِ إِلَٰهًا ۖ لَّقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ۝ هَٰؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ
آلِهَةً ۖ لَّوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ ۖ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى
الْكَهْفِ يَنشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّن رَّحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُم مِّنْ أَمْرِكُم
مِّرْفَقًا ۝ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَت تَّزَاوَرُ عَن كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ
وَإِذَا غَرَبَت تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ
آيَاتِ اللَّهِ ۗ مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا
مُّرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ
وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ لَوِ اطَّلَعْتَ

منزل ٤

★रु. १/१३ आ १२ ★रु. २/१४ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दोगे। (६) जो चीज़ ज़मीन पर है, हम ने उस को ज़मीन के लिए ज़ीनत बनाया है, ताकि लोगों की आज़माइश करें कि उन में कौन अच्छे अमल करने वाला है। (७) और जो चीज़ ज़मीन पर है, हम उस को (नाबूद कर के) बंजर मैदान कर देंगे। (८) क्या तुम ख़्याल करते हो कि ग़ार और लौह वाले हमारी निशानियों से अजीब थे। (९) जब वे जवान ग़ार में जा रहे तो कहने लगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर अपने यहां से रहमत नाज़िल फ़रमा और हमारे काम में दुरुस्ती (के सामान) मुहय्या कर। (१०) तो हम ने ग़ार में कई साल तक उन के कानों पर (नींद के) परदे डाले (यानी उन को सुलाए) रखा। (११) फिर उन को जगा उठाया, ताकि मालूम करें कि जितनी मुद्दत वे (ग़ार में) रहे, दोनों जमाअतों में से उस की मिक़दार किस को ख़ूब याद है। (१२)★

हम इन के हालात तुम से सही-सही बयान करते हैं। वे कई जवान थे, जो अपने परवरदिगार पर ईमान लाए थे और हम ने उन को और ज़्यादा हिदायत दी थी। (१३) और उन के दिलों को मर्बूत (यानी मज़बूत) कर दिया। जब वे (उठ) खड़े हुए तो कहने लगे कि हमारा परवरदिगार आसमानों और ज़मीन का मालिक है, हम उस के सिवा किसी को माबूद (समझ कर) न पुकारेंगे। (अगर ऐसा किया) तो उस वक़्त हम ने अक़्ल से दूर की बात कही। (१४) इन हमारी क़ौम के लोगों ने उस के सिवा और माबूद बना रखे हैं। भला ये उन (के ख़ुदा होने) पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते, तो उस से ज़्यादा कौन ज़ालिम है, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े। (१५) और जब तुम ने इन (मुश्रिकों) से और जिन की ये ख़ुदा के सिवा इबादत करते हैं, उन से किनारा कर लिया है, तो ग़ार में चल रहो। तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे कामों में आसानी (के सामान) मुहय्या करेगा।[1] (१६) और जब सूरज निकले तो तुम देखो कि (धूप) उन के ग़ार से दाहिनी तरफ़ सिमट जाए और जब डूबे तो उन से बायीं तरफ़ कतरा जाए और वे उस के मैदान में थे। ये ख़ुदा की निशानियों में से हैं, जिस को ख़ुदा हिदायत दे, उसे हिदायत मिल गयी और जिस को गुमराह करे, तो तुम उस के लिए कोई दोस्त, राह बताने वाला न पाओगे।[2] (१७)★

और तुम उन को ख़्याल करो कि जाग रहे हैं, हालांकि वे सोते हैं और हम उन को दाएं और बाएं करवट बदलाते थे और उनका कुत्ता चौखट पर दोनों हाथ फैलाए हुए था। अगर तुम उनको झांक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग जाते और उन से रौब में आ जाते। (१८) और इसी तरह हम ने

---

१. तफ़्सीरों में लिखा है कि ये लोग क़ौम के सरदारों की औलाद थे। एक दिन ईद का दिन था। वे बाहर मेले में गये तो देखते हैं कि लोग बुतों को पूज रहे हैं और उनके नाम पर जानवर ज़िब्ह कररहे हैंख़ुदा ने उनके दिल की आंखें सूझ-बूझ के नूर से रौशन कर दी थीं तो उन्होंने लोगों की बुतपरस्ती की हरकत को ना-पसंदीदगी की नज़र से देखा और दिल में कहा कि ये बातें तो ख़ुदा ही के लिए मुनासिब हैं जो आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला है, फिर ये अपनी क़ौम के लोगों से दूर ही रहने लगे। चुनांचे सब से पहले इन में से एक शख़्स एक पेड़ के साए तले अलग जा बैठा। दूसरा भी वहीं आ कर बैठ गया, फिर तीसरा भी उन के पास आया और बैठ गया, चौथा आया, फिर पांचवां। ये लोग आपस में एक दूसरे को नहीं जानते थे, इसी वजह से अपने दिल का हाल एक दूसरे से कहते हुए डरते और झिझकते थे। आख़िर एक उन में से बोला कि साहिबो! तुम जो अपने भाई-बन्दों से अलग हो कर यहां आ बैठे हो, इस की कोई न कोई वजह ज़रूर है और वह हर शख़्स को सच्चाई के साथ बयान कर देना चाहिए। दूसरे ने कहा, भाई! सच तो यह है कि मैं ने यह ख़्याल किया कि जो काम हमारी क़ौम के लोग कर रहे हैं, बातिल है और इबादत का हक़दार सिर्फ़ एक ख़ुदा है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। तीसरे ने कहा कि ख़ुदा की क़सम!

(शेष पृष्ठ ४६९ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व कज़ालि-क ब-अ़स्नाहुम् लि-य-त-साअलू बैनहुम् ط क़ा-ल क़ाइलुम् - मिन्हुम्
कम् लबिस्तुम् ط क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन् ط क़ालू रब्बुकुम्
अअ्-लमु बिमा लबिस्तुम् ط फ़ब-अ़सू अ-ह़-दकुम् बिवरिक़िकुम् हाज़िही इलल्-
मदीनति फ़ल्यन्ज़ुर् अय्युहा अज़्का तआमन् फ़ल्-यअ्तिकुम् बिरिज़्क़िम्-मिन्हु
वल्-य-त-लत्तफ़् ❁ व ला युश्अिरन्-न बिकुम्
अ - ह़-दा (१९) इन्नहुम् इंय्यज़्हरू
अ़लैकुम् यर्जुमूकुम् औ युई़दूकुम् फ़ी
मिल्लतिहिम् व लन् तुफ़्लिहू इज़न्
अ-ब-दा (२०) व कज़ालि-क अअ्-सर्ना
अ़लैहिम् लियअ्-लमू अन्-न वअ्-दल्लाहि
ह़क़्क़ुंव्-व अन्नस्सा-अ-त ला रै-ब फ़ीहा ق ج
इज़् य-त-नाज़अू-न बैनहुम् अम्-रहुम् फ़-क़ालुब्नू
अ़लैहिम् बुन-यानन् ط रब्बुहुम् अअ् - लमु
बिहिम् ط क़ालल्लज़ी - न ग़ - लबू अ़ला
अम्रिहिम् ल-नत्तख़िज़न-न अ़लैहिम् मस्जिदा
(२१) स-यक़ूलू-न सला-सतुर्-राबिअुहुम्
कल्बुहुम् ج व यक़ूलू-न ख़म्सतुन् सादिसुहुम्
कल्बुहुम् रज्-मम्-बिल्ग़ैबि ج व यक़ूलू - न सब्-अतुंव्-व सामिनुहुम् कल्बुहुम् ط
क़ुर्रब्बी अअ्-लमु बिअि़द्दतिहिम् मा यअ्-लमुहुम् इल्ला क़लीलुन् قف ५ फ़ला
तुमारि फ़ीहिम् इल्ला मिराअन् ज़ाहिरंव् ص - व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम्
मिन्हुम् अ-ह़-दा ★ (२२) व ला तक़ूलन्-न लिशैइन् इन्नी फ़ाअि़लुन् ज़ालि-क
ग़दा لا (२३) इल्ला अंय्यशाअल्लाहु ز वज़्कुर्रब्ब-क इज़ा नसी-त व क़ुल्
अ़सा अंय्यह्दियनि रब्बी लि-अक़्-र-ब मिन् हाज़ा र-श-दा (२४) व लबिसू फ़ी
कह्फ़िहिम् सला-स मिअतिन् सिनी-न वज़्दादू तिस्आ़ (२५) क़ुलिल्लाहु अअ्-लमु
बिमा लबिसू ج लहू ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط अब्सिर् बिही व अस्मिअ् ط मा
लहुम् मिन्दूनिही मिंव्वलियिंव्-व ला युश्रिकु फ़ी ह़ुक्मिही अ-ह़-दा (२६)

عليهم لوليت منهم فرارا ولملئت منهم رعبا ⑱ وكذلك بعثنهم
ليتساءلوا بينهم قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما او
بعض يوم قالوا ربكم اعلم بما لبثتم فابعثوا احدكم بورقكم
هذه الى المدينة فلينظر ايها ازكى طعاما فلياتكم برزق منه
وليتلطف ولا يشعرن بكم احدا ⑲ انهم ان يظهروا عليكم يرجموكم
او يعيدوكم في ملتهم ولن تفلحوا اذا ابدا ⑳ وكذلك اعثرنا عليهم
ليعلموا ان وعد الله حق وان الساعة لا ريب فيها اذ يتنازعون
بينهم امرهم فقالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم اعلم بهم قال
الذين غلبوا على امرهم لنتخذن عليهم مسجدا ㉑ سيقولون ثلثة
رابعهم كلبهم ويقولون خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب
ويقولون سبعة وثامنهم كلبهم قل ربي اعلم بعدتهم ما يعلمهم
الا قليل فلا تمار فيهم الا مراء ظاهرا ولا تستفت فيهم
منهم احدا ㉒ ولا تقولن لشايء اني فاعل ذلك غدا ㉓ الا
ان يشاء الله واذكر ربك اذا نسيت وقل عسى ان يهدين ربي
لاقرب من هذا رشدا ㉔ ولبثوا في كهفهم ثلث مائة سنين
وازدادوا تسعا ㉕ قل الله اعلم بما لبثوا له غيب السموت والارض
ابصر به واسمع ما لهم من دونه من ولي ولا يشرك في حكمه

❁ निस्फ़ुल् क़ुरआन ★रु. ३/१५ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन को उठाया ताकि आपस में एक दूसरे से मालूम करें। एक कहने वाले ने कहा कि तुम (यहां) कितनी मुद्दत रहे ? उन्होंने कहा कि एक दिन या इस से भी कम ! उन्हों ने कहा कि जितनी मुद्दत तुम रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार ही उस को ख़ूब जानता है। तो अपने में से किसी को यह रुपया दे कर शहर को भेजो, वह देखे कि अच्छा खाना कौन-सा है, तो उस में से खाना ले आए और धीरे-धीरे आए-जाए और तुम्हारा हाल किसी को न बताए। (१९) अगर वह तुम पर ग़लबा पा लेंगे तो तुम्हें पत्थर मार-मार कर हलाक कर देंगे या फिर अपने मज़हब में दाख़िल कर लेंगे और उस वक़्त तुम कभी कामियाबी नहीं पाओगे। (२०) और इसी तरह हम ने (लोगों को) उन (के हाल) से ख़बरदार कर दिया, ताकि वे जानें कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है और यह कि क़ियामत (जिस का वायदा किया जाता है) इस में कुछ शक नहीं। उस वक़्त लोग उन के बारे में आपस में झगड़ने लगे और कहने लगे कि उन (के ग़ार) पर इमारत बना दो। उन का परवरदिगार उन (के हाल) को ख़ूब जानता है। जो लोग उन के बारे में गलबा रखते थे, कहने लगे कि हम उन (के ग़ार) पर मस्जिद बनाएंगे। (२१) (कुछ लोग) अटकल-पच्चू कहेंगे कि वे तीन थे (और) चौथा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे पांच थे (और) छठा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उन का कुत्ता था। कह दो कि मेरा परवरदिगार ही उन की गिनती ख़ूब जानता है। उनको जानते भी हैं तो थोड़े ही लोग (जानते हैं), तो तुम उन (के मामले) में बात-चीत न करना, मगर सरसरी सी बातें और न उनके बारे में उनमें से किसी से कुछ मालूम ही करना (२२) ★

और किसी काम के बारे में न कहना कि मैं इसे कल कर दूंगा, (२३) मगर (इन्शा अल्लाह) कह कर, (यानी अगर) ख़ुदा चाहे तो (कर दूंगा) और जब ख़ुदा का नाम लेना भूल जाओ, तो याद आने पर ले लो और कह दो कि उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे इस से भी ज़्यादा हिदायत की बातें बताए। (२४) और ग़ार वाले अपने ग़ार में नौ ऊपर तीन सौ साल रहे। (२५) कह दो कि जितनी मुद्दत वे रहे, उसे ख़ुदा ही ख़ूब जानता है। उसी को आसमानों और ज़मीन की छिपी बातें (मालूम) हैं। वह क्यां ख़ूब देखने वाला और क्या ख़ूब सुनने वाला है। उस के सिवा उन का कोई कारसाज़ नहीं और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है। (२६) और अपने परवर-

---

(पृष्ठ ४६७ का शेष)
मेरे दिल में भी यही ख़्याल पैदा हुआ था। चौथे ने कहा कि मेरा भी यही ख़्याल है। ग़रज़ सब एक ही ख़्याल के हो गये और अपनी एक जुदा इबादतगाह बना ली। इस में एक ख़ुदा की इबादत करते और बुतों की पूजा से ज़रा भी ताल्लुक़ न रखते। उन का यह हाल लोगों को मालूम हुआ तो उन्हों ने बादशाह से जा चुग़ली खायी। बादशाह बड़ा जाबिर व ज़ालिम और तंगनज़र था, लोगों को कुफ़्र व शिर्क पर तैयार करता और उन से ज़बरदस्ती बुतपरस्ती कराता। बादशाह ने उन को बुलाया और पूछा किया। उन्हों ने सब कुछ सच-सच बयान कर दिया। बादशाह ने उन को डराया-धमकाया और कुछ मोहलत दी कि ख़ुदापरस्ती से रुक जाएं, मगर ख़ुदापरस्ती और तौहीद ऐसी नहीं कि जब दिल में बैठ जाए तो कभी निकल सके। उन्हों ने यह सलाह की कि अब इन लोगों से तुम्हें कुछ मतलब नहीं रहा, तो उन में रहना क्या ज़रूरी है। बेहतर यह है कि ग़ार में चल रहें।

२. यानी जो ख़ुदा चाहता है (वही होता है) और ख़ुदा (की मदद) के सिवा (किसी को) कुछ ताक़त व क़ुदरत नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिन् किताबि रब्बि-क ज ला मुबद्दि-ल
लिकलिमातिही ج व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुल्त-ह-दा (२७)
वस्बिर् नफ़्-स-क म-अल्लज़ी-न यद्‌अू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्‌अशिय्यि युरीदू-न
वज्हहू व ला तअ्-दु अ़ैना-क अ़न्हुम् ج तुरीदु ज़ीनतल्-ह़यातिद्-दुन्या ج
व ला तुतिअ् मन् अग़्-फ़ल्ना क़ल्बहू
अ़न् ज़िक्रिना वत्त-ब-अ़ हवाहु व का-न
अम्रुहू फ़ुरुता ● (२८) व क़ुलिल्‌ह़क़्क़ु
मिर्-रब्बिकुम् قف फ़-मन् शा-अ फ़ल्-
युअ्मिंव-व मन्शा-अ फ़ल्यक्फ़ुर् لا इन्ना
अअ्-तद्‌ना लिज़्ज़ालिमी-न नारन् لا अह़ा-त़
बिहिम् सुरादिक़ुहा ط व इंय्यस्तग़ीसू
युग़ासू बिमाइन् कल्मुह्लि यश्विल्-
वुजू-ह ط बिअ्-सश्शराबु ط व सा-अत्
मुर्तफ़-क़ा (२९) इन्नल्लज़ी-न आमनू व
अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअु
अज्-र मन् अह़्-स-न अ़-म-ला ج (३०)
उलाइ-क लहुम् जन्नातु अ़द्‌निन् तज्री

الکھف ١٨ — ٢٣٨ — سبحٰن الذی ١٥

اَحَدًا ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ
وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ زِیْنَةَ
الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ
اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَآءَ فَلْیُؤْمِنْ وَّمَنْ
شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَاِنْ
یَّسْتَغِیْثُوْا یُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ یَشْوِی الْوُجُوْهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۚ وَ
سَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ
اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ
الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّیَلْبَسُوْنَ ثِیَابًا خُضْرًا
مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۚ
وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَیْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا
جَنَّتَیْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَیْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا
الْجَنَّتَیْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَیْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾
وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ یُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ
نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِیْدَ هٰذِهٖۤ
اَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآىِٕمَةً ۙ وَّلَىِٕنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّیْ لَاَجِدَنَّ خَیْرًا

منزل ٤

मिन् तह़्तिहिमुल्-अन्हारु युह़ल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज-हबिंव-व
यल्बसू-न सियाबन् ख़ुज़्रम्-मिन् सुन्दुसिंव-व इस्तब्रक़िम्-मुत्तकिई-न फ़ीहा
अ़लल्‌अराइकि ط निअ्-मस्सवाबु ط व ह़सुनत् मुर्त-फ़-क़ा ★ (३१) वज़्रिब्
लहुम् म-स-लर्रंजुलैनि ज-अ़ल्ना लिअह़दिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ्-नाबिंव्-व
ह़-फ़फ़्नाहुमा बिनख़्लिंव्-व ज-अ़ल्ना बैनहुमा ज़र्-आ ط (३२) किल्तल्-जन्नतैनि
आतत् उकुलहा व लम् तज़्लिम् मिन्हु शैअंव्-व फ़ज्जर्ना ख़िलालहुमा
न-ह-रा لا (३३) व का-न लहू स-मरुन् ج फ़क़ा-ल लिसाहिबिही व
हु-व युह़ाविरुहू अना अक्सरु मिन्-क मालंव्-व अ-अ़ज़्ज़ु न-फ़-रा (३४) व
द-ख़-ल जन्नतहू व हु-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही ج क़ा-ल मा अज़ुन्नु अन् तबी-द
हाज़िही अ-ब-दा لا (३५) व मा अज़ुन्नुस्सा-अ़-त़ क़ाइ-म-तंव्-व
लइर्रुदित्तु इला रब्बी ल-अजिदन्-न ख़ैरम्-मिन्हा मुन्क़-लबा (३६)

● मु. ३/४ ★ रु. ४/१६ आ. ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिगार की किताब को, जो तुम्हारे पास भेजी जाती है, पढ़ते रहा करो। उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और उस के सिवा तुम पनाह भी नहीं पाओगे। (२७) और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार को पुकारते और उस की ख़ुशी चाहते हैं, उन के साथ सब्र करते रहो और तुम्हारी निगाहें उन में से (गुज़र कर) और तरफ़ न दौड़ें कि दुनिया की ज़िंदगी की ज़ीनत चाहने लगो और जिस शख़्स के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और वह अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करता है और उस का काम हद से बढ़ गया है, उस का कहा न मानना ●(२८) और कह दो कि (लोगो!) यह क़ुरआन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ (पर) है, तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे काफ़िर रहे। हम ने ज़ालिमों के लिए (दोज़ख की) आग तैयार कर रखी है, जिस की क़नातें उस को घेर रही होंगी और अगर फ़रियाद करेंगे, तो ऐसे खौलते हुए पानी से, उन की दादरसी की जाएगी जो पिघले हुए तांबे की तरह (गर्म होगा और जो) मुंहों को भून डालेगा। (उन के पीने का) पानी भी बुरी और आरामगाह भी बुरी। (२९) (और) जो ईमान लाए और काम भी नेक करते रहे, तो हम नेक काम करने वालों का बदला बर्बाद नहीं करते। (३०) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन में उन के (महलों के) नीचे नहरें बह रही हैं। उनको वहां सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे बारीक दीबा और अतलस के हरे कपड़े पहना करेंगे (और) तख़्तों पर तकिए लगा कर बैठा करेंगे। (क्या) ख़ूब बदला और (क्या) ख़ूब आरामगाह है★(३१)

और उन से दो शख़्सों का हाल बयान करो, जिन में से एक को हम ने अंगूर के दो बाग़ (इनायत) किए थे और उन के चारों तरफ़ खजूरों के पेड़ लगा दिए थे और उन के दर्मियान खेती पैदा कर दी थी। (३२) दोनों बाग़ (ज़्यादा से ज़्यादा) फल लाते और उन की (पैदावार) में किसी तरह की कमी न होती और दोनों में हम ने एक नहर भी जारी कर रखी थी। (३३) और (इस तरह) उस (शख़्स) को (उन की) पैदावार (मिलती रहती) थी, तो (एक दिन) जबकि वह अपने दोस्त से बातें कर रहा था, कहने लगा कि मैं तुम से माल (व दौलत) में भी ज़्यादा हूं और जत्थे (और जमाअत) के लिहाज़ से भी ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूं। (३४) और (ऐसी शेख़ियों से) अपने हक़ में ज़ुल्म करता हुआ अपने बाग़ में दाखिल हुआ कहने लगा कि मैं नहीं ख़्याल करता कि यह बाग़ कभी तबाह हो। (३५) और न ख़्याल करता हूं कि क़ियामत बरपा हो और अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊं, तो (वहां) ज़रूर इसमें अच्छी जगह पाऊंगा। (३६)

●पु. ३/४ ★रु. ४/१६ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल लहू साहि़बुहू व हु-व युहा़विरुहू अ-क-फ़र्-त बिल्लज़ी ख़-ल-क़-क मिन्
तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत़्फ़तिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला (३७) लाकिन्-न
हुवल्लाहु रब्बी व ला उश्रिकु बिरब्बी अ-ह़-दा (३८) व लौला इज़् द-ख़ल्-त
जन्न-त-क क़ुल-त मा शा-अल्लाहु ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि इन् तरनि
अ-न अ-क़ल्-ल मिन्-क मालंव्-व व-ल-दा
(३९) फ़-असा रब्बी अंय्युअ्तियनि
ख़ैरम्मिन् जन्नति-क व युर्सि-ल अ़लैहा
हु़स्बानम् - मिनस्समाइ फ़तुस्बि-ह़ स़अ़ीदन्
ज़-ल-क़ा (४०) औ युस्बि-ह़ माउहा
ग़ौरन् फ़-लन् तस्तती-अ लहू त़-ल-बा (४१)
व उही़-त बि-स-मरिही फ़-अस्ब-ह़ युक़ल्लिबु
कफ़्फ़ैहि अ़ला मा अन्फ़-क़ फ़ीहा व हि-य
ख़ावि-यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा व यक़ूलु
यालैतनी लम् उश्रिक् बिरब्बी अ-ह़-दा
(४२) व लम् तकुल्लहू फ़ि-अतुंय्यन्सुरूनहू
मिन् दूनिल्लाहि व मा का-न मुन्तसिरा
(४३) हुनालिकल्-वलायतु लिल्लाहिल् -
ह़क़्क़ि हु-व ख़ैरुन् सवाबंव-व ख़ैरुन् अ़ुक़्बा★(४४) वज़्रिब् लहुम् म-स-लल्-
ह़यातिद्-दुन्या कमाइन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समाइ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्अर्ज़ि
फ़-अस्ब-ह़ हशीमन् तज़्-रूहुर्रियाहु व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्-मुक़्तदिरा
(४५) अल्मालु वल्बनू-न ज़ीनतुल्-ह़यातिद् - दुन्या वल्बाक़ियातुस्-सालिहातु
ख़ैरुन् अ़िन्-द रब्बि-क सवाबंव-व ख़ैरुन् अ-म-ला (४६) व यौ-म नुसय्यिरुल्-जिबा-ल
व त-रल्अर्-ज़ बारिज़-तंव्-व ह़-शर-नाहुम् फ़-लम् नुग़ादिर् मिन्हुम् अ-ह़-दा
(४७) व अ़ुरिज़ू अ़ला रब्बि-क सफ़्फ़न् ल-क़द् जिअ्तुमूना कमा ख़लक़्नाकुम्
अव्व-ल मर्रतिम् बल् ज़-अ़म्तुम् अल्लन् नज्-अ-ल लकुम् मौअि़दा (४८) व
वुज़िअ़ल्-किताबु फ़-त-रल्-मुज्रिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू-न यावै-ल-तना
मालि हाज़ल्-किताबि ला युग़ादिरु सग़ी-र-तंव्-व ला कबीरतन् इल्ला अह़्साहा
व व-जदू मा अ़मिलू हाज़िरन् व ला यज़्लिमु रब्बु-क अ-ह़-दा★(४९)

الكهف ١٨ ٢٣٨ سبحن الذى ١٥

مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝٣٦ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝٣٧ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ
اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝٣٨ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ
اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝٣٩ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ
يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَتُصْبِحَ
صَعِيْدًا زَلَقًا ۝٤٠ اَوْ يُصْبِحَ مَاۗؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝٤١ وَاُحِيْطَ
بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰي مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰي عُرُوْشِهَا
وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝٤٢ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝٤٣ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ
ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝٤٤ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۗءٍ اَنْزَلْنٰهُ
مِنَ السَّمَاۗءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝٤٥ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝٤٦ وَ
يَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ
مِنْهُمْ اَحَدًا ۝٤٧ وَعُرِضُوْا عَلٰي رَبِّكَ صَفًّا ۭ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ۡ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝٤٨ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ
فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا

منزل ٤

★रु. ५/१७ आ १३ ★रु. ६/१८ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तो उस का दोस्त, जो उस से बात-चीत कर रहा था, कहने लगा कि क्या तुम उस (ख़ुदा) से कुफ़्र करते हो, जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें पूरा मर्द बनाया। (३७) मगर मैं यह कहता हूं कि ख़ुदा ही मेरा परवरदिगार है और मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (३८) और (भला) जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए, तो तुम ने 'माशा अल्लाह ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाह' क्यों न कहा, अगर तुम मुझे माल व औलाद में अपने से कमतर देखते हो? (३९) तो अजब नहीं कि मेरा परवरदिगार मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर अता फ़रमाए और इस तुम्हारे बाग़ पर आसमान से आफ़त भेज दे, तो वह साफ़ मैदान हो जाए। (४०) या उस (की नहर) का पानी गहरा हो जाए तो फिर तुम उसे न ला सको। (४१) और उस के मेवों को अज़ाब ने आ घेरा और वह अपनी छतरियों पर गिर कर रह गया, तो जो माल उस ने उस पर ख़र्च किया था, उस पर (हसरत से) हाथ मलने लगा और कहने लगा कि काश मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक न बनाता। (४२) (उस वक़्त) ख़ुदा के सिवा कोई ज़माअत उस की मदद--गार न हुई और न वह बदला ले सका। (४३) यहां (से साबित हुआ) कि हुकूमत सब ख़ुदा-ए-बरहक़ की है, उसी का सिला बेहतर और (उसी का) बदला अच्छा है। (४४)★

और उस ने दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल भी बयान करी, (वह ऐसी हैं,) जैसे पानी, जिसे हम ने आसमान से बरसाया, तो उस के साथ ज़मीन को ज़रखेज़ी मिल गयी, फिर वह चूरा-चूरा हो गयी कि हवाएं उसे उड़ाती फिरती हैं और ख़ुदा तो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (४५) माल और बेटे तो दुनिया की ज़िंदगी की (रौनक़ व) ज़ीनत हैं और नेकियां जो बाक़ी रहने वाली हैं, वे सवाब के लिहाज़ से तुम्हारे परवरदिगार के यहां बहुत अच्छी और उम्मीद के लिहाज़ से बहुत बेहतर हैं। (४६) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को साफ़ मैदान रखोगे और उन (लोगों) को हम जमा कर लेंगे तो उन में से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे। (४७) और सब तुम्हारे परवरदिगार के सामने सफ़ बांध कर लाए जाएंगे (तो हम उन से कहेंगे कि) जिस तरह हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था, (इसी तरह आज) तुम हमारे सामने आए, लेकिन तुम ने तो यह ख़्याल कर रखा था कि हम ने तुम्हारे लिए (क़ियामत का) कोई वक़्त मुक़र्रर ही नहीं किया। (४८) और (अमलों की) किताब (खोल कर) रखी जाएगी तो तुम गुनाहगारों को देखोगे कि जो कुछ उस में (लिखा) होगा, उस से डर रहे होंगे और कहेंगे, हाय शामत! यह कैसी किताब है कि न छोटी बात को छोड़ती है, न बड़ी को, (कोई बात भी नहीं) मगर उसे लिख रखा है और जो अमल किए होंगे, सब को हाज़िर पाएंगे और तुम्हारा परवरदिगार किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। (४९)★

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् क़ुल्ना लिलमलाइकतिस्जुदू लि-आद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स ط
का-न मिनल्-जिन्नि फ़-फ़-स-क़ अन् अम्रि रब्बिही ط अ-फ़-तत्तख़िज़ूनहू व
ज़ुर्रिय्यतहू औलिया-अ मिन् दूनी व हुम् लकुम् अदुव्वुन् ط बिअ्-स लिज़्ज़ालिमी-न
ब-द-ला (५०) मा अश्हत्तुहुम् ख़ल्क़स्समावाति वल्अर्ज़ि व ला ख़ल्-क़
अन्फ़ुसिहिम् ج व मा कुन्तु मुत्तख़िज़ल्-
मुज़िल्ली-न अज़ुदा (५१) व यौ-म यक़ूलु
नादू शुरकाइ-यल्लज़ी-न ज़-अम्तुम् फ़-दऔहुम्
फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व ज-अ्ल्ना
बैनहुम् मौबिक़ा (५२) व र-अल्-
मुज्रिमूनन्ना-र फ़-ज़न्नू अन्नहुम् मुवाक़िअूहा
व लम् यजिदू अन्हा मस्रिफ़ा ★(५३)
व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि
लिन्नासि मिन् कुल्लि म-सलिन् ط व
कानल्-इन्सानु अक्स-र शैइन् ज-द-ला
(५४) व मा म-न-अन्ना-स अंय्युअ्मिनू
इज़् जा-अ-हुमुल्-हुदा व यस्तग़्फ़िरू रब्बहुम्
इल्ला अन् तअ्ति-यहुम् सुन्नतुल्-अव्वली-न औ यअ्तियहुमुल्-अज़ाबु क़ुबुला
(५५) व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न ج व
युजादिलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क़ वत्तख़ज़ू आयाती
व मा उन्ज़िरू हुज़ुवा (५६) व मन् अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति
रब्बिही फ़-अअ्-र-ज़ अन्हा व नसि-य मा क़द्-द-मत् यदाहु ط इन्ना ज-अ्ल्ना
अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन् ط व
इन् तद्-अुहुम् इलल्-हुदा फ़लंय्यह्तदू इज़न् अ-ब-दा (५७) व रब्बुकल्-
ग़फ़ूरु ज़ुर्रह्मति ط लौ युआख़िज़ुहुम् बिमा क-सबू ल-अ़ज्ज-ल लहुमुल्-
अ़ज़ा-ब ط बल्लहुम् मौअिदुल्-लंय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला (५८)

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ ١٥ — ٢٣٩ — الکھف ١٨

اَلْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ
اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ
مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ
النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا
فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ
جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ
اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا
نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَ
مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ
اِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو
الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ

★रु. ७/१६ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस (ने न किया), वह जिन्नों में से था, तो अपने परवरदिगार के हुक्म से बाहर हो गया। क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालांकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं, और (शैतान की दोस्ती) ज़ालिमों के लिए (ख़ुदा की दोस्ती का) बुरा बदल है। (५०) मैं ने उन को न तो आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक़्त बुलाया था और न ख़ुद उन के पैदा करने के वक़्त और मैं ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को मददगार बनाता। (५१) और जिस दिन ख़ुदा फ़रमाएगा कि (अब) मेरे शरीकों को, जिन के बारे में तुम (ख़ुदा होने का) गुमान रखते थे, बुलाओ, तो वह उन को बुलाएंगे, मगर वे उन को कुछ जवाब न देंगे और हम उन के बीच से एक हलाकत की जगह बना देंगे। (५२) और गुनाहगार लोग दोज़ख़ को देखेंगे, तो यक़ीन कर लेंगे कि वे उस में पड़ने वाले हैं और इस से बचने का कोई रास्ता न पाएंगे★(५३) और हम ने इस क़ुरआन में लोगों (के समझाने) के लिए तरह-तरह की मिसालें बयान फ़रमायी हैं, लेकिन इंसान सब चीज़ों से बढ़ कर झगड़ालू है। (५४) और लोगों के पास जब हिदायत आ गयी, तो उन को किस चीज़ ने मना किया कि ईमान लाएं और अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगें, इस के अलावा कि (इस बात के इंतिज़ार में हों कि) उन्हें भी पहलों का-सा मामला पेश आए या उन पर अज़ाब सामने मौजूद हो। (५५) और हम जो पैग़म्बरों को भेजा करते हैं, तो सिर्फ़ इस लिए कि (लोगों को ख़ुदा की नेमतों की) ख़ुशख़बरियां सुनाएं और (अज़ाब से) डराएं और जो काफ़िर हैं, वह बातिल (की सनद) से झगड़ा करते हैं, ताकि उस के हक़ को फिसला दें और उन्हों ने हमारी आयतों को और जिस चीज़ से उन को डराया जाता है, हंसी बना लिया। (५६) और उससे ज़ालिम कौन है, जिस को उस के परवरदिगार के कलाम से समझाया गया, तो उस ने उस से मुंह फेर लिया और जो आमाल वह आगे कर चुका, उन को भूल गया, हम ने उन के दिलों पर परदे डाल दिए कि इसे समझ न सकें और कानों में बोझ (पैदा कर दिया है कि सुन न सकें) और अगर तुम उन को रास्ते की तरफ़ बुलाओ तो कभी रास्ते पर न आएंगे। (५७) और तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उन के करतूतों पर उन को पकड़ने लगे, तो उन पर झट अज़ाब भेज दे, मगर उन के लिए एक वक़्त (मुक़र्रर कर रखा) है कि उस के अज़ाब से कोई पनाह की जगह न पाएंगे। (५८)

★रु. ७/१९ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व तिल्कल्-क़ुरा अह्लक-नाहुम् लम्मा ज़-लमू व ज-अ़ल्ना लिमह्लिकिहिम्
मौअ़िदा ★ (५९) व इज़् क़ा-ल मूसा लिफ़ताहु ला अब्रहु ह़त्ता
अब्लु-ग़ मज्-म-अ़ल्-बह्रैनि औ अम्ज़ि-य हुक़ुबा (६०) फ़-लम्मा ब-लग़ा
मज्-म-अ़ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फ़त्त-ख़-ज सबीलहू फ़िल्बह्रि स-र-बा (६१)

फ़-लम्मा जावज़ा क़ा-ल लिफ़ताहु आतिना
ग़दा-अना ल-क़द् लक़ीना मिन् स-फ़रिना
हाज़ा न-स़-बा (६२) क़ा-ल अ-रऐ-त इज़्
अवैना इलस्-सख़्-रति फ़-इन्नी नसीतुल्हू-त
व मा अन्सानीहु इल्लश्शैतानु अन्
अज़्कुरहू वत्त-ख़ - ज सबीलहू फ़िल्बह्रि
अ़-ज-बा (६३) क़ा-ल ज़ालि-क मा कुन्ना
नब्ग़ि फ़र्तद्दा अ़ला आसारिहिमा
क़-स़-स़ा (६४) फ़-व-जदा अ़ब्दम्-मिन्
अ़िबादिना आतैनाहु रह्-म-तम्मिन् अ़िन्दिना
व अ़ल्लम्नाहु मिल्लदुन्ना अ़िल्मा (६५)
क़ा-ल लहू मूसा हल् अत्तबिअ़ु-क अ़ला अन्

لن يجدوا من دونه موئلا ﴿٥٨﴾ وتلك القرى أهلكنهم لما ظلموا
وجعلنا لمهلكهم موعدا ﴿٥٩﴾ وإذ قال موسى لفته لا أبرح حتى
أبلغ مجمع البحرين أو أمضي حقبا ﴿٦٠﴾ فلما بلغا مجمع بينهما نسيا
حوتهما فاتخذ سبيله في البحر سربا ﴿٦١﴾ فلما جاوزا قال لفته آتنا
غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا ﴿٦٢﴾ قال أرءيت إذ أوينا إلى
الصخرة فإني نسيت الحوت وما أنسنيه إلا الشيطن أن أذكره و
اتخذ سبيله في البحر عجبا ﴿٦٣﴾ قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على
آثارهما قصصا ﴿٦٤﴾ فوجدا عبدا من عبادنا آتينه رحمة من عندنا
وعلمنه من لدنا علما ﴿٦٥﴾ قال له موسى هل أتبعك على أن
تعلمن مما علمت رشدا ﴿٦٦﴾ قال إنك لن تستطيع معي صبرا ﴿٦٧﴾ و
كيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ﴿٦٨﴾ قال ستجدني إن شاء الله صابرا
ولا أعصي لك أمرا ﴿٦٩﴾ قال فإن اتبعتني فلا تسئلني عن شيء حتى
أحدث لك منه ذكرا ﴿٧٠﴾ فانطلقا حتى إذا ركبا في السفينة
خرقها قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا ﴿٧١﴾ قال ألم
أقل إنك لن تستطيع معي صبرا ﴿٧٢﴾ قال لا تؤاخذني بما نسيت و
لا ترهقني من أمري عسرا ﴿٧٣﴾ فانطلقا حتى إذا لقيا غلما فقتله
قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا ﴿٧٤﴾

तुअ़ल्लिमनि मिम्मा अ़ुल्लिम-त रुश्दा (६६) क़ा-ल इन्न-क लन् तस्तती-अ़
मअ़ि-य स़ब्रा (६७) व कै-फ़ तस्बिरु अ़ला मा लम् तुहित् बिही ख़ुब्रा
(६८) क़ा-ल स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु स़ाबिरंव-व ला अअ़्-सी ल-क अम्रा
(६९) क़ा-ल फ़-इनित्तबअ़्-तनी फ़ला तस्-अल्नी अ़न् शैइन् ह़त्ता उह्दि-स
ल - क मिन्हु ज़िक्रा ★ (७०) फ़न्त़-ल-क़ा ह़त्ता इज़ा रकिबा
फ़िस्सफ़ीनति ख़-र-क़हा क़ा-ल अ-ख़-रक़्-तहा लितुग़्रि-क अह्-लहा ल-क़द् जिअ्-त
शैअन् इम्रा (७१) क़ा-ल अ-लम् अक़ुल् इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअ़ि-य स़ब्रा
(७२) क़ा-ल ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु व ला तुर्हिक़्नी मिन् अम्री
अ़ुस्रा (७३) फ़न्त़-लक़ा ह़त्ता इज़ा लक़िया ग़ुलामन् फ़-क़-त-लहू क़ा-ल
अ-क़-तल-त नफ़्सन् ज़किय्यतम्-बिग़ैरि नफ़्सिन् ल-क़द् जिअ्-त शैअन् नुक्रा (७४)

★रु. ८/२० आ ६ ★रु. ९/२१ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और ये बस्तियां (जो वीरान पड़ी हैं), जब उन्हों ने (कुफ़्र से) ज़ुल्म किया, तो हम ने उन को तबाह कर दिया और उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया था। (५९)★

और जब मूसा ने अपने शागिर्द[1] से कहा कि जब तक मैं दो दरियाओं के मिलने की जगह[2] न पहुंच जाऊं, हटने का नहीं, चाहे वर्षों चलता रहूं। (६०) जब उन के मिलने की जगह पर पहुंचे, तो अपनी मछली भूल गये, तो उसने दरिया में सुरंग की तरह अपना रास्ता बना लिया। (६१) जब आगे चले तो (मूसा ने) अपने शागिर्द से कहा कि हमारे लिए खाना लाओ, इस सफ़र से हम को बड़ी थकन हो गयी है। (६२) (उस ने) कहा कि भला आप ने देखा कि जब हम ने पत्थर के पास आराम किया था, तो मैं मछली (वहीं) भूल गया और मुझे (आप से) उस का ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया और उस ने अजब तरह से दरिया में अपना रास्ता लिया। (६३) (मूसा ने) कहा, यही तो (वह जगह) है, जिसे हम खोजा करते थे, तो वे अपने पांव के निशान देखते-देखते लौट गये। (६४) (वहां) उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा देखा, जिस को हम ने अपने यहां से रहमत (यानी नुबूवत या विलायत की नेमत) दी थी और अपने पास से इल्म बख़्शा था। (६५) मूसा ने उन से (जिन का नाम ख़िज़्र था) कहा कि जो इल्म (ख़ुदा की तरफ़ से) आप को सिखाया गया है, अगर आप उस में से मुझे कुछ भलाई (की बातें) सिखाएं तो मैं आप के साथ रहूं। (६६) (ख़िज़्र ने) कहा कि तुम मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकोगे, (६७) और जिस बात की तुम्हें ख़बर ही नहीं, उस पर सब्र कर भी क्योंकर सकते हो। (६८) मूसा ने कहा, ख़ुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब्र करने वाला पाइएगा और मैं आप के इर्शाद के ख़िलाफ़ नहीं करूंगा। (६९) (ख़िज़्र ने) कहा, अगर तुम मेरे साथ रहना चाहो तो (शर्त यह है), मुझ से कोई बात न पूछना, जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र तुम से न करूं। (७०)★

तो दोनों चल पड़े, यहां तक कि जब कश्ती में सवार हुए, तो (ख़िज़्र ने) कश्ती को फाड़ डाला। (मूसा ने) कहा, क्या आप ने उस को इस लिए फाड़ा है कि सवारों को डुबो दें। यह तो आप ने बड़ी (अजीब) बात की। (७१) (ख़िज़्र ने) कहा, क्या मैं ने नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। (७२) (मूसा ने) कहा कि जो भूल मुझ से हुई, उस पर पकड़ न कीजिए और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालिए। (७३) फिर दोनों चले, यहां तक कि (रास्ते में) एक लड़का मिला,[3] तो (ख़िज़्र ने) उसे मार डाला। (मूसा ने) कहा कि आप ने एक बे-गुनाह शख़्स को (नाहक़) बग़ैर क़िसास के मार डाला। (यह तो) आप ने बुरी बात की। (७४) (ख़िज़्र ने)

---

१. असल लफ़्ज़ 'फ़ता' है, जिस का मतलब जवान है। 'फ़ता' से यहां मुराद यूशेअ बिन नून हैं। चूंकि वह मूसा अलैहिस्सलाम के साथ रहते और उन से इल्म हासिल किया करते थे, इस लिए हम ने उन को जवान की जगह शागिर्द लिखा है। कुछ लोगों ने कहा कि वह यूशेअ के भाई थे। कुछ लोगों ने कहा कि मूसा अलैहिस्सलाम का गुलाम था।

२. किसी ने मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा कि सब से ज़्यादा आलिम कौन है? उन्हों ने कहा कि मैं हूं। ख़ुदा ने वह्य की कि मेरा एक बन्दा दो दरियाओं के मिलने की जगह में है, वह तुम से ज़्यादा इल्म रखता है, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उन से मिलने और इल्म हासिल करने की ग़रज़ से सफ़र का इरादा किया। यह बन्दे, जैसा कि हदीसों से साबित है, ख़िज़्र थे। उन का नाम जैसा कि सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत किया गया है, ख़िज़्र

(शेष पृष्ठ ४७९ पर)

★रु. ८/२० आ ६ ★रु. ९/२१ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सोलहवां पारः क़ा-ल अ-लम

सूरतुल् कह्फ़ि आयत ७५ से ११०

क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्ल-क इन्न-क लन् तस्तती-अ मअि-य स़ब्रा (७५) क़ा-ल इन्
स-अल्तु-क अन् शैइम्-बअ्-दहा फ़ ला तुसाहिब्नी ८ क़द् ब-लग़्-त मिल्लदुन्नी
अुज़्रा (७६) फ़न्त़-लक़ा हत्ता इज़ा अ-तया अह्-ल क़र-यति-निस-तत़-अमा
अह्-लहा फ़ अबौ अंय्युज़य्यिफ़ू हुमा फ़-व-जदा फ़ीहा जिदारंय्युरीदु अंय्यन्क़ज़्-ज़
फ़-अक़ामहू ط क़ा-ल लौ शिअ्-त लत्त-ख़ज़्-त
अ़लैहि अज्रा (७७) क़ा-ल हाज़ा फ़िराक़ु
बैनी व बैनि-क ८ सउनब्बिउ-क बितअ्वीलि
मा लम् तस्ततिअ् अ़लैहि स़ब्रा (७८)
अम्मस्सफ़ीनतु फ़-कानत् लिमसाकी-न यअ्-मलू-न
फ़िल्बह़्रि फ़-अरत्तु अन् अ-अ़ीब-हा व का-न
वरा-अहुम् मलिकुंय्यअ्ख़ुज़ु कुल्-ल सफ़ीनतिन्
ग़स्बा (७९) व अम्मल्गुलामु फ़का-न
अ-ब-वाहु मुअ्मिनैनि फ़-ख़शीना अंय्युर्हि-क़-हुमा
तुग़यानंव्-व कुफ़्रा ८ (८०) फ़ - अरद्ना
अंय्युब्दि-लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम्-मिन्हु ज़कातंव्-व
अक़्र-ब रुह्मा (८१) व अम्मल्-जिदारु
फ़का-न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फ़िल्-मदीनति
व का-न तह्तहू कन्ज़ुल्लहुमा व का-न

الکہف ١٨ — ٢٤١ — قال الم

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ اِنْ
سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ
عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهْلَ قَرْيَةِ ۣاسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا
اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ
لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ
سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ
لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ
يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَاۤ
اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا
مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ
يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ
فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ
صَبْرًا ﴿٨٢﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ
ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾
فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ
عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ

منزل

अबूहुमा सालिहन् ८ फ़-अरा-द रब्बु-क अंय्यब्लुग़ा अशुद्दहुमा व यस्तख़्रिजा
कन्ज़हुमा रह्मतम्मिर् - रब्बि - क ८ व मा फ़ - अ़ल्तुहू अन् अम्री ط
ज़ालि-क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ् अ़लैहि स़ब्रा ط ★ (८२) व यस्अलून-क
अन् ज़िल्क़र्नैनि ط क़ुल् स-अत्लू अ़लैकुम् मिन्हु ज़िक्रा ط (८३) इन्ना
मक्कन्ना लहू फ़िल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स-ब-बा (८४)
फ़-अत्ब-अ स-ब-बा (८५) हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मग़्रिबश्-शम्सि व-ज-दहा
तग़्रुबु फ़ी अ़ैनिन् हमि-अतिंव्-व व-ज-द अ़िन्दहा क़ौमन् ८ क़ुल्ना याज़ल्-
क़र्नैनि इम्मा अन् तुअ़ज़्ज़ि-ब व इम्मा अन् तत्तख़ि-ज़ फ़ीहिम् हुस्ना (८६)

★रु. १०/१ आ १२

कहा, क्या मैं ने नहीं कहा था कि तुम से मेरे साथ सब्र नहीं हो सकेगा ? (७५) उन्हों ने कहा कि अगर मैं इस के बाद (फिर) कोई बात पूछूं, (यानी एतराज़ करूं), तो मुझे अपने साथ न रखिएगा कि आप मेरी तरफ़ से उज़्र (क़ुबूल करने में इंतिहा) को पहुंच गये। (७६) फिर दोनों चले, यहां तक कि एक गांव वालों के पास पहुंचे और उन से खाना तलब किया। उन्होंने उन की मेहमानी करने से इंकार किया। फिर उन्हों ने वहां एक दीवार देखी जो (झुक कर) गिरा चाहती थी तो (ख़िज़्र ने) उस को सीधा कर दिया। (मूसा ने) कहा कि अगर आप चाहते तो उन से (उस का) मुआवज़ा लेते, (ताकि खाने का काम चलता।) (७७) (ख़िज़्र ने) कहा कि अब मुझ में और तुम में अलगाव, (मगर) जिन बातों पर तुम सब्र न कर सके, मैं उन का तुम्हें भेद बताए देता हूं। (७८) (कि वह जो) कश्ती (थी) ग़रीब लोगों की थी, जो दरिया में मेहनत (कर के यानी कश्तियां चला कर गुज़ारा) करते थे और उन के सामने (की तरफ़) एक बादशाह था, जो हर एक कश्ती को ज़बर-दस्ती छीन लेता था, तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं (ताकि वह उसे ग़सब न कर सके)। (७९) और वह जो लड़का था, उस के मां-बाप दोनों मोमिन थे, हमें डर हुआ कि वह (बड़ा हो कर बद-किरदार होगा, कहीं) उन को सर-कशी और कुफ़्र में न फंसा दे।[1] (८०) तो हम ने चाहा कि उनका परवरदिगार उस की जगह उन को और (बच्चा) अता फ़रमाए जो पाक-मिज़ाजी में बेहतर और मुहब्बत में ज़्यादा क़रीब हो। (८१) और वह जो दीवार थी, सो दो यतीम लड़कों की थी (जो) शहर में (रहते थे) और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना (दफ़न) था और उन का बाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि वे अपनी जवानी को पहुंच जाएं और (फिर) अपना ख़ज़ाना निकालें। यह तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है और ये काम मैं ने अपनी तरफ़ से नहीं किए। यह उन बातों की हक़ीक़त है, जिन पर तुम सब्र न कर सके। (८२) ★

और तुम से ज़ुलक़र्नैन के बारे में पूछते हैं। कह दो कि मैं उस का किसी क़दर हाल पढ़ कर सुनाता हूं। (८३) हम ने उस को ज़मीन में बड़ी दस्तरस (पहुंच) दी थी और हर तरह का सामान अता किया था। (८४) तो उसने (सफ़र का) एक सामान किया। (८५) यहां तक कि जब सूरज के डूब जाने की जगह पहुंचा तो उसे ऐसा पाया कि एक कीचड़ की नदी में डूब रहा है और उस (नदी) के पास एक क़ौम देखी। हम ने कहा, ज़ुलक़र्नैन ! तुम उन को चाहे तक्लीफ़ दो, चाहे उन (के बारे) में भलाई अख़्तियार करो, (दोनों बातों की तुम को क़ुदरत है)। (८६) (ज़ुलक़र्नैन ने) कहा कि

(पृष्ठ ४७७ का शेष)

इस लिए हुआ कि वह एक सूखी घास पर बैठे थे और वह उन के नीचे हरी-भरी हो गयी।

३. लफ़्ज़ों का तर्जुमा तो यह है कि एक लड़के से मिले, मगर ऐसे मौक़े पर इसी तरह बात करते हैं, जिस तरह हम ने लिखा है।

१. यानी चूंकि लड़का मां-बाप के तरीक़े पर न होता और कुफ़्र और सरकशी करता, इस लिए ख़िज़्र को यह डर हुआ कि जब यह लड़का बड़ा हो, तो उस के मां-बाप कहीं उस की मुहब्बत में अंधे हो कर कुफ़्र की ना-फ़रमानों में न फंस जाएं, इस लिए उस को मार डालना अल्लाह तआला के हुक्म से था।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल अम्मा मन् ज़-ल-म फ़सौ-फ़ नुअज़्ज़िबुहू सुम-म युरद्दु इला रब्बिही
फ़युअज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा (८७) व अम्मा मन् आम-न व अ़मि-ल
सालिहन् फ़-लहू जज़ा-अ-निल्-हुस्ना ७ व स-नक़ूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा ط
(८८) सुम्-म अत्-ब-अ़ स-ब-बा (८९) हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मत़-लिअ़श्-शम्सि
व-ज-दहा तत़्लुअ़ु अ़ला क़ौमिल्लम् नज्अ़ल्लहुम्
मिन् दूनिहा सित्रा ⅼ (९०) कज़ालि-क ط
व क़द् अहत़्-ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा (९१)
सुम्-म अत-ब-अ़ स-ब-बा (९२) हत्ता इज़ा
ब-ल-ग़ बैनस्-सद्दैनि व-ज-द मिन् दूनिहिमा
क़ौमल्-ला यकादू-न यफ़्क़हू-न क़ौला
(९३) क़ालू याज़ल्-क़र्नैनि इन्-न
यअ्जू-ज व मअ्जू-ज मुफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि
फ़-हल् नज्अ़लु ल-क ख़र्जन् अ़ला अन्
तज्-अ़-ल बैनना व बैनहुम सद्दा (९४)
क़ा-ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन्
फ़-अईनूनी बिक़ुव्वतिन् अज्-अ़ल् बैनकुम् व
बैनहुम् रद्मा ⅼ (९५) आतूनी ज़ु-ब-रल्-
हदीदि ط हत्ता इज़ा सावा बैनस्स-द-फ़ैनि क़ालन्फ़ुख़ू हत्ता इज़ा ज-अ़-लहू
नारन् ⅼ क़ा-ल आतूनी उफ़्रिग़् अ़लैहि क़ित्रा ط (९६) फ़-मस्ताअ़ू
अंय्यज़्हरूहु व मस्तताअ़ू लहू नक़्बा (९७) क़ा-ल हाज़ा रह्-मतुम्मिर्-रब्बी ج
फ़-इज़ा जा-अ वअ़्-दु रब्बी ज-अ़-लहू दक्का-अ ج व का-न वअ़्-दु रब्बी हक़्क़ा ط (९८)
व त-रक्ना बअ़्ज़हुम् यौमइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ़्ज़िंव-व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-ज-मअ़्-
नाहुम् जम्अ़ंव्-ⅼ (९९) -व अ़-रज़्ना जहन्न-म यौमइज़िल्लिल्-काफ़िरी-न अ़र्ज़ा ⅼ
(१००) अल्लज़ी-न कानत् अअ़्-युनुहुम् फ़ी ग़ित़ाइन् अ़न् ज़िक्री व कानू ला
यस्तत़ीअ़ू-न सम्-आ ★ (१०१) अ-फ़-हसिबल्लज़ी-न क-फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी
मिन् दूनी औलिया-अ ط इन्ना अअ़्-तद्ना जहन्न-म लिलकाफ़िरी-न नुज़ुला (१०२)

الكهف ١٨ ٣٤٢ قال الم ١٦

نُعَذِّبَ وَإِمَّآ أَن تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَن ظَلَمَ فَسَوْفَ
نُعَذِّبُهُۥ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِۦ فَيُعَذِّبُهُۥ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ ءَامَنَ وَ
عَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُۥ جَزَآءً ٱلْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُۥ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ
أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ ٱلشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ
لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ
خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ ٱلسَّدَّيْنِ وَجَدَ مِن
دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا۟ يَٰذَا ٱلْقَرْنَيْنِ إِنَّ
يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰٓ
أَن تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّى فِيهِ رَبِّى خَيْرٌ فَأَعِينُونِى
بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ ءَاتُونِى زُبَرَ ٱلْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا سَاوَىٰ
بَيْنَ ٱلصَّدَفَيْنِ قَالَ ٱنفُخُوا۟ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَعَلَهُۥ نَارًا قَالَ ءَاتُونِىٓ أُفْرِغْ عَلَيْهِ
قِطْرًا ﴿٩٦﴾ فَمَا ٱسْطَٰعُوٓا۟ أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا ٱسْتَطَٰعُوا۟ لَهُۥ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هَٰذَا
رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّى ۖ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّى جَعَلَهُۥ دَكَّآءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّى
حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِى بَعْضٍ ۖ وَنُفِخَ فِى ٱلصُّورِ فَجَمَعْنَٰهُمْ
جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَٰفِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾ ٱلَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ
فِى غِطَآءٍ عَن ذِكْرِى وَكَانُوا۟ لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ أَفَحَسِبَ ٱلَّذِينَ
كَفَرُوٓا۟ أَن يَتَّخِذُوا۟ عِبَادِى مِن دُونِىٓ أَوْلِيَآءَ ۚ إِنَّآ أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَٰفِرِينَ

منزل ٤

★रु. ११/२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो (कुफ़्र व बद-किरदारी से) ज़ुल्म करेगा उसे हम अज़ाब देंगे, फिर (जब) वह अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया जाएगा, तो वह भी उसे बुरा अज़ाब देगा। (८७) और जो ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उस के लिए बहुत अच्छा बदला है और हम अपने मामले में (उस पर किसी तरह की सख़्ती नहीं करेंगे, बल्कि) उस से नर्म बात कहेंगे। (८८) फिर उस ने एक और सामान (सफ़र का) किया। (८९) यहां तक कि सूरज के निकलने की जगह पर जा पहुंचा तो देखा कि वह ऐसे लोगों पर निकलता है, जिन के लिए हम ने सूरज के उस तरफ़ कोई ओट नहीं बनायी थी। (९०) (हक़ीक़त) यों (थी) और जो कुछ उस के पास था, हम को सब की ख़बर थी। (९१) फिर उस ने एक और सामान किया। (९२) यहां तक कि दो दीवारों के दर्मियान पहुंचा, तो देखा कि उन के उस तरफ़ कुछ लोग हैं कि बात को समझ नहीं सकते। (९३) उन लोगों ने कहा कि ज़ुलक़र्नैन ! याजूज और माजूज ज़मीन में फ़साद करते रहते हैं। भला हम आपके लिए ख़र्च (का इंतिज़ाम) करदें कि आप हमारे और उन के दर्मियान एक दीवार खींच दें। (९४) (ज़ुलक़र्नैन ने) कहा कि ख़र्च की जो क़ुदरत ख़ुदा ने मुझे बख़्शी है, वह बहुत अच्छा है, तुम मुझे (बाज़ू) की ताक़त से मदद दो। मैं तुम्हारे और उन के दर्मियान एक मज़बूत ओट बना दूंगा। (९५) तुम लोहे के (बड़े-बड़े) तख़्ते लाओ, (चुनांचे काम जारी कर दिया गया), यहां तक कि जब उस ने दानों पहाड़ों के दर्मियान (का हिस्सा) बराबर कर दिया (और) कहा कि (अब इसे) धौंको, यहां तक कि जब उस को (धौंक-धौंक कर) आग कर दिया तो कहा कि (अब) मेरे पास तांबा लाओ कि उस पर पिघला कर डाल दूं। (९६) फिर उन में यह क़ुदरत न रही कि उस पर चढ़ सकें और न यह ताक़त रही कि उस में नक़ब लगा सकें। (९७) बोला कि यह मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। जब मेरे परवरदिगार का वायदा आ पहुंचेगा, तो उस को (ढा कर) हमवार कर देगा और मेरे परवरदिगार का वायदा सच्चा है।(९८) (उस दिन) हम उनको छोड़ देंगे कि (धरती पर फैल कर) एक दूसरे में घुस जाएंगे और सूर फूंका जाएगा, तो हम सब को जमा कर लेंगे। (९९) और उस दिन जहन्नम को काफ़िरों के सामने लाएंगे, (१००) जिन की आंखें मेरी याद से परदे में थीं और सुनने की ताक़त नहीं रखते थे। (१०१)★

31

क्या काफ़िर यह ख़्याल करते हैं कि वे हमारे बन्दों को हमारे सिवा (अपना) कारसाज़ बनाएंगे, (तो हम ख़फ़ा नहीं होंगे)। हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिए जहन्नम की मेहमानी तैयार

★रु. ११/२ आ १६

क़ुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख़्सरी-न अअ्-माला ॥ (१०३) अल्लज़ी-न
ज़ल्-ल सअ्-युहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व हुम् यह्-सबू-न अन्नहुम् युह्सिनू-न
सुन्आ (१०४) उला-इकल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही
फ़-ह़बित़त् अअ्-मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल्क़ियामति वज़्ना (१०५)
ज़ालि-क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क-फ़रू
वत्त-ख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़ुवा (१०६)
इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
कानत् लहुम् जन्नातुल्-फ़िर-दौसि नुज़ुला॥
(१०७) ख़ालिदी-न फ़ीहा ला यब्ग़ू-न
अन्हा हि़-वला (१०८) क़ुल् लौ कानल्-
बह़्रु मिदादल्लिकलिमाति रब्बी ल-नफ़िदल्-
बह़्रु क़ब्-ल अन् तन्फ़-द कलिमातु रब्बी व लौ
जिअ्ना बिमिस्लिही म - द-दा (१०९)
क़ुल् इन्नमा अ-न ब-श-रुम् - मिस्लुकुम्
यूहा इलय् - य अन्नमा इलाहुकुम्
इलाहुंव्वाहि़दुन् ह फ़-मन् का-न यर्जू लिक़ा-अ
रब्बिही फ़ल-यअ्-मल् अ-म-लन् सालिहंव-
व ला युश्रिक् बिअिबादति रब्बिही अ - ह़ - दा★ (११०)

قال الم ١٦ — ٢٤٣ — مريم ١٩

نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِآيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
وَزْنًا ۝ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوٓا آيٰتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝
خٰلِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمٰتِ
رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝ قُلْ
إِنَّمَآ أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحٰىٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا
لِقَآءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝
سُورَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَتِسْعُونَ آيَةً وَسِتُّ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ۝ إِذْ نَادٰى رَبَّهُ نِدَآءً
خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا
وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوٰلِيَ مِنْ وَّرَآءِي
وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَرِثُنِي وَيَرِثُ
مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝ يٰزَكَرِيَّآ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ
اسْمُهُ يَحْيٰى لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ أَنّٰى يَكُونُ

१९ सूरतु मर्य-म ४४

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ३९८६ अक्षर, ९६८ शब्द, ९८ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

काफ़्-हा-या - अैन् - साद् (१) ज़िक्रु रह्-मति रब्बि-क अब्दहू
ज़-करिय्या (२) इज् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या (३) क़ा-ल रब्बि
इन्नी व-ह-नल्-अज़्मु मिन्नी वश्त-अ-लर्रअ्सु शैबंव्-व लम् अकुम्-बिदुआइ-क रब्बि
शक़िय्या (४) व इन्नी ख़िफ़्तुल्-मवालि-य मिंव्वराई व कानतिम्-र-अती
आक़िरन् फ़-हब-ली मिल्लदुन् - क वलिय्या ॥ (५) यरिसुनी व यरिसु
मिन्आलि यअ्-क़ू-ब वज्-अ़ल्हु रब्बि रज़िय्या (६) या ज़करिय्या इन्ना
नुबश्शिरु-क बिग़ुलामिनिस्मुहू यह्या॥लम् नज्-अल् लहू मिन् क़ब्लु समिय्या (७)

★रु. १२/३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर रखी है। (१०२) कह दो कि हम तुम्हें बताएं कि जो अमलों के लिहाज़ से बड़े नुक़सान में हैं, (१०३) वह लोग, जिन की कोशिश दुनिया की ज़िंदगी में बर्बाद हो गयी और वे समझे हुए हैं कि अच्छे काम कर रहे हैं। (१०४) ये वह लोग हैं जिन्हों ने अपने परवरदिगार की आयतों और उस के सामने जाने से इन्कार किया, तो उन के आमाल ज़ाया हो गये और हम क़ियामत के दिन उन के लिए कुछ भी वज़न क़ायम नहीं करेंगे।[1] (१०५) यह उन की सज़ा है (यानी) जहन्नम, इस लिए कि उन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हंसी उड़ायी। (१०६) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए बहिश्त के बाग़ मेहमानी होंगे। (१०७) हमेशा उन में रहेंगे और वहां से मकान बदलना न चाहेंगे। (१०८) कह दो कि अगर समुन्दर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) लिए स्याही हो, तो इस से पहले कि मेरे परवरदिगार की बातें पूरी हों, समुन्दर ख़त्म हो जाए, अगरचे जो हम वैसा ही और उस की मदद को लाएं। (१०९) कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हूं, अल-बत्ता मेरी तरफ़ वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद (वही) एक माबूद है, तो जो शख़्स अपने परवरदिगार से मिलने की उम्मीद रखे, चाहिए कि नेक अमल करे और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न बनाए। (११०)★

१९ सूरः मरयम ४४

सूरः मरयम मक्की है और इस में ९८ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, (१) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी का बयान (है, जो उस ने) अपने बन्दे ज़करीया पर (की थी), (२) जब उन्हों ने अपने परवरदिगार को दबी आवाज़ से पुकारा। (३) (और) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी हड्डियां बुढ़ापे की वजह से कमज़ोर हो गयी हैं और सर शोला मारने लगा है[2] और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तुझ से मांग कर कभी महरूम नहीं रहा। (४) और मैं अपने बाद अपने भाई-बन्दों से डरता हूं और मेरी बीवी बांझ है, तो मुझे अपने पास से एक वारिस अता फ़रमा, (५) जो मेरी और याक़ूब की औलाद की मीरास का मालिक हो और (ऐ) मेरे परवरदिगार उस को ख़ुश अतवार (अच्छे तौर-तरीक़े वाला) बनाइयो।[3] (६) ऐ ज़करीया! हम तुम को एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं, जिस का नाम यह्या है। इस से पहले हम ने इस नाम का कोई शख़्स पैदा नहीं किया। (७) उन्हों ने कहा, परवरदिगार!

---

१. वे आख़िरत को मानते न थे, तो इस के वास्ते कुछ काम न किया, फिर एक पल्ला क्या तौलना?

२. यानी बालों की सफ़ेदी की वजह से सर आग की तरह चमकने लगा है।

३. मीरास के मालिक होने से मुराद नुबूवत का वारिस होना है, न कि माल व दौलत का, क्योंकि पैग़म्बर की नज़रों में माल व दौलत कुछ चीज़ नहीं होती, जिस के लिए ख़ुदा से वारिस मांगें। उन के नज़दीक जो चीज़ सब से बेहतर और विरासत के क़ाबिल है, वह ख़ुदा का दीन और उस के बन्दों की हिदायत है और पैग़म्बर से इन्हीं कामों के लिए ख़ुदा से औलाद मांगने की उम्मीद होनी चाहिए, साथ ही जैसा कि हदीस से साबित है, पैग़म्बर का माल ख़ुदा की राह में सद्क़ा होता है, उस का कोई वारिस नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली गुलामुंव्-व कानतिम्-र-अती आक़िरंव्-व क़द् ब-लग़्तु
मिनल्कि-बरि अितिय्या (८) क़ा-ल कज़ालि-क ॽ क़ा-ल रब्बु-क हु-व अ-लय्-य
हय्यिनुंव्-व क़द् ख़-लक़्तु-क मिन् क़ब्लु व लम् तकु शैआ (९) क़ा-ल रब्बिज्-अल्ली
आ-य-तन् ॽ क़ा-ल आयतु-क अल्ला तकुल्लिमन्ना-स सला-स लयालिन् सविय्या (१०)

मर्यम १९ — २४४ — قال الم ١٦

لِّيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨ قَالَ
كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ
شَيْئًا ۝٩ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ
لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا
بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝١١ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۚ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢
وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۚ وَكَانَ تَقِيًّا ۝١٣ وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ
جَبَّارًا عَصِيًّا ۝١٤ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝١٦ فَاتَّخَذَتْ
مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝١٧
قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝١٨ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ
رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝١٩ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ
بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝٢٠ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ
اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝٢١ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ
بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝٢٢ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ
يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝٢٣ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ
اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝٢٤ وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ
النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ۝٢٥ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا

फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही मिनल्-मिह़राबि
फ़औह़ा इलैहिम् अन् सब्बिहू बुक्-र-तुंव्-व
अ़शिय्या (११) या यह़्या ख़ुज़िल्किता-ब
बिक़ुव्वतिन् ॽ व आतैनाहुल् - हुक् - म
स़बिय्या ॽ (१२) व ह़नानम् -
मिल्लदुन्ना व ज़काततन् ॽ व का - न
तक़िय्या ॽ (१३) व बर्रम्-बिवालिदैहि
व लम् यकुन् जब्बारन् अ़सिय्या (१४) व
सलामुन् अ़लैहि यौ-म वुलि-द व यौ-म यमूतु
व यौ-म युब्अ़सु ह़य्या ★ (१५) वज़्कुर्
फ़िल्किताबि मर्यम ▨ इज़िन - त - ब-ज़त्
मिन अह़्लिहा मकानन् शर्क़िय्या ॽ (१६)
फ़त्त - ख़ - ज़त् मिन् दूनिहिम् ह़िजाबन् ﻗﻒ फ़ - अर्सल्ना इलैहा रूह़ना
फ़-त-मस्स-ल लहा ब-श-रन् सविय्या (१७) क़ालत् इन्नी अऊ़ज़ु बिर्रह़्मानि
मिन्-क इन् कुन्-त तक़िय्या (१८) क़ा-ल इन्नमा अ-न रसूलु रब्बिकि
लि-अ-ह-ब लकि गुलामन् ज़किय्या (१९) क़ालत् अन्ना यकूनु ली गुलामुंव्-
व लम् यम्सस्नी ब-शरुंव्-व लम् अकु बग़िय्या ● (२०) क़ा-ल कज़ालिकि
क़ा-ल रब्बुकि हु-व अ-लय्-य हय्यिनुन् ॽ व लिनज्-अ-लहू आयतल्लिन्नासि व
रह्-म-तम्मिन्ना ॽ व का-न अम्रम्-मक़्ज़िय्या (२१) फ़-ह़-म-लतहु फ़न्त-ब-ज़त्
बिही मकानन् क़सिय्या (२२) फ़-अजा-अहल्-मख़ाज़ु इला जिज़्अिन्-नख़्-लति
क़ालत् यालैतनी मित्तु क़ब्-ल हाज़ा व कुन्तु नस-यम्-मन्सिय्या (२३) फ़नादाहा
मिन् तह़्तिहा अल्ला तह़्-ज़नी क़द् ज-अ-ल रब्बुकि तह़्-तकि सरिय्या (२४) व
हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्अिन्-नख़्-लति तुसाक़ित् अ़लैकि रु-त-बन् जनिय्या ॽ (२५)

★ रु. १/४ आ १५ ▨ व. लाज़िम ● रुबअ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेरे यहां किस तरह लड़का पैदा होगा, जिस हाल में मेरी बीवी बांझ है और मैं बुढ़ापे की इन्तिहा को पहुंच गया हूं। (८) हुक्म हुआ कि इसी तरह (होगा) तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया है कि मुझे यह आसान है और मैं पहले तुम को भी तो पैदा कर चुका हूं और तुम कुछ चीज़ न थे। (९) कहा कि परवरदिगार! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा। फ़रमाया, निशानी यह है कि तुम सही व सालिम हो कर तीन (रात-दिन) लोगों से बात न कर सकोगे। (१०) फिर वह (इबादत के) हुज्रे से निकल कर अपनी क़ौम के पास आए, तो उन से इशारे से कहा कि सुबह व शाम (ख़ुदा को) याद करते रहो। (११) ऐ यह्या! (हमारी) किताब को ज़ोर से पकड़े रहो और हम ने उन को लड़कपन ही में हुक्म (दानाई) अता फ़रमायी थी। (१२) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (दी थी) और वह परहेज़गार थे। (१३) और मां-बाप के साथ नेकी करने वाले थे और सरकश (और) ना-फ़रमान नहीं थे। (१४) और जिस दिन पैदा हुए और जिस दिन वफ़ात पाएंगे और जिस दिन ज़िंदा कर के उठाए जाएंगे, उन पर सलाम और रहमत (है)। (१५)★

और किताब (क़ुरआन) में मरयम का भी ज़िक्र करो, जब वह अपने लोगों से अलग हो कर पूरब की तरफ़ चली गयीं, (१६) तो उन्हों ने उन की तरफ़ से पर्दा कर लिया, (उस वक़्त) हम ने उन की तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा, तो वह उनके सामने ठीक आदमी (की शक्ल) बन गया। (१७) (मरयम) बोलीं कि अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं तुम से ख़ुदा की पनाह मांगती हूं। (१८) उन्होंने कहा कि मैं तो तुम्हारे परवरदिगार का भेजा हुआ (यानी फ़रिश्ता) हूं (और इस लिए आया हूं) कि तुम्हें पाकीज़ा लड़का बख़्शूं। (१९) (मरयम) ने कहा कि मेरे यहां लड़का कैसे होगा, मुझे किसी इंसान ने छुआ तक नहीं और मैं बद-कार भी नहीं हूं। (२०)● (फ़रिश्ते ने) कहा कि यों ही (होगा)। तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया कि यह मुझे आसान है और (मैं उसे इसी तरीक़े पर करूंगा) पैदा ताकि उस को लोगों के लिए अपनी तरफ़ से निशानी और रहमत (व मेहरबानी का ज़रिया) बनाऊं और यह काम मुक़र्रर हो चुका है। (२१) तो वह उस (बच्चे) के साथ हामिला हो गयीं और उसे ले कर एक दूर जगह चली गयीं। (२२) फिर दर्देज़ेह (बच्चा पैदा होने के वक़्त का दर्द) उन को खजूर के तने की तरफ़ ले आया। कहने लगीं कि काश मैं इस से पहले मर चुकती और भूली-बिसरी हो गयी होती। (२३) उस वक़्त उन के नीचे की तरफ़ से फ़रिश्ते ने उन को आवाज़ दी कि ग़मनाक न हो। तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा पैदा कर दिया है। (२४) और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिलाओ, तुम पर ताज़ा खजूरें झड़

★रु. १/४ आ १५ व. लाज़िम ●रुब्अ् १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़कुली वश-रबी व क़र्री अ'नन् फ़इम्मा त-र-यिन्-न मिनल्-ब-शरि अ-ह्-दन्
फ़क़ूली इन्नी न-ज़र्तु लिर्रह्मानि सौमन् फ़-लन् उकल्लिमल्-यौ-म इन्सिय्या
(२६) फ़-अ-तत् बिही क़ौमहा तह्-मिलुहू क़ालू या मर्यमु ल-क़द् जिअ्ति
शैअन् फ़रिय्या (२७) याउख़्-त हारू-न मा का-न अबूकिम्र-अ सौइ व्-व मा
कानत् उम्मुकि बग़िय्या (२८)
फ़-अशारत् इलैहि क़ालू कै-फ़ नुकल्लिमु
मन् का-न फ़िलमह्दि सबिय्या (२९) क़ा-ल
इन्नी अब्दुल्लाहि आतानियल्-
किता-ब व ज-अ-लनी नबिय्या (३०)
व ज-अ-लनी मुबारकन् ऐ-न मा कुन्तु
व औसानी बिस्सलाति वज़्ज़काति मादुम्तु
ह्य्या (३१) व बर्रम्-
बिवालिदती व लम् यज्-अल्नी जब्बारन्
शक़िय्या (३२) वस्सलामु अ-लय्-य यौ-म
वुलित्तु व यौ-म अमूतु व यौ-म उब्असु
ह्य्या (३३) ज़ालि-क ईसब्नु मर्य-म
क़ौलल्-ह्क़्क़िल्लज़ी फ़ीहि यम्तरून (३४) मा का-न लिल्लाहि अंय्यत्तख़ि-ज़
मिंव - लदिन् सुब्हानहू इज़ा क़ज़ा अम् - रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू
कुन् फ़-यकून (३५) व इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्-बुदूहु हाज़ा
सिरातुम् - मुस्तक़ीम (३६) फ़ख़्त - ल् - फ़ल् - अह्ज़ाबु मिम् - बैनिहिम्
फ़-वैलुल्-लिल्लज़ी - न क-फ़रू मिम् - मश्हदि यौमिन् अज़ीम (३७)
अस्मिअ् बिहिम् व अब्सिर् यौ - म यअ्तूनना लाकिनिज़् - ज़ालिमूनल्-
यौ-म फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (३८) व अन-ज़िर्हुम् यौमल्-ह्स्-रति इज़्
क़ुज़ियल् - अम्रु व हुम् फ़ी ग़फ़्-लतिंव्वहुम् ला युअ्मिनून (३९)
इन्ना नह्नु नरिसुल्अर्-ज़ व मन् अलैहा व इलैना युर्जअून ★ (४०)
वज़ - कुर् फ़िल्किताबि इब्राही - म इन्नहू का - न सिद्दीक़न्
नबिय्या (४१) इज् क़ा - ल लिअबीहि या-अ-बति लि-म तअ् - बुदु
मा ला यस्मअु व ला युब्सिरु व ला युग़्नी अन्-क शैआ (४२)

मريم ١٩ ٢٤٥ قال الم ١٦

ترين من البشر احدا فقولي اني نذرت للرحمن صوما فلن
اكلم اليوم انسيا ﴿٢٦﴾ فاتت به قومها تحمله قالوا يمريم لقد جئت
شيئا فريا ﴿٢٧﴾ يأخت هرون ما كان ابوك امرا سوء وما كانت امك
بغيا ﴿٢٨﴾ فاشارت اليه قالوا كيف نكلم من كان في المهد صبيا ﴿٢٩﴾
قال اني عبد الله اتني الكتب وجعلني نبيا ﴿٣٠﴾ وجعلني مبركا
اين ما كنت واوصني بالصلوة والزكوة ما دمت حيا ﴿٣١﴾ وبرا
بوالدتي ولم يجعلني جبارا شقيا ﴿٣٢﴾ والسلم علي يوم ولدت ويوم
اموت ويوم ابعث حيا ﴿٣٣﴾ ذلك عيسى ابن مريم قول الحق الذي
فيه يمترون ﴿٣٤﴾ ما كان لله ان يتخذ من ولد سبحنه اذا قضى
امرا فانما يقول له كن فيكون ﴿٣٥﴾ وان الله ربي وربكم فاعبدوه
هذا صراط مستقيم ﴿٣٦﴾ فاختلف الاحزاب من بينهم فويل
للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ﴿٣٧﴾ اسمع بهم وابصر يوم
يأتوننا لكن الظلمون اليوم في ضلل مبين ﴿٣٨﴾ وانذرهم يوم
الحسرة اذ قضي الامر وهم في غفلة وهم لا يؤمنون ﴿٣٩﴾ انا
نحن نرث الارض ومن عليها والينا يرجعون ﴿٤٠﴾ واذكر في
الكتب ابرهيم انه كان صديقا نبيا ﴿٤١﴾ اذ قال لابيه يابت لم
تعبد ما لا يسمع ولا يبصر ولا يغني عنك شيئا ﴿٤٢﴾ يابت اني قد

منزل ٤

व. लाज़िम ★रु. २/५ आ २५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पड़ेंगी। (२५) तो खाओ और पियो और आंखें ठंडी करो। अगर तुम किसी आदमी को देखो तो कहना कि मैं ने ख़ुदा के लिए रोज़े की मन्नत मानी, तो आज मैं किसी आदमी से हरगिज़ बात नहीं करूंगी। (२६) फिर वह उस (बच्चे) को उठा कर अपनी क़ौम के लोगों के पास ले आयीं। वे कहने लगे कि मरयम! यह तो तू ने बुरा काम किया। (२७) ऐ हारून की बहन![1] न तो तेरा बाप बुरी आदतों वाला था और न तेरी मां ही बद-कार थी। (२८) तो मरयम ने उस लड़के की तरफ़ इशारा किया। वह बोले कि हम इस से कि गोद का बच्चा है, किस तरह बात करें। (२९) (बच्चे ने) कहा कि मैं ख़ुदा का बन्दा हूं, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है। (३०) और मैं जहां हूं (और जिस हाल में हूं) मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक ज़िंदा हूं, मुझ को नमाज़ और ज़कात का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है। (३१) और (मुझे) अपनी मां के साथ नेक सुलूक करने वाला (बनाया है) और सरकश व बद-बख़्त नहीं बनाया, (३२) और जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन ज़िंदा कर के उठाया जाऊंगा, मुझ पर सलाम (व रहमत) है। (३३) यह मरयम के बेटे ईसा हैं (और यह) सच्ची बात है, जिसमें लोग शक करते हैं। (३४) ख़ुदा की शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए, वह पाक है, जब किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस को यही कहता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (३५) और बेशक ख़ुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। (३६) फिर (किताब वालों के) फ़िर्क़ों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया, सो जो लोग काफ़िर हुए हैं, उन को बड़े दिन (यानी क़ियामत के दिन) हाज़िर होने से ख़राबी है। (३७) वे जिस दिन हमारे सामने आएंगे, कैसे सुनने वाले और कैसे देखने वाले होंगे, मगर ज़ालिम आज खुली गुमराही में हैं। (३८) और उन को हसरत (व अफ़सोस) के दिन से डरा दो, जब बात फ़ैसला कर दी जाएगी ▨ और (अफ़सोस!) वे ग़फ़लत में (पड़े हुए) हैं और ईमान नहीं लाते। (३९) हम ही ज़मीन के और जो लोग उस पर (बसते) हैं, उन के वारिस हैं और हमारी ही तरफ़ उन को लौटना होगा। (४०) ★

और किताब में इब्राहीम को याद करो। बेशक वह निहायत सच्चे पैग़म्बर थे। (४१) जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि अब्बा! आप ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हैं, जो न सुनें और न देखें

---

१. हारून से यहां वह हारून मुराद नहीं, जो हज़रत मूसा के भाई थे, क्योंकि वह हज़रत मरयम से मुद्दतों पहले हो गुज़रे थे यानी रिश्तेदारी के लिहाज़ से वह हारून मुराद नहीं हैं, बल्कि नेकी और परहेज़गारी में एक जैसे होने के एतबार से मुराद हैं, यानी तू हारून जैसी नेक और परहेज़गार थी, गोया उन की बहन थी, फिर तू ने यह काम किया। अली बिन तल्हा और सुद्दी ने कहा कि हारून की बहन इस लिए कहा गया कि वह हज़रत मूसा के भाई हारून की नस्ल से थीं और अरब की आदत है कि जो शख़्स जिस क़ौम और क़बीले का होता है उस को उस क़ौम और क़बीले का भाई कह कर पुकारते हैं, जैसे तमीमी को 'अख़ा तमीम' (तमीम के भाई) और मुज़री या 'अख़ा मुज़र' (मुज़र के भाई) कहते हैं। इसी तरह यहां भी हज़रत मरयम को हज़रत हारून की बहन कह कर पुकारा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या-अ-बति इन्नी क़द् जा-अनी मिनल्-अ़िल्मि मा लम् यअ्-ति-क फ़त्तबिअ्-नी
अह्-दि-क सिरातन् सविय्या (४३) याअ-बति ला तअ्-बुदिश्शैता-न इन्नश्शैता-न
का-न लिर्रह्मानि अ़सिय्या (४४) याअ-बति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्य-मस्स-क
अ़ज़ाबुम्-मिनर्रह्मानि फ़-तकू-न लिश्शैतानि वलिय्या (४५) क़ा-ल अ-रागिबुन्
अन् - त अन् आलिहती याइब्राहीमु ع
लइल्लम् तन्तहि ल-अर्जुमन्न-क वह्जुर्नी
मलिय्या (४६) क़ा-ल सलामुन् अ़लै-क ع
स-अस्तग़्फ़िरु ल-क रब्बी इन्नहू का - न
बी ह़फ़िय्या (४७) व अअ्-तज़िलुकुम्
व मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि व अद्अू
रब्बी अ़सा अल्ला अकू-न बिदुआ - इ
रब्बी शक़िय्या (४८) फ़-लम्मअ्-त-ज़-लहुम्
व मा यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व-हब्ना
लहू इस्-हा-क़ व यअ्-क़ू-ब व कुल्लन्
ज-अ़ल्ना नबिय्या (४९) व व-हब्ना लहुम्
मिर्रह्मतिना व ज-अ़ल्ना लहुम् लिसा-न
सिद्क़िन् अ़लिय्या ★(५०) वज़्कुर्

جَآءَنِیْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ یَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِیْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِیًّا ۝ یٰۤاَبَتِ
لَا تَعْبُدِ الشَّیْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّیْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِیًّا ۝ یٰۤاَبَتِ
اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّیْطٰنِ
وَلِیًّا ۝ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ
وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ۝ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
بِیْ حَفِیًّا ۝ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّیْ ۖ
عَسٰۤی اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ شَقِیًّا ۝ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ۝ وَ
وَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِیًّا ۝ وَاذْكُرْ
فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤی ۫ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ۝ وَنَادَیْنٰهُ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ
اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِیًّا ۝ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِسْمٰعِیْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ۝ۚ وَكَانَ یَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِیًّا ۝ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِدْرِیْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّیْقًا نَّبِیًّا ۝ۗۙ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِیًّا ۝ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَیْهِمْ مِّنَ النَّبِیّٖنَ مِنْ ذُرِّیَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ
ذُرِّیَّةِ اِبْرٰهِیْمَ وَاِسْرَآءِیْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَیْنَا وَاجْتَبَیْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰی عَلَیْهِمْ

फ़िल्किताबि मूसा इन्नहू का-न मुख़्-ल-संव-व का-न रसूलन् नबिय्या (५१)
व नादैनाहु मिन् जानिबित्तूरिल्-ऐ-मनि व क़र्रब्नाहु नजिय्या (५२) व
व-हब्ना लहू मिर्रह्मतिना अख़ाहु हारू-न नबिय्या (५३) वज़्कुर् फ़िल्किताबि
इस्माई-ल इन्नहू का-न सादिक़ल् - वअ्-दि व का-न रसूलन् नबिय्या ع
(५४) व का-न यअ्मुरु अह्-लहू बिस्सलाति वज़्ज़काति व का-न अिन्-द
रब्बिही मर्-ज़िय्या (५५) वज़्कुर् फ़िल्किताबि इद्री-स इन्नहू का-न
सिद्दीक़न् नबिय्या (५६) व र-फ़अ्-नाहु मकानन् अ़लिय्या (५७)
उलाइकल्लज़ी-न अन्-अ़-मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्-नबिय्यी-न मिन् ज़ुर्रिय्यति
आद-म व मिम्मन् ह़-मल्ना म-अ़ नूहिन् व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही-म
व इस्राई - ल व मिम्मन् हदैना वज्तबैना इज़ा तुत्ला
अ़लैहिम् आयातुर्रह्मानि ख़र्रू सुज्जदंव - व बुकिय्या □(५८)

★रु. ३/६ आ १० □ सज्दः ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और न आप के कुछ काम आ सकें। (४२) अब्बा! मुझे ऐसा इल्म मिला है, जो आप को नहीं मिला, तो मेरे साथ होजिए, मैं आप को सीधी राह पर चला दूंगा। (४३) अब्बा! शैतान की पूजा न कीजिए बेशक शैतान ख़ुदा का ना-फ़रमान है। (४४) अब्बा! मुझे डर लगता है कि आप को ख़ुदा का अज़ाब आ पकड़े, तो आप शैतान के साथी हो जाएं। (४५) उस ने कहा कि इब्राहीम! क्या तू मेरे माबूदों से बरगश्ता है? अगर तू बाज़ न आएगा, तो मैं तुझे संगसार करूंगा और तू हमेशा के लिए मुझ से दूर हो जा। (४६) (इब्राहीम ने) "सलामुन अलैकुम" कहा (और कहा कि) मैं आपके लिए अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगूंगा। बेशक वह मुझ पर निहायत मेहरबान है। (४७) और मैं आप लोगों से और जिन को आप ख़ुदा के सिवा पुकारा करते हैं, उन से किनारा करता हूं और अपने परवरदिगार ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने परवरदिगार को पुकार कर महरूम नहीं रहूंगा। (४८) और जब इब्राहीम उन लोगों से और जिन की वे ख़ुदा के सिवा पूजा किया करते थे, अलग हो गये, तो हम ने उन को इस्हाक़ और (इस्हाक़ को) याक़ूब बख़्शे और सब को पैग़म्बर बनाया। (४९) और उन को अपनी रहमत से (बहुत-सी चीज़ें) इनायत कीं और उन का बेहतर ज़िक्र बुलंद किया। (५०)★

और किताब में मूसा का भी ज़िक्र करो। बेशक वह (हमारे) चुने हुए और भेजे हुए (रसूल) पैग़म्बर थे। (५१) और हम ने तूर की दाहिनी तरफ़ पुकारा और बातें करने के लिए नज़दीक बुलाया। (५२) और अपनी मेहरबानी से उन को उन का भाई हारून पैग़म्बर अता किया। (५३) और किताब में इस्माईल का भी ज़िक्र करो। वह वायदे के सच्चे और (हमारे) भेजे हुए नबी थे। (५४) और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते थे और अपने परवरदिगार के यहां पसंदीदा (व बर्गुज़ीदा) थे। (५५) और किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र करो। वह भी निहायत सच्चे नबी थे। (५६) और हम ने उन को ऊंची जगह उठा लिया था।[1] (५७) ये वह लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों मे से फ़ज़्ल किया (यानी) आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन को हम ने नूह के साथ (कश्ती में) सवार किया और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद में से और उन लोगों में से जिन को हम नें हिदायत दी और चुन लिया, जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती थीं तो सज्दे में गिर पड़ते और रोते रहते थे□ (५८) फिर उन के बाद कुछ

१. यानी नुबूवत का बुलंद दर्जा या दुनिया में बुलंद मर्तबा बख़्शा था या यह कि आसमान की तरफ़ उठा लिया था।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-ख़-ल-फ़ मिम्बअ्-दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाअुस्सला-त़ वत्तबअुश्श-ह-वाति फ़सौ-फ़ यल्क़ौ-न
ग़य्या (५९) इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़उलाइ-क
यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त़ व ला युज़्लमू-न शैआ (६०) जन्नाति अद्नि-
निल्लती व-अ-दर्रह्मानु अ़िबादहू बिल्ग़ैबि इन्नहू का-न वअ्-दुहू मअ्तिय्या
(६१) ला यस्मअू-न फ़ीहा लग़-वन्
इल्ला सलामन् व लहुम् रिज़्-क़ुहुम्
फ़ीहा बुक-र-तंव्-व अ़शिय्या (६२) तिल्कल्-
जन्नतुल्लती नूरिसु मिन् अ़िबादिना मन्
का-न तक़िय्या (६३) व मा न-त-नज़्ज़लु
इल्ला बिअम्रि रब्बि-क लहू मा बै-न
ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै-न ज़ालि-क
व मा का-न रब्बु-क नसिय्या (६४)
रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा
फ़अ्-बुद्हु वस्तबिर् लिअ़िबादतिही हल्
तअ्-लमु लहू समिय्या ★ (६५) व
यक़ूलुल्-इन्सानु अ-इज़ा मा मित्तु ल-सौ-फ़

مريم ١٩ — ٢٤٧ — قال الم ١٦

ايت الرحمن خروا سجدا و بكيا ۩ فخلف من بعدهم خلف
اضاعوا الصلوة واتبعوا الشهوت فسوف يلقون غيا ﴿٥٩﴾ الا من
تاب وامن وعمل صالحا فاولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون
شيئا ﴿٦٠﴾ جنت عدن التي وعد الرحمن عباده بالغيب انه كان
وعده ماتيا ﴿٦١﴾ لا يسمعون فيها لغوا الا سلما ولهم رزقهم فيها بكرة
وعشيا ﴿٦٢﴾ تلك الجنة التي نورث من عبادنا من كان تقيا ﴿٦٣﴾ وما
نتنزل الا بامر ربك له ما بين ايدينا وما خلفنا وما بين ذلك و
ما كان ربك نسيا ﴿٦٤﴾ رب السموت والارض وما بينهما فاعبده و
اصطبر لعبادته هل تعلم له سميا ﴿٦٥﴾ ويقول الانسان ءاذا ما
مت لسوف اخرج حيا ﴿٦٦﴾ اولا يذكر الانسان انا خلقنه من قبل
ولم يك شيئا ﴿٦٧﴾ فوربك لنحشرنهم والشيطين ثم لنحضرنهم حول
جهنم جثيا ﴿٦٨﴾ ثم لننزعن من كل شيعة ايهم اشد على الرحمن
عتيا ﴿٦٩﴾ ثم لنحن اعلم بالذين هم اولى بها صليا ﴿٧٠﴾ وان منكم الا
واردها كان على ربك حتما مقضيا ﴿٧١﴾ ثم ننجي الذين اتقوا و
نذر الظلمين فيها جثيا ﴿٧٢﴾ واذا تتلى عليهم ايتنا بينت قال
الذين كفروا للذين امنوا اي الفريقين خير مقاما واحسن
نديا ﴿٧٣﴾ وكم اهلكنا قبلهم من قرن هم احسن اثاثا ورءيا ﴿٧٤﴾

منزل

उख़्रजु ह़य्या (६६) अ-व ला यज़्कुरुल्-इन्सानु अन्ना ख़-लक़्नाहु मिन्
क़ब्लु व लम् यकु शैआ (६७) फ़-व रब्बि-क ल-नह़्शुरन्नहुम् वश्शयाती-न
सुम्-म ल-नुह़्ज़िरन्नहुम् ह़ौ-ल जहन्न-म जिसिय्या (६८) सुम्-म ल-नन्ज़िअ़न्-न
मिन् कुल्लि शीअ़तिन् अय्युहुम् अशद्दु अ़लर्रह़्मानि अ़ितिय्या (६९) सुम्-म
ल-नह़्नु अअ्-लमु बिल्लज़ी-न हुम् औला बिहा सि़लिय्या (७०) व इम्-मिन्कुम्
इल्ला वारिदुहा का-न अ़ला रब्बि-क ह़तमम्-मक़्ज़िय्या (७१)
सुम्-म नुनज्जिल्लज़ीनत्तक़व्-व न-ज़-रुज़्ज़ालिमी-न फ़ीहा जिसिय्या (७२)
व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न
आमनू अय्युल्फ़रीक़ैनि ख़ैरुम्-मक़ामंव्-व अह़्सनु नदिय्या (७३) व कम्
अह्-लक्ना क़ब-लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अह़्-सनु असासंव्-व रिअ्या (७४)

★रु. ४/७ आ १५

ना-खलफ़ उन के जानशीन हुए, जिन्होंने नमाज़ को (छोड़ दिया, गोया उसे) खो दिया और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे लग गये, बहुत जल्द उन को गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (५९) हां, जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए तो ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे और उन का कुछ नुक़्सान न किया जाएगा। (६०) (यानी) हमेशा की बहिश्त (में) जिस का ख़ुदा ने अपने बन्दों से वायदा किया है (और जो उन की आंखों से) छिपा हुआ (है।) बेशक उस का वायदा (नेकों के सामने) आने वाला है। (६१) वे उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा कलाम न सुनेंगे और उन के लिए सुबह व शाम खाना तैयार होगा।[1] (६२) यह वह जन्नत है जिस का हम अपने बन्दों में से ऐसे शख़्स को मालिक बनाएंगे, जो परहेज़गार होगा। (६३) और (फ़रिश्तों ने पैग़म्बर को जवाब दिया कि) हम तुम्हारे परवरदिगार के हुक्म के सिवा उतर नहीं सकते, जो कुछ हमारे आगे है और जो पीछे है और जो उन के दर्मियान है, सब उसी का है और तुम्हारा परवरदिगार भूलने वाला नहीं। (६४) (यानी) आसमान और ज़मीन और जो उन दोनों के दर्मियान है सब का परवरदिगार, तो उसी की इबादत करो और उस की इबादत पर साबित क़दम रहो, भला तुम कोई उस का हम-नाम (एक नाम वाला) जानते हो? (६५)★

और (काफ़िर) इंसान कहता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या ज़िंदा कर के निकाला जाऊंगा? (६६) क्या (ऐसा) इंसान याद नहीं करता कि हम ने उस को पहले भी तो पैदा किया था और वह कुछ भी चीज़ न था। (६७) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! हम उन को जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर इन सब को जहन्नम के गिर्द हाज़िर करेंगे (और वे) घुटनों पर गिरे हुए (होंगे)। (६८) फिर हर जमाअत में से हम ऐसे लोगों को खींच निकालेंगे, जो ख़ुदा से सख़्त सर-कशी करते थे। (६९) और हम उन लोगों को ख़ूब जानते हैं, जो उन में दाख़िल होने के ज़्यादा लायक़ हैं। (७०) और तुम में कोई (शख़्स) नहीं, मगर उसे उस पर गुज़रना होगा। यह तुम्हारे परवरदिगार पर ज़रूरी और मुक़र्रर है। (७१) फिर हम परहेज़गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल पड़ा हुआ छोड़ देंगे। (७२) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो जो काफ़िर हैं, वे मोमिनों से कहते हैं कि दोनों फ़रीक़ में से मकान किस के अच्छे और मज्लिसों में से किस की बेहतर है? (७३) और हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मतें हलाक कर दीं। वे लोग (उन से) ठाट और दिखावे में कहीं अच्छे थे। (७४) कह दो कि जो शख़्स गुमराही में

१. बक-बक न सुनेंगे और सलामुन अलैकुम की आवाज़ सुनेंगे।

★रु. ४/७ आ १५

क़ुल् मन् का-न फ़िज़्ज़लालति फ़ल्-यम्दुद् लहुर्रह्मानु मद्-दा ج हत्ता इज़ा
रऔ मा यूअदू-न इम्मल्-अज़ा-ब व इम्मस्सा-अ-तु ط फ़-स-यअ्-ल-मू-न मन् हु-व
शर्रुम्-मकानंव्-व अज़अफ़ु जुन्दा (७५) व यज़ीदुल्लाहुल्-लज़ीनह्-तदौ हुदन् ط
वल्बाक़ियातुस्-सालिहातु ख़ैरुन् अिन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुम्-म-रद्दा (७६)

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰى إِذَا رَأَوْا
مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ط فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ
مَّكَانًا وَّأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيدُ اللّٰهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ط وَالْبٰقِيٰتُ
الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ أَفَرَءَيْتَ الَّذِي كَفَرَ
بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ط سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ
مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَّنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ط سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ
ضِدًّا ﴿٨٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيٰطِينَ عَلَى الْكٰفِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾
فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ط إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمٰنِ
وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ
إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾
لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ
وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ
أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ط ﴿٩٢﴾ إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا اٰتِي الرَّحْمٰنِ
عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ أَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ط ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَرْدًا ﴿٩٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

अ-फ़-रएे-तल्लज़ी क-फ़-र बिआयातिना व क़ा-ल
ल-ऊ-त-यन्-न मालंव्-व व-ल-दा ط (७७)
अत्त-ल-अल्ग़ै-ब अमित्त-ख़ज अिन्दर्रह्मानि
अह् - दा لا (७८) कल्ला ط स - नक्तुबु
मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल्-अज़ाबि
मद् - दा لا (७९) व नरिसुहू मा
यक़ूलु व यअ्तीना फ़र्दा (८०) वत्त-ख़ज़ू
मिन् दूनिल्लाहि आलि-ह-तल्-लि-यकूनू लहुम्
अिज़्ज़ा لا (८१) कल्ला ط स-यक्फ़ुरू - न
बिअिबादतिहिम् व यकूनू-न अलैहिम् ज़िद्दा
★(८२)अ-लम् त-र अन्ना अर्सल्नश् -
शयाती-न अ-लल्-काफ़िरी - न तउज़्ज़ुहुम्
अज़्ज़ा لا (८३) फ़ला तअ् - जल्
अलैहिम् ط इन्नमा नअुद्दु लहुम् अद्दा ج (८४) यौ - म नह्शुरुल् -
मुत्तक़ी-न इलर्रह्मानि वफ़्-दा لا (८५) व नसूक़ुल् - मुज्रिमी-न इला
जहन्न-म विर्दा ▨(८६) ला यम्लिकूनश्शफ़ा-अ-त इल्ला मनित्त - ख़-ज
अिन्दर्रह्मानि अह्दा ▨(८७) व क़ालुत्त-ख़-जर्रह्मानु व-ल-दा ط (८८)
ल-क़द् जिअ्तुम् शैअन् इद्दा لا (८९) तकादुस्समावातु य-त-फ़त्तर-न मिन्हु
व तन-शक़्क़ुलअर्ज़ु व तख़िर्रुल्-जिबालु हद्दा لا (९०) अन् दऔ लिर्रह्मानि
व-ल-दा ج (९१) व मा यम्बग़ी लिर्रह्मानि अंय्यत्तख़ि-ज व-ल-दा ط (९२)
इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल् - अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह्मानि
अब्दा ط (९३) ल - क़द् अह्साहुम् व अद्दहुम् अद्दा ط (९४)
व कुल्लुहुम् आतीहि यौमल्क़ियामति फ़र्दा (९५) इन्नल्लज़ी - न
आमनू व अमिलुस्सालिहाति स-यज्अलु लहुमुर्रह्मानु वुद्दा (९६)

★रु. ५/८ आ १७ ▨ व. लाज़िम ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पड़ा हुआ है, ख़ुदा उस को धीरे-धीरे मोहलत दिए जाता है, यहां तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, ख़्वाह अज़ाब, और ख़्वाह क़ियामत तो (उस वक़्त) जान लेंगे कि मकान किस का बुरा है और लश्कर किस का कमज़ोर है। (७५) और जो लोग हिदायत पाए हुए हैं, ख़ुदा उन को ज़्यादा हिदायत देता है और नेकियां जो बाक़ी रहने वाली हैं, वे तुम्हारे परवरदिगार के बदले के लिहाज़ से ख़ूब और अंजाम के एतबार से बेहतर हैं। (७६) भला तुम ने उस शख़्स को देखा जिस ने हमारी आयतों से कुफ़्र किया और कहने लगा कि (अगर मैं नये सिरे से ज़िंदा हुआ भी तो यही) माल और औलाद मुझे (वहां) मिलेगा। (७७) क्या उस ने ग़ैब की ख़बर पा ली है, या ख़ुदा के यहां (से) अह्द ले लिया है ? (७८) हरगिज़ नहीं ! यह जो कुछ कहता है, हम उस को लिखते जाते और धीरे-धीरे अज़ाब बढ़ाते जाते हैं, (७९) और जो चीज़ें यह बताता है, उन के हम वारिस होंगे और यह अकेला हमारे सामने आएगा। (८०) और उन लोगों ने ख़ुदा के सिवा और माबूद बना लिए हैं, ताकि वह उन के लिए (इज़्ज़त व) मदद (की वजह) हो। (८१) हरगिज़ नहीं। वे (झूठे माबूद) उन की पूजा से इन्कार करेंगे और उन के दुश्मन (व मुख़ालिफ़) होंगे, (८२) ★

क्या तुम ने नहीं देखा कि हम ने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रखा कि वे उन को उभारते रहते हैं, (८३) तो तुम उन पर (अज़ाब के लिए) जल्दी न करो और हम तो उन के लिए (दिन) गिन रहे हैं, (८४) जिस दिन हम परहेज़गारों को ख़ुदा के सामने मेहमानों (के तौर-पर) जमा करेंगे। (८५) और गुनाहगारों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासे हांक ले जाएंगे ▨ (८६) (तो लोग) किसी की सिफ़ारिश का अख़्तियार न रखेंगे, मगर जिस ने ख़ुदा से इक़रार लिया हो ▨ (८७) और कहते हैं ख़ुदा बेटा रखता है। (८८) (ऐसा कहने वालो ! यह तो) तुम बुरी बात (ज़ुबान पर) लाते हो। (८९) क़रीब है कि इस (झूठ गढ़ने) से आसमान फट पड़े और ज़मीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ें, (९०) कि उन्हों ने ख़ुदा के लिए बेटा तज्वीज़ किया। (९१) और ख़ुदा को मुनासिब नहीं कि किसी को बेटा बनाए। (९२) तमाम शख़्स जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सब ख़ुदा के रू-ब-रू बन्दे हो कर आएंगे। (९३) उस ने उन (सब) को (अपने इल्म से) घेर रखा और (एक-एक को) गिन रखा है, (९४) और सब क़ियामत के दिन उस के सामने अकेले-अकेले हाज़िर होंगे। (९५) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, ख़ुदा उन की मुहब्बत (मख़्लूक़ात के दिल में) पैदा कर देगा। (९६) (ऐ पैग़म्बर !) हम ने यह (क़ुरआन)

★रु. ५/८ आ १७ ▨ व. लाज़िम ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लितुबश्शि-र बिहिल्-मुत्तक़ी-न व तुन्ज़ि-र
बिही क़ौमल्-लुद्दा (९७) व कम् अह्लक्ना क़ब-लहुम् मिन् क़र्नित् ط
हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ-हदित् औ तस्मअु लहुम् रिक्ज़ा ●★ (९८)

ط۲۰ ۲۴۹ قال الم ۱۶

وُدًّا ﴿۹۶﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ
قَوْمًا لُّدًّا ﴿۹۷﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ
مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿۹۸﴾

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّخَمْسٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّثَمَانُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ﴿۱﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿۲﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿۳﴾
تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿۴﴾ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ
اسْتَوٰى ﴿۵﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ
الثَّرٰى ﴿۶﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿۷﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿۸﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿۹﴾ اِذْ
رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ
اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿۱۰﴾ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِىَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۱﴾ اِنِّىْٓ اَنَا رَبُّكَ
فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿۱۲﴾ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ
لِمَا يُوْحٰى ﴿۱۳﴾ اِنَّنِىْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِىْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ
لِذِكْرِىْ ﴿۱۴﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ﴿۱۵﴾
فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿۱۶﴾ وَمَا تِلْكَ
بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ قَالَ هِىَ عَصَاىَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى

२० सूरतु ताहा ४५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ५४६६ अक्षर, १२५१ शब्द, १३५ आयतें और ८ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

ता - हा ج (१) मा अन्ज़ल्ना
अ़लैकल् - क़ुर्आ - न लितश्क़ा ۙ (२)
इल्ला तज़्कि-र-तल् - लिमंय्यख़्शा ۙ (३)
तन्ज़ीलम्-मिम्मन् ख़-ल-क़ल्अर्-ज़ वस्समावातिल्-
अुला ط (४) अर्रह्मानु अ़ - लल् -
अ़र्शिस्तवा (५) लहू मा फ़िस्-समावाति
व मा फ़िल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व मा
तह-तस्सरा (६) व इन् तज्-हर् बिल्क़ौलि
फ़-इन्नहू यअ्-लमुस्सिर-र व अख़्फ़ा (७) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला
हु-व ط लहुल् - अस्मा - उल् - हुस्ना (८) व हल् अता - क हदीसु
मूसा ▨ (९) इज़् रआ नारन् फ़ - क़ा - ल लिअह्लिहिम्कुसू इन्नी
आनस्तु नारल्ल-अ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-क़-बसिन् औ अजिदु अ़-लन्नारि
हुदा (१०) फ़-लम्मा अताहा नूदि-य या मूसा ط (११) इन्नी अ-न
रब्बु-क फ़ख़्लअ् नअ् - लै-क ج इन्न-क बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा ط (१२)
व अनख़्तरतु-क फ़स्तमिअ् लिमा यूहा (१३) इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह
इल्ला अ-न फ़अ्-बुदनी ۙ व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री (१४) इन्नस्सा-अ-त
आतियतुन् अकादु उख़्फ़ीहा लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा तस्आ (१५)
फ़ला यसुद्दन्न-क अ़न्हा मल्ला युअ्मिनु बिहा वत्तब-अ् हवाहु फ़-तर्दा (१६)
व मा तिल्-क बियमीनि-क या मूसा (१७) क़ा-ल हि-य अ़साय ج अ-त-वक्कउ
अ़लैहा व अहुश्शु बिहा अ़ला ग़-नमी व लि-य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा (१८)

★रु. ६/६ आ १६ ● नि. १/२ ▨ व लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम्हारी ज़ुबान में आसान (नाज़िल) किया है ताकि तुम इस से परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी पहुंचा दो और झगड़ालुओं को डर सुना दो। (९७) और हम ने इस से पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है, भला तुम उन में किसी को देखते हो या (कहीं) उन की भनक सुनते हो। (९८)★●

२० सूरः ता़ हा ४५

सूरः त्वा हा मक्की है और इस में एक सौ पैंतीस आयतें और आठ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा हा, (१) (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम पर क़ुरआन इसलिए नाज़िल नहीं किया कि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ।[1] (२) बल्कि उस शख़्स को नसीहत देने के लिए (नाज़िल किया है) जो डर रखता है! (३) यह उस ज़ात का उतारा हुआ है, जिस ने ज़मीन और ऊंचे-ऊंचे आसमान बनाए। (४) (यानी ख़ुदा-ए-) रहमान, जिस ने अर्श पर क़रार पकड़ा। (५) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, और जो कुछ (ज़मीन की) मिट्टी के नीचे है, सब उसी का है। (६) और अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह तो छिपे भेद और बहुत छिपी बात तक को जानता है। (७) (वह) माबूद (बर हक़) है (कि) उस के सिवा कोई माबूद नहीं है, उस के (सब) नाम अच्छे हैं। (८) और क्या तुम्हें मूसा के हाल की ख़बर मिली है ▨ (९) जब उन्हों ने आग देखी तो अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (यहां) ठहरो, मैं ने आग देखी है। (मैं वहां जाता हूं) शायद उस में से मैं तुम्हारे पास अंगारे लाऊं या आग (की जगह) का रास्ता मालूम कर सकूं। (१०) जब वहां पहुंचे तो आवाज़ आयी कि मूसा! (११) मैं तो तुम्हारा परवरदिगार हूं, तो अपनी जूतियां उतार दो, तुम (यहां) पाक मैदान (यानी) तुवा में हो। (१२) और मैं ने तुम को चुन लिया है, तो जो हुक्म दिया जाए, उसे सुनो। (१३) बेशक मैं ही ख़ुदा हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत किया करो और मेरी याद के लिए नमाज़ पढ़ा करो। (१४) क़ियामत यक़ीनन आने वाली है। मैं चाहता हूं कि उस (के वक़्त) को पोशीदा रखूं, ताकि हर शख़्स जो कोशिश करे, उस का बदला पाए।[2] (१५) तो जो शख़्स उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चलता है, (कहीं) तुम को उस (के यक़ीन) से रोक न दे, तो (इस शक्ल में) तुम हलाक हो जाओ। (१६) और मूसा यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है? (१७) उन्हों ने कहा यह मेरी लाठी है, इस पर मैं सहारा लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं और इस में मेरे और भी कई फ़ायदे

---

१. जब क़ुरआन नाज़िल होना शुरू हुआ तो जनाब रिसालत मआब ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करते और बहुत ज़हमत उठाते, रातों को नमाज़ में खड़े रहते और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते रहते, इस से एक तो सेहत में ख़लल वाक़ेअ होने का डर होता था, दूसरे काफ़िरों ने आप से कहना शुरू किया कि क़ुरआन तो आप के लिए सख़्त तक्लीफ़ की वजह बन गया, तब यह आयत नाज़िल हुई कि अल्लाह तआला ने आप को ऐसी मशक़्क़त उठाने से मना फ़रमाया।

२. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी पहली वह्य में नमाज़ का हुक्म है और हमारे पैग़म्बर को भी 'व रब्ब-क फ़-कब्बिर' और क़ियामत को छिपाता हूं यानी वक़्त किसी को नहीं बताता।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल अल्क़िहा या मूसा (१९) फ़-अल्क़ाहा फ़-इज़ा हि-य ह़य्यतुन् तस्आ (२०)
क़ा-ल ख़ुज़्हा व ला त-ख़फ़् ^वक़्फ़ा^ सनुईदुहा सी-र-त-हल् - ऊला (२१)
वज़्मुम् य-द-क इला जनाहि-क तख़्-रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ-य-तन्
उख़्रा ॥ (२२) लिनुरि - य - क मिन् आयातिनल् - कुब्रा ८ (२३)
इज़्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा★(२४)
क़ा-ल रब्बिश्रह्ली सद्री ॥ (२५)
व यस्सिर् ली अम्री ॥ (२६) वह़्लुल्-
उक़्-द-तम्-मिल्लिसानी ॥ (२७) यफ़् - क़हू
क़ौली ॐ (२८) वज्अल्-ली वज़ीरम्मिन्
अह्ली ॥ (२९) हारू-न अख़ि- ॥ (३०)
श्दुद् बिही अज़्री ॥ (३१) व
अश्रिक्हु फ़ी अम्री ॥ (३२)
कै नुसब्बि-ह़-क कसीरंव ॥ (३३) व
नज़्कु-र-क कसीरा ॥ (३४) इन्न-क कुन्-त
बिना बसीरा (३५) क़ा-ल क़द् ऊती-त
सुअ्-ल-क या मूसा (३६) व ल-क़द् मनन्ना
अलै - क मर्र-तन् उख़्रा ॥ (३७) इज़्
औहैना इला उम्मि-क मा यूहा ॥ (३८) अनिक़्ज़िफ़ीहि फ़ित्ताबूति
फ़क़्ज़िफ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्-युल्क़िहिल्-यम्मु बिस्साहिलि यअ्ख़ुज़्हु अदुव्वुल्ली
व अदुव्वुल्लहू ॥ व अल्क़ैतु अलै-क महब्बतम्मिन्नी ^ज^ व लितुस्-न-अ़ अला
अ़ैनी ※ (३९) इज़ तम्शी उख़्तु-क फ़-तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अ़ला
मय्यक्-फ़ुलुहू ॥ फ़-र-जअ्-ना-क इला उम्मि-क कै त-क़र्-र अ़ैनुहा व ला तह़्ज़न्॥
व क़-तल्-त नफ़्सन् फ़-नज्जैना-क मिनल्-ग़म्मि व फ़ - तन्ना-क फ़ुतूनन्॥
फ़-लबिस्-त सिनी-न फ़ी अह्लि मद्-य-न॥ सुम्-म जिअ्-त अ़ला क़-दरिंय्या मूसा
(४०) वस्तनअ्-तु-क लिनफ़्सी ८ (४१) इज़्-हब् अन्-त व अख़ू-क बिआयाती व
ला तनिया फ़ी ज़िक्री ८ (४२) इज़्हबा इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा
(४३) फ़क़ूला लहू क़ौलल्लय्यिनल्-ल-अ़ल्लहू य-त-ज़क्करु औ यख़्शा (४४)

قال الم ١٦ — ٢٥٠ — طٰهٰ ٢٠

غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ﴿١٨﴾ قَالَ أَلْقِهَا يَٰمُوسَىٰ ﴿١٩﴾ فَأَلْقَاهَا فَإِذَا
هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ﴿٢١﴾
وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾
لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾ اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ
اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾
يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾ هَارُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾
اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾ وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾
وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾ إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ
يَٰمُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿٣٧﴾ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ
مَا يُوحَىٰ ﴿٣٨﴾ أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ
بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِي وَعَدُوٌّ لَهُ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي
وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ﴿٣٩﴾ إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ
يَكْفُلُهُ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَقَتَلْتَ نَفْسًا
فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ
ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَٰمُوسَىٰ ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ﴿٤١﴾ اذْهَبْ
أَنْتَ وَأَخُوكَ بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ﴿٤٢﴾ اذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ
طَغَىٰ ﴿٤٣﴾ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَيِّنًا لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا

★रु. १/१० आ २४ ※ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (१८) फ़रमाया कि मूसा ! इसे डाल दो। (१९) तो उन्हों ने उस को डाल दिया और वह यकायक सांप बन कर दौड़ने लगा। (२०) ख़ुदा ने फ़रमाया कि उसे पकड़ लो और डरना मत। हम उस को अभी उस की पहली हालत पर लौटा देंगे। (२१) और अपना हाथ अपनी बग़ल से लगा लो, वह किसी ऐब (व बीमारी) के बग़ैर सफ़ेद (चमकता-दमकता) निकलेगा। (यह) दूसरी निशानी (है), (२२) ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी निशानियां दिखाएं (२३) तुम फ़िऔंन के पास जाओ (कि) वह सरकश हो रहा है। (२४)★

कहा, मेरे परवरदिगार ! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दे। (२५) और मेरा काम आसान कर दे, (२६) और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे, (२७) ताकि वह मेरी बात समझ लें, (२८) और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा वज़ीर (यानी मददगार) मुक़र्रर फ़रमा, (२९) (यानी) मेरे भाई हारून को। (३०) उस से मेरी ताक़त को मज़बूत कर, (३१) और उसे मेरे काम में शरीक कर, (३२) ताकि हम तेरी बहुत-सी तस्बीह करें। (३३) और तुझे ज़्यादा से ज़्यादा याद करें (३४) तू हम को (हर हाल में) देख रहा है। (३५) फ़रमाया, मूसा ! तुम्हारी दुआ क़ुबूल की गयी। (३६) और हम ने तुम पर एक बार और भी एहसान किया था। (३७) जब हम ने तुम्हारी मां को इल्हाम किया था, जो तुम्हें बताया जाता है। (३८) (वह यह था) कि उसे (यानी मूसा को) संदूक़ में रखो, फिर उस (संदूक़) को दरिया में डाल दो तो दरिया उस को किनारे पर डाल देगा (और) मेरा और उस का दुश्मन उसे उठा लेगा और (मूसा !) मैं ने तुम पर अपनी तरफ़ से मुहब्बत डाल दी, (इसलिए कि तुम पर मेहरबानी की जाए) और इसलिए कि तुम मेरे सामने परवरिश पाओ▨ (३९) जब तुम्हारी बहन (फ़िऔंन के यहां) गयी और कहने लगी कि मैं तुम्हें ऐसा शख़्स बताऊं जो उस को पाले, तो (इस तरीक़े से) हम ने तुम को तुम्हारी मां के पास पहुंचा दिया ताकि उन की आंखें ठंडी हों और वह रंज न करें और तुम ने एक शख़्स को मार डाला तो हम ने तुम को ग़म से मुख़्लिसी दी और हम ने तुम्हारी (कई बार) आज़माइश की। फिर तुम कई साल मदयन वालों में ठहरे रहे, फिर ऐ मूसा ! तुम (रिसालत की क़ाबिलियत के) अन्दाज़े पर आ पहुंचे। (४०) और मैं ने तुम को अपने (काम के) लिए बनाया है। (४१) तो तुम और तुम्हारा भाई दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना। (४२) दोनों फ़िऔंन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है। (४३) और उस से नर्मी से बात करना शायद वह ग़ौर करे या डर जाए। (४४) दोनों कहने लगे कि

★रु. १/१० आ २४ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रु-त अ़लैना औ अंय्यतग़ा (४५) क़ा-ल ला
तख़ाफ़ा इन्ननी म-अ़कुमा अस्मअ़ु व अरा (४६) फ़अ्तियाहु फ़क़ूला इन्ना
रसूला रब्बि-क फ़-अर्सिल् म-अ़ना बनी इस्राई-ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम्
क़द् जिअ्-ना-क बि-आयतिम्-मिर्रब्बि-क वस्सलामु अ़ला मनित्त-ब-अल्-हुदा
(४७) इन्ना क़द् ऊहि-य इलैना अन्नल्अ़ज़ा-ब
अ़ला मन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (४८) क़ा-ल
फ़-मर्-रब्बुकुमा या मूसा (४९) क़ा-ल
रब्बुनल्लज़ी अअ्-ता कुल्-ल शैइन् ख़ल्क़हू
सुम्-म हदा (५०) क़ा-ल फ़-मा बालुल्-क़ुरूनिल्-
ऊला (५१) क़ा-ल अ़िल्मुहा अ़िन्-द रब्बी
फ़ी किताबिन् ला यज़िल्लु रब्बी व ला
यन्-स (५२) ल्लज़ी ज-अ़-ल
लकुमुल्अर्-ज़ मह्दंव्-व स-ल-क लकुम् फ़ीहा
सुबुलंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन्
फ़-अख़्-रज्ना बिही अज़्-वाजम्मिन् नबातिन्
शत्ता (५३) कुलू वर्औ अन्-आमकुम्
इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिलिल-

نخاف ان يفرط علينا او ان يطغى ﴿٤٥﴾ قال لا تخافا انني معكما
اسمع وارى ﴿٤٦﴾ فاتياه فقولا انا رسولا ربك فارسل معنا بني
اسرآءيل ولا تعذبهم قد جئنك باية من ربك والسلم على
من اتبع الهدى ﴿٤٧﴾ انا قد اوحي الينا ان العذاب على من كذب
وتولى ﴿٤٨﴾ قال فمن ربكما يموسى ﴿٤٩﴾ قال ربنا الذي اعطى كل شيء
خلقه ثم هدى ﴿٥٠﴾ قال فما بال القرون الاولى ﴿٥١﴾ قال علمها عند
ربي في كتب لا يضل ربي ولا ينسى ﴿٥٢﴾ الذي جعل لكم
الارض مهدا وسلك لكم فيها سبلا وانزل من السماء ماء فاخرجنا
به ازواجا من نبات شتى ﴿٥٣﴾ كلوا وارعوا انعامكم ان في ذلك لايت
لاولي النهى ﴿٥٤﴾ منها خلقنكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة
اخرى ﴿٥٥﴾ ولقد اريناه ايتنا كلها فكذب وابى ﴿٥٦﴾ قال اجئتنا لتخرجنا
من ارضنا بسحرك يموسى ﴿٥٧﴾ فلناتينك بسحر مثله فاجعل بيننا
وبينك موعدا لا نخلفه نحن ولا انت مكانا سوى ﴿٥٨﴾ قال موعدكم
يوم الزينة وان يحشر الناس ضحى ﴿٥٩﴾ فتولى فرعون فجمع كيده
ثم اتى ﴿٦٠﴾ قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم
بعذاب وقد خاب من افترى ﴿٦١﴾ فتنازعوا امرهم بينهم واسروا
النجوى ﴿٦٢﴾ قالوا ان هذن لسحرن يريدن ان يخرجكم من

उलिन्नुहा ★ (५४) मिन्हा ख़-लक़्नाकुम् व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम् व मिन्हा
नुख़्रिजुकुम् तार-तन् ऊख़्रा (५५) व ल-क़द् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा
फ़-कज़्ज़-ब व अबा (५६) क़ा-ल अजिअ्-तना लितुख़्रि-जना मिन् अर्ज़िना
बिसिह्रि-क या मूसा (५७) फ़-ल-नअ्तियन्न-क बिसिह्रिम्-मिस्लिही फ़ज्-अ़ल्
बैनना व बैन-क मौअ़िदल्ला नुख़्लिफ़ुहू नह्नु व ला अन्-त मकानन्
सुवा (५८) क़ा-ल मौअ़िदुकुम् यौमुज़्ज़ीनति व अंय्युह्शरन्नासु ज़ुहा (५९)
फ़-त-वल्ला फ़िर्औनु फ़-ज-म-अ़ कैदहू सुम्-म अता (६०) क़ा-ल लहुम् मूसा
वैलकुम् ला तफ़्तरू अ़-लल्लाहि कज़िबन् फ़-युस्हितकुम् बिअ़ज़ाबिन् व क़द्
ख़ा-ब मनिफ़्तरा (६१) फ़-त-नाज़अ़ू अम्-रहुम् बैनहुम् व अ-सर्रुन्नज्वा (६२)
क़ालू इन् हाज़ानि ल-साहिरानि युरीदानि अंय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्ज़िकुम्
बिसिह्रिहिमा व यज़्हबा बि-तरीक़तिकुमुल्-मुस्ला (६३)

★रु. २/११ आ ३०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हमारे परवरदिगार ! हमें डर है कि वह हम पर ज़ुल्म करने लगे या ज़्यादा सरकश हो जाए। (४५) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूं (और) सुनता और देखता हूं। (४६) (अच्छा) तो उस के पास जाओ और कहो कि हम आप के परवरदिगार के भेजे हुए हैं, तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दीजिए और उन्हें अज़ाब न कीजिए। हम आप के पास आप के परवरदिगार की तरफ़ से निशानी ले कर आए हैं और जो हिदायत की बात माने, उस को सलामती हो। (४७) हमारी तरफ़ यह वह्य आयी है कि जो झुठलाए और मुंह फेरे, उस के लिए अज़ाब (तैयार) है। (४८) (ग़रज़ मूसा और हारून फ़िऔंन के पास गये।) उसने कहा कि मूसा तुम्हारा परवरदिगार कौन है ? (४९) कहा कि हमारा परवरदिगार वह है जिस ने हर चीज़ को उस की शक्ल व सूरत बख़्शी, फ़िर राह दिखायी। (५०) कहा तो पहली जमाअतों का क्या हाल हुआ ? (५१) कहा कि उनका इल्म मेरे परवरदिगार को है, (जो) किताब में (लिखा हुआ है)। मेरा परवरदिगार न चूकता है, न भूलता है। (५२) वह (वही तो है,) जिस ने तुम लोगों के लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते जारी किए और आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे क़िस्म-क़िस्म की रूईदगियां (पेड़-पौधे) पैदा कीं। (५३) (कि ख़ुद भी) खाओ और अपने चारपायों को भी चराओ। बेशक इन (बातों) में अक़्ल वालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं। (५४)★

इसी (ज़मीन) से हम ने तुम को पैदा किया और इसी में तुम्हें लौटाएंगे और इसी से दूसरी बार निकालेंगे (५५) और हम ने फ़िऔंन को अपनी सब निशानियां दिखायीं, मगर वह झुठलाता और इंकार ही करता रहा। (५६) कहने लगा कि मूसा ! क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अपने जादू (के ज़ोर) से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। (५७) तो हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे, तो हमारे और अपने दर्मियान एक वक़्त मुक़र्रर कर लो कि न तो हम उस के ख़िलाफ़ करें और न तुम। (और यह मुक़ाबला) एक हमवार मैदान में (होगा) (५८) (मूसा ने) कहा कि आप के लिए ज़ीनत के दिन का वायदा है और यह कि लोग उस दिन चाश्त के वक़्त इकट्ठे हो जाएं। (५९) तो फ़िऔंन लौट गया और अपने सामान जमा कर के फिर आया। (६०) मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा कि हाय ! तुम्हारी कम-बख़्ती ! ख़ुदा पर झूठ न गढ़ो कि वह तुम्हें अज़ाब से फ़ना कर देगा और जिस ने झूठ गढ़ा, वह ना-मुराद रहा। (६१) तो वे आपस में अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना-फूसी करने लगे। (६२) कहने लगे, ये दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और

★रु. २/११ आ ३०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-अजिमअू कैदकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न्ॐव क़द् अफ़्-ल-हल्यौ-म मनिस्तअ्-ला (६४)
क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्क़ि-य व इम्मा अन् नकू-न अव्व-ल मन् अल्क़ा
(६५) क़ा-ल बल् अल्क़ूॐ फ़-इज़ा हिबालुहुम् व अिसिय्युहुम् युख़य्यलु
इलैहि मिन् सिह्रिहिम् अन्नहा तस्आ (६६) फ़-औ-ज-स फ़ी नफ़्सिही ख़ीफ़तम्-
मूसा (६७) क़ुल्ना ला त-ख़फ़् इन्न-क अन्तल्-
अअ्-ला (६८) व अल्क़ि मा फ़ी यमीनि-क
तल्क़फ़् मा स-नअू ط इन्नमा स-नअू कैदु
साहिरिन् ط व ला युफ़्लिहुस्साहिरु हैसु अता
(६९) फ़-उल्क़ियस्-स-ह-रतु सुज्ज-दन् क़ालू
आमन्ना बिरब्बि हारू-न व मूसा (७०) क़ा-ल
आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आ-ज़-न लकुम् ط
इन्नहू ल - कबीरुकुमुल्लज़ी अल्ल-म-कुमुस्-
सिह्-रॐ फ़-ल-उ-क़त्तिअन्-न ऐदि-यकुम् व
अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व लउ-सल्लिबन्नकुम्
फ़ी जुज़ूअिन्नख़्लि ۡ व ल-तअ्-लमुन्-न अय्युना
अ-शद्दु अज़ाबंव्-व अब्क़ा (७१) क़ालू लन्
नुअ्सि-र-क अला मा जा-अना मिनलबय्यिनाति वल्लज़ी फ़-त़-रना फ़क़्ज़ि मा
अन्-त क़ाज़िन् ط इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल् - हयातद्दुन्या ط (७२) इन्ना
आमन्ना बिरब्बिना लियग़-फ़ि-र लना ख़तायाना व मा अक्-रह्-तना अलैहि
मिनस्सिह्रि ط वल्लाहु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ● (७३) इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू
मुज्रिमन् फ़-इन्-न लहू जहन्न-म ط ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या (७४)
व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अमिलस्सालिहाति फ़-उलाइ-क लहुमुद्-द-र-जातुल्-
अुला ۛ (७५) जन्नातु अद्निन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु
ख़ालिदी - न फ़ीहा ط व ज़ालि - क ज-ज़ाउ मन् त - ज़क्का ★(७६)

طٰهٰ ٢٠ ٢٥٢ قَالَ اَلَمْ ١٦

اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ۝٦٣ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ
ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ۝٦٤ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ
اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ۝٦٥ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا
حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ۝٦٦
فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ۝٦٧ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ۝٦٨
وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ
السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ۝٦٩ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَ
مُوْسٰى ۝٧٠ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ
عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ
فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ۝٧١ قَالُوْا لَنْ
نُّؤْثِرَكَ عَلٰي مَا جَاۗءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ
قَاضٍ ۭ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝٧٢ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا
خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝٧٣ اِنَّهٗ
مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ۭ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝٧٤
وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ
الْعُلٰى ۝٧٥ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَ
ذٰلِكَ جَزٰۗؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝٧٦ وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ڏ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ

● सु. ३/४ ★रु. ३/१२ आ २२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम्हारे शाइस्ता मज़हब को नाबूद कर दें। (६३) तो तुम (जादू का) सामान इकट्ठा कर लो और फिर क़तार बांध कर आओ, आज जो ग़ालिब रहा, वही कामियाब हुआ। (६४) बोले कि मूसा या तो तुम (अपनी चीज़) डालो या हम (अपनी चीज़ें) पहले डालते हैं। (६५) मूसा ने कहा, नहीं, तुम ही डालो। (जब उन्हों ने चीज़ें डालीं) तो यकायक उस की रस्सियां और लाठियां मूसा के ख़्याल में ऐसी आने लगीं कि वह (मैदान में इधर-उधर) दौड़ रही हैं। (६६) (उस वक़्त) मूसा ने अपने दिल में ख़ौफ़ मालूम किया। (६७) हमने कहा, ख़ौफ़ न करो, बेशक तुम ही ग़ालिब हो। (६८) और जो चीज़ (यानी लाठी) तुम्हारे दाहिने हाथ में है, उसे डाल दो कि जो कुछ उन्हों ने बनाया है, उस को निगल जाएगी। जो कुछ उन्हों ने बनाया है (यह तो) जादूगरों के हथकंडे हैं और जादूगर जहां जाए, कामियाबी नहीं पाएगा। (६९) (ग़रज़ यह कि यों ही हुआ) तो जादूगर सज्दे में गिर पड़े (और) कहने लगे कि हम मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान लाए। (७०) (फ़िऔ़न) बोला कि इस के पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आए। बेशक वह तुम्हारा बड़ा (यानी उस्ताद) है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है, सो मैं तुम्हारे हाथ और पांव, मुख़ालिफ़ (तरफ़) से कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली चढ़वा दूंगा, (उस वक़्त) तुम को मालूम होगा कि हम में से किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और देर तक रहने वाला है। (७१) उन्हों ने कहा कि जो दलीलें हमारे पास आ गयी हैं, उन पर और जिस ने हम को पैदा किया है, उस पर हम आप को हरगिज़ तर्जीह नहीं देंगे, तो आप को जो हुक्म देना हो, दे दीजिए और आप (जो) हुक्म दे सकते हैं, वह सिर्फ़ इसी दुनिया की ज़िंदगी में (दे सकते हैं)। (७२) हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आए ताकि वह हमारे गुनाहों को माफ़ करे और (उसे भी) जो आप ने हम से ज़बरदस्ती जादू कराया और ख़ुदा बेहतर और बाक़ी रहने वाला है● (७३) जो शख़्स अपने परवरदिगार के पास गुनाहगार हो कर आएगा तो उस के लिए जहन्नम है, जिस में न मरेगा, न जिएगा। (७४) और जो उस के रू-ब-रू ईमानदार हो कर आएगा और अमल भी नेक किए होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए ऊंचे-ऊंचे दर्जे हैं। (७५) (यानी) हमेशा रहने के बाग़, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे और यह उस शख़्स का बदला है, जो पाक हुआ। (७६)★

●सु. ३/४ ★रु. ३/१२ आ २२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअिबादी फ़ज़्रिब् लहुम्
तरीक़न् फ़िलबह्रि य-ब-सल्-ला तख़ाफ़ु द-र-कंव्-व ला तख़्शा (७७)
फ़-अत्ब-अहुम् फ़िर्औनु बिजुनूदिही फ़-ग़शियहुम् मिनल्-यम्मि मा ग़शि-यहुम्
(७८) व अ-ज़ल्-ल फ़िर्औनु क़ौमहू व मा हदा (७९) याबनी इस्राई-ल
क़द् अन्जैनाकुम् मिन् अदुव्विकुम् व
वाअद्नाकुम् जानिबत् - तूरिल् - ऐम-न व
नज़्ज़ल्ना अलैकुमुल्-मन्-न वस्सलवा (८०)
कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् व ला
तत्ग़ौ फ़ीहि फ़-यहिल्-ल अलैकुम् ग़-ज़बी
व मंय्यह्लिल् अलैहि ग़-ज़बी फ़-क़द् हवा (८१)
व इन्नी ल-ग़फ़्फ़ारुल् - लिमन् ता-ब व
आम-न व अमि-ल सालिहन् सुम्मह्तदा (८२)
व मा अअ्-ज-ल-क अन् क़ौमि-क या मूसा (८३)
क़ा-ल हुम् उलाइ अला अ-सरी व अजिल्तु
इलै-क रब्बि लितर्ज़ा (८४) क़ा-ल फ़-इन्ना
क़द् फ़-तन्ना क़ौम-क मिम्बअ्-दि-क व अ-ज़ल्ल-
हुमुस्-सामिरिय्यु (८५) फ़-र-ज-अ मूसा इला
क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न् क़ा-ल या क़ौमि अ-लम् यअिद्कुम् रब्बुकुम्
वअ्-दन् ह्-स-नन् अ-फ़-ता-ल अलैकुमुल्-अह्दु अम् अ-रत्तुम् अंय्यहिल्-ल अलैकुम्
ग़-ज़-बुम्-मिर्रब्बिकुम् फ़-अख़्लफ़्तुम् मौअिदी (८६) क़ालू मा अख़्-लफ़्ना
मौअि-द-क बिमल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औज़ारम्मिन् ज़ीनतिल्क़ौमि
फ़-क़-ज़फ़्नाहा फ़-कज़ालि-क अल्क़स्सामिरिय्यु (८७) फ़ - अख़्-र-ज लहुम्
अिज्-लन् ज-स-दल्लहू ख़ुवारुन् फ़-क़ालू हाज़ा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा
फ़-नसि-य (८८) अ-फ़ला यरौ - न अल्ला यर्जिअ़ु इलैहिम् क़ौलंव्-
व ला यम्लिकु लहुम् ज़र्-रंव्-व ला नफ़्आ ★ (८९) व ल-क़द् क़ा-ल
लहुम् हारूनु मिन् क़ब्लु या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम् बिही
व इन्-न रब्बकुमुर् - रह्मानु फ़त्तबिअ़ूनी व अतीअ़ू अम्री (९०)

قال الم ١٦ ۲۵۳ طه ٢٠

فاضرب لهم طريقا في البحر يبسا لا تخف دركا ولا تخشى ۝
فاتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم ما غشيهم ۝ و
اضل فرعون قومه وما هدى ۝ يبني اسراءيل قد انجينكم
من عدوكم ووعدنكم جانب الطور الايمن ونزلنا عليكم المن
والسلوى ۝ كلوا من طيبت ما رزقنكم ولا تطغوا فيه فيحل
عليكم غضبي ومن يحلل عليه غضبي فقد هوى ۝ واني
لغفار لمن تاب وامن وعمل صالحا ثم اهتدى ۝ وما اعجلك
عن قومك يموسى ۝ قال هم اولاء على اثري وعجلت اليك رب
لترضى ۝ قال فانا قد فتنا قومك من بعدك واضلهم السامري ۝
فرجع موسى الى قومه غضبان اسفا قال يقوم الم يعدكم ربكم
وعدا حسنا افطال عليكم العهد ام اردتم ان يحل عليكم
غضب من ربكم فاخلفتم موعدي ۝ قالوا ما اخلفنا موعدك
بملكنا ولكنا حملنا اوزارا من زينة القوم فقذفنها فكذلك
القى السامري ۝ فاخرج لهم عجلا جسدا له خوار فقالوا هذا
الهكم واله موسى فنسي ۝ افلا يرون الا يرجع اليهم قولا
ولا يملك لهم ضرا ولا نفعا ۝ ولقد قال لهم هرون من قبل
يقوم انما فتنتم به وان ربكم الرحمن فاتبعوني واطيعوا

★रु. ४१२आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और हमने मूसा की तरफ़ वह्य भेजी कि हमारे बन्दों को रातों-रात निकाल ले जाओ, फिर उन के लिए दरिया में लाठी मार कर ख़ुश्क रास्ता बना दो, फिर तुम को न तो (फ़िऔन के) आ पकड़ने का डर होगा और न (डूबने का) डर। (७७) फिर फ़िऔन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया तो दरिया (की मौजों) ने उन पर चढ़ कर उन्हें ढांक लिया (यानी डुबो दिया।) (७८) और फ़िऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया और सीधे रास्ते पर न डाला। (७९) ऐ याक़ूब की औलाद! हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन से निजात दी और तौरात देने के लिए तुम से तूर पहाड़ की दाहिनी तरफ़ मुक़र्रर की और तुम पर मन्न व सलवा नाज़िल किया। (८०) (और हुक्म दिया कि) जो कुछ पाकीज़ा चीज़ें हमने तुम को दी हैं, उन को खाओ और उस में हद से न निकलना, वरना तुम पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा। और जिस पर मेरा अज़ाब नाज़िल हुआ, वह हलाक हो गया।[१] (८१) और जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे, फिर सीधे रास्ते चले, उस को मैं बख़्श देने वाला हूं। (८२) और ऐ मूसा! तुम ने अपनी क़ौम से (आगे चले आने में) क्यों जल्दी की? (८३) कहा वह मेरे पीछे (आ रहे हैं) और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं ने तेरी तरफ़ आने की जल्दी इस लिए की कि तू ख़ुश हो। (८४) फ़रमाया कि हम ने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे बाद आज़माइश में डाल दिया है और सामेरी ने उन को बहका दिया है। (८५) और मूसा ग़ुस्से और ग़म की हालत में अपनी क़ौम के पास वापस आए और कहने लगे कि ऐ क़ौम! क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से अच्छा वायदा नहीं किया था![१] क्या (मेरी जुदाई की) मुद्दत तुम्हें लंबी (मालूम) हुई या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ग़ज़ब नाज़िल हो और (इसलिए) तुम ने मुझ से जो वायदा (किया था, उस के) ख़िलाफ़ किया। (८६) वे कहने लगे कि हमने अपने अख़्तियार से तुम से वायदा ख़िलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम लोगों के ज़ेवरों का बोझ उठाए हुए थे, फिर हमने उस को (आग में) डाल दिया और इसी तरह सामरी ने डाल दिया। (८७) तो उस ने उन के लिए एक बछड़ा बना दिया (यानी उस का) क़ालिब, जिस की आवाज़ गाय की-सी थी, तो लोग कहने लगे कि यही तुम्हारा माबूद है और यही मूसा का माबूद है, मगर वह भूल गये हैं। (८८) क्या वे लोग नहीं देखते कि वह उन की किसी बात का जवाब नहीं देता और न उन के नुक़सान और नफ़ा का कुछ अख़्तियार रखता है। (८९)★

और हारून ने उन में पहले ही कह दिया था कि लोगो! इस से सिर्फ़ तुम्हारी आज़माइश की गयी है और तुम्हारा परवरदिगार तो ख़ुदा है, तो मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो। (९०)

---

१. वायदा तौरात देने का। हज़रत मूसा क़ौम से तीस दिन का वायदा कर के पहाड़ पर गये थे, वहां चालीस दिन लगे, पीछे बछड़ा पूजने लगे।

★रु. ४/१३ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ालू लन् नब-र-ह् अलैहि आकिफ़ी-न ह़त्ता यर्जि-अ इलैना मूसा (९१) क़ा-ल
या हारूनु मा म-न-अ-क इज़् रऐतहुम् ज़ल्लू (९२) अल्ला तत्तबिअनि
अ-फ़-अ़सै-त अम्री (९३) क़ा-ल यब्नउम्-म ला तअ्ख़ुज़् बिलिह्-यती व ला
बिरअ्-सी इन्नी ख़शीतु अन् तक़ू-ल फ़र्रक़्-त बै-न बनी इस्राई-ल व लम्
तर्क़ुब् क़ौली (९४) क़ा-ल फ़मा ख़त्बु-क
या सामिरिय्यु (९५) क़ा-ल बसुर्तु बिमा
लम् यब्सुरू बिही फ़-क़-बज़्तु क़ब्ज़-तम्-मिन्
अ-स-रिर्रसूलि फ़-न-बज़्तुहा व कज़ालि-क
सव्व-लत् ली नफ़्सी (९६) क़ा-ल फ़ज़्हब्
फ़इन्-न ल-क फ़िल्ह़याति अन् तक़ू-ल ला
मिसा-स व इन् - न ल-क मौअिदल्लन्
तुख़्-ल-फ़हू वन्ज़ुर् इला इलाहिकल्लज़ी
ज़ल् - त अलैहि आकिफ़न् लनुह़र्रिक़न्नहू
सुम्-म ल-नन्सिफ़न्नहू फ़िल्यम्मि नस्फ़ा
(९७) इन्नमा इलाहु-कुमुल्-लाहुल्-लज़ी
ला इला-ह इल्ला हु-व वसि-अ कुल्-ल
शैइन् अिल्मा (९८) कज़ालि-क नक़ुस्सु अलै-क मिन् अम्बाइ मा क़द्
स - ब - क़ व क़द् आतैना - क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा (९९) मन्
अअ् - र-ज़ अन्हु फ़-इन्नहू यह़्मिलु यौमल्क़ियामति विज़्रा (१००)
ख़ालिदी-न फ़ीहि व सा-अ लहुम् यौमल्क़ियामति ह़िम्ला (१०१)
यौ - म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि व नह़्शुरुल् - मुज्रिमी - न यौमइज़िन् ज़ुर्क़न्
(१०२) य-त - ख़ाफ़तू-न बैनहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला अश्रा (१०३)
नह़्नु अअ्-लमु बिमा यक़ूलू-न इज़् यक़ूलु अम्सलुहुम् त़रीक़-तन् इल्लबिस्तुम्
इल्ला यौमा★ (१०४) व यस्अलू-न - क अनिल्जिबालि फ़क़ुल्
यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़ा (१०५) फ़ - य - ज़रुहा क़ाअन् सफ़्-स-फ़-
(१०६) ला तरा फ़ीहा अिवजंव् - व ला अम्ता (१०७)

قال الم ٢٥٣ طه

أمري ۝ قالوا لن نبرح عليه عكفين حتى يرجع إلينا موسى ۝
قال يهرون ما منعك إذ رأيتهم ضلوا ۝ ألا تتبعن أفعصيت
أمري ۝ قال يبنؤم لا تأخذ بلحيتي ولا برأسي إني خشيت
أن تقول فرقت بين بني إسرآءيل ولم ترقب قولي ۝ قال
فما خطبك يسامري ۝ قال بصرت بما لم يبصروا به فقبضت
قبضة من أثر الرسول فنبذتها وكذلك سولت لي نفسي ۝
قال فاذهب فإن لك في الحيوة أن تقول لا مساس وإن لك
موعدا لن تخلفه وانظر إلى إلهك الذي ظلت عليه عاكفا
لنحرقنه ثم لننسفنه في اليم نسفا ۝ إنما إلهكم الله الذي لا إله
إلا هو وسع كل شيء علما ۝ كذلك نقص عليك من أنباء ما قد
سبق وقد ءاتينك من لدنا ذكرا ۝ من أعرض عنه فإنه يحمل
يوم القيمة وزرا ۝ خلدين فيه وساء لهم يوم القيمة حملا ۝
يوم ينفخ في الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا ۝ يتخافتون
بينهم إن لبثتم إلا عشرا ۝ نحن أعلم بما يقولون إذ يقول
أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما ۝ ويسئلونك عن الجبال
فقل ينسفها ربي نسفا ۝ فيذرها قاعا صفصفا ۝ لا
ترى فيها عوجا ولا أمتا ۝ يومئذ يتبعون الداعي لا

★रु. ५/१४ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वे कहने लगे कि जब तक मूसा हमारे पास वापस न आयें, हम तो उस (की पूजा) पर क़ायम रहेंगे। (९१) (फिर मूसा ने हारून से) कहा कि हारून ! जब तुम ने उन को देखा था कि गुमराह हो गये हैं, तो तुम को किस चीज़ ने रोका ? (९२) (यानी) इस बात से कि तुम मेरे पीछे चले आओ, भला तुम ने मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ (क्यों) किया ? (९३) कहने लगे कि भाई मेरी दाढ़ी और सर (के बालों) को न पकड़िए, मैं तो इस से डरा कि आप यह न कहें कि तुम ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरी बात को ध्यान में न रखा। (९४) (फिर सामरी से) कहने लगे कि सामरी तेरा क्या हाल है ? (९५) उस ने कहा कि मैं ने ऐसी चीज़ देखी जो औरों ने नहीं देखी, तो मैं ने फ़रिश्ते के पैरों के निशान से (मिट्टी की) एक मुट्ठी भर ली, फिर उस को (बछड़े के क़ालिब में) डाल दिया और मुझे मेरे जी ने (इस काम को) अच्छा बताया। (९६) (मूसा ने) कहा, जा तुझ को (दुनिया की) ज़िंदगी में यह (सज़ा) है कि कहता रहे कि "मुझ को हाथ न लगाना"।[1] और तेरे लिए एक और वायदा है (यानी अज़ाब का) जो तुझ से टल न सकेगा और जिस माबूद (की पूजा) पर तू (क़ायम व मोतकिफ़) था, उस को देख, हम उसे जला देंगे, फिर उस (की राख) को उड़ा कर दरिया में बिखेर देंगे। (९७) तुम्हारा माबूद ख़ुदा ही है, जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है। (९८) इस तरह पर हम तुम से वे हालात बयान करते हैं, जो गुज़र चुके हैं और हम ने तुम्हें अपने पास से नसीहत (की किताब) 'अता फ़रमायी है। (९९) जो शख़्स इस से मुंह फेरेगा, वह क़ियामत के दिन (गुनाह का) बोझ उठाएगा। (१००) (ऐसे लोग) हमेशा उस (अज़ाब) में (पड़े) रहेंगे और यह बोझ क़ियामत के दिन उन के लिए बुरा होगा। (१०१) जिस दिन सूर फूंका जाएगा और हम गुनाहगारों को इकट्ठा करेंगे और उन की आंखें नीली-नीली होंगी। (१०२) (तो) वे आपस में धीरे-धीरे कहेंगे कि तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस ही दिन रहे हो। (१०३) जो बातें ये करेंगे, हम ख़ूब जानते हैं। उस वक़्त उन में सब से अच्छी राह वाला (यानी अक़्ल व होश वाला) कहेगा कि (नहीं, बल्कि) सिर्फ़ एक ही दिन ठहरे हो। (१०४)★

और तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं, कह दो कि ख़ुदा उन को उड़ा कर बिखेर देगा। (१०५) और ज़मीन को हमवार मैदान कर छोड़ेगा, (१०६) जिस में न तुम टेढ़ (और

---

१. यानी बनी इस्राईल को गुमराह करने की वजह से अल्लाह तआला ने उस को यह सज़ा दी कि तमाम उम्र सब से अलग रहा। उस की यह हालत थी कि अगर वह किसी को हाथ लगाता या कोई उस को हाथ लगाता तो दोनों के तप आ जाती, इस लिए वह यही कहता रहा कि कोई मुझे छुए नहीं। यह दुनिया का अज़ाब था और आख़िरत का अज़ाब अलग रहा।

★रु. ५/१४ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यौमइज़िय्यत्तबिअूनद् - दाअि-य ला अि-व-ज लहू ८ व ख़-श-अ़तिल् - अस्वातु
लिर्रह़्मानि फ़ला तस्मअु इल्ला हम्सा (१०८) यौमइज़िल्ला तन्फ़अुश्-शफ़ाअ़तु
इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह़्मानु व रज़ि-य लहू क़ौला (१०९) यअ्-लमु मा
बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू-न बिही अि़ल्मा (११०) व

عِوَجَ لَهُ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهُ
قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ
عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ
ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا
وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ
الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَ
قُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَ
لَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ ع وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا
تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ
قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا
مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ۡ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ
عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ

अ - नतिल् - वुजूहु लिल्ह़य्यिल् - क़य्यूमि ط
व क़द् ख़ा-ब मन् ह़-म-ल ज़ुल्मा (१११) व
मंय्यअ्-मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन्
फ़ला यख़ाफ़ु ज़ुल्मंव्-व ला हज़्मा (११२)
व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ-र-बिय्यंव्-व
सर्रफ़्ना फ़ीहि मिनल्वअीदि ल-अ़ल्लहुम्
यत्तक़ू-न औ युह़्दिसु लहुम् ज़िक्रा (११३)
फ़-त-आ़लल्लाहुल् - मलिकुल्ह़क़्क़ु ८ व ला
तअ्-जल् बिल्क़ुर्आनि मिन् क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा
इलै - क वह़्युहू ز व क़ुर्रब्बि ज़िद्नी
अि़ल्मा (११४) व ल-क़द् अ़हिद्ना इला
आद-म मिन् क़ब्लु फ़-नसि-य व लम् नजिद्
लहू अ़ज़्मा ★ (११५) व इज़् क़ुल्ना
लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स ط अबा (११६)
फ़क़ुल्ना या आदमु इन्-न हाज़ा अ़दुव्वुल्ल-क व लिज़ौजि-क फ़ला युख़्रिजन्नकुमा
मिनल्जन्नति फ़-तश्क़ा (११७) इन्-न ल-क अल्ला तजू-अ़ फ़ीहा व ला
तअ्-रा ۙ (११८) व अन्न-क ला तज़्मउ फ़ीहा व ला तज़्हा (११९)
फ़-वस्-व-स इलैहिश्शैतानु क़ा-ल या आदमु हल् अदुल्लु-क अ़ला श-ज-रतिल्-
ख़ुल्दि व मुल्किल्-ला यब्ला (१२०) फ़-अ-कला मिन्हा फ़-ब-दत् लहुमा
सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव् - र-क़िल् - जन्नति ز व
अ़सा आदमु रब्बहू फ़ - ग़वा (१२१) सुम्मज्तबाहु रब्बुहू
फ़ता-ब अ़लैहि व हदा (१२२) क़ालह्बिता मिन्हा जमीअ़म्-बअ्-ज़ुकुम्
लिबअ् - ज़िन् अ़दुव्वुन् ८ फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् ۙ
फ़ - मनित्त-ब-अ़ हुदा - य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा (१२३)

★रु. ६/१५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पस्ती) देखोगे, न टीला (और बुलंदी), (१०७) उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और उस की पैरवी से कतरा न सकोगे और ख़ुदा के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, तो तुम धीमी आवाज़ के सिवा कुछ न सुनोगे। (१०८) उस दिन (किसी की) सिफ़ारिश कुछ फ़ायदा न देगी, मगर उस शख़्स की, जिसे ख़ुदा इजाज़त दे और उस की बात को पसन्द फ़रमाए। (१०९) जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, वह उस को जानता है और वह (अपने) इल्म से ख़ुदा (के इल्म) पर एहाता नहीं कर सकते। (११०) और उस ज़िंदा व क़ायम के सामने मुंह नीचे हो जाएंगे और जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया, वह ना-मुराद रहा। (१११) और जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस को न ज़ुल्म का डर होगा और न नुक़्सान का। (११२) और हमने उस को इसी तरह का अरबी क़ुरआन नाज़िल किया है और उस में तरह-तरह के डरावे बयान कर दिए हैं, ताकि लोग परहेज़गार बनें या ख़ुदा उन के लिए नसीहत पैदा कर दे। (११३) तो ख़ुदा जो सच्चा बादशाह है आलीक़द्र है और क़ुरआन की वह्य जो तुम्हारी तरफ़ भेजी जाती है, उस के पूरा होने से पहले क़ुरआन के (पढ़ने के) लिए जल्दी न किया करो और दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे और ज़्यादा इल्म दे। (११४) और हमने पहले आदम से वायदा लिया था, मगर वह (उसे) भूल गये और हमने उन में सब्र व सबात न देखा। (११५)★

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे सज्दा करो तो सब सज्दे में गिर पड़े मगर इब्लीस ने इंकार किया। (११६) हमने फ़रमाया कि आदम! यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, तो यह कहीं तुम दोनों को बहिश्त से निकलवा न दे, फिर तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ। (११७) यहां तुम को यह (आराम) है कि न भूखे रहो, न नंगे। (११८) और यह कि न प्यासे रहो और न धूप खाओ। (११९) तो शैतान ने उन के दिल में वस्वसा डाला और कहा कि आदम! भला मैं तुम को (ऐसा) पेड़ बताऊं (जो) हमेशा की ज़िंदगी (का फल) दे और (ऐसी) बादशाहत कि कभी ख़त्म न हो। (१२०) तो दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया, तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गयीं और वे अपने (बदनों) पर बहिश्त के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार के (हुक्म के) ख़िलाफ़ किया, तो (वे अपनी मंज़िल से) बे-राह हो गये। (१२१) फिर उन के परवरदिगार ने उन को नवाज़ा तो उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमायी और सीधी राह बतायी। (१२२) फ़रमाया कि तुम दोनों यहां से नीचे उतर जाओ। तुम में कुछ कुछ के दुश्मन (होंगे), फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, वह न गुमराह होगा और न तक्लीफ़ में पड़ेगा। (१२३)

★रु. ६/१५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मन् अअ्-र-ज़ अन् ज़िक्री फ़इन्-न लहू मआी-श-तन् ज़न्कंव-व नह़शुरुहू यौमल्क़ियामति
अअ्-मा (१२४) क़ा-ल रब्बि लि-म ह़-शर्तनी अअ्-मा व क़द् कुन्तु बसीरा (१२५)
क़ा-ल कज़ालि-क अ-तत्-क आयातुना फ़-नसीतहा ج व कज़ालिकल्-यौ-म तुन्सा
(१२६) व कज़ालि-क नज्ज़ी मन् अस्-र-फ़ व लम् युअ्मिम्-बिआयाति
रब्बिही ط व ल-अज़ाबुल्-आख़िरति
अ-शद्दु व अब्क़ा (१२७) अ-फ़ लम् यह्दि
लहुम् कम् अह्-लक्-ना क़ब-लहुम् मिनल्क़ुरूनि
यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम् ط इन्-न फ़ी
ज़ालि-क लआयातिल्लिउलिन्नुहा ★ (१२८)
व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क
ल-का-न लिज़ामंव्-व अ-ज-लुम्-मुसम्मा ط
(१२९) फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व
सब्बिह़् बिह़म्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअिश्-
शम्सि व क़ब्-ल ग़ुरूबिहा ج व मिन्
आनाइल्लैलि फ़-सब्बिह़् व अत़-राफ़न्नहारि
ल-अ़ल्ल-क तर्ज़ा (१३०) व ला तमुद्-दन्-न
ऐनै-क इला मा मत्तअ्-ना बिही अज़्वाजम्-
मिन्हुम् ज़ह्-र-तल्-ह़यातिद्दुन्या ۵ लिनफ़्तिनहुम् फ़ीहि ط व रिज़्क़ु रब्बि-क
ख़ैरुंव्-व अब्क़ा (१३१) वअ्मुर् अह्-ल-क बिस्सलाति वस्तबिर् अ़लैहा ط ला
नस्-अलु-क रिज़्-क़न् ط नह़्नु नर्ज़ुक़ु-क ط वल्आ़क़िबतु लित्तक़्वा (१३२) व
क़ालू लौला यअ्-तीना बिआयतिम्-मिर्रब्बिही ط अ-व लम् तअ्तिहिम्
बय्यिनतु मा फ़िस्सुहुफ़िल्-ऊला (१३३) व लौ अन्ना अह-लक्नाहुम्
बिअ़ज़ाबिम्-मिन् क़ब्लिही ल-क़ालू रब्बना लौला अर्सल-त इलैना
रसूलन् फ़-नत्तबि-अ़ आयाति-क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्-ल व
नख़्ज़ा (१३४) क़ुल् कुल्लुम्-मु-त-रब्बिसुन् फ़-त-रब्बसू ج
फ़-स-तअ्-लमू-न मन् अस्ह़ाबुस्-सिरातिस्सविय्यि व मनिह्तदा ★ (१३५)

قال الم ١٦ — ٢٥٦ — طه ٢٠

فاما یاتینکم منی هدی فمن اتبع هدای فلا یضل ولا یشقی ۝
ومن اعرض عن ذکری فان له معیشة ضنکا ونحشره یوم
القیمة اعمی ۝ قال رب لم حشرتنی اعمی وقد کنت بصیرا ۝
قال کذلک اتتک ایتنا فنسیتها وکذلک الیوم تنسی ۝ وکذلک
نجزی من اسرف ولم یؤمن بایت ربه ولعذاب الاخرة اشد
وابقی ۝ افلم یهد لهم کم اهلکنا قبلهم من القرون یمشون فی
مسکنهم ان فی ذلک لایت لاولی النهی ۝ ولولا کلمة
سبقت من ربک لکان لزاما واجل مسمی ۝ فاصبر علی ما
یقولون وسبح بحمد ربک قبل طلوع الشمس وقبل غروبها و
من انای الیل فسبح واطراف النهار لعلک ترضی ۝ ولا تمدن
عینیک الی ما متعنا به ازواجا منهم زهرة الحیوة الدنیا لنفتنهم
فیه ورزق ربک خیر وابقی ۝ وامر اهلک بالصلوة واصطبر
علیها لا نسئلک رزقا نحن نرزقک والعاقبة للتقوی ۝ وقالوا لو
لا یاتینا بایة من ربه اولم تاتهم بینة ما فی الصحف الاولی ۝
ولو انا اهلکنهم بعذاب من قبله لقالوا ربنا لولا ارسلت الینا
رسولا فنتبع ایتک من قبل ان نذل ونخزی ۝ قل کل متربص
فتربصوا فستعلمون من اصحب الصراط السوی ومن اهتدی ۝

★रु. ७/१६ आ १३ ★रु. ८/१७ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जो मेरी नसीहत से मुंह फेरेगा, उसकी ज़िंदगी तंग हो जाएगी और क़ियामत को हम उसे अंधा करं के उठाएंगे (१२४) वह कहेगा कि मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझे अंधा करके क्यों उठाया, मैं तो देखता-भालता था। (१२५) ख़ुदा फ़रमाएगा कि ऐसा ही (चाहिए था) तेरे पास हमारी आयतें आयीं तो तू ने उनको भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझको भुला देंगे। (१२६) और जो शख़्स हद से निकल जाए और अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान न लाए, हम उस को ऐसा ही बदला देते हैं और आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त और बहुत देर रहने वाला है। (१२७) क्या यह बात उन लोगों के लिए हिदायत की वजह न बनी कि हम उन से पहले बहुत से फ़िर्क़ों को हलाक कर चुके हैं, जिन के रहने की जगहों में ये चलते-फिरते हैं। अक़्ल वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियां हैं। (१२८)★

और अगर एक बात तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से पहले ही से न होती और (आमाल के बदले के लिए) एक मीयाद मुक़र्रर न हो चुकी होती तो अज़ाब (का आना) ज़रूरी हो जाता। (१२९) पस जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस पर सब्र करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तस्बीह व तह्मीद किया करो, और रात की (अव्वल) घड़ियों में भी उस की तस्बीह किया करो और दिन के किनारों (यानी दोपहर के क़रीब ज़ुहर के वक़्त भी), ताकि तुम ख़ुश हो जाओ। (१३०) और कई तरह के लोगों को, जो हमने दुनिया की (ज़िंदगी में) आराम की चीज़ों से नवाज़ा है, ताकि उन की आज़माइश करें, उन पर निगाह न करना और तुम्हारे परवरदिगार की (दी हुई) रोज़ी बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (१३१) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करो और उस पर क़ायम रहो। हम तुम से रोज़ी नहीं चाहते बल्कि तुम्हें हम रोज़ी देते हैं और (नेक) अंजाम तक़्वा (वालों) का है। (१३२) और कहते हैं कि यह (पैग़म्बर) अपने परवरदिगार की तरफ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाते, क्या उन के पास पहली किताबों की निशानी नहीं आयी? (१३३) और अगर हम उन को पैग़म्बर (के भेजने) से पहले किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे परवरदिगार ! तू ने हमारी तरफ़ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि हम ज़लील और रुसवा होने से पहले तेरे कलाम (व अहकाम) की पैरवी करते। (१३४) कह दो कि सब (आमाल के नतीजे के) इंतिज़ार में हैं, सो तुम भी इंतिज़ार में रहो। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि (दीन के) सीधे रास्ते पर चलने वाले कौन हैं और (जन्नत की तरफ़) राह पाने वाले कौन हैं (हम या तुम)? (१३५)★

★रु. ७/१६ आ १३　★रु. ८/१७ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सत्रहवां पारः इक़्त-र-ब लिन्नासि

२१ सूरतुल्-अम्बियाइ ७३

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ५१५४ अक्षर, ११८७ शब्द, ११२ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इक़्-त-र-ब लिन्नासि ह़िसाबुहुम् व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिम्-मुअ़्रिज़ून (१) मा
यअ्तीहिम् मिन् जिक्रिम्-मिर्-रब्बिहिम् मुह़्दसिन् इल्लस्त-म-अूहु व
हुम् यल्-अ़बून (२) लाहि-य-तन् क़ुलूबुहुम् व अ-सर्रुन्-नज्वल्-
लज़ी-न ज़-लमू हल् हाज़ा इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुकुम्
अ-फ़-तअ्तूनस्-सिह़्-र व अन्तुम् तुब्सिरून (३)
क़ा-ल रब्बी यअ़्-लमुल्क़ौ-ल फ़िस्समाइ
वल्अर्ज़ि व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (४)
बल् क़ालू अज़्ग़ासु अह़्लामिम्-बलिफ़्तराहु
बल् हु-व शाअिरुन् फ़ल्-यअ्तिना
बिआयतिन् कमा उर्सिलल्-अव्वलून (५)
मा आ-म-नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्-यतिन्
अह्-लक्नाहा अ-फ़हुम् युअ्मिनून (६)
व मा अर्सल्ना क़ब्-ल-क इल्ला रिजालन्
नूह़ी इलैहिम् फ़स्-अलू अह़्लज़्ज़िक्रि इन्
कुन्तुम् ला तअ़्-लमून (७) व मा ज-अ़ल्नाहुम्
ज-स-दल्ला यअ्कुलूनत्-तआ़-म व मा कानू
ख़ालिदीन (८) सुम्-म स-दक़्नाहुमुल्-वअ़्-द फ़-अन्जैनाहुम् व मन् नशाउ
व अह़्लक्नल्-मुस्रिफ़ीन (९) ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन्
फ़ीहि ज़िक्रुकुम् अ-फ़ला तअ़्-क़िलून ★ (१०) व कम् क़-सम्ना मिन्
क़र्-यतिन् कानत् ज़ालि-म-तंव्-व अन्शअ्ना बअ़्-दहा क़ौमन् आख़रीन (११)
फ़-लम्मा अ-ह़स्सू बअ्-सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून (१२) ला तर्कुज़ू
वर्जिअू इला माउत्रिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तुस्अलून (१३)

اقترب للناس ١٧ ٢٥٧ الانبياء ٢١

سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَاثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝١ مَا
يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ
يَلْعَبُوْنَ ۝٢ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ
هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣
قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۫ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝٤ بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ
شَاعِرٌ ۚۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥ مَآ اٰمَنَتْ
قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَمَآ اَرْسَلْنَا
قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ
نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ
ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ
ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا
هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٢ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ

★रु. १/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

२१ सूर: अंबिया ७३

सूर: अंबिया मक्की है और इस में एक सौ बारह आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगों का (आमाल के) हिसाब (का वक़्त) नज़दीक आ पहुंचा है और वे ग़फ़लत में (पड़े उस से) मुंह फेर रहे हैं। (१) उन के पास कोई नयी नसीहत उन के परवरदिगार की तरफ़ से नहीं आती, मगर वे उसे खेलते हुए सुनते हैं। (२) उन के दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और ज़ालिम लोग (आपस में) चुपके-चुपके बातें करते हैं कि यह (शख़्स कुछ भी) नहीं, मगर तुम्हारे जैसा आदमी है तो तुम आंखों देखते जादू (की लपेट) में क्यों आते हो?[1] (३) (पैग़म्बर ने) कहा कि जो बात आसमान और ज़मीन में (कही जाती) है, मेरा परवरदिगार उसे जानता है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (४) बल्कि (ज़ालिम) कहने लगे कि (यह क़ुरआन) परेशान (बातें हैं, जो) ख़्वाब (में देख ली) हैं, (नहीं) बल्कि उस ने इस को अपनी तरफ़ से बना लिया है, (नहीं) बल्कि यह (शेर है जो इस) शायर (का ख़्याल) है। तो जैसे पहले (पैग़म्बर निशानियां दे कर) भेजे गए थे (उसी तरह) यह भी हमारे पास कोई निशानी लाए। (५) इन से पहले जिन बस्तियों को हमने हलाक किया, वे ईमान नहीं लाती थीं, तो क्या ये ईमान ले आएंगे? (६) और हमने तुम से पहले मर्द ही (पैग़म्बर बना कर) भेजे, जिन की तरफ़ हम वह्य भेजते थे। अगर तुम नहीं जानते तो जो याद रखते हैं, उन से पूछ लो। (७) और हमने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए थे कि खाना न खाएं और न वे हमेशा रहने वाले थे। (८) फिर हमने उन के बारे में (अपना) वायदा सच्चा कर दिया तो उन को और जिस को चाहा, निजात दी और हद से निकल जाने वालों को हलाक कर दिया। (९) हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी किताब नाज़िल की है, जिस में तुम्हारा तज़्किरा है, क्या तुम नहीं समझते? (१०)★

और हमने बहुत सी बस्तियों को जो ज़ालिम थीं, हलाक कर मारा और उन के बाद और लोग पैदा कर दिए। (११) जब उन्हों ने हमारे अज़ाब (के मुक़दमे) को देखा, तो लगे उस से भागने। (१२) मत भागो और जिन (नेमतों) में तुम ऐश व आराम करते थे उन की और अपने घरों की तरफ़ लौट जाओ, शायद तुम से (इस बारे में) पूछा जाए। (१३) कहने लगे, हाय

१. यानी यह मुहम्मद पैग़म्बर तो हैं नहीं, तुम्हारे जैसे एक आदमी हैं और जो यह क़ुरआन सुनाते हैं, वह जादू है, जिस को सुन कर आदमी उस की तरफ़ झुक पड़ता है, तो तुम जान-बूझ कर उस के जादू में क्यों फंसते हो?

★रु. १/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ालू यावैलना इन्ना कुन्ना आलिमीन (१४) फ़-मा ज़ालत् तिल्-क दअ्-वाहुम्
हृत्ता ज-अ्लनाहुम् हृसीदन् ख़ामिदीन (१५) व मा ख़-लक़्-नस्समा-अ वल-अर्-ज़
व मा बैनहुमा लाअि्बीन (१६) लौ अ-रद्ना अन् नत्तख़ि-ज लह्वल्-
लत्त-ख़ज़्नाहु मिल्लदुन्ना ﺻﻠﮯ इन् कुन्ना फ़ाअि्लीन (१७) बल्
नक़्ज़िफ़ु बिल्हृक़्क़ि अ्-लल्बातिलि फ़-यद्मग़ुहू
फ़इज़ा हु - व ज़ाहिक़ुन् ط व लकुमुल्वैलु
मिम्मा तसि़फ़ून (१८) व लहू मन्
फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व मन् अि्न्दहू
ला यस्तक्बिरू-न अन् अि्बादतिही व ला
यस्तह्सि़रून ۚ (१९) युसब्बिहूनल्लै-ल वन्नहा-र
ला यफ़्तुरून (२०) अमित्त-ख़-ज़ू आलिहतम्-
मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून (२१) लौ
का - न फ़ीहिमा आलिहतुन् इल्लल्लाहु
ल-फ़-स-दता ۚ फ़ - सुब्हृानल्लाहि रब्बिल् -
अ्र्शि अ्म्मा यसि़फ़ून (२२) ला युस्अलु
अ्म्मा यफ़्अलु व हुम् युस्अलून (२३)
अमित्त - ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-ह - तन् ط क़ुल् हातू बुर्हानकुम् ۚ
हाज़ा ज़िक्रु मम् - मअि्-य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली ط बल् अक्सरु - हुम्
ला यअ्-लमू-नल्हृक़्-क़ फ़हुम् मुअ्-रिज़ून (२४) व मा अर्सल्ना मिन्
क़ब्लि - क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला - ह इल्ला
अ-न फ़अ्-बुदून (२५) व क़ालुत्त-ख़-जर् - रह्मानु व-ल-दन् सुब्हानहू ط
बल् अि्बादुम् - मुक्-रमून ۙ (२६) ला यस्बिक़ूनहू बिल्क़ौलि व हुम्
बिअम्रिही यअ्-मलून (२७) यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला
यश्फ़अू-न ۙ इल्ला लिमनिर्-तज़ा व हुम् मिन् ख़श्-यतिही मुश्फ़िक़ून (२८)

اقترب للناس ١٧ — ٢٥٨ — الانبياء ٢١

وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْئَلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾
فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ
نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ
بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا
تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ
وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ
يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ
يُسْئَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ
هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ
الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ
اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ
الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शामत ! बेशक हम ज़ालिम थे। (१४) तो वह हमेशा इसी तरह पुकारते रहे यहां तक कि हमने उन को (खेती की तरह) काट कर (और आग की तरह) बुझा कर ढेर कर दिया। (१५) और हमने आसमान और ज़मीन को और जो (मख़्लूक़ात) इन दोनों के दर्मियान है, उस को खेल-तमाशा के लिए पैदा नहीं किया। (१६) अगर हम चाहते कि खेल (की चीज़ें यानी बीवी व लड़के) बनाएं तो अगर हम को करना ही होता तो हम अपने पास से बना लेते। (१७) (नहीं), बल्कि हम सच को झूठ पर खींच मारते हैं, तो वह उस का सर तोड़ देता है और झूठ उसी वक़्त नाबूद हो जाता है और जो बातें तुम बनाते हो, उन से तुम्हारी ही ख़राबी है। (१८) और जो लोग आसमानों में और जो ज़मीन में हैं, सब उसी की (मम्लूक और उसी का माल) हैं और जो (फ़रिश्ते) उस के पास हैं, वे उस की इबादत से न कतराते हैं और न उकताते हैं। (१९) रात-दिन (उस की) तस्बीह करते रहते हैं, (न थकते हैं), न थमते हैं। (२०) भला लोगों ने जो ज़मीन की चीज़ों से (कुछ को) माबूद बना लिया है (तो क्या) वह उन को (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे ? (२१) अगर आसमान और ज़मीन में ख़ुदा के सिवा और माबूद होते, तो ज़मीन व आसमान फ़साद से भर जाते। जो बातें ये लोग बताते हैं, अर्श का मालिक, ख़ुदा उन से पाक है। (२२) वह जो काम करता है, उस की पूछ-ताछ नहीं होगी और (जो काम ये लोग करते हैं, उस की) उन से पूछ-ताछ होगी। (२३) क्या लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर और माबूद बना लिए हैं कह दो कि (इस बात पर) अपनी दलील पेश करो। यह (मेरी और) मेरे साथ वालों की किताब भी है और जो मुझ से पहले (पैग़म्बर) हुए हैं, उन की किताबें भी हैं, बल्कि (बात यह है कि) उन में अक्सर हक़ बात को नहीं जानते और इसलिए उस से मुंह फेर लेते हैं। (२४) और जो पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ़ यही वह्य भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो। (२५) और कहते हैं कि ख़ुदा बेटा रखता है, वह पाक है, (उस के न बेटा है, न बेटी है), बल्कि (जिन को ये लोग उस के बेटे-बेटियां समझते हैं) वे उस के इज़्ज़त वाले
33 बन्दे हैं। (२६) उस के आगे बढ़ कर बोल नहीं सकते और उस के हुक्म पर अमल करते हैं। (२७) जो कुछ उन के आगे हो चुका है और जो पीछे होगा, वह सब जानता है और वे (उस के पास किसी की) सिफ़ारिश नहीं कर सकते, मगर उस शख़्स की, जिस से ख़ुदा ख़ुश हो और वे उस की

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मंय्यक़ुल् मिन्हुम् इन्नी इलाहुम्-मिन् दूनिही फ़ज़ालि-क नज्ज़ीहि जहन्न-म
कज़ालि-क नज्ज़िज़्-ज़ालिमीन ★ (२९) अ-व लम् य-रल्लज़ी-न क-फ़रू
अन्नस्-समावाति वल्अर्-ज़ कानता रत्-क़न् फ़-फ़-तक़्नाहुमा व ज-अ़ल्ना
मिनल्माइ कुल्-ल शैइन् ह़य्यिन् अ-फ़ला युअ्मिनून (३०) व ज-अ़ल्ना
फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम्
व ज-अ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल्-
ल-अ़ल्लहुम् यह्-तदून (३१) व ज-अ़ल्नस्समा-अ
सक़्फ़म् - मह़्फ़ूज़ंव - व हुम् अ़न्
आयातिहा मुअ़् - रिज़ून (३२) व
हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम-स
वल्क़-म-र कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बह़ून
(३३) व मा ज-अ़ल्ना लिब-श-रिम्-मिन्
क़ब्लिकल् - ख़ुल् - द अ - फ़इम् - मित्-त
फ़हुमुल्-ख़ालिदून (३४) कुल्लु नफ़्सिन्
ज़ाइक़-तुल् - मौति व नब्लूकुम् बिश्शर्रि
वल्ख़ैरि फ़ित्-न - तन् व इलैना तुर्जअ़ून
(३५) व इज़ा रआकल्लज़ी-न क-फ़रू

اقترب للناس ١٧ ٢٥٩ الانبياء ٢١

مشفقون ﴿٢٨﴾ ومن يقل منهم اني اله من دونه فذلك
نجزيه جهنم كذلك نجزي الظلمين ﴿٢٩﴾ اولم ير الذين
كفروا ان السموت والارض كانتا رتقا ففتقنهما وجعلنا
من الماء كل شيء حي افلا يؤمنون ﴿٣٠﴾ وجعلنا في الارض
رواسي ان تميد بهم وجعلنا فيها فجاجا سبلا لعلهم
يهتدون ﴿٣١﴾ وجعلنا السماء سقفا محفوظا وهم عن ايتها
معرضون ﴿٣٢﴾ وهو الذي خلق اليل والنهار والشمس والقمر
كل في فلك يسبحون ﴿٣٣﴾ وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد
افاين مت فهم الخلدون ﴿٣٤﴾ كل نفس ذائقة الموت ونبلوكم
بالشر والخير فتنة والينا ترجعون ﴿٣٥﴾ واذا راك الذين
كفروا ان يتخذونك الا هزوا اهذا الذي يذكر الهتكم
وهم بذكر الرحمن هم كفرون ﴿٣٦﴾ خلق الانسان من عجل
ساوريكم ايتي فلا تستعجلون ﴿٣٧﴾ ويقولون متى هذا الوعد
ان كنتم صدقين ﴿٣٨﴾ لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون
عن وجوههم النار ولا عن ظهورهم ولا هم ينصرون ﴿٣٩﴾
بل تاتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردها ولا هم
ينظرون ﴿٤٠﴾ ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين

منزل

इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवन् अ-हाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलिह-तकुम् व हुम्
बिज़िक्रिर् - रह़्मानि हुम् काफ़िरून (३६) ख़ुलिक़ल् - इन्सानु मिन्
अ़-जलिन् सउरीकुम् आयाती फ़ला तस्तअ़्जिलून (३७) व यक़ूलू-न मता
हाज़ल् वअ़्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३८) लौ यअ़्-लमुल्लज़ी-न क-फ़रू ह़ी-न
ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहि-हिमुन्ना-र व ला अ़न् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून (३९)
बल् तअ्तीहिम् बग़्त-तुन् फ़ तब-हतुहुम् फ़ ला यस्ततीअ़ू-न रद्दहा व ला हुम्
युन्ज़रून (४०) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़
बिल्लज़ी - न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िउन ★ (४१)

★रु. २/२ आ १६ ★रु. ३/३ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैबत से डरते रहते हैं। (२८) और जो आदमी उन में से यह कहे कि खुदा के सिवा मैं माबूद हूं, तो उसे हम दोज़ख़ की सज़ा देंगे और ज़ालिमों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (२९)★

क्या काफ़िरों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, तो हमने जुदा-जुदा कर दिया और तमाम जानदार चीज़ें हमने पानी से बनायीं, फिर ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते ? (३०) और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाये ताकि लोगों (के बोझ) से हिलने (और झुकने) न लगे और उस में कुशादा रास्ते बनाये, ताकि लोग उन पर चलें। (३१) और आसमान को महफ़ूज़ छत बनाया, इस पर भी वे हमारी निशानियों से मुंह फेर रहे हैं। (३२) और वही तो है, जिस ने रात और दिन और सूरज और चांद को बनाया (ये) सब (यानी सूरज और चांद और सितारे) आसमान में (इस तरह चलते हैं, गोया) तैर रहे हैं। (३३) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम से पहले किसी आदमी को हमेशा की ज़िंदगी नहीं बख़्शी, भला, अगर तुम मर जाओ तो क्या ये लोग हमेशा रहेंगे।' (३४) हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम लोगों को सख़्ती और आसूदगी में आज़माइश के तौर पर डाल देते हैं और तुम हमारी तरफ़ ही लौट कर आओगे। (३५) और जब काफ़िर तुम को देखते हैं तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाते हैं कि क्या यही शख़्स है जो तुम्हारे माबूदों का ज़िक्र (बुराई से) किया करता है, हालांकि वह खुद रहमान के नाम मे मुंकिर है। (३६) इंसान (कुछ ऐसा जल्दबाज़ है कि गोया) जल्दबाजी ही से बनाया गया है। मैं तुम लोगों को बहुत जल्द अपनी निशानियां दिखाऊंगा, तो तुम जल्दी न करो। (३७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब की) यह धमकी (है, वह) कब (आएगा) ? (३८) ऐ काश ! काफ़िर उस वक़्त को जानें, जब वे अपने मुंहों पर से (दोज़ख़ की) आग को रोक न सकेंगे और न अपनी पीठों पर से और न उन का कोई मददगार होगा। (३९) बल्कि क़ियामत उन पर यकायक आ वाक़ेअ होगी और उन के होश खो देगी, फिर न तो वे उस को हटा सकेंगे और न उन को मोहलत दी जाएगी। (४०) और तुम से पहले भी पैग़म्बरों के साथ मज़ाक़ होता रहा है, तो जो लोग उन में से मज़ाक़ किया करते थे, उन को उसी (अज़ाब) ने जिस की हंसी उड़ाते थे, आ घेरा। (४१)★

---

१. काफ़िर कहते थे कि जब मुहम्मद चल बसेंगे, तो इस्लाम का ज़ोर भी मिट जाएगा और ये सब ताम-झाम जाता रहेगा। जितनी यह धूम-धाम है, उन्हीं के दम से है। खुदा ने फ़रमाया कि ये लोग तुम्हारी मौत का इन्तिज़ार करते हैं, लेकिन तुम इन्तिक़ाल कर जाओगे, तो ये भी हमेशा नहीं रहेंगे, मौत इन को भी फ़ना कर देगी और तुम्हारे इन्तिक़ाल से इस्लाम क्यों नाबूद होने लगा, वह तुम्हारी ज़ात से मुताल्लिक़ नहीं है कि जब तक तुम्हारी ज़िंदगी हो, तब तक उस की हस्ती हो, वह हमेशा रहेगा और कभी फ़ना होगा और हक़ीक़त है कि इस्लाम आंहज़रत के इन्तिक़ाल के बाद घटा नहीं, बल्कि दिन-ब-दिन बढ़ता गया और तमाम दुनिया में फैल गया और क़ियामत तक रहेगा।

★रु. २/२ आ १९ ★रु. ३/३ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् मंय्यक्लउकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर् - रह़्मानि ط बल् हुम् अन्
ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ्-रिज़ून (४२) अम् लहुम् आलिहतुन् तम्नअुहुम् मिन्
दूनिना ط ला यस्ततीअू-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्ह़बून (४३)
बल् मत्तअ् - ना हाउला-इ व आबा-अहुम् ह़त्ता ता-ल अलैहिमुल्-अुमुरु ط
अ-फ़ला यरौ-न अन्ना नअ्तिल्अर्-ज़ नन्क़ुसुहा
मिन् अत़्राफ़िहा ط अ-फ़हुमुल् - ग़ालिबून
(४४) क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम्
बिल्वह़्यि ﺻﮯ व ला यस्मअुस् -
सुम्मुद्दुआ-अ इज़ा मा युन्ज़रून (४५)
व लइम् - मस्सत्हुम् नफ़्ह़तुम् - मिन्
अज़ाबि रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न यावैलना इन्ना
कुन्ना ज़ालिमीन (४६) व न-ज़-अुल्-
मवाज़ीनल् - क़िस - त लियौमिल्-क़ियामति
फ़ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअन् ط व इन्
का-न मिस्क़ा-ल ह़ब्बतिम्-मिन् ख़र्-दलिन्
अतैना बिहा ط व कफ़ा बिना ह़ासिबीन
(४७) व ल-क़द् आतैना मूसा व हारूनल्-
फ़ुर्क़ा-न व ज़ियाअंव् - व ज़िक्रल् - लिलमुत्तक़ीन ۷ (४८) अल्लज़ी - न
यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्साअति मुश्फ़िक़ून (४९) व हाज़ा
ज़िक्रुम् - मुबा-रकुन् अन्ज़ल्नाहु ط अ-फ़ - अन्तुम् लहू मुन्किरून ★●(५०)
व ल-क़द् आतैना इब्राही-म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आलिमीन ج
(५१) इज़् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्-तमासीलुल्लती
अन्तुम् लहा आकिफ़ून (५२) क़ालू व-जद्ना आबा-अना लहा आबिदीन
(५३) क़ा-ल ल - क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम्-
मुबीन (५४) क़ालू अजिअ्-तना बिल्ह़क़्क़ि अम् अन्-त मिनल्लाअिबीन (५५)

الانبياء ۲۱ ۳۶۰ اقترب للناس ۱۷

سَخِرُوا مِنْهُمْ مَّا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝
اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ
اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۝ بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ
حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا
مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْىِ ۖ وَ
لَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ
نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝
وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ
وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا
حٰسِبِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّ
ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ
السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ
مُنْكِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ
عٰلِمِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِىْۤ
اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝ قَالُوْا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝ قَالَ
لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا

★रु. ४/४ आ ६ ● रुबअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहो कि रात और दिन में ख़ुदा से तुम्हारी कौन हिफ़ाज़त कर सकता है ? बात यह है कि ये अपने परवरदिगार की याद से मुंह फेरे हुए हैं। (४२) क्या हमारे सिवा इन के और माबूद हैं कि इन को (मुसीबतों) से बचा सकें, वे आप अपनी मदद तो कर ही नहीं सकेंगे और न हम से पनाह ही दिए जाएंगे, (४३) बल्कि हम उन लोगों को और उन के बाप-दादा को नवाज़ते रहे, यहां तक कि (इसी हालत में) उन की उम्रें बसर हो गयी। क्या ये नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते चले आते हैं, तो क्या ये लोग ग़लबा पाने वाले हैं।[1] (४४) कह दो कि मैं तुम को ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ नसीहत करता हूं और बहरों को जब नसीहत की जाए तो वे पुकार को सुनते ही नहीं। (४५) और अगर उन को तुम्हारे परवरदिगार का थोड़ा-सा अज़ाब पहुंचे तो कहने लगें कि हाय कमबख़्ती ! हम बेशक गुनाहगार थे। (४६) और हम क़ियामत के दिन इंसाफ़ की तराज़ू खड़ी करेंगे, तो किसी शख़्स का ज़रा भी हक़ न मारा जाएगा और राई के दाने के बराबर भी (किसी का अमल) होगा तो हम उस को ला मौजूद करेंगे और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं। (४७) और हमने मूसा और हारून को (हिदायत और गुमराही में) फ़र्क़ कर देने वाली और (मुकम्मल) रोशनी और नसीहत (की किताब) अता की (यानी) परहेज़गारों के लिए। (४८) जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते हैं और क़ियामत का भी डर रखते हैं। (४९) और यह मुबारक नसीहत है, जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, तो क्या तुम इस से इंकार करते हो (५०)★● और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी और हम उन (के हाल) को जानते थे, (५१) जब उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिन (की इबादत) पर तुम मोतकिफ़ (व क़ाइम) हो। (५२) वे कहने लगे कि हमने अपने बाप-दादा को उन की पूजा करते देखा है। (५३) (इब्राहीम ने) कहा कि तुम भी (गुमराह हो) और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में पड़े रहे। (५४) वे बोले, क्या तुम हमारे पास (सच से) हक़ लाए हो या (हम से) खेल (की बातें) करते हो। (५५) (इब्राहीम ने) कहा,

१. हम घटाते चले आते हैं यानी अरब के मुल्क में मुसलमानी फैलने लगी है, कुफ़्र कटने लगा।

★रु. ४/४ आ ६ ● रुबूअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल बर्रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़िल्लज़ी फ़-त-रहुन्-न ﷺ व अ-न अला ज़ालिकुम् मिनश्शाहिदीन (५६) व तल्लाहि ल-अकीदन्-न अस़्नामकुम् बअ्-द अन् तुवल्लू मुद्बिरीन (५७) फ़-ज-अ-लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल्लहुम् ल-अ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिअून (५८) क़ालू मन् फ़-अ़-ल हाज़ा बिआलिहतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन (५९) क़ालू समिअ्-ना फ़-तंय्यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम ط (६०) क़ालू फ़अ्तू बिही अ़ला अअ्-युनिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् यश्हदून (६१) क़ालू अ-अन्-त फ़-अ़ल्-त हाज़ा बिआलिहतिना या इब्राहीम ط (६२) क़ा-ल बल् फ़-अ़-लहू ﷺ कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्-अलूहुम् इन् कानू यन्तिक़ून (६३) फ़-र-जअू इला अन्फ़ुसिहिम् फ़-क़ालू इन्नकुम् अन्तुमुज़्-ज़ालिमून ج (६४) सुम्-म नुकिसू अ़ला रुऊसिहिम् ج ल-क़द् अ़लिम-त मा हाउलाइ यन्तिक़ून (६५) क़ा-ल अ-फ़-तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुकुम् शैअंव्-व ला यज़ुर्रुकुम् ط (६६) उफ़्फ़िल्लकुम् व लिमा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ط अ-फ़ला तअ्-क़िलून (६७) क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलि-ह-तकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअिलीन (६८) क़ुल्ना या नारु कूनी बर्दंव-व सलामन् अ़ला इब्राहीम ج (६९) व अरादू बिही कैदन् फ़-ज-अ़ल्ना-हुमुल्-अख़्-सरीन ج (७०) व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्अर्ज़िल्-लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आ़लमीन (७१) व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ ط व यअ्-क़ू-ब नाफ़िल-तन् ط व कुल्लन् ज-अ़ल्ना सालिहीन (७२) व ज-अ़ल्नाहुम् अइम्मतंय्यह्दू-न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ्-लल्-ख़ैराति व इक़ामस्-सलाति व ईताअिज़् - ज़काति ج व कानू लना आबिदीन ع (७३)

الانبياء ٢١ — ٢٦١ — اقترب للناس ١٧

بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝٥٥ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٥٦ وَ
تَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٥٧ فَجَعَلَهُمْ
جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝٥٨ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ
هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٩ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ
يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ۝٦٠ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَشْهَدُوْنَ ۝٦١ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۝٦٢ قَالَ
بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝٦٣ فَرَجَعُوْٓا
اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٦٤ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى
رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ۝٦٥ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝٦٦ اُفٍّ لَّكُمْ
وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٧ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ
وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝٦٨ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ
سَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝٦٩ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۝٧٠
وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝٧١ وَ
وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝٧٢
وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ

منزل ٤

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(नहीं), बल्कि तुम्हारा परवरदिगार आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है, जिसने उन को पैदा किया है और मैं इस (बात) का गवाह (और इसी का क़ायल) हूं। (५६) और ख़ुदा की क़सम ! जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे, तो मैं तुम्हारे बुतों से एक चाल चलूंगा। (५७) फिर उन को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया, मगर एक बड़े (बुत) को (न तोड़ा), ताकि वह उस की तरफ़ रुजूअ करें। (५८) कहने लगे कि हमारे माबूदों के साथ यह मामला किस ने किया ? वह तो कोई ज़ालिम है। (५९) लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को उन का ज़िक्र करते हुए सुना है, उसे इब्राहीम कहते हैं। (६०) वे बोले कि उसे लोगों के सामने लाओ ताकि वे गवाह रहें। (६१) (जब इब्राहीम आये तो बुतपरस्तों ने) कहा कि भला इब्राहीम ! यह काम हमारे माबूदों के साथ तू ने किया है ? (६२) (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि यह उन के इन बड़े (बुत) ने किया (होगा) अगर ये बोलते हों तो इन से पूछ लो। (६३) उन्हों ने अपने दिल में ग़ौर किया, तो आपस में कहने लगे, बेशक तुम ही बे-इंसाफ़ हो। (६४) फिर (शर्मिन्दा हो कर) सर नीचा कर लिया, (इस पर भी इब्राहीम से कहने लगे कि) तुम जानते हो, ये बोलते नहीं। (६५) (इब्राहीम ने) कहा कि फिर तुम ख़ुदा को छोड़ कर क्यों ऐसी चीज़ों को पूजते हो, जो न तुम्हें कुछ फ़ायदा दे सकें और न नुक़्सान पहुंचा सकें ? (६६) अफ़सोस है तुम पर और जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो उन पर ! क्या तुम अक़्ल नहीं रखते ? (६७) (तब वे) कहने लगे कि अगर तुम्हें (इस से अपने माबूद का बदला लेना और) कुछ करना है तो उस को जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो। (६८) हमने हुक्म दिया, ऐ आग ! सर्द हो जा और इब्राहीम पर सलामती (की वजह बन जा)। (६९) उन लोगों ने बुरा तो उन का चाहा था, मगर हमने उन्हीं को नुक़्सान में डाल दिया। (७०) और इब्राहीम और लूत को उस धरती की तरफ़ बचा निकाला, जिस में हमने दुनिया वालों के लिए बरकत रखी थी।(७१)और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ अता किए, और उस पर याक़ूब और सब को नेक किया। (७२)और उनको पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से हिदायत करते थे और उन को नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और जकात देने का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव्-व अिल्मंव्-व नज्जैनाहु मिनल्-क़र्यतिल्लती कानत्
तअ्-मलुल् - ख़बाइ-स इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़ासिक़ीन (७४)
व अद्-ख़ल्नाहु फ़ी रह्मतिना इन्नहू मिनस्सालिहीन ★ (७५) व नूहन्
इज़् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्-त-जब्ना लहू फ़-नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल्-कर्बिल्-
अज़ीम (७६) व न - सर्नाहु मिनल्-
क़ौमिल्लज़ी - न कज़्ज़बू बिआयातिना
इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़-अग़रक़्नाहुम्
अज्-मअीन (७७) व दावू-द व सुलैमा-न
इज़् यह्कुमानि फ़िल्हर्सि इज़् न-फ़-शत्
फ़ीहि ग़ - नमुल् - क़ौमि व कुन्ना
लिहुक्मिहिम् शाहिदीन (७८)
फ़-फ़ह्-हम्नाहा सुलैमा-न व कुल्लन् आतैना
हुक्मंव् - व अिल्मंव - व सख़्ख़र्ना म-अ
दावू-दल्-जिबा-ल युसब्बिह्-न वत्तै-र व
कुन्ना फ़ाअिलीन (७९) व अल्लम्नाहु
सन्-अ-त लबूसिल्लकुम् लितुह्सिनकुम् मिम्-
बअ्सिकुम् फ़-हल् अन्तुम् शाकिरून (८०) व लिसुलैमानर् - री - ह
आसि-फ़ - तन् तज्री बिअम्रिही इलल् - अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा व
कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आलिमीन (८१) व **मिन** श्-शयातीनि मंय्यग़ूसू-न
लहू व यअ्-मलू-न अ-म-लन् दू-न ज़ालि-क व कुन्ना लहुम् हाफ़िज़ीन
(८२) व अय्यू-ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर्रु व अन्-त
अर्हमुर् - राहिमीन (८३) फ़स्त - जब्ना लहू फ़ - क - शफ़्ना मा
बिही मिन् ज़ुर्रिंव्-व आतैनाहु अह्-लहू व मिस्-लहुम् म-अहुम् रह्-म-तम्-
मिन् अिन्दिना व ज़िक्रा लिल्आबिदीन (८४) व इस्माअी - ल व
इद्री - स व ज़ल्किफ़्लि कुल्लुम् - मिनस्साबिरीन (८५)

الانبیاء ۲۱ ۴۶۲ اقترب للناس ۱۷

اَقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ
مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ
فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۷۶﴾ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۷۷﴾
وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ
الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا
اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ
وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ
بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً
تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ
عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا
دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ
مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا
بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا
وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ

منزل ۴

★रु. ५/५ आ २५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

किया करते थे। (७३) और लूत (का क़िस्सा याद करो जब उन) को हमने हुक्म (यानी हिक्मत व नुबूवत) और इल्म बख़्शा और उस बस्ती से, जहां के लोग गन्दे काम किया करते थे, बचा निकाला। बेशक वे बुरे और बद-किरदार लोग थे। (७४) और उन्हें अपनी रहमत (के महल) में दाख़िल किया। कुछ शक नहीं कि वे नेक किरदारों में थे। (७५)★

और नूह का (क़िस्सा भी याद करो) जब (इस से) पहले उन्हों ने हमें पुकारा तो हमने उन की दुआ क़ुबूल फ़रमायी और उन को और उन के साथियों को बड़ी घबराहट से निजात दी। (७६) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते थे, उन पर नुसरत बख़्शी। वे बेशक बुरे लोग थे, सो हमने उन सब को डुबो दिया। (७७) और दाऊद और सुलेमान (का हाल भी सुन लो कि) जब वे एक खेती का मुक़दमा फ़ैसला करने लगे, जिस में कुछ लोगों की बकरियां रात को चर गयीं (और उसे रौंद गयी) थीं और हम उन के फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे।[1] (७८) तो हमने फ़ैसला (करने का तरीक़ा) सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनों को हुक्म (यानी हिक्मत व नुबूवत) और इल्म बख़्शा था। और हमने पहाड़ों को दाऊद का ताबेअ कर दिया था कि उन के साथ तस्बीह करते थे और जानवरों को भी (ताबेअ) कर दिया था और हम ही (ऐसा) करने वाले थे। (७९) और हमने तुम्हारे लिए उन को एक (तरह का) लिबास बनाना भी सिखा दिया, ताकि तुम को लड़ाई (के नुक़्सान) से बचाए, पस तुम को शुक्रगुज़ार होना चाहिए। (८०) और हमने तेज़ हवा सुलेमान के (फ़रमान के) ताबेअ कर दी थी, जो उन के हुक्म से उस मुल्क में चलती थी, जिस में हमने बरकत दी थी (यानी शाम) और हम हर चीज़ से ख़बरदार हैं। (८१) और देवों (की जमाअत को भी उन के ताबेअ कर दिया था कि उन) में से कुछ उन के लिए ग़ोते मारते थे और इस के सिवा और काम भी करते थे और हम उन के निगहबान थे। (८२) और अय्यूब (को याद करो,) जब उन्हों ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि मुझे तक्लीफ़ हो रही है और तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है। (८३) तो हमने दुआ क़ुबूल कर ली और जो उन को तक्लीफ़ थी, वह दूर कर दी और उन को बाल-बच्चे भी अता फ़रमाये और अपनी मेहरबानी से उन के साथ उतने ही और (बख़्शे) और इबादत करने वालों के लिए (यह) नसीहत है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस ज़ुलकिफ़्ल (को भी याद करो), ये सब सब्र करने वाले थे। (८५)

---

१. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का यह फ़ैसला कि बकरियां खेती वालों को दिलवा दीं, हज़रत सुलेमान अलै० को चरवाहों से यह हाल मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि अगर मैं तुम्हारा मुक़दमा फ़ैसला करता तो कुछ और फ़ैसला करता। यह ख़बर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को हुई तो उन्हों ने हज़रत सुलेमान को बुला कर कहा कि तुम इस मुक़दमे का क्या फ़ैसला करते हो। उन्हों से कहा कि मेरा फ़ैसला यह है कि खेती वालों को बकरियां दिलायी जाएं कि उन के दूध वग़ैरह से फ़ायदा उठाएं और बकरियों के मालिक खेती में बीज डालें और खेती करें। जब खेती इस हालत में हो जाए, जिस हालत में पहले थी तो उस को खेती वाले ले लें और बकरियां उन के मालिकों को वापस कर दी जाएं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अद - ख़ल्नाहुम् फ़ी रह़्मतिना इन्नहुम् मिनस् - सालिहीन (८६)
व जन्नूनि इज़् ज-ह-ब मुग़ाज़िबन् फ़-ज़न-न अल्लन् नक़्दि-र अलैहि फ़नादा
फ़िज़्ज़ुलुमाति अल् - ला इला - ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु
मिनज़्ज़ालिमीन (८७) फ़स्-त - जब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनलग़म्मि
व कज़ालि-क नुन्जिल्-मुअ्मिनीन (८८)
व ज़-करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला
त-ज़र्नी फ़र्-दंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-वारिसीन
(८९) फ़स्-त-जब्ना लहू व व-हब्ना लहू
यह़्या व अस् - लह़्ना लहू ज़ौजहू
इन्नहुम् कानू युसारिअ़ू-न फ़िल्ख़ैराति व
यद्अ़ूनना र-ग़-बंव्-व र-ह-बन् व कानू लना
ख़ाशिअ़ीन (९०) वल्लती अह़्-स-नत्
फ़र्जहा फ़-न-फ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व
ज-अल्नाहा वब्-नहा आयतल्-लिलआलमीन
(९१) इन - न हाज़िही उम्मतुकुम्
उम्मतंव्वाहि-द - तंव् व अ-न रब्बुकुम्
फ़अ़्-बुदून (९२) व त-क़त्तअ़ू अम्-रहुम्
बैनहुम् कुल्लुन् इलैना राजिअ़ून ★ (९३) फ़ - मंय्यअ़् - मल् मिनस्-
सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला कुफ़्रा-न लिसअ़्-यिही व इन्ना लहू
कातिबून (९४) व ह़रामुन् अला क़र-यतिन् अह़्-लक्नाहा अन्नहुम् ला
यर्जिअ़ून (९५) ह़त्ता इज़ा फ़ुतिहत् यअ्जूजु व अअ्जूजु व हुम् मिन्
कुल्लि ह़-दबिंय्यन्सिलून (९६) वक़्त-र-बल्-वअ़्-दुल्-हक़्क़ु फ़-इज़ा हि - य
शाख़ि-सतुन् अब्सारुल्लज़ी-न क-फ़रू यावैलना क़द् कुन्ना फ़ी ग़फ़्-लतिम्-
मिन् हाज़ा बल् कुन्ना ज़ालिमीन (९७) इन्नकुम् व मा तअ़्-बुदू-न मिन्
दूनिल्लाहि ह़्-सबु जहन्न-म अन्तुम् लहा वारिदून (९८) लौ का-न
हाउलाइ आलि-ह - तम् - मा व - रदूहा व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून
(९९) लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव-व हुम् फ़ीहा ला यस् - मअ़ून (१००)

الصبرين ۝٨٥ وادخلنهم في رحمتنا انهم من الصلحين ۝٨٦ و
ذا النون اذ ذهب مغاضبا فظن ان لن نقدر عليه فنادى في
الظلمت ان لا اله الا انت سبحنك اني كنت من الظلمين ۝٨٧
فاستجبنا له ونجينه من الغم وكذلك نجي المؤمنين ۝٨٨ و
زكريا اذ نادى ربه رب لا تذرني فردا وانت خير الورثين ۝٨٩
فاستجبنا له ووهبنا له يحيى واصلحنا له زوجه انهم كانوا
يسرعون في الخيرت ويدعوننا رغبا ورهبا وكانوا لنا خشعين ۝٩٠
والتي احصنت فرجها فنفخنا فيها من روحنا وجعلنها وابنها
اية للعلمين ۝٩١ ان هذه امتكم امة واحدة وانا ربكم فاعبدون ۝٩٢
وتقطعوا امرهم بينهم كل الينا رجعون ۝٩٣ فمن يعمل من
الصلحت وهو مؤمن فلا كفران لسعيه وانا له كتبون ۝٩٤ و
حرم على قرية اهلكنها انهم لا يرجعون ۝٩٥ حتى اذا فتحت
يأجوج ومأجوج وهم من كل حدب ينسلون ۝٩٦ واقترب
الوعد الحق فاذا هي شاخصة ابصار الذين كفروا يويلنا قد
كنا في غفلة من هذا بل كنا ظلمين ۝٩٧ انكم وما تعبدون
من دون الله حصب جهنم انتم لها وردون ۝٩٨ لو كان
هؤلاء الهة ما وردوها وكل فيها خلدون ۝٩٩ لهم فيها زفير

★रु. ६/६ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और हमने उन को अपनी रहमत में दाख़िल किया। बेशक वह नेक थे। (८६) और जुन्नून (को याद करो), जब वह (अपनी क़ौम से नाराज़ हो कर) ग़ुस्से की हालत में चल दिए और ख़्याल कि हम उन पर क़ाबू नहीं पा सकेंगे, आख़िर अंधेरे में (ख़ुदा को) पुकारने लगे कि "तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तू पाक है" (और) बेशक मैं क़ुसूरवार हूं"। (८७) तो हमने उन की दुआ क़ुबूल कर ली और उन को ग़म से निजात बख़्शी। और ईमान वालों को हम इसी तरह निजात दिया करते हैं। (८८) और ज़करीया (को याद करो), जब उन्हों ने अपने परवरदिगार को पुकारा कि परवरदिगार! मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिस है। (८९) तो हमने उन की पुकार सुन ली और उनको यह्या बख़्शे और उन की बीवी को औलाद के क़ाबिल बना दिया। ये लोग लपक-लपक कर नेकियां करते और हमें उम्मीद और डर से पुकारते और हमारे आगे आजिज़ी किया करते थे। (९०) और उन (मरयम) को (भी याद करो), जिन्हों ने अपनी पाकदामनी को बचाए रखा, तो हमने उन में अपनी रूह फूंक दी और उन को और उन के बेटे को दुनिया वालों के लिए निशानी बना दिया। (९१) यह तुम्हारी जमाअत एक ही जमाअत है, और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूं, तो मेरी ही इबादत किया करो। (९२) और ये लोग अपने मामले में आपस में बट गये (मगर) सब हमारी तरफ़ रुजूअ करने वाले हैं। (९३)★

जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस की कोशिश बेकार न जाएगी और हम उस के लिए (आमाल का सवाब) लिख रहे हैं। (९४) और जिस बस्ती (वालों) को हमने हलाक कर दिया, महाल है कि (रुजूअ करें) वह रुजूअ नहीं करेंगे।[1] (९५) यहां तक कि याजूज और माजूज खोल दिए जाएं और वे हर बुलंदी से दौड़ रहे हों। (९६) और (क़ियामत का) सच्चा वायदा क़रीब आ जाए, तो यकायक काफ़िरों की आंखें खुली की खुली रह जाएं (और कहने लगें कि) हाय शामत हम इस (हाल) से ग़फ़लत में रहे, बल्कि हम (अपने हक़ में) ज़ालिम थे। (९७) (काफ़िरो! उस दिन) तुम और जिन की तुम ख़ुदा के सिवा इबादत करते हो, दोज़ख़ का ईंधन होंगे (और) तुम (सब) उस में दाख़िल हो कर रहोगे। (९८) अगर ये लोग (हक़ीक़त में) माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते, सब उस में हमेशा (जलते) रहेंगे। (९९) वहा उन को चिल्लाना होगा और उस में (कुछ) न सुन सकेंगे। (१००) जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले भलाई मुक़र्रर हो चुकी है, वे इस से दूर रखे जाएंगे। (१०१) (यहां तक कि) उस

१. रुजूअ न करने के दो मानी हो सकते हैं—एक तो यह कि क़ियामत से पहले दुनिया की तरफ़ रुजूअ न करेंगे, दूसरे यह कि ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ यानी तौबा न करेंगे।

★रु. ६/६ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नल्लज़ी-न स-ब-क़त् लहुम् मिन्नल्-ह़ुस्ना उलाइ-क अ़न्हा मुब् - अ़दून
(१०१) ला यस् - मअ़ू-न ह़सीसहा व हुम् फ़ी मश्-त-हत् अन्फ़ुसुहुम्
ख़ालिदून (१०२) ला यह़्ज़ुनुहुमुल्-फ़-ज़्-अ़ुल्-अक्बरु व त-त-लक़्क़ाहुमुल्-
मलाइकतु हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तू-अ़दून (१०३) यौ-म नत्विस्-
समा-अ क-तय्यिस् - सिजिल्लि लिल्कुतुबि
कमा ब-दअ्-ना अव्व-ल ख़ल्क़िन् नुअ़ीदुहू
वअ़्-दन् अ़लैना इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन
(१०४) व ल-क़द् क-तब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम्-
बअ़्-दिज़्ज़िक्रि अन्नल्अर्-ज़ यरिसुहा अ़िबादियस्-
सालिहून (१०५) इन् - न फ़ी हाज़ा
ल-ब-लाग़ल्-लिक़ौमिन् आ़बिदीन (१०६)
व मा अर्सल्ना-क इल्ला रह़्-म-तल्-
लिल्आ़लमीन (१०७) क़ुल् इन्नमा यूहा
इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन्
फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१०८) फ़-इन्
त-वल्लौ फ़क़ुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवाइन्
व इन् अद्री अ-क़रीबुन् अम् बईदुम्मा तू-अ़दून (१०९) इन्नहू यअ्-लमुल्-
जह्-र मिनल्क़ौलि व यअ्-लमु मा तक्-तुमून (११०) व इन् अद्री ल-अ़ल्लहू
फ़ित्-नतुल् - लकुम् व मताअ़ुन् इला ह़ीन (१११) क़ा-ल रब्बिह़्कुम्
बिल्ह़क़्क़ि व रब्बुनर्-रह़्मानुल् - मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून★●(११२)

اقترب للناس ١٧ ٣٦٤ الحج ٢٢

وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنَىٰ
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا
اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ
الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِي
السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا
عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ
أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ
عَابِدِينَ ﴿١٠٦﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا
فَقُلْ آذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا
تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾
وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾ قَالَ رَبِّ احْكُم
بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾
سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ﴿١﴾
يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ

منزل ٤

२२ सूरतुल्-ह़ज्जि १०३

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ५४३२ अक्षर, १२८३ शब्द, ७८ आयतें और १० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् इन्-न ज़ल्-ज़-ल-तस् - साअ़ति शैउन्
अ़ज़ीम (१) यौ-म तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़ि-अ़तिन् अ़म्मा अर्ज़-अ़त्
व त-ज़्-अ़ु कुल्लु ज़ाति-ह़म्लिन् ह़म् - लहा व त - रन्ना - स सुकारा
व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन - न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद (२)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

की आवाज़ भी तो नहीं सुनेंगे और जो कुछ उन का जी चाहेगा उस में (यानी हर तरह के ऐश और मज़े में) हमेशा रहेंगे। (१०२) उन को (इस दिन का) बड़ा भारी ख़ौफ़ ग़मगीन नहीं करेगा और फ़रिश्ते उन को लेने आएंगे (और कहेंगे कि) यही वह दिन है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था। (१०३) जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेट लेंगे, जैसे ख़तों का तूमार लपेट लेते हैं, जिस तरह हमने (काइनात) को पहले पैदा किया था, उसी तरह दोबारा पैदा कर देंगे। (यह) वायदा (है जिस का पूरा करना) ज़रूरी है। हम ऐसा ज़रूर करने वाले हैं। (१०४) और हमने नसीहत (की किताब यानी तौरात) के बाद ज़बूर में लिख दिया था कि मेरे नेक बन्दे मुल्क के वारिस होंगे, (१०५) इबादत करने वाले लोगों के लिए इस में (ख़ुदा के हुक्मों की) तब्लीग़ है। (१०६) और (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम को तमाम दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है। (१०७) कह दो कि मुझ पर (ख़ुदा की तरफ़ से) यह वह्य आती है कि तुम सब का माबूद एक ख़ुदा है, तो तुम को चाहिए कि फ़रमांबरदार हो जाओ। (१०८) अगर ये लोग मुंह फेरें तो कह दो कि मैं ने तुम सब को एक जैसे (ख़ुदा के हुक्मों से) आगाह कर दिया है और मुझ को मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुम से वायदा किया जाता है, वह (बहुत) जल्द (आने वाली) है। (उस का वक़्त) दूर है। (१०९) जो बात पुकार कर की जाए, वह उसे भी जानता है और जो तुम छिपा कर करते हो, उसे भी जानता है। (११०) और मैं नहीं जानता शायद वह तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुद्दत तक (तुम उस से) फ़ायदा (उठाते रहो)। (१११) (पैग़म्बर ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! हक़ के साथ फ़ैसला कर दे और हमारा परवरदिगार बड़ा मेहरबान है, उसी से उन बातों में जो तुम बयान करते हो, मदद मांगी जाती है। (११२)★●

२२ सूरः हज्ज १०३

सूरः हज्ज मदनी है और इस में ७८ आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो! अपने परवरदिगार से डरो कि क़ियामत का ज़लज़ला एक बड़ा हादिसा है। (१) (ऐ मुख़ातब!) जिस दिन तू उस को देखेगा, (उस दिन यह हाल होगा कि) तमाम दूध पिलाने वाली औरतें अपने बच्चों को भूल जाएंगी और तमाम हमल वालियों के हमल गिर पड़ेंगे और लोग तुझ को मतवाले नज़र आएंगे, मगर वे मतवाले नहीं होंगे, बल्कि (अज़ाब देख कर मदहोश हो रहे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव-व यत्तबिअ़ु कुल-ल शैतानिम्-
मरीद ᅬ (३) कुति-ब अ़लैहि अन्नहू मन् त-वल्लाहु फ़-अन्नहू युज़िल्लुहू व
यह्दीहि इला अ़ज़ाबिस्सअ़ीर (४) या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम्-
मिनल्बअ़्-सि फ़-इन्ना ख़-लक़्नाकुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत़्-फ़तिन् सुम्-म
मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म मिम्-मुज़्-ग़तिम्-
मुख़ल्लक़तिंव्-व ग़ैरि मुख़ल्लक़तिल्-लिनुबय्यि-न
लकुम् ᅩ व नुक़िर्रु फ़िल्अर्हामि मा
नशाउ इला अ-जलिम् - मुसम्मन् सुम्-म
नुख़्रिजुकुम् तिफ़्-लन् सुम् - म लितब्लुग़ू
अशुद्दकुम् ᅩ व मिन्कुम् मंय्यु-त-वफ़्फ़ा व
मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल् - अ़ुमुरि
लिकैला यअ़्-ल-म मिम्बअ़्-दि अ़िल्मिन् शैअन् ᅩ
व त-रल्अर्-ज़ हामि-द-तन् फ़इज़ा अन-ज़ल्ना
अ़लैहल्-मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत् व अम्ब-तत्
मिन् कुल्लि ज़ौजिम् - बहीज (५)
ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल् - हक़्क़ु व
अन्नहू युह़्यिल् - मौता व अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ᅬ (६)
व अन्नस्सा-अ़ - त आतियतुल्ला रै-ब फ़ीहा ᅵ व अन्नल्ला - ह यब्अ़सु
मन् फ़िल्क़ुबूर (७) व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि
अ़िल्मिंव्-व ला हुदंव् - व ला किताबिम् - मुनीर ᅬ (८) सानि - य
अ़ित़्फ़िही लियुज़िल् - ल अ़न् सबीलिल्लाहि ᅩ लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव् व
नुज़ीक़ुहू यौमल् - क़ियामति अ़ज़ाबल् - हरीक़ (९) ज़ालि - क बिमा
क़द्-द-मत् यदा-क व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद ★(१०)

اقترب للناس ١٧ — ٢٦٥ — الحج ٢٢

ذات حمل حملها وترى الناس سكرى وما هم بسكرى و
لكن عذاب الله شديد ۝٢ ومن الناس من يجادل في الله
بغير علم ويتبع كل شيطن مريد ۝٣ كتب عليه انه من
تولاه فانه يضله ويهديه الى عذاب السعير ۝٤ يايها
الناس ان كنتم في ريب من البعث فانا خلقنكم من تراب
ثم من نطفة ثم من علقة ثم من مضغة مخلقة وغير
مخلقة لنبين لكم ونقر في الارحام ما نشاء الى اجل مسمى
ثم نخرجكم طفلا ثم لتبلغوا اشدكم ومنكم من يتوفى و
منكم من يرد الى ارذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيا
وترى الارض هامدة فاذا انزلنا عليها الماء اهتزت وربت
وانبتت من كل زوج بهيج ۝٥ ذلك بان الله هو الحق وانه
يحي الموتى وانه على كل شيء قدير ۝٦ وان الساعة اتية
لا ريب فيها وان الله يبعث من في القبور ۝٧ ومن الناس
من يجادل في الله بغير علم ولا هدى ولا كتب منير ۝٨ ثاني
عطفه ليضل عن سبيل الله له في الدنيا خزي ونذيقه
يوم القيمة عذاب الحريق ۝٩ ذلك بما قدمت يداك وان الله
ليس بظلام للعبيد ۝١٠ ومن الناس من يعبد الله على حرف

منزل

★रु. १/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होंगे)। बेशक ख़ुदा का अज़ाब सख़्त है। (२) और कुछ लोग ऐसे हैं जो ख़ुदा (की शान) में इल्म (और सूझ-बूझ) के बग़ैर झगड़ते और हर शैतान-सरकश की पैरवी करते हैं। (३) जिस के बारे में लिख दिया गया है कि जो उसे दोस्त रखेगा तो वह उस को गुमराह कर देगा और दोज़ख़ के अज़ाब का रास्ता दिखाएगा। (४) लोगो ! अगर तुम को (मरने के बाद) जी उठने में कुछ शक हो तो हमने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया था, (यानी शुरू में) मिट्टी से, फिर उस से नुत्फ़ा बना कर, फिर उस से ख़ून का लोथड़ा बना कर, फिर उससे बोटी बना कर, जिसकी बनावट पूरी भी होती है और अधूरी भी, ताकि तुम पर अपना 'पैदा करने वाला' होना ज़ाहिर कर दे और हम जिस को चाहते हैं एक मुक़र्रर मीआद तक पेट में ठहराए रखते हैं, फिर तुम को बच्चा बनाकर निकालते हैं, फिर तुम जवानी को पहुंचते हो और कुछ (बुढ़ापे से पहले) मर जाते हैं और कुछ (बूढ़े खूसट हो जाते और बुढ़ापे की) बहुत ख़राब उम्र की तरफ़ लौटाए जाते हैं कि (बहुत कुछ) जानने के बाद बिल्कुल बे-इल्म हो जाते हैं और (ऐ देखने वाले !) तू देखता है (कि एक वक़्त में) ज़मीन सूखी (पड़ी होती है), फिर जब हम उस पर मेंह बरसाते हैं तो वह हरी-भरी हो जाती है और उभरने लगती है और तरह-तरह की रौनक़दार चीज़ें उगाती है। (५) इन क़ुदरतों से ज़ाहिर है कि ख़ुदा ही (सब कुछ क़ुदरत रखने वाला है, जो) बरहक़ है और यह कि वह मुर्दों को ज़िंदा कर देता है और यह कि वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (६) और यह कि क़ियामत आने वाली है। इस में कुछ शक नहीं और यह कि ख़ुदा सब लोगों को, जो क़ब्रों में हैं, जिला उठाएगा। (७) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो ख़ुदा (की शान) में बग़ैर इल्म (व दानिश) के और बग़ैर हिदायत के और बग़ैर रोशन किताब के झगड़ता है। (८) (और घमंड से) गरदन मोड़ लेता (है) ताकि (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से गुमराह कर दे, उस के लिए दुनिया में ज़िल्लत है और क़ियामत के दिन हम उसे जलती (आग के) अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (९)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिनन्नासि मंय्यअ्-बुदुल्ला-ह अ़ला ह़र्फ़िन् ज फ़-इन् असाबहू ख़ैरु-नित्म-अन्-न बिही ज व इन् असाबत्हु फ़ित - नतुनिन्-क - ल - ब अ़ला वज्हिही ख़सिरद्दुन्या वल्आख़ि-र-त ط ज़ालि-क हुवल्ख़ुस्रानुल्-मुबीन (११) यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहू व मा ला यन्फ़अुहू ط ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद ज (१२) यद्अू ल - मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अिही ط लबिअ्सल् - मौला व लबिअ्सल् - अ़शीर (१३) इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी - न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल् - अन्हारु ط इन्नल्ला - ह यफ़्अ़लु मा युरीद (१४) मन् का-न यज़ुन्नु अल्लंय्यन्सुरहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति फ़ल्यम्दुद् बि-स-बबिन् इलस्समाइ सुम्मल्-यक़्तअ़् फ़ल्-यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्-न कैदुहू मा यग़ीज़ (१५) व क-ज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु आयातिम् - बय्यिनातिंव لا - व अन्नल्ला - ह यह्दी मंय्युरीद (१६). इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिई-न वन्नसारा वल्मजू-स वल्लज़ी-न अश्रकू صلے इन्नल्ला-ह यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्क़ियामति ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (१७) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्-क़-मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श-जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम्-मिनन्नासि ط व कसीरुन् ह़क़्-क़ अ़लैहिल् - अ़ज़ाबु ط व मंय्युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिम् - मुक्रिमिन् ط इन्नल्ला - ह यफ़्अ़लु मा यशाउ ط □ (१८) हाज़ानि ख़स्-मानिख़्-त-समू फ़ी रब्बिहिम् ز फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू क़ुत्तिअ़त् लहुम् सियाबुम् - मिन् नारिन् ط युसब्बु मिन् फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल्-ह़मीम ज (१९)

اقترب للناس ١٧ ٢٦٦ الحج ٢٢

فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَى
وَجْهِهِ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١١﴾
يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا يَنْفَعُهُ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ
الْبَعِيدُ ﴿١٢﴾ يَدْعُو لَمَنْ ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ لَبِئْسَ الْمَوْلَىٰ
وَلَبِئْسَ الْعَشِيرُ ﴿١٣﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا
يُرِيدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ
كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾ وَكَذَٰلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ
يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ﴿١٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ
وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ
يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ
وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ
حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ فَالَّذِينَ
كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ نَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ

□ सजदः ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(ऐ सरकश !) यह उस (कुफ़्) की सज़ा है, जो तेरे हाथों ने आगे भेजा है और ख़ुदा अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं★ (१०) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो किनारे पर (खड़ा हो कर) ख़ुदा की इबादत करता है। अगर उस को कोई (दुनिया का) फ़ायदा पहुंचे तो उस की वजह से मुतमइन हो जाए और अगर कोई आफ़त आ पड़े तो मुंह के बल लौट जाए (यानी फिर काफ़िर हो जाए)। उस ने दुनिया में भी नुक़्सान उठाया और आख़िरत में भी यही तो खुला नुक़्सान है। (११) यह ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है, जो न उसे नुक़्सान पहुंचाए और न फ़ायदा दे सके, यही तो परले दर्जे की गुमराही है। (१२) (बल्कि) ऐसे शख़्स को पुकारता है, जिस का नुक़्सान फ़ायदे से ज़्यादा क़रीब है, ऐसा दोस्त भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा। (१३) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ख़ुदा उन को बहिश्तों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें चल रही हैं। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा जो चाहता है, करता है। (१४) जो आदमी यह गुमान करता हो कि ख़ुदा उस को दुनिया और आख़िरत में मदद नहीं देगा, तो उस को चाहिए कि ऊपर की तरफ़ (यानी अपने घर की छत में) एक रस्सी बांधे फिर (उस से अपना) गला घोंट ले, फिर देखे कि क्या यह तद्बीर उस के गुस्से को दूर कर देती है। (१५) और इसी तरह हमने इस क़ुरआन को उतारा है (जिस की तमाम) बातें खुली हुई (हैं) और यह (याद रखो) कि ख़ुदा जिस को चाहता है, हिदायत देता है। (१६) जो लोग मोमिन (यानी मुसलमान) हैं और जो यहूदी हैं और सितारापरस्त और ईसाई और मजूसी और ख़ुदा के मुश्रिक, इन (सब) में क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (१७) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख़्लूक़) आसमानों में है और जो ज़मीन में है और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान ख़ुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे हैं, जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को ख़ुदा ज़लील करे, उस को कोई
34 इज़्ज़त देने वाला नहीं। बेशक ख़ुदा जो चाहता है, करता है□ (१८) ये दो (फ़रीक़) एक दूसरे के दुश्मन अपने परवरदिगार (के बारे) में झगड़ते हैं, तो जो काफ़िर हैं उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे (और) उन के सरों पर जलता हुआ पानी डाला जाएगा। (१९) इस से उन के पेट के

★रु. १/८ आ १० □ सजूदः ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्-जुलूद ᵇ (२०) व लहुम् मक़ामिअ़ु
मिन् हदीद (२१) कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उईदू
फ़िहा ᶜ व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-हरीक़ ★(२२) इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी - न
आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु
युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन्
ज - हबिंव - व लुअ्लुअन् ᵇ व लिबासुहुम्
फ़ीहा हरीर (२३) व हुदू इलत्तय्यिबि
मिनल्क़ौलि ᶜ व हुदू इला सिरातिल् -
हमीद (२४) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व
य-सुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि वल्मस-जिदिल्-
हरामिल्लज़ी ज-अ़ल्नाहु लिन्नासि सवा-अ-निल्-
आ़किफ़ु फ़ीहि वल्बादि ᵇ व मंय्युरिद्
फ़ीहि बि-इल्हादिम् - बिज़ुल्मिन् नुज़िक़्हु
मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम ★(२५) व
इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही - म मकानल्-
बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअंव - व तह्हिर् बैति - य लित्ताइफ़ी - न
वल्क़ा-इमी-न वर्रुक्कअ़िस्सुजूद (२६) व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल्हज्जि
यअ्-तू-क रिजालंव-व अ़ला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती-न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन्
अ़मीक़िल्- ᵛ (२७) लियश्हदू मनाफ़ि - अ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फ़ी
अय्यामिम्-मअ्-लूमातिन् अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम् - बहीमतिल् - अन्आमि ᶜ
फ़कुलू मिन्हा व अत्अिमुल् - बाइसल् - फ़क़ीर ᵛ (२८) सुम्मल् -
यक़्ज़ू त-फ़-सहुम् वल्यूफ़ू नुज़ूरहुम् वल्यत्तव्वफ़ू बिल्बैतिल्-अ़तीक़ (२९)
ज़ालि-क ᶜ व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हु - व ख़ैरुल्लहू अ़िन् - द
रब्बिही ᵇ व उहिल्लत् लकुमुल् - अन्आमु इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम्
फ़ज्-तनिबुर्रिज् - स मिनल् - औसानि वज - तनिबू क़ौलज़्ज़ूर ᵛ (३०)

اقترب للناس ١٧ ٢٤٨ الحج ٢٢

الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُمْ مَقَامِعُ
مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا
فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا
مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا
إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ
لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ
نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ
أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُودِ ﴿٢٦﴾ وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ
ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾ لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ
يَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ
الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوا
تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾
ذَٰلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ وَ
أُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ

★रु. २/९ आ १२ ★रु. ३/१० आ ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अन्दर की चीज़ें और खालें गल जाएंगी। (२०) और उन (के मारने-ठोकने) के लिए लोहे के हथोड़े होंगे। (२१) जब वे चाहेंगे कि इस रंज (व तक्लीफ़ की वजह) से दोज़ख़ से निकल जाएं, तो फिर उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा कि) जलने के अज़ाब का मज़ा चखते रहो। (२२)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ख़ुदा उन को बहिश्तों में दाख़िल करेगा, जिन के तले नहरें बह रही हैं। वहां उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और मोती, और वहां उन का लिबास रेशमी होगा। (२३) और उन को पाक कलाम की हिदायत की गयी और (ख़ुदा-ए-) हमीद की राह बतायी गयी। (२४) जो लोग काफ़िर हैं और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से और मस्जिदे मोहतरम से, जिसे हमने लोगों के लिए एक जैसी (इबादतगाह) बनाया है, रोकते हैं, चाहे वे वहां के रहने वाले हों या बाहर से आने वाले और जो इस में शरारत से टेढ़ा रास्ता (और कुफ़्) अपनाना चाहे, उस को हम दर्द देने वाले अज़ाब का मज़ा चखाएंगे★(२५) और (एक वक़्त था) जब हमने इब्राहीम के लिए ख़ाना-काबा को मक़ाम मुक़र्रर किया (और इर्शाद फ़रमाया) कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न कीजियो और तवाफ़ करने वालों और क़ियाम करने वालों और रुकूअ करने वालों (और) सज्दा करने वालों के लिए मेरे घर को साफ़ रखा करो। (२६) और लोगों में हज के लिए निदा कर दो कि तुम्हारी तरफ़ पैदल और दुबले-दुबले ऊंटों पर, जो दूर (-दूर के) रास्तों से चले आते हों, (सवार हो कर) चले आएं, (२७) ताकि अपने फ़ायदे के कामों के लिए हाज़िर हों और (क़ुर्बानी के) मालूम दिनों में चारपायों (के ज़िब्ह के वक़्त) जो ख़ुदा ने उन को दिए हैं, उन पर ख़ुदा का नाम लें। उस में से तुम ख़ुद भी खाओ और दबे-कुचले फ़क़ीर को भी खिलाओ। (२८) फिर चाहिए कि लोग अपना मैल-कुचैल दूर करे और नज़्रें पूरी करें और पुराने घर (यानी बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। (२९) यह (हमारा हुक्म है) और जो शख़्स अदब की चीज़ों की, जो ख़ुदा ने मुक़र्रर की हैं अज़्मत रखे, तो यह परवरदिगार के नज़दीक उस के हक़ में बेहतर है और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उन के जो तुम्हें पढ़ कर सुनाए जाते हैं तो बुतों की पलीदी से बचो और झूठी बात से बचो, (३०)

★रु. २/९ आ १२ ★रु. ३/१० आ ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हु-न-फ़ा-अ लिल्लाहि ग़ै-र मुशिरकी-न बिही व मंय्युशिरक बिल्लाहि फ़-क-अन्नमा ख़र्-र मिनस्समा-इ फ़-तख़्तफ़ुहुत्-तैरु औ तह्वी बिहिर्रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़ (३१) ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़इरल्लाहि फ़-इन्नहा मिन् तक़्वल्क़ुलूब (३२) लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु इला अ-जलिम्-मुसम्मन् सुम्-म महिल्लुहा इलल्-बैतिल्-अ़तीक़★(३३) व लिकुल्लि उम्मतिन् ज-अ़ल्ना मन्-स-कल्-लि-यज़्कुरुस्मल्लाहि अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम् बहीमतिल्-अन्-आमि फ़इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-लहू अस्लिमू व बश्शिरिल्-मुख़्बितीन (३४) अल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकि-रल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् वस्साबिरी-न अ़ला मा अस़ा-बहुम् वल्मुक़ीमिस्सलाति व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (३५) वल्बुद्-न ज-अ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआ़इरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् फ़ज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़्-फ़-इज़ा व-ज-बत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत़्इमुल्क़ानि-अ वल्मुअ़्-तर्-र कज़ालि-क सख़्ख़र्नाहा लकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (३६) लंय्यनालल्ला-ह लुहूमुहा व ला दिमाउहा वलाकिंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम् कज़ालि-क सख़्-ख़-रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम् व बश्शिरिल्-मुह्सिनीन (३७) इन्नल्ला-ह युदाफ़िअ़ु अ़निल्लज़ी-न आमनू इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल ख़व्वानिन् कफ़ूर★● (३८) उज़ि-न लिल्लज़ी-न युक़ातलू-न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू व इन्नल्ला-ह अ़ला नस्रिहिम् ल-क़दीर (३९)

اقترب للناس ١٧ ٢٦٨ الحج ٢٢

مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝٣٠ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ
وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ
تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝٣١ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ
اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝٣٢ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝٣٣ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ
فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝٣٤ الَّذِيْنَ اِذَا
ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي
الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣٥ وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ
مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖۗ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ
فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ
كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٣٦ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ
لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٧ اِنَّ اللّٰهَ
يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝٣٨
اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ
لَقَدِيْرُ ۝٣٩ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

منزل ٤

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सिर्फ़ एक ख़ुदा के हो कर और उस के साथ शरीक न ठहरा कर और जो शख़्स (किसी को) ख़ुदा के साथ शरीक मुक़र्रर करे, तो वह गोया ऐसा है जैसे आसमान से गिर पड़े, फिर उस को परिंदे उचक ले जाएं या हवा किसी दूर जगह उड़ा कर फेंक दे। (३१) यह (हमारा हुक्म है) और जो शख़्स अदब की चीज़ों की, जो ख़ुदा ने मुक़र्रर की हैं, अज़्मत रखे, तो यह (काम) दिलों की परहेज़गारी में से है। (३२) उन में एक मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, फिर उन को पुराने घर (यानी बैतुल्लाह) तक पहुंचना (और ज़िब्ह होना) है। (३३)★

और हम ने हर एक उम्मत के लिए क़ुर्बानी का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है, ताकि जो मवेशी चारपाए ख़ुदा ने उन को दिए हैं, (उन के ज़िब्ह करने के वक़्त) उन पर ख़ुदा का नाम लें, सो तुम्हारा माबूद एक ही है, तो उसी के फ़रमांबरदार हो जाओ और आजिज़ी करने वालों को ख़ुश-ख़बरी सुना दो। (३४) ये वह लोग हैं कि जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है, तो उन के दिल डर जाते हैं और (जब) उन पर मुसीबत पड़ती है, तो सब्र करते हैं और नमाज़ आदाब से पढ़ते हैं और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस में से (नेक कामों में) ख़र्च करते हैं। (३५) और क़ुर्बानी के ऊंटों को भी हम ने तुम्हारे लिए 'ख़ुदा शआयर' मुक़र्रर किया है। उन में तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, तो (क़ुर्बानी करने के वक़्त) क़तार बांध कर उन पर ख़ुदा का नाम लो। जब पहलू के बल गिर पड़ें तो उन में से खाओ और (क़नाअत) से बैठ रहने वालों और सवाल करने वालों को भी खिलाओ। इस तरह हम ने उन को तुम्हारे ताबेअ कर दिया है, ताकि तुम शुक्र करो। (३६) ख़ुदा तक न उन का गोश्त पहुंचता है और न ख़ून, बल्कि उस तक तुम्हारी परहेज़गारी पहुंचती है। इसी तरह ख़ुदा ने उन को तुम्हारा ताबेअ कर दिया है, ताकि इस बात के बदले कि तुम को हिदायत बख़्शी है, उसे बुज़ुर्गी से याद करो और (ऐ पैग़म्बर !) नेकों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (३७) ख़ुदा तो मोमिनों से उन के दुश्मनों को हटाता रहता है। बेशक ख़ुदा किसी ख़ियानत करने वाले और नेमत को ठुकराने वाले को दोस्त नहीं रखता। (३८)★●

जिन मुसलमानों से (ख़ामख़ाह) लड़ाई की जाती है, उन को इजाज़त है (कि वे भी लड़ें), क्योंकि उन पर ज़ुल्म हो रहा है और ख़ुदा (उन की मदद करेगा, वह) यक़ीनन उन की मदद पर

★रु. ४/११आ ८ ★रु. ५/१२ आ ५ ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि ह़क़्क़िन् इल्ला अंय्यक़ूलू
रब्बुनल्लाहु ʖ व लौला दफ़्-अुल्लाहिन्ना-स बअ्-ज़हुम् बिबअ्-ज़िल्-लहुद्दिमत्
स़वामिअु व बि-यअुं व-व स़-ल-वातुं व्-व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन् ʖ
व ल-यन्सुरन्नल्लाहु मंय्यन्सुरुहू ʖ इन्नल्ला - ह ल-क़विय्युन् अज़ीज़ (४०)
अल्लज़ी - न इम्मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि
अक़ामुस्स़ला-त़ व-आ-तवुज़्ज़का-त़ व अ-मरू
बिलमअ्-रूफ़ि व नहौ अ़निलमुन्करि ʖ
व लिल्लाहि आक़ि-बतुल्-उमूर (४१)
व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् क़ज़्ज-बत् क़ब्-लहुम्
क़ौमु नूहिंव-व आ़दुंव-व समूदʖ (४२) व
क़ौमु इब्राही-म व क़ौमु लूतिंव- ʖ (४३)
व अस्ह़ाबु मद्-य-नʗ व कुज़्ज़िब मूसा
फ़-अम्लैतु लिल् - काफ़िरी - न सुम् - म
अ-ख़ज़्तुहुम् ʗ फ़ कै-फ़ का-न नकीर (४४)
फ़-क-अय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् अह्-लक्नाहा
व हि-य ज़ालि-मतुन् फ़हि-य ख़ावि-यतुन्

الحج ٢٢ ٣٧٩ اقترب للناس ١٧

رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ
صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾ اَلَّذِيْنَ
اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٤١﴾ وَاِنْ
يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى
فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾ فَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ فَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ
فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ
فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى
الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۗ
وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَىَّ
الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ

अ़ला अ़ुरूशिहा व बिअ्रिम्-मु-अत्त-लतिंव-व क़स्रिम् - मशीद (४५)
अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-तकू-न लहुम् क़ुलूबुं य्यअ्-क़िलू-न बिहा औ
आज़ानुं य्यस्-मअू-न बिहा ʗ फ़-इन्नहा ला तअ्-मल्-अब्स़ारु व लाकिन्
तअ्-मल्-क़ुलूबुल्लती फ़िस्सुदूर (४६) व यस्तअ्-जिलू-न-क बिल्अ़ज़ाबि
व लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ्-दहू ʖ व इन्-न यौमन् अ़िन्-द रब्बि-क क-अल्फ़ि
स-नतिम्मिम्मा त-अ़ुद्दून (४७) व क-अय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् अम्लैतु लहा व
हि-य ज़ालि-मतुन् सुम्-म अ-ख़ज़्तुहा ʗ व इलय्यल्-मस़ीर ★ (४८) क़ुल्
याअय्युहन्नासु इन्नमा अ-न लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन ʗ (४९) फ़ल्लज़ी-न
आमनू व अ़मिलुस्स़ालिहाति लहुम् मग़्-फ़ि-रतुं व्-व रिज़्-क़ुन् करीम (५०)

★ रु. ६/१३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुदरत रखता है। (३९) ये वह लोग हैं कि अपने घरों से ना-हक़ निकाल दिए गए, (उन्हों ने कुछ क़ुसूर नहीं किया) हां, यह कहते हैं कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है और अगर ख़ुदा लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता तो (राहिबों के) पूजा-घर और (ईसाइयों के) गिरजे और (यहूदियों की) और (मुसलमानों की) मस्जिदें, जिन में ख़ुदा का बहुत-सा ज़िक्र किया जाता है, गिरायी जा चुकी होतीं। और जो शख़्स ख़ुदा की मदद करता है, ख़ुदा उस की ज़रूर मदद करता है। बेशक ख़ुदा ताक़त वाला और ग़ालिब है। (४०) तो ये लोग हैं कि अगर हम उन को मुल्क में ग़ल्बा दें तो नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें और सब कामों का अंजाम ख़ुदा ही के अख़्तियार में है। (४१) और अगर ये लोग तुम को झुठलाते हैं, तो उन से पहले नूह की क़ौम और आद और समूद भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं, (४२) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम भी, (४३) और मदयन के रहने वाले भी और मूसा भी तो झुठलाए जा चुके हैं, लेकिन मैं काफ़िरों को मोहलत देता रहा, फिर उन को पकड़ लिया, तो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा (सख़्त) था। (४४) और बहुत-सी बस्तियां हैं कि हम ने उन को तबाह कर डाला था कि वे ना-फ़रमान थीं, सो वे अपनी छतों पर गिर पड़ी हैं और (बहुत से) कुएं बेकार और (बहुत से) महल वीरान (पड़े हैं)। (४५) क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि उनके दिल ऐसे होते कि उन से समझ सकते और कान (ऐसे) होते कि उन से सुन सकते। बात यह है कि आंख अंधी नहीं होतीं, बल्कि दिल, जो सीनों में हैं, (वे) अंधे होते हैं। (४६) और (ये लोग) तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं और ख़ुदा अपना वायदा हरगिज़ ख़िलाफ़ नहीं करेगा और बेशक तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक एक दिन तुम्हारे हिसाब के मुताबिक़ हज़ार वर्ष के बराबर है। (४७) और बहुत-सी बस्तियां हैं कि मैं उन को मोहलत देता रहा और वे ना-फ़रमान थीं। फिर मैं ने उन को पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (४८)★

(ऐ पैग़म्बर!) कह दो कि लोगो! मैं तुम को ख़ुल्लम-खुल्ला नसीहत करने वाला हूं। (४९) तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन के लिए बख़्शिश और आबरू की रोज़ी है। (५०)

★रु. ६/१३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क अस्हाबुल् - जहीम
(५१) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिंव्-व ला नबिय्यिन् इल्ला
इज़ा त - मन्ना अल्क़श्शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही ج फ़-यन्सख़ुल्लाहु मा
युल्क़िश्शैतानु सुम् - म युह्किमुल्लाहु आयातिही ط वल्लाहु अलीमुन् हकीमुلا
(५२) लि-यज्-अ-ल मा युल्क़िश्शैतानु
फ़ित्-न-तल् - लिल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम्
म - रज़ुंव्वल् - क़ासियति क़ुलूबुहुम् ط व
इन्नज़्ज़ालिमी-न लफ़ी शिक़ाक़िम् - बईद لا
(५३) व लियअ्-ल-मल्लज़ी-न ऊतुल्अिल्-म
अन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़-युअ्मिनू बिही
फ़-तुख़्बि-त लहू क़ुलूबुहुम् ط व इन्नल्ला-ह
लहादिल्लज़ी - न आमनू इला सिरातिम्-
मुस्तक़ीम (५४) व ला यज़ालुल्लज़ी-न
क - फ़रू फ़ी मिर्यतिम्मिन्हु हत्ता
तअ्तियहुमुस्सा-अतु बग़्-त-तन् औ यअ्ति-यहुम्
अज़ाबु यौमिन् अक़ीम (५५) अल्मुल्कु
यौमइज़िल् - लिल्लाहि ط यह्कुमु बैनहुम् ط
फ़ल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन्नअीम (५६)
वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-
मुहीन ★ (५७) वल्लज़ी - न हाजरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म क़ुतिलू
औ मातू ल-यर्ज़ुक़न्नहुमुल्लाहु रिज़्-क़न् ह-स-नन् ط व इन्नल्ला-ह लहु-व
ख़ैरुर् - राज़िक़ीन (५८) लयुद्ख़िलन्नहुम् मुद - ख़-लंय्यर्ज़ौनहू ط व
इन्नल्ला-ह ल-अलीमुन् हलीम (५९) ज़ालि-क ج व मन् आक़-ब बिमिस्लि
मा ऊक़ि-ब बिही सुम्-म बुग़ि-य अलैहि ल - यन्सुरन्नहुल्लाहु ط इन्नल्ला-ह
ल-अफ़ुव्वुन् ग़फ़ूर (६०) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि
व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व अन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर (६१)

الحج ٢٢ ٢٧٠ اقترب الناس ١٧

كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ
اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي
الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ لِّيَجْعَلَ
مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ
قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۭ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾ وَ
لَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَىِٕذٍ لِّلّٰهِ ۭ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ ع
وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ
اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾ لَيُدْخِلَنَّهُمْ
مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَ
مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ

★रु. ७/१४ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जिन लोगों ने हमारी आयतों में (अपने झूठे गुमान में) हमें आजिज़ करने के लिए कोशिश की, वे दोज़ख़ वाले हैं। (५१) और हम ने तुम से पहले कोई रसूल और नबी नहीं भेजा, मगर (उस का यह हाल था कि) जब वह कोई आरज़ू करता था तो शैतान उस की आरज़ू में (वस्वसा) डाल देता था, तो जो (वस्वसा) शैतान डालता है, ख़ुदा उस को दूर कर देता है, फिर ख़ुदा अपनी आयतों को मज़बूत कर देता है और ख़ुदा इल्म (और) हिक्मत वाला है। (५२) ग़रज़ (इस से) यह है कि जो (वस्वसा) शैतान डालता है, उस को उन लोगों के लिए, जिन के दिलों में बीमारी है और जिन के दिल सख़्त हैं, आज़माइश का ज़रिया ठहराए। बेशक ज़ालिम परले दर्जे की मुख़ालफ़त में हैं। (५३) और यह भी ग़रज़ है कि जिन लोगों को इल्म अता हुआ है, वे जान लें कि वह (यानी वह्य) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, तो वह इस पर ईमान लाएं और उन के दिल ख़ुदा के आगे आजिज़ी करें और जो लोग ईमान लाए हैं, ख़ुदा उन को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करता है। (५४) और काफ़िर लोग हमेशा इससे शक में रहेंगे, यहां तक कि क़ियामत उन पर अचानक आ जाए या एक ना-मुबारक दिन का अज़ाब उन पर अचानक आ वाक़ेअ हो। (५५) उस दिन बादशाही ख़ुदा ही की होगी (और) वह उन में फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ये नेमत के बाग़ों में होंगे। (५६) और जो काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते रहे, उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (५७) ★

और जिन लोगों ने ख़ुदा की राह में हिजरत की, फिर मारे गये या मर गये, उन को ख़ुदा अच्छी रोज़ी देगा और बेशक ख़ुदा सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (५८) वह उन को ऐसी जगह दाख़िल करेगा, जिसे वे पसंद करेंगे और ख़ुदा तो जानने वाला (और) बुर्दबार है। (५९) यह (बात ख़ुदा के यहां ठहर चुकी है) और जो शख़्स (किसी को) उतनी ही तक्लीफ़ दे, जितनी तक्लीफ़ उस को दी गयी, फिर उस शख़्स पर ज़्यादती की जाए, तो ख़ुदा उस की मदद करेगा। बेशक ख़ुदा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है। (६०) यह इस लिए कि ख़ुदा रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और ख़ुदा तो सुनने वाला, देखने

★रु. ७/१४ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह हुवल्-ह़क़्क़ु व अन्-न मा यद्‌ऊ-न मिन्दूनिही हुवल्बातिलु
व अन्नल्ला-ह हुवल्‌अलिय्युल्-कबीर (६२) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल
मिनस्समा-इ मा-अन् ⸗ फ़ - तुस्बिहुल्अर्-ज़ु मुख़्ज़र्र-तन् ᐝ इन्नल्ला-ह लती़फ़ुन्
ख़बीर (६३) लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ᐝ व इन्नल्ला-ह
लहुवल्-ग़निय्युल् - ह़मीद ★(६४) अ-लम्
त-र अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि
वल्फ़ुल् - क तजरी फ़िल्बह़्‌रि बिअम्रिही ᐝ
व युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ़ अ-लल्अर्ज़ि
इल्ला बिइज़्निही ᐝ इन्नल्ला - ह बिन्नासि
ल - रऊफ़ुर्रह़ीम (६५) व हुवल्लज़ी
अह़्-याकुम् ⸗ सुम् - म युमीतुकुम् सुम्-म
युह़्यीकुम् ᐝ इन्नल् - इन्सा - न ल - कफ़ूर
(६६) लिकुल्लि उम्मतिन् ज - अ़ल्ना
मन्-स-कन् हुम् नासिकूहु फ़ला युनाज़िअ़ुन्न-क
फ़िल्अम्रि वद्‌अ़ु इला रब्बि-क ᐝ इन्न-क
ल-अ़ला हुदम्-मुस्तक़ीम (६७) व इन् जादलू-क फ़क़ुलिल्लाहु अअ़्-लमु बिमा
तअ़्-मलून (६८) अल्लाहु यह़्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कुन्तुम्
फ़ीहि तख़्-तलिफ़ून (६९) अ-लम् तअ़्-लम् अन्नल्ला-ह यअ़्-लमु मा फ़िस्समा-इ
वल्अर्ज़ि ᐝ इन-न ज़ालि-क फ़ी किताबिन् ᐝ इन्-न ज़ालि-क अ़-लल्लाहि यसीर
(७०) व यअ़्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व मा
लै-स लहुम् बिही अ़िल्मुन् ᐝ व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर (७१)

اقترب للناس ١٧ ‏ ٢٨١ ‏ الحج ٢٢

ع ٨/١٥

وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ
وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ
خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا
فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ۫ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ
الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾
اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ
فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ
عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

★रु. ८/१५ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाला है। (६१) यह इस लिए कि ख़ुदा ही बरहक़ है और जिस चीज़ को (काफ़िर) ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, वह झूठ है और इस लिए कि ख़ुदा बड़ी शान वाला और बड़ा है। (६२) क्या तुम नहीं देखते कि ख़ुदा आसमान से मेंह बरसाता है, तो ज़मीन हरी-भरी हो जाती है। बेशक ख़ुदा मेहरबान और ख़बरदार है। (६३) जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है, उसी का है और बेशक ख़ुदा बे-नियाज़ (और) तारीफ़ के क़ाबिल है। (६४)★

क्या तुम नहीं देखते कि जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं (सब) ख़ुदा ने तुम्हारे ताबेअ कर रखी हैं और कश्तियां (भी) जो उसी के हुक्म से दरिया में चलती हैं और वह आसमान को थामे रहता है कि ज़मीन पर (न) गिर पड़े, मगर उस के हुक्म से। बेशक ख़ुदा लोगों पर बहुत शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (६५) और वही तो है जिस ने तुम को ज़िंदगी दी, फिर तुम को मारता है, फिर तुम्हें ज़िंदा भी करेगा और इन्सान तो (बड़ा) ना-शुक्रा है। (६६) हम ने हर एक उम्मत के लिए एक शरीअत मुक़र्रर कर दी, जिस पर वे चलते हैं तो ये लोग तुम से इस मामले में झगड़ा न करें और तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की तरफ़ बुलाते रहो। बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो। (६७) और अगर ये तुम से झगड़ा करें, तो कह दो कि जो अमल तुम करते हो, ख़ुदा उन को ख़ूब जानता है। (६८) जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, ख़ुदा तुम में क़ियामत के दिन उन का फ़ैसला कर देगा। (६९) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, ख़ुदा उस को जानता है। यह (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ) है। बेशक यह सब ख़ुदा को आसान है। (७०) और (ये लोग) ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं, जिन की उस ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमायी और न उन के पास इस की कोई दलील है और ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं

★रु. ८/१५ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ्-रिफ़ु फ़ी वुजूहिल्लज़ी-न
क-फ़रुल्मुन्क-र ط यकादू-न यस्तू-न बिल्लज़ी-न यत्लू-न अ़लैहिम् आयातिना ط क़ुल्
अ-फ़-उनब्बिउकुम् बिशर्रिम्-मिन् ज़ालिकुम् ط अन्नारु ط व-अ-द-हल्लाहुल्-लज़ी - न
क-फ़रू ط व बिअ्सल् - मसीर ★(७२) या-अय्युहन्नासु ज़ुरि-ब म - सलुन्
फ़स्तमिऊ लहू ط इन्नल्लज़ी - न तद्ऊ-न
मिन् दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबंव - व
लविज-त-मऊ लहू ط व इंय्यस्लुब् - हुमुज़्-
ज़ुबाबु शैअल्ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु ط
ज़अुफ़त्तालिबु वलमत़्लूब (७३) मा
क़-द-रुल्ला-ह ह़क़्-क़ क़द्रिही ط इन्नल्ला-ह
ल-क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (७४) अल्लाहु यस्तफ़ी
मिनलमलाइकति रुसुलंव - व मिनन्नासि ط
इन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर ج (७५)
यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् ط
व इलल्लाहि तुर्जअुल् - उमूर (७६)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनुर्कऊ वस्जुदू वअ्-बुदू
रब्बकुम् वफ़्-अ़लुल्-ख़ै-र ल - अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ج □(७७) व जाहिदू
फ़िल्लाहि ह़क़्-क़ जिहादिही ط हुवज्तबाकुम् व मा ज-अ-ल अ़लैकुम् फ़िद्दीनि
मिन् ह़-रजिन् ط मिल-ल - त़ अबीकुम् इब्राही - म ط हु - व सम्माकुमुल् -
मुस्लिमी-न ۵ मिन् क़ब्लु व फ़ी हाज़ा लि-यकूनर्रसूलु शहीदन् अ़लैकुम् व
तकूनू शु-ह-दा-अ अ़-लन्नासि ج फ़-अक़ीमुस्सला-त़ व आतुज़्ज़का-त़ वअ्-तसिमू
बिल्लाहि ط हु-व मौलाकुम् ج फ़-निअ्-मल्-मौला व निअ्-मन्नसीर ★(७८)

اقترب للناس ١٧ — ٣٤٢ — الحج ٢٢

ءَايٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ
يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ ءَايٰتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ
مِّن ذٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُۥٓ ۚ إِنَّ
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا
لَهُۥ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ
الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ۝ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦٓ ۗ إِنَّ اللَّهَ
لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ارْكَعُوا
وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۩ ۝
وَجٰهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِۦ ۚ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ
عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِّلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرٰهِيمَ ۚ هُوَ
سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِن قَبْلُ وَفِي هٰذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ
شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا
الصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا الزَّكَوٰةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۖ
فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

★रु. ९/१६ आ ८ □सज्दः शाफ़अ़ी ★रु. १०/१७ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होगा। (७१) और जब उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो (उन की शक्ल बिगड़ जाती है और) तुम उन के चेहरों में साफ़ तौर पर ना-ख़ुशी (की निशानियां) देखते हो। क़रीब होते हैं कि जो लोग उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, उन पर हमला कर दें। कह दो कि तुम को इस से भी बुरी चीज़ बताऊं! वह (दोज़ख़ की) आग है, जिस का ख़ुदा ने काफ़िरों से वायदा किया है और वह बुरा ठिकाना है। (७२)★

लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे उस के लिए सब जमा हो जाएं और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाए तो उसे उस से छुड़ा नहीं सकते। तालिब और मत्लूब (यानी आबिद और माबूद दोनों) गये-गुज़रे हैं। (७३) इन लोगों ने ख़ुदा की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी, नहीं की, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ज़बरदस्त (और) ग़ालिब है। (७४) ख़ुदा फ़रिश्तों में से पैग़ाम पहुंचाने वाले चुन लेता है और इंसानों में से भी, बेशक ख़ुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (७५) जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है, वह इसे जानता है और सब लोगों का रुजूअ ख़ुदा ही की तरफ़ है। (७६) मोमिनो! रुजूअ करते और सज्दे करते और अपने परवरदिगार की इबादत करते रहो और नेक काम करो ताकि कामियाबी पाओ। (७७)□और ख़ुदा (की राह) में जिहाद करो, जैसा जिहाद करने का हक़ है। उस ने तुम को चुन लिया है और तुम पर दीन (की किसी बात) में तंगी नहीं की (और तुम्हारे लिए) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (पसंद किया) उसी ने पहले (यानी पहली किताबों में) तुम्हारा नाम मुसलमान रखा था और इस किताब में भी (वही नाम रखा है, तो जिहाद करो) ताकि पैग़म्बर तुम्हारे बारे में गवाह हों और तुम लोगों के मुक़ाबले में गवाह हो और नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और ख़ुदा (के दीन की रस्सी) को पकड़े रहो। वही तुम्हारा दोस्त है और ख़ूब मददगार है। (७८)★

★रु. ९/१६ आ ८ □सज्दः शाफ़ई ★रु. १०/१७ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अठारहवां पारः क़द अफ़्-ल-ह़ल् मुअ्मिनू-न

२३ सूरतुल्-मुअ्मिनू-न ७४

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ४५३८ अक्षर, १०७० शब्द, ११८ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

क़द् अफ़्-ल-ह़ल्-मुअ्मिनून (१) अ्ल्लज़ी-न हुम् फ़ी स़लातिहिम्
ख़ाशिअून (२) वल्लज़ी-न हुम् अ़निल्लग़्वि मुअ्-रिज़ून (३) वल्लज़ी-न हुम्
लिज़्ज़काति फ़ाअ़िलून (४) वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून (५)
इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु
मलूमीन (६) फ़-मनिब्तग़ा वर्रा-अ ज़ालि-क
फ़-उलाइ-क हुमुल्-आ़दून (७) वल्लज़ी-न
हुम् लि-अमानाति - हिम् व अ़ह्दिहिम्
राअून (८) वल्लज़ी-न हुम् अ़ला
स़-ल-वातिहिम् युहाफ़िज़ून (९) उलाइ-क
हुमुल् - वारिसून (१०) अ्ल्लज़ी-न
यरिसूनल् - फ़िर्दौ - स हुम् फ़ीहा
ख़ालिदून (११) व ल-क़द् ख़-लक़्नल्-इन्सा-न
मिन् सुलालतिम् - मिन् त़ीन (१२)
सुम्-म ज-अ़ल्नाहु नुत़-फ़-तन् फ़ी क़रारिम्-
मकीन (१३) सुम् - म ख़-लक़्-न न
नुत़-फ़-त अ़-ल-क़-तन् फ़-ख़-लक़्नल्-अ़-ल-क़-त
मुज़्-ग़-तन् फ़-ख़-लक़्नल्-मुज़्-ग़-त अ़िज़ामन्
फ़-कसौनल्-अ़िज़ा-म लह़् - मन् सुम् - म
अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आख़-र फ़-त-बा-र-कल्लाहु अह़्सनुल्-ख़ालिक़ीन (१४)
सुम्-म इन्नकुम् बअ्-द ज़ालि-क ल-मय्यितून (१५) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-
क़ियामति तुब्-असून (१६) व ल-क़द् ख़-लक़्ना फ़ौक़कुम् सब्-अ त़राइ-क़
व मा कुन्ना अ़निल्ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन (१७) व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ
मा-अम् - बि-क़ - दरिन् फ़-अस्कन्नाहु फ़िल्अर्ज़ि व इन्ना अ़ला ज़हाबिम्-
बिही लक़ादिरून (१८) फ़-अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम्मिन् नख़ीलिंव्-व
अअ्-नाबिन् लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसीरतुंव-व मिन्हा तअ्-कुलून (१९)

قد افلح ١٨ ٢٧٣ المؤمنون ٢٣

سورة المؤمنون مكية وهي مائة وثمان عشرة اية وست ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

قد افلح المؤمنون ﴿١﴾ الذين هم في صلاتهم خشعون ﴿٢﴾ و
الذين هم عن اللغو معرضون ﴿٣﴾ والذين هم للزكوة فعلون ﴿٤﴾
والذين هم لفروجهم حفظون ﴿٥﴾ الا على ازواجهم او ما ملكت
ايمانهم فانهم غير ملومين ﴿٦﴾ فمن ابتغى وراء ذلك فاولئك هم
العدون ﴿٧﴾ والذين هم لامنتهم وعهدهم رعون ﴿٨﴾ والذين هم
على صلوتهم يحافظون ﴿٩﴾ اولئك هم الورثون ﴿١٠﴾ الذين يرثون
الفردوس هم فيها خلدون ﴿١١﴾ ولقد خلقنا الانسان من سللة
من طين ﴿١٢﴾ ثم جعلنه نطفة في قرار مكين ﴿١٣﴾ ثم خلقنا النطفة
علقة فخلقنا العلقة مضغة فخلقنا المضغة عظما فكسونا
العظم لحما ثم انشانه خلقا اخر فتبرك الله احسن الخلقين ﴿١٤﴾
ثم انكم بعد ذلك لميتون ﴿١٥﴾ ثم انكم يوم القيمة تبعثون ﴿١٦﴾ و
لقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غفلين ﴿١٧﴾
وانزلنا من السماء ماء بقدر فاسكنه في الارض وانا على
ذهاب به لقدرون ﴿١٨﴾ فانشانا لكم به جنت من نخيل و
اعناب لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تاكلون ﴿١٩﴾ وشجرة تخرج

व. लाज़िम व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

२३ सूरः मुअ्मिनून ७४

सूरः मुअ्मिनून मक्की है और इस में एक सौ अठारह आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक ईमान वाले कामियाब हो गये, (१) जो नमाज़ में इज्ज़ व नियाज़ करते हैं, (२) और जो बेहूदा बातों से मुंह मोड़े रहते हैं, (३) और जो ज़कात अदा करते हैं, (४) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, (५) मगर अपनी बीवियों से या (बांदियों से), जो उन की मिल्कियत होती हैं कि (उन से सोहबत करने से) उन्हें मलामत नहीं, (६) और जो इन के सिवा औरों के तालिब हों, वे (ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई) हद से निकल जाने वाले हैं, (७) और जो अमानतों और इक़रारों का ध्यान करते हैं, (८) और जो नमाज़ों की पाबंदी करते हैं, (९) यही लोग मीरास हासिल करने वाले हैं। (१०) (यानी) जो बहिश्त की मीरास हासिल करेंगे (और) उस में हमेशा रहेंगे। (११) और हम ने इन्सान को मिट्टी के ख़ुलासे[1] से पैदा किया है। (१२) फिर उस को एक मज़बूत (और महफ़ूज़) जगह में नुत्फ़ा बना कर रखा। (१३) फिर नुत्फ़े का लोथड़ा बनाया, फिर लोथड़े की बोटी बनायी, फिर बोटी की हड्डियां बनायीं, फिर हड्डियों पर गोश्त (-पोस्त) चढ़ाया, फिर उस को नयी सूरत में बना दिया, तो ख़ुदा जो सब से बेहतर बनाने वाला, बड़ा बरकत वाला है। (१४) फिर इस के बाद तुम मर जाते हो। (१५) फिर क़ियामत के दिन उठा खड़े किये जाओगे। (१६) और हम ने तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) सात आसमान पैदा किए और हम ख़ल्क़त से ग़ाफ़िल नहीं हैं। (१७) और हम ही ने आसमान से एक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा, फिर उस को ज़मीन में ठहरा दिया और हम उस के नाबूद कर देने पर भी क़ादिर हैं। (१८) फिर हम ने उस से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ बनाए उन में तुम्हारे लिए बहुत-से मेवे पैदा होते हैं

१. 'ख़ुलासा' 'सुलाला' का तर्जुमा है। सुलाला उस को कहते हैं, जो किसी चीज़ के साफ़ और ख़ालिस करने से उस में से निकालते हैं और वही ख़ुलासा है और उसी को पल कहते हैं।

व. लाज़िम व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व श-ज-र-तन् तख़्रुजु मिन्-तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्गिल्लिल्-
आकिलीन (२०) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि ल-अिब्-र-तन् ᒃ नुस्क़ीकुम्
मिम्मा फ़ी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु क़सी-रतुं व्-व मिन्हा तअ्कुलून ᐟ
(२१) व अलैहा व अ-लल्फ़ुल्कि तुह्मलून ★ (२२) व ल-क़द् अर्सल्ना
नूहन् इला क़ौमिही फ़-क़ा-ल या
क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन्
ग़ैरुहू ᒃ अ-फ़ला तत्तक़ून (२३) फ़-क़ालल्-
म-ल-उल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा हाज़ा
इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् ᐟ युरीदु
अंय्य-त-फ़ज़्ज़-ल अलैकुम् ᒃ व लौ शा-अल्लाहु
ल-अन्ज़-ल मलाइक-तम् ᒼ मा
समिअ्-ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-
अव्वलीन ᒼ (२४) इन् हु-व इल्ला
रजुलुम्-बिही जिन्नतुन् फ़-त-रब्बसू बिही
हत्ता हीन (२५) क़ा-ल रब्बिन्सुर्-नी
बिमा कज़्ज़बून (२६) फ़-औहैना इलैहि
अनिस्-नअिल्-फ़ुल्-क बि-अअ्-युनिना व वह्यिना
फ़-इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु ᐟ
फ़स्लुक फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्-ल-क इल्ला मन् स-ब-क़
अलैहिल्-क़ौलु मिन्हुम् ᒼ व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू ᒼ इन्नहुम्
मुग़्रक़ून (२७) फ़-इज़स्तवै-त अन्-त व मम्-म-अ-क अ-लल्फ़ुल्कि फ़क़ुलिल्-
हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (२८) व क़ुर्रब्बि
अन्ज़िल्नी मुन्-ज़-लम्-मुबारकंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (२९) इन्-न फ़ी
ज़ालि-क लआयातिंव्-व इन् कुन्ना लमुब्तलीन (३०) सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-
बअ्-दिहिम् क़र्-नन् आख़रीन ᒼ (३१) फ़-अर्सल्ना फ़ीहिम् रसूलम्-मिन्हुम्
अनिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ᒃ अ-फ़ला तत्तक़ून ★ (३२)
व क़ालल्-मल-उ मिन् क़ौमिहिल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्-आख़िरति
व अत-रफ़्नाहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या ᐟ मा हाज़ा इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् ᐟ
यअ्कुलु मिम्मा तअ्कुलू-न मिन्हु व यश्रबु मिम्मा तश्रबून (३३)

قد افلح ١٨ ٢٧٤ المؤمنون ٢٣

مِن طُورِ سَيْنَاءَ تَنبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْآكِلِينَ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ
فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ۝ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً
مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ
فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝ فَأَوْحَيْنَا
إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ
فَاسْلُكْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ
الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ۝
فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي
نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ
خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝ ثُمَّ أَنشَأْنَا
مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا

★रु. १/१ आ २२ ★रु. २/२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और उनमें से तुम खाते हो। (१६) और वह पेड़ भी (हम ही ने पैदा किया) जो तूरे सैना में पैदा होता है (यानी जैतून का पेड़ कि) खाने के लिए रोग़न और सालन लिए हुए उगता है। (२०) और तुम्हारे लिए चारपायों में भी इब्रत (और निशानी) है कि जो उन के पेटों में है, उस से हम तुम्हें (दूध) पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उन में (और भी) बहुत से फ़ायदे हैं और कुछ को तुम खाते भी हो। (२१) और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार होते हो। (२२)★

और हम ने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो उन्हों ने उन से कहा कि ऐ क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं? (२३) तो उनकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बड़ाई हासिल करना चाहता है और अगर ख़ुदा चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता। हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो यह बात कभी सुनी नहीं। (२४) इस आदमी को जो दीवानगी (का मरज़) है, तो इसके बारे में कुछ मुद्दत इन्तिज़ार करो। (२५) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार। उन्हों ने मुझे झुठलाया है, तो मेरी मदद कर। (२६) पस हम ने उन की तरफ़ वह्य भेजी है कि हमारे सामने और हमारे हुक्म से एक कश्ती बनाओ। फिर जब हमारा हुक्म आ पहुंचे और तनूर (पानी से भर कर) जोश मारने लगे तो सब (क़िस्म के जानवरों) में से जोड़ा-जोड़ा (यानी नर और मादा) दो-दो कश्ती में बिठा लो और घर वालों को भी, सिवा उन के, जिन के बारे में उन में से (हलाक होने का) हुक्म पहले (लागू) हो चुका है और ज़ालिमों के बारे में हमसे कुछ न कहना। वे ज़रूर डुबो दिए जाएंगे। (२७) और जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाओ तो (ख़ुदा का शुक्र करना और) कहना कि तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है, जिस ने हम को ज़ालिम लोगों से निजात बख़्शी। (२८) और (यह भी) दुआ करना कि ऐ परवरदिगार! हम को मुबारक जगह उतारियो और तू सब से बेहतर उतारने वाला है। (२६) बेशक इस (क़िस्से) में निशानियां हैं और हमें तो आज़माइश करनी थी, (३०) फिर इन के बाद हम ने एक और जमाअत पैदा की। (३१) और उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा (जिस ने उन से कहा) कि ख़ुदा की इबादत करो (कि) उस के सिवा तुम्हारा कोई
35 माबूद नहीं। तो क्या तुम डरते नहीं? (३२)★

तो उन की क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे और आख़िरत के आने को झूठ समझते थे और दुनिया की ज़िंदगी में हम ने उन को आसूदगी दे रखी थी, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, जिस क़िस्म का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-इन् अ-त़अ्-तुम् ब-श-रम्-मिस-लकुम् ۙ इन्नकुम् इज़ल्लख़ासिरून ۙ (३४)
अ-यअिदुकुम् अन्नकुम् इज़ा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबंव्-व अिज़ामन् अन्नकुम्
मुख़्रजून صلے (३५) हैहा-त हैहा-त लिमा तूअ़दून صلے (३६) इन् हि-य
इल्ला ह़यातुनद्दुन्या नमूतु व नह़्या व मा नह़्नु बिमब्अूसीन صلے (३७)

هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا
مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا
تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ
بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ
نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ
اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۭ كُلَّمَا جَآءَ
اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ
فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۥۙ
بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾
فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ
اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَ
اعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً

इन् हु-व इल्ला रजुलु-नि-फ़्तरा
अ-लल्लाहि कज़िबंव-व मा नह़्नु लहू
बिमुअ्मिनीन (३८) क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी
बिमा कज़्ज़बून (३९) क़ा-ल अ़म्मा
क़लीलिल्-लयुस्बिहुन्-न नादिमीन ج (४०)
फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु बिल्ह़क़्क़ि
फ़ ज-अ़ल्नाहुम् ग़ुसा-अन् ج फ़बुअ्-दल्लिल्-
क़ौमिज़्ज़ालिमीन (४१) सुम-म अन्शअ्ना
मिम्-बअ्-दिहिम् क़ुरूनन् आख़रीन ط (४२)
मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व
मा यस्तअ्ख़िरून ط (४३) सुम्-म
अर्सल्ना रुसुलना तत्रा ط कुल्लमा
जा-अ उम्म-तर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़-अत्बअ्ना बअ्-ज़हुम् बअ्-ज़व्-व ज-अ़ल्नाहुम्
अह़ादी-स ج फ़-बुअ्-दल्लिक़ौमिल्ला युअ्मिनून (४४) सुम्-म अर्सल्ना
मूसा व अख़ाहु हारू-न ۙ बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन ۙ
(४५) इला फ़िर्औ-न व म-ल-इही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन्
आ़लीन ج (४६) फ़-क़ालू अनुअ्मिनु लि-ब-शरैनि मिस्लिना व क़ौमुहुमा
लना आ़बिदून ج (४७) फ़-कज़्ज़बू-हुमा फ़कानू मिनल्-मुह्लकीन (४८)
व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब ल-अ़ल्लहुम् यह-तदून (४९) व ज-अ़ल्-नब-न
मर्य-म व उम्महू आ-य-तंव्-व आवैनाहुमा इला रब्-वतिन् ज़ाति क़रारिंव्-व
मअ़ीन ★ (५०) या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्त़य्यिबाति वअ्-मलू
सालिह़न् ط इन्नी बिमा तअ्-मलू-न अ़लीम ط (५१) व इन्-न हाज़िही
उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-द-तंव्-व अ-न रब्बुकुम् फ़त्तक़ूनि (५२)

★रु. ३/३ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हो, उसी क़िस्म का यह भी पीता है। (३३) अगर तुमने अपने ही जैसे आदमी का कहा मान लिया, तो घाटे में पड़ गये। (३४) क्या यह तुम से यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डी (के सिवा कुछ न रहेगा) तो तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे? (३५) जिस बात का तुम से वायदा किया जाता है (बहुत) दूर और (बहुत) दूर है। (३६) ज़िंदगी तो यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है कि (इस में) हम मरते और जीते हैं और हम फिर नहीं उठाए जाएंगे। (३७) यह तो एक ऐसा आदमी है, जिस ने ख़ुदा पर झूठ गढ़ा है और हम इस को मानने वाले नहीं। (३८) (पैग़म्बर ने) कहा कि ऐ परवरदिगार! उन्हों ने मुझे झूठा समझा है, तू मेरी मदद कर। (३९) फ़रमाया कि ये थोड़े ही अर्से में शर्मिंदा हो कर रह जाएंगे। (४०) तो उन को बरहक़ (वायदे के मुताबिक़) ज़ोर की आवाज़ ने आ पकड़ा, तो हम ने उन को कूड़ा कर डाला, पस ज़ालिम लोगों पर लानत है। (४१) फिर उन के बाद हम ने और जमाअतें पैदा कीं। (४२) कोई जमाअत अपने वक़्त से न आगे जा सकती है, न पीछे रह सकती है। (४३) फिर हम एक के बाद एक अपने पैग़म्बर भेजते रहे। जब किसी उम्मत के पास उस का पैग़म्बर आता था, वे उसे झुठला देते थे, तो हम भी कुछ को कुछ के पीछे (हलाक करते और उन पर अज़ाब) लाते रहे और उन के अफ़साने बनाते रहे। पस जो लोग ईमान नहीं लाते, उन पर लानत। (४४) फिर हम ने मूसा और उन के भाई हारून को अपनी निशानियां और ज़ाहिरी दलील दे कर भेजा। (४५) (यानी) फ़िरऔन और उस की जमाअत की तरफ़, तो उन्हों ने घमंड किया और वे सरकश लोग थे। (४६) कहने लगे कि क्या हम उन अपने दो आदमियों पर ईमान ले आएं और उन की क़ौम के लोग हमारे ख़िदमतगार हैं। (४७) तो उन लोगों ने उन को झुठलाया, सो (आख़िर) हलाक कर दिए गए। (४८) और हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग हिदायत पाएं। (४९) और हम ने मरयम के बेटे (ईसा) और उन की मां को (अपनी) निशानी बनाया था और उन को एक ऊंची जगह पर, जो रहने के लायक़ थी और जहां (निथरा हुआ) पानी जारी था पनाह दी थी। (५०)★

ऐ पैग़म्बरो! पाकीज़ा चीज़ें खाओ और नेक अमल करो। जो अमल तुम करते हो, मैं उन को जानता हूं। (५१) और यह तुम्हारी जमाअत (हक़ीक़त में) एक ही जमाअत है और मैं तुम्हारा

★रु. ३/३ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-त-क़त्तअू अम् - रहुम् बैनहुम् ज़ुबुरन् ط कुल्लु हि़ज़्बिम् - बिमा लदैहिम्
फ़रिहू़न (५३) फ़ज़रहुम् फ़ी ग़म्-रतिहिम् ह़त्ता ही़न (५४) अ-यह़्सबू-न
अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम्मालिंव्-व बनीन لا (५५) नुसारिअु लहुम्
फ़िल्-ख़ैराति ط बल् ला यश्अुरून (५६) इन्नल्लज़ी-न हुम् मिन् ख़श्यति

وَاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ
حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٤﴾
اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي
الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ
لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى
رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَ
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾
بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا
عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾
لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ ۫ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾
اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ
لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ
جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ
لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ

रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून لا (५७) वल्लज़ी-न
हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून لا (५८)
वल्लज़ी - न हुम् बिरब्बिहिम् ला
युश्रिकून ط (५९) वल्लज़ी - न युअ्तू-न
मा आतव्-व क़ुलूबुहुम् वजि-लतुन् अन्नहुम्
इला रब्बिहिम् राजिअून لا (६०)
उलाइ-क युसारिअू-न फ़िल्-ख़ैराति व हुम्
लहा साबिक़ून (६१) व ला नुकल्लिफ़ु
नफ़्सन् इल्ला वुस - अ़हा ج व लदैना
किताबुंय्यन्तिक़ु बिल्ह़क़्क़ि व हुम् ला
युज़्लमून (६२) बल् क़ुलूबुहुम् फ़ी
ग़म्-रतिम्-मिन् हाज़ा व लहुम् अअ्-मालुम्-
मिन् दूनि ज़ालि-क हुम् लहा आमिलून (६३) ह़त्ता इज़ा अ-ख़ज़्ना
मुत्-र-फ़ीहिम् बिल्अ़ज़ाबि इज़ा हुम् यज्-अरून ط (६४) ला तज्-अरुल्-
यौ-म इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून (६५) क़द् कानत् आयाती तुत्ला
अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् अ़ला अअ्-क़ाबिकुम् तन्किसून (६६) मुस्तक्बिरी-न
बिही सामिरन् तह्जुरून (६७) अ-फ़ लम् यद्दब्बरुल्-क़ौ-ल अम् जा-अहुम्
मा लम् यअ्ति आबा-अ-हुमुल्-अव्वलीन ج (६८) अम् लम् यअ्-रिफ़ू रसूलहुम्
फ़हुम् लहू मुन्किरून ج (६९) अम् यक़ूलू-न बिही जिन्नतुन् ط बल् जा-अहुम्
बिल्ह़क़्क़ि व अक्सरुहुम् लिल्ह़क़्क़ि कारिहून (७०) व लवित्त-ब-अ़ल्-ह़क़्क़ु
अह्वा-अहुम् ल-फ़-स-दतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन-न ط बल् आतैनाहुम्
बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अ़न् ज़िक्रिहिम् मुअ्-रिज़ू-न ط (७१) अम् तस्-अलुहुम्
ख़र्जन् फ़-ख़राजु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व हु - व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (७२)

परवरदिगार हूं, तो मुझ से डरो। (५२) फिर उन्हों ने आपस में अपने काम को मुतफ़र्रिक़ कर के जुदा-जुदा कर दिया। जो चीज़ जिस फ़िर्क़े के पास है, वह इस से ख़ुश हो रहा है। (५३) तो उन को एक मुद्दत तक उन की ग़फ़लत ही में रहने दो। (५४) क्या ये लोग यह ख़्याल करते हैं कि हम जो दुनिया में उन को माल और बेटों से मदद देते हैं, (५५) (तो इस से) उन की भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं,) बल्कि ये समझते ही नहीं। (५६) जो लोग अपने परवरदिगार के ख़ौफ़ से डरते हैं, (५७) और जो अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान रखते हैं, (५८) और जो अपने परवरदिगार के साथ शरीक नहीं करते, (५६) और जो दे सकते हैं, देते हैं और उन के दिल इस बात से डरते हैं कि उन को अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, (६०) यही लोग नेकियों में जल्दी करते और यही उन के लिए आगे निकल जाते हैं। (६१) और हम किसी शख़्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देते और हमारे पास किताब है, जो सच-सच कह देती है और उन (लोगों) पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (६२) मगर उन के दिल इन (बातों) की तरफ़ से ग़फ़लत में (पड़े हुए) हैं, और इन के सिवा और आमाल भी हैं जो ये करते रहते हैं। (६३) यहां तक कि जब हम ने उन में से खाते-पीते लोगों को पकड़ लिया, तो वे उस वक़्त तिलमिला उठेंगे। (६४) आज मत तिलमिलाओ, तुम को हम से कुछ मदद नहीं मिलेगी। (६५) मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती थीं और तुम उल्टे पांव फिर-फिर जाते थे। (६६) उस से सरकशी करते, कहानियों में लगे रहते और बेहूदा बकवास करते थे। (६७) क्या उन्हों ने इस कलाम में ग़ौर नहीं किया, या उन के पास कोई ऐसी चीज़ आयी है जो उन के अगले बाप-दादा के पास नहीं आयी थी। (६८) या ये अपने पैग़म्बर को जानते-पहचानते नहीं, इस वजह से उनको नहीं मानते? (६९) क्या ये कहते हैं कि इसे सौदा है (नहीं,) बल्कि वह उन के पास हक़ को ले कर आए हैं और उन में अक्सर हक़ को ना-पसन्द करते हैं। (७०) और अगर (ख़ुदा-ए-बर-) हक़ उन की ख़्वाहिशों पर चले तो आसमान और ज़मीन, और जो उन में हैं, सब टूट-फूट जाएं, बल्कि हम ने उस के पास उन की नसीहत (की किताब) पहुंचा दी है और वे अपनी (किताब) नसीहत से मुंह फेर रहे हैं। (७१) क्या तुम उन से (तब्लीग़ के बदले में) कुछ माल मांगते हो, तो तुम्हारे परवरदिगार का माल बहुत अच्छा है और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (७२) और तुम तो उन को सीधे रास्ते की

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इन्न-क ल-तद्अूहुम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ● (७३) व इन्नल्लज़ी-न
ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति अनिस्सिराति लनाकिबून (७४) व लौ
रहिम्नाहुम् व क-शफ़्ना मा बिहिम् मिन् ज़ुर्रिल्-ल-लज्जू फ़ी तुग़्यानिहिम्
यअ्-महून (७५) व ल-क़द् अ-ख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि फ़-मस्तकानू लिरब्बिहिम्
व मा य-त-ज़र्रअून (७६) ह़त्ता इज़ा फ़-तह़्ना
अ़लैहिम् बाबन् ज़ा अ़ज़ाबिन् शदीदिन्
इज़ाहुम् फ़ीहि मुब्लिसून ★ (७७) व
हुवल्लज़ी अन्-श-अ लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र
वल्-अफ़्इ - द - त़ ᵇ क़लीलम्मा तश्कुरून
(७८) व हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि
व इलैहि तुह़्-शरून (७९) व हुवल्लज़ी
युह़्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्-लैलि
वन्नहारि ᵇ अ-फ़ला तअ्-क़िलून (८०) बल्
क़ालू मिस्-ल मा क़ालल्-अव्वलून (८१)
क़ालू अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव-व
अ़िज़ामन् अ इन्ना ल-मब्अूसून (८२)
ल-क़द् वुअिद्ना नह़्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला
असात़ीरुल्-अव्वलीन (८३) क़ुल् लिमनिल् - अर्ज़ु व मन् फ़ीहा इन्
कुन्तुम् तअ्-लमून (८४) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि ᵇ क़ुल् अ-फ़ला त-ज़क्करून (८५)
क़ुल् मर्रब्बुस्-समावातिस्-सब्अि व रब्बुल्-अ़र्शिल्-अ़ज़ीम (८६) स-यक़ूलू-न
लिल्लाहि ᵇ क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (८७) क़ुल् मम् - बियदिही म-लकूतु
कुल्लि शैइंव्-व हु-व युजीरु व ला युजारु अ़लैहि इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (८८)
स-यक़ूलू-न लिल्लाहि ᵇ क़ुल् फ़-अन्ना तुस्-ह़रून (८९) बल् अतैनाहुम्
बिल्हक़्क़ि व इन्नहुम् ल-काज़िबून (९०) मत्त-ख़-ज़ल्लाहु मिंव्व-लदिंव्-व मा
का-न म-अ़हू मिन् इलाहिन् इज़ल्-ल-ज़-ह-ब कुल्लु इलाहिम्-बिमा ख़-ल-क़ व
ल-अ़ला बअ्-ज़ुहुम् अ़ला बअ्-ज़िन् ᵇ सुब्ह़ानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून ᵇ (९१)

خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝٧٢ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٧٣
وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ۝٧٤ وَلَوْ
رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٧٥ وَ
لَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٧٦
حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٧
وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨
وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٧٩ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠ بَلْ قَالُوْا
مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١ قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝٨٢ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ
اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٣ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝٨٤ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٨٥ قُلْ مَنْ رَّبُّ
السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝٨٦ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٨٧ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨٨ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ فَاَنّٰى
تُسْحَرُوْنَ ۝٨٩ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٩٠ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ
مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ

● रुब्अ १/४ ★रु. ४/४ आ २७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तरफ़ बुलाते हो●(७३) और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे रास्ते से अलग हो रहे हैं। (७४) और अगर हम उन पर रहम करें और जो तक्लीफ़ें उन को पहुंच रही हैं, वे दूर करें, तो अपनी सरकशी पर अड़े रहें (और) भटकते (फिरें)। (७५) और हम ने उन को अज़ाब में भी पकड़ा, तो उन्हों ने ख़ुदा के आगे आजिज़ी न की और वे आजिज़ी करते ही नहीं, (७६) यहां तक कि जब हम ने उन पर तेज़ अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया, तो उस वक़्त वहां ना-उम्मीद हो गये। (७७)★

और वही तो है जिस ने तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाए (लेकिन) तुम कम शुक्र-गुज़ारी करते हो। (७८) और वही तो है जिस ने तुम को ज़मीन में पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (७९) और वही है जो ज़िंदगी बख़्शता है और मौत देता है और रात और दिन का बदलते रहना उसी का तसर्रुफ़ है, क्या तुम समझते नहीं? (८०) बात यह है कि जो बात अगले (काफ़िर) कहते थे, उसी तरह की (बात) ये कहते हैं। (८१) कहते हैं कि जब हम मर जाएंगे और मिट्टी ही जाएंगे और (सड़ी-गली) हड्डियों (के सिवा कुछ न रहेगा) तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (८२) यह वायदा हम से और हम से पहले हमारे बाप-दादा से भी होता चला आया है, (अजी) यह तो सिर्फ़ अगले लोगों की कहानियां हैं। (८३) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है (सब) किस का माल है? (८४) झट बोल उठेंगे कि ख़ुदा का। कहो कि फिर तुम सोचते क्यों नहीं? (८५) (उन से) पूछो कि सात आसमानों का कौन मालिक है और बड़े अर्श का (कौन) मालिक (है)? (८६) बे-साख़्ता कह देंगे कि (ये चीज़ें) ख़ुदा ही की हैं। कहो कि फिर डरते क्यों नहीं? (८७) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) वह कौन है जिस के हाथ में हर चीज़ की बादशाही है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता। (८८) फ़ौरन कह देंगे कि (ऐसी बादशाही तो) ख़ुदा ही की है। कहो कि फिर तुम पर जादू कहां से पड़ जाता है? (८९) बात यह है कि हमने उनके पास हक़ पहुंचा दिया है और ये (जो बुतपरस्ती किए जाते हैं) बेशक झूठे हैं। (९०) ख़ुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उस के साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी-अपनी मख़्लूक़ात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (ख़ुदा के बारे में) बयान करतें हैं, ख़ुदा उस से पाक है। (९१) वह पोशीदा और

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आलिमिल्-ग़ैबि वश्शहादति फ़-तआला अम्मा युश्रिकून ★ (९२) क़ुर्रब्बि
इम्मा तुरियन्नी मा यूअदून ॥ (९३) रब्बि फ़ला तज - अल्नी फ़िल्-
क़ौमिज़्ज़ालिमीन (९४) व इन्ना अला अन् नुरि-य-क मा नअिदुहुम् ल-क़ादिरून
(९५) इद्-फ़अ् बिल्लती हि-य अह़्सनुस्-सय्यि-अ-त़ ط नह़्नु अअ्-लमु बिमा
यसिफ़ून (९६) व क़ुर्रब्बि अऊज़ु बि-क
मिन् ह-म-ज़ातिश् - शयातीन ॥ (९७)
व अऊज़ु बि-क रब्बि अंय्यह़्ज़ुरून (९८)
ह़त्ता इज़ा जा-अ अ-ह़-दहुमुल्-मौतु क़ा-ल
रब्बिर्जिऊन ॥ (९९) ल-अल्ली अअ्-मलु
सालिह़न् फ़ीमा त-रक्तु कल्ला ط इन्नहा
कलिमतुन् हु - व क़ाइलुहा ط व
मिंव्वरा - इहिम् बर्ज़ख़ुन् इला यौमि
युब्-असून (१००) फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि
फ़ला अन्सा-ब बैनहुम् यौमइज़िंव्-व ला
य-त-सा-अलून (१०१) फ़-मन् स़क़ुलत् मवा-
ज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिह़ून (१०२)
व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ - कल्लज़ी - न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम्
फ़ी जहन्न-म ख़ालिदून ج (१०३) तल्फ़ह़ु वुजूह-हुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा
कालिहून (१०४) अ-लम् तकुन् आयाती तुत्ला अलैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा
तुकज़्ज़िबून (१०५) क़ालू रब्बना ग़-ल-बत् अलैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन्
ज़ाल्लीन (१०६) रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़-इन् अुद्ना फ़इन्ना
ज़ालिमून (१०७) क़ालख़्सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून (१०८) इन्नहू
का-न फ़रीक़ुम्मिन् अिबादी यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्-लना वर्हम्ना व
अन-त ख़ैरुर् - राह़िमीन ج (१०९) फ़त्त - ख़ज़्तुमू - हुम् सिख़्रिय्यन्
ह़त्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्-ह़कून (११०) इन्नी
जज़ैतु - हुमुल् - यौ-म बिमा स़-बरू ॥ अन्नहुम् हुमुल् - फ़ाइज़ून (१११)

قد افلح ١٨ — ٤٧٨ — المؤمنون ٢٣

وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾ عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا
يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِى الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ
نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ
نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾
وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ
هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِى
الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَمَنْ
ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ
وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ
بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾
رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا
تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا
حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ

منزل ٤

★रु॰ ५/५ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज़ाहिर को जानता है और (मुश्रिक) जो उस के साथ शरीक करते हैं, (उस की शान) उस से बुलंद है। (९२)★

(ऐ मुहम्मद !) कहो कि ऐ परवरदिगार ! जिस अज़ाब का इन (कुफ़्फ़ार) से वायदा हुआ है, अगर तू मेरी ज़िंदगी में उन पर नाज़िल कर के मुझे भी दिखाये, (९३) तो ऐ परवरदिगार ! मुझे (उस से महफ़ूज़ रखियो और) इन ज़ालिमों में शामिल न कीजियो। (९४) और जो वायदा हम उन से कर रहे हैं, हम तुम को दिखा कर उन पर नाज़िल करने की क़ुदरत रखते हैं। (९५) और बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहो जो बहुत अच्छी हो और ये जो कुछ बयान करते हैं, हमें ख़ूब मालूम है। (९६) और कहो कि ऐ परवरदिगार ! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूं। (९७) और ऐ परवरदिगार ! इस से भी तेरी पनाह मांगता हूं कि वह मेरे पास आ मौजूद हों। (९८) (ये लोग इसी तरह ग़फ़लत में रहेंगे) यहां तक कि जब उन में से किसी के पास मौत आ जाएगी तो कहेगा कि ऐ परवरदिगार ! मुझे फिर दुनिया में वापस भेज दे, (९९) ताकि मैं उसमें जिसे छोड़ आया हूं, नेक काम किया करूं, हरगिज़ नहीं यह एक (ऐसी) बात है कि वह उसे ज़ुबान से कह रहा होगा (और उस के साथ अमल नहीं होगा) और उस के पीछे बरज़ख़ है, (जहां वे) उस दिन तक कि (दोबारा) उठाए जाएंगे, (रहेंगे)। (१००) फिर जब सूर फूंका जाएगा, तो न तो उन में रिश्तेदारियां रहेंगी और न एक-दूसरे को पूछेंगे। (१०१) तो जिन के (अमलों के) बोझ

★रु. ५/ ५ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अ़-द-द सिनीन (११२) क़ालू लबिस्ना यौमन्
औ बअ्-ज़ यौमिन् फ़स-अलिल्-आ़द्दीन (११३) क़ा-ल इल्लबिस्तुम् इल्ला
क़लीलल्लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ्-लमून (११४) अ-फ़-ह़सिब्तुम् अन्नमा ख़-लक़्ना-
कुम् अ़-ब-सव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जअ़ून (११५) फ़-त-आ़लल्-लाहुल्-
मलिकुल् - ह़क़्क़ु ८ ला इला - ह इल्ला
हु-व ८ रब्बुल् - अ़र्शिल् - करीम (११६)
व मंय्यद्अ़ु म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र ॥ ला
बुर्हा - न लहू बिही ॥ फ़-इन्नमा ह़िसाबुहू
अ़िन् - द रब्बिही ७ इन्नहू ला युफ़्लिहुल्-
काफ़िरून (११७) व क़ुर्-रब्बिग़्फ़िर् वर्ह़म्
व अन् - त ख़ैरुर् - राह़िमीन ★ (११८)

२४ सूरतुन्-नूरि १०२

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ६४१ अक्षर, १४२ शब्द, ६४ आयतें और ९ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

सूरतुन् अन्ज़ल्नाहा व फ़-रज़्नाहा व
अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम् - बय्यिनातिल्-
ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (१) अज़्ज़ानियतु वज़्ज़ानी फ़ज्लिदू कुल्-ल वाहिदिम्-
मिन्हुमा मि-अ-त जल्दतिंव्-व ला तअ्ख़ुज़्-कुम् बिहिमा रअ्-फ़तुन् फ़ी
दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल् - यौमिल् - आख़िरि ८
वल्-यश-हद् अ़ज़ाबहुमा ताइ-फ़तुम्-मिनल्-मुअ्मिनीन (२) अज़्ज़ानी ला
यन्किहु इल्ला ज़ानि-य-तन् औ मुश्रिक-तंव्-व वज़्ज़ानियतु ला यन्किहुहा
इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् ८ व ह़ुर्रि-म ज़ालि-क अ़-लल्-मुअ्मिनीन (३)
वल्लज़ी-न यर्मूनल् - मुह़् - सनाति सुम्-म लम् यअ्तू बि - अर्-ब - अ़ति
शु - हदा - अ फ़ज्लिदूहुम् समानी - न जल्दतंव् - व ला तक़्बलू लहुम्
शहाद - तन् अ - ब - दन् ८ व उलाइ - क हुमुल् - फ़ासिक़ून ॥ (४)

النور ٢٤ ٣٤٩ قد افلح ١٨

بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ
سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ
لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ
عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا
بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾
وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾ ع ٦

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِىَ اَرْبَعٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ﴿١﴾ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِىْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ
جَلْدَةٍ ۠ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾
اَلزَّانِىْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۡ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ
مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ
ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا
لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

★रु० ६/६ आ २६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भारी होंगे, वे कामियाबी पाने वाले हैं। (१०२) और जिन के बोझ हल्के होंगे, वे वह लोग हैं, जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (१०३) आग उन के मुंहों को झुलसा देगी और वे उस में त्यौरी चढ़ाये हुए होंगे। (१०४) क्या तुम को मेरी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती थीं, (नहीं,) तुम उन को (सुनते थे और) झूठलाते थे। (१०५) ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर हमारी कम-बख़्ती ग़ालिब हो गयी और हम रास्ते से भटक गये। (१०६) ऐ परवरदिगार! हम को इस में से निकाल दे। अगर हम फिर (ऐसे काम) करें तो ज़ालिम होंगे। (१०७) (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि इसी में ज़िल्लत के साथ पड़े रहो और मुझ से बात न करो। (१०८) मेरे बन्दों में एक गिरोह था, जो दुआ किया करता था कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान लाए, तो तू हम को बख़्श दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है। (१०९) तो तुम उनसे मज़ाक़ करते रहे, यहां तक कि उन के पीछे मेरी याद भी भूल गये और तुम (हमेशा) उनसे हंसी किया करते थे। (११०) आज मैं ने उनको उनके सब्र का बदला दिया कि वे कामियाब हो गये। (१११) (ख़ुदा) पूछेगा कि तुम ज़मीन में कितने वर्ष रहे? (११२) वे कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहे थे, गिनती करने वालों से पूछ लीजिए। (११३) (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि (वहां) तुम (बहुत ही) कम रहे। काश! तुम जानते होते। (११४) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हमने तुम को बे-फ़ायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आओगे? (११५) तो ख़ुदा जो सच्चा बादशाह है (उस की शान इस से) ऊंची है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। (वही) बुज़ुर्ग अर्श का मालिक है। (११६) और जो आदमी ख़ुदा के साथ और माबूद को पुकारता है, जिस की उस के पास कुछ सनद नहीं, तो उसका हिसाब ख़ुदा ही के यहां होगा। कुछ शक नहीं कि काफ़िर कामियाबी नहीं पाएंगे। (११७) और ख़ुदा से दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे बख़्श दे और (मुझ पर) रहम कर और तू सब से बेहतर रहम करने वाला है। (११८)★

२४ सूरः नूर १०२

सूरः नूर मदनी है और इस में चौंसठ आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यह (एक) सूरः है जिस को हमने नाज़िल किया और उस (के हुक्मों) को फ़र्ज़ कर दिया और उसमें खुले मतलब वाली आयतें नाज़िल कीं, ताकि तुम याद रखो। (१) बद-कारी करने वाली औरत और बद-कारी करने वाला मर्द (जब उन की बद-कारी साबित हो जाए तो) दोनों में से हर एक को सौ दुर्रे मारो और अगर तुम ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो ख़ुदा की शरअ (के हुक्म) में तुम्हें उन पर हर गिज़ तरस न आए और चाहिए कि उन की सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअत भी मौजूद हो। (२) बद-कार मर्द तो बद-कार या मुश्रिक औरत के सिवा निकाह नहीं करता और बद-कार औरत को भी बद-कार या मुश्रिक मर्द के सिवा और कोई निकाह में नहीं लाता।[1] और यह (यानी बद-कार औरत से निकाह करना) मोमिनों पर हराम है। (३) और जो लोग परहेज़गार औरतों को बद-कारी का ऐब लगाएं और उस पर चार गवाह न लाएं तो उन को अस्सी दुर्रे मारो और कभी उनकी गवाही क़ुबूल न करो और यही बदकिरदार

१. यानी वह भी बद-कार या मुश्रिक मर्द के सिवा किसी से मियां-बीवी का ताल्लुक़ पैदा नहीं करती।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ्-दि ज़ालि-क व अस्लहू ج फ़इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-
रह़ीम (५) वल्लज़ी-न यर्मू-न अज़्वाजहुम् व लम् यकुल्लहुम् शुहदा़उ
इल्ला अन्फ़ुसुहुम् फ़-शहादतु अ - ह़दिहिम् अर्बअ़ु शहादातिम् - बिल्लाहि ۙ
इन्नहू लमिनस्-सा़दिक़ीन (६) वल्-ख़ामिसतु अन्-न लअ्-न-तल्लाहि अ़लैहि
इन् का-न मिनल्-काज़िबीन (७) व
यद्रऊ अ़न्हल्-अ़ज़ा-ब अन् तश्ह-द अर्ब-अ
शहादातिम् - बिल्लाहि ۙ इन्नहू लमिनल् -
काज़िबीन ۙ (८) वल्-ख़ामि-स-त़ अन्-न
ग़-ज़-बल्लाहि अ़लैहा इन् का-न मिनस्-
सा़दिक़ीन (९) व लौला फ़ज़्लुल्लाहि
अ़लैकुम् व रह़्मतुहू व अन्नल्ला-ह तव्वाबुन्
ह़कीम ★ (१०) इन्नल्लज़ी - न जाऊ
बिल् - इफ़्कि अ़ुस्बतुम् - मिन्कुम् ط ला
तह़्सबूहु शर्रल्लकुम् ط बल् हु-व ख़ैरुल्लकुम् ط
लिकुल्लिम्रिइम्-मिन्हुम् मक-त-स-ब मिनल्-
इस्मि ج वल्लज़ी त-वल्ला किब्रहू मिन्हुम्
लहू अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (११) लौला इज़् समिअ्-तुमूहु ज़न्नल्-मुअ्मिनू-न
वल् - मुअ्मिनातु बिअन्फ़ुसिहिम् ख़ैरंव ۙ- व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम् -
मुबीन (१२) लौला जाऊ अ़लैहि बि-अर-ब - अ़ति शुहदा-अ ج फ़इज़्
लम् यअ्तू बिश्शु-ह-दाइ फ़उलाइ-क अ़िन्दल्लाहि हुमुल्काज़िबून (१३) व
लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ल-मस्सकुम्
फ़ी मा अ - फ़ज़्तुम् फ़ीहि अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम صلے (१४) इज़्
त-लक़्क़ौनहू बिअल्सिनतिकुम् व तक़ूलू-न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै-स लकुम्
बिही अ़िल्मुंव-व तह़्सबूनहू हय्यिनंव ۙ-व हु-व अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीम (१५)
व लौला इज़् समिअ् - तुमूहु क़ुल्तुम् मा यकूनु लना अन्
न-त-कल्ल-म बिहाज़ा صلے सुब्ह़ा-न - क हाज़ा बुह्तानुन् अ़ज़ीम (१६)

قد افلح ١٨ ٢٨٠ النور ٢٤

مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ
اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ
اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ
اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑦ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ
تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۙ ⑧ وَالْخَامِسَةَ
اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑨ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ⑩ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ ع
بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ
لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ
مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑪ لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ⑫ لَوْلَا
جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ
عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ⑬ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑭ اِذْ
تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ
هَيِّنًا ۙ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ⑮ وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ
لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ⑯ يَعِظُكُمُ

★रु. १/७ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (४) हां, जो इस के बाद तौबा कर लें और (अपनी हालत) संवार लें तो ख़ुदा (भी) बख़्शने वाला मेहरबान है।(५) और जो लोग अपनी औरतों पर बदकारी की तोहमत लगाएं और ख़ुद उन के सिवा उनके गवाह न हों तो हर एक की गवाही यह है कि पहले तो चार बार ख़ुदा की क़सम खाएं कि बेशक सच्चा है। (६) और पांचवीं (बार) यह (कहे) कि अगर वह झूठा हो तो उस पर ख़ुदा की लानत। (७) और औरत से सज़ा को यह बात टाल सकती है कि वह पहले चार बार ख़ुदा की क़सम खाए कि बेशक यह झूठा है। (८) और पांचवीं (बार) यों (कहे) कि अगर यह सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब (नाज़िल) हो। (९) और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती (तो बहुत-सी) ख़राबियां पैदा हो जातीं (मगर वह आम करम वाला है) और यह कि ख़ुदा तौबा क़ुबूल करने वाला (और) हकीम है। (१०)★

जिन लोगों ने बोहतान बांधा है, तुम ही में से वह एक जमाअत है, उस को अपने हक़ में बुरा न समझना, बल्कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है। उन में से जिस शख़्स ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उसके लिए उतना वबाल है और जिसने उनमें से उस बोहतान का बड़ा बोझ उठाया है, उस को बड़ा अज़ाब होगा। (११) जब तुम ने वह बात सुनी थी, तो मोमिन मर्दों और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमांन न किया और (क्यों न) कहा कि यह खुला तूफ़ान है। (१२) ये (झूठ गढ़ने वाले) अपनी बात (की तस्दीक़) के (लिए) चार गवाह क्यों न लाए, तो जब ये गवाह नहीं ला सके, तो ख़ुदा के नज़दीक यही झूठे हैं। (१३) और अगर दुनिया और आख़िरत में तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो जिस काम में तुम लगे हुए थे, उसकी वजह से तुम पर बड़ा (सख़्त) अज़ाब नाज़िल होता। (१४) जब तुम अपनी ज़ुबानों से इसका एक दूसरे से ज़िक्र करते थे और अपने मुंह से ऐसी बात कहते थे, जिसका तुम को कुछ भी इल्म न था और तुम उसे एक हल्की बात समझते थे और ख़ुदा के नज़दीक वह बड़ी (भारी) बात थी। (१५) और जब तुम ने उसे सुना था, तो क्यों न कह दिया कि हमें मुनासिब नहीं कि ऐसी बात ज़ुबान पर लाएं। (परवरदिगार!) तू पाक है, यह तो (बहुत) बड़ा बोहतान है। (१६)

★रु. १/७ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यअ़िज़ुकुमुल्लाहु अन् तअ़ूदू लिमिस्लिही अ-ब-दन् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ج (१७)
व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (१८)
इन्नल्लज़ी-न युह़िब्बू-न अन् तशीअ़ल्-फ़ाह़िशतु फ़िल्लज़ी-न आमनू लहुम् अ़ज़ाबुन्
अलीमुन् لا फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ط वल्लाहु यअ़्-लमु व अन्तुम् ला तअ़्-लमून (१९)

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू व अन्नल्ला-ह रऊफ़ुर्-रह़ीम ★ ● (२०)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैत़ानि ط व मंय्यत्तबिअ़् ख़ुतुवातिश्-शैत़ानि फ़इन्नहू यअ्मुरु बिल्फ़ह़्शा-इ वल्मुन्करि ط व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ-ह़दिन् अ-ब-दंव् لا व लाकिन्नल्ला-ह युज़क्की मंय्यशाउ ط वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम (२१)
व ला यअ्तलि उलुल्फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स-अ़ति अंय्युअ्तू उलिल्क़ुर्बा वल्मसाकी-न वल्मुहाजिरी-न फ़ी सबीलिल्लाहि صلے वल्-यअ़्-फ़ू वल्यस्फ़ह़ू ط अला तुह़िब्बू-न अंय्यग़्फ़िरल्लाहु लकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम (२२)

التزم

قد افلح ١٨ — ٢٨١ — النور ٢٤

اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ
فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ
يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ
السَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِى الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِى
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ
وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ
الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ
وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ
اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا

منزل ٤

इन्नल्लज़ी-न यर्मूनल्-मुह्-सनातिल्-ग़ाफ़िलातिल्-मुअ्मिनाति लुअ़िनू
फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ص व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम لا (२३)
यौ-म तश्हदु अ़लैहिम् अल्सि-न-तुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा
कानू यअ़्-मलून (२४) यौमइज़िंय्युवफ़्फ़ीहिमुल्-लाहु दीनहुमुल्-ह़क़्-क़ व
यअ़्-लमू-न अन्नल्ला-ह हुवल्-ह़क़्क़ुल्-मुबीन (२५) अल्ख़बीसातु लिल्ख़बीसी-न
वल्-ख़बीसू-न लिल्ख़बीसाति ج वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबी-न वत्तय्यिबू-न
लित्तय्यिबाति ج उलाइ-क मुबर्रऊ-न, मिम्मा यक़ूलू-न ط लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व
रिज़्क़ुन् करीम ★ (२६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू
बुयूतन् ग़ै-र बुयूतिकुम् ह़त्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अ़ला
अह़्लिहा ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् ल-अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (२७)

★रु. २/८ आ १० ● नि. १/२ ★रु. ३/९ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा तुम्हें नसीहत करता है कि अगर मोमिन हो तो फिर कभी ऐसा (काम) न करना। (१७) और ख़ुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१८) जो लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि मोमिनों में बे-हयाई (यानी बद-कारी की तोहमत की खबर) फैले, उन को दुनिया और आखिरत में दुख देने वाला अज़ाब होगा और ख़ुदा जानता है और तुम नहीं जानते। (१९) और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती, (तो क्या कुछ न होता, मगर वह करीम है) और यह कि ख़ुदा निहायत मेहरबान और रहीम है।' (२०) ★ ●

मोमिनो ! शैतान के क़दमों पर न चलना और जा शख़्स शैतान के क़दमों पर चलेगा, तो शैतान तो बे-हयाई (की बातें) और बुरे काम ही बताएगा और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो एक शख़्स भी तुम में पाक न हो सकता, मगर ख़ुदा जिस को चाहता है, पाक कर देता है और ख़ुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२१) और जो लोग तुम में फ़ज़्ल वाले और वुस्अत वाले हैं, वे इस बात की क़सम न खाएं कि रिश्तेदारों और मुहताजों और वतन छोड़ जाने वालों को कुछ ख़र्च-पात न देंगे, उन को चाहिए कि माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम पसन्द नहीं करते कि ख़ुदा तुम को बख़्श दे और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है ? (२२) जो लोग परहेज़गार (और) बुरे कामों से बे-खबर (और) ईमानदार औरतों पर बद-कारी की तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत (दोनों) में लानत है और उनको सख़्त अज़ाब होगा। (२३) (यानी क़ियामत के दिन) जिस दिन उन की ज़ुबानें और हाथ और पांव सब उनके कामों की गवाही देंगे। (२४) उस दिन ख़ुदा उन को (उन के आमाल का) पूरा-पूरा (और) ठीक बदला देगा और उनको मालूम हो जाएगा कि ख़ुदा बर-हक़ (और हक़ को) ज़ाहिर करने वाला है। (२५) ना-पाक औरतें ना-पाक मर्दों के लिए हैं और ना-पाक मर्द ना-पाक औरतों के लिए और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए। ये (पाक लोग) इन (झूठों) की बातों से बरी हैं (और) उनके लिए बख़्शिश और नेक रोज़ी है। (२६) ★

मोमिनो ! अपने घरों के सिवा दूसरे (लोगों के) घरों में घर वालों से इजाज़त लिए और उन को सलाम किए बग़ैर दाख़िल न हुआ करो, यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (और हम यह नसीहत इस

---

१. आयत 'इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल इफ़्कि' से ले कर यहां तक दस आयतें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि-यल्लाहु अन्हा की शान में नाज़िल हुई हैं। इन में अल्लाह तआला ने उन को इस तोहमत से पाक ज़ाहिर फ़रमाया है, जो मुनाफ़िक़ों ने उन के बारे में गढ़ रखा था और जिस को ज़्यादातर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने मशहूर किया था और जिस का ज़िक्र मुसलमानों में भी हुआ। इस वाक़िए की तफ़्सील इस तरह है—

हज़रत आइशा रज़ि० ख़ुद फ़रमाती हैं कि प्यारे नबी सल्ल० की आदत थी कि जब आप किसी सफ़र को तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाते, तो अपनी बीवियों में क़ुरआ डालते। जिस बीवी के नाम का क़ुरआ निकलता, उस को आप अपने साथ ले जाते। एक लड़ाई में मेरे नाम का क़ुरआ निकला और मैं आप के साथ गयी और यह सफ़र परदे के हुक्म के नाज़िल होने के बाद का था। मैं ऊंट पर सवारी करती और हौदज यानी कजावे में बैठती थी। जब आप लड़ाई से फ़ारिग़ हो चुके और लौटते हुए मदीने के क़रीब पहुंचे तो एक रात कूच का एलान किया गया। मैं उस वक़्त (ज़रूरत पूरी करने) चली गयी, यहां तक कि फ़ौज आगे बढ़ गयी। जब डेरे के पास आयी तो देखा

(शेष पृष्ठ ५६१ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-इल्लम् तजिदू फ़ीहा अ-ह्-दन् फ़ला तद्ख़ुलूहा ह़त्ता युअ्-ज-न लकुम् व
इन् क़ी-ल लकुमुर्जिअ़ू फ़र्जिअ़ू हु-व अज़्का लकुम् वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न
अ़लीम (२८) लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद-ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र मस्कूनतिन्
फ़ीहा मताअ़ुल्लकुम् वल्लाहु यअ्-लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (२९)
क़ुल् लिल्-मुअ्मिनी-न यग़ुज़्ज़ू मिन् अब्सारिहिम्
व यह़्-फ़ज़ू फ़ुरू-जहुम् ज़ालि-क अज़्का
लहुम् इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा
यस्-नअ़ून (३०) व क़ुलिलल्-मुअ्मिनाति
यग्-ज़ुज़्-न मिन् अब्सारिहिन-न व यह़-फ़ज़्-न
फ़ुरूजहुन-न व ला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन्-न इल्ला
मा ज़-ह-र मिन्हा वल्-यज़्रिब-न
बिख़ुमुरि-हिन्-न अ़ला जुयूबिहिन-न व ला
युब्दी-न ज़ी-न-तहुन-न इल्ला लिबुअ़ूलति-हिन्-न
औ आबाइहिन्-न औ आबाइ बुअ़ूलति-हिन्-न
औ अब्नाइ-हिन्-न औ अब्नाइ
बुअ़ूलति-हिन्-न औ इख़्वानिहिन्-न औ बनी
इख़्वानिहिन्-न औ बनी अ-ख़-वातिहिन्-न औ निसाइहिन्-न औ मा म-ल-कत् ऐमानु-
हुन्-न अवित्ताबिअ़ी-न ग़ैरि उलिलइर्बति मिनर्रिजालि अवित्-तिफ़्लिल्-लज़ी-न लम्
यज़्-हरू अ़ला औ़रातिन्निसाइ व ला यज़्रिब्-न बि-अर्जुलि-हिन-न लियुअ्-ल-म
मा युख़्फ़ी-न मिन् ज़ीनतिहिन-न व तूबू इलल्लाहि जमीअ़न् अय्युहल्-मुअ्मिनू-न
ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (३१) व अन्किहुल्-अयामा मिन्कुम् वस्सालिही-न
मिन् अिबादिकुम् व इमा-इकुम् इंय्यकूनू फ़ु-क़-रा-अ
युग़्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (३२)

قد افلح ۱۸ ‏ ۲۸۲ ‏ النور ۲۴

عَلٰٓى اَهْلِهَا ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ
اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا
هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۸﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ
تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۲۹﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا
فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَقُلْ
لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا
يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى
جُيُوْبِهِنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ
بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ
اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ
اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ
النِّسَآءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ وَ
تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَاَنْكِحُوا
الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ اِنْ يَّكُوْنُوْا
فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۲﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ
الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَالَّذِيْنَ

منزل ۴

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिए करते हैं कि) शायद तुम याद रखो। (२७) अगर तुम घर में किसी को मौजूद न पाओ तो जब तक तुम को इजाज़त न दी जाए उसमें मत दाख़िल हो और अगर (यह) कहा जाए कि (इस वक़्त) लौट जाओ तो लौट जाया करो। यह तुम्हारे लिए बड़ी पाकीज़गी की बात है और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा सब जानता है। (२८) (हां) अगर तुम किसी ऐसे मकान में जाओ, जिस में कोई न बसता हो और उस में तुम्हारा सामान (रखा) हो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो छिपाते हो, ख़ुदा को सब मालूम है। (२९) मोमिन मर्दों से कह दो कि अपनी नज़रें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें। यह उन के लिए बड़ी पाकीज़गी की बात है (और) जो काम ये करते हैं, ख़ुदा उन से ख़बरदार है। (३०) और मोमिन औरतों से भी कह दो कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी ज़ीनत (यानी ज़ेवर की जगहों) को ज़ाहिर न होने दिया करें, मगर जो उस में से खुला रहता हो और अपने सीनों पर ओढ़नियां ओढ़े रहा करें और अपने ख़ाविंद और बाप और ससुर और बेटे और ख़ाविंद के बेटों और भाइयों और भतीजों और भांजों और अपनी (ही क़िस्म की) औरतों और लौंडी-ग़ुलाम के सिवा, और उन ख़ादिमों के, जो औरतों की ख़्वाहिश न रखें या ऐसे लड़कों के, जो औरतों के परदे की चीज़ों को न जानते हों, (ग़रज़ इन लोगों के सिवा) किसी पर ज़ीनत (और सिंगार की जगहों) को ज़ाहिर न होने दें और अपने पांव (ऐसे तौर से ज़मीन पर) न मारें कि (झंकार कानों में पहुंचे और) उन का छिपा ज़ेवर मालूम हो जाए और मोमिनो! सब ख़ुदा के आगे तौबा करो ताकि कामियाब रहो। (३१) और अपनी क़ौम की बेवा औरतों के निकाह कर दिया करो और अपने ग़ुलामों और लौंडियों के भी जो नेक हों (निकाह कर दिया करो) और वे ग़रीब होंगे तो ख़ुदा उन को अपने फ़ज़्ल से ख़ुशहाल कर देगा

(पृष्ठ ५५९ का शेष)

कि मेरा मनकों का हार कहीं रास्ते में टूट कर गिर गया है। मैं हार खोजने लौट गयी और उस को खोजते-खोजते मुझे देर हो गयी। इतने में वे लोग आ गये जो मेरे हौदज को कसा करते थे और उन्हों ने मेरे हौदज को उठा लिया और उस को मेरे ऊंट पर कस दिया। चूंकि औरतें उस ज़माने में दुब्ली-पतली होती थीं और उन के सवार होने से हौदज कुछ भारी नहीं हो जाता था, इस लिए उन्हों ने हौदज के हल्केपन का कुछ ख़्याल न किया और यह न समझा कि मैं उस में नहीं हूं, ग़रज़ वे ऊंट को ले कर चल दिए। मुझ को अपना हार उस वक़्त मिला, जब लश्कर गुज़र गया। मैं लश्कर के पड़ाव में आयी, हालांकि वहां कोई नहीं था, फिर अपनी मंज़िल को, जहां उतरी हुई थी, चली गयी, इस ख़्याल से कि जब लोग मुझे गुम पाएंगे, तो आ कर ले जाएंगे। इसी बीच मुझे नींद आ गयी और मैं वहीं सो गयी।

उधर सफ़्वान बिन मुअत्तल जो रात के आख़िरी हिस्से में लश्कर के पीछे, आराम लेने के लिए उतर पड़ा था, सुबह के क़रीब चला। जब मेरी मंज़िल के क़रीब पहुंचा, तो मेरे बारे में ख़्याल किया कि कोई आदमी सो रहा है। वह मेरे पास आया और मुझे देख कर पहचान लिया, क्योंकि परदे के हुक्म से पहले वह मुझे देख चुका था। मैं ने चादर से घूंघट निकाल लिया और मैं क़सम खा कर कहती हूं कि न तो उस ने मुझ से कोई बात की, न मैं ने उस से कोई बात सुनी, अलावा 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन' के, जो उस ने सवारी के बिठाते वक़्त

(शेष पृष्ठ ६७७ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्-यस्तअ्-फ़िफ़िल्-लज़ी-न ला यजिदू-न निकाहन् हत्ता युग़नि-य-हुमुल्लाहु मिन्
फ़ज़्लिही ط वल्लज़ी - न यब्तग़ूनल् - किता - ब मिम्मा म-ल-कत् ऐमानुकुम्
फ़कातिबूहुम् इन् अलिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरंव صلے - व आतूहुम् मिम् -
मालिल्लाहिल्लज़ी आताकुम् ط व ला तुक्रिहू फ़-त-यातिकुम् अ-लल्बिग़ा-इ
इन् अ-रद्-न त-हस्सुनल्-लि-तब्तग़ू अ-र-ज़ल्-
हयातिद्दुन्या ط व मंय्युक्रिह् - हुन - न
फ़-इन्नल्ला-ह मिम्बअ्-दि इक्राहिहिन-न ग़फ़ूरुर्-
रहीम (३३) व ल - क़द् अन-ज़ल्ना
इलैकुम् आयातिम्-मुबय्यिनातिंव्-व म-स-लम्-
मिनल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब-लिकुम् व
मौअि-ज़-तल्-लिल्मुत्तक़ीन ★ (३४) अल्लाहु
नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط म - सलु नूरिही
कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन् ط अल-मिस्बाहु
फ़ी ज़ुजाजतिन् ط अज़्ज़ुजाजतु क - अन्नहा
कौकबुन् दुर्रिय्यु य्यूक़दु मिन् श-ज-रतिम्-
मुबा-र-कतिन् ज़ैतूनतिल्ला शर्क़िय्यतिंव्-व ला
ग़र्बिय्यतिंय्-यकादु ज़ैतुहा युज़ीउ व लौ
लम् तम्सस्हु नारुन् ط नूरुन् अला नूरिन् ط यह्दिल्लाहु लिनूरिही मंय्यशाउ ط व
यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि ط वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीम لا (३५)
फ़ी बुयूतिन् अज़िनल्लाहु अन्तुर्फ़-अ व युज़्क-र फ़ीहस्मुहू لا युसब्बिहु लहू फ़ीहा
बिल्ग़ुदुव्वि वल्आसाल لا (३६) रिजालुल्ला तुल्हीहिम् तिजा - र-तुंव्-व
ला बैअुन् अन् ज़िक्रिल्लाहि व इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति
लियज्ज़ि-य-
यख़ाफ़ू-न यौमन् त-त-क़ल्लबु फ़ीहिल्क़ुलूबु वल्-अब्सार قلے (३७)
हुमुल्लाहु अह्-स-न मा अमिलू व यज़ीदहुम् मिन् फ़ज़्लिही ط वल्लाहु यर्ज़ुक़ु
मंय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब (३८) वल्लज़ी-न क-फ़रू अअ्-मालुहुम् क-सराबिम्-
बिक़ीअतिंय्यह्सबुहुज़्-ज़म्-आनु माअन् ط हत्ता इज़ा जा-अहू लम् यजिद्हु शैअंव्-व
व-ज-दल्ला-ह अिन्दहू फ़-वफ़्फ़ाहु हिसाबहू ط वल्लाहु सरीअुल्-हिसाब لا (३९)

يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ
خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ۭ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى
الْبِغَاۗءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ
فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ
مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝
اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ۭ اَلْمِصْبَاحُ
فِيْ زُجَاجَةٍ ۭ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ
زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْۗءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ
نَارٌ ۭ نُوْرٌ عَلٰي نُوْرٍ ۭ يَهْدِي اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ
الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ
تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝ رِجَالٌ ۙ
لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءِ
الزَّكٰوةِ ۽ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۝ لِيَجْزِيَهُمُ
اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ
الظَّمْاٰنُ مَاۗءً ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـــًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ
حِسَابَهٗ ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰـىهُ مَوْجٌ

★रु. ४/१० आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और ख़ुदा (बहुत) वुस्अत वाला और (सब कुछ) जानने वाला है ।[1] (३२) और जिस को ब्याह् की ताक़त न हो, वे पाकदामनी को अख़्तियार किए रहें, यहां तक कि ख़ुदा उन को अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे और जो ग़ुलाम तुम से मुकातबत चाहें, अगर तुम उन में (सलाहियत और) नेकी पाओ तो उन से मुकातबत कर लो और ख़ुदा ने जो माल तुम को बख़्शा है, उस में से उन को भी दो और अपनी लौंडियों को अगर वे पाकदामन रहना चाहें, तो (बे-शर्मी से) दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे हासिल करने के लिए बद-कारी पर मजबूर न करना और जो उन को मजबूर करेगा, तो उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद ख़ुदा उन को बख़्शने वाला मेहरबान है। (३३) और हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें नाज़िल की हैं और जो लोग तुम से पहले गुज़र चुके हैं, उन की ख़बरें और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (३४)★

ख़ुदा आसमानों और ज़मीन का नूर है। उस के नूर की मिसाल ऐसी है कि गोया एक ताक़ है, जिस में चिराग़ है और चिराग एक क़ंदील में है और क़ंदील (ऐसी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ है कि) गोया मोती का सा चमकता हुआ तारा है। इस में एक मुबारक पेड़ का तेल जलाया जाता है, (यानी) ज़ैतून कि न पूरब की तरफ़ है, न पच्छिम की तरफ़। (ऐसा मालूम होता है कि) उस का तेल, चाहे आग उसे न भी छूए, जलने को तैयार है, (बड़ी) रोशनी पर रोशनी (हो रही है)। ख़ुदा अपने नूर से जिस को चाहता है, सीधी राह दिखाता है और ख़ुदा (जो) मिसालें बयान फ़रमाता है (तो) लोगों के (समझाने के) लिए और ख़ुदा हर चीज जानता है। (३५) (वह क़ंदील) उन घरों में (हैं) जिनके बारे में ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है कि बुलन्द किए जाएं और वहां ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किया जाए (और) उन में सुबह् व शाम उस की तस्बीह् करते रहें। (३६) (यानी ऐसे) लोग, जिन को ख़ुदा के ज़िक्र और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से न सौदागरी ग़ाफ़िल करती है, न ख़रीदना-बेचना, वह उस दिन से जब दिल (ख़ौफ़ और घबराहट की वजह् से) उलट जाएंगे और आंखें (ऊपर चढ़ जाएंगी), डरते हैं। (३७) ताकि ख़ुदा उन को उन के अमलों का बहुत अच्छा बदला दे और अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा भी अता करे और ख़ुदा जिस को चाहता है, बे-शुमार रोज़ी देता है। (३८) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन के आमाल (की मिसाल ऐसी है) जैसे मैदान में रेत कि प्यासा उसे पानी समझे, यहां तक कि जब उस के पास आए तो उसे कुछ भी न पाए और ख़ुदा ही को अपने पास देखे, तो वह उसे उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका दे और

---

१. हज़रत ने फ़रमाया, ऐ अली ! तीन कामों में देर न करना—फ़र्ज़ नमाज़ का जब वक़्त आवे, दूसरे जनाज़ा जब मौजूद हो, तीसरे रांड औरत जब उस की ज़ात का मर्द मिले। जो कोई दूसरा ख़ाविंद करने को ऐब जाने, उस का ईमान सलामत नहीं और जो लौंडी-गुलाम नेक हों यानी ब्याह देने से घमंड में न पड़ जाएं कि तुम्हारा काम छोड़ दें।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

औ क - ज़ुलुमातिन् फ़ी बह़्रिल् - लुज्जिय्यिंय्यग़्शाहु मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही मौजुम्मिन् फ़ौक़िही सह़ाबुन् ط ज़ुलुमातुम् - बअ्-ज़ुहा फ़ौ-क़ बअ्-ज़िन् ط इज़ा अख़्-र-ज य-दहू लम् य-कद् यराहा ط व मल्लम् यज-अ़लिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्नूर ★ (४०) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन् ط कुल्लुन् क़द् अ़लि-म स़लातहू व तस्बी-ह़हू ط वल्लाहु अ़लीमुम्-बिमा यफ़्-अ़लून (४१) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ج व इलल्लाहिल्-मसीर (४२) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह युज़्जी सह़ाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु बैनहू सुम्-म यज्-अ़लुहू रुकामन् फ़-त-रल्-वद् - क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही ج व युनज़्ज़िलु मिनस्समाइ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम्-ब-रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशाउ व यस्रिफ़ुहू अ़म् - मंय्यशाउ ط यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिलअब्सार ط (४३) युक़ल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र ط, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अ़िब-र-तल्-लिउलिल् - अब्सार (४४) वल्लाहु ख़-ल-क़ कुल्-ल दाब्बतिम्-मिम्माइन् ج फ़मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला बत़्निही ج व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला रिज्लैनि ج व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला अर् - बअिन् ط यख़्लुक़ुल्ला-हु मा यशाउ ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (४५) ल - क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम् - मुबय्यिनातिन् ط वल्लाहु यह्दी मंय्यशाउ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (४६) व यक़ूलू-न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ-तअ्-ना सुम्-म य-त-वल्ला फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मिम्बअ्-दि ज़ालि-क ط व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्मिनीन (४७) व इज़ा दुअ़ू इलल्लाहि व रसूलिही लि - यह़्कु - म बैनहुम् इज़ा फ़रीक़ुम् - मिन्हुम् मुअ्-रिज़ून (४८) व इंय्यकुल् - लहुमुल्-ह़क़्क़ु यअ्तू इलैहि मुज़्अिनीन ط (४९) अफ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन् अमिर्ताबू अम् यख़ाफ़ू-न अंय्यह़ीफ़ल्लाहु अ़लैहिम् व रसूलुहू ط बल् उलाइ - क हुमुज़्ज़ालिमून ★●(५०)

قد افلح ۱۸ — ۲۸۴ — النور ۲۴

مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ اِذَآ اَخْرَجَ
يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ۝٤٠ اَلَمْ
تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ كُلٌّ
قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٤١ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٤٢ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا
ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ
وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝٤٣ يُقَلِّبُ
اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝٤٤ وَاللّٰهُ خَلَقَ
كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ
عَلٰى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤٥ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤٦ وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَ
اَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤٧
وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٤٨
وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ۝٤٩ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ بَلْ اُولٰٓئِكَ

منزل ٤

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा जल्द हिसाब करने वाला है। (३९) या (उन के आमाल की मिसाल ऐसी है) जैसे गहरे दरिया में अंधेरे, जिस पर लहर चढ़ी आती हो (और) उस के ऊपर और लहर (आ रही हो और) उस के ऊपर बादल हो, ग़रज़ अंधेरे ही अंधेरे हों, एक पर एक (छाया हुआ), जब अपना हाथ निकाले तो कुछ न देख सके और जिस को ख़ुदा रोशनी न दे उस को (कहीं भी) रोशनी नहीं (मिल सकती)। (४०)★

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, ख़ुदा की तस्बीह करते रहते हैं और पर फैलाए हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज़ और तस्बीह (के तरीक़े) जानते हैं और जो कुछ वे करते हैं (सब) ख़ुदा को मालूम है। (४१) और आसमान और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही के लिए है और ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (४२) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही बादलों को चलाता है, फिर उन को आपस में मिला देता है, फिर उन को तह-ब-तह कर देता है, फिर तुम देखते हो कि बादल में से मेंह निकल (कर बरस) रहा है और आसमान में जो (ओलों के) पहाड़ हैं, उन से ओले नाज़िल करता है, तो जिस पर चाहता है, उस को बरसा देता है और जिस से चाहता है, हटा रखता है, और बादल में जो विजली होती है, उस की चमक आंखों को (चकाचौंध कर के आंखों की रोशनी को) उचके लिए जाती है। (४३) ख़ुदा ही रात और दिन को बदलता रहता है। रोशनी वालों के लिए इसमें बड़ी इब्रत है। (४४) और ख़ुदा ही ने हर चलने-फिरने वाले जानदार को पानी से पैदा किया तो उन में से कुछ ऐसे हैं कि पेट के बल चलते हैं और कुछ ऐसे हैं जो दो पांव पर चलते हैं और कुछ ऐसे हैं जो चार पांव पर चलते हैं। ख़ुदा जो चाहता है, पैदा करता है, बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (४५) हम ही ने रोशन आयतें नाज़िल की हैं और ख़ुदा जिस को चाहता है, सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करता है। (४६) और (कुछ लोग) कहते हैं कि हम ख़ुदा पर और रसूल पर ईमान लाए और (उन का) हुक्म मान लिया, फिर उस के बाद उन में से एक फ़िर्क़ा फिर जाता है और ये लोग ईमान वाले ही नहीं हैं। (४७) और जब उन को ख़ुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि (अल्लाह के रसूल) उन का झगड़ा चुका दें, तो उन में से एक फ़िर्क़ा मुंह फेर लेता है। (४८) और अगर (मामला) हक़ (हो और) उन को (पहुंचता) हो तो उनकी तरफ़ फ़रमांबरदार हो कर चले आते हैं। (४९) क्या उन के दिलों में बीमारी है या (ये) शक में हैं या उन को यह डर है कि ख़ुदा और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे? (नहीं), बल्कि ये ख़ुद ज़ालिम हैं। (५०)★●

★रु. ५/११ आ ६ ★रु. ६/१२ आ १० ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नमा का-न क़ौलल्-मुअ्मिनी-न इज़ा दुऊ़ इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म
बैनहुम् अंय्यक़ूलू समिअ्-ना व अ-त़अ्-ना ط व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (५१)
व मंय्युत़िअिल्ला-ह व रसू-लहू व यख़्शल्ला-ह व यत्तक़्-हि फ़उलाइ-क हुमुलफ़ाइज़ून
(५२) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् अ-मर्तहुम्
ल-यख़्रुजुन्-न ط क़ुल् ला तुक़्सिमू ج त़ा-अतुम्-
मअ्-रूफ़तुन् ط इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा
तअ्-मलून (५३) क़ुल् अत़ीउल्ला-ह व
अत़ीउर्रसू-ल ج फ़-इन् त-वल्लौ फ़-इन्नमा
अ़लैहि मा ह़ुम्मि-ल व अ़लैकुम् मा ह़ुम्मिल्तुम् ط
व इन् तुत़ीऊहु तह्तदू ط व मा अ-लर्रसूलि
इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (५४) व-अ-दल्-
लाहुल्-लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अ़मिलुस्-
सालिहाति ल-यस्-तख़्-लिफ़न्-न-हुम् फ़िल्अर्ज़ि
क-मस्-तख़्-ल-फ़ल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्
व लयुमक्किनन्-न लहुम् दीनहुमुल्लज़िर्-तज़ा
लहुम् व लयुबद्दिलन्नहुम् मिम्बअ्-दि ख़ौफ़िहिम्
अम्-नन् ط यअ्-बुदूननी ला युश्रिकू-न बी शैअन् ط व मन् क-फ़-र बअ्-द ज़ालि-क
फ़उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (५५) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व
अत़ीउर्रसू-ल ल-अ़ल्लकुम् तुर्-ह़मून (५६) ला तह्-सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मुअ्-
जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि ج व मअ्-वा-हुमुन्नारु ط व ल-बिअ्सल्-मसीर ★ (५७) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-यस्तअ्-ज़िन्-कुमुल्लज़ी-न म-ल-कत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी-न
लम् यब्लुग़ुल्-ह़ुलु-म मिन्कुम् सला-स मर्रातिन् ط मिन् क़ब्लि सलातिल्-
फ़ज्रि व ह़ी-न त-ज़-अू-न सियाबकुम् मिनज़्ज़हीरति व मिम्बअ्-दि सलातिल्
अ़िशाइ ط सलासु औ़रातिल्लकुम् ط लै-स अ़लैकुम् व ला अ़लैहिम् जुनाहुम्-
बअ्-दहुन्-न ط त़व्वाफ़ू-न अ़लैकुम् बअ्-ज़ुकुम् अ़ला बअ्-ज़िन् ط कज़ालि-क
युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (५८)

النور ٢٤ ٣٨٥ قد افلح ١٨

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۞ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۞
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۞
وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۗ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ
طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۗ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۞ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۗ
وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۗ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۞ وَعَدَ
اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا
اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى
ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۗ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ
بِىْ شَيْئًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۞ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۞ لَا
تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۗ وَ
لَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۗ مِنْ قَبْلِ
صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ
صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۗ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۗ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ

★रु. ७/१३ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनों की तो यह बात है कि जब ख़ुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं ताकि वे उन में फ़ैसला करें, तो कहें कि हमने (हुक्म) सुन लिया और मान लिया और यही लोग फ़लाह (कामियाबी) पाने वाले हैं। (५१) और जो शख़्स ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा और उस से डरेगा, तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुंचने वाले हैं। (५२) और (ये) ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़स्में खाते हैं कि अगर तुम उन को हुक्म दो तो (सब घरों से) निकल खड़े हों, कह दो कि क़स्में मत खाओ, पसंदीदा फ़रमांबरदारी (चाहिए)। बेशक ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है। (५३) कह दो कि ख़ुदा की फ़रमांबरदारी करो और (ख़ुदा के) रसूल के हुक्म पर चलो। अगर मुंह मोड़ोगे तो रसूल पर (उस चीज़ का अदा करना) है जो उन के ज़िम्मे है और तुम पर (उस चीज़ का अदा करना) है जो तुम्हारे ज़िम्मे है और अगर तुम उन के फ़रमान पर चलोगे तो सीधा रास्ता पा लोगे और रसूल के ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ (ख़ुदा के अह्काम का) पहुंचा देना है। (५४) जो लोग तुम में से ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन से ख़ुदा का वायदा है कि उनको मुल्क का हाकिम बना देगा, जैसा उनसे पहले लोगों को हाकिम बनाया था और उन के दीन को उनके लिए पसन्द किया है मज़बूत व पायदार करेगा और ख़ौफ़ के बाद उनको अम्न बख़्शेगा। वे मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाएंगे और जो इस के बाद कुफ़्र करें तो ऐसे लोग बद-किरदार हैं। (५५) और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो और (ख़ुदा के) पैग़म्बर के फ़रमान पर चलते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (५६) (और) ऐसा ख़्याल न करना कि काफ़िर लोग (हम को) ज़मीन में मग़लूब कर देंगे, (ये जा ही कहां सकते हैं) इन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (५७)★

मोमिनो ! तुम्हारे ग़ुलाम-लौंडियां और जो बच्चे तुम में से बुलूग़ को नहीं पहुंचे, (बालिग़ नहीं हुए), तीन बार (यानी तीन वक़्तों में) तुम से इजाज़त लिया करें। (एक तो) सुबह की नमाज़ से पहले और (दूसरे गर्मी की) दोपहर को, जब तुम कपड़े उतार देते हो और (तीसरे) इशा की नमाज़ के बाद। (ये) तीन (वक़्त) तुम्हारे पर्दे (के) हैं। इन के (आगे-) पीछे (यानी दूसरे वक़्तों में) न तुम पर कुछ गुनाह है और न उन पर कि (काम-काज के लिए) एक-दूसरे के पास आते-रहते हो। इस तरह ख़ुदा अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और ख़ुदा बड़ा इल्म वाला (और) बड़ा हिक्मत वाला है। (५८) और जब तुम्हारे लड़के बालिग़ हो जाएं तो उन

★रु. ७/१३ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा ब-ल-ग़ल्-अत़्फ़ालु मिन्कुमुल्-हुलु-म फ़ल्-यस्तअ्ज़िनू क-मस्-तअ्-ज़-नल्-लज़ी-न
मिन् क़ब्लिहिम् ᵇ कज़ालि - क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ᵇ वल्लाहु
अ़लीमुन् ह़कीम (५९) वल्क़वाअ़िदु मिनन्निसाइल्लाती ला यर्जू-न निकाह़न्
फ़लै-स अ़लैहिन्-न जुनाहुन् अंय्य-ज़अ्-न सियाबहुन्-न ग़ै-र मुतबर्रिजातिम्-बिज़ीनतिन् ᵇ
व अंय्यस्तअ्-फ़िफ़्-न ख़ैरुल्लहुन्-न ᵇ वल्लाहु
समीअ़ुन् अ़लीम (६०) लै-स अ़लल्-अअ्-मा
ह़-र-जुंव्-व ला अ़लल्-अअ्-रजि ह़-र-जुंव्-व ला
अ़लल्-मरीज़ि ह़-र-जुंव्-व ला अ़ला अन्फ़ुसिकुम्
अन् तअ्कुलू मिम्-बुयूतिकुम् औ बुयूति
आबाइकुम् औ बुयूति उम्महातिकुम् औ
बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ-ख़-वातिकुम्
औ बुयूति अअ्-मामिकुम् औ बुयूति अ़म्मातिकुम्
औ बुयूति अख़्-वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम्
औ मा म - लक्तुम् मफ़ाति - ह़हू औ
स़दीक़िकुम् ᵇ लै-स अ़लैकुम् जुनाह़ुन् अन्
तअ्कुलू जमीअ़न् औ अश्तातन् ᵇ फ़-इज़ा
द-ख़ल्तुम् बुयूतन् फ़-सल्लिमू अ़ला अन्फ़ुसिकुम् तह़िय्य-तम्-मिन् अ़िन्दिल्लाहि
मुबा-र-क-तन् त़य्यि-ब-तन् ᵇ कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ल-अ़ल्लकुम्
तअ्-क़िलून ★ (६१) इन्नमल् - मुअ्मिनूनल्लज़ी - न आमनू बिल्लाहि व
रसूलिही व इज़ा कानू म-अ़हू अ़ला अम्रिन् जामिअ़िल्लम् यज़्हबू ह़त्ता
यस्तअ्जिनूहु ᵇ इन्नल्लज़ी-न यस्तअ्जिनू-न-क उलाइकल्लज़ी - न युअ्मिनू - न
बिल्लाहि व रसूलिही ᶜ फ़इज़स्तअ्-ज़-नू-क लिबअ्-ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्-ज़ल्लि-
मन् शिअ्-त मिन्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुमुल्ला-ह ᵇ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रह़ीम (६२)

النور ٢٤ ٢٨٦ قد افلح ١٨

بَعْدَهُنَّ ۚ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾ وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ
فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ
اٰيٰتِهٖ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ
نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ
بِزِيْنَةٍ ۚ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۚ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾ لَيْسَ
عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ
وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ
بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ
اَوْ صَدِيْقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ۚ فَاِذَا
دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾ ع اِنَّمَا
الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ
جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ۚ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ
فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
منزل

★रु. ८/१४ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

को भी इसी तरह इजाज़त लेनी चाहिए, जिस तरह उन से अगले (यानी बड़े आदमी) इजाज़त हासिल करते रहे हैं, इस तरह ख़ुदा तुम से अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (५९) और बड़ी उम्र की औरतें, जिन को निकाह की उम्मीद नहीं रही और वे कपड़े उतार (कर सर नंगा कर) लिया करें, तो उन पर कुछ गुनाह नहीं बशर्ते कि अपनी ज़ीनत की चीज़ें न ज़ाहिर करें और अगर इस से भी बचें तो (यह) उन के हक़ में बेहतर है और ख़ुदा सुनता-जानता है। (६०) न तो अंधे पर कुछ गुनाह है और न लंगड़े पर और न बीमार पर और न ख़ुद तुम पर कि अपने घरों से खाना खाओ या अपने बापों के घरों से या अपनी मांओं के घरों से या भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या उस घर से, जिस की कुंजियां तुम्हारे हाथ में हों या अपने दोस्तों के घरों से (और इस का भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिल कर खाना खाओ या अलग-अलग। और जब घरों में जाया करो तो अपने (घर वालों) को सलाम किया करो। (यह) ख़ुदा की तरफ़ से मुबारक और पाकीज़ा तोहफ़ा है। इस तरह ख़ुदा अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। (६१)★

मोमिन तो वे हैं जो ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाए और जब कभी ऐसे काम के लिए जो जमा हो कर करने का हो, पैग़म्बरे ख़ुदा के पास जमा हों, तो उन से इजाज़त लिए बग़ैर चले नहीं जाते। ऐ पैग़म्बर! जो लोग तुम से इजाज़त हासिल करते हैं, वही ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, सो जब ये लोग तुम से किसी काम के लिए इजाज़त मांगा करें, तो उन में से जिसे चाहा करो, इजाज़त दे दिया करो और उन के लिए ख़ुदा से बख़्शिश मांगा करो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (६२) मोमिनो! पैग़म्बर के बुलाने को ऐसा ख़्याल न

★रु. ८/१४ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ला तज्अ़लू दुआ़अर्रसूलि बैनकुम् कदुआ़इ बअ़्-ज़िकुम् बअ़्-ज़न् ᵇ क़द् यअ़्-लमुल्लाहुल्लज़ी-न य-त-सल्ललू-न मिन्कुम् लिवाज़न् ᶜ फ़ल्-यह़्-ज़रिल्-लज़ी-न युख़ालिफ़ू-न अ़न् अम्रिही अन् तुसीबहुम् फ़ित्-नतुन् औ युसीबहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (६३) अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ᵇ क़द् यअ़्-लमु मा अन्तुम् अ़लैहि ᵇ व यौ-म युर्जअ़ू-न इलैहि फ़युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू ᵇ वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ★(६४)

२५ सूरतुल्-फ़ुर्क़ानि ४२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३९१९ अक्षर, ९०६ शब्द, ७७ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

तबारकल्लज़ी नज़्ज़-लल्-फ़ुर्क़ा-न अ़ला अ़ब्दिही लि-यकू-न लिल्आ़लमी-न नज़ीरा ᐟᐟ (१) अ्ल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व-ल-दंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् फ़-क़द-द-रहू तक़्दीरा (२) वत्तख़ज़ू मिन् दूनिही आलिहतल्ला यख़्लुक़ू-न शैअंव्-व हुम् युख़-लक़ू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्-अंव्-व ला यम्लिकू-न मौतंव-व ला ह़यातंव्-व ला नुशूरा (३) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कुनिफ़्तराहु व अ-आनहू अ़लैहि क़ौमुन् आख़रू-न ᶜ फ़-क़द् जाऊ ज़ुल्मंव्वज़ूरा ᶜ (४) व क़ालू असातीरुल्-अव्वलीनक्-त-त-बहा फ़हि-य तुम्ला अ़लैहि बुक-र-तंव्-व असीला (५) क़ुल् अन्-ज़-लहुल्लज़ी यअ़्-लमुस्सिर-र फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ᵇ इन्नहू का-न ग़फ़ूरर्-रह़ीमा (६) व क़ालू मालिहाज़र्रसूलि यअ्-कुलुत्तआ़-म व यम्शी फ़िल्अस्वाक़ि ᵇ लौला उन्ज़ि-ल इलैहि म-ल-कुन् फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा ᐟᐟ (७)

الفرقان ٢٥ ٢٨٧ قد افلح ١٨

رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ
يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ
عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ
لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ
يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعٌ وَسَبْعُونَ آيَةً وَسِتُّ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ﴿١﴾
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ
شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا ﴿٢﴾ وَاتَّخَذُوا
مِنْ دُونِهِ آلِهَةً لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ
لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُشُورًا ﴿٣﴾
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ
آخَرُونَ ۖ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ﴿٤﴾ وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا
فَهِيَ تُمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٥﴾ قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوا مَالِ هَٰذَا
الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۙ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ

★रु. ६/१५ आ ३,·मु· अि मु त क़. १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करना जैसा तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। बेशक ख़ुदा को वे लोग मालूम हैं, जो तुम में से आंख बचा कर चल देते हैं तो जो लोग उन के हुक्म की मुखालफ़त करते हैं, उन को डरना चाहिए कि (ऐसा न हो कि) उन पर कोई आफ़त पड़ जाए या तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब नाज़िल हो। (६३) देखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है। जिस (ढंग) पर तुम हो, वह उसे जानता है और जिस दिन लोग उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो जो अमल वे करते रहे, वह उन को बता देगा और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (६४)★

२५ सूरः फ़ुर्क़ान ४२

सूर: फ़ुर्क़ान मक्की है और इस में ७७ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (ख़ुदा-ए-अज्ज़ व जल्ल) बहुत ही बरकत वाला है, जिस ने अपने बन्दे पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया, ताकि दुनिया वालों को हिदायत करे। (१) वही कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और जिस ने (किसी को) बेटा नहीं बनाया और जिस का बादशाही में कोई शरीक नहीं और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया, फिर उस का एक अन्दाज़ा ठहराया। (२) और (लोगों ने) उस के सिवा और माबूद बना लिए हैं, जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सकते और ख़ुद पैदा किए गये हैं और न अपने नुक़्सान और नफ़ा का कुछ अख्तियार रखते हैं और न मरना उन के अख्तियार में है और न जीना और न (मर कर) उठ खड़े होना। (३) और काफ़िर कहते हैं कि यह (क़ुरआन) मनगढ़ंत बातें हैं, जो इस (रिसालत के दावेदार) ने बना ली हैं और लोगों ने इस में उस की मदद की है। ∵ये लोग (ऐसा कहने से) ज़ुल्म और झूठ पर (उतर) आए हैं। ∴(४) और कहते हैं कि यह पहले लोगों की कहानियां हैं, जिन को उस ने जमा कर रखा है। और वह सुबह व शाम उस को पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती हैं। (५) कह दो कि उस को उस ने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है। बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (६) और कहते हैं, यह कैसा पैग़म्बर है कि खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है, इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नाज़िल नहीं किया गया कि इस के साथ हिदायत करने को रहता। (७) या

★रु. ९/१५ आ ३ ∴ मु. अ़ि मु. त क़.१०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

औ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् औ तकूनु लहू जन्नतुय्यअ्कुलु मिन्हा ᒧ व
क़ालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्ह़ूरा (८) उन्ज़ुर्
कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़ज़ल्लू फ़ला यस्तत़ीअू-न सबीला ★(९)
तबारकल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ़-ल ल-क ख़ैरम्मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन्
तह़्तिहल्-अन्हारु ᒧ व यज्-अ़ल् ल-क क़ुसूरा (१०) बल् कज़्ज़बू बिस्साअ़ति व अअ्-तद्-ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्साअ़ति सअ़ीरा ᑕ (११) इज़ा र-अत्हुम् मिम्-मकानिम्-बअ़ीदिन् समिअू लहा त-ग़य्युज़ंव्-व ज़फ़ीरा (१२) व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन् ज़य्यिक़म्-मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूराᒧ (१३) ला तद्अ़ुल्-यौ-म सुबूरंव्वाह़िदंव्वद्अ़ू सुबूरन् कसीरा (१४) क़ुल् अ ज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल्-ख़ुल्दिल्-लती वुअ़िदल् - मुत्तक़ू-न ᒧ कानत् लहुम् जज़ाअंव्-व मसीरा (१५) लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न ख़ालिदी-नᒧ का - न अ़ला
रब्बि-क वअ्-दम्-मस्ऊला (१६) व यौ-म यह़्शुरुहुम् व मा यअ्-बुदू-न मिन्
दूनिल्लाहि फ़-यक़ूलु अ अन्तुम् अज़्-लल्तुम् अ़िबादी हाउला-इ अम् हुम्
ज़ल्लुस्सबीलᒧ(१७) क़ालू सुब्ह़ान-क मा का-न यम्बग़ी लना अन् नत्तख़ि-ज़
मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम्-मत्तअ्-तहुम् व आबा-अहुम् ह़त्ता
नसुज़्ज़िक्-रᑕ व कानू क़ौमम्बूरा (१८) फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-नᒧ
फ़मा तस्तत़ीअ़ू-न सर्फ़ंव्-व ला नस्रन्ᑕ व मंय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अ़ज़ाबन्
कबीरा (१९) व मा अर्सल्ना क़ब्-ल-क मिनल्-मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम्
ल-यअ्कुलूनत्-तआ़-म व यम्शू-न फ़िल्अस्वाक़ि ᒧ व ज-अ़ल्ना बअ्-ज़कुम्
लिबअ्-ज़िन फ़ित्-न-तन् ᒧ अ-तस्बिरू-न ᑕ व का-न रब्बु-क बसीरा ★(२०)

الفرقان ٢٥ ٣٨٨ قد افلح ١٨

فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝٧ اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَ
قَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٨ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ
الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝٩ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَاۗءَ
جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ
لَّكَ قُصُوْرًا ۝١٠ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝١١
اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝١٢ وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا
مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝١٣ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝١٤ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ
وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۗءً وَّمَصِيْرًا ۝١٥ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاۗءُوْنَ
خٰلِدِيْنَ ۭ كَانَ عَلٰي رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ۝١٦ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَاۗءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا
السَّبِيْلَ ۝١٧ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ
مِنْ اَوْلِيَاۗءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا
قَوْمًۢا بُوْرًا ۝١٨ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا
وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ۝١٩ وَمَآ اَرْسَلْنَا
قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ۝٢٠

منزل ٤

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उस की तरफ़ (आसमान से) ख़ज़ाना उतारा जाता या उस का कोई बाग़ होता कि उसमें से खाया करता और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक जादू किए हुए शख़्स की पैरवी करते हो। (८) (ऐ पैग़म्बर !) देखो तो ये तुम्हारे बारे में किस-किस तरह की बातें करते हैं, सो गुमराह हो गये और रास्ता नहीं पा सकते ★(९) वह (ख़ुदा) बहुत बरकत वाला है, जो अगर चाहे, तो तुम्हारे लिए इस से बेहतर (चीज़ें) बना दे, (यानी) बाग़, जिन के नीचे नहरें बह रही हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (१०) बल्कि ये तो क़ियामत ही को झुठलाते हैं और हमने क़ियामत के झुठलाने वालों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रखी है। (११) जिस वक़्त वह उन को दूर से देखेगी, तो (ग़ज़बनाक हो रही होगी और ये) उस के जोशे (ग़ज़ब) और चीख़ने-चिल्लाने को सुनेंगे। (१२) और जब ये दोज़ख़ की किसी तंग जगह में (ज़ंजीरों में) जकड़ कर डाले जाएंगे तो वहां मौत को पुकारेंगे। (१३) आज एक ही मौत को न पुकारो, बहुत-सी मौतों को पुकारो। (१४) पूछो कि यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत, जिस का परहेज़गारों से वायदा है। यह उन (के अमलों का) बदला और रहने का ठिकाना होगा। (१५) वहां जो चाहेंगे, उन के लिए (मयस्सर) होगा, हमेशा उस में रहेंगे। यह वायदा ख़ुदा को (पूरा करना) ज़रूरी है और इस लायक़ है कि मांग लिया जाए। (१६) और जिस दिन (ख़ुदा) इन को और उन को जिन्हें ये ख़ुदा के सिवा पूजते हैं, जमा करेगा, तो फ़रमाएगा, क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था या ये ख़ुद गुमराह हो गये थे। (१७) वे कहेंगे, तू पाक है, हमें यह बात मुनासिब न थी कि तेरे सिवा औरों को दोस्त बनाते, लेकिन तू ने ही उन को और उन के बाप-दादा को बरतने की नेमतें दीं, यहां तक कि वे तेरी याद को भूल गये और ये हलाक होने वाले लोग थे। (१८) तो (काफ़िरो !) उन्हों ने तो तुम को तुम्हारी बात में झुठला दिया पस (अब) तुम (अज़ाब को) न फेर सकते हो। न (किसी से) मदद ले सकते हो। और जो शख़्स तुम में से ज़ुल्म करेगा, हम उस को बड़े अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (१९) और हमने तुम से पहले जितने पैग़म्बर भेजे हैं, सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे और हम ने तुम्हें एक-दूसरे के लिए आज़माइश बनाया। क्या तुम सब्र करोगे और तुम्हारा परवरदिगार तो देखने वाला है। (२०)★

★रु. १/१६ आ ९ ★रु. २/१७ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन्नीसवां पारः व क़ालल्लज़ी-न

सूरतुल्-फ़ुर्क़ानि आयात २१ से ७७

व क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-मलाइकतु
औ नरा रब्बना ल-क़दिस्तक्बरू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् व अ़तौ अुतुव्वन् कबीरा (२१)
यौ-म यरौनल्-मलाइ-क-तु ला बुश्रा यौमइज़िल्-लिल्मुज्रिमी-न व यक़ूलू-न
हिज्रम्-मह्जूरा (२२) व क़दिम्ना इला मा अ़मिलू मिन् अ़-मलिन्
फ़-ज-अ़ल्नाहु हबा-अम् - मन्सूरा (२३)
अस्-हाबुल् - जन्नति यौमइज़िन् ख़ैरुम् -
मुस्त-क़र्-रंव्-व अह्सनु मक़ीला (२४) व
यौ-म त - शक़्क़क़ुस्समाउ बिल्ग़मामि व
नुज़्ज़िलल् - मलाइकतु तन्ज़ीला (२५)
अल्मुल्कु यौमइज़ि-निल्-हक़्क़ु लिर्रह्मानि
व का-न यौमन् अ़-लल्-काफ़िरी-न असीरा
(२६) व यौ-म य-अ़ज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अ़ला
यदैहि यक़ूलु यालैतनित्तख़ज़्तु म-अ़र्रसूलि
सबीला (२७) या वैलता लै-तनी लम्
अत्तख़िज़् फ़ुलानन् ख़लीला (२८) ल-क़द्
अ-ज़ल्लनी अ़निज़्ज़िक्रि बअ्-द इज़् जा-अनी
व कानश्शैतानु लिल्इन्सानि ख़ज़ूला (२९)
व क़ालर्रसूलु या रब्बि इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू
हाज़ल्-क़ुर्आ-न मह्जूरा (३०) व
कज़ालि-क ज-अ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वम्मिनल्-मुज्रिमी-न व कफ़ा बिरब्बि-क
हादियंव्-व नसीरा (३१) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिल्-
क़ुर्आनु जुम-ल-तंव्वाहि-द-तन् कज़ालि-क लिनुसब्बि-त बिही फ़ुआद-क व रत्तल्नाहु
तर्तीला (३२) व ला यअ्तून-क बि-मसलिन् इल्ला जिअ्ना-क बिल्हक़्क़ि व
अह्-स-न तफ़्सीरा (३३) अल्लज़ी-न युह्शरू-न अ़ला वुजूहिहिम् इला जहन्न-म
उलाइ-क शर्रुम्-मकानंव्-व अ-ज़ल्लु सबीला★(३४) व ल-क़द् आतैना मूसल्-
किता-ब व ज-अ़ल्ना म-अ़हू अख़ाहु हारू-न वज़ीरा (३५) फ़क़ुल्नज़्हबा
इलल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़ - दम्मर्नाहुम् तद्मीरा (३६)

الفرقان ٢٥ — ٣٨٩ — وقال الذين ١٩

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ
نَرٰى رَبَّنَا لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِيٓ أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ
يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا
مَّحْجُورًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ إِلٰى مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُورًا ﴿٢٣﴾
أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّأَحْسَنُ مَقِيلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ
تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمٰمِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ
لِلرَّحْمٰنِ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِينَ عَسِيرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ
عَلٰى يَدَيْهِ يَقُولُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى
لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ
جَآءَنِي وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُولُ يٰرَبِّ
إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُورًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ
نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِينَ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيرًا ﴿٣١﴾ وَقَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً كَذٰلِكَ لِنُثَبِّتَ
بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ
وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلٰى وُجُوهِهِمْ إِلٰى جَهَنَّمَ
أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَ
جَعَلْنَا مَعَهٗٓ أَخَاهُ هٰرُونَ وَزِيرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَآ إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ

∴मु. अिं मु ता ख. १२ ★रु. ३/१ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न नाज़िल किये गये या हम आंख से अपने परवरदिगार को देख लें। ये अपने ख़्याल में बड़ाई रखते हैं और (इसी वजह से) बड़े सरकश हो रहे हैं। (२१) जिस दिन ये फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन गुनाहगारों के लिए कोई ख़ुशी की बात नहीं होगी और कहेंगे (ख़ुदा करे तुम) रोक लिए (और बंद कर दिए) जाओ।[1] (२२) और जो उन्हों ने अमल किए होंगे, हम उन की तरफ़ मुतवज्जह होंगे तो उनको उड़ती ख़ाक कर देंगे। (२३) उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा और आराम की जगह भी ख़ूब होगी। (२४) और जिस दिन आसमान बादल के साथ फट जाएगा[2] और फ़रिश्ते नाज़िल किए जाएंगे। (२५) उस दिन सच्ची बादशाही ख़ुदा ही की होगी और वह दिन काफ़िरों पर (सख़्त) मुश्किल होगा। (२६) और जिस दिन (अंजाम से बे-ख़बर) ज़ालिम अपने हाथ काट-काट खाएगा (और) कहेगा कि ऐ काश! मैं ने पैग़म्बर के साथ रास्ता अपनाया होता। (२७) हाय शामत! काश! मैं ने फ़्लां शख़्स को दोस्त न बनाया होता। (२८) उस ने मुझ को नसीहत (की किताब) के मेरे पास आने के बाद बहका दिया और शैतान इंसान को वक़्त पर दग़ा देने वाला है। (२९) और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ परवरदिगार! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।[3] (३०) और इसी तरह हमने गुनाहगारों में से हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया और तुम्हारा परवरदिगार हिदायत देने और मदद करने को काफ़ी है। (३१) और काफ़िर कहते हैं कि इस पर क़ुरआन एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, ∴इस तरह∴ (धीरे-धीरे) इसलिए (उतारा गया) कि इस से तुम्हारे दिल को क़ायम रखें और (इसी वास्ते) हम उस को ठहर-ठहर कर पढ़ते रहे हैं। (३२) और ये लोग तुम्हारे पास जो (एतराज़ की) बात लाते हैं, हम तुम्हारे पास सही और ख़ूब बेहतर जवाब भेज देते हैं। (३३) जो लोग अपने मुंहों के बल दोज़ख़ की तरफ़ जमा किए जाएंगे, उन का ठिकाना भी बुरा है और वे रास्ते से भी बहके हुए हैं। (३४)★

और हमने मूसा को किताब दी और उन के भाई हारून को मददगार बना कर उन के साथ मिला दिया। (३५) और कहा कि दोनों उन लोगों के पास जाओ, जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया। (जब झुठलाने पर अड़े रहे) तो हमने उन को हलाक कर डाला। (३६) और नूह की

---

१. यानी ख़ुदा तुम से पनाह में रखे। अरबों की आदत है कि जब उन में से किसी पर कोई सख़्ती और आफ़त व बला नाज़िल होती है, तो कहते हैं 'हिज-रम मह्जूरा' जैसे हम कहते हैं कि ख़ुदा की पनाह।

२. यानी आसमान के फटने के साथ वह बदली भी फट जाएगी, जो आसमान और लोगों के दर्मियान है। कुछ लोगों ने कहा कि आसमान फट जाएगा, इस हाल में कि उस पर बादल होगा। कुछ लोगों ने कहा कि आसमान बादल की वजह से फट जाएगा यानी बदली ज़ाहिर होगी और उस की वजह से आसमान फट जाएगा।

३. प्यारे नबी सल्ल० क़ियामत के दिन ख़ुदा से शिकायत करेंगे कि मेरे परवरदिगार! मेरी क़ौम ने क़ुरआन को छोड़ दिया। छोड़ देने की कई शक्लें हैं—इस को न मानना और इस पर ईमान न लाना भी छोड़ देना है। इस में ग़ौर न करना और सोच-समझ कर न पढ़ना भी छोड़ देना है। इस के हुक्मों का न मानना और इस की मना की हुई चीज़ों से न रुकना भी छोड़ देना है। क़ुरआन की परवाह न कर के दूसरी चीज़ों जैसे बेहूदा नावेलों, दीवानों, लग्व बातों, खेल-तमाशों, राग व रंग में लगा रहना भी छोड़ देना है। अफ़सोस है कि आजकल के मुसल-मान क़ुरआन की तरफ़ से निहायत ग़ाफ़िल हो रहे हैं। उस के पढ़ने-सोचने-समझने और हिदायतों से फ़ायदा उठाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते और यह खुल्लम-खुल्ला क़ुरआन मजीद का छोड़ना है। अल्लाह तआला उन

(शेष पृष्ठ ५७७ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ौ-म नूहिल्लम्मा कज़्ज़बुर्रुसु-ल अग़्-रक़्नाहुम् व ज-अ़ल्नाहुम् लिन्नासि आ-य-तन्ط
व अअ़्-तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न अ़ज़ाबन् अलीमाج (३७) व आ़दंव्-व समू-द
व अस्हाबर्रस्सि व क़ुरूनम्-बै-न ज़ालि-क कसीरा (३८) व कुल्लन् ज़-रब्ना
लहुल्-अम्सा-लز व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरा (३९) व ल-क़द् अतौ अ़-लल्-

क़र्यतिल्लती उम्ति-रत् म-त-रस्सौइط
अ-फ़-लम् यकूनू यरौनहाج बल् कानू ला
यर्जू-न नुशूरा (४०) व इज़ा रऔ-क
इंय्यत्तख़िज़ू-न-क इल्ला हुज़ुवाط
अहाज़ल्लज़ी ब-अ़-सल्लाहु रसूला (४१)
इन् का-द लयुज़िल्लुना अ़न् आलिहतिना
लौला अन् स-बर्ना अ़लैहाط
व सौ-फ़ यअ़्लमू-न ही-न यरौनल्-अ़ज़ा-ब
मन् अ-ज़ल्लु सबीला (४२) अ-रऐ-त
मनित्त-ख़-ज़ इलाहहू हवाहु ط अ-फ़-अन्-त
तकूनु अ़लैहिं वकीला (४३) अम्
तह्सबु अन्-न अक्स-रहुम् यस्मअ़ू-न औ
यअ़्क़िलू-नط इन् हुम् इल्ला कल्-अन्आ़मि
बल् हुम् अ-ज़ल्लु सबीला ★ (४४) अ-लम्

كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝٣٦ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ
اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝٣٧ وَّ
عَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝٣٨ وَكُلًّا ضَرَبْنَا
لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝٣٩ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ
مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝٤٠ وَاِذَا
رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝٤١ اِنْ
كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٤٢ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ
هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝٤٣ۙ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ
اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٤٤ۧ اَلَمْ تَرَ اِلٰى
رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاۗءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ
دَلِيْلًا ۝٤٥ۙ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝٤٦ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ
الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝٤٧ وَهُوَ الَّذِيْٓ
اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً
طَهُوْرًا ۝٤٨ۙ لِّنُحْيِۦ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ
كَثِيْرًا ۝٤٩ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ڮ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا
كُفُوْرًا ۝٥٠ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝٥١ۡ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ

منزل ٤

त-र इला रब्बि-क कै-फ़ मद्दज़्ज़िल्-लج व लौ शा-अ ल-ज-अ़-लहू साकिनन्ج सुम्-म
ज-अ़ल्नश्शम्-स अ़लैहि दलीला (४५) सुम्-म क़-बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा
(४६) व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लिबासंव्वन्नौ-म सुबातंव्-व ज-अ़-लन्-
नहा-र नुशूरा (४७) व हुवल्लज़ी अर्स-लर्रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिहीج
व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ माअन् तहूरल्- (४८) -लिनुह्यि-य बिही
बल्द-तम्-मैतंव्-व नुस्क़ि-यहू मिम्मा ख़-लक़्ना अन्आ़मंव्-व अनासिय्-य कसीरा (४९)
व ल-क़द् सर्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज़्ज़क्करू फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला
कुफ़ूरा (५०) व लौ शिअ्ना ल-ब-अ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र-यतिन् नज़ीरा (५१)
(५२) फ़ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा (५२)

★रु॰ ४/२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ौम ने भी जब पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए निशानी बना दिया और ज़ालिमों के लिए हमने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (३७) और आद और समूद और कुएं वालों और उनके दर्मियान और बहुत सी जमाअतों को भी (हलाक कर दिया)। (३८) और सब के (समझाने के) लिए हम ने मिसालें बयान कीं और न (मानने पर) सब का तहस-नहस कर दिया। (३९) और ये (काफ़िर) उस बस्ती पर भी गुज़र चुके हैं, जिस पर बुरी तरह का मेंह बरसाया गया था, वे इस को देखते न होंगे, बल्कि उन को तो (मरने के बाद) जी उठने की उम्मीद ही नहीं। (४०) और ये लोग जब तुम को देखते हैं, तो तुम्हारी हंसी उड़ाते हैं कि क्या यही शख़्स है, जिस को ख़ुदा ने पैग़म्बर बना कर भेजा है। (४१) अगर हम अपने माबूदों के बारे में साबित क़दम न रहते, तो यह ज़रूर हम को बहका देता (और) उन से (फेर देता) और ये बहुत जल्द मालूम कर लेंगे, जब अज़ाब देखेंगे कि सीधे रास्ते से कौन भटका हुआ है। (४२) क्या तुम ने उस शख़्स को देखा, जिस ने नफ़्स की ख़्वाहिश को माबूद बना रखा है, तो क्या तुम उस पर निगहबान हो सकते हो ? (४३) या तुम यह ख़्याल करते हो कि इन में अक्सर सुनते या समझते हैं ? (नहीं) ये तो चौपायों की तरह के हैं बल्कि उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं★(४४) भला तुम ने अपने परवरदिगार (की क़ुदरत) को नहीं देखा कि वह साए को किस तरह लंबा कर (के फैला) देता है और अगर वह चाहता तो उस को (बे-हरकत) ठहरा रखता, फिर सूरज को उस का रहनुमा बना देता है। (४५) फिर हम उस को धीरे-धीरे अपनी तरफ़ समेट लेते हैं। (४६) और वही तो है, जिस ने रात को तुम्हारे लिए पर्दा और नींद को आराम बनाया और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त ठहराया। (४७) और वही तो है, जो अपनी रहमत के मेंह के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है और हम आसमान से पाक (और निथरा हुआ) पानी बरसाते हैं। (४८) ताकि इस से मुर्दा शहर (यानी बंजर ज़मीन) को ज़िंदा कर दें और फिर हम उसे बहुत से चौपायों और आदमियों को, जो हमने पैदा किए हैं, पिलाते हैं। (४९) और हमने इस (क़ुरआन की आयतों) को तरह-तरह से लोगों में बयान किया ताकि नसीहत पकड़ें, मगर बहुत से लोगों ने इंकार के सिवा क़ुबूल न किया। (५०) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला भेज देते। (५१) तो तुम काफ़िरों का कहा न मानो और उनसे इस क़ुरआन के हुक्म

(पृष्ठ ५७५ का शेष)
को इस तरफ़ तवज्जोह देने और उन की तिलावत में लगे रहने की तौफ़ीक़ बख़्शे ताकि वे उन पर अमल करें और उन को दोनों दुनिया की कामियाबी हासिल हो।

★रु. ४/२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व हुवल्लज़ी म-र-जल्-बह्‌रैनि हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुंव्-व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुंव्
व ज-अ़-ल बैनहुमा बर्ज़ख़ंव-व हि़जरम्-मह़्जूरा (५३) व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़
मिनल्माइ ब-श-रन् फ़-ज-अ़-लहू न-स-बंव्-व सिह्‌रन्‌ᵇ व का-न रब्बु-क क़दीरा (५४)
व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम्ᵇ व कानल्काफ़िरु
अ़ला रब्बिही ज़हीरा (५५) व मा
अर्-सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा
(५६) क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन्
अज्रिन् इल्ला मन् शा-अ अंय्यत्तख़ि-ज़ इला
रब्बिही सबीला (५७) व त-वक्कल्
अ़-लल्-ह़य्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह़्
बिह़म्दिही ᵇ व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि
अ़िबादिही ख़बीरा ع (५८)
अ्ल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर-ज़ व मा
बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा
अ़-लल्अ़र्शि ع अर्रह़्मानु फ़स् - अल् बिही
ख़बीरा (५९) व इज़ा क़ी-ल लहुमुस्जुदू
लिर्रह़्मानि क़ालू व मर्रह़्मानु ق अ-नस्जुदु
लिमा तअ्मुरुना व ज़ादहुम् नुफ़ूरा ★ □ (६०) तबार-कल्लज़ी ज-अ़-ल फ़िस्समाइ
बुरूजंव्-व ज-अ़-ल फ़ीहा सिराजंव्-व क़-म-रम्-मुनीरा (६१) व हुवल्लज़ी ज-अ़-
लल्लै-ल वन्नहा-र ख़िल्फ़तल्लिमन् अरा-द अंय्यज़्ज़क्क-र औ अरा-द शुकूरा (६२)
व अ़िबादुर्रह़्मानिल्लज़ी-न यम्शू-न अ़लल्अर्ज़ि हौनंव्-व इज़ा ख़ा-त़-बहुमुल्-जाहिलू-न
क़ालू सलामा (६३) वल्लज़ी-न यबीतू-न लिरब्बिहिम् सुज्जदंव्-व क़ियामा (६४)
वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्ब-नस्रिफ़ अ़न्ना अ़ज़ा-ब जहन्न-म صلے इन्-न अ़ज़ाबहा का-न
ग़रामा صلے (६५) इन्नहा सा-अत् मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा (६६) वल्लज़ी-न इज़ा
अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व का-न बै-न ज़ालि-क क़वामा (६७)

جاهدهم به جهادا كبيرا ﴿٥٢﴾ وهو الذي مرج البحرين هذا عذب
فرات وهذا ملح اجاج وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ﴿٥٣﴾ و
هو الذي خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا وكان ربك قديرا ﴿٥٤﴾
ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم وكان الكافر على
ربه ظهيرا ﴿٥٥﴾ وما ارسلنك الا مبشرا ونذيرا ﴿٥٦﴾ قل ما اسئلكم عليه
من اجر الا من شاء ان يتخذ الى ربه سبيلا ﴿٥٧﴾ وتوكل على
الحي الذي لا يموت وسبح بحمده وكفى به بذنوب عباده خبيرا ﴿٥٨﴾
الذي خلق السموت والارض وما بينهما في ستة ايام ثم استوى
على العرش الرحمن فسئل به خبيرا ﴿٥٩﴾ واذا قيل لهم اسجدوا
للرحمن قالوا وما الرحمن انسجد لما تأمرنا وزادهم نفورا ﴿٦٠﴾
تبرك الذي جعل في السماء بروجا وجعل فيها سرجا وقمرا منيرا ﴿٦١﴾
وهو الذي جعل اليل والنهار خلفة لمن اراد ان يذكر او اراد
شكورا ﴿٦٢﴾ وعباد الرحمن الذين يمشون على الارض هونا و
اذا خاطبهم الجهلون قالوا سلما ﴿٦٣﴾ والذين يبيتون لربهم
سجدا وقياما ﴿٦٤﴾ والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم
ان عذابها كان غراما ﴿٦٥﴾ انها ساءت مستقرا ومقاما ﴿٦٦﴾ و
الذين اذا انفقوا لم يسرفوا ولم يقتروا وكان بين ذلك قواما ﴿٦٧﴾

·मु· अ़ि मु त क़. ८ ★ रु. ५/३ आ १६ □ सज्दः ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के मुताविक़ बड़े ज़ोर से लड़ो। (५२) और वही तो है जिस ने दो नदियों को मिला दिया, एक का पानी मीठा है, प्यास बुझाने वाला और दूसरे का खारी है छाती जलाने वाला और दोनों के दर्मियान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी। (५३) और वही तो है, जिस ने पानी से आदमी पैदा किया, फिर उस को नसब वाला और दामादी रिश्ते वाला[1] वनाया और तुम्हारा परवरदिगार (हर तरह की) क़ुदरत रखता है। (५४) और ये लोग ख़ुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ की पूजा करते हैं कि जो न उन को फ़ायदा पहुचा सके और न नुक़्सान और काफ़िर अपने परवरदिगार की मुख़ालफ़त में बड़ा ज़ोर मारता है। (५५) और हमने (ऐ मुहम्मद !) तुम को सिर्फ़ ख़ुशी और अज़ाब की ख़बर सुनाने को भेजा है। (५६) कह दो कि मैं तुम से इस (काम) का मुआवज़ा नहीं मांगता। हां, जो शख़्स चाहे अपने परवरदिगार की तरफ़ (जाने का) रास्ता अख़्तियार कर ले। (५७) और उस (ख़ुदा-ए-) ज़िंदा पर भरोसा रखो जो (कभी) नहीं मरेगा और उस की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो और वह अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बर रखने को काफ़ी है। (५८) ∴जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा, ∴(वह जिसका नाम रहमान यानी) बड़ा मेहरबान (है), तो उसका हाल किसी बा-ख़बर से मालूम कर लो, (५९) और जब इन (काफ़िरों) से कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या ? क्या जिसके लिए तुम हम से कहते हो, हम उस के आगे सज्दा करें ? और उस से विदकते हैं। (६०)★□

(और ख़ुदा) बड़ी बरकत वाला है, जिस ने आसमानों में बुर्ज बनाए और उन में (सूरज का निहायत रोशन) चिराग़ और चमकता हुआ चांद भी बनाया। (६१) और वही तो है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-(जाने) वाला बनाया।[2] (ये बातें) उस शख़्स के लिए, जो ग़ौर करना चाहे या शुक्र-गुज़ारी का इरादा करे (सोचने और समझने की हैं)। (६२) और ख़ुदा के बन्दे तो वे हैं जो ज़मीन पर आहिस्तगी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उन से (जाहिलाना) बात-चीत करते हैं तो सलाम कहते हैं। (६३) और वे जो अपने परवरदिगार के आगे सज्दे कर के और (इज़्ज़त व अदब से) खड़े रह कर रातें बसर करते हैं। (६४) और वे जो दुआ मांगते रहते हैं कि ऐ परवरदिगार ! दोज़ख़ के अज़ाब को हम से दूर रखियो कि उस का अज़ाब बड़ी तक्लीफ़ की चीज़ है। (६५) और दोज़ख़ ठहरने और रहने की बहुत बुरी जगह है। (६६) और वे कि जब ख़र्च करते हैं तो न बे-जा उड़ाते हैं और न तंगी को काम में लाते हैं, बल्कि एतदाल के साथ, न

१. किसी का बाप, किसी का बेटा, किसी का ससुर, किसी का दामाद बना दिया।

२. जानशीं के यह मानी कि वह जाती है, तो यह आता है और यह जाता है तो वह आती है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लज़ी-न ला यद्ऊ-न म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र व ला यक़्तुलूनन्-नफ़्सल्लती
ह़र्रमल्लाहु इल्ला बिल्ह़क़्क़ि व ला यज़्नू-न ० व मंय्यफ़्-अ़ल् ज़ालि-क यल्-क़
असामंय- ० (६८) युज़ाअफ़् लहुल्अ़ज़ाबु यौमल्क़ियामति व यख़्लुद्
फ़ीहि मुहाना ० (६९) इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल अ़-म-लन्
सालिह़न् फ़-उलाइ - क युबद्दिलुल्लाहु
सय्यिआतिहिम् ह़-स-नातिन् ० व कानल्लाहु
ग़फ़ूरर्-रह़ीमा (७०) व मन् ता-ब व
अ़मि-ल सालिह़न् फ़-इन्नहू यतूबु इलल्लाहि
मताबा (७१) वल्लज़ी-न ला यश्हदूनज़्-
ज़ू-र ० व इज़ा मर्रू बिल्लग़्वि मर्रू
किरामा (७२) वल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू
बिआयाति रब्बिहिम् लम् यख़िर्रू अ़लैहा
सुम्मंव्-व अ़ुम्याना (७३) वल्लज़ी-न यक़ूलू-न
रब्बना हब्-लना मिन् अज़्वाजिना व
ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र - त अअ्-युनिंव्वज्अ़ल्ना
लिल्मुत्तक़ी-न इमामा (७४) उलाइ-क
युज्ज़ौनल्-ग़ुर्-फ़-त बिमा स-बरू व युलक़्क़ौ-न
फ़ीहा तह़िय्यतुंव् - व सलामा ० (७५)
ख़ालिदी-न फ़ीहा ० ह़सुनत् मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा (७६) क़ुल् मा यअ्-बउ बिकुम्
रब्बी लौला दुआउकुम् ० फ़-क़द् कज़्ज़ब्तुम् फ़सौ-फ़ यकूनु लिज़ामा ★● (७७)

الشعرآء ٢٦ ٢٩٢ وقال الذين ١٩

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ
اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝٦٨ يُّضٰعَفْ
لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝٦٩ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ
وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٧٠ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ
مَتَابًا ۝٧١ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝٧٢
وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝٧٣ وَالَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا
لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝٧٤ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا
تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝٧٥ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٧٦ قُلْ مَا
يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَاۗؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝٧٧
سُوْرَةُ الشُّعَرَاۗءِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَتَانِ وَسَبْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَحَدَ عَشَرَ رُكُوْعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
طٰسٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ۝٣ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ
لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝٤ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا
عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ۝٥ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰۗؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

منزل ٥

२६ सूरतुश्-शु-अ़राइ ४७

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ५६८९ अक्षर, १३४७ शब्द, २२७ आयतें और ११ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

ता-सीम्-मीम् (१) तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-मुबीन (२) ल-अ़ल्ल-क
बाख़िअ़ुन् नफ़्स-क अल्ला यकूनू मुअ्मिनीन (३) इन् न-शअ् नुनज़्ज़िल् अ़लैहिम्
मिनस्समाइ आ-य-तन् फ़-ज़ल्लत् अअ्-नाक़ुहुम् लहा ख़ाज़िईन (४) व मा यअ्तीहिम्
मिन् ज़िक्रिम्-मिनर्रह़्मानि मुह़-दसिन् इल्ला कानू अ़न्हु मुअ्-रिज़ीन (५)
फ़-क़द् कज़्ज़बू फ़-स-यअ्तीहिम् अम्बाउ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (६)

★रु. ६/४ आ १७ ● रुबअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज़रूरत से ज़्यादा, न कम। (६७) और वे जो ख़ुदा के साथ किसी और माबूद को नहीं पुकारते और जिस जानदार को मार डालना ख़ुदा ने हराम किया है, उस को क़त्ल नहीं करते, मगर जायज़ तरीक़े (यानी शरीअत के हुक्म) से और बद-कारी नहीं करते और जो यह काम करेगा, सख़्त गुनाह में पड़ा होगा। (६८) क़ियामत के दिन उस को दूना अज़ाब होगा और ज़िल्लत व ख़्वारी से हमेशा उस में रहेगा। (६९) मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो ऐसे लोगों के गुनाहों को ख़ुदा नेकियों से बदल देगा और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (७०) और जो तौबा करता और नेक अमल करता है, तो बेशक वह ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ करता है। (७१) और वे जो झूठी गवाही नहीं देते और जब उन को बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रने का इत्तिफ़ाक़ हो तो बुज़ुर्गों जैसे अन्दाज़ से गुज़रते हैं। (७२) और वे कि जब उन को परवरदिगार की बातें समझायी जाती हैं तो उन पर अंधे और बहरे हो कर नहीं गिरते, (बल्कि ग़ौर व फ़िक्र से सुनते हैं)। (७३) और वे जो (ख़ुदा से) दुआ मांगते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम को हमारी बीवियों की तरफ़ से (दिल का चैन) और औलाद की तरफ़ से आंख की ठंडक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का इमाम बना। (७४) इन (ख़ूबियों के) लोगों को उन के सब्र के बदले ऊंचे-ऊंचे महल दिए जाएंगे और वहां फ़रिश्ते उन से दुआ व सलाम के साथ मुलाक़ात करेंगे। (७५) उसमें वे हमेशा रहेंगे और वह ठहरने और रहने की बहुत ही उम्दा जगह है। (७६) कह दो कि अगर तुम (ख़ुदा को) नहीं पुकारते तो मेरा परवरदिगार भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता। तुम ने झुठलाया है, सो उस की सज़ा (तुम्हारे लिए) लाज़िम (ज़रूरी) होगी। (७७)★□

२६ सूरः शुअ़रा ४७

सूरः शुअ़रा मक्की है और इस में दो सौ सत्ताईस आयतें और ग्यारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा-सीम्-मीम्। (१) ये रोशन किताब की आयतें हैं। (२) (ऐ पैग़म्बर!) शायद तुम इस (रंज) से कि ये लोग ईमान नहीं लाते, अपने आप को हलाक कर दोगे। (३) अगर हम चाहें तो इन पर आसमान से निशानी उतार दें, फिर इन की गरदनें उस के आगे झुक जाएं (४) और उन के पास (ख़ुदा-ए-) रहमान की तरफ़ से कोई नयी नसीहत नहीं आती, मगर उस से मुंह फेर लेते हैं (५) सो ये तो झुठला चुके, अब इन को उस चीज़ की हक़ीक़त मालूम होगी, जिस की हंसी उड़ाते

★रु. ६/४ आ १७ ● रुब्अ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-व-लम् यरौ इलल्अर्ज़ि कम् अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि जौजिन् करीम (७)
इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (८) व
इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम ★ (९) व इज् नादा रब्बु-क मूसा
अनिअ्तिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन ۙ (१०) क़ौ-म फ़िर्औ - न ط अला यत्तक़ू - न
(११) क़ा - ल रब्बि इन्नी अख़ाफ़ु
अंय्युकज़्ज़िबून ط (१२) व यज़ीक़ु सद्री
व ला यन्तलिक़ु लिसानी फ़-अर्सिल् इला
हारून (१३) व लहुम् अ़लय्-य ज़म्बुन्
फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून ج (१४) क़ा - ल
कल्ला ج फ़ज़् - हबा बिआयातिना इन्ना
म-अ़कुम् मुस्तमिऊन (१५) फ़अ्तिया
फ़िर्औ-न फ़क़ूला इन्ना रसूलु रब्बिल् -
आलमीन ۙ (१६) अन् अर्सिल् म-अ़ना
बनी इस्राईल ط (१७) क़ा-ल अ-लम्
नुरब्बि-क फ़ीना वलीदंव्-व लबिस्-त फ़ीना
मिन् अ़ुमुरि - क सिनीन ۙ (१८)
व फ़-अ़ल्-त फ़अ्-ल-त-कल्लती फ़-अ़ल्-त व अन्-त
मिनल्काफ़िरीन (१९) क़ा-ल फ़-अ़ल्तुहा

الشعراء ٢٦ — ٢٩٣ — وقال الذين ١٩

يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ
زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝٧ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ وَ
اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٩ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ ع ٥
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۗ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝١١ قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَخَافُ
اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝١٢ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ
اِلٰى هٰرُوْنَ ۝١٣ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝١٤ قَالَ
كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝١٥ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ
فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٧
قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۝١٨ وَ
فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٩ قَالَ فَعَلْتُهَآ
اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝٢٠ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ
رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢١ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ
اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٢٢ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٣ قَالَ
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٢٤
قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝٢٥ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝٢٦ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ۝٢٧
قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢٨

منزل ٥

इज़ंव्-व अ-न मिनज़्ज़ाल्लीन ط (२०) फ़-फ़रर्तु मिन्कुम् लम्मा ख़िफ़्तुकुम्
फ़-व-ह-ब ली रब्बी हुक्मंव्-व ज-अ़-लनी मिनल्-मुर्सलीन (२१) व
तिल्-क निअ़्-मतुन् तमुन्नुहा अ़लय्-य अन् अ़ब्बत्-त बनी इस्राईल ط (२२) क़ा-ल
फ़िर्औनु व मा रब्बुल्-आलमीन ط (२३) क़ा-ल रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि
व मा बैनहुमा ط इन् कुन्तुम् मूक़िनीन (२४) क़ा-ल लिमन् हौलहू अला
तस्तमिऊन (२५) क़ा-ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वलीन (२६)
क़ा-ल इन्-न रसूलकुमुल्लज़ी उर्सि-ल इलैकुम् ल-मज्नून् (२७) क़ा-ल रब्बुल्-
मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व मा बैनहुमा ط इन् कुन्तुम् तअ़्क़िलून (२८)

★रु. १/५ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

थे। (६) क्या उन्हों ने ज़मीन की तरफ़ नहीं देखा कि हम ने उस में हर क़िस्म की कितनी उम्दा चीज़ें उगायी हैं। (७) कुछ शक नहीं कि इस में (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानी है, मगर ये अक्सर ईमान लाने वाले नहीं (८) और तुम्हारा परवरदिगार ग़ालिब (और) मेहरबान है। (९)★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को पुकारा कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (१०) (यानी) फ़िऔ़न की क़ौम के पास, क्या यह डरते नहीं? (११) उन्हों ने कहा कि मेरे परवरदिगार मैं डरता हूं कि ये झूठा समझें। (१२) और मेरा दिल तंग होता है और मेरी ज़ुबान रुकती है, तो हारून को हुक्म भेज (कि मेरे साथ चलें)। (१३) और उन लोगों का मुझ पर एक गुनाह (यानी क़िब्ती के ख़ून का दावा) भी है, सो मुझे यह भी डर है कि मुझ को मार ही डालें (१४) फ़रमाया हरगिज़ नहीं ! तुम दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। (१५) तो दोनों फ़िऔ़न के पास जाओ और कहो कि हम तमाम जहान के मालिक के भेजे हुए हैं। (१६) (और इसलिए आए हैं) कि आप बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दें। (१७) (फ़िऔ़न ने मूसा से) कहा, क्या हम ने तुम को कि अभी बच्चे थे, परवरिश नहीं किया और तुम ने वर्षों हमारे यहां उम्र बसर (नहीं) की ? (१८) और तुम ने एक और काम किया था, जो किया, तुम ना-शुक्रे मालूम होते हो (१९) (मूसा ने) कहा कि (हां,) वह हरकत मुझ से अचानक हो गयी थी, और मैं ख़ताकारों में था। (२०) तो जब मुझे तुम से डर लगा तो तुम में से भाग गया, फिर ख़ुदा ने मुझ को नुबूवत व इल्म बख़्शा और मुझे पैग़म्बरों में से किया। (२१) और (क्या) यही एहसान है जो आप मुझ पर रखते हैं कि आप ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रखा है[1] (२२) फ़िऔ़न ने कहा कि तमाम जहान का मालिक क्या ? (२३) कहा कि आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम लोगों को यक़ीन हो। (२४) फ़िऔ़न ने अपने अहाली-मवाली से कहा कि क्या तुम सुनते नहीं ? (२५) (मूसा ने) कहा कि तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का मालिक। (२६) (फ़िऔ़न ने) कहा कि (यह) पैग़म्बर, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, बावला है। (२७) (मूसा ने) कहा कि पूरब और पच्छिम और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम को समझ हो।(२८) (फ़िऔ़न ने) कहा कि अगर तुम ने

१. गो मूसा अलैहिस्सलाम के साथ फ़िऔ़न ने सुलूक किया और उन की अच्छी तरह और एक मुद्दत तक परवरिश

(शेष पृष्ठ ५८५ पर)

★रु. १/५ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल ल-इनित्त-ख़ज़्-त इलाहन् ग़ैरी ल-अजअ़लन्न-क मिनल्-मस्जूनीन (२९)
क़ा-ल अ-वलौ जिअ्तु-क बिशैइम्-मुबीन ح (३०) क़ा-ल फ़अ्ति बिही
इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (३१) फ़-अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्-बानुम्-
मुबीनुं व- ج (३२) व न-ज़-अ़ य-दहू फ़इज़ा हि-य बैज़ाउ लिन्नाज़िरीन
★ (३३) क़ा-ल लिल-म-लइ हौलहू इन्-न
हाज़ा ल-साहिरुन् अ़लीम ॥ (३४)
युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम्
बिसिह्रिही صلے फ़ माज़ा तअ्मुरून
(३५) क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु वब्-अ़स्
फ़िलमदाइनि हाशिरीन ॥ (३६) यअ्तू-क
बिकुल्लि सह्हारिन् अ़लीम (३७)
फ़जुमिअ़स्स-ह्-रतु लिमीक़ाति यौमिम्-
मअ्-लूम ॥ (३८) व क़ी-ल लिन्नासि
हल् अन्तुम् मुज्तमिअ़ून ॥ (३९) ल-अ़ल्लना
नत्तबिअ़ुस्स-ह्-र-त इन् कानू हुमुल्-ग़ालिबीन
(४०) फ़-लम्मा जाअस्स-ह्-रतु क़ालू
लिफ़िर्औ-न अ-इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना
नह्नुल्-ग़ालिबीन (४१) क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् इज़ल्लमिनल्-मुक़र्रबीन
(४२) क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (४३) फ़-अल्क़ौ
हिबालहुम् व अ़िसिय्यहुम् व क़ालू बिअ़िज़्ज़ति फ़िर्औ-न इन्ना ल-नह्नुल्-
ग़ालिबून (४४) फ़-अल्क़ा मूसा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा
यअ्फ़िकून ج (४५) फ़-उल्क़ियस्स-ह्-रतु साजिदीन ॥ (४६) क़ालू
आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन ॥ (४७) रब्बि मूसा व हारून (४८)
क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आ-ज़-न लकुम् ح इन्नहू लकबीरुकुमुल्लज़ी
अ़ल्ल-मकुमुस्-सिह्-र ح फ़-ल-सौ-फ़ तअ्-लमू-न ط लउक़त्तिअ़न्-न
ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िव-व लउसल्लिबन-न-कुम् अज्मअ़ीन
(४९) क़ालू ला ज़ै-र ز इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून ح (५०)

الشعرآء ٢٦ ٢٩٣ وقال الذين ١٩

قال لئن اتخذت الها غيري لاجعلنك من المسجونين ﴿٢٩﴾
قال اولو جئتك بشيء مبين ﴿٣٠﴾ قال فات به ان كنت من
الصدقين ﴿٣١﴾ فالقى عصاه فاذا هي ثعبان مبين ﴿٣٢﴾ ونزع
يده فاذا هي بيضاء للنظرين ﴿٣٣﴾ قال للملا حوله ان هذا
لسحر عليم ﴿٣٤﴾ يريد ان يخرجكم من ارضكم بسحره فماذا
تامرون ﴿٣٥﴾ قالوا ارجه واخاه وابعث في المدائن حشرين ﴿٣٦﴾
ياتوك بكل سحار عليم ﴿٣٧﴾ فجمع السحرة لميقات يوم معلوم ﴿٣٨﴾
وقيل للناس هل انتم مجتمعون ﴿٣٩﴾ لعلنا نتبع السحرة ان
كانوا هم الغلبين ﴿٤٠﴾ فلما جاء السحرة قالوا لفرعون ائن
لنا لاجرا ان كنا نحن الغلبين ﴿٤١﴾ قال نعم وانكم
اذا لمن المقربين ﴿٤٢﴾ قال لهم موسى القوا ما انتم ملقون ﴿٤٣﴾
فالقوا حبالهم وعصيهم وقالوا بعزة فرعون انا لنحن الغلبون ﴿٤٤﴾
فالقى موسى عصاه فاذا هي تلقف ما يافكون ﴿٤٥﴾ فالقي السحرة
سجدين ﴿٤٦﴾ قالوا امنا برب العلمين ﴿٤٧﴾ رب موسى وهرون ﴿٤٨﴾
قال امنتم له قبل ان اذن لكم انه لكبيركم الذي علمكم
السحر فلسوف تعلمون لاقطعن ايديكم وارجلكم من خلاف
ولاصلبنكم اجمعين ﴿٤٩﴾ قالوا لا ضير انا الى ربنا

منزل ٥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेरे सिवा किसी और को माबूद बनाया, तो मैं तुम्हें क़ैद कर दूंगा। (२९) (मूसा ने) कहा, चाहे मैं आप के पास रोशन चीज़ लाऊं (यानी मोजज़ा?)। (३०) (फ़िऔन ने) कहा, अगर सच्चे हो तो उसे लाओ (दिखाओ)। (३१) पस उन्हों ने अपनी लाठी डाल दी, तो वह उसी वक़्त खुला अज़्दहा बन गयी। (३२) और अपना हाथ जो निकाला, तो उसी दम देखने वालों के लिए सफ़ेद (बर्राक़) नज़र आने लगा। (३३) ★

फ़िऔन ने अपने पास के सरदारों से कहा कि यह तो फ़न में कामिल जादूगर है। (३४) चाहता है कि तुम को अपने जादू (के ज़ोर) से अपने मुल्क से निकाल दे, तो तुम्हारी क्या राय है? (३५) उन्हों ने कहा कि उस के और उस के भाई (के बारे में) कुछ ठहरिए और शहरों में नक़ीब भेज दीजिए, (३६) कि सब माहिर जादूगरों को (जमा कर के) आप के पास ले आएं। (३७) तो जादूगर एक मुक़र्रर दिन की मीयाद पर जमा हो गए (३८) और लोगों से कह दिया गया कि तुम (सब) को इकट्ठे हो जाना चाहिए, (३९) ताकि अगर जादूगर ग़ालिब रहें तो हम उन की पैरवी करने वाले हो जाएं। (४०) जब जादूगर आये, तो फ़िऔन से कहने लगे कि अगर हम ग़ालिब रहें, तो हमें इनाम भी मिलेगा? (४१) फ़िऔन ने कहा, हां, और तुम मुक़र्रिबों में दाख़िल हो जाओगे। (४२) मूसा ने उन से कहा कि जो चीज़ डालनी चाहते हो, डालो। (४३) तो उन्हों ने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और कहने लगे कि फ़िऔन के इक़बाल की क़सम! हम ज़रूर ग़ालिब रहेंगे। (४४) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीज़ों को, जो जादूगरों ने बनायी थीं, निगलने लगी। (४५) तब जादूगर सज्दे में गिर पड़े। (४६) (और) कहने लगे कि हम तमाम जहान के मालिक पर ईमान लाए, (४७) जो मूसा और हारून का मालिक है। (४८) फ़िऔन ने कहा, क्या इस से पहले कि मैं तुम को इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आए? बेशक यह तुम्हारा बड़ा है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है। सो बहुत जल्द तुम (इस का अंजाम) मालूम कर लोगे कि मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ तरफ़ से काट दूंगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूंगा। (४९) उन्हों ने कहा, कुछ नुक़्सान (की बात) नहीं। हम अपने परवरदिगार की

(पृष्ठ ५८३ का शेष)

की, मगर मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में अपनी क़ौम का ज़्यादा ख़्याल किया, जिसे इस ज़ालिम ने निहायत ज़िल्लत की हालत में रखा था और ऊंचे ख़्याल वाले नेक दिल लोग अपनी ज़ात के बारे में हमेशा अपनी क़ौम की भलाए को अहम समझा करते हैं, इस लिए उन्हों ने फ़िऔन का एहसान सुन कर यह जवाब दिया कि भला आप का मुझ पर यही एहसान है कि आप ने मेरी क़ौम को ग़ुलाम बना रखा और ज़िल्लत और मुसीबत में फंसा रखा है। एहसान तो तब था जब मेरी क़ौम के साथ भी सुलूक किया जाता।

★रु. २/६ आ २४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्ना नत्मअु अंय्यग़्फ़ि-र लना रब्बुना ख़तायाना अन् कुन्ना अव्वलल्-
मुअ्मिनीन ط ★ (५१) व औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअिबादी
इन्नकुम् मुत्तबअून (५२) फ़-अर्स-ल फ़िर्औनु फ़िलमदाइनि हाशिरीन ج (५३)
इन्-न हाउलाइ ल-शिर्ज़ि - म-तुन् क़लीलून ل (५४) व इन्नहुम् लना
लग़ाइज़ून ل (५५) व इन्ना ल-जमीअुन्
हाज़िरून ط (५६) फ़-अख़्रज्-नाहुम् मिन्
जन्नातिंव्-व अुयूनिंव- ل (५७) व कुनूज़िंव्-व
मक़ामिन् करीम ل (५८) कज़ालि-क ط
व औरस्नाहा बनी इस्राईल ط (५९)
फ़-अत्बअूहुम् मुश्रिक़ीन (६०) फ़-लम्मा
तराअल् - जम्आनि क़ा-ल अस्हाबु मूसा
इन्ना ल-मुद्रकून ج (६१) क़ा-ल कल्ला ج
इन-न मअि-य रब्बी स-यह्दीन (६२) फ़-औहैना
इला मूसा अनिज़्रिब् बिअसाकल् - बह्-र ط
फ़न्फ़-ल-क़ फ़-का-न कुल्लु फ़िर्क़िन् कत्तौदिल्-
अज़ीम ج (६३) व अज़्-लफ़्ना सम्मल्-
आख़रीन ج (६४) व अन्जैना मूसा व
मम्-म-अहू अज्मअीन ج (६५) सुम् - म
अग़-रक़नल्-आख़रीन ط (६६) इन् - न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् ط व मा
का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (६७) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-रहीम
★ (६८) वत्लु अलैहिम् न - ब - अ इब्राहीम ▨ (६९) इज़् क़ा - ल
लिअबीहि व क़ौमिही मा तअ्-बुदून (७०) क़ालू नअ्-बुदु अस्-नामन् फ़-न-ज़ल्लु
लहा आकिफ़ीन (७१) क़ा-ल हल् यस्मअूनकुम् इज़् तद्अून ل (७२) औ यन्फ़अू-न
कुम् औ यज़ुर्रून (७३) क़ालू बल् व-जद्ना आबा-अना कज़ालि-क यफ़-अलून (७४)
क़ा-ल अ-फ़-रऐतुम् मा कुन्तुम् तअ्-बुदून ل (७५) अन्तुम् व आबाउकुमुल्-
अक़्दमून صلے (७६) फ़इन्नहुम् अदुव्वुल्ली इल्ला रब्बल् - आलमीन ل
(७७) अल्लज़ी ख़-ल-क़नी फ़हु-व यह्दीन ل (७८) वल्लज़ी हु-व युत्अिमुनी
व यस्क़ीन ل (७९) व इज़ा मरिज़्तु फ़हु - व यश्फ़ीन ص (८०)

الشعرآء ٢٦ ٣٩٥ وقال الذين ١٩

منقلبون ﴿٥٠﴾ انا نطمع ان يغفر لنا ربنا خطينا ان كنا اول
المؤمنين ﴿٥١﴾ واوحينا الى موسى ان اسر بعبادي انكم متبعون ﴿٥٢﴾
فارسل فرعون في المداين حشرين ﴿٥٣﴾ ان هؤلاء لشرذمة
قليلون ﴿٥٤﴾ وانهم لنا لغائظون ﴿٥٥﴾ وانا لجميع حذرون ﴿٥٦﴾
فاخرجنهم من جنت وعيون ﴿٥٧﴾ وكنوز ومقام كريم ﴿٥٨﴾ كذلك
واورثنها بني اسراءيل ﴿٥٩﴾ فاتبعوهم مشرقين ﴿٦٠﴾ فلما تراءا الجمعن
قال اصحب موسى انا لمدركون ﴿٦١﴾ قال كلا ان معي ربي
سيهدين ﴿٦٢﴾ فاوحينا الى موسى ان اضرب بعصاك البحر فانفلق
فكان كل فرق كالطود العظيم ﴿٦٣﴾ وازلفنا ثم الاخرين ﴿٦٤﴾ وانجينا
موسى ومن معه اجمعين ﴿٦٥﴾ ثم اغرقنا الاخرين ﴿٦٦﴾ ان في ذلك
لاية وما كان اكثرهم مؤمنين ﴿٦٧﴾ وان ربك لهو العزيز الرحيم ﴿٦٨﴾
واتل عليهم نبا ابرهيم ﴿٦٩﴾ اذ قال لابيه وقومه ما تعبدون ﴿٧٠﴾
قالوا نعبد اصناما فنظل لها عكفين ﴿٧١﴾ قال هل يسمعونكم
اذ تدعون ﴿٧٢﴾ او ينفعونكم او يضرون ﴿٧٣﴾ قالوا بل وجدنا اباءنا
كذلك يفعلون ﴿٧٤﴾ قال افرءيتم ما كنتم تعبدون ﴿٧٥﴾ انتم واباؤكم
الاقدمون ﴿٧٦﴾ فانهم عدو لي الا رب العلمين ﴿٧٧﴾ الذي خلقني
فهو يهدين ﴿٧٨﴾ والذي هو يطعمني ويسقين ﴿٧٩﴾ واذا مرضت

★रु. ३/७ आ १८ ★रु. ४/८ आ १७ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तरफ़ लौट जाने वाले हैं। (५०) हमें उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमारे गुनाह बख़्श देगा, इस लिए कि हम पहले ईमान लाने वालों में हैं। (५१)★

और हम ने मूसा की तरफ़ वह्य भेजी कि हमारे बन्दों को रात को ले निकलो कि (फ़िऔ़ नियों की तरफ़ से) तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (५२) तो फ़िऔ़ नियों ने शहरों में नक़ीब (एलानची) रवाना किए। (५३) (और कहा) कि ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। (५४) और ये हमें ग़ुस्सा दिला रहे हैं। (५५) और हम सब साज़ और सामान के साथ हैं। (५६) तो हम ने उन को बाग़ों और चश्मों से निकाल दिया, (५७) और ख़ज़ानों और उम्दा मकानों से। (५८) (उन के साथ हम ने) इस तरह (किया) और इन चीज़ों का वारिस बनी इस्राईल को कर दिया। (५९) तो उन्हों ने सूरज निकलते (यानी सुबह को) उन का पीछा किया। (६०) जब दोनों जमाअतें आमने-सामने हुईं, तो मूसा के साथी कहने लगे कि हम तो पकड़ लिए गये। (६१) मूसा ने कहा, हर गिज़ नहीं, मेरा परवरदिगार मेरे साथ है, वह मुझे रास्ता बताएगा। (६२) उस वक़्त हम ने मूसा की तरफ़ वह्य भेजी कि अपनी लाठी दरिया पर मारो तो दरिया फट गया और हर एक टुकड़ा (यों) हो गया (कि) गोया बड़ा पहाड़ (है)। (६३) और दूसरों को वहां हमने क़रीब कर दिया। (६४) और मूसा और उन के साथ वालों को (तो) बचा लिया। (६५) फिर दूसरों को डुबो दिया[1]। (६६) बेशक इस (क़िस्से) में निशानी है, लेकिन ये अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है। (६८)★

और उन को इब्राहीम का हाल पढ़ कर सुना दो, (६९) जब उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि तुम किस चीज़ को पूजते हो? (७०) वे कहने लगे कि हम बुतों को पूजते हैं और उन (की पूजा) पर क़ायम हैं। (७१) (इब्राहीम ने) कहा कि जब तुम उन को पुकारते हो, तो क्या वे तुम्हारी (आवाज़) सुनते हैं? (७२) या तुम्हें फ़ायदा दे सकते या नुक़्सान पहुंचा सकते हैं? (७३) उन्हों ने कहा, (नहीं), बल्कि हम ने अपने बाप-दादा को इसी तरह करते देखा है। (७४) (इब्राहीम ने) कहा, क्या तुम ने देखा कि जिन को तुम पूजते रहे हो, (७५) तुम भी और तुम्हारे अगले बाप-दादा भी, (७६) वे मेरे दुश्मन हैं, मगर (अल्लाह) रब्बुल आलमीन (मेरा दोस्त है), (७७) जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मुझे रास्ता दिखाता है। (७८) और वह जो मुझे खिलाता और पिलाता है। (७९) और जब मैं बीमार पड़ता हूं, तो मुझे शिफ़ा बख़्शता

१. दूसरों से मुराद फ़िऔ़न और उस की पैरवी करने वाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लज़ी युमीतुनी सुम्-म युह्यीन ﻻ (८१) वल्लज़ी अत्मअु अंय्यग़्फ़ि-र ली
ख़ती़अती यौमद्दीन ط (८२) रब्बि हब् ली हुक्मंव-व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन ﻻ
(८३) वज्अल्ली लिसा-न सिद्क़िन् फ़िल्आख़िरीन ﻻ (८४) वज्अल्नी
मिव्व-र-सति़ जन्नति़न्नअीम ﻻ (८५) वग़्फ़िर लिअबी इन्नहू का-न
मिनज़्ज़ाल्लीन ﻻ (८६) व ला तुख़्ज़िनी
यौ-म युब्-असून ﻻ (८७) यौ-म ला यन्फ़अु
मालुंव्-व ला बनून ﻻ (८८) इल्ला मन्
अ-तल्ला-ह बिक़ल्बिन् सलीम ط (८९)
व उज़्लि-फ़तिल्-जन्नतु लिलमुत्तक़ीन ﻻ
(९०) व बुर्रिज़तिल्-जह़ीमु लिलग़ावीन ﻻ
(९१) व क़ी-ल लहुम् ऐनमा कुन्तुम्
तअ्-बुदून ﻻ (९२) मिन् दूनिल्लाहि ط
हल् यन्सुरूनकुम् औ यन्तसिरून ط (९३)
फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम् वलग़ाऊन ﻻ (९४)
व जुनूदु इब्ली-स अज्मअून ط (९५)
क़ालू व हुम् फ़ीहा यख़्तसिमून ﻻ (९६)
तल्लाहि इन् कुन्ना लफ़ी ज़लालिम्-
मुबीन ﻻ (९७) इज् नुसव्वीकुम्

الشعراء ٢٦ ٢٩٦ وقال الذين ١٩

فهو يشفين ﴿٨٠﴾ والذي يميتني ثم يحيين ﴿٨١﴾ والذي أطمع أن يغفر لي
خطيئتي يوم الدين ﴿٨٢﴾ رب هب لي حكما وألحقني بالصالحين ﴿٨٣﴾
واجعل لي لسان صدق في الآخرين ﴿٨٤﴾ واجعلني من ورثة جنة
النعيم ﴿٨٥﴾ واغفر لأبي إنه كان من الضالين ﴿٨٦﴾ ولا تخزني يوم
يبعثون ﴿٨٧﴾ يوم لا ينفع مال ولا بنون ﴿٨٨﴾ إلا من أتى الله بقلب
سليم ﴿٨٩﴾ وأزلفت الجنة للمتقين ﴿٩٠﴾ وبرزت الجحيم للغاوين ﴿٩١﴾
وقيل لهم أينما كنتم تعبدون ﴿٩٢﴾ من دون الله هل ينصرونكم أو
ينتصرون ﴿٩٣﴾ فكبكبوا فيها هم والغاوون ﴿٩٤﴾ وجنود إبليس أجمعون ﴿٩٥﴾
قالوا وهم فيها يختصمون ﴿٩٦﴾ تالله إن كنا لفي ضلال مبين ﴿٩٧﴾ إذ
نسويكم برب العالمين ﴿٩٨﴾ وما أضلنا إلا المجرمون ﴿٩٩﴾ فما لنا من
شافعين ﴿١٠٠﴾ ولا صديق حميم ﴿١٠١﴾ فلو أن لنا كرة فنكون من
المؤمنين ﴿١٠٢﴾ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ﴿١٠٣﴾ و
إن ربك لهو العزيز الرحيم ﴿١٠٤﴾ كذبت قوم نوح المرسلين ﴿١٠٥﴾
إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ﴿١٠٦﴾ إني لكم رسول أمين ﴿١٠٧﴾
فاتقوا الله وأطيعون ﴿١٠٨﴾ وما أسألكم عليه من أجر إن أجري
إلا على رب العالمين ﴿١٠٩﴾ فاتقوا الله وأطيعون ﴿١١٠﴾ قالوا أنؤمن لك
واتبعك الأرذلون ﴿١١١﴾ قال وما علمي بما كانوا يعملون ﴿١١٢﴾ إن

منزل

बिरब्बिल्-आलमीन (९८) व मा अज़ल्लना इल्लल्-मुजिरमून (९९)
फ़मा लना मिन् शाफ़िअीन ﻻ (१००) व ला सदीक़िन् ह़मीम (१०१)
फ़लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़-नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (१०२) इन्-न फ़ी
ज़ालि-क ल-आ-य-तन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१०३) व इन्-न
रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-रह़ीम ★ (१०४) कज्जबत् क़ौमु नूहि-निल्-
मुर्सलीन ع (१०५) इज् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् नूहुन् अला
तत्तक़ून ج (१०६) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन ﻻ (१०७) फ़त्तक़ुल्ला-ह
व अती़अून ج (१०८) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् ج
इन् अज्रि-य इल्ला अला रब्बिल्-आलमीन ج (१०९) फ़त्तक़ुल्ला-ह
व अती़अून ط (११०) क़ालू अ-नुअ्मिनु ल-क वत्तब-अ-कल्-अर्ज़लून ط
(१११) क़ा-ल व मा अिल्मी बिमा कानू यअ्-मलून ج (११२)

★रु. ५/९ आ ३६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (८०) और वह जो मुझे मारेगा (और) फिर ज़िंदा करेगा। (८१) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूं कि क़ियामत के दिन मेरे गुनाह बख़्शेगा। (८२) ऐ परवरदिगार! मुझे इल्म और सूझ-बूझ अता फ़रमा और नेकों में शामिल कर। (८३) और पिछले लोगों में मेरा ज़िक्र (जारी) कर। (८४) और मुझे नेमत की बहिश्त के वारिसों में कर। (८५) और मेरे बाप को बख़्श दे कि वह गुमराहों में से है। (८६) और जिस दिन लोग उठा खड़े किए जाएंगे, मुझे रुसवा न कीजियो। (८७) जिस दिन न माल ही कुछ फ़ायदा दे सकेगा और न बेटे। (८८) हां, जो शख़्स ख़ुदा के पास पाक दिल ले कर आया, (वह बच जाएगा), (८९) और बहिश्त परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी। (९०) और दोज़ख़ गुमराहों के सामने लायी जाएगी। (९१) और उन से कहा जाएगा कि जिन को तुम पूजते थे, वे वहां हैं? (९२) (यानी जिन को) ख़ुदा के सिवा (पूजते थे) क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या ख़ुद बदला ले सकते हैं? (९३) तो वे गुमराह (यानी बुत और बुतपरस्त) औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। (९४) और शैतान के लश्कर सब के सब (जहन्नम में दाख़िल होंगे)। (९५) वहां वे आपस में झगड़ेंगे और कहेंगे, (९६) कि ख़ुदा की क़सम! हम तो खुली गुमराही में थे। (९७) जब कि तुम्हें (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के बराबर ठहराते थे, (९८) और हम को इन गुनाहगारों ही ने गुमराह किया था, (९९) तो (आज) न कोई हमारा सिफ़ारिश करने वाला है, (१००) और न गर्मजोश दोस्त। (१०१) काश, हमें (दुनिया में) फिर जाना हो, तो हम मोमिनों में हो जाएं। (१०२) बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले वहीं। (१०३) और तुम्हार परवरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है। (१०४)★

नूह की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१०५) जब उन से उन के भाई नूह ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं? (१०६) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१०७) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस काम का तुम से बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही पर है। (१०९) तो ख़ुदा से डरो और मेरे कहने पर चलो। (११०) वे बोले कि क्या हम तुम को मान लें और तुम्हारी पैरवी करने वाले तो नीच लोग हुए हैं। (१११) (नूह ने)

★रु. ५/९ आ ३६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन् हिसाबुहुम् इल्ला अ़ला रब्बी लौ तश्अुरून ج (११३) व मा अ-न
बितारिदिल् - मुअ्मिनीन ج (११४) इन् अ-न इल्ला नज़ीरुम् - मुबीन ط
(११५) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि यानूहु ल-तकूनन्-न मिनल्-मर्जूमीन ط (११६)
क़ा-ल रब्बि इन्-न क़ौमी कज़्ज़बून صلے ج ● (११७) फ़फ़्-तह् बैनी व बैनहुम्

حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾
إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ
الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ
فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَن مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ فَأَنجَيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ
فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾
كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾ أَتَبْنُونَ بِكُلِّ
رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾ وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾ وَإِذَا
بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِي
أَمَدَّكُم بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمَدَّكُم بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ
أَمْ لَمْ تَكُن مِّنَ الْوَاعِظِينَ ﴿١٣٦﴾ إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا
كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ
الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾ إِنِّي لَكُمْ

फ़तहंव्-व नज्जिनी व मम्मअि-य मिनल्-
मुअ्मिनीन (११८) फ़-अन्जैनाहु व मम्म-अहू
फ़िल्फ़ुल्किल्-मश्हून ج (११९) सुम् - म
अग्-रक़्-ना बअ्-दुल्-बाक़ीन ط (१२०) इन्-न
फ़ी ज़ालि-क ल-आ-य-तन् ط व मा का-न
अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (१२१) व इन्-न
रब्ब-क लहुवल्-अ़ज़ीज़ुर् - रहीम ★ (१२२)
कज़्ज़-बत् आ़दु-निल् - मुर्सलीन صلے ج (१२३)
इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् हूदुन् अला
तत्तक़ून ج (१२४) इन्नी लकुम् रसूलुन्
अमीन لا (१२५) फ़त्तक़ुल्ला - ह व
अतीअून ج (१२६) व मा अस्-अलुकुम्
अ़लैहि मिन् अज्रिन् ج इन् अज्रि - य
इल्ला अ़ला रब्बिल् - आ़लमीन ط (१२७)
अ-तब्नू-न बिकुल्लि रीअिन् आ-य-तन् तअ्-बसून لا (१२८) व तत्तख़िज़ू-न
मसानि-अ़ ल-अ़ल्लकुम् तख़्लुदून ج (१२९) व इज़ा ब-तश्तुम् ब-तश्तुम्
जब्बारीन ج (१३०) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून ج (१३१) वत्तक़ुल्लज़ी
अ-म-द्दकुम् बिमा तअ्-लमून ج (१३२) अ-मद्दकुम् बि-अन्आ़मिंव्-व बनीन ج
(१३३) व जन्नातिंव्-व अ़ुयूनिन् ج (१३४) इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब
यौमिन् अ़ज़ीम ط (१३५) क़ालू सवाउन् अ़लैना अ व-अ़ज़्-त अम् लम्
तकुम्-मिनल् - वाअ़िज़ीन لا (१३६) इन् हाज़ा इल्ला ख़ुलुक़ुल् - अव्वलीन لا
(१३७) व मा नह्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन ج (१३८) फ़कज़्ज़बूहु फ़अह्लक्नाहुम् ط
इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-य-तन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१३९)
व इन्-न रब्ब - क लहुवल् - अ़ज़ीज़ुर् - रहीम ★ (१४०) कज़्-ज - बत्
समूदुल् - मुर्सलीन صلے ج (१४१) इज़् क़ा - ल लहुम् अख़ूहुम् सालिहुन्
अला तत्तक़ून ج (१४२) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन لا (१४३)

● नि. १/२ ★रु. ६/१० आ १८ ★रु. ७/११ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहा कि मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते हैं। (११२) उन का हिसाबे (आमाल) मेरे परवरदिगार के ज़िम्मे है, काश ! तुम समझो। (११३) और मैं मोमिनों को निकाल देने वाला नहीं हूं। (११४) मैं तो सिर्फ़ खोल-खोल कर नसीहत करने वाला हूं। (११५) उन्हों ने कहा कि नूह अगर तुम मानोगे नहीं तो पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिए जाओगे। (११६) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार मेरी क़ौम ने तो मुझ को झुठला दिया ● (११७) सो तू मेरे और उन के दर्मियान एक खुला फ़ैसला कर दे और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं, उन को बचा ले। (११८) पस हम ने उन को और उन के साथ भरी हुई कश्ती में (सवार थे) उन को बचा लिया। (११९) फिर इस के बाद बाक़ी लोगों को डुबो दिया। (१२०) बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१२१) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। **(१२२)** ★

आद ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१२३) जब उन से उन के भाई हूद ने कहा, क्या तुम डरते नहीं ? (१२४) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१२५) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१२६) और मैं इस का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१२७) भला तुम हर ऊंची जगह पर बेकार निशान तामीर करते हो। (१२८) और महल बनाते हो, शायद तुम हमेशा रहोगे।[1] (१२९) और जब (किसी को) पकड़ते हो, तो ज़ालिमाना पकड़ते हो। (१३०) तो ख़ुदा से डरो और मेरी इताअत करो। (१३१) और उस से, जिस ने तुम को उन चीज़ों से मदद दी, जिन को तुम जानते हो, डरो। (१३२) उस ने तुम्हें चारपायों और बेटों से मदद दी, (१३३) और बाग़ों और चश्मों से, (१३४) मुझ को तुम्हारे बारे में बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब का डर है। (१३५) वे कहने लगे, हमें नसीहत करो या न करो, हमारे लिए बराबर है। (१३६) ये तो अगलों के ही तरीक़े हैं।[2] (१३७) और हम पर कोई अज़ाब नहीं आएगा, (१३८) तो उन्हों ने हूद को झुठलाया, सो हम ने उन को हलाक कर डाला। बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१३९) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१४०) ★

(और) समूद (क़ौम) ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१४१) जब उन से उन के भाई सालेह ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं ? (१४२) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१४३) तो ख़ुदा

---

१. इन लोगों को बड़ा शौक़ था ऊंचे मज़बूत मीनारे बनाने का, जिस से कुछ काम न निकले, मगर नाम और रहने की इमारतें बड़े तकल्लुफ़ से माल ख़राब करते हो। बाग़े इरम इन्हीं का मशहूर है।

२. यानी अगले लोग भी इसी तरह बहिश्त की नेमतों की तारीफ़ें किया करते थे और दोज़ख़ के अज़ाब से डराया करते थे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून ج(१४४) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् ج
इन् अज्रि-य इल्ला अला रब्बिल् - आलमीन ط (१४५) अतुतरकू-न फ़ी
मा हाहुना आमिनीन لا (१४६) फ़ी जन्नातिंव-व अुयूनिंव-لا (१४७) व
ज़ुरूअिंव-व नख़्लिन् तल्अुहा हज़ीम ج (१४८) व तन्हितू-न मिनल्जिबालि
बुयूतन् फ़ारिहीन ج (१४९) फ़त्तक़ुल्ला-ह
व अतीअून ج (१५०) व ला तुतीअू
अम्-रल्-मुस्रिफ़ीन لا (१५१) अल्लज़ी - न
युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून (१५२)
क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल् - मुसह्-ह़रीन ج
(१५३) मा अन्-त इल्ला ब-श-रुम्-
मिस्लुना صلے ج फ़अ्ति बिआ - यतिन् इन्
कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (१५४) क़ा-ल हाज़िही
ना-क़तुल्लहा शिर्बुंव्-व लकुम् शिर्बु यौमिम्-
मअ्-लूम ج (१५५) व ला तमस्सूहा
बिसूइन् फ़-यअ्ख़ु - जकुम् अज़ाबु यौमिन्
अ़ज़ीम (१५६) फ़-अ-क़रूहा फ़-अस्बहू
नादिमीन لا (१५७) फ़-अ-ख़-ज - हुमुल्-
अज़ाबु ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतन् ط
व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (१५८) व

الشعراء ٢٦ ٢٩٨ وقال الذين ١٩

رَسُولٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ۝ فِيْ
جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ۝ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ
الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ
الْمُسْرِفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْٓا
اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ۝ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝
وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا
نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ۝
اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَتَذَرُوْنَ
مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ۝ قَالُوْا لَىِٕنْ
لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ۝ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ
الْقَالِيْنَ ۝ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝
اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ

منزل ٥

इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-रहीम ★ (१५९) कज़्ज़बत् क़ौमु लूति-निल्-
मुर्सलीन صلے ج (१६०) इज् क़ा - ल लहुम् अख़ूहुम् लूतुन् अला तत्तक़ून ج
(१६१) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन لا (१६२) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून ج
(१६३) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् ج इन् अज्रि-य इल्ला अला
रब्बिल्-आलमीन ط (१६४) अ-तअ्-तूनज़्ज़ुकरा - न मिनल्-आलमीन لا (१६५)
व त-ज़-रू-न मा ख़-ल-क़ लकुम् रब्बुकुम् मिन् अज़्वाजिकुम् ط बल् अन्तुम् क़ौमुन्
आदून (१६६) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि यालूतु ल-त-कूनन्-न मिनल्-मुख़्-रजीन
(१६७) क़ा-ल इन्नी लि-अ-मलिकुम् मिनल्क़ालीन ط (१६८) रब्बि नज्जिनी
व अह्-ली मिम्मा यअ्-मलून (१६९) फ़-नज्जैनाहु व अह्-लहू अज्मअीन لا (१७०)
इल्ला अजूज़न् फ़िल्ग़ाबिरीन ج (१७१) सुम्-म दम्मर्नल्-आख़रीन ج (१७२)
व अम्तर्ना अलैहिम् म-त-रन् ج फ़सा-अ म-त-रुल् - मुन्ज़रीन (१७३)

★रु. ८/१२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

से डरो और मेरा कहा मानो, (१४४) और मैं इस का तुम से बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१४५) क्या जो चीज़ें (तुम्हें) यहां (मिलती) हैं, उन में तुम बे-ख़ौफ़ छोड़ दिए जाओगे ! (१४६) (यानी) बाग़ और चश्मे, (१४७) और खेतियां और खजूरें जिन के खोशे लतीफ़ और नाज़ुक होते हैं। (१४८) और तकल्लुफ़ से पहाड़ों को काट-काट कर घर बनाते हो, (१४९) तो ख़ुदा से डरो और मेरे कहे पर चलो। (१५०) और हद से आगे बढ़ जाने वालों की बात न मानो, (१५१) जो मुल्क में फ़साद करते हैं और सुधार नहीं करते। (१५२) वे कहने लगे कि तुम पर तो जादू की मार है। (१५३) तुम और कुछ नहीं, हमारी ही तरह के आदमी हो। अगर सच्चे हो तो कोई निशानी पेश करो। (१५४) (सालेह ने) कहा, (देखो) यह ऊंटनी है, (एक दिन) इस की पानी पीने की बारी है और एक तै दिन तुम्हारी बारी। (१५५) और इस को कोई तक्लीफ़ न देना, (नहीं तो) तुम को सख़्त अज़ाब आ पकड़ेगा। (१५६) तो उन्हों ने उस की कूंचें काट डालीं, फिर शर्मिन्दा हुए। (१५७) सो उन को अज़ाब ने आ पकड़ा। बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (१५८) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१५९)★

(और) लूत की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१६०) जब उन से उन के भाई लूत ने कहा कि तुम क्यों नहीं डरते ? (१६१) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१६२) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो, (१६३) और मैं तुम से इस (काम) का बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (ख़ुदा-ए-) रब्बुल-आलमीन के ज़िम्मे है। (१६४) क्या तुम अह्ले आलम (दुनिया वालों) में से लड़कों पर मायल होते हो ? (१६५) और तुम्हारे परवरदिगार ने जो तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां पैदा की हैं, उन को छोड़ देते हो। सच तो यह है कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (१६६) वे कहने लगे कि लूत ! अगर तुम मानोगे नहीं, तो देश-निकाला दे दिए जाओगे। (१६७) (लूत ने) कहा कि मैं तुम्हारे काम से सख़्त बेज़ार हूं। (१६८) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझ को और मेरे घर वालों को इन के कामों (के वबाल से) निजात दे। (१६९) सो हमने उन को और उन के घर वालों को, सब को निजात दी। (१७०) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह गयी। (१७१) फिर हमने औरों को हलाक कर दिया। (१७२) और उन पर मेंह बरसाया, सो जो मेंह उन (लोगों) पर बरसा, जो

★रु. ८/१२ आ १९

इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-य-तन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१७४)
व इन्-न रब्ब-क लहुवल् - अज़ीज़ुर्-रहीम ★ (१७५) कज़्ज़-ब अस्हाबुल्-
ऐकतिल्-मुर्सलीन ج (१७६) इज़् क़ा - ल लहुम् शुअैबुन् अला तत्तक़ून ج
(१७७) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन ۙ (१७८) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअूनि ج
(१७९) व मा अस्अलुकुम् अलैहि मिन्
अज्रिन् ج इन् अज्रि-य इल्ला अला रब्बिल्-
आलमीन ط (१८०) औफ़ुल्कै-ल व ला
तकूनू मिनल्-मुख़्सिरीन ج (१८१) व
ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीम ج (१८२)
व ला तब्ख़सुन्ना-स अश-या-अहुम् व ला तअ्-सौ
फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन ج (१८३) वत्तक़ुल्लज़ी
ख़-ल-क़कुम् वल् - जिबिल्ल-तल् - अव्वलीन ط
(१८४) क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल्-
मुसह्-ह़रीन ۙ (१८५) व मा अन्-त इल्ला
ब-श-रुम्-मिस्लुना व इन् नज़ुन्नु-क लमिनल्-
काज़िबीन ج (१८६) फ़-अस्क़ित् अलैना
कि-स-फ़म् - मिनस्समाइ इन् कुन् - त
मिनस्सादिक़ीन ط (१८७) क़ा-ल रब्बी
अअ्लमु बिमा तअ्-मलून (१८८) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़हुम् अज़ाबु यौमिज़्ज़ुल्लति ط
इन्नहू का-न अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (१८९) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आय-तन् ط
व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१९०) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-
रहीम ★ (१९१) व इन्नहू ल-तन्ज़ीलु रब्बिल्-आलमीन ط (१९२)
न-ज़-ल बिहिर्रूहुल्-अमीन ۙ (१९३) अला क़ल्बि-क लितकू-न मिनल्-
मुन्ज़िरीन ۙ (१९४) बिलिसानिन् अ-रबिय्यिम् - मुबीन ط (१९५) व
इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल्-अव्वलीन (१९६) अ-व-लम् यकुल्लहुम् आय-तन् अंय्यअ्-ल-महू
उलमाउ बनी इस्राई-ल ط (१९७) व लौ नज़्ज़ल्नाहु अला बअ्-ज़िल्-
अअ्-जमीन ۙ (१९८) फ़-क़-र-अहू अलैहिम् मा कानू बिही मुअ्मिनीन ط
(१९९) कज़ालि-क स - लक्नाहु फ़ी क़ुलूबिल् - मुज्रिमीन ط (२००)
ला युअ्मिनू - न बिही ह़त्ता य-र - वुल् - अज़ाबल् - अलीम ۙ (२०१)

الشعرآء ٢٦ ٢٩٩ وقال الذين ١٩

فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝١٧٣ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٧٤ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٧٥ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٧٦ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٧٧ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ
اَمِيْنٌ ۝١٧٨ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٧٩ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٨٠ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ۝١٨١
وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۝١٨٢ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا
تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝١٨٣ وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٨٤
قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ۝١٨٥ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ
لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝١٨٦ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝١٨٧ قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١٨٨ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ
عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٨٩ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ
وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٩٠ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٩١
وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٩٢ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝١٩٣ عَلٰى قَلْبِكَ
لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝١٩٤ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ۝١٩٥ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ
الْاَوَّلِيْنَ ۝١٩٦ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٩٧
وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝١٩٨ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝١٩٩
كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٢٠٠ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا

منزل ٥

★रु. ९/१३ आ १६ ★रु. १०/१४ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

डराये गये थे, वह बुरा था। (१७३) बेशक इस में निशानी है और उन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१७४) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१७५)★

और बन के रहने वालों ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१७६) जब उन से शुऐब ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं, (१७७) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१७८) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१७९) और मैं इस (काम) का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१८०) (देखो) पैमाना पूरा भरा करो और नुक़्सान न किया करो। (१८१) और तराज़ू सीधी रख कर तौला करो। (१८२) लोगों को उन की चीज़ें कम न दिया करो और मुल्क में फ़साद न करते फिरो। (१८३) और उस से डरो, जिसने तुम को और पहली खल्क़त को पैदा किया। (१८४) वे कहने लगे कि तुम पर जादू हो गया है। (१८५) और तुम और कुछ नहीं, हम ही जैसे आदमी हो और हमारा ख़्याल है कि तुम झूठे हो। (१८६) अगर सच्चे हो तो हम पर आसमान से एक टुकड़ा ला गिराओ। (१८७) (शुऐब ने) कहा कि जो काम तुम करते हो, मेरा परवरदिगार उसे ख़ूब जानता है। (१८८) तो उन लोगों ने उन को झुठलाया, पस सायबान के अज़ाब ने उन को आ पकड़ा। बेशक वह बड़े (सख़्त) दिन का अज़ाब था। (१८९) इसमें यक़ीनन निशानी है और इनमें अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१९०) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१९१)★

और यह (क़ुरआन ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ है। (१९२) इस को अमानतदार फ़रिश्ता लेकर उतरा है। (१९३) (यानी उस ने) तुम्हारे दिल पर (इल्क़ा किया है, यानी डाल दिया है) ताकि (लोगों को) नसीहत करते रहो। (१९४) (और इल्क़ा भी) खुली (ज़ोरदार) अरबी ज़ुबान में (किया है) (१९५) और इसकी ख़बर पहले पैग़म्बरों की किताबों में (लिखी हुई) है। (१९६) क्या उनके लिए यह सनद नहीं है कि बनी इस्राईल के उलेमा इस (बात) को जानते हैं। (१९७) और अगर हम इस को किसी ग़ैर ज़ुबान वाले पर उतारते। (१९८) और वह उसे उन (लोगों) को पढ़ कर सुनाता, तो ये उसे (कभी) न मानते। (१९९) इसी तरह हमने इंकार को गुनाहगारों के दिलों में दाख़िल कर दिया। (२००) वे जब तक दर्द देने वाला अज़ाब न

★रु. ९/१३ आ १६ ★रु. १०/१४ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-यअ्ति-यहुम् बग़्-त-तंव-व हुम् ला यश-अुरून ॥ (२०२) फ़-यक़ूलू हल् नह्नु
मुन्ज़रून ॥ (२०३) अ-फ़-बिअ़ज़ाबिना यस्तअ्-जिलून (२०४) अ-फ़-रऐ-त इम्-
मत्तअ्-नाहुम् सिनीन ॥ (२०५) सुम्-म जा-अहुम् मा कानू यूअदून ॥ (२०६)
मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू युमत्तअून ॥ (२०७) व मा अह्-लक्ना मिन्
क़र् - यतिन् इल्ला लहा मुन्ज़िरून
∵ (२०८) ज़िक्रा क़फ़् व मा कुन्ना
ज़ालिमीन (२०९) व मा त-नज़्ज़-लत्
बिहिश्शयातीन (२१०) व मा यम्बग़ी लहुम्
व मा यस्तती़अून ॥ (२११) इन्नहुम्
अ़निस्सम्अि ल-मअ्-ज़ूलून ॥ (२१२) फ़ला
तद्अु म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-तकू-न
मिनल् - मुअ़ज़्ज़बीन ॥ (२१३) व
अन्ज़िर् अ़शी-र-त-कल्-अक़्रबीन ॥ (२१४)
वख़्फ़िज़् जना-ह्-क लिमनित्त-ब-अ-क मिनल्-
मुअ्मिनीन ॥ (२१५) फ़-इन् अ़सौ - क
फ़क़ुल् इन्नी बरीउम् - मिम्मा तअ्-मलून ॥
(२१६) व त-व-क्कल् अ़लल्-अज़ीज़िर्रहीम ॥
(२१७) अ़ल्लज़ी यरा-क ह़ी-न तक़ूम ॥
(२१८) व तक़ल्लु-ब-क फ़िस्-साजिदीन
(२१९) इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम (२२०) हल् उनब्बिउकुम् अ़ला मन्
त-नज़्ज़लुश्-शयातीन ॥ (२२१) त-नज़्ज़लु अ़ला कुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीमिंय-
(२२२) युल्क़ूनस्सम्-अ व अक्सरुहुम् काज़िबून ॥ (२२३) वश्शु-अ़रा-उ
यत्तबिअुहुमुल्-ग़ावून ॥ (२२४) अ-लम् त-र अन्नहुम् फ़ी कुल्लि वादिंय्यहीमून ॥
(२२५) व अन्नहुम् यक़ूलू-न मा ला यफ़्-अ़लून ॥ (२२६) इल्लल्लज़ी-न
आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व ज़-क-रुल्ला-ह कसीरंव्वन्-त-सरू मिम्बअ़्-दि
मा ज़ुलिमू ॥ व स-यअ़्-लमुल्लज़ी-न ज़-लमू अय्-य मुन्क़-लबिंय्यन्क़लिबून ★ (२२७)

الشعراء ٢٦ ٣٠٠ وقال الذين ١٩

الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ
مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾
ثُمَّ جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾ وَ
مَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا
تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ
السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾
وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾ فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى
الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ
عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ
الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا
يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا
مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾
سُورَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَتِسْعُونَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
طس تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿١﴾ هُدًى وَبُشْرَىٰ

منزل ٥

२७ सूरतुन्-नम्लि ४८

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ४८७९ अक्षर, ११६७ शब्द, ९३ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

ता-सीन् क़फ़् तिल्-क आयातुल्-क़ुरआनि व किताबिम्-मुबीन ॥ (१)

∵ मु. अिं मु ता ख. ६ ★रु. ११/१५ आ ३६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देख लें, उसको नहीं मानेंगे। (२०१) वह उन पर अचानक आ पड़ेगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। (२०२) उस वक़्त कहेंगे, क्या हमें मोहलत मिलेगी ? (२०३) तो क्या ये हमारे अज़ाब को जल्दी तलब कर रहे हैं ? (२०४) भला देखो तो, अगर हम उन को वर्षों फ़ायदे देते रहें, (२०५) फिर उन पर वह (अज़ाब) आ वाक़ेअ हो, जिसका उनसे वायदा किया जाता है, (२०६) तो जो फ़ायदे ये उठाते रहे, उन के किस काम आएंगे ? (२०७) और हमने कोई बस्ती हलाक नहीं की, मगर उस के लिए नसीहत करने वाले (पहले भेज देते) थे। ∵(२०८) (ताकि) नसीहत (कर दें)∵और हम ज़ालिम नहीं हैं। (२०९) और इस (क़ुरआन) को शैतान लेकर नाज़िल नहीं हुए। (२१०) यह काम न तो उन को मुनासिब है और न वे इसकी ताक़त रखते हैं। (२११) वे (आसमानी बातों के) सुनने (की जगहों) से अलग कर दिए गए हैं। (२१२) तो ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद को मत पुकारना, वरना तुम को अज़ाब दिया जाएगा। (२१३) और अपने क़रीब के रिश्तेदारों को डर सुना दो। (२१४) और जो मोमिन तुम्हारे पैरो हो गये हैं, उन से नर्मी से पेश आओ। (२१५) फिर अगर लोग तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दो कि मैं तुम्हारे आमाल से बे-ताल्लुक़ हूं। (२१६) और (ख़ुदा-ए-) ग़ालिब (और) मेहरबान पर भरोसा रखो, (२१७) जो तुम को जब तुम (तहज्जुद के वक़्त) उठते हो, देखता है,[1] (२१८) और नमाज़ियों में तुम्हारे फिरने को भी। (२१९) बेशक वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२२०) (अच्छा,) मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं ? (२२१) हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं, (२२२) जो सुनी हुई बात (उसके कान में) डालते हैं और वे अक्सर झूठे हैं। (२२३) और शायरों की पैरवी गुमराह लोग किया करते हैं। (२२४) क्या तुमने नहीं देखा कि वे हर वादी में सर मारते फिरते हैं। (२२५) और कहते वह हैं जो करते नहीं,[2] (२२६) मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और ख़ुदा को बहुत याद करते रहें और अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद[3] बदला लिया और ज़ालिम बहुत जल्द जान लेंगे कि कौन-सी जगह लौट कर जाते हैं। (२२७)★



२७ सूरः नम्ल ४८

सूरः नम्ल मक्की है और इसमें तिरानवे आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा-सीन। ये क़ुरआन और रोशन किताब की आयतें हैं। (१) मोमिनों के लिए हिदायत और

१. यानी क़ियाम से रुकूअ में जाने और रुकूअ से सज्दे में जाने को भी देखता है।

२. इन आयतों में शायरों की बुराई बयान फ़रमायी गयी है, लेकिन बुराई के क़ाबिल शायर वही हैं जो बुरे और ना-पाक शेर कहते हैं और जो ऐसे शेर कहें जिन में ख़ुदा की तारीफ़ हो या जिन से उस के दीन की मदद हो, वह तारीफ़ के क़ाबिल और सवाब के हक़दार हैं।

३. यानी अगर किसी ने उस की हिज्व (शेर में बुरे नाम से याद करना) कही हो और वह भी उस की हिज्व कर के उस से बदला ले तो यह जायज़ है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुदंव-व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन ﻻ(२) अ्ल्लज़ी-न युक़ीमूनस्स़ला-त़ व युअ्-तूनज़्ज़का-त़
व हुम् बिल्-आख़िरति़ हुम् यूक़िनून (३) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न
बिल्आख़िरति़ ज़य्यन्ना लहुम् अअ्-मालहुम् फ़हुम् यअ्-महून ط(४) उलाइ-कल्लज़ी-न
लहुम् सूउल्-अ़ज़ाबि व हुम् फ़िल्आख़िरति़ हुमुल् अख़्सरून (५) व इन्न-क
ल-तु-लक़्क़ल् - क़ुरआ-न मिल्लदुन् ह़कीमिन्
अलीम ●(६) इज़् क़ा - ल मूसा
लिअह्लिही इन्नी आनस्तु नारन् ط
स-आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ आतीकुम्
बिशिहाबिन् क़-ब-सिल्-ल-अ़ल्लकुम् तस्त़लून (७)
फ़-लम्मा जा-अहा नूदि-य अम्बूरि-क मन् फ़िन्नारि
व मन् ह़ौलहा ط व सुब्ह़ानल्लाहि रब्बिल्-
आलमीन (८) या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल्-
अ़ज़ीज़ुल् - ह़कीम ﻻ (९) व अल्क़ि
अ़स़ा-क ط फ़-लम्मा र-आहा तह्तज़्ज़ु क-अन्नहा
जान्नुंव्वल्ला मुद्बिरंव्-व लम् युअ़क़्क़िब् ط
या मूसा ला त-ख़फ़् قف इन्नी ला यख़ाफ़ु
ल-दय्यल् - मुर्सलून صلے (१०) इल्ला
मन् ज़-ल-म सुम्-म बद्-द-ल हुस्-नम्-बअ्-द सूइन् फ़इन्नी ग़फ़ूरुर्-रहीम (११)
व अद्ख़िल् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा - अ मिन् ग़ैरि सूइन् قف
फ़ी तिस्अि आयातिन् इला फ़िर्औ - न व क़ौमिही ط इन्नहुम् कानू
क़ौमन् फ़ासिक़ीन (१२) फ़-लम्मा जाअत्हुम् आयातुना मुब्सि-र-तन्
क़ालू हाज़ा सिह़्रुम्-मुबीन ج(१३) व ज-ह़दू बिहा वस्तै-क़-नत्हा अन्फ़ुसुहुम्
ज़ुल्मंव्-व अ़ुलुव्वन् ط फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतुल् - मुफ़्सिदीन ★(१४)
व ल-क़द् आतैना दाऊ-द व सुलैमा - न अ़िल्मन् ج व क़ालल् - ह़म्दु
लिल्लाहिल्लज़ी फ़ज़्-ज़-लना अ़ला कसीरिम्मिन् अ़िबादिहिल्-मुअ्मिनीन (१५)

النمل ٢٧ — ٣٠١ — وقال الذين ١٩

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ
بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ
اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٤ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٥ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ
حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝٦ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ
مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٧ فَلَمَّا
جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩
وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ
يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۣ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٠ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ
ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١ وَاَدْخِلْ يَدَكَ
فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۣ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝١٢ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً
قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا
وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٤ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ
وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ
عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٥ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا

منزل ٥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

खुशखबरी हैं। (२) वे, जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और आख़िरत का यक़ीन रखते हैं। (३)
जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उन के आमाल उन के लिए सजा दिए हैं, तो वे
परेशान भटक रहे हैं। (४) यही लोग हैं, जिन के लिए बड़ा अज़ाब है और वे आख़िरत में भी बहुत
नुक़्सान उठाने वाले हैं। (५) और तुम को क़ुरआन हकीम व अलीम (ख़ुदा) की तरफ़ से अता
किया जाता है● (६) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैं ने आग देखी है। मैं वहां से
(रास्ते का) पता लाता हूं या सुलगता हुआ अंगारा तुम्हारे पास लाता हूं, ताकि तुम तापो। (७)
जब मूसा उस के पास आए तो निदा (आवाज़) आयी कि वह जो आग में (तजल्ली दिखाता) है,
बरकत वाला है और वह जो आग के आस-पास है और ख़ुदा जो पूरी दुनिया का परवरदिगार है,
(८) ऐ मूसा ! मैं ही ख़ुदा-ए-ग़ालिब व हकीम हूं। (९) और अपनी लाठी डाल दो। जब उसे देखा
तो (इस तरह) हिल रही थी गोया सांप है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर न
देखा। (हुक्म हुआ कि) मूसा डरो मत, हमारे पास पैग़म्बर डरा नहीं करते। (१०) हां, जिस ने
ज़ुल्म किया, फिर बुराई के बाद उसे नेकी से बदल दिया, तो मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूं। (११)
और अपना हाथ अपने गरेबान में डालो, बे-ऐब सफ़ेद निकलेगा। (इन दो मोजज़ों के साथ जो) नौ
मोजज़ों में (दाख़िल हैं) फ़िऔं न और उसकी क़ौम के पास (जाओ) कि वे बद-किरदार लोग
हैं। (१२) जब उनके पास हमारी रोशन निशानियां पहुंचीं, कहने लगे, यह खुला जादू है। (१३)
और बे-इंसाफ़ी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख
लो कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (१४)★

और हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म बख़्शा और उन्होंने कहा कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने
हमें अपने बहुत-से-मोमिन बन्दों पर बड़ाई दी। (१५) और सुलेमान दाऊद के जानशीन हुए और

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व वरि-स सुलैमानु दाऊ-द व क़ा-ल या अय्युहन्नासु उल्लिम्ना मन्तिक़त्तैरि व ऊतीना
मिन् कुल्लि शैइन् इन्-न हाज़ा ल-हुवल्-फ़ज़्लुल्-मुबीन (१६) व हुशि-र
लिसुलैमा-न जुनूदुहू मिनल्जिन्नि वल्इन्सि वत्तैरि फ़हुम् यू-ज़-अून (१७) हत्ता
इज़ा अतौ अ़ला वादिन्नम्लि क़ालत् नम्लतुंय्या अय्युहन् - नम्लुद्ख़ुलू
मसाकि-नकुम् ला यह्तिमन्नकुम् सुलैमानु
व जुनूदुहू व हुम् ला यश्अुरून (१८)
फ़-त-बस्स-म ज़ाहिकम्मिन् क़ौलिहा व क़ा-ल
रब्बि औज़िअ्-नी अन् अश्कु-र निअ्-म-त-कल्लती
अन्अम्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन्
अअ्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अद्ख़िल्नी
बिरह्मति-क फ़ी अिबादिकस्-सालिहीन (१९)
व त-फ़क्क़-दत्तै-र फ़क़ा-ल मा लि-य ला
अरल्हुद्हु - द صلے अम् का - न मिनल् -
ग़ाइबीन (२०) ल-उअ़ज़्ज़िबन्नहू अ़ज़ाबन्
शदीदन् औ ल-अज़्-बहन्नहू औ ल-यअ्तियन्नी
बिसुल्तानिम्-मुबीन (२१) फ़-म-क-स ग़ै-र
बअीदिन् फ़क़ा-ल अहत्तु बिमा लम् तुहित्
बिही व जिअ्तु - क मिन् स-ब-इम्-
बिन-बइंय्यक़ीन (२२) इन्नी व-जत्तुम्-र-अ-तन् तम्लिकुहुम् व ऊतियत् मिन्
कुल्लि शैइंव्-व लहा अर्शुन् अ़ज़ीम (२३) व-जत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदू-न
लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि
फ़हुम् ला यह-तदून (२४) अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख़्रिजुल्-ख़ब्-अ
फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्-लमु मा तुख़्फ़ू-न व मा तुअ्-लिनून (२५) अल्लाहु
ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल्-अर्शिल्-अ़ज़ीम □ (२६) क़ा - ल सनन्ज़ुरु
अ-स-दक़्-त अम् कुन्-त मिनल्काज़िबीन (२७) इज़्हब् बिकिताबी हाज़ा फ़-अल्क़िह्
इलैहिम् सुम्-म तवल्-ल अ़न्हुम् फ़न्ज़ुर् मा ज़ा यर्जिअून (२८) क़ालत् या
अय्युहल्म-लउ इन्नी उल्क़ि-य इलय्-य किताबुन् करीम (२९) इन्नहू
मिन् सुलैमा-न व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम (३०)

منطق الطير واوتينا من كل شيء ۖ ان هذا لهو الفضل المبين ١٦
وحشر لسليمن جنوده من الجن والانس والطير فهم يوزعون ١٧
حتى اذا اتوا على واد النمل قالت نملة يايها النمل ادخلوا مسكنكم
لا يحطمنكم سليمن وجنوده وهم لا يشعرون ١٨ فتبسم ضاحكا
من قولها وقال رب اوزعني ان اشكر نعمتك التي انعمت علي
وعلى والدي وان اعمل صالحا ترضه وادخلني برحمتك في
عبادك الصلحين ١٩ وتفقد الطير فقال مالي لا ارى الهدهد ام
كان من الغائبين ٢٠ لاعذبنه عذابا شديدا او لا اذبحنه او لياتيني
بسلطن مبين ٢١ فمكث غير بعيد فقال احطت بما لم تحط به و
جئتك من سبا بنبا يقين ٢٢ اني وجدت امراة تملكهم واوتيت
من كل شيء ولها عرش عظيم ٢٣ وجدتها وقومها يسجدون للشمس
من دون الله وزين لهم الشيطن اعمالهم فصدهم عن السبيل
فهم لا يهتدون ٢٤ الا يسجدوا لله الذي يخرج الخبء في السموت
والارض ويعلم ما تخفون وما تعلنون ٢٥ الله لا اله الا هو رب العرش
العظيم ٢٦ قال سننظر اصدقت ام كنت من الكذبين ٢٧ اذهب بكتبي
هذا فالقه اليهم ثم تول عنهم فانظر ماذا يرجعون ٢٨ قالت يايها
الملؤا اني القي الي كتب كريم ٢٩ انه من سليمن وانه بسم الله

منزل ٥

□ सजद: ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहने लगे कि लोगो ! हमें (ख़ुदा की तरफ़ से) जानवरों की बोली सिखायी गयी है और हर चीज़ इनायत फ़रमायी गयी है। बेशक यह (उस की) खुली मेहरबानी है। (१६) और सुलेमान के लिए जिन्नों और इंसानों और परिंदों के लश्कर जमा किए गये और वे क़िस्मवार किए गए थे। (१७) यहां तक कि जब चींटियों के मैदान में पहुंचे तो एक चींटी ने कहा कि चींटियो ! अपने-अपने बिलों में दाख़िल हो जाओ, ऐसा न हो कि सुलेमान और उसके लश्कर तुमको कुचल डालें और उन को ख़बर भी न हो। (१८) तो वह उस की बात से हंस पड़े और कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि जो एहसान तूने मुझ पर और मेरे मां-बाप पर किए हैं, उनका शुक्र करूं और ऐसे नेक काम करूं कि तू उन से ख़ुश हो जाए और मुझे अपनी रहमत से अपने बन्दों में दाख़िल फ़रमा। (१९) और जब उन्होंने जानवरों का जायज़ा लिया, तो कहने लगे, क्या वजह है कि हुदहुद नज़र नहीं आता, क्या कहीं ग़ायब हो गया है ? (२०) मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा या ज़िब्ह कर डालूंगा या मेरे सामने (अपनी बे-क़सूरी की) खुली दलील पेश करे। (२१) अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि हुदहुद आ मौजूद हुआ और कहने लगा कि मुझे एक ऐसी चीज़ मालूम हुई है, जिस की आप को ख़बर नहीं और मैं आपके पास (शहर) सबा से एक यक़ीनी ख़बर लेकर आया हूं। (२२) मैं ने एक औरत देखा कि इनं लोगों पर बादशाहत करती है और हर चीज़ उसे मिली हुई है और उसका एक बड़ा तख़्त है। (२३) मैं ने देखा कि वह और उसकी क़ौम (के लोग) ख़ुदा को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उन के आमाल उन्हें सजा कर दिखाए हैं और उनको रास्ते से रोक रखा है, पस वे रास्ते पर नहीं आते। (२४) (और नहीं समझते) कि ख़ुदा को जो आसमानों और ज़मीन में छिपी चीज़ों को ज़ाहिर कर देता और तुम्हारे छिपे और ज़ाहिर आमाल को जानता है, क्यों सज्दा न करें ? (२५) ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही बड़े अर्श का मालिक है□(२६) (सुलेमान ने) कहा, (अच्छा) हम देखेंगे, तू ने सच कहा है या तू झूठा है। (२७) यह मेरा ख़त ले जा और इसे उनकी तरफ़ डाल दे, फिर उनके पास से फिर आ और देख कि वे क्या जवाब देते हैं ? (२८) मलका (रानी) ने कहा कि दरबार वालो ! मेरी तरफ़ एक नामा (पत्र) डाला गया है। (२९) वह सुलेमान की तरफ़ से है और (मज़्मून यह है) कि शुरू ख़ुदा का नाम ले

□ सज्दः ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्ला तअ्-लू अलय्-य वअ्तूनी मुस्लिमीन ★ (३१) क़ालत् या अय्युहल्-
म-लउ अफ़्तूनी फ़ी अम्री मा कुन्तु क़ाति-अ-तन् अम्-रन् हत्ता तश-हदून (३२) क़ालू
नह्नु उलू क़ुव्वतिंव-व उलू बअ्सिन् शदीदिंव-वल्-अम्रु इलैकि फ़न्ज़ुरी माज़ा
तअ्-मुरीन (३३) क़ालत् इन्नलमुलू-क इज़ा द-ख़लू क़र-य-तन् अफ़्सदूहा व ज-अलू
अअिज़्ज़-त अह्लिहा अज़िल्ल-तन् व
कज़ालि-क यफ़्-अलून (३४) व इन्नी
मुर्सि-लतुन् इलैहिम् बिहदिय्यतिन् फ़नाज़ि-र-तुम्
बि-म यर्जिअुल्-मुर्सलून (३५) फ़-लम्मा
जा-अ सुलैमा-न क़ा-ल अतुमिद्दूननि बिमालिन्
फ़मा आतानि-यल्लाहु ख़ैरुम्मिम्मा आताकुम्
बल् अन्तुम् बिहदिय्यतिकुम् तफ़्-रहून (३६)
इर्जिअ् इलैहिम् फ़-ल-नअ्तियन्नहुम् बिजुनूदिल्ला
क़ि-ब-ल लहुम् बिहा व लनुख़्रिजन्नहुम् मिन्हा
अज़िल्ल-तंव्-व हुम् साग़िरून (३७) क़ा-ल या
अय्युहल्म-लउ अय्युकुम् यअ्तीनी बिअ़र्शिहा
क़ब्-ल अंय्यअ्तूनी मुस्लिमी-न (३८) क़ा-ल
अिफ़्रीतुम्-मिनल्जिन्नि अ-न आती-क बिही
क़ब्-ल अन् तक़ू-म मिम्मक़ामि-क व इन्नी

النمل ٢٧ — ٣٠٣ — وقال الذين ١٩

الرحمن الرحيم ﴿٣٠﴾ الا تعلوا علي واتوني مسلمين ﴿٣١﴾ قالت يايها الملؤا
افتوني في امري ما كنت قاطعة امرا حتى تشهدون ﴿٣٢﴾ قالوا نحن اولوا
قوة واولوا باس شديد والامر اليك فانظري ماذا تامرين ﴿٣٣﴾ قالت
ان الملوك اذا دخلوا قرية افسدوها وجعلوا اعزة اهلها اذلة وكذلك
يفعلون ﴿٣٤﴾ واني مرسلة اليهم بهدية فنظرة بم يرجع المرسلون ﴿٣٥﴾
فلما جاء سليمن قال اتمدونن بمال فما اتىن الله خير مما اتىكم
بل انتم بهديتكم تفرحون ﴿٣٦﴾ ارجع اليهم فلناتينهم بجنود لا قبل
لهم بها ولنخرجنهم منها اذلة وهم صغرون ﴿٣٧﴾ قال يايها الملؤا
ايكم ياتيني بعرشها قبل ان ياتوني مسلمين ﴿٣٨﴾ قال عفريت من
الجن انا اتيك به قبل ان تقوم من مقامك واني عليه لقوي امين ﴿٣٩﴾
قال الذي عنده علم من الكتب انا اتيك به قبل ان يرتد اليك
طرفك فلما راه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربي ليبلوني
ءاشكر ام اكفر ومن شكر فانما يشكر لنفسه ومن كفر فان ربي
غني كريم ﴿٤٠﴾ قال نكروا لها عرشها ننظر اتهتدي ام تكون من
الذين لا يهتدون ﴿٤١﴾ فلما جاءت قيل اهكذا عرشك قالت كانه هو
واوتينا العلم من قبلها وكنا مسلمين ﴿٤٢﴾ وصدها ما كانت تعبد من
دون الله انها كانت من قوم كفرين ﴿٤٣﴾ قيل لها ادخلي الصرح فلما راته

منزل ٥

अलैहि लक़विय्युन् अमीन (३९) क़ालल्लज़ी अिन्दहू अिल्मुम्मिनल्-किताबि
अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अंय्यर-तद्-द इलै-क त़र्फ़ु-क फ़-लम्मा रआहु मुस्तक़िर्रन्
अिन्दहू क़ा-ल हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बी लियब्लु-वनी अ-अश्कुरु
अम् अक्फ़ुरु व मन् श-क-र फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन्
क-फ़-र फ़-इन्-न रब्बी ग़निय्युन् करीम (४०) क़ा-ल नक्किरू लहा अ़र्-शहा
नन्ज़ुर् अ-तह-तदी अम् तकूनु मिनल्लज़ी-न ला यह-तदून (४१) फ़-लम्मा जा-अत्
क़ी-ल अहाकज़ा अ़र्शुकि क़ालत् क-अन्नहू हु-व व ऊतीनल्-अिल् - म
मिन् क़ब्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन (४२) व सद्दहा मा कानत्
तअ्-बुदु मिन्दूनिल्लाहि इन्नहा कानत् मिन् क़ौमिन् काफ़िरीन (४३)

★रु॰ २/१७ आ १७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (३०) (बाद इस के यह) कि मुझ से सर-कशी न करो और इताअत गुज़ार हो कर मेरे पास चले आओ। (३१)★

(ख़त सुना कर) कहने लगी कि ऐ दरबारियो! मेरे इस मामले में मुझे मश्विरा दो, जब तक तुम हाज़िर न हो (और सलाह न दो), मैं किसी काम का फ़ैसला करने वाली नहीं। (३२) वे बोले कि हम बड़े ज़ोरावर और सख़्त लड़ाकू हैं और हुक्म आपके अख़्तियार में है, तो जो हुक्म दीजिएगा, (उसके नतीजे पर) नज़र कर लीजिएगा। (३३) उसने कहा कि बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं, तो उसको तबाह कर देते हैं और वहां के इज़्ज़त वालों को ज़लील कर दिया करते हैं और इसी तरह यह भी करेंगे। (३४) और मैं उनकी तरफ़ कुछ तोहफ़ा भेजती हूं और देखती हूं कि क़ासिद क्या जवाब लाते हैं। (३५) जब (क़ासिद) सुलेमान के पास पहुंचा, तो (सुलेमान ने) कहा, क्या तुम मुझे माल से मदद देना चाहते हो, जो कुछ ख़ुदा ने मुझे अता फ़रमाया है, वह उस से बेहतर है, जो तुम्हें दिया है। सच तो यह है कि अपने तोहफ़े से तुम ही ख़ुश होते होगे। (३६) उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर हमला करेंगे, जिन के मुक़ाबले की उन में ताक़त न होगी और उनको वहां से बे-इज़्ज़त करके निकाल देंगे और वे ज़लील होंगे। (३७) (सुलेमान ने) कहा कि ऐ दरबार वालो! कोई तुम में ऐसा है कि इससे पहले कि वे लोग फ़रमांबरदार हो कर हमारे पास आएं, मलका का तख़्त मेरे पास ले आए। (३८) जिन्नों में से एक क़वी हैकल जिन्न ने कहा कि इस से पहले कि आप अपनी जगह से उठें, मैं उस को आप के पास ला हाज़िर करता हूं और मुझे इस पर क़ुदरत (भी) हासिल है (और) अमानतदार (भी) हूं। (३९) एक शख़्स जिसको (ख़ुदा की) किताब का इल्म था, कहने लगा कि मैं आप की आंख के झपकने से पहले-पहले उसे आप के पास हाज़िर किए देता हूं। जब (सुलेमान ने) तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा, तो कहा कि यह मेरे परवरदिगार का फ़ज़्ल है, ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नेमत की ना-शुक्री करता हूं और जो शुक्र करता है तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो मेरा परवरदिगार बे-परवाह (और) करम वाला है। (४०) (सुलेमान ने) कहा कि मलका के (अक़्ल के इम्तिहान के) लिए उस के तख़्त की सूरत बदल दो, देखें कि वह सूझ रखती है या उन लोगों में से है, जो सूझ नहीं रखते। (४१) जब वह आ पहुंची, तो पूछा गया कि क्या आप का तख़्त भी इसी तरह का है? उस ने कहा कि यह तो गोया बिल्कुल उसी जैसा है और हमको इससे पहले ही (सुलेमान की बड़ाई और शान का) इल्म हो गया था और हम फ़रमांबरदार हैं। (४२) और वह जो ख़ुदा के सिवा (और की) पूजा करती थी, (सुलेमान ने) उस को उस से मना किया (इस से पहले तो) वह काफ़िरों में से थी। (४३) (फिर) उस से कहा

★रु. २/१७ आ १७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ी-ल ल-हद-ख़ुलिस्सर्-ह् ८ फ़-लम्मा र-अत्हु ह़सि-बत-हु लुज्जतंव्-व क-श-फ़त् अन्
साक़ैहा ७ क़ा-ल इन्नहू सर्-हुम् - मुमर्रदुम् - मिन् क़वारी-र ५ क़ालत् रब्बि
इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी व अस्-लम्तु म-अ सुलैमा-न लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन ★ (४४)
व ल-क़द् अर्सल्ना इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् अनिअ्-बुदुल्ला-ह फ़-इज़ा-हुम्
फ़रीक़ानि यख़्तसिमून (४५) क़ा-ल या क़ौमि
लि-म तस्तअ्-जिलू-न बिस्सय्यिअति क़ब्-लल्-
ह़-स-नति ८ लौ ला तस्तग् - फ़िरूनल्ला-ह
ल-अ़ल्लकुम् तुर-ह़मून (४६) क़ालुत्तय्यर्ना बि-क
व बिमम्म-अ्-क ७ क़ा-ल ताइरुकुम् अिन्दल्लाहि
बल् अन्तुम् क़ौमुन् तुफ़्तनून (४७) व का-न
फ़िलमदीनति तिस्अतु रह्तिंय्युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि
व ला युस्लिहून (४८) क़ालू तक़ासमू
बिल्लाहि लनुबय्यितन्नहू व अह्-लहू सुम्-म
लनक़ूलन्-न लिवलिय्यिही मा शहिद्-ना मह्-लि-क
अह्लिही व इन्ना ल-सादिक़ून (४९) व
म-करू मक-रंव्-व म-कर्ना मक्-रंव्वहुम् ला
यश्अुरून (५०) फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़िबतु
मक्रिहिम् ७ अन्ना दम्मर्नाहुम् व क़ौमहुम्
अज्मअ़ीन (५१) फ़-तिल-क बुयूतुहुम् ख़ावि-य-तम्-बिमा ज़-लमू ७ इन्-न फ़ी
ज़ालि-क लआयतल्-लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (५२) व अन्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू
यत्तक़ून (५३) व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्-तूनल्-फ़ाहि-श-त व
अन्तुम् तुब्सिरून (५४) अ-इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्-रिजा-ल शह्-व-तम् - मिन्
दूनिन्निसाइ ७ बल् अन्तुम् क़ौमुन् तज्-हलून (५५) फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही
इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजू आ - ल लूतिम् - मिन् क़र्यतिकुम् ८ इन्नहुम्
उनासुंय्य-त-तह्-हरून (५६) फ़-अन्जैनाहु व अह्-लहू इल्लम्र-अ-तहू ✓ क़द्दर्नाहा
मिनल्ग़ाबिरीन (५७) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त्-रन् ८ फ़सा-अ म-त-रुल्-
मुन्ज़रीन ★ (५८) क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अला अिबादिहिल्-
लज़ीनस् - तफ़ा ७ आल्लाहु ख़ैरुन् अम्मा युश्रिकून ७ (५९)

النمل ٢٧ ٣٠٤ وقال الذين ١٩

حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬
قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَ
لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ
يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْ لَا
تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۭ قَالَ
طٰۗىِٕرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ
رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ
وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾
وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا
ظَلَمُوْا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾
اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۗءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ
اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾ قُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰي عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۭ اٰۗللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

منزل

★रु. ३/१८ आ १३ ★रु. ४/१९ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गया कि महल में चलिए। जब उस ने उस (के फ़र्श) को देखा, तो उसे पानी का हौज़ समझा और (कपड़ा उठा कर) अपनी पिंडुलियां खोल दीं। (सुलेमान ने) कहा, यह ऐसा महल है, जिसके (नीचे भी) शीशे जड़े हुए हैं। वह बोल उठी कि परवरदिगार! मैं अपने आप पर ज़ुल्म करती रही थी और (अब) मैं सुलेमान के हाथ पर[1] ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन पर ईमान लाती हूं। (४४)★

और हम ने समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह को भेजा कि ख़ुदा की इबादत करो, तो वे दो फ़रीक़ हो कर आपस में झगड़ने लगे। (४५) (सालेह ने) कहा कि ऐ क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो (और) ख़ुदा से बख़्शिश क्यों नहीं मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए।[2] (४६) वे कहने लगे कि तुम और तुम्हारे साथी हमारे लिए बुरे शगून हैं (सालेह ने) कहा कि तुम्हारी बद-शगूनी ख़ुदा की तरफ़ से है, बल्कि तुम ऐसे लोग हो जिन की आज़माइश की जाती है। (४७) और शहर में नौ शख़्स थे, जो मुल्क में फ़साद किया करते थे और इस्लाह से काम नहीं लेते थे। (४८) कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम खाओ कि हम रात को उस पर और उस के घर वालों पर छापा मारेंगे, फिर उस के वारिसों से कह देंगे कि हम तो घर वालों की हलाकत की जगह पर गये ही नहीं और हम सच कहते हैं। (४९) और वे एक चाल चले और हम भी एक चाल चले और उनको कुछ ख़बर न हुई। (५०) तो देख लो कि उन की चाल का अंजाम कैसा हुआ। हम ने उन को और उन की क़ौम, सब को हलाक कर डाला। (५१) अब ये उन के घर उन के ज़ुल्म की वजह से ख़ाली पड़े हैं। जो लोग समझ रखते हैं, उनके लिए इसमें निशानी है। (५२) और जो लोग ईमान लाए और डरते थे, उनको हम ने निजात दी। (५३) और लूत को (याद करो), जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम बे-हयाई (के काम) क्यों करते हो और तुम देखते हो। (५४) क्या तुम औरतों को छोड़ कर लज़्ज़त (हासिल करने) के लिए मर्दों की तरफ़ मायल होते हो। सच तो यह है कि तुम जाहिल लोग हो। (५५) तो उन की क़ौम के लोग (बोले, तो) यह बोले और इस के सिवा उन का कुछ जवाब न था कि लूत के घर वालों को अपने शहर से निकाल दो। ये लोग पाक बनाना चाहते हैं। (५६) तो हम ने उन को और उन के घर वालों को निजात दी, मगर उन की बीवी, कि उस के बारे में मुक़र्रर कर रखा था (कि वह) पीछे रह जाने वालों में होगी। (५७) और हम ने उन पर मेंह बरसाया सो (जो) मेंह उन लोगों पर (बरसा), जिन को मुतनब्बह कर दिया गया था, बुरा था। (५८)★

कह दो कि सब तारीफ़ ख़ुदा ही को (मुनासिब) है और उस के बन्दों पर सलाम है, जिन को उस ने चुन लिया। भला ख़ुदा बेहतर है या वे, जिन को ये (उस का) शरीक बनाते हैं। (५९)

---

१. लफ़्ज़ों का तर्जुमा है 'सुलेमान के साथ' मगर यहां मुराद है 'सुलेमान के हाथ पर', इस लिए हम ने यही तर्जुमा किया है।

२. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम उन लोगों को ख़ुदा पर ईमान लाने के लिए कहते थे कि ईमान लाओगे तो तुम्हारा भला होगा, वरना तुम पर अज़ाब नाज़िल होगा। वे लोग न ईमान लाते थे, न भलाई के लिए कोशिश करते थे, बल्कि यह कहते थे कि वह अज़ाब, जिस से तुम हम को डराते हो, जल्दी नाज़िल कराओ। सालेह अलैहिस्सलाम ने कहा, तुम अज़ाब के लिए क्यों जल्दी मचाते हो। ख़ुदा से बख़्शिश मांगो, ताकि बजाए अज़ाब के तुम पर ख़ुदा की रहमत नाज़िल हो।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बीसवां पारः अम्मन ख़-ल-क़स्समावाति

सूरतुन् नम्लि आयात ६० से ६३

अम्मन् ख़-ल-क़स्समावाति वलअर्-ज़ व अन्ज़-ल लकुम् मिनस्समाइ मा-अन्
फ़-अम्बत्ना बिही हदाइ-क़ ज़ा-त बह्जतिन् ج मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू
श-ज-रहा ط अ इलाहुम्-म - अल्लाहि ط बल् हुम् क़ौमुंय्यअ्-दिलून ط (६०)
अम्मन् ज-अ-लल्अर-ज़ क़रारंव-व ज-अ-ल ख़िलालहा अन्हारंव्-व ज-अ-ल लहा
रवासि-य व ज-अ-ल बैनल्-बह्रैनि हाजिज़न् ط
अ इलाहुम्-म-अल्लाहि ط बल् अक्सरुहुम् ला
यअ्-लमून ط (६१) अम्मंय्युजीबुल्-मुज़्तर्-र
इज़ा दआहु व यक्शिफ़ुस्सू-अ व यज्-अलुकुम्
ख़ु-ल-फ़ा-अल् - अर्ज़ि ط अ इलाहुम्-म-अल्लाहि ط
क़लीलम्मा त - ज़क्करून ط (६२)
अम्मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि
व मंय्युर्सिलुर-रिया-ह् बुश्रम्बै - न यदै
रह्-मतिही ط अ इलाहुम् - म - अल्लाहि ط
तआलल्लाहु अम्मा युश्रिकून ط (६३)
अम्मंय्यब्दउल्-ख़ल-क़ सुम्-म युईदुहू व
मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि ط
अ इलाहुम्-म-अल्लाहि ط क़ुल् हातू बुर्हानकुम्
इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (६४) क़ुल् ला यअ्-लमु मन् फ़िस्समावाति वलअर्ज़िलग़ै-ब
इल्लल्लाहु ط व मा यश्अुरू-न अय्या-न युब-असून (६५) बलिद्दा-र-क अिल्मुहुम्
फ़िल्आख़िरति قف बल् हुम् फ़ी शक्किम् - मिन्हा قف बल् हुम्
मिन्हा अमून ★(६६) व क़ालल्लज़ी -न क-फ़रू अ इज़ा कुन्ना तुराबंव्-व
आबाउना अ-इन्ना ल-मुख़्रजून (६७) ल - क़द् वुअिद्ना हाज़ा नह्नु
व आबाउना मिन् क़ब्लु ۷ इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (६८)
क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुजिरमीन (६९) व ला
तह्-ज़न् अलैहिम् व ला तकुन् फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून (७०)

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا
بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝٦٠ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّ
جَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ
حَاجِزًا ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦١ أَمَّنْ يُّجِيْبُ
الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۗ
ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٦٢ أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ
الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۗ ءَإِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ ۗ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٣ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قُلْ هَاتُوْا
بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦٤ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝٦٥ بَلِ
ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا
عَمُوْنَ ۝٦٦ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ أَئِنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝٦٧ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ إِنْ
هٰذَآ إِلَّآ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ۝٦٨ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٦٩ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ

★रु० ५/१ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भला किस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और (किस ने) तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया ? (हम ने।) फिर हम ने उस से हरे-भरे बाग़ उगाए। तुम्हारा काम तो न था कि तुम उन के पेड़ों को उगाते, तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और भी माबूद है ? (हरगिज़ नहीं,) बल्कि ये लोग रास्ते से अलग हो रहे हैं। (६०) भला किस ने ज़मीन को क़रारगाह बनाया और उस के बीच नहरें बनायीं और उस के लिए पहाड़ बनाए और (किस ने) दो दरियाओं के बीच ओट बनायी। (यह सब कुछ ख़ुदा ने ही बनाया।) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं,) बल्कि उन में अक्सर समझ नहीं रखते। (६१) भला कौन बे-क़रार की इल्तिजा क़ुबूल करता है, जब वह उस से दुआ करता है। और (कौन उस की) तक्लीफ़ को दूर करता है और (कौन) तुम को ज़मीन में (अगलों का) जानशीन बनाता है ? (यह सब कुछ ख़ुदा करता है) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं, मगर) तुम बहुत कम ग़ौर करते हो ? (६२) भला कौन तुम को जंगल और दरिया के अंधेरों में रास्ता बताता और (कौन) हवाओं को अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है ? (यह सब कुछ ख़ुदा करता है,) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं,) ये लोग जो शिर्क करते हैं, ख़ुदा (की शान) उस से बुलंद है। (६३) भला कौन ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता, फिर उस को बार-बार पैदा करता रहता है और (कौन) तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है ? (यह सब कुछ ख़ुदा करता है,) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं।) कह दो कि (मुश्रिको !) अगर तुम सच्चे हो, तो दलील पेश करो। (६४) कह दो कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, ख़ुदा के सिवा ग़ैब की बातें नहीं जानते और न यह जानते हैं कि (ज़िंदा कर के) उठाए जाएंगे। (६५) बल्कि आख़िरत (के बारे) में उन का इल्म 'मुन्तही' (ख़त्म) हो चुका है।[1] बल्कि वे इस से शक में हैं, बल्कि इस से अंधे हो रहे हैं। (६६)★

और जो लोग काफ़िर हैं, कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएंगे, तो क्या हम फिर (क़ब्रों) से निकाले जाएंगे। (६७) यह वायदा हम से और हमारे बाप-दादा से पहले से होता चला आया है। (कहां का उठना और कैसी क़ियामत !) यह तो सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियां हैं। (६८) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि गुनाहगारों का अंजाम क्या हुआ है ? (६९) और उन (के हाल) पर ग़म न करना और न उन चालों से, जो ये कर रहे हैं,

१. यानी आख़िरत के बारे में उन का इल्म कुछ भी नहीं है और उस का ख़ात्मा हो गया है।

★रु. ५/१ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व यक़ूलू-न मता हाजलवअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (७१) क़ुल् असा अंय्यकू-न
रदि-फ़ लकुम् बअ्-ज़ुल्लजी तस्तअ्-जिलून (७२) व इन्-न रब्ब-क लज़ू फ़ज़्लिन्
अलन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (७३) व इन-न रब्ब-क ल-यअ्-लमु
मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ्-लिनून (७४) व मा मिन् ग़ाइबतिन् फ़िस्समाइ
वल्अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम् - मुबीन
(७५) इन्-न हाजलक़ुरआ-न यक़ुस्सु अला
बनी इस्राई-ल अक्स-रल्लजी हुम् फ़ीहि
यख़्तलिफ़ून (७६) व इन्नहू ल-हुदंव्-व
रह्-मतुल्-लिलमुअ्मिनीन (७७) इन्-न
रब्ब - क यक़्ज़ी बै-नहुम् बिहुक्मिही ج व
हुवल्अज़ीज़ुल् - अलीम ۚ (७८)
फ़ - त - वक्कल् अ़-लल्लाहि ط इन्न - क
अलल् - हक़्क़िल्-मुबीन (७९) इन्न-क
ला तुस्मिअुल्मौता व ला तुस्मिअुस्-
सुम्मद्दुआ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (८०)
व मा अन् - त बिहादिल् - अुम्यि अन्
ज़लालतिहिम् ط इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम्
मुस्लिमून (८१) व इज़ा व-क़-अल्क़ौलु अ़लैहिम् अख़्-रज्-ना लहुम् दाब्बतम्
मिनल्अर्ज़ि तुकल्लिमुहुम् ۙ अन्नन्ना-स कानू बिआयातिना ला यूक़िनून ★(८२)
व यौ-म नह्शुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फ़ौजम्मिम्-मंय्युकज्जिबु बिआयातिना
फ़हुम् यूज़अून (८३) हत्ता इज़ा जाऊ क़ा-ल अ-कज्जब्तुम् बिआयाती व लम्
तुहीतू बिहा अिल्मन् अम्माजा कुन्तुम् तअ्-मलून (८४) व व-क़-अल्क़ौलु अलैहिम्
बिमा ज़-लमू फ़हुम् ला यन्तिक़ून (८५) अ-लम् यरौ अन्ना ज-अल-नल्लै-ल लियस्कुनू
फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्-न फ़ी जालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (८६)

فی ضیق مما یمکرون ۝ ویقولون متی هذا الوعد ان کنتم
صدقین ۝ قل عسی ان یکون ردف لکم بعض الذی
تستعجلون ۝ وان ربک لذو فضل علی الناس ولکن اکثرهم
لا یشکرون ۝ وان ربک لیعلم ما تکن صدورهم وما
یعلنون ۝ وما من غائبة فی السماء والارض الا فی کتب
مبین ۝ ان هذا القرآن یقص علی بنی اسراءیل اکثر
الذی هم فیه یختلفون ۝ وانه لهدی ورحمة للمؤمنین ۝
ان ربک یقضی بینهم بحکمه وهو العزیز العلیم ۝ فتوکل
علی الله انک علی الحق المبین ۝ انک لا تسمع الموتی ولا تسمع
الصم الدعاء اذا ولوا مدبرین ۝ وما انت بهدی العمی عن
ضللتهم ان تسمع الا من یؤمن بایتنا فهم مسلمون ۝ واذا
وقع القول علیهم اخرجنا لهم دابة من الارض تکلمهم
ان الناس کانوا بایتنا لا یوقنون ۝ ویوم نحشر من کل امة
فوجا ممن یکذب بایتنا فهم یوزعون ۝ حتی اذا جاءو قال
اکذبتم بایتی ولم تحیطوا بها علما اما ذا کنتم تعملون ۝
ووقع القول علیهم بما ظلموا فهم لا ینطقون ۝ الم یروا
انا جعلنا الیل لیسکنوا فیه والنهار مبصرا ان فی ذلک

★रु. ६/२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तंगदिल होना। (७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो, तो यह वायदा कब्र पूरा होगा ? (७१) कह दो कि जिस (अज़ाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, शायद उस में से कुछ तुम्हारे नज़दीक आ पहुंचा हो। (७२) और तुम्हारा परवरदिगार तो लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन इन में मे अक्सर शुक्र नहीं करते। (७३) और जो बातें उन के सीनों में छिपी होती हैं और जो काम वे ज़ाहिर करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार उन (सब) को जानता है। (७४) और आसमानों और ज़मीन में कोई छिपी चीज़ नहीं है, मगर (वह) रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (७५) बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल के सामने अक्सर बातें, जिन में वे इख़्तिलाफ़ करते हैं, बयान कर देता है। (७६) और बेशक यह मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (७७) तुम्हारा परवरदिगार (क़ियामत के दिन) उन में अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा और वह ग़ालिब (और) इल्म वाला है। (७८) तो ख़ुदा पर भरोसा रखो, तुम तो खुले हक़ पर हो। (७९) कुछ शक नहीं कि तुम मुर्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को, जब कि वे पीठ फेर कर फिर जाएं, आवाज़ सुना सकते हो। (८०) और न अंधों को गुमराही से (निकाल कर) रास्ता दिखा सकते हो। तुम तो उन्हीं को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और वे फ़रमांबरदार हो जाते हैं। (८१) और जब उन के बारे में (अज़ाब का) वायदा पूरा होगा, तो हम उन के लिए ज़मीन में से एक जानवर निकालेंगे, जो उन से बयान कर देगा, इस लिए कि लोग हमारी आयतों पर ईमान नहीं लाते थे। (८२)★

और जिस दिन हम हर उम्मत में से उस गिरोह को जमा करेंगे, जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, तो उन की जमाअतबंदी कर दी जाएगी। (८३) यहां तक कि जब (सब) आ जाएंगे तो (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया था और तुम ने (अपने) इल्म से उन पर
39 एहाता तो किया ही न था। भला तुम क्या करते थे ? (८४) और उन के ज़ुल्म की वजह से उन के हक़ में (अज़ाब) का वायदा पूरा हो कर रहेगा, तो वे बोल भी न सकेंगे। (८५) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने रात को (इस लिए) बनाया है कि इस में आराम करें और दिन को रोशन (बनाया है कि इस में काम करें)। बेशक इस में मोमिन लोगों के लिए निशानियां हैं। (८६) और जिस दिन

★रु. ६/२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-फ़ज़ि-अ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल् अर्ज़ि इल्ला
मन् शा-अल्लाहु ॰ व कुल्लुन् अतौहु दाख़िरीन (८७) व त-रल्जिबा-ल
तह्सबुहा जामि-द-तंव्-व हि-य तमुर्रु मर्रस्सहाबि ॰ सुन्-अल्लाहिल्लज़ी अत्-क़-न
कुल्-ल शैइन् ॰ इन्नहू ख़बीरुम् - बिमा तफ़्-अलून (८८) मन् जा - अ
बिल्-ह़-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा ॰ व हुम्
मिन् फ़-ज़इंय्यौमइजिन् आमिनून (८९)
व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़-कुब्बत् वुजूहुहुम्
फ़िन्नारि ॰ हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम्
तअ्-मलून (९०) इन्नमा उमिर्तु अन्
अअ्-बु-द रब् - ब हाज़िहिल्-बल्दतिल्लज़ी
हर्र-महा व लहू कुल्लु शैइंव्-व उमिर्तु
अन् अकू - न मिनल्मुस्लिमीन ॰ (९१)
व अन् अत-लुवल्-क़ुर्आ-न ॰ फ़-मनिह्तदा
फ़-इन्नमा यह-तदी लिनफ़्सिही ॰ व मन्
ज़ल्-ल फ़-क़ुल् इन्नमा अ-न मिनल्-मुन्जिरीन
(९२) व क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि सयुरीकुम्
आयातिही फ़-तअ्-रिफ़ूनहा ॰ व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून ★ (९३)

امن خلق ٢٠ ٣٠٧ القصص ٢٨

لايت لقوم يؤمنون ﴿٨٦﴾ ويوم ينفخ في الصور ففزع من في
السموت ومن في الارض الا من شاء الله وكل اتوه دخرين ﴿٨٧﴾
وترى الجبال تحسبها جامدة وهي تمر مر السحاب صنع
الله الذي اتقن كل شيء انه خبير بما تفعلون ﴿٨٨﴾ من جاء
بالحسنة فله خير منها وهم من فزع يومئذ امنون ﴿٨٩﴾ و
من جاء بالسيئة فكبت وجوههم في النار هل تجزون الا
ما كنتم تعملون ﴿٩٠﴾ انما امرت ان اعبد رب هذه البلدة
الذي حرمها وله كل شيء وامرت ان اكون من المسلمين ﴿٩١﴾
وان اتلوا القران فمن اهتدى فانما يهتدي لنفسه و
من ضل فقل انما انا من المنذرين ﴿٩٢﴾ وقل الحمد لله سيريكم
ايته فتعرفونها وما ربك بغافل عما تعملون ﴿٩٣﴾
سورة القصص مكية وهي ثمان وثمانون اية وتسع ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
طسم ﴿١﴾ تلك ايت الكتب المبين ﴿٢﴾ نتلوا عليك من نبا
موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون ﴿٣﴾ ان فرعون علا
في الارض وجعل اهلها شيعا يستضعف طائفة منهم
يذبح ابناءهم ويستحي نساءهم انه كان من المفسدين ﴿٤﴾

منزل ٥

२८ सूरतुल् क़-ससि ४९

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ६०११ अक्षर, १४५४ शब्द, ८८ आयतें और ९ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ता-सीम्-मीम् (१) तिल्-क आयातुल् - किताबिल् - मुबीन (२)
नत्लू अलै - क मिन् न - बइ मूसा व फ़िर्औ - न बिल्ह़क़्क़ि
लिक़ौमिय्युअ्मिनून (३) इन्-न फ़िर्औ-न अला फ़िल्अर्ज़ि व ज-अ-ल अह्-लहा
शि-य - अंय्यस्तज़्अिफ़ु ताइ-फ़ - तम् - मिन्हुम् युज़ब्बिहु अब - ना - अहुम्
व यस्तह्यी निसा - अहुम् ॰ इन्नहू का-न मिनल् - मुफ़्सिदीन (४)

★रु. ७/३ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सूर फूंका जाएगा, तो जो लोग आसमानों और जो ज़मीन में हैं, सब घबरा उठेंगे, मगर वह जिसे ख़ुदा चाहे और सब उस के पास आजिज़ हो कर चले आएंगे। (८७) और तुम पहाड़ों को देखते हो, तो ख़्याल करते हो कि (अपनी जगह पर) खड़े हैं, मगर वे (उस दिन) इस तरह उड़ते फिरेंगे जैसे बादल। (यह) ख़ुदा की कारीगरी है, जिस ने हर चीज़ को मज़बूत बनाया। बेशक वह तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है। (८८) जो शख़्स नेकी ले कर आएगा, तो उस के लिए उस से बेहतर (बदला तैयार) है और ऐसे लोग (उस दिन) घबराहट से बे-ख़ौफ़ होंगे। (८९) और जो बुराई ले कर आएगा, तो ऐसे लोग औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। तुम को तो उन ही आमाल का बदला मिलेगा, जो तुम करते रहे हो। (९०) (कह दो,) मुझ को यही इर्शाद हुआ है कि इस शहर मक्का के मालिक की इबादत करूं, जिस ने इस को मोहतरम (और अदब की जगह) बनाया है और सब चीज़ उस की है और यह भी हुक्म हुआ है कि उस का हुक्मबरदार रहूं। (९१) और यह भी कि क़ुरआन पढ़ा करूं, तो जो शख़्स सीधा रास्ता अपनाता है तो अपने ही फ़ायदे के लिए अपनाता है और जो गुमराह रहता है तो कह दो कि मैं तो सिर्फ़ नसीहत करने वाला हूं। (९२) और कहो कि ख़ुदा का शुक्र है, वह तुम को बहुत जल्द अपनी निशानियां दिखाएगा, तो तुम उन को पहचान लोगे और जो काम तुम करते हो, तुम्हारा परवरदिगार उन से बे-ख़बर नहीं है। (९३)★



२८ सूरः क़सस् ४९

सूरः क़सस् मक्की है और इस में ८८ आयतें और ९ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तॉ-सीम-मीम। (१) ये रोशन किताब की आयतें हैं। (२) (ऐ मुहम्मद !) हम तुम्हें मूसा और फ़िऔंन के कुछ हालात मोमिन लोगों (के सुनाने) के लिए सही-सही सुनाते हैं, (३) कि फ़िऔंन ने मुल्क में सर उठा रखा था और वहां के रहने वालों को गिरोह-गिरोह बना रखा था, उन में से एक गिरोह को (यहां तक) कमज़ोर कर दिया था कि उन बेटों को ज़िब्ह कर डालता और उन की लड़कियों को ज़िंदा रहने देता। बेशक वह फ़साद फैलाने वालों में था। (४) और हम चाहते

★रु. ७/३ आ ११

व नुरीदु अन् नमुन्-न अ़-लल्लजीनस्-तुज़्-अिफ़ू फ़िल्अर्ज़ि व नज-अ़-लहुम्
अ-इम्मतंव्-व नज्-अ़-ल-हुमुल्-वारिसीन ۷ (५) व नुमक्कि-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि
व नुरि-य फ़िर्औ़--न व हामा-न व जुनूदहुमा मिन्हुम् मा कानू यह्ज़रून (६)
व औहैना इला उम्मि मूसा अन् अर्ज़िअ़ीहि ج फ़-इज़ा ख़िफ़्ति
अ़लैहि फ़अल्क़ीहि फ़िल्यम्मि व ला
तख़ाफ़ी व ला तह्ज़नी ج इन्ना
राद्दूहु इलैकि व जाअ़िलूहु मिनल् -
मुर्सलीन (७) फ़ल्-त-क़-तहू आलु फ़िर्औ़-न
लि-यकू-न लहुम् अ़दुव्वंव्-व ह़-ज़-नन् ط इन्-न
फ़िर्औ़-न व हामा-न व जुनूदहुमा कानू
ख़ातिईन (८) व क़ालतिम् - र-अतु
फ़िर्औ़-न क़ुर्रतु अ़ैनिल्ली व ल - क ط
ला तक़्तुलूहु صلے असा अंय्यन्-फ़ - अ़ना
औ नत्तख़ि - जहू व-ल-दंव्-व हुम् ला
यश्अ़ुरून (९) व अस्-ब-ह़ फ़ुआदु उम्मि
मूसा फ़ारिग़न् ط इन् कादत् लतुब्दी
बिही लौला अर् - बत़्ना अ़ला
क़ल्बिहा लितकू - न मिनल् - मुअ्मिनीन
(१०) व क़ालत् लिउख़्तिही क़ुस़्सीहि ز फ़ - बसुरत् बिही अ़न्
जुनुबिंव्-व हुम् ला यश-अ़ुरून ۷ (११) व हर्रम्ना अ़लैहिल् - मराज़ि-अ़
मिन् क़ब्लु फ़ - क़ालत् हल् अदुल्लुकुम् अ़ला अह - लि बैतिंय्यक्फ़ुलूनहू
लकुम् व हुम् लहू नासिह़ून (१२) फ़-र-दद्नाहु इला उम्मिही कै
त-क़र्-र अ़ैनुहा व ला तह़-ज़-न व लि-तअ्-ल-म अन्-न वअ़्-दल्लाहि ह़क़्क़ुंव्-व
लाकिन्-न अक्स-र-हुम् ला यअ़्-लमून ★● (१३) व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्दहू
वस्तवा आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मन् ط व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह़्सिनीन (१४)

القصص ٢٨ ٣٠٨ امن خلق ٢٠

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ
اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۝٥ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝٦ وَ
اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ
فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ
مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧ فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّ
حَزَنًا ۭ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٔيْنَ ۝٨ وَقَالَتِ
امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ
اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩ وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى
فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰي قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠ وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ
جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓي اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ
نٰصِحُوْنَ ۝١٢ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ
اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣ وَلَمَّا
بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰي حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ

منزل

★रु. १/४ आ १३ ● रुबुअ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

थे कि जो लोग मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए हैं, उन पर एह्सान करें और उन को पेशवा बनाएं और उन्हें (मुल्क का) वारिस करें। (५) और मुल्क में उन को क़ुदरत दें और फ़िरऔन और हामान और उन की फ़ौज को वह चीज़ दिखा दें, जिस से वे डरते थे। (६) और हम ने मूसा की मां की तरफ़ वह्य भेजी कि उस को दूध पिलाओ, जब तुम को इस के बारे में कुछ डर पैदा हो, तो उसे दरिया में डाल देना और न तो ख़ौफ़ करना और न रंज करना। हम उस को तुम्हारे पास वापस पहुंचा देंगे और (फिर) उसे पैग़म्बर बना देंगे। (७) तो फ़िरऔन के लोगों ने उस को उठा लिया, इस लिए कि (नतीजा यह होना था कि) वह उन का दुश्मन और (उन के लिए) ग़म (की वजह) हो। बेशक फ़िरऔन और हामान और उन के लश्कर चूक गये। (८) और फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि (यह) मेरी और तुम्हारी (दोनों की) आंखों की ठंडक है, इस को क़त्ल न करना, शायद यह हमें फ़ायदा पहुंचाए, या हम इसे बेटा वना लें और वे (अंजाम) से बे-ख़बर थे। (९) और मूसा की मां का दिल बे-क़रार हो गया। अगर हम उन के दिल को मज़बूत न कर देते, तो क़रीब था कि वह इस (ग़ुस्से) को ज़ाहिर कर दें। ग़रज़ यह थी कि वे मोमिनों में रहे। (१०) और उस की बहन से कहा कि उस के पीछे-पीछे चली जा, तो वह उसे दूर से देखती रही और उन (लोगों) को कुछ ख़बर न थी। (११) और हम ने पहले ही से उस पर (दाइयों के) दूध हराम कर दिए थे, तो मूसा की बहन ने कहा कि मैं तुम्हें ऐसे घर वाले वताऊं कि तुम्हारे लिए इस (बच्चे) को पालें और उस की ख़ैरख़्वाही (से परवरिश) करें। (१२) तो हम ने (इस तरीक़े से) उन को उन की मां के पास वापस पहुंचा दिया, ताकि उन की आंखें ठंडी हों और वह ग़म न खाएं और मालूम करें कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन ये अक्सर नहीं जानते। (१३) ★ ●

और जब मूसा जवानी को पहुंचे और भरपूर (जवान) हो गये, तो हम ने उन को हिक्मत और इल्म इनायत किया और हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१४) और वह ऐसे वक़्त

★ रु. १/४ आ १३ ● रुबुअ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व द-ख़-लल्-मदी-न-त़ अ़ला ह़ीनि ग़फ़्-लतिम्-मिन् अह्-लिहा फ़-व-ज-द फ़ीहा रजु-
लैनि यक़्ततिलानि قف हाज़ा मिन् शीअ़तिही व हाज़ा मिन् अ़दुव्विही ج
फ़स्तग़ा-सहुल्लज़ी मिन् शीअ़तिही अ़लल्लज़ी मिन् अ़दुव्विही لا फ़-व-क - ज़हू
मूसा फ़ - क़ज़ा अ़लैहि قف क़ा - ल हाज़ा मिन् अ़ - मलिश्शैतानि ط इन्नहू
अ़दुव्वुम्-मुज़िल्लुम्-मुबीन (१५) क़ा - ल
रब्बि इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी फ़ग़-फ़िर् ली
फ़ - ग़ - फ़ - र लहू ط इन्नहू हुवल्-
ग़फ़ूरुर्रहीम (१६) क़ा-ल रब्बि बिमा
अन-अ़म्-त अ़-लय्-य फ़-लन् अकू-न ज़हीरल्-
लिल्मुज्रिमीन (१७) फ़-अस्-ब-ह़ फ़िल्मदीनति
ख़ाइफ़य्य - त - रक़्क़बु फ़-इज़ल्लज़िस्तन्स़रहू
बिल - अम् - सि यस्तस़्रिख़ुहू ط क़ा - ल
लहू मूसा इन्न-क ल-ग़विय्युम् - मुबीन
(१८) फ़-लम्मा अन् अरा-द अंय्यब्ति-श
बिल्लज़ी हु-व अ़दुव्वुल् - लहुमा لا क़ा - ल
या मूसा अतुरीदु अन् तक़्तु-लनी कमा
क़-तल् - त नफ़् - सम् - बिल्अम्सि صلے ق
इन् तुरीदु इल्ला अन् तकू-न जब्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मा तुरीदु अन् तकू-न
मिनल्-मुस्लिह़ीन (१९) व जा - अ रजुलुम् - मिन् अक़्सल् - मदीनति
यस-आ़ ز क़ा-ल या मूसा इन्नल्-म-ल-अ यअ्-तमिरू-न बि-क लि-यक़्तुलू-क
फ़ख़्रुज् इन्नी ल-क मिनन्नासिह़ीन (२०) फ़-ख़-र-ज मिन्हा ख़ाइफ़य्य-त-रक़्क़बु ز
क़ा-ल रब्बि नज्जिनी मिनल्क़ौमिज़्-ज़ालिमीन★(२१) व लम्मा त-वज्ज-ह
तिल्क़ा-अ मद्-य-न क़ा-ल अ़सा रब्बी अंय्यह्-दि-यनी सवा-अस्सबील (२२) व
लम्मा व-र-द मा-अ मद्-य-न व-ज-द अ़लैहि उम्म-तम्-मिनन्नासि यस्क़ू-न ز
व व-ज-द मिन् दूनिहिमुम्-र-अतैनि तज़ूदानि ج क़ा-ल मा ख़त़्बुकुमा ط क़ालता
ला नस्क़ी ह़त्ता युस़्दिरर् - रिआ़उ سکتة व अबूना शैख़ुन् कबीर (२३)

امن خلق ٢٠ ٣٠٩ القصص ٢٨

فَلَمَّا وَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ
عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ
فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ
عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٥ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ
فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝١٦ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ
فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝١٧ فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا
يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ
مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٨ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ
هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ
نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۗ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَ
مَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝١٩ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا
الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ
فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٢٠ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫
قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٢١ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ
قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝٢٢ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ
مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ
دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ

منزل ٥

★रु. २/५ आ ८

शहर में दाख़िल हुए कि वहां के रहने वाले बे-ख़बर हो रहे थे, तो देखा कि वहां दो शख़्स लड़ रहे थे, एक तो मूसा की क़ौम का है और दूसरे उन के दुश्मनों में से। तो जो शख़्स उन की क़ौम में से था, उस ने दूसरे शख़्स के मुक़ाबले में, जो मूसा के दुश्मनों में से था, मदद तलब की, तो उन्हों ने उस को मुक्का मारा और उस का काम तमाम कर दिया।[1] कहने लगे कि यह काम तो शैतान (के बहकावे) से हुआ। बेशक वह (इन्सान का) दुश्मन और खुला बहकाने वाला है। (१५) बोले कि ऐ परवरदिगार ! मैं ने अपने आप पर ज़ुल्म किया, तो मुझे बख़्श दे, तो ख़ुदा ने उन को बख़्श दिया। बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (१६) कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! तूने जो मुझ पर मेहरबानी फ़रमायी है, मैं (आगे) कभी गुनाहगारों का मददगार न बनूं। (१७) ग़रज़ यह कि सुबह के वक़्त शहर में डरते-डरते दाख़िल हुए कि देखें (क्या होता है), तो यकायक वही शख़्स जिस ने कल उन से मदद मांगी थी, फिर उन को पुकार रहा है। (मूसा ने) उस से कहा कि तू तो खुली गुमराही में है। (१८) जब मूसा ने इरादा किया कि उस शख़्स को, जो उन दोनों का दुश्मन था, पकड़ लें, तो वह (यानी मूसा की क़ौम का आदमी) बोल उठा कि जिस तरह तुम ने कल एक शख़्स को मार डाला था, (उसी तरह) चाहते हो कि मुझे भी मार डालो। तुम तो यही चाहते हो कि मुल्क में ज़ुल्म व सितम करते फिरो और यह नहीं चाहते कि नेकों में हो। (१९) और एक शख़्स शहर के परली तरफ़ से दौड़ता हुआ आया (और बोला कि मूसा शहर के) रईस तुम्हारे बारे में मश्विरे करते हैं कि तुम को मार डालें, सो तुम यहां से निकल जाओ। मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूं। (२०) मूसा वहां से डरते-डरते निकल खड़े हुए कि देखें (क्या होता है और) दुआ करने लगे कि ऐ परवरदिगार ! मुझे ज़ालिम लोगों से निजात दे। (२१)★

और जब मदयन की तरफ़ रुख़ किया तो कहने लगे, उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता बताए। (२२) और जब मदयन के पानी (की जगह) पर पहुंचे तो देखा कि वहां लोग जमा हो रहे (और अपने चारपायों को) पानी पिला रहे हैं और उन के एक तरफ़ दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं। मूसा ने (उन से) कहा, तुम्हारा क्या काम है ? वे बोलीं कि जब तक चरवाहे (अपने चारपायों को) ले न जाएं, हम पानी नहीं पिला सकते और हमारे वालिद बड़ी उम्र

---

१. कहते हैं कि जिस शख़्स को हज़रत मूसा ने मुक्का मारा था, वह फ़िऔन का बावरची था और वह हज़रत मूसा की क़ौम के शख़्स को बेगार के लिए मजबूर कर रहा था। जब उस ने मूसा अलैहिस्सलाम को देखा तो उन से मदद चाही। मूसा अलैहिस्सलाम ने उस मज़्लूम को ज़ालिम के हाथ से बचाने की नीयत से उस क़िब्ती को मुक्का मारा और वह मर कर रह गया। यह क़त्ल अगरचे जान-बूझ कर न था, बल्कि इत्तिफ़ाक़ की बात थी, फिर भी मूसा अलैहिस्सलाम इस काम पर बहुत शर्मिन्दा हुए और अपनी शान के लिहाज़ से उस को ख़ता मान कर के ख़ुदा से माफ़ी चाही।

★रु. २/५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-सक़ा लहुमा सुम्-म त-वल्ला इलज़्ज़िलि फ़-क़ा-ल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्-त इलय्-य मिन् ख़ैरिन् फ़क़ीर (२४) फ़जा-अत्हु इह्दाहुमा तम्शी अ-लस्तिह्याइन् क़ालत् इन्-न अबी यद्अू - क लियज्ज़ि-य-क अज् - र मा सक़ै-त लना फ़-लम्मा जा-अहू व क़स्-स अ़लैहिल्क़-स-स़ क़ा-ल ला त - ख़फ़् وقف नजौ - त मिनल् - क़ौमिज़्ज़ालिमीन (२५) क़ालत् इह्दा-हुमा या अ-बतिस्तअ्-जिर्हु इन्-न ख़ै-र मनिस्तअ्-जर्तल् - क़विय्युल् अमीन (२६) क़ा-ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि - ह्-क इह्-दब्-न-तय्-य हातैनि अ़ला अन् तअ्जु-रनी समानि-य हि़जजिन् फ़-इन् अतमम् - त अश्-रन् फ़मिन् अि़न्दि-क व मा उरीदु अन् अशुक़्-क़ अ़लै - क स - तजिदुनी इन्शाअल्लाहु मिनस्स़ालिह़ीन (२७) क़ा-ल ज़ालि-क बैनी व बै-न - क अय्य-मल् - अ-जलैनि क़ज़ैतु फ़ला अ़ुद्वा-न अ़-लय्-य वल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील★(२८)

حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَاۗءُ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ۝ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤى
اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ۝ فَجَآءَتْهُ
اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَاۗءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ
اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ فَلَمَّا جَاۗءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ
لَا تَخَفْ ۣ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ
اسْتَاْجِرْهُ ۡ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ۝ قَالَ اِنِّيْۤ
اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤي اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ
حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ
عَلَيْكَ ۭ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ
وَبَيْنَكَ ۭ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي
مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝ فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا
لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝
فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ
مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَلْقِ
عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ
يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۣ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝ اُسْلُكْ يَدَكَ

फ़-लम्मा क़ज़ा मूसल्-अ-ज-ल व सा-र बि-अह्लिही आ-न-स मिन् जानिबित्तूरि नारन् क़ा-ल लि-अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु ना-रल्ल - अ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ जज्-वति़म्-मिनन्नारि ल-अ़ल्लकुम् तस़्तलून (२९) फ़-लम्मा अताहा नूदि-य मिन् शाति़-इल् - वादिल् - ऐमनि फ़िल्बुक़्अति़ल्-मुबा-र-कति़ मिनश्श-ज-रति़ अंय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल् - आलमीन (३०) व अन् अल्क़ि अ़स़ा - क फ़ - लम्मा र - आहा तह्तज़्ज़ु क - अन्नहा जान्नुं व्वल्ला मुद् - बिरंव - व लम् यु - अ़क़्क़िब् या मूसा अक़्बिल् व ला त - ख़फ़् قف इन्न - क मिनल् - आमिनीन (३१)

★रु॰ ३/६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के बूढ़े हैं। (२३) तो मूसा ने उन के लिए (बकरियों को) पानी पिला दिया, फिर साए की तरफ़ चले गये और कहने लगे कि परवरदिगार! मैं इस का मुहताज हूं कि तू मुझ पर अपनी नेमत नाज़िल फ़रमाए। (२४) (थोड़ी देर के बाद) उन में से एक औरत जो शर्माती और लजाती चली आती थी, मूसा के पास आयी (और) कहने लगी कि तुम को मेरे वालिद बुलाते हैं कि तुम ने जो हमारे लिए पानी पिलाया था, उस का तुम को बदला दें। जब वह उन के पास आए और उन से (अपना) माजरा बयान किया, तो उन्हों ने कहा कि कुछ ख़ौफ़ न करो। तुम ज़ालिम लोगों से बच आए हो। (२५) एक लड़की बोली कि अब्बा! इन को नौकर रख लीजिए, क्योंकि बेहतर नौकर जो आप रखें, वह है (जो) मज़बूत और अमानतदार (हो)। (२६) (मूसा से) कहा कि मैं चाहता हूं, अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम से ब्याह दूं, इस (वायदे) पर कि तुम आठ वर्ष मेरी ख़िदमत करो और अगर दस साल पूरे कर दो, तो वह तुम्हारी तरफ़ से (एहसान) है और मैं तुम पर तक्लीफ़ डालनी नहीं चाहता, तुम मुझे इन्शाअल्लाह नेक लोगों में पाओगे। (२७) मूसा ने कहा कि मुझ में और आप में यह (पक्का वायदा हुआ), मैं जो-भी मुद्दत (चाहूं) पूरी कर दूं, फिर मुझ पर कोई ज़्यादती न हो और हम जो समझौता करते हैं, ख़ुदा उस का गवाह है। (२८)★

जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर के लोगों को ले कर चले, तो तूर की तरफ़ से आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहने लगे कि (तुम यहां) ठहरो। मुझे आग नज़र आयी है, शायद मैं वहां से (रास्ते का) कुछ पता लाऊं या आग का अंगारा ले आऊं, ताकि तुम तापो। (२९) जब उस के पास पहुंचे तो मैदान के दाएं किनारे से एक मुबारक जगह में, एक पेड़ में से आवाज़ आयी कि मूसा! मैं तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन हूं। (३०) और यह कि अपनी लाठी डाल दो। जब देखा कि वह हरकत कर रही है, गोया सांप है, तो पीठ फेर कर चल दिए और पीछे मुड़ कर भी न देखा। (हम ने कहा कि) मूसा आगे आओ और डरो मत, तुम अम्न पाने वालों में हो। (३१)

★रु. ३/६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उस-लुक् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्-रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइंव्-वज़्मुम्
इलै-क जना-ह्-क मिनर्रह्बि फ़-ज़ानि-क बुर्हानानि मिर्रब्बि-क इला फ़िर्औ-न
व मल-इही ط इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (३२) क़ा-ल रब्बि
इन्नी क़-तल्तु मिन्हुम् नफ़्सन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून (३३) व अख़ी
हारूनु हु-व अफ़्सह़ु मिन्नी लिसानन्
फ़-अर्सिल्हु मअि-य रिद्अंय्युसद्दिक़ुनी
इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (३४)
क़ा-ल स-नशुद्दु अज़ु-द-क बि-अख़ी-क व नज्अलु
लकुमा सुल्ताननू फ़ ला यसिलू-न इलैकुमा
ج .·. बिआयातिना ج अन्तुमा व
मनित्त-ब-अ़-कुमल्-ग़ालिबून (३५) फ़-लम्मा
जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन्
क़ालू मा हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुफ़्तरंव्-व
मा समिअ्-ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-
अव्वलीन (३६) व क़ा-ल मूसा रब्बी
अअ्-लमु बिमन् जा-अ बिल्हुदा मिन्
अ़िन्दिही व मन् तकूनु लहू आ़क़िबतुद्दारि ط

القصص ٢٨ — ٣١١ — امن خلق ٢٠

فِیْ جَیْبِكَ تَخْرُجْ بَیْضَآءَ مِنْ غَیْرِ سُوْٓءٍ٘ وَّاضْمُمْ اِلَیْكَ جَنَاحَكَ
مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰی فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ ط
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا
فَاَخَافُ اَنْ یَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾ وَاَخِیْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسَانًا
فَاَرْسِلْهُ مَعِیَ رِدْاً یُّصَدِّقُنِیْٓ اِنِّیْٓ اَخَافُ اَنْ یُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾
قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِیْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا یَصِلُوْنَ
اِلَیْكُمَا ۚ بِاٰیٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ
مُّوْسٰی بِاٰیٰتِنَا بَیِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًی وَّمَا
سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیْٓ اٰبَآىِٕنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰی رَبِّیْٓ اَعْلَمُ
بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰی مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ط
اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ یٰٓاَیُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ
لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرِیْ ۚ فَاَوْقِدْ لِیْ یٰهَامٰنُ عَلَی الطِّیْنِ فَاجْعَلْ
لِّیْ صَرْحًا لَّعَلِّیْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓی اِلٰهِ مُوْسٰی ۙ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ
الْكٰذِبِیْنَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ
وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَیْنَا لَا یُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ
فِی الْیَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً
یَّدْعُوْنَ اِلَی النَّارِ ۚ وَیَوْمَ الْقِیٰمَةِ لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ وَاَتْبَعْنٰهُمْ

इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (३७) व क़ा-ल फ़िर्औनु या अय्युहल्म-ल-उ
मा अ़लिम्तु लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरी ج फ़ औक़िद् ली या हामानु
अलत्तीनि फ़ज्-अ़ल्ली स़र-ह़ल-ल-अ़ल्ली अत्तलिअु इला इलाहि मूसा
व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू मिनलकाज़िबीन (३८) वस्तक्-ब-र हु-व व जुनूदुहू फ़िल्अर्ज़ि
बिग़ैरिल्ह़क़्क़ि व ज़न्नू अन्नहुम् इलैना ला युर्जअून (३९)
फ़-अ-ख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़-न-बज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि ج फ़न्ज़ुर् कै-फ़
का-न आ़क़िबतुज़्ज़ालिमीन (४०) व ज-अ़ल्नाहुम् अ-इम्मतंय्यद्अू-न
इलन्नारि ج व यौमल्क़ियामति ला युन्सरून (४१)

•. मु. अ़ि मु. ता ख. ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अपना हाथ गरेबान में डालो तो बग़ैर किसी ऐब के सफ़ेद निकल आएगा और डर दूर होने (की वजह) से अपने बाज़ू को अपनी तरफ़ सुकेड़ लो। ये दो दलीलें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हैं। (उन के साथ) फ़िऔन और उस के दरबारियों के पास (जाओ) कि वे नाफ़रमान लोग हैं। (३२) (मूसा ने) कहा, ऐ परवरदिगार! उन में का एक शख़्स मेरे हाथ से क़त्ल हो चुका है, सो मुझे डर है कि वे (कहीं) मुझ को न मार डालें। (३३) और हारून (जो) मेरा भाई (है) उस की ज़ुबान मुझ से ज़्यादा साफ़ है तो उस को मेरे साथ मददगार बना कर भेज कि मेरी तस्दीक़ करे, मुझे डर है कि वे लोग मुझे झुठला देंगे।[1] (३४) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, हम तुम्हारे भाई से तुम्हारे बाज़ू को मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को ग़लबा देंगे, तो हमारी निशानियों की वजह से वे तुम तक पहुंच न सकेंगे (और) तुम और जिन्हों ने तुम्हारी पैरवी की, ग़ालिब रहोगे। (३५) और जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियां ले कर आये, तो वे कहने लगे कि यह तो जादू है, जो इस ने बना खड़ा किया है और ये (बातें) हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो (कभी) सुनी नहीं। (३६) और मूसा ने कहा कि मेरा परवरदिगार उस शख़्स को ख़ूब जानता है, जो उस की तरफ़ से हक़ ले कर आया है और जिस के लिए आक़िबत का घर (यानी बहिश्त) है। बेशक ज़ालिम निजात नहीं पाएंगे। (३७) और फ़िऔन ने कहा कि ऐ दरबारियो! मैं तुम्हारा, अपने सिवा, किसी को ख़ुदा नहीं जानता, तो हामान मेरे लिए गारे को आग लगा (कर ईंटें पका) दो, फिर एक (ऊंचा) महल बना दो, ताकि मैं मूसा के ख़ुदा की तरफ़ चढ़ जाऊं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं। (३८) और वह और उस के लश्कर मुल्क में ना-हक़ घमंड में चूर हो रहे थे और ख़्याल करते थे कि वे हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (३९) तो हम ने उन को और उन के लश्करों को पकड़ लिया और दरिया में डाल दिया, सो देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ। (४०) और हम ने उन को पेशवा बनाया था। वे (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते थे और क़ियामत के दिन उन की मदद

१. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबान में लुक्नत थी और उन को ख़्याल था कि वे लुक्नत की वजह से तक़रीर साफ़ न कर सकेंगे, इस लिए ख़ुदा से इल्तिजा की कि मेरे भाई हारून को, जिन की ज़ुबान साफ़ है, मेरे साथ मददगार बना कर भेज, ताकि उन दलीलों को, जो ज़ुबान की लुक्नत की वजह से अच्छी तरह बयान न कर सकूं, वह अपनी साफ़ ज़ुबान होने की वजह से अच्छी तरह बयान कर सकें और उन लोगों के ज़ेहन में बिठा दें।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अत्बअ्-नाहुम् फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ्-न-तन् व यौमल्-क़ियामति हुम्
मिनल्-मक़्बूहीन ★ (४२) व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब मिम्बअ्-दि मा
अह-लक-नल्-क़ुरूनल्-ऊला बसाइ-र लिन्नासि व हुदंव्-व रह-म-तल्-ल-अल्ल-
हुम् य-त-ज़क्करून (४३) व मा कुन्-त बिजानिबिल्-ग़र्बिय्यि इज़् क़ज़ैना इला
मूसल्-अम्-र व मा कुन्-त मिनश्शाहिदीन
(४४) व लाकिन्ना अन्शअ्-ना क़ुरूनन्
फ़-त-ताव-ल अलैहिमुल्-अुमुरु व मा
कुन्-त सावियन् फ़ी अह्लि मद्-य-न तत्लू
अलैहिम् आयातिना व लाकिन्ना कुन्ना
मुर्सिलीन (४५) व मा कुन्-त बिजानिबित्तूरि
इज़् नादैना व लाकिर्रह्-म-तम्-मिर्रब्बि-क
लितुन्ज़ि-र क़ौमम्मा अताहुम् मिन्
नज़ीरिम् मिन् क़ब्लि-क ल-अल्लहुम्
य-त-ज़क्करून (४६) व लौ ला अन्
तुसीबहुम् मुसीबतुम्-बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम्
फ़-यक़ूलू रब्बना लौ ला अर्सल-त इलैना
रसूलन् फ़-नत्तबि-अ आयाति-क व नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (४७) फ़-लम्मा
जा-अ-हुमुल्हक़्क़ु मिन् अिन्-दिना क़ालू लौ ला ऊति-य मिस्-ल मा ऊति-य
मूसा अ-व-लम् यक्फ़ुरू बिमा ऊति-य मूसा मिन् क़ब्लु क़ालू
सिह्रानि तज़ाहरा वक़्फ़ व क़ालू इन्ना बिकुल्लिन् काफ़िरून (४८)
क़ुल् फ़अ्तू बिकिताबिम्-मिन् अिन्दिल्लाहि हु-व अह्-दा मिन्हुमा
अत्तबिअ्-हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४९) फ़-इल्लम् यस्तजीबू ल-क फ़अ्-लम्
अन्नमा यत्तबिअू-न अह्-वा-अहुम् व मन् अज़ल्लु मिम्मनित्त-ब-अ हवाहु बिग़ैरि
हुदम्मिनल्लाहि इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन ★ (५०)

فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَ
لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى
بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَمَا
كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ
مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ
وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا وَلٰكِنَّا
كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ
رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ
مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ
كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ
اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ
اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ
هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ

★रु. ४/७ आ १४ ★रु. ५/८ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नहीं की जाएगी। (४१) और इस दुनिया में हम ने उन के पीछे लानत लगा दी और वे क़ियामत के दिन भी बद-हालों में होंगे। (४२)★

और हम ने पहली उम्मतों के हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी, जो लोगों के लिए बसीरत और हिदायत और रहमत है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (४३) और जब हम ने मूसा की तरफ़ हुक्म भेजा, तो तुम (तूर के) पश्चिम की तरफ़ नहीं थे और न इस वाक़िए के देखने वालों में थे। (४४) लेकिन हम ने (मूसा के बाद) कई उम्मतों को पैदा किया, फिर उन पर मुद्दत लम्बी बीत गयी और न तुम मदयन वालों में रहने वाले थे कि उन को हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते थे। हां, हम ही तो पैग़म्बर भेजने वाले थे। (४५) और न तुम उस वक़्त, जब कि हम ने (मूसा को) आवाज़ दी, तूर के किनारे थे, बल्कि (तुम्हारा भेजा जाना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है, ताकि तुम उन लोगों को जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया, हिदायत करो ताकिं वे नसीहत पकड़ें। (४६) और (ऐ पैग़म्बर! हम ने तुम को इस लिए भेजा है कि) ऐसा न हो कि अगर इन (आमाल) की वजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं, उन पर कोई मुसीबत वाक़ेअ हो, तो ये कहने लगें कि ऐ परवरदिगार! तू ने हमारी तरफ़ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाने वालों में होते। (४७) फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आ पहुंचा, तो कहने लगे कि जैसी (निशानियां) मूसा को मिली थीं, वैसी इस को क्यों नहीं मिलीं? क्या जो (निशानियां) पहले मूसा को दी गयी थीं, उन्हों ने उन में कुफ़्र नहीं किया? कहने लगे कि दोनों जादूगर हैं एक दूसरे के मुवाफ़िक़ और बोले कि हम सब से मुंकिर हैं। (४८) कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम ख़ुदा के पास से कोई और किताब ले आओ, जो इन दोनों (किताबों) से बढ़ कर हिदायत करने वाली हो, ताकि मैं भी उसी की पैरवी करूं। (४९) फिर अगर ये तुम्हारी बात क़ुबूल न करें, तो जान लो कि ये सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करते हैं और उस से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो ख़ुदा की हिदायत को छोड़ कर अपनी ख़्वाहिश के पीछे चले। बेशक ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (५०)★

★रु. ४/७ आ १४ ★रु. ५/८ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् वस़्स़ल्ना लहुमुल्क़ौ-ल ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून ط (५१) अल्लज़ी-न
आतैनाहुमुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिही हुम् बिही युअ्मिनून ● (५२) व
इज़ा युत्ला अ़लैहिम् क़ालू आमन्ना बिही इन्नहुल् - ह़क़्क़ु मिर्रब्बिना
इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लिही मुस्-लिमीन (५३) उलाइ-क युअ्तौ-न अज्-रहुम्

وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٥١ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٢ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ
اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ۝٥٣ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ
اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَ
مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٥٤ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَ
قَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۡ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۡ لَا نَبْتَغِى
الْجٰهِلِيْنَ ۝٥٥ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٥٦ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى
مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۭ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى
اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٧
وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ ۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ
لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ ۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۭ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝٥٨
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝٥٩ وَ
مَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٠ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا
فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

मर्रतैनि बिमा स़-बरू व यद - रऊ-न
बिल्-ह़-स-नति़स्-सय्यि-अ-त़ व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम्
युन्फ़िक़ून (५४) व इज़ा समिअ़ुल्-
लग़्-व अअ् - रज़ू अ़न्हु व क़ालू लना
अअ् - मालुना व लकुम् अअ् - मालुकुम् ز
सलामुन् अ़लैकुम् ز ला नब्तग़िल् -
जाहिलीन (५५) इन्न-क ला तह्दी मन्
अह़्-बब्-त व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशाउ ج
व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह-तदीन (५६) व
क़ालू इन् नत्तबिअ़िल्-हुदा म - अ़ - क
नु-त-ख़त़्त़फ़् मिन् अर्ज़िना ط अ-व लम्
नुमक्किल्-लहुम् ह़-र-मन् आमिनंय्युज्बा इलैहि
स़-मरातु कुल्लि शैइर्रिज़्-क़म् - मिल्लदुन्ना
व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (५७) व कम् अह-लक्ना मिन् क़र्यतिम्-
बति़-रत् मअ़ी-श-तहा ج फ़तिल्-क मसाकिनुहुम् लम् तुस्कम् - मिम्बअ्-दिहिम्
इल्ला क़लीलन् ط व कुन्ना नह्नुल्-वारिसीन (५८) व मा का-न रब्बु-क
मुह्लिकल् - क़ुरा ह़त्ता यब् - अ़ - स फ़ी उम्मिहा रसूलंय्यत्लू अ़लैहिम्
आयातिना ج व मा कुन्ना मुह्लिकिल्क़ुरा इल्ला व अह्लुहा ज़ालिमून (५९)
व मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़ - मताअ़ुल् - ह़यातिद्दुन्या व ज़ीनतुहा ج
व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुंव-व अब्क़ा ط अ - फ़ला तअ्- क़िलून ★ (६०)
अ-फ़-मंव्व-अ़द्नाहु वअ्-दन् ह़-स-नन् फ़हु-व लाक़ीहि क-मम्-मत्तअ्-नाहु मताअ़ल्-
ह़यातिद्दुन्या सुम्-म हु-व यौमल् - क़ियामति मिनल्-मुह्-ज़रीन (६१)

● नि. १/२ ★रु. ६/६ आ. ४०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और हम (एक के बाद एक) लगातार उन लोगों के पास (हिदायत की) बातें भेजते रहे हैं, ताकि नसीहत पकड़ें।[1] (५१) जिन लोगों को हम ने इस से पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान ले आते हैं● (५२) और जब (क़ुरआन) उन को पढ़ कर सुनाया जाता है, तो कहते हैं कि हम इस पर ईमान ले आए। बेशक वह हमारे परवरदिगार की तरफ़ से बर-हक़ है (और) हम तो इस से पहले के हुक्मबरदार हैं। (५३) इन लोगों को दोगुना बदला दिया जाएगा, क्योंकि सब्र करते रहे हैं और भलाई के साथ बुराई को दूर करते हैं और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से ख़र्च करते हैं। (५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं, तो उस से मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि हम को हमारे आमाल और तुम को तुम्हारे आमाल, तुम को सलाम। हम जाहिलों के ख़्वास्तगार (चाहने वाले) नहीं हैं। (५५) (ऐ मुहम्मद !) तुम जिस को दोस्त रखते हो, उसे हिदायत नहीं कर सकते, बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत करता है और वह हिदायत पाने वालों को ख़ूब जानता है। (५६) और कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें, तो अपने मुल्क से उचक लिए जाएं। क्या हम ने उन को हरम में, जो अम्न की जगह है, जगह नहीं दी, जहां हर क़िस्म के मेवे पहुंचाए जाते हैं (और यह) रिज़्क़ हमारी तरफ़ से है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (५७) और हम ने बहुत-सी बस्तियों को हलाक कर डाला, जो अपनी दौलत (की ज़्यादती) में इतरा रहे थे, सो ये उन के मकान हैं, जो उन के बाद आबाद नहीं हुए, मगर बहुत कम और उन के पीछे हम ही उन के वारिस हुए। (५८) और तुम्हारा परवरदिगार बस्तियों को हलाक नहीं किया करता, जब तक उन के बड़े शहर में पैग़म्बर न भेज ले, जो उन को हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाये, और हम बस्तियों को हलाक नहीं किया करते, मगर इस हालत में कि वहां के बाशिंदे ज़ालिम हों। (५९) और जो चीज़ तुम को दी गयी है, वह दुनिया की ज़िंदगी का फ़ायदा और उस की ज़ीनत है और जो ख़ुदा के पास है, वह बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। क्या तुम समझते नहीं ? (६०) ★

भला जिस शख़्स से हम ने नेक वायदा किया और उस ने उसे हासिल कर लिया तो क्या वह उस शख़्स का-सा है, जिस को हम ने दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे से नवाज़ा। फिर वह क़ियामत के दिन उन लोगों में हो, जो (हमारे रू-ब-रू) हाज़िर किए जाएंगे। (६१) और जिस (दिन) (ख़ुदा)

१. बातें 'क़ौल' का तर्जुमा है और इस से मुराद क़ुरआन मजीद की आयतें हैं, जो एक दूसरे के बाद आती रहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रका-इयल्लजी-न कुन्तुम् तज़्-अुमून (६२)
क़ालल्लजी-न ह़क़्-क़ अलैहिमुल् - क़ौलु रब्बना हाउलाइकल्लजी-न अग़्वैना ज
अग़्वैनाहुम् कमा ग़वैना ज तबर्रअ् - ना इलै - क / मा कानू इय्याना
यअ्-बुदून (६३) व क़ीलद्अू शु-र-का-अकुम् फ़-दअौहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम्
व र-अ-वुल्-अज़ा-ब ज लौ अन्नहुम् कानू
यह्-तदून (६४) व यौ-म युनादीहिम्
फ़ यक़ूलु माज़ा अ-जब्तुमुल् - मुर्सलीन
(६५) फ़-अमि-यत् अलैहिमुल् - अम्बाउ
यौमइज़िन् फ़हुम् ला य-त-साअलून (६६)
फ़-अम्मा मन् ता-ब व आ-म-न व अमि-ल
सालिहन् फ़-असा अंय्यकू-न मिनल्मुफ़्लिह़ीन
(६७) व रब्बु-क यख़्-लुक़ु मा यशाउ
व यख़्तारु ط मा का - न लहुमुल् -
ख़ि - य - रतु ط सुब्ह़ानल्लाहि व तआ़ला
अम्मा युश्रिकून (६८) व रब्बु-क यअ्-लमु
मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ्-लिनून (६९)
व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ط लहुल्-ह़म्दु फ़िल्ऊला वल्-आख़िरति
व लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअून (७०) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ-लल्लाहु
अलैकुमुल्लै-ल सर्मदन् इला यौमिल्क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम्
बिज़ियाइन् ط अ-फ़ला तस्-मअून (७१) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ-लल्लाहु
अलैकुमुन्नहा-र सर्मदन् इला यौमिल्क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि
यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू - न फ़ीहि ط अ-फ़-ला तुब्सिरून (७२)
व मिर्रह़्मतिही ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा - र लितस्कूनू फ़ीहि व
लि - तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल - अ़ल्लकुम् तश्कुरून (७३)

مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۚ أَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِيَّانَا
يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا
لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ
فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ
فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ
أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا
كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ
يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا
هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ﴿٧٢﴾ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَيَوْمَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहां हैं, जिन का तुम्हें दावा था ? (६२) (तो) जिन लोगों पर (अज़ाब का) हुक्म साबित हो चुका होगा, वे कहेंगे कि हमारे परवरदिगार ! ये वह लोग हैं, जिन को हम ने गुमराह किया था और जिस तरह हम ख़ुद गुमराह हुए थे, उसी तरह उन को गुमराह किया था, (अब) हम तेरी तरफ़ (मुतवज्जह हो कर) उन से बे-ज़ार होते हैं। ये हमें नहीं पूजते थे। (६३) और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ, तो वे उन को पुकारेंगे और वे उन को जवाब न दे सकेंगे और (जब) अज़ाब को देख लेंगे (तो तमन्ना करेंगे कि) काश ! वे हिदायत पाये हुए होते। (६४) और जिस दिन (ख़ुदा) उन को पुकारेगा और कहेगा कि तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया ? (६५) तो वे उस दिन ख़बरों से अंधे हो जाएंगे[1] और आपस में कुछ भी पूछ न सकेंगे। (६६) लेकिन जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए, तो उम्मीद है कि वह निजात पाने वालों में हो। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, पैदा करता है और (जिसे चाहता है) चुन लेता है। उन को (इस का) अख़्तियार नहीं है, ये जो शिर्क करते हैं, ख़ुदा उस से पाक व़ ऊंचा है। (६८) और उन के सीने, जो कुछ छिपाते हैं और जो ये ज़ाहिर करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार उस को जानता है। (६९) और वही ख़ुदा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, दुनिया और आख़िरत में उसी की तारीफ़ है और उसी का हुक्म और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (७०) कहो, भला, देखो तो अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक रात (का अंधेरा) किए रहे, तो ख़ुदा के सिवा कौन माबूद है, जो तुम को रोशनी ला दे, तो क्या तुम सुनते नहीं ? (७१) कहो, तो भला देखो तो अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा क़ियामत तक दिन किए रहे, तो ख़ुदा के सिवा कौन माबूद है कि तुम को रात ला दे, जिस में तुम आराम करो, तो क्या तुम देखते नहीं ? (७२) और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात को और दिन को बनाया, ताकि तुम उसमें आराम करो और (उस में) उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (७३)

१. लफ़्ज़ों का तर्जुमा तो यह है कि उस दिन उन पर ख़बरें अंधी हो जाएंगी लेकिन उर्दू मुहावरे को ध्यान में रखते हुए उस का तर्जुमा इस तरह किया गया।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (७४)
व न-ज़अ्-ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् फ़-क़ुल्ना हातू बुर्हानकुम् फ़-अ़लिमू
अन्नल्ह़क़्-क़ लिल्लाहि व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून★(७५) इन्-न
क़ारू-न का-न मिन् क़ौमि मूसा फ़-बग़ा अलैहिम् ص व आतैनाहु मिनल्कुनूज़ि
मा इन-न मफ़ाति-ह़हू ल-तनूउ बिल्अुस्बति
उलिल् - क़ुव्वति ۚ इज़् क़ा - ल लहू
क़ौमुहू ला तफ़्रह़ इन्नल्ला-ह ला युहि़ब्बुल्-
फ़रिह़ीन (७६) वब्तग़ि फ़ीमा
आताकल्लाहुद्-दारल्-आख़ि-र-त व ला तन्-स
नसी-ब-क मिनद्दुन्या व अह़्सिन् कमा
अह्-स-नल्लाहु इलै-क व ला तब्ग़िल्-फ़सा-द
फ़िल्अर्ज़ि ط इन्नल्ला - ह ला युहि़ब्बुल्-
मुफ़्सिदीन (७७) क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू
अ़ला अ़िल्मिन् अ़िन्दी ط अ-व लम् यअ्-लम्
अन्नल्ला-ह क़द् अह्-ल-क मिन् क़ब्लिही
मिनल्-क़ुरूनि मन् हु-व अशद्दु मिन्हु क़ुव्वतंव-
व अक्सरु जम्-अ़न् ط व ला युस्अलु अ़न् ज़ुनूबिहिमुल्-मुजिरमून (७८)
फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही फ़ी ज़ीनतिही ط क़ालल्लज़ी-न युरीदूनल्-ह़यातद्दुन्या
यालै-त लना मिस्-ल मा ऊति-य क़ारूनु ۙ इन्नहू ल-ज़ू ह़ज़्ज़िन् अ़ज़ीम (७९)
व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्अ़िल्-म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्लिमन् आम-न व अ़मि-ल
सालिह़न् ج व ला युलक़्क़ाहा इल्लस्साबिरून (८०) फ़ ख़ - सफ़्ना
बिही व बिदारिहिल्-अर्-ज़ قف फ़मा का-न लहू मिन् फ़ि - अतिंय्यन्सुरूनहू
मिन् दूनिल्लाहि ۚ व मा का - न मिनल् - मुन्तसिरीन (८१)

امن خلق ٢٠ ٣١٥ القصص ٢٨

يناديهم فيقول اين شركاءى الذين كنتم تزعمون ۝٧٤ ونزعنا
من كل امة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم فعلموا ان الحق
لله وضل عنهم ما كانوا يفترون ۝٧٥ ان قارون كان من قوم
موسى فبغى عليهم ص واتينه من الكنوز ما ان مفاتحه لتنوا
بالعصبة اولى القوة ۚ اذ قال له قومه لا تفرح ان الله لا
يحب الفرحين ۝٧٦ وابتغ فيما اتىك الله الدار الاخرة ولا
تنس نصيبك من الدنيا واحسن كما احسن الله اليك و
لا تبغ الفساد في الارض ط ان الله لا يحب المفسدين ۝٧٧
قال انما اوتيته على علم عندى ط اولم يعلم ان الله قد
اهلك من قبله من القرون من هو اشد منه قوة واكثر
جمعا ط ولا يسئل عن ذنوبهم المجرمون ۝٧٨ فخرج على
قومه في زينته ط قال الذين يريدون الحيوة الدنيا يليت
لنا مثل ما اوتى قارون ۙ انه لذو حظ عظيم ۝٧٩ وقال
الذين اوتوا العلم ويلكم ثواب الله خير لمن امن وعمل
صالحا ج ولا يلقىها الا الصبرون ۝٨٠ فخسفنا به وبداره الارض قف
فما كان له من فئة ينصرونه من دون الله ۚ وما كان من
المنتصرين ۝٨١ واصبح الذين تمنوا مكانه بالامس يقولون

منزل ٥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जिस दिन वह उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक, जिन का तुम्हें दावा था, कहां हैं ? (७४) और हम हर एक उम्मत में से गवाह निकाल लेंगे, फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो, तो वे जान लेंगे कि सच बात ख़ुदा की है और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, उन से जाता रहेगा। (७५)★

क़ारून मूसा की क़ौम में से था और उन पर सरकशी करता था और हमने उस को इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उन की कुंजियां एक ताक़तवर जमाअत को उठानी मुश्किल होतीं। जब उस से उस की क़ौम ने कहा कि इतराइये मत कि ख़ुदा इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। (७६) और (माल) तुम को ख़ुदा ने अता फ़रमाया है, उस से आख़िरत (की भलाई) तलब कीजिए और दुनिया से अपना हिस्सा न भुलाइए[1] और जैसी ख़ुदा ने तुम से भलाई की है (वैसी) तुम भी (लोगों से) भलाई करो और मुल्क में फ़साद न चाहो, क्योंकि ख़ुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (७७) बोला कि यह (माल) मुझे इल्म (के ज़ोर) से मिला है। क्या उस को मालूम नहीं कि ख़ुदा ने उस से पहले बहुत सी उम्मतें, जो उस से ताक़त में बढ़ कर और जमइयत में ज़्यादा थीं, हलाक कर डाली हैं और गुनाहगारों से उन के गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जाएगा।[2] (७८) तो (एक दिन) क़ारून (बड़ी) सजावट (और ठाठ) से अपनी क़ौम के सामने निकला। जो लोग दुनिया की ज़िंदगी के तलबगार थे, कहने लगे कि जैसा (माल व मता) क़ारून को मिला है, काश ! (ऐसा ही) हमें भी मिले। वह तो बड़ा ही क़िस्मत वाला है। (७९) और जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहने लगे कि तुम पर अफ़सोस, मोमिनों और नेक लोगों के लिए, (जो) सवाब ख़ुदा (के यहां तैयार है, वह) कहीं बेहतर है। और वह सिर्फ़ सब्र करने वालों ही को मिलेगा। (८०) पस हमने क़ारून को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, तो ख़ुदा के सिवा कोई जमाअत उस की मददगार न हो सकी और न वह बदला ले सका। (८१) और वे लोग जो

१. यानी दुनिया में नेक अमल कीजिए कि आख़िरत में यही साथ जाएंगे।

२. यानी गुनाहगारों से पूछ कर उन को सज़ा नहीं दी जाएगी, बल्कि जब उन को अज़ाब का होना ज़रूर है, तो न पूछने की ज़रूरत है, न उन को चून व चरा करने की ताक़त।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अस्बहल्लज़ी-न तमन्नौ मकानहू बिल्अम्सि यक़ूलू-न वै-क-अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़
लिमंय्यशाउ मिन् अिबादिही व यक़्दिरु ८ लौ ला अम्मन्नल्लाहु अलैना
ल-ख़ - स - फ़ बिना ь वै - क-अन्नहू ला युफ़्लिहुल् - काफ़िरून ★ (८२)
तिल्कद्दारुल्-आख़िरतु नज-अलुहा लिल्लज़ी-न ला युरीदू-न अुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि
व ला फ़सादन् ь वल् - आक़िबतु
लिल्मुत्तक़ीन (८३) मन् जा-अ बिल-ह-स-नति
फ़ - लहू ख़ैरुम्मिन्हा ८ व मन् जा - अ
बिस्सय्यिअति फ़ला युज्ज़ल्लज़ी - न
अमिलुस्सय्यिआति इल्ला मा कानू यअ्-मलून
(८४) इन्नल्लज़ी फ़-र-ज़ अलैकल्-क़ुर्आ-न
ल - राद्दु - क इला मआदिन् ь क़ुर्रब्बी
अअ्-लमु मन् जा-अ बिल्हुदा व मन् हु-व फ़ी
ज़लालिम्-मुबीन (८५) व मा कुन्-त
तर्जू अंय्युल्क़ा इलैकल् - किताबु इल्ला
रह्-म-तम्-मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न ज़हीरल्-
लिल्काफ़िरीन ✓(८६) व ला यसुद्दुन्न-क
अन् आयातिल्लाहि बअ्-द इज़् उन्ज़िलत्
इलै-क वद्अु इला रब्बि-क व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन ८ (८७)
व ला तद्अु म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र ▨ ला इला-ह इल्ला हु-व कुल्लु शैइन्
हालिकुन् इल्ला वज् - हहू ь लहुल्हुक्मु व इलैहि तुर्जअून ★ ● (८८)

امن خلق ٢٠ ٣١٦ العنكبوت ٢٩

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۤءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَوْلَاۤ
اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝
تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ
وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ مَنْ جَاۤءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ
مِّنْهَا وَمَنْ جَاۤءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ
اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ
لَرَاۤدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ قُلْ رَّبِّيْۤ اَعْلَمُ مَنْ جَاۤءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ يُّلْقٰۤى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا
رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَلَا يَصُدُّنَّكَ
عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝
سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۤمّۤ ۝ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْۤا اَنْ يَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا
يُفْتَنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ

२९ सूरतुल्-अन्कबूति ८५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४४१० अक्षर, ९९० शब्द, ६९ आयतें और ७ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ८ (१) अ-ह़सिबन्नासु अंय्युत्रकू अंय्यक़ूलू
आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून (२) व ल-क़द् फ़-त-न्नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्
फ़ ल-यअ्-ल-मन्नल्लाहुल्-लज़ी-न स-दक़ू व ल-यअ्-ल-मन्नल् काज़िबीन (३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कल उस के रुत्बे की तमन्ना करते थे, सुबह् को कहने लगे, हाय शामत ! ख़ुदा ही तो अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। अगर ख़ुदा हम पर एहसान न करता तो हमें भी धंसा देता। हाय ख़राबी ! काफ़िर निजात नहीं पा सकते। (८२)★

वह (जो) आख़िरत का घर (है) हमने उसे उन लोगों के लिए (तैयार) कर रखा है जो मुल्क में ज़ुल्म और फ़साद का इरादा नहीं रखते और (नेक) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है। (८३) जो शख़्स नेकी ले कर आएगा, उस के लिए इस से बेहतर (बदला मौजूद) है और जो बुराई लाएगा तो जिन लोगों ने बुरे काम किए, उन को बदला भी उसी तरह का मिलेगा, जिस तरह के वे काम करते थे। (८४) (ऐ पैग़म्बर !) जिस (ख़ुदा) ने तुम पर क़ुरआन (के हुक्मों को) फ़र्ज़ किया है, वह तुम्हें बाज़ गश्त[1] की जगह लौटा देगा। कह दो कि मेरा परवरदिगार उस शख़्स को भी ख़ूब जानता है, जो हिदायत ले कर आया और (उस को भी), जो खुली गुमराही में है। (८५) और तुम्हें उम्मीद न थी कि तुम पर यह किताब नाज़िल की जाएगी, मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से (नाज़िल हुई), तो तुम हरगिज़ काफ़िरों के मददगार न होना। (८६) और वे तुम्हें ख़ुदा की आयतों (की तब्लीग़) से, बाद इस के कि वह तुम पर नाज़िल हो चुकी हैं, रोक न दें और अपने परवरदिगार को पुकारते रहो और मुश्रिकों में हरगिज़ न होजियो। (८७) और ख़ुदा के साथ किसी और को माबूद (समझ कर) न पुकारना▨ उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उस की ज़ात (पाक) के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है। उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (८८)★●

२९ सूरः अंकबूत ८५

सूरः अंकबूत मक्की है और इस में उनहत्तर आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम्, (१) क्या ये लोग यह ख़्याल किए हुए हैं कि (सिर्फ़) यह कहने से कि हम ईमान ले आए, छोड़ दिए जाएंगे और उन की आज़माइश नहीं की जाएगी। (२) और जो लोग इन से पहले हो चुके हैं, हमने उन को भी आज़माया था (और उन को भी आज़माएंगे), सो ख़ुदा उन को ज़रूर मालूम करेगा, जो (अपने ईमान में) सच्चे हैं और उन को भी, जो झूठे हैं। (३)

---

१. बाज गश्त की जगह से या तो क़ियामत मुराद है या बहिश्त।

★रु. ८/११ आ ७ ▨ व. लाज़िम ★रु. ९/१२ आ ६ ●पु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अम् हसिबल्लज़ी-न यअ्‌-मलूनस्‌-सय्यिआति अंय्यस्बिक़ूना ﻁ सा-अ मा यह्‌कुमून
(४) मन् का-न यर्‌जू लिक़ाअल्लाहि फ़इन्‌-न अ-ज-लल्लाहि लआतिन् ﻁ व
हुवस्समीअुल्‌-अलीम (५) व मन् जाह-द फ़-इन्नमा युजाहिदु लिनफ़्सिही ﻁ
इन्नल्ला-ह लग़निय्युन् अनिल् - आलमीन (६) वल्लज़ी - न आमनू व
अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुकफ़्फ़िरन-न अ़न्हुम्
सय्यिआतिहिम् व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अह्‌-स-नल्लज़ी
कानू यअ्‌-मलून (७) व वस्सैनल्‌-इन्सा-न
बिवालिदैहि हुस्‌-नन् ﻁ व इन् जाहदा-क
लितुश्‌रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन्
फ़ला तुतिअ्‌ - हुमा ﻁ इलय्‌-य मर्जिअुकुम्
फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्‌-मलून (८)
वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-
नुद्‌ख़िलन्नहुम् फ़िस्सालिहीन (९) व मिनन्नासि
मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि फ़इज़ा
ऊज़ि-य फ़िल्लाहि ज-अ़-ल फ़ित्नतन्नासि
क-अ़ज़ाबिल्लाहि ﻁ व लइन् जा-अ नस्‌रुम्‌-
मिर्रब्बि-क ल-यक़ूलुन्‌-न इन्ना कुन्ना म-अ़कुम् ﻁ

امن خلق ٢٠ — ٣١٨ — العنكبوت ٢٩

يعملون السيات ان يسبقونا ساء ما يحكمون ٤ من كان
يرجوا لقاء الله فان اجل الله لات وهو السميع العليم ٥
ومن جاهد فانما يجاهد لنفسه ان الله لغني عن العلمين ٦
والذين امنوا وعملوا الصلحت لنكفرن عنهم سياتهم و
لنجزينهم احسن الذي كانوا يعملون ٧ ووصينا الانسان
بوالديه حسنا وان جاهدك لتشرك بي ما ليس لك به علم
فلا تطعهما الي مرجعكم فانبئكم بما كنتم تعملون ٨
والذين امنوا وعملوا الصلحت لندخلنهم في الصلحين ٩ و
من الناس من يقول امنا بالله فاذا اوذي في الله جعل فتنة
الناس كعذاب الله ولئن جاء نصر من ربك ليقولن انا
كنا معكم اوليس الله باعلم بما في صدور العلمين ١٠ و
ليعلمن الله الذين امنوا وليعلمن المنفقين ١١ وقال الذين
كفروا للذين امنوا اتبعوا سبيلنا ولنحمل خطيكم وما
هم بحملين من خطيهم من شيء انهم لكذبون ١٢ و
ليحملن اثقالهم واثقالا مع اثقالهم وليسئلن يوم القيمة
عما كانوا يفترون ١٣ ولقد ارسلنا نوحا الى قومه فلبث
فيهم الف سنة الا خمسين عاما فاخذهم الطوفان و

अ-व लैसल्लाहु बिअअ्‌-लम बिमा फ़ी सुदूरिल्‌-आलमीन (१०) व ल-यअ्‌-लमन्नल्
लाहुल्लज़ी-न आमनू व ल-यअ्‌-ल-मन्नल्‌-मुनाफ़िक़ीन (११) व क़ालल्लज़ी-न
क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनुत्तबिअू सबीलना वल-नह्‌-मिल् ख़तायाकुम् ﻁ व मा
हुम् बिहामिली-न मिन् ख़तायाहुम् मिन् शैइन् ﻁ इन्नहुम् ल-काज़िबून (१२)
व ल-यह्‌मिलुन्‌-न अस्क़ालहुम् व अस्क़ालम्‌-म-अ़ अस्क़ालिहिम् ⸗ व ल-युस्‌अलुन्‌-न
यौमल्‌-क़ियामति अम्मा कानू यफ़्तरून ★ (१३) व ल - क़द् अर्सल्ना
नूहन् इला क़ौमिही फ़-लबि - स फ़ीहिम् अल - फ़ स - नतिन् इल्ला
ख़म्सी-न आ़मन् ﻁ फ़-अ-ख़-ज - हुमुत्तूफ़ानु व हुम् ज़ालिमून (१४)

★रु० १/१३ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क्या वे लोग, जो बुरे काम करते हैं, यह समझे हुए हैं कि ये हमारे क़ाबू से निकल जाएंगे। जो ख़्याल ये करते हैं, बुरा है। (४) जो शख़्स ख़ुदा की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो, तो ख़ुदा का (मुक़र्रर किया हुआ) वक्त ज़रूर आने वाला है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (५) और जो शख़्स मेहनत करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए मेहनत करता है (और) ख़ुदा तो सारी दुनिया से बे-परवा है। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, हम उन के गुनाहों को उन से दूर कर देंगे और उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। (७) और इंसान को अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। (ऐ मुख़ातब !) अगर तेरे मां-बाप तेरे पीछे पड़ें कि तू मेरे साथ किसी को शरीक बनाए, जिस की हक़ीक़त तुझे नहीं मालूम, तो उन का कहना न मानियो। तुम सब को मेरी तरफ़ लौट कर आना है। फिर जो कुछ तुम करते थे, मैं तुम को जता दूंगा। (८) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम नेक लोगों में दाख़िल करेंगे। (६) और कुछ लोग ऐसे हैं, जो कहते हैं कि हम ख़ुदा पर ईमान लाए। जब उन को ख़ुदा (के रास्ते) में कोई तक्लीफ़ पहुंचती है, तो लोगों की तक्लीफ़ को (यों) समझते हैं, जैसे ख़ुदा का अज़ाब और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से मदद पहुंचे, तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या जो दुनिया वालों के सीनों में है, ख़ुदा उसे नहीं जानता ? (१०) और ख़ुदा उन को ज़रूर मालूम करेगा जो (सच्चे) मोमिन हैं और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम कर के रहेगा। (११) और जो काफ़िर हैं, वे मोमिनों से कहते हैं कि हमारे तरीक़े की पैरवी करो, हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वे उन के गुनाहों का कुछ भी बोझ उठाने वाले नहीं। कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं। (१२) और ये अपने बोझ भी उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और (लोगों के) बोझ भी और जो बोहतान ये बांधते रहे, क़ियामत के दिन उन की उन से ज़रूर पूछ-ताछ होगी। (१३) ★

और हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास वर्ष कम हज़ार वर्ष रहे, फिर उन को तूफ़ान (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (१४) फिर हमने नूह

★रु. १/१३ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-अन्जैनाहु व अस्हाबस्-सफ़ीनति व ज-अल्नाहा आयतल् - लिल्आलमीन
(१५) व इब्राही-म इज् क़ा-ल लिक़ौमिहिअ्-बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु ▸ ज़ालिकुम्
ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (१६) इन्नमा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि
औसानंव्-व तख़्लुक़ू-न इफ़्कन् ▸ इन्नल्लज़ी-न तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ला
यम्लिकू-न लकुम् रिज़्-क़न् फ़ब्तग़ू अिन्दल्लाहिर्-
रिज़्-क़ वअ् - बुदूहु वश्कुरू लहू ▸ इलैहि
तुर्जअून (१७) व इन् तुकज़्ज़िबू फ़-क़द्
कज़्ज़-ब उ-ममुम्-मिन् क़ब्लिकुम् ▸ व मा
अलर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१८)
अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल्-ख़ल्-क़
सुम्-म युअीदुहू ▸ इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि
यसीर (१९) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि
फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-द-अल्-ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु
युन्शिउन् - नश्-अ-तल् - आख़ि-र-त ▸ इन्-
नल्ला - ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर
(२०) युअज़्ज़िबु मंय्यशाउ व यर्हमु
मंय्यशाउ व इलैहि तुक़्लबून (२१)

هُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾
وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ
تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ
لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا
عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى
الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ
الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ
فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ
وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا
مِنْ رَّحْمَتِىْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

व मा अन्तुम् बिमुअजिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ ▸ व मा लकुम्
मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर★(२२) वल्लज़ी-न क-फ़रू
बिआयातिल्लाहि व लिक़ाइही उलाइ-क यइसू मिर्रह्मती व उलाइ - क
लहुम् अज़ाबुन् अलीम (२३) फ़-मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन्
क़ालुक़्तुलूहु औ हर्रिक़ूहु फ़-अन्जाहुल्लाहु मिनन्नारि ▸ इन्-न फ़ी ज़ालि-क
लआयातिल्-लिक़ौमिय्युअ्मिनून (२४) व क़ा-ल इन्नमत्तख़ज़्तुम् मिन्
दूनिल्लाहि औसानम् ▸ म-वद्-द-त बैनिकुम् फ़िल् - हयातिद्दुन्या ▸ सुम् - म
यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरु बअ्-ज़ुकुम् बिबअ्-ज़िंव-व यल्अनु बअ्-ज़ुकुम् बअ्-
ज़ंव् - व मअ् - वाकुमुन्नारु ▸ व मा लकुम् मिन् नासिरीन ▸ (२५)

★रु. २/१४ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

को और कश्ती वालों को निजात दी और कश्ती को दुनिया वालों के लिए निशानी बना दिया। (१५) और इब्राहीम को, (याद करो) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की इबादत करो और उस से डरो। अगर तुम समझ रखते हो, तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (१६) तुम तो ख़ुदा को छोड़ कर बुतों को पूजते और तूफ़ान बांधते हो, तो जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, वे तुम को रोज़ी देने का अख़्तियार नहीं रखते, पास ख़ुदा ही के यहां से रोज़ी तलब करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र करो, उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (१७) और अगर तुम (मुझे) झुठलाओ तो तुम से पहले भी उम्मतें (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुकी हैं और पैग़म्बर के ज़िम्मे खोल कर सुना देने के सिवा और कुछ नहीं। (१८) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा किस तरह ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर (किस तरह) उस को बार-बार पैदा करता रहता है, यह ख़ुदा को आसान है। (१९) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि उस ने किस तरह ख़ल्क़त को पहली बार पैदा किया है, फिर ख़ुदा ही पिछली पैदाइश पैदा करेगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (२०) वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे रहम करे और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (२१) और तुम (उस को) न ज़मीन में आजिज़ कर सकते हो, न आसमान में और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (२२)★

और जिन लोगों ने ख़ुदा की आयतों से और उस के मिलने से इन्कार किया, वे मेरी रहमत से ना-उम्मीद हो गये हैं और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (२३) तो उन की क़ौम के लोग जवाब में बोले, तो यह बोले, कि उसे मार डालो या जला दो, मगर ख़ुदा ने उन को आग (की जलन) से बचा लिया। जो लोग ईमान रखते हैं, उन के लिए उस में निशानियां हैं। (२४) और इब्राहीम ने कहा कि तुम जो ख़ुदा को छोड़ कर बुतों को ले बैठे हो, तो दुनिया की ज़िंदगी में आपसी दोस्ती के लिए, (मगर) फिर क़ियामत के दिन एक दूसरे (की दोस्ती) से इंकार कर दोगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और कोई तुम्हारा मददगार न

★रु. २/१४ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़आ - म - न लहू लूतुन् ▧ व क़ा-ल इन्नी मुहाजिरुन् इला रब्बी ط
इन्नहू हुवल्अज़ीज़ुल्-ह़कीम (२६) व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्-क़ू-ब
व ज-अल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिन्-नुबुव्व-त़ वल्किता-ब व आतैनाहु अज्-रहू
फ़िद्दुन्या ج व इन्नहू फ़िल् - आख़िरति लमिनस्सालिह़ीन (२७) व
लूत़न् इज् क़ा - ल लिक़ौमिही इन्नकुम्
ल-तअ्तूनल् - फ़ाहि-श-त़ ز मा स-ब-क़कुम्
बिहा मिन् अ-ह़दिम्-मिनल्-आलमीन (२८)
अ-इन्नकुम् ल - तअ्तूनर् - रिजा - ल व
तक़्त़अूनस्सबी - ल لا व तअ्तू - न फ़ी
नादीकुमुल्-मुन्क-र ط फ़ मा का-न जवा-ब
क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुअ्तिना बिअज़ाबिल्-
लाहि इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (२९)
क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी अ़लल्क़ौमिल्-मुफ़्सिदीन
★ (३०) व लम्मा जा-अत् रुसुलुना
इब् - राही - म बिल्बुश्रा لا क़ालू इन्ना
मुह्लिकू अह्लि हाज़िहिल् - क़र्यति ج
इन्-न अह्-लहा कानू ज़ालिमीन صلى ج (३१) क़ा - ल इन्-न फ़ीहा लूत़न् ط
क़ालू नह़्नु अअ्-लमु बिमन् फ़ीहा وقفة ल - नुनज्जियन्नहू व अह् - लहू
इल्लम्-र-अ-तहू ز कानत् मिनल्ग़ाबिरीन (३२) व लम्मा अन् जा-अत्
रुसुलुना लूत़न् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अंव-व क़ालू ला त-ख़फ़् व
ला तह़्-ज़न् قف इन्ना मुनज्जू-क व अह् - ल-क इल्लम्-र-अ-त-क कानत्
मिनलग़ाबिरीन (३३) इन्ना मुन्ज़िलू - न अला अह्लि हाज़िहिल् -
क़र्यति रिज् - ज़म् - मिनस्समाइ बिमा कानू यफ़्सुक़ून (३४)

يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۚ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ
اِلٰى رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ
فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوْطًا اِذْ
قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ
السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ ع ٢ / ٨ / ١٥
وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا
اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ
فِيْهَا لُوْطًا ۭ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۡ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ جَاۗءَتْ رُسُلُنَا
لُوْطًا سِيْۗءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا
تَحْزَنْ ۣ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ

▧ व. लाज़िम ★ रु. ३/१५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होगा। (२५) पस उन पर (एक) लूत ईमान लाए और (इब्राहीम) कहने लगे कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ हिजरत करने वाला हूं। बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२६) और हम ने उनको इस्हाक़ और याक़ूब बख़्शे और उन की औलाद में पैग़म्बरी और किताब (मुक़र्रर) कर दी और उन को दुनिया में भी उन का बदला दिया और वे आख़िरत में भी नेक लोगों में होंगे, (२७) और लूत (को याद करो,) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम (अजब) बे-हयाई अपनाते हो, तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने ऐसा काम नहीं किया। (२८) क्या तुम (लज़्ज़त के इरादे से) लौंडों की तरफ़ मायल होते और (मुसाफ़िरों की) लूट-मार करते हो और अपनी मज्लिसों में ना-पसन्दीदा काम करते हो, तो उन की क़ौम के लोग जवाब में बोले तो यह बोले कि अगर तुम सच्चे हो, तो हम पर अज़ाब ले आओ। (२६) (लूत ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! इन फ़सादी लोगों के मुक़ाबले में मुझे नुसरत इनायत फ़रमा। (३०) ★

और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशी की ख़बर ले कर आए, तो कहने लगे कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक कर देने वाले हैं कि यहां के रहने वाले ना-फ़रमान हैं। (३१) (इब्राहीम ने) कहा कि इस में तो लूत भी हैं। वे कहने लगे कि जो लोग (यहां) रहते हैं, हमें सब मालूम हैं। हम उन को और उन के घर वालों को बचा लेंगे, अलावा उन की बीवी के, कि वह पीछे रहने वालों में होगी। (३२) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आए तो वह उन (की वजह से) ना-खुश और तंग-दिल हुए। फ़रिश्तों ने कहा, कुछ ख़ौफ़ न कीजिए और न रंज कीजिए। हम आप को और आप के घर वालों को बचा लेंगे, मगर आप की बीवी कि पीछे रहने वालों में होगी। (३३) हम इस बस्ती के रहने वालों पर, इस वजह से कि ये बद-किरदारी करते रहे हैं,

व. लाज़िम ★रु. ३/१५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़त्त-रक्ना मिन्हा आ-य-तम्-बय्यिनतल्-लिक़ौमिंय्यअ-क़िलून (३५)
व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअ़बन् ॥ फ़क़ा-ल या क़ौमिअ-बुदुल्ला-ह वर्जुल्-
यौमल्-आख़ि-र व ला तअ-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (३६) फ़-कज्जबूहु फ़-अ-ख़-जत्-
हुमुर्-रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन ॥ (३७) व आदंव्-व समू-द
व क़त्तबय्य-न लकुम् मिम्-मसाकिनिहिम् व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि व कानू मुस्तब्सिरीन (३८) व क़ारू-न व फ़िर्औ-न व हामा-न व ल-क़द् जा-अहुम् मूसा बिल्बय्यिनाति फ़स्तक-बरू फ़िल्अर्ज़ि व मा कानू साबिक़ीन (३९) फ़ कुल्लन् अ-ख़ज्ना बिजम्बिही ॥ फ़ मिन्हुम् मन् अर्सल्ना अलैहि हासिबन् ॥ व मिन्हुम् मन् अ-ख़-जत्हुस्-सैहतु ॥ व मिन्हुम् मन् ख़-सफ़्ना बिहिल्अर-ज़ ॥ व मिन्हुम् मन् अग्-रक़्ना ॥ व मा कानल्लाहु
लि-यज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (४०) म-स-लुल्लज़ीनत्त-ख़-ज़ू
मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ क-म-सलिल्-अन्कबूति ॥ इत्त-ख़-जत्
बैतन् ॥ व इन्-न औहनल्-बुयूति लबैतुल्-अन्कबूति ▨ लौ कानू
यअ-लमून (४१) इन्नल्ला-ह यअ-लमु मा यद्अू-न मिन् दूनिही मिन्
शैइन् ॥ व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (४२) व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि ॥ व
मा यअ-क़िलुहा इल्लल्-आलिमून (४३) ख़-ल-क़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर-ज़
बिल्हक़्क़ि ॥ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल्-लिल्मुअ्मिनीन ★ (४४)

امن خلق ٢٠   ٣٢٠   العنكبوت ٢٩

السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةً ۢ بَيِّنَةً
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾
وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾
وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۫ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ
فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا اَخَذْنَا
بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ
الْعَنْكَبُوْتِ ۖ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۚ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَىْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

منزل ٥

▨ व. लाज़िम ★रु. ४/१६ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आसमान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं। (३४) और हमने समझने वाले लोगों के लिए इस बस्ती से एक खुली निशानी छोड़ दी। (३५) और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा, तो उन्हों ने कहा, ऐ क़ौम ! ख़ुदा की इबादत करो और पिछले दिन (के आने) की उम्मीद रखो और मुल्क में फ़साद न मचाओ। (३६) मगर उन्होंने उनको झूठा समझा, सो उनको ज़लज़ले (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (३७) और आद और समूद को भी (हम ने हलाक कर दिया), चुनांचे उन के (वीरान) घर तुम्हारी आंखों के सामने हैं और शैतान ने उन के आमाल उन को सजा दिए और उन को (सीधे) रास्ते से रोक दिया, हालांकि वे देखने वाले (लोग) थे। (३८) और क़ारून और फ़िऔन और हामान को भी (हलाक कर दिया)। और उन के पास मूसा खुली निशानियां ले कर आए, तो वे मुल्क में घमंड करने लगे और वे (हमारे) क़ाबू से निकल जाने वाले न थे। (३९) तो हमने सब को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, सो उन में कुछ तो ऐसे थे जिन पर हमने पत्थरों का मेंह बरसाया और कुछ ऐसे थे जिन को चिंघाड़ ने आ पकड़ा और कुछ ऐसे थे, जिन को हम ने ज़मीन में धंसा दिया और कुछ ऐसे थे जिन को डुबा दिया और ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन वही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (४०) जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (औरों को) कारसाज़ बना रखा है, उन की मिसाल मकड़ी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर बनाती ह और कुछ शक नहीं कि तमाम घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर है ▧ काश ! ये (इस बात को) जानते। (४१) ये जिस चीज़ को ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं (चाहे) वह कुछ ही हो, ख़ुदा उसे जानता है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (४२) और ये मिसालें हम लोगों के (समझाने के) लिए बयान करते हैं और इसे तो इल्म वाले ही समझते हैं। (४३) ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया है। कुछ शक नहीं कि ईमान वालों के लिए इस में निशानी है। (४४) ★

▧ व. लाज़िम ★रु. ४/१६ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इक्कीसवां पारः उत्लु मा ऊहि़-य

सूरतुल-अन्कबूति आयात ४५ से ६९

उत्लु मा ऊहि़-य इलै-क मिनल्किताबि व अक़िमिस्सला-त़ ط इन्नस्सला-त़
तन्हा अ़निल् - फ़ह़्शा-इ वल्मुन्करि ط व ल-जिक्रुल्लाहि अक्बरु ط वल्लाहु
यअ्-लमु मा तस्-नअ़ून (४५) व ला तुजादिलू अह्लल्किताबि इल्ला बिल्लती
हि-य अह़्सनु इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी
उन्ज़ि-ल इलैना व उन्ज़ि-ल इलैकुम् व
इलाहुना व इलाहुकुम् वाहि़दुंव्-व नह़्नु लहू
मुस्लिमून (४६) व कज़ालि-क अन्ज़ल्ना
इलैकल्-किता-ब ط फ़ल्लज़ी - न आतैनाहुमुल्-
किता - ब युअ्मिनू - न बिही ج व मिन्
हाउलाइ मंय्युअ्मिनु बिही ط व मा
यज्ह़दु बिआयातिना इल्लल् - काफ़िरून
(४७) व मा कुन्-त तत्लू मिन् क़ब्लिही
मिन् किताबिंव्-व ला तख़ुत्तुहू बियमीनि-क
इज़ल्-लर-ताबल्-मुब्ति़लून (४८) बल् हु-व
आयातुम् - बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न
ऊतुल्अ़िल-म ط व मा यज्ह़दु बिआयातिना
इल्लज़्ज़ालिमून (४९) व क़ालू लौला
उन्ज़ि - ल अ़लैहि आयातुम् - मिर्रब्बिही ط क़ुल् इन्नमल् - आयातु
अ़िन्दल्लाहि ط व इन्नमा अ-न नज़ीरुम् - मुबीन (५०) अ - व लम्
यक-फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब युत्ला अ़लैहिम् ط इन्-न फ़ी
ज़ालि-क ल-रह़्-म-तंव्-व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (५१) क़ुल् कफ़ा
बिल्लाहि बैनी व बैनकुम् शहीदन् ج यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط
वल्लज़ी - न आमनू बिल्बातिलि व क - फ़रू बिल्लाहि لا उलाइ - क
हुमुल्ख़ासिरून (५२) व यस्तअ्-जिलून-क बिलअ़ज़ाबि ط व लौला अ-ज-लुम्-
मुसम्मल्-लजा-अ-हुमुल्-अ़ज़ाबु ط व ल-यअ्ति-यन्नहुम् बग़्-त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (५३)

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّ الصَّلٰوةَ
تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تَصْنَعُوْنَ ۝ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ ڰ
اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ وَاِلٰـهُنَا وَاِلٰـهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ
وَمِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝
وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا
لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَآ
اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاِنَّمَآ
اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى
عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى
لَّجَاۗءَهُمُ الْعَذَابُ ۭ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

منزل ۵

★रु. ५/१ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(ऐ मुहम्मद !) यह किताब जो तुम्हारी तरफ़ वह्य की गयी है, उस को पढ़ा करो और नमाज़ के पाबन्द रहो। कुछ शक नहीं कि नमाज बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है और ख़ुदा का ज़िक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे जानता है। (४५) और अह्ले किताब से झगड़ा न करो, मगर ऐसे तरीक़े से, कि निहायत अच्छा हो, हां जो उन में से बे-इंसाफ़ी करें, (उन के साथ इसी तरह झगड़ा करो) और कह दो कि जो (किताब) हम पर उतरी और जो (किताबें) तुम पर उतरीं, हम सब पर ईमान रखते हैं और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (४६) और इसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है, तो जिन लोगों को हम ने किताबें दी थीं, वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन (मुश्रिक) लोगों में से भी इस पर ईमान ले आते हैं और हमारी आयतों से वही इन्कार करते हैं जो काफ़िर (शुरू ही से) हैं। (४७) और तुम इस से पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले ज़रूर शक करते। (४८) बल्कि ये रोशन आयतें हैं। जिन लोगों को इल्म दिया गया है, उन के सीनों में (महफ़ूज़) और हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे-इन्साफ़ हैं। (४९) और (काफ़िर) कहते हैं कि इस पर उस के परवरदिगार की तरफ़ से निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुयीं। कह दो कि निशानियां तो ख़ुदा ही के पास हैं और मैं तो खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं। (५०) क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुम पर किताब नाज़िल की जो उन को पढ़ कर सुनायी जाती है। कुछ शक नहीं कि मोमिन लोगों के लिए इस में रहमत और नसीहत है। (५१) ★

कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। जो चीज़ आसमानों में और ज़मीन में है, वह सब को जानता है और जिन लोगों ने बातिल को माना और ख़ुदा से इन्कार किया, वही नुक़सान उठाने वाले हैं। (५२) और ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। अगर एक वक़्त मुक़र्रर न (हो चुका) होता तो उन पर अज़ाब आ भी गया होता और वह (किसी वक़्त में) उन पर ज़रूर आ कर रहेगा और उन को मालूम भी न होगा। (५३) ये तुम से अज़ाब के

★रु. ५/१ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यस्तअ्-जिलून-क बिल्अ़जाबि ᐟ व इन्-न ज-हन्न-म लमुही-त-तुम्-बिल्काफ़िरीन ᐟ
(५४) यौ-म यग़्शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह़्ति अर्जुलिहिम्
व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ़्-मलून (५५) याअिबादि-यल्-लज़ी-न आमनू
इन्-न अर्-ज़ी वासि-अ-तुन् फ़इय्या-य फ़अ़्-बुदून (५६) कुल्लु नफ़्सिन्
ज़ाइक़तुलमौति قف सुम्-म इलैना
तुर्जअ़ून (५७) वल्लज़ी-न आमनू व
अ़मिलुस्सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्जन्नति
ग़ु-र-फ़न् तज्री मिन् तह़्तिहल् - अन्हारु
ख़ालिदी - न फ़ीहा ᐟ निअ़् - म अज्रुल् -
आमिलीन صلے (५८) अल्लज़ी - न
स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (५९)
व-क-अय्यिम् - मिन् दाब्बतिल्ला तह़्मिलु
रिज़् - क़हा صلے अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व
इय्याकुम् صلے व हुवस्समीअ़ुल् -
अ़लीम (६०) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन्
ख़-ल-क़स्समावाति वल्-अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स
वल्क़-म-र ल - यक़ूलुन्नल्लाहु ᐟ फ़ - अन्ना
युअ्-फ़कून (६१) अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु
लहू ᐟ इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (६२) व ल-इन् स-अल्तहुम्
मन् नज़्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अह़्या बिहिल्अर-ज़ मिम्बअ़्-दि मौतिहा
ल-यक़ूलुन्नल्लाहु ᐟ क़ुलिल्ह़म्दु लिल्लाहि ᐟ बल् अक्सरुहुम् ला यअ़् - क़िलून
★ (६३) व मा हाज़िहिल् - ह़यातुद्दुन्या इल्ला लह् - वुंव्-व लअिबुन् ᐟ
व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल्-ह़-य-वानु ⫽ लौ कानू यअ़्-लमून (६४)
फ़इज़ा रकिबू फ़िल्फ़ुल्कि द-अ़ - वुल्ला - ह मुख़्लिसी - न लहुद्दी - न ᐟ
फ़ - लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून ᐟ (६५)
लि-यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ᐟ व लि-य-त-मत्तअ़ू قف फ़सौ-फ़ यअ़्-लमून (६६)

العنكبوت ٢٩ ٣٢٢ اتل ما اوحى ٢١

يستعجلونك بالعذاب وان جهنم لمحيطة بالكفرين ٥٤
يوم يغشىهم العذاب من فوقهم ومن تحت ارجلهم ويقول
ذوقوا ما كنتم تعملون ٥٥ يعبادى الذين امنوا ان ارضى
واسعة فاياى فاعبدون ٥٦ كل نفس ذائقة الموت ثم
الينا ترجعون ٥٧ والذين امنوا وعملوا الصلحت لنبوئنهم
من الجنة غرفا تجرى من تحتها الانهر خلدين فيها نعم
اجر العملين ٥٨ الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ٥٩ و
كاين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها واياكم و
هو السميع العليم ٦٠ ولئن سالتهم من خلق السموت و
الارض وسخر الشمس والقمر ليقولن الله فانى يؤفكون ٦١
الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له ان الله
بكل شىء عليم ٦٢ ولئن سالتهم من نزل من السماء ماء
فاحيا به الارض من بعد موتها ليقولن الله قل الحمد لله
بل اكثرهم لا يعقلون ٦٣ وما هذه الحيوة الدنيا الا لهو
ولعب وان الدار الاخرة لهى الحيوان لو كانوا يعلمون ٦٤
فاذا ركبوا فى الفلك دعوا الله مخلصين له الدين فلما نجىهم
الى البر اذا هم يشركون ٦٥ ليكفروا بما اتينهم وليتمتعوا

منزل ٥

★रु. ६/२ आ १२ ⫽ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिए जल्दी कर रहे हैं और दोज़ख़ तो काफ़िरों को घेर लेने वाली है। (५४) जिस दिन अज़ाब उन को उन के ऊपर से नीचे ढांक लेगा और (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि जो काम तुम किया करते थे, (अब) उन का मज़ा चखो। (५५) ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, मेरी ज़मीन फैली हुई है, तो मेरी ही इबादत करो। (५६) हर नफ़्स मौत का मज़ा चखने वाला है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौट कर आओगे। (५७) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्त के ऊंचे-ऊंचे महलों में जगह देंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा उन में रहेंगे। (नेक) अमल करने वालों का (यह) खूब बदला है, (५८) जो सब्र करते और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (५९) और बहुत से जानवर हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। ख़ुदा ही उन को रोज़ी देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (६०) और अगर उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चांद को किस ने (तुम्हारे) हुक्म के ताबेअ किया, तो कह देंगे, ख़ुदा ने, तो फिर ये कहां उल्टे जा रहे हैं ? (६१) ख़ुदा ही अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है, तंग कर देता है। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (६२) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद (किस ने) ज़िंदा किया, तो कह देंगे कि ख़ुदा ने। कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है, लेकिन इन में अक्सर नहीं समझते। (६३) ★

और यह दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और (हमेशा की) ज़िंदगी की (जगह) तो आख़िरत का घर है ▨ काश ये (लोग) समझते ! (६४) फिर जब ये कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ुदा को पुकारते (और) ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं, लेकिन जब वह उन को निजात देकर खुश्की पर पहुंचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते हैं। (६५) ताकि जो हम ने उन को बख़्शा है, उस की ना-शुक्री करें और फ़ायदा उठाएं, (सो ख़ैर,) बहुत जल्द उन को मालूम

★रु. ६/२ आ १२ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-व लम् यरौ अन्ना ज-अ़ल्ना ह़-र-मन् आमिनंव-व यु-त-ख़त़्त़फ़ुन्नासु मिन् ह़ौलिहिम्ᐟ
अ-फ़ बिल्बात़िलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि यक्फ़ुरून (६७) व मन्
अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा-अहूᐟ
अलै-स फ़ी जहन्न-म मस-वल्-लिल्काफ़िरीन (६८) वल्लज़ी - न जाहदू
फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलनाᐟ व इन्नल्ला-ह
ल - मअ़ल् - मुह़्सिनीन ★ (६९)

३० सूरतुर्रूमि ८४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३५४७ अक्षर, ८२७ शब्द, ६० आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् (१)
ग़ुलिबतिर्रूमु (२) फ़ी अद - नल्अर्ज़ि
व हुम् मिम्बअ्-दि ग़-लबिहिम् स-यग़्लिबून
(३) फ़ी बिज़्अ़ सिनी-न लिल्लाहिल्-
अम्रु मिन् क़ब्लु व मिम्बअ़् - दुᐟ व
यौमइज़िंय्यफ़् - रहुल् मुअ्मिनून (४)
बिनस् - रिल्लाहि ᐟ यन्सुरु मंय्यशाउ ᐟ व
हुवल्-अ़ज़ीज़ुर्रह़ीम (५) वअ़् - दल्लाहिᐟ

الروم ٣٠ — ٣٢٣ — اتل ما اوحی ٢١

فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ
النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا
جَاۗءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا
فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾
سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗمّۗ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ
سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ڛ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ
وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٤﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ښ وَهُمْ
عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۣ مَا
خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ
مُّسَمًّى ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾ اَوَلَمْ
يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ
كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا

ला युख़्लिफ़ुल्लाहु वअ़्-दहू व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ़्-लमून (६) यअ़्-
लमू-न ज़ाहिरम् - मिनल् - ह़यातिद्दुन्या व हुम् अ़निल् - आख़िरति हुम्
ग़ाफ़िलून (७) अ-व लम् य-त-फ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ख़-ल-क़ल्लाहुस्-
समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्ह़क़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्ᐟ
व इन-न कसीरम्-मिनन्नासि बिलिक़ाइ रब्बिहिम् लकाफ़िरून (८) अ-व लम्
यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्ᐟ कानू
अशद-द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व अ-सारुल्अर्-ज़ व अ़-म-रूहा अक्स-र मिम्मा
अ़ - म - रूहा व जा-अत्-हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति ᐟ फ़मा कानल्लाहु
लि - यज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून ᐟ (९)

★रु. ७/३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हो जाएगा। (६६) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने हरम को अम्न की जगह बनाया है, और लोग उन के गिर्द व नवाह (पास के इलाक़े) से उचक लिए जाते हैं। क्या ये लोग बातिल पर एतक़ाद रखते हैं और ख़ुदा की नेमतों की ना-शुक्री करते हैं। (६७) और उस से ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा पर झूठ बोहतान बांधे या जब हक़ बात उस के पास आए तो उसे झुठलाए ? क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ? (६८) और जिन लोगों ने हमारे लिए कोशिश की, हम उन को ज़रूर अपने रास्ते दिखा देंगे और ख़ुदा तो नेकों के साथ है। (६९)★

३० सूरः रूम ८४

सूरः रूम मक्की है और इस में साठ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत करम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम्, (१) रूम (वाले) मग़लूब हो गए, (२) नज़दीक के मुल्क में और वे मग़लूब होने के बाद बहुत जल्द ग़ालिब आ जाएंगे,[1] (३) कुछ ही साल में, पहले भी और अब पीछे भी ख़ुदा ही का हुक्म है और उस दिन मोमिन ख़ुश हो जाएंगे। (४) (यानी) ख़ुदा की मदद से, वह जिसे चाहता है, मदद देता है और वह ग़ालिब (और) मेहरबान है। (५) (यह) ख़ुदा का वायदा (है)। ख़ुदा अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६) ये तो दुनिया की ज़ाहिरी ज़िंदगी को जानते हैं और आख़िरत (की तरफ़) से ग़ाफ़िल हैं। (७) क्या इन्हों ने अपने दिल में ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, उन को हिक्मत से और एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए पैदा किया है और बहुत-से-लोग अपने परवरदिगार से मिलने के क़ायल ही नहीं। (८) क्या इन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, (सैर करते) तो देख लेते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ। वे इन से ज़ोर व ताक़त में कहीं ज़्यादा थे और उन्हों ने ज़मीन को जोता और उस को इस से ज़्यादा आबाद किया था, जो इन्हों ने आबाद किया और उन के पास उन के पैग़म्बर निशानियां ले कर आते रहे, तो ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, बल्कि अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (९) फिर जिन लोगों ने बुराई की,

---

१. इन आयतों में रूमियों के ग़ालिब होने की पेशीनगोई की, जो वाक़ेअ़ आ चुकी। वाक़िया यह हुआ कि रूम और फ़ारस वालों में जंग हो गयी और फ़ारस वाले ग़ालिब आए। चूंकि रूमी अह्ले किताब यानी नसारा थे और फ़ारस वाले मुश्रिक, इस लिए कि मक्का के मुश्रिक मोमिनों से कहते थे कि जिस तरह फ़ारस वाले जो हमारी तरह मुश्रिक हैं रूमियों पर, जो तुम्हारी तरह अह्ले किताब हैं, ग़ालिब हो गये हैं, इसी तरह जब हम में तुम में जंग होगी तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। कुफ़्फ़ार की इस बात से मोमिनों को रंज हुआ, तब ये आयतें नाज़िल हुयीं। इन में कुछ साल में रूमियों के ग़ालिब हो जाने की ख़बर दी गयी थी और वह बिल्कुल सही निकली। आयत में 'बिज़्-अ सिनीन' का लफ़्ज़ आया है 'बिज़्-अ' कहते हैं, तीन नवेंसे तक को। सातवें साल फिर रूम और फ़ारस में लड़ाई हुई तो रूमी फ़ारस वालों पर ग़ालिब आए। अल्लाह तआला की क़ुदरत को देखिए कि इधर बद्र की लड़ाई में मुसलमान मक्के के काफ़िरों पर ग़ालिब आए, इस से मुसलमानों को दोहरी ख़ुशी हुई, क्योंकि ख़ुदा का वायदा सच्चा निकला और वह 'अस्दक़ुस्सादिक़ीन' जो वायदा करता है, उस को सच कर दिखाता है।

★रु. ७/३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुम्-म का-न आक़िबतल्लज़ी-न असाउस्सूआ अन् कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि व
कानू बिहा यस्तह्-ज़िऊन ★ (१०) अल्लाहु यब्दउलख़ल्-क़ सुम्-म युईदुहू
सुम्-म इलैहि तुर्जअून (११) व यौ-म तक़ूमुस्साअतु युब्लिसुल्-मुज्रिमून (१२)
व लम् यकुल्लहुम् मिन् शुरकाइहिम् शु-फ़आउ व कानू बिशु-र-काइहिम्

عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينت فما كان الله ليظلمهم ولكن
كانوا انفسهم يظلمون ۝٩ ثم كان عاقبة الذين اساءوا السوأى
ان كذبوا بايت الله وكانوا بها يستهزءون ۝١٠ الله يبدؤا الخلق ثم
يعيده ثم اليه ترجعون ۝١١ ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ۝١٢
ولم يكن لهم من شركائهم شفعؤا وكانوا بشركائهم كفرين ۝١٣
ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ۝١٤ فاما الذين امنوا وعملوا
الصلحت فهم في روضة يحبرون ۝١٥ واما الذين كفروا وكذبوا
بايتنا ولقاى الاخرة فاولئك في العذاب محضرون ۝١٦ فسبحن
الله حين تمسون وحين تصبحون ۝١٧ وله الحمد في السموت و
الارض وعشيا وحين تظهرون ۝١٨ يخرج الحي من الميت و
يخرج الميت من الحي ويحي الارض بعد موتها وكذلك
تخرجون ۝١٩ ومن ايته ان خلقكم من تراب ثم اذا انتم بشر
تنتشرون ۝٢٠ ومن ايته ان خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا
اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان في ذلك لايت لقوم
يتفكرون ۝٢١ ومن ايته خلق السموت والارض واختلاف
السنتكم والوانكم ان في ذلك لايت للعلمين ۝٢٢ ومن ايته
منامكم باليل والنهار وابتغاؤكم من فضله ان في ذلك

منزل ٥

काफ़िरीन (१३) व यौ-म तक़ूमुस्साअतु
यौमइज़िय्य-त-फ़र्रकून (१४) फ़-अम्मल्लज़ी-न
आमनू व अमिलुस्-सालिहाति फ़हुम् फ़ी
रौज़तिंय्युह्-बरून (१५) व अम्मल्लज़ी-न
क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल्-
आख़िरति फ़-उलाइ-क फ़िल्अज़ाबि
मुह्ज़रून (१६) फ़-सुब्हानल्लाहि ही-न
तुम्सू-न व ही-न तुस्बिहून (१७) व
लहुल्हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अशिय्यंव्-व
ही-न तुज़्हिरून (१८) युख़्रिजुल्-हय्-य
मिनल्-मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त
मिनल्-हय्यि व युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द
मौतिहा ط व कज़ालि-क तुख़्रजून
★ (१९) व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म इज़ा
अन्तुम् ब-शरुन् तन्तशिरून (२०) व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़ लकुम्
मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्-वाजल्-लितस्कुनू इलैहा व ज-अ-ल बैनकुम् म-वद्-द-तंव्-व
रह्-म-तन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (२१)
व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्-तिलाफ़ु अल-सिनतिकुम्
व अल्वानिकुम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिल्आलमीन (२२)
व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब-तिग़ाउकुम् मिन्
फ़ज़्लिही ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यस्-मअून (२३)

★रु. १/४ आ १० ★रु. २/५ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन का अंजाम भी बुरा हुआ, इसलिए कि ख़ुदा की आयतों को झुठलाते और उन की हंसी उड़ाते रहे थे। (१०) ★

ख़ुदा ही ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, वही उस को फिर पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट जाओगे। (११) और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, गुनाहगार ना-उम्मीद हो हो जाएंगे। (१२) और उन के (बनाए हुए) शरीकों में से कोई उन का सिफ़ारिशी न होगा और वे अपने शरीकों से इन्कारी हो जाएंगे। (१३) और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन वे अलग-अलग फ़िर्क़े हो जाएंगे। (१४) तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे (बहिश्त के) बाग़ में खुशहाल होंगे। (१५) और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और आख़िरत के आने को झुठलाया, वे अज़ाब में डाले जाएंगे। (१६) तो जिस वक़्त तुम को शाम हो और जिस वक़्त सुबह हो, ख़ुदा की तस्बीह करो, (यानी नमाज़ पढ़ो), (१७) और आसमानों और ज़मीन में उसी की तारीफ़ है और तीसरे पहर भी और जब दोपहर हो, (उस वक़्त भी नमाज़ पढ़ा करो), (१८) वही ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता और (वही) मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है और (वही) ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम (दोबारा ज़मीन में से) निकाले जाओगे। (१९) ★

और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर अब तुम इन्सान हो कर जगह-जगह फैल रहे हो। (२०) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स की औरतें पैदा कीं, ताकि उन की तरफ़ (मायल हो कर) आराम हासिल करो और तुम में मुहब्बत और मेहरबानी पैदा कर दी। जो लोग ग़ौर करते हैं, उन के लिए इन बातों में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२१) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़ुबानों और रंगों का जुदा-जुदा होना, अक़्ल वालों के लिए इन बातों में (बहुत सी) निशानियां हैं। (२२) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना और उस के फ़ज़्ल का तलाश करना, जो लोग सुनते हैं उन के लिए इन (बातों) में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२३) और उसी

★रु. १/४ आ १० ★रु. २/५ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मिन् आयातिही युरीकुमुलबर-क़ ख़ौफ़ंव-व त-म-अ़ंव-व युनज़्ज़िलु मिनस्समा-इ
मा-अन् फ़-युह़्यी बिहिल्‌अर-ज़ बअ्-द मौतिहा ط इन-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-
लिक़ौमिंय्यअ़-क़िलून (२४) व मिन् आयातिही अन् तक़ूमस्समाउ वल्‌अर-ज़ु
बिअम्रिही ط सुम्-म इज़ा दआकुम् दअ़्-व-तम्- मिनल्‌अर्ज़ि
इज़ा अन्तुम् तख़्-रुजून (२५) व लहू
मन् फ़िस्समावाति वल्‌अर्ज़ि ط कुल्लुल्लहू
क़ानितून (२६) व हु-वल्लज़ी यब्दउल-ख़ल्-क़
सुम्-म युईदुहू व हु-व अह्-वनु अ़लैहि ط
व लहुल्-म-स-लुल्-अअ़्-ला फ़िस्समावाति
वल्‌अर्ज़ि ج व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ह़कीम
★● (२७) ज़-र-ब लकुम् म-स-लम्-मिन्
अन्फ़ुसिकुम् ط हल्लकुम् मिम्मा म-ल-कत्
ऐमानुकुम् मिन् शुरका-अ फ़ी मा र-ज़क़्-नाकुम्
फ़-अन्तुम् फ़ीहि सवाउन् तख़ाफ़ूनहुम्
क-ख़ीफ़तिकुम् अन्फ़ुसकुम् ط कज़ालि-क
नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्-क़िलून
(२८) बलित्-त-ब-अल्-लज़ी-न ज़-लमू अह्वा-
अहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् ج फ़-मंय्यह्दी मन् अ-ज़ल्लल्लाहु ط व मा लहुम्
मिन् नासिरीन (२९) फ़-अक़िम् वज्-ह-क लिद्दीनि ह़नीफ़न् ط फ़ित्-र-तल्लाहिल्-
लती फ़-त-रन्ना-स अ़लैहा ط ला तब्दी-ल लिख़ल्-क़िल्लाहि ط ज़ालिकद्-दीनुल्-
क़य्यिमु ولا व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्-लमून ولا (३०) मुनीबी-न
इलैहि वत्तक़ूहु व अक़ीमुस्सला-त व ला तकूनू मिनल्-मुश्रिकीन لا (३१)
मिनल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-य-अ़न् ط कुल्लु ह़िज़्बिम्-बिमा लदैहिम्
फ़रिहून (३२) व इज़ा मस्सन्ना-स ज़ुर्रुन् दऔ रब्बहुम् मुनीबी-न इलैहि सुम्-म
इज़ा अ-ज़ाक़हुम् मिन्हु रह्-म-तन् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून لا (३३)

انل مآ اوحى ٢١ ٣٢٥ الروم ٣٠

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا
وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ
بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا
مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ
مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ
لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙۗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ
بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ
مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ

منزل ٥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि तुम को ख़ौफ़ और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आसमान से मेंह बरसाता है, फिर ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा (व हरा-भरा) कर देता है। अक़्ल वालों के लिए इन (बातों) में बहुत-सी निशानियां हैं। (२४) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि आसमान और ज़मीन उस के हुक्म से क़ायम हैं। फिर जब वह तुम को ज़मीन में से (निकालने के लिए) आवाज़ देगा, तो तुम झट निकल पड़ोगे। (२५) और आसमानों और ज़मीन में जितने (फ़रिश्ते और इन्सान वग़ैरह) हैं, उसी के (मम्लूक) हैं (और) तमाम उस के फ़रमांबरदार हैं। (२६) और वही तो है जो ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उस को बहुत आसान है और आसमानों और ज़मीन में उस की शान बहुत बुलंद है और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२७)★ ●

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल बयान फ़रमाता है कि भला जिन (लौंडी-ग़ुलामों) के तुम मालिक हो, वह उस (माल) में जो हम ने तुम को अता फ़रमाया है, तुम्हारे शरीक हैं? और (क्या). तुम उस में (उन को अपने) बराबर (मालिक) समझते हो (और क्या) तुम उन से इस तरह डरते हो, जिस तरह अपनों से डरते हो? इस तरह हम अक़्ल वालों के लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, (२८) मगर जो ज़ालिम हैं. बे-समझे अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलते हैं, तो जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उसे कौन हिदायत कर सकता है? और उन का कोई मददगार नहीं। (२९) तो तुम एक तरफ़ के हो कर दीन (ख़ुदा के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चले जाओ (और) ख़ुदा की फ़ितरत को, जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, (अख़्तियार किए रहो)।[1] ख़ुदा की बनायी हुई (फ़ितरत) में तब्दीली नहीं हो सकती। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३०) (मोमिनो!) उसी (ख़ुदा) की तरफ़ रुजूअ किए रहो और उस से डरते रहो और नमाज़ पढ़ते रहो और मुश्रिकों में न होना। (३१) (और न) उन लोगों में होना, जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और (ख़ुद) फ़िर्क़े-फ़िर्क़े हो गये। सब फ़िर्क़े उसी से ख़ुश हैं, जो उन के पास है। (३२) और जब लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती है तो अपने परवरदिगार को पुकारते और उसी की तरफ़ रुजूअ होते हैं। फिर जब-जब वह उन को अपनी रहमत का मज़ा चखाता है, तो एक फ़िर्क़ा उन में से अपने परवरदिगार से शिर्क करने लगता

---

१. फ़ितरत से मुराद अल्लाह तआला की तौहीद है यानी उस को एक-एक कर के समझना और उस के साथ किसी को शरीक न बनाना, यह तौहीद ही ख़ुदा का दीन है और इसी तौहीद को ख़ुदा ने इन्सान की फ़ितरत में दाख़िल किया है। अगर किसी शख़्स को पैदा होते ही उस की हालत पर छोड़ दिया जाए और शिर्क करने वाले उस के दिल में मुश्रिकाना ख़्यालात न डालें, तो वह कभी शिर्क नहीं करेगा। वह तौहीद पर पैदा हुआ है। न यहूदी होगा, न ईसाई, न आग का पुजारी, न सूरज का पुजारी, न बुतों का पुजारी, बल्कि ख़ालिस तौहीद परस्त होगा और तौहीद के सिवा कुछ न जानेगा। चूंकि तौहीद ख़ुदा की तरफ़ से इन्सानी फ़ितरत में दाख़िल की गयी है, इस लिए उस को अल्लाह की फ़ित्रत से ताबीर फ़रमाया है और हुक्म दिया है कि तौहीद को, जो अल्लाह तआला का सीधा दीन है, अख़्तियार किये रहो, इस में हरगिज़ तब्दीली न होने पाए।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ط फ़-त-मत्तअ़ू وقفة फ़-सौ-फ़ तअ् - लमून (३४)
अम् अन्ज़ल्ना अ़लैहिम् सुल्तानन् फ़-हु-व य-त-कल्लमु बिमा कानू बिही युश्रिकून
(३५) व इज़ा अ-जक़्नन्ना-स रह्-म-तन् फ़रिहू बिहा ط व इन् तुसिब्हुम्
सय्यि-अतुम्-बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् इज़ा हुम् यक़्-नतून (३६) अ-व लम्
यरौ अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ
व यक़्दिरु ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क
ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्-मिनून (३७)
फ़-आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू वल्मिस्की - न
वब्नस्सबीलि ط ज़ालि-क ख़ैरुल् - लिल्लज़ी-न
युरीदू - न वज्हल्लाहि ز व उलाइ - क
हुमुल्-मुफ़्लिहून (३८) व मा आतैतुम्
मिर्रिबल् - लि-यर्बु-व फ़ी अम्वालिन्नासि
फ़ला यर्बू अिन्दल्लाहि ج व मा आतैतुम्
मिन् ज़कातिन् तुरीदू-न वज् - हल्लाहि
फ़-उलाइ-क हुमुल् - मुज़्अिफ़ून (३९)
अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् सुम्-म र-ज़-क़कुम्
सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् ط हल्

اتل ما اوحی ۲۱ — ۳۲۶ — الروم ۳۰

يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۟ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ اَمْ
اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهٖ يُشْرِكُونَ ۝ وَاِذَآ
اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ فَاٰتِ ذَا
الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ
رِّبًا لِّيَرْبُوَا فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ
زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ
مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ ظَهَرَ
الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ
الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ۝
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ
اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ۝ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ
صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

منزل ۵

मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यफ़्-अलु मिन् ज़ालिकुम् मिन् शैइन् ط सुब्हानहू व तआला
अ़म्मा युश्रिकून ★ (४०) ज़-ह-रल्फ़सादु फ़िल्बर्रि वल्बह्रि बिमा क-स-
बत् ऐदिन्नासि लियुज़ीक़हुम् बअ्-ज़ल्लज़ी अ़मिलू ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (४१)
क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लु ط का-न
अक्सरुहुम् मुश्रिकीन (४२) फ़-अक़िम् वज् - ह - क लिद्दीनल् -
क़य्यिमि मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला म - रद्-द लहू मिनल्लाहि
यौमइज़िंय्यस्सद्-दअ़ून (४३) मन् क-फ़-र फ़ - अ़लैहि कुफ़्-रुहू ج व
मन् अ़मि - ल सालिहन् फ़ - लिअन्फ़ुसि - हिम् यम्हदून ۵ (४४)

★ रु. ४/७ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है, (३३) ताकि जो हम ने उस को बख़्शा है उस की ना-शुक्री करें, सो (ख़ैर) फ़ायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (३४) क्या हम ने उन पर कोई ऐसी दलील उतारी है कि उन को ख़ुदा के साथ शिर्क करना बताती है। (३५) और जब हम लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो उस से ख़ुश हो जाते हैं और अगर उन के अमलों की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं, कोई तक्लीफ़ पहुंचे, तो ना-उम्मीद हो कर रह जाते हैं। (३६) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है। बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए निशानियां हैं। (३७) तो रिश्तेदारों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को उन का हक़ देते रहो। जो लोग ख़ुदा की ख़ुश्नूदी की तलब में हैं, यह उन के हक़ में बेहतर है और यही लोग निजात हासिल करने वाले हैं। (३८) और जो तुम सूद देते हो कि लोगों के माल में बढ़ती हो, तो ख़ुदा के नज़दीक उस में बढ़ती नहीं होती और जो तुम ज़कात देते हो और उस से ख़ुदा की रज़ामंदी तलब करते हो, तो (वह बरकत की वजह है, और) ऐसे ही लोग (अपने माल को) दो-गुना तीन-गुना करने वाले हैं। (३९) ख़ुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया, फिर तुम को रोज़ी दी, फिर तुम्हें मारेगा, फिर ज़िंदा करेगा। भला तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ कर सके। वह पाक है और (उस की शान) उन के शरीकों से बुलंद है। (४०) ★

ख़ुश्की और तरी में लोगों के आमाल की वजह से फ़साद फैल गया है, ताकि ख़ुदा उन को उनके कुछ आमाल का मज़ा चखाये, अजब नहीं कि वे रुक जाएं। (४१) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि जो लोग (तुम से) पहले हुए हैं, उनका कैसा अंजाम हुआ है। उनमें ज़्यादातर मुश्रिक ही थे। (४२) तो उस दिन से पहले, जो ख़ुदा की तरफ़ से आ कर रहेगा और रुक नहीं सकेगा, दीन (के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चलो। उस दिन (सब) लोग बिखरे हुए हो जाएंगे। (४३) जिस शख़्स ने कुफ़्र किया, तो उस के कुफ़्र का नुक़्सान उसी को है और जिस ने नेक अमल किए, तो ऐसे

★रु. ४/७ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लि-यज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन् फ़ज़्लिही इन्नहू ला
युहिब्बुल्-काफ़िरीन (४५) व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर् - रिया - ह
मुबश्शिरातिंव्-व लियुज़ी-क़कुम् मिर्रह्मतिही व लि-तज्रि-यल्-फ़ुल्कु बिअम्रिही व
लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (४६) व ल-क़द्
अर्सल्ना मिन् क़ब-लि-क रुसुलन् इला क़ौमिहिम्
फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़न्-त - क़म्ना
मिनल्लज़ी-न अज्-रमू व का-न हक़्क़न्
अ़लैना नस्रुल् - मुअ् - मिनीन (४७)
अल्लाहुल्लज़ी युर्सिलुर् - रिया-ह फ़-तुसीरु
स-हाबन् फ़-यब्सुतुहू फ़िस्समाइ कै-फ़ यशाउ
व यज्-अ़लुहू कि-स-फ़न् फ़-त-रल्-वद्-क़
यख़रुजु मिन् ख़िलालिही फ़इज़ा
असा-ब बिही मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही
इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (४८) व इन्
कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैहिम् मिन्
क़ब्लिही ल-मुब्लिसीन (४९) फ़न्ज़ुर् इला
आसारि रह्मतिल्लाहि कै-फ़ युह्यिल्-अर्-ज़
बअ्-द मौतिहा इन् - न ज़ालि-क लमुह्यिलमौता व हु-व अ़ला कुल्लि
शैइन् क़दीर (५०) व लइन् अर्सल्ना रीहन् फ़-रऔहु मुस्-फ़र्रल्-ल-ज़ल्लू मिम्बअ्-
दिही यक्फ़ुरून (५१) फ़-इन्न-क ला तुस्मिअुल्-मौता व ला तुस्मिअुस्-सुम्मद्दुआ-अ
इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (५२) व मा अन्-त बिहादिल् - अुम्यि अन्
ज़लालतिहिम् इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून ★(५३)
अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् ज़ुअ् - फ़िन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ् - दि
ज़ुअ्-फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ्-दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ्-फ़ंव्-व शैब-तन् यख़्लुक़ु
मा यशाउ व हुवल्-अ़लीमुल्क़दीर (५४) व यौ-म तक़ूमुस्साअ़तु युक़्सिमुल्-
मुज्रिमू-न मा लबिसू ग़ै-र साअ़तिन् कज़ालि-क कानू युअ्-फ़कून (५५)

الروم ٣٠ ٣٢٧ اتل ما اوحي ٢١

الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ
الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا
وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ
لَمُبْلِسِيْنَ ۝ فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَلَئِنْ
اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ۝ فَاِنَّكَ لَا
تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ وَمَآ اَنْتَ
بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ
ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ
وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ مَا لَبِثُوْا
غَيْرَ سَاعَةٍ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَ

منزل

★रु. ५/८ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लोग अपने ही लिए आरामगाह दुरुस्त करते हैं। (४४) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उनको ख़ुदा अपने फ़ज़्ल से बदला देगा। बेशक वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (४५) और उसी की निशानियों में से है कि हवाओं को भेजता है कि ख़ुशख़बरी देती हैं, ताकि तुम को अपनी रहमत के मज़े चखाए और ताकि उस के हुक्म से कश्तियां चलें और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलब करो, अजब नहीं कि तुम शुक्र करो। (४६) और हमने तुम से पहले भी पैग़म्बर भेजे, तो वे उनके पास निशानियां ले कर आए, सो जो लोग नाफ़रमानी करते थे, हम ने उन से बदला ले कर छोड़ा और मोमिनों की मदद हम पर ज़रूरी थी। (४७) ख़ुदा ही तो है, जो हवाओं को चलाता है, तो वे बादल को उभारती हैं, फिर ख़ुदा उस को जिस तरह चाहता है, आसमान में फैला देता और तह-ब-तह कर देता है. फिर तुम देखते हो कि उस के बीच में से मेंह निकलने लगता है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है, उसे बरसा देता है, तो वे ख़ुश हो जाते हैं। (४८) और पहले तो वे मेंह उतरने से पहले ना-उम्मीद हो रहे थे। (४९) तो (ऐ देखने वाले!) ख़ुदा की रहमत की निशानियों की तरफ़ देख कि वह किस तरह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा करता है। बेशक वह मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (५०) और अगर हम ऐसी हवा भेजें कि वे (उस की वजह से) खेती को देखें (कि) पीली (हो गयी है), तो इस के बाद वे ना-शुक्री करने लग जाएं। (५१) तो तुम मुर्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को कि जब वे पीठ फेर कर फिर जाएं, आवाज़ सुना सकते हो। (५२) और न अंधों को उनकी गुमराही से (निकाल कर) सीधे रास्ते पर ला सकते हो। तुम तो उन ही लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, सो वही फ़रमांबरदार हैं★ (५३)

ख़ुदा ही तो है, जिसने तुम को (शुरू में) कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त इनायत की, फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया। वह जो चाहता है, पैदा करता है और वह इल्म वाला (और) क़ुदरत वाला है। (५४) और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, गुनाहगार क़स्में खाएंगे कि वे (दुनिया में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे थे। इसी तरह वे

★रु. ५/८ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म वल्-ईमा-न ल-क़द् लबिस्तुम् फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल्-बअ्-सि ج फ़ हाज़ा यौमुल्-बअ्-सि व लाकिन्नकुम् कुन्तुम् ला तअ्-लमून (५६) फ़यौमइज़िल्-ला यन्फ़अुल्लज़ी-न ज़-लमू मअ्-ज़ि-र-तुहुम् व ला हुम् युस्तअ्-तबून (५७) व ल-क़द् ज़-रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन् ط व लइन् जिअ्-तहुम् बिआयतिल्-ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् अन्तुम् इल्ला मुब्तिलून (५८) कज़ालि-क यत्-बअुल्लाहु अला क़ुलूबिल्लज़ी-न ला यअ्-लमून (५९) फ़स्बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व ला यस्तख़िफ़्फ़न्नकल्-लज़ी-न ला यूक़िनून ★ (६०)

३१ सूरतु लुक़्मा-न ५७

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के २२१७ अक्षर, ५५४ शब्द, ३४ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ج (१)

तिल्-क आयातुल् - किताबिल्-ह़कीम ۙ (२)

हुदंव्-व रह़्मतल् - लिल्मुह़्सिनीन ۙ (३)

الْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ
وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع
سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ
يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٦﴾ وَاِذَا
تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْ اُذُنَيْهِ
وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ

अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त़ व युअ्तूनज़्ज़का-त़ व हुम् बिल्आख़िरति हुम् यूक़िनून ط
(४) उलाइ-क अला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्मुफ़्लिहून (५)
व मिनन्नासि मंय्यश्तरी लह्-वल्-ह़दीसि लियुज़िल्-ल अन् सबीलिल्लाहि बिग़ैरि
अ़िल्मिंव्-व यत्तख़ि-ज़हा हुज़ुवन् ط उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन (६) व
इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना वल्ला मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्-हा क-अन्-न फ़ी
उज़ुनैहि वक़्-रन् ج फ़-बश्शिर्हु बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (७) इन्नल्लज़ी-न आमनू
व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन्नअ़ीम ۙ (८) ख़ालिदी - न
फ़ीहा ط वअ्-दल्लाहि ह़क़्क़न् ط व हुवल् - अज़ीज़ुल् - ह़कीम (९)

★रु. ६/९ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(रास्ते से) उलटे जाते थे। (५५) और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया था, वे कहेंगे कि ख़ुदा की किताब के मुताबिक़ तुम क़ियामत तक रहे हो और यह क़ियामत ही का दिन है, लेकिन तुम को इसका यक़ीन ही न था। (५६) तो उस दिन ज़ालिम लोगों को उनका उज़्र कुछ फ़ायदा न देगा और न उन से तौबा क़ुबूल की जाएगी। (५७) और हम ने लोगों के (समझाने के) लिए इस क़ुरआन में हर तरह की मिसाल बयान कर दी है और अगर तुम उनके सामने कोई निशानी पेश करो, तो ये काफ़िर कह देंगे कि तुम तो झूठे हो। (५८) इसी तरह ख़ुदा उन लोगों के दिलों पर, जो समझ नहीं रखते, मुहर लगा देता है। (५९) पस तुम सब्र करो। बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है और (देखो) जो लोग यक़ीन नहीं रखते, वे तुम्हें ओछा न बना दें। (६०)★

३१ सूरः लुक़्मान ५७

सूरः लुक़्मान मक्की है और इसमें चौंतीस आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़् लाम्-मीम्, (१) यह हिक्मत की (भरी हुई) किताब की आयतें हैं। (२) मुह्सिनों के लिए हिदायत और रहमत, (३) जो नमाज़ की पाबन्दी करते और ज़कात देते और आख़िरत का यक़ीन रखते हैं। (४) यही अपने परवरदिगार की (तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही निजात पाने वाले हैं। (५) और लोगों में कोई ऐसा है, जो बेहूदा हिकायतें ख़रीदता है, ताकि (लोगों को) बे-समझे ख़ुदा के रास्ते से गुमराह करे और उसका मज़ाक़ उड़ाए। यही लोग हैं, जिनको ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (६) और जब उस को हमारी आयतें सुनायी जाती हैं, तो अकड़ कर मुंह फेर लेता है, गोया उनको सुना ही नहीं जैसे उन के कानों में बोझ है, तो उस को दर्द देने वाले अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो। (७) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन के लिए नेमत के बाग़ हैं, (८) हमेशा उन में रहेंगे। ख़ुदा का वायदा सच्चा है और वह ग़ालिब हिक्मत

★रु. ६/९ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़-ल-क़स्समावाति बिग़ैरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि र-वासि-य अन् तमी-द बिकुम् व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् ᵇ व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (१०) हाज़ा ख़ल्-क़ुल्लाहि फ़-अरूनी माज़ा ख़-ल-क़ल्लज़ी-न मिन् दूनिही ᵇ बलिज़्ज़ालिमू-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन ★ (११) व ल-क़द् आतैना लुक़्मानल्-हिक्म-त अनिश्कुर् लिल्लाहि ᵇ व मंय्यश्कुर् फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही ᶜ व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (१२) व इज् क़ा-ल लुक़्मानु लिब्निही व हु-व यअिज़ुहू याबुनय्-य ला तुश्रिक् बिल्लाहि ▨ इन्नश्शिर्-क ल-ज़ुल्मुन् अज़ीम (१३) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि ᶜ ह़-म-लत्हु उम्मुहू वह्नन् अला वह्निंव-व फ़िसालुहू फ़ी आमैनि अनिश्कुर् ली व लिवालिदै-क ᵇ इलय्यल्-मसीर ● (१४) व इन् जाहदा-क अला अन् तुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् ˡ फ़ ला तुतिअ्-हुमा व साहिब्हुमा फ़िद्दुन्या मअ्-रूफ़ंव-वत्तबिअ् सबी-ल मन् अना-ब इलय्-य ᶜ सुम्-म इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१५) या बुनय्-य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिम्मिन् ख़र्दलिन् फ़-तकुन् फ़ी सख़्-रतिन् औ फ़िस्समावाति औ फ़िल्अर्ज़ि यअ्ति बिहल्लाहु ᵇ इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (१६) या बुनय्-य अक़िमिस्सला-त वअ्मुर् बिलमअ्-रूफ़ि वन्-ह अनिल्मुन्करि वस्बिर् अला मा असाब-क ᵇ इन्-न ज़ालि-क मिन् अज़्मिल्-उमूर ᶜ (१७) व ला तुसअ्-अिर् ख़द्-द-क लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-र-हन् ᵇ इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर ᶜ (१८) वक़्सिद् फ़ी मश्यि-क वग़्ज़ुज़् मिन् सौति-क ᵇ इन्-न अन्करल्-अस्वाति ल-सौतुल्-हमीर ★ (१९)

لقمٰن ٣١ — ٣٢٩ — اتل مآ اوحی ٢١

رواسی ان تمید بکم وبث فیها من کل دآبة وانزلنا من السمآء
مآء فانبتنا فیها من کل زوج کریم ١٠ هذا خلق الله فارونی ما
ذا خلق الذین من دونه بل الظلمون فی ضلل مبین ١١ و
لقد اتینا لقمن الحکمة ان اشکر لله ومن یشکر فانما یشکر لنفسه
ومن کفر فان الله غنی حمید ١٢ واذ قال لقمن لابنه وهو یعظه
یبنی لا تشرک بالله ان الشرک لظلم عظیم ١٣ ووصینا الانسان
بوالدیه حملته امه وهنا علی وهن وفصله فی عامین ان
اشکر لی ولوالدیک الی المصیر ١٤ وان جاهدک علی ان تشرک
بی ما لیس لک به علم فلا تطعهما وصاحبهما فی الدنیا معروفا
واتبع سبیل من اناب الی ثم الی مرجعکم فانبئکم بما کنتم
تعملون ١٥ یبنی انها ان تک مثقال حبة من خردل فتکن فی
صخرة او فی السموت او فی الارض یات بها الله ان الله لطیف
خبیر ١٦ یبنی اقم الصلوة وامر بالمعروف وانه عن المنکر
واصبر علی ما اصابک ان ذلک من عزم الامور ١٧ ولا تصعر
خدک للناس ولا تمش فی الارض مرحا ان الله لا یحب کل
مختال فخور ١٨ واقصد فی مشیک واغضض من صوتک
ان انکر الاصوات لصوت الحمیر ١٩ الم تروا ان الله سخر لکم

منزل ٥

★ रु. १/१० आ ११ ▨ व. नबी स. ● नि. १/२ ★ रु. २/११ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाला है। (९) उसी ने आसमानों को स्तूनों के बग़ैर पैदा किया, जैसा कि तुम देखते हो और ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए, ताकि तुम को हिला-हिला न दे और उस में हर तरह के जानवर फैला दिए और हम ही ने आसमान से पानी उतारा, फिर (उस से) उस में हर क़िस्म की नफ़ीस चीज़ें उगायीं। (१०) यह तो ख़ुदा की पैदाइश है, तो मुझे दिखाओ कि ख़ुदा के सिवा जो लोग हैं, उन्होंने क्या पैदा किया है ? सच तो यह है कि ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (११)★

और हमने लुक़मान को हिक्मत बख़्शी कि ख़ुदा का शुक्र करो और जो शख़्स शुक्र करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो ख़ुदा भी बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक़ है। (१२) और (उस वक़्त को याद करो,) जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा ख़ुदा के साथ शिर्क न करना▨शिर्क तो बड़ा (भारी) ज़ुल्म है। (१३) और हम ने इंसान को, जिसे उस की मां तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ सह कर पेट में उठाए रखती है (फिर उस को दूध पिलाती है) और (आख़िरकार में) दो वर्ष में उस का दूध छुड़ाना होता है, (अपने, साथ ही) उसके मां-बाप के बारे में ताकीद की है कि मेरा भी शुक्र करता रह और अपने मां-बाप का भी (कि तुम को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है●(१४) और वे तेरे पीछे पड़े हों कि तू मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक करे, जिस का तुझे कुछ भी इल्म नहीं, तो उन का कहना न मानना। हां, दुनिया के कामों में उन का अच्छी तरह साथ देना और जो शख़्स मेरी तरफ़ रुजूअ लाये, उस के रास्ते पर चलना, फिर तुम को मेरी तरफ़ लौट कर आना है। तो जो काम तुम करते रहे, मैं सब से तुम को आगाह करूंगा। (१५) (लुक़मान ने यह भी कहा कि) बेटा ! अगर कोई अमल (मान लो) राई के दाने के बराबर भी (छोटा) हो और हो भी किसी पत्थर के अन्दर या आसमानों में (छिपा हुआ हो) या ज़मीन में, ख़ुदा उस को क़ियामत के दिन ला मौजूद करेगा। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा लतीफ़ (और) ख़बरदार है। (१६) बेटा ! नमाज़ की पाबन्दी रखना और (लोगों को) अच्छे कामों के करने का हुक्म और बुरी बातों से मना करते रहना और जो मुसीबत तुझ पर आए, उस पर सब्र करना। बेशक ये बड़ी हिम्मत के काम हैं। (१७) और (घमंड में आ कर) लोगों से गाल न फुलाना और ज़मीन में अकड़ कर न चलना कि ख़ुदा किसी इतराने वाले ख़ुद-पसंद को पसंद नहीं करता। (१८) और अपनी चाल में दर्मियानी रास्ता अपनाए रहना और (बोलते वक़्त) आवाज़ नीची रखना, क्योंकि (ऊंची आवाज़ गधों की-सी है और कुछ शक नहीं कि)

★रु. १/१० आ ११ ▨व. न बी स. ●नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-लम् तरौ अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अस्ब-ग़ अलैकुम् नि-अ-महू ज़ाहि-र-तंव्-व बाति-न-तन् b व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिंव-व ला हुदंव्-व ला किताबिम्-मुनीर (२०) व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअ़ू मा अन्ज़-लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअ़ु मा व-जद्ना अलैहि आबा-अना b अ-व लौ कानश्शैतानु यद्‌अ़ूहुम् इला अज़ाबिस्सअ़ीर (२१) व मंय्युस्लिम् वज-हहू इलल्लाहि व हु-व मुह़्सिनुन् फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्-अुर्-वतिल्-वुस्क़ा b व इलल्लाहि आ़क़िबतुल्-उमूर (२२) व मन् क-फ़-र फ़ला यह़्ज़ुन्-क कुफ़्रुहू b इलैना मर्जिअ़ुहुम् फ़नुनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू b इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (२३) नुमत्तिअ़ुहुम् क़लीलन् सुम्-म नज़्तर्रुहुम् इला अज़ाबिन् ग़लीज़ (२४) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु b क़ुलिल्ह़म्दु लिल्लाहि b बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्-लमून (२५) लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि b इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-ह़मीद (२६) व लौ अन्-न मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् श-ज-रतिन् अक़्-लामुंव्वल्बह़्रु यमुद्-दुहू मिम्बअ़्-दिही सब-अ़तु अब्हुरिम्-मा नफ़िदत् कलिमातुल्लाहि b इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ह़कीम (२७) मा ख़ल्क़ुकुम् व ला बअ़्-सुकुम् इल्ला क-नफ़्सिंव्वाहिदतिन् b इन्नल्ला-ह समीअ़ुम्-बसीर (२८) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र b कुल्लुंय्यज्री इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्-व अन्नल्ला-ह बिमा तअ़्-मलू-न ख़बीर (२९) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह हुवल्-ह़क़्क़ु व अन्-न मा यद्‌अ़ू-न मिन्दूनिहिल्-बातिलु b व अन्नल्ला-ह हुवल्-अ़लिय्युल्कबीर ★(३०)

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ
بَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ
مُّنِيْرٍ ﴿۲۰﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۲۱﴾
وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۲۲﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ
اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۳﴾
نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۲۴﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۶﴾
وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ
سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۷﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَ
لَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۹﴾ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۳۰﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ

★रु. ३/१२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सब से बुरी आवाज़ गधों की है★(१९) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब को ख़ुदा ने तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और भीतरी नेमतें पूरी कर दी हैं और कुछ लोग ऐसे हैं कि ख़ुदा के बारे में झगड़ते हैं, न इल्म रखते हैं और न हिदायत और न रोशन किताब। (२०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उसी की पैरवी करो, तो कहते हैं कि हम तो उसी की पैरवी करेंगे, जिस पर अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे शैतान उन को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता है, (तब भी?) (२१) और जो शख़्स अपने आप को ख़ुदा का फ़रमांबरदार कर दे और भला भी हो तो उस ने मज़बूत दस्तावेज़ हाथ में ले ली और (सब) कामों का अंजाम ख़ुदा ही की तरफ़ है। (२२) और जो कुफ़्र करे तो उस का कुफ़्र तुम्हें ग़मनाक न कर दे। उन को हमारी तरफ़ लौट कर आना है, फिर जो काम वे किया करते थे, हम उन को बता देंगे। बेशक ख़ुदा दिलों की बातों को जानता है। (२३) हम उन को थोड़ा-सा फ़ायदा पहुंचाएंगे, फिर सख़्त अज़ाब की तरफ़ मजबूर कर के ले जाएंगे। (२४) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया, तो बोल उठेंगे कि ख़ुदा ने, कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है, लेकिन उन में अक्सर समझ नहीं रखते। (२५) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (सब) ख़ुदा ही का है। बेशक ख़ुदा बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक़ है। (२६) और अगर यों हो कि ज़मीन में जितने पेड़ हैं (सब के सब) क़लम हों और समुन्दर (का तमाम पानी) स्याही हो (और) इस के बाद सात समुन्दर और (स्याही हो जाएं) तो ख़ुदा की बातें (यानी उस की सिफ़तें) ख़त्म न हों। बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२७) (ख़ुदा को) तुम्हारा पैदा करना और जिला उठाना एक शख़्स (के पैदा करने और जिला उठाने) की तरह है, बेशक ख़ुदा सुनने वाला, देखने वाला है। (२८) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही रात को दिन में दाख़िल करता है और उसी ने सूरज और उसी ने चांद को (तुम्हारे) फ़रमान के तहत कर रखा है। हर-एक एक मुक़र्रर वक़्त तक चल रहा है और यह कि ख़ुदा तुम्हारे सब अमल से ख़बरदार है। (२९) यह इस लिए कि ख़ुदा की ज़ात बर-हक़ है और जिन को ये लोग ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, वे बेकार हैं और यह कि ख़ुदा ही ऊंचे मर्तबे वाला और बड़ा है। (३०) ★

★रु. २/११ आ ८ ★रु. ३/१२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-लम् त-र अन्नलफ़ुल-क तज्री फ़िलबह़्रि बिनिअ्-मतिल्लाहि लियुरि-यकुम् मिन् आयातिही ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (३१) व इज़ा ग़शि-यहुम् मौजुन् कज़्ज़ु - ललि द-अवुल्ला-ह मुख़्लिसी - न लहुद्-दी - न ج फ़ - लम्मा नज्जाहुम् इललबर्रि फ़मिन्हुम् मुक़्तसि़दुन् ط व मा यज्ह़दु बिआयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन् कफ़ूर (३२) या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् वख़्शौ यौमल्ला यज् - ज़ी वालिदुन् अ़ंव्व-लदिही ز व ला मौलूदुन् हु-व जाज़िन् अ़ंव्वालिदिही शैअन् ط इन्-न वअ़्-दल्लाहि ह़क़्क़ुन् फ़-ला तग़ुर्रन्नकुमुल् - ह़यातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (३३) इन्नल्ला - ह अ़िन्दहू अ़िल्मुस्साअ़ति़ ج व युनज़्ज़िलुल् - ग़ै - स ج व यअ़् - लमु मा फ़िल्अर्हा़मि ط व मा तद्री नफ़्सुम्-माज़ा तक्सिबु ग़ - दन् ط व मा तद्री नफ़्सुम् - बि - अय्यि अर्ज़िन् तमूतु ط इन्नल्ला - ह अ़लीमुन् ख़बीर ★ (३४)

वقف

اتل مآ اوحی ۲۱ ۳۲۱ السجدة ۳۲

مِنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ
كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ
مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا
رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ
عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا
يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا
تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝
سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗمّۗ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ
السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ
سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

منزل

३२ सूरतुस्-सज्दति़ ७५

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १५७७ अक्षर, २७४ शब्द, ३० आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ج (१) तन्ज़ीलुल्किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल् - आ़लमीन ط (२) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ج बल् हुवल्ह़क़्क़ु मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम्-मिन् क़ब्लि-क ल-अ़ल्लहुम् यह्-तदून (३) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति़ अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्अ़र्शि ط मा लकुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्वला शफ़ीअ़िन् ط अ-फ़-ला त-त - ज़क्करून (४) युदब्बिरुल्-अम्-र मिनस्समाइ इलल्अर्ज़ि सुम्-म यअ़्-रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू अल्-फ़ स-नतिम्मिम्मा त-अ़ुद्दून (५) ज़ालि-क आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल्-अ़ज़ीज़ुर्रह़ीम (६)

★रु. ४/१३ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही की मेहरबानी से कश्तियां दरिया में चलती हैं, ताकि वह तुम को अपनी कुछ निशानियां दिखाए। बेशक इस में हर सब्र करने वाले (और) शुक्र करने वाले के लिए निशानियां हैं। (३१) और जब उन पर (दरिया की) लहरें सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो ख़ुदा को पुकारने (और) ख़ालिस उस की इबादत करने लगते हैं, फिर जब वह उन को निजात दे कर ख़ुश्की पर पहुंचा देता है, तो कुछ ही इंसाफ़ पर क़ायम रहते हैं और हमारी निशानियों से वही इन्कार करते हैं, जो वायदा तोड़ने वाले (और) ना-शुक्रे हैं। (३२) लोगो! अपने परवरदिगार से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो कि न तो बाप अपने बेटे के कुछ काम आए और न बेटा बाप के कुछ काम आ सके। बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िंदगी तुम को धोखे में न डाल दे और न धोखा देने वाला (शैतान) तुम्हें ख़ुदा के बारे में किसी तरह का फ़रेब दे।[1] (३३) ख़ुदा ही को क़ियामत का इल्म है और वही मेंह बरसाता है और वही (हामिला के) पेट की चीज़ों को जानता है (कि नर है या मादा) और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा। और कोई नफ़्स नहीं जानता कि किस ज़मीन में उसे मौत आएगी। बेशक ख़ुदा ही जानने वाला (और) ख़बरदार है। (३४)★

३२ सूरः सज्दा ७५

सूरः सज्दा मक्की है और इस में तीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम्, (१) इस में कुछ शक नहीं कि इस किताब का नाज़िल किया जाना तमाम दुनिया के परवरदिगार की तरफ़ से है। (२) क्या ये लोग यह कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस को ख़ुद से बना लिया है? (नहीं,) बल्कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बर-हक़ है, ताकि तुम उन लोगों को हिदायत करो, जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया, ताकि ये रास्ते पर चलें। (३) ख़ुदा ही तो है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो चीज़ें इन दोनों में हैं, सब को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर क़ायम हुआ। उस के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न सिफ़ारिश करने वाला। क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (४) वही आसमान से ज़मीन तक (के) हर काम का इन्तिज़ाम करता है। फिर वह एक दिन जिस की मिक़्दार तुम्हारी गिनती के मुताबिक़ हज़ार वर्ष की होगी, उस की तरफ़ चढ़ाई (और रुजूअ) करेगा। (५) यही तो छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला (और) ग़ालिब (और) रहम वाला (ख़ुदा) है। (६) जिस ने हर चीज़

१. यानी शैतान धोखा दे कि अल्लाह ग़फ़ूर और रहीम है और दुनिया का जीना बहका दे कि जिस को यहां भला है, उस को वहां भी भला है।

★रु. ४/१३ आ ४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लज़ी अह्-स-न कुल्-ल शैइन् ख़-ल्-क़हू व ब-द-अ ख़ल्क़ल् - इन्सानि
मिन् तीन(७) सुम्-म ज-अ्-ल नस्-लहू मिन् सुलालतिम्-मिम्-मा-इम्-महीन
(८) सुम् - म सव्वाहु व न-फ़-ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही व ज-अ्-ल
लकुमुस्सम्-अ वल्-अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त क़लीलम्-मा तश्कुरून (९) व
क़ालू अ-इज़ा ज़-लल्ना फ़िल्अर्ज़ि अ इन्ना
लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन् बल् हुम्
बिलिक़ाइ रब्बिहिम् काफ़िरून (१०)
क़ुल् य-त-वफ़्फ़ाकुम् म-लकुल् - मौतिल्लज़ी
वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम्
तुर्जअून ★ (११) व लौ तरा इज़िल्-
मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अिन् - द
रब्बिहिम् रब्बना अब्-सर्ना व समिअ्-ना
फ़र्जिअ्-ना नअ्-मल् सालिहन् इन्ना मूक़िनून
(१२) व लौ शिअ्ना लआतैना कुल्-ल
नफ़्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक़्क़ल्-क़ौलु
मिन्नी ल-अम्-ल-अन्-न ज-हन्न-म मिनल्जिन्नति
वन्नासि अज्मअीन (१३) फ़ज़ूक़ू बिमा
नसीतुम् लिक़ा - अ यौमिकुम् हाज़ा
इन्ना नसीनाकुम् व ज़ूक़ू अज़ाबल्-ख़ुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१४)
इन्नमा युअ्मिनु बिआयातिनल्-लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिहा ख़र्रू सुज्जदंव-व सब्बहू
बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून □ (१५) त-त - जाफ़ा
जुनूबुहुम् अनिल्मज़ाजिअि यद्अू-न रब्बहुम् ख़ौफ़ंव्-व त-म-अंव्-व मिम्मा
र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (१६) फ़ ला तअ्-लमु नफ़्सुम्मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन्
क़ुर्रति अअ्-युनिन् जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्-मलून (१७) अ-फ़-मन् का-न
मुअ्मिनन् क-मन् का-न फ़ासिक़न् ▨ ला यस्तवून ▨ (१८) अम्मल्लज़ी-न
आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् जन्नातुल् - मअ्वा नुज़ुलम् - बिमा
कानू यअ् - मलून (१९) व अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ्-वाहुमुन्नारु
कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा उअीदू फ़ीहा व क़ी - ल
लहुम् ज़ूक़ू अज़ाबन्नारिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (२०)

اتل ما اوحی ٢١ ٣٣٢ السجدة ٣٢

الذي احسن كل شيء خلقه وبدا خلق الانسان من طين ٧
ثم جعل نسله من سللة من ماء مهين ٨ ثم سوىه ونفخ فيه
من روحه وجعل لكم السمع والابصار والافدة قليلا ما
تشكرون ٩ وقالوا ءاذا ضللنا في الارض ءانا لفي خلق جديد
بل هم بلقاي ربهم كفرون ١٠ قل يتوفىكم ملك الموت الذي
وكل بكم ثم الى ربكم ترجعون ١١ ولو ترى اذ المجرمون ناكسوا
رءوسهم عند ربهم ربنا ابصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا
انا موقنون ١٢ ولو شئنا لاتينا كل نفس هدىها ولكن حق القول
مني لاملئن جهنم من الجنة والناس اجمعين ١٣ فذوقوا بما
نسيتم لقاء يومكم هذا انا نسينكم وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم
تعملون ١٤ انما يؤمن باياتنا الذين اذا ذكروا بها خروا سجدا و
سبحوا بحمد ربهم وهم لا يستكبرون ١٥ تتجافى جنوبهم عن
المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا ومما رزقنهم ينفقون ١٦
فلا تعلم نفس ما اخفي لهم من قرة اعين جزاء بما كانوا
يعملون ١٧ افمن كان مؤمنا كمن كان فاسقا لا يستون ١٨ اما
الذين امنوا وعملوا الصلحت فلهم جنت المأوى نزلا بما كانوا
يعملون ١٩ واما الذين فسقوا فمأوىهم النار كلما ارادوا ان

منزل

★रु. १/१४ आ ११ □ सज्दः ९ ▨ व. ग़ुफ़रान ▨ व. ग़ुफ़रान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

को बहुत अच्छी तरह बनाया (यानी) उस को पैदा किया और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया। (७) फिर उस की नस्ल ख़ुलासे से (यानी) हक़ीर पानी से पैदा की, (८) फिर उस को दुरुस्त किया, फिर उस में अपनी (तरफ़ से) रूह फूंकी और तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाये (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (९) और कहने लगे कि जब हम ज़मीन में मलिया-मेट हो जाएंगे, तो क्या नये सिरे से पैदा होंगे। सच तो यह है कि ये लोग अपने परवरदिगार के सामने जाने ही के क़ायल नहीं। (१०) कह दो कि मौत का फ़रिश्ता, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाये जाओगे। (११)★

(और तुम ताज्जुब करो), जब देखो कि गुनाहगार अपने परवरदिगार के सामने सर झुकाए होंगे (और कहेंगे कि) ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने देख लिया और सुन लिया, तो हम को (दुनिया में) वापस भेज दे कि नेक अमल करें। बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं। (१२) और अगर हम चाहते, तो हर शख़्स को हिदायत कर देते, लेकिन मेरी तरफ़ से यह बात क़रार पा चुकी है कि मैं दोज़ख़ को जिन्नों और इन्सानों, सब से भर दूंगा। (१३) सो (अब आग के) मज़े चखो, इस लिए कि तुमने उस दिन के आने को भुला रखा था, (आज) हम भी तुम्हें भुला देंगे और जो काम तुम करते थे, उनकी सज़ा में हमेशा के अज़ाब के मज़े चखते रहो। (१४) हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन को उन से नसीहत की जाती है, तो सज्दे में गिर पड़ते और अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और घमंड नहीं करते □ (१५) उन के पहलू बिछौनों से अलग रहते हैं (और) वह अपने परवरदिगार को ख़ौफ़ और उम्मीद से पुकारते और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से ख़र्च करते हैं। (१६) कोई नफ़्स नहीं जानता कि उन के लिए कैसी आंखों की ठंडक छिपा कर रखी गयी है, यह उन के आमाल का बदला है, जो वे करते थे। (१७) भला जो मोमिन हो, वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो नाफ़रमान हो? ▨ दोनों बराबर नहीं हो सकते ▨ (१८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के (रहने के) लिए बाग़ हैं। यह मेहमानी उन कामों का बदला है, जो वे करते थे। (१९) और जिन्हों ने ना-फ़रमानी की, उन के (रहने के) लिए दोज़ख़ है। जब चाहेंगे कि उस में से निकल जाएं, तो उसमें लौटा दिए जाएंगे और उन से कहा जाएगा कि जिस दोज़ख़ के अज़ाब को तुम झूठ समझते थे, उस के

★रु. १/१४ आ ११ □ सज्दः ६ ▨ व. ग़ुफ़्रान ▨ व. ग़ुफ़्रान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिनल् - अ़ज़ाबिल् - अद्ना दूनल् - अ़ज़ाबिल् - अक्बरि
ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (२१) व मन् अज़्-लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही
सुम्-म अअ्-र-ज़ अ़न्हा ط इन्ना मिनल् - मुज्रिमी-न मुन्तक़िमून ★(२२)
व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब फ़ ला तकुन् फ़ी मिर्यतिम्-मिल्-लिक़ाइही व

ज-अ़ल्नाहु हुदल्लिबनी इस्राईल ج (२३)
व ज - अ़ल्ना मिन्हुम् अइम्मतंय्यह्दू - न
बिअम्रिना लम्मा स़ - बरू قف व कानू
बि-आयातिना यूक़िनून (२४) इन्-न रब्ब-क
हु-व यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्क़ियामति फ़ीमा
कानू फ़ीहि यख़्-तलिफ़ून (२५) अ-व लम्
यह्दि लहुम् कम् अह्-लक्-ना मिन् क़ब-लिहिम्
मिनल्क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम् ط
इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिन् ط अ-फ़ला
यस्-मअ़ून (२६) अ-व लम् यरौ अन्ना
नसूक़ुलमा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि फ़-नुख़्रिजु
बिही ज़र-अ़न् तअ्-कुलु मिन्हु अन्आमुहुम्
व अन्फ़ुसुहुम् ط अ-फ़ ला युब्सिरून ●(२७)

٣٣٣ الاحزاب ٣٣ — اتل ما اوحی ٢١

يخرجوا منها اعيدوا فيها وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذي كنتم
به تكذبون ﴿٢٠﴾ ولنذيقنهم من العذاب الادنى دون العذاب
الاكبر لعلهم يرجعون ﴿٢١﴾ ومن اظلم ممن ذكر بايت ربه ثم اعرض
عنها انا من المجرمين منتقمون ﴿٢٢﴾ ولقد اتينا موسى الكتب
فلا تكن في مرية من لقائه وجعلنه هدى لبني اسراءيل ﴿٢٣﴾
وجعلنا منهم ائمة يهدون بامرنا لما صبروا وكانوا بايتنا
يوقنون ﴿٢٤﴾ ان ربك هو يفصل بينهم يوم القيمة فيما كانوا
فيه يختلفون ﴿٢٥﴾ اولم يهد لهم كم اهلكنا من قبلهم من
القرون يمشون في مسكنهم ان في ذلك لايت افلا يسمعون ﴿٢٦﴾
اولم يروا انا نسوق الماء الى الارض الجرز فنخرج به زرعا تاكل
منه انعامهم وانفسهم افلا يبصرون ﴿٢٧﴾ ويقولون متى هذا
الفتح ان كنتم صدقين ﴿٢٨﴾ قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا ايمانهم
ولا هم ينظرون ﴿٢٩﴾ فاعرض عنهم وانتظر انهم منتظرون ﴿٣٠﴾
سورة الاحزاب مدنية وهي ثلث وسبعون اية وتسع ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
يايها النبي اتق الله ولا تطع الكفرين والمنفقين ان الله
كان عليما حكيما ﴿١﴾ واتبع ما يوحى اليك من ربك ان الله كان

व यक़ूलू - न मता हाज़ल्फ़त्हु इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन (२८) क़ुल्
यौमल्फ़त्हि ला यन्फ़उल्लज़ी-न क-फ़रू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून
(२९) फ़-अअ् - रिज़् अ़न्हुम् वन्तज़िर् इन्नहुम् मुन्तज़िरून ★(३०)

३३ सूरतुल् अह्ज़ाबि ९०

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ५९०९ अक्षर, १२१० शब्द, ७३ आयतें और ९ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

या अय्युहन् - नबिय्युत्-तक़िल्-ला-ह व ला तुतिअ़िल् - काफ़िरी-न
वल्मुनाफ़िक़ी-न ط इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन्-हकीमा لا (१) वत्तबिअ़ मा यूहा
इलै-क मिर्रब्बि-क ط इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा لا (२)

★रु. २/१५ आ ११ ●सु. ३/४ ★रु. ३/१६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मज़े चखो। (२०) और हम उन को (क़ियामत के) बड़े अज़ाब के सिवा दुनिया के अज़ाब का भी मज़ा चखाएंगे, शायद (हमारी तरफ़) लौट आएं। (२१) और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन, जिस को उस के परवरदिगार की आयतों से नसीहत की जाए, तो वह उन से मुंह फेर ले। हम गुनाहगारों से ज़रूर बदला लेने वाले हैं। (२२)★

और हम ने मूसा को किताब दी, तो तुम उनके मिलने से शक में न होना[1] और हमने उस (किताब) को (या मूसा को) बनी इस्राईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया। (२३) और उन में से हम ने पेशवा बनाये थे, जो हमारे हुक्म से हिदायत किया करते थे, जब वे सब्र करते थे और वे हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे। (२४) बेशक तुम्हारा परवरदिगार उन में जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते थे, क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। (२५) क्या उनको इन (बातों) से हिदायत न हुई कि हम ने इन से पहले बहुत-सी उम्मतों को, जिन के बसने की जगहों में ये चलते-फिरते हैं, हलाक कर दिया। बेशक इस में निशानियां हैं, तो ये सुनते क्यों नहीं? (२६) क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम इस बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते हैं, फिर इससे खेती पैदा करते हैं, जिस में से इन के चौपाए भी खाते हैं और वे भी (खाते हैं), तो ये देखते क्यों नहीं?● (२७) और कहते हैं अगर तुम सच्चे हो, तो यह फ़ैसला कब होगा? (२८) कह दो कि फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान लाना कुछ भी फ़ायदे का न होगा और न उन को मुहलत दी जाएगी। (२९) तो उनसे मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (३०)★



३३ सूरः अह्ज़ाब ९०

सूर: अह्ज़ाब मदनी है और इस में तिहत्तर आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! ख़ुदा से डरते रहना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानना। बेशक ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१) और जो (किताब) तुम को तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से वह्य की जाती है, उसी की पैरवी किए जाना। बेशक ख़ुदा तुम्हारे सब अमलों से

१. यानी तुम मूसा से ज़रूर मिलोगे। चुनांचे आप मेराज की रात आसमान पर हज़रत मूसा अलै० से मिले, जैसा कि हदीस में है।

★रु. २/१५ आ ११ ●मु. ३/४ ★रु. ३/१६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व त-वक्कल् अ़-लल्लाहि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (३) मा ज-अ़-लल्लाहु लिरजुलिम्-मिन् क़ल्बैनि फ़ी जौफ़िही ج व मा ज-अ़-ल अज़्वा-ज-कुमुल्लाई तुज़ाहिरू-न मिन्हुन्-न उम्महातिकुम् ج व मा ज-अ़-ल अद्-अ़िया-अ-कुम् अब्-ना-अकुम् ط ज़ालिकुम् क़ौलुकुम् बि-अफ़्वाहिकुम् ط वल्लाहु यक़ूलुल् ह़क़्-क़ व हु-व यह्दिस्सबील (४) उद्अ़ूहुम् लिआबाइहिम् हु-व अक़्सतु अ़िन्दल्लाहि ج फ़-इल्लम् तअ़्लमू आबा-अहुम् फ़-इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि व मवालीकुम् ط व लै-स अ़लैकुम् जुनाह़ुन् फ़ीमा अख़्तअ्-तुम् बिही لا व लाकिम्मा त-अ़म्म-दत् क़ुलूबुकुम् ط व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रह़ीमा (५) अन्नबिय्यु औला बिलमुअ्मिनी-न मिन् अन्फ़ुसिहिम् व अज़्वाजुहू उम्महातुहुम् ط व उलुल्-अर्ह़ामि बअ़्ज़ुहुम् औला बिबअ़्ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि मिनल्-मुअ्मिनी-न वलमुहाजिरी-न इल्ला अन् तफ़्-अ़लू इला औलिया-इकुम् मअ़्-रूफ़न् ط का-न ज़ालि-क फ़िल्किताबि मस्तूरा (६) व इज़् अ-ख़ज़्ना मिनन्नबिय्यी-न मीसाक़हुम् व मिन-क व मिन् नूहि़व्-व इब्राही-म व मूसा व अ़ीसब्नि मर्य-म ص व अ-ख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ल لا (७) लियस्-अलस्-सादिक़ी-न अ़न् सिद्क़िहिम् ج व अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन् अलीमा ★ (८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ़्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् जाअत्कुम् जुनूदुन् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीह़ंव जुनूदल्लम् तरौहा ط व कानल्लाहु बिमा तअ़्-मलू-न बसीरा ج (९) इज़् जाऊकुम् मिन् फ़ौक़िकुम् व मिन् अस्-फ़-ल मिन्कुम् व इज़् ज़ाग़तिल्-अब्सारु व ब-ल-ग़तिल्-क़ुलूबुल्-ह़नाजि-र व तज़ुन्नू-न बिल्लाहिज़्ज़ुनूना (१०) हुनालिकब्तुलियल्-मुअ्मिनू-न व ज़ुल्ज़िलू ज़िल्ज़ालन् शदीदा (११)

الاحزاب ٣٣ ٣٣٤ اتل ما اوحی ٢١

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ مَا
جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰۗـِٔيْ
تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۗءَكُمْ اَبْنَاۗءَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ
بِاَفْوَاهِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَاۗىِٕهِمْ
هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَاۗءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ
مَوَالِيْكُمْ ۭ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ
قُلُوْبُكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ
اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ
فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى
اَوْلِيٰۗـىِٕكُمْ مَّعْرُوْفًا ۭ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا
مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى
ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ
صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَاۗءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا
لَّمْ تَرَوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝ اِذْ جَاۗءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ
وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ
وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا

منزل ٥

★ रु. १/१७ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़बरदार है। (२) और ख़ुदा पर भरोसा रखना और ख़ुदा ही कार-साज़ काफ़ी है। (३) ख़ुदा ने किसी आदमी के पहलू में दो दिल नहीं बनाये और न तुम्हारी औरतों को, जिन को तुम मां कह बैठते हो, तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे लय-पालकों को, तुम्हारे बेटे बनाया।[1] ये सब तुम्हारे मुंह की बातें हैं और ख़ुदा तो सच्ची बात फ़रमाता है और वही सीधा रास्ता दिखाता है। (४) मोमिनो! लय-पालकों को उन के (असली) बापों के नाम से पुकारा करो कि ख़ुदा के नज़दीक यही बात दुरुस्त है। अगर तुम को उन के बापों के नाम मालूम न हों, तो दीन में वे तुम्हारे भाई और दोस्त हैं और जो बात तुम से ग़लती से हो गयी हो, उस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं, लेकिन जो दिली इरादे से करो (उस पर पकड़ है) और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) पैग़म्बर मोमिनों पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखते हैं और पैग़म्बर की बीबियां उनकी माएं हैं और रिश्तेदार आपस में अल्लाह की किताब के मुताबिक़ मुसलमानों और मुहाजिरों से एक दूसरे (के तर्के) के ज़्यादा हक़दार हैं, मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से एहसान करना चाहो। यह हुक्म किताब (यानी क़ुरआन) में लिख दिया गया है। (६) और जब हमने पैग़म्बरों से अह्द लिया और तुम से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से और अह्द भी उन से पक्का लिया, (७) ताकि सच कहने वालों से उन की सच्चाई के बारे में मालूम करे और उसने काफ़िरों के लिए दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (८) ★

मोमिनो! ख़ुदा की उस मेहरबानी को याद करो, जो (उस ने) तुम पर (उस वक़्त) की, जब फ़ौजें तुम पर (हमला करने को) आयीं, तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसे लश्कर (नाज़िल किए), जिन को तुम देख नहीं सकते थे और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा उन को देख रहा है। (९) जब वे तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ़ से तुम पर (चढ़) आए और जब आंखें फिर गयीं और दिल (मारे दहशत के) गलों तक पहुंच गये और तुम ख़ुदा के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे। (१०) वहां मोमिन आज़माए गए और सख़्त तौर पर हिलाए गए। (११) और जब मुनाफ़िक़

१. यानी न बीवी मां कह देने से मां हो जाती है, न लयपालक असली बेटे के हुक्म में होता है।

★रु. १/१७ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुम्मा व-अ़-द-नल्लाहु
व रसूलुहू इल्ला ग़ुरूरा (१२) व इज़् क़ालत्ताइ-फ़-तुम् - मिन्हुम्
या अह्-ल यस्रि-ब ला मुक़ा-म लकुम् फ़र्जिअू व यस्तअ्जिनु फ़रीक़ुम्-मिन्हुमुन्-
नबिय-य यक़ूलू - न इन्-न बुयूतना औ़रतुन् व मा हि-य बिऔ़रतिन्
इंय्युरीदू-न इल्ला फ़िरारा (१३) व लौ
दुख़िलत् अ़लैहिम् मिन् अक़्तारिहा सुम्-म
सुइलुल्-फ़ित्-न-त लआतौहा व मा त-लब्बसू
बिहा इल्ला यसीरा (१४) व ल-क़द्
कानू आ़हदुल्ला-ह मिन् क़ब्लु ला युवल्लूनल्-
अद्बा-र व का-न अ़ह्दुल्लाहि मस्अूला
(१५) क़ुल्लंय्यन्फ़-अ़ - कुमुल्-फ़िरारु इन्
फ़रर्तुम् मिनल्मौति अविल्क़त्लि व इज़ल्ला
तुमत्तअू-न इल्ला क़लीला (१६) क़ुल्
मन् ज़ल्लज़ी यअ़्सिमुकुम् मिनल्लाहि इन्
अरा-द बिकुम् सूअन् औ अरा-द बिकुम्
रह़्-म-तन् व ला यजिदू-न लहुम् - मिन्
दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (१७)

اقل مآ اوحی ٢١ ٣٣٥ الاحزاب ٣٣

زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝١١ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ
مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝١٢ وَإِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓأَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ
إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۛ إِنْ يُّرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝١٣ وَ مع
لَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا
تَلَبَّثُوا بِهَآ إِلَّا يَسِيرًا ۝١٤ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ
الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْئُولًا ۝١٥ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ
إِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝١٦
قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوٓءًا
أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّ
لَا نَصِيرًا ۝١٧ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِينَ لِإِخْوٰنِهِمْ
هَلُمَّ إِلَيْنَا ۚ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝١٨ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا
جَآءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي
يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ
أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللّٰهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ
ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ۝١٩ يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۚ وَإِنْ يَّأْتِ
الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَآئِكُمْ ۖ وَ

منزل ٥

क़द् यअ़्लमुल्लाहुल्-मुअ़व्विक़ी-न मिन्कुम् वल्क़ाइली-न लिइख़्वानिहिम् हलुम्-म
इलैना व ला यअ्तूनल्-बअ्-स इल्ला क़लीला (१८) अशिह़्-ह़ - तन्
अ़लैकुम् फ़-इज़ा जा-अल्ख़ौफ़ु रऐ - तहुम् यन्ज़ुरू - न इलै - क तदूरु
अअ़्-युनुहुम् कल्लज़ी युग़्शा अ़लैहि मिनल्मौति फ़-इज़ा ज़-ह - बल्ख़ौफ़ु
स-लक़ूकुम् बि-अल्सिनतिन् हिदादिन् अशिह़्-ह़-तन् अ़लल्ख़ैरि उलाइ-क लम् युअ्मिनू
फ़-अह़्-ब-तल्लाहु अअ़्-मालहुम् व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (१९) यह़्-
सबूनल्-अह़्ज़ा-ब लम् यज़्-हबू व इंय्यअ्तिल्-अह़्ज़ाबु यवद्दू लौ अन्नहुम् बादू-न फ़िल्-
अअ़्-राबि यस्-अलू-न अ़न् अम्बा-इकुम् व लौ कानू फ़ीकुम् मा क़ातलू इल्ला क़लीला ★ (२०)

∴ मु. अ़ि मु ता ख. १० ★रु. २/१८ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कहने लगे कि ख़ुदा और उसके रसूल ने तो हम से सिर्फ़ धोखे का वायदा किया था। (१२) और जब उन में से एक जमाअत कहती थी कि ऐ मदीना वालो! (यहां) तुम्हारे (ठहरने की) जगह नहीं, तो लौट चलो और एक गिरोह उन में से पैग़म्बर से इजाज़त मांगने और कहने लगा कि हमारे घर खुले पड़े हैं, ∴हालांकि वे खुले नहीं थे,∴ वे तो सिर्फ़ भागना चाहते थे। (१३) और अगर फ़ौजें मदीने के चारों तरफ़ से उन पर आ दाखिल हों, फिर उन से ख़ाना जंगी के लिए कहा जाए, तो (फ़ौरन) करने लगें और इसके लिए बहुत कम ठहरें। (१४) हालांकि पहले ख़ुदा से इक़रार कर चुके थे कि पीठ नहीं फेरेंगे और ख़ुदा से (जो) इक़रार (किया जाता है, उस) की ज़रूर पूछ-ताछ होगी। (१५) कह दो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो, तो भागना तुम को फ़ायदा नहीं देगा और उस वक़्त तुम बहुत ही कम फ़ायदा उठाओगे। (१६) कह दो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ बुराई का इरादा करे, तो कौन तुम को उससे बचा सकता है या अगर तुम पर मेहरबानी करनी चाहे, (तो कौन उसको हटा सकता है?) और ये लोग ख़ुदा के सिवा किसी को न अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार। (१७) ख़ुदा तुम में से उन लोगों को भी जानता है, जो (लोगों को) मना करते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और लड़ाई में नहीं आते, मगर कम। (१८) (यह इस लिए कि) तुम्हारे बारे में बुख़्ल करते हैं। फिर जब डर (का वक़्त) आए तो तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं (और) उनकी आंखें (उसी तरह) फिर रही हैं, जैसे किसी को मौत से ग़शी आ रही हो। फिर जब डर जाता रहे, तो तेज़ ज़ुबानों के साथ तुम्हारे बारे में ज़ुबानदराज़ी करें और माल में बुख़्ल करें। ये लोग (हक़ीक़त में) ईमान लाए ही न थे, तो ख़ुदा ने उन के आमाल बर्बाद कर दिए और यह ख़ुदा को आसान था। (१९) (डर की वजह से) ख़्याल करते हैं कि फ़ौजें नहीं गयीं और अगर लश्कर आ जाएं तो तमन्ना करें कि (काश!) गंवारों में जा रहें (और) तुम्हारी ख़बर पूछा करें और अगर तुम्हारे दर्मियान हों, तो लड़ाई न करें, मगर कम। (२०) ★

∴मु. अि. मु ता ख़. १० ★रु. २/१८ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ल-क़द् का-न लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्-वतुन् ह़-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह
वल्-यौमल्-आख़ि-र व ज-क-रल्ला-ह कसीरा ط (२१) व लम्मा र-अल्-मुअ्मिनूनल्-
अह़्ज़ा-ब لا क़ालू हाज़ा मा व-अ़-द-नल्लाहु व रसूलुहू व
स़-द-क़ल्लाहु व रसूलुहू ز व मा ज़ादहुम् इल्ला ईमानंव्-व तस्लीमा ط (२२)
मिनल्-मुअ्मिनी-न रिजालुन् स़-दक़ू मा
आ़हदुल्ला-ह अ़लैहि ج फ़मिन्हुम् मन्
क़ज़ा नह़्-बहू व मिन्हुम् मंय्यन्तज़िरु صلے
व मा बद्दलू तब्दीलल् لا - (२३)
-लियज्ज़ियल्लाहुस्-स़ादिक़ी-न बिसि़द्क़िहिम्
व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न इन् शा-अ औ
यतू-ब अ़लैहिम् ط इन्नल्ला-ह का-न
ग़फ़ूरर्रही़मा ج (२४) व रद्-दल्लाहुल्-लज़ी-न
क-फ़रू बिग़ैज़िहिम् लम् यनालू ख़ैरन् ط
व क-फ़ल्लाहुल्-मुअ्मिनीनल्-क़िता-ल ط
व कानल्लाहु क़विय्यन् अ़ज़ीज़ा ج (२५)
व अन्ज़-लल्लज़ी-न ज़ा-हरूहुम् मिन् अह़्लिल्-
किताबि मिन् स़यासीहिम् व क़-ज़-फ़ फ़ी
क़ुलूबिहिमुर्-रुअ्-ब फ़रीक़न् तक़्तुलू-न व तअ्सिरू-न फ़रीक़ा ج (२६) व
औ-र-सकुम् अर्ज़हुम् व दियारहुम् व अम्वा-लहुम् व अर्ज़ल्लम् त-त़-
ऊहा ط व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा ★ (२७) या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल्
लिअज़्वाजि-क इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्-ह़यातद्दुन्या व ज़ी-न-तहा फ़-तआ़लै-न
उमत्तिअ्-कुन्-न व उसर्रिह़्कुन्-न सराह़न् जमीला (२८) व इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्ला-ह
व रसूलहू वद्दारल्-आख़ि-र-त फ़-इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्मुह़्सिनाति मिन्कुन्-न अज-रन्
अ़ज़ीमा (२९) या निसाअन्नबिय्यि मंय्यअ्ति मिन्कुन्-न बिफ़ाह़िशतिम्-मुबय्यिनतिंय्-
युज़ाअफ़् ल-हल्-अ़ज़ाबु ज़िअ्-फ़ैनि ط व का-न ज़ालि-क अ़-लल्लाहि यसीरा (३०)

لَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ۝٢٠ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ
اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝٢١
وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۡ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ۝٢٢ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝٢٣ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ
وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝٢٤ وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى
اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۝٢٥ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ
ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ
فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۝٢٦ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَــُٔوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝٢٧
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ
زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝٢٨ وَاِنْ كُنْتُنَّ
تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ
اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٢٩ يٰنِسَاۗءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ
يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝٣٠

★रु॰ ३/१९ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुमको ख़ुदा के पैग़म्बर की पैरवी (करनी) बेहतर है, (यानी) उस शख़्स की जिसे ख़ुदा (से मिलने) और क़ियामत के दिन (के आने) की उम्मीद हो और वह ख़ुदा का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करता हो। (२१) और जब मोमिनों ने (काफ़िरों के) लश्कर को देखा, तो कहने लगे, यह वही है, जिस का ख़ुदा और उस के पैग़म्बर ने हम से वायदा किया था और ख़ुदा और उस के पैग़म्बर ने सच कहा था और इससे उनका ईमान और इताअत और ज़्यादा हो गयी। (२२) मोमिनों में कितने ही ऐसे शख़्स हैं कि जो इक़रार उन्होंने ख़ुदा से किया था, उस को सच कर दिखाया, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जो अपने नज़्र से फ़ारिग़ हो गये और कुछ ऐसे हैं कि इन्तिज़ार कर रहे हैं और उन्होंने (अपने क़ौल को) ज़रा भी नहीं बदला, (२३) ताकि ख़ुदा सच्चों को उन की सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे तो अज़ाब दे या (चाहे) तो उन पर मेहरबानी करे। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२४) और जो काफ़िर थे, उनको ख़ुदा ने फेर दिया। वे अपने ग़ुस्से में (भरे हुए थे), कुछ भलाई हासिल न कर सके और ख़ुदा मोमिनों को लड़ाई के बारे में काफ़ी हुआ और ख़ुदा ताक़तवर और ज़बरदस्त है। (२५) और अह्ले किताब में से, जिन्होंने उन की मदद की थी, उन को उनके क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में दहशत डाल दी, तो कितनों को तुम क़त्ल कर देते थे और कितनों को क़ैद कर लेते थे। (२६) और उन की ज़मीन और उनके घरों और उन के माल का और उस ज़मीन का, जिसमें तुमने पांव भी नहीं रखा था, तुम को वारिस बना दिया और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२७) ★

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियों से कह दो, अगर तुम दुनिया की जिंदगी और उसकी ज़ीनत व आराइश चाहती हो, तो आओ, मैं तुम्हें माल दूं और अच्छी तरह से रुख़्सत कर दूं, (२८) और अगर तुम ख़ुदा और उसके पैग़म्बर और आक़िबत के घर (यानी बहिश्त) की तलब रखती हो, तो तुम में जो, नेकी करने वाली हैं, उनके लिए ख़ुदा ने बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (२९) ऐ पैग़म्बर की बीवियो ! तुम में से जो कोई खुली ना-शाइस्ता हरकत करेगी, उस को दोगुनी सज़ा दी

★रु. ३/१९ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बाईसवां पारः व मंय्यक़्नुत

सूरतुल्-अह्ज़ाबि आयात ३१ से ७३

व मंय्यक़्-नुत् मिन्कुन्-न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ्-मल् सालिह़न् नुअ्-तिहा अज्-रहा
मर्रतैनिॐ व अअ्-तद्ना लहा रिज़्-क़न् करीमा (३१) यानिसा-अन्नबिय्यि लस्तुन्-न
क-अ-ह़दिम्-मिनन्निसाइ इनित्तक़ैतुन्-न फ़ ला तख़-ज़अ्-न बिलक़ौलि फ़-यत़्म-अल्लज़ी
फ़ी क़ल्-बिही म-र-ज़ुंव्-व क़ुल्-न क़ौलम्-मअ्-रूफ़ा (३२) व क़र्-न फ़ी
बुयूतिकुन्-न व ला त-बर्रज्-न त-बर्रुजल्-
जाहिलिय्यतिल्-ऊला व अक़िम्-नस्सला-त व
आतीनज़्ज़का-त व अतिअ्-नल्लाह व रसूलहू
इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़्-हि-ब अन्कुमुर्रिज-स
अह-लल्-बैति व युतह-हि-रकुम् तत्-हीरा
(३३) वज़्कुर्-न मा युत्ला फ़ी बुयूतिकुन्-न
मिन् आयातिल्लाहि वल्-हिक्मति
इन्नल्ला-ह का-न लतीफ़न् ख़बीरा★(३४)
इन्नल्-मुस्लिमी-न वल्मुस्-लिमाति
वल्मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति वल्क़ानिती-न
वल्क़ानिताति वस्सादिक़ी-न वस्सादिक़ाति
वस्साबिरी-न वस्साबिराति वल्-ख़ाशिई-न
वल्-ख़ाशिआति वल्-मु-त-सद्दिक़ी-न वल्-
मु-त-सद्दिक़ाति वस्सा-इमी-न वस्सा-इमाति वल्-ह़ाफ़िज़ी-न फ़ुरू-जहुम् वल्-
ह़ाफ़िज़ाति वज़्ज़ाकिरीनल्ला-ह कसीरंव्वज़्ज़ाकिराति अ-अद्-दल्लाहु लहुम्
मग़्-फ़ि-र-तंव्-व अज्-रन् अज़ीमा (३५) व मा का-न लिमुअ्मिनिंव्-व
ला मुअ्मिनतिन् इज़ा क़-ज़ल्लाहु व रसूलुहू अम्-रन् अंय्यकू-न लहुमुल्-ख़ि-य-रतु मिन्
अम्रिहिम् व मंय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-मुबीना (३६)

الاحزاب ٣٣ ٣٣٨ ومن يقنت ٢٢

ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها اجرها
مرتين واعتدنا لها رزقا كريما ۝ ينساء النبي لستن كاحد
من النساء ان اتقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذي في
قلبه مرض وقلن قولا معروفا ۝ وقرن في بيوتكن ولا
تبرجن تبرج الجاهلية الاولى واقمن الصلوة واتين
الزكوة واطعن الله ورسوله انما يريد الله ليذهب عنكم
الرجس اهل البيت ويطهركم تطهيرا ۝ واذكرن ما يتلى
في بيوتكن من ايت الله والحكمة ان الله كان لطيفا
خبيرا ۝ ان المسلمين والمسلمت والمؤمنين والمؤمنت
والقنتين والقنتت والصدقين والصدقت والصبرين والصبرت
والخشعين والخشعت والمتصدقين والمتصدقت والصائمين
والصئمت والحفظين فروجهم والحفظت والذكرين الله
كثيرا والذكرت اعد الله لهم مغفرة واجرا عظيما ۝ وما
كان لمؤمن ولا مؤمنة اذا قضى الله ورسوله امرا ان
يكون لهم الخيرة من امرهم ومن يعص الله ورسوله فقد
ضل ضللا مبينا ۝ واذ تقول للذي انعم الله عليه وانعمت
عليه امسك عليك زوجك واتق الله وتخفي في نفسك ما الله

منزل

★रु. ४/१ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जाएगी और यह (बात) ख़ुदा को आसान है। (३०) और जो तुम में से ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदार रहेगी और नेक अमल करेगी, उस को हम दोगुना सवाब देंगे और उसके लिए हम ने इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है। (३१) ऐ पैग़म्बर की बीवियो ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गार रहना चाहती हो तो (किसी अजनबी शख़्स से) नर्म-नर्म बातें न किया करो, ताकि वह शख़्स जिसके दिल में किसी तरह का मर्ज़ है, कोई उम्मीद (न) पैदा कर ले और (उन में) दस्तूर के मुताबिक़ बात किया करो। (३२) और अपने घरों में ठहरी रहो और जिस तरह (पहले) जाहिलियत (के दिनों) में इज़्हारे जमाल करती थीं, उस तरह ज़ीनत न दिखाओ और नमाज़ पढ़ती रहो और ज़कात देती रहो और ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करती रहो। ऐ (पैग़म्बर के) अह्ले बैत ! ख़ुदा चाहता है कि तुम से ना पाकी (का मैल-कुचैल) दूर कर दे और तुम्हें बिल्कुल पाक-साफ़ कर दे। (३३) और तुम्हारे घरों में जो ख़ुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिक्मत (की बातें सुनायी जाती हैं) उन को याद रखो। बेशक ख़ुदा लतीफ़ और बा-ख़बर है। (३४) ★

(जो लोग ख़ुदा के आगे इताअत का सर झुकाने वाले हैं, यानी) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें और फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें और रास्तबाज़ (सच्चे) मर्द और रास्तबाज़ औरतें और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और ख़ुशूअ करने वाले मर्द और ख़ुशूअ करने वाली औरतें और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें और रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और ख़ुदा को ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाले मर्द और ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाली औरतें, कुछ शक नहीं कि उनके लिए ख़ुदा ने बख़्शिश और बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (३५) और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को हक़ नहीं है कि जब ख़ुदा और उस का रसूल कोई अम्र मुक़र्रर कर दे, तो वे इस काम में अपना भी कुछ अख़्तियार समझें और जो कोई ख़ुदा और उस के रसूल की ना-फ़रमानी करे, वह खुला गुमराह

★रु. ४/१ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् तक़ूलु लिल्लज़ी अन्-अ-मल्लाहु अ़लैहि व अन्अम्-त अ़लैहि अम्सिक्
अ़लै-क ज़ौज-क वत्तक़िल्ला-ह व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सि-क मल्लाहु मुब्दीहि व
तख़्शन्ना-स ۚ वल्लाहु अ-ह़क़्क़ु अन् तख़्शाहु ط फ़-लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम् - मिन्हा
व-त़्-रन् ज़व्वज्ना-क-हा लिकैला यकू-न अ़लल् - मुअ्मिनी-न ह़र-जुन् फ़ी
अज़्वाजि अद्अियाइहिम् इज़ा क़ज़ौ
मिन्हुन्-न व-त़्-रन् व का-न अम्रुल्लाहि
मफ़्अूला (३७) मा का-न अ़-लन्नबिय्यि
मिन् ह़-रजित् फ़ीमा फ़-र-ज़ल्लाहु लहू ط
सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु ط
व का-न अम्-रुल्लाहि क़-द्-रम् - मक़्दू-र ۨ
नि-(३८)-ल्लज़ी-न युबल्लिग़ू-न रिसालातिल्लाहि
व यख़्शौनहू व ला यख़्शौ-न अ-ह़-दन्
इल्लल्ला - ह ط व कफ़ा बिल्लाहि ह़सीबा
(३९) मा का-न मुह़म्मदुन् अबा अ-ह़दिम्-
मिर्रिजालिकुम् व लाकिर्रसूलल्लाहि व
ख़ातमन्नबिय्यी-न ط व कानल्लाहु बिकुल्लि
शैइन् अ़लीमा★(४०) या अय्युहल्लज़ी-न

ومن يقنت ٢٢ ٣٣٨ الاحزاب ٣٣

مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۖ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ
مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ
أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ
عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ﴿٣٨﴾ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ
رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
حَسِيبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَٰكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَ
خَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِي
يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ
بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ
أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَ
نَذِيرًا ﴿٤٥﴾ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ
بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٤٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ
فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۖ فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا

ع

منزل

आमनुज़्कुरुल्ला-ह ज़िक्रन् कसीरंव- ۙ (४१) व सब्बिह़ूहु बुक्रतंव्-व असीला
(४२) हुवल्लज़ी युसल्ली अ़लैकुम् व मलाइकतुहू लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति
इलन्नूरि ط व का-न बिल्मुअ्मिनी-न रह़ीमा (४३) तह़िय्यतुहुम् यौ-म यल्क़ौनहू सलामुन्
व अ-अ़द्-द लहुम् अज्रन् करीमा (४४) या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व
मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा ۙ (४५) व दाअियन् इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम्-मुनीरा
(४६) व बश्शिरिल्-मुअ्मिनी-न बिअन्-न लहुम् मिनल्लाहि फ़ज़्-लन् कबीरा (४७)
व ला तुतिअिल्-काफ़िरी-न वल्-मुनाफ़िक़ी-न व दअ् अज़ाहुम् व त-वक्कल् अ़लल्लाहि ط
व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (४८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा न-कह़्तुमुल्-मुअ्मि-
नाति सुम्-म त़ल्लक़्तुमू-हुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न फ़मा लकुम् अ़लैहिन्-न मिन्
इद्दतिन् तअ्-तद्दूनहा ۚ फ़मत्तिअूहुन्-न व सर्रिहूहुन्-न सराह़न् जमीला (४९)

★रु. ५/२ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हो गया।[1] (३६) और जब तुम उस शख़्स से जिस पर ख़ुदा ने एहसान किया और तुमने भी एहसान किया, यह कहते थे कि अपनी बीवी को अपने पास रहने दो और ख़ुदा से डरो और तुम अपने दिल में, वह बात छिपाते थे, जिस को ख़ुदा ज़ाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे, हालांकि ख़ुदा ही इसका ज़्यादा हक़दार है कि उस से डरो। फिर जब ज़ैद ने उस से (कोई) हाजत (मुताल्लिक़) न रखी (यानी उसको तलाक़ दे दी), तो हम ने तुम से उस का निकाह कर दिया, ताकि मोमिनों के लिए उन के मुंह बोले बेटों की बीवियों (के साथ निकाह करने के बारे) में जब वह उन से (अपनी) हाजत (मुताल्लिक़) न रखें, (यानी तलाक़ दे दें), कुछ तंगी न रहे और ख़ुदा का हुक्म वाक़ेअ हो कर रहने वाला था। (३७) पैग़म्बर पर इस काम में कुछ तंगी नहीं, जो ख़ुदा ने उन के लिए मुक़र्रर कर दिया, और जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, उनमें भी ख़ुदा का यही दस्तूर रहा है और ख़ुदा का हुक्म ठहर चुका था, (३८) और जो ख़ुदा के पैग़ाम (ज्यों के त्यों) पहुंचाते और उस से डरते और ख़ुदा के सिवा किसी से नहीं डरते थे और ख़ुदा ही हिसाब करने को काफ़ी है। (३९) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के वालिद नहीं हैं, बल्कि ख़ुदा के पैग़म्बर और नबियों (की नुबूवत) की मुहर (यानी उस को ख़त्म कर देने वाले हैं) और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (४०)★

ऐ ईमान वालो! ख़ुदा का बहुत ज़िक्र किया करो। (४१) और सुबह और शाम उसकी पाकी बयान करते रहो। (४२) वही तो है, जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते भी, ताकि तुम को अंधेरों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाए और ख़ुदा मोमिनों पर मेहरबान है। (४३) जिस दिन वह उन से मिलेंगे उन का तोहफ़ा (ख़ुदा की तरफ़ से) सलाम होगा और उस ने उनके लिए बड़ा सवाब तैयार कर रखा है। (४४) ऐ पैग़म्बर! हमने तुम को गवाही देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, (४५) और ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाला और रोशन चिराग़। (४६) और मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए ख़ुदा की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। (४७) और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानना और न उनके तक्लीफ़ देने पर नज़र करना और ख़ुदा पर भरोसा रखना और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (४८) मोमिनो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह कर के उन को हाथ लगाने (यानी उन के पास जाने) से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम को कुछ अख़्तियार नहीं कि उन से इद्दत पूरी कराओ। उन को कुछ फ़ायदा (यानी ख़र्च) दे कर अच्छी

---

१. इस आयत में, जिन मियां-बीवी का ज़िक्र है, वह ज़ैद और ज़ैनब रज़ि० हैं, चुनांचे ज़ैद रज़ि० के नाम का अगली आयत में खुले तौर पर भी ज़िक्र आया है। दोनों आयतों में जिस वाक़िए की तरफ़ इशारा है, वह इस तरह पर है कि ज़ैनब जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटी थीं और ज़ाहिर है कि एक ऊंचे ख़ानदान की लड़की थीं। ज़ैद भी एक शरीफ़ अरब थे जो बचपन में पकड़े गये थे और जवानी के क़रीब, गुलामी की हालत में मक्के में आ कर बेचे गये। आंहज़रत ने उन को ख़रीद लिया और आज़ाद कर के अपने यहां रखा। ज़ैद रज़ि० में, इस के अलावा कि उन पर गुलाम आज़ाद का लफ़्ज़ बोला जाता हो और कोई बुराई न थी और वह आंहज़रत सल्ल० की निगाह में बहुत इज़्ज़त रखते थे, यहां तक कि आप ने उन को लयपालक बना लिया। आप जानते थे कि गुलाम हो कर बेचे जाने से असली शराफ़त में फ़र्क़ नहीं आ सकता—

हज़ार बार जो यूसुफ़ बिके गुलाम नहीं।

तो आप ने इरादा फ़रमाया कि उन का ज़ैनब के साथ निकाह कर दें, ताकि आप के ख़ानदान में उन की इज़्ज़त ज़्यादा हो, साथ ही यह भी मक़्सूद था कि गुलाम आज़ाद इस्लाम मज़हब में छोटे न समझे जाएं और उन की

(शेष पृष्ठ ५८५ पर)

★रु. ५/२ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अह्लल्ना ल-क अज़्वा-ज-कल्लाती आतै-त उजूरहुन्-न व मा
म-ल-कत् यमीनु-क मिम्मा अफ़ा-अल्लाहु अ़लै-क व बनाति अ़म्मि-क व बनाति
अ़म्माति-क व बनाति ख़ालि-क व बनाति ख़ालातिकल्लाती हाजर्-न म-अ़-क ۙ वम्-
र-अतम् - मुअ्मि-न-तन् इं व्व-ह-बत् नफ़्सहा लिन्नबिय्यि इन् अरादन्नबिय्यु
अंय्यस्तन्कि-हहा ق ख़ालि-स-तल्ल - क मिन्
दूनिल् - मुअ्मिनी-न ط क़द् अ़लिम्ना मा
फ़-रज़्ना अ़लैहिम् फ़ी अज़्वाजिहिम् व मा
म-ल-कत् ऐमानुहुम् लिकैला यकू-न अ़लै-क
ह-र-जुन् ط व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् - रहीमा
(५०) तुर्जी मन् तशाउ मिन्हुन्-न व
तुअ्वी इलै-क मन् तशाउ ط व मनिब्तग़ै-त
मिम्मन् अ़-ज़ल-त फ़ला जुना-ह अ़लै-क ط
ज़ालि-क अद्ना अन्तक़र्-र अअ्-युनु-हुन्-न व
ला यह्ज़न्-न व यर्ज़ैन-न बिमा आतैतहुन्-न
कुल्लुहुन्-न ط वल्लाहु यअ् - लमु मा फ़ी
क़ुलूबिकुम् ط व कानल्लाहु अ़लीमन्
हलीमा (५१) ला यहिल्लु ल-कन्निसाउ
मिम्बअ्-दु व ला अन् त-बद्-द-ल बिहिन-न मिन्

جَمِيلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ
وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ
عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَاَةً
مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ق
خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ط قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ
فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ط
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ
مَنْ تَشَآءُ ط وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ط ذٰلِكَ
اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ
كُلُّهُنَّ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝
لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ
وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى
ع كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ
اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ
فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ط اِنَّ ذٰلِكُمْ
كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ز وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ط وَاِذَا
سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ط ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ

अज़्-वाजिव्-व लौ अअ्-ज-ब-क हुस्नुहुन्-न इल्ला मा म-ल-कत् यमीनु-क ط व कानल्-
लाहु अ़ला कुल्लि शैइर्-रक़ीबा ★ (५२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू
बुयूतन्नबिय्यि इल्ला अंय्युअ्-ज-न लकुम् इला तआमिन् ग़ै-र नाज़िरी-न इनाहु ۙ व
लाकिन् इज़ा दुईतुम् फ़द्-ख़ुलू फ़इज़ा तअिम्तुम् फ़न्तशिरू व ला मुस्तअ्-निसी-न
लि-हदीसिन् ط इन्-न ज़ालिकुम् का-न युअ्ज़िन्नबिय-य फ़-यस्तह्यी मिन्कुम् ۙ वल्लाहु
ला यस्तह्यी मिनल् - हक़्क़ि ط व इज़ा स-अल्तुमूहुन्-न मताअ़न् फ़स्अलू -
हुन् - न मिंव्वराइ हिजाबिन् ط ज़ालिकुम् अत्हरु लिक़ुलूबि - कुम् व
क़ुलूबिहिन्-न ط व मा का-न लकुम् अन् तुअ्ज़ू रसूलल्लाहि व ला अन् तन्किहू
अज़्वाजहू मिम्बअ्-दिही अ-ब-दन् ط इन्-न ज़ालिकुम् का-न अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीमा (५३)

★रु. ६/३ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तरह से रुख़्सत कर दो। (४९) ऐ पैग़म्बर! हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां, जिन को तुम ने उन के मह्र दे दिए हैं, हलाल कर दी हैं और तुम्हारी लौंडियां, जो ख़ुदा ने तुम को (काफ़िरों से ग़नीमत के माल के तौर पर) दिलवायी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और 'तुम्हारी फूफियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां, जो तुम्हारे साथ वतन छोड़ कर आयी हैं, सब हलाल हैं और कोई मोमिन औरत अगर अपने आप पैग़म्बर को बख़्श दे (यानी मह्र लेने के बग़ैर निकाह में आना चाहे) बशर्ते कि पैग़म्बर भी उस से निकाह करना चाहें, (वह भी हलाल है, लेकिन यह इजाज़त) (ऐ मुहम्मद!) ख़ास तुम ही को है, सब मुसलमानों को नहीं, हम ने उन की बीवियों और लौंडियों के बारे में जो (मह्र, अदा करने के लिए ज़रूरी) मुक़र्रर कर दिया है, हम को मालूम है (यह) इस लिए (किया गया है) कि तुम पर किसी तरह की तंगी न रहे और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५०) (और तुम को यह भी अख़्तियार है कि) जिस बीवी को चाहो, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो और जिसको तुम ने अलाहिदा कर दिया हो, अगर उस को फिर अपने पास तलब कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। यह (इजाज़त) इस लिए है कि उन की आंखें ठंडी रहें और वे ग़मनाक न हों और जो कुछ तुम उनको दो, उसे लेकर सब ख़ुश रहें और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, ख़ुदा उसे जानता है और ख़ुदा जानने वाला (और) बुर्दबार (हलीम) है। (५१) (ऐ पैग़म्बर!) इन के सिवा और औरतें तुम को जायज़ नहीं और न यह कि इन बीवियों को छोड़ कर और बीवियां कर लो, चाहे उन का हुस्न तुम को (कैसा ही) अच्छा लगे, मगर वह, जो तुम्हारे हाथ का माल है, (यानी लौंडियों के बारे में) तुम को अख़्तियार है और ख़ुदा हर चीज़ पर निगाह रखता है। (५२) ★

मोमिनो! पैग़म्बर के घरों में न जाया करो, मगर इस सूरत में कि तुम को खाने के लिए इजाज़त दी जाए और उस के पकने का इन्तिज़ार भी न करना पड़े, लेकिन जब तुम्हारी दावत की जाए तो जाओ और जब खाना खा चुको, तो चल दो और बातों में जी लगा कर न बैठ रहो। यह बात पैग़म्बर को तक्लीफ़ देती थी और वह तुम से शर्म करते थे, (और कहते नहीं थे), लेकिन ख़ुदा सच्ची बात के कहने से शर्म नहीं करता और जब पैग़म्बर की बीवियों से कोई सामान मांगो, तो पर्दे के बाहर मांगो। ये तुम्हारे और उन के दोनों के दिलों के लिए बहुत पाकीज़गी की बात है और तुम को यह मुनासिब नहीं कि पैग़म्बरे ख़ुदा को तक्लीफ़ दो और न यह कि उन की बीवियों से कभी उनके बाद निकाह करो। बेशक यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ा (गुनाह का काम) है। (५३) अगर तुम

(पृष्ठ ६७३ का शेष)

इज़्ज़त भी आज़ादों की तरह ही की जाए यानी आज़ाद और ग़ुलाम में जो अरब वाले फ़र्क़ करते हैं, वह मुसलमानों में न हो, चुनांचे इन ही मामलों को सामने रख कर आप ने ज़ैद का निकाह ज़ैनब से कर दिया। ज़ैनब आख़िर औरत थीं और पुराने ख़्याल उन के दिल में बैठे हुए थे, उन्हों ने हमेशा ज़ैद से अपने को अफ़्ज़ल समझा और उन को अपने से कमतर समझा। ये बातें ऐसी थीं कि मियां-बीवी में मुवफ़क़त पैदा नहीं होने देती थीं। आख़िर ज़ैद इस बात पर मजबूर हो गये कि ज़ैनब को तलाक़ दे दें। यह हालत देख कर आंहज़रत को बहुत फ़िक्र हो गया। आप दिल से तो यही बात चाहते थे कि ज़ैनब रज़ि० ज़ैद रज़ि० ही की बीवी रहें और जिस रिश्ते से एक बड़ी इस्लाह मक़्सूद थी, वह बाक़ी रहे। इसी लिए आप ज़ैद को समझाते थे कि मियां ख़ुदा का ख़ौफ़ करो और ज़ैनब को तलाक़ देने से बाज़ रहो, लेकिन आप को यह भी डर था कि लोग कहेंगे, कैसा बे-जोड़ रिश्ता करा दिया था,

(शेष पृष्ठ ६७७ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन् तुब्दू शैअन् औ तुख़्फ़ूहु फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अलीमा (५४)
ला जुना-ह अलैहिन्-न फ़ी आबाइहिन्-न व ला अब्नाइहिन्-न व ला इख़्वानिहिन-न
व ला अब्नाइ इख़्वानिहिन्-न व ला अब्नाइ अ-ख़-वातिहिन्-नं व
ला निसाइहिन्-न व ला मा म-ल-कत् ऐमानुहुन्-न ۶ वत्तक़ीनल्ला-ह ۶
इन्नल्ला-ह का-न अला कुल्लि शैइन् शहीदा
(५५) इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न
अलन्नबिय्यि ۶ या अय्युहल्लजी-न आमनू
सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा (५६)
इन्नल्लजी-न युअ्ज़ूनल्ला-ह व रसूलहू
ल-अ-नहुमुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति
व अ-अद्-द लहुम् अज़ाबम्-मुहीना (५७)
वल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल्-मुअ्मिनी-न वल्-
मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्त-सबू फ़-क़दिह्-त-मलू
बुह्तानंव-व इस्मम्-मुबीना ★ (५८)
या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लि-अज़्वाजि-क व
बनाति-क व निसाइल्-मुअ्मिनी-न युद्नी-न
अलैहिन-न मिन् जलाबीबिहिन-न ۶ ज़ालि-क
अद्ना अंय्युअ्-रफ़-न फ़ला युअ्ज़ै-न ۶ व कानल्लाहु ग़फ़ूर्रहीमा (५९)
लइल्लम् यन्तहिल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लजी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-
ज़ुंव्वल्-मुर्जिफ़ू-न फ़िलमदीनति ल-नुग़्रियन्न-क बिहिम् सुम्-म ला युजावि-
रू-न-क फ़ीहा इल्ला क़लीलम्-ضؕ (६०) मल्अूनी-न ۶ ∴ ऐनमा सुक़िफ़ू
उख़िज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीला (६१) सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ
मिन् क़ब्लु ۶ व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ● (६२)

الاحزاب ۳۳ ۳۴۰ ومن يقنت ۲۲

لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ
تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ
عَظِيْمًا ۝۵۳ اِنْ تُبْدُوْا شَيْئًا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝۵۴
لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَلَا
اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝۵۵
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝۵۶ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝۵۷
وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ
احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝۵۸ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ
وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ
ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۵۹
لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ
فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ۝۶۰
مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ۝۶۱ سُنَّةَ اللّٰهِ
فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝۶۲
منزل

★रु. ७/४ आ ६ ● रुबुअ् १/४ ∴ मु. अ़ि मु ता ख़.१२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसको छिपाए रखो, तो (याद रखो कि) ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (५४) औरतों पर अपने बापों से (पर्दा न करने में) कुछ गुनाह नहीं और न अपने बेटों से और न अपने भाइयों से और न अपने भतीजों से और न अपने भांजों से, न अपनी (क़िस्म की) औरतों से और न लौंडियों से और (ऐ औरतो !) ख़ुदा से डरती रहो। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (५५) ख़ुदा और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर पर दरूद भेजते हैं। मोमिनो ! तुम भी पैग़म्बर पर दरूद और सलाम भेजा करो। (५६) जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बर को रंज पहुंचाते हैं, उन पर ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में लानत करता है और उन के लिए उस ने ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (५७) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे काम (की तोहमत) से जो उन्होंने न किया हो, तक्लीफ़ दें, तो उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (५८)★

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियों और बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि (बाहर निकला करें तो) अपने (मुंहो) पर चादर लटका (कर घूंघट निकाल) लिया करें। यह बात उनके लिए पहचान (और फ़र्क़ की) वजह होगी तो कोई उन को तक्लीफ़ न देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५९) अगर मुनाफ़िक़ और वे लोग, जिन के दिलों में मर्ज़ है और जो मदीने (के शहर) में बुरी-बुरी ख़बरें उड़ाया करते हैं, (अपने किरदार से) रुकेंगे नहीं, तो हम तुम को उनके पीछे लगा देंगे, फिर वहां तुम्हारे पड़ोस में न रह सकेंगे, मगर थोड़े दिन। (६०)∴(वह भी फिटकारे हुए)∴जहां पाये गये, पकड़े गये और जान से मार डाले गये। (६१) जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, उन के बारे में भी ख़ुदा की यही आदत रही है, और तुम ख़ुदा की आदत में तब्दीली न

(पृष्ठ ६७५ का शेष)

जो क़ायम न रह सका। ख़ुदा ने फ़रमाया कि इस मामले में लोगों के डरने की क्या ज़रूरत थी, डर तो सिर्फ़ हम से चाहिए। लोगों का दस्तूर है कि सुधार के मामलों में ही तरह-तरह की बातें किया करते हैं, इस के अलावा आप को यह फ़िक्र लग गया कि अगर इन मियां-बीवी में अलहिदगी वाक़ेअ हुई, तो ज़ैनब रज़ि० के बारे में बड़ी मुश्किल पेश आएगी कि ज़ैद की बीवी बनी रहने की वजह से लोग ज़ैनब के एहतराम व अदब में कमी करेंगे और यह बात आप को मंज़ूर न थी और हो सकती भी न थी। जब आप ज़ैद रज़ि० की इज़्ज़त करते और लोगों से करानी चाहते थे, तो ज़ैनब रज़ि० की तह्क़ीर क्योंकर गवारा कर सकते। आख़िर में ज़ैद और ज़ैनब रज़ि० का ताल्लुक़ ख़त्म हो कर रहा।

इस मौक़े पर ख़ुदा को तीन और सुधार करने थे—एक यह कि इस्लाम में लयपालक का वह हक़ न समझा जाए, जो अपने बेटे का है और दोनों क़िस्म के ताल्लुक़ात में जो फ़र्क़ है, वह ज़ाहिर कर दिया जाए। दूसरे यह कि मुंह बोले लड़कों की औरतें सगे लड़कों की औरतों की तरह हराम न समझी जाएं। चुनांचे ख़ुदा के हुक्म से आंहज़रत सल्ल० ख़ुद हज़रत ज़ैनब रज़ि० से निकाह कर लिया।

लयपालक बनाना एक पुरानी रस्म है और इस्लाम ने इस को जायज़ रखा है, लेकिन लयपालक बेटों को सगे बेटों के-से हुक़ूक़ नहीं दिए और न उन की औरतों से निकाह करना सगे बेटों की औरतों के साथ निकाह करने के बराबर समझा, तीसरे यह कि ग़ुलामों की तलाक़ दी हुई औरतों की हैसियत, जिन को शरीफ़ अरब वाले अपनी बीवी बनाने से झिझकते थे, वही क़रार दी जाए जो आज़ादों की तलाक़ दी हुई औरतों का है, यानी उन से बे-झिझक निकाह कर लिया जाए और ये तीनों सुधार आंहज़रत सल्ल० ही की बरकतों वाली ज़ात से शुरू हुआ।

★रु. ७/४ आ ६∴मु. अ़ि मु त क़. १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यस्अलुकन्नासु अनिस्साअ़ति कुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व मा युद्‌री-क ल-अ़ल्लस्सा-अ-त तकूनु क़रीबा (६३) इन्नल्ला-ह ल-अ-नल्-काफ़िरी-न व अ-अ़द्-द लहुम् सअ़ीरा (६४) ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला नसीरा (६५) यौ-म तुक़ल्लबु वुजूहुहुम् फ़िन्नारि यक़ूलू-न यालैतना अतअ़्-नल्ला-ह व अतअ़्-नर्रसूला (६६) व क़ालू रब्बना इन्ना अतअ़्-ना सा-द-तना व कु-बरा-अना फ़-अ-ज़ल्लूनस्-सबीला (६७) रब्बना आतिहिम् ज़िअ़-फ़ैनि मिनल्-अ़ज़ाबि वल्-अ़न्-हुम् लअ़् - नन् कबीरा ★ (६८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न आज़ौ मूसा फ़-बर्र-अ-हुल्लाहु मिम्मा क़ालू व का - न अ़िन्दल्लाहि वजीहा (६९) या अय्युहल्लज़ी - न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व क़ूलू क़ौलन् सदीदंय- (७०) -युस्लिह् लकुम् अअ़् - मालकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनूबकुम् व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् फ़ा-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा (७१) इन्ना अ़-रज़्नल् अमान-त अ़लस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्जिबालि फ़-अबै-न अंय्यह्मिल्नहा व अश्फ़क़्-न मिन्हा व ह़-म-ल-हल्-इन्सानु इन्नहू का-न ज़लूमन् जहूलल्- (७२) -लि - युअ़ज़्ज़िबल्लाहुल् - मुनाफ़िक़ी - न वल्-मुनाफ़िक़ाति वल् - मुश्रिकी-न वल् - मुश्रिकाति व यतूबल्लाहु अ़लल्-मुअ्मिनी-न. वल् - मुअ्मिनाति व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् - रहीमा ★(७३)

ومن يقنت ٢٢ ٣٤١ سبأ ٣٤

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۗ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَمَا
يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ
وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ
لَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا
اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا
فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ
لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى
فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۗ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا
عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ
يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۗ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾
لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ
اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾
سُوْرَةُ سَبَاٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَسِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ

منزل ٥

३४ सूरतु स-बइन् ५८

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ३६३६ अक्षर, ८९६ शब्द, ५४ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व लहुल्ह़म्दु फ़िल्आख़िरति व हुवल्-हकीमुल् - ख़बीर (१)

★रु. ८/५ आ १० ★रु. ६/६ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पाओगे ● (६२) लोग तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं (कि कब आएगी?) कह दो कि इसका इल्म ख़ुदा ही को है और तुम्हें क्या मालूम है, शायद क़ियामत क़रीब ही आ गयी हो। (६३) बेशक ख़ुदा ने काफ़िरों पर लानत की है और उनके लिए (जहन्नम की) आग तैयार कर रखी है। (६४) उस में हमेशा-हमेशा रहेंगे, न किसी को दोस्त पाएंगे और न मददगार। (६५) जिस दिन उन के मुंह आग में उलटाए जाएं, कहेंगे, ऐ काश! हम ख़ुदा की फ़रमांबरदारी करते और (अल्लाह के) रसूल का हुक्म मानते। (६६) और कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमने अपने सरदारों और बड़े लोगों का कहा माना, तो उन्होंने हमको रास्ते से गुमराह कर दिया। (६७) ऐ हमारे परवरदिगार! उनको दोगुना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (६८) ★

मोमिनो! तुम उन लोगों जैसे न होना, जिन्होंने मूसा को (ऐब लगा कर) रंज पहुंचाया, तो ख़ुदा ने उन को बे-ऐब साबित किया और वह ख़ुदा के नज़दीक आबरू वाले थे। (६९) मोमिनो! ख़ुदा से डरा करो और बात सीधी कहा करो। (७०) वह तुम्हारे सब अमाल दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा, तो बेशक बड़ी मुराद पाएगा। (७१) हमने अमानत (के बोझ) को आसमानों और ज़मीन पर पेश किया तो उन्होंने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और इंसान ने उसको उठा लिया। बेशक वह ज़ालिम और जाहिल था।[1] (७२) ताकि ख़ुदा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे और ख़ुदा मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर मेहरबानी करे और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (७३) ★



३४ सूरः सबा ५८

सूरः सबा मक्की है और इस में चौवन आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को (मुनासिब) है, (जो सब चीज़ों का मालिक है, यानी) वह कि जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है और आख़िरत में भी उसी की तारीफ़

---

१. अमानत से मुराद अल्लाह तआला के अहकाम और फ़राइज़ हैं, जिन के उठाने से आसमान ने भी अपनी बे-बसी ज़ाहिर की और ज़मीन और पहाड़ों ने भी, मगर इन्सान ने अपनी ताक़त तो देखी नहीं, कहा कि मैं इस बोझ को उठाऊंगा, नादानी से उस को उठा तो लिया, लेकिन उठाते ही ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ अमल करने लगा और अल्लाह तआला की तरफ़ से गुस्से का शिकार हुआ। जब समझा कि मैं ने बड़ी नादानी की और अपने हक़ में बड़ा ज़ुल्म किया और लगा ख़ुदा से माफ़ी मांगने। इस मुट्ठी भर ख़ाक को देखो और उस की ताक़त को देखो और उस की हिम्मत को देखो। ख़ुदा की अमानत को क़ुबूला तो ज़ाहिर हो गया 'इन्नहू का-न ज़लूमन जहूला०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यअ्-लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ
व मा यअ्-रुजु फ़ीहा व हुवर्-रहीमुल्-ग़फ़ूर (२) व क़ालल्लज़ी-न
क-फ़रू ला तअ्-तीनस्साअतु क़ुल् बला व रब्बी ल-तअ्तियन्नकुम्
आलिमिल्-ग़ैबि ला यअ्-ज़ुबु अन्हु मिस्क़ालु ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व
ला फ़िल्अर्ज़ि व ला अस्ग़रु मिन् ज़ालि-क
व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम्-
मुबीनिल्- (३) -लि-यज्ज़ियल्-लज़ी-न
आमनू व अमिलुस्सालिहाति उलाइ-क
लहुम् मग़-फ़ि-रतुंव-व रिज़्क़ुन् करीम (४)
वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न
उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-मिर्रिज्ज़िन्
अलीम (५) व य-रल्लज़ी-न ऊतुल्-
अिल्मल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क
हुवल्-हक़्-क़ व यह्दी इला सिरातिल्-
अज़ीज़िल्-हमीद (६) व क़ालल्लज़ी-न
क-फ़रू हल् नदुल्लुकुम् अला रजुलिंय्युनब्बिउकुम्
इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम् कुल्-ल मुमज़्ज़क़िन्
इन्नकुम् लफ़ी ख़ल्-क़िन् जदीद (७) अफ़्तरा अलल्लाहि कज़िबन्
अम् बिही जिन्नतुन् बलिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति फ़िल्-
अज़ाबि वज़्ज़लालिल्-बअीद (८) अ-फ़-लम् यरौ इला मा बै-न ऐदीहिम् व मा
ख़ल्फ़हुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि इन् न-शअ् नख़्सिफ़् बिहिमुल्अर्-ज़
औ नुस्क़ित् अलैहिम् कि-स-फ़म्-मिनस्समाइ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल्-
लिकुल्लि अब्दिम्-मुनीब ★(९) व ल-क़द् आतैना दावू-द मिन्ना
फ़ज़्-लन् या जिबालु अव्विबी म-अहू वत्तै-र व अलन्ना लहुल्-हदीद (१०)

سپارہ ۲۲ ۳۴۲ ومن یقنت ۲۲

فِي الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ① يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ
الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ② وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ
بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ
اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۙ③ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑤ وَيَرَى الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى
صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ⑥ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى
رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ۚ⑦ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ⑧ اَفَلَمْ يَرَوْا
اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ
نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۧ⑨ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا
فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۙ⑩ اَنِ

منزل

★रु. १/७ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है और वह हिक्मत वाला (और) खबरदार है। (१) जो कुछ ज़मीन में दाखिल होता है और जो उसमें से निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो उस पर चढ़ता है, सब उसको मालूम है और वह मेहरबान (और) बख़्शने वाला है। (२) और काफ़िर कहते हैं कि (क़ियामत की) घड़ी हम पर नहीं आएगी। कह दो, क्यों नहीं (आएगी), मेरे परवरदिगार की क़सम! वह तुम पर ज़रूर आ कर रहेगी, (वह परवरदिगार) ग़ैब का जानने वाला (है), ज़र्रा भर चीज़ भी उस से छिपी नहीं, (न) आसमानों में और न ज़मीन में और कोई चीज़ उस से छोटी या बड़ी नहीं, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (३) इस लिए कि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को बदला दे। यही हैं, जिन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (४) और जिन्होंने हमारी आयतों में कोशिश की कि हमें हरा दें, उन के लिए सख़्त दर्द देने वाले अज़ाब की सज़ा है। (५) और जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वे जानते हैं कि जो (क़ुरआन) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, वह हक़ है और ग़ालिब (और) तारीफ़ के क़ाबिल (ख़ुदा) का रास्ता बताता है। (६) और काफ़िर कहते हैं कि भला हम तुम्हें ऐसा आदमी बताएं, जो तुम्हें खबर देता है कि जब तुम (मर कर) बिल्कुल पारा-पारा हो जाओगे, तो नए सिरे से पैदा होगे। (७) या तो उस ने ख़ुदा पर झूठ बांध लिया है, या उसे जुनून है। बात यह है कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह आफ़त और परले दर्जे की गुमराही में (पड़े) हैं। (८) क्या उन्होंने उस को नहीं देखा, जो उन के आगे और पीछे है यानी आसमान और ज़मीन। अगर हम चाहें, तो उनको ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें। इस में हर बन्दे के लिए, जो रुजूअ करने वाला है, एक निशानी है। (९) ★

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बरतरी बख़्शी थी। ऐ पहाड़ो! इन के साथ तस्बीह करो और परिंदों को (उन के वश में कर दिया) और उनके लिए हमने लोहे को नर्म कर दिया, (१०)

★रु. १/७ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अनिअ्-मल् साबिग़ातिव्-व क़द्दिर् फ़िस्सर्दि वअ्-मलू सालिहन्ᑲ इन्नी बिमा
तअ्-मलू-न बसीर (११) व लि-सुलैमानर्-री-ह् ग़ुदुव्वुहा शह्रुंव्-व रवाहुहा शह्रुन्ᑷ
व अ-सलना लहू अ़ैनल्क़ित्रिᑲ व मिनल्जिन्नि मंय्यअ्-मलु बै-न यदैहि बिइज़्नि
रब्बिहीᑲ व मंय्यज़िग़् मिन्हुम् अन् अम्रिना नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिस्सअ़ीर (१२)
यअ्-मलू-न लहू मा यशाउ मिम्-
महारी-ब व तमासी-ल व जिफ़ानिन् कल्जवाबि
व क़ुदूरिर्-रासियातिन्ᑲ इअ्-मलू आ-ल
दावू-द शुक्-रन्ᑲ व क़लीलुम्-मिन्
अ़िबादि-यश-शकूर (१३) फ़-लम्मा क़ज़ैना
अ़लैहिल्-मौ-त मा दल्लहुम् अ़ला मौतिही
इल्ला दाब्बतुल्-अर्ज़ि तअ्कुलु
मिन्स-अ-तहूᑷ फ़-लम्मा ख़र्-र त-बय्यनतिल्-
जिन्नु अल्लौ कानू यअ्-लमूनल्-ग़ै-ब मा लबिसू
फ़िल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीनᑲ (१४)
ल-क़द् का-न लि-स-बइन् फ़ी मस्कनिहिम्
आयतुन्ᑷ जन्नतानि अ़ंय्यमीनिव-व
शिमालिन्ᑲ कुलू मिर्रिज़्क़ि रब्बिकुम्
वश्कुरू लहूᑲ बल्दतुन् तय्यिबतुंव्-व रब्बुन् ग़फ़ूर (१५) फ़-अअ्-रज़ू फ़ अर्सल्ना
अ़लैहिम् सैलल्-अ़रिमि व बद्दल्नाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन् ख़म्-
तिंव्-व अस्लिंव-व शैइम्मिन् सिद्रिन् क़लील (१६) ज़ालि-क जज़ैना-
हुम् बिमा क-फ़रूᑲ व हल् नुजाज़ी इल्लल्-कफ़ूर (१७) व ज-अ़ल्ना
बैनहुम् व बैनल्-क़ुरल्लती बारक्ना फ़ीहा क़ुरन् ज़ाहिरतंव्-व क़द्दर्ना फ़ीहस्सै-रᑲ सीरू
फ़ीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (१८) फ़ क़ालू रब्बना बाअ़िद् बै-न
अस्फ़ारिना व ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् फ़-ज-अ़ल्नाहुम् अहादी-स व मज़्ज़क़्ना-हुम् कुल्-ल
मुमज़्ज़क़िन्ᑲ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (१९)

سبا ٣٤ ٣٤٣ ومن يقنت ٢٢

اعمل سبغت وقدر في السرد واعملوا صالحا اني بما تعملون
بصير (١١) ولسليمن الريح غدوها شهر ورواحها شهر واسلنا
له عين القطر ومن الجن من يعمل بين يديه باذن ربه
ومن يزغ منهم عن امرنا نذقه من عذاب السعير (١٢) يعملون
له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان كالجواب وقدور
رسيت اعملوا ال داود شكرا وقليل من عبادي الشكور (١٣)
فلما قضينا عليه الموت ما دلهم على موته الا دابة الارض
تاكل منساته فلما خر تبينت الجن ان لو كانوا يعلمون
الغيب ما لبثوا في العذاب المهين (١٤) لقد كان لسبا في
مسكنهم اية جنتن عن يمين وشمال كلوا من رزق ربكم
واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور (١٥) فاعرضوا فارسلنا
عليهم سيل العرم وبدلنهم بجنتيهم جنتين ذواتي اكل
خمط واثل وشيء من سدر قليل (١٦) ذلك جزينهم بما
كفروا وهل نجزي الا الكفور (١٧) وجعلنا بينهم وبين القرى
التي بركنا فيها قرى ظاهرة وقدرنا فيها السير سيروا فيها
ليالي واياما امنين (١٨) فقالوا ربنا بعد بين اسفارنا وظلموا
انفسهم فجعلنهم احاديث ومزقنهم كل ممزق ان في

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कि कुशादा ज़िरहे बनाओ और कड़ियों को अन्दाजे से जोड़ो और नेक अमल करो, जो अमल तुम करते हो, मैं उन को देखने वाला हूं। (११) और हवा को (हम) ने सुलेमान का ताबेअ कर दिया था, उस की सुबह की मंज़िल एक महीने की राह होती और शाम की मंज़िल भी महीने भर की होती और उन के लिए हम ने तांबे का चश्मा बहा दिया था और जिन्नों में से ऐसे थे, जो उनके परवरदिगार के हुक्म से उनके आगे काम करते थे और जो कोई उनमें से हमारे हुक्म से फिरेगा, उस को हम (जहन्नम की) आग का मज़ा चखाएंगे। (१२) वे जो चाहते, ये उन के लिए बनाते यानी क़िले और मुजस्समे[1] और (बड़े-बड़े) लगन जैसे तलाब और देगें, जो एक ही जगह रखी रहें। ऐ दाऊद की औलाद ! (मेरा) शुक्र करो और मेरे बंदों में शुक्रगुज़ार थोड़े हैं। (१३) फिर जब हम ने उनके लिए मौत का हुक्म दिया, तो किसी चीज़ से उनका मरना मालूम न हुआ, मगर घुन के कीड़े से, जो उनकी लाठी को खाता रहा। जब लाठी गिर पड़ी, तब जिन्नों को मालूम हुआ (और कहने लगे) कि अगर वे ग़ैब जानते होते तो ज़िल्लत की तक्लीफ़ में न रहते। (१४) सबा (वालों) के लिए उन के रहने-सहने की जगह में एक निशानी थी (यानी) दो बाग़, (एक) दाहिनी तरफ़ और (एक) बायीं तरफ़। अपने परवरदिगार का दिया खाओ और उसका शुक्र करो। (यहां तुम्हारे रहने को यह) पाकीज़ा शहर है और (वहां बख़्शने को) ख़ुदा-ए-गफ़्फ़ार। (१५) तो उन्होंने (शुक्रगुज़ारी से) मुंह फेर लिया, पस हम ने उन पर ज़ोर का सैलाब (बाढ़) छोड़ दिया और उन्हें उन के बाग़ों के बदले दो ऐसे बाग़ दिए, जिन के मेवे बद-मज़ा थे और जिन में कुछ तो भाऊ था और थोड़ी-सी बेरियां। (१६) यह हमने उन की ना-शुक्री की उन को सज़ा दी और हम सज़ा ना-शुक्रे ही को दिया करते हैं। (१७) और हमने उन के और (शाम में) उन की बस्तियों के दर्मियान, जिन में हमने बरकत दी थी, (एक दूसरे से मिले हुए) दीहात बनाए थे, जो सामने नज़र आते थे और उन में आने-जाने का अन्दाज़ा मुक़र्रर कर दिया था कि रात-दिन बे-ख़ौफ़ व ख़तर चलते रहो, (१८) तो उन्होंने दुआ की कि ऐ परवरदिगार ! हमारे सफ़रों में दूरी (और लंबाई पैदा) कर दे और (इस से उन्होंने अपने हक़ में ज़ुल्म किया, तो हम ने (उन्हें बर्बाद कर के) उनके अफ़साने बना दिए और उन्हें बिल्कुल बिखेर दिया। इसमें हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए निशानियां

---

१. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शरीअत में मुजस्समे यानी मूर्तियां बनाना जायज़ था। ये मूर्तियां नबियों और नेक लोगों और आलिमों और फ़रिश्तों की होती थीं, जो मस्जिदों और इबादतगाहों में रखी जाती थीं, और मक़्सूद इस से यह होता था कि उन को देख कर लोगों के दिलों में ख़ुदा की इबादत का ज़्यादा शौक़ हो और वह उस में ज़्यादा लगा हुआ हो। अरब वालों ने ग़ज़ब कर दिया कि मूर्तियों को पूजने लगे यानी उन को (अल्लाह की पनाह) ख़ुदा समझने लगे, इन्सान के लिए जो सब से शानदार मख़्लूक़ है, बे-इन्तिहा ज़िल्लत और अल्लाह तआला के हक़ में निहायत ज़ुल्म है। मुहम्मदी शरीअत में जानदार की मूर्ति बनाना मना कर दिया गया, ताकि बुतपरस्ती की जड़ कट जाए।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् स़द्-द-क़ अ़लैहिम् इब्लीसु ज़न्नहू फ़त्त-ब-अ़ूहु इल्ला फ़रीक़म्-मिनल्-
मुअ्मिनी-न (२०) व मा का-न लहू अ़लैहिम् मिन् सुल्ता़निन् इल्ला लिनअ़्-ल-म
मंय्युअ्मिनु बिल्आख़िरति मिम्मन् हु-व मिन्हा फ़ी शक्किन् ط व रब्बु-क
अ़ला कुल्लि शैइन् ह़फ़ीज़ ★ (२१) क़ुलिद्अ़ुल्लज़ी - न ज़-अ़म्तुम् मिन्
दूनिल्लाहि ج ला यम्लिकू - न मिस़्क़ा - ल
ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व
मा लहुम् फ़ीहिमा मिन् शिर्किंव्-व मा लहू
मिन्हुम् मिन् ज़हीर (२२) व ला
तन्फ़अ़ुश - शफ़ाअ़तु अ़िन्दहू इल्ला लिमन्
अज़ि-न लहू ط ह़त्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि-अ़ अ़न्
क़ुलूबिहिम् क़ालू माज़ा لا क़ा - ल
रब्बुकुम् ط क़ालुल्ह़क़् - क़ ج व हुवल् -
अ़लिय्युल्-कबीर (२३) क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम्
मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि ط क़ुलिल्लाहु لا
व इन्ना औ इय्याकुम् ल-अ़ला हुदन् औ फ़ी
ज़लालिम् - मुबीन (२४) क़ुल् ला
तुस्-अलू-न अ़म्मा अज्-रम्ना व ला नुस्अलु

سبا ٣٤ ٣٤٤ ومن يقنت

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ
مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ
شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي
الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾
وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ
قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾
قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ
لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَّا تُسْئَلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا
وَلَا نُسْئَلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ
كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى
هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ
عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ
بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ

अ़म्मा तअ़्-मलून (२५) क़ुल् यज्-मअ़ु बैनना रब्बुना सुम्-म यफ़्तहु बैनना
बिल्ह़क़्क़ि ط व हुवल् - फ़त्ताहुल् अ़लीम (२६) क़ुल् अरूनियल्लज़ी - न
अल्ह़क़्तुम् बिही शुरका-अ कल्ला ط बल् हुवल्लाहुल्-अज़ीज़ुल्-ह़कीम (२७)
व मा अर्सल्ना-क इल्ला काफ़्फ़तल्-लिन्नासि बशीरंव्-व नज़ीरंव-व लाकिन्-न अक्स-
रन्नासि ला यअ़्-लमून (२८) व यक़ूलू-न मता हाज़लवअ़्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन
(२९) क़ुल् लकुम् मीआ़दु यौमिल्ला तस्-तअ्-ख़िरू-न अ़न्हु साअ़-तंव्-व ला तस्तक़्-
दिमून ★● (३०) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लन्नुअ्मि-न बिहाज़ल्-क़ुर्आनि व ला
बिल्लज़ी बै-न यदैहि ط व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न मौक़ूफ़ू-न अ़िन् - द
रब्बिहिम् ج यर्जिअ़ु बअ़्-ज़ुहुम् इला बअ़्-ज़िनिल् - क़ौ-ल ج यक़ूलुल्-लज़ीनस्तुज़्-
अ़िफ़ू लिल्लज़ीनस्तक्बरू लौला अन्तुम् लकुन्ना मुअ्मिनीन (३१)

★रु. २/८ आ १२ ★रु. ३/९ आ ९ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (१९) और शैतान ने उन के बारे में अपना ख़्याल सच कर दिखाया कि मोमिनों की एक जमाअत के सिवा वे उसके पीछे चल पड़े। (२०) और उसका उन पर कुछ ज़ोर न था, मगर (हमारा) मक़्सूद यह था कि जो लोग आख़िरत में शक रखते हैं, उन से उन लोगों को, जो उस पर ईमान रखते हैं अलग कर दें और तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ पर निगहबान हैं। (२१)★

कह दो कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा (माबूद) ख़्याल करते हो, उन को बुलाओ, वह आसमानों और ज़मीन में ज़र्रा भर चीज़ के भी मालिक नहीं हैं और न उन में उन की शिर्कत है और न उन में से कोई ख़ुदा का मददगार है। (२२) और ख़ुदा के यहां (किसी के लिए) सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी, मगर उस के लिए, जिस के बारे में वह इजाज़त बख़्शे, यहां तक कि जब उन के दिलों से बेचैनी दूर कर दी जाएगी, तो कहेंगे कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फ़रमाया है? फ़रिश्ते कहेंगे कि हक़ (फ़रमाया है) और वह ऊंचे मर्तबे वाला (और) बहुत बड़ा है। (२३) पूछो कि तुम को आसमानों और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है? कहो कि ख़ुदा और हम या तुम (या तो) सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में (२४) कह दो कि न हमारे गुनाहों की तुम से पूछ-गछ होगी और न तुम्हारे आमाल की हम से पूछ-गछ होगी। (२५) कह दो कि हमारा परवरदिगार हम को जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर देगा और वह ख़ूब फ़ैसला करने वाला (और) इल्म वाला है। (२६) कहो कि मुझे वे लोग तो दिखाओ जिन को तुम ने (ख़ुदा का) शरीक बना कर उस के साथ मिला रखा है। कोई नहीं, बल्कि वही (अकेला) ख़ुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (२७) और (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम को तमाम लोगों के लिए ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (२८) और कहते हैं, अगर तुम सच कहते हो, तो यह (क़ियामत का) वायदा कब पूरा होगा? (२९) कह दो कि तुम से एक दिन का वायदा है, जिस से न एक घड़ी पीछे रहोगे, न आगे बढ़ोगे। (३०)★●

और जो काफ़िर हैं, वे कहते हैं कि हम न तो इस क़ुरआन को मानेंगे और न उन (किताबों) को, जो उन से पहले की हैं और काश! (इन) ज़ालिमों को तुम उस वक़्त देखो, जब ये अपने परवरदिगार के सामने खड़े होंगे और एक दूसरे से रद्द व कद्द कर रहे होंगे। जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, वे बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते, तो हम ज़रूर मोमिन हो जाते। (३१)

★रु. २/८ आ। १२ ★रु. ३/९ आ ९ ●नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ालल्लज़ीनस-तक्बरू लिल्लज़ीनस-तुज़्अिफ़ू अ-नह्नु स-दद् - नाकुम् अनिल्हुदा
बअ्-द इज़् जा-अकुम् बल् कुन्तुम् मुज्रिमीन (३२) व क़ालल्लज़ीनस-तुज़्अिफ़ू
लिल्लज़ीनस-तक्बरू बल् मक-रुल्लैलि वन्नहारि इज़् तअ्-मुरूनना अन् नक्फ़ु-र
बिल्लाहि व नज्-अ-ल लहू अन्दादन्, व असर्रुन्नदाम-त लम्मा र-अवुल्-
अज़ा-ब, व ज-अल - नल् - अग़्ला-ल फ़ी
अअ्-नाक़िल्लज़ी-न क-फ़रू, हल् युज्ज़ौ-न
इल्ला मा कानू यअ्-मलून (३३) व मा
अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम्-मिन् नज़ीरिन् इल्ला
क़ा-ल मुत-रफ़ूहा, इन्ना बिमा उर्सिल्तुम्
बिही काफ़िरून (३४) व क़ालू नह्नु
अक्सरु अम - वालंव्-व औलादंव्-व मा
नह्नु बिमु-अ़ज़्ज़िबीन (३५) क़ुल् इन्-न रब्बी
यब्सुतुर - रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु
व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून★ (३६)
व मा अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम्
बिल्लती तुक़र्रिबुकुम् अिन्दना ज़ुल्फ़ा इल्ला
मन् आम - न व अमि - ल सालिहन्,
फ़-उलाइ-क लहुम् जज़ाउज़्-ज़िअ्-फ़ि बिमा अमिलू व हुम् फ़िल्ग़ुरुफ़ाति
आमिनून (३७) वल्लज़ी - न यस्औ-न फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न
उलाइ-क फ़िल्-अ़ज़ाबि मुह्-ज़रून (३८) क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्रिज़्-क़ लि-
मंय्यशाउ मिन् अिबादिही व यक़्दिरु लहू, व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् शैइन् फ़हु-व
युख़्लिफ़ुहू, व हु-व ख़ैरुर-राज़िक़ीन (३९) व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म
यक़ूलु लिल्मलाइकति अ-हाउलाइ इय्याकुम् कानू यअ्-बुदून (४०)

موقوفون عند ربهم يرجع بعضهم الى بعض القول يقول
الذين استضعفوا للذين استكبروا لولا انتم لكنا مؤمنين ۝٣١
قال الذين استكبروا للذين استضعفوا انحن صددنكم عن
الهدى بعد اذ جاءكم بل كنتم مجرمين ۝٣٢ وقال الذين
استضعفوا للذين استكبروا بل مكر اليل والنهار اذ تامروننا
ان نكفر بالله ونجعل له اندادا ط واسروا الندامة لما راوا
العذاب ط وجعلنا الاغلل فى اعناق الذين كفروا ط هل يجزون
الا ما كانوا يعملون ۝٣٣ وما ارسلنا فى قرية من نذير الا
قال مترفوها انا بما ارسلتم به كفرون ۝٣٤ وقالوا نحن اكثر
اموالا واولادا وما نحن بمعذبين ۝٣٥ قل ان ربى يبسط
الرزق لمن يشاء ويقدر ولكن اكثر الناس لا يعلمون ۝٣٦ ع وما
اموالكم ولا اولادكم بالتى تقربكم عندنا زلفى الا من امن
وعمل صالحا فاولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا وهم فى
الغرفت امنون ۝٣٧ والذين يسعون فى ايتنا معجزين اولئك
فى العذاب محضرون ۝٣٨ قل ان ربى يبسط الرزق لمن يشاء
من عباده ويقدر له ط وما انفقتم من شىء فهو يخلفه ج و
هو خير الرزقين ۝٣٩ ويوم يحشرهم جميعا ثم يقول للملئكة
منزل ٥

★रु. ४/१० आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बड़े लोग कमज़ोरों से कहेंगे कि भला हमने तुम को हिदायत से, जब वह तुम्हारे पास आ चुकी थी, रोका था, (नहीं) बल्कि तुम ही गुनाहगार थे। (३२) और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, (नहीं) बल्कि (तुम्हारी) रात-दिन की चालों ने (हमें रोक रखा था), जब तुम हम से कहते थे कि हम ख़ुदा से कुफ़्र करें और उस का शरीक बनाएं और जब वे अज़ाब को देखेंगे, तो दिल में शर्मिन्दा होंगे और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे। बस, जो अमल करते थे, उन्हीं का उन को बदला मिलेगा। (३३) और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहां के ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि जो चीज़ तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस के क़ायल नहीं। (३४) और (यह भी) कहने लगे कि हम बहुत सा माल और आल-औलाद रखते हैं और हम को अज़ाब नहीं होगा। (३५) कह दो कि मेरा रब जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला सकता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३६)★

और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं कि तुम को हमारा मुक़र्रब बना दें, हां, (हमारा मुक़र्रब वह है) जो ईमान लाया और नेक अमल करता रहा, ऐसे ही लोगों को उन के आमाल की वजह से दोगुना बदला मिलेगा और वे सुकून से कोठों में बैठे होंगे, (३७) जो लोग हमारी आयतों में कोशिश करते हैं कि हमें हरा दें, वे अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (३८) कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बन्दों में से, जिस के लिए चाहता है, रोज़ी कुशादा करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है और तुम जो चीज़ ख़र्च करोगे, वह इसका (तुम्हें) बदला देगा। वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (३९) और जिस दिन वह इन सब को जमा करेगा, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या ये लोग तुम को पूजा करते थे? (४०) वे कहेंगे, तू पाक है, तू ही

★रु. ४/१० आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ालू सुब्-हा़न-क अन्-त वलिय्युना मिन् दूनिहिम् ج बल् कानू यअ्-बुदूनल्-जिन्-न ج
अक्सरुहुम् बिहिम् मुअ्मिनून (४१) फ़ल्-यौ-म ला यम्लिकु बअ्-ज़ुकुम् लिबअ्-ज़िन्
नफ़-अ़ंव्-व ला ज़र्रन् ط व नक़ूलु लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्नारिल्लती कुन्तुम्
बिहा तुकज़्ज़िबून (४२) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन्
क़ालू मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्युरीदु
अंय्यसुद्दकुम् अ़म्मा का-न यअ्-बुदु आबाउकुम् ج
व क़ालू मा हाज़ा इल्ला इफ़्कुम्-
मुफ़्तरन् ط व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू
लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् لا इन् हाज़ा
इल्ला सिह़्रुम्-मुबीन (४३) व मा
आतैनाहुम् मिन् कुतुबिंय्यद्रुसूनहा व मा
अर्सल्ना इलैहिम् क़ब्-ल-क मिन् नज़ीर ط
(४४) व कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् لا
व मा ब-लग़ू मिअ्-शा-र मा आतैनाहुम् फ़-कज़्ज़बू
रुसुली قف फ़कै-फ़ का-न नकीर ★ (४५)
क़ुल् इन्नमा अ-अ़िज़ुकुम् बिवाहिदतिन् ج
अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्-म
त-त-फ़क्करू قف मा बिसाहिबिकुम् मिन्
जिन्नतिन् ط इन् हु-व इल्ला नज़ीरुल्लकुम् बै-न यदै अ़ज़ाबिन् शदीद
(४६) क़ुल् मा स-अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् फ़हु-व लकुम् ط इन्
अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि ج व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद
(४७) क़ुल् इन्-न रब्बी यक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि ج अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब (४८) क़ुल्
जा-अल्हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा युई़द (४९) क़ुल् इन्
ज़-लल्तु फ़-इन्नमा अज़िल्लु अ़ला नफ़्सी ج व इनिह्तदैतु फ़बिमा
यूही इलय्-य रब्बी ط इन्नहू समीअ़ुन् क़रीब (५०) व लौ तरा इज़्
फ़ज़िअ़ू फ़ला फ़ौ-त व उख़िज़ू मिम्मकानिन् क़रीब لا (५१)

سبا ٣٤ — ٣٤٦ — ومن يقنت ٢٢

اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ
دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ
لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ
يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾ وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ؕ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۚ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَ
فُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۚ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ
لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ
لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ
اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ
الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ
وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ
تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا

منزل

★ रु. ५/११ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हमारा दोस्त है, न ये, बल्कि ये जिन्नों को पूजा करते थे और अक्सर उन ही को मानते थे। (४१) तो आज तुम में से कोई किसी को नफ़ा और नुक़्सान पहुंचाने का अख़्तियार नहीं रखता और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि दोज़ख़ के अज़ाब का, जिस को तुम झूठ समझते थे, मज़ा चखो। (४२) और जब उन को हमारी रोशन आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो कहते हैं, यह एक (ऐसा) शख़्स है, जो चाहता है कि जिन चीज़ों की तुम्हारे बाप-दादा पूजा किया करते थे, उन से तुम को रोक दे और (यह भी) कहते हैं कि यह (क़ुरआन) सिर्फ़ झूठ है, जो (अपनी तरफ़ से) बना लिया गया है और काफ़िरों के पास जब हक़ आया तो उस के बारे में कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (४३) और हमने न तो उन (मुश्रिकों) को किताबें दीं, जिन को ये पढ़ते हैं और न तुम से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा, (मगर उन्हों ने झुठला दिया)। (४४) और जो लोग उन से पहले थे, उन्हों ने झुठलाया था और जो कुछ हमने उन को दिया था, ये उस के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे।[1] तो उन्होंने तेरे पैग़म्बरों को झुठलाया, सो मेरा अज़ाब कैसा हुआ? (४५)★

कह दो कि मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूं कि तुम ख़ुदा के लिए दो-दो और अकेले-अकेले खड़े हो जाओ, फिर ग़ौर करो। तुम्हारे साथी को बिल्कुल सौदा नहीं, वह तो तुम को सख़्त अज़ाब (के आने) से पहले सिर्फ़ डराने वाले हैं। (४६) कह दो कि मैं ने तुम से कुछ बदला मांगा हो, तो वह तुम्हारा। मेरा बदला ख़ुदा ही के ज़िम्मे है और वह हर चीज़ से ख़बरदार है। (४७) कह दो कि मेरा परवरदिगार ऊपर से हक़ उतारता है (और वह) ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (४८) कह दो कि हक़ आ चुका और बातिल (माबूद) न तो पहली बार पैदा कर सकता है और न दोबारा पैदा करेगा। (४९) कह दो कि अगर मैं गुमराह हूं तो मेरी गुमराही का नुक़्सान मुझी को है और और अगर हिदायत पर हूं, तो यह उसीकी तुफ़ैल है, जो मेरा परवरदिगार मेरी तरफ़ वह्य भेजता है, बेशक वह सुनने वाला (और) नज़दीक है। (५०) और काश तुम देखो, जब ये घबरा जाएंगे तो (अज़ाब से) बच नहीं सकेंगे और नज़दीक ही से पकड़ लिए जाएंगे, (५१)

---

१. यानी जो माल और दौलत पहले काफ़िर रखते थे, उस का दसवां हिस्सा भी इन अरब के काफ़िरों के पास नहीं, मगर हम ने उन को भी तबाह व बर्बाद कर दिया और यह तो कुछ ऐसी हक़ीक़त नहीं रखते, इन को मिटा देना क्या मुश्किल है?

★रु. ५/११ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालू आमन्ना बिही ८ व अन्ना लहुमुत् - तनावुशु मिम् - मकानिम् - बऔदिव्-ऽ (५२) -व क़द् क-फ़रू बिही मिन् क़ब्लु ८ व यक़्ज़ि-फ़ू-न बिलग़ैबि मिम्-मकानिम्-बऔद (५३) व ह़ी-ल बैनहुम् व बै-न मा यश्तहू-न कमा फ़ुअि-ल बिअश्याअि-हिम् मिन् क़ब्लु ७ इन्नहुम् कानू फ़ी शक्किम्-मुरीब ★ (५४)

३५ सूरतु फ़ातिरिन् ४३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३२८९ अक्षर, ७९२ शब्द, ४५ आयतें और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अल-ह़म्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि जाअिलिल् - मला-इकति रुसुलन् उली अज्नि-ह़तिम्-मस्ना व सुला-स व रुबा - अ़ ७ यज़ीदु फ़िल्ख़ल्क़ि मा यशाउ ७ इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१) मा यफ़्तह़िल्लाहु लिन्नासि मिर्रह़-मतिन् फ़ला मुम्सि - क लहा ८ व मा युम्सिक् ॥ फ़ला मुर्सि-ल लहू मिम्बअ़्-दिही ७ व हुवल्-अज़ीज़ुल्-ह़कीम (२) या अय्युहन्नासुज़्कुरू

ومن يقنت ٢٢ — ٣٤٧ — فاطر ٣٥

بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝ وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ
قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ
وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ
كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ۝
سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰۗىِٕكَةِ رُسُلًا
اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ
خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۭ
وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا
تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ
السَّعِيْرِ ۝ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ڛ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
منزل

निअ़्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् ७ हल् मिन् ख़ालिक़िन् ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि ७ ला इला-ह इल्ला हु-व ऽ फ़-अन्ना तुअ़्-फ़कून (३) व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कुज़्-ज़िबत् रुसुलुम्-मिन् क़ब्लि-क ७ व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (४) या अय्युहन्नासु इन्-न वअ़्-दल्लाहि ह़क़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-ह़यातुद्दुन्या ऽ व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल् - ग़रूर (५) इन्नश्शैता - न लकुम् अ़दुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अ़दुव्वन् ७ इन्नमा यद्अू हिज़्बहू लियकूनू मिन् अस्ह़ाबिस्सअ़ीर ७ (६) अल्लज़ी-न क - फ़रू लहुम् अ़ज़ाबुन् शदी - दुन् ७ वल्लज़ी - न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव-व अज्रुन् कबीर ★ (७)

★रु. ६/१२ आ ६ ★रु. १/१३ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और कहेंगे कि हम इस पर ईमान ले आए और (अब) इतनी दूर से उन का हाथ ईमान के लेने को कैसे पहुंच सकता है ? (५२) और पहले तो इस से इंकार करते रहे और बिन देखे दूर ही से (अटकल के) तीर चलाते रहे । (५३) और उन में और उन की ख़्वाहिश की चीज़ों में पर्दा रोक बना दिया गया, जैसा कि पहले उन के हमजिंसों (उन्हीं जैसे लोगों) से किया गया, वह भी उलझन में डालने वाले शक में पड़े हुए थे । (५४)★



४३ सूरः फ़ातिर ३५

सूरः फ़ातिर मक्की है और इस में ४५ आयतें और पांच रुकूअ हैं ।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (और) फ़रिश्तों को क़ासिद बनाने वाला है, जिन के दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर हैं, वह (अपनी) मख़्लूक़ में जो चाहता है, बढ़ाता है । बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है । (१) ख़ुदा जो अपनी रहमत (का दरवाज़ा) खोल दे तो कोई उस को बन्द करने वाला नहीं और जो बंद कर दे तो उस के बाद कोई उस को खोलने वाला नहीं और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है । (२) लोगो ! ख़ुदा के जो तुम पर एहसान हैं, उन को याद करो । क्या ख़ुदा के सिवा कोई और पैदा करने वाला (और रोज़ी देने वाला) है, जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी दे ? उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम कहां बहके फिरते हो ? (३) और (ऐ पैग़म्बर !) अगर ये लोग तुम को झुठलाएं, तो तुम से पहले भी पैग़म्बर झुठलाए गए हैं और (सब) काम ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे । (४) लोगो ! ख़ुदा का वायदा सच्चा है, तो तुम को दुनिया की ज़िंदगी धोखे में न डाल दे और न (शैतान) धोखा देने वाला तुम्हें धोखा दे । (५) शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तुम भी उसे दुश्मन ही समझो । वह अपने (पैरुओं के) गिरोह को बुलाता है, ताकि वह दोज़ख़ वालों में हों, (६) जिन्होंने कुफ़्र किया । उन के लिए सख़्त अज़ाब है और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है । (७)★

★रु. ६/१२ आ ९ ★रु. १/१३ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-फ़-मन् ज़ुय्यि-न लहू सूउ अ-मलिही फ़-रआहु ह़-स-नन्ط फ़-इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ ﷺ फ़ला तज़्-हब् नफ़्सु-क अ़लैहिम् ह़-स-रातिन्ط इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा यस्-नअ़ून (८) वल्लाहुल्लज़ी अर्स-लर् - रिया-ह़ फ़-तुसीरु सह़ाबन् फ़-सुक़्नाहु इला ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अह़्यैना बिहिल्अर-ज़ बअ़्-द मौतिहा ط कज़ालिकन् - नुशूर (९) मन् का-न युरीदुल्-अ़िज़्ज़-त़ फ़लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु जमीअ़न् ط इलैहि यस् - अ़दुल् - कलिमुत्तय्यिबु वल्-अ़-म-लुस्सालिहु यर्फ़अ़ुहू ط वल्लज़ी-न यम्कुरूनस - सय्यिआति लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद ط व मक्रु उलाइ - क हु-व यबूर (१०) वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म ज-अ़-लकुम् अज़्वाजन् ط व मा तह़्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़-अ़ु इल्ला बिअ़िल्मिही ط व मा यु-अ़म्मरु मिम्-मु-अ़म्मरिंव्-व ला युन्क़सु मिन् अ़ुमुरिही इल्ला फ़ी किताबिन् ط इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (११) व मा यस्तविल् - बह़्रानि ﷺ हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुन् सा - इग़ुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् ط व मिन् कुल्लिन् तअ़् - कुलू-न लह़् - मन् त़रिय्यंव-व तस्तख़्रिजू-न ह़िल् - य-तन् तल्बसूनहा ط व तरल्फ़ुल - क फ़ीहि मवाख़ि-र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१२) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि ط व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र ﷺ कुल्लुंय्यजरी लि - अ-जलिम् - मुसम्मन् ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ط वल्लज़ी - न तद्अ़ू - न मिन् दूनिही मा यम्लिकू - न मिन् क़ित्मीर ط (१३)

فاطر ٣٥ — ٣٤٨ — ومن يقنت ٢٢

الصّٰلحٰت لهم مّغفرة وّاجر كبير ۝ افمن زيّن له سوء عمله
فراٰه حسنا فانّ الله يضلّ من يّشاء ويهدي من يّشاء فلا
تذهب نفسك عليهم حسرٰت انّ الله عليم بما يصنعون ۝
والله الّذي ارسل الرّيٰح فتثير سحابا فسقنٰه الى بلد مّيّت
فاحيينا به الارض بعد موتها كذٰلك النّشور ۝ من كان يريد
العزّة فللّٰه العزّة جميعا اليه يصعد الكلم الطّيّب والعمل
الصّالح يرفعه والّذين يمكرون السّيّاٰت لهم عذاب شديد
ومكر اولٰٓئك هو يبور ۝ والله خلقكم مّن تراب ثمّ من نّطفة
ثمّ جعلكم ازواجا وما تحمل من انثٰى ولا تضع الّا بعلمه وما
يعمّر من مّعمّر وّلا ينقص من عمره الّا في كتٰب انّ ذٰلك على
الله يسير ۝ وما يستوي البحرٰن هٰذا عذب فرات سآئغ شرابه
وهٰذا ملح اجاج ومن كلّ تاكلون لحما طريّا وّتستخرجون
حلية تلبسونها وترى الفلك فيه مواخر لتبتغوا من فضله
ولعلّكم تشكرون ۝ يولج الّيل في النّهار ويولج النّهار في الّيل
وسخّر الشّمس والقمر كلّ يّجري لاجل مّسمًّى ذٰلكم الله ربّكم
له الملك والّذين تدعون من دونه ما يملكون من قطمير ۝
ان تدعوهم لا يسمعوا دعاءكم ولو سمعوا ما استجابوا لكم ويوم

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भला जिस शख़्स को उस के बुरे आमाल सजा कर के दिखाए जाएं और वह उन को उम्दा समझने लगे, तो (क्या वह भला आदमी जैसा हो सकता है) ? बेशक ख़ुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है, तो उन लोगों पर अफ़सोस कर के तुम्हारा दम न निकल जाए। ये जो कुछ करते हैं, ख़ुदा उसे जानता है। (८) और ख़ुदा ही तो है, जो हवाएं चलाता है और वे बादल को उभारती हैं, फिर हम उस को एक बे-जान शहर की तरफ़ चलाते हैं, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा कर देते हैं। इसी तरह मुर्दों को जी उठना होगा। (९) जो शख़्स इज़्ज़त की तलब में है, तो इज़्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है। उसी की तरफ़ पाकीज़ा कलिमे चढ़ते हैं और नेक अमल उन को बुलंद करते हैं और जो लोग बुरे-बुरे मक्र करते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब है और उन का मक्र नाबूद हो जाएगा। (१०) और ख़ुदा ही ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम को जोड़ा-जोड़ा बना दिया और कोई औरत न हामिला होती है, और न जानती है, मगर उस के इल्म से और न किसी बड़ी उम्र वाले को उम्र ज़्यादा दी जाती है और न उस की उम्र कम की जाती है, मगर (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ है)। बेशक यह ख़ुदा को आसान है। (११) और दोनों दरिया (मिल कर) एक जैसे नहीं हो जाते, यह तो मीठा है, प्यास बुझाने वाला, जिस का पानी ख़ुशगवार है और यह खारी है, कड़आ और सब से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ेवर निकालते हो, जिसे पहनते हो। और तुम दरिया में कश्तियों को देखते हो कि (पानी को) फाड़ती चली आती हैं, ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) खोजो और ताकि शुक्र करो। (१२) वही रात को दिन में दाख़िल करता और (वही) दिन को रात में दाख़िल करता है और उसी ने सूरज-चांद को काम में लगा दिया है। हर-एक एक मुक़र्रर वक़्त तक चल रहा है। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है और जिन लोगों को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वे खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी तो (किसी चीज़ के)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन् तद्‌ऊहुम् ला यस्मअू दुआ-अकुम् ८ व लौ समिअू मस्तजाबू लकुम् ५
व यौमल्क़ियामति यक्फ़ुरू - न बिशिर्किकुम् ५ व ला युनब्बिउ-क मिस्लु
ख़बीर ★● (१४) या अय्युहन्नासु अन्तुमुल् - फ़ु - क़राउ इलल्लाहि ८
वल्लाहु हुवल् - ग़निय्युल्-ह़मीद (१५) इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति
बिख़ल्क़िन् जदीद ८ (१६) व मा
ज़ालि-क अ-लल्लाहि बिअज़ीज़ (१७) व
ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्विज़्-र उख़्रा ५ व
इन् तद्‌अु मुस्क़ - लतुन् इला ह़िम्लिहा
ला युह़्मल् मिन्हु शैउंव्-व लौ का-न ज़ाक़ुर्बा ५
इन्नमा तुन्ज़िरुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम्
बिलग़ैबि व अक़ामुस्सला - त ५ व मन्
त-ज़क्का फ़-इन्नमा य-त-ज़क्का लि-नफ़्सिही ५
व इलल्लाहिल्-मसीर (१८) व मा
यस्तविल् - अअ् - मा वल्बसीर ॥ (१९)
व लज़्ज़ुलुमातु व लन्नूर ॥ (२०) व
लज़्ज़िल्लु व लल्ह़रूर ८ (२१) व मा
यस्तविल् - अह़्याउ व लल्अम्वातु ५
इन्नल्ला - ह युस्मिअु मंय्यशाउ ८ व मा
अन्-त बिमुस्मिअिम्-मन् फ़िल्क़ुबूर (२२) इन् अन्-त इल्ला नज़ीर (२३)
इन्ना अर्सल्ना-क बिल्ह़क़्क़ि बशीरंव्-व नज़ीरन् ५ व इम्मिन् उम्मतिन् इल्ला ख़ला
फ़ीहा नज़ीर (२४) व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लिहिम् ८ जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिलबय्यिनाति व बिज़्ज़ुबुरि व बिल्-किताबिल्-
मुनीर (२५) सुम्-म अ-ख़ज़्तुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-कै-फ़ का-न नकीर ★ (२६)
अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् ८ फ़-अख़्-रज्ना बिही स-मरा-
तिम् - मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा ५ व मिनल् - जिबालि जु-ददुम् - बीज़ुंव् - व
ह़ुम्रुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद (२७) व मिनन्नासि
वद्‌दवाब्बि वल् - अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि - क ५ इन्नमा
यख़्शल्ला-ह मिन् अिबादिहिल्-अुलमाउ ५ इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूर (२८)

فاطر ٣٥ — ٣٢٦

القيمة يكفرون بشرككم ولا ينبئك مثل خبير ۝ يايها الناس
انتم الفقراء الى الله والله هو الغني الحميد ۝ ان يشأ يذهبكم
ويأت بخلق جديد ۝ وما ذلك على الله بعزيز ۝ ولا تزر وازرة
وزر اخرى وان تدع مثقلة الى حملها لا يحمل منه شيء ولو كان
ذا قربى انما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب واقاموا الصلوة
ومن تزكى فانما يتزكى لنفسه والى الله المصير ۝ وما يستوي
الاعمى والبصير ۝ ولا الظلمت ولا النور ۝ ولا الظل ولا
الحرور ۝ وما يستوي الاحياء ولا الاموات ان الله يسمع من
يشاء وما انت بمسمع من في القبور ۝ ان انت الا نذير ۝ انا
ارسلنك بالحق بشيرا ونذيرا وان من امة الا خلا فيها نذير ۝
وان يكذبوك فقد كذب الذين من قبلهم جاءتهم رسلهم
بالبينت وبالزبر وبالكتب المنير ۝ ثم اخذت الذين
كفروا فكيف كان نكير ۝ الم تر ان الله انزل من السماء ماء
فاخرجنا به ثمرت مختلفا الوانها ومن الجبال جدد بيض
وحمر مختلف الوانها وغرابيب سود ۝ ومن الناس والدواب
والانعام مختلف الوانه كذلك انما يخشى الله من عباده
العلمؤا ان الله عزيز غفور ۝ ان الذين يتلون كتب الله و

★ रु. २/१४ आ ७ ●मु. ३/४ ★ रु. ३/१५ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मालिक नहीं। (१३) अगर तुम उन को पुकारो, तो वे तुम्हारी पुकार न सुनें और अगर सुन भी लें, तो तुम्हारी बात को क़ुबूल न कर सकें और क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इंकार कर देंगे और बा-ख़बर (ख़ुदा) की तरह तुम को कोई ख़बर नहीं देगा। (१४) ★●

लोगो! तुम (सब) ख़ुदा के मुहताज हो और ख़ुदा बे-परवा, हम्द (व सना) के लायक़ है। (१५) अगर चाहे तो तुम को नाबूद कर दे और नयी मख़्लूक़ ला आबाद करे। (१६) और यह ख़ुदा को कुछ मुश्किल नहीं। (१७) और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा और कोई बोझ में दबा हुआ अपना बटाने को किसी को बुलाए, तो कोई उस में से कुछ न उठाएगा, चाहे रिश्तेदार ही हो। (ऐ पैग़म्बर!) तुम उन ही लोगों को नसीहत कर सकते हो, जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते और नमाज़ एहतिमाम से पढ़ते हैं और जो शख़्स पाक होता है, अपने ही लिए पाक होता है और (सब को) ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (१८) और अंधा और आंख वाला बराबर नहीं। (१९) और न अंधेरा और रोशनी, (२०) और न साया और धूप, (२१) और न ज़िंदे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं। ख़ुदा जिस को चाहता है, सुना देता है और तुम उन को जो क़ब्रों में (दफ़्न) हैं, सुना नहीं सकते। (२२) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो। (२३) हमने तुम को हक़ के साथ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला भेजा है और कोई उम्मत नहीं, मगर उस में हिदायत करने वाला गुज़र चुका है। (२४) और अगर ये तुम्हें झुठलाएं, तो जो लोग उन से पहले थे, वे भी झुठला चुके हैं, उन के पास उन के पैग़म्बर निशानियां और सहीफ़े और रोशन किताबें ले-ले कर आते रहे। (२५) फिर मैं ने काफ़िरों को पकड़ लिया, सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा हुआ। (२६)★

क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ने आसमान से मेंह बरसाया तो हम ने उस से तरह-तरह के रंगों के मेवे पैदा किए और पहाड़ों में सफ़ेद और लाल रंगों के क़ताए (टुकड़े) और (कुछ) काले-स्याह हैं। (२७) इंसानों और जानवरों और चौपायों के भी कई तरह के रंग हैं। ख़ुदा से तो उस के बन्दों में से वही डरते हैं, जो इल्म वाले हैं। बेशक ख़ुदा ग़ालिब (और) बख़्शने वाला है। (२८)

★रु. २/१४ आ ७ ●रु. ३/४ ★रु. ३/१५ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नल्लज़ी-न यत्लू-न किताबल्लाहि व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़क़्-
नाहुम् सिर्रंव्-व अ़लानि-य-तंय्यर्जू-न तिजारतल्लन् तबूर ५ (२९) लियुवफ़्फ़ि-
यहुम् उजूरहुम् व यज़ीदहुम् मिन् फ़ज़्लिही ७ इन्नहू ग़फ़ूरुन् शकूर (३०) वल्लज़ी
औहैना इलै-क मिनल्किताबि हुवल्हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि ७
इन्नल्ला-ह बिअ़िबादिही ल-ख़बीरुम्-
बसीर (३१) सुम्-म औरस्नल्-
किताबल्-लज़ीनस्तफ़ैना मिन् अ़िबादिना ८
फ़मिन्हुम् ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही ८ व
मिन्हुम् मुक़्तसिदुन् ८ व मिन्हुम् साबिक़ुम्-बिल्-
ख़ैराति बिइज़्निल्लाहि ७ ज़ालि-क हुवल्-फ़ज़्लुल्-
कबीर ७ (३२) जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलूनहा युहल्-
लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-ह-बिंव्-व
लुअ्लुअन् ८ व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर (३३)
व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्-ह-ब
अ़न्नल्-ह़-ज़-न ७ इन्-न रब्बना ल-ग़फ़ूरुन्
शकूरु-नि-५ (३४) -ल्लज़ी अ-हल्लना
दारल्-मुक़ामति मिन् फ़ज़्लिही ८ ला

أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً
لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ إِنَّهٗ غَفُوْرٌ
شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ إِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ
الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ
وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ
عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَ
لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ
إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۨ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ
جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۭ
كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ
مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۭ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾ إِنَّ
اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۭ إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ
الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ ۭ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۭ وَلَا يَزِيْدُ
الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ

منزل ٥

यमस्सुना फ़ीहा न-स-बुंव्-व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब (३५) वल्लज़ी-न क-फ़रू
लहुम् नारु ज-हन्न-म ८ ला युक़्ज़ा अ़लैहिम् फ़-यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् मिन्
अ़ज़ाबिहा ७ कज़ालि-क नज्ज़ी कुल्-ल कफ़ूर ८ (३६) व हुम् यस्तरिख़ू-न
फ़ीहा ८ रब्बना अख़्रिज्ना नअ़्-मल् सालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ़्-मलु ७
अ-व लम् नुअ़म्मिर्-कुम् मा य-त-ज़क्करु फ़ीहि मन् त-ज़क्क-र व
जा-अकुमुन्नज़ीरु ७ फ़-ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर ★ (३७)
इन्नल्ला-ह आ़लिमु ग़ैबिस्समावाति वल्अर्ज़ि ७ इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (३८)
हुवल्लज़ी ज-अ़-लकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि ७ फ़-मन् क-फ़-र फ़-अ़लैहि
कुफ़्रुहू ७ व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् इल्ला
मक़्तन् ८ व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् इल्ला ख़सारा (३९)

★ रु. ४/१६ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो लोग ख़ुदा की किताब पढ़ते और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हमने उन को दिया है, उस में से छिपे और ज़ाहिर ख़र्च करते हैं, वे उस तिजारत (के फ़ायदे) के उम्मीदवार हैं, जो कभी तबाह नहीं होगी, (२९) क्योंकि ख़ुदा उन को पूरा-पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा भी देगा। वह तो बख़्शने वाला (और) क़द्रदां है। (३०) और यह किताब जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, बर-हक़ है और उन (किताबों) की तस्दीक़ करती है, जो इस से पहले की हैं। बेशक ख़ुदा अपने बन्दों से ख़बरदार (और उन को) देखने वाला है। (३१) फिर हमने उन लोगों को किताब का वारिस ठहराया, जिन को अपने बन्दों में से चुना, तो कुछ तो उन में से अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं और कुछ बीच के रास्ते पर हैं और कुछ ख़ुदा के हुक्म से नेकियों में आगे निकल जाने वाले हैं। यही बड़ा फ़ज़्ल है, (३२) (उन लोगों के लिए) हमेशा की जन्नतें (हैं) जिन में वे दाख़िल होंगे। वहां उन को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उन का लिबास रेशमी होगा। (३३) वे कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने हम से ग़म दूर किया। बेशक हमारा परवरदिगार बख़्शने वाला (और) क़द्रदां है, (३४) जिस ने हम को अपने फ़ज़्ल से हमेशा के रहने के घर में उतारा। यहां न तो हम को रंज पहुंचेगा और न हमें थकन ही होगी। (३५) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन के लिए दोज़ख़ की आग है, न उन्हें मौत आएगी कि मर जाएं और न उस का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा। हम हर एक ना-शुक्रे को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (३६) वे उस में चिल्लाएंगे कि ऐ परवररिगार! हम को निकाल ले, (अब) हम नेक अमल किया करेंगे, न वह जो (पहले) करते थे। क्या हमने तुम को इतनी उम्र नहीं दी थी कि उस में जो सोचना चाहता, सोच लेता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया, तो अब मज़े चखो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (३७) ★

बेशक ख़ुदा ही आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का जानने वाला है। वह तो दिल के भेदों तक को जानता है। (३८) वही तो है, जिस ने तुम को ज़मीन में (पहलों का) जानशीं बनाया, तो जिस ने कुफ़्र किया, उस के कुफ़्र का नुक़्सान उसी को है और काफ़िरों के हक़ में उन के कुफ़्र से परवरदिगार के यहां ना-ख़ुशी ही बढ़ती है और काफ़िरों को उन का कुफ़्र नुक़्सान ही

★रु. ४/१६ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् अ-र-ऐ-तुम् शु-रका-अ-कुमुल्लज़ी-न तद्ऊ-न मिन् दूनिल्लाहि ط अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति ج अम् आतैनाहुम् किताबन् फ़हुम् अ़ला बय्यिनतिम्-मिन्हु ج बल् इंय्यअिदुज़्-ज़ालिमू-न बअ्-ज़ुहुम् बअ्-ज़न् इल्ला ग़ुरूरा (४०) इन्नल्ला-ह युम्सिकुस-समावाति वल्अर्-ज़ अन् तज़ूला ج व लइन् ज़ालता इन् अम-स-कहुमा मिन् अ-ह़दिम्-मिम्बअ्-दिही ط इन्नहू का-न ह़लीमन् ग़फ़ूरा (४१) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् लइन् जा-अहुम् नज़ीरुल्-ल-य-कूनन्-न अह्दा मिन् इह्दल्-उममि ج फ़-लम्मा जा-अहुम् नज़ीरुम्मा ज़ादहुम् इल्ला नुफ़ू-र-नि-لا (४२) स्तिक्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मक्रस्सय्यिइ ط व ला यह़ीक़ुल्-मक्रुस्सय्यिउ इल्ला बिअह्लिही ط फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला सुन्नतल्-अव्वली-न ج फ़-लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ج व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तह़्वीला (४३) अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतन् ط व मा कानल्लाहु लियुअ्-जिज़हू मिन् शैइन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि ط इन्नहू का-न अ़लीमन् क़दीरा (४४) व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्-ना-स बिमा क-सबू मा त-र-क अ़ला ज़ह्रिहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ج फ़-इज़ा जा-अ अ-ज-लुहुम् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिअिबादिही बसीरा ★ (४५)

اِلَّا خَسَارًا ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا
غُرُوْرًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ
اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۚ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝ وَاَقْسَمُوْا
بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ
فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۝ اسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ
السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا
سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ
اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ۝ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ
شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۚ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ
اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ
اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ۝
سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰسٓ ۝ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى

३६ सूरतु यासीन् ४१

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३०६० अक्षर, ७३९ शब्द, ८३ आयतें और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

यासीन् ج (१) वल्क़ुर्आनिल्-ह़कीम لا (२) इन्न-क लमिनल्-मुर्सलीन لا (३)

★रु. ५/१७ आ ८

ज़्यादा करता है। (३९) भला तुम ने अपने शरीकों को देखा, जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो; मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से कौन सी चीज़ पैदा की है, या (बताओ कि) आसमानों में उन की शिर्कत है या हम ने उन को किताब दी है, तो वे उस की सनद रखते हैं ? (इन में से कोई बात भी नहीं), बल्कि ज़ालिम जो एक दूसरे को वायदा देते हैं, सिर्फ़ धोखा है। (४०) ख़ुदा ही आसमानों और ज़मीन को थामे रखता है कि टल न जाएं। अगर वे टल जाएं तो ख़ुदा के सिवा कोई ऐसा नहीं जो उनको थाम सके। बेशक वह बुर्दबार (और) बख़्शने वाला है। (४१) और ये ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़स्में खाते हैं कि अगर उन के पास कोई हिदायत करने वाला आए, तो ये हर एक उम्मत से बढ़कर हिदायत पर हों, मगर जब उन के पास हिदायत करने वाला आया तो उस से उन को नफ़रत ही बढ़ी। (४२) यानी (उन्हों ने) मुल्क में घमंड करना और बुरी चाल चलना (अख़्तियार किया) और बुरी चाल का वबाल उस के चलने वाले ही पर पड़ता है। ये अगले लोगों के रवैए के सिवा और किसी चीज़ के इंतिज़ार में नहीं,[1] सो तुम ख़ुदा की इबादत में हरगिज़ तब्दीली न पाओगे और ख़ुदा के तरीक़े में कभी तब्दीली न देखोगे। (४३) क्या उन्हों ने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम क्या हुआ, हालांकि वे इन से ताक़त में बहुत ज़्यादा थे। और ख़ुदा ऐसा नहीं कि आसमानों और ज़मीन में कोई चीज़ उस को आजिज़ कर सके। वह इल्म वाला (और) क़ुदरत वाला है। (४४) और अगर ख़ुदा लोगों को उनके आमाल की वजह से पकड़ने लगता तो रू-ए-ज़मीन पर एक भी चलने-फिरने वाले को न छोड़ता, लेकिन वह उन को मुक़र्रर वक़्त तक मोहलत दिए जाता है। सो जब उन का वक़्त आ जाएगा, तो (उन के आमाल का बदला देगा), ख़ुदा तो अपने बन्दों को देख रहा है। (४५) ★



३६ सूरः यासीन ४१

सूरः यासीन मक्की है और इस में तिरासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।
शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यासीन, (१) क़सम है क़ुरआन की, जो हिक्मत से भरा हुआ है। (२) (ऐ मुहम्मद !)

१. यानी अल्लाह तआला के उस तरीक़े का, जो अगले लोगों के साथ बरता जाता था, इन्तिज़ार करते हैं और वह यह कि उन के कुफ़्र की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया जाता था, ये भी अज़ाब ही के इन्तिज़ार में हैं।

★रु. ५/१७ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अला सिरातिम् - मुस्तक़ीम (४) तन्ज़ीलल् - अज़ीज़िर् - रहीम (५)
लितुन्ज़ि-र क़ौमम्मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फ़हुम् ग़ाफ़िलून (६) ल-क़द् हक़्क़ल्-
क़ौलु अला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (७) इन्ना ज-अल्ना फ़ी
अअ्-नाक़िहिम् अग़लालन् फ़हि-य इलल्-अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून (८) व
ज-अल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन्
ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़-अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला
युब्सिरून (९) व सवाउन् अलैहिम्
अ-अन्ज़र्तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्-हुम् ला
युअ्मिनून (१०) इन्नमा तुन्ज़िरु
मनित्त-ब-अज़् - ज़िक्-र व ख़शि-यर्रह्मा-न
बिल्ग़ैबि फ़बश्शिर्हु बिमग़्फ़ि - र-तिंव्-व
अज्रिन् करीम (११) इन्ना नह्नु
नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व
आसारहुम् व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु
फ़ी इमामिम्-मुबीन ★ (१२) वज़्रिब्
लहुम् म-स - लन् अस - हाबल् क़र्यति
इज् जा-अ-हल् - मुर्सलून (१३) इज्
अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि फ़ - कज़्ज़बू - हुमा
फ़-अज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन् फ़-क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्सलून (१४) क़ालू मा
अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व मा अन्ज़लर्-रह्मानु मिन् शैइन् इन् अन्तुम्
इल्ला तक्ज़िबून (१५) क़ालू रब्बुना यअ् - लमु इन्ना इलैकुम्
लमुर्सलून (१६) व मा अलैना इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१७) क़ालू
इन्ना त-तय्यर्ना बिकुम् ल-इल्लम् तन्तहू ल-नर्जुमन्नकुम् व ल-य-मस्सन्नकुम् मिन्ना
अज़ाबुन् अलीम (१८) क़ालू ताइरुकुम् म-अकुम् अइन् ज़ुक्किर्तुम् बल् अन्तुम्
क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (१९) व जा-अ मिन् अक़्सल्-मदीनति रजुलुंय्यस्आ क़ा-ल या
क़ौमित्तबिउल्-मुर्सलीन (२०) -त्तबिअू मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव्-व हुम् मुह्तदून (२१)

ومن يقنت ٢٢ — ٣٥٢ — يس ٣٦

صراط مستقيم ٤ تنزيل العزيز الرحيم ٥ لتنذر قوما ما
انذر اباؤهم فهم غفلون ٦ لقد حق القول على اكثرهم فهم
لا يؤمنون ٧ انا جعلنا في اعناقهم اغللا فهي الى الاذقان فهم
مقمحون ٨ وجعلنا من بين ايديهم سدا ومن خلفهم
سدا فاغشينهم فهم لا يبصرون ٩ وسواء عليهم ءانذرتهم
ام لم تنذرهم لا يؤمنون ١٠ انما تنذر من اتبع الذكر وخشي
الرحمن بالغيب فبشره بمغفرة واجر كريم ١١ انا نحن نحي
الموتى ونكتب ما قدموا واثارهم وكل شيء احصينه في امام
مبين ١٢ واضرب لهم مثلا اصحب القرية اذ جاءها
المرسلون ١٣ اذ ارسلنا اليهم اثنين فكذبوهما فعززنا بثالث
فقالوا انا اليكم مرسلون ١٤ قالوا ما انتم الا بشر مثلنا و
ما انزل الرحمن من شيء ان انتم الا تكذبون ١٥ قالوا ربنا
يعلم انا اليكم لمرسلون ١٦ وما علينا الا البلغ المبين ١٧
قالوا انا تطيرنا بكم لئن لم تنتهوا لنرجمنكم وليمسنكم
منا عذاب اليم ١٨ قالوا طائركم معكم ائن ذكرتم بل انتم
قوم مسرفون ١٩ وجاء من اقصا المدينة رجل يسعى قال يقوم
اتبعوا المرسلين ٢٠ اتبعوا من لا يسئلكم اجرا وهم مهتدون ٢١

منزل ٥

व. ग़ुफ़्रान ★रु. १/१८ आ १२ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो, (३) सीधे रास्ते पर। (४) (यह ख़ुदा-ए) ग़ालिब (और) मेहरबान ने नाज़िल किया है, (५) ताकि तुम उन लोगों को, जिन के बाप-दादा की तंबीह नहीं की गयी थी, तंबीह कर दो। वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। (६) उन में से अक्सर पर (ख़ुदा की) बात पूरी हो चुकी है, सो वे ईमान नहीं लाएंगे। (७) हमने उन की गरदनों में तौक़ डाल रखे हैं और वे ठोड़ियों तक (फंसे हुए) हैं, तो उन के सर उलल रहे हैं। (८) और हमने उन के आगे भी दीवार बना दी और उन के पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया, तो ये देख नहीं सकते। (९) और तुम उन को नसीहत करो या न करो, उन के लिए बराबर है, वे ईमान नहीं लाने के। (१०) तुम तो सिर्फ़ उस शख़्स को नसीहत कर सकते हो, जो नसीहत की पैरवी करे और ख़ुदा से ग़ायबाना ड़रे सो उस को मग़फ़िरत और बड़े सवाब की ख़ुशख़बरी सुना दो। (११) बेशक हम मुर्दों को ज़िंदा करेंगे और जो कुछ वे आगे भेज चुके और (जो) उन के निशान पीछे रह गये, हम उन को लिख देते हैं और हर चीज़ को हमने रोशन किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) में लिख रखा है। (१२) ★

और उन से गांव वालों का क़िस्सा बयान करो, जब उन के पास पैग़म्बर आये।[1] (१३) (यानी) जब हमने उन की तरफ़ दो (पैग़म्बर) भेजे, तो उन्हों ने उन को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से ताक़त पहुंचायी, तो उन्हों ने कहा कि हम तुम्हारी तरफ़ पैग़म्बर हो कर आए हैं।[2] (१४) वे बोले कि तुम (और कुछ) नहीं, मगर हमारी तरह के आदमी (हो) और ख़ुदा ने कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की, तुम सिर्फ़ झूठ बोलते हो। (१५) उन्हों ने कहा कि हमारा परवरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ (पैग़ाम) दे कर भेजे गये हैं। (१६) और हमारे ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुंचा देना है और बस। (१७) वे बोले कि हम तुम को ना-मुबारक देखते हैं। अगर तुम मानोगे नहीं, तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और तुम को हम से दुख देने वाला अज़ाब पहुंचेगा। (१८) उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है।[3] क्या इसलिए कि तुम को नसीहत की गयी, बल्कि ऐसे लोग हो जो हम से आगे निकल गये हो।[4] (१९) और शहर के परले किनारे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया।[5] कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम! पैग़म्बरों के पीछे चलो, (२०) ऐसों के जो तुम से बदला नहीं मांगते और वे सीधे रास्ते पर हैं। (२१) और मुझे क्या है कि मैं उस की

---

१. मुल्क रूम में अन्ताकिया एक गांव था, यह वहां के लोगों का क़िस्सा है।

२. कहते हैं, ये लोग हज़रत ईसा अलै० के हवारियों में से थे, जिन को अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा के बाद पैग़म्बरी अता फ़रमायी थी। पहले दो पैग़म्बरों का नाम यूहन्ना और शमऊन था और तीसरे का शुकूम।

३. यानी नहूसत जो तुम्हारे बुरे आमाल की वजह से है, तुम जहां भी होगे, वह तुम्हारे साथ होगी।

४. यानी जो नसीहत तुम को की गयी, क्या वह तुम्हारे लिए नहूसत की वजह साबित हुई? यह हरगिज़ नहीं है, बल्कि तुम्हारी शामते आमाल तुम्हारे लिए वबाल की वजह हो रही है।

५. यह शख़्स शहर के क़रीब एक ग़ार में इबादत करता था। जब उस ने पैग़म्बरों के आने का हाल सुना, तो शहर में दौड़ता हुआ आया और वहां के लोगों से कहने लगा कि पैग़म्बरों की इताअत करो और उनकी हिदायत पर चलो, उस का नाम हबीबा था।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेईसवां पारः व मा लि-य

सूरतु यासीन आयात २२ से ८३

व मा लि-य ला अअ़्-बुदुल्लज़ी फ़-त-रनी व इलैहि तुर्जअ़ून (२२) अ अत्तख़िज़ु
मिन् दूनिही आलि-ह-तन् इंय्युरिद्निर्-रह़्मानु बिज़ुर्रिल्-ला तुग़्नि अ़न्नी शफ़ाअ़तुहुम्
शैअंव्-व ला युन्क़िज़ून (२३) इन्नी इज़ल्लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (२४) इन्नी
आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मअ़ून (२५) क़ीलद्ख़ुलिल्जन्न-त क़ा-ल यालै-त क़ौमी
यअ़्-लमून (२६) बिमा ग़-फ़-र ली रब्बी
व ज-अ़-लनी मिनल्-मुक्रमीन (२७) व
मा अन्ज़ल्ना अ़ला क़ौमिही मिम्बअ़्-दिही
मिन् जुन्दिम् - मिनस्समाइ व मा कुन्ना
मुन्ज़िलीन (२८) इन् कानत् इल्ला सैह़-
तंव्वाहि-द-तन् फ़-इज़ा हुम् ख़ामिदून (२९)
या ह़स-र-तन् अ़लल्-अ़िबादि ▓ मा यअ़्तीहिम्
मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन
(३०) अ-लम् यरौ कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम्
मिनल्क़ुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिअ़ून (३१)
व इन् कुल्लुल्लम्मा जमीअ़ुल्लदैना मुह्ज़रून
★ (३२) व आयतुल्-लहुमुल्-अर्ज़ुलमैततु अह़्यै-
नाहा व अख़-रज्ना मिन्हा ह़ब्बन् फ़मिन्हु यअ़्-
कुलून (३३) व ज-अ़ल्ना फ़ीहा जन्नातिम्मिन् नख़ीलिंव्-व अअ़्-नाबिंव्-व फ़ज्जर्ना
फ़ीहा मिनल्-अ़ुयून (३४) लि-यअ़्कुलू मिन् स-मरिही व मा अ़मि-लत्हु ऐदीहिम्
अ-फ़-ला यश्कुरून (३५) सुब्ह़ानल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा
तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन् अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ़्-लमून (३६) व आयतुल्
लहुमुल्लैलु नस् - लख़ु मिन्हुन्नहा - र फ़-इज़ा हुम् मुज़्लिमून (३७)
वश्शम्सु तज्री लिमुस्तक़र्रिल्-लहा ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (३८)
वल्-क़-म-र क़द्दर्नाहु मनाज़ि-ल ह़त्ता आ़-द कल्-अ़ुर्जूनिल्-क़दीम (३९)

يٰس ٣٦ — ٣٥٣ — وما لي ٢٣
وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ ءَاَتَّخِذُ
مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ
شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ۝ اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ
بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ۝ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۭ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ۝
بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰي
قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ۝
اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ۝ يٰحَسْرَةً عَلَي
الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَلَمْ يَرَوْا
كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاِنْ كُلٌّ
لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ښ اَحْيَيْنٰهَا وَ
اَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ
اَيْدِيْهِمْ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا
تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ښ
نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ
ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ
كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا

▓ व. ग़ुफ़रान ★रु. २/१ आ २०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इबादत न करूँ, जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (२२) क्या मैं उन को छोड़ कर औरों को माबूद बनाऊं? अगर ख़ुदा मेरे हक़ में नुक़्सान करना चाहे, तो उन की सिफ़ारिश मुझे कुछ भी फ़ायदा न दे सके और न वे मुझे छुड़ा ही सकें। (२३) तब तो मैं खुली गुमराही में पड़ गया। (२४) मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया हूं, सो मेरी बात सुन रखो। (२५) हुक्म हुआ कि बहिश्त में दाख़िल हो जा। बोला, काश! मेरी क़ौम को ख़बर हो, (२६) कि ख़ुदा ने मुझे बख़्श दिया और इज़्ज़त वालों में किया। (२७) और हमने उस के बाद उस की क़ौम पर कोई लश्कर नहीं उतारा और न हम उतारने वाले थे ही। (२८) वह तो सिर्फ़ एक चिंघाड़ की (आग थी,) सो वे (इस से) यकायक बुझ कर रह गये। (२९) बन्दों पर अफ़सोस ▨ है कि उन के पास कोई पैग़म्बर नहीं आता, मगर उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं। (३०) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हमने उन से बहुत से लोगों को हलाक कर दिया था। अब वे उन की तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (३१) और सब के सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (३२)★

और एक निशानी उन के लिए मुर्दा ज़मीन है कि हम ने उस को ज़िंदा किया और उसमें से अनाज उगाया, फिर ये उस में से खाते हैं। (३३) और उस में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किए और उस में चश्मे जारी किए, (३४) ताकि ये उन के फल खाएं और उन के हाथों ने तो उन को नहीं बनाया, तो फिर क्या ये शुक्र नहीं करते? (३५) वह ख़ुदा पाक है, जिस ने ज़मीन के, पेड़-पौधों के और ख़ुद उन के और जिन चीज़ों की उन को ख़बर नहीं, सब के जोड़े बनाए। (३६) और एक निशानी उन के लिए रात है कि उस में से हम दिन को खींच लेते हैं, तो उस वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता है। (३७) और सूरज अपने मुक़र्रर रास्ते पर चलता रहता है। यह (ख़ुदा-ए-) ग़ालिब (और) दाना का (मुक़र्रर किया हुआ) अन्दाज़ा है। (३८) और चांद की भी हम ने मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं, यहां तक कि (घटते-घटते) खजूर की पुरानी शाख की तरह हो जाता है। (३९)

▨ व. ग़ुफ़रान ★रु. २/१ आ २०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्‌रिकल्-क़-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्नहारि॰ व कुल्लुन्
फ़ी फ़-लकिय्यस्बहून (४०) व आयतुल्लहुम् अन्ना ह्-मल्ना ज़ुर्रिय्य-त-हुम् फ़िल्-
फ़ुल्किल्-मश्हून ॥ (४१) व ख़-लक़्ना लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून (४२) व
इन्न-शअ् नुग़्‌रिक़्-हुम् फ़ला स़री-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ून ॥ (४३) इल्ला रह़्-
म-तम्-मिन्ना व मताअ़न् इला ह़ी-न् (४४)
व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व
मा ख़ल्फ़कुम् ल-अ़ल्लकुम् तुर्ह़मून (४५) व
मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम्मिन् आयाति
रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ़-रिज़ीन
(४६) व इज़ा क़ी-ल लहुम् अन्फ़िक़ू
मिम्मा र-ज़ - क़कुमुल्लाहु ॥ क़ालल्लज़ी - न
क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्‌अिमु मल्लौ
यशाउल्लाहु अत़ - अ़ - महू ﷺ इन्
अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिम् - मुबीन
(४७) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्वअ़्-दु इन्
कुन्तुम् सादिक़ीन (४८) मा यन्ज़ुरू-न इल्ला
सैह़तंव्वाहि़-द-तन् तअ्-ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून
(४९) फ़ला यस्ततीअू-न तौसि-य-तंव-व ला इला अह्लिहिम् यर्जिअ़ून ★ (५०) व
नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून (५१) क़ालू
यावैलना मम्ब-अ़-स़ना मिम्-मर्क़दिना ▨ हाज़ा मा व-अ़-दर्रह़्मानु व स़-द-क़ल्-मुर्सलून
(५२) इन् कानत् इल्ला सैह़तंव्वाहि़-द-तन् फ़इज़ा हुम् जमीअ़ुल्लदैना मुह़्ज़रून
(५३) फ़ल्यौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्-व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम्
तअ्-मलून (५४) इन-न अस़्ह़ाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फ़ी शुग़ुलिन् फ़ाकिहून ॥ (५५)
हुम् व अज़्वाजुहुम् फ़ी ज़िलालिन् अ़-लल्-अराइकि मुत्तकिऊन (५६) लहुम्
फ़ीहा फ़ाकिहतुंव्-व लहुम् मा यद्दअ़ून ﷺ (५७) सलामुन् क़ौलम् -
मिर्रब्बिर्-रहीम (५८) वम्ताज़ुल् यौ-म अय्युहल् - मुज्रिमून (५९)

يٰسٓ ٣٦ ٣٥٤ ومالی ٢٣

الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا
ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا
يَرْكَبُوْنَ ۝ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝ اِلَّا
رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ
اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ
مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا
مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَاۗءُ
اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ڰ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا
الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً
تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى
اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ
يَنْسِلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۫ هٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ
جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ
اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝
هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَاۗىِٕكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ
وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ ۣ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝ وَامْتَازُوا

منزل ٥

★रु. ३/२ आ १८ ▨ व. लाज़िम व. ग़ुफ़रान व. मंज़िल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

न तो सूरज ही से हो सकता है कि चांद को जा पकड़े और न रात ही दिन से पहले आ सकती है और सब अपने दायरे में तैर रहे हैं। (४०) और एक निशानी उन के लिए यह है कि हम ने उन की औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया। (४१) और उन के लिए वैसी ही और चीज़ें पैदा कीं, जिन पर वे सवार होते हैं। (४२) और अगर हम चाहें, तो उन को डुबा दें, फिर न तो उन की कोई फ़रियाद सुनने वाला हो और न उन को रिहाई मिले, (४३) मगर यह हमारी रहमत और एक मुद्दत तक के फ़ायदे हैं। (४४) और जब उन से कहा जाता है कि जो तुम्हारे आगे और जो तुम्हारे पीछे है, उस से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (४५) और उन के पास उन के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी नहीं आयी, मगर उन से मुंह फेर लेते हैं। (४६) और जब उन से कहा जाता है कि जो रोज़ी ख़ुदा ने तुम को दी है, उस में से ख़र्च करो, तो काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि भला हम उन लोगों को खाना खिलाएं, जिन को अगर ख़ुदा चाहता, तो ख़ुद खिला देता, तुम तो खुली ग़लती में हो। (४७) और कहते हैं कि अगर तुम सच कहते हो, तो यह वायदा कब (पूरा) होगा ? (४८) ये तो चिंघाड़ के इन्तिज़ार में हैं, जो उन को इस हाल में कि आपस में झगड़ रहे होंगे, आ पकड़ेगी। (४९) फिर न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों में वापस जा सकेंगे। (५०)★

और (जिस वक़्त) सूर[१] फूंका जाएगा, यह क़ब्रों से (निकल कर) अपने परवरदिगार की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे। (५१) कहेंगे, (ऐ हे!) हमें हमारी ख़्वाबगाहों से किस ने (जगा) उठाया ▨ यह वही तो है जिस का ख़ुदा ने वायदा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था। (५२) सिर्फ़ एक ज़ोर की आवाज़ का होना होगा कि सब के सब हमारे सामने आ हाज़िर होंगे। (५३) उस दिन किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे। (५४) जन्नत वाले उस दिन ऐश व निशात के मश्ग़ले में होंगे, (५५) वे भी और उन की बीवियां भी, सायों में तख़्तों पर तकिए लगाए बैठे होंगे। (५६) वहां उन के लिए मेवे और जो चाहेंगे, (मौजूद होगा)। (५७) परवरदिगार मेहरबान की तरफ़ से सलाम (कहा जाएगा)। (५८)

१. सूर दो बार फूंका जाएगा। पहली बार के बाद सब लोग बेहोश हो जाएंगे और उन पर नींद की हालत छा जाएगी। दूसरी बार के बाद सब ज़िंदा हो जाएंगे। चूंकि पहले सूर के बाद उन की हालत यह होगी कि गोया सो रहे हैं, इस लिए दूसरे सूर के बाद यह ख़्याल करेंगे कि नींद से जागे हैं, तब कहेंगे कि ऐ हे! हम को किस ने जगा दिया।

★रु. ३/२ आ १८ ▨ व. लाज़िम व. ग़ुफ़रान व. मंज़िल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-लम् अअ्-हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ्-बुदुश्शैता-न इन्नहू लकुम्
अदुव्वुम् मुबीनुंव- (६०)- व अनिअ्-बुदूनी ▨ हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (६१) व
ल-क़द् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन् अ-फ़-लम् तकूनू तअ्-क़िलून (६२)
हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तूअदून (६३) इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून
(६४) अल्यौ-म नख़्तिमु अला अफ़्वाहिहिम् व
तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्हदु अर्जुलुहुम्
बिमा कानू यक्सिबून (६५) व लौ नशाउ
ल-त-मस्ना अला अअ्-युनिहिम् फ़स्त-बक़ुस्-
सिरा-त फ़-अन्ना युब्सिरून (६६) व लौ
नशाउ ल-म-सख़्नाहुम् अला मकानतिहिम्
फ़मस्तताअू मुज़िय्यंव्-व ला यर्जिअून ★ (६७)
व मन् नुअम्मिर्हु नुनक्किस्हु फ़िल्ख़ल्क़ि
अ-फ़ला यअ्-क़िलून (६८) व मा अल्लम्ना-
हुश्-शिअ्-र व मा यम्बग़ी लहू इन् हु-व इल्ला
ज़िक्रुंव्-व क़ुर्आनुम्-मुबीनुल- (६९) लियुन्जि-र
मन् का-न हय्यंव्-व यहिक़्क़ल्-क़ौलु अलल्-

يٰسٓ ٣٦ — ٣٥٥ — وما لي ٢٣

الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا
الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ۝
هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝
اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ
فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا
مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا
يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ
مُّبِيْنٌ ۝ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَوَ
لَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ۝
وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۝ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ۝
فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَ
الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَضَرَبَ
لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ۝ قُلْ

وقف غفران — ركوع ٤ — وقف لازم — منزل

काफ़िरीन (७०) अ-व लम् यरौ अन्ना ख़-लक़्ना लहुम् मिम्मा अमिलत् ऐदीना
अन्आमन् फ़हुम् लहा मालिकून (७१) व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम्
व मिन्हा यअ्कुलून (७२) व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु व मशारिबु अ-फ़ला यश्कुरून
(७३) वत्तख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-ह-तल्-लअल्लहुम् युन्सरून (७४) ला
यस्ततीअू-न नस्रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम्-मुह्ज़रून (७५) फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलु-
हुम् ▨ इन्ना नअ्-लमु मा युसिर्रून व मा युअ्-लिनून (७६) अ-व लम् यरल्-इन्सानु
अन्ना ख़-लक़्नाहु मिन् नुत्फ़तिन् फ़इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (७७) व ज़-र-ब लना
म-स-लंव्-व नसि-य ख़ल्क़हू क़ा-ल मंय्युह्यिल्-अिज़ा-म व हि-य रमीम (७८)

▨ व. ग़ुफ़रान ★ रु. ४/३ आ १७ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और गुनाहगारो ! तुम आज अलग हो जाओ। (५९) ऐ आदम की औलाद ! हम ने तुम से कह नहीं दिया था कि शैतान को न पूजना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६०) और यह कि मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (६१) और उस ने तुम में से बहुत-सी खल्क़त को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम समझते नहीं थे ? (६२) यही वह जहन्नम है, जिस की तुम्हें ख़बर दी जाती थी। (६३) (सो,) जो तुम कुफ़्र करते रहे, उस के बदले आज इस में दाख़िल हो जाओ। (६४) आज हम उन के मुंहों पर मुहर लगा देंगे और जो कुछ ये करते रहे थे, उन के हाथ हम से बयान कर देंगे और उन के पांव (उस की) गवाही देंगे। (६५) और अगर हम चाहें तो उन की आंखों को मिटा (कर अंधा कर) दें, फिर ये रास्ते को दौड़ें, तो कहां देख सकेंगे ? (६६) और हम चाहें तो उन की जगह उन की शक्लें बदल दें, फिर वहां से न आगे जा सकें, न पीछे लौट सकें। (६७)★

और जिस को हम बड़ी उम्र देते हैं, तो उसे खल्क़त में औंधा कर देते हैं,[1] तो क्या ये समझते नहीं ?[2] (६८) और हम ने उन (पैग़म्बर) को शेर कहना नहीं सिखाया और न वह उन को मुनासिब है। यह तो सिर्फ़ नसीहत और साफ़-साफ़ क़ुरआन (हिक्मत से भरा हुआ) है, (६९) ताकि उस शख़्स को जो ज़िंदा हो, हिदायत का रास्ता दिखाए और काफ़िरों पर बात पूरी हो जाए। (७०) क्या उन्होंने नहीं देखा कि जो चीज़ें हमने अपने हाथों से बनायीं हम ने उन में से उन के लिए चारपाए पैदा कर दिए और ये उन के मालिक हैं। (७१) और उन को उन के क़ाबू में कर दिया, तो कोई तो उन में से उन की सवारी है और किसी को ये खाते हैं। (७२) और उन में उन के लिए (और) फ़ायदे और पीने की चीज़ें हैं, तो क्या ये शुक्र नहीं करते ? (७३) और उन्हों ने ख़ुदा के सिवा (और) माबूद बना लिए हैं कि शायद (उन से) उन को मदद पहुंचे। (७४) (मगर) वे उन की मदद की (हरगिज़) ताक़त नहीं रखते और वे उन की फ़ौज हो कर हाज़िर किए जाएंगे।[3] (७५) तो उन की बातें तुम्हें ग़मनाक न कर दें▨ यह जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, हमें सब मालूम हैं। (७६) क्या इंसान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह तड़ाक-पड़ाक झगड़ने लगा। (७७) और हमारे बारे में मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कि (जब) हड्डियां सड़-गल जाएंगी, तो इन को कौन ज़िंदा करेगा ? (७८) कह दो कि उन को वह ज़िंदा

---

१. यानी बच्चे से जवान करते हैं, फिर जवान से बूढ़ा कर देते हैं।

२. जो ख़ुदा इन्सान की बनावट को इस तरह बदल देता है, वह इस पर भी क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को जिला उठाए।

३. यानी क़ियामत के दिन, जहां से बुतपरस्त ख़ुदा के सामने हाज़िर किए जाएंगे, वहां यह बुत भी, जो बुतपरस्तों का लश्कर होगा, जवाबदेही के लिए हाज़िर किया जाएगा। कुछ ने यही मतलब निकाले हैं कि वह यानी बुत ख़ुद अपनी मदद तो कर सकते ही नहीं और बुतपरस्त उन की हिफ़ाज़त के लिए एक लश्कर बन कर उन के सामने मौजूद रहते हैं। ऐसे बे-अख़्तियार और बे-बस उन की क्या मदद करेंगे ?

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

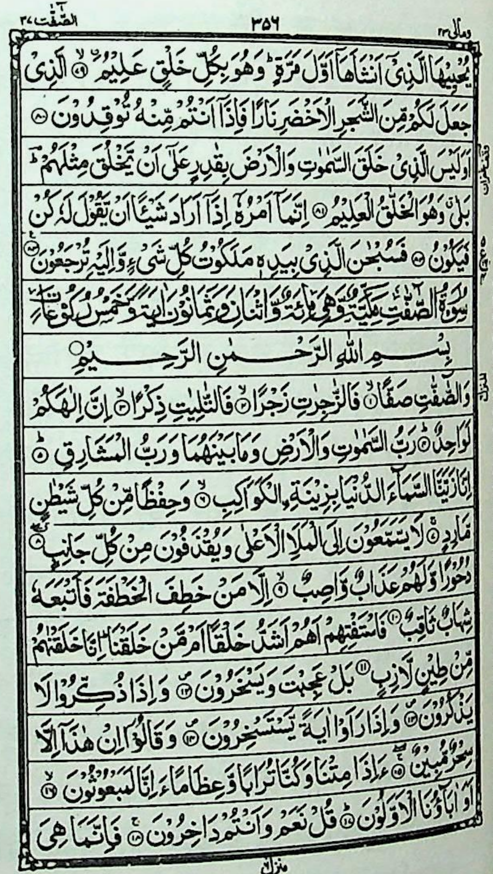
क़ुल् युह्-यीहल्लज़ी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन्‌ व हु-व बिकुल्लि ख़ल्किन् अ़लीमु-नि-
(७९) ल्लज़ी ज-अ़-ल लकुम् मिनश्-श-जरिल्-अख़्-ज़रि नारन् फ़इज़ा अन्तुम् मिन्हु
तूक़िदून (८०) अ-व लैसल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिक़ादिरिन् अ़ला
अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम् बला व हुवल्ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (८१) इन्नमा अम्रुहू
इज़ा अरा-द शैअन् अंय्यक़ू-ल लहू कुन्
फ़-यकून (८२) फ़-सुब्हानल्लज़ी बियदिही
म-लकूतु कुल्लि शैइंव-व इलैहि तुर्जअ़ून ★ (८३)

३७ सूरतुस्साफ़्फ़ाति ५६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३९५१ अक्षर, ८७३ शब्द, १८२ आयतें और ५ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न् (१)
फ़ज़्ज़ाजिराति ज़ज्रन् (२) फ़त्तालियाति
ज़िक्रन् (३) इन् - न इलाहकुम्
ल-वाहिद (४) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि
व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़ (५)
इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिज़ीनतिनि-ल्-



कवाकिब (६) व हिफ़्ज़म्-मिन् कुल्लि शैतानिम्-मारिद (७) ला यस्सम्मअ़ू-न
इलल्-म-ल-इल्-अअ़्-ला व युक़्ज़फ़ू-न मिन् कुल्लि जानिब (८) दुहूरंव-व लहुम्
अ़ज़ाबुंव्वासिब (९) इल्ला मन् ख़तिफ़ल्-ख़त्फ़-त फ़-अत्ब-अ़हू शिहाबुन् साक़िब
(१०) फ़स्तफ़्तिहिम् अहुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम्मन् ख़-लक़्ना इन्ना ख़-लक़्नाहुम्
मिन् तीनिल्-लाज़िब (११) बल् अ़जिब-त व यस्ख़रून (१२) व इज़ा ज़ुक्किरू
ला यज़्कुरून (१३) व इज़ा रऔ आयतंय्यस्तस्ख़िरून (१४) व क़ालू इन् हाज़ा
इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (१५) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ इन्ना ल-
मब्अ़ूसून (१६) अ-व आबाउनल्-अव्वलून (१७) क़ुल् न-अ़म् व अन्तुम् दाख़िरून (१८)

व. ग़ुफ़्रान ★ रु. ५/४ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करेगा, जिस ने उन को पहली वार पैदा किया था और वह सब क़िस्म का पैदा करना जानता है। (७९) (वही) जिस ने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग पैदा की, फिर तुम उस (की टहनियों को रगड़ कर उन) से आग निकालते हो।[1] (८०) भला जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ुदरत नहीं रखता कि (उन को फिर) वैसे ही पैदा कर दें क्यों नहीं, और वह तो बड़ा पैदा करने वाला (और) इल्म वाला है। (८१) उस की शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस से फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (८२) वह (ज़ात) पाक है, जिस के हाथ में हर चीज़ की वादशाही है और उस की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (८३)★

३७ सूरः साफ़्फ़ात ५६

सूरः साफ़्फ़ात मक्की है, इस में एक सौ बयासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम सफ़ बांधने वालों की, परा जमा कर,[2] (१) फिर डांटने वालों की, झिड़क कर,[3] (२) फिर ज़िक्र (यानी क़ुरआन) पढ़ने वालों की,[4] (ग़ौर कर-कर)[5], (३) कि तुम्हारा माबूद एक ही है, (४) जो आसमानों और ज़मीन और जो चीज़ें इन में हैं, सब का मालिक है और सूरज के निकलने की जगहों का भी मालिक है। (५) बेशक हम ही ने दुनिया के आसमान को सितारों की ज़ीनत से सजाया। (६) और हर शैतान सरकश से उस की हिफ़ाज़त की, (७) कि ऊपर की मज्लिस की तरफ़ कान न लगा सकें और हर तरफ़ से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं। (८) (यानी वहां से) निकाल देने को और उन के लिए हमेशा का अज़ाब है। (९) हां, जो कोई (फ़रिश्तों की किसी बात को) चोरी से झपट लेना चाहता है, तो जलता हुआ अंगारा उस के पीछे लगता है। (१०) तो उन से पूछो कि उन का बनाना मुश्किल है या जितनी ख़ल्क़त हमने बनायी है उन का ? उन्हें हमने चिपकते गारे से बनाया है। (११) हां, तो तुम ताज्जुब करते हो और ये मज़ाक़ उड़ाते हैं। (१२) और जब उन को नसीहत दी जाती है, तो नसीहत क़ुबूल नहीं करते। (१३) और जब कोई निशानी देखते हैं, तो ठट्ठे करते हैं। (१४) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है, (१५) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये, तो क्या फिर उठाए जाएंगे ? (१६) और क्या हमारे बाप-दादा भी (जो) पहले (हो गुज़रे हैं) ? (१७)

---

१. कहते हैं कि बांस या कुछ और पेड़ ऐसे हैं कि रहते तो हरे हैं, लेकिन अगर उन की शाख़ों को रगड़ा जाए, तो उन में से आग निकलती है और यह ख़ुदा की बहुत बड़ी क़ुदरत की दलील है।

२. सफ़ बांधने वालों से मुराद या तो मुजाहिद हैं, जो लड़ाई के बाद में सफ़ बांध कर खड़े होते हैं या नमाज़ी या फ़रिश्ते कि वे भी सफ़ में मिल कर और पैर जमा कर खड़े होते हैं।

३. डांटने वालों से या तो ग़ाज़ी मुराद हैं, जो अपने घोड़ों को दूर से डांट कर हमला करते हैं या रब्बानी इल्म रखने वाले मुराद हैं, जो लोगों को गुनाह करने पर गुनाह से रोकने के लिए डांटते हैं।

४. फ़रिश्ते खड़े होते हैं क़तार हो कर अल्लाह का हुक्म सुनने को, फिर झिड़कते हैं शैतानों को, जो सुनने को जा लगते हैं, फिर जब उतर चुका, उस को जा लगते हैं, फिर जब उतर चुका, उस को पढ़ते हैं एक दूसरे को बताने को।

५. क़ुरआन पढ़ने वालों से या तो वे लोग मुराद हैं, जो लड़ाई से फ़ारिग़ हो कर क़ुरआन की तिलावत में लग जाते

(शेष पृष्ठ ७११ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-इन्नमा हि-य ज़जरतुंव्वाहि-द-तुन् फ़इज़ा हुम् यन्ज़ुरून (१९) व क़ालू या वैलना
हाज़ा यौमुद्दीन (२०) हाज़ा यौमुल्-फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून ★ (२१)
उह्शुरुल्लज़ी-न ज़लमू व अज़्वाजहुम् व मा कानू यअ्-बुदून (२२) मिन् दूनिल्-
लाहि फ़ह्दूहुम् इला सिरातिल् जहीम ● (२३) व क़िफ़ूहुम् इन्नहुम् मस्ऊलून
(२४) मा लकुम् ला तनासरून (२५)
बल् हुमुल्यौ-म मुस्तस्लिमून (२६) व अक़्ब-ल
बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िंय्य-त-सा-अलून (२७)
क़ालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ्-तूनना अनिल्यमीन
(२८) क़ालू बल् लम् तकूनू मुअ्मिनीन
(२९) व मा का-न लना अलैकुम् मिन्
सुल्तानिन् बल् कुन्तुम् क़ौमन् ताग़ीन (३०)
फ़-हक़्-क़ अलैना क़ौलु रब्बिना इन्ना ल-ज़ाइ-
क़ून (३१) फ़-अग़्वैनाकुम् इन्ना कुन्ना ग़ावीन
(३२) फ़-इन्नहुम् यौमइज़िन् फ़िल्अज़ाबि
मुश्तरिकून (३३) इन्ना कज़ालि-क नफ़्अलु
बिल्-मुज्रिमीन (३४) इन्नहुम् कानू इज़ा
क़ी-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून (३५) व यक़ूलू-न अ-इन्ना ल-
तारिकू आलिहतिना लिशाअिरिम्-मज्नून (३६) बल् जा-अ बिल्हक़्क़ि व सद्-द-
क़ल्-मुर्सलीन (३७) इन्नकुम् लज़ाइक़ुल्-अज़ाबिल्-अलीम (३८) व मा तुज्ज़ौ-न
इल्ला मा कुन्तुम् तअ्-मलून (३९) इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन (४०)
उलाइ-क लहुम् रिज़्क़ुम्-मअ्-लूम (४१) फ़वाकिहु व हुम् मुक्रमून (४२) फ़ी
जन्नातिन्नअीम् (४३) अला सुरुरिम्-मु-त-क़ाबिलीन (४४) युताफ़ु अलैहिम् बिकअ्-
सिम्-मिम्मअीनिम्- (४५) बैज़ा-अ लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबीन (४६) ला फ़ीहा ग़ौलुंव्-
व ला हुम् अन्हा युन्ज़फ़ून (४७) व अिन्दहुम् क़ासिरातुत्तर्फ़ि अीनुन् (४८)

الصّٰفّٰت ٣٧ ٣٥٨ ومالي ٢٣

زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝ وَقَالُوا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ
الدِّينِ ۝ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ اُحْشُرُوا
الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللّٰهِ
فَاهْدُوهُمْ إِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۝ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ۝ مَا
لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۝ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ۝
قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ
بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِينَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا إِنَّا لَذَائِقُونَ ۝
فَأَغْوَيْنٰكُمْ إِنَّا كُنَّا غٰوِينَ ۝ فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ
مُشْتَرِكُونَ ۝ إِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا
قِيلَ لَهُمْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوا
اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ۝ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّكُمْ
لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ أُولٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ
وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۝ فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِينَ ۝
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ۝ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِينَ ۝
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ

منزل

★ रु. १/५ आ २१ ● रुबअ् १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कह दो कि हां, और तुम ज़लील होगे। (१८) वह तो एक ज़ोर की आवाज़ होगी और ये उस वक़्त देखने लगेंगे। (१९) और कहेंगे, हाय शामत! यही बदले का दिन है। (२०) (कहा जाएगा कि हां,) फ़ैसले का दिन, जिस को तुम झूठ समझते थे, यही है। (२१)★

जो लोग ज़ुल्म करते थे, उन को और उन के हमजिंसों को और जिन की वे पूजा करते थे, (सब को) जमा कर लो। (२२) (यानी जिन को) ख़ुदा के सिवा (पूजा करते थे) फिर उन को जहन्नम के रास्ते पर चला दो● (२३) और उन को ठहराए रखो कि उन से (कुछ) पूछना है। (२४) तुम को क्या हुआ कि एक दूसरे की मदद नहीं करते, (२५) बल्कि आज तो वे फ़रमांबरदार हैं। (२६) और एक दूसरे की तरफ़ रुख़ कर के सवाल (व जवाब) करेंगे। (२७) कहेंगे, क्या तुम ही हमारे पास दाएं (और बाएं) से आते थे। (२८) वे कहेंगे, बल्कि तुम ही ईमान लाने वाले न थे। (२९) और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर न था, बल्कि तुम सर-कश लोग थे। (३०) सो हमारे बारे में हमारे परवरदिगार की बात पूरी हो गयी, अब हम मज़े चखेंगे। (३१) हमने तुम को भी गुमराह किया (और) हम ख़ुद भी गुमराह थे। (३२) पस वे उस दिन अज़ाब में एक दूसरे के शरीक होंगे। (३३) हम गुमराहों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (३४) उन का यह हाल था कि जब उन से कहा जाता था कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, तो घमंड करते थे। (३५) और कहते थे कि भला हम एक दीवाने शायर के कहने से कहीं अपने माबूदों को छोड़ देने वाले हैं। (३६) (नहीं) बल्कि वे हक़ ले कर आए हैं और (पहले) पैग़म्बरों को सच्चा कहते हैं। (३७) बेशक तुम तक्लीफ़ देने वाले अज़ाब का मज़ा चखने वाले हो। (३८) और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे, (३९) मगर जो ख़ुदा के ख़ास बन्दे हैं। (४०) यही लोग हैं, जिन के लिए रोज़ी मुक़र्रर है। (४१) (यानी) मेवे और उन का एज़ाज़ किया जाएगा। (४२) नेमत के बाग़ों में, (४३) एक दूसरे के सामने तख़्तों पर (बैठे होंगे), (४४) शराबे लतीफ़ के जाम का उन में दौर चल रहा होगा, (४५) जो रंग की सफ़ेद और पीने वालों के लिए (सरासर) लज़्ज़त होगी, (४६) न उस से सर-दर्द हो और न वे उस से मतवाले हों, (४७) और उन के पास औरतें होंगी, जो निगाहें नीची रखती होंगी और आंखें बड़ी-बड़ी, (४८) गोया

(पृष्ठ ७०९ का शेष)
हैं या आम क़ुरआन पढ़ने वाले। चूंकि अल्लाह तआला ने इन ख़ूबियों के लोगों की क़स्में खायी हैं, इस लिए समझना चाहिए कि उस के नज़दीक उन की बड़ी बड़ाई है। 'ग़ौर कर-कर' लफ़्ज़ जो तर्जुमे में बढ़ाया गया है, इस से एक तो इबारत फ़ाफ़िएदार हो गयी है, दूसरे यह ज़ाहिर करना मक़्सूद है कि क़ुरआन का पढ़ना इसी शक्ल में मुफ़ीद हो सकता है और इस के पढ़ने से जो ग़रज़ है, वह तभी पूरी हो सकती है, जब ग़ौर व फ़िक्र कर के पढ़ा जाए। क़ुरआन मजीद का नाज़िल करने वाला फ़रमाता है, ऐ मुहम्मद! यह क़ुरआन एक बरकत वाली किताब है, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है। मक़्सूद यह है कि लोग उस की आयतों पर ग़ौर करें और अक़्ल वाले उस से नसीहत पकड़ें।

★रु. १/५ आ २१ ● रुबुअ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क-अन्नहुन्-न बैज़ुम्-मक्नून (४९) फ़-अक़्ब-ल बअ्-ज़ुहुम् अ़ला बअ्-ज़िय्य-तसा-
अलून (५०) क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् इन्नी का-न ली क़रीनुंय्-ﻻ(५१) - यक़ूलु
अइन्न-क लमिनल्-मुसद्दिक़ीन (५२) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव-व अ़िज़ा-
मन् अ-इन्ना ल-मदीनून (५३) क़ा-ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअून (५४) फ़त्त-ल-अ
फ़-र-आहु फ़ी सवाइल्-जहीम (५५) क़ा-ल
तल्लाहि इन् कित्-त ल-तुर्दीनि ﻻ(५६) व लौ
ला निअ्-मतु रब्बी लकुन्तु मिनल्-मुह़्ज़रीन
(५७) अ-फ़मा नह़्नु बिमय्यितीन ﻻ(५८) इल्ला
मौत-त-नल्-ऊला व मा नह़्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन
(५९) इन्न हाज़ा लहुवल् - फ़ौज़ुल्-
अ़ज़ीम (६०) लिमिस्लि हाज़ा फ़ल्यअ्-मलिल्-
आ़मिलून (६१) अ ज़ालि-क ख़ैरुन् नुज़ुलन्
अम् श-ज-रतुज़्-ज़क़्क़ूम (६२) इन्ना
ज-अ़ल्नाहा फ़ित्-न-तल्-लिज़्ज़ालिमीन (६३)
इन्नहा श-ज-रतुन् तख़्रुजु फ़ी अस्लिल्-जहीमि ﻻ
(६४) तल्अुहा क-अन्नहू रुऊसुश्-शयातीन

ومالي ٢٣ ٣٥٨ الصّٰفّٰت ٣٧

عِينٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيۡضٌ مَّكۡنُوۡنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقۡبَلَ بَعۡضُهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ
يَّتَسَآءَلُوۡنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنۡهُمۡ اِنِّىۡ كَانَ لِىۡ قَرِيۡنٌ ﴿٥١﴾ يَّقُوۡلُ اَئِنَّكَ
لَمِنَ الۡمُصَدِّقِيۡنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتۡنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيۡنُوۡنَ ﴿٥٣﴾
قَالَ هَلۡ اَنۡتُمۡ مُّطَّلِعُوۡنَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِىۡ سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ
تَاللّٰهِ اِنۡ كِدۡتَّ لَـتُرۡدِيۡنِ ﴿٥٦﴾ وَلَوۡلَا نِعۡمَةُ رَبِّىۡ لَـكُنۡتُ مِنَ
الۡمُحۡضَرِيۡنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحۡنُ بِمَيِّتِيۡنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوۡتَتَنَا الۡاُوۡلٰى وَمَا نَحۡنُ
بِمُعَذَّبِيۡنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثۡلِ هٰذَا فَلۡيَعۡمَلِ
الۡعٰمِلُوۡنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ خَيۡرٌ نُّزُلًا اَمۡ شَجَرَةُ الزَّقُّوۡمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلۡنٰهَا فِتۡنَةً
لِّلظّٰلِمِيۡنَ ﴿٦٣﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخۡرُجُ فِىۡۤ اَصۡلِ الۡجَحِيۡمِ ﴿٦٤﴾ طَلۡعُهَا كَاَنَّهٗ
رُءُوۡسُ الشَّيٰطِيۡنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمۡ لَاٰكِلُوۡنَ مِنۡهَا فَمَالِئُوۡنَ مِنۡهَا الۡبُطُوۡنَ ﴿٦٦﴾
ثُمَّ اِنَّ لَهُمۡ عَلَيۡهَا لَشَوۡبًا مِّنۡ حَمِيۡمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرۡجِعَهُمۡ لَا۟اِلَى
الۡجَحِيۡمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمۡ اَلۡفَوۡا اٰبَآءَهُمۡ ضَآلِّيۡنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمۡ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ يُهۡرَعُوۡنَ ﴿٧٠﴾
وَلَقَدۡ ضَلَّ قَبۡلَهُمۡ اَكۡثَرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٧١﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا فِيۡهِمۡ
مُّنۡذِرِيۡنَ ﴿٧٢﴾ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ
الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدۡ نَادٰٮنَا نُوۡحٌ فَلَنِعۡمَ الۡمُجِيۡبُوۡنَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيۡنٰهُ
وَاَهۡلَهٗ مِنَ الۡكَرۡبِ الۡعَظِيۡمِ ﴿٧٦﴾ وَجَعَلۡنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الۡبٰقِيۡنَ ﴿٧٧﴾
وَتَرَكۡنَا عَلَيۡهِ فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ﴿٧٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰى نُوۡحٍ فِى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٧٩﴾

(६५) फ़-इन्नहुम् ल-आकिलू-न मिन्हा फ़मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून ط(६६) सुम्-म
इन्-न लहुम् अ़लैहा लशौबम्-मिन् ह़मीम ط(६७) सुम्-म इन्-न मर्जि-अहुम् ल-इलल्-
जहीम (६८) इन्नहुम् अल्फ़ौ आबा-अहुम् ज़ाल्लीन ﻻ(६९) फ़हुम् अ़ला आसा-
रिहिम् युह्-रअून (७०) व ल-क़द् ज़ल्-ल क़ब्-लहुम् अक्सरुल्-अव्वलीन ﻻ(७१)
व ल-क़द् अर्सल्ना फ़ीहिम् मुन्ज़िरीन (७२) फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल्-
मुन्ज़रीन ﻻ(७३) इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन★(७४) व ल-क़द् नादाना
नूह़ुन् फ़-लनिअ्-मल्-मुजीबून ﻻ(७५) व नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल्-कर्बिल्-अ़ज़ीम
(७६) व ज-अ़ल्ना ज़ुर्रिय्य-तहू हुमुल्-बाक़ीन ﻻ(७७) व त-रक्ना अ़लैहि फ़िल्-
आख़िरीन ﻻ(७८) सलामुन् अ़ला नूह़िन् फ़िल् - आ़लमीन (७९)

★रु. २/६ आ ५३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वह महफ़ूज़ अंडे हैं, (४९) फिर वे एक दूसरे की तरफ़ रुख करके सवाल (व जवाब) करेंगे।(५०) एक कहने वाला उन में से कहेगा कि मेरा एक साथी था, (५१) (जो) कहता था कि भला तुम भी (ऐसी बातों के) मान लेने वालों में हो, (५२) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये तो क्या हम को बदला मिलेगा? (५३) (फिर) कहेगा कि भला तुम (उसे) झांक कर देखना चाहते हो? (५४) (इतने में) वह (खुद) झांकेगा, तो उस को दोज़ख के बीच में देखेगा। (५५) कहेगा, कि ख़ुदा की क़सम! तू तो मुझे हलाक ही कर चुका था। (५६) और अगर मेरे परवरदिगार की मेहरबानी न होती तो मैं भी उन में होता जो (अज़ाब में) हाज़िर किए गए हैं। (५७) क्या (यह नहीं कि) हम (आगे कभी) मरने के नहीं। (५८) हां, (जो) पहली बार मरना (था, सो मर चुके) और हमें अज़ाब भी नहीं होने का, (५९) बेशक यह बड़ी कामियाबी है। (६०) ऐसी ही (नेमतों) के लिए अमल करने वालों को अमल करने चाहिएं। (६१) भला यह मेहमानी अच्छी है या थूहर का पेड़? (६२) हमने उसको ज़ालिमों के लिए अज़ाब बना रखा है। (६३) वह एक पेड़ है कि जहन्नम के निचले हिस्से में उगेगा। (६४) उसके खोशे ऐसे होंगे, जैसे शैतानों के सर, (६५) सो वे उसी में से खाएंगे और उसी से पेट भरेंगे। (६६) फिर उस (खाने) के साथ उनको गर्म पानी मिला कर दिया जाएगा। (६७) फिर उनको दोज़ख की तरफ़ लौटाया जाएगा। (६८) उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह ही पाया। (६९) सो वे उन्हीं के पीछे दौड़े चले जाते हैं। (७०) और उनसे पहले बहुत से पहले लोग भी गुमराह हो गये थे, (७१) और हमने उन में तंबीह करने वाले भेजे। (७२) सो देख लो, जिन को तंबीह की गयी थी, उन का अंजाम कैसा हुआ? (७३) हां, ख़ुदा के ख़ास बन्दों (का अंजाम बहुत अच्छा हुआ)। (७४)★

और हम को नूह ने पुकारा, सो (देख लो कि) हम (दुआ को कैसे) अच्छे क़ुबूल करने वाले हैं। (७५) और हम ने उन को और उन के घर वालों को बड़ी मुसीबत से निजात दी। (७६) और उन की औलाद को ऐसा किया कि वही बाक़ी रह गये। (७७) और पीछे आने वालों में उन का (अच्छा) ज़िक्र (बाक़ी) छोड़ दिया। (७८) (यानी) तमाम जहान में (कि) नूह पर

★रु. २/६ आ ५३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (८०) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन
(८१) सुम्-म अग़्-रक़्-नल्-आख़रीन (८२) व इन्-न मिन् शी-अतिही ल-
इब्राहीम▨(८३) इज़् जा-अ रब्बहू बिक़ल-बिन् सलीम (८४) इज़् क़ा-ल
लिअबीहि व क़ौमिही माज़ा तअ्-बुदून ८(८५) अ-इफ़्क़न् आलि-ह-तन् दूनल्लाहि
तुरीदून ᵇ(८६) फ़ मा ज़न्नुकुम् बिरब्बिल्-
आलमीन (८७) फ़-न-ज़-र नज़्-र-तन्
फ़िन्नुजूमि ᵇ/(८८) फ़ क़ा-ल इन्नी सक़ीम
(८९) फ़-त-वल्लौ अन्हु मुद्बिरीन (९०)
फ़रा-ग़ इला आलिहतिहिम् फ़-क़ा-ल अला तअ्-
कुलून ८(९१) मा लकुम् ला तन्तिक़ून (९२)
फ़रा-ग़ अलैहिम् ज़र्बम्-बिल्यमीन (९३) फ़-
अक़्बलू इलैहि यज़िफ़्फ़ून (९४) क़ा-ल
अ-तअ्-बुदू-न मा तन्हितून ᵇ/(९५) वल्लाहु
ख़-ल-क़कुम् व मा तअ्-मलून (९६) क़ालुब्नू
लहू बुन्-यानन् फ़-अल्क़ूहु फ़िल्जहीम (९७) फ़-
अरादू बिही कैदन् फ़-ज-अल्ना-हुमुल्-अस्-फ़लीन
(९८) व क़ा-ल इन्नी ज़ाहिबुन् इला रब्बी स-यह्दीन (९९) रब्बि हब् ली
मिनस्सालिहीन (१००) फ़-बश्शर्नाहु बिग़ुलामिन् हलीम (१०१) फ़-लम्मा ब-ल-ग़
म-अहुस्सअ्-य क़ा-ल या बुनय्-य इन्नी अरा फ़िल्मनामि अन्नी अज़्बहु-क फ़न्ज़ुर्
माज़ा तराᵇ क़ा-ल या अ-बतिफ़्-अल् मा तुअ्-मरु ᵇ/स-तजिदुनी इन् शाअल्लाहु मिनस्-
साबिरीन (१०२) फ़-लम्मा अस्-लमा व तल्लहू लिल्जबीन ८(१०३) व नादैनाहु
अंय्या इब्राहीम ᵇ/(१०४) क़द् सद्-दक़्तर्-रुअ्या ८इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सि-
नीन (१०५) इन्-न हाज़ा ल-हुवल्-बलाउल्-मुबीन (१०६) व फ़दैनाहु बिज़िब्हिन् अज़ीम
(१०७) व त-रक्ना अलैहि फ़िल्-आख़िरीन ᵇ(१०८) सलामुन् अला इब्राहीम (१०९)
कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (११०) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१११)

وما لی ۲۳ — ۳۵۹ — الصّٰفّٰت ۳۷

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۱﴾
ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِیْنَ ﴿۸۲﴾ وَاِنَّ مِنْ شِیْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِیْمَ ﴿۸۳﴾ اِذْ جَآءَ
رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِیْمٍ ﴿۸۴﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِیْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۸۵﴾
اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِیْدُوْنَ ﴿۸۶﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۸۷﴾
فَنَظَرَ نَظْرَةً فِی النُّجُوْمِ ﴿۸۸﴾ فَقَالَ اِنِّیْ سَقِیْمٌ ﴿۸۹﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِیْنَ ﴿۹۰﴾
فَرَاغَ اِلٰۤی اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۹۱﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿۹۲﴾ فَرَاغَ
عَلَیْهِمْ ضَرْبًاۢ بِالْیَمِیْنِ ﴿۹۳﴾ فَاَقْبَلُوْۤا اِلَیْهِ یَزِفُّوْنَ ﴿۹۴﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ
مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿۹۵﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْیَانًا
فَاَلْقُوْهُ فِی الْجَحِیْمِ ﴿۹۷﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَیْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِیْنَ ﴿۹۸﴾
وَقَالَ اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ ﴿۹۹﴾ رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۰۰﴾
فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِیْمٍ ﴿۱۰۱﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْیَ قَالَ یٰبُنَیَّ اِنِّیْۤ
اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰی ؕ قَالَ یٰۤاَبَتِ افْعَلْ
مَا تُؤْمَرُ ؗ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۰۲﴾ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا
وَتَلَّهٗ لِلْجَبِیْنِ ﴿۱۰۳﴾ وَنَادَیْنٰهُ اَنْ یّٰۤاِبْرٰهِیْمُ ﴿۱۰۴﴾ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْیَا ۚ
اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِیْنُ ﴿۱۰۶﴾
وَفَدَیْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۰۷﴾ وَتَرَكْنَا عَلَیْهِ فِی الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰۤی
اِبْرٰهِیْمَ ﴿۱۰۹﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۱۰﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا

▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सलाम। (७९) भले लोगों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (८१) फिर हमने दूसरों को डुबो दिया। (८२) और उन्हीं की पैरवी करने वालों में इब्राहीम थे ▨ (८३) जब वह अपने परवरदिगार के पास (ऐब से) पाक दिल लेकर आए। (८४) जब उन्हों ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किन चीज़ों को पूजते हो? (८५) क्यों झूठ (बनाकर) ख़ुदा के सिवा और माबूदों की तलब में हो? (८६) भला दुनिया के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है?[1] (८७) जब उन्हों ने सितारों की तरफ़ एक नज़र की। (८८) और कहा मैं तो बीमार हूं। (८९) तब वे उन से पीठ फेर कर लौट गये। (९०) फिर (इब्राहीम) उन के माबूद की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहने लगे कि तुम खाते क्यों नहीं? (९१) तुम्हें क्या हुआ है, तुम बोलते नहीं? (९२) फिर उन को दाहिने हाथ से मारना (और तोड़ना) शुरू किया।[2] (९३) तो वे लोग उन के पास दौड़े हुए आए। (९४) उन्हों ने कहा कि तुम ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हो, जिन को ख़ुद तराशते हो, (९५) हालांकि तुम को और जो तुम बनाते हो, उस को ख़ुदा ही ने पैदा किया है। (९६) वे कहने लगे कि इस के लिए इमारत बनाओ, फिर उस को आग के ढेर में डाल दो। (९७) ग़रज़ उन्हों ने उन के साथ एक चाल चलनी चाही और हमने उन्हीं को ज़ेर (पसपा) कर दिया। (९८) और इब्राहीम बोले कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ जाने वाला हूं, वह मुझे रास्ता दिखाएगा। (९९) ऐ परवरदिगार! मुझे (औलाद) अता फ़र्मा (जो) सआदतमंदों में से (हो) (१००) तो हमने उन को एक नर्मदिल लड़के की ख़ुशख़बरी दी, (१०१) जब वह उन को साथ दौड़ने (की उम्र) को पहुंचा, तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा! मैं सपना देखता हूं कि (गोया) तुम को ज़िब्ह कर रहा हूं, तो तुम सोचो कि तुम्हारा क्या ख़्याल है?[3] उन्हों ने कहा कि अब्बा, जो आप को हुक्म हुआ है, वही कीजिए। ख़ुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब्र करने वालों में पाइएगा। (१०२) जब दोनों ने हुक्म मान लिया, और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया, (१०३) तो हमने उन को पुकारा कि ऐ इब्राहीम! (१०४) तुम ने सपने को सच्चा कर दिखाया, हम मुह्सिनों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१०५) बेशक यह खुली आज़माइश थी। (१०६) और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी को उन का फ़िद्या दिया।[4] (१०७) और पीछे आने वालों में इब्राहीम का (अच्छा) ज़िक्र (बाक़ी) छोड़ दिया, (१०८) कि इब्राहीम पर सलाम हो। (१०९) मुह्सिनों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (११०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१११) और हमने उन को इस्हाक़

---

१. क्या वह तुम को शिर्क करने पर पकड़ेगा नहीं और यों ही छोड़ देगा?

२. फिर वे लोग मेले में जाने लगे, तो हज़रत इब्राहीम अलै० से कहने लगे कि हमारे साथ मेले में चलिए। चूंकि वे लोग इस बात पर एतक़ाद रखते थे कि दुनिया का कारख़ाना सितारों की गर्दिश से चल रहा है, इस लिए हज़रत इब्राहीम ने सितारों पर एक नज़र की ताकि वे समझें कि जो हालत आप पर गुज़रे, वह सितारों की गर्दिश से होगी, तो आप ने कहा कि मैं तो बीमार हूं। यह उज़्र सुन कर वे चल दिए। इधर उन का जाना था, उधर आप ने उन के बुतों की तरफ़ तवज्जोह की और उन को तोड़ डाला।

३. इस में इख़्तिलाफ़ है कि बेटे से इस्माईल मुराद हैं या इस्हाक़। अक्सर तफ़्सीर लिखने वालों के नज़दीक इस्माईल मुराद हैं और यही सही है।

४. कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल को ज़िब्ह करने के लिए बड़ी कोशिश की, मगर छुरी ने जिस

(शेष पष्ठ ७१७ पर)

▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व बश्शर्-नाहु बिइस्हा-क़ नबिय्यम्-मिनस्सालिहीन (११२) व बारक्ना अलैहि व
अला इस्हा-क़ ط व मिन् ज़ुर्रिय्यतिहिमा मुह्सिनुंव्-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही मुबीन
★ (११३) व ल-क़द् म-नन्ना अला मूसा व हारून ج (११४) व नज्जैनाहुमा व
क़ौमहुमा मिनल्-कर्बिल्-अज़ीम ج (११५) व न-सर्-नाहुम् फ़-कानू हुमुल्-ग़ालिबीन ج
(११६) व आतैनाहुमल्-किताबल्-मुस्तबीन ج
(११७) व हदैना हुमस्सिरातल्-मुस्तक़ीम ج
(११८) व त-रक्ना अलैहिमा फ़िल्-आख़िरीन لا
(११९) सलामुन् अला मूसा व हारून (१२०)
इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्-सिनीन (१२१)
इन्नहुमा मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१२२)
व इन्-न इल्या-स लमिनल्-मुर्सलीन ط (१२३)
इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अला तत्तक़ून (१२४)
अ-तद्अू-न बअ्-लंव्-व त-ज़रू-न अह्-स-नल्
ख़ालिक़ीन ४ (१२५) अल्ला-ह रब्बकुम् व
रब्-ब आबाइकुमुल्-अव्वलीन (१२६) फ़-
कज्ज़बूहु फ़-इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून ४ (१२७) इल्ला

الصّٰفّٰت ٣٧ ٣٦٠ وما لى ٢٣

المؤمنين ١١١ وبشرنه باسحق نبيا من الصلحين ١١٢ وبركنا
عليه وعلى اسحق ط ومن ذريتهما محسن وظالم لنفسه مبين ١١٣
ولقد مننا على موسى وهرون ١١٤ ونجينهما وقومهما من الكرب
العظيم ١١٥ ونصرنهم فكانوا هم الغلبين ١١٦ واتينهما الكتب
المستبين ١١٧ وهدينهما الصراط المستقيم ١١٨ وتركنا عليهما في
الاخرين ١١٩ سلم على موسى وهرون ١٢٠ انا كذلك نجزي
المحسنين ١٢١ انهما من عبادنا المؤمنين ١٢٢ وان الياس لمن
المرسلين ١٢٣ اذ قال لقومه الا تتقون ١٢٤ اتدعون بعلا و
تذرون احسن الخالقين ١٢٥ الله ربكم ورب ابائكم الاولين ١٢٦
فكذبوه فانهم لمحضرون ١٢٧ الا عباد الله المخلصين ١٢٨ وتركنا
عليه في الاخرين ١٢٩ سلم على ال ياسين ١٣٠ انا كذلك نجزي
المحسنين ١٣١ انه من عبادنا المؤمنين ١٣٢ وان لوطا لمن
المرسلين ١٣٣ اذ نجينه واهله اجمعين ١٣٤ الا عجوزا في الغبرين ١٣٥
ثم دمرنا الاخرين ١٣٦ وانكم لتمرون عليهم مصبحين ١٣٧ و
باليل ط افلا تعقلون ١٣٨ وان يونس لمن المرسلين ١٣٩ اذ ابق الى
الفلك المشحون ١٤٠ فساهم فكان من المدحضين ١٤١ فالتقمه
الحوت وهو مليم ١٤٢ فلولا انه كان من المسبحين ١٤٣ للبث

अिबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (१२८) व त-रक्ना अलैहि फ़िल्-आख़िरीन ४ (१२९)
सलामुन् अला इल्यासीन (१३०) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (१३१)
इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१३२) व इन्-न लूतल्-लमिनल्-मुर्सलीन ط
(१३३) इज़् नज्जैनाहु व अह्-लहू अज्मअीन ४ (१३४) इल्ला अजूज़न् फ़िल्-
ग़ाबिरीन (१३५) सुम्-म दम्मर्नल्-आख़रीन (१३६) व इन्नकुम् ल-तमुर्-
रू-न अलैहिम् मुस्बिहीन ४ (१३७) व बिल्लैलि ط अ-फ़ला तअ्-क़िलून ★ (१३८)
व इन्-न यूनु-स लमिनल्-मुर्सलीन ط (१३९) इज़् अ-ब-क़ इलल्फ़ुल्किल्-मश्हूनि ४
(१४०) फ़ सा-ह-म फ़का-न मिनल्-मुद्हज़ीन ج (१४१) फ़ल्त-क़-महुल्-हूतु
व हु-व मुलीम (१४२) फ़लौला अन्नहू का-न मिनल्-मुसब्बिहीन ४ (१४३)

★रु. ३/७ आ ३९ ★रु. ४/८ आ २५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

की ख़ुशख़बरी भी दी (कि वह) नबी और नेकों में से (होंगे)। (११२) और हमने उन पर और इस्हाक़ पर बरकतें नाज़िल की थीं और उन दोनों की औलाद में से मुह्सिन भी हैं और अपने आप पर खुला ज़ुल्म करने वाले (यानी गुनाहगार) भी हैं। (११३)★

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किए, (११४) और उन को और उन की क़ौम को बड़ी मुसीबत से निजात बख़्शी। (११५) और उन की मदद की, तो वे ग़ालिब हो गये। (११६) और उन दोनों को किताब साफ़ (मतलब वाली) इनायत की, (११७) और उन को सीधा रास्ता दिखाया, (११८) और पीछे आने वालों में उन का (अच्छा) ज़िक्र (बाक़ी) छोड़ दिया, (११९) कि मूसा और हारून पर सलाम। (१२०) बेशक हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१२१) वे दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१२२) और इल्यास भी पैग़म्बरों में से थे। (१२३) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम डरते क्यों नहीं? (१२४) क्या तुम बअल[1] को पुकारते (और उसे पूजते हो) और सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ देते हो। (१२५) (यानी) ख़ुदा को, जो तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप-दादा का परवरदिगार है। (१२६) तो उन लोगों ने उन को झुठला दिया, सो वे (दोज़ख़ में) हाज़िर किए जाएंगे। (१२७) हां, ख़ुदा के ख़ास बन्दे (अज़ाब में नहीं डाले जाएंगे।) (१२८) और उन का (अच्छा) ज़िक्र पिछलों में (बाक़ी) छोड़ दिया, (१२९) कि इल्यासीन पर सलाम।[2] (१३०) हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। (१३१) बेशक वे हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१३२) और लूत भी पैग़म्बरों में से थे, (१३३) जब हमने उनको और उनके घर वालों को, सब को (अज़ाब से) निजात दी, (१३४) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह जाने वालों में थी। (१३५) फिर हम ने औरों को हलाक कर दिया। (१३६) और तुम दिन को भी उन (की बस्तियों) के पास से गुज़रते रहते हो, (१३७) और रात को भी, तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते? (१३८)★

और यूनुस भी पैग़म्बरों में से थे, (१३९) जब भाग कर भरी हुई कश्ती में पहुंचे। (१४०) उस वक़्त क़ुरआ डाला, तो उन्हों ने ज़क उठायी। (१४१) फिर मछली ने उन को निगल लिया और वह मलामत (के क़ाबिल काम) करने वाले थे। (१४२) फिर अगर वह (ख़ुदा की) पाकी

(पृष्ठ ७१५ का शेष)
को बार-बार तेज़ करते रहे, कुछ काम न दिया। आख़िर ज़ोर से चलाते-चलाते एक बार ऐसी आवाज़ आयी कि गोया कोई चीज़ कट गयी है, ख़ून बहने लगा है। तब आप ने अपनी आंखों पर से पट्टी खोल दी, जो ज़िब्ह करते वक़्त इस लिए बांध ली थी कि कहीं बाप की मुहब्बत जोश में न आए और अल्लाह तआला के हुक्म की तामील में पांव डगमगा न जाएं। देखा तो एक दुंबा ज़िब्ह किया हुआ पड़ा है और हज़रत इस्माईल पास ही सही-सालिम खड़े हैं, उसी दुंबे के बारे में ख़ुदा ने फ़रमाया कि एक बड़ी क़ुर्बानी को हम ने उन का फ़िद्या किया।

१. अल्लाह तआला ने हज़रत इल्यास को नबी बना कर बालबक की तरफ़ भेजा था। यहां के लोग एक बुत की पूजा करते थे, जिस का नाम बाल था।

२. हज़रत इल्यास को इल्यासीन भी कहते हैं, जैसे तूरे सीना और तूरे सीनीन और आले-यासीन भी पढ़ा है किसी ने, तो यासीन उन के बाप का नाम है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ल-लबि-स फ़ी बत्-निही इला यौमि युब्-असून (१४४) फ़-न-बज़्नाहु बिल्-अराइ
व हु-व सक़ीम (१४५) वअम्बत्ना अ़लैहि श-ज-र-तम्-मिय्यक़्तीन (१४६) व
अर्सल्नाहु इला मि-अति अल्फ़िन् औ यज़ीदून (१४७) फ़-आमनू फ़-मत्तअ़्-नाहुम् इलाहीन
(१४८) फ़स्तफ़्तिहिम् अ-लिरब्बिकल्-बनातु व लहुमुल्-बनून (१४९) अम् ख़-
लक़्-नल्-मलाइक-त इनासंव-व हुम् शाहिदून
(१५०) अला इन्नहुम् मिन् इफ़्किहिम् ल-
यक़ूलून (१५१) व-ल-दल्लाहु व इन्नहुम्
ल-काज़िबून (१५२) अस्त़-फ़ल्-बनाति अ़लल्-
बनीन (१५३) मा लकुम् कै-फ़ तह़्कुमून
(१५४) अ-फ़ला त-ज़क्करून (१५५) अम्
लकुम् सुल्तानुम्-मुबीन (१५६) फ़अ्तू बि-
किताबिकुम् इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन (१५७) व
ज-अ़लू बैनहू व बैनल्जिन्नति न-स-बन् व ल-
क़द् अ़लि-मतिल्-जिन्नतु इन्नहुम् लमुह़्ज़रून
(१५८) सुब्-ह़ानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून (१५९)
इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन (१६०) फ़-
इन्नकुम् व मा तअ़्-बुदून (१६१) मा

النصف

فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۝ وَ
أَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ ۝ وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝
فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ
الْبَنُونَ ۝ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ
إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ۝ وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ
عَلَى الْبَنِينَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَمْ
لَكُمْ سُلْطَانٌ مُبِينٌ ۝ فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَجَعَلُوا
بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَإِنَّكُمْ
وَمَا تَعْبُدُونَ ۝ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ۝ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ
الْجَحِيمِ ۝ وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَعْلُومٌ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ۝
وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ۝ وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ۝ لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا
ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ۝ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَكَفَرُوا بِهِ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّهُمْ
لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ۝ وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ
حِينٍ ۝ وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝ فَإِذَا
نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ۝ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝

منزل ٦

अन्तुम् अ़लैहि बिफ़ातिनीन (१६२) इल्ला मन् हु-व स़ालिल्-जह़ीम (१६३) व
मा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम्-मअ़्-लूमु व- (१६४) व इन्ना ल-नह़्नुस्-साफ़्फ़ून
(१६५) व इन्ना ल-नह़्नुल्-मुसब्बिह़ून (१६६) व इन् कानू ल-यक़ूलून (१६७)
लौ अन्-न अ़िन्दना ज़िक्-रम-मिनल्-अव्वलीन (१६८) लकुन्ना अ़िबादल्लाहिल्-
मुख़्-लसीन (१६९) फ़-क-फ़रू बिही फ़सौ-फ़ यअ़्-लमून (१७०) व ल-क़द्
स-ब-क़त् कलिमतुना लिअ़िबादिनल्-मुर्सलीन (१७१) इन्नहुम् लहुमुल्-मन्सूरून
(१७२) व इन्-न जुन्दना लहुमुल्-ग़ालिबून (१७३) फ़-त-वल्-ल अ़न्हुम् ह़त्ता
ह़ीनिंव- (१७४) - व अब्सिर्हुम् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (१७५) अ-फ़ बि-
अ़ज़ाबिना यस्तअ़्-जिलून (१७६) फ़-इज़ा न-ज़-ल बिसाह़तिहिम् फ़सा-अ सबा-
ह़ुल्-मुन्ज़रीन (१७७) व त-वल्-ल अ़न्हुम् ह़त्ता ह़ीनिव- (१७८)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बयान न करते, (१४३) तो उस दिन तक कि लोग दोबारा ज़िंदा किए जाएंगे, उसी के पेट में रहते●(१४४) फिर हमने उन को, जबकि वह बीमार थे, खुले मैदान में डाल दिया। (१४५) और उन पर कद्दू का पेड़ लगाया। (१४६) और उन को लाख या उस से ज़्यादा (लोगों) की तरफ़ (पैग़म्बर बना कर) भेजा। (१४७) तो वे ईमान ले आए, सो हम भी उन को (दुनिया में) एक (मुक़र्रर) वक़्त तक फ़ायदे देते रहे। (१४८) इन से पूछो तो कि भला तुम्हारे परवरदिगार के लिए तो बेटियां और उन के लिए बेटे, (१४९) या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया और वे (उस वक़्त) मौजूद थे? (१५०) देखो, ये अपनी झूठ बनायी हुई (बात) कहते हैं, (१५१) कि ख़ुदा के औलाद है, कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं। (१५२) क्या उस ने बेटों के मुक़ाबले में बेटियों को पसन्द किया है ? (१५३) तुम कैसे लोग हो ? किस तरह का फ़ैसला करते हो ? (१५४) भला तुम ग़ौर (क्यों) नहीं करते ? (१५५) या तुम्हारे पास कोई खुली दलील है, (१५६) अगर तुम सच्चे हो, तो अपनी किताब पेश करो। (१५७) और उन्हों ने ख़ुदा में और जिन्नों में रिश्ता मुक़र्रर किया, हालांकि जिन्नात जानते थे कि वे (ख़ुदा के सामने) हाज़िर किए जाएंगे। (१५८) यह जो कुछ बयान करते हैं, ख़ुदा उस से पाक है। (१५९) मगर ख़ुदा के ख़ालिस बन्दे (अज़ाब में नहीं डाले जाएंगे), (१६०) सो तुम और जिन को तुम पूजते हो, (१६१) ख़ुदा के ख़िलाफ़ बहका नहीं सकते, (१६२) मगर उस को, जो जहन्नम में जाने वाला है। (१६३) और (फ़रिश्ते कहते हैं कि) हम में से हर एक का एक मक़ाम मुक़र्रर है। (१६४) और हम सफ़ बांधे रहते हैं। (१६५) और (ख़ुदा-ए-) पाक (ज़ात का) ज़िक्र करते रहते हैं, (१६६) और ये लोग कहा करते थे, (१६७) कि अगर हमारे पास अगलों की कोई नसीहत (की किताब) होती, (१६८) तो हम ख़ुदा के ख़ालिस बन्दे होते, (१६९) लेकिन (अब) इस से कुफ़्र करते हैं, सो बहुत जल्द उन को (इस का नतीजा) मालूम हो जाएगा। (१७०) और अपने पैग़ाम पहुंचाने वाले बन्दों से हमारा वायदा हो चुका है, (१७१) कि वही (ग़ालिब व) मंसूर (मदद किए हुए) हैं, (१७२) और हमारा लश्कर ग़ालिब रहेगा, (१७३) तो एक वक़्त तक उन से एराज़ किए रहो, (१७४) और उन्हें देखते रहो। ये भी बहुत जल्द (कुफ़्र का अंजाम) देख लेंगे। (१७५) क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं, (१७६) मगर जब वह उन के मैदान में आ उतरेगा, तो जिन को डर सुनाया गया था, उन के लिए बुरा दिन होगा। (१७७) और एक वक़्त तक उन से मुंह फेरे

● नि. १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अब्सिर् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (१७९) सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल्-अिज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ून ★
(१८०) व सलामुन् अलल्-मुर्सलीन (१८१) वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (१८२)

३८ सूरतु साद ३८

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३१०७ अक्षर, ७३८ शब्द, ८८ आयतें और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

साद् वल्क़ुरआनि जिज़्जिक्र (१)
बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी अिज़्ज़तिंव-व शिक़ाक़
(२) कम् अह-लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन्
क़र्निन् फ़नादव्-व ला-त ह़ी-न मनास (३) व
अजिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् व
क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा साहिरुन कज़्ज़ाब (४)
अ-ज-अ-लल् आलि-ह-त इलाहंव्वाहिदन् इन्-न
हाज़ा लशैउन् अुजाब (५) वन्त़-ल-क़ल् म-ल-उ
मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अला आलिहतिकुम्
इन्-न हाज़ा लशैउं य्युराद (६) मा समिअ्-ना
बिहाज़ा फ़िल्-मिल्लतिल्-आख़िरति इन् हाज़ा इल्लख़्तिलाक़ (७) अ उन्ज़ि-ल
अलैहिज़्ज़िक्रु मिम्बैनिना बल् हुम् फ़ी शक्किम्-मिन् ज़िक्री बल् लम्मा यज़ूक़ू अज़ाब
(८) अम् अिन्दहुम् ख़ज़ाइनु रह़्मति रब्बिकल्-अज़ीज़िल्-वह्हाब (९) अम् लहुम्
मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा फ़ल्यर्तक़ू फ़िल्अस्बाब (१०) जुन्दुम्मा हुनालि-क
मह्ज़ूमुम्-मिनल्-अह़्ज़ाब (११) कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आदुंव्-व
फ़िर्औनु ज़ुलऔताद (१२) व समूदु व क़ौमु लूतिंव्-व अस्हाबुल्-ऐकति उलाइकल्-
अह़्ज़ाब (१३) इन् कुल्लुन् इल्ला कज़्ज़बर्-रुसु-ल फ़ ह़क़्-क़ अिक़ाब ★ (१४) व
मा यन्ज़ुरु हाउलाइ इल्ला सैह़-तंव्वाहि-द-तम्-मा लहा मिन् फ़वाक़ (१५) व
क़ालू रब्बना अज्जिल् लना क़ित्तना क़ब्-ल यौमिल्-हिसाब (१६)

ص ٣٨ ٣٦٢ ومالي ٢٣

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾
سُورَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَخَمْسُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
صٓ وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ﴿٢﴾ كَمْ أَهْلَكْنَا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾ وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ
مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾ أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا
وَاحِدًا إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾ وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَ
اصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ﴿٦﴾ مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ
الْآخِرَةِ إِنْ هَٰذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾ أَأُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا
بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ ذِكْرِي بَلْ لَمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ﴿٨﴾ أَمْ عِنْدَهُمْ
خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ﴿١٠﴾ جُنْدٌ مَا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِنَ
الْأَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٢﴾
وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿١٣﴾ إِنْ كُلٌّ إِلَّا
كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾ وَمَا يَنْظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَا لَهَا
مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اصْبِرْ عَلَىٰ مَا

★रु. ५/९ आ ४४ ★रु. १/१० आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रहो। (१७८) और देखते रहो, ये भी बहुत जल्द (नतीजा) देख लेंगे। (१७९) यह जो कुछ बयान करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार, जो इज़्ज़त वाला है (इस से) पाक है। (१८०) और पैग़म्बरों पर सलाम। (१८१) सब तरह की तारीफ़ ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (१८२)★

३८ सूरः स़ाद ३८

सूरः स्वाद मक्की है और इस में अठासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

स्वाद, क़सम है क़ुरआन की, जो नसीहत देने वाला है (कि तुम हक़ पर हो), (१) मगर जो लोग काफ़िर हैं, वे घमंड और मुख़ालफ़त में हैं। (२) हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर दिया, तो वे (अज़ाब के वक़्त) लगे फ़रियाद करने और वह रिहाई का वक़्त नहीं था। (३) और उन्हों ने ताज्जुब किया कि उन के पास उन ही में से हिदायत करने वाला आया, और काफ़िर कहने लगे कि यह तो जादूगर है झूठा। (४) क्या उस ने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद बना दिया ? यह तो बड़ी अजीब बात है। (५) तो उन में जो मुअज़्ज़ज़ थे, वे चल खड़े हुए (और बोले) कि चलो और अपने माबूदों (की पूजा) पर क़ायम रहो। बेशक यह ऐसी बात है, जिस से (तुम पर बुज़ुर्गी और बड़ाई) मक़्सूद है। (६) यह पिछले मज़हब में हम ने कभी सुनी ही नहीं। यह बिल्कुल बनायी हुई बात है। (७) क्या हम सब में से इसी पर नसीहत (की किताब) उतरी है ? (नहीं) बल्कि ये मेरी नसीहत की किताब से शक में हैं, बल्कि उन्हों ने अभी मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा। (८) क्या उन के पास तुम्हारे परवरदिगार की रहमत के ख़ज़ाने हैं, जो ग़ालिब (और) बहुत अता करने वाला है। (९) या आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन में है, उन (सब) पर उन ही की हुकूमत है, तो चाहिए कि रस्सियां तान कर (आसमानों पर) चढ़ जाएं। (१०) यहां हारे हुए गिरोहों में से यह भी एक लश्कर है। (११) इन से पहले नूह की क़ौम और आद और मेख़ों वाला फ़िऔन (और उस की क़ौम के लोग) भी, झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की क़ौम और बन के रहने वाले भी यही वे गिरोह हैं। (१३) (इन) सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया, तो मेरा अज़ाब (उन पर) आ वाक़ेअ हुआ। (१४)★

और ये लोग तो सिर्फ़ ज़ोर की आवाज़ का, जिस में (शुरू हुए पीछे) कुछ वक़्फ़ा नहीं होगा, इन्तिज़ार करते हैं। (१५) और कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को हमारा हिस्सा हिसाब

★रु. ५/६ आ ४४ ★रु. १/१० आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इस्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न वज़्कुर् अ़ब्दना दावू-द ज़ल्ऐदि इन्नहू अव्वाब (१७)
इन्ना सख़्ख़र्नल्-जिबा-ल म-अ़हू युसब्बिह़्-न बिल्-अ़शिय्यि वल्-इश्राक़ (१८)
वत्तै-र मह़्शूरतन् कुल्लुल्लहू अव्वाब (१९) व श-दद्ना मुल्कहू व आतैनाहुल्-
हिक्म-त व फ़स्-लल्-ख़ित़ाब (२०) व हल् अता-क न-ब-उल्-ख़स्मि इज़् तसव्व-
रुल्-मिह़राब (२१) इज़् द-ख़लू अ़ला दावू-द
फ़-फ़ज़ि-अ़ मिन्हुम् क़ालू ला त-ख़फ़् ख़स्मानि
बग़ा बअ़्-ज़ुना अ़ला बअ़्-ज़िन् फ़ह़्कुम् बैनना
बिल्ह़क़्क़ि व ला तुश्तित़् वह्दिना इला सवा-
इस्सिरात़ (२२) इन्-न हाज़ा अख़ी लहू
तिस्अुं व्-व तिस्अू-न नअ़्-ज-तंव्-व लि-य नअ़्-
जतुंव्वाहिदतुन् फ़क़ा-ल अक्फ़िल्नीहा व अ़ज़्ज़नी
फ़िल्ख़िताब (२३) क़ा-ल ल-क़द् ज़-ल-म-क
बिसुआलि नअ़्-जति-क इला निआजिही व इन्-न
कसीरम्-मिनल्-ख़ु-लताइ ल-यब्ग़ी बअ़्-ज़ुहुम्
अ़ला बअ़्-ज़िन् इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मि-
लुस्सालिहाति व क़लीलुम्मा-हुम् व ज़न्-न दावूदु
अन्नमा फ़-तन्नाहु फ़स्तग़्फ़-र रब्बहू व ख़र्-र

ص ٣٨ — ٣٦٣ — ومالى ٢٣

يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ (١٧) إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ
يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ (١٨) وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ (١٩) وَشَدَدْنَا
مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ (٢٠) وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ
تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ (٢١) إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ خَصْمَانِ
بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ
الصِّرَاطِ (٢٢) إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ
فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ (٢٣) قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
إِلَىٰ نِعَاجِهِ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ
رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ (٢٤) فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَ
حُسْنَ مَآبٍ (٢٥) يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّ الَّذِينَ
يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ (٢٦)
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ (٢٧) أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ (٢٨) كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ
مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ (٢٩) وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ

منزل ٦

राकिअंव्-व अनाब (२४) फ़-ग़-फ़र्ना लहू ज़ालि-क व इन्-न लहू अिन्दना लज़ुल्फ़ा
व हुस्-न मआब (२५) या दावूदु इन्ना ज-अ़ल्ना-क ख़लीफ़तन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ह़्कुम्
बैनन्नासि बिल्ह़क़्क़ि व ला तत्तबिअिल्हवा फ़युज़िल्ल-क अ़न् सबीलिल्लाहि इन्नल्-
लज़ी-न यज़िल्लू-न अ़न् सबीलिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा नसू यौमल्-
हिसाब★(२६) व मा ख़-लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा बातिलन् ज़ालि-क
ज़न्नुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिनन्नार (२७) अम् नज्अ़-
लुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति कल्मुफ़्सिदी-न फ़िल्अर्ज़ि अम् नज्अ़लुल्-मुत्तक़ी-न
कल्-फ़ुज्जार (२८) किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क मुबारकुल्-लियद्-
दब्बरू आयातिही व लि-य-त-जक्क-र उलुल्-अल्बाब (२९) व
व-हब्ना लिदावू-द सुलैमा-न निअ़्-मल्अ़ब्दु इन्नहू अव्वाब (३०)

व. लाज़िम □ सज्दः १० ★ रु. २/११ आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के दिन से पहले ही दे दे। (१६) (ऐ पैग़म्बर!) ये जो कुछ कहते हैं, उस पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, जो ताक़त वाले थे (और) बेशक वे रुजूअ करने वाले थे। (१७) हम ने पहाड़ों को उन के फ़रमान के तहत कर दिया था कि सुबह व शाम उन के साथ (ख़ुदा-ए-) पाक (का) ज़िक्र करते थे। (१८) और परिंदों को भी कि जमा रहते थे, सब उन के फ़रमांबरदार थे। (१९) और हम ने उन की बादशाही को मज़बूत किया और उन को हिक्मत अता फ़रमायी और (लड़ाई की) बात का फ़ैसला (सिखाया)। (२०) भला तुम्हारे पास उन झगड़ने वालों की भी ख़बर आयी है, जब वे दीवार फांद कर अन्दर दाख़िल हुए। (२१) जिस वक़्त वे दाऊद के पास आए, तो वे उन से घबरा गये। उन्हों ने कहा, कि ख़ौफ़ न कीजिए। हम दोनों का एक मुक़दमा है कि हम में से एक ने दूसरे से ज़्यादती की है, तो आप हम में इंसाफ़ से फ़ैसला कर दीजिए और बे-इंसाफ़ी न कीजिएगा और हम को सीधा रास्ता दिखा दीजिए। (२२) (हाल यह है कि) यह मेरा भाई है, इस के (यहां) निन्यान्वे दुंबियां हैं और मेरे (पास) एक दुंबी है। यह कहता है कि यह भी मेरे हवाले कर दे और बातों में मुझ पर ज़बरदस्ती करता है। (२३) उन्हों ने कहा कि यह जो तेरी दुंबी मांगता है कि अपनी दुंबियों में मिला ले, बेशक तुम पर ज़ुल्म करता है और अक्सर शरीक एक-दूसरे पर ज़्यादती ही किया करते हैं। हां, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और ऐसे लोग बहुत कम हैं और दाऊद ने ख़्याल किया कि (इस वाक़िए से) हम ने उन को आज़माया है, तो उन्हों ने अपने परवरदिगार से मग़फ़िरत मांगी और झुक कर गिर पड़े और (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ किया □ (२४) तो हम ने उन को बख़्श दिया और बेशक उन के लिए हमारे यहां क़ुर्ब और उम्दा जगह है। (२५) ऐ दाऊद! हम ने तुम को ज़मीन में बादशाह बनाया है, तो लोगों में इंसाफ़ के फ़ैसले किया करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करना कि वह तुम्हें ख़ुदा के रास्ते से भटका देगी जो लोग ख़ुदा के रास्ते से भटकते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब (तैयार) है कि उन्हों ने हिसाब के दिन को भुला दिया। (२६) ★

और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो (कायनात) उन में है, उस को मस्लहत से ख़ाली नहीं पैदा किया। यह उन का गुमान है, जो काफ़िर हैं, सो काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है। (२७) जो लोग ईमान लाए और अमल करते रहे, क्या उन को हम उन की तरह कर देंगे, जो मुल्क में फ़साद करते हैं या परहेज़गारों को बद-कारों की तरह कर देंगे। (२८) (यह) किताब, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है, बरकत वाली है, ताकि लोग इस की आयतों में ग़ौर करें और ताकि अक़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (२९) और हम ने दाऊद को सुलेमान अता किए। बहुत ख़ूब बन्दे (थे और) वे (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ करने वाले थे। (३०) जब उन के सामने शाम को ख़ासे के घोड़े

व. लाज़िम □ सज्दः १० ★ रु. २/११ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इज् अुरि-ज़ अ़लैहि बिल्अ़शिय्यिस्-साफ़िनातुल-जियाद لا (३१) फ़क़ा-ल इन्नी अह्-
बब्तु हुब्बल्-ख़ैरि अ़न् ज़िक्रि रब्बी ج हत्ता त-वारत बिल्-हिजाब وقف (३२) रुद्दूहा
अ़लय्-य ط फ़-तफ़ि-क़ मस्हम्-बिस्सूक़ि वल्-अअ्नाक़ (३३) व ल-क़द् फ़-तन्ना
सुलैमा-न व अल्क़ैना अ़ला कुर्सिय्यिही ज-स-दन् सुम्-म अनाब (३४) क़ा-ल
रब्बिग़्फ़िर् ली व हब् ली मुल्कल्ला यम्बग़ी
लि-अ-हदिम्-मिम्बअ्-दी ج इन्न-क अन्तल्-वह्हाब
(३५) फ़-सख़्ख़र्ना लहुर्-री-ह तज्री बिअम्रिही
रुख़ाअन् हैसु असाब لا (३६) वश्शयाती-न कुल्-ल
बन्नाइंव्-व ग़व्वास لا (३७) व आख़री-न
मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद (३८) हाजा अ़ता-
उना फ़म्नुन् औ अम्सिक् बिग़ैरि हिसाब (३९)
व इन्-न लहू अिन्दना लज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब
★ (४०) वज़्कुर् अ़ब्दना अय्यू-ब इज् नादा रब्बहू अन्-
नी मस्सनियश्-शैतानु बिनुस्-बिंव्-व अ़ज़ाब ط (४१)
उर्कुज़् बिरिज्लि-क ج हाज़ा मुग़-त-सलुम्-बारिदुं व्-व
शराब (४२) व व-हब्ना लहू अह्-लहू व

ص ٣٨ ٣٦٤ ومالي ٢٣

نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝٣٠ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝٣١
فَقَالَ اِنِّىْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّىْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝٣٢ وقفة
رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ۝٣٣ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ
وَاَلْقَيْنَا عَلٰي كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝٣٤ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ
مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝٣٥ فَسَخَّرْنَا لَهُ
الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَاۗءً حَيْثُ اَصَابَ ۝٣٦ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّاۗءٍ وَّ
غَوَّاصٍ ۝٣٧ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝٣٨ هٰذَا عَطَاۗؤُنَا فَامْنُنْ
اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٩ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٤٠ وَاذْكُرْ
عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝٤١
اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝٤٢ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَ
مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝٤٣ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا
فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ۭ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝٤٤ وَاذْكُرْ
عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝٤٥ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ
بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝٤٦ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝٤٧
وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝٤٨ هٰذَا ذِكْرٌ ۭ وَ
اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٤٩ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝٥٠ مُتَّكِـــِٕيْنَ
فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝٥١ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ

मिस्लहुम् म-अ़हुम् रह्-म-तम्-मिन्ना व ज़िक्रा लिउलिल्-अल्बाब منزل (४३) व ख़ुज्
बियदि-क ज़िग़्-सन् फ़ज़्रिब् बिही व ला तह्-नस् ط इन्ना व-जद्नाहु साबिरन् ط निअ्-मल्
अ़ब्दु ط इन्नहू अव्वाब (४४) वज़्कुर् अ़िबादना इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब
उलिल्-ऐदी वल्-अब्सार (४५) इन्ना अख़्-लस्नाहुम् बिख़ालि-स़तिन् ज़िक-रद्दार
ج (४६) व इन्नहुम् अ़िन्दना लमिनल्-मुस्तफ़ैनल्-अख़्यार ط (४७) वज़्कुर् इस्माअ़ी-ल
वल-य-स-अ़ व ज़ल्किफ़्लि ط व कुल्लुम्-मिनल्-अख़्यार ط (४८) हाजा ज़िक्रुन् ط
व इन-न लिल्मुत्तक़ी-न लहुस्-न मआब لا (४९) जन्नाति अ़द्निम्-मुफ़त्त-ह-तल्-
लहुमुल्-अब्वाब ج (५०) मुत्तकिई-न फ़ीहा यद्अू-न फ़ीहा बिफ़ाकिहतिन् कसीरतिंव्-व
शराब (५१) व अ़िन्दहुम् क़ासिरातुत - तर्फ़ि अतराब (५२)

★रु. ३/१२ आ १४ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पेश किये गये, (३१) तो कहने लगे कि मैं ने परवरदिगार की याद से (ग़ाफ़िल हो कर) माल की मुहब्बत अख़्तियार की, यहां तक कि (सूरज) पर्दे में छिप गया। (३२) (बोले कि) उन को मेरे पास वापस लाओ, फिर उन की टांगों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे। (३३) हम ने सुलेमान की आज़माइश की और उन के तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उन्हों ने (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ किया। (३४) (और) दुआ की कि ऐ परवरदिगार! मुझे मग़फ़िरत कर, मुझ को ऐसी बादशाही अता कर कि मेरे बाद किसी को मुनासिब न हो। बेशक तू बड़ा अता फ़रमाने वाला है। (३५) फिर हम ने हवा को उन के फ़रमान के तहत कर दिया कि जहां वह पहुंचना चाहते, उन के हुक्म से नर्म-नर्म चलने लगती। (३६) और देवों को भी (उन के फ़रमान के तहत किया), यह सब इमारतें बनाने वाले और ग़ोता मारने वाले थे। (३७) और औरों को भी, जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे। (३८) (हम ने कहा) यह हमारी बख़्शिश है, (चाहो तो) एहसान करो या (चाहो तो) रख छोड़ो, (तुम से) कुछ हिसाब नहीं है। (३९) और बेशक उन के लिए हमारे यहां क़ुर्ब और अच्छी जगह है। (४०) ★

और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो जब उन्हों ने अपने रब को पुकारा कि (ऐ ख़ुदा!) शैतान ने मुझ को तक्लीफ़ दे रखी है। (४१) (हम ने कहा कि ज़मीन पर) लात मारो, (देखो), यह (चश्मा निकल आया), नहाने को ठंडा और पीने को (मीठा)। (४२) और हम ने उन को बीवी (-बच्चे) और उन के साथ उन के बराबर और बख़्शे।[1] (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अक़्ल वालों के लिए नसीहत थी, (४३) और अपने हाथ में झाड़ू लो और उस से मारो और क़सम न तोड़ो।[2] बेशक हम ने उन को साबित क़दम पाया बहुत ख़ूब बन्दे थे, बेशक वह रुजूअ करने वाले थे। (४४) और हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब को याद करो, जो ताक़त वाले और नज़र वाले थे। (४५) हम ने उन को एक ख़ास (सिफ़त) (आख़िरत के) घर की याद से मुम्ताज़ किया था। (४६) और वे हमारे नज़दीक चुने हुए और नेक लोगों में से थे। (४७) और इस्माईल और अल्-यसअ् और ज़ुलकिफ़्ल को याद करो। वे सब नेक लोगों में से थे। (४८) यह नसीहत और परहेज़गारों के लिए तो उम्दा जगह है, (४९) हमेशा रहने के बाग़, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (५०) उन में तकिए लगाए बैठे होंगे और (खाने-पीने के लिए) बहुत से मेवे और शराब मांगते रहेंगे। (५१) और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (और) हम-उम्र

---

१. यानी जितने बाल-बच्चे पहले थे, वह भी दिए और उतने ही और अता किए।

२. कहते हैं कि हज़रत अय्यूब की बीवी ने कोई ऐसी हरकत की या आप से कोई ऐसी बात कही, जो आप को नागवार हुई, तो आप ने क़सम खा ली कि मैं तुम को सौ छड़ियां मारूंगा, तो आप को यह इर्शाद हुआ कि सौ तीलियों की झाड़ू ले कर उस से बीवी को मारो, क़सम सच्ची हो जाएगी।

★ [illegible] ३१२ आ० ४१ [illegible] लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हाज़ा मा तूअदू-न लियौमिल्-हिसाब ● (५३) इन्-न हाज़ा ल-रिज़्क़ुना मा लहू मिन्
नफ़ाद (५४) हाज़ा व इन्-न लित्ताग़ी-न ल-शर्-र म-आब (५५) जहन्न-म
यस्लौनहा फ़बिअ्सल्-मिहाद (५६) हाज़ा फ़ल्यज़ूक़ूहु हमीमुं व-व ग़स्साक़ (५७)
व आख़रु मिन् शक्लिही अज़्वाज (५८) हाज़ा फ़ौजुम्-मुक़्तहिमुम् म-अकुम् ला
मर्हबम्-बिहिम् इन्नहुम् सालुन्नार (५९)
क़ालू बल् अन्तुम् ला मर्हबम्-बिकुम् अन्तुम्
क़द्दम्तुमूहु लना फ़बिअ्सल्-क़रार (६०) क़ालू
रब्बना मन् क़द्-द-म लना हाज़ा फ़ज़िद्हु
अज़ाबन् ज़िअ्-फ़न् फ़िन्नार (६१) व क़ालू
मा लना ला नरा रिजालन् कुन्ना नअुद्दुहुम्
मिनल्-अश्रार (६२) अत्त-ख़ज़्नाहुम् सिख़्रिय्यन्
अम् ज़ाग़त् अन्हुमुल्-अब्सार (६३) इन्-न
ज़ालि-क ल-हक़्क़ुन् तख़ासुमु अह्लिन्नार (६४) ★
क़ुल् इन्नमा अना मुन्ज़िरुंव-व मा मिन् इलाहिन्
इल्लल्लाहुल-वाहिदुल-क़ह्हार (६५) रब्बुस्समा-
वाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमल-अज़ीज़ुल-ग़फ़्फ़ार
(६६) क़ुल् हु-व न-ब-उन् अज़ीम (६७) अन्तुम्-अन्हु मुअ्रिज़ून (६८) मा
का-न लि-य मिन् अिलमिम्-बिलमल-इल-अअ्-ला इज़् यख़्तसिमून (६९) इं य्यूहा
इलय्-य इल्ला अन्नमा अना नज़ीरुम्-मुबीन (७०) इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिलमला-
इकति इन्नी ख़ालिक़ुम्-ब-श-रम् मिन् तीन (७१) फ़-इज़ा सव्वैतुहू व न-फ़ख़्तु
फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अू लहू साजिदीन (७२) फ़-स-ज-दल-मलाइकतु कुल्लुहुम्
अज्मअून (७३) इल्ला इब्ली-स इस्तक्ब-र व का-न मिनल्काफ़िरीन (७४) क़ा-ल
या इब्लीसु मा म-न-अ्-क अन् तस्जु-द लिमा ख़-लक़्तु बि-य-दय-य अस्तक्बर-त अम् कुन-त
मिनल-आलीन (७५) क़ा-ल अना ख़ैरुम्-मिन्हु ख़-लक़्तनी मिन् नारिंव्-व ख़-लक़्तहू
मिन् तीन (७६) क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम (७७) व इन्-न अलै-क लअ्-
नती इला यौमिद्दीन (७८) क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्-असून (७९)
क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल-मुन्ज़रीन (८०) इला यौमिल-वक़्तिल-मअ्-लूम (८१)

ص ٣٨ ٣٦٥ وقال ٢٣

أَتْرَابٌ ۝ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ۝
هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هَٰذَا
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝ وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ۝ هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ
مَّعَكُمْ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ۝ قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ
أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا
ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ۝ أَتَّخَذْنَاهُمْ
سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ۝ إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝ قُلْ
إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝ أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝
مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ۝
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ
كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ
مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْعَالِينَ ۝
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي
إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ۝ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝

● सु. ३/४ ★ रु. ४/१३ आ २४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(औरतें) होंगी। (५२) ये वह चीज़ें हैं, जिन का हिसाब के दिन के लिए, तुम से वायदा किया जाता था● (५३) यह हमारी रोज़ी है, जो कभी ख़त्म नहीं होगी। (५४) ये (नेमतें तो फ़रमां-बरदारों के लिए हैं) और सर-कशों के लिए बुरा ठिकाना है। (५५) (यानी) दोज़ख़, जिस में वें दाख़िल होंगे और वह बुरी आरामगाह है। (५६) यह खौलता हुआ गर्म पानी और पीप (है), अब उस के मज़े चखें। (५७) और इसी तरह के और बहुत से (अज़ाब होंगे), (५८) यह एक फ़ौज है, जो तुम्हारे साथ दाख़िल होगी, इन को ख़ुशी न हो, ये दोज़ख़ में जाने वाले हैं, (५९) कहेंगे, बल्कि तुम ही को ख़ुशी न हो, तुम ही तो यह (बला) हमारे सामने लाए हो, सो (यह) बुरा ठिकाना है। (६०) वे कहेंगे, ऐ परवरदिगार! जो इस को हमारे सामने लाया है, उस को दोज़ख़ में दूना अज़ाब दे, (६१) और कहेंगे, क्या वजह है कि (यहां) हम उन शख़्सों को नहीं देखते, जिन को बुरों में गिना करते थे। (६२) क्या हम ने उन से ठट्ठा किया है या (हमारी) आंखें उन (की तरफ़) से फिर गयी हैं? (६३) बेशक यह दोज़ख़ियों का झगड़ना ना बर-हक़ है। (६४)★

कह दो कि मैं तो सिर्फ़ हिदायत करने वाला हूं और ख़ुदा-ए-यक्ता (और) ग़ालिब के सिवा कोई माबूद नहीं। (६५) जो आसमानों और ज़मीन और जो (मख़्लूक़) उन में है, सब का मालिक है, ग़ालिब (और) बख़्शने वाला। (६६) कह दो कि यह एक बड़ी (हौलनाक चीज़ की) ख़बर है। (६७) जिस को तुम ध्यान में नहीं लाते, (६८) मुझ को ऊपर की मज्लिस (वालों) का ज़ब वे झगड़ते थे, कुछ भी इल्म न था। (६९) मेरी तरफ़ तो यही वह्य की जाती है कि मैं खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं। (७०) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इंसान बनाने वाला हूं। (७१) जब उस को दुरुस्त कर लूं और उस में अपनी रूह फूंक दूं तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (७२) तो तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया, (७३) मगर शैतान अकड़ बैठा और काफ़िरों में हो गया। (७४) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि ऐ इब्लीस जिस शख़्स को मैं ने अपने हाथों से बनाया, उस के आगे सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने मना किया। क्या तू घमंड में आ गया या ऊंचे दर्जे वालों में था? (७५) बोला कि मैं इस से बेहतर हूं (कि) तू ने मुझ को आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से बनाया। (७६) कहा, यहां से निकल जा, तू मर्दूद है। (७७) और तुझ पर क़ियामत के दिन तक मेरी लानत (पड़ती) रहेगी। (७८) कहने लगा कि मेरे परवरदिगार मुझे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं, मुहलत दे। (७९) कहा, तुझ को मुहलत दी जाती है। (८०) उस दिन तक, जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (८१) कहने लगा कि मुझे तेरी इज़्ज़त की

●सु. ३/४ ★रु. ४/१३ आ २४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ा-ल फ़बिअिज़्ज़ति-क ल-उग़्वियन्नहुम् अज्-मअीन ʋ (८२) इल्ला अिबाद-क मिन्-
हुमुल-मुख़्-लसीन (८३) क़ा-ल फ़ल्हक़्क़ु ✓वल्हक़्-क़ अक़ूल ७ (८४) ल-अम्-ल-अन्-न
जहन्न-म मिन-क व मिम्मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् अज्-मअीन (८५) क़ुल् मा
अस्-अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिव्-व मा अ-न मिनल्-मु-त-कल्लिफ़ीन (८६) इन्
हु-व इल्ला ज़िक्रुल-लिल्आलमीन (८७) व
ल-तअ्-लमुन्-न न-ब-अहू बअ्-द हीन ★ (८८)

३९ सूरतुज़्ज़ु-मरि ५९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ४६६५ अक्षर, ११८४ शब्द, ७५ आयतें और ८ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तन्ज़ीलुल-किताबि मिनल्लाहिल-अज़ी-
ज़िल-हकीम (१) इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल-
किता-ब बिल्हक़्क़ि फ़अ़्-बुदिल्ला-ह मुख़्लिसल-
लहुद्दीन ७ (२) अला लिल्लाहिद-दीनुल-ख़ालिसु ७
वल्लज़ीनत्त-ख़-ज़ू मिन्दूनिही औलिया-अ ▨ मा
नअ्-बुदुहुम् इल्ला लियुक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा ७
इन्नल्ला-ह यह्कुमु बैनहुम् फ़ीमा हुम् फ़ीहि
यख़्तलिफ़ू-न ७ इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व
काज़िबुन् कफ़्फ़ार (३) लौ अरादल्लाहु
अंय्यत्तख़ि-ज व-ल-दल्लस्तफ़ा मिम्मा यख़्लुक़ु मा यशाउ ʋ सुब्-हानहू ७ हुवल्लाहुल-वाहि-
दुल-क़ह्हार (४) ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि ७ युकव्विरुल्लै-ल अ़लन्नहारि
व युकव्विरुन्-नहा-र अ़लल्लैलि व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र ७ कुल्लु य्यज्री लि-अ-जलिम-
मुसम्मन् ७ अला हुवल - अज़ीज़ुल - ग़फ़्फ़ार (५) ख़-ल क़कुम् मिन्
नफ़्सिव्वाहिदतिन् सुम्-म ज-अ-ल मिन्हा ज़ौजहा व अन्ज़-ल लकुम् मिनल-अन्आमि
समानि-य-त अज़्वाजिन् ७ यख़्लुक़ुकुम् फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम् ख़ल्क़म-मिम्बअ्-दि
ख़ल्क़िन् फ़ी ज़ुलुमातिन् सलासिन् ७ ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ७ ला इला-ह
इल्ला हु-व ७ फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (६) इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अन्कुम्
व ला यर्ज़ा लिअिबादिहिल - कुफ़्-र ७ व इन् तश्कुरू यर्ज़हु लकुम् ७ व
ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़्-र उख़्रा ७ सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़-युनब्बि-
उकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून ७ इन्नहू अ़लीमुम् - बिज़ातिस्सुदूर (७)

الزمر ٣٩ — ٣٦٦ — ومالي ٢٣

قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين ۝ إلا عبادك منهم المخلصين ۝ قال
فالحق والحق أقول ۝ لأملأن جهنم منك وممن تبعك منهم أجمعين ۝
قل ما أسألكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين ۝ إن هو إلا ذكر
للعلمين ۝ ولتعلمن نبأه بعد حين ۝
سورة الزمر مكية ... بسم الله الرحمن الرحيم ...
تنزيل الكتب من الله العزيز الحكيم ۝ إنا أنزلنا إليك الكتب بالحق
فاعبد الله مخلصا له الدين ۝ ألا لله الدين الخالص ۚ والذين
اتخذوا من دونه أولياء ما نعبدهم إلا ليقربونا إلى الله زلفى إن
الله يحكم بينهم في ما هم فيه يختلفون ۗ إن الله لا يهدي من هو كذب
كفار ۝ لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء ۚ سبحنه
هو الله الوحد القهار ۝ خلق السموت والأرض بالحق ۚ يكور الليل على
النهار ويكور النهار على الليل وسخر الشمس والقمر ۖ كل يجري لأجل
مسمى ۗ ألا هو العزيز الغفار ۝ خلقكم من نفس وحدة ثم جعل منها
زوجها وأنزل لكم من الأنعام ثمنية أزوج ۚ يخلقكم في بطون أمهتكم
خلقا من بعد خلق في ظلمت ثلث ۚ ذلكم الله ربكم له الملك ۖ لا إله إلا
هو ۖ فأنى تصرفون ۝ إن تكفروا فإن الله غني عنكم ۖ ولا يرضى لعباده الكفر ۖ
وإن تشكروا يرضه لكم ۗ ولا تزر وازرة وزر أخرى ۗ ثم إلى ربكم مرجعكم

★रु. ५/१४ आ २४ ▨व. लाजिम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़सम ! मैं उन सब को बहकाता रहूंगा। (८२) सिवा उन के, जो तेरे ख़ालिस बन्दे हैं। (८३) कहा, सच (है) और मैं भी सच कहता हूं। (८४) कि मैं तुझ से और जो उन में से तेरी पैरवी करेंगे, सब से जहन्नम को भर दूंगा। (८५) (ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि मैं तुम से इस का बदला नहीं मांगता और न मैं बनावट करने वालों में हूं। (८६) यह (क़ुरआन) तो दुनिया वालों के लिए नसीहत है। (८७) और तुम को इस का हाल एक वक़्त के बाद मालूम हो जाएगा। (८८)★



३९ सूरः ज़ुमर ५९

सूरः ज़ुमर मक्की है। इस में पचहत्तर आयतें और आठ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

इस किताब का उतारा जाना ख़ुदा-ए-ग़ालिब (और) हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (१) (ऐ पैग़म्बर !) हम ने यह किताब तुम्हारी तरफ़ सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो ख़ुदा की इबादत करो (यानी) उस की इबादत को (शिर्क से) ख़ालिस कर के। (२) देखो ख़ालिस इबादत ख़ुदा ही के लिए है और जिन लोगों ने उस के सिवा और दोस्त बनाये हैं▨(वे कहते हैं कि) हम इन को इस लिए पूजते हैं कि हम को ख़ुदा का मुक़र्रब बना दें, तो जिन बातों में ये इख़्तिलाफ़ करते हैं, ख़ुदा उन में इन का फ़ैसला कर देगा। बेशक ख़ुदा उस शख़्स को, जो झूठा, ना-शुक्रा है, हिदायत नहीं देता। (३) अगर ख़ुदा किसी को अपना बेटा बनाना चाहता, तो अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता, चुन लेता। वह पाक है, वही तो ख़ुदा अकेला (और) ग़ालिब है। (४) उसी ने आसमानों और ज़मीन को तद्‌बीर के साथ पैदा किया है (और) वही रात को दिन पर लपेटता और दिन को रात पर लपेटता है और उसी ने सूरज और चांद को बस में कर रखा है। सब एक मुक़र्रर वक़्त तक चलते रहेंगे। देखो वही ग़ालिब (और) बख़्शने वाला है। (५) उसी ने तुम को एक शख़्स से पैदा किया, फिर उस से उस का जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिए चारपायों में से आठ जोड़े बनाए। वही तुम को तुम्हारी माओं के पेट में (पहले) एक तरह, फिर दूसरी तरह तीन अंधेरों में बनाता है। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां फिर जाते हो ? (६) अगर ना-शुक्री करोगे, तो ख़ुदा तुम से बे-परवा है और वह अपने बन्दों के लिए ना-शुक्री नहीं पसन्द करता।[1] और अगर शुक्र करोगे, तो वह इस को तुम्हारे लिए पसन्द करेगा और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम को अपने परवर-दिगार की तरफ़ लौटना है। फिर जो कुछ तुम करते रहे, वह तुम को बताएगा, वह तो दिलों की

१. यानी इस बात को पसंद नहीं करता कि उस के बन्दे हो कर उस की ना-शुक्री करो।

★रु. ५/१४ आ २४ ▨व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा मस्सल-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ रब्बहू मुनीबन् इलैहि सुम्-म इज़ा ख़व्व-लहू
निअ्-म-तम्-मिन्हु नसि-य मा का-न यद्अू इलैहि मिन् क़ब्लु व ज-अ-ल लिल्लाहि
अन्दादल-लियुज़िल्-ल अन् सबीलिही क़ुल् तमत्तअ्-बिकुफ़्रि-क क़लीलन् इन्न-क मिन्
अस्हाबिन्नार (८) अम्मन् हु-व क़ानितुन् आनाअल्लैलि साजिदंव्-व क़ाइमंय्यह्ज़
रुल-आख़ि-र-त व यर्जू रह्-म-त रब्बिही क़ुल् हल्
यस्तविल्लज़ी-न यअ्-लमू-न वल्लज़ी-न ला यअ्-
लमू-न इन्नमा य-त-ज़क्करु उलुलअल्बाब★ (९) क़ुल्
या अिबादिल्लज़ी-न आमनुत्तक़ू रब्बकुम् लिल्लज़ी-
न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह्-स-नतुन् व अर-
ज़ुल्लाहि वासि-अतुन् इन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरू-न
अज्-रहुम् बिग़ैरि हिसाब (१०) क़ुल् इन्नी
उमिर्तु अन् अअ्-बुदल्ला-ह मुख़्लिसल्लहुद्दीन
(११) व उमिर्तु लि-अन् अकू-न अव्वलल-
मुस्लिमीन (१२) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन्
असैतु रब्बी अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (१३)
क़ुलिल्ला-ह अअ्-बुदु मुख़्लिसल्लहू दीनी (१४)
फ़अ्-बुदू मा शिअ्तुम् मिन् दूनिही क़ुल् इन्नल-ख़ासिरीनल-लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम्
व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति अला ज़ालि-क हुवल-ख़ुस्रानुल-मुबीन (१५) लहुम्
मिन् फ़ौक़िहिम् ज़ु-ल-लुम-मिनन्नारि व मिन् तह्तिहिम् ज़ु-ल-लुन् ज़ालि-क युख़व्वि-
फ़ुल्लाहु बिही अिबादहू याअिबादि फ़त्तक़ून (१६) वल्लज़ीनज्-त-नबुत्ताग़ू-त
अंय्यअ्-बुदूहा व अनाबू इलल्लाहि लहुमुल्बुश्रा फ़बश्शिर् अिबाद (१७) अल्लज़ी-न
यस्तमिअूनल् - क़ौ - ल फ़यत्तबिअू - न अह् - स - नहू उलाइकल्लज़ी - न
हदाहुमुल्लाहु व उलाइ-क हुम् उलुलअल्बाब (१८) अ-फ़-मन् हक़्-क़
अलैहि कलिमतुल् अज़ाबि अ-फ़ अन्-त तुन्क़िज़ु मन् फ़िन्नार (१९)

ومالي ٢٣ ٣٦٧ الزمر ٣٩

فينبئكم بما كنتم تعملون انه عليم بذات الصدور ⑦ واذا مس
الانسان ضر دعا ربه منيبا اليه ثم اذا خوله نعمة منه نسي ما كان
يدعوا اليه من قبل وجعل لله اندادا ليضل عن سبيله قل
تمتع بكفرك قليلا انك من اصحب النار ⑧ امن هو قانت اناء اليل
ساجدا وقائما يحذر الاخرة ويرجوا رحمة ربه قل هل يستوي الذين
يعلمون والذين لا يعلمون انما يتذكر اولوا الالباب ⑨ قل يعباد الذين
ع ٩/١٥ امنوا اتقوا ربكم للذين احسنوا في هذه الدنيا حسنة وارض الله
واسعة انما يوفى الصبرون اجرهم بغير حساب ⑩ قل اني امرت
ان اعبد الله مخلصا له الدين ⑪ وامرت لان اكون اول المسلمين ⑫
قل اني اخاف ان عصيت ربي عذاب يوم عظيم ⑬ قل الله اعبد
مخلصا له ديني ⑭ فاعبدوا ما شئتم من دونه قل ان الخسرين الذين
خسروا انفسهم واهليهم يوم القيمة الا ذلك هو الخسران المبين ⑮
لهم من فوقهم ظلل من النار ومن تحتهم ظلل ذلك يخوف الله
به عباده يعباد فاتقون ⑯ والذين اجتنبوا الطاغوت ان يعبدوها و
انابوا الى الله لهم البشرى فبشر عباد ⑰ الذين يستمعون القول
فيتبعون احسنه اولئك الذين هدىهم الله واولئك هم اولوا الالباب ⑱
افمن حق عليه كلمة العذاب افانت تنقذ من في النار ⑲ لكن الذين

★रु. १/१५ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छिपी बातें तक जानता है। (७) और जब इन्सान को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उस की तरफ़ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उस को अपनी तरफ़ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उस को पुकारता है, उसे भूल जाता है और ख़ुदा का शरीक बनाने लगता है, ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कह दो कि (ऐ काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुक्री से थोड़ा-सा फ़ायदा उठा ले, फिर तो तू दोजख़ियों में होगा। (८) (भला मुश्रिक अच्छा है) या वह जो रात के वक़्तों में ज़मीन पर पेशानी रख कर और खड़े हो कर इबादत करता और आख़िरत से डरता और अपने परवरदिगार की रहमत की उम्मीद रखता है। कहो, भला जो लोग इल्म रखते हैं और जो नहीं रखते, दोनों बराबर हो सकते हैं, (और) नसीहत तो वही पकड़ते हैं, जो अक़्लमंद हैं। (९) ★

कह दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, अपने परवरदिगार से डरो, जिन्हों ने इस दुनिया में नेकी की, उन के लिए भलाई है और ख़ुदा की ज़मीन कुशादा है, जो सब्र करने वाले हैं, उन को बे-शुमार सवाब मिलेगा। (१०) कह दो कि मुझ से इर्शाद हुआ है कि ख़ुदा की इबादत को ख़ालिस कर के उस की बन्दगी करूं। (११) और यह भी इर्शाद हुआ है कि मैं सब से अव्वल मुसलमान बनूं। (१२) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार का हुक्म न मानूं तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब से डर लगता है। (१३) कह दो कि मैं अपने दीन को (शिर्क से) ख़ालिस कर के उस की इबादत करता हूं। (१४) तो तुम उस के सिवा, जिस की चाहो, पूजा करो। कह दो कि नुक़्सान उठाने वाले वही लोग हैं, जिन्हों ने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को नुक़्सान में डाला। देखो यही खुला नुक़्सान है। (१५) उन के ऊपर तो आग के सायबान होंगे और नीचे (उसके) फ़र्श होंगे। यह वह (अज़ाब) है, जिस से ख़ुदा अपने बन्दों को डराता है, तो ऐ मेरे बन्दो ! मुझ से डरते रहो। (१६) और जो इस से बचा कि बुतों को पूजे और ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ किया, उन के लिए ख़ुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को ख़ुशख़बरी सुना दो, (१७) जो बात को सुनते और अच्छी बातों[1] की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी और यही अक़्ल वाले हैं। (१८) भला जिस शख़्स पर अज़ाब का हुक्म हो चुका, तो क्या तुम (ऐसे) दोज़ख़ी को मुख़्लसी

१. यानी जिन बातों के करने का उन को हुक्म दिया गया, वे करते हैं और जिन से मना किया गया है, वह नहीं करते। ये दोनों अच्छी बातें हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लाकिनिल-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् ग़ु-रफ़ुम्-मिन् फ़ौक़िहा ग़ु-रफ़ुम्-मब्निय्यतुन्॥ तज्री
मिन् तह़्तिहल-अन्हारु॰ वअ्-दल्लाहि॰ ला युख़्लिफ़ुल्लाहुल-मीआ़द (२०) अ-लम् त-र
अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ़ स-ल-कहू यनाबी-अ़ फ़िल्अर्ज़ि सुम्-म
युख़्रिजु बिही ज़र-अ़म्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म
यज्-अलुहू हु़तामन्॰ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा
लिउलिल-अल्बाब ★(२१) अ-फ़ मन् श-र-
ह़ल्लाहु स़द्-रहू लिलइस्लामि फ़ हु-व अ़ला
नूरिम्-मिर्रब्बिही॰ फ़वैलुल-लिल्क़ासियति क़ुलूबुहुम्
मिन् ज़िक्रिल्लाहि॰ उलाइ-क फ़ी ज़़लालिम्-मुबीन
(२२) अल्लाहु नज़्ज़-ल अह़्-स-नल-ह़दीसि
किताबम्-मु-त-शाबिहम्-मसानि-य॰ तक़्शअि़र्रु मिन्हु
जुलूदुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम्॰ सुम्-म तलीनु
जुलूदुहुम् व क़ुलूबुहुम् इला ज़िक्रिल्लाहि॰ ज़ालि-क
हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशाउ॰ व मंय्युज़्लि-
लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (२३) अ-फ़
मंय्यत्तक़ी बिवज्हिही सू-अल्-अ़ज़ाबि यौमल्-
क़ियामति॰ व क़ी-ल लिज़्ज़ालिमी-न ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्सिबून (२४) कज़्ज़-बल्-
लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अताहुमुल-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (२५) फ़-
अज़ा-क़-हुमुल्लाहुल-ख़िज़्-य फ़िल-ह़यातिद्दुन्या॰ व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु॰ लौ कानू
यअ्-लमून (२६) व ल-क़द् ज़़-रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि
म-सलिल्-ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून॰ (२७) क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यन् ग़ै-र ज़ी अि़व-
जिल्-ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (२८) ज़़-र-बल्लाहु म-स-लर्-रजुलन् फ़ीहि शु-रकाउ
मु-तशाकिसू-न व रजुलन् स-ल-मल्-लिरजुलिन्॰ हल् यस्तवियानि म-स-लन्॰ अल्ह़म्दु
लिल्लाहि॰ बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (२९) इन्न-क मय्यितुंव्-व इन्नहुम् मय्यितून
(३०) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्क़ियामति अि़न्-द रब्बिकुम् तख़्तसिमून★(३१)

وما لي ٢٣ ٣٦٨ الزمر ٣٩

لكن الذين اتقوا ربهم لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجري من تحتها الأنهار
وعد الله لا يخلف الله الميعاد ۞ ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء
فسلكه ينابيع في الأرض ثم يخرج به زرعا مختلفا ألوانه ثم يهيج
فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما إن في ذلك لذكرى لأولي
الألباب ۞ أفمن شرح الله صدره للإسلام فهو على نور من ربه
فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله أولئك في ضلال مبين ۞ الله
نزل أحسن الحديث كتابا متشابها مثاني تقشعر منه جلود الذين
يخشون ربهم ثم تلين جلودهم وقلوبهم إلى ذكر الله ذلك هدى
الله يهدي به من يشاء ومن يضلل الله فما له من هاد ۞ أفمن
يتقي بوجهه سوء العذاب يوم القيامة وقيل للظالمين ذوقوا ما كنتم
تكسبون ۞ كذب الذين من قبلهم فأتاهم العذاب من حيث لا
يشعرون ۞ فأذاقهم الله الخزي في الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة
أكبر لو كانوا يعلمون ۞ ولقد ضربنا للناس في هذا القرآن من
كل مثل لعلهم يتذكرون ۞ قرآنا عربيا غير ذي عوج لعلهم
يتقون ۞ ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ورجلا سلما
لرجل هل يستويان مثلا الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ۞ إنك
ميت وإنهم ميتون ۞ ثم إنكم يوم القيامة عند ربكم تختصمون ۞

منزل ٦

★रु॰ २/१६ आ १२ ▨ व. लाज़िम ★रु॰ ३/१७ आ॰ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दे सकोगे ? (१९) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के लिए ऊंचे-ऊंचे महल हैं, जिन के अन्दर कोठे बने हुए हैं (और) उन के नीचे नहरें बह रही हैं। (यह) ख़ुदा का वायदा है। ख़ुदा वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (२०) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा आसमान से पानी नाज़िल करता, फिर उस को ज़मीन में चश्मे बना कर जारी करता, फिर उस से खेती उगाता है, जिस के तरह-तरह के रंग होते हैं, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, तो तुम उस को देखते हो (कि) पीली (हो गयी है) फिर उसे चूरा-चूरा कर देता है। बेशक इस में अक़्ल वालों के लिए नसीहत है। (२१)★

भला जिस शख़्स का सीना ख़ुदा ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो और वह अपने परवरदिगार की तरफ़ से रोशनी पर हो, (तो क्या वह सख़्त-दिल काफ़िर की तरह हो सकता है ?) पस उन पर अफ़सोस है, जिनके दिल ख़ुदा की याद से सख़्त हो रहे हैं और यही लोग खुली गुमराही में हैं। (२२) ख़ुदा ने निहायत अच्छी बातें नाज़िल फ़रमायी हैं (यानी) किताब (जिस की आयतें आपस में) मिलती-जुलती (हैं) और दोहरायी जाती (हैं,) जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के बदन के (उस से) रौंगटे खड़े हो जाते हैं, फिर उन के बदन और नर्म (हो कर) ख़ुदा की याद की तरफ़ (मुतवज्जह) हो जाते हैं। यही ख़ुदा की हिदायत है, वह इस से जिस को चाहता है, हिदायत देता है और जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (२३) भला जो आदमी क़ियामत के दिन अपने मुंह से बुरे अज़ाब को रोकता हो, (क्या वह वैसा हो सकता है, जो चैन में हो) और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि जो कुछ तुम करते रहे थे, उस के मज़े चखो। (२४) जो लोग इन से पहले थे, उन्हों ने भी झुठलाया था, तो उन पर अज़ाब ऐसी जगह से आ गया कि उन को ख़बर ही न थी। (२५) फिर उन को ख़ुदा ने दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का मज़ा चखा दिया और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत बड़ा है▨ काश ये समझ रखते (२६) और हम ने लोगों के (समझाने के लिए) इस क़ुरआन में हर तरह की मिसालें बयान की हैं, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (२७) यह क़ुरआन अरबी (है), जिस में कोई ऐब (और इख़्तिलाफ़) नहीं, ताकि वे डर मानें। (२८) ख़ुदा एक मिसाल बयान करता है कि एक शख़्स है, जिस में कई (आदमी) शरीक हैं, (अलग-अलग मिज़ाज) और बुरी आदतों वाले और एक आदमी ख़ास एक शख़्स का (ग़ुलाम है।) भला दोनों की हालत बराबर है ? (नहीं) अल्हम्दुलिल्लाह ' बल्कि यह अक्सर लोग नहीं जानते। (२९) (ऐ पैग़म्बर !) तुम भी मर जाओगे और ये भी मर जाएंगे।' (३०) फ़िर तुम सब क़ियामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने झगड़ोगे, और झगड़े का फ़ैसला कर दिया जाएगा। (३१) ★

---

१. काफ़िर इस बात की तमन्ना में थे और इन्तिज़ार कर रहे थे कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी ख़त्म हो जाए। अल्लाह तआला ने हज़रत सल्ल० से फ़रमाया कि हमेशा की ज़िंदगी तुम्हारे लिए भी नहीं है और इन लोगों के लिए भी नहीं है, मौत तुम को भी आएगी और इन को भी क़ब्रस्तान में ले जाएगी, फिर उन का तुम्हारी मौत की तमन्ना और इन्तिज़ार करना सिर्फ़ हिमाक़त और नादानी की बात है। रिवायत है कि जब हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिक़ाल हुआ, तो हज़रत उमर को यक़ीन न हुआ, तो उन्हों ने कहा कि जो कोई कहेगा कि आप वफ़ात पा गये हैं, उस का सर तलवार से (जो नंगी हाथ में लिए हुए थे) उड़ा दूंगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह सुना तो हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि तलवार को म्यान में कीजिए और मिंबर पर चढ़ कर यह आयत पढ़ी, तब सब को यक़ीन हुआ कि आप इन्तिक़ाल फ़रमा गये।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौबीसवां पारः फ़-मन अज़्लमु

सूरतुज़्ज़ु-मरि आयात ३२ से ७५

फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् क-ज़-ब अ़लल्लाहि व कज़्ज़-ब बिस्सिद्क़ि इज़् जा-अहू अलै-स
फ़ी जहन्न-म मस्-वल्-लिलकाफ़िरीन (३२) वल्लज़ी जा-अ बिस्सिद्क़ि व सद्-द-क़
बिही उलाइ-क हुमुल्मुत्तक़ून (३३) लहुम् मा यशाऊ-न अ़िन्-द रब्बिहिम् ज़ालि-क
जज़ाउल्-मुह्-सिनीन (३४) लियुकफ़्फ़िरल्लाहु अ़न्हुम् अस्-व-अल्लज़ी अ़मिलू व
यज्ज़ि-यहुम् अज्-रहुम् बिअह्सनिल्लज़ी कानू
यअ्-मलून (३५) अलैसल्लाहु बिकाफ़िन् अ़ब्दहू
व युख़व्विफ़ू-न-क बिल्लज़ी-न मिन् दूनिही व
मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद् (३६)
व मंय्यह्दिल्लाहु फ़मा लहू मिम्मुज़िल्लिन् अलै-
सल्लाहु बिअ़ज़ीज़िन् ज़िन्तिक़ाम (३७) व
ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्-
अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु क़ुल् अ-फ़-रऐतुम् मा
तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरादनियल्लाहु
बिज़ुर्रिन् हल् हुन्-न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही औ
अरादनी बिरह्मतिन् हल् हुन्-न मुम्सिकातु
रह्मतिही क़ुल् ह़स्बियल्लाहु अलैहि य-त-वक्क-
लुल्-मु-त-वक्किलून (३८) क़ुल् याक़ौमिअ्-मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन्
फ़सौ-फ़ तअ्-लमून (३९) मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्यख़्-ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ा-
बुम्-मुक़ीम (४०) इन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब लिन्नासि बिल्ह़क़्क़ि फ़-मनिह्-
तदा फ़लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व मा अन्-त अ़लैहिम्
बिवकील ★ (४१) अल्लाहु य-त-वफ़्फ़ल्-अन्फ़ु-स ह़ी-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत्
फ़ी मनामिहा फ़-युम्सिकुल्लती क़ज़ा अ़लैहल्मौ-त व युर्सिलुल्-उख़्रा इला अ-जलिम्-
मुसम्मन् इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (४२)

फ़मन अज़्लम २४ — ٣٦٩ — الزمر ٣٩

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ
إِذْ جَاءَهُ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِينَ ۝ وَالَّذِي
جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ لَهُمْ
مَّا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِينَ ۝ لِيُكَفِّرَ
اللّٰهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ
بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَ
مَنْ يَهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ
قُلْ أَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ
هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ
رَحْمَتِهِ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ قُلْ
يٰقَوْمِ اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝
مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَا
عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ
ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ اللّٰهُ
يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ

★रु. ४/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा पर झूठ बोले और सच्ची बात, जब उस के पास पहुंच जाए तो उसे झुठलाए ? क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं है ? (३२) और जो शख़्स सच्ची बात ले कर आया और जिस ने उस की तस्दीक़ की, वही लोग मुत्तक़ी हैं। (३३) वे जो चाहेंगे, उन के लिए उन के परवरदिगार के पास (मौजूद है) मुह्सिनों का यही बदला है, (३४) ताकि ख़ुदा उन से बुराइयों को जो उन्हों ने कीं, दूर कर दे और नेक कामों का जो वे करते रहे, उन को बदला दे। (३५) क्या ख़ुदा अपने बन्दे को काफ़ी नहीं ? और यह तुम को उन लोगों से, जो इस के सिवा हैं, (यानी ग़ैर-ख़ुदा से) डराते हैं और जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (३६) और जिस को ख़ुदा हिदायत दे, उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा ग़ालिब (और) बदला लेने वाला नहीं है ? (३७) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया, तो कह दें कि ख़ुदा ने। कहो कि भला देखो तो जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, अगर ख़ुदा मुझ को कोई तक्लीफ़ पहुंचानी चाहे, तो क्या वे उस तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर मुझ पर मेहरबानी करना चाहे, तो वे उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं ? कह दो कि मुझे ख़ुदा ही काफ़ी है, भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते हैं। (३८) कह दो कि ऐ क़ौम ! तुम अपनी जगह अमल किए जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किए जाता हूं। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा, (३९) कि किस पर अज़ाब आता है जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है ? (४०) हम ने तुम पर किताब लोगों (की हिदायत) के लिए सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो जो शख़्स हिदायत पाता है, तो अपने (भले के) लिए और जो गुमराह होता है तो गुमराही से अपना ही नुक़्सान करता है और (ऐ पैग़म्बर !) तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं हो। (४१)★

ख़ुदा लोगों के मरने के वक़्त उन की रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और जो मरे नहीं (उन की रूहें) सोते में (क़ब्ज़ कर लेता है) फिर जिन पर मौत का हुक्म कर चुकता है, उन को रोक रखता है और बाक़ी रूहों को एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है। जो लोग सोच-विचार करते हैं, उन के

★रु. ४/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अमित्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि शुफ़-आ-अ ط क़ुल् अ-वलौ कानू ला यम्लिकू-न शैअंव्-व
ला यअ्-क़िलून (४३) क़ुल् लिल्लाहिश्शफ़ाअतु जमीअन् ط लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط
सुम्-म इलैहि तुर्जअून (४४) व इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वह्-दहुश्-म-अज़्ज़त् क़ुलूबुल्लज़ी-न
ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति ج व इज़ा ज़ुकि-रल्लज़ी-न मिन् दूनिही इज़ा हुम्
यस्तब्शिरून (४५) क़ुलिल्लाहुम्-म फ़ातिरस्-
समावाति वल्अर्ज़ि आलिमल्-ग़ैबि वश्शहादति
अन्-त तह्कुमु बै-न अिबादि-क फ़ीमा कानू
फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (४६) व लौ अन्-न
लिल्लज़ी-न ज़-लमू मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअंव्-व
मिस्-लहू म-अहू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल्-
अज़ाबि यौमल्क़ियामति ط व बदा लहुम् मिनल्-
लाहि मा लम् यकूनू यह्-तसिबून (४७) व
बदा लहुम् सय्यिआतु मा क-स-बू व हा-क़
बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (४८)
फ़इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआना ز सुम्-म
इज़ा ख़व्वल्नाहु निअ्-म-तम्-मिन्ना ۙ क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अला अिल्मिन् ط बल् हि-य
फ़ित-नतुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (४९) क़द् क़ाल-
हल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् फ़मा अग़्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून
(५०) फ़ - असाबहुम् सय्यिआतु मा क-सबू ط वल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्
हाउला-इ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क-सबू ۙ व मा हुम् बिमुअ्-जिज़ीन
(५१) अ-व लम् यअ् - लमू अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ व
यक़्दिरु ط इन्-न फ़ी ज़ालि - क लआयातिल् - लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (५२)

फمن اظلم ٢٤ ٣٧٠ الزمر ٣٩

الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ط
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
شُفَعَاءَ ط قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ لِلَّهِ
الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ط لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ط ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ قُلِ اللَّهُمَّ
فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ط وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝ وَ
بَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝
فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ز ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ
إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ط بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ط وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ
هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ أَوَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ط إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

★रु. ५/२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिए इस में निशानियां हैं। (४२) क्या उन्हों ने ख़ुदा के सिवा और सिफ़ारिशी बना लिए हैं। कहो कि चाहे वे किसी चीज़ का भी अख़्तियार न रखते हों और न (कुछ) समझते ही हों? (४३) कह दो कि सिफ़ारिश तो सब ख़ुदा ही के अख़्तियार में है। उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (४४) और जब तंहा ज़िक्र किया जाता है, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल भींच उठते हैं और जब इस के सिवा औरों का ज़िक्र किया जाता है, तो ख़ुश हो जाते हैं। (४५) कहो कि ऐ ख़ुदा! (ऐ) आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले (और) छिपे और खुले के जानने वाले! तू ही अपने हर बन्दों में इन बातों का, जिन में वे इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, फ़ैसला करेगा। (४६) और अगर ज़ालिमों के पास वह सब (माल व मताअ) हो जो ज़मीन में है और उस के साथ उसी क़दर और हो तो क़ियामत के दिन बुरे अज़ाब (से मुख़्लसी) पाने के बदले में दे दें और उन पर ख़ुदा की तरफ़ से वह बात ज़ाहिर हो जाएगी, जिस का उन को ख़्याल भी न था। (४७) और उन के आमाल की बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो जाएंगी और जिस (अज़ाब) की वे हंसी उड़ाते थे, वह उन को आ घेरेगा। (४८) जब इंसान को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो हमें पुकारने लगता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से नेमत बख़्शते हैं, तो कहता है कि यह तो मुझे (मेरे) इल्म (व सूझ-बूझ) की वजह से मिली है। (नहीं,) बल्कि वह आज़माइश है, मगर उन में से अक्सर नहीं जानते। (४९) जो लोग इन से पहले थे, वे भी यही कहा करते थे, जो कुछ वे किया करते थे, उन के कुछ काम भी न आया। (५०) उन पर उन के आमाल के वबाल पड़ गये और जो लोग उन में से ज़ुल्म करते रहे हैं, उन पर उन के अमलों के वबाल बहुत जल्द पड़ेंगे और वे (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते। (५१) क्या उन को मालूम नहीं कि ख़ुदा ही, जिस के लिए रोज़ी को फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। जो ईमान लाते हैं, उन के लिए इस में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (५२) ★

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् या अिबादि-यल्लज़ी-न अस्-रफ़ू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्-नतू मिर्रह्मतिल्लाहि
इन्नल्ला-ह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब जमीअ़न् इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (५३) व अनीबू इला
रब्बिकुम् व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अ़ज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून
(५४) वत्तबिअ़ू अह्-स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-
यकुमुल्-अ़ज़ाबु बग़्-त-तंव-व अन्तुम् ला तश्अुरून
(५५) अन् तक़ू-ल नफ़्सुंय्या-हस्-रता अ़ला
मा फ़र्रत्तु फ़ी जम्बिल्लाहि व इन् कुन्तु ल-
मिनस्-साख़िरीन (५६) औ तक़ू-ल लौ
अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु मिनल्-मुत्तक़ीन (५७)
औ तक़ू-ल ही-न तरल्अ़ज़ा-ब लौ अन्-न ली
क़र्र-तन् फ़-अकू-न मिनल्-मुह्सिनीन (५८)
बला क़द् जाअत्-क आयाती फ़-कज़्ज़ब्-त
बिहा वस्तक्बर-त व कुन्-त मिनल्काफ़िरीन
(५९) व यौमल्क़ियामति त-रल्लज़ी-न क-ज़बू
अ़लल्लाहि वुजूहुहुम् मुस्-वद-दतुन् अलै-स फ़ी
जहन्न-म मस्वल्-लिल्मु-त-कब्बिरीन (६०) व युनज्जिल्लाहुल्-लज़ीनत्तक़ौ बि-मफ़ा-
ज़ति-हिम् ला यमस्सुहुमुस्सूउ व ला हुम् यह्-ज़नून (६१) अल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि
शैइंव्-व हु-व अ़ला कुल्लि शैइंव्वकील (६२) लहू मक़ालीदुस्-
समावाति वल्अर्ज़ि वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-
ख़ासिरून★ (६३) क़ुल् अ-फ़-ग़ैरल्लाहि तअ्मुरून्नी अअ्-बुदु अय्युहल्-
जाहिलून (६४) व ल-क़द् ऊहि-य इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लि-क लइन् अश्रक्-त ल-यह्बतन्-न अ़-मलु-क व ल-तकूनन्-न
मिनल्ख़ासिरीन (६५) बलिल्ला-ह फ़अ्-बुद् व कुम्-मिनश्शाकिरीन (६६)

فمن اظلم ٢٤ ٣٧١ الزمر ٣٩

لايت لقوم يؤمنون ﴿٥٢﴾ قل يعبادي الذين اسرفوا على انفسهم
لا تقنطوا من رحمة الله ان الله يغفر الذنوب جميعا انه هو
الغفور الرحيم ﴿٥٣﴾ وانيبوا الى ربكم واسلموا له من قبل ان
ياتيكم العذاب ثم لا تنصرون ﴿٥٤﴾ واتبعوا احسن ما انزل اليكم
من ربكم من قبل ان ياتيكم العذاب بغتة وانتم لا
تشعرون ﴿٥٥﴾ ان تقول نفس يحسرتى على ما فرطت في جنب
الله وان كنت لمن السخرين ﴿٥٦﴾ او تقول لو ان الله هدىني لكنت
من المتقين ﴿٥٧﴾ او تقول حين ترى العذاب لو ان لي كرة
فاكون من المحسنين ﴿٥٨﴾ بلى قد جاءتك ايتي فكذبت بها و
استكبرت وكنت من الكفرين ﴿٥٩﴾ ويوم القيمة ترى الذين
كذبوا على الله وجوههم مسودة اليس في جهنم مثوى للمتكبرين ﴿٦٠﴾
وينجي الله الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء ولا هم
يحزنون ﴿٦١﴾ الله خالق كل شيء وهو على كل شيء وكيل ﴿٦٢﴾
له مقاليد السموت والارض والذين كفروا بايت الله اولئك
هم الخسرون ﴿٦٣﴾ قل افغير الله تامروني اعبد ايها الجهلون ﴿٦٤﴾
ولقد اوحي اليك والى الذين من قبلك لئن اشركت ليحبطن
عملك ولتكونن من الخسرين ﴿٦٥﴾ بل الله فاعبد وكن من

منزل

★रु. ६/३ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(ऐ पैग़म्बर ! मेरी तरफ़ से लोगों को) कह दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, ख़ुदा की रहमत से ना-उम्मीद न होना। ख़ुदा तो सब गुनाहों को बख़्श देता है (और) वह तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (५३) और इस से पहले कि तुम पर अज़ाब आ वाक़ेअ हो, अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजूअ करो और उस के फ़रमांबरदार हो जाओ, फिर तुम को मदद नहीं मिलेगी। (५४) और इस से पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम को ख़बर भी न हो, इस निहायत अच्छी (किताब) की, जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई है, पैरवी करो, (५५) कि (शायद उस वक़्त) कोई नफ़्स कहने लगे कि (हाय ! हाय !!) उस ग़लती पर अफ़सोस है, जो मैं ने ख़ुदा के हक़ में की और मैं तो हंसी ही करता रहा, (५६) या यह कहने लगे कि अगर ख़ुदा मुझ को हिदायत देता तो मैं भी परहेज़गारों में होता। (५७) या जब अज़ाब देख ले, तो कहने लगे कि अगर मुझे फिर एक बार दुनिया में जाना हो तो मैं नेक लोगों में हो जाऊं। (५८) (ख़ुदा फ़रमाएगा,) क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास पहुंच गयी हैं, मगर तू ने उन को झुठलाया और शेख़ी में आ गया और तू काफ़िर बन गया। (५९) और जिन लोगों ने ख़ुदा पर झूठ बोला, तुम क़ियामत के दिन देखोगे कि उन के मुंह काले हो रहे होंगे। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है ? (६०) और जो परहेज़गार हैं, उन की (सआदत और) कामियाबी की वजह से ख़ुदा उन को निजात देगा, न तो उन को कोई सख़्ती पहुंचेगी और न ग़मनाक होंगे। (६१) ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का निगरां है। (६२) उसी के पास आसमानों और ज़मीन की कुंजियां हैं और जिन्हों ने ख़ुदा की आयतों से कुफ़्र किया, वही नुक़सान उठाने वाले हैं। (६३) ★

कह दो कि ऐ नादानो ! तुम मुझ से यह कहते हो मैं ग़ैर-ख़ुदा की पूजा करने लगूं। (६४) और (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारी तरफ़ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ़, जो तुम से पहले हो चुके हैं यही वह्य भेजी गयी है कि अगर तुम ने शिर्क किया, तो तुम्हारे अमल बर्बाद हो जाएंगे और तुम नुक़सान उठाने वालों में हो जाओगे, (६५) बल्कि ख़ुदा ही की इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में

★रु. ६/३ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा क़-द - रुल्ला-ह हक़्-क क़द्रिही वल्अर्ज़ु जमीअन् क़ब्ज़तुहू
यौमल्क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् - बियमीनिही ط सुब्हानहू व लआला
अम्मा युश्रिकून (६७) व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-सअि-क़ मन् फ़िस् -
समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु ط सुम्-म नुफ़ि-ख़ फ़ीहि उख़्रा
फ़-इज़ाहुम् क़ियामुंय्यन्ज़ुरून (६८) व अश्-
र-क़तिल्-अर्ज़ु बिनूरि रब्बिहा व वुज़िअल्-
किताबु व-जी-अ बिन्नबिय्यी-न वश्शु-ह-दाइ व
क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून
(६९) व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा अमिलत्
व हु-व अअ्-लमु बिमा यफ़्-अलून ★ (७०) व
सीक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म ज़ु-म-रन् ط
हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल
लहुम् ख़-ज़-नतुहा अ-लम् यअ्तिकुम् रुसुलुम्-
मिन्कुम् यत्लू-न अलैकुम् आयाति रब्बिकुम् व
युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा ط क़ालू
बला व लाकिन् हक़्क़त् कलिमतुल्-अज़ाबि
अ-लल्काफ़िरीन (७१) क़ीलद्ख़ुलू अब्वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा ج
फ़बिअ्-स मस्-वल् - मु - त-कब्बिरीन (७२) वसीक़ल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम्
इलल्जन्नति ज़ुम - रन् ط हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व
क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा सलामुन् अलैकुम् तिब्तुम् फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन
(७३) व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स-द-क़ना वअ्-दहू व औ-र-स-
नल्-अर्-ज़ न-त-बव्वउ मिनल्जन्नति हैसु नशाउ ج फ़निअ्-म अज्रुल्-आमिलीन
(७४) व-त-रल्-मलाइ-क-त हाफ़्फ़ी-न मिन् हौलिल्-अर्शि युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् ج
व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन ★ (७५)

فمن اظلم ٢٤ ٣٤٢ الزمر ٣٩

الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا
مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَ
اَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ
مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَ
يُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا
وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ
اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ
يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हो। (६६) और उन्हों ने ख़ुदा की क़द्रशनासी जैसी करनी चाहिए थी, नहीं की और क़ियामत के दिन तमाम ज़मीन उस की मुट्ठी में होगी और आसमान उस के दाहिने हाथ में लिपटे होंगे (और) वह इन लोगों के शिर्क से पाक और आली शान है। (६७) और जब सूर फूंका जाएगा, तो जो लोग आसमान में हैं और जो ज़मीन में हैं, सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे, मगर वह जिस को ख़ुदा चाहे, फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा, तो फ़ौरन सब खड़े हो कर देखने लगेंगे। (६८) और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और पैग़म्बर और (और) गवाह हाज़िर किए जाएंगे और उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला किया जाएगा और बे-इंसाफ़ी नहीं की जाएगी। (६९) और जिस शख़्स ने जो अमल किया होगा, उस को उस का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और जो कुछ ये करते हैं, उस को सब की ख़बर है। (७०)★

और काफ़िरों को गिरोह-गिरोह बना कर जहन्नम की तरफ़ ले जाएंगे, यहां तक कि जब वे उस के पास पहुंच जाएंगे, तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, तो उस के दारोग़ा उन से कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही में से पैग़म्बर नहीं आए थे, जो तुम को तुम्हारे परवरदिगार की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उस दिन के पेश आने से डराते थे, कहेंगे, क्यों नहीं, लेकिन काफ़िरों के हक़ में अज़ाब का हुक्म तह्क़ीक़ हो चुका था। (७१) कहा जाएगा कि दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहोगे, तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (७२) और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन को गिरोह-गिरोह बना कर बहिश्त की तरफ़ ले जाएंगे, यहां तक कि जब उस के पास पहुंच जाएंगे और उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, तो उस के दारोग़ा उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम ! तुम बहुत अच्छे रहे। अब इस में हमेशा के लिए दाख़िल हो जाओ। (७३) वे कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने अपने वायदे को हम से सच्चा कर दिया और हम को उस ज़मीन का वारिस बना दिया, हम बहिश्त में जिस मकान में चाहें रहें, तो (अच्छे) अमल करने वालों का बदला भी कैसा ख़ूब है। (७४) तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द घेरा बांधे हुए हैं (और) अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह कर रहे हैं और उन में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जाएगा और कहा जाएगा कि हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहान का मालिक है। (७५)★●

★रु. ७/४ आ ७ ★रु. ८/५ आ ५ ●रुबुअ् १/४

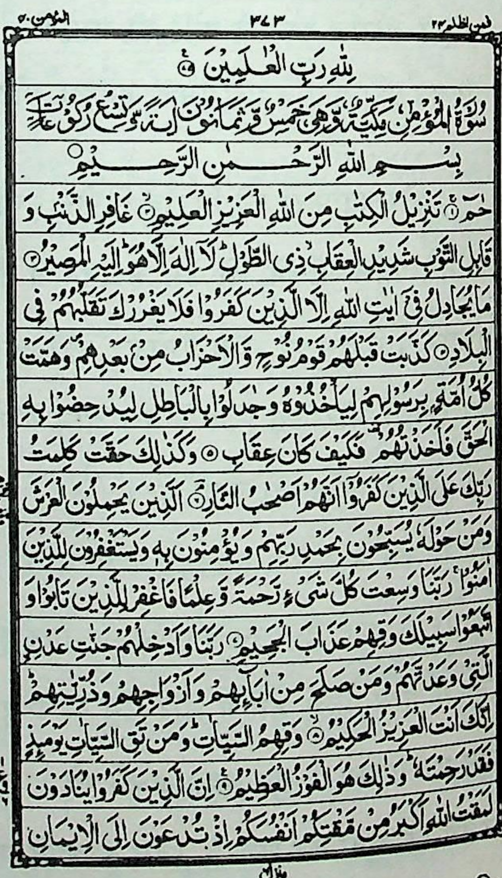
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४० सूरतुल् मुअ्मिनि ६०

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ५२१३ अक्षर, १२४२ शब्द, ८५ आयतें और ९ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

ह़ा-मीम् (१) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनलाहिल् - अज़ीज़िल् - अलीम
(२) ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल्-अिक़ाबि ज़ित्तौलि ला
इला - ह इल्ला हु - व इलैहिल्-मसीर (३) मा युजादिलु फ़ी
आयातिल्लाहि इल्लल्लज़ी - न क-फ़रू फ़ला यग़्रुर्-क त-क़ल्लुबुहुम् फ़िल्-
बिलाद (४) कज़्ज़-बत् क़ब्लहुम् क़ौमु
नूहिंव्वल्-अह़्ज़ाबु मिम्बअ्-दिहिम् व हम्मत्
कुल्लु उम्मतिम्-बिरसूलिहिम् लियअ्ख़ुज़ूहु व
ज़ादलू बिलबातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्ह़क़्-क़
फ़-अ-ख़ज़्तुहुम् फ़कै-फ़ का-न अिक़ाब (५)
व कज़ालि-क ह़क़्क़त् कलिमतु रब्बि-क अ-
न्नल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् अस्ह़ाबुन्नार (६)
अल्लज़ी-न यह़्मिलूनल्अर्-श व मन् ह़ौलहू
युसब्बिहू-न बिह़म्दि रब्बिहिम् व युअ्मिनू-न
बिही व यस्तग़्फ़िरू-न लिल्लज़ी-न आमनू
रब्बना वसिअ्-त कुल्-ल शैइर्रह़्मतंव्-व
अिल्मन् फ़ग़्फ़िर् लिल्लज़ी-न ताबू वत्त-ब-अू
सबील-क व क़िहिम् अज़ाबल्-जह़ीम (७) रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति
अद्नि-निल्लती व-अत्तहुम् व मन् स-ल-ह़ मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व
ज़ुर्रिय्यातिहिम् इन्न-क अन्तल् - अज़ीज़ुल्-ह़कीम (८) व क़िहिमुस्सय्यि-
आति व मन् तक़िस्सय्यिआति यौमइज़िन् फ़-क़द् रहिम्तहू व ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल्-
अज़ीम ★(९) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युनादौ-न ल-मक़्तुल्लाहि अक्बरु मिम्मक़्तिकुम्
अन्फ़ुसकुम् इज़् तुद्औ - न इलल्ईमानि फ़ - तक्फ़ुरून (१०)


٧٤٣ المؤمن ٤٠ فمن اظلم ٢٤

لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞
سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۞ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۞ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ
قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۞
مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى
الْبِلَادِ ۞ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ
كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ
الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۞ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۞ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ
وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ
اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۞ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ
الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ
فَقَدْ رَحِمْتَهٗ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ
لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ
منزل

▨ व. लाज़िम व. न बी स. ★रु. १/६ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४० सूरः मुअ्मिन् ६०

सूरः मुअ्मिन मक्की है, इस में पचासी आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस किताब का उतारा जाना ख़ुदा-ए-ग़ालिब व दाना की तरफ़ से है, (२) जो गुनाह बख़्शने वाला है और तौबा क़ुबूल करने वाला (और) सख़्त अज़ाब देने वाला (और) करम वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ फिर कर जाना है। (३) ख़ुदा की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं, जो काफ़िर हैं, तो उन लोगों का शहरों में चलना-फिरना तुम्हें धोखे में न डाल दे। (४) उन से पहले नूह की क़ौम और उनके बाद और उम्मतों ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया, और हर उम्मत ने अपने पैग़म्बर के बारे में यही इरादा किया कि उसको पकड़ लें और बेहूदा (शुब्हों से) झगड़ते रहे कि उस से हक़ को ख़त्म कर दें, तो मैं ने उनको पकड़ लिया, सो (देख लो) मेरा अज़ाब कैसा हुआ ? (५) और इसी तरह काफ़िरों के बारे में भी तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो चुकी है कि वे दोज़ख़ी हैं ▨(६) जो लोग अर्श को उठाए हुए और जो उसके चारों तरफ़ (हल्क़ा बांधे हुए) हैं (यानी फ़रिश्ते,) वे अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहते हैं और उसके साथ ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बख़्शिशं मांगते रहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ को एहाता किए हुए है, तो जिन लोगों ने तौबा की और तेरे रास्ते पर चले, उन को बख़्श दे और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। (७) ऐ हमारे परवरदिगार ! उनको हमेशा रहने की बहिश्तों में दाख़िल कर, जिन का तूने उनसे वायदा किया है और जो उन के बाप-दादा और उन की बीवियों और उनकी औलाद में से नेक हों, उनको भी। बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (८) और उनको अज़ाबों से बचाए रख और जिस को तू उस दिन अज़ाबों से बचा लेगा, तो बेशक उस पर मेहरबानी हुई और यही बड़ी कामियाबी है। (९) ★

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन से पुकार कर कह दिया जाएगा कि जब तुम (दुनिया में) ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे और मानते नहीं थे तो ख़ुदा इस से कहीं ज़्यादा बेज़ार होता था, जितने कि

▨ व. लाज़िम व. न बी स. ★ रु. १/६ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ालू रब्बना अ-मत्त-नस्नतैनि व अह़्यैत-नस्नतैनि फ़अ्-त-रफ़्ना बिज़ुनूबिना
फ़-हल् इला ख़ुरूजिम् - मिन् सबील (११) ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा
दुअि-यल्लाहु वह़्दहू क-फ़र्तुम् व इंय्युश्-रक् बिही तुअ्मिनू फ़ल्हुक्मु लिल्लाहिल्-
अ़लिय्यिल् - कबीर (१२) हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व युनज़्ज़िलु
लकुम् मिनस्समाइ रिज़्क़न् व मा य-त-ज़क्करु
इल्ला मंय्युनीब (१३) फ़द्अुल्ला-ह मुख़्लिसी-न
लहुद्दी-न व लौ करिहल्-काफ़िरून (१४)
रफ़ीअुद्-द-रजाति ज़ुल्अ़र्शि युल्क़िर्रू-ह़ मिन्
अम्रिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही लि-
युन्ज़ि-र यौमत्तलाक़ (१५) यौ-म हुम्
बारिज़ू-न ला यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन्हुम् शैउन्
लि-मनिल्-मुल्कुल्यौ-म लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-
क़ह्हार (१६) अल्यौ-म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्-
सिम्-बिमा क-स-बत् ला ज़ुल्मल्-यौ-म इन्नल्ला-ह
सरीअ़ुल्-ह़िसाब (१७) व अन्ज़िर्-हुम्
यौमल्-आज़िफ़ति इज़िल्क़ुलूबु ल-दल्हनाजिरि काज़िमी-न मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन्
ह़मीमिंव्-व ला शफ़ीअिंय्युता-अ़ (१८) यअ्-लमु ख़ाइन-तल् - अअ् - युनि
व मा तुख़्फ़िस्सुदूर (१९) वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्ह़क़्क़ि वल्लज़ी-न यद्अू-न मिन्
दूनिही ला यक़्ज़ू-न बिशैइन् इन्नल्ला-ह हुवस्समीअ़ुल् - बसीर ★ (२०)
अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल्लज़ी-न कानू मिन्
क़ब्लिहिम् कानू हुम् अशद् - द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि
फ़-अ-ख़-ज़-हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् व मा का-न लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (२१)
ज़ालि - क बि - अन्नहुम् कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति
फ़-क-फ़रू फ़-अ-ख़-ज़-हुमुल्लाहु इन्नहू क़विय्युन् शदीदुल्-अ़िक़ाब (२२)

فمن اظلم ۲۴ ۳۷۴ المؤمن ۴۰

فَتَكْفُرُونَ ﴿۱۰﴾ قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا
بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ﴿۱۱﴾ ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ
وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿۱۲﴾
هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا
مَن يُنِيبُ ﴿۱۳﴾ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿۱۴﴾
رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿۱۵﴾ يَوْمَ هُم بَارِزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ
شَيْءٌ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿۱۷﴾ وَأَنذِرْهُمْ
يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿۱۸﴾ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي
الصُّدُورُ ﴿۱۹﴾ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا
يَقْضُونَ بِشَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿۲۰﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا
هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَ
مَا كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿۲۱﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿۲۲﴾ وَ

★रु. २/७ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम अपने आप से बेज़ार हो रहे हो। (१०) वे कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! तू ने हमको दो बार बे-जान किया और दो बार जान बख़्शी। हम को अपने गुनाहों का इक़रार है, तो क्या निकलने का कोई रास्ता है? (११) यह इसलिए कि जब तन्हा ख़ुदा को पुकारा जाता था, तो तुम इन्कार कर देते थे और अगर उस के साथ शरीक मुक़र्रर किया जाता था, तो मान लेते थे, तो हुक्म तो ख़ुदा ही का है, जो (सब से) ऊपर (और सब से) बड़ा है, (१२) वही तो है, जो तुम को अपनी निशा-नियां दिखाता है और तुम पर आसमान से रोज़ी उतारता है और नसीहत तो वही पकड़ता है, जो (उस की तरफ़) रुजूअ करता है। (१३) तो ख़ुदा की इबादत को ख़ालिस कर-कर उसी को पुकारो, अगरचे काफ़िर बुरा ही मानें। (१४) वह मालिक ऊंचे दर्जे (और) अर्श वाला है। अपने बन्दों में से, जिस को चाहता है, अपने हुक्म से वह्य भेजता है, ताकि मुलाक़ात के दिन से डराए, (१५) जिस दिन वे निकल पड़ेंगे, उन की कोई चीज़ ख़ुदा से छिपी न रहेगी, आज किस की बादशाही है? ख़ुदा की जो अकेला (और) ग़ालिब है। (१६) आज के दिन हर शख़्स को उसके आमाल का बदला दिया जाएगा। आज (किसी के हक़ में) बे-इंसाफ़ी नहीं होगी। बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और उन को क़रीब आने वाले दिन से डराओ, जब कि दिल ग़म से भरकर गलों तक आ रहे होंगे (और) ज़ालिमों का कोई दोस्त नहीं होगा, और न कोई सिफ़ारिशी, जिस की बात क़ुबूल की जाए। (१८) वह आंखों की ख़ियानत को जानता है और जो (बातें) सीनों में छिपी हैं (उनको भी) (१९) और ख़ुदा सच्चाई के साथ हुक्म फ़रमाता है और जिनको ये लोग पुकारते हैं, वे कुछ भी हुक्म नहीं दे सकते। बेशक ख़ुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (२०) ★

क्या उन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उनका अंजाम कैसा हुआ, वह उनसे ज़ोर और ज़मीन में निशान (बनाने) के लिहाज़ से कहीं बढ़ कर थे, तो ख़ुदा ने उनको उनके गुनाहों की वजह से पकड़ लिया और उनको ख़ुदा (के अज़ाब) से कोई भी बचाने वाला न था। (२१) यह इसलिए कि उनके पास पैग़म्बर खुली दलीलें लाते थे, तो ये कुफ़्र करते थे, सो ख़ुदा ने उनको पकड़ लिया, बेशक वह ताक़त वाला (और) सख़्त अज़ाब देने वाला है। (२२)

★रु. २/७ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन ॥(२३) इला फ़िर्औ-न
व हामा-न व क़ारू-न फ़क़ालू साहिरुन् कज़्ज़ाब (२४) फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्-
हक़्क़ि मिन् अिन्दिना क़ालुक़्तुलू अब्नाअल्लज़ी-न आमनू म-अहू वस्तह़्यू निसा-अहुम् ॰
व मा कैदुलकाफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (२५) व क़ा-ल फ़िर्औनु ज़रूनी अक़्तुल्
मूसा वल्यद्अु रब्बहू ॰ इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युबद्-
दि-ल दी-नकुम् औ अंय्युज़्हि-र फ़िल्अर्ज़िल्-
फ़साद (२६) व क़ा-ल मूसा इन्नी उज़्तु
बिरब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु-त-कब्बि-
रिल्ला युअ्मिनु बियौमिल्-हिसाब ★(२७) व
क़ा-ल रजुलुम्-मुअ्मिनुम्-मिन् आलि फ़िर्औ-न
यक्तुमु ईमानहू अ-तक़्तुलू-न रजुलन् अंय्यक़ू-ल
रब्बियल्लाहु व क़द् जा-अकुम् बिल्बय्यिनाति
मिर्रब्बिकुम् ॰ व इंय्यकु काज़िबन् फ़-अलैहि
कज़िबुहू ॰ व इंय्यकु सादिक़ंय्युसिब्-कुम् बअ्-
ज़ुल्लज़ी यअिदुकुम् ॰ इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन्
हु-व मुस्रिफ़ुन् कज़्ज़ाब (२८) या क़ौमि
लकुमुल्-मुल्कुल्-यौ-म ज़ाहिरी-न फ़िल्अर्ज़ि ॰ फ़-मंय्यन्सुरुना मिम्बअ्सिल्लाहि इन् जा-अना ॰
क़ा-ल फ़िर्औनु मा उरीकुम् इल्ला मा-अरा व मा अह्दीकुम् इल्ला
सबीलर्-रशाद (२९) व क़ालल्लज़ी आ-म-न या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु
अलैकुम् मिस्-ल यौमिल् - अह्ज़ाब ॥(३०) मिस् - ल दअ्बि क़ौमि
नूहिव-व आदिव्-व समू-द वल्लज़ी-न मिम्बअ् - दिहिम् ॰ व मल्लाहु युरीदु
ज़ुल्मल् - लिल्अिबाद (३१) व या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम्
यौमत्तनाद ॥(३२) यौ-म तुवल्लू-न मुद्बिरी-न ॰ मा लकुम् मिनल्लाहि
मिन् आसिमिन् ॰ व मंय्युज़्लि-लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (३३)

فمن اظلم ۲۴ ۴٧۵ المؤمن ۴۰

لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰی بِاٰیٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۳﴾ اِلٰی فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ
وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ کَذَّابٌ ﴿۲۴﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْیُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا کَیْدُ
الْکٰفِرِیْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿۲۵﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰی وَلْیَدْعُ
رَبَّهٗ ۚ اِنِّیْٓ اَخَافُ اَنْ یُّبَدِّلَ دِیْنَکُمْ اَوْ اَنْ یُّظْهِرَ فِی الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿۲۶﴾
وَقَالَ مُوْسٰٓی اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَرَبِّکُمْ مِّنْ کُلِّ مُتَکَبِّرٍ لَّا یُؤْمِنُ
بِیَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۲۷﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَکْتُمُ
اِیْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَکُمْ بِالْبَیِّنٰتِ
مِنْ رَّبِّکُمْ ؕ وَاِنْ یَّکُ کَاذِبًا فَعَلَیْهِ کَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ یَّکُ صَادِقًا یُّصِبْکُمْ
بَعْضُ الَّذِیْ یَعِدُکُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ کَذَّابٌ ﴿۲۸﴾
یٰقَوْمِ لَکُمُ الْمُلْکُ الْیَوْمَ ظٰهِرِیْنَ فِی الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ یَّنْصُرُنَا مِنْ
بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِیْکُمْ اِلَّا مَآ اَرٰی وَمَآ اَهْدِیْکُمْ
اِلَّا سَبِیْلَ الرَّشَادِ ﴿۲۹﴾ وَقَالَ الَّذِیْٓ اٰمَنَ یٰقَوْمِ اِنِّیْٓ اَخَافُ عَلَیْکُمْ
مِّثْلَ یَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿۳۰﴾ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَ
الَّذِیْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ یُرِیْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿۳۱﴾ وَیٰقَوْمِ اِنِّیْٓ
اَخَافُ عَلَیْکُمْ یَوْمَ التَّنَادِ ﴿۳۲﴾ یَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِیْنَ ۚ مَا لَکُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ جَآءَکُمْ

★रु. ३/८ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और हमने मूसा को अपनी निशानियां और रोशन दलील देकर भेजा, (२३) (यानी) फ़िर्औन और हामान और क़ारून की तरफ़, तो उन्होंने कहा कि यह तो जादूगर है झूठा। (२४) ग़रज़ जब वह उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ ले कर पहुंचे, तो कहने लगे कि जो लोग उसके साथ (ख़ुदा पर) ईमान लाए हैं, उन के बेटों को क़त्ल कर दो और बेटियों को रहने दो और काफ़िरों की तद्बीरें बे-ठिकाने होती हैं। (२५) और फ़िर्औन बोला कि मुझे छोड़ो कि मूसा को क़त्ल कर दूं और वह अपने परवरदिगार का बुला ले। मुझे डर है कि वह (कहीं) तुम्हारे दीन को (न) बदल दे या मुल्क में फ़साद (न) पैदा कर दे। (२६) मूसा ने कहा कि मैं हर घमंडी से, जो हिसाब के दिन (यानी क़ियामत) पर ईमान नहीं लाता, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूं। (२७)★

और फ़िर्औन के लोगों में से एक मोमिन शख़्स जो अपने ईमान को छिपाए रखता था, कहने लगा, क्या तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो, जो कहता है कि मेरा परवरदिगार ख़ुदा है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार (की तरफ़) से निशानियां भी लेकर आया है और अगर वह झूठा होगा, तो उसके झूठ का नुक़्सान उसी को होगा और अगर सच्चा होगा, तो कोई-सा अज़ाब, जिसका वह तुम से वायदा करता है, तुम पर वाक़ेअ हो कर रहेगा। बेशक ख़ुदा उस शख़्स को हिदायत नहीं देता, जो बे-लिहाज़ झूठा है। (२८) ऐ क़ौम ! आज तुम्हारी ही बादशाही है और तुम ही मुल्क में ग़ालिब हो, (लेकिन) अगर हम पर ख़ुदा का अज़ाब आ गया, तो (उस के दूर करने के लिए) हमारी मदद कौन करेगा ! फ़िर्औन ने कहा कि मैं तुम्हें वही बात सुनाता हूं, जो मुझे सूझी है और वही राह बताता हूं, जिसमें भलाई है। (२९) तो जो मोमिन था, वह कहने लगा कि ऐ क़ौम ! मुझे तुम्हारे बारे में डर है कि (शायद) तुम पर और उम्मतों की तरह के दिन का अज़ाब आ जाए। (३०) (यानी) नूह की क़ौम और आद और समूद और जो लोग उनके पीछे हुए हैं, उनके हाल ही तरह (तुम्हारा हाल न हो जाए) और ख़ुदा तो बन्दों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता। (३१) और ऐ क़ौम ! मुझे तुम्हारे बारे में पुकार के दिन (यानी क़ियामत) का डर है, (३२) जिस दिन तुम पीठ फेर कर (क़ियामत के मैदान से) भागोगे, (उस दिन) तुम को कोई (अज़ाबे) ख़ुदा से बचाने वाला न होगा और जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला

★रु. ३/८ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ल-क़द् जा-अकुम् यूसुफ़ु मिन् क़ब्लु बिल्बय्यिनाति फ़मा ज़िल्तुम् फ़ी शक्किम्-
मिम्मा जा-अकुम् बिही ط हत्ता इज़ा ह-ल-क क़ुल्तुम् लंय्यब्-असल्लाहु मिम्बअ्-दिही
रसूलन् ط कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मन् हु-व मुस्रिफ़ुम्-मुर्ताबु नि- ج (३४) -ल्लज़ी-न
युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् ط कबु-र मक़्तन् अिन्दल्-
लाहि व अिन्दल्लज़ी-न आमनू ط कज़ालि-क
यत्-बअुल्लाहु अला कुल्लि क़ल्बि मु-त-कब्बिरिन्
जब्बार (३५) व क़ा-ल फ़िर्औनु या
हामानुब्नि ली सर्हल्-ल-अल्ली अब्लुग़ुल्-अस्बाब ॥
(३६) अस्बाबस्समावाति फ़-अत्तलि-अ इला
इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू काज़िबन् ط व
कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिफ़िर्औ-न सूउ अ-म-
लिही व सुद-द अनिस्सबीलि ط व मा कैदु
फ़िर्औ-न इल्ला फ़ी तबाब ★ (३७) व क़ा-
लल्लज़ी आम-न या क़ौमित्तबिअूनि अह्-दिकुम्
सबीलर्रशाद ج (३८) या क़ौमि इन्नमा
हाज़िहिल् - ह्यातुद्दुन्या मताअुं व्-व इन्नल्-
आख़ि-र-त हि-य दारुल्क़रार (३९) मन् अमि-ल सय्यि-अ-तन् फ़ला युज्ज़ा इल्ला
मिस्लहा ج व मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् ज-क-रिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन्
फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त युर्ज़क़ू-न फ़ीहा बिग़ैरि हिसाब (४०) व या क़ौमि
मा ली अद्अूकुम् इलन्नजाति व तद्अूननी इलन्नार ط ● (४१) तद्अूननी लि-अक्फ़ु-र
बिल्लाहि व उश्रि-क बिही मा लै-स ली बिही अिल्मुं व्-व अ-न अद्अूकुम् इलल्-
अज़ीज़िल्-ग़फ़्फ़ार (४२) ला ज-र म अन्नमा तद्अूननी इलैहि लै-स लहू दअ्-
वतुन् फ़िद्दुन्या व ला फ़िल्आख़िरति व अन्-न म-रद्दना इलल्लाहि व अन्नल्-
मुस्रिफ़ी-न हुम् अस्हाबुन्नार (४३) फ़-स-तज़्कुरू-न मा अक़ूलु लकुम् ط व
उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि ط इन्नल्ला - ह बसीरुम् - बिल्अिबाद (४४)

फمن اظلم ۲۴ ۳۷۶ المؤمن ۴۰

يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ
حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ
يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚ ۳۴ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ
اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۳۵ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۳۶ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ
فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ
سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۳۷
وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۚ ۳۸ يٰقَوْمِ
اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ؗ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۳۹ مَنْ
عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۴۰ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۴۱
تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؗ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ
اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۴۲ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي
الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۴۳ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى

★रु. ४/९ आ १० ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नहीं। (३३) और पहले यूसुफ़ भी तुम्हारे पास निशानियां ले कर आए थे, तो जो वह लाए थे, उस से तुम हमेशा शक ही में रहे, यहां तक कि जब वह फ़ौत हो गये, तो तुम कहने लगे कि ख़ुदा उसके बाद कभी कोई पैग़म्बर नहीं भेजेगा। इसी तरह ख़ुदा उस शख़्स को गुमराह कर देता है, जो हद से निकल जाने वाला (और) शक करने वाला हो। (३४) जो लोग बग़ैर इसके कि उन के पास कोई दलील आयी हो, ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं, ख़ुदा के नज़दीक और मोमिनों के नज़दीक झगड़ा सख़्त ना-पसन्द है। इसी तरह ख़ुदा हर घमंडी-सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (३५) और फ़िऔ़न ने कहा कि हामान मेरे लिए एक महल बनाओ ताकि मैं उस पर चढ़ कर रास्तों पर पहुंच जाऊं। (३६) (यानी) आसमानों के रास्तों पर, फिर मूसा के ख़ुदा को देख लूं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं और इसी तरह फ़िऔ़न को उस के बुरे आमाल अच्छे मालूम होते थे और वह रास्ते से रोक दिया गया था और फ़िऔ़न की तदबीर तो बेकार थी। (३७)★

और वह शख़्स जो मोमिन था, उसने कहा कि भाइयो! मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊंगा। (३८) भाइयो! यह दुनिया की ज़िंदगी (कुछ दिन) फ़ायदा उठाने की चीज़ है और जो आख़िरत है, वही हमेशा रहने का घर है। (३९) जो बुरे काम करेगा, उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे, वहां उनको बे-हिसाब रोज़ी मिलेगी। (४०) और ऐ क़ौम! मेरा क्या (हाल) है कि मैं तो तुम को निजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे (दोज़ख़ की) आग की तरफ़ बुलाते हो। (४१) तुम मुझे इस लिए बुलाते हो कि ख़ुदा के साथ कुफ़्र करूं और उस चीज़ को उसका शरीक मुक़र्रर करूं, जिस का मुझे कुछ भी इल्म नहीं और मैं तुम को (ख़ुदा-ए-) ग़ालिब (और) बख़्शने वाले की तरफ़ बुलाता हूं। (४२) सच तो यह है कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुझे बुलाते हो, उसको दुनिया और आख़िरत में बुलाने (यानी दुआ क़ुबूल करने) की क़ुदरत नहीं और हम को ख़ुदा की तरफ़ लौटना है और हद से निकल जाने वाले दोज़ख़ी हैं। (४३) जो बात मैं तुम से कहता हूं, तुम उसे (आगे चल कर) याद करोगे और मैं अपना काम ख़ुदा के सुपुर्द करता

★रु. ४/१ आ १०　नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-वक़ाहुल्लाहु सय्यिआति मा म-करू व हा-क़ बि आलि फ़िर्औ-न सूउल्अज़ाब ج
(४५) अन्नारु युअ्-र-ज़ू-न अलैहा ग़ुदुव्वंव्-व अशिय्यन् ج व यौ-म तक़ूमुस्साअतु قف अद्ख़िलू
आ-ल फ़िर्औ-न अशद-दल्-अज़ाब (४६) व इज् य-तहाज्जू-न फ़िन्नारि
फ़-यक़ूलुज़्-ज़ु-अफ़ाउ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-ब-अन् फ़-हल् अन्तुम्
मुग़्नू-न अन्ना नसीबम्-मिनन्नार (४७)
क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुल्लुन् फ़ीहा ॥ इन्-
नल्ला-ह क़द् ह-क-म बैनल्अिबाद (४८) व
क़ालल्लज़ी-न फ़िन्नारि लि-ख़-ज़-नति ज-हन्नमद्अू
रब्बकुम् युख़फ़्फ़िफ़् अन्ना यौमम्मिनल्-अज़ाब
(४९) क़ालू अ-व लम् तकु तअ्-तीकुम्
रुसुलुकुम् बिल्बय्यिनाति ط क़ालू बला ط क़ालू फ़द्अू ج
व मा दुआउल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल
★ (५०) इन्ना ल-नन्सुरु रुसु-लना
वल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या व
यौ-म यक़ूमुल्-अश्हाद ॥ (५१) यौ-म ला
यन्फ़अुज़्ज़ालिमी-न व मअ्-ज़ि-रतुहुम् व लहुमुल्लअ्-नतु व लहुम् सूउद्दार
(५२) व ल-क़द् आतैना मूसल्हुदा व औरस्ना बनी इस्राईलल्-
किताब ॥ (५३) हुदंव्-व ज़िक्रा लिउलिल्-अल्बाब (५४) फ़स्बिर्
इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुंव्वस्तग़्-फ़िर् लिज़म्बि-क व सब्बिह् बिहम्दि
रब्बि-क बिल्अशिय्यि वल्इब्कार (५५) इन्नल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि
बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् ॥ इन् फ़ी सुदूरिहिम् इल्ला किब्रुम्-मा हुम् बिबालिग़ीहि ج
फ़स्तअिज़् बिल्लाहि ط इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर (५६) ल-ख़ल्क़ुस्समावाति
वल्अर्ज़ि अक्बरु मिन् ख़ल्क़िन्नासि व लाकिन-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (५७)

المؤمن ٤٠ ۴۷۷ فمن اظلم ٢٤

اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ
حَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْۗءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّ
عَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۣ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾
وَاِذْ يَتَحَاۗجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰۗؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا
لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ الَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ
الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ
الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۭ
ع ٥ ١٠ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰۗؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ اِنَّا لَنَنْصُرُ
ج رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾ ۙ
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْۗءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾ ۙ
هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ
اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾
لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

منزل ٦

★रु. ५/१०आ १३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हूं। बेशक ख़ुदा बन्दों को देखने वाला है। (४४) ग़रज़ ख़ुदा ने (मूसा को) उन लोगों की तद्बीरों की बुराइयों से बचाए रखा और फ़िऔ़न वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा, (४५) (यानी जहन्नम की) आग कि सुबह व शाम उसके सामने पेश किए जाते हैं और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, (हुक्म होगा कि) फ़िऔ़न वालों को सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो।[1] (४६) और जब वे दोज़ख़ में झगड़ेंगे, तो छोटे दर्जे के लोग बड़े आदमियों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेअ थे, तो क्या तुम दोज़ख़ (के अज़ाब) का कुछ हिस्सा हम से दूर कर सकते हो? (४७) बड़े आदमी कहेंगे कि तुम (भी और) हम (भी) सब दोज़ख़ में हैं, ख़ुदा बन्दों में फ़ैसला कर चुका है। (४८) और जो लोग आग में (जल रहे) होंगे, वे दोज़ख़ के दारोग़ाओं से कहेंगे कि अपने परवरदिगार से दुआ करो कि एक दिन तो हम से अज़ाब हल्का कर दे। (४९) वे कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर निशानियां लेकर नहीं आए थे? वे कहेंगे, क्यों नहीं, तो वे कहेंगे कि तुम ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ (उस दिन) बेकार होगी। (५०)★

हम अपने पैग़म्बरों की और जो लोग ईमान लाए हैं उनकी, दुनिया की ज़िंदगी में भी मदद करते हैं और जिस दिन गवाह खड़े होंगे, (यानी क़ियामत को भी,) (५१) जिस दिन ज़ालिमों को उनको माज़रत कुछ फ़ायदा न देगी और उन के लिए लानत और बुरा घर है। (५२) और हमने मूसा को हिदायत (की किताब) दी और बनी इस्राईल को उस किताब का वारिस बनाया। (५३) अक़्ल वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। (५४) तो सब्र करो, बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और सुबह व शाम अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो। (५५) जो लोग बग़ैर किसी दलील के, जो उनके पास आयी हो, ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं, उन के दिलों में और कुछ नहीं बड़ाई (का इरादा) है और वह उसको पहुंचने वाले नहीं,[2] तो ख़ुदा की पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (५६) आसमानों और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने के मुक़ाबले में बड़ा (काम) है, लेकिन

---

१. यह क़ब्र की दुनिया का हाल है। काफ़िर को इस का ठिकाना दिखाया जाता है और क़ियामत को उस में बैठेगा और मोमिन को बहिश्त।

२. यानी ये कुफ़्फ़ार जो अल्लाह तआला की आयतों में बे-दलील झगड़ते और उन को झुठलाते हैं, तो उन का मक़सद यह होता है कि पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर कभी ग़ालिब नहीं हो सकते।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा यस्तविल्-अअ्.मा वल्बसीरु ۙ वल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
व लल्मुसीउ ط क़लीलम्-मा त-त-जक्करून (५८) इन्नस्सा-अ.त लआति-
यतुल्ला रै-ब फ़ीहा व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (५९)
व क़ा-ल रब्बुकुमुद्अूनी अस्तजिब् लकुम् ط इन्नल्लज़ी-न यस्तक्बिरू-न अ.न् अिबादती
स-यद्खुलू-न ज-हन्न-म दाख़िरीन ★ (६०) अल्ला-
हुल्लज़ी ज-अ.-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि
वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन्
अ.-लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला
यश्कुरून (६१) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ख़ालिक़ु
कुल्लि शैइन् ▨ ला इला-ह इल्ला हु-व ۖ फ़-अन्ना
तुअ्-फ़कून (६२) कज़ालि-क युअ्फ़कुल्लज़ी-न
कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून (६३)
अल्लाहुल्लज़ी ज-अ.-ल लकुमुलअर-ज़ क़रा-
रंव्वस्समा - अ बिनाअंव्-व स.व्व - रकुम्
फ़-अह्.-स-न सु-व-रकुम् व र-ज़- - क़कुम्
मिनत्तय्यिबाति ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ۖ
फ़-त-बारकल्लाहु रब्बुल् - आलमीन (६४) हुवल्हय्यु ला इला-ह इल्ला
हु-व फ़द्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ط अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् - आलमीन
(६५) क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्.बुदल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्-
लाहि लम्मा जा-अनियल्-बय्यिनातु मिर्रब्बी ۖ व उमिर्तु अन् उस्लि - म
लिरब्बिल्-आलमीन (६६) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म
मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ.-ल-क़तिन् सुम्-म युख़्रिजुकुम् तिफ़् - लन्
सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् सुम्-म लितकूनू शुयूख़न् ۚ व मिन्कुम् मंय्यु-त-वफ़्फ़ा मिन्
क़ब्लु व लितब्लुग़ू अ-ज-लम्-मुसम्मंव्-व ल-अ.ल्लकुम् तअ्. - क़िलून (६७)

فمن اظلم ٢٤ — ٣٧٨ — المؤمن ٤٠

النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝٥٧ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيرُ ۙ وَالَّذِينَ
اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۚ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ۝٥٨
إِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يُؤْمِنُونَ ۝٥٩ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيْٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دٰخِرِينَ ۝٦٠ اَللّٰهُ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ
لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝٦١ ذٰلِكُمُ
اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ ۝٦٢
كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُونَ ۝٦٣ اَللّٰهُ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ
رَبُّ الْعٰلَمِينَ ۝٦٤ هُوَ الْحَيُّ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ۗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝٦٥ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ
أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ
رَّبِّي ۡ وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝٦٦ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ
مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ

منزل ٦

★रु. ६/११ आ १० ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अक्सर लोग नहीं जानते। (५७) और अंधा और आंख वाला बराबर नहीं और न ईमान वाले नेक और बद-कार बराबर हैं। (सच तो यह है कि) तुम बहुत कम ग़ौर करते हो। (५८) क़ियामत तो आने वाली है, इसमें कुछ शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं रखते। (५९) और तुम्हारे परवरदिगार ने कहा है कि तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से घमंड के तौर पर कतराते हैं, बहुत जल्द जहन्नम में ज़लील हो कर दाखिल होंगे★ (६०)

ख़ुदा ही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी कि इस में आराम करो और दिन को रोशन बनाया (कि इस में काम करो।) बेशक ख़ुदा लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (६१) यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, जो हर चीज़ का पैदा करने वाला है, ▨ उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां भटक रहे हो? (६२) इसी तरह वे लोग भटक रहे थे, जो ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे। (६३) ख़ुदा ही तो है, जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और तुम्हारी शक्लें बनायीं और शक्लें भी अच्छी बनायीं और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है। पस अल्लाह रब्बुल आलमीन बहुत ही बरकत वाला है। (६४) वह ज़िंदा है, (जिसे मौत नहीं,) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तो उस की इबादत को खालिस कर-कर उसी को पुकारो। हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है जो तमाम जहान का परवरदिगार है। (६५) (ऐ मुहम्मद!) इनसे कह दो कि मुझे इस बात से मना किया गया है कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, उन की इबादत करूं (और मैं उन की कैसे इबादत करूं,) जबकि मेरे पास मेरे परवरदिगार (की तरफ़) से खुली दलीलें आ चुकी हैं और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि सारे जहान के परवरदिगार ही के फ़रमान के ताबेअ हूं। (६६) वही तो है, जिस ने तुम को (पहले) मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ा बना कर, फिर लोथड़ा बना कर, फिर तुम को निकालता है (कि तुम) बच्चे (होते हो,) फिर तुम अपनी जवानी को पहुंचते हो, फिर बूढ़े हो जाते हो और कोई तुम में से पहले ही मर जाता है और तुम (मौत के) मुक़र्रर वक़्त तक पहुंच जाते हो, और ताकि तुम समझो।[1] (६७) वही तो है,

[1] यानी इस बात को सोचो कि जिस ख़ुदा ने तुम को पहली बार पैदा किया और तुम पर बचपन और जवानी और बुढ़ापे की हालतें पैदा कर के फिर तुम को मौत दी, वह इस बात पर भी क़ुदरत रखता है कि तुम को क़ियामत के दिन फिर ज़िंदा करे और जो लोग इन बातों पर ग़ौर करते हैं, उन को इस बात के मानने में झिझक नहीं हो सकती कि इसी तरह क़ियामत को ज़िंदा किए जाएंगे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुवल्लज़ी युह़्यी व युमीतु ج फ़-इज़ा क़ज़ा अम्-रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू
कुन् फ़यकून ★(६८) अ - लम् त-र इलल्लज़ी - न युजादिलू-न फ़ी
आयातिल्लाहि ط अन्ना युस्-रफ़ून ج(६९) अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिल्किताबि
व बिमा अर्सल्ना बिही रुसुलुना ۛ फ़-सौ-फ़ यअ्-लमून لا (७०) इज़िल्-
अग़्-लालु फ़ी अअ्-नाक़िहिम् वस्सलासिलु ط
युस्-हबू-न لا (७१) फ़िल्हमीमि ۙ सुम्-म फ़िन्नारि
युस्जरून ج (७२) सुम्-म क़ी-ल लहुम् ऐनमा
कुन्तुम् तुश्रिकू-न لا (७३) मिन् दूनिल्लाहि ط
क़ालू ज़ल्लू अन्ना बल् लम् नकुन् नद्अू
मिन् क़ब्लु शैअन् ط कज़ालि - क युज़िल्-लुल्
लाहुल्-काफ़िरीन (७४) ज़ालिकुम् बिमा
कुन्तुम् तफ़्रहू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि
व बिमा कुन्तुम् तम् - रहून ج (७५)
उद्ख़ुलू अब्-वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी-न
फ़ीहा ج फ़बिअ्-स मस्-वल् - मु-त-कब्बिरीन
(७६) फ़स् - बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि
हक़्क़ुन् ج फ़-इम्मा नुरि-यन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-त-वफ़्फ़यन्न-क
फ़-इलैना युर्जअून (७७) व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम् - मिन् क़ब्लि-क
मिन्हुम् मन् क़-सस्ना अलै - क व मिन्हुम् मल्लम् नक़्सुस् अलै-क ط व
मा का - न लिरसूलिन् अंय्यअ्ति - य बिआयतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ج
फ़इज़ा जा - अ अम्रुल्लाहि क़ुज़ि - य बिल्हक़्क़ि व ख़सि-र हुनालि-
कल्-मुब्तिलून ★(७८) अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अन्आ-म लितर्कबू
मिन्हा व मिन्हा तअ्-कुलून ز(७९) व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व लितब्-लुग़ू अलैहा
हा-ज-तन् फ़ी सुदूरिकुम् व अलैहा व अलल्फ़ुल्कि तुह् - मलून ط (८०)

فمن اظلم ٢٤ — ٣٧٩ — المؤمن ٤٠

يُتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هُوَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝
اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ يُسْحَبُوْنَ ۝ فِي الْحَمِيْمِ ۙ
ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۝ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ؕ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ
قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ
لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ
قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ
لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا
مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى

منزل

★रु॰ ७/१२ आ ८ ∴ मु॰ अ़ि मु ता ख़॰ १३ ★रु॰ ८/१३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो जिलाता और मारता है, फिर जब वह कोई काम करना (और किसी को पैदा करना) चाहता है, तो उस से कह देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (६८)★

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जो ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं। ये कहां भटक रहे हैं? (६९) जिन लोगों ने (ख़ुदा की) किताब को और जो कुछ हमने अपने पैग़म्बरों को दे कर भेजा, उस को झुठलाया, वे बहुत जल्द मालूम कर लेंगे, (७०) जबकि उन की गरदनों में तौक़ और ज़ंजीरें होंगी (और) घसीटे जाएंगे। (७१) (यानी) खौलते हुए पानी में, फिर आग में झोंक दिए जाएंगे। (७२) फिर उन से कहा जाएगा कि वे कहां हैं, जिन को तुम (ख़ुदा के) शरीक बनाते थे, (७३) (यानी) ग़ैरेख़ुदा कहेंगे, वे तो हम से जाते रहे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज़ को पुकारते ही नहीं थे, इसी तरह ख़ुदा काफ़िरों को गुमराह करता है। (७४) यह इस का बदला है कि तुम ज़मीन में हक़ के बग़ैर (यानी इस के ख़िलाफ़) ख़ुश हुआ करते थे और उस की (सज़ा है) कि इतराया करते थे। (७५) (अब) जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उसी में रहोगे। घमंड करने वालों का क्या बुरा ठिकाना है। (७६) तो (ऐ पैग़म्बर!) सब्र करो, ख़ुदा का वायदा सच्चा है। अगर हम तुम को कुछ उस में से दिखा दें, जिस का हम तुम से वायदा करते हैं (यानी काफ़िरों पर अज़ाब नाज़िल करें) या तुम्हारी ज़िंदगी की मुद्दत पूरी कर दें, तो उन को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है।[1] (७७) और हमने तुम से पहले (बहुत से) पैग़म्बर भेजे, उन में कुछ तो ऐसे हैं, जिन के हालात तुम से बयान कर दिए हैं और कुछ ऐसे हैं, जिन के हालात बयान नहीं किए और किसी पैग़म्बर की ताक़त न थी कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाए, फिर जब ख़ुदा का हुक्म आ पहुंचा, तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और बातिल वाले नुक़्सान में पड़ गये। (७८) ★

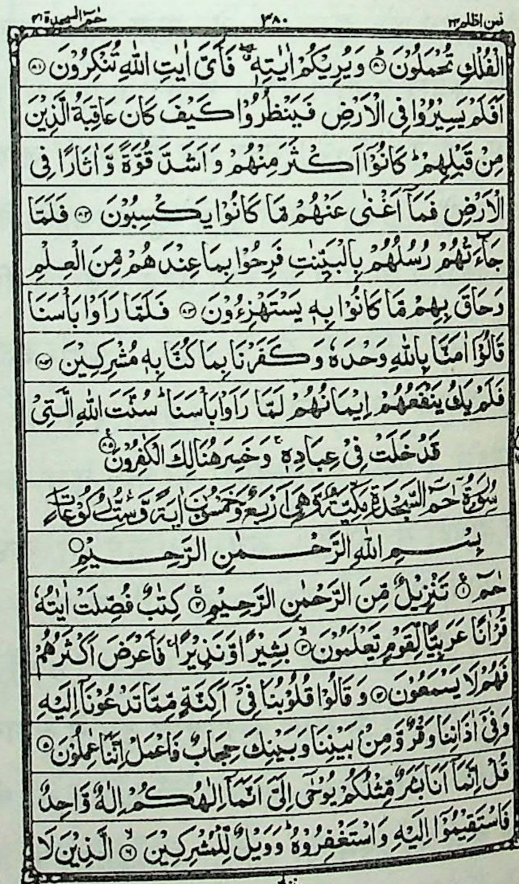
ख़ुदा ही तो है, जिसने तुम्हारे लिए चारपाए बनाए, ताकि उनमें से कुछ पर सवार हो और कुछ को तुम खाते हो। (७९) और तुम्हारे लिए उन में (और भी) फ़ायदे हैं और इसलिए भी कि (कहीं जाने की) तुम्हारे दिलों में जो ज़रूरत हो, उन पर (चढ़ कर वहां) पहुंच जाओ और उन

---

१. यानी अगर तुम्हारी ज़िंदगी में उन पर अज़ाब नाज़िल न किया जाए, तो तुम्हारी वफ़ात के बाद उन को हमारे ही पास लौट कर आना है, उस वक़्त ख़ुदा का वायदा पूरा हो जाएगा और ये दर्दनाक अज़ाब में पड़े होंगे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व युरीकुम् आयातिही ﷺ फ़ - अय्-य आयातिल्लाहि तुन्किरून (८१)
अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط
कानू अक्स-र मिन्हुम् व अशद्-द क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़मा अग़ना अन्हुम्
मा कानू यक्सिबून (८२) फ़-लम्मा जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रिहू
बिमा अिन्दहुम् मिनल्अिलिम व ह़ा-क़ बिहिम्
मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (८३) फ़-लम्मा
रऔ बअ्-सना क़ालू आमन्ना बिल्लाहि वह्-दहू
व क-फ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन (८४)
फ़-लम् यकु यन्फ़अुहुम् ईमानुहुम् लम्मा रऔ
बअ्-सना ط सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् फ़ी
अिबादिही ع व ख़सि-र हुनालिकल्-काफ़िरून ★ (८५)



४१ सूरतु ह़ामीम्-अस्सज्दति ६१

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३४०६ अक्षर, ८०६ शब्द, ५४ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

ह़ामीम् ج (१) तन्ज़ीलुम् -
मिनर्रह़्मानिर्रह़ीम ج (२) किताबुन्
फ़ुस्सिलत् आयातुहू क़ुर्आनन् अ-रबिय्यल्-लिक़ौमिंय्यअ्-लमून لا (३) बशी -
रंव्-व नज़ीरन् ج फ़-अअ्-र-ज़ अक्सरुहुम् फ़हुम् ला यस्-मअ़ून (४) व
क़ालू क़ुलूबुना फ़ी अकिन्नतिम्-मिम्मा तद्अूना इलैहि व फ़ी आज़ानिना
वक़्रुंव्-व मिम्बैनिना व बैनि - क ह़िजाबुन् फ़अ्-मल् इन्नना आमिलून
●(५) क़ुल् इन्नमा अ-न ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम्
इलाहुंव्वाहिदुन् फ़स्तक़ीमू इलैहि वस्तग़्फ़िरूहु ط व वैलुल्-लिल्-मुश्रिकीन لا (६)

★ रु. ६/१४ आ ७ ● सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पर और कश्तियों पर सवार होते हो। (८०) और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तो तुम ख़ुदा की किन-किन निशानियों को न मानोगे? (८१) क्या इन लोगों ने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ, (हालांकि) वह उनसे कहीं ज़्यादा और ताक़तवर और ज़मीन में निशान (बनाने) के एतबार से बहुत बढ़कर थे, तो जो कुछ वे करते थे वह उनके कुछ काम न आया। (८२) और जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो जो इल्म (अपने ख़्याल में) उनके पास था, उस पर इतराने लगे और जिस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (८३) फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देख लिया, तो कहने लगे कि हम ख़ुदा-ए-वाहिद पर ईमान लाए और जिस चीज़ को उस के साथ शरीक बनाते थे, उस से इंकारी हुए। (८४) लेकिन जब वह हमारा अज़ाब देख चुके (उस वक़्त) उन के ईमान ने उन को कुछ भी फ़ायदा न दिया। (यह) ख़ुदा की आदत (है) जो उस के बन्दों (के बारे में) चली आती है और वहां काफ़िर घाटे में पड़ कर रह गये। (८५)★

४१ सूरः हामीम अस्-सज्दा ६१

सूरः हामीम अस-सज्दा मक्की है, इस में चौवन आयतें और छै रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम (१) यह किताब (ख़ुदा-ए-) रहमान व रहीम (की तरफ़) से उतरी है। (२) (ऐसी) किताब जिस की आयतें खुले (मतलब वाली) हैं, (यानी) क़ुरआने अरबी उन लोगों के लिए है, जो समझ रखते हैं। (३) जो ख़ुशख़बरी भी सुनाता है और ख़ौफ़ भी दिलाता है, लेकिन उन में से अक्सरों ने मुंह फेर लिया और वे सुनते ही नहीं। (४) और कहने लगे कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, उस से हमारे दिल पर्दों में हैं और हमारे कानों में बोझ (यानी बहरापन) है और हमारे और तुम्हारे दर्मियान पर्दा है, तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं। (५) कह दो कि मैं भी आदमी हूं, जैसे तुम, (हां,) मुझ पर यह वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद एक ख़ुदा है, तो सीधे उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहो और उसी से मग़्फ़िरत मांगो और

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लज़ी-न ला युअ्तूनज़्ज़का-त़ व हुम् बिल्-आख़िरति़ हुम् काफ़िरून
(७) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (८)★
क़ुल् अ-इन्नकुम् ल-तक्फ़ुरू-न बिल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अर्-ज़ फ़ी यौमैनि व तज्-अ़लू-न
लहू अन्दादन् ज़ालि-क रब्बुल्-आ़लमीन (९) व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य मिन
फ़ौक़िहा व बार-क फ़ीहा व क़द्-द-र फ़ीहा
अक़्वा-तहा फ़ी अर्ब-अ़ति़ अय्यामिन् सवा-अल्
लिस्साइलीन (१०) सुम्मस्तवा इलस्समा-इ
व हि-य दुख़ानुन् फ़क़ा-ल लहा व लिल्-
अर्ज़िअ्तिया त़ौअ़न् औ कर्हन् क़ालता अतैना
त़ाइ-ईन (११) फ़-क़ज़ाहुन्-न सब्-अ़
समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि
समा-इन् अम्-रहा व ज़य्यन्नस्समाअद्दुन्या
बिमसाबी-ह़ व ह़िफ़्ज़न् ज़ालि-क तक़्दीरुल्-
अज़ीज़िल्-अ़लीम (१२) फ़-इन् अअ्-रज़ू
फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअि-क़-तम्-मिस्-ल साअि-
क़ति़ आ़दिंव-व समूद (१३) इज़्
जा-अत्हुमुर्रुसुलु मिम्-बैनि ऐदीहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला तअ्-बुदू
इल्लल्ला-ह क़ालू लौशा-अ रब्बुना ल-अन्ज़-ल मलाइक-तन्
फ़-इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (१४) फ़-अम्मा आ़दुन्
फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-ह़क़्क़ि व क़ालू मन् अशद्दु मिन्ना
क़ुव्वतन् अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़हुम् हु-व
अशद्दु मिन्हुम् क़ुव्वतन् व कानू बिआयातिना यज्-ह़दून (१५) फ़-अर्सल्ना
अ़लैहिम् रीह़न् सर्-स-रन् फ़ी अय्यामिन् नहिसातिल्-लिनुज़ीक़हुम् अज़ाबल्-ख़िज़्यि
फ़िल्-ह़यातिद्-दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति़ अख़्ज़ा व हुम् ला युन्सरून (१६)

حم السجدة ٤١ — ٣٨١ — فمن اظلم ٢٤

يؤتون الزكوة وهم بالاخرة هم كفرون ۝٧ ان الذين امنوا وعملوا
الصلحت لهم اجر غير ممنون ۝٨ قل ائنكم لتكفرون بالذي خلق
الارض في يومين وتجعلون له اندادا ذلك رب العلمين ۝٩
وجعل فيها رواسي من فوقها وبرك فيها وقدر فيها اقواتها
في اربعة ايام سواء للسائلين ۝١٠ ثم استوى الى السماء و
هي دخان فقال لها وللارض ائتيا طوعا او كرها قالتا اتينا
طائعين ۝١١ فقضهن سبع سموات في يومين واوحى في كل
سماء امرها وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ذلك
تقدير العزيز العليم ۝١٢ فان اعرضوا فقل انذرتكم صعقة
مثل صعقة عاد وثمود ۝١٣ اذ جاءتهم الرسل من بين
ايديهم ومن خلفهم الا تعبدوا الا الله قالوا لو شاء ربنا
لانزل ملئكة فانا بما ارسلتم به كفرون ۝١٤ فاما عاد فاستكبروا
في الارض بغير الحق وقالوا من اشد منا قوة اولم يروا ان
الله الذي خلقهم هو اشد منهم قوة وكانوا بايتنا يجحدون ۝١٥
فارسلنا عليهم ريحا صرصرا في ايام نحسات لنذيقهم
عذاب الخزي في الحيوة الدنيا ولعذاب الاخرة اخزى و
هم لا ينصرون ۝١٦ واما ثمود فهدينهم فاستحبوا العمى على

ع ١ ٨ ١٥

منزل ٦

★रु. १/१५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुश्रिकों पर अफ़सोस है, (६) जो ज़कात नहीं देते और आख़िरत के भी क़ायल नहीं। (७) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए (ऐसा) सवाब है, जो ख़त्म ही न हो★(८) कह दो, क्या तुम उस से इंकार करते हो, जिस ने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और (बुतों को) उस के मुक़ाबले का ठहराते हो ? वही तो सारे जहान का मालिक है। (९) और उसी ने ज़मीन में उस के ऊपर पहाड़ बनाए और ज़मीन में बरकत रखी और उस में रोज़ी का सामान मुक़र्रर किया, (सब) चार दिन में (और तमाम) तलब रखने वालों के लिए बराबर। (१०) फिर आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और वह धुवां था तो उसने उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों आओ (चाहे) ख़ुशी से चाहे ना-ख़ुशी से, उन्होंने कहा कि हम ख़ुशी से आते हैं। (११) फिर दो दिन में सात आसमान बनाये और हर आसमान में उस (के काम) का हुक्म भेजा और हमने दुनिया के आसमान को चिराग़ों (यानी सितारों) से सजा दिया और (शैतानों से) बचाए रखा। ये ज़बरदस्त (और ख़बरदार के (मुक़र्रर किए हुए) अंदाज़े हैं। (१२) फिर अगर ये मुंह फेर लें, तो कह दो कि मैं तुम को (ऐसी) चिंघाड़ (के अज़ाब) से डराता हूं, जैसे आद और समूद पर चिंघाड़ (का अज़ाब आया था)। (१३) जब उन के पास पैग़म्बर उन के आगे और पीछे से आए कि ख़ुदा के सिवा (किसी की) इबादत न करो, कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता, सो जो तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नहीं मानते। (१४) जो आद थे, वे ना-हक़ मुल्क में घमंड करने लगे कि हम से बढ़ कर ताक़त में कौन है ? क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा, जिसने उन को पैदा किया, वह उन से ताक़त में बहुत बढ़ कर है और वे हमारी आयतों से इंकार करते रहे। (१५) तो हमने उन पर नहूसत के दिनों में ज़ोर की हवा चलायी, ताकि उन को दुनिया की ज़िंदगी में ज़िल्लत के अज़ाब का मज़ा चखा दें और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ज़लील करने वाला है और (उस दिन) उन को मदद भी न मिलेगी। (१६) और समूद थे, उन को हमने सीधा

★रु. १ /१५ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अम्मा समूदु फ़-हदैनाहुम् फ़स्त-हब्बुल्-अमा अलल्-हुदा फ़-अ-ख़-ज़त्हुम् साअि-
क़तुल्-अज़ाबिल्-हूनि बिमा कानू यक्सिबून ८ (१७) व नज्जैनल्लज़ी - न
आमनू व कानू यत्तक़ून★ (१८) व यौ-म युह्शरु अअ्-दाउल्लाहि इलन्नारि फ़हुम्
यूज़अून (१९) हत्ता इज़ा मा जा-ऊहा शहि-द अलैहिम् सम्अुहुम्
व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअ्-
मलून (२०) व क़ालू लिजुलूदिहिम् लि-म
शहित्तुम् अलैना क़ालू अन्-त-क़-नल्-लाहुल्लज़ी
अन्-त-क़ कुल्-ल शैइंव्-व हु-व ख़-ल-क़कुम्
अव्व-ल मर्रतिंव-व इलैहि तुर्-जअून (२१) व
माकुन्तुम् तस्ततिरू-न अंय्यश्-ह-द अलैकुम्
सम्-अुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला
जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़-नन्तुम् अन्नल्ला-ह ला
यअ्-लमु कसीरम्-मिम्मा तअ्-मलून (२२)
व ज़ालिकुम् ज़न्नुकुमुल्लज़ी ज़-नन्तुम्
बिरब्बिकुम् अर्दाकुम् फ़-अस्बह्तुम्
मिनल्ख़ासिरीन (२३) फ़इंय्यस्बिरू

حٰمٓ السجدۃ ۴۱ ۳۸۲ فمن اظلم ۲۴

الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝۱۷ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝۱۸ وَيَوْمَ يُحْشَرُ
اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝۱۹ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ
عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۲۰
وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ
اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۲۱
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ
لَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ
كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝۲۲ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝۲۳ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ
مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ۝۲۴ وَ
قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝۲۵ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝۲۶
فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ
اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۲۷ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ

منزل ۶

फ़न्नारु मस् - वल् - लहुम् ८ व इंय्यस्तअ् - तिबू फ़मा हुम् मिनल् -
मुअ् - तबीन (२४) व क़य्यज़्ना लहुम् क़ु - र-ना - अ फ़-ज़य्यनू
लहुम् मा बै - न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व हक़्-क़ अलैहिमुल्-
क़ौलु फ़ी उममिन् क़द् ख - लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्जिन्नि वल्-
इन्सि ८ इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन★(२५) व क़ालल्लज़ी - न क - फ़रू
ला तस् - मअू लिहाज़ल्क़ुर्आनि वल्ग़ौ फ़ीहि ल - अल्लकुम् तग़्लि -
बून (२६) फ़ - लनुज़ीक़न्नल्लज़ी - न क - फ़रू अज़ाबन्
शदीदंव् - व ल - नज्ज़ियन्नहुम् अस्-व-अल्लज़ी कानू यअ्-मलून (२७)

★रु. २/१९ आ १० ★रु. ३/१७ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रास्ता दिखा दिया था, मगर उन्हों ने हिदायत के मुक़ाबले में अंधा रहना पसन्द किया, तो उन के आमाल की सज़ा में कड़क ने उन को आ पकड़ा और वह ज़िल्लत का अज़ाब था। (१७) और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन को हमने बचा लिया। (१८) ★

और जिस दिन ख़ुदा के दुश्मन दोज़ख़ की तरफ़ चलाए जाएंगे, तो तर्तीबवार कर लिए जाएंगे, (१९) यहां तक कि जब उस के पास पहुंच जाएंगे, तो उन के कान और आंखें और चमड़े (यानी दूसरे अंग,) उन के ख़िलाफ़ उन के आमाल की गवाही देंगे। (२०) और वे अपने चमड़ों (यानी अंग) से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी? वे कहेंगे कि जिस ख़ुदा ने सब चीज़ों को ज़ुबान दी, उसी ने हम को भी बोलने की ताक़त दी और उसी ने तुम को पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (२१) और तुम इस (बात के डर) से तो पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और चमड़े तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे, बल्कि तुम यह ख़्याल करते थे कि ख़ुदा को तुम्हारे बहुत से अमलों की ख़बर ही नहीं। (२२) और इसी ख़्याल नें, जो तुम अपने परवरदिगार के बारे में रखते थे, तुम को हलाक कर दिया और तुम घाटा पाने वालों में हो गये। (२३) अब अगर ये सब्र करेंगे, तो उन का ठिकाना दोज़ख़ ही है और अगर तौबा करेंगे, तो उन की तौबा क़ुबूल नहीं की जाएगी। (२४) और हमने (शैतानों को) उन का हमनशीन मुक़र्रर कर दिया था, तो उन्हों ने उन के अगले और पिछले आमाल उन को उम्दा कर दिखाए थे और इंसानों की जमाअतें जो उन से पहले गुज़र चुकीं, उन पर भी ख़ुदा (के अज़ाब) का वायदा पूरा हो गया। बेशक ये नुक़सान उठाने वाले हैं। (२५) ★ और काफ़िर कहने लगे कि इस क़ुरआन को सुना ही न करो और (जब पढ़ने लगें तो) शोर मचा दिया करो, ताकि ग़ालिब रहो। (२६) सो हम भी काफ़िरों को सख़्त अज़ाब के मज़े चखाएंगे और बुरे अमल की जो

★रु. २/१६ आ १० ★रु. ३/१७ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जालि-क जज़ा-उ अअ्-दा-इल्लाहिन्नारु लहुम् फ़ीहा दारुल्ख़ुल्दि
जज़ा-अम्-बिमा कानू बिआयातिना यज्-हदून (२८) व
क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू रब्बना अरिनल्लज़ैनि अ-ज़ल्लाना मिनल्जिन्नि
वल्इन्सि नज्-अल्हुमा तह्-त अक़्दामिना लि-यकूना मिनल्-अस्फ़लीन (२९)
इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्-
तक़ामू त-त-नज़्ज़लु अलैहिमुल्-मला-इकतु
अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू
बिल्-जन्नतिल्लती कुन्तुम् तूअदून (३०)
नह्नु औलियाउकुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या व
फ़िल्आख़िरति व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही
अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्-दऊन
(३१) नुज़ुलम्-मिन् ग़फ़ूरिर्रहीम ★(३२)
व मन् अह्सनु क़ौलम्-मिम्मन् दआ
इलल्लाहि व अमि-ल सालिहंव्-व क़ा-ल
इन्ननी मिनल्मुस्लिमीन (३३) व ला
तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु इद्फ़अ्-

فمن اظلم ۲۴ ۳۸۳ حٰمٓ السجدۃ ۴۱

النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۗ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
يَجْحَدُوْنَ ۝۲۸ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ
اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا
مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۝۲۹ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا
تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا
بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝۳۰ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ
وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝۳۱ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝۳۲ وَ
مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ
اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝۳۳ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۗ
اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ
كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ۝۳۴ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَ
مَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝۳۵ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ
الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝۳۶
وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۗ لَا تَسْجُدُوْا
لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ
كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝۳۷ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ

منزل ۶

बिल्लती हि-य अह्सनु फ़-इज़ल्लज़ी बै-न-क व बैनहू अदावतुन्
क-अन्नहू वलिय्युन् हमीम (३४) व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्लज़ी-न
स-बरू व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन् अज़ीम (३५) व
इम्मा यन्-ज़-ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअिज़् बिल्लाहि इन्नहू
हुवस्समीअुल्-अलीम (३६) व मिन् आयातिहिल्लैलु वन्नहारु वश्-
शम्सु वल्क़-मरु ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़-मरि वस्जुदू
लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़हुन्-न इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्-बुदून (३७)

★रु. ४/१८ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वे करते थे, सज़ा देंगे (२७) यह ख़ुदा के दुश्मनों का बदला है (यानी) दोज़ख़। उन के लिए इसी में हमेशा का घर है। यह इस की सज़ा है कि हमारी आयतों से इंकार करते थे। (२८) और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! जिन्नों और इंसानों में से जिन लोगों ने हम को गुमराह किया था, उन को हमें दिखा कि हम उन को अपने पांवों के तले (रौंद) डालें, ताकि वे निहायत ज़लील हों। (२९) जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है, फिर वे (उस पर) क़ायम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे (और कहेंगे) कि ख़ौफ़ करो और न ग़मनाक हो और बहिश्त की, जिस का तुम से वायदा किया जाता है, ख़ुशी मनाओ। (३०) हम दुनिया की ज़िंदगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी (तुम्हारे साथी हैं) और वहां जिस (नेमत) को तुम्हारा जी चाहेगा, तुम को मिलेगी और जो चीज़ तलब करोगे, तुम्हारे लिए मौजूद होगी। (३१) (यह) बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ़ से मेहमानी है। (३२)★

और उस शख़्स से बात का अच्छा कौन हो सकता है, जो ख़ुदा की तरफ़ बुलाए और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमान हूं। (३३) और भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, तो (सख़्त बातों का) ऐसे तरीक़े से जवाब दो, जो बहुत अच्छा हो, (ऐसा करने से तुम देखोगे) कि जिस में और तुम में दुश्मनी थी, वह तुम्हारा गर्म-जोश दोस्त है। (३४) और यह बात उन ही लोगों को हासिल होती है, जो बर्दाश्त करने वाले हैं और उन ही को नसीब होती है, जो बड़ी क़िस्मत वाले हैं। (३५) और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा पैदा हो, तो ख़ुदा की पनाह मांग लिया करो। बेशक वह सुनता जानता है। (३६) और रात और दिन, सूरज और चांद उस की निशानियों में से हैं। तुम लोग न तो सूरज को सज्दा करो और न चांद को, बल्कि ख़ुदा ही को सज्दा करो, जिस ने इन चीज़ों को पैदा किया है, अगर तुम को उस की इबादत मंज़ूर है। (३७)

★रु. ४/१८ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़इनिस्तक्बरू फ़ल्लज़ी-न अिन्-द रब्बि-क युसब्बिहू-न लहू बिल्लैलि वन्नहारि व
हुम् ला यस्-अमून □ (३८) व मिन् आयातिही अन्न-क त-रल्अर-ज़ ख़ाशि-अ-तन्
फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अलैहल्-मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत् ط इन्नल्लज़ी अह् - याहा
लमुह़्यिल्मौता ط इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (३९) इन्नल्लज़ी-न
युल्हिदू-न फ़ी आयातिना ला यख़्फ़ौ-न अलैना ط
अ-फ़-मंय्युल्क़ा फ़िन्नारि ख़ैरुन् अम्मंय्यअ्ती
आमिनंय्यौमल् - क़ियामति ط इअ् - मलू मा
शिअ्तुम् ؕ इन्नहू बिमा तअ्मलू-न बसीर
(४०) इन्नल्लज़ी - न क - फ़रू
बिज़्ज़िक्रि लम्मा जा - अहुम् ج व इन्नहू
लकिताबुन् अ़ज़ीज़ुल्- ؕ (४१) ला यअ्तीहिल्-
बातिलु मिम्बैनि यदैहि व ला मिन् ख़ल्फ़िही ط
तन्ज़ीलुम्-मिन् ह़कीमिन् ह़मीद (४२)
मा युक़ालु ल-क इल्ला मा क़द् क़ी-ल
लिर्रुसुलि मिन् क़ब्लि-क ط इन्-न रब्ब-क लज़ू
मग़्फ़ि-रतिंव्-व ज़ू अिक़ाबिन् अलीम (४३)
व लौ ज-अ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अअ्-जमिय्यल्लक़ालू लौला फ़ुस्सिलत् आयातुहू ط अ-अअ्-
जमिय्युंव् - व अ़-रबिय्युन् ط क़ुल् हु-व लिल्लज़ी - न आमनू हुदंव - व
शिफ़ाउन् ط वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न फ़ी आज़ानिहिम् वक़्-रुंव्-व हु-व अ़लैहिम्
अ़-मन् ط उलाइ-क युनादौ-न मिम् - मकानिम् - बअ़ीद ★ (४४) व
ल - क़द् आतैना मूसल्किता - ब फ़ख़्तुलि-फ़ फ़ीहि ط व लौला कलि -
मतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् ط व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु
मुरीब (४५) मन् अ़मि - ल सालिहन् फ़लि-नफ़्सिही व मन्
असा - अ फ़-अ़लैहा ط व मा रब्बु - क बिज़ल्लामिल् - लिल्अ़बीद (४६)

فمن اظلم ٢٤ ٣٨٤ حٰمٓ السجدة ٤١

رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ۝٣٨ وَ
مِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٩ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا
يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا
يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤٠
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۝٤١ ۙ
لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ
مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ۝٤٢ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ
مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ۝٤٣ وَ
لَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ
وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ
يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝٤٤ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝٤٥ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٤٦

□ सज्दः ११ ★रु. ५/१६ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अगर ये लोग सर-कशी करें, तो (ख़ुदा को भी इन की परवाह नहीं) जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं, वे रात दिन उस की तस्बीह करते रहते हैं और (कभी) थकते ही नहीं □ (३८) और (ऐ बन्दे ! ये) उसी (की क़ुदरत) के नमूने हैं कि ज़मीन को दबी हुई (यानी सूखी) देखता है। जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं, तो हरी-भरी हो जाती और फूलने लगती है, तो जिस ने ज़मीन को ज़िंदा किया, वही मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (३९) जो लोग हमारी आयतों में कजराही करते हैं,[1] वे हम से छिपे नहीं हैं। भला जो शख़्स दोज़ख़ में डाला जाए, वह बेहतर है या वह जो क़ियामत के दिन अम्न व अमान से आए ? (तो ख़ैर) जो चाहो सो कर लो। जो कुछ तुम करते हो, वह उस को देख रहा है। (४०) जिन लोगों ने नसीहत को न माना, जब वह उन के पास आयी और यह तो एक बुलंद मर्तबा किताब है। (४१) उस पर झूठ का दख़्ल न आगे से हो सकता है, न पीछे से (और) दाना (और) ख़ूबियों वाले (ख़ुदा) की उतारी हुई है। (४२) तुम से वही बातें कही जाती हैं, जो तुम से पहले और पैग़म्बरों से कही गयी थी। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बख़्श देने वाला भी है और दर्दनाक अज़ाब देने वाला भी है। (४३) और अगर हम इस क़ुरआन को ग़ैर ज़ुबाने अरब में (नाज़िल) करते, तो ये लोग कहते कि इस की आयतें (हमारी ज़ुबान में) क्यों खोल कर बयान नहीं की गयीं? क्या (ख़ूब, कि क़ुरआन तो) ग़ैर-अरबी और (मुख़ातब) अरबी। कह दो कि जो ईमान लाते हैं, उन के लिए (यह) हिदायत और शिफ़ा है और जो ईमान नहीं लाते, उन को कानों में बोझ (यानी बहरापन) है और यह उन के हक़ में अंधेपन (की वजह) है। बोझ की वजह से उन को (गोया) दूर जगह से आवाज़ दी जाती है। (४४) ★

और हमने मूसा को किताब दी, तो इस में इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और ये इस (क़ुरआन) से शक में उलझ रहे हैं। (४५) जो नेक काम करेगा तो अपने लिए और जो बुरे करेगा, तो उन का नुक़सान उसी को होगा और तुम्हारा परवरदिगार बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला

---

१. कजराही करने का मतलब यह है कि आयतों का मतलब बदल देते हैं। साफ़ और सही और खुला मतलब है, उस को छोड़ कर और मतलब निकालते हैं। यह बहुत गंदी हरकत है और इस पर जहन्नम की धमकी है। ख़ुदा इस से पनाह में रखे।

□ सज्दः ११ ★ रु. ५/१९ आ १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पच्चीसवां पारः इलैहि युरद्दु

सूरतु हामीम-अस्सज्दति आयात ४७ से ५४

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्साअति ب व मा तख़्रुजु मिन् स-मरातिम्-मिन् अक्मामिहा
व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व -ला त-ज़अु इल्ला बिअिल्मिही ب व यौ-म
युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई ॥ क़ालू आज़न्ना-क ॥ मा मिन्ना मिन् शहीद ح (४७) व
ज़ल् - ल अन्हुम् मा कानू यद्अू - न मिन् क़ब्लु व ज़न्नू मा
लहुम् मिम्-महीस् (४८) ला यस्-अमुल्-
इन्सानु मिन् दुआइल्ख़ैरि ✓ व इम्-मस्सहुश्-शर्रु
फ़-यऊसुन् क़नूत (४९) व ल-इन् अ-ज़क़्नाहु
रह्-म-तम्-मिन्ना मिम्बअ्-दि ज़र्-रा-अ मस्सत्हु
ल-यक़ूलन्-न हाज़ा ली ॥ व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त
क़ाइ-म-तंव्-व लइर्रुजिअ्-तु इला रब्बी इन्-न
ली अिन्दहू लल्हुस्ना ح फ़-ल नुनब्बिअन्नल्लज़ी-न
क-फ़रू बिमा अ़मिलू ✓ व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिन्
अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ (५०) व इज़ा अन्-अ़म्ना
अ़-लल्इन्सानि अअ्-र-ज़ व नआ बिजानिबिही ح
व इज़ा मस्सहुश्शर्रु फ़ज़ू दुआइन् अ़रीज़ (५१)
क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि
सुम्-म क-फ़र्तुम् बिही मन् अज़ल्लु मिम्मन्
हु-व फ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद (५२) सनुरीहिम्
आयातिनाफ़िल्आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य-त-बय्य-न लहुम् अन्नहुल्-हक़्क़ु ب अ-व
लम् यक्फ़ि बिरब्बि-क अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (५३) अला इन्नहुम् फ़ी
मिर्-यतिम्-मिल्लिक़ाइ रब्बिहिम् ب अला इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-मुहीत ★ (५४)

اليه يرد ٢٥ ٣٨٥ الشورى ٤٢

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَ
مَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ
قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ
مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٤٨﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ
الْخَيْرِ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا
مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً
وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا
عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ
عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ
اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ۚ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ
اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ
رَبِّهِمْ ۚ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾
سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ﴿١﴾ عٓسٓقٓ ﴿٢﴾ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ

४२ सूरतुश्शूरा ६२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३५८५ अक्षर, ८६६ शब्द, ५३ आयतें और ५ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् ح (१) अ़ैन्-सीन्-क़ाफ़् (२) क-ज़ालि-क यूही इलै - क
व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि - क- ॥ -ल्लाहुल् - अ़ज़ीज़ुल् - हकीम (३)

★रु. ६/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नहीं। (४६) क़ियामत के इल्म का हवाला उसी की तरफ़ दिया जाता है (यानी क़ियामत का इल्म उसी को है) और न तो फल गाभों से निकलते हैं और न कोई मादा हामिला होती और न जनती है, मगर उस के इल्म से और जिस दिन वह उन को पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक कहां हैं, तो वे कहेंगे कि हम तुझ से अर्ज़ करते हैं कि हम में से किसी को (उन की) ख़बर ही नहीं। (४७) और जिन को पहले वे (ख़ुदा के सिवा) पुकारा करते थे, (सब) उन से ग़ायब हो जाएंगे और वे यक़ीन कर लेंगे कि उन के लिए मुख़्लिसी नहीं। (४८) इंसान भलाई की दुआएं करता-करता तो थकता नहीं और अगर तक्लीफ़ पहुंच जाती है, तो ना-उम्मीद हो जाता और आस तोड़ बैठता है। (४६) और अगर तक्लीफ़ पहुंचने के बाद हम उस को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है कि यह तो मेरा हक़ था और मैं नहीं ख़्याल करता कि क़ियामत बरपा हो और अगर (क़ियामत सचमुच भी हो और) मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊं, तो मेरे लिए उस के यहां भी ख़ुशहाली है, पस काफ़िर जो अमल किया करते हैं, वे हम ज़रूर उन को जताएंगे और उन को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (५०) और जब हम इंसान पर करम करते हैं, तो मुंह मोड़ लेता और पहलू फेर कर चल देता है और जब उस को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो लंबी-लंबी[1] दुआएं करने लगता है। (५१) कहो कि भला देखो अगर यह (क़ुरआन) ख़ुदा की तरफ़ से हो, फिर तुम इस से इंकार करो, तो उस से बढ़ कर कौन गुमराह है जो (हक़ की) परले दर्जे की मुख़ालफ़त में हो। (५२) हम बहुत जल्द उन को (दुनिया के) हर तरफ़ में भी और ख़ुद उन की ज़ात में भी अपनी निशानियां दिखाएंगे, यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि (क़ुरआन) हक़ है। क्या तुम को यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ से ख़बरदार है। (५३) देखो, ये अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने से शक में हैं। सुन रखो कि वह हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। (५४) ★



४२ सूरः शूरा ६२

सूरः शूरा मक्की है और इस में ५३ आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) ऐन्-सीन्-क़ाफ़, (२) ख़ुदा-ए-ग़ालिब व दाना इसी तरह तुम्हारी तरफ़ (मज़्मून और साफ़ दलीलें) भेजता है, (जिस तरह) तुम से पहले लोगों की तरफ़ वह्य भेजता

---

१. यहां अरबी लफ़्ज़ 'मरीज़' है, जिसे मुहावरे में लम्बी-लम्बी दुआएं कहते हैं, न चौड़ी-चौड़ी, इस लिए तर्जुमे में 'लम्बी-लम्बी दुआएं' लिखा गया।

★रु. ६/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व हुवल्-अलिय्युल्-अज़ीम (४) तकादुस्-
समावातु य-त-फ़त्तर्-न मिन् फ़ौक़िहिन-न वलमलाइकतु युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम्
व यस्तग़्फ़िरू-न लिमन् फ़िल्अर्ज़ि ط अला इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (५) वल्लज़ी-
नत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अल्लाहु हफ़ीज़ुन् अलैहिम् صلے व मा अन-त अलैहिम्

الشورى ٤٢ ٣٨٦ اليه يرد ٢٥

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ
وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا
لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ
فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا
لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُـحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا
اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ
كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ
وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ

बिवकील (६) व कज़ालि-क औहैना इलै-क
क़ुर्आनन् अ-रबिय्यल्-लितुन्ज़ि-र उम्मल्क़ुरा
व मन् हौलहा व तुन्ज़ि-र यौमल्-जम्अि ला
रै-ब फ़ीहि ط फ़रीक़ुन् फ़िल्जन्नति व फ़रीक़ुन्
फ़िस्सअीर (७) व लौ शाअल्लाहु ल-ज-अ-
लहुम् उम्मतंव्वाहिद-तंव्-व लाकिय्युद्ख़िलु
मंय्यशाउ फ़ी रह्मतिही ط वज़्ज़ालिमू-न मा लहुम्
मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (८) अमित्त-ख़-ज़ू
मिन् दूनिही औलिया-अ ج फ़ल्लाहु हुवल्वलिय्यु
व हु-व युह्यिल्मौता ج व हु-व अला कुल्लि
शैइन् क़दीर ★ (९) व मख़्तलफ़्तुम् फ़ीहि
मिन् शैइन् फ़हुक्मुहू इलल्लाहि ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बी अलैहि तवक्कल्तु صلے व इलैहि
उनीब (१०) फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط ज-अ-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम्
अज़्-वाजंव्-व मिनल्-अन्आमि अज़्वाजन् ج यज़्-रउकुम् फ़ीहि ط लै-स कमिस्लिही शैउन् ج
व हुवस्समीउल् बसीर (११) लहू मक़ालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि ج यब्सुतुर्रिज़्-क़
लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु ط इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अलीम (१२) श-र-अ लकुम्
मिनद्दीनि मा वस्सा बिही नूहंव्वल्लज़ी औहैना इलै-क व मा वस्सैना बिही इब्राही-म
व मूसा व ईसा अन् अक़ीमुद्दी - न व ला त - त - फ़र्रक़ू
फ़ीहि ط कबु - र अलल्मुश्रिकी - न मा तद्अूहुम् इलैहि ط अल्लाहु
यज्तबी इलैहि मंय्यशाउ व यह्दी इलैहि मंय्युनीब (१३)

★रु. १/२ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रहा है। (३) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है, और वह बुलंद मर्तबा (और) अज़ीम है। (४) क़रीब है कि आसमान ऊपर से फट पड़ें और फ़रिश्ते अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ उस की तस्बीह करते रहते और जो लोग ज़मीन में हैं, उन के लिए माफ़ी मांगते रहते हैं।[1] सुन रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) और जिन लोगों ने उस के सिवा कारसाज़ बना रखे हैं, वे ख़ुदा को याद हैं और तुम उन पर दारोग़ा नहीं हो। (६) और इसी तरह तुम्हारे पास अरबी क़ुरआन भेजा है, ताकि तुम बड़े गांव (यानी मक्के) के रहने वालों को और जो लोग उस के इर्द-गिर्द रहते हैं, उन को रास्ता दिखाओ और उन्हें क़ियामत के दिन का भी, जिस में कुछ शक नहीं, डर दिलाओ। उस दिन एक फ़रीक़ बहिश्त में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख में। (७) और अगर ख़ुदा चाहता, तो उन को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वह जिस को चाहता है, अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और ज़ालिमों का न कोई यार है और न मददगार। (८) क्या उन्हों ने उस के सिवा कारसाज़ बनाए हैं ? कारसाज़ तो ख़ुदा ही है और वही मुर्दों को ज़िंदा करेगा और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (९) ★

और तुम जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हो, उस का फ़ैसला ख़ुदा की तरफ़ (से होगा)। यही ख़ुदा मेरा परवरदिगार है, मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं। (१०) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (वही है।) उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिंस के जोड़े बनाए और चारपायों के भी जोड़े (बनाए और) इसी तरीक़े पर तुम को फैलाता रहता है। उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सुनता-देखता है। (११) आसमानों और ज़मीन की कुंजियां उसी के हाथ में हैं। वह जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। बेशक वह हर चीज़ को जानता है। (१२) उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी तरफ़ वह्य भेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना। जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुश्रिकों को बुलाते हो, वह उन को मुश्किल गुज़रती है। अल्लाह जिस को चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उस की तरफ़ रुजूअ करे, उसे अपनी तरफ़ रास्ता दिखा देता है। (१३)

---

१. जो लोग ज़मीन पर हैं, इस में मोमिन और काफ़िर सब शामिल हैं। काफ़िरों के हक़ में फ़रिश्ते इस लिए दुआ करते हैं कि उन को उम्मीद होती है कि शायद वे ईमान ले आएंगे। कुछ ने कहा, बख़्शिश की दुआ से रोज़ी की दुआ मुराद है, यानी तमाम फ़रिश्ते ज़मीन वालों के लिए रोज़ी मांगते रहते हैं, चाहे मोमिन हों, चाहे काफ़िर। अगर यही मानी मुराद लिए जाएं तो फ़रिश्तों की दुआ का असर ज़ाहिर है '

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा त-फ़र्रक़ू इल्ला मिम्बअ्-दि माजा-अ हुमुल्अिल्मु बग्-यम्-बैनहुम् व लौला
कलि - मतुन् स - ब - क़त् मिर्रब्बि - क इला अ-जलिम् - मुसम्मल् -
लक़ुज़ि-य बैनहुम् व इन्नल्लजी-न ऊरिसुल्किता-ब मिम्बअ्-दिहिम् लफ़ी शक्किम्-
मिन्हु मुरीब (१४) फ़लिज़ालि - क फ़द्अु वस्तक़िम् कमा उमिर्-त
व ला तत्तबिअ्-अह्वा-अहुम् व क़ुल् आमन्तु
बिमा अन्ज़-लल्लाहु मिन् किताबिन् व उमिर्तु
लिअअ्-दि-ल बैनकुम् अल्लाहु रब्बुना व
रब्बुकुम् लना अअ्-मालुना व लकुम् अअ्-
मालुकुम् ला हुज्ज-त बैनना व बैनकुम् अल्लाहु
यज्मअु बैनना व इलैहिल्-मसीर (१५)
वल्लजी-न युहाज्जू-न फ़िल्लाहि मिम्बअ्-दि
मस्तुजी-ब लहू हुज्जतुहुम् दाहि-ज़तुन् अिन्-द
रब्बिहिम् व अलैहिम् ग़-ज़-बुंव्-व लहुम्
अज़ाबुन् शदीद (१६) अल्लाहुल्लजी
अन्ज़-लल्किता-ब बिल्हक़्क़ि वल्मीज़ा-न व
मा युद्री-क ल-अल्लस्सा-अ-त क़रीब (१७) यस्तअ्-जिलु बिहल्लजी-न ला
युअ्मिनू-न बिहा वल्लज़ी-न आमनू मुश्फ़िक़ू-न मिन्हा व यअ्-लमू-न अन्नहल्हक़्क़ु
अला इन्नल्लज़ी-न युमारू-न फ़िस्साअ़ति लफ़ी ज़लालिम्-बअीद (१८) अल्लाहु
लतीफ़ुम्-बिअिबादिही यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ व हुवल्क़वियुल्-अज़ीज़★(१९) मन्
का-न युरीदु हर्-सल्-आख़िरति नज़िद् लहू फ़ी हर्सिही व मन् का-न युरीदु हर्सद्-
दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् नसीब (२०) अम् लहुम्
शु-रकाउ श-रअू लहुम् मिनद्दीनि मा लम् यअ्-जम्-बिहिल्लाहु व लौला कलि-मतुल्-
फ़स्लि लक़ुज़ि-य बैनहुम् व इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अज़ाबुन् अलीम (२१)

الجزء ٢٥ ٣٨٧ الشورى ٤٢

لا تتفرقوا فيه كبر على المشركين ما تدعوهم إليه الله يجتبي
إليه من يشاء ويهدي إليه من ينيب ⑬ وما تفرقوا إلا من
بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ولولا كلمة سبقت من ربك
إلى أجل مسمى لقضي بينهم وإن الذين أورثوا الكتب من
بعدهم لفي شك منه مريب ⑭ فلذلك فادع واستقم كما أمرت
ولا تتبع أهواءهم وقل آمنت بما أنزل الله من كتب وأمرت
لأعدل بينكم الله ربنا وربكم لنا أعمالنا ولكم أعمالكم لا
حجة بيننا وبينكم الله يجمع بيننا وإليه المصير ⑮ والذين
يحاجون في الله من بعد ما استجيب له حجتهم داحضة عند
ربهم وعليهم غضب ولهم عذاب شديد ⑯ الله الذي أنزل
الكتب بالحق والميزان وما يدريك لعل الساعة قريب ⑰
يستعجل بها الذين لا يؤمنون بها والذين آمنوا مشفقون
منها ويعلمون أنها الحق ألا إن الذين يمارون في الساعة
لفي ضلل بعيد ⑱ الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو
القوي العزيز ⑲ من كان يريد حرث الآخرة نزد له في حرثه
ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها وما له في الآخرة من
نصيب ⑳ أم لهم شركؤا شرعوا لهم من الدين ما لم يأذن به

★रु. २/३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और ये लोग जो अलग-अलग हुए हैं, तो इल्मे (हक़) आ चुकने के बाद आपस की ज़िद से (हुए हैं) और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए बात न ठहर चुकी होती तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और जो लोग उन के बाद (ख़ुदा की) किताब के वारिस हुए, वे उस (की तरफ़) से शुबहे की उलझन में (फंसे हुए) हैं। (१४) तो (ऐ मुहम्मद !) उसी (दीन की) तरफ़ (लोगों को) बुलाते रहना और जैसा तुम को हुक्म हुआ है, (उसी पर) क़ायम रहना और उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना और कह दो कि जो किताब ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी, मैं उस पर ईमान रखता हूं और मुझे हुक्म हुआ है कि तुम में इंसाफ़ करूं। ख़ुदा ही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है, हम को हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का,) हम में और तुम में कुछ बहस व तकरार नहीं। ख़ुदा हम (सब) को इकट्ठा करेगा और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (१५) और जो लोग ख़ुदा (के बारे) में इस के बाद कि उसे (मोमिनों ने) मान लिया हो, झगड़ते हैं, उन के परवरदिगार के नज़दीक उन का झगड़ा बेकार है और उन पर (ख़ुदा का) ग़ज़ब और उन के लिए सख़्त अज़ाब है। (१६) ख़ुदा ही तो है, जिस ने सच्चाई के साथ किताब नाज़िल की और (अद्ल व इंसाफ़ की) तराज़ू और तुम को क्या मालूम शायद क़ियामत क़रीब ही आ पहुंची हो।[1] (१७) जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते, वे इस के लिए जल्दी कर रहे हैं और जो मोमिन हैं, वह इस से डरते हैं और जानते हैं कि वह बर-हक़ है। देखो जो लोग क़ियामत में झगड़ते हैं, वे परले दर्जे की गुमराही में हैं। (१८) ख़ुदा अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिस को चाहता है, रोज़ी देता है और वह ज़ोर वाला (और) ज़बरदस्त है। (१९)★

जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो, उस के लिए हम उस की खेती में बढ़ाएंगे और जो दुनिया की खेती की ख़्वाहिश रखता हो, उस को हम उसमें से देंगे और उस का आख़िरत में कुछ हिस्सा न होगा। (२०) क्या उन के वे शरीक हैं, जिन्हों ने उन के लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है, जिस का ख़ुदा ने हुक्म नहीं दिया और अगर फ़ैसले (के दिन) का वायदा न होता, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और जो ज़ालिम हैं उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२१) तुम देखोगे कि

१. तराज़ू फ़रमाया दीने हक़ को जिस में बात पूरी है, न कम, न ज़्यादा।

★रु. २/३ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

त-रज़्ज़ालिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा क-सबू व हु-व वाक़िअुम्-बिहिम्ꜝ वल्लज़ी-न
आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी रौज़ातिल्-जन्नाति लहुम् मा यशाऊ-न अ़िन्-द
रब्बिहिम्ꜝ ज़ालि-क हुवल्-फ़ज़्लुल्-कबीर (२२) जालिकल्लजी युबश्शिरुल्लाहु
अ़िबादहुल्लजी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहातिꜝ क़ुल् ला अस्-अलुकुम् अ़लैहि अज्-रन्
इल्लल्म-वद्-द-त फ़िल्क़ुर्बा ꜝ व मंय्यक़्तरिफ़्
ह्-स-न-तन् नज़िद् लहू फ़ीहा हुस्-नन् इन्नल्ला-ह
ग़फ़ूरुन् शकूर (२३) अम् यक़ूलूनफ़्तरा
अ़-लल्लाहि कज़िबन् फ़इ य्यश-इल्लाहु यख़्तिम्
अ़ला क़ल्बि-क ꜝ व यम्हुल्लाहुल्-बाति-ल व
युहिक़्क़ुल्-हक़्-क बिकलिमातिही ꜝ इन्नहू अ़ली-
मुम्-बिज़ातिस्सुदूर (२४) व हुवल्लज़ी
यक़्बलुत्तौ-ब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ़्-फ़ू
अ़निस्सयियआति व यअ़्-लमु मा तफ़्-अ़लून
(२५) व यस्तजीबुल्लज़ी-न आमनू व
अ़मिलुस्सालिहाति व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही
वल्काफ़िरू-न लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (२६) व लौ ब-स-तल्लाहुर्रिज़्-क़
लिअ़िबादिही ल-बग़ौ फ़िल्अर्ज़ि व लाकिंय्युनज़्ज़िलु बिक़-दरिम्-मा यशाउ ꜝ
इन्नहू बिअ़िबादिही ख़बीरुम् - बसीर (२७) व हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-
ग़ै-स मिम्बअ़्-दि मा क़-नतू व यन्शुरु रह्म-तहू ꜝ व हुवल् - वलिय्युल्-
ह्मीद (२८) व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा
बस्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बतिन् ꜝ व हु-व अ़ला जम्अ़िहिम् इज़ा यशाउ
क़दीर ★● (२९) व मा असाबकुम् मिम् - मुसीबतिन्
फ़बिमा क - स - बत् ऐदीकुम् व यअ़् - फ़ू अ़न् कसीर ꜝ (३०)

اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِیَ بَیْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الظّٰلِمِیْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۲۱﴾ تَرَى الظّٰلِمِیْنَ مُشْفِقِیْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ
بِهِمْ ۭ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِیْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا
یَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِیْرُ ﴿۲۲﴾ ذٰلِكَ الَّذِیْ
یُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ
عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰى ۭ وَمَنْ یَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ
فِیْهَا حُسْنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ۚ فَاِنْ یَّشَاِ اللّٰهُ یَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۭ وَیَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَیُحِقُّ
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾ وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ
التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَیَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ ۙ
وَیَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَیَزِیْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ
وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ
لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ وَلٰكِنْ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا یَشَآءُ ۭ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرٌۢ
بَصِیْرٌ ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَیَنْشُرُ
رَحْمَتَهٗ ۭ وَهُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۲۸﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ۭ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا یَشَآءُ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ ع
وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا

★रु. ३/४ आ १० ● रुबुअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज़ालिम अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे और वह उन पर पड़ कर रहेगा और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे बहिश्त के बाग़ों में होंगे। वे जो कुछ चाहेंगे, उन के परवरदिगार के पास (मौजूद) होगा। यही बड़ा फ़ज़्ल है। (२२) यही वह (इनाम है,) जिस की ख़ुदा अपने उन बन्दों को जो ईमान और नेक अमल करते हैं, ख़ुशख़बरी देता है। कह दो कि मैं उस का तुम से बदला नहीं मांगता, मगर (तुम को) रिश्तेदारी की मुहब्बत (तो चाहिए[1]) और जो कोई नेकी करेगा, हम उस के लिए उस में सवाब बढ़ाएंगे। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला क़द्रदान है। (२३) क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने ख़ुदा पर झूठ बांध लिया है? अगर ख़ुदा चाहे तो (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे[2] और ख़ुदा झूठ को मिटाता और अपनी बातों से हक़ को साबित करता है। बेशक वह सीने तक की बातों को जानता है। (२४) और वही तो है, जो अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता और (उन के) क़ुसूर माफ़ फ़रमाता है और जो तुम करते हो (सब) जानता है। (२५) और जो ईमान लाए और नेक अमल किए, उन की (दुआ) क़ुबूल फ़रमाता और उन को अपने फ़ज़्ल से बढ़ाता है और जो काफ़िर हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब है। (२६) और अगर ख़ुदा अपने बन्दों के लिए रोज़ी में फैलाव कर देता तो ज़मीन में फ़साद करने लगते, लेकिन वह जिस क़दर चाहता है, अन्दाज़े के साथ नाज़िल करता है। बेशक वह अपने बंदों को जानता (और) देखता है। (२७) और वही तो है जो लोगों के ना-उम्मीद हो जाने के बाद मेंह बरसाता और अपनी रहमत (यानी बारिश की बरकत) को फैला देता है और वह कारसाज़ (और) तारीफ़ के लायक़ है। (२८) और उन निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और उन जानवरों का जो उस ने उन में फैला रखे हैं और वह जब चाहे, उन के जमा कर लेने की क़ुदरत रखता है। (२९)★●

और जो मुसीबत तुम पर वाक़ेअ होती है, सो तुम्हारे अपने फ़ेलों से और वह बहुत से गुनाह

---

१. यानी अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो रिश्तेदारी का पास तो करना चाहिए और मुझे तक्लीफ़ नहीं देना चाहिए। कुछ ने यह मतलब बताए हैं कि ख़ुदा का क़ुर्ब हासिल करने के लिए उस से मुहब्बत रखो।

२. ताकि तुम क़ुरआन के मज़्मून न बयान कर सको और काफ़िरों को यह कहने का मौक़ा न मिले कि तुम ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हो, मगर ख़ुदा को कुफ़्फ़ार के बकने की क्या परवा है? वह उन की बातों को झुठलाता है और अपने पैग़म्बर पर क़ुरआन नाज़िल कर के हक़ साबित करता है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-
व ला नसीर (३१) व मिन् आयातिहिल्-जवारि फ़िल्बह्रि कल्अअ्-लाम (३२)
इंय्य-शअ् युस्किनिर्री-ह् फ़-यज़्-लल्-न रवाकि-द अ़ला ज़ह्रिही इन्-न फ़ी ज़ालि-क
लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (३३) औ यूबिक़्हुन-न बिमा क-सबू व
यअ्-फु अ़न् कसीर (३४) व यअ्-ल-मल्लज़ी-न
युजादिलू-न फ़ी आयातिना मा लहुम् मिम्-
महीस़ (३५) फ़मा ऊतीतुम् मिन् शैइन्
फ़-मताअुल्-ह़यातिद्दुन्या व मा अिन्दल्लाहि
ख़ैरुंव्-व अब्क़ा लिल्लज़ी-न आमनू व अ़ला
रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (३६) वल्लज़ी-न
यज्तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्फ़वाहि-श व
इज़ा मा ग़ज़िबू हुम् यग़्फ़िरून (३७) वल्-
लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त
व अम्रुहुम् शूरा बैनहुम् व मिम्मा र-ज़क़्ना-
हुम् युन्फ़िक़ून (३८) वल्लज़ी-न इज़ा

الشورى ٤٢ ٣٨٩ اليه يرد ٢٥

عن كثير ﴿٣٠﴾ وما انتم بمعجزين في الارض ۚ وما لكم من
دون الله من ولي ولا نصير ﴿٣١﴾ ومن ايته الجوار في البحر
كالاعلام ﴿٣٢﴾ ان يشا يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره ط
ان في ذلك لايت لكل صبار شكور ﴿٣٣﴾ او يوبقهن بما كسبوا و
يعف عن كثير ﴿٣٤﴾ ويعلم الذين يجادلون في ايتنا ط ما لهم من
محيص ﴿٣٥﴾ فما اوتيتم من شيء فمتاع الحيوة الدنيا ج وما عند
الله خير وابقى للذين امنوا وعلى ربهم يتوكلون ﴿٣٦﴾ و
الذين يجتنبون كبئر الاثم والفواحش واذا ما غضبوا هم
يغفرون ﴿٣٧﴾ والذين استجابوا لربهم واقاموا الصلوة و
امرهم شورى بينهم ومما رزقنهم ينفقون ﴿٣٨﴾ والذين اذا
اصابهم البغي هم ينتصرون ﴿٣٩﴾ وجزؤا سيئة سيئة مثلها
فمن عفا واصلح فاجره على الله ط انه لا يحب الظلمين ﴿٤٠﴾
ولمن انتصر بعد ظلمه فاولئك ما عليهم من سبيل ﴿٤١﴾ انما
السبيل على الذين يظلمون الناس ويبغون في الارض بغير
الحق ط اولئك لهم عذاب اليم ﴿٤٢﴾ ولمن صبر وغفر ان ذلك
لمن عزم الامور ﴿٤٣﴾ ومن يضلل الله فما له من ولي من
بعده ط وترى الظلمين لما راوا العذاب يقولون هل الى مرد

असाबहुमुल्-बग़्यु हुम् यन्तसिरून (३९) व जज़ाउ सय्यि-अतिन् सय्यि-अतुम्-मिस्-
लुहा फ़-मन् अ़फ़ा व अस्-ल-ह़ फ़-अज्रुहू अ़लल्लाहि इन्नहू ला
युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (४०) व ल-मनिन्त-स-र बअ्-द ज़ुल्मिही फ़-उलाइ-क मा
अ़लैहिम् मिन् सबील (४१) इन्नमस्सबीलु अ़-लल्लज़ी-न यज़्लिमूनन्ना-स
व यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्ह़क़्क़ि उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (४२) व
ल-मन् स-ब-र व ग़-फ़-र इन्-न ज़ालि-क लमिन् अ़ज़्मिल् - उमूर
★(४३) व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिंव्वलिय्यिम्-मिम्बअ्-दिही व त-रज़्ज़ालिमी-न
लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब यक़ूलू-न हल् इला म-रद्दिम्-मिन् सबील (४४)

★रु. ४/५ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तो माफ़ कर देता है। (३०) और तुम ज़मीन में (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते और ख़ुदा के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (३१) और उसी की निशानियों में से समुद्र के जहाज़ हैं (जो) गोया पहाड़ (हैं।) (३२) अगर ख़ुदा चाहे तो हवा को ठहरा दे और जहाज़ उस की सतह पर खड़े रह जाएं। तमाम सब्र और शुक्र करने वालों के लिए इन (बातों) में ख़ुदा की क़ुदरत के नमूने हैं। (३३) या उस के आमाल की वजह से उन को तबाह कर दे और बहुत-से क़ुसूर माफ़ कर दे। (३४) और (बदला इस लिए लिया जाए कि) जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वे जान लें कि उन के लिए ख़लासी नहीं। (३५) (लोगो!) जो (माल व मताअ) तुम को दिया गया है, वह दुनिया की ज़िंदगी का (ना-पायदार) फ़ायदा है और जो कुछ ख़ुदा के यहां है, बेहतर और क़ायम रहने वाला है (यानी) उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, (३६) और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बे-हयाई के कामों से परहेज़ करते हैं और जब ग़ुस्सा आता है, तो माफ़ कर देते हैं, (३७) और जो अपने परवरदिगार का फ़रमान क़ुबूल करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और अपने काम आपस के मश्विरे से करते हैं और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस में से ख़र्च करते हैं। (३८) और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़ुल्म हो तो (मुनासिब तरीक़े से) बदला लेते हैं। (३९) और बुराई का बदला तो उसी तरह की बुराई है, मगर जो दर-गुज़र करे और (मामले को) दुरुस्त कर दे तो इस का बदला ख़ुदा के ज़िम्मे है। इस में शक नहीं कि वह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता। (४०) और जिस पर ज़ुल्म हुआ हो, अगर वह इस के बाद बदला ले, तो ऐसे लोगों पर कुछ इल्ज़ाम नहीं। (४१) इल्ज़ाम तो उन लोगों पर है, जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और मुल्क में ना-हक़ फ़साद फैलाते हैं यही लोग हैं, जिन को तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब होगा। (४२) और जो सब्र करे और क़ुसूर माफ़ कर दे, तो ये हिम्मत के काम हैं। (४३)★

और जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराह करे, तो इस के बाद उस का कोई दोस्त नहीं और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे (दोज़ख़ का) अज़ाब देखेंगे, तो कहेंगे, क्या (दुनिया में) वापस जाने

★रु. ४/५ आ १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व तराहुम् युअ्-रज़ू-न अ़लैहा ख़ाशिअ़ी-न मिनज़्ज़ुल्लि यन्ज़ुरू-न मिन् तर्फ़िन्
ख़फ़िय्यिन् व क़ालल्लज़ी - न आमनू इन्नल् - ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़सिरू
अन्फ़ुसहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति अला इन्नज़्ज़ालिमी-न फ़ी अ़ज़ाबिम्-
मुक़ीम (४५) व मा का-न लहुम् मिन् औलिया - अ यन्सुरूनहुम्
मिन् दूनिल्लाहि व मंय्युज़्-लिलिल्लाहु फ़मा
लहू मिन् सबील (४६) इस्तजीबू लि-
रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला
म-रद्-द लहू मिनल्लाहि मा लकुम् मिम्-
मल्जइंय्यौमइज़िंव्-व मा लकुम् मिन् नकीर
(४७) फ़-इन् अअ्-रज़ू फ़मा अर्सल्ना-क
अ़लैहिम् ह़फ़ीज़न् इन् अ़लै-क इल्लल्बलागु व
इन्ना इज़ा अ-ज़क़्-नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्-म-
तन् फ़रि-ह़ बिहा व इन् तुसिब्-हुम् सय्यि-
तुम् बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् फ़-इन्नल्-इन्सा-न
कफ़ूर (४८) लिल्लाहि मुल्कुस्-समावाति

الشوریٰ ٤٢ — ٣٩٠ — الیہ یرد ٢٥

مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خٰشِعِينَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُونَ
مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٥﴾
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ
لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيرٍ ﴿٤٧﴾
فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۗ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ
وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۗ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۗ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ
الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيمًا ۗ اِنَّهٗ
عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ
حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥١﴾
وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۗ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ
وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۗ
وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾

वल्अर्ज़ि यख़्लुक़ु मा यशाउ य-हबु लिमंय्यशाउ इनासंव्-व य-हबु लिमंय्यशाउज़्-
ज़ुकूर (४९) औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक-रानंव्-व इनासन् व यज्अलु मंय्यशाउ अ़क़ीमन्
इन्नहू अ़लीमुन् क़दीर (५०) व मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युकल्लिमहुल्लाहु
इल्ला वह्-यंन् औ मिंव्वरा-इ हिजाबिन् औ युर्सि-ल रसूलन् फ़यूहि-य बिइज़्निही
मा यशाउ इन्नहू अ़लिय्युन् ह़कीम (५१) व कज़ालि-क औहैना इलै-क रूहम्मिन्
अम्रिना मा कुन्-त तदरी मल्किताबु व लल् ईमानु व लाकिन् ज-अ़ल्नाहु नूरन्
नह्दी बिही मन् नशाउ मिन् अ़िबादिना व इन्न-क ल-तह्दी इला
सिरातिम् - मुस्तक़ीम (५२) सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति
व मा फ़िल्अर्ज़ि अला इलल्लाहि तसीरुल् - उमूर ★ (५३)

★रु. ५/६ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

का कोई रास्ता है ? (४४) और तुम उन को देखोगे कि दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे, ज़िल्लत से आजिज़ी करते हुए, छिपी (और नीची) निगाह से देख रहे होंगे और मोमिन लोग कहेंगे कि घाटा उठाने वाले तो वे हैं, जिन्हों ने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला। देखो कि बे-इंसाफ़ लोग हमेशा के दुख में (पड़े) रहेंगे। (४५)और ख़ुदा के सिवा उनके कोई दोस्त न होंगे कि ख़ुदा के सिवा उन को मदद दे सकें और जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (४६) (उन से कह दो कि) इस से पहले कि वह दिन, जो टलेगा नहीं, ख़ुदा की तरफ़ से आ मौजूद हो, अपने परवरदिगार का हुक्म क़ुबूल करो। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई पनाह लेने की जगह होगी और न तुम से गुनाहों का इन्कार ही बन पड़ेगा। (४७) फिर अगर ये मुंह फेर लें, तो हम ने तुम को उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ (हुक्म का) पहुंचा देना है और जब हम इंसान को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो उस से ख़ुश हो जाता है और अगर उन को उन्हीं के आमाल की वजह से कोई सख़्ती पहुंचती है तो (सब एहसानों को भूल जाता है) बेशक इंसान बड़ा ना-शुक्रा है। (४८) (तमाम) बादशाही ख़ुदा ही की है, आसमानों की भी और ज़मीन की भी। वह जो चाहता है, पैदा करता है, जिसे चाहता है, बेटियां अता करता है और जिसे चाहता है, बेटे बख़्शता है, (४९) या उन को बेटे और बेटियां दोनों को इनायत फ़रमाता है और जिस को चाहता है, बे-औलाद रखता है। वह तो जानने वाला (और) क़ुदरत वाला है। (५०) और किसी आदमी के लिए मुम्किन नहीं कि ख़ुदा उस से बात करे, मगर इल्हाम (के ज़रिए) से या पर्दे के पीछे से या कोई फ़रिश्ता भेज दे, तो वह ख़ुदा के हुक्म से जो ख़ुदा चाहे इल्क़ा करे। बेशक वह बुलंद मर्तबा (और) हिक्मत वाला है। (५१) और इसी तरह हम ने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ़ रूहुल क़ुद्स के ज़रिए से (क़ुरआन) भेजा है। तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान को, लेकिन हम ने उस को नूर बनाया है कि इस से हम अपने बन्दों में से, जिस को चाहते हैं, हिदायत करते हैं और बेशक, (ऐ मुहम्मद !) तुम सीधा रास्ता दिखाते हो। (५२) (यानी) ख़ुदा का रास्ता, जो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों का मालिक है। देखो, सब काम ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ होंगे (और वही इन में फ़ैसला करेगा।) (५३) ★

★रु. ५/६ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४३ सूरतुज़्ज़ुख़्रुफ़ि ६३

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ३६५६ अक्षर, ८४८ शब्द, ८९ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम •

हामीम् ج (१) वल्किताबिल्मुबीन لا (२) इन्ना ज-अ़ल्नाहु
क़ुरआनन् अ़-रबिय्यल् - ल-अ़ल्लकुम् तअ़्-क़िलून ج (३) व इन्नहू फ़ी
उम्मिल्किताबि लदैना ल - अ़लिय्युन् ह़कीम ط (४) अ - फ़ नज़्रिबु
अ़न्कुमुज़्ज़िक-र सफ़्-हन् अन् कुन्तुम् क़ौमम्-मुस्रिफ़ीन (५) व कम् अर्सल्-ना
मिन् नबिय्यिन् फ़िल्अव्वलीन (६) व मा
यअ्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही
यस्तह्ज़िऊन (७) फ़-अह-लक्ना अशद्-द
मिन्हुम् बत्-शंव्-व मज़ा म-स-लुल्-अव्वलीन
(८) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समा-
वाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-न ख़-ल-क़हुन्नल्-
अ़ज़ीज़ुल्-अ़लीम لا (९) अल्लज़ी ज-अ़-ल
लकुमुल्अर्-ज़ मह्दंव-व ज-अ़-ल लकुम् फ़ीहा
सुबुलल्-ल-अ़ल्लकुम् तह्-तदून ج (१०) वल्लज़ी
नज़्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अम्-बि-क़-दरिन् ج फ़-
अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैतन् ج कज़ालि-क तुख़्-रजू-
न् (११) वल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा

الزخرف ۴۳ ۳۹۱ الیہ یرد ۲۵

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ ۝١ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٣
وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝٤ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝٥ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝٦ وَ
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ
بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٩ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ
مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٠ وَالَّذِيْ نَزَّلَ
مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١١
وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا
تَرْكَبُوْنَ ۝١٢ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ
عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝١٣
وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝١٤ وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ
لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ۝١٦
وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ
هُوَ كَظِيْمٌ ۝١٧ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ۝١٨

व ज-अ़-ल लकुम् मिनल्-फ़ुल्कि वल्-अन्आ़मि मा तर्कबून لا (१२) लितस्तवू अ़ला
ज़ुहूरिही सुम्-म तज़्कुरू निअ़्-म-त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अ़लैहि व तक़ूलू सुब्हा-
नल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व माकुन्ना लहू मुक़्रिनीन لا (१३) व इन्ना इला
रब्बिना लमुन्क़लिबून (१४) व ज-अ़लू लहू मिन् अ़िबादिही जुज़्-
अन् ط इन्नल् - इन्सा-न ल-कफ़ूरुम् - मुबीन ط ★ (१५) अमित्त-ख़-ज़ मिम्मा
यख़्-लुक़ु बनातिंव्-व अस्फ़ाकुम् बिल्बनी-न (१६) व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिमा
ज़-र-ब लिर्रह्‌मानि म-स-लन् ज़ल्-ल वज्-हुहू मुस्-वद्दंव्-व हु-व कज़ीम (१७)
अ-व मंय्युनश्शउ फ़िल्-ह़िल्यति व हु-व फ़िल्ख़िसामि ग़ैरु मुबीन (१८)

⁖ मुः अ़ि मु ता ख़ः ११. ★रु. १/७ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४३ सूर: ज़ुख़रुफ़ ६३

सूर: ज़ुख़रुफ़ मक्की है और इस में नवासी आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) रोशन किताब की क़सम,[1] (२) कि हम ने इस को अरबी क़ुरआन बनाया है, ताकि तुम समझो। (३) और यह बड़ी किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) में हमारे पास (लिखी हुई और) बड़ी फ़ज़ीलत और हिक्मत वाली है। (४) भला इस लिए कि तुम हद से निकले हुए लोग हो, हम तुम को नसीहत करने से बाज़ रहेंगे। (५) और हम ने पहले लोगों में भी बहुत से पैग़म्बर भेजे थे, (६) और कोई पैग़म्बर उन के पास नहीं आता था, मगर वे उस का मज़ाक़ उड़ाते थे। (७) तो जो उन में सख़्त ज़ोर वाले थे, उन को हम ने हलाक कर दिया और अगले लोगों की हालत गुज़र गयी। (८) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है, तो कह देंगे कि उन को ग़ालिब (और) इल्म वाले (ख़ुदा) ने पैदा किया है, (९) जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह मालूम करो। (१०) और जिस ने एक अन्दाज़े के साथ आसमान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से मुर्दा शहर को ज़िंदा किया, इसी तरह तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे। (११) और जिस ने तमाम क़िस्म के जानवर पैदा किए और तुम्हारे लिए कश्तियां और चारपाए बनाए, जिन पर तुम सवार होते हो, (१२) ताकि तुम उन की पीठ पर चढ़ बैठो और जब उस पर बैठ जाओ, फिर अपने परवरदिगार के एहसान को याद करो और कहो कि वह (ज़ात) पाक है, जिस ने उस को हमारे फ़रमान के मातहत कर दिया और हम में ताक़त न थी कि उस को बस में कर लेते। (१३) और हम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१४) और उन्हों ने उस के बन्दों में से उस के लिए औलाद मुक़र्रर की। बेशक इंसान खुला ना-शुक्रा है। (१५)★

क्या उस ने अपनी मख़्लूक़ में से ख़ुद तो बेटियां लीं और तुम को चुन कर बेटे दिए? (१६) हालांकि जब उन में से किसी को उस की चीज़ की ख़ुशख़बरी दी जाती है, जो उन्हों ने ख़ुदा के लिए बयान की है, तो उस का मुंह काला हो जाता और वह ग़म से भर जाता है। (१७) क्या वह जो ज़ेवर में परवरिश पाए और झगड़े के वक़्त बात न कर सके, (ख़ुदा की बेटी हो सकती है?) (१८)

---

१. रोशन का मतलब है साफ़ और खुले मतलब का, जिस में ख़ुदा के हुक्म साफ़-साफ़ बग़ैर किसी पेचीदगी के लिखे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व ज-अलुल् - मलाइ-क-तल्लज़ी-न हुम् अिबादुर्रह्मानि इनासन्ᒃ अ - शहिदू
ख़ल्क़हुम्ᒃ स-तुक्तबु शहादतुहुम् व युस्-अलून (१९) व क़ालू लौ शा-अर्रह्मानु
मा अ़-बद्नाहुम्ᒃ मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अिल्मिन्ᓂ इन् हुम् इल्ला
यख़्रुसून्ᒃ (२०) अम् आतैनाहुम् किताबम्-मिन् क़ब्लिही फ़हुम् बिही मुस्तम्सिकून
(२१) बल् क़ालू इन्ना व-जद्ना आबा-अना
अ़ला उम्मतिंव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम्
मुह-तदून (२२) व कज़ालि-क मा अर्सल्ना
मिन् क़ब्लि-क फ़ी क़र्यतिम्-मिन् नज़ीरिन्
इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहाᒃ इन्ना व-जद्ना आबा-
अना अ़ला उम्मतिंव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम्
मुक़्तदून (२३) क़ा-ल अ-वलौ जिअ्तुकुम्
बि-अह्-दा मिम्मा व-जत्तुम् अ़लैहि आबा-अकुम्ᒃ
क़ालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून
(२४) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़
का-न आ़क़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन ●★ (२५) व
इज् क़ा-ल इब्राहीमु लिअबीहि व क़ौमिही
इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ्-बुदूनᒃ (२६) इल्लल्लज़ी फ़-त-रनी फ़-इन्नहू स-यह्दीन
(२७) व ज-अ़-लहा कलि-म-तम्-बाक़ि-य-तन् फ़ी अ़क़िबिही ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअून
(२८) बल् मत्तअ्-तु हाउला-इ व आबा-अ-हुम् हत्ता जा-अ-हुमुल्-हक़्क़ु
व रसूलुम्-मुबीन (२९) व लम्मा जा-अ-हुमुल्-हक़्क़ु क़ालू हाज़ा सिह्रुंव-व इन्ना
बिही काफ़िरून (३०) व क़ालू लौला नुज़्ज़ि-ल हाज़ल्क़ुरआनु अ़ला
रजुलिम्-मिनल्-क़र्यतैनि अ़ज़ीम (३१) अहुम् यक़्सिमू-न रह्-म-त रब्बि-कᒃ नह्नु
क़-सम्ना बैनहुम् मअ़ी-श - तहुम् फ़िल् - हयातिद्दुन्या वरफ़अ्ना बअ़् - ज़हुम्
फ़ौ-क़ बअ़् - ज़िन् द-र-जातिल् - लि-यत्तख़ि - ज बअ़् - ज़ुहुम् बअ़् - ज़न्
सुख़्रिय्यन्ᒃ व रह्मतु रब्बि-क ख़ैरुम् - मिम् - मा यजमअ़ून (३२)

الزخرف ٤٣ ٣٩٢ اليه يرد ٢٥

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ
سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ
مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا
مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ
وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِىْ
قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ
وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا
وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ ع
وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِىْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا الَّذِىْ فَطَرَنِىْ فَاِنَّهٗ
سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِىْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾
بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾
وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ
هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ
رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ
مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ

منزل

★रु. २/८ आ १० ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और उन्हों ने फ़रिश्तों को, कि वे भी ख़ुदा के बंदे हैं, (ख़ुदा की) बेटियां मुक़र्रर किया। क्या ये उन की पैदाइश के वक़्त हाज़िर थे, बहुत जल्द उन की गवाही लिख ली जाएगी और उन से पूछ-गछ की जाएगी। (१६) और कहते हैं, अगर ख़ुदा चाहता, तो हम उन को न पूजते। उन को इस का कुछ इल्म नहीं। वह तो सिर्फ़ अटकलें दौड़ा रहे हैं। (२०) या हम ने उन को इस से पहले कोई किताब दी थी, तो ये उस से सनद पकड़ते हैं। (२१) बल्कि कहने लगे कि हम ने अपने बाप-दादा को एक रास्ते पर पाया है और हम उन ही के क़दम-ब-क़दम चल रहे हैं। (२२) और इसी तरह हम ने तुम से पहले किसी बस्ती में कोई हिदायत करने वाला नहीं भेजा, मगर वहां के ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि हम ने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया है और हम क़दम-ब-क़दम उन ही के पीछे चलते हैं। (२३) पैग़म्बर ने कहा, अगरचे मैं तुम्हारे पास ऐसा (दीन) लाऊं कि जिस (रास्ते) पर तुम ने अपने बाप-दादा को पाया, वह उस से कहीं सीधा रास्ता दिखाता हो, कहने लगे कि जो (दीन) तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नहीं मानते। (२४) तो हम ने उन से बदला लिया, सो देख लो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (२५)★●

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि जिन चीज़ों को तुम पूजते हो, मैं उन से बेज़ार हूं। (२६) हां, जिस ने मुझ को पैदा किया, वही मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (२७) और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये, ताकि वे (ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ) रहें। (२८) बात यह है कि मैं इन कुफ़्फ़ार को और उन के बाप-दादा को नवाज़ता रहा, यहां तक कि उन के पास हक़ और साफ़-साफ़ बयान करने वाला पैग़म्बर आ पहुंचा। (२६) और जब उन के पास हक़ (यानी क़ुरआन) आया तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इस को नहीं मानते। (३०) और (यह भी) कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों (यानी मक्के और ताइफ़) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल न किया गया? (३१) क्या ये लोग तुम्हारे परवरदिगार की रहमत को बांटते हैं? हम ने उन में उन की मईशत (रोज़ी) को दुनिया की ज़िंदगी में तक़्सीम कर दिया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किए, ताकि एक दूसरे से ख़िद्मत ले और जो कुछ ये जमा करते हैं, तुम्हारे परवरदिगार की रहमत उस से कहीं बेहतर है। (३२) और अगर यह

★रु. २/८ आ १० ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लौला अंय्यकूनन्नासु उम्मतंव्वाहि़-द-तल्-ल-ज-अ़ल्ना लिमंय्यक्फ़ुरु बिर्रह्मानि लि-
बुयूतिहिम् सुक़ुफ़म्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव-व मआ़रि-ज अ़लैहा यज़्-हरून (३३) व
लिबुयूतिहिम् अब्-वाबंव्-व सुरुरन् अ़लैहा यत्तकिऊन (३४) व ज़ुख़्-रुफ़न् व इन्
कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताअ़ुल्-ह़यातिद्दुन्या वल्-आख़िरतु अ़िन्-द रब्बि-क लिल्-
मुत्तक़ीन ★ (३५) व मंय्यअ़्-शु अ़न् ज़िक्रिर्-
रह़्मानि नुक़य्यिज़् लहू शैतानन् फ़हु-व लहू
क़रीन (३६) व इन्नहुम् ल-य-सुद्दूनहुम्
अ़निस्सबीलि व यह़्-सबू-न अन्नहुम् मुह्-तदून
(३७) ह़त्ता इज़ा जा-अना क़ा-ल यालै-त
बैनी व बैन-क बुअ़्-दल् मश्रिक़ैनि फ़बिअ्सल्-
क़रीन (३८) व लंय्यन्फ़-अ़-कुमुल्-यौ-म
इज़्-ज़लम्तुम् अन्नकुम् फ़िल्अ़ज़ाबि मुश्तरिकून
(३९) अ-फ़-अन्-त तुस्मिअ़ुस्सुम्-म औतह्दिल्-
अ़ुम्-य व मन् का-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन
(४०) फ़-इम्मा नज़्-ह-बन्-न बि-क फ़-इन्ना
मिन्हुम् मुन्तक़िमून (४१) औ नुरि-यन्न-
कल्लज़ी व-अ़द्नाहुम् फ़-इन्ना अ़लैहिम् मुक़्तदि-
रून (४२) फ़स्तम्-सिक् बिल्लज़ी ऊहि-य इलै-क इन्न-क अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम
(४३) व इन्नहू ल-ज़िक्रुल्लल-क व लिक़ौमि-क व सौ-फ़ तुस्-अलून (४४)
वस्-अल् मन् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना अ-ज-अ़ल्ना मिन् दूनिर्रह़्मानि
आलिहतंय्युअ़्-बदून ★ (४५) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ-न
व म-ल-इ-ही फ़-क़ा-ल इन्नी रसूलु रब्बिल्-आलमीन (४६) फ़-लम्मा जा-अ-हुम्
बिआयातिना इज़ा हुम् मिन्हा यज़्-ह़कून (४७) व मा नुरीहिम् मिन् आयतिन् इल्ला
हि-य अक्बरु मिन् उख़्-तिहा व अ-ख़ज़्नाहुम् बिलअ़ज़ाबि ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (४८)
व क़ालू या अय्युहस्-साहिरुद्अ़ु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अ़िन्द-क इन्नना ल-मुह-
तदून (४९) फ़-लम्मा क-शफ़्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब इज़ा हुम् यन्कुसून (५०)

يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج عليها يظهرون ۝٣٣
ولبيوتهم ابوابا وسررا عليها يتكـٔون ۝٣٤ وزخرفا وان كل ذلك لما
متاع الحيوة الدنيا والاخرة عند ربك للمتقين ۝٣٥ ومن يعش
عن ذكر الرحمن نقيض له شيطنا فهو له قرين ۝٣٦ وانهم
ليصدونهم عن السبيل ويحسبون انهم مهتدون ۝٣٧ حتى اذا
جاءنا قال يليت بيني وبينك بعد المشرقين فبئس القرين ۝٣٨
ولن ينفعكم اليوم اذ ظلمتم انكم في العذاب مشتركون ۝٣٩ افانت
تسمع الصم او تهدي العمي ومن كان في ضلل مبين ۝٤٠ فاما
نذهبن بك فانا منهم منتقمون ۝٤١ او نرينك الذي وعدنهم فانا عليهم
مقتدرون ۝٤٢ فاستمسك بالذي اوحي اليك انك على صراط مستقيم ۝٤٣
وانه لذكر لك ولقومك وسوف تسئلون ۝٤٤ وسئل من ارسلنا
من قبلك من رسلنا اجعلنا من دون الرحمن الهة يعبدون ۝٤٥
ولقد ارسلنا موسى بايتنا الى فرعون وملايه فقال اني رسول
رب العلمين ۝٤٦ فلما جاءهم بايتنا اذا هم منها يضحكون ۝٤٧ وما
نريهم من اية الا هي اكبر من اختها واخذنهم بالعذاب لعلهم
يرجعون ۝٤٨ وقالوا يايه السحر ادع لنا ربك بما عهد عندك اننا
لمهتدون ۝٤٩ فلما كشفنا عنهم العذاب اذا هم ينكثون ۝٥٠ ونادى

★रु. ३/६ आ १० ★रु. ४/१० आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(ख़्याल) न होता कि सब लोग एक ही जमाअत हो जाएंगे, तो जो लोग ख़ुदा से इंकार करते हैं, हम उन के घरों की छतें चांदी की बना देते और सीढ़ियां (भी,) जिन पर वे चढ़ते। (३३) और उनके घरों के दरवाज़े भी और तख़्त भी, जिन पर तकिया लगाते हैं। (३४) और (ख़ूब) तजम्मुल (सजावट व आराइश कर देते) और यह सब दुनिया की ज़िंदगी का थोड़ा-सा सामान है और आख़िरत तुम्हारे परवरदिगार के यहां परहेज़गारों के लिए है। (३५)★

और जो कोई ख़ुदा की याद से आंखें बन्द कर ले, (यानी जानी-बूझी ग़फ़लत से) हम उस पर एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं, तो वह उस का साथी हो जाता है। (३६) और ये (शैतान) उन को रास्ते से रोकते रहते हैं और वे समझते हैं कि सीधे रास्ते पर हैं, (३७) यहां तक कि जब हमारे पास आएगा तो कहेगा कि ऐ काश ! मुझ में और तुझ में पूरब और पच्छिम का फ़ासला होता, तू बुरा साथी है। (३८) और जब तुम ज़ुल्म करते रहे, तो आज तुम्हें यह बात फ़ायदा नहीं दे सकती कि तुम (सब) अज़ाब में शरीक हो। (३९) क्या तुम बहरे को सुना सकते हो या अंधे को रास्ता दिखा सकते हो और जो खुली गुमराही में हो, उसे (राह पर ला सकते हो) ? (४०) अगर हम तुम को (वफ़ात देकर) उठा लें तो उन लोगों से हम बदला ले कर रहेंगे, (४१) या (तुम्हारी ज़िंदगी ही में) तुम्हें वह (अज़ाब) दिखाएंगे, जिन का हम ने उन से वायदा किया है, हम उन पर क़ाबू रखते हैं। (४२) पस तुम्हारी तरफ़ जो वह्य की गयी है, उस को मज़बूत पकड़े रहो, बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो। (४३) और यह (क़ुरआन) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है और (लोगो !) तुम से बहुत जल्द पूछ-ताछ होगी। (४४) और (ऐ मुहम्मद !) जो अपने पैग़म्बर हम ने तुम से पहले भेजे हैं, उन के हाल मालूम कर लो। क्या हम ने (ख़ुदा-ए-) रहमान के सिवा और माबूद बनाए थे कि उन की इबादत की जाए ? (४५) ★

और हम ने मूसा को अपनी निशानियां दे कर फ़िऔन और उस के दरबारियों की तरफ़ भेजा, तो उन्हों ने कहा कि मैं अपने परवरदिगारे आलम का भेजा हुआ हूं। (४६) जब वे उन के पास हमारी निशानियां ले कर आए तो वे निशानियों से हंसी करने लगे। (४७) और जो निशानी हम उन को दिखाते हैं, वह दूसरों से बड़ी होती थी और हम ने उन को अज़ाब में पकड़ लिया, ताकि बाज़ आ जाएं। (४८) और कहने लगे कि ऐ जादूगर ! उस अह्द के मुताबिक़, जो तेरे परवरदिगार ने तुझ से कर रखा है, उस से दुआ कर, बेशक हम हिदायत पाए हुए होंगे। (४९) सो जब हम ने उन से अज़ाब को दूर कर दिया, तो वह अह्द को तोड़ने लगा। (५०) फ़िऔन ने अपनी

★रु. ३/९ आ १० ★रु. ४/१० आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व नादा फ़िर्‌औनु फ़ी क़ौमिही क़ा-ल याक़ौमि अलै-स ली मुल्कु मिस्‌-र व हाज़ि-
हिल्‌-अन्हारु तज्‌री मिन्‌ तह्‌ती ج अ-फ़ला तुब्सिरून ط (५१) अम्‌ अ-न ख़ैरुम्मिन्‌
हाज़ल्लज़ी हु-व महीनुंव्‌-व ला यकादु युबीन (५२) फ़-लौला उल्क़ि-य अलैहि
अस-वि-रतुम्‌-मिन्‌ ज़-ह-बिन्‌ औ जा-अ म-अहुल्‌-मला-इकतु मुक़्तरिनीन (५३)
फ़स्तख़फ़्‌-फ़ क़ौमहू फ़-अताऊहु ط इन्नहुम्‌ कानू
क़ौमन्‌ फ़ासिक़ी-न (५४) फ़-लम्मा आसफ़ू-
नन्‌-त-क़म्ना मिन्हुम्‌ फ़-अग़्रक़्ना-हुम्‌ अज्मईन ل
(५५) फ़-ज-अल्नाहुम्‌ स-ल-फ़ंव्‌-व म-स-लल्‌-
लिल्‌आख़िरीन ★ (५६) व लम्मा ज़ुरिबब्नु
मर्‌य-म म-स-लन्‌ इज़ा क़ौमु-क मिन्हु यसिद्दून
(५७) व क़ालू-अ आलिहतुना ख़ैरुन्‌ अम्‌
हु-व ط मा ज़-रबूहु ल-क इल्ला ज-द-लन्‌ ط बल्‌
हुम्‌ क़ौमुन्‌ ख़सिमून (५८) इन्‌ हु-व इल्ला
अब्दुन्‌ अन-अम्ना अलैहि व ज-अल्नाहु म-स-
लल्‌-लि-बनी इस्राई-ल ط (५९) व लौ नशाउ
ल-ज-अल्ना मिन्कुम्‌ मलाई-क-तन्‌ फ़िल्‌अर्ज़ि
यख़-लुफ़ून (६०) व इन्नहू ल-अिल्मुल्‌-
लिस्साअति फ़-ला तम्तरुन्-न बिहा वत्तबिऊनि ط हाज़ा सिरातुम्‌-मुस्तक़ीम (६१) व
ला यसुद्दन्नकुमुश्‌-शैतानु ج इन्नहू लकुम्‌ अदुव्वुम्‌-मुबीन (६२) व लम्मा जा-अ
ईसा बिलबय्यिनाति क़ा-ल क़द्‌ जिअ्‌तुकुम्‌ बिल्‌हिक्मति व लिउबय्यि-न लकुम्‌
बअ्‌-ज़ल्लज़ी तख़-तलिफ़ू-न फ़ीहि ج फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीऊन (६३) इन्नल्ला-ह हु-व
रब्बी व रब्बुकुम्‌ फ़अ्‌-बुदूहु ط हाज़ा सिरातुम्‌-मुस्तक़ीम (६४) फ़ख़्त-ल-फ़ल्‌-अह्‌ज़ाबु
मिम्‌-बैनिहिम्‌ ج फ़वैलुल्‌-लिल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्‌ अज़ाबि यौमिन्‌ अलीम (६५) हल्‌
यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ-त अन्‌ तअ्‌ति-य-हुम्‌ बग़्‌-त-तंव्‌-व हुम्‌ ला यश्‌अुरून (६६) अल्‌-
अख़िल्लाउ यौमइज़िम्‌-बअ्‌-ज़ुहुम्‌ लिबअ्‌-ज़िन्‌ अदुव्वुन्‌ इल्लल्‌-मुत्तक़ीन ط ★ (६७) या-
अिबादि ला ख़ौफ़ुन्‌ अलैकुमुल्‌-यौ-म व ला अन्तुम्‌ तह्‌-ज़नून ج (६८)

الزخرف ٤٣ ٣٩٣ اليه يرد ٢٥

فرعون في قومه قال يقوم اليس لي ملك مصر وهذه الانهر
تجري من تحتي افلا تبصرون ﴿٥١﴾ ام انا خير من هذا الذي هو
مهين ولا يكاد يبين ﴿٥٢﴾ فلولا القي عليه اسورة من ذهب او جاء
معه الملئكة مقترنين ﴿٥٣﴾ فاستخف قومه فاطاعوه انهم كانوا
قوما فسقين ﴿٥٤﴾ فلما اسفونا انتقمنا منهم فاغرقنهم اجمعين ﴿٥٥﴾
فجعلنهم سلفا ومثلا للاخرين ﴿٥٦﴾ ولما ضرب ابن مريم مثلا اذا
قومك منه يصدون ﴿٥٧﴾ وقالوا ءالهتنا خير ام هو ما ضربوه لك الا
جدلا بل هم قوم خصمون ﴿٥٨﴾ ان هو الا عبد انعمنا عليه وجعلنه
مثلا لبني اسراءيل ﴿٥٩﴾ ولو نشاء لجعلنا منكم ملئكة في الارض
يخلفون ﴿٦٠﴾ وانه لعلم للساعة فلا تمترن بها واتبعون هذا صراط
مستقيم ﴿٦١﴾ ولا يصدنكم الشيطن انه لكم عدو مبين ﴿٦٢﴾ ولما
جاء عيسى بالبينت قال قد جئتكم بالحكمة ولابين لكم بعض
الذي تختلفون فيه فاتقوا الله واطيعون ﴿٦٣﴾ ان الله هو ربي وربكم
فاعبدوه هذا صراط مستقيم ﴿٦٤﴾ فاختلف الاحزاب من بينهم فويل
للذين ظلموا من عذاب يوم اليم ﴿٦٥﴾ هل ينظرون الا الساعة ان
تاتيهم بغتة وهم لا يشعرون ﴿٦٦﴾ الاخلاء يومئذ بعضهم لبعض
عدو الا المتقين ﴿٦٧﴾ يعباد لا خوف عليكم اليوم ولا انتم تحزنون ﴿٦٨﴾

★रु. ५/११ आ ११ ★रु. ६/१२ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ौम से पुकार कर कहा कि ऐ क़ौम ! क्या मिस्र की हुकूमत मेरे हाथ में नहीं है और ये नहरें जो मेरे (महलों के) नीचे बह रही हैं (मेरी नहीं हैं), क्या तुम देखते नहीं। (५१) बेशक मैं उस शख़्स से, जो कुछ इज़्ज़त नहीं रखता और साफ़ बात-चीत भी नहीं कर सकता, कहीं बेहतर हूं। (५२) तो उस पर सोने के कंगन क्यों न उतारे गये या (यह होता कि) फ़रिश्ते जमा हो कर उस के साथ आते ? (५३) ग़रज़ उस ने अपनी क़ौम की अक़्ल मार दी और उन्हों ने उस की मान ली, बेशक वे ना-फ़रमान लोग थे। (५४) जब उन्हों ने हम को ख़फ़ा किया, तो हम ने उन से बदला ले कर और उन सब को डुबो कर छोड़ा। (५५) और उन को गये-गुज़रे कर दिया और पिछलों के लिए इब्रत (सबक़) बना दिया। (५६) ★

और जब मरयम के बेटे (ईसा) का हाल बयान किया गया, तो तुम्हारी क़ौम के लोग उस से चिल्ला उठे। (५७) और कहने लगे कि भला हमारे माबूद अच्छे हैं या वह (ईसा) ? उन्हों ने जो इस (ईसा) की मिसाल तुम से बयान की है, तो सिर्फ़ झगड़े को। सच तो यह है कि ये लोग हैं ही झगड़ालू। (५८) वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे, जिन पर हम ने फ़ज़्ल किया और बनी इस्राईल के लिए उन को (अपनी क़ुदरत का) नमूना बना दिया। (५९) और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते बना देते, जो तुम्हारी जगह ज़मीन में रहते। (६०) और वह (ईसा) क़ियामत की निशानी हैं। तो (कह दो कि लोगो !) इस में शक न करो और मेरे पीछे चलो। यही सीधा रास्ता है। (६१) और (कहीं) शैतान तुम को (इससे) रोक न दे। वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६२) और जब ईसा निशानियां ले कर आए, तो कहने लगे कि मैं तुम्हारे पास दानाई (की किताब) ले कर आया हूं। इस लिए कि कुछ बातें, जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, तुम को समझा दूं, तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (६३) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, पस उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। (६४) फिर कितने फ़िर्क़े उन में से फट गये, सो जो लोग ज़ालिम हैं, उन की, दर्द देने वाले दिन के अज़ाब से ख़राबी है। (६५) ये सिर्फ़ इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि क़ियामत उन पर यकायक आ मौजूद हो और उन को ख़बर तक न हो। (६६) जो आपस में दोस्त (हैं,) उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, मगर परहेज़गार (कि) क़ियामत में दोस्त ही रहेंगे।[1] (६७) ★

मेरे बन्दो ! आज तुम्हें न कुछ ख़ौफ़ है और न तुम ग़मनाक होगे, (६८) जो लोग हमारी

१. उस दिन दोस्त से दोस्त भागेगा कि इस की वजह से मैं पकड़ा न जाऊं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लज़ी-न आमनू बिआयातिना व कानू मुस्लिमीन (६९) उद्ख़ुलुल्-जन्न-त अन्तुम्
व अज़्वाजुकुम् तुह्-बरून (७०) युताफ़ु अलैहिम् बिसिहाफ़िम्-मिन् ज़-हबिंव्-व
अक-वाबिन् व फ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज़्ज़ुल्-अअ्-युनु व अन्तुम् फ़ीहा
ख़ालिदून (७१) व तिल्कल्-जन्नतुल्लती ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून
(७२) लकुम् फ़ीहा फ़ाकि-ह-तुन् कसी-रतुम्-
मिन्हा तअ्-कुलून (७३) इन्नल्-मुज्रिमी-न
फ़ी अज़ाबि ज-हन्न-म ख़ालिदून (७४) ला
युफ़त्तरु अन्हुम् व हुम् फ़ीहि मुब्लिसून (७५)
व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् कानू हुमुज़्-
ज़ालिमीन (७६) व नादौ या मालिकु
लि-यक़्ज़ि अलैना रब्बु-क क़ा-ल इन्नकुम् माकि-
सून (७७) ल-क़द् जिअ्-नाकुम् बिल्हक़्क़ि
व लाकिन्-न अक्स-रकुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून
(७८) अम् अब्-रमू अम्-रन् फ़-इन्ना मुब्रिमून
(७९) अम् यह्-सबू-न अन्ना ला नस्मअु
सिर्रहुम् व नज्वाहुम् बला व रुसुलुना लदैहिम्
यक्तुबून (८०) क़ुल् इन् का-न लिर्रह्मानि व-लदुन् फ़-अ-न अव्वलुल्-आबिदीन
(८१) सुब्हा-न रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बिल्-अर्शि अम्मा यसिफ़ून (८२)
फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्-अबू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अदून (८३) व हुवल्लज़ी
फ़िस्समाइ इलाहुंव-व फ़िल्अर्ज़ि इलाहुन् व हुवल्-हकीमुल्-अलीम (८४) व तबा-
र-कल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व अिन्दहू अिल्मुस्साअति व
इलैहि तुर्जअून (८५) व ला यम्लिकुल्लज़ी-न यद्अून मिन् दूनिहिश्शफ़ा-अ-त इल्ला
मन् शहि-द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ्-लमून (८६) व लइन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़हुम्
ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून (८७) व क़ीलिही या रब्बि इन्-न हाउला-इ
क़ौमुल्ला युअ्मिनून ▨ (८८) फ़स्-फ़ह् अन्हुम् व क़ुल् सलामुन् फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (८९) ★

الَّذِينَ اٰمَنُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ
تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ
الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيٓ
اُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُونَ ﴿٧٣﴾
اِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ
مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوا هُمُ الظّٰلِمِينَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ
لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُونَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُونَ ﴿٧٨﴾ اَمْ اَبْرَمُوٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾ اَمْ يَحْسَبُونَ
اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ۚ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾ قُلْ اِنْ
كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِينَ ﴿٨١﴾ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يُلٰقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ۚ وَ
هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ
وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ
مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾ وَقِيلِهِ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ
لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

▨ व. लाज़िम ★रु. ७/१३ आ २२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आयतों पर ईमान लाए और फ़रमांबरदार हो गये, (६९) (उन से कहा जाएगा) कि तुम और तुम्हारी बीवियां इज़्ज़त (व एहतराम) के साथ बहिश्त में दाख़िल हो जाओ। (७०) उन पर सोने की पिरचों और प्यालों का दौर चलेगा और वहां जो जी चाहे और जो आंखों को अच्छा लगे (मौजूद होगा) और (ऐ जन्नत वालो !) तुम इसमें हमेशा रहोगे। (७१) और यह जन्नत जिसके तुम मालिक कर दिए गये हो, तुम्हारे आमाल का बदला है। (७२) वहां तुम्हारे लिए बहुत-से मेवे हैं, जिन को तुम खाओगे, (७३) (और कुफ़्फ़ार) गुनाहगार हमेशा दोज़ख़ के अज़ाब में रहेंगे, (७४) जो उन से हल्का न किया जाएगा और वे इस में ना-उम्मीद हो कर पड़े रहेंगे। (७५) और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही (अपने आप पर) ज़ुल्म करते थे। (७६) और पुकारेंगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा परवरदिगार हमें मौत दे दे। वह कहेगा कि तुम हमेशा (इसी हालत में) रहोगे। (७७) हम तुम्हारे पास हक़ ले कर पहुंचे, लेकिन तुम में अक्सर हक़ से ना-ख़ुश होते रहे। (७८) क्या उन्होंने कोई बात ठहरा रखी है, तो हम भी कुछ ठहराने वाले हैं।[1] (७९) क्या ये लोग यह ख़्याल करते हैं कि हम उन की छिपी बातों और सरगोशियों को सुनते नहीं ? हां, हां, (सब सुनते हैं) और हमारे फ़रिश्ते उन के पास (उन की) सब बातें लिख लेते हैं। (८०) कह दो कि अगर ख़ुदा के औलाद हो, तो मैं (सब से) पहले (उस की) इबादत करने वाला हूं। (८१) ये जो कुछ बयान करते हैं, आसमानों और ज़मीन का मालिक (और) अर्श का मालिक उस से पाक है, (८२) तो उन को बक-बक करने और खेलने दो, यहां तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, उस को देख लें। (८३) और वही (एक) आसमानों में माबूद है और (वही) ज़मीन में माबूद है और वह हिक्मत वाला (और) इल्म वाला है। (८४) और वह बहुत बरकत वाला है, जिस के लिए आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों में है, सब की बादशाही है और उसी को क़ियामत का इल्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (८५) और जिन को ये लोग ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, वे सिफ़ारिश का कुछ अख़्तियार नहीं रखते, हां, जो इल्म व यक़ीन के साथ हक़ की गवाही दें, (वे सिफ़ारिश कर सकते हैं।[2]) (८६) और अगर तुम उन से पूछो कि उन को किस ने पैदा किया है, तो कह देंगे कि ख़ुदा ने, तो फिर ये कहां बहके फिरते हैं ? (८७) और (कभी-कभी) पैग़म्बर कहा करते हैं कि ऐ परवरदिगार ! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते ▩ (८८) तो उन से मुंह फेर लो और सलाम कह दो, उन को बहुत जल्द (अंजाम) मालूम हो जाएगा। (८९) ★

---

१. काफ़िरों ने तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल और मक्का से उन के निकाले जाने की स्कीम सोची थी और ख़ुदा ने यह इरादा फ़रमाया था कि वह आप को कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब करेगा। चुनांचे आप मक्के से हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ ले गये, तो अल्लाह तआला ने आप की मदद फ़रमायी और आप ने मक्का फ़त्ह कर लिया और काफ़िर मग़लूब हो कर रह गये।

२. यानी बुत, जिन की ये कुफ़्फ़ार पूजा करते थे, उन की सिफ़ारिश नहीं कर सकेंगे। सिफ़ारिश करने का हक़ तो ख़ुदा के उन नेक बंदों को होगा, जिन को ख़ुदा के एक होने का यक़ीन है और वह उन के एक होने और अकेला माबूद होने की गवाही देते हैं और वही सिफ़ारिश कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४४ सूरतुद्दुख़ानि ६४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १४६५ अक्षर, ३४६ शब्द, ५६ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

ह़ामीम् (१) वल्किताबिल्मुबीन (२) इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिम्-
मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन (३) फ़ीहा युफ़रक़ु कुल्लु अम्रिन् ह़कीम
(४) अम्-रम्-मिन् अिन्दिना इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन (५) रह़्-म-तम्-मिर्रब्बि-क
इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम (६) रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा इन्
कुन्तुम् मूक़िनीन (७) ला इला-ह इल्ला हु-व
युह़्यी व युमीतु रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-
अव्वली-न (८) बल् हुम् फ़ी शक्किंय्यल्-
अ़बून (९) फ़र्तक़िब् यौ-म तअ्तिस्समाउ
बि दुख़ानिम्-मुबीनिंय- (१०) यग़्-शन्ना-स
हाज़ा अ़ज़ाबुन् अलीम (११) रब्ब-नक्शिफ़्
अ़न्नल्-अ़ज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून (१२) अन्ना
लहुमुज़्ज़िक-रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन
(१३) सुम्-म त-वल्लौ अ़न्हु व क़ालू
मु-अ़ल्लमुम्-मज्नून (१४) इन्ना काशिफ़ुल्-
अ़ज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ-इदून (१५)
यौ-म नब्तिशुल् - बत्-श-तल् - कुब्रा इन्ना

الدخان ٤٤ ٣٩٦ اليه يرد ٢٥

سورة الدخان مكية وهي تسع وخمسون اية وثلث ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

حم ﴿١﴾ والكتب المبين ﴿٢﴾ انا انزلنه في ليلة مبركة انا كنا
منذرين ﴿٣﴾ فيها يفرق كل امر حكيم ﴿٤﴾ امرا من عندنا انا كنا
مرسلين ﴿٥﴾ رحمة من ربك انه هو السميع العليم ﴿٦﴾ رب السموت و
الارض وما بينهما ان كنتم موقنين ﴿٧﴾ لا اله الا هو يحي ويميت
ربكم ورب اباىكم الاولين ﴿٨﴾ بل هم في شك يلعبون ﴿٩﴾ فارتقب
يوم تاتي السماء بدخان مبين ﴿١٠﴾ يغشى الناس هذا عذاب اليم ﴿١١﴾
ربنا اكشف عنا العذاب انا مؤمنون ﴿١٢﴾ انى لهم الذكرى وقد جاءهم
رسول مبين ﴿١٣﴾ ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ﴿١٤﴾ انا كاشفوا
العذاب قليلا انكم عائدون ﴿١٥﴾ يوم نبطش البطشة الكبرى
انا منتقمون ﴿١٦﴾ ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول
كريم ﴿١٧﴾ ان ادوا الي عباد الله اني لكم رسول امين ﴿١٨﴾ وان لا تعلوا
على الله اني اتيكم بسلطن مبين ﴿١٩﴾ واني عذت بربي وربكم ان
ترجمون ﴿٢٠﴾ وان لم تؤمنوا لي فاعتزلون ﴿٢١﴾ فدعا ربه ان هؤلاء
قوم مجرمون ﴿٢٢﴾ فاسر بعبادي ليلا انكم متبعون ﴿٢٣﴾ واترك البحر
رهوا انهم جند مغرقون ﴿٢٤﴾ كم تركوا من جنت وعيون ﴿٢٥﴾ وزروع

منزل ٦

मुन्तक़िमून (१६) व ल-क़द् फ़-तन्ना क़ब्-लहुम् क़ौ-म फ़िर्औ-न व जा-अहुम्
रसूलुन् करीम (१७) अन् अद्दू इलय्-य अ़िबादल्लाहि इन्नी लकुम् रसूलुन्
अमीनुंव्-(१८) -व अल्ला तअ्-लू अ़लल्लाहि इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन
(१९) व इन्नी उ़ज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून (२०) व इल्लम्
तुअ्मिनू ली फ़अ्-तज़िलून (२१) फ़-दआ रब्बहू अन-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून
● (२२) फ़-अस्रि बिअ़िबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त - बअ़ून (२३)
वत-रुकिल्-बह़्-र रह्-वन् इन्नहुम् जुन्दुम्-मुग़-रक़ून (२४) कम् त-रकू मिन् जन्ना-
तिंव्-व अ़ुयूनिंव- (२५) व ज़ुरूअ़िंव-व मक़ामिन् करीमिंव- (२६)

∴ मु. अ़ि मु. ता ख़.१२ ▨ व. लाज़िम ● सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४४ सूरः दुख़ान ६४

सूरः दुख़ान मक्की है, इस में ५६ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) ⁘ इस रोशन किताब की क़सम ! ⁘ (२) कि हम ने उस को मुबारक रात में नाज़िल फ़रमाया, हम तो रास्ता दिखाने वाले हैं, (३) उसी रात में तमाम हिक्मत के काम फ़ैसले किए जाते हैं, (४) (यानी) हमारे यहां से हुक्म हो कर, बेशक हम ही (पैग़म्बर को) भेजते हैं। (५) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। वह तो सुनने वाला, जानने वाला है। (६) आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक ▨ बशर्ते कि तुम लोग यक़ीन करने वाले हो। (७) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, (वही) जिलाता है और (वही) मारता है, (वही) तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का परवरदिगार है। (८) लेकिन ये लोग शक में खेल रहे हैं। (९) तो उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आसमान से साफ़ धुआँ निकलेगा, (१०) जो लोगों पर छा जाएगा। यह दर्द देने वाला अज़ाब है। (११) ऐ परवरदिगार ! हम से इस अज़ाब को दूर कर, हम ईमान लाते हैं। (१२) (उस वक़्त) उन को नसीहत कहां मुफ़ीद होगी, जबकि उन के पास पैग़म्बर आ चुके, जो खोल-खोल कर बयान कर देते थे। (१३) फिर उन्हों ने उन से मुंह फेर लिया और कहने लगे, (यह तो) पढ़ाया हुआ (और) दीवाना है ▨ (१४) हम तो थोड़े दिनों अज़ाब टाल देते हैं, (मगर) तुम फिर कुफ़्र करने लगते हो ▨ (१५) जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे, तो बेशक बदला ले कर छोड़ेंगे। (१६) और उन से पहले हम ने फ़िऔन की क़ौम की आज़माइश की और उन के पास एक बुलंद मर्तबा पैग़म्बर आए, (१७) (जिन्हों ने) यह (कहा) कि ख़ुदा के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१८) और ख़ुदा के सामने सर-कशी न करो, मैं तुम्हारे पास खुली दलील ले कर आया हूं। (१९) और इस (बात) से कि तुम मुझे पत्थर मार-मार कर हलाक कर दो, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह मांगता हूं। (२०) और अगर मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो मुझ से अलग हो जाओ। (२१) तब (मूसा ने) अपने परवरदिगार से दुआ की कि ये ना-फ़रमान लोग हैं। (२२) (ख़ुदा ने फ़रमाया कि) मेरे बन्दों को रातों-रात ले कर चले जाओ और (फ़िऔनी) ज़रूर तुम्हारा पीछा करेंगे, (२३) और दरिया से (कि) सूखा (हो रहा होगा) पार हो जाओ। (तुम्हारे बाद) उन का तमाम लश्कर डुबो दिया जाएगा। (२४) वे लोग बहुत-से बाग़ और चश्मे छोड़ गये, (२५) और खेतियां और नफ़ीस मकान, (२६) और

⁘ मु. अ़ि मु त क़. १२ ▨ व. लाज़िम ▨ व लाज़िम ▨ व. लाज़िम ● मु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व नअ्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन ला (२७) कज़ालि-क वक़्फ़ व औरस्-नाहा क़ौमन्
आख़रीन (२८) फ़ मा ब-कत् अलैहिमुस्समाउ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन
★ (२९) व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राईल मिनल्-अज़ाबिल्-मुहीन ला (३०) मिन्
फ़िर्औ-न ط इन्नहू का-न आलियम्-मिनल्-मुस्रिफ़ीन (३१) व ल-क़दिख़्तर्-नाहुम्
अला अिल्मिन् अ-लल्-आलमीन ج (३२) व
आतैनाहुम् मिनलआयाति मा फ़ीहि बलाउम्-
मुबीन (३३) इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून ला
(३४) इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व
मा नह्नु बिमुन्शरीन (३५) फ़अ्तू बिआबा-
इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३६) अहुम्
ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअिव-वल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लिहिम् ط अह-लक-नाहुम् ز इन्नहुम् कानू मुजिर-
मीन (३७) व मा ख़-लक़्नस्समावाति वल्-
अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (३८) मा
ख़-लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न
अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (३९) इन्-न
यौमलफ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्-मअीन ला (४०) यौ-म ला युग़्नी मौलन् مّنزل अम्मौलन् शैअंव्-★
व ला हुम् युन्सरून ला (४१) इल्ला मर्रहिमल्लाहु ط इन्नहू हुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम (४२)
इन्-न श-ज-र-तज़्ज़क़्क़ूम ला (४३) तआमुल्-असीम صلے (४४) कल्मुहिल ج यग़्ली फ़िल्-
बुतून ला (४५) क-ग़लियल् हमीम ط (४६) ख़ुज़ूहु फ़अ्-तिलूहु इला सवाइल्-जहीम लا
(४७) सुम्-म सुब्बू फ़ौ-क़ रअ्सिही मिन् अज़ाबिल्-हमीम ط (४८) ज़ुक़् صلے ج इन्-क
अन्तल्-अज़ीज़ुल्-करीम (४९) इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून (५०)
इन्नलमुत्तक़ी-न फ़ी मक़ामिन् अमीन ला (५१) फ़ी जन्नातिंव्-व अुयूनिय- ج (५२)
यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम्-मु-त-क़ाबिलीन ج (५३) कज़ालि-क قف व ज़व्वज्-
नाहुम् बिहूरिन् अीन ط (५४) यद्अू-न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन् आमिनीन لا (५५)

وَّمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾ كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ مِن فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا
مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾ وَآتَيْنَاهُم
مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا
مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾ فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ
كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا
خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾ إِنَّ شَجَرَتَ
الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ
مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَٰذَا مَا
كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَ
عُيُونٍ ﴿٥٢﴾ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَ
زَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا

★रु० १/१४ आ २९ ★रु० २/१५ आ १३ ∴ मु० अि मु ता ख़० १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आराम की चीज़ें, जिन में ऐसा किया करते थे, (२७) इसी तरह (हुआ) और हम ने दूसरे लोगों को उन का मालिक बना दिया। (२८) फिर उन पर न तो आसमान और ज़मीन को रोना आया और न उन को मोहलत ही दी गयी। (२९)★

और हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत के अज़ाब से निजात दी। (३०) (यानी) फ़िरऔन से, बेशक वह सर-कश (और) हद से निकला हुआ था। (३१) और हम ने बनी इस्राईल को दुनिया वालों से समझ-बूझ कर चुना था। (३२) और उन को ऐसी निशानियां दी थीं, जिन में खुली आज़माइश थी। (३३) ये लोग यह कहते हैं, (३४) कि हमें सिर्फ़ पहली बार (यानी एक बार) मरना है और (फिर) उठना नहीं, (३५) पस अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (ज़िंदा कर) लाओ। (३६) भला ये अच्छे हैं या तुब्बअ् की क़ौम![1] और वे लोग जो तुम से पहले हो चुके हैं, हम ने उन (सब) को हलाक कर दिया। बेशक वे गुनाहगार थे। (३७) और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन में है, उन को खेलते हुए नहीं बनाया। (३८) उन को हम ने तद्बीर से पैदा किया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३९) कुछ शक नहीं कि फ़ैसले का दिन उन सब (के उठने का) वक़्त है, (४०) जिस दिन कोई दोस्त, किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन को मदद मिलेगी, (४१) मगर जिस पर ख़ुदा मेहरबानी करे, वह तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (४२)★

बेशक थूहर का पेड़, (४३) गुनाहगार का खाना है;∴(४४) जैसे पिघला हुआ तांबा,∴ पेटों में (इस तरह) खौलेगा, (४५) जिस तरह गर्म पानी खौलता है। (४६) (हुक्म दिया जाएगा कि) इस को पकड़ लो और खींचते हुए दोज़ख के बीचों-बीच ले जाओ। (४७) फिर उस के सर पर खौलता हुआ पानी उंडेल दो (कि अज़ाब पर) अज़ाब (हो,) (४८) (अब) मज़ा चख, तू बड़ी इज़्ज़त वाला (और) सरदार है। (४९) यह वही (दोज़ख) है, जिस में तुम लोग शक किया करते थे। (५०) बेशक परहेज़गार लोग अम्न की जगह में होंगे। (५१) (यानी) बाग़ों और चश्मों में, (५२) हरीर का बारीक और दबीज़ (भारी) लिबास पहन कर एक-दूसरे के सामने बैठे होंगे। (५३) (वहां) इस तरह (का हाल होगा) और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली सफ़ेद रंग की औरतों से उन के जोड़े लगाएंगे। (५४) वहां अम्न-सुकून से हर क़िस्म के मेवे मंगाएंगे (और

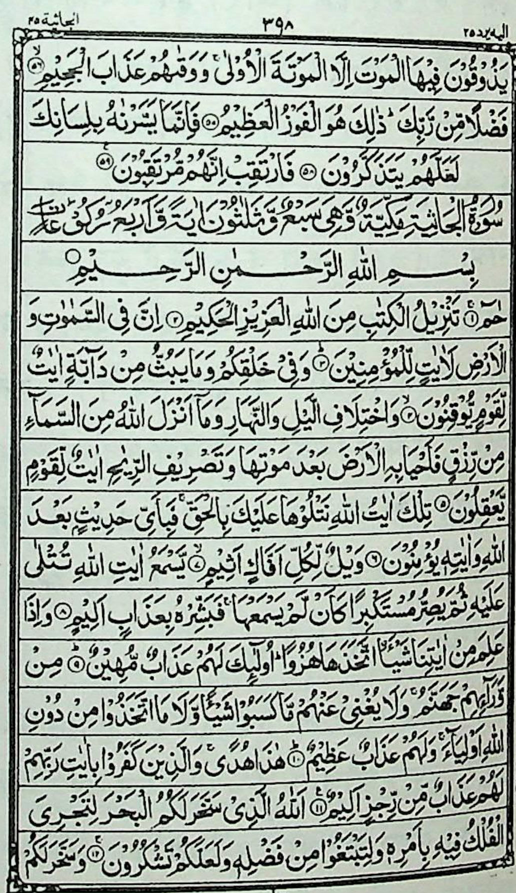
१. तुब्बअ् यमन का बादशाह था, कहते हैं कि वह तो ईमान वाला था और उस की क़ौम बुतपरस्त थी, जो हलाक कर दी गयी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ला यज़ूक़ू-न फ़ीहल्मौ-त इल्लल्मौत - तल् - ऊला ᑕ व वक़ाहुम् अज़ाबल्-
जहीमि ᒪ (५६) फ़ज़् - लम् - मिर्रब्बि - क ᑲ ज़ालि - क हुवल् -
फ़ौज़ुल्-अज़ीम (५७) फ़-इन्नमा यस्सर-नाहु बिलिसानि-क ल-अल्लहुम्
य - त - ज़क्करून (५८) फ़र्तक़िब् इन्नहुम् मुर्तक़िबून ★ (५९)

४५ सूरतुल् जासियति ६५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के २१३१ अक्षर, ४६२ शब्द, ३७ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं।



बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●
हामीम् ᑕ (१) तन्ज़ीलुल्-किताबि
मिनल्लाहिल्-अज़ीज़िल्-हकीम (२) इन-न
फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिलमुअ्मिनीन ᑲ
(३) व फ़ी ख़ल्क़िकुम् व मा यबुस्सु मिन्
दाब्बतिन् आयातुल्-लिक़ौमिंय्यूक़िनून ᒪ (४)
वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज़-लल्लाहु
मिनस्समाइ मिर्रिज़्क़िन् फ़-अह्या बिहिल्अर-ज़
बअ्-द मौतिहा व तस्रीफ़िर-रियाहि आयातुल्-
लिक़ौमिंय्यअ्-क़िलून (५) तिल-क आयातुल्-
लाहि नत्लूहा अलै-क बिल्हक़्क़ि ᑕ फ़बिअय्यि
हदीसिम् बअ्-दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून
(६) वैलुल्-लिकुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीमिंय-ᒪ
(७) -यस्-मअु आयातिल्लाहि तुत्ला अलैहि सुम्-म युसिर्रु मुस्तक-बिरन् क-अल्लम्
यस्-मअ्-हा ᑕ फ़बश्शिर्हु बिअज़ाबिन् अलीम (८) व इज़ा अलि-म मिन् आयातिना
शै-अ-नित्त-ख़-ज़हा हुज़ुवन् ᑲ उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन ᑲ (९) मिंव्वराइहिम्
जहन्नमु ᑕ व ला युग़्नी अन्हुम् मा क-सबू शैअंव्-व ला मत्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि
औलिया-अ ᑕ व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम ᑲ (१०) हाज़ा हुदन् ᑕ वल्लज़ी-न क-फ़रू
बिआयाति रब्बिहिम् लहुम् अज़ाबुम्-मिर्रिज्ज़िन् अलीम ★ (११) अल्लाहुल्लज़ी
सख़्ख़-र लकुमुल् - बह्-र लितज्रि - यल् - फ़ुल्कु फ़ीहि बिअम्रिही
व लि - तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल - अल्लकुम् तश्कुरून ᑕ (१२)

★रु. ३/१६ आ १७ ★रु. १/१७ आ ११

खाएंगे।) (५५) (और) पहली बार के मरने के सिवा (कि मर चुके थे) मौत का मज़ा नहीं चखेंगे और ख़ुदा उन को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लेगा। (५६) यह तुम्हारे परवरदिगार का फ़ज़्ल है। यही तो बड़ी कामियाबी है। (५७) हम ने इस (क़ुरआन) को तुम्हारी ज़ुबान में आसान कर दिया है, ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। (५८) पस तुम भी इन्तिज़ार करो, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (५९)★



४५ सूरः जासिया ६५

सूरः जासिया मक्की है। इस में ३७ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस किताब का उतारा जाना ख़ुदा-ए-ग़ालिब (और) हकीम (की तरफ़) से है। (२) बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (३) और तुम्हारी पैदाइश में भी और जानवरों में भी, जिन को वह फैलाता है, यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (४) और रात और दिन के आगे-पीछे आने-जाने में और वह जो ख़ुदा ने आसमान से रोज़ी (का ज़रिया) नाज़िल फ़रमाया, फिर इस से ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा किया, उस में और हवाओं के बदलने में अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (५) ये ख़ुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं, तो यह ख़ुदा और उस की आयतों के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे? (६) हर झूठे गुनाहगार पर अफ़सोस है, (७) (कि) ख़ुदा की आयतें उस को पढ़ कर सुनायी जाती हैं तो उन को सुन तो लेता है (मगर) फिर घमंड में आ कर ज़िद करता है कि गोया उन को सुना ही नहीं, सो ऐसे शख़्स को दुख देने वाले अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो। (८) और जब हमारी कुछ आयतें उसे मालूम होती हैं, तो उन की हंसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९) इन के सामने दोज़ख़ है और जो काम वे करते रहे, कुछ भी उन के काम न आएंगे और न वही (काम आएंगे) जिन को उन्हों ने ख़ुदा के सिवा माबूद बना रखा था और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (१०)

यह हिदायत (की किताब) है और जो लोग अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार करते हैं, उन को सख़्त क़िस्म का दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (११)★ख़ुदा ही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया, ताकि उस के हुक्म से उस में कश्तियां चलें और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल

★रु. ३/१६ आ १७ ★रु. १/१७ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअम्-मिन्हु इन्-न फ़ी
ज़ालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (१३) क़ुल् लिल्लज़ी-न आमनू
यग़्फ़िरू लिल्लज़ी-न ला यर्जू-न अय्यामल्लाहि लि-यज्ज़ि-य क़ौमम्-बिमा कानू यक्-
सिबून (१४) मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लिनफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा
सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअून (१५) व
ल-क़द् आतैना बनी इस्राईलल्-किता-ब वल्-
हुक्-म वन्नुबुव्व-त व र-ज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति
व फ़ज़्ज़ल्-नाहुम् अ़लल्-आ़लमीन (१६) व
आतैनाहुम् बय्यिनातिम्-मिनलअम्रि फ़-मख़्त-लफ़ू
इल्ला मिम्बअ्-दि मा जा-अ-हुमुल्-अिल्मु बग़्-
यम्-बैनहुम् इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम्
यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून
(१७) सुम्-म ज-अ़ल्ना-क अ़ला शरीअ़तिम्-
मिनल्-अम्रि फ़त्तबिअ्-हा व ला तत्तबिअ्
अह्वा-अल्लज़ी-न ला यअ्-लमून (१८) इन्नहुम्
लंय्युग़्नू अ़न्-क मिनल्लाहि शैअन् व इन्नज़्ज़ालि-
मी-न बअ्-ज़ुहुम् औलियाउ बअ्-ज़िन् वल्लाहु वलिय्युल्-मुत्तक़ीन (१९) हाज़ा बसाइरु लिन्-
नासि व हुदंव-व रह्-मतुल्-लिक़ौमिंय्यूक़िनून (२०) अम् ह़सिबल्लज़ीनज्-त-रहुस्-सय्यिआति
अन् नज्-अ़्-लहुम् कल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सवा-अम्मह़्याहुम् व
ममातुहुम् सा-अ मा यह़्-कुमून ★ (२१) व ख़-ल-क़ल्लाहुस्-समावाति वलअर-ज़ बिल्-
ह़क़्क़ि व लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-स-बत् व हुम् ला युज़्-लमून (२२)
अ-फ़-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इलाहहू हवाहु व अ-ज़ल्लहुल्लाहु अ़ला अ़िल्-
मिंव्-व ख़-त-म अ़ला सम्अ़िही व क़ल्बिही व ज-अ़-ल अ़ला ब-सरिही ग़िशा-व-तन्
फ़मंय्यह्दीहि मिम्बअ्-दिल्लाहि अ-फ़ला त-ज़क्करून (२३) व क़ालू मा
हि-य इल्ला ह़यातुनद्दुन्या नमूतु व नह़्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह्-रु व मा
लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून (२४)

الجاثية ٤٥ ٣٩٩ اليه يرد ٢٥

تِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِنْهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾
قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ
إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَ
النُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ وَآتَيْنَاهُمْ
بَيِّنَاتٍ مِنَ الْأَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا
بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾
ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا
يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُمْ لَنْ يُغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ
أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩﴾ هَٰذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَ
رَحْمَةٌ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ
كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾
وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ
عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ يَهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا
إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُمْ بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ

★रु. २/१८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (१२) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया, जो लोग ग़ौर करते हैं, उन के लिए उस में (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (१३) मोमिनों से कह दो कि जो लोग ख़ुदा के दिनों की (जो आमाल के बदले के लिए मुक़र्रर हैं), उम्मीद नहीं रखते, उन से दरगुज़र करें, ताकि वह उन लोगों को उन के आमाल का बदला दे। (१४) जो कोई नेक अमल करेगा, तो अपने लिए और जो बुरे काम करेगा, तो उन का नुक़्सान उसी का होगा, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाओगे। (१५) और हम ने बनी इस्राईल को किताबे (हिदायत) और हुकूमत और नुबूवत बख़्शी और पाकीज़ा चीज़ें अता फ़रमायीं और दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी। (१६) और उन को दीन के बारे में दलीलें अता कीं, तो उन्हों ने जो इख़्तिलाफ़ किया, तो इल्म आ चुकने के बाद आपस की ज़िद से किया। बेशक तुम्हारा परवरदिगार क़ियामत के दिन उन में उन बातों का, जिन में, वे इख़्तिलाफ़ करते थे, फ़ैसला करेगा। (१७) फिर हम ने तुमको दीन के खुले रास्ते पर (क़ायम) कर दिया, तो उसी (रास्ते) पर चले चलो और नादानों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलना। (१८) ये ख़ुदा के सामने तुम्हारे किसी काम नहीं आएंगे और ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त होते हैं और ख़ुदा परहेज़गारों का दोस्त है। (१९) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए दानाई (हिक्मत) की बातें हैं और जो यक़ीन रखते हैं, उन के लिए हिदायत और रहमत है। (२०) जो लोग बुरे काम करते हैं, क्या वह यह ख़्याल करते हैं कि हम उन को उन लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे (और) उनकी ज़िंदगी और मौत बराबर होगी। ये जो दावे करते हैं, बुरे हैं। (२१) ★

और ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत से पैदा किया है और ताकि हर शख़्स अपने आमाल का बदला पाए और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (२२) भला तुम ने उस शख़्स को देखा, जिस ने अपनी ख़्वाहिश को माबूद बना रखा है और बावजूद जानने-बूझने के (गुमराह हो रहा है तो) ख़ुदा ने (भी) उस को गुमराह कर दिया और उस के कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उस की आंखों पर पर्दा डाल दिया। अब ख़ुदा के सिवा उस को कौन राह पर ला सकता है, तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते ? (२३) और कहते हैं कि हमारी ज़िंदगी तो सिर्फ़ दुनिया ही की है कि (यहीं) मरते और जीते हैं और हमें तो ज़माना मार देता है और उन को इस का कुछ इल्म नहीं,

★रु. २/१८ आ १०

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिम्-मा का-न हुज्जतहुम् इल्ला अन्
क़ालुअ्तू बिआबाइना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (२५) क़ुलिल्लाहु युह़-यीकुम् सुम्-म
युमीतुकुम् सुम्-म यज्मअ़ुकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि व लाकिन्-न
अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून ★ (२६)व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व यौ-म
तक़ूमुस्साअ़तु यौमइजिंय्यख़-सरुल्-मुब्तिलून (२७)
व तरा कुल्-ल उम्मतिन् जासि-य-तन् कुल्लु
उम्मतिन् तुद्आ इला किताबिहा ط अल्यौ-म
तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून (२८) हाज़ा
किताबुना यन्तिक़ु अ़लैकुम् बिल्ह़क़्क़ि ط इन्ना
कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम् तअ्-मलून (२९)
फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति
फ़-युद्ख़िलुहुम् रब्बुहुम् फ़ी रह़्मतिही ط ज़ालि-क
हुवल्-फ़ौज़ुल्-मुबीन • (३०) व अम्मल्लज़ी-न
क-फ़रू अ-फ़ लम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम्
फ़स्तक्बर्तुम् व कुन्तुम् क़ौमम्-मुज्रिमीन (३१)
व इज़ा क़ी-ल इन् - न वअ् - दल्लाहि

الجاثية ٤٥ — ٧٠٠ — اليه يرد ٢٥

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾
وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۣ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّا كُنَّا
نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۣ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا
مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا
قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَ
قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ
مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلِلّٰهِ
الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۠ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾

ह़क़्क़ुंव्वस्साअ़तु ला रै-ब फ़ीहा क़ुल्तुम् मा नद्री मस्साअ़तु لا इन् नज़ुन्नु इल्ला अन्-
नंव्-व मा नह़्नु बिमुस्तैक़िनीन (३२) व बदा-लहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व
हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह-ज़िऊन (३३) व क़ीलल्यौ-म नन्साकुम्
कमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन्
नासिरीन (३४) ज़ालिकुम् बि अन्नकुमुत्तख़ज़्तुम् आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-व ग़र्रत-
कुमुल्-ह़यातुद्दुन्या ج फ़ल्यौ-म ला युख़्-रजू-न मिन्हा व ला हुम् युस्तअ़-तबून (३५)
फ़लिल्लाहिल्-ह़म्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल्-अर्ज़ि रब्बिल्-आलमीन (३६)
व लहुल्-किब्रियाउ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ص व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ह़कीम ★ (३७)

★रु. ३/१९ आ ५ ★रु. ४/२० आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सिर्फ़ अटकल से काम लेते हैं। (२४) और जब उन के सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उन की यही हुज्जत होती है कि अगर सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (ज़िंदा कर) लाओ। (२५) कह दो कि ख़ुदा ही तुम को जान बख़्शता है, फिर (वही) तुम को मौत देता है, फिर तुम को क़ियामत के दिन, जिस (के आने) में कुछ शक नहीं, तुम को जमा करेगा, लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते। (२६)★

और आसमानों और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही की है और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन अह्ले बातिल घाटे में पड़ जाएंगे। (२७) और तुम एक फ़िर्क़े को देखोगे कि घुटनों के बल बैठा होगा (और) हर एक जमाअत अपने (आमाल की) किताब की तरफ़ बुलायी जाएगी। जो कुछ तुम करते रहे हो, आज तुम को उस का बदला दिया जाएगा। (२८) यह हमारी किताब तुम्हारे बारे में सच-सच बयान कर देगी, जो कुछ तुम किया करते थे, हम लिखवाते जाते थे। (२९) तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन का परवरदिगार उन्हें अपनी रहमत (के बाग़) में दाखिल करेगा। यही खुली कामियाबी है। (३०) और जिन्हों ने कुफ़्र किया, (उन से कहा जाएगा कि) भला हमारी आयतें तुम को पढ़ कर सुनायी नहीं जाती थीं ? मगर तुम ने तकब्बुर किया और तुम ना-फ़रमान लोग थे। (३१) और जब कहा जाता था कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शक नहीं, तो तुम कहते थे, हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है। हम उस का सिर्फ़ अटकल का ख़्याल करते हैं और हमें यक़ीन नहीं आता। (३२) और उन के आमाल की बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो जाएंगी और जिस (अज़ाब) की वे हंसी उड़ाते थे, वह उन को आ घेरेगा। (३३) और कहा जाएगा कि जिस तरह तुम ने इस दिन के आने को भुला रखा था, उसी तरह आज हम तुम्हें भुला देंगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं।[1] (३४) यह इस लिए कि तुम ने ख़ुदा की आयतों को मज़ाक़ बना रखा था और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम को धोखे में डाल रखा था, सो आज ये लोग न दोज़ख़ से निकाले जाएंगे और न उनकी तौबा क़ुबूल की जाएगी ? (३५) पस ख़ुदा ही के लिए हर तरह की तारीफ़ है, जो आसमानों का मालिक और तमाम ज़मीन का मालिक और तमाम जहान का परवरदिगार है। (३६) और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए बड़ाई है और वह ग़ालिब (और) हकीम है। (३७)★

१. अल्लाह तआला भुलावेंगे यानी तुम पर मेहरबानी न करेंगे।

★रु. ३/१९ आ ५ ★रु. ४/२० आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छब्बीसवां पारः हामीम

४६ सूरतुल-अह्क़ाफ़ि ६६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के २७०९ अक्षर, ७५० शब्द, ३५ आयत और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

हामीम्(१) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल्-अज़ीज़िल्-ह़कीम (२) मा ख़-लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्ह़क़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्ط वल्लज़ी-न क-फ़रू अ़म्मा उन्ज़िरू मुअ्-रिज़ून (३) क़ुल् अ-रऐतुम् मा तद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावातिط ईतूनी बिकिताबिम्-मिन् क़ब्लि हाज़ा औ असारतिम्मिन् अ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४) व मन् अज़ल्लु मिम्मंय्यद्अ़ू मिन् दूनिल्लाहि मल्ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल्-क़ियामति व हुम् अ़न् दुआइहिम् ग़ाफ़िलून (५) व इज़ा ह़ुशि-रन्नासु कानू लहुम् अअ्-दा-अंव्-व कानू बिअ़िबादति-हिम् काफ़िरीन (६) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा-अहुम्ط हाज़ा सिह़्रुम्-मुबीनط (७) अम् यक़ूलूनफ़्तराहुط क़ुल् इनिफ़्-तरैतुहू फ़ला तम्लिकू-न ली मिनल्लाहि शैअन्ط हु-व अअ्-लमु बिमा तुफ़ीज़ू-न फ़ीहिط कफ़ा बिही शहीदम्-बैनी व बैनकुम्ط व हुवल्-ग़फ़ूरुर्रह़ीम (८) क़ुल् मा कुन्तु बिद्-अम्-मिनर्रुसुलि व मा अद्री मा युफ़अलु बी व ला बिकुम्ط इन् अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय्-य व मा अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (९) क़ुल् अरऐतुम् इन् का-न मिन् अ़िन्दिल्लाहि व क-फ़र्तुम् बिही व शहि-द शाहिदुम्-मिम्बनी इस्-राई-ल अ़ला मिस्लिही फ़-आ-म-न वस्तक्बर्तुम्ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन ★ (१०)

سورة الاحقاف مكية وهى خمس وثلثون اية واربع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

حم ۝١ تنزيل الكتب من الله العزيز الحكيم ۝٢ ما خلقنا السموت
والارض وما بينهما الا بالحق واجل مسمى والذين كفروا
عما انذروا معرضون ۝٣ قل ارءيتم ما تدعون من دون الله
اروني ماذا خلقوا من الارض ام لهم شرك في السموت ائتوني
بكتب من قبل هذا او اثرة من علم ان كنتم صدقين ۝٤
ومن اضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له الى
يوم القيمة وهم عن دعاىهم غفلون ۝٥ واذا حشر الناس كانوا
لهم اعداء وكانوا بعبادتهم كفرين ۝٦ واذا تتلى عليهم ايتنا
بينت قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين ۝٧
ام يقولون افترىه قل ان افتريته فلا تملكون لي من الله
شيا هو اعلم بما تفيضون فيه كفى به شهيدا بيني وبينكم
وهو الغفور الرحيم ۝٨ قل ما كنت بدعا من الرسل وما ادري
ما يفعل بي ولا بكم ان اتبع الا ما يوحى الي وما انا الا نذير
مبين ۝٩ قل ارءيتم ان كان من عند الله وكفرتم به و
شهد شاهد من بني اسراءيل على مثله فامن واستكبرتم

★ रु॰ १/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४६ सूरः अह्क़ाफ़ ६६

सूरः अह्क़ाफ़ मक्की है और इस में पैंतीस आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) (यह) किताब ख़ुदा-ए-ग़ालिब (और) हिक्मत वाले की तरफ़ से नाज़िल हुई है। (२) हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों में है, हिक्मत के साथ और एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए पैदा किया है और काफ़िरों को जिस चीज की नसीहत की जाती है, उससे मुंह फेर लेते हैं। (३) कहो कि भला तुम ने उन चीज़ों को देखा है, जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो। (ज़रा) मुझे भी तो दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन में कौन-सी चीज़ पैदा की है या आसमानों में उन की शिर्कत है। अगर सच्चे हो तो इस से पहले की कोई किताब मेरे पास लाओ या (नबियों के) इल्म (में) से कुछ लिखा चला आता हो, (तो उसे पेश करो।) (४) और उस शख़्स से बढ़ कर कौन गुमराह हो सकता है, जो ऐसे को पुकारे, जो क़ियामत तक उसे जवाब न दे सके और उन को उन के पुकारने ही की ख़बर न हो। (५) और जब लोग जमा किए जाएं, तो वे उन के दुश्मन होंगे और उन की इबादत से इंकार करेंगे। (६) और जब उन के सामने हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं, तो काफ़िर हक़ के बारे में, जब उन के पास आ चुका, कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। (७) क्या ये कहते हैं कि उस ने इस को ख़ुद से बना लिया है? कह दो कि अगर मैं ने इस को अपनी तरफ़ से बनाया हो, तो तुम ख़ुदा के सामने मेरे (बचाव के) लिए कुछ अख़्तियार नहीं रखते। वह उस बात-चीत को ख़ूब जानता है, जो तुम उस के बारे में करते हो, वही मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह काफ़ी है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (८) कह दो कि मैं कोई नया पैग़म्बर नहीं आया और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या सुलूक किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या (किया जाएगा।) मैं तो उसी की पैरवी करता हूं, जो मुझ पर वह्य आती है और मेरा काम तो एलानिया हिदायत करना है। (९) कहो कि भला देखो तो अगर यह (क़ुरआन) ख़ुदा की तरफ़ से हो और तुम ने उस से इंकार किया और बनी इस्राईल में से एक गवाह इसी तरह की एक (किताब) की गवाही दे चुका और ईमान ले आया और तुम ने सरकशी की (तो तुम्हारे ज़ालिम होने में क्या शक है) बेशक ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०)★

★रु. १/१ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू लौ का-न ख़ैरम्मा स-बक़ूना इलैहि ط व
इज़् लम् यह्-तदू बिही फ़-स-यक़ूलू-न हाज़ा इफ़्कुन् क़दीम (११) व मिन् क़ब्लिही
किताबु मूसा इमामंव्-व रह्-म-तन् ط व हाज़ा किताबुम्-मुसद्-दिक़ुल्-लिसानन्
अ-रबिय्यल्-लियुन्ज़ि-रल्लज़ी-न ज़-लमू صلے व बुश्रा लिलमुह्-सिनीन ج (१२)
इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू
फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम्
यह्-ज़नून ج (१३) उलाइ-क अस्हाबुल्-
जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा ج जज़ा-अम्-बिमा
कानू यअ्-मलून (१४) व वस्सैनल्-इन्सा-न
बिवालिदैहि इह्सानन् ط ह्-म-लत्हु उम्मुहू कुर्-
हंव्-व व-ज़-अत्हु कुर्-हन् ط व ह्म्-लुहू व फ़िसा-
लुहू सलासू-न शह्-रन् ط हत्ता इज़ा ब-ल-ग़
अशुद्-दहू व ब-ल-ग़ अर्बअी-न स-न-तन् لا का-ल
रब्बि औज़िअ्-नी अन् अश्कु-र निअ्-म-
त-कल्लती अन्-अम्-त अ-लय्-य व अला
वालिदय-य व अन् अअ्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु
व अस्लिह् ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती ط इन्नी तुब्तु इलै-क व इन्नी मिनल्-मुस्लिमीन (१५)
उलाइ-कल्लज़ी-न न-त-क़ब्बलु अन्हुम् अह्-स-न मा अमिलू व न-त-जावज़ु अन्
सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्-हाबिल्-जन्नति ط वअ्-दस्-सिद्क़िल्लज़ी कानू यूअदून (१६)
वल्लज़ी क़ा-ल लिवालिदैहि उफ़्फ़िल्लकुमा अ-तअिदानिनी अन् उख़्-र-ज व क़द्
ख़-लतिल्-क़ुरूनु मिन् क़ब्ली ج व हुमा यस्तग़ीसानिल्ला-ह वै-ल-क आमिन् صلے
इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुन् صلے फ़-यक़ूलु मा हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन
(१७) उलाइ-कल्लज़ी-न हक़्-क़ अलैहिमुल्क़ौलु फ़ी उममिन् क़द् ख़-लत्
मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्जिन्नि वल्इन्सि ط इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (१८)

الاحقاف ۴۶ ۴۰۲ حٰمٓ ۲۶

إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿١٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ
اٰمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ
هٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتٰبُ مُوسٰى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ۚ وَهٰذَا
كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَبُشْرٰى
لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسٰنًا ۖ
حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصٰلُهُ ثَلٰثُونَ شَهْرًا ۖ
حَتّٰٓى إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيٓ أَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَآ أَتَعِدَانِنِيٓ أَنْ
أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيثٰنِ اللَّهَ وَيْلَكَ
اٰمِنْ ۖ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُولُ مَا هٰذَآ إِلَّآ أَسٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾
أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि अगर यह (दीन) कुछ बेहतर होता, तो ये लोग उस की तरफ़ हम से पहले न दौड़ पड़ते और जब वे इस से हिदायत न पा सके, तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (११) और इस से पहले मूसा की किताब थी (लोगों के लिए) रहनुमा और रहमत और यह किताब अरबी ज़ुबान में है उसी की तस्दीक़ करने वाली, ताकि ज़ालिमों को डराए और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाए। (१२) जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है, फिर वे उस पर क़ायम रहे, तो उन को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (१३) यही जन्नत वाले हैं कि हमेशा इस में रहेंगे। (यह) उस का बदला है, जो वें किया करते थे। (१४) और हमने इंसान को अपने मां-बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया। उस की मां ने उस को तक्लीफ़ से पेट में रखा और तक्लीफ़ ही से जना और उस का पेट में रहना और दूध छोड़ना ढाई वर्ष में होता है, यहां तक कि जब ख़ूब जवान होता और चालीस वर्ष को पहुंच जाता है, तो कहता है कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे तौफ़ीक़ दे कि तूने जो एहसान मुझ पर और मेरे मां-बाप पर किए हैं, उन का शुक्रगुज़ार हूं और यह कि नेक अमल करूं, जिन को तू पसन्द करे और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाम (व तक़्वा) दे। मैं तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूं और मैं फ़रमांबरदारों में हूं। (१५) यही लोग हैं, जिन के नेक अमल हम क़ुबूल करेंगे और उन के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाएंगे, (और यही) जन्नत वालों में (होंगे) (यह) सच्चा वायदा (है) जो उन से किया जाता था। (१६) और जिस शख़्स ने अपने मां-बाप से कहा कि उफ़! उफ़!! तुम मुझे यह बताते हो कि मैं (ज़मीन से) निकाला जाऊंगा, हालांकि बहुत से लोग मुझ से पहले गुज़र चुके हैं और वे दोनों ख़ुदा की जनाब में फ़रियाद करते (हुए कहते) थे कि कमबख़्त ईमान ला। ख़ुदा का वायदा सच्चा है, तो कहने लगा, यह तो पहले लोगों की कहानियां हैं।[1] (१७) यही वे लोग हैं, जिन के बारे में जिन्नों और इंसानों की (दूसरी) उम्मतों में से, जो इन से पहले गुज़र चुकीं, अज़ाब का वायदा तह्क़ीक़ हो गया। बेशक

१. यह उस का हाल है जो काफ़िर है और मां-बाप समझाते हैं ईमान की बात, नहीं समझता।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लिकुल्लिन् द-र-जातुम्-मिम्मा अ़मिलू ج व लियुवफ़्फ़ि-यहुम् अअ़्-मालहुम् व हुम्
ला युज़्-लमून (१६) व यौ-म युअ़्-रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्नारि ط अज़्-हब्तुम्
त़य्यिबातिकुम् फ़ी ह़यातिकुमुद्दुन्या वस्तम्तअ़्-तुम् बिहा ج फ़ल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्-
हूनि बिमा कुन्तुम् तस्तक्बिरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-ह़क़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तफ़्सुक़ून
★ (२०) वज़्कुर् अख़ा आ़दिन् ط इज़् अन्ज़-र
क़ौमहू बिल्-अह़्क़ाफ़ि व क़द् ख़-लतिन्नुज़ुरु
मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही अल्ला तअ़्-
बुदू इल्लल्ला-ह ط इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम्
अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (२१) क़ालू अजिअ़्-
तना लितअ़्-फ़िकना अ़न् आलिहतिना ج
फ़अ़्-तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्-
सादिक़ीन (२२) क़ा-ल इन्नमल्-अ़िल्मु
अ़िन्दल्लाहि ز व उबल्लिग़ुकुम् मा उर्सिल्तु बिही
व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्-हलून (२३)
फ़-लम्मा रऔहु आ़रिज़म्-मुस्तक़्बि-ल औदियति
हिम् لا क़ालू हाज़ा आ़रिज़ुम्-मुम्तिरुना ط बल् हु-व

مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا
وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ
اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ
اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾
فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ
بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۭ
بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُهُمْ وَلَاۤ
اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا
بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا
الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ

मस्तअ़्-जल्तुम् बिही ط रीहुन् फ़ीहा अ़ज़ाबुन् अलीम لا (२४) तुदम्मिरु कुल्-ल शैइम्-
बिअम्रि रब्बिहा फ़-अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम् ط कज़ालि-क नज्ज़िल्-क़ौमल्-
मुज्रिमीन (२५) व ल-क़द् मक्कन्नाहुम् फ़ीमा इम्मक्कन्ना-कुम् फ़ीहि व ज-अ़ल्ना लहुम्
सम्-अ़ंव्-व अब्सारंव्-व अफ़्इ-द-तन् ز फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् सम्अ़ुहुम् व ला अब्सारुहुम्
व ला अफ़्इदतुहुम् मिन् शैइन् इज़् कानू यज्-हदू-न لا बिआयातिल्लाहि व ह़ा-क़
बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (२६) व ल-क़द् अह्-लक्ना मा हौलकुम्
मिनल्क़ुरा व सर्रफ़्नल् - आयाति ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (२७) फ़लौला
न-स़-रहुमुल् - लज़ीनत्त - ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि क़ुर्बानन् आलि-ह-तन् ط बल्
ज़ल्लू अ़न्हुम् ج व ज़ालि - क इफ़्कुहुम् व मा कानू यफ़्तरून (२८)

★रु. २/२ आ १० ★रु. ३/३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वे नुक़्सान उठाने वाले थे। (१८) और लोगों ने जैसे काम किए होंगे, उन के मुताबिक़ दर्जे होंगे, (ग़रज़ यह है) कि उन को उन के आमाल का पूरा बदला दे और उन का नुक़्सान न किया जाए। (१९) और जिस दिन काफ़िर दोज़ख़ के सामने किए जाएंगे, (तो कहा जाएगा कि) तुम अपनी दुनिया की ज़िंदगी में लज़्ज़तें हासिल कर चुके और उन से फ़ायदा उठा चुके, सो आज तुम को ज़िल्लत का अज़ाब है, (यह) इस की सज़ा (है) कि तुम ज़मीन में ना-हक़ घमंड किया करते थे और इस की कि बद-किरदारी करते थे। (२०)★

और (क़ौमे) आद के भाई (हूद) को याद करो, कि जब उन्हों ने अपनी क़ौम को अह्क़ाफ़ की सर-ज़मीन में हिदायत की और उन से पहले और पीछे भी हिदायत करने वाले गुज़र चुके थे कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का डर लगता है। (२१) कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम को हमारे माबूदों से फेर दो। अगर सच्चे हो, तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, उसे हम पर ले आओ। (२२) उन्हों ने कहा कि (इस का) इल्म तो ख़ुदा ही को है और मैं तो जो (हुक्म) दे कर भेजा गया हूं, वह तुम्हें पहुंचा रहा हूं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग नादानी में फंस रहे हो। (२३) फिर जब उन्हों ने उस (अजाब) को देखा कि बादल (की सूरत में) उन के मैदानों की तरफ़ आ रहा है, तो कहने लगे, यह तो बादल है, जो हम पर बरस कर रहेगा, (नहीं,) बल्कि (यह) वह चीज़ है, जिस के लिए तुम जल्दी करते थे यानी आंधी, जिस में दर्द देने वाला अज़ाब भरा हुआ है, (२४) हर चीज़ को अपने परवरदिगार के हुक्म से तबाह किए देती है, तो वे ऐसे हो गये कि उन के घरों के सिवा कुछ नज़र ही न आता था। गुनाहगार लोगों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं। (२५) और उनको हम ने ऐसी क़ुदरतें दे दी थीं, जो तुम लोगों को नहीं दीं और उन्हें कान और आंखें और दिल दिए थे, तो जब कि वे ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे, तो न तो उन के कान ही उन के कुछ काम आ सके और न आंखें और न दिल और जिस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (२६)★

और तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को हमने हलाक कर दिया और बार-बार (अपनी) निशानियां ज़ाहिर कर दीं, ताकि वे रुजूअ करें। (२७) तो जिन को उन लोगों ने (ख़ुदा की) नज़दीकी के लिए ख़ुदा के सिवा माबूद बनाया था, उन्हों ने उन की क्यों मदद न की? बल्कि वे उन (के सामने) से गुम हो गये और यह उन का झूठ था और यही वे झूठ गढ़ा करते थे। (२८)

★रु. २/२ आ १० ★रु. ३/३ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् स़-रफ़्ना इलै-क न-फ़-रम्-मिनल्-जिन्नि यस्तमिअ़ूनल्-क़ुर्आ-न ج फ़-लम्मा
ह़-ज़रूहु क़ालू अन्स़ितू ج फ़-लम्मा क़ुज़ि-य वल्लौ इला क़ौमिहिम् मुन्ज़िरीन
(२९) क़ालू या क़ौमना इन्ना समिअ्-ना किताबन् उन्ज़ि-ल मिम्बअ्-दि मूसा
मुस़द्-दि-क़ल्लिमा बै-न यदैहि यह्दी इलल्ह़क़्क़ि व इला त़रीक़िम्-मुस्तक़ीम
(३०) या क़ौमना अजीबू दाअि-यल्लाहि व
आमिनू बिही यग़्फ़िर-लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व
युजिर्कुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (३१) व
मल्ला युजिब् दाअि-यल्लाहि फ़लै-स बिमुअ्-
जिज़िन् फ़िल्अर्ज़ि व लै-स लहू मिन् दूनिही
औलियाउ ط उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (३२)
अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़स्समा-
वाति वल्अर्-ज़ व लम् यअ्-य बिख़ल्क़िहिन्-न
बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह़्यि-यल्-मौता ط बला
इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (३३) व
यौ-म युअ्-रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्नारि ط अलै-स
हाज़ा बिल्ह़क़्क़ि ط क़ालू बला व रब्बिना ط क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून
(३४) फ़स्बिर् कमा स़-ब-र उलुल्-अ़ज़्मि मिनर्रुसुलि व ला तस्तअ्-
जिल् लहुम् ط क-अन्नहुम् यौ-म यरौ-न मा यूअ़दू-न لا लम् यल्बसू इल्ला साअ़तम्-मिन्
नहारिन् ط बलाग़ुन् ج फ़-हल् युह्लकु इल्लल् - क़ौमुल् - फ़ासिक़ून ★ ●(३५)

اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾
وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا
اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا
سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾ يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا
بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا
يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ
اَوْلِيَاۗءُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يُّحْيِۦ الْمَوْتٰى ۭ
بَلٰٓي اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَي
النَّارِ ۭ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا
تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً
مِّنْ نَّهَارٍ ۭ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾ وَالَّذِيْنَ

४७ सूरतु मुह़म्मदिन् ९५

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के २४७५ अक्षर, ५५८ शब्द, ३८ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अल्लज़ी-न क-फ़रू व स़द्दू अ़न् सबीलिल्लाहि अ-ज़ल्-ल अअ्-मालहुम् (१)

★रु. ४/४ आ ६ ●रुबअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और जब हमने जिन्नों में से कई शख़्स तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह किये कि क़ुरआन सुनें, जब वे उस के पास आए, तो (आपस में) कहने लगे कि ख़ामोश रहो। जब (पढ़ना) तमाम हुआ तो अपनी बिरादरी के लोगों में वापस गये कि (उन को) नसीहत करें। (२९) कहने लगे कि ऐ क़ौम! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, जो (किताबें) इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक़ करती है (और) सच्चा (दीन) और सीधा रास्ता बताती है। (३०) ऐ क़ौम! ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात को क़ुबूल करो और उस पर ईमान लाओ। ख़ुदा तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दुख देने वाले अज़ाब से पनाह में रखेगा। (३१) और जो शख़्स ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात क़ुबूल न करेगा, तो वह ज़मीन में (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकेगा और न उस के सिवा उस के हिमायती होंगे। ये लोग खुली गुमराही में हैं। (३२) क्या उन्हों ने नहीं समझा कि जिस ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने से थका नहीं, वह इस (बात) पर भी क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे हां, (हां,) वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (३३) और जिस दिन इंकार करने वाले आग के सामने किए जाएंगे, क्या यह हक़ नहीं? तो कहेंगे, क्यों नहीं, हमारे परवरदिगार की क़सम (हक़ है।) हुक्म होगा कि तुम जो (दुनिया में) इंकार किया करते थे, (अब) अज़ाब के मज़े चखो।(३४) पस (ऐ मुहम्मद!) जिस तरह और बुलंद हिम्मत पैग़म्बर सब्र करते रहे हैं, उसी तरह तुम भी सब्र करो और उन के लिए (अज़ाब) जल्दी न मांगो। जिस दिन ये उस चीज़ को देखेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तो (ख़्याल करेंगे कि) गोया (दुनिया में) रहे ही न थे, मगर घड़ी भर दिन। यह (क़ुरआन) पैग़ाम है, सो (अब) वही हलाक होंगे जो नाफ़रमान थे। (३५) ★ ●



४७ सूरः मुहम्मद ९५

सूरः मुहम्मद मदनी है और इस में ३८ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (औरों को) ख़ुदा के रास्ते से रोका, ख़ुदा ने उन के आमाल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व आमनू बिमा नुज़्ज़ि-ल अ़ला मुहम्मदिंव-
व हुवल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् कफ़्फ़-र अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व अस्-ल-ह बालहुम् (२)
ज़ालि-क बि-अन्नल्लज़ी-न क-फ़रुत्त-बअ़ुल्-बाति-ल व अन्नल्लज़ी-न आमनुत्त-बअ़ुल्-
हक़्-क़ मिर्-रब्बिहिम् कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहु लिन्नासि अम्सालहुम् (३) फ़-इज़ा
लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-ज़र्-बर्रिक़ाबि हत्ता
इज़ा अस्ख़न्तुमूहुम् फ़शुद्दुल्-वसा-क़ फ़-इम्मा
मन्नम्बअ्-दु व इम्मा फ़िदा-अन् हत्ता त-ज़-
अ़ल्-हर्बु औज़ारहा ज़ालि-क व लौ यशा-
उल्लाहु लन्त-स-र मिन्हुम् व लाकिलियब्लु-व
बअ्-ज़कुम् बिबअ्-ज़िन् वल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी
सबीलिल्लाहि फ़लंय्युज़िल-ल अअ्-मालहुम् (४)
स-यह्दीहिम् व युस्लिहु बालहुम् (५) व
युद्ख़िलुहुमुल्-जन्न-त अ़र्र-फ़हा लहुम् (६) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तन्सुरुल्ला-ह यन्सुर्-
कुम् व युसब्बित् अक़्दामकुम् (७) वल्लज़ी-न
क-फ़रू फ़-तअ्-सल्लहुम् व अ-ज़ल्-ल अअ्-मालहुम्
(८) ज़ालि-क बिअन्नहुम् करिहू मा अन्ज़-लल्लाहु फ़-अह्-ब-त अअ्-मा-ल-हुम् (९)
अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्
दम्म-रल्लाहु अ़लैहिम् व लिलकाफ़िरी-न अम्सालुहा (१०) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह
मौलल्लज़ी-न आमनू व अन्नल्-काफ़िरी-न ला मौला लहुम् ★ (११) इन्नल्ला-ह युद्-
ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु
वल्लज़ी-न क-फ़रू य-त-मत्तअ़ू-न व यअ्कुलू-न कमा तअ्कुलुल्-अन्आ़मु वन्नारु मस्वल्-
लहुम् (१२) व क-अय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् हि-य अशद्दु क़ुव्वतम्-मिन् क़र्यति-
कल्लती अख़्-र-जत्-क अह्-लक्नाहुम् फ़ला नासि-र लहुम् (१३) अ-फ़ मन् का-न अ़ला
बय्यिनतिम्-मिर्रब्बिही क-मन् ज़ुय्यि-न लहू सूउ अ़-मलिही वत्त-ब-अ़ू अह्-वा-अहुम् (१४)

محمد ٤٧ ٨٠٥ حٰمۤ ٢٦

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ
كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا
الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾ فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ
اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ
مع ١٣ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛ ذٰلِكَ ۛ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۠
بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾
سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾
ع ٥ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١١﴾ اِنَّ
اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ
مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْۤ
اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ

منزل ٦

.·. मु. अ़ि मु ता ख़. १३ ★रु. १/५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बर्बाद कर दिए। (१) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और जो (किताब) मुहम्मद पर नाज़िल हुई, उसे मानते रहे और वह उन के परवरदिगार की तरफ़ से बर-हक़ है, उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन की हालत संवार दी। (२) यह (अमल की बर्बादी और इस्लाहे हाल) इसलिए है कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन्हों ने झूठी बात की पैरवी की और जो ईमान लाए, वे अपने परवरदिगार की तरफ़ से (दीने) हक़ के पीछे चले। इसी तरह ख़ुदा लोगों से उन के हालात बयान फ़रमाता है। (३) जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ, तो उन की गरदनें उड़ा दो, यहां तक कि जब उन को ख़ूब क़त्ल कर चुको तो (जो ज़िंदा पकड़े जाएं, उन को) मज़बूती से क़ैद कर लो, फिर इस के बाद या तो एहसान रख कर छोड़ देना चाहिए या कुछ माल ले कर, यहां तक कि (मुख़ालिफ़ फ़रीक़) लड़ाई (के) हथियार (हाथ से) रख दे। ∴ यह (हुक्म याद रखो) ∴ और अगर ख़ुदा चाहता तो (और तरह) उन से बदले ले लेता, लेकिन उस ने चाहा कि तुम्हारी आज़माइश एक (को) दूसरे से (लड़वा कर) करे और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गये, उन के अमलों को हरगिज़ बर्बाद नहीं करेगा। (४) (बल्कि) उनको सीधे रास्ते पर चलाएगा और उनकी हालत दुरुस्त कर देगा। (५) और उन को बहिश्त में, जिस से उन को पहचनवा रखा है, दाख़िल करेगा। (६) ऐ अह्ले ईमान! अगर तुम ख़ुदा की मदद करोगे, तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम को साबित क़दम रखेगा। (७) और जो काफ़िर हैं, उन के लिए हलाकत है और वह उन के आमाल को बर्बाद कर देगा। (८) यह इसलिए कि ख़ुदा ने जो चीज़ नाज़िल फ़रमायी, उन्हों ने उस को नापसन्द किया, तो ख़ुदा ने उन के आमाल अकारथ कर दिए। (९) क्या उन्हों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ? ख़ुदा ने उन पर तबाही डाल दी और इसी तरह का (अज़ाब) उन काफ़िरों को होगा। (१०) यह इसलिए कि जो मोमिन हैं, उन का ख़ुदा कारसाज़ है और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (११)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को ख़ुदा बहिश्तों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल फ़रमाएगा। और जो काफ़िर हैं, वे फ़ायदे उठाते हैं और (इस तरह) खाते हैं, जैसे हैवान खाते हैं और उन का ठिकाना दोज़ख़ है। (१२) और बहुत-सी बस्तियां तुम्हारी बस्ती से जिस (के बाशिंदों) ने तुम्हें (वहां से) निकाल दिया, ज़ोर व ताक़त में कहीं बढ़ कर थीं। हमने उन का सत्यानाश कर दिया और उन का कोई मददगार न हुआ। (१३) भला जो शख़्स अपने परवरदिगार (की मेहरबानी) से खुले रास्ते पर (चल रहा) हो, वह उन की तरह (हो सकता) है जिन के बुरे आमाल उन्हें अच्छे कर के दिखाए जाएं और जो अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करें। (१४)

∴ मु. अ़ि मु. ता ख़. १३ ★रु. १/५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअि़दल्-मुत्तक़ू-न ط फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्-मा-इन् ग़ैरि आसिनिन् ج
व अन्हारुम्-मिल्-ल-बनिल्-लम् य-त-ग़य्यर् त़अ्-मुहू ج व अन्हारुम्-मिन् ख़म्रिल्-लज़्ज़
तिल्-लिश्शारिबीन ج व अन्हारुम्-मिन् अ-सलिम्-मुसफ़्फ़न् ط व लहुम् फ़ीहा मिन्
कुलिलस्स-मराति व मग़्फ़ि-रतुम्-मिर्रब्बिहिम् ط क-मन् हु-व ख़ालिदुन् फ़िन्नारि
व सूक़ू मा-अन् ह़मीमन् फ़-क़त्त-अ अम्आ-अहुम्
(१५) व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क ج ह़त्ता
इज़ा ख़-रजू मिन् अि़न्दि-क क़ालू लिल्लज़ी-न
ऊतुल्-अि़ल्-म माज़ा क़ा-ल आनिफ़न् قف उलाइ-
कल्लज़ी-न त़-ब-अ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् वत्त-
बअ़ू अह्वा-अहुम् (१६) वल्लज़ीनह-तदौ
ज़ा-दहुम् हुदंव्-व आताहुम् तक़्-वाहुम् (१७)
फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ-त़ अन् तअ्-ति-
यहुम् बग़-त-तन् ج फ़-क़द् जा-अ अश-रातुहा ج
फ़-अन्ना लहुम् इज़ा जा-अत्हुम् ज़िक्राहुम्
(१८) फ़अ़्-लम् अन्नहू ला इला-ह इल्लल्-
लाहु वस्तग़्फ़िर् लिज़म्बि-क व लिल्मुअ्मिनी-न

خمٓ ۲۶ — ٤٠٦ — محمد ۴۷

كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ
الْمُتَّقُوْنَ ۭ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّاۗءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ
وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ڬ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۭ وَلَهُمْ
فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَ
سُقُوْا مَاۗءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَاۗءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓي اِذَا
خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۣ اُولٰۗىِٕكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ
هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ
فَقَدْ جَاۗءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَاۗءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ
وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ
اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۭ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ
مَّعْرُوْفٌ ۣ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۣ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ
عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ
الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰي قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓي اَدْبَارِهِمْ

منزل ٦

वल्मुअ्मिनाति ط वल्लाहु यअ़्-लमु मु-त-क़ल्ल-बकुम् व मस्वाकुम् ★ (१९) व यक़ूलुल्-
लज़ी-न आमनू लौला नुज़्ज़िलत् सू-रतुन् ج फ़-इज़ा उन्ज़िलत् सूरतुम्-मुह़्-क-मतुंव्-व
ज़ुकि-र फ़ीहल्क़ितालु رأيت ल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुंय्यन्ज़ुरू-न इलै-क न-ज़-
रल्-मग़्शिय्यि अ़लैहि मिनल्मौति ط फ़-औला लहुम् ج (२०) त़ा-अ़तुंव्-व क़ौलुम्-मअ़्-
रूफ़ुन् قف फ़-इज़ा अ़-ज़-मल्-अम्रु قف फ़लौ स़-दक़ुल्ला-ह लका-न ख़ैरल्लहुम् ج (२१) फ़-हल्
अ़सैतुम् इन् त-वल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्ति़अ़ू अर्-हामकुम् (२२)
उलाइकल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़-असम्महुम् व अअ़्-मा अब्सा-रहुम् (२३) अ
फ़-ला य-त-दब्बरूनल् - क़ुर्आ-न अम् अ़ला क़ुलूबिन् अक़्-फ़ालुहा (२४)

★रु. २/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जन्नत जिस का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है, उस की ख़ूबी यह है कि इस में पानी की नहरें है, जो बू नहीं करेगा और दूध की नहरें हैं, जिस का मज़ा नहीं बदलेगा और शराब की नहरें हैं, जो पीने वालों के लिए (सरासर) लज़्ज़त है और शहदे मुसफ़्फ़ा की नहरें हैं (जो मिठास ही मिठास है) और (वहां) उन के लिए हर क़िस्म के मेवे हैं और उन के परवरदिगार की तरफ़ से मग़्फ़िरत है। (क्या ये परहेज़गार) उन की तरह (हो सकते) हैं जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और जिन को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, तो उन की अंतड़ियों को काट डालेगा। (१५) और उन में कुछ ऐसे भी हैं, जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाए रहते हैं, यहां तक कि (सब कुछ सुनते हैं, लेकिन) जब तुम्हारे पास से निकल कर चले जाते हैं, तो जिन लोगों को इल्म (दीन) दिया गया है, उन से कहते हैं कि (भला) अभी उन्हों ने क्या कहा था ? यही लोग हैं, जिन के दिलों पर ख़ुदा ने मुहर लगा रखी है और वे अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चल रहे हैं। (१६) और जो लोग हिदायत पाए हुए हैं, वह उन को और हिदायत बख़्शता है और परहेज़गारी देता है। (१७) अब तो ये लोग क़ियामत ही को देखते हैं कि यकायक उन पर आ वाक़ेअ हो, सो उस की निशानिया (वक़ूअ में आ चुकी हैं।) फिर जब उन पर आ नाज़िल होगी, उस वक़्त उन्हें नसीहत कहां (मुफ़ीद हो सकेगी ?) (१८) पस जान रखो कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और (और) मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए भी और ख़ुदा तुम लोगों के चलने-फिरने और ठहरने को जानता है। (१९)★

और मोमिन लोग कहते हैं कि (जिहाद की) कोई सूरः क्यों नाज़िल नहीं होती ? लेकिन जब कोई साफ़ मानी की सूरः नाज़िल हो और उस में जिहाद का बयान हो, तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) मर्ज़ है, तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखने लगें, जिस तरह किसी पर मौत की बेहोशी (छा) रही हो, सो उन के लिए खराबी है। (२०) (ख़ूब काम तो) फ़रमांबरदारी और पसंदीदा बात कहना (है.) फिर जब (जिहाद की) बात हो गयी, तो अगर ये लोग ख़ुदा से सच्चे रहना चाहते तो उन के लिए बहुत अच्छा होता। (२१) (ऐ मुनाफ़िक़ो !) तुम से अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो मुल्क में खराबी करने लगो और अपने रिश्तों को तोड़ डालो। (२२) यही लोग हैं, जिन पर ख़ुदा ने लानत की है और उन (के कानों) को बहरा और (उन की) आंखों को अंधा कर दिया है। (२३) भला ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते या

★रु. २/६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नल्लज़ीनर्तद्दू अ़ला अद्बारिहिम् मिम्बअ़्-दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हुदश्शैतानु
सव्व-ल लहुम्ꜗव अम्ला लहुम् (२५) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लिल्लज़ी-न
करिहू मा नज़्ज़-लल्लाहु सनुतीअुकुम् फ़ी बअ़्-ज़िल्-अम्रि वल्लाहु यअ़्-लमु इस्रा-
रहुम् (२६) फ़कै-फ़ इज़ा त-वफ़्फ़त्-हुमुल्-मलाइकतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व
अद्बारहुम् (२७) ज़ालि-क बिअन्नहुमुत्त-ब-अ़ू
मा अस्ख़-त़ल्ला-ह व करिहू रिज़्-वानहू फ़-
अह़्-ब-त़ अअ़्-मालहुम् ★ (२८) अम् ह़सिबल्-
लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् अल्-लंय्युख़्रि-
जल्लाहु अज़्-ग़ानहुम् (२९) व लौ नशाउ
ल-अरैनाकहुम् फ़-ल-अरफ़्-त-हुम् बिसीमाहुम्ꜗव
ल-तअ़्-रिफ़न्नहुम् फ़ी लह़्निल्-क़ौलिꜗ वल्लाहु
यअ़्-लमु अअ़्-मालकुम् (३०) व ल-नब्लुवन्-
नकुम् ह़त्ता नअ़्-ल-मल्-मुजाहिदी-न मिन्कुम्
वस्साबिरी-नꜗ व नब्लु-व अख़्बारकुम् (३१)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व स़द्दू अ़न् सबीलिल्लाहि
व शाक़्क़ुर्रसू-ल मिम्बअ़्-दि मा त-बय्य-न
लहुमुल्हुदाꜗ लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् ꜗ व सयुह़्बितु
अअ़्-मालहुम् (३२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर-रसू-ल व
ला तुब्ति़लू अअ़्-मालकुम् (३३) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व स़द्दू अ़न् सबीलिल्लाहि
सुम्-म मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़लंय्यग़्-फ़ि-रल्लाहु लहुम् (३४) फ़ला तहिनू व
तद्अ़ू इलस्सल्मि व अन्तुमुल्-अअ़्-लौ-न वल्लाहु म-अ़कुम् व लंय्यति-रकुम् अअ़्-
मालकुम् (३५) इन्नमल्-ह़यातुद्दुन्या लअिबुंव्-व लह्वुन्ꜗव इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू
युअ्तिकुम् उजूरकुम् व ला यस्अल्कुम् अम्वालकुम् (३६) इंय्यस्अल्कुमूहा फ़-युह़्-
फ़िकुम् तब्ख़लू व युख़्रिज् अज़्ग़ानकुम् (३७) हाअन्तुम् हाउलाइ तुद्औ़-न लितुन्-
फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़मिन्कुम् मंय्यब्ख़लु व मंय्यब्ख़ल् फ़-इन्नमा यब्ख़लु अ़न्
नफ़्सिही ꜗ वल्लाहुल्-ग़निय्यु व अन्तुमुल्-फ़ु-क़राउ व इन् त-त-वल्लौ यस्तब्दिल्
क़ौमन् ग़ैरकुम् ꜗ सुम्-म ला यकूनू अम्सालकुम् ★ (३८)

مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۭ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ
وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ
اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ
اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَاۗءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ
لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ
مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَاۗقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـــًٔا ۭ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا
وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ڰ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ڰ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ
اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ
اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْــَٔـلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ اِنْ يَّسْــَٔـلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَ
يُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ

★रु. ३/७ आ ९ ★रु. ४/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(उन के) दिलों पर ताले लग रहे हैं। (२४) जो लोग हिदायत की राह ज़ाहिर होने के बाद पीठ दे कर फिर गये, शैतान ने (यह काम) उन को सजा कर दिखाया और उन्हें लम्बी (उम्र का वायदा) दिया। (२५) यह इस लिए कि जो लोग ख़ुदा की उतारी हुई (किताब) से बेज़ार हैं, यह उन से कहते हैं कि कुछ कामों में हम तुम्हारी बात भी मानेंगे और ख़ुदा उन के छिपे मश्विरों को जानता है। (२६) तो उस वक़्त (उन का) कैसा (हाल) होगा, जब फ़रिश्ते उन की जान निकालेंगे (और) उन के मुंहों और पीठों पर मारते जाएंगे। (२७) यह इस लिए कि जिस चीज़ से ख़ुदा ना-ख़ुश है, ये उस के पीछे चले और उस की ख़ुश्नूदी को अच्छा न समझे, तो उस ने भी उन के अमलों को बर्बाद कर दिया। (२८)★

क्या वे लोग जिन के दिलों में बीमारी है, यह ख़्याल किए हुए हैं कि ख़ुदा उन के कीनों को ज़ाहिर नहीं करेगा? (२९) और अगर हम चाहते तो वे लोग तुम को दिखा भी देते और तुम उन को उन के चेहरों ही से पहचान लेते और तुम उन्हें (उन के) बात-चीत के अन्दाज़ ही से पहचान लोगे और ख़ुदा तुम्हारे आमाल को जानता है। (३०) और हम तुम लोगों को आज़माएंगे, ताकि जो तुम में लड़ाई करने वाले और साबित क़दम रहने वाले हैं, उन को मालूम करे और तुम्हारे हालात जांच लें। (३१) जिन लोगों को सीधा रास्ता मालूम हो गया (और) फिर उन्होंने कुफ़्र किया और (लोगों को) ख़ुदा की राह से रोका और पैग़म्बर की मुख़ालफ़त की, वे ख़ुदा का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेंगे और ख़ुदा उन का सब किया-कराया अकारथ कर देगा। (३२) मोमिनो! ख़ुदा का इर्शाद मानो और पैग़म्बर की फ़रमांबरदारी करो और अपने अमलों को बर्बाद न होने दो। (३३) जो लोग काफ़िर हुए और ख़ुदा के रास्ते से रोकते रहे, फिर काफ़िर ही मर गये, ख़ुदा उन को हरगिज नहीं बख़्शेगा। (३४) तो तुम हिम्मत न हारो और (दुश्मन को) सुलह की तरफ़ न बुलाओ और तुम तो ग़ालिब हो और ख़ुदा तुम्हारे साथ है। वह हरगिज़ तुम्हारे आमाल को कम (और गुम) नहीं करेगा। (३५) दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे, तो वह तुम को तुम्हारा बदला देगा और तुम से तुम्हारा माल तलब नहीं करेगा। (३६) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम्हें तंग करे तो तुम बुख़्ल (कंजूसी) करने लगो और वह (बुख़्ल) तुम्हारी बद-नीयती ज़ाहिर कर के रहे। (३७) देखो, तुम वे लोग हो कि ख़ुदा की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाए जाते हो तो तुम में ऐसे शख़्स भी हैं, जो बुख़्ल करने लगते हैं और जो बुख़्ल करता है अपने आप से बुख़्ल करता है और ख़ुदा बे-नियाज़ है और तुम मुहताज। और अगर तुम मुंह फेरोगे, तो वह तुम्हारी जगह और लोगों को ले आएगा और वे तुम्हारी तरह के नहीं होंगे। (३८)★

★रु. ३/७ आ ९ ★रु. ४/८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४८ सूरतुल-फ़त्हि १११

(मदनी) इस सूर: में अरबी के २५५५ अक्षर, ५६८ शब्द, २६ आयतें और ४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इन्ना फ़-तह़्ना ल-क फ़त्ह़म्-मुबीनल-لا (१) -लि-यग़्फ़ि-र ल-कल्लाहु मा त-क़द्-द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख़्ख़-र व युतिम्-म निअ्-म-तहू अलै-क व यह्दि-य-क सिरातम्-मुस्तक़ीमंव-لا (२) -व यन्सु-र-कल्लाहु नस्रन् अज़ीज़ा (३) हुवल्लज़ी अन्ज़-लस्सकी-न-त फ़ी क़ुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज़्दादू ईमानम्-म-अ ईमानि-हिम् ط व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा لا (४) लियुद्ख़ि-लल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व युकफ़्फ़ि-र अन्हुम् सय्यिआतिहिम् ط व का-न ज़ालि-क अिन्दल्लाहि फ़ौज़न् अ़ज़ीमंव-لا (५) -व युअ़ज़्ज़ि-बल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्मुश्रिकी-न वल्-मुश्रिकातिज़्-ज़ान्नी-न बिल्-लाहि ज़न्नस्सौइ ط अ़लैहिम् दा-इरतुस्सौइ ج व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् व ल-अ-नहुम् व अ-अद्-द लहुम् ज-हन्न-म ط व सा-अत् मसीरा (६) व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् ह़कीमा (७) इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव् -व मुबश्शिरंव -व नज़ीरल-لا (८) -लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तुअ़ज़्ज़िरूहु व तुवक़्क़िरूहु ط व तुसब्बिहूहु बुक-र-तंव-व असीला (९) इन्नल्लज़ी-न युबायिअू-न-क इन्नमा युबायिअूनल्ला-ह ط यदुल्लाहि फ़ौ-क़ ऐदी-हिम् ج फ़-मन् न-क-स फ़-इन्नमा यन्कुसु अ़ला नफ़्सिही ج व मन् औफ़ा बिमा आ़ह-द अ़लैहुल्ला-ह फ़-स-युअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा ★(१०)

وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ۝٣٨
سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۝١ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ
وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝٢ وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا
عَزِيْزًا ۝٣ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا
اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ۝٤ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا
عَظِيْمًا ۝٥ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ
الظَّاۤنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۗ عَلَيْهِمْ دَاۤئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝٦ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝٧ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا
وَّنَذِيْرًا ۝٨ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۗ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً
وَّاَصِيْلًا ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۗ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ
فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ
فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١٠ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ

★रु. १/६ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

४८ सूरः फ़त्ह् १११

सूरः फ़त्ह् मदनी है, इस में २६ आयतें और चार रुकूअ हैं ।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को फ़त्ह् दी, फ़त्ह् भी साफ़ और खुली हुई ।[1] (१) ताकि ख़ुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बख़्श दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदे और तुम को सीधे रास्ते चलाए ।(२) और ख़ुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे । (३) वही तो है, जिसने मोमिनों के दिलों पर तसल्ली फ़रमायी, ताकि उनके ईमान के साथ और ईमान बढ़े और आसमानों और ज़मीन के लश्कर (सब) ख़ुदा ही के हैं और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है । (४) (यह) इस लिए कि वह मोमिन मर्दों और औरतों को बहिश्तों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करे । वे उस में हमेशा रहेंगे और उन से उन के गुनाहों को दूर कर दे और यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ी कामियाबी है । (५) और (इस लिए कि) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, जो ख़ुदा के हक़ में बुरे-बुरे ख़्याल रखते हैं, अज़ाब दे । उन्हीं पर बुरे हादसे वाक़ेअ हों और ख़ुदा उन पर ग़ुस्से हुआ और उन पर लानत की और उन के लिए दोज़ख़ तैयार की और वह बुरी जगह है । (६) और आसमानों और ज़मीन के लश्कर ख़ुदा ही के हैं और ख़ुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है । (७) (और) हम ने (ऐ मुहम्मद !) तुम को हक़ ज़ाहिर करने वाला और ख़ुशख़बरी सुनने वाला और ख़ौफ़ दिलाने वाला (बना कर) भेजा है । (८) ताकि (मुसलमानो !) तुम लोग ख़ुदा पर और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस की मदद करो और उस को बुज़ुर्ग समझो और सुब्ह् व शाम उस की तस्बीह करते रहो । (९) जो लोग तुम से बैअत करते हैं, वे ख़ुदा से बैअत करते हैं । ख़ुदा का हाथ उन के हाथों पर है । फिर जो अह्द को तोड़े, तो अह्द तोड़ने का नुक़्सान उसी को है और जो उस बात को, जिस का उस ने ख़ुदा से अह्द किया है, पूरा करे, तो वह उसे बहुत जल्द बड़ा बदला देगा । (१०) ★

---

१. फ़त्ह् के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि इस से क्या मुराद है । अक्सर का क़ौल यह है कि इस से मुराद हुदैबिया का समझौता है, क्योंकि कभी समझौते का नाम जीत भी रख लेते हैं । हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि तुम तो मक्के की फ़त्ह् को फ़त्ह् ख़्याल करते हो और हम हुदैबिया के समझौते को फ़त्ह् समझते हैं । बुख़ारी में हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तुम लोग मक्का की फ़त्ह् को फ़त्ह् गिनते हो और हम बैअ-तुर्रिज़्वान को, जो हुदैबिया के दिन हुई, फ़त्ह् समझते हैं । इस समझौते के वाक़िआत इस तरह हैं कि जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सन् ०६ हि० में हुदैबिया जाने से पहले ख़्वाब देखा कि गोया आप ने और आप के अस्हाब ने सर मुंडवाया और बाल कटवाए । यह ख़्वाब आप ने अस्हाब को सुनाया तो यह ख़्याल कर के ख़ुश हुए कि इसी साल मक्के में दाख़िल होंगे, तो आप बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरे की नीयत से मक्के को रवाना हुए । जब उस्फ़ान में पहुंचे तो आप को बशीर बिन सुफ़ियान ने ख़बर दी कि आप की रवानगी का हाल सुन कर कुरैश बड़ी फ़ौज के साथ निकले हैं और उन्हों ने अह्द किया है कि ऐसा हरगिज़ न होने पाए कि आप उन पर ग़ालिब हो कर मक्के में दाख़िल हों और ख़ालिद बिन वलीद भी उन के सवारों में है जो कुराउल ग़मीम की तरफ़ आगे भेजा गया है तो आप ने फ़रमाया कि [illegible] ... कर के कामियाबी और

(शेष पृष्ठ ८१६ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

स-यक़ूलु ल-कल्-मुख़ल्लफ़ू-न मिनल्-अअ्-राबि श-ग़-लत्ना अम्-वालुना व अह्लूना फ़स्तग़फ़िर् लना यक़ूलू-न बि-अल्सिनतिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम् क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा-द बिकुम् नफ़्-अन् बल् कानल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (११) बल् ज़-नन्तुम् अल्लंय्यन्क़लिबर्-रसूलु वल्-मुअ्मिनू-न इला अह्लीहिम् अ-ब-दंव्-व ज़ुय्यि-न ज़ालि-क फ़ी क़ुलूबिकुम् व ज़-नन्तुम् ज़न्नस्सौइ व कुन्तुम् क़ौमम्-बूरा (१२) व मल्लम् युअ्मिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इन्ना अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न सओ़रा (१३) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि यग़्फ़िरु लिमंय्यशाउ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (१४) स-यक़ूलुल्-मुख़ल्लफ़ू-न इज़न्त़-लक़्तुम् इला मग़ानि-म लितअ्ख़ुज़ूहा ज़रूना नत्तबिअ्-कुम् युरीदू-न अंय्यु-बद्-दि-लू कलामल्लाहि क़ुल्लन् तत्तबिअूना कज़ालिकुम् क़ालल्लाहु मिन् क़ब्लु फ़-स-यक़ूलू-न बल् तह्सु-दूनना बल् कानू ला यफ़्क़हू-न इल्ला क़लीला (१५) क़ुल् लिल्-मुख़ल्लफ़ी-न मिनल्-अअ्-राबि स-तुद्औ़-न इला क़ौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुक़ातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न फ़-इन् तुतीअू युअ्तिकुमुल्लाहु अज-रन् ह-स-नन् व इन् त-त-वल्लौ कमा त-वल्लैतुम् मिन् क़ब्लु यु-अ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (१६) लै-स अ़-लल्-अअ्-मा ह़-र-जुंव्-व ला अ़-लल्-अअ्-रजि ह़-र-जुंव्-व ला अ़-लल्मरीज़ि ह़-रजुन् व मंय्युति-अ़िल्ला-ह व रसूलहू युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मंय्य-त-वल्-ल युअ़ज़्ज़िब्हु अ़ज़ाबन् अलीमा ★ ● (१७) ल-क़द् रज़ियल्लाहु अ़निल्-मुअ्मिनी-न इज़् युबायिअू-न-क तह़्-तश्श-ज-रति फ़-अ़लि-म मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़-अन्ज़-लस्-सकी-न-त़ अ़लैहिम् व असाबहुम् फ़त्-हन् क़रीबा (१८)

الفتح ٤٨ ٥٠٩ حٰمٓ ٢٦

شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ
اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۭ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ⑪ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ
لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ښ وَكُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ⑫ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ⑬ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ⑭ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا
ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ
قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ⑮ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ
بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا
حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ⑯
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۭ
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَ
مَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ⑰ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ
يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो गंवार पीछे रह गये, वे तुम से कहेंगे कि हमको हमारे माल और बाल-बच्चों ने रोके रखा। आप हमारे लिए (ख़ुदा से) बख़्शिश मांगें। ये लोग अपनी ज़ुबान से वह बात कहते हैं, जो उन के दिल में नहीं है। कह दो कि अगर ख़ुदा तुम (लोगों) को नुक़्सान पहुंचाना चाहे या तुम्हें फ़ायदा पहुंचाने का इरादा फ़रमाए, तो कौन है जो उस के सामने तुम्हारे लिए किसी बात का कुछ अख़्तियार रखे? (कोई नहीं,) बल्कि जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे जानता है। (११) बात यह है कि तुम लोग यह समझ बैठे थे कि पैग़म्बर और मोमिन अपने बाल-बच्चों में कभी लौट कर आने ही के नहीं और यही बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मालूम हुई और (इसी वजह से) तुम ने बुरे-बुरे ख़्याल किए और (आख़िरकार) तुम हलाकत में पड़ गए। (१२) और जो शख़्स ख़ुदा पर और उस के पैग़म्बर पर ईमान न लाए, तो हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिए आग तैयार कर रखी है। (१३) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही की है। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे सज़ा दे और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४) जब तुम लोग ग़नीमत लेने चलोगे तो जो लोग पीछे रह गए थे, वे कहेंगे हमें भी इजाज़त दीजिए कि आप के साथ चलें। ये चाहते हैं कि ख़ुदा के क़ौल को बदल दें। कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। इसी तरह ख़ुदा ने पहले से फ़रमा दिया है। फिर कहेंगे, (नहीं) तुम तो हम से हसद रखते हो। बात यह है कि ये लोग समझते ही नहीं, मगर बहुत कम।[1] (१५) जो गंवार पीछे रह गए थे, उन से कह दो कि तुम जल्द एक सख़्त लड़ाकू क़ौम (से लड़ाई के) लिए बुलाए जाओगे। उन से तुम (या तो) जंग करते रहोगे या वे इस्लाम ले आएंगे, और अगर तुम हुक्म मानोगे तो ख़ुदा तुम को अच्छा बदला देगा और अगर मुंह फेर लोगे जैसे पहली बार फेरा था, तो वह तुम को बुरी तक्लीफ़ की सज़ा देगा। (१६) न तो अंधे पर गुनाह है (कि लड़ाई के सफ़र से पीछे रह जाए) और न लंगड़े पर गुनाह है और न बीमार पर गुनाह है और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बर के फ़रमान पर चलेगा, ख़ुदा उस को बहिश्त में दाख़िल करेगा जिनके तले नहरें बह रही हैं और जो मुंह मोड़ेगा, उसे बुरे दुख की सज़ा देगा★(१७) ●

(ऐ पैग़म्बर!) जब मोमिन तुम से पेड़ के नीचे बैअत कर रहे थे, तो बहुत ख़ुश हुआ और जो सच्चाई और ख़ुलूस उन के दिलों में था, वह उस ने मालूम कर लिया तो उन पर तसल्ली नाज़िल

---

१. जब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत के छठे साल हुदैबिया से लौट कर मदीना तशरीफ़ लाए, तो ख़ुदा ने आप को फ़त्हे ख़ैबर का वायदा दिया और वहां की ग़नीमतों के लिए उन्हीं लोगों को ख़ास फ़रमाया जो हुदैबिया में आप के साथ थे, जब आप ख़ैबर की तरफ़ तश्रीफ़ ले चले, तो जो लोग हुदैबिया में नहीं गये थे, उन्हों ने ग़नीमत के लालच से दर्ख़्वास्त की कि हम को भी साथ ले चलिए। जवाब मिला कि तुम हमारे साथ चलो ही मत, क्योंकि ख़ैबर की ग़नीमत में तुम लोगों का कुछ हिस्सा नहीं और ख़ुदा का यही इर्शाद है। तो वे लोग कहने लगे कि ख़ुदा ने तो ऐसा नहीं कहा होगा। यों कहो कि तुम को हम से हसद है और सारी हसद यह कि तुम हमें ग़नीमत में शरीक नहीं करना चाहते। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ये अहमक़ लोग हैं, उन को इन बातों के समझने की अक़्ल ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मग़ानि-म कसी-र-तंय्यअ्-ख़ुजूनहा॰व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् ह़कीमा (१९) व-अ़-
दकुमुल्लाहु मग़ानि-म कसी-र-तन् तअ्-ख़ुज़ूनहा फ़-अ़ज्ज-ल लकुम् हाज़िही व कफ़्-फ़
ऐदि-यन्नासि अ़न्कुम्॰व लि-तकू-न आयतल्-लिल्मुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्-
मुस्तक़ीमा॰ (२०) व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा क़द् अह़ातल्लाहु बिहा॰व
कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (२१)
व लौ क़ा-त-लकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-वल्लवुल्-
अद्बा-र सुम्-म ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला
नसीरा (२२) सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत्
मिन् क़ब्लु॰व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि
तब्दीला (२३) व हुवल्लज़ी कफ़्-फ़ ऐदि-
यहुम् अ़न्कुम् व ऐदि-यकुम् अ़न्हुम् बि-बत़्नि
मक्क-त मिम्बअ्-दि अन् अज़्-फ़-रकुम् अ़लैहिम्॰
व कानल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीरा (२४)
हुमुल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दूकुम् अ़निल्-
मस्जिदिल्-ह़रामि वल-हद्-य मअ्-कूफ़न् अंय्यब्-
लु-ग़ महिल्लहू॰व लौला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व
निसाउम्-मुअ्मिनातुल्-लम् तअ्-लमूहुम् अन् त-त-ऊहुम् फ़-तुसीबकुम् मिन्हुम् म-अ़र्रतुम्-
बिग़ैरि अ़िल्मिन्॰लि-युद्ख़िलल्लाहु फ़ी रह़्मतिही मंय्यशाउ॰लौ त-ज़य्यलू ल-अ़ज़्ज़ब्-
नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (२५) इज़् ज-अ़-लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी
क़ुलूबिहिमुल्-ह़मिय्य-त ह़मिय्य-तल्-जाहिलिय्यति फ़-अन्ज़-लल्लाहु सकी-न-तहू अ़ला
रसूलिही व अ़-लल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज़-महुम् कलि-म-तत्तक़्वा व कानू अ-ह़क़्-क़ बिहा
व अह्-लहा॰व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा ★ (२६) ल-क़द् स-द-क़ल्लाहु
रसूलहुर्रुअ्-या बिल्ह़क़्क़ि॰ ल - तद्ख़ुलुन्नल् - मस्जिदल् - ह़रा-म इन्शाअल्लाहु
आमिनी-न॰ मुह़ल्लिक़ी-न रुऊसकुम् व मुक़स्सिरी-न॰ ला तख़ाफ़ू-न॰फ़-अ़लि-म
मा लम् तअ्-लमू फ़-ज-अ़-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़त्-ह़न् क़रीबा (२७)

الفتح ٤٨ ٥١٠ حٰمٓ ٢٦

وَّاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا
حَكِيْمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ
وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ
عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ
وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ

منزل ٦

★रु. ३/११ आ ९

फ़रमाई और उन्हें जल्द फ़त्ह इनायत की।[1] (१८) और बहुत सी ग़नीमतें, जो उन्हों ने हासिल कीं और ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला हो। (१६) ख़ुदा ने तुम से बहुत सी ग़नीमतों का वायदा फ़रमाया है कि तुम उन को हासिल करोगे, सो उस ने ग़नीमत की तुम्हारे लिए जल्दी फ़रमायी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए। ग़रज़ यह थी कि यह मोमिनों के लिए (ख़ुदा की) क़ुदरत का नमूना है और वह तुम को सीधे रास्ते पर चलाए। (२०) और और (ग़नीमतें दीं), जिन पर तुम क़ुदरत नहीं रखते थे (और) वह ख़ुदा ही की क़ुदरत में थीं और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२१) और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो पीठ फेर कर भाग जाते, फिर किसी को दोस्त न पाते, और न मददगार। (२२) (यही) ख़ुदा की आदत है जो पहले से चली आती है और तुम ख़ुदा की आदत कभी बदलती न देखोगे। (२३) और वही तो है, जिस ने तुम को उन (काफ़िरों) पर फ़त्हयाब करने के बाद मक्का की सरहद में उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देख रहा है। (२४) ये वही लोग है, जिन्हों ने कुफ़्र किया और मस्जिदे हराम से रोक दिया और क़ुर्बानियों को भी कि अपनी जगह पहुंचने से रुकी रहीं। और अगर ऐसे मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं, जिन को तुम जानते न थे कि अगर तुम उन को पा-माल कर देते तो तुम को उन की तरफ़ से बे-ख़बरी में नुक़्सान पहुंच जाता (तो भी तुम्हारे हाथ फ़त्ह हो जाती मगर देर) इस लिए (हुई) कि ख़ुदा अपनी रहमत में जिस को चाहे दाख़िल कर ले और अगर (दोनों फ़रीक़) अलग-अलग हो जाते, तो जो उन में काफ़िर थे, उन को हम दुख देने वाला अज़ाब देते।[2] (२५) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की और ज़िद भी जाहिलियत की तो ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमायी और उन को परहेज़गारी की बात पर क़ायम रखा और वे इसी के हक़दार और अह्ल थे और ख़ुदा हर चीज़ से ख़बरदार है। (२६) ★

बेशक ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को सच्चा (और) सही ख़्वाब दिखाया कि तुम, ख़ुदा ने चाहा तो मस्जिदे हराम में अपने सर मुंडवा कर और अपने बाल कतरवा कर अम्न व अमान से दाख़िल होंगे और किसी तरह का ख़ौफ़ न करोगे। जो बात तुम नहीं जानते थे, उस को मालूम थी, सो उस ने

---

१. चूंकि इस बैअत की वजह से ख़ुदा मोमिनों से ख़ुश हुआ था, इस लिए इस को बैअतुर्रिज़्वान कहते हैं। यह बैअत इस बात पर ली गयी थी कि मुसलमान क़ुरैश से लड़ाई करेंगे और मरते दम तक नहीं भागेंगे, इसके बदले में ख़ुदा ने मोमिनों के दिलों में तसल्ली पैदा की और जल्द ख़ैबर की फ़त्ह नसीब की जिस में बहुत-सी ग़नीमतें हाथ आयीं। बैअत के वक़्त जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अक्सर लोगों के क़ौल के मुताबिक़ केकर के पेड़ और कुछ के मुताबिक़ बेरी के तले तश्रीफ़ रखते थे। चूंकि लोग बैअत की वजह से इस पेड़ की इज़्ज़त के लिए उसके पास आने लगे थे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने इस ख़्याल से कि इज़्ज़त इबादत की हद तक न पहुंच जाए, उस को कटवा डाला।

२. इस आयत में मक्का फ़त्ह होने में देर की वजह बयान फ़रमायी गयी, वह यह कि मक्के में इस तरह की औरतें और मर्द मुसलमान भी थे कि जान के अंदेशे से अपना ईमान कुफ़्फ़ार से छिपाए रखते थे और ख़ुदा के सिवा इन का हाल किसी को मालूम न था, तो अगर ख़ुदा मुसलमानों को मक्के पर चढ़ाई का हुक्म दे देता तो जो सुलूक काफ़िरों के साथ होता, वही अनजाने में भी उन के साथ होता और ख़ुदा को यह मंज़ूर न था और अगर ये लोग इन में न होते तो मक्का की फ़त्ह में देर न होती।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-ह़क़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़-लद्-
दीनि कुल्लिही ط व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा ط (२८) मुहम्मदुर-रसूलुल्लाहि ط वल्लज़ी-न
म-अ़हू अशिद्दाउ अ़-लल्-कुफ़्फ़ारि रु-ह़-माउ बैनहुम् तराहुम् रुक्क - अ़न्
सुज्ज-दंय्यब्तग़ू-न फ़ज़्-लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् ز सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम्
मिन् अ-सरिस्सुजूदि ط ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौ-
राति صلے व म-सलुहुम् फ़िल्इन्जीलि قف क-ज़र्अ़िन्
अख़्-र-ज शत्-अहू फ़आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्-
तवा अ़ला सूक़िही युअ्-जिबुज़्-ज़ुर-रा-अ़ लि-
यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र ط व-अ़-दल्लाहुल्-लज़ी-न
आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन्हुम्
मग़्-फ़ि-र-तंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा ★ (२९)

الحجرات ٤٩ ۔۔۔ ٨١١ ۔۔۔ حٰمٓ ٢٦

لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ
الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ
كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى
الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا ۫ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي
التَّوْرٰىةِ ۛۖ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۛ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ
تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ
عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ
الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ

४९ सूरतुल हुजुराति १०६

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १५७३ अक्षर,
३५० शब्द, १८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुक़द्दिमू
बै-न य-दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तक़ुल्ला-ह ط
इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तर-
फ़अू अस्-वातकुम् फ़ौ-क़ सौतिन्नबिय्यि व ला तज्-हरू लहू बिल्क़ौलि क-जह्रि
बअ्-ज़िकुम् लि-बअ्-ज़िन् अन् तह्-ब-त अअ्-मालुकुम् व अन्तुम् ला तश्अुरून (२)
इन्नल्लज़ी-न यग़ुज़्ज़ू-न अस्वातहुम् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि उलाइ-कल्-लज़ीनम-त-ह़-नल्लाहु
क़ुलूबहुम् लित्तक़्वा ط लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव्-व अज्रुन् अ़ज़ीम (३) इन्नल्लज़ी-न युना-
दून-क मिंव्वराइल्-हुजुराति अक्सरुहुम् ला यअ्-क़िलून (४) व लौ अन्नहुम् स-बरू
हत्ता तख़रु-ज इलैहिम् लका-न ख़ैरल्लहुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (५)

★रु० ४/१२ आ ३ ∴ मु० अ़ि मु० ता क़० १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उस से पहले ही जल्द फ़त्ह करा दी।[1] (२७) वही तो है, जिस ने अपने पैग़म्बर को हिदायत (की किताब) और सच्चा दीन दे कर भेजा, ताकि उस को तमाम दीनों पर ग़ालिब करे और हक़ ज़ाहिर करने के लिए ख़ुदा ही काफ़ी है। (२८) मुहम्मद ख़ुदा के पैग़म्बर हैं, और जो लोग उन के साथ हैं, वे काफ़िरों के हक़ में तो सख़्त हैं और आपस में रहम दिल। (ऐ देखने वाले !) तू उन को देखता है कि (ख़ुदा के आगे) झुके हुए, सर सज्दे में रखे हुए हैं और ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी ख़ुश्नूदी तलब कर रहे हैं। सज्दों (की ज़्यादती) के असर से उन की पेशानियों पर निशान पड़े हुए हैं। उन की यही सिफ़तें तौरात में (दर्ज) हैं और यही सिफ़तें इंजील में हैं। ∴ (वे) गोया एक खेती हैं, जिस ने (पहले ज़मीन से) अपनी सूई निकाली, फिर उस को मज़बूत किया, फिर मोटी हुई और फिर अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गयी और लगी खेती वालों को ख़ुश करने ताकि काफ़िरों का जी जलाए। जो लोग उन में से ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन से ख़ुदा ने गुनाहों की बख़्शिश और बड़े अज्र का वायदा किया है। (२९)★

४९ सूरः हुजुरात १०६

सूरः हुजुरात मदनी है और इस में अठारह आयत और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो ! (किसी बात के जवाब में) ख़ुदा और उस के रसूल से पहले न बोल उठा करो और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा सुनता-जानता है। (१) ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊंची न करो और जिस तरह आपस में एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो (उस तरह) उनके सामने ज़ोर से न बोला करो। (ऐसा न हो) कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुम को ख़बर भी न हो। (२) जो लोग ख़ुदा के पैग़म्बर के सामने दबी आवाज़ से बोलते हैं, ख़ुदा ने उन के दिल तक़्वे के लिए आज़मा लिए हैं। उन के लिए बख़्शिश और बड़ा बदला है। (३) जो लोग तुम को हुजरों के बाहर से आवाज़ देते हैं, उन में अक्सर बे-अक़्ल हैं। (४) और अगर वे सब्र किए रहते, यहां तक कि तुम ख़ुद निकल कर उन के पास आते, तो यह उन के लिए बेहतर था और ख़ुदा तो

१. जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ीक़ादा सन् ०६ हि० में हुदैबिया से मदीने को वापस तश्रीफ़ ले गये। ज़िलहिज्जा और मुहर्रम वहां ठहरे। सफ़र के महीने में ख़ैबर पर चढ़ाई कर के उस को फ़त्ह किया और फिर मदीने को लौट गये। ज़ीक़ादा ०७ हि० आप और हुदैबिया वाले उमरा करने के लिए मक्का को रवाना हुए तो आप ने ज़ुल हुलैफ़ा से एहराम बांधा और क़ुर्बानियों के जानवरों को साथ लिया। ग़रज़ आप मक्के में बिला किसी डर के दाख़िल हुए और जो बातें आप ने ख़्वाब में देखी थीं, वे इस साल पूरी हुयीं। इसी ख़्वाब के सच होने का इस आयत में ज़िक्र है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् जा-अकुम् फ़ासिक़ुम्-बि-न-बइन् फ़-त-बय्यनू अन्
तुसीबू क़ौमम्-बिजहालतिन् फ़तुस्बिहू अला मा फ़-अल्तुम् नादिमीन (६) वअ्-लमू
अन्-न फ़ीकुम् रसूलल्लाहि ط लौ युतीअुकुम् फ़ी कसीरिम्-मिनल्-अम्रि ल-अनित्तुम्
व लाकिन्नल्ला-ह हब्ब-ब इलैकुमुल्-ईमा-न व ज़य्य-नहू फ़ी क़ुलूबिकुम् व कर्र-ह
इलै-कुमुल्-कुफ़्-र वल्फ़ुसू-क वल् - अिस्या-न ط
उलाइ-क हुमुर-राशिदून لا (७) फ़ज़्-लम्-
मिनल्लाहि व निअ्-म-तन् ط वल्लाहु अलीमुन्
हकीम (८) व इन् ता - इफ़तानि
मिनल् - मुअ्मिनीनक़्-त - तलू फ़ - अस्लिहू
बैनहुमा ج फ़-इम् - ब-ग़त् इह्दाहुमा
अ-लल्-उख़्रा फ़क़ातिलुल्लती तबग़ी हत्ता
तफ़ी-अ इला अम्रिल्लाहि ج फ़-इन्
फ़ा-अत् फ़-अस्लिहू बैनहुमा बिल्अद्लि व
अक़्सितू ط इन्नल्ला - ह युहिब्बुल् -
मुक़्सितीन (९) इन्नमल् - मुअ्मिनू-न
इख़्वतुन् फ़-अस्लिहू बै-न अ-ख़वैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह

الحجرٰت ٤٩ ٨١٢ حٰمٓ ٢٦

لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ
فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ
نٰدِمِيْنَ ۝٦ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۗ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ
مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الرّٰشِدُوْنَ ۝٧ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨ وَ
اِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ
اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ
فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝١٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ
عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ
خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۗ بِئْسَ
الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١١
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ
وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۗ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ
لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝١٢

منزل ٦

ल-अल्लकुम् तुर्-हमून ★● (१०) या अय्युहल्लज़ी--न आमनू ला यस्ख़र्
क़ौमुम्-मिन् क़ौमिन् असा अंय्यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन्
असा अंय्यकुन् - न ख़ैरम्मिन्हुन - न ج व ला तल्मिज़ू अन्फ़ुसकुम् व ला
तनाबज़ू बिल्-अल्क़ाबि ط बिअ्-स-लिस्मुल् - फ़ुसूक़ु बअ्-दल्-ईमानि ج व मल्लम्
यतुब् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (११) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज्तनिबू
कसीरम्-मिनज़्ज़न्नि ز इन्-न बअ्-ज़ज़्ज़न्नि इस्मुंव्-व ला त-जस्ससू व ला
यग़्-तब् बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़न् ط अ-युहिब्बु अ-हदुकुम् अंय्यअ्-कु-ल लह्-म अख़ीहि
मै-तन् फ़-करिह - तुमूहु ط वत्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला - ह तव्वाबुर्रहीम (१२)

★रु. १/१३ आ १० ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) मोमिनो! अगर कोई बद-किरदार तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए, तो ख़ूब तह्क़ीक़ कर लिया करो, (शायद) कि किसी क़ौम को ना-दानी से नुक़्सान पहुंचा दो, फिर तुम को अपने किए पर शर्मिन्दा होना पड़े। (६) और जान रखो कि तुम में ख़ुदा के पैग़म्बर हैं। अगर बहुत-सी बातों में वह तुम्हारा कहा मान लिया करें तो तुम मुश्किल में पड़ जाओ, लेकिन ख़ुदा ने तुम को ईमान अज़ीज़ बना दिया और उस को तुम्हारे दिलों में सजा दिया और कुफ़्र और गुनाह और ना-फ़रमानी से तुम को बेज़ार कर दिया, यही लोग हिदायत के रास्ते पर हैं। (७) (यानी) ख़ुदा के फ़ज़्ल और एहसान से और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (८) और अगर मोमिनों में से कोई दो फ़रीक़ आपस में लड़ पड़ें, तो उन में सुलह करा दो। और अगर एक फ़रीक़ दूसरे पर ज़्यादती करे तो ज़्यादती करने वाले से लड़ो, यहां तक कि वह ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ रुजूअ लाए। पस जब वह रुजूअ लाए तो दोनों फ़रीक़ में बराबरी के साथ सुलह करा दो और इंसाफ़ से काम लो कि ख़ुदा इंसाफ़ करने वालों को पसन्द करता है। (९) मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाइयों में सुलह करा दिया करो। और ख़ुदा से डरते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (१०) ★●

मोमिनो! कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाये। मुम्किन है कि वे लोग उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक़ उड़ाएं) मुम्किन है कि वे उन से अच्छी हों और अपने (मोमिन भाई) को ऐब न लगाओ और न एक-दूसरे का बुरा नाम रखो। ईमान लाने के बाद बुरा नाम (रखना) गुनाह है।[1] और जो तौबा न करें, वे ज़ालिम हैं! (११) ऐ ईमान वालो! बहुत गुमान करने से बचो कि कुछ गुमान गुनाह हैं और एक-दूसरे के हाल की टोह में न रहा करो और न कोई किसी की ग़ीबत करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये? इस से तो तुम ज़रूर नफ़रत करोगे, (तो ग़ीबत न करो) और ख़ुदा का डर रखो।

---

१. यानी जब कोई ईमान ले आए, तो उस को यहूदी या ईसाई या मजूसी वग़ैरह कह कर नहीं पुकारना चाहिए ऐसे नामों से पुकारना गुनाह है। अगर कोई यहूदी था तो इस्लाम लाने से पहले था। इसी तरह ईसाई और मजूसी वग़ैरह, ये नाम इस्लाम से पहले थे, लेकिन इस्लाम लाने के बाद न यहूदी यहूदी रहा, न ईसाई ईसाई, न मजूसी मजूसी, इन जाहिलियत के नामों से मुसलमानों को क्यों पुकारा जाए और उन को रंज क्यों पहुंचाया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद फ़ासिक़ कहना बुरा नाम (रखना) है और बुरा नाम रखना बुरा है। जो गुनाह किसी से इस्लाम लाने से पहले हुआ हो, अब जब कि उस से तौबा कर लिया है, तो वह उस से मंसूब क्यों किया जाए और उसे बुरे नाम से क्यों ताना दिया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद नाम रखना यानी (फ़िस्क़ से मंसूब करना) बुरा है। बहरहाल ऐब लगाने, ताने देने, बुरा नाम रखने, बुरे लक़ब से पुकारने से मना किया गया है।

★रु. १/१३ आ १० ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़्नाकुम् मिन् ज़-करिंव-व उन्सा व ज-अ़ल्नाकुम् शुअूबंव्-व
क़बाइ-ल लि-त-आरफ़ूط इन्-न अक-र-मकुम् अ़िन्दल्लाहि अत्-क़ाकुम्ط इन्नल्ला-ह
अ़लीमुन् ख़बीर (१३) क़ालतिल्-अअ्-राबु आमन्नाط क़ुल् लम् तुअ्मिनू व लाकिन्
क़ूलू अस्-लम्ना व लम्मा यद्ख़ुलिल्-ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम्ط व इन् तुतीअुल्ला-ह व
रसूलहू ला यलित्कुम् मिन् अअ्-मालिकुम्
शैअन्ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१४) इन्न-
मल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व
रसूलिही सुम्-म लम् यर्ताबू व जाहदू बिअम्वा-
लिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहिط उलाइ-क
हुमुस्सादिक़ून (१५) क़ुल् अ-तुअ़ल्लिमूनल्ला-ह
बिदीनिकुम्ط वल्लाहु यअ़्-लमु मा फ़िस्समावाति
व मा फ़िल्अर्ज़िط वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम
(१६) यमुन्नू-न अ़लै-क अन् अस्लमूط क़ुल्
ला तमुन्नू अ़-लय्-य इस्लामकुम्○ बलिल्लाहु
यमुन्नु अ़लैकुम् अन् हदाकुम् लिलईमानि इन्
कुन्तुम् सादिक़ी-न (१७) इन्नल्ला-ह यअ़्-
लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़िط वल्लाहु बसीरुम् - बिमा तअ़्-मलून ★ (१८)

٥٠ ق ٤١٣ حٰمٓ ٢٦

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ
قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْاؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾
قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّاؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ
اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔاؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَمُنُّوْنَ
عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْاؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ
اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ
فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًاۚ
ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْۚ وَعِنْدَنَا
كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْۤ اَمْرٍ

५० सूरतु क़ाफ़ ३४

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १५२५ अक्षर, ३७६ शब्द, ४५ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

क़ाफ़् قٓ वल्क़ुर्आनिल् - मजीद○ (१) बल् अ़जिबू अन्
जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् फ़-क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा शैउन् अ़जीब○ (२)
अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबन्○ ज़ालि-क रज्अुम्-बअ़ीद (३) क़द्
अ़लिम्ना मा तन्क़ुसुल्-अर्ज़ु मिन्हुम्○ व अ़िन्दना किताबुन् हफ़ीज़ (४)
बल् कज़्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़हुम् फ़ी अम्रिम्-मरीज (५)

★रु. २/१४ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेशक ख़ुदा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है। (१२) लोगो ! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) ख़ुदा के नज़दीक तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है, जो ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक ख़ुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से ख़बरदार है। (१३) देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए। कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए (बल्कि यों) कहो कि हम इस्लाम लाए हैं और ईमान तो अब भी तुम्हारे दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ और अगर तुम ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करोगे तो ख़ुदा तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४) मोमिन तो वे हैं जो ख़ुदा और उस के रसूल पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े और ख़ुदा की राह में जान और माल से लड़े। यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं। (१५) उन से कहो, क्या तुम ख़ुदा को अपनी दीनदारी जतलाते हो और ख़ुदा तो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों को जानता है और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (१६) ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि मुसलमान हो गये हैं। कह दो कि अपने मुसलमान होने का मुझ पर एहसान न रखो, बल्कि ख़ुदा तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान का रास्ता दिखाया, बशर्ते कि तुम सच्चे मुसलमान हो। (१७) बेशक ख़ुदा आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है और जो कुछ तुम करते हो, उसे देखता है। (१८)★



५० सूरः क़ाफ़् ३४

सूरः क़ाफ़ मक्की है और इस में पैंतालीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ाफ़, क़ुरआन मजीद की क़सम (कि मुहम्मद ख़ुदा के पैग़म्बर हैं,) (१) लेकिन इन लोगों ने ताज्जुब किया कि उन्हीं में से एक हिदायत करने वाला उन के पास आया, तो काफ़िर कहने लगे कि यह बात तो (बड़ी) अजीब है। (२) भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये (तो फिर ज़िंदा होंगे ?) यह ज़िंदा होना (अक़्ल से) दूर है। (३) उन के जिस्मों को ज़मीन जितना (खा-खा कर) कम करती जाती है, हमको मालूम है और हमारे पास लिखी याद-दाश्त भी है। (४) बल्कि (अजीब बात यह है कि) जब उन के पास (दीन) हक़ आ पहुंचा तो उन्हों ने उस को झूठ समझा, सो यह एक

★रु. २/१४ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-फ़-लम् यन्ज़ुरू इलस्समा-इ फ़ौक़हुम् कै-फ़ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा व मा लहा मिन्
फ़ुरूज (६) वलअर्-ज़ म-दद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा
मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज ॥ (७) तब्सि-र-तंव्-व ज़िक्रा लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब
(८) व नज़्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम्-मुबा-र-कन् फ़-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व
हब्बल्-हसीद ॥ (९) वन्नख़्-ल बासिक़ातिल्लहा
तल्अुन् नज़ीद ॥ (१०) रिज़्क़ल्-लिल्अिबादि ॥
व अह्यैना बिही बल्द-तम्-मै-तन् ♭ कजालिकल्-
ख़ुरूज (११) कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् क़ौमु
नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद ॥ (१२) व
आदुंव्-व फ़िर्औनु व इख़्वानु लूत ॥ (१३)
व अस्हाबुल्-ऐकति व क़ौमु तुब्बअिन् ♭ कुल्लुन्
कज़्ज-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ वअीद (१४) अ-फ़-
अयीना बिल्ख़ल्क़िल्-अव्वलि ♭ बल् हुम् फ़ी
लब्सिम्-मिन् ख़ल्क़िन् जदीद ★ (१५) व
ल-क़द् ख़-लक़्नल् - इन्सा - न व नअ्-
लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू ♭ व
नह्नु अक़्-रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद (१६) इज़् य-त-लक़्क़ल्-
मु-त-लक़्क़ियानि अनिल्यमीनि व अनिश्शिमालि क़अीद (१७) मा यल्फ़िज़ु
मिन् क़ौलिन् इल्ला लदैहि रक़ीबुन् अतीद (१८) व जा-अत् सक्-रतुल्-मौति
बिल्हक़्क़ि ♭ जालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद (१९) व नुफ़ि - ख़
फ़िस्सूरि ♭ जालि-क यौमुल् - वअीद (२०) व जा-अत् कुल्लु नफ़्सिम्-
म-अहा साइक़ुंव्-व शहीद (२१) ल-क़द् कुन्-त फ़ी ग़फ़्-लतिम्-मिन् हाज़ा फ़-क-
शफ़्ना अन्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-स़रुकल्-यौ-म हदीद (२२) व क़ा-ल क़रीनुहू हाज़ा मा
ल-दय्-य अतीद ♭ (२३) अल्क़िया फ़ी ज-हन्न-म कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् अनीद ॥ (२४)

مَرِيجٍ ۞ أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا
لَهَا مِن فُرُوجٍ ۞ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا
فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۞ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۞
وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۞
وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۞ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِ
بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ۞ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَ
أَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۞ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۞ وَ
أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۞
أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۞
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۞ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۞ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ۞ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ
تَحِيدُ ۞ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۞ وَجَاءَتْ كُلُّ
نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۞ لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا
فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۞ وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا
مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۞ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۞ مَّنَّاعٍ

★रु. १/१५ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उलझी हुई बात में (पड़ रहे) हैं। (५) क्या उन्हों ने ऊपर आसमान की तरफ़ निगाह नहीं की कि हम ने उस को कैसे बनाया और (कैसे) सजाया और इस में कहीं दराड़ तक नहीं। (६) और ज़मीन को (देखो, इसे) हम ने फैलाया और इस में पहाड़ रख दिए और इस में हर तरह की खुशनुमा चीज़ें उगाईं, (७) ताकि रुजूअ लाने वाले बंदे हिदायत और नसीहत हासिल करें। (८) और आसमान से बरकत वाला पानी उतारा और उस से बाग़-बग़ीचे उगाए और खेती का अनाज, (९) और लम्बी-लम्बी खजूरें, जिन का गाभा तह-ब-तह होता है। (१०) (यह सब कुछ) बन्दों को रोज़ी देने के लिए (किया है) और उस (पानी) से हम ने मुर्दा शहर (यानी बंजर ज़मीन) को ज़िंदा किया, (बस) इसी तरह (क़ियामत के दिन) निकल पड़ना है। (११) उन से पहले नूह की क़ौम और कुएं वाले और समूद झुठला चुके हैं, (१२) और आद और फ़िऔन और लूत के भाई, (१३) और बन के रहने वाले और तुब्बअ् की क़ौम। (ग़रज़) इन सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमारी धमकी भी पूरी हो कर रही। (१४) क्या हम पहली बार पैदा कर के थक गये हैं? (नहीं,) बल्कि यह फिर से पैदा करने में शक में (पड़े हुए) हैं। (१५) ★

और हम ही ने इंसान को पैदा किया है और जो ख़्याल उस के दिल में गुज़रते हैं, हम उन को जानते हैं और हम उस की रगे जान से भी उस से ज़्यादा क़रीब हैं। (१६) जब (वह कोई काम करता है तो) दो लिखने वाले जो दाएं-बाएं बैठते हैं, लिख लेते हैं। (१७) कोई बात उसकी ज़ुबान पर नहीं आती, मगर एक निगहबान उस के पास तैयार रहता है, (१८) और मौत की बेहोशी हक़ीक़त खोलने को छा गयी। (ऐ इंसान!) यही (वह हालत है) जिस से तू भागता था। (१९) और सूर फूंका जाएगा। यही (अज़ाब की) धमकी का दिन है। (२०) और हर शख़्स (हमारे सामने) आएगा। एक (फ़रिश्ता) उस के साथ चिल्लाने वाला होगा और एक (उस के अमलों की) गवाही देने वाला। (२१) (यह वह दिन है कि) इस से तू ग़ाफ़िल हो रहा था। अब हम ने तुझ पर से पर्दा उठा दिया, तो आज तेरी निगाह तेज़ है। (२२) और उसका हमनशीं (फ़रिश्ता) कहेगा कि यह (आमालनामा) मेरे पास हाज़िर है। (२३) (हुक्म होगा कि) हर सरकश ना-शुक्रे को

★रु. १/१५ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मन्नाअिल्-लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिम्-मुरीबि-नि- (२५) -ल्लज़ी ज-अ-ल म-अल्लाहि इलाहन्
आख़-र फ़-अल्क़ियाहु फ़िल्-अ़ज़ाबिश्शदीद (२६) क़ा-ल क़रीनुहू रब्बना मा
अत़ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद (२७) क़ा-ल ला तख़्तसिमू
ल-दय्-य व क़द् क़द्दम्तु इलैकुम् बिल्वअ़ीद (२८) मा युबद-दलुल्-क़ौलु ल-दय्-य
व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद ★(२९)
यौ-म नक़ूलु लिज-हन्न-म हलिम्त-लअ्ति व
तक़ूलु हल् मिम्-मज़ीद (३०) व उज़्लि-
फ़तिल्-जन्नतु लिल्-मुत्तक़ी-न ग़ै-र बअ़ीद (३१)
हाज़ा मा तू-अ़दू-न लिकुल्लि अव्वाबिन् हफ़ीज़
(३२) मन् ख़शियर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि व जा-अ
बिक़ल्बिम्-मुनीबि-नि- (३३) -द्ख़ुलूहा बि-
सलामिन् ज़ालि-क यौमुल्ख़ुलूद (३४) लहुम्
मा यशाऊ-न फ़ीहा व लदैना मज़ीद (३५)
व कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम्-मिन् क़र्निन् हुम्
अशद्दु मिन्हुम् बत़्-शन् फ़-नक़्क़बू फ़िल्बिलादि
हल् मिम्-महीस़ (३६) इन्-न फ़ी ज़ालि-क
लज़िक्रा लिमन् का-न लहू क़ल्बुन् औ अल्-

لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ۝ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي
الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم
بِالْوَعِيدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝ يَوْمَ
نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝
مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ
ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا
قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن
مَّحِيصٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا
مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ
طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ
بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝
يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا
يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ۝

क़स्सम्-अ व हु-व शहीद (३७) व ल-क़द् ख़-लक़्-नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा
बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्-लुग़ूब (३८) फ़स्बिर् अ़ला मा
यक़ूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअिश्शम्सि व क़ब्-लल्-ग़ुरूब (३९)
व मिनल्लैलि फ़सब्बिह्हु व अद्-बारस्सुजूद (४०) वस्तमिअ्-यौ-म युनादिल्मुनादि
मिम्-मकानिन् क़रीब (४१) यौ-म यस्मअ़ूनस्-सै-ह्-त बिल्हक़्क़ि ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुरूज
(४२) इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल् मसीर (४३) यौ-म त-शक़्क़क़ुल्अर्ज़ु अन्-
हुम् सिराअ़न् ज़ालि-क हश्रुन् अ़लैना यसीर (४४) नह्नु अअ्-लमु बिमा यक़ूलू-न व मा
अन्-त अ़लैहिम् बिजब्बारिन् फ़-ज़क्किर् बिल्क़ुरआनि मंय्यख़ाफ़ु वअ़ीद ★ (४५)

★रु. २/१६ आ १४ ★रु. ३/१७ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दोज़ख़ में डाल दो। (२४) जो माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुब्हे निकालने वाला था, (२५) जिस ने ख़ुदा के साथ और माबूद मुक़र्रर कर रखे थे, तो उस को सख़्त अज़ाब में डाल दो। (२६) उस का साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार ! मैं ने उस को गुमराह नहीं किया था, बल्कि यह आप ही रास्ते से दूर भटका हुआ था। (२७) (ख़ुदा) कहेगा कि हमारे हुज़ूर में रद्द व कद्द न करो। हम तुम्हारे पास पहले ही (अज़ाब की) धमकी भेज चुके थे। (२८) हमारे यहां बात बदला नहीं करती और हम बन्दों पर ज़ुल्म नहीं किया करते। (२९)★

उस दिन हम दोज़ख़ से पूछेंगे कि क्या तू भर गयी ? वह कहेगी कि कुछ और भी हैं ? (३०) और बहिश्त परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी (कि बिल्कुल) दूर न होगी। (३१) यही वह चीज़ है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था (यानी) हर रुजूअ लाने वाले, हिफ़ाज़त करने वाले से, (३२) जो ख़ुदा से बिन देखे डरता रहा और रुजूअ लाने वाला दिल ले कर आया, (३३) इस में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (३४) वहां वह जो चाहेंगे, उन के लिए हाज़िर है और हमारे यहां और भी (बहुत कुछ) है। (३५) और हमने उन से पहले कई उम्मतें हलाक कर डालीं, वह इन से ताक़त में कहीं बढ़ कर थे, वह शहरों में गश्त करने लगे, क्या कहीं भागने की जगह है ? (३६) जो शख़्स दिल (आगाह) रखता है या दिल से मुतवज्जह हो कर सुनता है, उस के लिए इस में नसीहत है। (३७) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो (मख़्लूक़ात) उन में हैं, सब को छः दिनों में बना दिया और हम को ज़रा भी थकन नहीं हुई। (३८) तो जो कुछ ये (कुफ़्फ़ार) बकते हैं, इस पर सब्र करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो। (३९) और रात के कुछ वक़्तों में भी और नमाज़ के बाद भी उस (के नाम) की पाकी बयान करो। (४०) और सुनो जिस दिन पुकारने वाला नज़दीक की जगह से पुकारेगा, (४१) जिस दिन लोग चीख़ यक़ीनी तौर पर सुन लेंगे। वही निकल पड़ने का दिन है। (४२) हम ही तो ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं और हमारे ही पास लौट कर आना है। (४३) उस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी और वे झट-पट निकल खड़े होंगे। यह जमा करना हमें आसान है। (४४) ये लोग जो कुछ कहते हैं, हमें ख़ूब मालूम है और तुम उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो। पस जो हमारे (अज़ाब की) धमकी से डरे, उस को क़ुरआन से नसीहत करते रहो। (४५)★

★रु. २/१६ आ १४　★रु. ३/१७ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

५१ सूरतुज़्-ज़ारियाति ६७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १५५६ अक्षर, ३६० शब्द, ६० आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वज़्ज़ारियाति ज़र्वन्ۙ(१) फ़ल्ह़ामिलाति विक़्रन्ۙ(२) फ़ल्जारियाति
युस्रन्ۙ(३) फ़ल्मुक़स्सिमाति अम्रन्ۙ(४) इन्नमा तूअ़दू-न लसादिक़ुंव-ۙ(५)
व इन्नद्दी-न ल-वाक़ि-अ़ुन्ط(६) वस्समा-इ ज़ातिल्-हुबुकिۙ(७) इन्नकुम् लफ़ी
क़ौलिम्-मुख़्तलिफ़िय्-ۙ(८) युअ्फ़कु अ़न्हु मन् उफ़िकط(९) क़ुतिलल्-ख़र्रासूनۙ
(१०) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ग़म्रतिन् साहूनۙ
(११) यस्-अलू-न अय्या-न यौमुद्दीनط(१२)
यौ-म हुम् अ़लन्नारि युफ़्तनून (१३) ज़ूक़ू
फ़ित-न-तकुम्ط हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तस्तअ्-
जिलून (१४) इन्नल्मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व
अ़ुयूनिन्ۙ (१५) आख़िज़ी-न मा आताहुम्
रब्बुहुम्ط इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुह़्सि-
नीनط(१६) कानू क़लीलम्-मिनल्लैलि मा
यह्-जअ़ून (१७) व बिल्-अस्ह़ारि हुम् यस्-
तग़्फ़िरून (१८) व फ़ी अम्वालिहिम् ह़क़्क़ुल्-
लिस्साइलि वल्-मह़्रूम (१९) व फ़िल्अर्ज़ि
आयातुल्-लिल्मूक़िनीनۙ(२०) व फ़ी अन्फ़ुसि-
कुम्ط अ-फ़-ला तुब्सिरून (२१) व फ़िस्समाइ
रिज़्क़ुकुम् व मा तूअ़दून (२२) फ़-व-रब्बिस्-
समाइ वल्अर्ज़ि इन्नहू ल-ह़क़्क़ुम्-मिस्-ल मा अन्नकुम् तन्तिक़ून ★ मंज़िल (२३) हल् अता-क
ह़दीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल्-मुक्रमीन▧(२४) इज़् द-ख़-लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन्ط क़ा-ल
सलामुन्ج क़ौमुम् मुन्करूनج(२५) फ़रा-ग़ इला अह्लिही फ़जा-अ बिअ़िज्लिन्
समीनۙ (२६) फ़-क़र्रबहू इलैहिम् क़ा-ल अला तअ्-कुलूनۚ(२७) फ़-औज-स
मिन्हुम् ख़ी-फ़-तन्ط क़ालू ला त-ख़फ़्ط व बश्शरूहु बिग़ुलामिन् अ़लीम (२८)
फ़-अक़्-ब-लतिम्-र-अतुहू फ़ी सर्रतिन् फ़-सक्कत् वज्हहा व क़ालत् अ़जूज़ुन् अ़क़ीम
(२९) क़ालू कज़ालिकिۙ क़ा-ल रब्बुकिط इन्नहू हुवल्-ह़कीमुल्-अ़लीम (३०)

حٰمٓ ٢٦   ٥١٦   الذّٰريٰت ٥١

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ سِتُّوْنَ اٰيَةً ثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝١ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝٢ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝٣ فَالْمُقَسِّمٰتِ
اَمْرًا ۝٤ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۝٥ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝٦ وَالسَّمَآءِ
ذَاتِ الْحُبُكِ ۝٧ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٨ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۝٩
قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝١١ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ
يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٢ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝١٣ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ هٰذَا
الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝١٤ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝١٥
اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۝١٦ كَانُوْا
قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝١٧ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝١٨ وَفِيْٓ
اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝١٩ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝٢٠
وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝٢١ وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝٢٢
فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝٢٣ هَلْ اَتٰىكَ
حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝٢٤ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالَ
سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٢٥ فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝٢٦ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ
قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝٢٧ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ وَبَشَّرُوْهُ
بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝٢٨ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ
عَقِيْمٌ ۝٢٩ قَالُوْا كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝٣٠

★रु. १/१८ आ २३ ▧ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

५१ सूरः जारियात ६७

सूरः ज़ारियात मक्की है और इस में साठ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बिखेरने वालियों की क़सम ! जो उड़ा कर बिखेर देती हैं, (१) फिर (पानी का) बोझ उठाती हैं, (२) फिर धीरे-धीरे चलती हैं, (३) फिर चीज़ें तक़्सीम करती हैं,[1] (४) कि जिस का तुम से वायदा किया जाता है, वह सच्चा है। (५) और इंसाफ़ (का दिन) ज़रूर वाक़ेअ होगा। (६) और आसमान की क़सम ! जिसमें रास्ते हैं, (७) कि (ऐ मक्का वालो !) तुम एक झगड़े की बात में (पड़े हुए) हो।[2] (८) इस से वही फिरता है, जो (ख़ुदा की तरफ़ से) फेरा जाए। (९) अटकल दौड़ाने वाले हलाक हों, (१०) जो बे-ख़बरी में भूले हुए हैं। (११) पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा ? (१२) उस दिन (होगा) जब उन को आग में अज़ाब दिया जाएगा। (१३) अब अपनी शरारत का मज़ा चखो। यह वही है, जिस के लिए तुम जल्दी मचाया करते थे। (१४) बेशक परहेज़गार बहिश्तों और चश्मों में (ऐश कर रहे) होंगे। (१५) (और) जो-जो (नेमतें) उन का परवरदिगार उन्हें देता होगा, उन को ले रहे होंगे। बेशक वे उस से पहले नेकियां करते थे, (१६) रात के थोड़े से हिस्से में सोते थे, (१७) और सुबह के वक़्तों में बख़्शिश मांगा करते थे। (१८) और उन के माल में मांगने वाले और न मांगने वाले (दोनों) का हक़ होता है। (१९) और यक़ीन करने वालों के लिए ज़मीन में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२०) और ख़ुद तुम्हारे नफ़्सों में, तो क्या तुम देखते नहीं ? (२१) और तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज़ का तुम से वायदा किया जाता है आसमान में है। (२२) तो आसमानों और ज़मीन के मालिक की क़सम ! यह (उसी तरह) यक़ीन के क़ाबिल है, जिस तरह तुम बात करते हो। (२३)★

भला तुम्हारे पास इब्राहीम के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर पहुंची है ? ▨ (२४) जब वे उनके पास आए तो सलाम कहा। उन्हों ने भी (जवाब में) सलाम कहा; (देखा तो) ऐसे लोग कि न जान, न पहचान। (२५) तो अपने घर जा कर एक (भुना हुआ) मोटा बछड़ा लाए। (२६) (और खाने के लिए) उन के आगे रख दिया। कहने लगे कि आप खाते क्यों नहीं ? (२७) और दिल में उन से ख़ौफ़ मालूम किया। उन्हों ने कहा कि ख़ौफ़ न कीजिए और उन को एक दानिशमंद (सूझ-बूझ वाले) लड़के की ख़ुशख़बरी भी सुनायी। (२८) तो इब्राहीम की बीवी चिल्लाती आयीं और अपना मुंह पीट कर कहने लगीं कि (ऐ हे, एक तो) बुढ़िया और (दूसरे) बांझ ? (२९) उन्हों ने कहा, (हां) तुम्हारे परवरदिगार ने यों ही फ़रमाया है। वह बेशक हिक्मत वाला (और)

---

१. तफ़्सीरों में इन चार आयतों में एक ही चीज़ भी मुराद ली गयी है यानी हवा और चार मुख़्तलिफ़ चीज़ें भी मुराद ली गयी हैं यानी 'ज़ारियाति ज़र्वन' से तो हवाएं कि धूल वग़ैरह को उड़ा कर बिखेर देती हैं और 'हामिलाति विक़्रन' से बदलियां, जो मेंह का बोझ उठाती हैं और 'जारियाति युस्रन' से किश्तियां जो दरिया में सहज-सहज चलती हैं और 'मुक़स्सिमाति अम्रन' से फ़रिश्ते, जो बारिश और रोज़ी और सूखे और सस्ताई और चीज़ों को तक़्सीम करते हैं। कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने इन चीज़ों के अलावा और चीज़ें भी मुराद ली हैं, मगर उन का ज़िक्र ग़ैर जरूरी है।

२. झगड़े की बात यानी बे-जोड़ बात यानी रसूले ख़ुदा सल्ल० की शान में कोई तो कहता है कि शायर है, कोई

(शेष पृष्ठ ८३१ पर)

★रु. १/१८ आ २३ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सत्ताईसवां पारः क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम्

सूरतुज़्ज़ारियाति आयात ३१ से ६०

क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल् मुर्सलून (३१) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-
मुज्रिमीन (३२) लिनुर्सि-ल अलैहिम् हिजा-र-तम्-मिन्तीन (३३) मुसव्व-म-तन्
अिन्-द रब्बि-क लिल्मुस्रिफ़ीन (३४) फ़-अख़-रज्ना मन् का-न फ़ीहा मिनल्-
मुअ्मिनीन (३५) फ़-मा व-जद्ना फ़ीहा ग़ै-र बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन (३६) व
त-रक्ना फ़ीहा आयतल्-लिल्लज़ी-न यख़ाफ़ूनल्-
अज़ाबल्-अलीम (३७) व फ़ी मूसा इज्
अर्सल्नाहु इला फ़िर्औ-न बिसुल्तानिम्-मुबीन
(३८) फ़-त-वल्ला बिरुक्निही व क़ा-ल साहि-
रुन् औ मज्नून (३९) फ़-अ-ख़ज़्नाहु व
जुनूदहू फ़-न-बज़्नाहुम् फ़िल्-यम्मि व हु-व
मुलीम (४०) व फ़ी आदिन् इज् अर्सल्ना
अलैहिमुर-रीहल्-अक़ीम (४१) मा त-ज़रु
मिन् शैइन् अ-तत् अलैहि इल्ला ज-अ-लत्हु
कर्रमीम (४२) व फ़ी समू-द इज् क़ी-ल
लहुम् त-मत्तअू हत्ता हीन (४३) फ़-अतौ
अन् अम्रि रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्साअिक़तु
व हुम् यन्ज़ुरून (४४) फ़-मस्तताअू मिन्
क़ियामिंव्-व मा कानू मुन्तसिरीन (४५) व
क़ौ-म नूहिम्मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू क़ौमन्
फ़ासिक़ीन★ (४६) वस्समा-अ बनैनाहा बिऐदिंव्-व इन्ना लमूसिअून (४७) वल्अर्-ज़
फ़-रश्नाहा फ़निअ्-मल्-माहिदून (४८) व मिन् कुल्लि शैइन् ख़-लक़्ना ज़ौजैनि ल-अल्ल-
कुम् त-ज़क्करून (४९) फ़फ़िर्रू इलल्लाहि इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (५०) व
ला तज्-अलू म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (५१)
कज़ालि-क मा अ-तल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला क़ालू साहिरुन् औ
मज्नून (५२) अ-त-वासौ बिही बल् हुम् क़ौमुन् तागून (५३) फ़-त-वल्-ल
अन्हुम् फ़मा अन्-त बिमलूमिंव्- (५४) व ज़क्किर् फ़-इन्नज़्ज़िकरा तन्फ़अुल्-
मुअ्मिनीन (५५) व मा ख़-लक़्तुल्जिन-न वल्इन्-स इल्ला लि-यअ्-बुदून (५६)

قال فما خطبكم أيها المرسلون ۝ قالوا إنا أرسلنا إلى قوم
مجرمين ۝ لنرسل عليهم حجارة من طين ۝ مسومة عند
ربك للمسرفين ۝ فأخرجنا من كان فيها من المؤمنين ۝ فما
وجدنا فيها غير بيت من المسلمين ۝ وتركنا فيها آية للذين
يخافون العذاب الأليم ۝ وفي موسى إذ أرسلناه إلى فرعون
بسلطان مبين ۝ فتولى بركنه وقال ساحر أو مجنون ۝ فأخذناه
وجنوده فنبذناهم في اليم وهو مليم ۝ وفي عاد إذ أرسلنا عليهم
الريح العقيم ۝ ما تذر من شيء أتت عليه إلا جعلته كالرميم ۝
وفي ثمود إذ قيل لهم تمتعوا حتى حين ۝ فعتوا عن أمر ربهم
فأخذتهم الصاعقة وهم ينظرون ۝ فما استطاعوا من قيام وما كانوا
منتصرين ۝ وقوم نوح من قبل إنهم كانوا قوما فاسقين ۝ والسماء
بنيناها بأيد وإنا لموسعون ۝ والأرض فرشناها فنعم الماهدون ۝
ومن كل شيء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ۝ ففروا إلى الله إني
لكم منه نذير مبين ۝ ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إني لكم منه نذير
مبين ۝ كذلك ما أتى الذين من قبلهم من رسول إلا قالوا ساحر أو
مجنون ۝ أتواصوا به بل هم قوم طاغون ۝ فتول عنهم فما أنت بملوم ۝
وذكر فإن الذكرى تنفع المؤمنين ۝ وما خلقت الجن والإنس

★रु. २/१ आ २३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़बरदार है। (३०) (इब्राहीम ने) कहा कि फ़रिश्तो ! तुम्हारा मतलब क्या है? (३१) उन्होंने कहा कि हम गुनाहगारों की तरफ़ भेजे गये हैं, (३२) ताकि उन पर खंगर बरसाएं, (३३) ज़िन पर हद से बढ़ जाने वालों के लिए तुम्हारे परवरदिगार के यहां से निशान कर दिए गए हैं, (३४) तो वहां जितने मोमिन थे, उन को हमने निकाल लिया, (३५) और उस में एक घर के सिवा मुसलमानों का कोई घर न पाया, (३६) और जो लोग दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं, उन के लिए वहां निशानी छोड़ दी। (३७) और मूसा (के हाल) में (भी निशानी है) जब हमने उन को फ़िऔन की तरफ़ खुला हुआ मोजज़ा दे कर भेजा। (३८) तो उस ने अपनी ताक़त (के घमंड) से मुंह मोड़ लिया और कहने लगा, यह तो जादूगर है या दीवाना, (३९) तो हमने उस को और उसके लश्करों को पकड़ लिया और उन को दरिया में फेंक दिया और वह काम ही मलामत के क़ाबिल करता था। (४०) और आद (की क़ौम के हाल) में भी (निशानी है,) जब हम ने उन पर ना-मुबारक हवा चलायी। (४१) वह जिस चीज़ पर चलती, उस को रेज़ा-रेज़ा किये बग़ैर न छोड़ती। (४२) और (क़ौम) समूद (के हाल) में भी (निशानी है,) जब उन से कहा गया कि एक वक़्त तक फ़ायदा उठा लो। (४३) तो उन्हों ने अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की, सो उन को कड़क ने आ पकड़ा और वे देख रहे थे। (४४) फिर वे न तो उठने की ताक़त रखते थे और न मुक़ाबला कर सकते थे। (४५) और इस से पहले (हम) नूह की क़ौम को (हलाक कर चुके थे,) बेशक वे ना-फ़रमान लोग थे। (४६) ★

और आसमानों को हम ही ने हाथों से बनाया और हम को सब मक़्दूर है। (४७) और ज़मीन को हम ही ने बिछाया, तो (देखो) हम क्या ख़ूब बिछाने वाले हैं। (४८) और हर चीज़ की हम ने दो क़िस्में बनायीं, ताकि तुम नसीहत पकड़ो, (४९) तो तुम लोग ख़ुदा की तरफ़ भाग चलो, मैं उस की तरफ़ से तुम को खुला रास्ता बताने वाला हूं। (५०) और ख़ुदा के साथ किसी और को माबूद न बनाओ। मैं उस की तरफ़ से तुम को खुला रास्ता बताने वाला हूं। (५१) इसी तरह इन से पहले लोगों के पास जो पैग़म्बर आता, वे उस को जादूगर या दीवाना कहते। (५२) क्या ये लोग एक-दूसरे को इसी बात की वसीयत करते आए हैं, बल्कि ये शरीर लोग हैं। (५३) तो इन से एराज़ करो। तुम को (हमारी तरफ़ से) मलामत न होगी। (५४) और नसीहत करते रहो कि नसीहत मोमिनों को नफ़ा देती है। (५५) और मैंने जिन्नों और इंसानों को इसलिए पैदा किया है

(पृष्ठ ८२९ का शेष)

कहता है कि दीवाना है, कोई कहता है कि काहिन है और इसी तरह क़ुरआन मजीद को शेर, जादू और कहानत वग़ैरह कहते हैं। कुछ ने कहा, इस से यह मुराद है कि कोई क़ियामत का इन्कार करता है, कोई इस में शक करता है। कुछ ने कहा, इस से यह मुराद है कि वे ख़ुदा का तो इक़रार करते हैं और बुतों को पूजते हैं।

★रु. २/१ आ २३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मा उरीदु मिन्हुम् मिरिज़्क़िव्-व मा उरीदु अंय्युत्‌अिमून (५७) इन्नल्ला-ह
हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्क़ुव्वतिल्-मतीन (५८) फ़-इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़नू-
बम्-मिस्-ल ज़नूबि अस्‌हाबिहिम् फ़ ला यस्तअ्-जिलून (५९) फ़वै-
लुल् - लिल्लज़ी - न क - फ़रू मिंय्यौमिहिमुल्लज़ी यूअदून★ (६०)

قال فما خطبكم ٢٧ ٣١٨ الطور ٥٢

إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ٥٦ مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ٥٧ إِنَّ
اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ٥٨ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ
ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ٥٩ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن
يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ٦٠

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ تِسْعٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ
وَالطُّورِ ١ وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ٢ فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ٣ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ٤ وَ
السَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ٥ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ٦ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ٧ مَّا لَهُ
مِن دَافِعٍ ٨ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ٩ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ١٠ فَوَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ١١ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ١٢ يَوْمَ يُدَعُّونَ
إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ١٣ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ١٤ أَفَسِحْرٌ
هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ١٥ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ
عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ١٦ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَ
نَعِيمٍ ١٧ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ١٨
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ١٩ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ
وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ٢٠ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ
أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ كُلُّ
امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ٢١ وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ٢٢

५२ सूरतुत्तूरि ७९

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १३३४ अक्षर,
३१९ शब्द, ४९ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

वत्तूर (१) व किताबिम्-मस्तूरिन्
(२) फ़ी रक़्क़िम्-मन्शूरिंव- (३) वल्बैतिल्-
मअ्-मूर (४) वस्सक़्फ़िल्-मर्फ़ूअि (५)
वल्बह्‌रिल्-मस्जूर (६) इन-न अज़ा-ब
रब्बि-क लवाक़िअुम्- (७) मा लहू मिन्
दाफ़िअिय्- (८) यौ-म तमूरुस्समाउ मौरंव- (९)
व तसीरुल्-जिबालु सैरा (१०) फ़वैलुंय्यौ-
मइज़िल्-लिलमुकज़्ज़िबीन (११) अल्लज़ी-न
हुम् फ़ी ख़ौज़िय्यल्-अबून (१२) यौ-म
युदअ्-अू-न इला नारि ज-हन्न-म दअ्-आ
(१३) हाज़िहिन्-नारुल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (१४) अ-फ़-सिह्‌रुन् हाज़ा
अम् अन्तुम् ला तुब्-सिरून (१५) इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू सवाउन्
अलैकुम् इन्नमा तुज्-ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून (१६) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी
जन्नातिंव्-व नअीम (१७) फ़ाकिही-न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् व वक़ाहुम् रब्बु-
हुम् अज़ाबल्-जहीम (१८) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१९)
मुत्तकिई-न अला सुरुरिम्-मस्फ़ूफ़तिन् व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अीन (२०) वल्-
लज़ी-न आमनू वत्त-ब-अत्हुम् ज़ुर्रिय्यतुहुम् बिईमानिन् अल्-हक़्ना बिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम्
व मा अ-लत्नाहुम् मिन् अ-मलिहिम् मिन् शैइन् कुल्लुम्रिइम्-बिमा क-स-ब रहीन
(२१) व अम्दद्नाहुम् बिफ़ाकिहतिंव्-व लह्‌मिम्-मिम्मा यश्तहून (२२)

★रु. ३/२ आ १४ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कि मेरी इबादत करें। (५६) मैं उन से रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि मुझे (खाना) खिलाएं (५७) ख़ुदा ही तो रोज़ी देने वाला, ज़ोरावर (और) मज़बूत है। (५८) कुछ शक नहीं कि इन ज़ालिमों के लिए भी (अज़ाब की) नौबत मुक़र्रर है, जिस तरह उन के साथियों की नौबत थी, तो उन को मुझ से (अज़ाब) जल्दी नहीं तलब करना चाहिए। (५९) जिस दिन का इन काफ़िरों से वायदा किया जाता है, उस से उन के लिए ख़राबी है। (६०) ★

५२ सूरः तूर ७६

सूरः तूर मक्की है, इस में ४९ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तूर (पहाड़) की क़सम! (१) और किताब की जो लिखी हुई है![1] (२) कुशादा पन्नों (वरक़ों) में, (३) और आबाद घर की! (४) और ऊंची छत की! (५) और उबलते हुए दरिया की! (६) कि तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब वाक़ेअ हो कर रहेगा। (७) (और) उस को कोई रोक नहीं सकेगा, (८) जिस दिन आसमान लरज़ने लगे कपकपा कर, (९) और पहाड़ उड़ने लगें ऊन हो कर, (१०) उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है। (११) जो (बातिल के) खौज़ (हुज्जतबाज़ी) में पड़े खेल रहे हैं▨ (१२) जिस दिन उन को जहन्नम की आग की तरफ़ धकेल-धकेल कर ले जाएंगे। (१३) यही वह जहन्नम है जिस को तुम झूठ समझते थे। (१४) तो क्या यह जादू है या तुम को नज़र ही नहीं आता। (१५) इस में दाख़िल हो जाओ और सब्र करो या न करो, तुम्हारे लिए बराबर है, जो काम तुम किया करते थे, (यह) उन ही का तुम को बदला मिल रहा है। (१६) जो परहेज़गार हैं, वे बाग़ों और नेमतों में होंगे। (१७) जो कुछ उन के परवरदिगार ने उन को बख़्शा, उस (की वजह) से ख़ुशहाल, और उन के परवरदिगार ने उन को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया, (१८) अपने आमाल के बदले में, मज़े से खाओ और पियो, (१९) तख़्तों पर जो बराबर-बराबर बिछे हुए, तकिया लगाए हुए और बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरों को हम उनका साथी बना देंगे। (२०) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी ईमान (की राह) में उन के पीछे चली, हम उन की औलाद को भी उन (के दर्जे) तक पहुंचा देंगे और उन के आमाल में से कुछ कम न करेंगे। हर शख़्स अपने आमाल में फंसा हुआ है। (२१) और जिस तरह के मेवे और गोश्त को उन का जी चाहेगा, हम उन को अता करेंगे। (२२) वहां वे एक दूसरे से जामे-

1. किताब के बारे में कई क़ौल हैं। किसी ने कहा, दूसरी आसमानी किताबें। किसी ने कहा, नामा-ए-आमाल।

★रु. ३/२ आ १४ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

य-त-नाज़अू-न फ़ीहा कअ्-सल्ला लग़्वुन् फ़ीहा व ला तअ्-सीम (२३) व यतूफ़ु
अलैहिम् ग़िल्मानुल्-लहुम् क-अन्नहुम् लुअ्लुउम्-मक्नून (२४) व अक़्ब-ल बअ्-
ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िय्य-त-सा-अलून (२५) क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना
मुश्फ़िक़ीन (२६) फ़-मन्नल्लाहु अलैना व वक़ाना अज़ाबस्समूम (२७) इन्ना
कुन्ना मिन् क़ब्लु नद्अूहु इन्नहू हुवल्बर्रुर-
रहीम ★ (२८) फ़-ज़क्किर् फ़मा अन्-त
बिनिअ्-मति रब्बि-क बिकाहिनिंव्-व ला मज्नून
(२९) अम् यक़ूलू-न शाअिरुन् न-त-रब्बसु
बिही रैबल्-मनून (३०) क़ुल् त-रब्बसू
फ़इन्नी म-अकुम् मिनल्-मु-त-रब्बिसीन (३१)
अम् तअ्मुरुहुम् अह्लामु-हुम् बिहाज़ा अम् हुम्
क़ौमुन् ताग़ून (३२) अम् यक़ूलू-न त-क़व्व-
लहू बल् ला युअ्मिनून (३३) फ़ल-यअ्-तू
बिहदीसिम्-मिस्लिही इन् कानू सादिक़ीन (३४)
अम् ख़ुलिक़ू मिन् ग़ैरि शैइन् अम् हुमुल-ख़ालिक़ून
(३५) अम् ख़-लक़ुस्-समावाति वलअर्-ज़ बल् ला
यूक़िनून (३६) अम् अिन्दहुम् ख़ज़ाइनु
रब्बि-क अम् हुमुल्-मुसैतिरून (३७) अम् लहुम् सुल्लमुंय्यस्तमिअू-न फ़ीहि फ़ल्-
यअ्ति मुस्तमिअुहुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (३८) अम् लहुल्बनातु व लकुमुल्बनून
(३९) अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग़्-रमिम्-मुस्क़लून (४०) अम्
अिन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (४१) अम् युरीदू-न कैदन् फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू हुमुल्-
मकीदून (४२) अम् लहुम् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून (४३)
व इंय्यरौ किस्फ़म्-मिनस्समाइ साक़ितंय्यक़ूलू सहाबुम्-मर्कूम (४४) फ़-ज़र्हुम्
हत्ता युलाक़ू यौ-महुमुल्लज़ी फ़ीहि युस्-अक़ून (४५) यौ-म ला युग़्नी अन्हुम्
कैदुहुम् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (४६) व इन-न लिल्लज़ी-न
ज़-लमू अज़ाबन् दू-न ज़ालि-क व लाकिन-न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून (४७)

قال فما خطبكم ٢٧ — ٨١٩ — الطور ٥٢

يتنازعون فيها كأسا لا لغو فيها ولا تأثيم ﴿٢٣﴾ ويطوف عليهم غلمان
لهم كأنهم لؤلؤ مكنون ﴿٢٤﴾ وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ﴿٢٥﴾
قالوا إنا كنا قبل في أهلنا مشفقين ﴿٢٦﴾ فمن الله علينا ووقانا عذاب
السموم ﴿٢٧﴾ إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ﴿٢٨﴾ فذكر فما أنت
بنعمت ربك بكاهن ولا مجنون ﴿٢٩﴾ أم يقولون شاعر نتربص به ريب
المنون ﴿٣٠﴾ قل تربصوا فإني معكم من المتربصين ﴿٣١﴾ أم تأمرهم
أحلامهم بهذا أم هم قوم طاغون ﴿٣٢﴾ أم يقولون تقوله بل لا
يؤمنون ﴿٣٣﴾ فليأتوا بحديث مثله إن كانوا صادقين ﴿٣٤﴾ أم خلقوا من
غير شيء أم هم الخالقون ﴿٣٥﴾ أم خلقوا السماوات والأرض بل لا
يوقنون ﴿٣٦﴾ أم عندهم خزائن ربك أم هم المصيطرون ﴿٣٧﴾ أم لهم سلم
يستمعون فيه فليأت مستمعهم بسلطان مبين ﴿٣٨﴾ أم له البنات و
لكم البنون ﴿٣٩﴾ أم تسألهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ﴿٤٠﴾ أم عندهم
الغيب فهم يكتبون ﴿٤١﴾ أم يريدون كيدا فالذين كفروا هم
المكيدون ﴿٤٢﴾ أم لهم إله غير الله سبحان الله عما يشركون ﴿٤٣﴾ و
إن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم ﴿٤٤﴾ فذرهم
حتى يلاقوا يومهم الذي فيه يصعقون ﴿٤٥﴾ يوم لا يغني عنهم كيدهم
شيئا ولا هم ينصرون ﴿٤٦﴾ وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك و

★रु. १/३ आ २८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शराब झपट लिया करेंगे, जिस (के पीने) से न बक-झक होगी, न कोई गुनाह की बात। (२३) और नव-जवान ख़िद्मतगार, (जो ऐसे होंगे,) जैसे छिपाए हुए मोती, उन के आस-पास फिरेंगे, (२४) और एक दूसरे की तरफ़ रुख़ कर के आपस में बात-चीत करेंगे। (२५) कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर में (ख़ुदा से) डरते रहते थे, (२६) तो ख़ुदा ने हम पर एहसान फ़रमाया और हमें लू के अज़ाब से बचा लिया। (२७) इस से पहले हम उस से दुआएं किया करते थे। बेशक वह एहसान करने वाला मेहरबान है। (२८)★

तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम नसीहत करते रहो, तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से न तो काहिन हो और न दीवाने। (२९) क्या काफ़िर कहते हैं कि यह शायर है (और) हम उस के हक़ में ज़माने के हादिसों का इन्तिज़ार कर रहे हैं। (३०) कह दो कि इन्तिज़ार किए जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (३१) क्या उन की अक़्लें उन को यही सिखाती हैं, बल्कि ये लोग हैं ही शरीर। (३२) क्या कुफ़्फ़ार कहते हैं कि इन पैग़म्बर ने क़ुरआन ख़ुद से बना लिया है? बात यह है कि ये (ख़ुदा पर) ईमान नहीं रखते। (३३) अगर ये सच्चे हैं तो ऐसा कलाम बना तो लाएं। (३४) क्या ये किसी के पैदा किए बग़ैर ही पैदा हो गये हैं या ये ख़ुद (अपने आप) पैदा करने वाले हैं? (३५) या उन्हों ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? (नहीं) बल्कि ये यक़ीन ही नहीं रखते। (३६) क्या उन के पास तुम्हारे परवरदिगार के ख़ज़ाने हैं या ये (कहीं के) दारोग़ा हैं? (३७) या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़ कर आसमान से बातें) सुन आते हैं, तो जो सुन आता है, वह खुला सनद दिखाए। (३८) क्या ख़ुदा की तो बेटियां और तुम्हारे बेटे? (३९) ऐ पैग़म्बर! क्या तुम उन से बदला मांगते हो कि उन पर जुर्माने का बोझ पड़ रहा है? (४०) या उन के पास ग़ैब (का इल्म) है कि वे उसे लिख लेते हैं? (४१) क्या ये कोई दांव करना चाहते हैं, तो काफ़िर तो ख़ुद दांव में आने वाले हैं? (४२) क्या ख़ुदा के सिवा उन का कोई और माबूद है? ख़ुदा उन के शरीक बनाने से पाक है? (४३) और अगर ये आसमान (से अज़ाब) का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहें कि यह गाढ़ा बादल है, (४४) पस उन को छोड़ दो, यहां तक कि वह दिन, जिस में वे बे-होश कर दिए जाएंगे, सामने आ जाएं। (४५) जिस दिन उन का कोई दांव कुछ भी काम न आए और न उन को (कहीं से) मदद ही मिले। (४६) और ज़ालिमों के लिए इस के सिवा और अज़ाब भी है, लेकिन उन में के अक्सर नहीं जानते। (४७) और तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र करो, तुम तो हमारी आंखों के सामने हो और जब उठा करो, तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह किया करो। (४८) और रात के कुछ

★रु. १/३ आ २८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क फ़इन्न-क बिअअ्-युनिना व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क ह़ी-न तक़ूम लا (४८) व मिनल्लैलि फ़सब्बिह्हु व इद्बारन्नुजूम ★ (४९)

५३ सूरतुन्नज्मि २३

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १४५० अक्षर, ३६५ शब्द, ६२ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वन्नज्मि इज़ा हवा लا (१) मा ज़ल्-ल
साहिबुकुम् व मा ग़वा ج (२) व मा यन्तिक़ु
अ़निल्हवा ط (३) इन् हु-व इल्ला वह्युं य्यूहा لا
(४) अ़ल्ल-महू शदीदुल्क़ुवा لا (५) ज़ू मिर्रतिन् ط
फ़स्तवा لا (६) व हु-व बिल्-उफ़ुक़िल्-अअ्-ला ط
(७) सुम्-म दना फ़-त-दल्ला لا (८) फ़का-न
क़ा-ब क़ौसैनि औ अद्ना ج (९) फ़औहा इला
अ़ब्दिही मा औहा ط (१०) मा क-ज-बल्-
फ़ुआदु मा रआ (११) अ-फ़-तुमारूनहू अ़ला
मा यरा (१२) व ल-क़द् रआहु नज़्-ल-तन्
उख़्रा لا (१३) अ़िन्-द सिद्रतिल्-मुन्तहा (१४)
अ़िन्दहा जन्नतुल्-मअ्वा ط (१५) इज़् यग़्शस-
सिद-र-त मा यग़्शा لا (१६) मा ज़ाग़ल्-ब-सरु
व मा तग़ा (१७) ल-क़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा (१८) अ-फ़
रऐतुमुल्ला-त वल्अ़ुज़्ज़ा لا (१९) व मनातस-सालि-स-तल्-उख़्रा (२०) अ लकुमुज़्-
ज़-करु व लहुल्-उन्सा (२१) तिल्-क इज़न् क़िस्मतुन् ज़ीज़ा (२२) इन् हि-य
इल्ला अस्माउन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़-लल्लाहु बिहा मिन् सुल-
तानिन् ط इंय्यत्तबिअ़ू-न इल्लज़्ज़न-न व मा तह्वल्-अन्फ़ुसु ج व ल-क़द् जा-अहुम् मिर्रब्बि-
हिमुल्-हुदा ط (२३) अम् लिल्-इन्सानि मा तमन्ना ۖ (२४) फ़-लिल्लाहिल्-आख़िरतु वल्-
ऊला ★ (२५) व कम् मिम्म-लकिन् फ़िस्समावाति ला तुग़्नी शफ़ाअ़तुहुम् शैअन्
इल्ला मिम्बअ्-दि अंय्यअ्-ज़-नल्लाहु लिमंय्यशाउ व यर्ज़ा (२६) इन्नल्लज़ी-न
ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति लयु-सम्मूनल्-मलाइक-त तस्मि-य-तल्-उन्सा (२७)

لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾
سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ... بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ...
وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿٣﴾
اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿٤﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾ ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾
وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ
اَدْنٰى ﴿٩﴾ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ﴿١٠﴾ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ
عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾
عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ
الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ
وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾
تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾ اِنْ هِيَ اِلَّاۤ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْاَنْفُسُ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا
تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا

★रु. २/४ आ २१ ★रु. १/५ आ २५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वक़्तों में भी और सितारों के डूबने के बाद भी उस की पाकी बयान किया करो। (४९)★

५३ सूरः नज्म २३

सूरः नज्म मक्की है, इस में बासठ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तारे की क़सम, जब ग़ायब होने लगे, (१) कि तुम्हारे साहिब (मुहम्मद) न रास्ता भूले हैं, न भटके हैं। (२) और न नफ़्स की ख़्वाहिश से मुंह से बात निकालते हैं। (३) यह (क़ुरआन) तो ख़ुदा का हुक्म है, जो (उन की तरफ़) भेजा जाता है, (४) उन को बहुत ताक़त वाले ने सिखाया, (५) (यानी जिब्रील) ताक़तवर ने, फिर वह पूरे नज़र आये, (६) और वह (आसमान के) ऊंचे किनारे में थे, (७) फिर क़रीब हुए और आगे बढ़े, (८) तो वह कमान के फ़ासले पर या उस से भी कम, (९) फिर ख़ुदा ने अपने बन्दे की तरफ़ जो भेजा, सो भेजा, (१०) जो कुछ उन्हों ने देखा, उन के दिल ने उस को झूठ न जाना। (११) क्या जो कुछ वे देखते हैं, तुम इस में उन से झगड़ते हो? (१२) और उन्हों ने उस को एक और बार भी देखा है। (१३) परली हद की बेरी के पास, (१४) उसी के पास रहने की बहिश्त है, (१५) जबकि उस बेरी पर छा रहा था, जो छा रहा था। (१६) उन की आंख न तो और तरफ़ मायल हुई और न (हद से) आगे बढ़ी। (१७) उन्हों ने अपने परवरदिगार (की क़ुदरत) की कितनी ही बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (१८) भला तुम लोगों ने लात और उज़्ज़ा को देखा, (१९) और तीसरे मनात को (कि ये बुत कहीं ख़ुदा हो सकते हैं?) (२०) मुश्रिको! क्या तुम्हारे लिए तो बेटे और ख़ुदा के लिए बेटियां? (२१) यह तक़्सीम तो बहुत बे-इंसाफ़ी की है। (२२) वे तो सिर्फ़ नाम ही नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए हैं, ख़ुदा ने तो उन की कोई सनद नहीं उतारी। ये लोग सिर्फ़ (गंदे) गुमान और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे चल रहे है, हालांकि उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन के पास हिदायत आ चुकी है। (२३) क्या जिस चीज़ की इंसान आरज़ू करता है, वह उसे ज़रूर मिलती है? (२४) आख़िरत और दुनिया तो ख़ुदा ही के हाथ में है, (२५)★

और आसमानों में बहुत से फ़रिश्ते हैं, जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा नहीं देती, मगर उस वक़्त कि ख़ुदा जिस के लिए चाहे, इजाज़त बख़्शे और (सिफ़ारिश) पसन्द करे। (२६) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे फ़रिश्तों को (ख़ुदा की) लड़कियों के नाम से मौसूम करते

★रु. २/४ आ २१ ★रु. १/५ आ २५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा लहुम् बिही मिन् अिलमिन्ط इ य्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न-नج व इन्नज़्ज़न-न ला
युग़्नी मिनल्-हक़्क़ि शैअन्ج(२८) फ़-अअ्-रिज़् अम्मन् त-वल्लाلا अन् ज़िक्रिना व
लम् युरिद् इल्लल्-हयातद्दुन्याط(२९) ज़ालि-क मब्-लग़ुहुम् मिनल्अिल्मिط इन्-न
रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अन् सबीलिहीلا व हु-व अअ्-लमु बि-मनिहतदा

● (३०) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा
फ़िल्अर्ज़िلا लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न असाऊ बिमा
अमिलू व यज्ज़ि-यल्लज़ी-न अह्-सनू बिल्हुस्नाج
(३१) अल्लज़ी-न यज्-तनिबू-न कबाइरल्-
इस्मि वल्-फ़वाहि-श इल्लल्-ल-ममط इन्-न रब्ब-क
वासिअुल्-मग़्फ़ि-रतिط हु-व अअ्-लमु बिकुम् इज्
अन्-श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि व इज् अन्तुम् अजिन्-
नतुन् फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम्ج फ़ला तुज़क्कू
अन्फ़ुसकुम्ط हु-व अअ्-लमु बिमनित्तक़ा★(३२)
अ-फ़-रऐतल्लज़ी त-वल्लाلا(३३) व अअ्-ता
क़लीलंव्-व अक्दा (३४) अ-अिन्दहू अिल्मुल्-
ग़ैबि फ़-हु-व यरा (३५) अम् लम् युनब्बअ्
बिमा फ़ी सुहुफ़ि मूसाلا(३६) व इब्राही-

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ ۲۷ ۶۲۱ النجم ۵۳

لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ
شَيْـًٔا ۚ﴿۲۸﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۲۹﴾
ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ
وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿۳۰﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿۳۱﴾
اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ
الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ
فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿۳۲﴾
اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿۳۳﴾ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿۳۴﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ
الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿۳۵﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿۳۶﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ
وَفّٰٓى ﴿۳۷﴾ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿۳۸﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا
مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿۴۰﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَاۗءَ الْاَوْفٰى ﴿۴۱﴾ وَ
اَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿۴۲﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿۴۳﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ
وَاَحْيَا ﴿۴۴﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۴۵﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا
تُمْنٰى ﴿۴۶﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿۴۷﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿۴۸﴾
وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿۴۹﴾ وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادَا ۨ الْاُوْلٰى ﴿۵۰﴾ وَثَمُوْدَا۟ فَمَآ
اَبْقٰى ﴿۵۱﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ﴿۵۲﴾ وَ

منزل

मल्लज़ी वफ़्फ़ाلا(३७) अल्ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़्-र उख़्राلا(३८) व अल्लै-स
लिल्-इन्सानि इल्ला मा सआلا(३९) व अन्-न सअ्-यहू सौ-फ़ युराص(४०)
सुम्-म युज्ज़ाहुल्-जज़ा-अल्-औफ़ाلا(४१) व अन्-न इला रब्बिकल्-मुन्तहाلا(४२)
व अन्नहू हु-व अज़्-ह-क व अब्काلا(४३) व अन्नहू हु-व अमा-त व अह्याلا(४४)
व अन्नहू ख़-ल-क़ज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल्-उन्साلا(४५) मिन् नुत्-फ़तिन् इज़ा तुम्नाلا
(४६) व अन्-न अलैहिन्नश-अतल्-उख़्राلا(४७) व अन्नहू हु-व अग़्ना व अक़्नाلا
(४८) व अन्नहू हु-व रब्बुश्शिअ्-राلا(४९) व अन्नहू अह्-ल-क आ़द-निल्-ऊलाلا
(५०) व समू-द फ़मा अब्क़ाلا(५१) व क़ौ-म नूहिम् - मिन्
क़ब्लुط इन्नहुम् कानू हुम् अज़्-ल-म व अत़्ग़ाط (५२)

● रुकूअ् १/४ ★रु० २/६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (२७) हालांकि उन को इस की कुछ ख़बर नहीं। वे सिर्फ़ गुमान पर चलते हैं और गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में कुछ काम नहीं आता। (२८) तो जो हमारी याद से मुंह फेरे और सिर्फ़ दुनिया ही की ज़िंदगी की तलब में हो, उस से तुम भी मुंह फेर लो। (२९) उन के इल्म की यही इन्तिहा है। तुम्हारा परवरदिगार उस को भी ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटक गया और उसे भी ख़ूब जानता है, जो रास्ते पर चला ● (३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है (और उस ने ख़ल्क़त को) इसलिए (पैदा किया है) कि जिन लोगों ने बुरे काम किए, उन को उन के आमाल का (बुरा) बदला दे और जिन्हों ने नेकियां कीं, उन को नेक बदला दे। (३१) जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े-बड़े गुनाहों और बे-हयाई की बातों से बचते हैं, बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ी बख़्शिश वाला है। वह तुम को ख़ूब जानता है, जब उस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे तो अपने आप को पाक-साफ़ न जताओ। जो परहेज़गार है, वह इसे ख़ूब जानता है। (३२) ★

भला तुम ने उस शख़्स को देखा, जिस ने मुंह फेर लिया, (३३) और थोड़ा-सा दिया (फिर) हाथ रोक लिया। (३४) क्या उस के पास ग़ैब का इल्म है कि वह उसे देख रहा है। (३५) क्या जो बातें मूसा के सहीफ़ों (किताबों) में हैं, उन की उस को ख़बर नहीं पहुंची ? (३६) और इब्राहीम की, जिन्हों ने (इताअत व रिसालत का हक़) पूरा किया। (३७) (वह) यह कि कोई शख़्स दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा। (३८) और यह कि इंसान को वही मिलता है, जिस की वह कोशिश करता है। (३९) और यह कि उस की कोशिश देखी जाएगी, (४०) फिर उस को उस का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, (४१) और यह कि तुम्हारे परवरदिगार ही के पास पहुंचना है। (४२) और यह कि वह हंसाता और रुलाता है, (४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है, (४४) और यह कि वही नर और मादा दो क़िस्म (के हैवान) पैदा करता है, (४५) (यानी) नुत्फ़े से जो (रहम में) डाला जाता है, (४६) और यह कि (क़ियामत को) उसी पर दोबारा उठाना लाज़िम है, (४७) और यह कि वही दौलतमन्द बनाता और मुफ़्लिस करता है, (४८) और यह कि वही शेअरा का मालिक है। (४९) और यह कि उसी ने अव्वल आद को हलाक कर डाला। (५०) और समूद को भी, ग़रज़ किसी को बाक़ी न छोड़ा। (५१) और इन से पहले नूह की क़ौम को भी। कुछ शक नहीं कि वे लोग बड़े ही ज़ालिम और बड़े ही सरकश

● रुबुअ़ १/४ ★रु॰ २/६ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्-मुअ्-तफ़ि-क-त् अह्वा// (५३) फ़-ग़श्शाहा मा ग़श्शा ج (५४) फ़बि-अय्यि
आलाइ रब्बि-क त-त-मारा (५५) हाज़ा नज़ीरुम्-मिनन्नुज़ुरिल्-ऊला (५६)
अज़ि-फ़तिल्-आज़िफ़तु ج (५७) लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिफ़ः ط
(५८) अ-फ़मिन् हाज़ल्-ह़दीसि तअ्-जबून// (५९) व तज़्-हकू-न व ला
तब्कून// (६०) व अन्तुम् सामिदून (६१)
फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ्-बुदू □ ★(६२)

५४ सूरतुल्-क़-मरि ३७

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १४८२ अक्षर,
३४८ शब्द, ५५ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इक़्त-र-बतिस-साअ़तु वन्शक़्क़ल्-क़-मर
(१) व इंय्यरौ आयतंय्युअ्-रिज़ू व यक़ूलू
सिह़रुम्-मुस्तमिर्र (२) व कज़्ज़बू वत्त-बअ़ू
अह्-वा-अहुम् व कुल्लु अम्रिम्-मुस्तक़िर्र (३)
व ल-क़द् जा-अहुम् मिनल्-अम्बाइ मा फ़ीहि
मुज़्दजर// (४) हिक-मतुम्-बालि-ग़तुन् फ़मा
तुग़निन्नुज़ुर// (५) फ़-त-वल्-ल अन्हुम्▨यौ-म
यद्अुद्दाअि इला शैइन् नुकुर// (६) ख़ुश्श-
अ़न् अब्-सारु-हुम् यख़्-रुजू-न मिनल्-अज्दासि क-अन्नहुम् जरादुम्-मुन्तशिर// (७)
मुह्तिअ़ी-न इलद्दाअि ط यक़ूलुल्-काफ़िरू-न हाज़ा यौमुन् अ़सिर (८) कज़्ज़-बत् क़ब्-
लहुम् क़ौमु नूह़िन् फ़-कज़्ज़बू अ़ब्-दना व क़ालू मज्नूनुं व्वज़्दुजिर (९) फ़-दआ
रब्बहू अन्नी मग़लूबुन् फ़न्तसिर् (१०) फ़-फ़-तह्ना अब्वाबस-समाइ बिमाइम्-मुन-हमि-
रिंव्-(११) व फ़ज्जर-नल्-अर्-ज़ अ़ुयूनन् फ़ल्त-क़ल्-माउ अ़ला अम्रिन् क़द् क़ुदिर ج (१२)
व ह़-मल्-नाहु अ़ला ज़ाति अल-वाहिंव-व दुसुरिन्// (१३) तज्री बि-अअ्-युनिना जज़ा-अल्-
लिमन् का-न कुफ़ि-र (१४) व ल-क़त्-त-रक्नाहा आ-य-तन् फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (१५)
फ़-कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (१६) व ल-क़द् यस्सर्नल-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि
फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (१७) कज़्ज़-बत् आ़दुन् फ़-कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (१८)

قال فما خطبكم ٢٧ ٤٢٢ القمر ٥٤

وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾
هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَ
لَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا
سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾
وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌ ۢ بَالِغَةٌ فَمَا
تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ﴿٦﴾
خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ﴿٧﴾
مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿٩﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ
مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ﴿١١﴾ وَّفَجَّرْنَا
الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾ وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ
اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿١٣﴾ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ
اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

منزل ٧

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

थे। (५२) और उसी ने उल्टी हुई बस्तियों को दे पटका। (५३) फिर उन पर छाया, जो छाया। (५४) तो (ऐ इंसान!) तू अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत पर झगड़ेगा? (५५) यह (मुहम्मद) भी अगले डर सुनाने वालों में से एक डर सुनाने वाले हैं। (५६) आने वाली (यानी क़ियामत) क़रीब आ पहुंची। (५७) उस (दिन की तक्लीफ़ों) को ख़ुदा के सिवा कोई दूर नहीं कर सकेगा। (५८) (ऐ ख़ुदा के इंकारियो!) क्या तुम इस कलाम से ताज्जुब करते हो? (५९) और हंसते हो और रोते नहीं, (६०) और तुम ग़फ़लत में पड़ रहे हो, (६१) तो ख़ुदा के आगे सज्दा करो और (उसी की) इबादत करो। (६२)★☐

५४ सूरः क़मर ३७

सूरः क़मर मक्की है, इस में पचपन आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ियामत क़रीब आ पहुंची और चांद शक़ हो (फट) गया। (१) और अगर काफ़िर कोई निशानी देखते हैं, तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह एक हमेशा का जादू है। (२) और उन्हों ने झुठलाया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक़्त मुक़र्रर है। (३) और उन को ऐसे (पिछले) हालात पहुंच चुके हैं, जिन में इबरत है। (४) और पूरी दानाई (हिक्मत) (की किताब भी,) लेकिन डराना उन को कुछ फ़ायदा नहीं देता, (५) तो तुम भी उन की कुछ परवाह न करो, ▨ जिस दिन बुलाने वाला उन को एक नाख़ुश चीज़ की तरफ़ बुलाएगा, (६) तो आंखें नीची किए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे गोया बिखरी हुई टिड्डियां हैं। (७) उस बुलाने वाले की तरफ़ दौड़ते जाते होंगे। काफ़िर कहेंगे यह दिन बड़ा सख़्त है। (८) इन से पहले नूह की क़ौम ने भी झुठलाया था, तो उन्हों ने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा कि दीवाना है और उन्हें डांटा भी। (९) तो उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (ऐ अल्लाह!) मैं (उन के मुक़ाबले में) कमज़ोर हूं, तो (उन से) बदला ले। (१०) पस हमने ज़ोर के मेंह से आसमान के मुहाने खोल दिए। (११) और ज़मीन में चश्मे जारी कर दिए, तो पानी एक काम के लिए, जो मुक़द्दर हो चुका था, जमा हो गया। (१२) और हमने नूह को एक कश्ती पर जो तख़्तों और मेख़ों से तैयार की गयी थी, सवार कर लिया। (१३) वह हमारी आंखों के सामने चलती थी। (यह सब कुछ) उस शख़्स से बदला लेने के लिए किया गया, जिस को काफ़िर मानते न थे। (१४) और हम ने उस को एक इब्रत बना छोड़ा, तो कोई है कि सोचे-समझे? (१५) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ? (१६) और हम ने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे-समझे? (१७) आद ने भी झुठलाया था, सो (देख लो) कि मेरा अज़ाब और डराना

★रु. ३/७ आ ३० ☐ सज्दः १२ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् स़र-स़-रन् फ़ी यौमि नह़्सिम्-मुस्तमिर्र- (१९)
तन्ज़िअ़ुन्ना-स क-अन्नहुम् अअ़्-जाज़ु नख़्लिम्-मुन्क़अ़िर (२०) फ़-कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी
व नुज़ुर (२१) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर
★ (२२) कज़्ज़-बत् समूदु बिन्नुज़ुर (२३) फ़-क़ालू अ-ब-श-रम्-मिन्ना वाहिदन्
नत्तबिअ़ुहू इन्ना इज़ल्लफ़ी ज़लालिंव्-व सुअ़ुर
(२४) अ उल्क़ि-यज़्-ज़िक्रु अ़लैहि मिम्बैनिना
बल् हु-व कज़्ज़ाबुन् अशिर (२५) स-यअ़्-
लमू-न ग़दम्मनिल्-कज़्ज़ाबुल्-अशिर (२६)
इन्ना मुर्सिलुन्नाक़ति फ़ित्-न-तल्-लहुम् फ़र्तक़ि-
ब्हुम् वस्तबिर् (२७) व नब्बिअ्हुम्
अन्नल्मा-अ क़िस्मतुम्-बैनहुम् कुल्लु शिर्बिम्-मुह़्-
त-ज़र (२८) फ़नादौ स़ाहि-बहुम् फ़-तआ़ता
फ़-अ़-क़र (२९) फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व
नुज़ुर (३०) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् सै-ह़तंव्-
वाहि-द-तन् फ़-कानू क-हशीमिल्-मुह़्तज़िर
(३१) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि

وَنُذُرِ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝
تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝
فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝ ءَاُلْقِيَ
الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ۝ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ
الْاَشِرُ ۝ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَ
نَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ
فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ
لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍ بِالنُّذُرِ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ۝ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا كَذٰلِكَ نَجْزِيْ
مَنْ شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ
عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ
بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ
لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ
اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ

फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (३२) कज़्ज़बत् क़ौमु लूतिम्-बिन्नुज़ुर (३३) इन्ना
अर्सल्ना अ़लैहिम् ह़ासिबन् इल्ला आ-ल लूतिन् नज्जैनाहुम् बि-स-ह़रिन् (३४)
निअ़्-म-तम्-मिन् अ़िन्दिना कज़ालि-क नज्ज़ी मन् श-कर (३५) व ल-क़द् अन्ज़-
रहुम् बत़्-तना फ़-तमारौ बिन्नुज़ुर (३६) व ल-क़द् रावदूहु अ़न् ज़ैफ़िही
फ़-त़-मस्ना अअ़्-युनहुम् फ़ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (३७) व ल-क़द् स़ब्ब-ह़हुम् बुक-
र-तन् अ़ज़ाबुम्-मुस्तक़िर (३८) फ़-ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (३९) व ल-क़द्
यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्मुद्दकिर ★ (४०) व ल-क़द् जा-अ आ-ल
फ़िर्औनन्नुज़ुर (४१) कज़्ज़बू बिआयातिना कुल्लिहा फ़-अ-ख़ज़्नाहुम्
अख़्-ज़ अ़ज़ीज़िम्-मुक़्तदिर (४२) अकुफ़्फ़ारुकुम् ख़ैरुम्मिन् उलाइकुम् अम् लकुम्
बरा-अतुन् फ़िज़्ज़ुबुर (४३) अम् यक़ूलू-न नह़्नु जमीअ़ुम्-मुन्तसिर (४४)

★रु. १/८ आ २२ ★रु. २/९ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कैसा हुआ ? (१८) हमने उन पर सख़्त मनहूस दिन में आंधी चलायी। (१९) वह लोगों को (इस तरह) उखेड़े डालती थी, गोया उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं, (२०) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ ? (२१) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (२२) ★

समूद ने भी हिदायत करने वालों को झुठलाया। (२३) और कहा कि भला एक आदमी, जो हम ही में से है, हम उस का पैरवी करें ? यों हो तो हम गुमराही और दीवानगी में पड़ गये। (२४) क्या हम सब में से उसी पर वह्य नाज़िल हुई है ? (नहीं) बल्कि यह झूठा ख़ुदपसन्द है। (२५) उन को कल ही मालूम हो जाएगा कि कौन भूठा ख़ुदपसन्द है। (२६) (ऐ सालेह !) हम उन की आज़माइश के लिए ऊंटनी भेजने वाले हैं तो तुम उन को देखते रहो और सब्र करो। (२७) और उन को आगाह कर दो कि उन में पानी की बारी मुक़र्रर कर दी गयी है। हर (बारी वाले को अपनी) बारी पर आना चाहिए। (२८) तो उन लोगों ने अपने साहिब को बुला लिया और उसने (ऊंटनी को) पकड़ कर उस की कूचें काट डालीं। (२९) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ, (३०) हम ने उन पर (अज़ाब के लिए) एक चीख़ भेजी, तो वे ऐसे हो गये, जैसे बाड़ वाले की सूखी और टूटी हुई बाड़, (३१) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (३२) लूत की क़ौम ने भी डर सुनाने वालों को झुठलाया था, (३३) तो हमने उन पर कंकड़ भरी हवा चलायी, मगर लूत के घर वाले कि हमने उन को पिछली रात ही से बचा लिया, (३४) अपने फ़ज़्ल से शुक्र करने वाले को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं, (३५) और (लूत ने) उन को हमारी पकड़ से डरा भी दिया था, मगर उन्हों ने डराने में शक किया। (३६) और उन से उन के मेहमानों को ले लेना चाहा, तो हमने उन की आंखें मिटा दीं, सो (अब) मेरे अज़ाब और डराने के मज़े चखो। (३७) और उन पर सुबह-सवेरे ही अटल अज़ाब आ नाज़िल हुआ। (३८) तो अब मेरे अज़ाब और डराने के मज़े चखो। (३९) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (४०) ★

और फ़िऔन की क़ौम के पास भी डर सुनाने वाले आए, (४१) उन्हों ने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया, तो हमने उन को इस तरह पकड़ लिया, जिस तरह एक ताक़तवर और ग़ालिब शख़्स पकड़ लेता है। (४२) (ऐ अरब वालो ?) क्या तुम्हारे काफ़िर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए (पहली) किताबों में कोई फ़ारिग़ ख़ती लिख दी गयी है ? (४३) क्या ये लोग कहते हैं कि हमारी जमाअत बड़ी मज़बूत है ? (४४) बहुत जल्द यह जमाअत हार खाएगी और

★रु. १/८ आ २२ ★रु. २/९ आ १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सयुह्-ज़मुल्-जम्अ़ु व युवल्लूनद्दुबुर (४५) बलिस्साअ़तु मौअ़िदुहुम् वस्साअ़तु अद्हा व अमर्र (४६) इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी ज़लालिंव-व सुअ़ुर▨(४७) यौ-म युस्ह़बू-न फ़िन्नारि अ़ला वुजूहिहिम् ज़ूक़ू मस-स स-क़र (४८) इन्ना कुल-ल शैइन् ख़-लक़्-नाहु बि-क़-दर (४९) व मा अम्रुना इल्ला वाह़ि-दतुन् क-लम्ह़िम्-बिल्ब-स़र (५०) व ल-क़द् अह़-लक्ना अश्याअ़कुम् फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (५१) व कुल्लु शैइन् फ़-अ़लूहु फ़िज़्ज़ुबुर (५२) व कुल्लु स़ग़ीरिंव-व कबीरिम्-मुस्ततर (५३) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव-व न-हरिन् (५४) फ़ी मक़्-अ़दि सिद्क़िन् अ़िन-द मलीकिम्-मुक़्तदिर★(५५)

५५ सूरतुर्-रह़्मानि ९७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १६८३ अक्षर, ३५१ शब्द, ७८ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अर्रह़्मानु (१) अ़ल्ल-मल्-क़ुर्आन (२) ख़-ल-क़ल्-इन्सा-न (३) अ़ल्ल-महुल्-बयान (४) अश्शम्सु वल्क़-मरु बिह़ुस्बानिंव्-(५) वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान (६) वस्समा-अ र-फ़-अ़हा व व-ज़-अ़ल्-मीज़ान (७) अल्ला तत्ग़ौ फ़िल्मीज़ान (८) व अक़ीमुल्-वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल्-मीज़ान (९) वल्अर्-ज़ व-ज़-अ़हा लिल-अनामि (१०) फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव-वन्नख़्लु ज़ातुल्-अक्मामि (११) वल्ह़ब्बु ज़ुल्-अ़स़्फ़ि वर्-रैह़ान (१२) फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (१३) ख़-ल-क़ल-इन्सा-न मिन् स़ल्सालिन् कल्फ़ख़्ख़ारि (१४) व ख़-ल-क़ल्-जान-न मिम्-मारिजिम्-मिन्नार (१५) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (१६) रब्बुल-मश्रिक़ैनि व रब्बुल-मग़्रिबैनि (१७) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्-ज़िबान (१८) म-र-जल-बह़्रैनि यल्तक़ियानि (१९) बैनहुमा बर्ज़ख़ुल-ला यब्-ग़ियान (२०) फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (२१)

قال فما خطبکم ٢٧ ٤٢٤ الرحمٰن ٥٥

الجمع ويولون الدبر ﴿٤٥﴾ بل الساعة موعدهم والساعة ادهى
وامر ﴿٤٦﴾ ان المجرمين في ضلل وسعر ﴿٤٧﴾ يوم يسحبون في النار
على وجوههم ذوقوا مس سقر ﴿٤٨﴾ انا كل شيء خلقنه بقدر ﴿٤٩﴾
وما امرنا الا واحدة كلمح بالبصر ﴿٥٠﴾ ولقد اهلكنا اشياعكم
فهل من مدكر ﴿٥١﴾ وكل شيء فعلوه في الزبر ﴿٥٢﴾ وكل صغير
وكبير مستطر ﴿٥٣﴾ ان المتقين في جنت ونهر ﴿٥٤﴾ في مقعد
صدق عند مليك مقتدر ﴿٥٥﴾

سورة الرحمن مدنية وهي ثمان وسبعون اية وثلاث ركوعات — بسم الله الرحمن الرحيم

الرحمن ﴿١﴾ علم القران ﴿٢﴾ خلق الانسان ﴿٣﴾ علمه البيان ﴿٤﴾
الشمس والقمر بحسبان ﴿٥﴾ والنجم والشجر يسجدن ﴿٦﴾ والسماء
رفعها ووضع الميزان ﴿٧﴾ الا تطغوا في الميزان ﴿٨﴾ واقيموا الوزن
بالقسط ولا تخسروا الميزان ﴿٩﴾ والارض وضعها للانام ﴿١٠﴾ فيها
فاكهة والنخل ذات الاكمام ﴿١١﴾ والحب ذو العصف والريحان ﴿١٢﴾
فباي الاء ربكما تكذبن ﴿١٣﴾ خلق الانسان من صلصال كالفخار ﴿١٤﴾
وخلق الجان من مارج من نار ﴿١٥﴾ فباي الاء ربكما تكذبن ﴿١٦﴾ رب
المشرقين ورب المغربين ﴿١٧﴾ فباي الاء ربكما تكذبن ﴿١٨﴾ مرج البحرين
يلتقين ﴿١٩﴾ بينهما برزخ لا يبغين ﴿٢٠﴾ فباي الاء ربكما تكذبن ﴿٢١﴾

منزل ٧

▨ व. लाज़िम ★ रु. ३/१० आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ये लोग पीठ फेर-फेर कर भाग जाएंगे। (४५) उन के वायदे का वक़्त तो क़ियामत है और क़ियामत बड़ी सख़्त और बहुत कड़वी है। (४६) बेशक गुनाहगार लोग गुमराही और दीवानगी में (पड़े हुए) हैं। (४७) उस दिन मुंह के बल दोज़ख़ में घसीटे जाएंगे। अब आग का मज़ा चखो। (४८) हमने हर चीज़ मुक़र्रर अन्दाज़े के साथ पैदा की है। (४९) और हमारा हुक्म तो आंख के झपकने की तरह एक बात होती है। (५०) और हम तुम्हारे हम-मज़हबों को हलाक़ कर चुके हैं, तो कोई है कि सोचे-समझे? (५१) और जो कुछ उन्हों ने किया (उन के) आमालनामों में (दर्ज) है। (५२) (यानी) हर छोटा और बड़ा काम लिख दिया गया है। (५३) जो परहेज़गार हैं, वे बाग़ों और नहरों में होंगे, (५४) (यानी) पाक मक़ाम में हर तरह की क़ुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह में। (५५)★

५५ सूरः रहमान ९७

सूरः रहमान मक्की है, इस में अठहत्तर आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ख़ुदा, जो) निहायत मेहरबान, (१) उसी ने क़ुरआन की तालीम फ़रमायी, (२) उसी ने इंसान को पैदा किया। (३) उसी ने उस को बोलना सिखाया, (४) सूरज और चांद एक मुक़र्रर हिसाब से चल रहे हैं, (५) और बूटियां और पेड़ सज्दा कर रहे हैं। (६) और उसी ने आसमान को बुलंद किया और तराज़ू क़ायम की, (७) कि तराज़ू (से तौलने) में हद से आगे न बढ़ो। (८) और इंसाफ़ के साथ ठीक तौलो और तौल कम मत करो (९) और उसी ने ख़ल्क़त के लिए ज़मीन बिछायी, (१०) उस में मेवे और खजूर के पेड़ हैं, जिन के खोशों पर ग़िलाफ़ होते हैं। (११) और अनाज, जिस के साथ भुस होता है और ख़ुश्बूदार फूल, (१२) तो (ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह!) तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमतों को झुठलाओगे?[१] (१३) उसी ने इंसान को ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से बनाया, (१४) और जिन्नों को आग के शोले से पैदा किया, (१५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (१६) वही दोनों मश्रिक़ों और दोनों मग़रिबों का मालिक (है,) (१७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (१८) उसी ने दो दरिया जारी किए जो आपस में मिलते हैं। (१९) दोनों में एक आड़ है कि (उस से) आगे नहीं बढ़ सकते। (२०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (२१) दोनों दरियाओं से मोती और मूंगे निकलते

---

१. इस आयत में ख़िताब दो जमाअतों की तरफ़ है और इस से मुराद इन्सान और जिन्न हैं, चुनांचे इक्तीसवें आयत में 'सक़ुलान' का लफ़्ज़ है, जिसके मानी हैं दो गिरोह और उनसे जैसा कि हदीसे सही में आया है, जिन्न और इन्सान मुराद हैं और तेतीसवीं आयत में तो साफ़ जिन्न व इन्स का नाम ले कर उन से ख़िताब किया गया है। इसी वजह से हम ने इस आयत के तर्जुमे में, ऐ जिन्न व इन्स के गिरोहो! के लफ़्ज़ बढ़ा दिए हैं।

व. लाज़िम ★रु. ३/१० आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यख़्रुजु मिन्हुमल्-लुअ्लुउ वल्-मर्जानु(२२) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्-
ज़िबान (२३) व लहुल्-जवारिल्-मुन्श-आतु फ़िल्बह़्रि कल-अअ्-लामि(२४)
फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(२५) कुल्लु मन् अ़लैहा फ़ानिंव्-
(२६) व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुलजलालि वल-इक्रामि(२७) फ़बिअय्यि आला-इ
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (२८) यस्-अलुहू मन्
फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि कुल-ल यौमिन् हु-व फ़ी
शअ्निन्(२९) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा
तुकज़्ज़िबान (३०) स-नफ़्-रुग़ु लकुम् अय्यु-
हस्स-क़लानि (३१) फ़बिअय्यि आला-इ
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (३२) यामअ्-श-रल्-
जिन्नि वलइन्सि इनिस्त-त़अ्-तुम् अन् तन्फ़ुज़ू
मिन् अक़्त़ारिस्समावाति वल्अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू ला
तन्फ़ुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान(३३) फ़बिअय्यि
आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (३४) युर्सलु
अ़लैकुमा शुवाज़ुम्-मिन्नारिंव्-व नुहासुन् फ़ला
तन्तसिरानि(३५) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-
कुमा तुकज़्ज़िबान (३६) फ़-इज़न-शक़्क़तिस्-
समाउ फ़-कानत् वर्-द-तन् कद्दिहानि(३७)

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ
الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٥﴾
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٨﴾ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلَّ
يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٠﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ
الثَّقَلَانِ ﴿٣١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٢﴾ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ
اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ لَا
تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿٣٣﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ﴿٣٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٦﴾
فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي
وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٢﴾ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ
بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٩﴾ فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ﴿٥٠﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥١﴾ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ﴿٥٢﴾ فَبِأَيِّ

फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (३८) फ़यौमइज़िल्ला युस-अलु अन्
ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्नुन्(३९) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़ि-
बान (४०) युअ्-रफ़ुल्-मुज्रिमू-न बिसीमाहुम् फ़युअ्-ख़ज़ु बिन्नवासी वल-अक़्दामि
(४१) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (४२) हाज़िही ज-हन्नमुल्लती
युकज़्ज़िबु बिहल-मुज्रिमून(४३) यतूफ़ू-न बैनहा व बै-न ह़मीमिन् आन(४४)
फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ★(४५) व लि-मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही
जन्नतानि(४६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(४७) ज़वाता अफ़्नानिन्
(४८) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (४९) फ़ीहिमा अ़ैनानि तज्रियानि
(५०) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५१) फ़ीहिमा मिन् कुल्लि
फ़ाकिहतिन् ज़ौजानि(५२) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५३)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (२२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२३) और जहाज़ भी उसी के हैं जो नदी में पहाड़ों की तरह ऊंचे खड़े होते हैं, (२४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२५)★●

जो (मख़्लूक़) ज़मीन पर है, सब को फ़ना होना है। (२६) और तुम्हारे परवरदिगार ही की ज़ात (बरकत वाली,) जो जलाल व अज़्मत वाली है, बाक़ी रहेगी, (२७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२८) आसमान व ज़मीन में जितने लोग हैं, सब उसी से मांगते हैं, वह हर दिन काम में लगा रहता है।[१] (२९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३०) ऐ दोनों जमाअतो ! हम बहुत जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं। (३१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३२) ऐ जिन्न व इन्सान के गिरोह ! अगर तुम्हें क़ुदरत हो कि आसमान और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ, तो निकल जाओ और ज़ोर के सिवा तो तुम निकल सकने ही के नहीं।[२] (३३) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३४) तुम पर आग के शोले और धुवां छोड़ दिया जाएगा, तो फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे। (३५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३६) फिर जब आसमान फट कर तेल की तलछट की तरह गुलाबी हो जाएगा, (तो वह कैसा हौलनाक दिन होगा ?) (३७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३८) उस दिन न तो किसी इंसान से उस के गुनाहों के बारे में पूछ-ताछ की जाएगी और न किसी जिन्न से। (३९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४०) गुनाहगार अपने चेहरे ही से पहचान लिए जाएंगे, तो पेशानी के बालों और पांवों से पकड़ लिए जाएंगे। (४१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४२) यही वह जहन्नम है, जिसे गुनाहगार लोग झुठलाते थे▨(४३) वे दोज़ख़ और खौलते हुए गर्म पानी के दर्मियान घूमते फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४५)★

और जो शख़्स अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (४६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४७) उन दोनों में बहुत-सी शाखें (यानी क़िस्म-क़िस्म के मेवों के पेड़ हैं,) (४८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४९) इन में दो चश्मे बह रहे हैं, (५०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५१) उन में सब मेवे दो-दो क़िस्म के हैं, (५२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५३) (जन्नत वाले) ऐसे बिछौनों

१. मतलब यह है कि जितने तसर्रुफ़ात इस दुनिया में हो रहे हैं, उन सब का मस्दर वही रब्बुल आलमीन है।
२. और ज़ोर तुम में है नहीं, तो तुम भाग कर निकल सकते भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुत्तकिई-न अ़ला फ़ुरुशिम्-बताइनुहा मिन् इस्तब्रक़िन्, व ज-नल्-जन्नतैनि दान (५४)
फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५५) फ़ीहिन-न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम्
यत्मिस-हुन्-न इन्सुन् क़ब्-लहुम् व ला जान्न (५६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा
तुकज़्ज़िबान (५७) क-अन्नहुन्नल-याक़ूतु वल्मर्जान (५८) फ़बिअय्यि आला-इ
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५९) हल् जज़ाउल-
इह्सानि इल्लल-इह्सानु (६०) फ़बिअय्यि
आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६१) व
मिन् दूनिहिमा जन्नतानि (६२) फ़बिअय्यि
आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६३) मुद-
हाम्मतानि (६४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-
कुमा तुकज़्ज़िबान (६५) फ़ीहिमा अ़ैनानि
नज़्ज़ाख़तानि (६६) फ़बिअय्यि आला-इ
रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६७) फ़ीहिमा फ़ाकि-
हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान (६८) फ़बिअय्यि
आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६९) फ़ी-
हिन्-न ख़ैरातुन् हिसान (७०) फ़बिअय्यि
आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७१)

قال فما خطبكم ٢٧ ٨٣٦ الواقعة ٥٦

الآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۚ
وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ وَ
مِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُدْهَآمَّتٰنِ ۝
فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝
سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝
اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۝ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۝
وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَاَصْحٰبُ

हूरुम्-मक़्सूरातुन् फ़िल - ख़ियामि (७२) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा
तुकज़्ज़िबान (७३) लम् यत्मिस-हुन्-न इन्सुन् क़ब्-लहुम् व ला जान्न (७४)
फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७५) मुत्तकिई-न अ़ला रफ़्रफ़िन्
ख़ुज़्रिंव्-व अ़ब्क़रिय्यिन् हिसान (७६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान
(७७) तबा-र - कस्मु रब्बि-क ज़िल-जलालि वल् - इक्राम ★ (७८)

५६ सूरतुल् वाक़िअ़ति ४६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १७६८ अक्षर, ३८४ शब्द, ९६ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़ा व-क़-अ़तिल-वाक़िअ़तु (१) लै-स लिवक़्-अ़तिहा काज़िबतुन् (२)
ख़ाफ़ि-ज़तुर-राफ़िअ़तुन् (३) इज़ा रुज्जतिलअर्ज़ु रज्जंव- (४) व बुस्सतिल-
जिबालु बस्सन् (५) फ़-कानत् हबा-अम्-मुम्बस्संव- (६) व कुन्तुम् अज़्वाजन्
सला-सः (७) फ़-अस्हाबुल-मैमनति मा अस्हाबुल्-मैमनः (८)

★रु. ३/१३ आ ३३ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पर जिन के स्तर अतलस के हैं, तकिया लगाये हुए होंगे और दोनों बाग़ों के मेवे क़रीब (झुक रहे) हैं। (५४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५५) इन में नीची निगाह वाली औरतें हैं जिन को जन्नत वालों से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने, (५६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५७) गोया वे याक़ूत और मर्जान हैं। (५८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५९) नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है, (६०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६१) और इन बाग़ों के अलावा दो बाग़ और हैं, (६२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६३) दोनों ख़ूब गहरे हरे, (६४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे। (६५) इन में दो चश्मे उबल रहे हैं, (६६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६७) इन में मेवे और खजूरें और अनार हैं। (६८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६९) इन में नेक सीरत (और) ख़ूबसूरत औरतें हैं, (७०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७१) (वे) हूरें (हैं, जो) ख़ेमों में छिपी (हैं), (७२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७३) उन को (जन्नत वालों में) न किसी इंसान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने, (७४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७५) हरी क़ालीनों और उम्दा मस्नदों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (७६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७७) (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारा परवरदिगार, जो जलाल व अज़्मत का मालिक है, उस का नाम बड़ा बरकत वाला है। (७८) ★

५६ सूरः वाक़िअः ४६

सूरः वाक़िअः मक्की है, इस में ९६ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब वाक़ेअ होने वाली वाक़ेअ हो जाए, (१) उस के वाक़ेअ होने में कुछ झूठ नहीं, (२) किसी को पस्त करे, किसी को बुलंद, (३) जब ज़मीन भूंचाल से कांपने लगे, (४) और पहाड़ टूट-टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएं, (५) फिर ग़ुबार हो कर उड़ने लगें, (६) और तुम लोग तीन क़िस्म हो जाओ, (७) तो दाहिने हाथ वाले, (सुब्हानल्लाह!) दाहिने हाथ वाले क्या (ही चैन में) हैं, (८)

★रु. ३/१३ आ ३३ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अस्हाबुल-मश्-अ-मति ۙ मा अस्-हाबुल-मश्-अ-मः ط (९) वस्साबिक़ूनस्-साबिक़ून لا
(१०) उला-इकल्-मुक़र्रबून ج (११) फ़ी जन्नातिन्नअीम (१२) सुल्लतुम्-मिनल-
अव्वलीन لا (१३) व क़लीलुम्-मिनल-आख़िरीन ط (१४) अला सुरुरिम्-मौज़ूनतिम् لا
(१५) -मुत्तकिई-न अलैहा मु-त-क़ाबिलीन (१६) यतूफ़ु अलैहिम् विल्दानुम्-मु-
ख़ल्लदून لا (१७) बि-अक्वाबिव्-व अबारी-क़ ۙ
व कअ्सिम्-मिम्-मअीनिल- لا (१८) ला युसद्-
दअू-न अन्हा व ला युन्ज़िफ़ून لا (१९) व
फ़ाकिहतिम्-मिम्मा य-त-ख़य्यरून لا (२०) व
लह़्मि तैरिम्-मिम्मा यश्तहून ط (२१) व ह़ूरुन्
अीनुन् لا (२२) क-अम्सालिल-लुअ्लुइल-मक्नून ج
(२३) जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्-मलून (२४)
ला यस्-मअू-न फ़ीहा लग्वंव-व ला तअ्सीमा لا
(२५) इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा (२६)
व अस्ह़ाबुल-यमीनि ۙ मा अस्ह़ाबुल-यमीन ط (२७)
फ़ी सिद्रिम्-मख़्ज़ूदिंव- لا (२८) व तल्हिम्-
मन्ज़ूदिंव- لا (२९) व ज़िल्लिम्-मम्दूदिंव्- لا
(३०) व माइम्-मस्कूबिंव्- لا (३१) व

الواقعة ٥٦ ٤٢٧ قال فما خطبكم ٢٧

الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ؕ (٩) وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۚ (١٠) اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ (١١)
فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (١٢) ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ (١٣) وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ (١٤)
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ (١٥) مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ (١٦) يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُوْنَ ۙ (١٧) بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ (١٨) لَّا يُصَدَّعُوْنَ
عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۙ (١٩) وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ (٢٠) وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا
يَشْتَهُوْنَ ؕ (٢١) وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۙ (٢٢) كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ (٢٣) جَزَآءً بِمَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٢٤) لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۙ (٢٥) اِلَّا قِيْلًا
سَلٰمًا سَلٰمًا (٢٦) وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ؕ (٢٧) فِيْ سِدْرٍ
مَّخْضُوْدٍ ۙ (٢٨) وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ (٢٩) وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ (٣٠) وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۙ (٣١) وَّ
فَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۙ (٣٢) لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۙ (٣٣) وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ؕ (٣٤)
اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۙ (٣٥) فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۙ (٣٦) عُرُبًا اَتْرَابًا ۙ (٣٧)
لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ (٣٨) ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ (٣٩) وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ (٤٠)
وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ؕ (٤١) فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ۙ (٤٢)
وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۙ (٤٣) لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ (٤٤) اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ
ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۚ (٤٥) وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۚ (٤٦) وَكَانُوْا
يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ (٤٧) اَوَ
اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ (٤٨) قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۙ (٤٩) لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ

منزل ٧

फ़ाकिहतिन् कसीरतिल- لا (३२) ला मक़्तूअतिंव-व ला मम्नूअतिंव्- لا (३३) व
फ़ुरुशिम्-मर्फ़ूअः ط (३४) इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् لا (३५) फ़-ज-अल्नाहुन-न
अब्कारन् لا (३६) अुरुबन् अतराबल- لا (३७) लि-अस्ह़ाबिल-यमीन ط★ (३८) सुल्ल-
तुम्-मिनल्-अव्वलीन لا (३९) व सुल्लतुम्-मिनल-आख़िरीन ط (४०) व अस्-ह़ाबुश्शि-
मालि ۙ मा अस्ह़ाबुश्शिमाल ط (४१) फ़ी समूमिंव्-व ह़मीमिंव्- لا (४२) व ज़िल्लिम्-
मिंय्यह़्मूमिल्- لا (४३) ला बारिदिंव-व ला करीम (४४) इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क
मुत-रफ़ीन ج (४५) व कानू युसिर्रू-न अ़-लल्-ह़िन्सिल-अ़ज़ीम ج (४६) व कानू यक़ूलू-न ۙ अ-व
अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ इन्ना ल-मब्अूसून لا (४७)
आबाउनल्-अव्वलून (४८) क़ुल् इन्नल-अव्वली-न वलआख़िरी-न لا (४९)

★रु. १/१४ आ ३८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और बाए हाथ वाले (अफ़सोस !) बाएं हाथ वाले क्या (अज़ाब में गिरफ़्तार) हैं, (९) और जो आगे बढ़ने वाले हैं, (उन का क्या कहना) वे आगे ही बढ़ने वाले हैं, (१०) वही (ख़ुदा के) मुक़र्रब हैं, (११) नेमत की बहिश्त में, (१२) वे बहुत से तो अगले लोगों में से होंगे, (१३) और थोड़े से पिछलों में से, (१४) (लाल व याक़ूत वग़ैरह से) जड़े हुए तख़्तों पर, (१५) आमने-सामने तकिया लगाये हुए, (१६) नवजवान ख़िद्मतगुज़ार, जो हमेशा (एक ही हालत में) रहेंगे, उन के आस-पास फिरेंगे। (१७) यानी आबख़ोरे और आफ़ताबे और साफ़ शराब के गिलास ले ले कर, (१८) इस से न तो सर में दर्द होगा और न उन की अक़्लें मारी जाएंगी। (१९) और मेवे, जिस तरह के उन को पसन्द हों, (२०) और परिंदों का गोश्त, जिस क़िस्म का उन का जी चाहे, (२१) और बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें, (२२) जैसे (हिफ़ाज़त से) तह किए हुए (आबदार) मोती। (२३) यह उन के आमाल का बदला है, जो वे करते थे। (२४) वहां न बेहूदा बात सुनेंगे और न गाली-गलौज, (२५) हां, उन का कलाम सलाम-सलाम (होगा,) (२६) और दाहिने हाथ वाले ! (सुब्हानल्लाह !) दाहिने हाथ वाले क्या (ही ऐश में) हैं ? (२७) (यानी) बे-कांटे की बेरियों, (२८) और तह-ब-तह केलों, (२९) और लम्बे-लम्बे सायों, (३०) और पानी के झरनों, (३१) और ज़्यादा से ज़्यादा मेवों (के बाग़ों) में, (३२) जो न कभी ख़त्म हों और न उन से कोई रोके,[1] (३३) और ऊंचे-ऊंचे फ़र्शों में, (३४) हम ने इन (हूरों) को पैदा किया, (३५) तो उन को कुंवारियां बनाया, (३६) (और शौहरों की) प्यारियां और हम-उम्र, (३७) (यानी) दाहिने हाथ वालों के लिए, (३८)★

(ये) बहुत से तो अगले लोगों में से हैं, (३९) और बहुत से पिछलों में से। (४०) और बाएं हाथ वाले (अफ़सोस !) बाएं हाथ वाले क्या (ही अज़ाब में) हैं। (४१) (यानी दोज़ख़ की) लपट और खौलते हुए पानी में, (४२) और स्याह धुएं के साए में, (४३) (जो) न ठंडा (है,) न ख़ुशनुमा, (४४) ये लोग इस से पहले नेमतों के ऐश में पड़े हुए थे, (४५) और बड़े गुनाह पर अड़े हुए थे, (४६) और कहा करते थे कि भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये और हड्डियां (ही हड्डियां रह गये) तो क्या हमें फिर उठाना होगा ? (४७) और क्या हमारे बाप-दादा को भी ? (४८) कह दो कि बेशक पहले और पिछले, (४९) (सब) एक मुक़र्रर दिन के वक़्त पर जमा

---

१. यानी इस में से कुछ टूट नहीं चुका।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ल-मज्मूअ़ू-न इला मीक़ाति यौमिम्-मअ़्लूम (५०) सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ा-
ल्लूनल-मुकज़्ज़िबून (५१) ल-आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् ज़क़्क़ूम (५२)
फ़मालिऊ-न मिन्हल-बुतून (५३) फ़-शारिबू-न अ़लैहि मिनल् ह़मीमि (५४)
फ़-शारिबू-न शुर्बल्-हीम् (५५) हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन (५६) नह़्नु ख़-
लक़्ना-कुम् फ़लौला तुसद्दिक़ून (५७) अ-
फ़-रऐतुम् मा तुम्नून (५८) अ अन्तुम्
तख़्लुक़ूनहू अम् नह़्नुल-ख़ालिक़ून (५९)
नह़्नु क़द्-दर्ना बैनकुमुलमौ-त व मा नह़्नु
बिमस्बूक़ीन (६०) अ़ला अन् नुबद्-दि-ल
अम्-सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फ़ी मा ला तअ़्-
लमून (६१) व ल-क़द् अ़लिम्तुमुन्-नश्-अ-
तुल-ऊला फ़लौला त-ज़क्करून (६२) अ-फ़-
रऐतुम् मा तह़्रुसून (६३) अ अन्तुम्
तज़्-रऊनहू अम् नह़्नुज़्ज़ारिऊन (६४) लौ
नशाउ ल-ज-अ़ल्नाहु ह़ुतामन् फ़-ज़ल्तुम् त-फ़क्कहून
(६५) इन्ना ल-मुग़रमून (६६) बल् नह़्नु
मह़्रूमून (६७) अ-फ़-रऐतुमुल्-मा-अल्लज़ी
तश्-रबून (६८) अ अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनलमुज़्नि अम् नह़्नुल-मुन्ज़िलून (६९)
लौ नशाउ ज-अ़ल्नाहु उजाजन् फ़लौला तश्कुरून (७०) अ-फ़-रऐतुमुन्-नारल्लती
तूरून (७१) अ अन्तुम् अन-शअ्-तुम् श-ज-र-तहा अम् नह़्नुल-मुन्शिऊन (७२)
नह़्नु ज-अ़ल्नाहा तज़्-कि-र-तंव्-व मताअ़ल्-लिलमुक़्वीन (७३) फ़-सब्बिह़ बिस्मि
रब्बिकल-अ़ज़ीम ★●(७४) फ़ला उक़्सिमु बि-मवाक़िअ़िन्नुजूम (७५) व इन्नहू
ल-क़-समुल्-लौ तअ़्-लमू-न अ़ज़ीम (७६) इन्नहू लक़ुर्आनुन् करीम (७७) फ़ी
किताबिम्-मक्नूनिल- (७८) -ला यमस्सुहू इल्लल-मुतह-हरून (७९) तन्ज़ीलुम्-
मिर्रब्बिल - आ़लमीन (८०) अ-फ़बिहाज़ल - ह़दीसि अन्तुम् मुद्हिनून
(८१) व तज़्-अ़लू-न रिज़् - क़कुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून (८२)

قال فما خطبکم ۲۷   ۴۲۸   الواقعة ۵۶

إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّآلُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ۝
لَآكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ ۝ فَمَالِـُٔونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝
فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۝ فَشَارِبُونَ شُرْبَ الْهِيمِ ۝ هَٰذَا
نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝ نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ۝
أَفَرَأَيْتُم مَّا تُمْنُونَ ۝ ءَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۝ نَحْنُ
قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ
وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْ
لَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ۝ ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ
الزَّارِعُونَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۝ إِنَّا
لَمُغْرَمُونَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝
ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ۝ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنَاهُ
أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۝ ءَأَنتُمْ
أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا
لِّلْمُقْوِينَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝ فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ۝
وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۝ فِي كِتَابٍ
مَّكْنُونٍ ۝ لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ۝ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝
أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ۝ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ۝

منزل ۷

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

किए जाएंगे। (५०) फिर तुम ऐ झुठलाने वाले गुमराहो ! (५१) थूहर के पेड़ खाओगे, (५२) और इसी से पेट भरोगे, (५३) और इस पर खौलता हुआ पानी पियोगे, (५४) और पियोगे भी तो इस तरह जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं, (५५) बदले के दिन यह उन की मेहमानी होगी। (५६) हम ने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया है, तो तुम (दोबारा उठने को) क्यों सच नहीं समझते ? (५७) देखो तो कि जिस (नुत्फ़े) को तुम (औरतों के रहम में) डालते हो, (५८) क्या तुम इस (से इंसान) को बनाते हो या हम बनाते हैं ? (५९) हम ने तुम में मरना ठहरा दिया है और हम इस (बात) से आजिज़ नहीं, (६०) कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आएं और तुम को ऐसे जहान में जिस को तुम नहीं जानते, पैदा कर दें। (६१) और तुम ने पहली पैदाइश तो जान ही ली है, फिर तुम सोचते क्यों नहीं ? (६२) भला देखो तो कि जो कुछ तुम बोते हो, (६३) तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं ? (६४) अगर हम चाहें तो उसे चूरा-चूर कर दें और तुम बातें बनाते रह जाओ। (६५) (कि हाय !) हम तो मुफ़्त जुर्माने में फंस गये, (६६) बल्कि हम हैं ही बे-नसीब। (६७) भला देखो तो कि जो पानी तुम पीते हो, (६८) क्या तुम ने उस को बादल से नाज़िल किया है या हम नाज़िल करते हैं ? (६९) अगर हम चाहें तो हम उसे खारी कर दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते ? (७०) भला देखो तो, जो आग तुम पेड़ से निकालते हो, (७१) क्या तुम ने उस पेड़ को पैदा किया है या हम पैदा करते हैं ? (७२) हम ने उसे याद दिलाने और मुसाफ़िरों के बरतने को बनाया है। (७३) तो तुम अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग के नाम की तस्बीह करो। (७४)★●

हमें तारों की मंज़िलों की क़सम ! (७५) और अगर तुम समझो तो यह बड़ी क़सम है, (७६) कि यह बड़े रुत्बे का क़ुरआन है, (७७) (जो) किताबे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ है।) (७८) इस को वही हाथ लगाते हैं, जो पाक हैं। (७९) परवरदिगारे आलम की तरफ़ से उतारा गया है। (८०) क्या तुम उस कलाम से इंकार करते हो ? (८१) और अपना वज़ीफ़ा यह बनाते हो कि (इसे)

★रु. २/१५ आ ३६ ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़लौला इज़ा ब-ल-ग़तिल-हुल्क़ूम॥(८३) व अन्तुम् हीनइज़िन् तन्ज़ुरून॥(८४) व
नह्नु अक्-रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्ला तुब्सिरून (८५) फ़लौला इन् कुन्तुम्
ग़ै-र मदीनीन॥(८६) तर्जिऊनहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (८७) फ़-अम्मा इन्
का-न मिनल-मुक़र्रबीन॥(८८) फ़रौहुं व्-व रैहानुं व्-व जन्नतु नअीम (८९) व
अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल-यमीन॥(९०)
फ़-सलामुल्ल - क मिन् अस्हाबिल - यमीन॰
(९१) व अम्मा इन् का-न मिनल-
मुकज़्ज़िबीनज़्-ज़ाल्लीन॥ (९२) फ़नुज़ुलुम्-
मिन् हमीमिंव्-॥ (९३) व तस्लि-यतु
जहीम (९४) इन्-न हाज़ा लहु - व
हक़्क़ुल - यक़ीन ॰ (९५) फ़सब्बिह्
बिस्मि रब्बिकल - अज़ीम ★ (९६)

قال فما خطبكم ٢٧ — ٤٢٩ — الحديد ٥٧

فلولا إذا بلغت الحلقوم ٨٣ وأنتم حينئذ تنظرون ٨٤ ونحن أقرب
إليه منكم ولكن لا تبصرون ٨٥ فلولا إن كنتم غير مدينين ٨٦
ترجعونها إن كنتم صدقين ٨٧ فأما إن كان من المقربين ٨٨
فروح وريحان وجنت نعيم ٨٩ وأما إن كان من أصحب اليمين ٩٠
فسلم لك من أصحب اليمين ٩١ وأما إن كان من المكذبين
الضالين ٩٢ فنزل من حميم ٩٣ وتصلية جحيم ٩٤ إن هذا
لهو حق اليقين ٩٥ فسبح باسم ربك العظيم ٩٦
سورة الحديد مدنية — بسم الله الرحمن الرحيم
سبح لله ما في السموت والأرض وهو العزيز الحكيم ١ له ملك
السموت والأرض يحيي ويميت وهو على كل شيء قدير ٢ هو
الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شيء عليم ٣ هو
الذي خلق السموت والأرض في ستة أيام ثم استوى على
العرش يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها وما ينزل
من السماء وما يعرج فيها وهو معكم أين ما كنتم والله بما
تعملون بصير ٤ له ملك السموت والأرض وإلى الله ترجع
الأمور ٥ يولج اليل في النهار ويولج النهار في اليل وهو عليم
بذات الصدور ٦ آمنوا بالله ورسوله وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين

५७ सूरतुल् हदीदि ९४

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २५९९ अक्षर, ५८६ शब्द, २९ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति
वल्अर्ज़ि ॰ व हुवल-अज़ीज़ुल-हकीम (१) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि
युह्यी व युमीतु ॰ व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर (२) हुवल -
अव्वलु वल-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्बातिनु ॰ व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम
(३) हुवल्लज़ी ख़-ल - क़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन्
सुम्मस्तवा अ-लल्अर्शि॰ यअ्-लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा
यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ्-रुजु फ़ीहा ॰ व हु-व म-अकुम् ऐनमा
कुन्तुम् ॰ वल्लाहु बिमा तअ् - मलू-न बसीर (४) लहू मुल्कुस्समावाति
वल्अर्ज़ि ॰ व इलल्लाहि तुर्जअुल - उमूर (५) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि
व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि ॰ व हु-व अलीमुम् - बिज़ातिस् - सुदूर (६)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

झुठलाते हो, (८२) भला जब रूह गले में आ पहुंचती है, (८३) और तुम उस वक़्त (की हालत को) देखा करते हो, (८४) और हम उस (मरने वाले) से तुम से भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम को नज़र नहीं आते। (८५) पस अगर तुम किसी के बस में नहीं हो, (८६) तो अगर सच्चे हो तो रूह को फेर क्यों नहीं लेते ? (८७) फिर अगर वह (ख़ुदा के) मुक़र्रिबों में से है, (८८) तो (उस के लिए) आराम और ख़ुश्बूदार फल और नेमत के बाग़ हैं, (८९) और अगर वह दाएं हाथ वालों में से है, (९०) तो (कहा जाएगा कि) तुझ पर दाहिने हाथ वालों की तरफ़ से सलाम, (९१) और अगर वह झुठलाने वाले गुमराहों में से है, (९२) तो (उस के लिए) खौलते पानी की मेहमानी है, (९३) और जहन्नम में दाख़िल किया जाना। (९४) यह (दाख़िल किया जाना यक़ीनन सही यानी) हक़्क़ुल यक़ीन है। (९५) तुम अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग के नाम की तस्बीह करते रहो। (९६) ★



५७ सूरः हदीद ९४

सूरः हदीद मदनी है, इस में २९ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो मख़्लूक़ आसमानों और ज़मीन में है, ख़ुदा की तस्बीह करती है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (१) आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, (वही) ज़िंदा करता और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२) वह (सब से) पहला और (सब से) पिछला और (अपनी क़ुदरतों से सब पर) ज़ाहिर और (अपनी ज़ात से) पोशीदा है और वह तमाम चीज़ों को जानता है। (३) वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा। जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती और जो उस से निकलती है और आसमान से उतरती और जो उस की तरफ़ चढ़ती है, सब मालूम है और तुम जहां कहीं हो, वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देख रहा है। (४) आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और सब मामले उसी की तरफ़ रुजूअ होते हैं। (५) (वही) रात को दिन में दाख़िल करता और दिन को रात में दाख़िल करता है और वह दिलों के भेदों

★रु॰ ३/१६ आ २२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िक़ू मिम्मा ज-अ-लकुम् मुस्तख़-लफ़ी-न फ़ीहि
फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फ़क़ू लहुम् अज्-रुन् कबीर (७) व मा लकुम्
ला तुअ्मिनू-न बिल्लाहि ج वर्रसूलु यद्‌ऊकुम् लितुअ्मिनू बिरब्बिकुम् व क़द् अ-ख़-ज
मीसाक़कुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (८) हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अ़ला
अ़ब्दिही आयातिम्-बय्यिनातिल-लियुख़्रि-जकुम्
मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ط व इन्नल्ला-ह बिकुम्
ल-रऊफ़ुर्रहीम (९) व मा लकुम् अल्ला
तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरा
सुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط ला यस्तवी मिन्कुम् मन्
अन्फ़-क़ मिन् क़ब्लिल-फ़त्हि व क़ात-ल ط उलाइ-क
अअ्-ज़मु द-र-ज-तम्-मिनल्लज़ी-न अन्फ़क़ू मिम्-
बअ्-दु व क़ातलू ط व कुल्लंव्व-अ़-दल्लाहुल्-हुस्ना ط
वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर ★ (१०) मन्
ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्-ज़न् ह़-स-नन् फ़-
युज़ाअि-फ़हू लहू व लहू अज्रुन् करीम ج (११)
यौ-म त-रल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति यस्आ
नूरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् बुश्रा-कुमुल्यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्‌त-
हल-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ط जालि-क हुवल-फ़ौज़ुल-अ़ज़ीम ج (१२) यौ-म
यक़ूलुल-मुनाफ़िक़ू-न वल्मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ी-न आमनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन्
नूरिकुम् ج क़ीलर्जिअू वरा-अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन् ط फ़ज़ुरि-ब बैनहुम् बिसू-
रिल्लहू बाबुन् ط बातिनुहू फ़ीहिर्रह्-मतु व ज़ाहिरुहू मिन क़ि-बलिहिल-अ़ज़ाब ط
(१३) युनादूनहुम् अ-लम् नकुम्-म-अ़कुम् ط क़ालू बला व लाकिन्नकुम्
फ़-तन्तुम् अन्फ़ुसकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व ग़र्रत्कुमुल - अमानिय्यु
हत्ता जा-अ अम्रुल्लाहि व ग़र्रकुम् बिल्लाहिल - ग़रूर (१४)

قال فما خطبكم ٢٧ ٤٣٠ الحديد ٥٧

فِيهِ ۚ فَالَّذِينَ اٰمَنُوا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ
مِيثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖ اٰيٰتٍ
بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّورِ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝
وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۚ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ اَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقٰتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
الْحُسْنٰى ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُورُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ
جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِينَ اٰمَنُوا انْظُرُونَا
نَقْتَبِسْ مِنْ نُّورِكُمْ ۚ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا ۚ فَضُرِبَ
بَيْنَهُمْ بِسُورٍ لَّهٗ بَابٌ ۚ بَاطِنُهٗ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ۝ يُنَادُونَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۚ قَالُوا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ
اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ
اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُورُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ

★रु. १/१७ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तक को जानता है। (६) (तो) ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और जिस (माल) में उस ने तुम को (अपना) नायब बनाया है, उस में से ख़र्च करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए और (माल) ख़र्च करते रहे, उन के लिए बड़ा सवाब है। (७) और तुम कैसे लोग हो कि ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते, हालांकि (उस के) पैग़म्बर तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ और अगर तुम को बावर हो, तो वह तुम से (इस का) अह्द भी ले चुका है। (८) वही तो है जो अपने बन्दे पर खुले (मतलब वाली) आयतें नाज़िल करता है, ताकि तुम को अंधेरे में से निकाल कर रोशनी में लाए। बेशक ख़ुदा तुम पर निहायत शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है। (९) और तुम को क्या हुआ है कि ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च नहीं करते, हालांकि आसमानों और ज़मीन की विरासत ख़ुदा ही की है, जिस शख़्स ने तुम में से (मक्का की) फ़त्ह से पहले ख़र्च किया और लड़ाई की, वे (और जिस ने ये काम पीछे किए, वे) बराबर नहीं। उन का दर्जा उन लोगों से बढ़ कर है, जिन्हों ने बाद में (माल का) ख़र्च और (कुफ़्फ़ार से) जिहाद व क़िताल किया और ख़ुदा ने सब से नेक (सवाब) (का) वायदा तो किया है और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा उन्हें जानता है। (१०)★

कौन है जो ख़ुदा को नेक (नीयत और ख़ुलूस से) क़र्ज़ दे, तो वह उस को उस से दोगुना अदा करे और वह उस के लिए इज़्ज़त का बदला (यानी) जन्नत है। (११) जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन (के ईमान) का नूर उन के आगे-आगे और दाहिनी तरफ़ चल रहा है, (तो उन से कहा जाएगा कि) तुम को बशारत हो (कि आज तुम्हारे लिए) बाग़ हैं, जिन के तले नहरें बह रही हैं, उन में हमेशा रहोगे। यही बड़ी कामियाबी है। (१२) उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मोमिनों से कहेंगे कि हमारी तरफ़ (शफ़क़त की) नज़र कीजिए कि हम भी तुम्हारे नूर से रोशनी हासिल करें तो उनसे कहा जाएगा कि पीछे को लौट जाओ, (वहां) और नूर तलाश करो, फिर उन के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिस में एक दरवाज़ा होगा, जो उस के अन्दरूनी जानिब है, उस में तो रहमत है और जो बाहरी जानिब है, उस तरफ़ अज़ाब (व तक्लीफ़) (१३) तो मुनाफ़िक़ लोग मोमिनों से कहेंगे कि क्या हम (दुनिया में) तुम्हारे साथ न थे, वे कहेंगे, क्यों नहीं थे ? लेकिन तुम ने ख़ुद अपने आप को बला में डाला और (हमारे हक़ में हादसे के) इंतिज़ार में रहे और (इस्लाम में) शक किया और (लम्बी-चौड़ी) आरज़ूओं ने तुम को धोखा दिया, यहां तक कि ख़ुदा का हुक्म आ पहुंचा और ख़ुदा के बारे में तुम को (शैतान)

★रु. १/१७ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़ल्यौ-म ला युअ्-ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद्-य-तुं व्-व ला मिनल्लज़ी-न क-फ़रू मअ्वाकुमुन्नारु
हि-य मौलाकुम् व बिअ्-सलमसीर (१५) अ-लम् यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन्
तख़्श-अ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्हक़्क़ि व ला यकूनू कल्लज़ी-न
ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लु फ़-ता-ल अलैहिमुल-अ-मदु फ़-क़-सत् क़ुलूबुहुम् व कसीरुम्-
मिन्हुम् फ़ासिक़ून (१६) इअ्-लमू अन्नल्ला-ह
युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा क़द् बय्यन्ना
लकुमुल-आयाति ल-अ़ल्लकुम् तअ्-क़िलून (१७)
इन्नल-मुस्सद्दिक़ी-न वल्मुस्सद्दिक़ाति व अक़्-
र-ज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह्-स-नंय्युज़ाअफ़ु लहुम् व
लहुम् अज्रुन् करीम (१८) वल्लज़ी-न आमनू
बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्सिद्दीक़ू-न
वश्शु-ह-दाउ अिन्-द रब्बिहिम् लहुम् अज्-रुहुम्
व नूरुहुम् वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि-
आयातिना उलाइ-क अस्हाबुल-जहीम★ (१९)
इअ्-लमू अन्नमल् हयातुद्दुन्या लअिबुं व्-व
लह्वुं व्-व ज़ीनतुं व्-व तफ़ाख़ुरुम्-बैनकुम् व
तकासुरुन् फ़िल-अम्वालि वल-औलादि क-म-सलि ग़ैसिन् अअ्-ज-बल-कुफ़्फ़ा-र नबातुहू
सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन् व फ़िल्आख़िरति अज़ाबुन्
शदीदुं व्-व मग़्फ़ि-र-तुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन् व मल-हयातुद्दुन्या इल्ला मताअुल-
ग़ुरूर (२०) साबिक़ू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अर्-
ज़ुहा क-अर्ज़िस्समाइ वल्अर्ज़ि उअिद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही
ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल-अज़ीम (२१) मा
असा-ब मिम्-मुसीबतिन् फ़िल्अर्ज़ि वला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन्
क़ब्लि अन् नब्-र-अहा इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरुल - (२२)

ولا من الذين كفروا ماوىكم النار هي مولىكم وبئس المصير
الم يان للذين امنوا ان تخشع قلوبهم لذكر الله وما نزل من
الحق ولا يكونوا كالذين اوتوا الكتب من قبل فطال عليهم
الامد فقست قلوبهم وكثير منهم فسقون ۝ اعلموا ان الله
يحي الارض بعد موتها قد بينا لكم الايت لعلكم تعقلون ۝
ان المصدقين والمصدقت واقرضوا الله قرضا حسنا يضعف
لهم ولهم اجر كريم ۝ والذين امنوا بالله ورسله اولئك هم
الصديقون والشهداء عند ربهم لهم اجرهم ونورهم
والذين كفروا وكذبوا بايتنا اولئك اصحب الجحيم ۝ اعلموا
انما الحيوة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم وتكاثر في
الاموال والاولاد كمثل غيث اعجب الكفار نباته ثم يهيج
فترىه مصفرا ثم يكون حطاما وفي الاخرة عذاب شديد و
مغفرة من الله ورضوان وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور ۝
سابقوا الى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض السماء
والارض اعدت للذين امنوا بالله ورسله ذلك فضل الله
يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم ۝ ما اصاب من
مصيبة في الارض ولا في انفسكم الا في كتب من قبل ان

★रु. २/१८ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दग़ाबाज़ दग़ा देता रहा। (१४) तो आज तुम से मुआवज़ा नहीं लिया जाएगा और न (वह) काफ़िरों ही से (क़ुबूल किया जाएगा)। तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है (कि) वही तुम्हारे लायक़ है और वह बुरी जगह है। (१५) क्या अभी मोमिनों के लिए इस का वक़्त नहीं आया कि ख़ुदा की याद करने के वक़्त और (क़ुरआन) जो (ख़ुदा-ए-बर-) हक़ (की तरफ़) से नाज़िल हुआ है, उस के सुनने के वक़्त उन के दिल नर्म हो जाएं और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं, जिन को (उन से) पहले किताबें दी गयी थीं, फिर उन पर लम्बा ज़माना गुज़र गया, तो उन के दिल सख़्त हो गए और उन में स अक्सर ना-फ़रमान हैं। (१६) जान रखो कि ख़ुदा ही ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा करता है। हम ने अपनी निशानियां तुम से खोल-खोल कर बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो।(१७) जो लोग ख़ैरात करने वाले हैं मर्द भी और औरतें भी और ख़ुदा को नेक (नीयत और ख़ुलूस से) क़र्ज़ देते हैं, उन को दोगुना अदा किया जाएगा और उन के लिए इज़्ज़त का बदला है। (१८) और जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाए, यही अपने परवरदिगार के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं। उन के लिए उन (के आमाल) का बदला होगा और उन (के ईमान) की रोशनी और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़ख़ी हैं। (१९)★

जान रखो कि दुनिया की ज़िंदगी सिर्फ़ खेल और तमाशा और ज़ीनत (व आराइश) और तुम्हारे आपस में घमंड (व तारीफ़) और माल व औलाद की एक दूसरे से ज़्यादा तलब (व ख़्वाहिश) है।[1] (इस की मिसाल ऐसी है) जैसे बारिश, कि (इस से खेती उगती और) किसानों को खेती भली लगती है, फिर वह ख़ूब ज़ोर पर आती है, फिर (ऐ देखने वाले!) तू उस को देखता है कि (पक कर) पीली पड़ जाती है, फिर चूरा-चूरा हो जाती है और आख़िरत में (काफ़िरों के लिए) तेज़ अज़ाब और (मोमिनों के लिए) ख़ुदा की तरफ़ से बख़्शिश और ख़ुश्नूदी है और दुनिया की ज़िंदगी तो धोखे का माल है। (२०) (बन्दो) अपने परवरदिगार की बख़्शिश की तरफ़ और जन्नत की (तरफ़) जिस का अर्ज़ आसमान और ज़मीन के अर्ज़ का-सा है और जो उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो ख़ुदा पर और उस के पैग़म्बरों पर जो ईमान लाए हैं, लपको। यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, जिसे चाहे अता फ़रमाए और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (२१) कोई मुसीबत मुल्क पर और ख़ुद तुम पर नहीं पड़ती, मगर इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, एक किताब में (लिखी हुई) है, (और) यह (काम) ख़ुदा को आसान है। (२२) ताकि जो (मतलब) तुम से

१. हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मस्जिद में तश्रीफ़ लाए तो देखा कि कुछ लोग मस्जिद में हंस रहे हैं। आप ने फ़रमाया, क्या तुम लोगों को ख़ौफ़ नहीं रहा? साफ़ ही यह आयत पढ़ी, तो उन लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उस का कफ़्फ़ारा क्या है? आप ने फ़रमाया, जितना हंसे हो, उतना ही रोओ।

★रु. २/१८ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ातकुम् व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम्, वल्लाहु ला युह़िब्बु
कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूरि-नि- (२३) -ल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरू-
नन्ना-स बिल्बुख़्लि, व मंय्य-त-वल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-ह़मीद (२४)
ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलुना बिलबय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अ़हुमुल-किता-ब वलमीज़ा-न
लियक़ूमन्नासु बिल्क़िस्ति, व अन्ज़ल्नल-
ह़दी-द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव्-व मनाफ़िअु
लिन्नासि व लियअ्-ल-मल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व
रुसुलहू बिल्ग़ैबि, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़
★ (२५) व ल-क़द् अर्सल्ना नूहंव्-व
इब्-राही-म व ज-अ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यति-हिमन्-
नुबुव्व-त वल्किता-ब फ़मिन्हुम् मुह्-तदिन् व
कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (२६) सुम्-म
क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व
क़फ़्फ़ैना बिअ़ीसब्नि मर्य-म व आतैना-
हुल-इन्जी-ल, व ज-अ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्-
लज़ीनत्त-ब-अ़ूहु रअ्-फ़-तंव्-व रह्-म-तन्,
व रह्बानिय्य-त-निब्-त-दअ़ूहा मा क-तब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्-
वानिल्लाहि फ़मा रऔ़हा ह़क़्-क़ रिआ़यतिहा, फ़आतैनल्लज़ी-न आमनू
मिन्हुम् अज्-रहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (२७) या अय्युहल्लज़ी-न आम-
नुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बिरसूलिही युअ्तिकुम् क़िफ़्लैनि मिर्रह़्मतिही व
यज्-अ़ल्लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ू-
रुर्रहीमुल- (२८) लि-अल्ला यअ्-ल-म अह्लुल-किताबि अल्ला यक़्दिरू-न
अ़ला शैइम्-मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व अन्नल्फ़ज़्-ल बियदिल्लाहि
युअ्तीहि मंय्यशाउ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल-अ़ज़ीम ★ (२९)

قال فما خطبكم ٢٧ — ٤٣٢ — الحديد

نبرأها إن ذلك على الله يسير ۝ لكيلا تأسوا على ما فاتكم ولا
تفرحوا بما آتاكم والله لا يحب كل مختال فخور ۝ الذين
يبخلون ويأمرون الناس بالبخل ومن يتول فإن الله هو الغني
الحميد ۝ لقد أرسلنا رسلنا بالبينت وأنزلنا معهم الكتب
والميزان ليقوم الناس بالقسط وأنزلنا الحديد فيه بأس
شديد ومنافع للناس وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب
إن الله قوي عزيز ۝ ولقد أرسلنا نوحا وإبراهيم وجعلنا في
ذريتهما النبوة والكتب فمنهم مهتد وكثير منهم فسقون ۝
ثم قفينا على آثارهم برسلنا وقفينا بعيسى ابن مريم وآتينه
الإنجيل وجعلنا في قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة
ورهبانية ابتدعوها ما كتبنها عليهم إلا ابتغاء رضوان
الله فما رعوها حق رعايتها فآتينا الذين آمنوا منهم أجرهم
وكثير منهم فسقون ۝ يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وآمنوا
برسوله يؤتكم كفلين من رحمته ويجعل لكم نورا
تمشون به ويغفر لكم والله غفور رحيم ۝ لئلا يعلم
أهل الكتب ألا يقدرون على شيء من فضل الله وأن
الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم ۝

منزل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़ौत हो गया हो, उस का ग़म न खाया करो और जो तुम ने उस को दिया हो, उस पर इतराया न करो और ख़ुदा किसी इतराने और शेख़ी बघारने वाले को दोस्त नहीं रखता, (२३) जो ख़ुद भी बुख़्ल करें और लोगों को भी बुख़्ल सिखाएं और जो शख़्स मुंह फेर ले, तो ख़ुदा भी बे-परवा है (और) वही हम्द (व सना) के लायक़ है। (२४) हमने अपने पैग़म्बरों को खुली निशानियां दे कर भेजा और उन पर किताबें नाज़िल कीं और तराज़ू (यानी इन्साफ़ के क़ायदे,) ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम रहें और लोहा पैदा किया। उस में (लड़ाई के हथियार के लिहाज़ से) ख़तरा भी तेज़ है और लोगों के फ़ायदे भी हैं और इस लिए कि जो लोग बिन-देखे ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों की मदद करते हैं, ख़ुदा उन को मालूम करे। बेशक ख़ुदा ताक़तवर और ग़ालिब है। (२५)★

और हम ने नूह और इब्राहीम को (पैग़म्बर बना कर) भेजा और उन की औलाद में पैग़म्बरी और किताब (के सिलसिले) को (वक़्त-वक़्त पर) जारी रखा, तो कुछ तो उन में से हिदायत पर हैं और अक्सर उन में से इताअत से बाहर हैं। (२६) फिर उन के पीछे उन्हीं के क़दमों पर (और) पैग़म्बर भेजे और उन के पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उन को इंजील इनायत की और जिन लोगों ने उन की पैरवी की, उन के दिलों में शफ़क़त और मेहरबानी डाल दी और लज़्ज़तों से किनारा-कशी की, तो उन्हों ने ख़ुद एक नयी बात निकाल ली। हम ने उन को इस का हुक्म नहीं दिया था, मगर (उन्हों ने अपने ख़्याल में) ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए (आप ही ऐसा कर लिया था) फिर जैसा उस को बनाना चाहिए था, निबाह भी न सके। पस जो लोग उन में से ईमान लाए उन को हम ने उन का बदला दिया और उन में से बहुत से ना-फ़रमान हैं। (२७) मोमिनो! ख़ुदा से डरो और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाओ, वह तुम्हें अपनी रहमत से दोगुना बदला अता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिए रोशनी कर देगा, जिस में चलोगे और तुम को बख़्श देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२८) (ये बातें) इस लिए (बयान की गयी हैं) कि अह्ले किताब जान लें कि वे ख़ुदा के फ़ज़्ल पर कुछ भी क़ुदरत नहीं रखते और यह कि फ़ज़्ल ख़ुदा के ही हाथ है, जिस को चाहता है देता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (२९)★

★रु. ३/१६ आ ६ ★रु. ४/२० आ.४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अट्ठाईसवां पारः क़द् समि-अ़ल्लाहु

५८ सूरतुल्-मुजादलति़ १०५

(मदनी) इस सूर: में अरबी के २१०३ अक्षर, ४७९ शब्द, २२ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लती तुजादिलु-क फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी
इलल्लाहि صلے वल्लाहु यस् - मअु तह़ावु-र-कुमा ♭ इन्नल्ला-ह समीअ़ुम् - बसी़र
(१) अल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन्कुम् मिन् निसाइहिम् मा हुन्-न
उम्महातिहिम् ♭ इन् उम्महातुहुम् इल्लल्लाई व - लद्नहुम् ♭ व इन्नहुम्
ल-यक़ूलू-न मुन्करम्-मिनल्क़ौलि वज़ूरन् ♭ व
इन्नल्ला-ह ल-अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर (२) वल्लज़ी-न
युज़ाहिरू-न मिन् निसाइहिम् सुम्-म यअ़ूदू-न
लिमा क़ालू फ़-तह़्रीरु र-क़-बति़म्मिन् क़ब्लि
अंय्य-त-मास्सा ♭ ज़ालिकुम् तू-अज़ू-न बिही ♭
वल्लाहु बिमा तअ़्-मलू-न ख़बीर (३)
फ़ - मल्लम् यजिद् फ़सि़यामु शह्रैनि
मु-त-ताबिअ़ैनि मिन् क़ब्लि अंय्य-त-मास्सा ج
फ़-मल्लम् यस्तति़अ़् - फ़इत़्आमु सित्ती-न
मिस्कीनन् ♭ ज़ालि-क लितुअ्मिनू बिल्लाहि
व रसूलिही ♭ व तिल्-क हुदूदुल्लाहि ♭ व
लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीम (४) इन्नल्-
लज़ी-न युहा़द्दूनल्ला-ह व रसूलहू कुबितू कमा कुबितल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व क़द्
अन्ज़ल्ना आयातिम्-बय्यिनातिन् ♭ व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम्-मुहीन ج (५) यौ-म
यब्अ़सु - हुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू ♭ अह़्साहुल्लाहु व
नसूहु ♭ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद ★ (६)

قد سمع الله ٢٨ — ٤٣٣ — المجادلة ٥٨

سورة المجادلة مدنية وهي اثنتان وعشرون اية وثلث ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها وتشتكي إلى
الله والله يسمع تحاوركما إن الله سميع بصير ۝ الذين
يظهرون منكم من نسائهم ما هن أمهتهم إن أمهتهم
إلا الي ولدنهم وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا
وإن الله لعفو غفور ۝ والذين يظهرون من نسائهم ثم
يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا ذلكم
توعظون به والله بما تعملون خبير ۝ فمن لم يجد فصيام
شهرين متتابعين من قبل أن يتماسا فمن لم يستطع
فإطعام ستين مسكينا ذلك لتؤمنوا بالله ورسوله و
تلك حدود الله وللكفرين عذاب أليم ۝ إن الذين
يحادون الله ورسوله كبتوا كما كبت الذين من قبلهم
وقد أنزلنا ايت بينت وللكفرين عذاب مهين ۝ يوم
يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا أحصه الله ونسوه
والله على كل شيء شهيد ۝ ألم تر أن الله يعلم ما في
السموت وما في الأرض ما يكون من نجوى ثلثة إلا هو

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

५८ सूरः मुजादला १०५

सूरः मुजादला मदनी है, इस में बाईस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर!) जो औरत तुम से अपने शौहर के बारे में झगड़ती और ख़ुदा से शिकायत (रंज व मलाल) करती थी। ख़ुदा ने उसकी इल्तिजा सुन ली और ख़ुदा तुम दोनों की बात-चीत सुन रहा था। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा सुनता-देखता है। (१) जो लोग तुममें से अपनी औरतों को मां कह देते हैं, वह उन की माएं नहीं (हो जातीं)। उन की माएं तो वही हैं, जिन के पेट से वह पैदा हुए। बेशक वे ना-माक़ूल और झूठी बात कहते हैं और ख़ुदा बड़ा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है। (२) और जो लोग अपनी बीवियों को मां कह बैठें, फिर अपने क़ौल से रुजूअ कर लें, तो (उन को) हम-बिस्तर होने के पहले एक गुलाम आज़ाद करना (ज़रूर) है। (मोमिनो!) इस (हुक्म) से तुम को नसीहत की जाती है और जो कुछ करते हो, ख़ुदा उस से ख़बरदार है। (३) जिस को ग़ुलाम न मिले, वह हम-बिस्तरी से पहले लगातार दो महीने के रोज़े रखे, जिस को इस की भी क़ुदरत न हो, (उसे) साठ मुहताजों को खाना खिलाना (चाहिए)। यह (हुक्म) इस लिए (है) कि तुम ख़ुदा और रसूल के फ़रमांबरदार हो जाओ और ये ख़ुदा की हदें हैं और न मानने वालों के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है।[1] (४) जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं, वे (इसी तरह) ज़लील किए जाएंगे, जिस तरह उन से पहले ज़लील किए गये थे और हम ने साफ़ और खुली आयतें नाज़िल कर दी हैं। जो नहीं मानते उन को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (५) जिस दिन ख़ुदा उन सब को जिला उठाएगा, तो जो काम वे करते रहे, उन को जताएगा। ख़ुदा को वे सब (काम) याद हैं और यह उन को भूल गये हैं और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है, (६)★

---

१. ये आयतें ख़ौला बिन्त सालबा के हक़ में नाज़िल हुई हैं। उस का शौहर औस बिन सामित ग़ुस्से की हालत में उस से ज़िहार कर बैठा और यों भी अरब में ज़िहार का रिवाज था। ज़िहार इस को कहते है कि मियां अपनी बीवी से इस तरह के लफ़्ज़ कह दे, तू मेरी मां की जगह है या तेरी पीठ मेरी पीठ की जगह है। इस तरह कह देना जाहिलियत में तलाक़ समझा जाता था, तो ख़ौला इस बारे में हुक्म मालूम करने के लिए हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। आप ने फ़रमाया कि तू अपने शौहर पर हराम हो गयी। उस ने कहा कि उस ने तलाक़ तो नहीं दी। ग़रज आप तो यह फ़रमाते कि तू उस पर हराम हो चुकी और वह कहती कि उस ने तलाक़ का नाम नहीं लिया। इसी बात-चीत को ख़ुदा ने 'झगड़ा' कहा है। फिर वह ख़ुदा से कहती कि रब्बुल आलमीन मेरी बेबसी का हाल तुझ को मालूम है। मेरे नन्हें-नन्हें बच्चे हैं। अगर मैं उन को अपने शौहर के हवाले कर दूं, तो अच्छी तरह परवरिश न होने की वजह से ख़राब हो जाएंगे और अगर अपने पास रखूं तो भूखे मरेंगे और आसमान की तरफ़ सर उठा कर कहती कि ऐ अल्लाह! मेरी शिकायत तुझी से है। ख़ुदा ने उस की इज्ज़ व ज़ारी को क़ुबूल फ़रमाया और ज़िहार को तलाक़ नहीं, बल्कि एक ना-माक़ूल बात क़रार दे कर उस का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर फ़रमाया।

★रु. १/१ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यअ्.लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्ज़ि ط मा यकूनु मिन्
नज्वा सलासति़न् इल्ला हु-व राबिअ़ुहुम् व ला ख़म्सति़न् इल्ला हु-व
सादिसुहुम् व ला अद्ना मिन् जालि-क व ला अक्स-र इल्ला हु-व म-अ़हुम् ऐ-न मा
कानू ج सुम् - म युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल - क़ियामति़ ط इन्नल्ला-ह
बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (७) अ-लम् त-र
इलल्लज़ी-न नुहू अ़निन्नज्वा सुम्-म यअ़ूदू-न
लिमा नुहू अ़न्हु व य-त-नाजौ-न बिल्इस्मि
वल्अ़ुद्वानि व मअ्.सि़यतिर्रसूलि ز व इज़ा
जाऊ-क ह़य्यौ-क बिमा लम् युह़य्यि-क
बिहिल्लाहु ل व यक़ूलू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम्
लौला युअ़ज़्ज़िबुनल्लाहु बिमा नक़ूलु ط ह़स्बुहुम्
जहन्नमु ج यस्लौनहा ج फ़बिअ्.सल मसीर (८)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तनाजैतुम्
फ़ला त-त-नाजौ बिल्इस्मि वल्अ़ुद्वानि व
मअ्.सि़-यतिर्-रसूलि व तनाजौ बिल्बिर्रि

قد سمع الله ٢٨ — ٨٣٤ — المجادلة ٥٨

رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ
اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۞ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ
نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ
يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا
نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۞ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْئًا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي
الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا
يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ
الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ
لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞

منزل

वत्तक़्वा ط वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह़्शरून (९) इन्नमन्नज्वा मिनश्शैता़नि
लियह़्-ज़ुनल्लज़ी-न आमनू व लै-स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला
बिइज़्निल्लाहि ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल - मुअ्.मिनून (१०) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ी-ल लकुम् तफ़स्सहू फ़िलमजालिसि फ़फ़्सहू
यफ़्सहिल्लाहु लकुम् ج व इज़ा क़ीलन्शुज़ू फ़न्शुज़ू यर्फ़अ़िल्लाहुल - लज़ी-न
आमनू मिन्कुम् ل वल्लज़ी - न ऊतुल्अ़िल-म द-र - जातिन् ط वल्लाहु बिमा
तअ्.मलू-न ख़बीर (११) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नाजैतुमुर्रसू-ल
फ़-क़द्दिमू बै - न यदै नज्वाकुम् स़-द - क़ - तन् ط ज़ालि-क ख़ैरुल्लकुम्
व अत़्हरु ط फ़इल्लम् तजिदू फ़इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर - रह़ीम (१२)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क्या तुम को मालूम नहीं कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, ख़ुदा को सब मालूम है। (किसी जगह) तीन (शख़्सों) का (मज्मा और) कानों में सलाह व मश्विरा नहीं होता, मगर वह उन में चौथा होता है और न कहीं पांच का, मगर वह उन में छठा होता है और न उस से कम या ज़्यादा, मगर वह उन के साथ होता है, चाहे वे कहीं हों। फिर जो-जो काम ये करते रहे हैं, क़ियामत के दिन वह (एक-एक) उन को बताएगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (७) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को कानाफूसियां करने से मना किया गया था। फिर जिस (काम) से मना किया गया था, वही फिर करने लगे और यह तो गुनाह और ज़ुल्म और (ख़ुदा के) रसूल की ना-फ़रमानी की कानाफूसियां करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं तो जिस (कलिमे) से ख़ुदा ने तुम को दुआ नहीं दी, उस से तुम्हें दुआ देते हैं और अपने दिल में कहते हैं कि (अगर यह वाक़ई पैग़म्बर हैं तो) जो कुछ कहते हैं, ख़ुदा हमें उस की सज़ा क्यों नहीं देता (ऐ पैग़म्बर!) उन को दोज़ख़ (ही की सज़ा) काफ़ी है, ये उसी में दाख़िल होंगे और वह बुरी जगह है।[1] (८) मोमिनो! जब तुम आपस में कानाफूसियां करने लगो तो गुनाह और ज़्यादती और पैग़म्बर की ना-फ़रमानी की बातें न करना बल्कि नेकी और परहेज़गारी की बातें करना और ख़ुदा से जिस के सामने जमा किए जाओगे, डरते रहना। (९) (काफ़िरों की) कानाफूसियां तो शैतान (की हरकतों) से हैं, (जो) इस लिए (की जाती हैं) कि मोमिन (उन से) ग़मनाक हों, मगर ख़ुदा के हुक्म के सिवा उन से उन्हें कुछ नुक़्सान नहीं पहुंच सकता, तो मोमिनों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें। (१०) मोमिनो! जब तुम से कहा जाए कि मज्लिस में खुल कर बैठो तो खुल कर बैठा करो। ख़ुदा तुम को कुशादगी बख़्शेगा और जब कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए हैं और जिन को इल्म अता किया गया है, ख़ुदा उन के दर्जे बुलंद करेगा और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (११) मोमिनो! जब तुम पैग़म्बर के कान में कोई बात कहो तो बात कहने से पहले (मिस्कीनों को) कुछ ख़ैरात दे दिया करो। यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर और पाकीज़गी की बात है और अगर ख़ैरात तुम को मयस्सर न आए, तो ख़ुदा बख़्शने

---

१. हदीसों में है कि यहूदी हज़रत के पास आते, तो बजाए 'अस्सलामु अलै-क' के 'अस्सामु अलै-क' कहते। 'साम' मौत को कहते हैं, तो वे ज़ाहिर में तो नेक दुआ देते और हक़ीक़त में मौत मुराद लेते और बद-दुआ देते। आप उस के जवाब में सिर्फ़ 'व अलैकुम' फ़रमाते जिस का मतलब यह होता कि मौत तुम ही पर वाक़ेअ हो। वे लोग अपने दिल में कहते कि अगर मुहम्मद सच्चे पैग़म्बर होते तो हमारे इस कलिमे के कहने से ज़रूर हम पर अज़ाब नाज़िल होता। कुछ ने यह मानी किए हैं कि अगर यह नबी होते तो उन की बद-दुआ हमारे हक़ में ज़रूर क़ुबूल होती और हम पर मौत वाक़ेअ हो कर रहती। इन बातों के जवाब में ख़ुदा ने फ़रमाया कि इन लोगों को दोज़ख़ ही का अज़ाब काफ़ी है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अ अश्फ़क़्तुम् अन् तुक़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स़-द-क़ातिन् ط फ़इज्
लम् तफ़्अ़लू व ताबल्लाहु अ़लैकुम् फ़-अक़ीमुस़्स़ला-त़ व आतुज्ज़का-त़
व अती़अु़ल्ला-ह व रसूलहू ط वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ़्-मलून ★ (१३)
अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न त-वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् ط मा
हुम् मिन्कुम् व ला मिन्हुम् ل व
यह़्लिफ़ू-न अ़लल्कज़िबि व हुम् यअ़्-लमून
(१४) अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन्
शदीदन् ط इन्नहुम् सा-अ मा कानू
यअ़्-मलून (१५) इत्त-ख़ज़ू ऐमानहुम्
जुन्नतन् फ़-स़द्दू अन् सबीलिल्लाहि फ़-लहुम्
अ़ज़ाबुम्-मुहीन (१६) लन् तुग़्नि-य
अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम्
मिनल्लाहि शैअन् ط उलाइ-क
अस्हाबुन्नारि ط हुम् फ़ीहा ख़ालिदून
(१७) यौ-म यब्-असुहुमुल्लाहु जमीअ़न्
फ़-यह़्लिफ़ू-न लहू कमा यह़्लिफ़ू-न लकुम् व यह़्सबू-न अन्नहुम् अ़ला
शैइन् ط अला इन्नहुम् हुमुल-काज़िबून (१८) इस्तह़्-व-ज अ़लैहिमुश्-
शैतानु फ़-अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि ط उलाइ-क हिज़्बुश्शैता़नि ط अला
इन्-न हिज़्बश्शैता़ान हुमुल-ख़ासिरून (१९) इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह
व रसूलहू उलाइ-क फ़िल्अज़ल्लीन (२०) क-त-बल्लाहु ल-अग़्लि-
बन्-न अ-न व रुसुली ط इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (२१)

قد سمع الله ٢٨ — ٥٤٣ — المجادلة ٥٨

ءأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجوىكم صدقت فإذ
لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلوة وءاتوا الزكوة
وأطيعوا الله ورسوله والله خبير بما تعملون ﴿١٣﴾ ألم تر
إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ما هم منكم ولا
منهم ويحلفون على الكذب وهم يعلمون ﴿١٤﴾ أعد الله لهم
عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون ﴿١٥﴾ اتخذوا
أيمنهم جنة فصدوا عن سبيل الله فلهم عذاب مهين ﴿١٦﴾
لن تغني عنهم أمولهم ولا أولدهم من الله شيئا أولئك
أصحب النار هم فيها خلدون ﴿١٧﴾ يوم يبعثهم الله جميعا
فيحلفون له كما يحلفون لكم ويحسبون أنهم على شيء
ألا إنهم هم الكذبون ﴿١٨﴾ استحوذ عليهم الشيطن فأنسىهم
ذكر الله أولئك حزب الشيطن ألا إن حزب الشيطن هم
الخسرون ﴿١٩﴾ إن الذين يحادون الله ورسوله أولئك في
الأذلين ﴿٢٠﴾ كتب الله لأغلبن أنا ورسلي إن الله قوي
عزيز ﴿٢١﴾ لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون
من حاد الله ورسوله ولو كانوا ءاباءهم أو أبناءهم أو
إخونهم أو عشيرتهم أولئك كتب في قلوبهم الإيمن

★रु० २/२ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाला मेहरबान है। (१२) क्या तुम इस से कि पैग़म्बर के कान में कोई बात कहने से पहले खैरात दिया करो, डर गये? फिर जब तुम ने (ऐसा) न किया और ख़ुदा ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करते रहो और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस से ख़बरदार है। (१३)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जो ऐसों से दोस्ती करते हैं, जिन पर ख़ुदा का ग़ज़ब हुआ, वह न तुम में हैं, न उन में और जान-बूझ कर झूठी बातों पर क़स्में खाते हैं। (१४) ख़ुदा ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है। ये जो कुछ करते हैं, यक़ीनन बुरा है। (१५) उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना लिया और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोक दिया है, सो उन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (१६) ख़ुदा के (अज़ाब के) सामने न तो उन का माल ही कुछ काम आएगा और न औलाद ही.(कुछ फ़ायदा देगी) ये लोग दोज़ख़ी हैं, इस में हमेशा (जलते) रहेंगे। (१७) जिस दिन ख़ुदा उन सब को जिला उठाएगा, तो जिस तरह तुम्हारे सामने क़स्में खाते हैं (उसी तरह) ख़ुदा के सामने क़स्में खाएंगे ओर ख़्याल करेंगे कि (ऐसा करने से) काम ले निकले हैं देखो ये झूठे (और ग़लती पर) हैं। (१८) शैतान ने उन को क़ाबू में कर लिया है और ख़ुदा की याद उन को भुला दी है। यह (जमाअत) शैतान का लश्कर है और सुन रखो कि शैतान का लश्कर नुक़्सान उठाने वाला है। (१९) जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं, वे बहुत ज़लील होंगे। (२०) ख़ुदा का हुक्म नातिक़ है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे, बेशक ख़ुदा ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है। (२१) जो लोग ख़ुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान

★रु. २/२ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ला तजिदु क़ौमंय्युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल-यौमिल-आख़िरि युवाद्दू-न मन्
हाद्दल्ला-ह व रसूलहू व लौ कानू आबा-अहुम् औ अब्ना-अहुम् औ इख़-वानहुम्
औ अ़शी-र-तहुम् उलाइ-क क-त-ब फ़ी क़ुलूबिहिमुल-ईमा-न व अय्य-दहुम्
बिरूहिम् - मिन्हु व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल -
अन्हारु ख़ालिदी - न फ़ीहा रज़ियल्लाहु
अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु उलाइ - क
हिज़्बुल्लाहि अला इन - न
हिज़्बल्लाहि हुमुल - मुफ़्लिहून ★ (२२)

قد سمع الله ٢٨ — ٤٣٦ — الحشر ٥٩

وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۭ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
حِزْبُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝
سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝
هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ڼ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ
مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۤ
وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي
الْمُؤْمِنِيْنَ ۤ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمُ الْجَلَاۗءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۭ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ
النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۗقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاۗقِّ اللّٰهَ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا
قَاۗىِٕمَةً عَلٰٓي اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَمَآ
اَفَاۗءَ اللّٰهُ عَلٰي رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّ
لَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي

منزل ٧

५९ सूरतुल्-ह़श्रि १०१

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २०१६ अक्षर,
४५५ शब्द, २४ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

सब्ब-ह़ लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति
व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल-अ़ज़ीज़ुल-ह़कीम
(१) हुवल्लज़ी अख़्-र-जल्लज़ी-न क-फ़रू
मिन् अह्लिल-किताबि मिन् दियारिहिम्
लि-अव्वलिल-ह़श्रि ▒ मा ज़-नन्तुम् अंय्यख़-रुजू
व ज़न्नू अन्नहुम् मानि-अ़तुहुम् हुसूनुहुम्
मिनल्लाहि फ़ अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम्
यह़-तसिबू व क़-ज-फ़ फ़ीं क़ुलूबिहिमुर्रुअ्-ब युख़्रिबू-न बुयूतहुम् बिऐदीहिम् व
ऐदिल-मुअ्मिनी-न फ़अ्-तबिरू या उलिल-अब्सार (२) व लौला अन् क-त-बल्लाहु
अ़लैहिमुल-जला-अ ल-अ़ज़्ज़-बहुम् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल-आख़िरति अ़ज़ाबुन्नार
(३) ज़ालि-क बिअन्नहुम् शा-क़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशा-क़्क़िल्ला-ह फ़-इन्नल्-
ला-ह शदीदुल-अ़िक़ाब (४) मा क़-तअ्-तुम् मिल्लीनतिन् औ त-रक्तुमूहा
क़ा-इ-म-तन् अ़ला उसूलिहा फ़बिइज़्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल-फ़ासिक़ीन (५) व
मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ़्तुम् अ़लैहि
मिन् ख़ैलिंव-व ला रिकाबिंव-व लाकिन्नल्ला-ह युसल्लितु रुसुलहू
अ़ला मंय्यशाउ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (६)

★रु. ३/३ आ ६ ▒ व. न बी स.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रखते हैं तो उन को ख़ुदा और उस के रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे, चाहे वे उन के बाप या बेटे या भाई या ख़ानदान ही के लोग हों। ये वह लोग हैं, जिन के दिलों में ख़ुदा ने ईमान (पत्थर पर लकीर की तरह) लिख दिया है और ग़ैबी फ़ैज़ से उन की मदद की है और वह उन को बहिश्तों में, जिन के तले नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे। ख़ुदा उन से ख़ुश और वे ख़ुदा से ख़ुश। यही गिरोह ख़ुदा का लश्कर है। (और) सुन रखो कि ख़ुदा ही का लश्कर मुराद हासिल करने वाला है। (२२)★

५९ सूरः हश्र १०१

सूरः हश्र मदनी है, इस में चौबीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ें आसमान में हैं और जो चीज़ें ज़मीन में हैं, (सब) ख़ुदा की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१) वही तो है जिस ने कुफ़्फ़ार अह्ले किताब को पहले हश्र के वक़्त उन के घरों से निकाल दिया▨ तुम्हारे ख़्याल में भी न था कि वे निकल जाएंगे और वे लोग यह समझे हुए थे कि उन के क़िले उन को ख़ुदा (के अज़ाब) से बचा लेंगे, मगर ख़ुदा ने उन को वहां से आ लिया, जहां से उन को गुमान भी न था और उन के दिलों में दहशत डाल दी कि अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों और मोमिनों के हाथों से उजाड़ने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आंखें रखने वालो! इबरत (सबक़) पकड़ो। (२) और अगर ख़ुदा ने उन के बारे में वतन से निकालना न लिख रखा होता, तो उन को दुनिया में भी अज़ाब दे देता और आख़िरत में तो उन के लिए आग का अज़ाब (तैयार) है। (३) यह इस लिए कि उन्हों ने ख़ुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त की और जो शख़्स ख़ुदा की मुख़ालफ़त करे, तो ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है। (४) (मोमिनो!) खजूर के जो पेड़ तुम ने काट डाले या उन को अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो ख़ुदा के हुक्म से था और मक़्सूद यह था कि वह ना-फ़रमानों को रुस्वा करे।[1] (५) और जो (माल) ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को उन लोगों से (लड़ाई-भिड़ाई के बग़ैर) दिलवाया है, उस में तुम्हारा कुछ हक़ नहीं, क्योंकि इसके लिए न तुम ने घोड़े दौड़ाए, न ऊंट, लेकिन ख़ुदा अपने पैग़म्बरों को जिन पर चाहता है, मुसल्लत

१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब बनू नज़ीर अपने मकानों से निकाल दिए गए और उन की खजूरों के काट डालने का हुक्म हुआ तो मुसलमानों ने कुछ खजूरें तो काट दीं और कुछ रहने दीं, मगर उन को इस बारे में शुब्हा हुआ कि क्या उन को काटने पर सवाब होगा और न काटने पर गुनाह, तो उन्हों ने यह बात जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम करने का इरादा किया, इस पर ख़ुदा ने फ़रमाया कि खजूरों के काटने, न काटने से मक़्सूद यह है कि मुसलमान अपने ग़लबा पाने से ख़ुश हों और ना-फ़रमान लोगों को यह देख कर कि उन के मालों में मुसलमान अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल कर रहे हैं, रंज और ज़िल्लत हासिल हो।

★रु. ३/३ आ ९ ▨ व. न बी स.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन् अह्लिल-क़ुरा फ़लिल्लाहि व लिर्रसूलि
व लिज़िल्क़ुर्बा वल - यतामा वल-मसाकीनि वब्निस्सबीलि ᒪ कैला यकू-न
दूल-तम् - बैनल - अग़्नियाइ मिन्कुम् ᒄ व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु ق व
मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू ᑕ वत्तक़ुल्ला - ह ᒄ इन्नल्ला-ह शदीदुल - अ़िक़ाब
▨ (७) लिलफ़ु-क़-राइल - मुहाजिरीनल्लज़ी-न
उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम्
यब्तग़ू-न फ़ज़्लम् - मिनल्लाहि व रिज़्-
वानंव् - व यन्सुरूनल्ला - ह व रसूलहू ᒄ
उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून ᑕ (८) वल्लज़ी-न
त-बव्वउद्दा-र वल्ईमा-न मिन् क़ब्लिहिम्
युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला
यजिदू-न फ़ी सुदूरिहिम् हा-ज-तम्-मिम्मा
ऊतू व युअ्सिरू - न अ़ला अन्फ़ुसिहिम्
व लौ का - न बिहिम् ख़सासतुन् ᒄ व
मय्यू-क़ शुह़् - ह़ नफ़्सिही फ़-उलाइ - क
हुमुल - मुफ़्लिहून ᑕ (९) वल्लज़ी - न

الحشر ٥٩ ٨٢٨ قد سمع الله ٢٨

كل شيء قدير ۝ ما افاء الله على رسوله من اهل القرى
فلله وللرسول ولذي القربى واليتمى والمسكين وابن
السبيل كي لا يكون دولة بين الاغنياء منكم وما اتىكم
الرسول فخذوه وما نهىكم عنه فانتهوا واتقوا الله
ان الله شديد العقاب ۝ للفقراء المهجرين الذين
اخرجوا من ديارهم واموالهم يبتغون فضلا من الله و
رضوانا وينصرون الله ورسوله اولئك هم الصدقون ۝
والذين تبوءو الدار والايمان من قبلهم يحبون من هاجر
اليهم ولا يجدون في صدورهم حاجة مما اوتوا ويؤثرون
على انفسهم ولو كان بهم خصاصة ومن يوق شح نفسه
فاولئك هم المفلحون ۝ والذين جاءو من بعدهم يقولون
ربنا اغفر لنا ولاخواننا الذين سبقونا بالايمان ولا تجعل
في قلوبنا غلا للذين امنوا ربنا انك رءوف رحيم ۝ الم تر
الى الذين نافقوا يقولون لاخوانهم الذين كفروا من
اهل الكتب لئن اخرجتم لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم
احدا ابدا وان قوتلتم لننصرنكم والله يشهد انهم
لكذبون ۝ لئن اخرجوا لا يخرجون معهم ولئن قوتلوا

منزل

जाऊ मिम्बअ़्-दिहिम् यक़ूलू-न रब्बनग़्फ़िर् लना व लि-इख़्वानि-नल्लज़ी-न
स-ब-क़ूना बिल - ईमानि व ला तज् - अ़ल् फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल-
लिल्लज़ी - न आमनू रब्बना इन्न - क रऊफ़ुर्रहीम ★● (१०) अ-लम्
त - र इलल्लज़ी - न नाफ़क़ू यक़ूलू - न लिइख़्वानि - हिमुल्लज़ी - न
क - फ़रू मिन् अह्लिल - किताबि ल - इन् उख़्रिज्तुम् ल - नख़्रुजन्-न
म - अ़कुम् व ला नुतीअ़ु फ़ीकुम् अ - ह़ - दन् अ - ब - दंव्-व इन्
क़ूतिल्तुम् ल - नन्सुरन्नकुम् ᒄ वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून (११)

▨ व. लाज़िम ★ रु. १/४ आ १० ● रुबुअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर देता है और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (६) जो माल ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को देहात वालों से दिलवाया है, वह ख़ुदा के और पैग़म्बर के और (पैग़म्बर के) क़रीबी रिश्ते वालों के और यतीमों के और ज़रूरतमंदों के और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि जो लोग तुम में दौलतमंद हैं, उन्हीं के हाथों में न फिरता रहे, सो जो चीज़ तुम को पैग़म्बर दें, वह ले लो और जिस से मना करें, (उस से) रुके रहो और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है।[1] (७) और उन ग़रीब वतन छोड़ने वालों के लिए भी जो अपने घरों और मालों से ख़ारिज (और अलग) कर दिए गए हैं (और) ख़ुदा के फ़ज़्ल और उस की ख़ुश्नूदी की तलब रखने वाले और ख़ुदा और उस के पैग़म्बर के मददगार हैं। यही लोग सच्चे (ईमानदार) हैं। (८) और (उन लोगों के लिए भी) जो मुहाजिरों से पहले (हिजरत के) घर (यानी मदीने) में ठहरे रहे और ईमान में (मुस्तक़िल) रहे (और) जो लोग हिजरत कर के उन के पास आते हैं, उन से मुहब्बत करते हैं और जो कुछ उन को मिला, उस से अपने दिल में कुछ ख़्वाहिश (और बेचैनी) नहीं पाते और उन को अपनी जानों पर तर्जीह देते हैं, चाहे उन को ख़ुद ज़रूरत ही हो। और जो शख़्स नफ़्स के लोभ से बचा दिया गया तो ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले हैं। (९) और (उन के लिए भी) जो उन (मुहाजिरों) के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हमारे और हमारे भाइयों के जो हम से पहले ईमान लाए हैं गुनाह माफ़ करना और मोमिनों की तरफ़ से हमारे दिल में कीना (व हसद) न पैदा होने दे, ऐ हमारे परवरदिगार! तू बड़ा शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (१०) ★ ●

क्या तुम ने उन मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा, जो अपने काफ़िर भाइयों से जो अह्ले किताब हैं, कहा करते हैं कि अगर तुम देश निकाला पा गये, तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी का कहा न मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई, तो तुम्हारी मदद करेंगे, मगर

---

१. यानी फ़ै पर क़ब्ज़ा रसूल का और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे सरदार का कि सरदार पर ये ख़र्च पड़ते हैं, अल्लाह सभी का मालिक है, मगर काबे का ख़र्च और मस्जिदों का भी इस में आ गया और नाते वाले हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने उन के नाते वाले और पीछे भी वही लोग उन पर चाहिए।

व॰ लाज़िम ★रु॰ १/४ आ १० ● रुब्अ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लइन् उख़्रिजू ला यख़् - रुजू-न म - अहुम् ج व लइन् क़ूतलू ला
यन्सुरू - नहुम् ج व लइन् न - सरूहुम् लयु-वल्लुन्नल-अद्बा - र قف सुम् - म
ला युन्सरून (१२) ल अन्तुम् अशद्दु रह्-ब-तन् फ़ी सुदूरिहिम्
मिनल्लाहि ط जालि - क बि - अन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (१३) ला
युक़ातिलूनकुम् जमीअन् इल्ला फ़ी क़ुरम्-
मुहस्स - नतिन् औ मिंव्वराइ जुदुरिन् ط
बअ्-सुहुम् बैनहुम् शदीदुन् ط तह् - सबुहुम्
जमीअं व्-व क़ुलूबुहुम् शत्ता ط जालि - क
बि - अन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ् - क़िलून ج
(१४) क-म-सलिल्लजी-न मिन् क़ब्लिहिम्
क़रीबन् जाक़ू वबा-ल अम्रिहिम् ج व लहुम्
अज़ाबुन् अलीम ج (१५) क-म-सलिश्-
शैतानि इज़् क़ा-ल लिल् - इन्सानिक्फ़ुर् ج
फ़-लम्मा क-फ़-र क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन-क
इन्नी अख़ाफ़ुल्ला - ह रब्बल् - आलमीन
(१६) फ़-का-न आक़ि-ब-तहुमा अन्नहुमा
फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फ़ीहा ط व जालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन ★ (१७) या अय्युहल्लजी-न
आमनुत्तक़ुल्ला - ह वल्तन्ज़ुर् नफ़्सुम्मा क़द् - द - मत् लिग़दिन् ج वत्तक़ुल्-
ला-ह ط इन्नल्ला-ह ख़बीरुम् - बिमा तअ्-मलून (१८) व ला तकूनू
कल्लज़ी-न नसुल्ला-ह फ़-अन्साहुम् अन्फ़ु-सहुम् ط उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (१९) ला
यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति ط अस्-हाबुल्-जन्नति हुमुल्फ़ा-इज़ून (२०)
लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल् - क़ुर्आ - न अला ज - ब-लिल् - ल - र-ऐतहू
ख़ाशिअम्-मु-त-सद्दिअम्-मिन् ख़श्-यतिल्लाहि ط व तिल्कल् - अम्सालु नज़्रिबुहा
लिन्नासि ल - अल्लहुम् य - त - फ़क्करून (२१) हु - वल्लाहुल्लजी
ला इला-ह इल्ला हु-व ج आलिमुल्ग़ैबि वश्शहादति ج हुवर्रह्मानुर्रहीम (२२)

قد سمع الله ٢٨ ٤٣٨ الحشر ٥٩

لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾
لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ
وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ
شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾
كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي
بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا
أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا
اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا
اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِي
أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾
لَوْ أَنْزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا
مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا

★रु. २/५ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ख़ुदा ज़ाहिर किए देता है कि ये झूठे हैं। (११) अगर वे निकाले गये, तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे और अगर उन से जंग हुई तो उन का मदद नहीं करेंगे और अगर मदद करेंगे तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उन को (कहीं से भी) मदद न मिलेगी। (१२) (मुसलमानो!) तुम्हारी हैबत उन लोगों के दिलों में ख़ुदा से भी बढ़ कर है, यह इस लिए कि ये समझ नहीं रखते। (१३) ये सब जमा हो कर भी तुम से (आमने-सामने) नहीं लड़ सकेंगे, मगर बस्तियों के क़िलों में[1] (पनाह ले कर) या दीवारों की ओट में (छिप कर) उन का आपस में बड़ा रौब है। तुम शायद ख़्याल करते हो कि ये इकट्ठ (और एक जान) हैं, मगर उन के दिल फटे हुए हैं, यह इस लिए कि ये बे-अक़्ल लोग हैं। (१४) उन का हाल उन लोगों का-सा है, जो उन से कुछ ही पहले अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख चुके हैं और (अभी) उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (१५) (मुनाफ़िक़ों की) मिसाल शैतान की सी है कि इंसान से कहता रहा कि काफ़िर हो जा। जब वह काफ़िर हो गया, तो कहने लगा कि मुझे तुझ से कुछ सरोकार नहीं। मुझ को तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन से डर लगता है। (१६) तो दोनों का अंजाम यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में (दाख़िल हुए), हमेशा उस में रहेंगे और बे-इन्साफ़ों की यही सज़ा है। (१७) ★

ऐ ईमान वालो! ख़ुदा से डरते रहो और हर शख़्स को देखना चाहिए कि उस ने कल (यानी क़ियामत के कल) के लिए क्या (सामान) भेजा है और (हम फिर कहते हैं कि) ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है। (१८) और उन लोगों जैसे न होना, जिन्होंने ख़ुदा को भुला दिया, तो ख़ुदा ने उन्हें ऐसा कर दिया कि ख़ुद अपने आप को भूल गये। ये बद-किरदार लोग हैं। (१९) दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं। जन्नत वाले तो कामियाबी हासिल करने वाले हैं। (२०) अगर हम यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर नाज़िल करते, तो तुम उस को देखते कि ख़ुदा के ख़ौफ़ से दबा और फटा जाता है और ये बातें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे ग़ौर करें। (२१) वही ख़ुदा है, जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला, वह

१. लफ़्ज़ों का तर्जुमा तो यह है कि ऐसी बस्तियों में जिन में क़िले बने हुए हैं, मगर चूंकि मुराद यह है कि उन क़िलों में जो बस्तियों में हैं, इस लिए तर्जुमे में ऐसे लफ़्ज़ अख़्तियार किए गए हैं कि 'बस्तियों के क़िलों में।'

★रु. २/५ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला - ह इल्ला हु-व ८ अल्मलिकुल् - क़ुद्दूसुस्सलामुल्-
मुअ्मिनुल् - मुहैमिनुल् - अ़ज़ीज़ुल् - जब्बारुल् - मु - त - कब्बिरु ७ सुब्हानल्लाहि
अ़म्मा युश्रिकून (२३) हुवल्लाहुल् - ख़ालिक़ुल् - बारिउल् - मुसव्विरु
लहुल् - अस्माउल् - हुस्ना ७ युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ८
व हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - हकीम ★ (२४)

६० सूरतुल्-मुम्तहिनति ६१

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के १५६३ अक्षर, ३७० शब्द, १३ आयतें और दो रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया-अ तुल्क़ू-न इलैहिम् बिलम-वद्-दति व क़द् क-फ़रू बिमा जा-अकुम् मिनल्हक़्क़ि ८ युख़्रिजूनर्रसू-ल व इय्याकुम् अन् तुअ्मिनू बिल्लाहि रब्बिकुम् ७ इन् कुन्तुम् ख़-रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली वब्तिग़ा-अ मर-ज़ाती ७ तुसिर्रू-न इलैहिम् बिलम-वद्दति ७ व अ-न अअ्-लमु बिमा अख़्-फ़ैतुम् व मा अअ्-लन्तुम् ७ व मंय्यफ़्-अल्-हु मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल-ल सवा-अस्सबील (१) इंय्यस्क़फ़ूकुम् यकूनू लकुम् अअ्-दा-अंव्-व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् व अल्सि-न-तहुम् बिस्सूइ व वद्दू लौ तक्फ़ुरून ७ (२) लन् तन्फ़-अ़-कुम् अर्हामुकुम् व ला औलादुकुम् ८ यौमल्-क़ियामति ८ यफ़्सिलु बैनकुम् ७ वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (३) क़द् कानत् लकुम् उस्-वतुन् ह-स-नतुन् फ़ी इब्राही-म वल्लज़ी-न म-अ़हू ८ इज् क़ालू लिक़ौमिहिम् इन्ना बु-रआउ मिन्कुम् व मिम्मा तअ़्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ✓ क-फ़र्ना बिकुम् व बदा बैनना व बैनकुमुल् अ़दावतु वल्बग़्ज़ाउ अ-ब-दन् हत्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह्दहू इल्ला क़ौ-ल इब्राही-म लिअबीहि ल-अस्तग़्फ़िरन्-न ल-क व मा अम्लिकु ल-क मिनल्लाहि मिन् शैइन् ७ रब्बना अ़लै-क त-वक्कल्ना व इलै-क अनब्ना व इलैकल्-मसीर (४)

قد سمع الله ٢٨ ٤٣٩ الممتحنة ٦٠

هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٢٣ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢٤
سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَاۗءَ تُلْقُوْنَ
اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَاۗءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ
الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۭ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ
جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِيْ ڰ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ڰ
وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ۭ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۗءَ السَّبِيْلِ ۝١ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَاۗءً وَّ
يَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْۗءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۭ ۝٢
لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ڔ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ڔ يَفْصِلُ
بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰۗؤُا
مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۡ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا
منزل ٧

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (२२) वही ख़ुदा है, जिस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। बादशाह (हक़ीक़ी) पाक ज़ात (हर ऐब से) सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला। ख़ुदा उन लोगों के शरीक मुक़र्रर करने से पाक है। (२३) वही ख़ुदा (तमाम मख़्लूक़ का) पैदा करने वाला, ईजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के सब अच्छे नाम हैं। जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब उस की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२४) ★

६० सूरः मुम्तहिनः ९१

सूरः मुम्तहिना मक्की[1] है, इस में तेरह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! अगर तुम मेरी राह में लड़ने और मेरी ख़ुश्नूदी तलब करने के लिए (मक्के से) निकले हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम तो उन को दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो और वे (दीने) हक़ से जो तुम्हारे पास आया है, मुन्किर हैं और इस वजह से कि तुम अपने परवरदिगार ख़ुदा-ए-तआला पर ईमान लाए हो, पैग़म्बर को और तुम को देश निकाला देते हैं, तुम उन की तरफ़ पोशीदा दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो और जो कुछ तुम छिपे तौर पर और जो खुले तौर पर करते हो, वह मुझे मालूम है और जो कोई तुम में से ऐसा करेगा, सीधे रास्ते से भटक गया। (१) अगर ये काफ़िर तुम पर क़ुदरत पा लें, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएं और तक्लीफ़ पहुंचाने के लिए तुम पर हाथ (भी) चलाएं और ज़ुबानें (भी) और चाहते हैं कि तुम किसी तरह काफ़िर हो जाओ। (२) ∴ क़ियामत के दिन∴न तुम्हारे रिश्ते-नाते काम आएंगे और न औलाद। उस दिन वही तुम में फ़ैसला करेगा, और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उस को देखता है। (३) तुम्हें इब्राहीम और उन के साथियों की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है, जब उन्हों ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, कि हम तुम से और उन (बुतों) से, जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, बे-ताल्लुक़ हैं (और) तुम्हारे (माबूदों के कभी) क़ायल नहीं (हो सकते) और जब तक तुम ख़ुदा-ए-वाहिद पर ईमान न लाओ, हम में, तुम में हमेशा खुल्लम-खुल्ला अदावत और दुश्मनी रहेगी। हां, इब्राहीम ने अपने बाप से यह (ज़रूर) कहा कि मैं आप के लिए मग़्फ़िरत मांगूंगा और मैं ख़ुदा के सामने आप के बारे में किसी चीज़ का कुछ अख़्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे परवरदिगार! तुझी पर हमारा भरोसा है और तेरी ही तरफ़

१. यह सूरः मक्की है या मदनी, इस में इख़्तिलाफ़ है।

★रु. ३/६ आ ७ ∴मु. अ़ि मु त क़. १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रब्बना ला तज्-अ़ल्ना फ़ित्-न-तल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू वग़्फ़िर-लना रब्बनाᶜ इन्न-क
अन्तल् अ़ज़ीज़ुल् - ह़कीम (५) ल - क़द् का - न लकुम् फ़ीहिम्
उस्-व-तुन् ह़-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्-यौमल् आख़ि-रᵇ व मंय्य-त-वल्-ल
फ़-इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-ह़मीद ★ (६) अ़-सल्लाहु अंय्यज्-अ़-ल बैनकुम् व
बैनल्लज़ी-न आ़दैतुम् मिन्हुम् म-वद्-द-तन्ᵇ
वल्लाहु क़दीरुन्ᵇ वल्लाहु ग़फ़ूरुर-रह़ीम (७)
ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न लम् युक़ा-
तिलूकुम् फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम्
मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू
इलैहिम् ᵇ इन्नल्ला - ह युह़िब्बुल्-मुक़्सितीन
(८) इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न
क़ा-त-लूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्-र - जूकुम्
मिन् दियारिकुम् व ज़ाहरू अ़ला इख़्-
राजिकुम् अन् तवल्लौ - हुम्ᶜ व मंय्य-
त - वल्लहुम् फ़-उलाइ - क हुमुज़्ज़ालिमून

قد سمع الله ٢٨ — ٨٨٠ — الممتحنة ٦٠

وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرٰهِيْمَ لِأَبِيْهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ④
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ إِنَّكَ
أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑤ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَإِنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ⑥ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ
عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۗ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑦
لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْا إِلَيْهِمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ⑧ إِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ
وَأَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰى إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ
وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ⑨ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا
جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۗ اللّٰهُ أَعْلَمُ بِإِيْمَانِهِنَّ ۚ
فَإِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۗ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۗ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ أَنْفَقُوْا ۗ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ إِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ ۗ

(९) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू इज़ा जा - अ - कुमुल्मुअ्मिनातु
मुहाजिरातिन् फ़म्तह़िनूहुन - न ᵇ अल्लाहु अअ् - लमु बिईमानिहिन् - नᶜ
फ़-इन् अ़लिम्तुमूहुन्-न मुअ्मिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्-न इलल्कुफ़्फ़ारि ᵇ ला
हुन्-न ह़िल्लुल् - लहुम् व ला हुम् यह़िल्लू-न लहुन् - न ᵇ व आतूहुम्
मा अन्फ़क़ूᵇ व ला जुना-ह अ़लैकुम् अन् तन्किहू - हुन्-न इज़ा आतै-
तुमूहुन्-न उजूरहुन्-नᵇ व ला तुम्सिकू बिइ-स़मिल्-कवाफ़िरि वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम् वल्-
यस्-अलू मा अन्फ़क़ूᵇ ज़ालिकुम् हुक्मुल्लाहिᵇ यह़्कुमु बैनकुम्ᵇ वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (१०)

★रु. १/७ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हम रुजूअ करते हैं। और तेरे ही हुज़ूर में (हमें) लौट कर आना है। (४) ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को काफ़िरों के हाथ से अज़ाब न दिलाना और ऐ परवरदिगार हमारे ! हमें माफ फ़रमा, बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (५) तुम (मुसलमानों) को यानी जो (ख़ुदा के सामने जाने) और आख़िरत के दिन (के आने) की उम्मीद रखता हो, उसे उन लोगों की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है और जो मुंह फेरे, तो ख़ुदा भी बे-परवा और हम्द (व सना) के लायक़ है। (६)★

अजब नहीं कि ख़ुदा तुम में और उन लोगों में, जिन से तुम दुश्मनी रखते हो, दोस्ती पैदा कर दे और ख़ुदा क़ुदरत वाला है और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (७) जिन लोगों ने तुम से दीन के बारे में जंग नहीं की और न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला, उन के साथ भलाई और इन्साफ़ का सुलूक करने से ख़ुदा तुम को मना नहीं करता। ख़ुदा तो इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (८) ख़ुदा उन्हीं लोगों के साथ तुम को दोस्ती करने से मना करता है, जिन्हों ने तुम से दीन के बारे में लड़ाई की और तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में औरों की मदद की, तो जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे, वही ज़ालिम हैं। (९) मोमिनो ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें वतन छोड़ कर आएं तो उन की आज़माइश कर लो (और) ख़ुदा तो उन के ईमान को ख़ूब जानता है, सो अगर तुम को मालूम हो कि मोमिन हैं, तो उन को कुफ़्फ़ार के पास वापस न भेजो कि न ये उन को हलाल हैं और न वे उन को जायज़। और जो कुछ उन्हों ने (उन पर) ख़र्च किया हो, वह उन को दे दो और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन औरतों को मह्र दे कर उन से निकाह कर लो और काफ़िर औरतों की इज़्ज़त को क़ब्ज़े में न रखो (यानी कुफ़्फ़ार को वापस दे दो) और जो कुछ तुम ने उन पर ख़र्च किया हो, तुम उन से तलब कर लो और जो कुछ उन्होंने (अपनी औरतों पर) ख़र्च किया हो, वह तुम से तलब कर लें, यह ख़ुदा का हुक्म है जो तुम में फ़ैसला किए देता है और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से कोई

★रु. १/७ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इन् फ़ातकुम् शैउम्मिन् अज़्वाजिकुम् इलल् - कुफ़्फ़ारि फ़ - आ़क़ब्तुम् फ़आतुल्लज़ी - न ज - ह़ - बत् अज़्वाजुहुम् मिस् - ल मा अन्फ़क़ू ط वत्त-क़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (११) या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जा - अकल् - मुअ्मिनातु युबायिअ् - न - क अ़ला अल्ला युश्रिक्-न बिल्लाहि शैअंव्-व ला यस्रिक़् - न व ला यज़्नी-न व ला यक़्तुल्-न औलाद-हुन्-न व ला यअ्ती-न बिबुह्तानिंय्यफ़्-तरीनहू बै-न ऐदीहिन्-न व अर्जुलिहिन्-न व ला यअ़्सीनक फ़ी मअ़् - रूफ़िन् फ़बायिअ़् - हुन्-न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला-ह ط इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर्रह़ीम (१२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला त - त-वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द् यइसू मिनल् - आख़िरति कमा यइसल्-कुफ़्फ़ारु मिन् अस्ह़ाबिल् - क़ुबूर ★ ● (१३)

الصف ٦١ ٩٢١ قد سمع الله ٢٨

وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوا مَآ أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوا
مَآ أَنفَقُوا ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾
وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَآ أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِيٓ
أَنتُم بِهِۦ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنَٰتُ يُبَايِعْنَكَ
عَلَىٰٓ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْـًٔا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ
أَوْلَٰدَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَٰنٍ يَفْتَرِينَهُۥ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ
وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ
الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَٰبِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ
اللَّهِ أَن تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَٰتِلُونَ
فِي سَبِيلِهِۦ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَٰنٌ مَّرْصُوصٌ ﴿٤﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ

منزل ٧

६१ सूरतुस्सफ़्फ़ १०९

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के ९९१ अक्षर, २२३ शब्द, १४ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

सब्ब - ह़ लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ج व हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - ह़कीम (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि - म तक़ूलू-न मा ला तफ़्-अ़लून (२) कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्-अ़लून (३) इन्नल्ला-ह युह़िब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क - अन्नहुम् बुन्यानुम् - मर् - सूस (४)

★रु. २/८ आ ७ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

औरत तुम्हारे हाथ से निकल कर काफ़िरों के पास चली जाए (और उस का मह्र वसूल न हुआ हो) फिर तुम उन से जंग करो (और उन से तुम को ग़नीमत हाथ लगे) तो जिन की औरतें चली गयी हैं, उन को (उस माल में से) उतना दे दो, जितना उन्हों ने ख़र्च किया था और ख़ुदा से, जिस पर ईमान लाए हो, डरो। (११) ऐ पैग़म्बर ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत करने को आएं कि ख़ुदा के साथ न तो शिर्क करेंगी, न चोरी करेंगी, न बदकारी करेंगी, न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी, न अपने हाथ-पांव में कोई बोहतान बांध लाएंगी, न नेक कामों में तुम्हारी ना-फ़रमानी करेंगी, तो उन से बैअत ले लो और उन के लिए ख़ुदा से बख़्शिश मांगो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१२) मोमिनो ! उन लोगों से, जिन पर ख़ुदा ग़ुस्से हुआ है, दोस्ती न करो (क्योंकि) जिस तरह काफ़िरों को मुर्दों (के जी उठने) की उम्मीद नहीं, उसी तरह उन लोगों को भी आख़िरत (के आने) की उम्मीद नहीं। (१३) ★ ●



६१ सूरः सफ़्फ़ १०९

सूरः सफ़्फ़ मदनी है, इस में चौदह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो ज़मीन में है, सब ख़ुदा की तस्बीह करती है और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१) मोमिनो ! तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो, जो किया नहीं करते ? (२) ख़ुदा इस बात से सख़्त बेज़ार है कि ऐसी बात कहो, जो करो नहीं। (३) जो लोग ख़ुदा की राह में (ऐसे तौर पर) पैर जमा कर लड़ते हैं कि गोया सीसा पिलाई हुई दीवार हैं, वह

★रु. २/८ आ ७ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही याक़ौमि लि-म तुअ्ज़ू-ननी व क़त्तअ्-ल-मू-न
अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् ь फ़-लम्मा ज़ाग़ू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलूबहुम् ь वल्लाहु
ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन (५) व इज़् क़ा - ल ओ़सब्नु
मर्-य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न
य - दय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् -
बिरसूलिंय्यअ्ती मिम्बअ् - दिस्मुहू अह्मदु ь
फ़-लम्मा जा-अहुम् बिलबय्यिनाति क़ालू
हाज़ा सिह्रुम् - मुबीन (६) व मन्
अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब
व हु - व युद्आ इलल् - इस्लामि ь
वल्लाहु ला याह्दल्-क़ौमज़् - ज़ालिमीन
(७) युरीदू - न लियुत़्फ़िऊ नूरल्लाहि
बि-अफ़्वाहिहिम् वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही
व लौ करिहल् - काफ़िरून (८)
हुवल्लज़ी अर्-स-ल रसूलहू बिल्हुदा व
दीनिल्हक़्क़ि लियुज़्हि - रहू अ़लद्दीनि
कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून ★ (९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू
हल् अदुल्लुकुम् अ़ला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (१०)
तुअ्मिनू - न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू - न फ़ी सबीलिल्लाहि
बि - अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् ь ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम्
तअ्-लमून ׀׀ (११) यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन्
तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु व मसाकि-न त़य्यि-ब-तन् फ़ी जन्नाति
अ़द्निन् ь ज़ालिकल् - फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीम ׀׀ (१२) व उख़्रा तुहिब्बूनहा
नस्रुम्-मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन् ь व बश्शिरिल् - मुअ्मिनीन (१३)

الصف ٦١ ٤٤٢ قد سمع الله ٢٨

لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥
وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ
يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧
يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَ
يُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ
جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ
اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا
اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ

★ रु. १/६ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेशक अल्लाह के महबूब हैं। (४) और (वह वक़्त याद करने के लायक़ है) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो ! तुम मुझे क्या तक्लीफ़ देते हो, हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास ख़ुदा का भेजा हुआ आया हूं तो जब उन लोगों ने टेढ़ अपनाया, ख़ुदा ने भी उन के दिल टेढ़े कर दिए और ख़ुदा ना-फ़रमानों को हिदायत नहीं देता। (५) और (वह वक़्त भी याद करो) जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारे पास ख़ुदा का भेजा हुआ आया हूं (और) जो (किताब) मुझ से पहले आ चुकी है (यानी) तौरात, उस की तस्दीक़ करता हूं और एक पैग़म्बर, जो मेरे बाद आएंगे, जिन का नाम अहमद होगा, उन की ख़ुशख़बरी सुनाता हूं, (फिर) जब वह उन लोगों के पास खुली निशानियां ले कर आए, तो कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (६) और उस से ज़ालिम कौन कि बुलाया तो जाए इस्लाम की तरफ़ और वह ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधे और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (७) ये चाहते हैं कि ख़ुदा (के चिराग़) की रोशनी को मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें, हालांकि ख़ुदा अपनी रोशनी को पूरा कर के रहेगा, चाहे काफ़िर ना-ख़ुश ही हों। (८) वही तो है, जिस ने अपने पैग़म्बर को हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा, ताकि उसे और सब दीनों पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकों को बुरा ही लगे। (९) ★

मोमिनो ! मैं तुम को ऐसी तिजारत बताऊं, जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब में मुख़्लिसी दे। (१०) (वह यह कि) ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, अगर समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (११) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम को जन्नत के बाग़ों में, जिन में नहरें बह रही हैं और पाकीज़ा मकानों में, जो हमेशा की बहिश्तों में (तैयार) हैं, दाख़िल करेगा। यह बड़ी कामियाबी है। (१२) और एक और चीज़, जिस को तुम बहुत चाहते हो (यानी तुम्हें) ख़ुदा की तरफ़ से मदद (नसीब होगी) और फ़त्ह (बहुत) जल्द (होगी) और मोमिनों को (इस की) ख़ुशख़बरी सुना दो। (१३) मोमिनो ! ख़ुदा

★रु. १/९ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लजी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा क़ा-ल ई़सब्नु मर्-य-म
लिल् - ह़वारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि ♭ क़ालल् - ह़वारिय्यू-न नह्नु
अन्सारुल्लाहि फ़-आ-म-नत् - ता़इफ़-तुम् - मिम्बनी इस्राई-ल व क-फ़-रत्-
ता़इफ़ - तुन् ८ फ़ - अय्यद्नल्लज़ी - न आमनू अ़ला अ़दुव्विहिम्
फ़ - अस्बहू ज़ाहिरीन ★ (१४)

६२ सूरतुल्-जुमुअ़ति़ ११०

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के ७८७ अक्षर, १७६ शब्द, ११ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति
व मा फ़िल्-अर्ज़िल्-मलिकिल् - क़ुद्दूसिल्-
अ़ज़ीज़िल्-ह़कीम (१) हुवल्लज़ी ब-अ़-स
फ़िल्उम्मिय्यी - न रसूलम् - मिन्हुम् यत्लू
अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व
युअ़ल्लिमुहुमुल् - किता - ब वल्हि़क-म - त़ ق
व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम्-
मुबीनिंव्-♭ (२) व आख़री-न मिन्हुम् लम्मा
यल्हक़ू बिहिम् ♭ व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ह़कीम (३) ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि
मंय्यशाउ ♭ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (४) म-सलुल्लज़ी-न हुम्मिलुत्तौरा-त़ सुम्-म
लम् यह्मिलूहा क-म-सलिल्-ह़िमारि यह्मिलु अस्फ़ारन् ♭ बिअ्-स म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न
कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि ♭ वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन (५) क़ुल् या
अय्युहल्लज़ी-न हादू इन् ज़-अ़म्तुम् अन्नकुम् औलियाउ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि
फ़-त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (६) व ला य-त-मन्नौनहू अ-ब-दम्-
बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् ♭ वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (७) क़ुल् इन्नल्-
मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ़-इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आ़लि-
मिल्-ग़ैबि वश्शहादति़ फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून ★ (८)

الجمعة ٦٢ ٥٤٣ قد سمع الله ٢٨

إِلَى اللّٰهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللّٰهِ فَآمَنَت طَّائِفَةٌ مِّن
بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَت طَّائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ
عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿١٤﴾

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ
آيٰتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ
لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢﴾ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ
الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيٰتِ اللّٰهِ ۚ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿٥﴾ قُلْ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِن
زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلّٰهِ مِن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن
كُنتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٦﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللّٰهُ
عَلِيمٌ بِالظّٰلِمِينَ ﴿٧﴾ قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ
مُلٰقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ

منزل

CC-0. Public Domain. Digitized by eGangotri

के मददगार हो जाओ जैसे ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा कि (भला) कौन हैं जो ख़ुदा की तरफ़ (बुलाने में) मेरे मददगार हों, हवारियों ने कहा कि हम ख़ुदा के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल में से एक गिरोह तो ईमान ले आया और एक गिरोह काफ़िर रहा। आखिरकार हम ने ईमान लाने वालों को उन के दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद दी और वह ग़ालिब हो गये।[१] (१४)★

६२ सूरः जुमुअः ११०

सूरः जुमुअः मदनी है, इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है, सब ख़ुदा की तस्बीह करती है, जो हक़ीक़ी बादशाह, पाक ज़ात, ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (१) वही तो है, जिस ने अ-पढ़ों में उन्हीं में से (मुहम्मद को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा, जो उस के सामने उस की आयतें पढ़ते और उन को पाक करते और (ख़ुदा की) किताब और हिक्मत सिखाते हैं और इस से पहले तो ये लोग ख़ुली गुमराही में थे।[२] (२) और उन में से और लोगों की तरफ़ भी (उन को भेजा है) जो अभी उन (मुसलमानों) से नहीं मिले और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (३) यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है, अता करता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (४) जिन लोगों (के सर) पर तौरात लदवायी गयी, फिर उन्हों ने उस (के पालन के बोझ) को न उठाया, उन की मिसाल गधे की-सी है, जिस पर बड़ी-बड़ी किताबें लदी हों। जो लोग ख़ुदा की आयतों को झुठलाते हैं, उन की मिसाल बुरी है और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (५) कह दो कि ऐ यहूदियो! अगर तुम को यह दावा हो कि तुम ही ख़ुदा के दोस्त हो और लोग नहीं, तो अगर तुम सच्चे हो तो (ज़रा) मौत की आरज़ू तो करो। (६) और ये उन (आमाल) की वजह से, जो कर चुके हैं, हरगिज़ इस की आरज़ू नहीं करेंगे और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (७) कह दो कि मौत, जिस से तुम भागते हो, वह तो तुम्हारे सामने आ कर रहेगी, फिर तुम छिपे और ज़ाहिर के जानने वाले (ख़ुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर जो-जो कुछ तुम करते रहे हो, वह तुम्हें सब बताएगा। (८)★

---

१. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद उन के यारों ने बड़ी मेहनत की है, तब उन का दीन फैला। हमारे हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे भी ख़लीफ़ों ने उस से ज़्यादा किया।

२. अ-पढ़ अरब के लोग थे, जिन के पास नबी की किताब न थी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिंय्यौमिल्-जुमुअति फ़स्औ
इला ज़िक्रिल्लाहि व-ज़रुल्बै-अ ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम्
तअ्लमून (९) फ़-इज़ा क़ुज़ियतिस्-सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू
मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्ल-अल्लकुम् तुफ़्लिहून (१०) व इज़ा
रऔ तिजा-र-तन् औ लह्व-निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा
व त-र-कू-क क़ाइमन् ط क़ुल् मा अिन्दल्लाहि
ख़ैरुम्-मिनल्लह्वि व मिनत्तिजारति ط
वल्लाहु ख़ैरुर-राज़िक़ीन ★ (११)

६३ सूरतुल्-मुनाफ़िक़ून १०४

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के ८२१ अक्षर, १८३ शब्द, ११ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इज़ा जा-अकल्-मुनाफ़िक़ू-न क़ालू
नश्हदु इन्न-क ल-रसूलुल्लाह ▨ वल्लाहु
यअ्लमु इन्न-क ल-रसूलुहू ط वल्लाहु यश्हदु
इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न लकाज़िबून ج (१)

المنفقون ٦٣ — ٢٨ قد سمع الله ٢٨

تعملون ۝ يايها الذين امنوا اذا نودى للصلوة من يوم الجمعة
فاسعوا الى ذكر الله وذروا البيع ذلكم خير لكم ان كنتم
تعلمون ۝ فاذا قضيت الصلوة فانتشروا فى الارض وابتغوا
من فضل الله واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون ۝ واذا راوا
تجارة او لهوا انفضوا اليها وتركوك قائما قل ما عند الله
خير من اللهو ومن التجارة والله خير الرزقين ۝
سورة المنفقون مدنية وهى احدى عشرة اية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
اذا جاءك المنفقون قالوا نشهد انك لرسول الله والله يعلم
انك لرسوله والله يشهد ان المنفقين لكذبون ۝ اتخذوا
ايمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله انهم ساء ما كانوا
يعملون ۝ ذلك بانهم امنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم
لا يفقهون ۝ واذا رايتهم تعجبك اجسامهم وان يقولوا
تسمع لقولهم كانهم خشب مسندة يحسبون كل صيحة
عليهم هم العدو فاحذرهم قتلهم الله انى يؤفكون ۝ و
اذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم و
رايتهم يصدون وهم مستكبرون ۝ سواء عليهم استغفرت

منزل ٧

इत्त-ख़ज़ू ऐमानहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अन् सबीलिल्लाहि ط इन्नहुम्
सा-अ मा कानू यअ्-मलून (२) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् आमनू
सुम्-म क-फ़रू फ़तुबि-अ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (३) व इज़ा
रऐतहुम् तुअ्-जिबु-क अज्सामुहुम् ط व इंय्यक़ूलू तस्मअ्-लिक़ौलिहिम् ط
क-अन्नहुम् ख़ुशुबुम्-मुसन्नदतुन् ط यह्सबू-न कुल्-ल सैहतिन् अ़लैहिम् ط
हुमुल्-अ़दुव्वु फ़ह्-ज़रहुम् ط क़ा-त-लहुमुल्लाहु ز अन्ना युअ्-फ़कून (४) व
इज़ा क़ी-ल लहुम् तआलौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ
रुऊसहुम् व रऐतहुम् यसुद्दू-न व हुम् मुस्तक्बिरून (५)

★रु॰ २/१२ आ ३ ▨ व॰ लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोमिनो ! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो ख़ुदा की याद (यानी नमाज़) के लिए जल्दी करो और (ख़रीदना व) बेचना छोड़ दो। अगर समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (९) फिर जब नमाज़ हो चुके, तो अपनी-अपनी राह लो और ख़ुदा का फ़ज़्ल खोजो और ख़ुदा को बहुत-बहुत याद करते रहो, ताकि निजात पाओ। (१०) और जब ये लोग सौदा बिकता, या तमाशा होता देखते हैं तो उधर भाग जाते हैं और तुम्हें (खड़े का) खड़ा छोड़ जाते हैं। कह दो कि जो चीज़ ख़ुदा के यहां है, वह तमाशे और सौदे से कहीं बेहतर है और ख़ुदा सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।[1] (११)★



६३ सूरः मुनाफ़िक़ून १०४

सूरः मुनाफ़िक़ून मदनी है। इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) जब मुनाफ़िक़ लोग तुम्हारे पास आते हैं, तो (निफ़ाक़ की वजह से) कहते हैं कि हम इक़रार करते हैं कि आप बेशक ख़ुदा के पैग़म्बर हैं▨और ख़ुदा जानता है कि हक़ीक़त में तुम उस के पैग़म्बर हो, लेकिन ख़ुदा ज़ाहिर किए देता है कि मुनाफ़िक़ (दिल से एतक़ाद न रखने के लिहाज़ से) झूठे हैं।[2] (१) उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है और उन के ज़रिए से (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोक रहे हैं। कुछ शक नहीं कि जो काम ये करते हैं, बुरे हैं। (२) यह इस लिए कि ये (पहले तो) ईमान लाए, फिर काफ़िर हो गये, तो उन के दिलों पर मुहर लगा दी गयी, सो अब ये समझते ही नहीं।[3] (३) और जब तुम उन (के अंगों के मेल) को देखते हो तो उन के जिस्म तुम्हें (क्या ही) अच्छे मालूम होते हैं और जब वे बातें करते हैं, तो तुम उन के बोल को तवज्जोह से सुनते हो, गोया लकड़ियां हैं, जो दीवारों से लगायी गयी हैं, (डरपोक ऐसे कि) हर ज़ोर की आवाज़ को समझें (कि) उन पर (बला आयी)। ये (तुम्हारे) दुश्मन हैं, इनसे बे-ख़ौफ़ न रहना। ख़ुदा उन को हलाक करे, ये कहां बहके फिरते हैं। (४) और जब उन से कहा जाए कि आओ ख़ुदा के रसूल तुम्हारे लिए मग़फ़िरत मांगें तो सर हिला देते हैं और तुम उन को देखो कि तकब्बुर

१. जनाब सरवरे कायनात सल्ल० जुमे का ख़ुत्बा पढ़ रहे थे, इतने में शाम का क़ाफ़िला ग़ल्ला ले कर आया। उन दिनों मदीने में मंहगाई थी और लोगों को ग़ल्ले की ज़रूरत थी। ख़ुत्बा सुन रहे लोगों के कानों में जो नक़्क़ारे की आवाज़ आयी तो आंहज़रत को ख़ुत्बे में खड़ा छोड़ कर सब उस के देखने को चले गये। मस्जिद में सिर्फ़ बारह मर्द और सात औरतें रह गयीं, तब यह आयत नाज़िल हुई।

२. यानी चूंकि ये लोग दिल से तुम्हारी रिसालत के क़ायल नहीं और तुम्हारे सामने सिर्फ़ ज़ुबान से इक़रार करते हैं, भीतर कुछ रखते हैं और बाहर कुछ, इस लिए झूठे हैं और उन के कहने का एतबार नहीं।

३. यानी मुंह से तो ये कहते हैं कि हम ईमान लाए, मगर दिल में कुफ़्र है और इसी पर जमे हुए हैं, या यह कि मुसलमानों के पास आते हैं तो उन से मोमिन होने का इक़रार करते हैं और जब काफ़िरों के पास जाते हैं, तो इस्लाम से इन्कार करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सवाउन् अ़लैहिम् अस्तग़्फ़र-त लहुम् अम् लम् तस्तग़्फ़िर् लहुम्ط लंय्यग़्फ़िरल्लाहु
लहुम्ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन (६) हुमुल्लज़ी-न
यक़ूलू-न ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन् अिन्-द रसूलिल्लाहि ह़त्ता यन्फ़ज़्ज़ूط व लिल्लाहि
ख़ज़ाइनुस्समावाति वल्अर्ज़ि व लाकिन्नल् - मुनाफ़िक़ी - न ला यफ़्क़हून
(७) यक़ूलू-न लइर्-र-जअ्-ना इ-लल्मदीनति
लयुख़्रिजन्नल् - अ-अ़ज़्ज़ु मिन्हल् - अ-ज़ल्-
लط व लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु व लिरसूलिही व
व लिल्-मुअ्मिनी-न व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न
ला यअ्-लमून ★ (८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू
ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम्
अन् ज़िक्रिल्लाहिج व मंय्यफ़्-अ़ल् ज़ालि-क
फ़उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (९) व अन्फ़िक़ू
मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य
अ-ह़-दकुमुल्मौतु फ़-यक़ू-ल रब्बि लौ ला
अख़्ख़र - तनी इला अ-जलिन् क़रीबिन्ل
फ़-अस्सद्द - क़ व अकुम् - मिनस्सालिह़ीन
(१०) व लंय्यु-अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन्
इज़ा जा-अ अ-जलुहाط वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ् - मलून ★ (११)

التغابن ٦٤ ۹۲۵ قد سمع الله ٢٨

لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ
عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى
الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ
يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ
مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِىْٓ
اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ
اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١١

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِىَ ثَمَانَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١ هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ
كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣

६४ सूरतुत्तग़ाबुनि १०८

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ११२२ अक्षर, २४७ शब्द, १८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़िج लहुल्मुल्कु
व लहुल्ह़म्दुز व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१) हुवल्लज़ी
ख़-ल-क़कुम् फ़मिन्कुम् काफ़िरुंव्-व मिन्कुम् मुअ्मिनुन्ط वल्लाहु
बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२) ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्ह़क़्क़ि
व सव्व - रकुम् फ़-अह़्-स-न सु-व - रकुम्ج व इलैहिल् - मसीर (३)

★रु. १/१३ आ ८ ★रु. २/१४ आ ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करते हुए मुंह फेर लेते हैं। (५) तुम उन के लिए मग़्फ़िरत मांगो या न मांगो, उन के हक़ में बराबर है, ख़ुदा उन को हर गिज़ न बख़्शेगा। बेशक ख़ुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (६) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास (रहते) हैं, उन पर (कुछ) ख़र्च न करो, यहां तक कि ये (ख़ुद ही) भाग जाएं, हालांकि आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने ख़ुदा ही के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं समझते। (७) कहते हैं कि अगर हम लौट कर मदीने पहुंचे तो इज़्ज़त वाले ज़लील लोगों को वहां से निकाल बाहर करेंगे हालांकि इज़्ज़त ख़ुदा की है और उस के रसूल की और मोमिनों की, लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (८) ★

मोमिनो ! तुम्हारा माल और औलाद तुम को ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दे और जो ऐसा करेगा, तो वे लोग घाटा उठाने वाले हैं। (९) और जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस में से उस (वक़्त) से पहले ख़र्च कर लो कि तुम में से किसी की मौत आ जाए तो (उस वक़्त) कहने लगे कि मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझे थोड़ी-सी और मोहलत क्यों न दी, ताकि मैं ख़ैरात कर लेता और नेक लोगों में दाख़िल हो जाता। (१०) और जब किसी की मौत आ जाती है, तो ख़ुदा उस को हर-गिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस से ख़बरदार है। (११) ★



६४ सूरः तग़ाबुन १०८

सूरः तग़ाबुन मदनी है, इस में अठारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है, (सब) ख़ुदा की तस्बीह करती है, उसी की सच्ची बादशाही है और उसी की तारीफ़ (न ख़त्म होने वाली) है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१) वही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया फिर कोई तुम में काफ़िर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देखता है। (२) उसी ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं और सूरतें भी पाकीज़ा बनायीं

★रु. १/१३ आ ८ ★रु. २/१४ आ ३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्-लमु मा तुसिर्-रू-न व मा तुअ्-लिनू-न
वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़ातिस्सुदूर (४) अ-लम् यअ्तिकुम् न-ब-उल्लज़ी-न
क-फ़रू मिन् क़ब्लु फ़-ज़ाक़ू वबा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (५)
ज़ालि-क बि-अन्नहू कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़ - क़ालू
अ ब-शरुंय्यह्दूनना फ़-क-फ़रू व त-वल्लौ-
वस्तग़्नल्लाहु ط वल्लाहु ग़निय्युन् ह़मीद (६)
ज़-अ़-मल्लज़ी-न क-फ़रू अल्लंय्युब्अ़सू ط क़ुल्
बला व रब्बी ल-तुब् - असुन्-न सुम्-म
ल-तुनब्बउन-न बिमा अ़मिल्तुम् ط व ज़ालि-क
अ़लल्लाहि यसीर (७) फ़आमिनू बिल्लाहि
व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना ط वल्लाहु
बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (८) यौ-म यज्-
मअ़ुकुम् लियौमिल्-जम्अ़ि ज़ालि-क यौमुत्तग़ाबुनि ط
व मंय्युअ्मिम् - बिल्लाहि व यअ् - मल्
सालिह़ंय्युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व
युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु
ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (९) वल्लज़ी-न क-फ़रू व
कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्ह़ाबुन्नारि ख़ालिदी-न फ़ीहा ط व बिअ्सल्-मसीर
● ★ (१०) मा असा-ब मिम्मुसीबतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि
यह्दि क़ल्बहू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (११) व अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्-
रसू-ल फ़-इन् त-वल्लैतुम् फ़-इन्नमा अ़ला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१२) अल्लाहु
ला इला-ह इल्ला हु-व ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (१३) या अय्यु-
हल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल्लकुम् फ़ह़्ज़रूहुम्
व इन् तअ्-फ़ू व तस्फ़ह़ू व तग़्फ़िरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रह़ीम (१४)

التغابن ٦٤ — ٨٨٦ — قد سمع الله ٢٨

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ
كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا
وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ
وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ
يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ
سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠ مَآ اَصَابَ
مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝١١ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٢ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ
وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ
اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا

ركوع ٢ ١٥

منزل ٧

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और उसी की तरफ़ (तुम्हें) लौट कर जाना है। (३) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह सब जानता है और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो और जो खुल्लम-खुल्ला करते हो, उस से भी आगाह है और ख़ुदा दिल के भेदों को जानता है। (४) क्या तुम को उन लोगों के हाल की ख़बर नहीं पहुंची, जो पहले काफ़िर हुए थे, तो उन्हों ने अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख लिया और (अभी) दुख देने वाला अज़ाब (और) होना है। (५) यह इस लिए कि उन के पास पैग़म्बर खुली निशानियां ले कर आते तो यह कहते कि क्या आदमी हमारे हादी बनते हैं ? तो उन्हों ने (उन को) न माना और मुंह फेर लिया और ख़ुदा ने भी बे-परवाई की और ख़ुदा बे-परवा (और) तारीफ़ (व सना) के लायक़ है। (६) जो लोग काफ़िर हैं, उन का एतक़ाद है कि वे (दोबारा) हर गिज़ नहीं उठाए जाएंगे। कह दो कि हां, मेरे परवरदिगार की क़सम ! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो-जो काम तुम करते रहे हो, वे तुम्हें बताए जाएंगे और यह (बात) ख़ुदा को आसान है। (७) तो ख़ुदा पर और उस के रसूल पर और नूर (क़ुरआन) पर जो हम ने नाज़िल फ़रमाया है, ईमान लाओ और ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है। (८) जिस दिन वह तुम को इकट्ठा होने (यानी क़ियामत) के दिन इकट्ठा करेगा वह नुक़्सान उठाने का दिन है और जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाए और नेक अमल करे वह उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा। और जन्नत के बाग़ों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे। यह बड़ी कामियाबी है। (९) और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़ख़ वाले हैं, हमेशा उसी में रहेंगे और वह बुरी जगह है (१०)★●

कोई मुसीबत नाज़िल नहीं होती मगर ख़ुदा के हुक्म से और जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाता है, वह उस के दिल को हिदायत देता है और ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (११) और ख़ुदा की इताअत करो और उस के रसूल की इताअत करो। अगर तुम मुंह फेर लोगे, तो हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का खोल-खोल कर पहुंचा देना है। (१२) ख़ुदा (जो सच्चा माबूद है, उस) के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तो मोमिनों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें। (१३) मोमिनो ! तुम्हारी औरतों और औलाद में से कुछ तुम्हारे दुश्मन (भी) हैं, उन से बचते रहो और अगर माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो ख़ुदा भी बख़्शने वाला मेहरबान

★रु. १/१५ आ १० ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुन्ط वल्लाहु अिन्दहू अज्रुन् अज़ीम (१५)
फ़त्तक़ुल्ला-ह मस्त-तअ्-तुम् वस्-मअू व अतीअू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्-लिअन्फ़ुसिकुम्ط व
मंय्यू-क़ शुह्-ह नफ़्सिही फ़उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहू-न (१६) इन् तुक़्रिज़ुल्ला-ह
क़र्-ज़न् ह-स-नंय्युज़ाअिफ़्हु लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्ط वल्लाहु शकूरुन् हलीम لا (१७)
आलिमुल्ग़ैबि वश्शहादतिल्-अज़ीज़ुल्-हकीम★(१८)

الطلاق ٦٥ — قد سمع الله ٢٨

وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ
وَاللّٰهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا
وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولٰئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٦﴾ إِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

يٰأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا
الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۖ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا
يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ
اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ لَا تَدْرِي
لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ أَمْرًا ﴿١﴾ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ
عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۚ ذٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ
كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَهُ
مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ

منزل

६५ सूरतुत्तलाक़ि ९९

(मदनी) इस सूर: में अरबी के १२३७ अक्षर, २९८ शब्द, १२ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-तल्लिक़ू हुन्-न लिअिद्दतिहिन्-न व
अह्सुल्-अिद्द-त ج वत्तक़ुल्ला-ह रब्बकुम् ج ला
तुख़्रिजूहुन्-न मिम्-बुयूतिहिन्-न व ला यख़्रुज्-न
इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहिशतिम्-मुबय्यिनतिन्ط
व तिल-क हुदूदुल्लाहिط व मंय्य-त-अद्-द हुदू-
दल्लाहि फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहूط
ला तद्री ल-अल्लल्ला-ह युह्दिसु बअ्-द ज़ालि-क अम्रा (१) फ़-इज़ा ब-लग़्-न
अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बिमअ्-रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्-न बिमअ्-रूफ़िंव्-व अश्हिदू
ज़वै अद्लिम्-मिन्कुम् व अक़ीमुश्शहाद-त लिल्लाहिط ज़ालिकुम् यू-अज़ु
बिही मन् का-न युअ्मिनु बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरिط व
मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्-अल् लहू मख़्-र-जंव्- لا (२) व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु
ला यह्-तसिबुط व मंय्य-त-वक्कल् अलल्लाहि फ़हु-व हस्बुहूط इन्नल्ला-ह
बालिग़ु अम्रिहीط क़द् ज-अ-लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़द्रा (३)

है। (१४) तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तो आज़माइश है और ख़ुदा के यहां बड़ा बदला है। (१५) सो जहां तक हो सके, ख़ुदा से डरो और (उस के हुक्मों को) सुनो और उसके फ़रमां-बरदार (उस की राह में) खर्च करो, (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और जो शख़्स तबीयत के बुख़्ल से बचाया गया तो ऐसे ही लोग राह पाने वाले हैं। (१६) अगर तुम ख़ुदा को (इख़्लास और नीयत) नेक (से) क़र्ज़ दोगे, तो वह तुम को उस का दो गुना देगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और ख़ुदा क़द्र शनास और बुर्दबार है। (१७) छिपे और खुले का जानने वाला ग़ालिब (और) हिक्मत वाला। (१८) ★

६५ सूरः तलाक़ ६६

सूरः तलाक़ मदनी है। इस में बारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! (मुसलमानों से कह दो कि) जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो, तो उन की इद्दत के शुरू में तलाक़ दो[1] और इद्दत को गिनते रहो और ख़ुदा से, जो तुम्हारा परवरदिगार है, डरो। (न तो तुम ही) उन को (इद्दत के दिनों में) उन के घरों से निकालो और न वे (ख़ुद ही) निकलें। हां, अगर वे खुली बे-हयाई करें (तो निकाल देना चाहिए) और ये ख़ुदा की हदें हैं। जो ख़ुदा की हदों से आगे बढ़ेगा, वह अपने आप पर ज़ुल्म करेगा। (ऐ तलाक़ देने वाले!) तुझे क्या मालूम, शायद ख़ुदा इसके बाद कोई (रुजूअ होने का) रास्ता पैदा कर दे। (१) (फिर जब वह अपनी मीयाद (यानी इद्दत पूरी होने) के क़रीब पहुंच जाएं, तो या तो उन को अच्छी तरह से (ज़ौजियत में) रहने दो या अच्छी तरह से अलग कर दो और अपने में से दो इन्साफ़पसन्द मर्दों को गवाह कर लो और (गवाहो!) ख़ुदा के लिए ठीक गवाही देना। इन बातों से उस शख़्स को नसीहत की जाती है, जो ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है और जो कोई ख़ुदा से डरेगा, वह उस के लिए (रंज व ग़म से) मुख़्लिसी की शक्ल पैदा कर देगा। (२) और उस को ऐसी जगह से रोज़ी देगा, जहां से (वह्म व) गुमान भी न हो और जो ख़ुदा पर भरोसा रखेगा, तो वह उस को किफ़ायत करेगा। ख़ुदा अपने काम को (जो वह करना चाहता है) पूरा कर देता है। ख़ुदा ने हर चीज़ का

---

१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि उन्हों ने अपनी बीवी को तलाक़ दी और वह उस वक़्त हैज़ से थीं। हज़रत उमर रज़ि० ने जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इस का ज़िक्र किया तो आप ग़ुस्सा हुए और रुजूअ कर लेने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि इसे रहने देना चाहिए, यहां तक कि पाक हो जाए, फिर हैज़ आए फिर पाक हो, फिर अगर तलाक़ देनी चाहे, तो हम-बिस्तर होने से पहले तलाक़ दो। यह वह इद्दत है, जिस को ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है कि औरतों को उन की इद्दत के शुरू में तलाक़ दो और यह आयत पढ़ी—'या अय्युहन्नबीयु इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़तल्लिक़ूहुन-न लि इद्दतिहिन-न'।

★रु. २/१६ आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लाई य-इस्-न मिनल्-महीज़ि मिन् निसाइकुम् इनिर्तब्तुम् फ़अि़द्दतुहुन्-न सलासतु
अश्हुरिंव्-वल्लाई लम् यहिज़्-नط व उलातुल्-अह्‌मालि अ-जलुहुन-न अंय्य-ज़अ्-न हम्ल-
हुन्-नط व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्-अ़ल् लहू मिन् अम्रिही युस्रा (४) ज़ालि-क
अम्रुल्लाहि अन्ज़-लहू इलैकुम्ط व मंय्यत्तक़िल्ला-ह युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व

युअ्-ज़िम् लहू अज्रा (५) अस्किनूहुन्-न
मिन् हैसु स-कन्तुम् मिंव्वुज्दिकुम् व ला तुज़ार्-
रूहुन्-न लितुज़य्यिक़ू अ़लैहिन्-नط व इन् कुन्-न
उलाति हम्लिन् फ़-अन्फ़िक़ू अ़लैहिन्-न हत्ता
य-ज़अ्-न हम्-लहुन-नج फ़-इन् अर्ज़अ्-न लकुम्
फ़आतूहुन्-न उजूरहुन्-नج वअ्तमिरू बैनकुम्
बिमअ् - रूफ़िन्ج व इन् त - आसर्तुम्
फ़ - स - तुर्ज़िअ़ु लहू उख़्राط (६)
लियुन्फ़िक़् ज़ू स-अ़तिम् - मिन् स-अ़तिहीط
व मन् क़ुदि-र अ़लैहि रिज़्क़ुहू फ़ल्युन्फ़िक़्
मिम्मा आताहुल्लाहुط ला युकल्लिफ़ुल्लाहु
नफ़्सन् इल्ला मा आताहाط सयज्-अ़लुल्लाहु
बअ्-द अ़ुस्रिंय्युस्रा ★ (७)व क-अय्यिम्-

ثَنيْءٍ قَدْرًا ۝ وَالّٰٓئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ
ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓئِيْ لَمْ يَحِضْنَ ۭ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ
اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ
يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ
سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ
مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَاۗرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۭ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ
حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ
لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۝ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ
وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۭ لَا يُكَلِّفُ
اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۭ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝ وَ
كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا
شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ
عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ڃ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ڝ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝
رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ

मिन् क़र्यतिन् अ़-तत् अ़न् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़-हासब्नाहा हिसाबन्
शदीदंव्-व अ़ज़्ज़ब्नाहा अ़ज़ाबन् नुक्रा (८) फ़ - ज़ाक़त् वबा - ल
अम्रिहा व का-न आ़क़िबतु अम्रिहा ख़ुस्रा (९) अ-अ़द्दल्लाहु लहुम्
अ़ज़ाबन् शदीदन्لا फ़त्तक़ुल्ला - ह या उलिल् - अल्बाबि-ڃ-ल्लज़ी - न
आमनूط क़द् अन्ज़ - लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रर्-لا (१०) रसूलंय्यत्लू
अ़लैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल् - लियुख़्रिजल् - लज़ी - न आमनू
व अ़मिलुस्सालिहाति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरिط व मंय्युअ्मिम् - बिल्लाहि
व यअ् - मल् सालिहंय्युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्‌तिहल् - अन्हारु
ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन्ط क़द् अह्‌-स-नल्लाहु लहू रिज़्क़ा (११)

★रु. १/१७ आ ७ ∴ मु. अ़ि मु त क़. १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है। (३) और तुम्हारी (तलाक़ पायी) औरतें जो हैज़ से ना-उम्मीद हो चुकी हों, अगर तुम को (उन की इद्दत के बारे में) शुब्हा हो, तो उन की इद्दत तीन महीने है और जिन को अभी हैज़ नहीं आने लगा, (उन की इद्दत भी यही है) और हमल वाली औरतों की इद्दत हमल होने (यानी बच्चा जनने) तक है। और जो ख़ुदा से डरेगा, ख़ुदा उस के काम में आसानी पैदा कर देगा। (४) ये ख़ुदा के हुक्म हैं जो ख़ुदा ने तुम पर नाज़िल किए हैं और जो ख़ुदा से डरेगा, वह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा और उसे बड़ा बदला बख़्शेगा। (५) (तलाक़ पायी) औरतों को (इद्दत के दिनों में) अपने क़ुदरत के मुताबिक़ वहीं रखो, जहां ख़ुद रहते हो और उन को तंग करने के लिए तक्लीफ़ न दो और अगर हमल से हों, तो बच्चा जनने तक उन का ख़र्च देते रहो। फिर अगर वह बच्चे को तुम्हारे कहने से दूध पिलाएं तो उन को उन की उज्रत दो और (बच्चे के बारे में) पसन्दीदा तरीक़े से मुवाफ़क़त रखो और अगर आपस में ज़िद (और ना-इत्तिफ़ाक़ी) करोगे तो (बच्चे को) उस के (बाप के) कहने से कोई और औरत दूध पिलाएगी। (६) वुस्अत वाले को अपनी वुस्अत के मुताबिक़ ख़र्च करना चाहिए और जिस की रोज़ी में तंगी हो, वह जितना ख़ुदा ने उस को दिया है, उस के मुवाफ़िक़ ख़र्च करे। ख़ुदा किसी को तक्लीफ़ नहीं देता, मगर उसी के मुताबिक़ जो उस को दिया है और ख़ुदा बहुत जल्द तंगी के बाद कुशादगी बख़्शेगा। (७)★

और बहुत-सी बस्तियों (के रहने वालों) ने अपने परवरदिगार और उस के पैग़म्बरों के हुक्मों से सरकशी की, तो हम ने उन को सख़्त हिसाब में पकड़ में लिया और उन पर (ऐसा) अज़ाब नाज़िल किया, जो न देखा था, न सुना। (८) सो उन्हों ने अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख लिया और उन का अंजाम नुक़्सान ही तो था। (९) ख़ुदा ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, तो ऐ अक़्ल वालो !⁘जो ईमान लाए हो,⁘ख़ुदा से डरो। ख़ुदा ने तुम्हारे पास नसीहत (की किताब) भेजी है। (१०) (और अपने) पैग़म्बर (भी भेजे हैं) जो तुम्हारे सामने ख़ुदा की खुली मतलब वाली आयतें पढ़ते हैं, ताकि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे हैं, उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले आएं और जो शख़्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उन को बहिश्त के बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा-हमेशा उन में रहेंगे। उनको

★रु. १/१७ आ ७ ⁘मु. अ़ि मु ता ख़. १४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़ सब्-अ समावातिव्-व मिनल् - अर्ज़ि मिस् - लहुन-न,
य-त-नज़्ज़लुल्-अम्रु बैनहुन्-न लितअ्-लमू अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन्
क़दीरुंव्-व अन्नल्ला-ह क़द् अह़ा - त़ बिकुल्लि शैइन् अ़िल्मा ★ (१२)

صٰلِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝١١ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ
مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝١٢ ع ٢/١٨

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۭ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى
بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ
عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ
مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۭ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝٣ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى
اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ
ظَهِيْرٌ ۝٤ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا
مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰۗىِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰۗىِٕحٰتٍ
ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ

६६ सूरतुत्तह़रीमि १०७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ११२४ अक्षर, २५३ शब्द, १२ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुह़र्रिमु मा अ - ह़ल्लल्लाहु ल-क ج तब्तग़ी मर्-ज़ा-त अज़्वाजि - क ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर् - रह़ीम (१) क़द् फ़-र-ज़ल्लाहु लकुम् तह़िल्ल-त़ ऐमानिकुम् ج वल्लाहु मौलाकुम् ج व हुवल्-अ़लीमुल् - ह़कीम (२) व इज् असर्रन्नबिय्यु इला बअ्-ज़ि अज़्वाजिही ह़दीसन् ج फ़-लम्मा नब्ब - अत् बिही व अज़्-ह-रहुल्लाहु अ़लैहि अ़र्र-फ़ बअ्-ज़हू व अअ्-र-ज़ अम्-बअ् - ज़िन् ج फ़-लम्मा नब्ब-अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा ط क़ा-ल नब्ब-अनि-यल्-अ़लीमुल्-ख़बीर (३) इन् ततूबा इलल्लाहि फ़-क़द् स़-ग़त् क़ुलूबुकुमा ج व इन् तज़ाहरा अ़लैहि फ़-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व स़ालिह़ुल्-मुअ्मिनी-न ج वलमलाइकतु बअ्-द ज़ालि-क ज़हीर (४) अ़सा रब्बुहू इन् त़ल्ल-क़कुन्-न अंय्युब्दि-लहू अज़्-वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन-न मुस्लिमातिम्-मुअ्मिनातिन् क़ानितातिन् ता-इबातिन् आ़बिदातिन् साइहातिन् सय्यिबातिंव्-व अब्कारा (५)

★रु. २/१८ आ ५

ख़ुदा ने ख़ूब रोज़ी दी है। (११) ख़ुदा ही तो है, जिस ने सात आसमान पैदा किए और वैसी ही ज़मीनें, उन में (ख़ुदा के) हुक्म उतरते रहते हैं, ताकि तुम लोग जान लो कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है और यह कि ख़ुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर एहाता किए हुए है।(१२)★

६६ सूरः तह्रीम १०७

सूरः तह्रीम मदनी है। इस में बारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! जो चीज़ ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जायज़ की है, तुम उस से किनाराकशी क्यों करते हो? (क्या इस से) अपनी बीवियों की ख़ुश्नूदी[1] चाहते हो? और ख़ुदा बख़्शने वाला[2] मेहरबान है। (१) ख़ुदा ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़स्मों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है और ख़ुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है और वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२) और (याद करो) जब पैग़म्बर ने अपनी एक बीवी से एक भेद की बात कही, तो (उस ने दूसरी को बता दी) जब उस ने उस को खोल दिया और ख़ुदा ने इस (हाल) से पैग़म्बर को आगाह कर दिया, तो पैग़म्बर ने (इन बीवी को वह बात) कुछ तो बतायी और कुछ न बतायी[3], तो जब वह उन को बतायी, तो पूछने लगीं कि आप को यह किस ने बताया? उन्हों ने कहा कि मुझे उस ने बताया है, जो जानने वाला ख़बरदार है। (३) अगर तुम दोनों ख़ुदा के आगे तौबा करो, (तो बेहतर है, क्योंकि) तुम्हारे दिल टेढ़े हो गये हैं और अगर पैग़म्बर (की तक्लीफ़) पर आपस में मदद करोगी, तो ख़ुदा और जिब्रील और नेक मुसलमान उन के हामी और दोस्तदार हैं और इन के अलावा (और) फ़रिश्ते भी मददगार हैं। (४) और पैग़म्बर तुम को तलाक़ दे दें तो अजब नहीं कि उन का परवरदिगार तुम्हारे बदले उन को तुम से बेहतर बीवियां दे दे, मुसलमान, ईमान वालियां, फ़रमांबरदार, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ा रखने वालियां, बिन शौहर और कुंवारियां,[4] (५) मोमिनो! अपने आप को

---

१. कहते हैं आंहज़रत ने अपनी बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब के पास शहद पी लिया, जब आप हज़रत आइशा और हज़रत हफ़्सा रज़ि० के पास आए तो उन दोनों ने जैसा कि पहले सलाह कर ली थी, आप से कहा कि आप के मुंह से बू आती है। आप को बू से सख़्त नफ़रत थी, तो आप ने फ़रमाया कि मैं आगे कभी शहद नहीं पियूंगा। कुछ कहते हैं कि हज़रत हफ़्सा को ख़ुश करने के लिए आप ने मारिया क़िब्तिया को, जो आप की हरम और आप के साहबज़ादे इब्राहीम की वालिदा थीं, अपने ऊपर हराम कर लिया था, तब यह आयत उतरी।

२. हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेना, गोया बुरी बात पर क़सम खाना है, तो जो कफ़्फ़ारा क़सम तोड़ डालने का है, वही हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर के फिर हलाल कर लेने का है और क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा सूरः माइदा में ज़िक्र किया जा चुका है।

३. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया तो हज़रत हफ़्सा से फ़रमाया कि यह हाल किसी से बयान न करना। हफ़्सा और आइशा रज़ि० में बड़ा मेल था। उन्हों ने इस को हज़रत आइशा पर ज़ाहिर कर दिया। अल्लाह तआला ने इस हाल से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुत्तला फ़रमाया।

४. सय्यिब (बिन शौहर) उस औरत को कहते हैं, जो ब्याह हो जाने के बाद बे-शौहर हो गयी हो।

★रु. २/१८ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ू अन्फ़ु-सकुम् व अह्लीकुम् नारंव्वक़ूदुहन्नासु
वल्ह़िजारतु अ़लैहा मलाइ-कतुन् ग़िलाज़ुन् शिदादुल्ला यअ्-सूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम्
व यफ़्-अ़लू-न मा युअ्-मरून (६) या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ्-तज़िरुल्-
यौ-म इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून ★ (७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू
तूबू इलल्लाहि तौब-तन् नसूहन् अ़सा
रब्बुकुम् अंय्युकफ़्फ़ि-र अ़न्कुम् सय्यिआति-
कुम् व युद्ख़ि-लकुम् जन्नातिन् तज्री
मिन् तह्तिहल्-अन्हारु यौ-म ला
युख़्ज़िल्लाहुन्नबिय्-य वल्लज़ी-न आमनू
म-अ़हू नूरुहुम् यस्आ़ बै-न ऐदीहिम्
व बिऐमानिहिम् यक़ूलू-न रब्बना अतिमम्
लना नूरना वग़्फ़िर-लना इन्न-क अ़ला
कुल्लि शैइन् क़दीर (८) या अय्युहन्नबिय्यु
जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़्
अ़लैहिम् व मअ्-वाहुम् जहन्नमु व
बिअ्-सल्-मसीर (९) ज़-र-बल्लाहु म-स-लल्-
लिल्लज़ी-न क-फ़-रुम्-र-अ-त नूहिंव्वम्-र-अ-त लूतिन् कानता तह्-त अ़ब्दैनि
मिन् अ़िबादिना सालिहैनि फ़-ख़ानताहुमा फ़-लम् युग़्निया अ़न्हुमा मिनल्लाहि
शैअंव्वक़ीलद्ख़ुलन्ना-र म-अ़द्दाख़िलीन (१०) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लल्-लिल्लज़ी-न
आमनुम्-र-अ-त फ़िर्औ़-न इज़् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द-क बैतन्
फ़िल्जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ़-न व अ़-मलिही व नज्जिनी
मिनल्-क़ौमिज़्-ज़ालिमीन (११) व मर्-य-मब्-न-त अ़िम्रानल्लती
अह्-स-नत् फ़र्-जहा फ़-न-फ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्-द-क़त् बिकलि-
माति रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल्-क़ानितीन ★ (१२)

نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ نُوْرُهُمْ
يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا
وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ
الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ
امْرَاَتَ لُوْطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ
مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝

منزل

★रु. १/१९ आ ७ व. लाज़िम ★रु. २/२० आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और अपने घर वालों को (जहन्नम की) आग से बचाओ, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं और जिस पर तुंदख़ू और सख़्त मिज़ाज फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं जो इर्शाद ख़ुदा उन को फ़रमाता है, उस की ना-फ़रमानी नहीं करते और जो हुक्म उन को मिलता है, उसे बजा लाते हैं। (६) काफ़िरो ! आज बहाने मत बनाओ। जो अमल तुम किया करते हो, उन्हीं का तुम को बदला दिया जाएगा। (७) ★

मोमिनो! ख़ुदा के आगे साफ़ दिल से तौबा करो, उम्मीद है कि वह तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर कर देगा और तुम को बहिश्त के बाग़ों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, उस दिन ख़ुदा पैग़म्बर को और उन लोगों को, जो उन के साथ ईमान लाए हैं, रुसवा नहीं करेगा, (बल्कि) उन का नूर (ईमान) उन के आगे और दाहिनी तरफ़ (रोशनी करता हुआ) चल रहा होगा और वे ख़ुदा से इल्तिजा करेंगे कि ऐ परवरदिगार ! हमारा नूर हमारे लिए पूरा कर और हमें माफ़ फ़रमा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (८) ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो। उन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरी जगह है। (९) ख़ुदा ने काफ़िरों के लिए नूह की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल बयान फ़रमायी है▨ दोनों हमारे दो नेक बन्दों के घर में थीं और दोनों ने उन की ख़ियानत की तो वे ख़ुदा के मुक़ाबले में उन औरतों के कुछ भी काम न आए और उन को हुक्म दिया गया कि और दाख़िल होने वालों के साथ तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ। (१०) और मोमिनों के लिए (एक) मिसाल (तो) फ़िऔन की बीवी की बयान फ़रमायी कि उस ने ख़ुदा से इल्तिजा की कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरे लिए बहिश्त में अपने पास एक घर बना और मुझे और उस के आमाल से निजात बख़्श और ज़ालिम लोगों के हाथ से मुझ को मुख़्लिसी अता फ़रमा। (११) और (दूसरी) इम्रान की बेटी मरयम की, जिन्हों ने अपनी शर्मगाह को बचाए रखा तो हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी और वह अपने परवरदिगार के कलाम और उस की किताबों को सच्चा समझती थीं और फ़रमांबरदारों में से थीं। (१२) ★

★रु. १/१९ आ ७ ▨ व. लाज़िम ★रु. २/ २०आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन्तीसवां पारः तबा-र-कल्लज़ी

६७ सूरतुल्-मुल्कि ७७

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १३५९ अक्षर, ३३५ शब्द, ३० आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

तबा - र - कल्लज़ी बियदिहिल् - मुल्कु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ۙ
(१) अल्लज़ी ख़-ल-क़ल् - मौ-त वल्ह़या-त़ लि-यब्लु-व-कुम् अय्युकुम् अह़्सनु
अ़-म-लन् ۚ व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़ूर ۙ (२) अल्लज़ी ख़ - ल - क़ सब् - अ
समावातिन् त़िबाक़न् ۚ मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्रह़्मानि मिन् तफ़ावुतिन् ۚ
फ़र्जिअिल् - ब-स़-र ۙ हल् तरा मिन्
फ़ुत़ूर (३) सुम्मर्जिअिल - ब-स़-र
कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल् - ब-स़रु ख़ासिअंव्-व
हु-व ह़सीर (४) व ल-क़द् ज़य्यन्नस्समाअद्-
दुन्या बिमस़ाबी-ह़ व ज-अ़ल्नाहा रुजूमल्-
लिश्शयात़ीनि व अअ़्-तद्ना लहुम् अ़ज़ाबस्सअ़ीर
(५) व लिल्लज़ी-न क-फ़-रू बिरब्बिहिम्
अ़ज़ाबु जहन्न-म ۚ व बिअ्सल्-मस़ीर (६)
इ-ज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ंव्-व
हि-य तफ़ूर ۙ (७) तकादु त-मय्यज़ु
मिनल्ग़ैज़ि ۚ कुल्लमा उल्क़ि-य फ़ीहा
फ़ौजुन् स-अ-लहुम् ख़-ज़-नतुहा अ-लम् यअ्तिकुम्
नज़ीर (८) क़ालू बला क़द् जा-अना
नज़ीरुन् ۙ फ़-कज़्ज़ब्ना व क़ुल्ना मा
नज़्ज़-लल्लाहु मिन् शैइन् ۖ इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर
(९) व क़ालू लौ कुन्ना नस्मअ़ु औ नअ़्‌क़िलु मा कुन्ना फ़ी अस़्ह़ाबिस्सअ़ीर
(१०) फ़अ़्-त-रफ़ू बिज़म्बिहिम् ۚ फ़सुह़्क़ल - लि-अस़्ह़ाबिस् - सअ़ीर (११)
इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिलग़ैबि लहुम् मग़्फ़ि-र-तुं व्-व अज्रुन् कबीर (१२) व
असिर्रू क़ौलकुम् अविज-हरू बिही ۚ इन्नहू अ़लीमुम् - बिज़ातिस्सुदूर (१३)

تبٰرك الذى ٢٩ ‏ ٤٥١ ‏ الملك ٦٧

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ① الَّذِيْ
خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْغَفُوْرُ ② الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ
الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③ ثُمَّ
ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ④
وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ
وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ⑤ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ
جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑥ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّ
هِيَ تَفُوْرُ ⑦ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ
خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ⑧ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ
فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ
كَبِيْرٍ ⑨ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑩
فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑪ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑫ وَاَسِرُّوْا
قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑬ اَلَا يَعْلَمُ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

६७ सूरः मुल्क ७७

सूरः मुल्क मक्की है, इस में तीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (ख़ुदा) जिस के हाथ में बादशाही है, बड़ी बरकत वाला है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१) उसी ने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन अच्छे काम करता है और वह ज़बरदस्त (और) बख़्शने वाला है। (२) उस ने सात आसमान ऊपर तले बनाए। (ऐ देखने वाले!) क्या तू (ख़ुदा-ए-) रहमान की कायनात में कुछ कमी देखता है? ज़रा आंख उठा कर देख, भला तुझ को (आसमान में) कोई दराड़ नज़र आता है। (३) फिर दोबारा (तीसरी बार) नज़र कर, तो नज़र (हर बार) तेरे पास नाकाम और थक कर लौट आएगी। (४) और हम ने क़रीब के आसमान को (तारों के) चिराग़ों से ज़ीनत दी और उन को शैतान के मारने का आला बनाया और उनके लिए दहकती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है। (५) और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार से इन्कार किया, उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और वह बुरा ठिकाना है। (६) जब वे उस में डाले जाएंगे, तो उस का चीख़ना-चिल्लाना सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी। (७) गोया मारे जोश के फट पड़ेगी। जब उस में उन की जमाअत डाली जाएगी, तो दोज़ख़ के दारोग़ा उन से पूछेंगे, तुम्हारे पास कोई हिदायत करने वाला नहीं आया था? (८) वे कहेंगे, क्यों नहीं, ज़रूर हिदायत करने वाला आया था, लेकिन हम ने उस को झुठला दिया और कहा कि ख़ुदा ने तो कोई चीज़ नाज़िल ही नहीं की। तुम तो बड़ी ग़लती में (पड़े हुए) हो। (९) और कहेंगे, अगर हम सुनते या समझते होते तो दोज़ख़ियों में न होते, (१०) पस वे अपने गुनाहों का इक़रार कर लेंगे, सो दोज़ख़ियों के लिए (ख़ुदा की रहमत से) दूरी है। (११) (और) जो लोग बिन देखे अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के लिए बख़्शिश और बड़ा बदला है। (१२) और तुम (लोग) बात छिपी कहो या ज़ाहिर। वह दिल के भेदों तक को जानता

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अला यअ्-लमु मन् ख़-लक़ व हुवल्लतीफ़ुल् - ख़बीर ★ (१४) हुवल्लज़ी
ज-अ्-ल लकुमुल्अर्-ज़ ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्क़िही
व इलैहिन्नुशूर (१५) अ अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्यख़्सि-फ़ बिकुमुल्अर-ज़
फ़-इज़ा हि-य तमूर (१६) अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्युर्सि-ल
अलैकुम् हासिबन् फ़-स-तअ्-लमू-न कै-फ़
नज़ीर (१७) व ल-क़द् क-ज़-ज़-बल्लज़ी-न
मिन् क़ब्लिहिम् फ़-कै-फ़ का-न नकीर (१८)
अ-व लम् यरौ इलत्तैरि फ़ौक़हुम् साफ़्फ़ातिंव्-व
यक़्बिज़्-न मा युम्सिकुहुन्-न
इल्लर्रह्मानु इन्नहू बिकुल्लि शैइम्
बसीर (१९) अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु-व
जुन्दुल्लकुम् यन्सुरुकुम् मिन्दूनिर्-रह्मानि
इनिल्काफ़िरू-न इल्ला फ़ी ग़ुरूर
(२०) अम्मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुक़ुकुम् इन्
अम्-स-क रिज़्क़हू बल् लज्जू फ़ी
अुतुव्विंव्-व नुफ़ूर (२१) अ-फ़-मंय्यम्शी
मुकिब्बन् अला वज्हिही अह-दा अम्मंय्यम्शी
सविय्यन् अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (२२)

تبٰرك الذی ۲۹ ۴۵۲ الملك ۶۷

مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝۱۴ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ
ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝۱۵
ءَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ
تَمُورُ ۝۱۶ أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا
فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ۝۱۷ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ۝۱۸ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ
مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝۱۹ أَمَّنْ هَٰذَا
الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ إِنِ الْكَافِرُونَ
إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝۲۰ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ
بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝۲۱ أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ
أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝۲۲ قُلْ هُوَ الَّذِي
أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝۲۳
قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝۲۴ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ
هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝۲۵ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝۲۶ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ
هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَدَّعُونَ ۝۲۷ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن
مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝۲۸ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ

منزل ۷

क़ुलु हुवल्लज़ी अन्शअकुम् व ज-अ्-ल लकुमुस्सम्-अ् वल्अब्सा-र वल् - अफ़्इ-द-त
क़लीलम्मा तश्कुरून (२३) क़ुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि
तुह्शरून (२४) व यक़ूलू-न मता हाज़ल् - वअ-दु इन कुन्तुम् सादिक़ीन
(२५) क़ुल् इन्नमल् - अिल्मु अिन्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम् -
मुबीन (२६) फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्-फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ी-ल
हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्-द-अून (२७) क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् अह-ल-कनियल्लाहु व
मम्मअि-य औ रहि-मना फ़मंय्युजीरुल्-काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् अलीम (२८)

★रु. १/१ आ १४ व. लाज़िम तलाफ़ी व मं न मु म.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है। (१३) भला जिस ने पैदा किया, वह बे-ख़बर है ? वह तो छिपी बातों का जानने वाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (१४)★

वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्म किया, तो उस की राहों में चलो-फिरो और ख़ुदा की (दी हुई) रोज़ी खाओ और (तुम को) उसी कें पास (क़ब्रों से) निकल कर जाना है। (१५) क्या तुम उस से जो आसमान में है, बे-ख़ौफ़ हो कि तुम को ज़मीन में धंसा दे और वह उस वक़्त हरकत करने लगे। (१६) क्या तुम उस से जो आसमान में है, निडर हो कि तुम पर कंकड़ भरी हवा छोड़ दे, सो तुम बहुत जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है। (१७) और जो लोग इन से पहले थे, उन्हों ने झुठलाया था, सो (देख लो कि) मेरा कैसा अज़ाब हुआ ? (१८) क्या उन्होंने अपने सरों पर उड़ते जानवरों को नहीं देखा जो परों को फैलाए रहते हैं और उन को सुकेड़ भी लेते हैं ▨ ख़ुदा के सिवा उन्हें कोई थाम नहीं सकता। बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है। (१९) भला ऐसा कौन है, जो तुम्हारी फ़ौज हो कर ख़ुदा के सिवा तुम्हारी मदद कर सके। काफ़िर तो धोखे में हैं। (२०) भला अगर वह अपनी रोज़ी बन्द कर ले, तो कौन है जो तुम को रोज़ी दे। लेकिन ये सरकशी और नफ़रत में फंसे हुए हैं। (२१) भला जो शख़्स चलता हुआ मुंह के बल गिर पड़ता है, वह सीधे रास्ते पर है या वह जो सीधे रास्ते पर बराबर चल रहा हो ? (२२) वह ख़ुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाए, (मगर) तुम कम एहसान मानते हो। (२३) कह दो कि वही है, जिस ने तुम को ज़मीन में फैलाया और उसी के सामने तुम जमा किए जाओगे। (२४) और काफ़िर कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह धमकी कब (पूरी) होगी ? (२५) कह दो कि इस का इल्म ख़ुदा ही को है और मैं तो खोल-खोल कर डर सुना देने वाला हूं। (२६) सो जब वे देख लेंगे कि वह (वायदा) क़रीब आ गया, तो काफ़िरों के मुंह बुरे हो जाएंगे और (उन से) कहा जाएगा कि यह वही है जिस की तुम ख़्वाहिश करते थे। (२७) कहो कि भला देखो तो अगर ख़ुदा मुझ को और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर मेहरबानी करे, तो कौन है जो काफ़िरों को दुख देने वाले अज़ाब से पनाह दे ? (२८) कह दो

★रु. १/१ आ १४ ▨ व. लाज़िम् तलाफ़ी व. मं. व. गु फ़.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुल् हुवर्रह्-मानु आमन्ना बिही व अ़लैहि त-वक्कल्ना फ़-स-तअ्-ल-मू-न मन्
हु-व फ़ी ज़लालिम् - मुबीन (२९) क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् अस्ब-ह्
मा-उकुम् ग़ौरन् फ़-मंय्यअ्-तीकुम् बिमाइम् - मअ़ीन ★ (३०)

آمنا به وعليه توكلنا فستعلمون من هو في ضلال مبين (٢٩) قل
أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين (٣٠)

سورة القلم مكية وهي اثنتان وخمسون آية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

ن والقلم وما يسطرون (١) ما أنت بنعمة ربك بمجنون (٢) و
إن لك لأجرا غير ممنون (٣) وإنك لعلى خلق عظيم (٤) فستبصر
ويبصرون (٥) بأييكم المفتون (٦) إن ربك هو أعلم بمن ضل
عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين (٧) فلا تطع المكذبين (٨)
ودوا لو تدهن فيدهنون (٩) ولا تطع كل حلاف مهين (١٠)
هماز مشاء بنميم (١١) مناع للخير معتد أثيم (١٢) عتل بعد
ذلك زنيم (١٣) أن كان ذا مال وبنين (١٤) إذا تتلى عليه آياتنا
قال أساطير الأولين (١٥) سنسمه على الخرطوم (١٦) إنا بلوناهم
كما بلونا أصحاب الجنة إذ أقسموا ليصرمنها مصبحين (١٧) و
لا يستثنون (١٨) فطاف عليها طائف من ربك وهم نائمون (١٩)
فأصبحت كالصريم (٢٠) فتنادوا مصبحين (٢١) أن اغدوا على
حرثكم إن كنتم صارمين (٢٢) فانطلقوا وهم يتخافتون (٢٣)
أن لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين (٢٤) وغدوا على حرد

६८ सूरतुल् - क़लमि २

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १२९५ अक्षर, ३०६ शब्द, ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

नून् वल्क़-लमि व मा यस्तुरून
(१) मा अन-त बिनिअ्-मति रब्बि-क
बिमज्नून (२) व इन्-न ल-क
ल-अज्रन् ग़ै-र मम्नून (३) व इन्न-क
ल-अ़ला ख़ुलुक़िन् अ़ज़ीम (४) फ़-स-तुब्सिरु
व युब्सिरून (५) बि-अय्यिकुमुल्-
मफ़्तून (६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु
बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व
अअ्-लमु बिल्मुह्-तदीन (७) फ़ला तुतिअिल्-
मुकज़्ज़िबीन (८) वद्दू लौ तुद्हिनु
फ़युद्हिनून (९) वला तुतिअ् कुल्-ल
ह़ल्लाफ़िम् - महीन (१०) हम्माज़िम् - मश्शाइम् - बिनमीमिम्-
(११) -मन्नाअ़िल् - लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिन् असीम (१२) अ़ुतुल्लिम्-
बअ्-द ज़ालि-क ज़नीम (१३) अन् का-न ज़ा मालिंव-व बनीन (१४)
इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल् - अव्वलीन (१५) स-नसिमुहू
अ़लल् - ख़ुर्तूम (१६) इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना अस्हाबल् - जन्नति
इज् अक़्समू ल-यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन (१७) व ला यस्-तस्-नून (१८)
फ़-ता-फ़ अ़लैहा ताइफ़ुम् - मिर्रब्बि-क व हुम् नाइमून (१९) फ़-अस्-ब-ह़त्
कस्सरीम (२०) फ़-तनादौ मुस्बिहीन (२१) अनिग़्दू अ़ला
ह़र्सिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन (२२) फ़न-त-लक़ू व हुम्
य-त-ख़ाफ़तून (२३) अल्ला यद्ख़ुलन्नहल् - यौ-म अ़लैकुम्
मिस्कीन (२४) व ग़दौ अ़ला ह़र्दिन् क़ादिरीन (२५)

★रु. २/२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कि वह (जो ख़ुदा-ए-) रहमान (है) हम उसी पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा रखते हैं। तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन पड़ रहा था। (२९) कहो कि भला देखो तो, अगर तुम्हारा पानी (जो तुम पीते हो और बरतते हो) ख़ुश्क हो जाए तो (ख़ुदा के सिवा) कौन है जो तुम्हारे लिए मीठे पानी का चश्मा बहा लाए? (३०)★

६८ सूरः क़लम २

सूरः क़लम मक्की है। इस में ५२ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नून, क़लम की और जो (क़लम वाले) लिखते हैं, उन की क़सम, (१) कि (ऐ मुहम्मद!) तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से दीवाने नहीं हो, (२) और तुम्हारे लिए बे-इंतिहा बदला है, (३) और तुम्हारे अख़्लाक़ बड़े (बुलंद) हैं, (४) सो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और ये (काफ़िर) भी देख लेंगे, (५) कि तुम में से कौन दीवाना है। (६) तुम्हारा परवरदिगार उस को भी ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटक गया और उन को भी ख़ूब जानता है, जो सीधे रास्ते पर चल रहे हैं, (७) तो तुम झुठलाने वालों का कहा न मानना। (८) ये लोग चाहते हैं कि तुम नर्मी अख़्तियार करो, तो ये भी नर्म हो जाएं, (९) और किसी ऐसे शख़्स के कहे में न आ जाना, जो बहुत क़स्में खाने वाला, ज़लील औक़ात है, (१०) तानों भरे इशारे करने वाला, चुग़लियां लिए फिरने वाला, (११) माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ा हुआ बद-कार, (१२) सख़्त मिज़ाज और इस के अलावा बद-ज़ात है, (१३) इस वजह से कि माल और बेटे रखता है, (१४) जब उस को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो कहता है कि ये अगले लोगों की कहानियां हैं, (१५) हम बहुत जल्द उस की नाक पर दाग़ लगाएंगे। (१६) हम ने उन लोगों की इसी तरह आज़माइश की है, जिस तरह बाग़ वालों की आज़माइश की थी, जब उन्हों ने क़स्में खा-खा कर कहा कि सुबह होते-होते हम इस का मेवा तोड़ लेंगे। (१७) और इन्शाअल्लाह न कहा, (१८) सो वे अभी सो रहे थे कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (रातों-रात) उस पर एक आफ़त फिर गयी, (१९) तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती। (२०) जब सुबह हुई तो वे लोग एक दूसरे को पुकारने लगे, (२१) कि अगर तुम को काटना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही जा पहुंचो, (२२) तो वे चल पड़े और आपस में चुपके-चुपके कहते जाते थे, (२३) कि आज यहां तुम्हारे पास कोई फ़क़ीर न आने पाये, (२४) और कोशिश के साथ सवेरे ही जा पहुंचे (गोया खेती पर) क़ुदरत रखते (हैं) (२५) जब बाग़ को

★रु. २/२ आ १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना लज़ाल्लून // (२६) बल् नह़्नु मह़्रूमून (२७) क़ा-ल औसतुहुम् अ-लम् अक़ुल् लकुम् लौला तुसब्बिहून (२८) क़ालू सुब्ह़ा-न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (२९) फ़-अक़्-ब-ल बअ़्-ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िय्य-त-लावमून (३०) क़ालू यावैलना इन्ना कुन्ना ताग़ीन (३१) अ़सा रब्बुना अय्युब्दि - लना ख़ैरम्मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून (३२) कज़ालिकल् - अ़ज़ाबु ط व ल - अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु ▨ लौ कानू यअ़्लमून ★(३३) इन्-न लिलमुत्तक़ी-न अ़िन्-द रब्बिहिम जन्नातिन्नअ़ीम (३४) अ-फ़-नज्अ़लुल् - मुस्-लिमी - न कलमुज्रिमीन ط (३५) मा लकुम् وقفہ कै-फ़ तह़्कुमून ج (३६) अम लकुम् किताबुन् फ़ीहि तद्रुसून // (३७) इन्-न लकुम् फ़ीहि लमा त-ख़य्यरून ج (३८) अम लकुम् ऐमानुन् अ़लैना बालि-ग़-तुन् इला यौमिल-क़ियामति // इन्-न लकुम् लमा तह़्कुमून ج (३९) सल् - हुम अय्युहुम बिज़ालि - क ज़अ़ीम ج (४०) अम लहुम् शु - र-काउ ج फ़ल् - यअ्तू बि - शु-र-काइ - हिम इन् कानू सादिक़ीन (४१) यौ-म युक्शफ़ु अ़न साक़िव्-व युद्औ - न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअ़ून // (४२) ख़ाशि - अ - तन् अब्सारुहुम तर्हक़ुहुम ज़िल्लतुन् ط व क़द कानू युद्औ़-न इलस्सुजूदि व हुम सालिमून (४३) फ़ - ज़र्नी व मंय्युकज़्ज़िबु बिहाज़ल् - ह़दीसि ط स-नस्तद्रिजुहुम मिन ह़ैसु ला यअ़्-लमून // (४४) व उमली लहुम् ط इन्-न कैदी मतीन (४५) अम् तस्-अलुहुम् अज्-रन् फ़हुम् मिम् - मग़्-रमिम् - मुस्क़लून ج (४६) अम् अ़िन्द-हुमुल-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (४७) फ़स्-बिर लिहुक्मि रब्बि-क व ला तकुन् क-साहि़बिल् - हूति ▨ इज् नादा व हु - व मक्ज़ूम ط (४८)

تبارك الذي ٢٩ ٤٥٣ القلم ٦٨

قٰدِرِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝
قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَ
رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ۝
قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ۝ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا
مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ۝ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ
تَحْكُمُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ۝ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا
تَخَيَّرُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ
لَمَا تَحْكُمُوْنَ ۝ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ۝ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ
فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ
وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝
فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝ اَمْ تَسْــَٔـلُهُمْ
اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ
يَكْتُبُوْنَ ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ

▨ व. लाज़िम ★रु. १/३ आ ३३, ·मु· अ़ि मु ता ख़· १५ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देखा तो (वीरान,) कहने लगे कि हम रास्ता भूल गये हैं। (२६) नहीं, बल्कि हम (बिगड़ी क़िस्मत के) बे-नसीब हैं। (२७) एक जो उनमें से अक़्लमंद था, बोला, क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था, कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते ? (२८) (तब) वे कहने कि हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हम ही क़ुसूरवार थे। (२९) फिर लगे एक दूसरे को आमने-सामने मलामत करने, (३०) कहने लगे, हाय शामत ! हम ही हद से बढ़ गये थे। (३१) उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार इस के बदले में हमें इस से बेहतर बाग़ इनायत करे, हम अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजूअ लाते हैं। (३२) देखो अज़ाब यों होता है और आख़िरत का अज़ाब इस से कहीं बढ़ कर है काश ▨ ये लोग जानते होते। (३३) ★

परहेज़गारों के लिए उन के परवरदिगार के यहां नेमत के बाग़ हैं। (३४) क्या हम फ़रमां-बरदारों को नाफ़रमानों की तरह (नेमतों से महरूम) कर देंगे ? (३५) तुम्हें क्या हो गया है, कैसी तज्वीज़ें करते हो ? (३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में (यह) पढ़ते हो, (३७) कि जो चीज़ तुम पसन्द करोगे, वह तुम को ज़रूर मिलेगी, (३८) या तुम ने हम से क़स्में ले रखी हैं, जो क़ियामत के दिन तक चली जाएंगी कि जिस चीज़ का तुम हुक्म करोगे, वह तुम्हारे लिए हाज़िर होगी, (३९) उन से पूछो कि इन में से इस का कौन ज़िम्मा लेता है ? (४०) क्या (इस क़ौल में) उन के और भी शरीक हैं ∴? अगर ये सच्चे हैं, तो अपने शरीकों को ला सामने करें, (४१) जिस दिन पिंडुली से कपड़ा उठा दिया जाएगा[1] और कुफ़्फ़ार सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे, तो वे सज्दा न कर सकेंगे। (४२) उन की आंखें झुकी हुई होंगी और उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, हालांकि पहले (उस वक़्त) सज्दे के लिए बुलाए जाते थे, जब कि सही व सालिम थे। (४३) तो मुझ को इस कलाम के झुठलाने वालों से समझ लेने दो। हम उन को धीरे-धीरे ऐसे तरीक़े से पकड़ेंगे कि उन को ख़बर भी न होगी। (४४) और मैं उन को मोहलत दिए जाता हूं, मेरी तद्बीर मज़बूत है। (४५) क्या तुम उन से कुछ अज्र मांगते हो कि उन पर जुर्माने का बोझ पड़ रहा है, (४६) या उन के पास ग़ैब की ख़बर है कि (उसे) लिखते जाते हैं, (४७) तो अपने परवरदिगार के हुक्म के इंतिज़ार में सब्र किए रहो और मछली का ▨ (लुक़्मा होने) वाले (यूनुस) की तरह न होना कि उन्हों ने (ख़ुदा को) पुकारा और वह (ग़म व)

१. पिंडुली से कपड़ा उठा देने से मुराद उस वक़्त की तक्लीफ़ है। इसी वास्ते हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक बड़ी कड़ी घड़ी होगी।

▨ व. लाज़िम ★रु. १/३ आ ३३ मु. अ़ि मु. त क़. १५ ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लौला अन् तदा-र-कहू निअ्-मतुम् - मिर्रब्बिही लनुबि-ज़ बिल्अ़राइ व हु-व मज़्मूम (४९) फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़-ज-अ-लहू मिनस्सालिहीन (५०) व इंय्यकादुल्लज़ी-न क-फ़रू लयुज़्लिक़ू-न-क बि-अब्सारिहिम लम्मा समिअुज़्ज़िक्-र व यक़ूलू-न इन्नहू ल-मज्नून ▨ (५१) व मा हु-व इल्ला ज़िक्रुल-लिल्आ़लमीन ★ ● (५२)

६९ सूरतुल्-हाक़्क़ति ७८

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११३४ अक्षर, २६० शब्द, ५२ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

अल्हाक़्क़तु ۙ (१) मल्हाक़्क़ः (२) व मा अद्रा-क मल्हाक़्क़ः ط (३) कज़्ज़-बत् समूदु व आ़दुम्-बिल्क़ारिअ़ः (४) फ़-अम्मा समूदु फ़उह्लिकू बित्ताग़ियः (५) व अम्मा आ़दुन् अुह्लिकू बिरीहिन् सर्सरिन् आ़तियतिन् ۙ (६) सख़्ख़-रहा अ़लैहिम् सब्-अ़ लयालिव्-व समानि-य-त अय्यामिन् हुसूमन् ۙ फ़-त-रल्-क़ौ-म फ़ीहा सर्आ़ ۙ क-अन्नहुम् अअ्-जाज़ु नख़्लिन् ख़ावियः ج (७) फ़-हल् तरा लहुम् मिम् - बक़ियः (८) व जा-अ फ़िर्औनु व मन् क़ब्-लहू वल् - मुअ्-तफ़िकातु बिलख़ातिअः ج (९) फ़-अ़सौ रसू-ल रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-ज-हुम् अख़्-ज-तर्-राबियः (१०) इन्ना लम्मा तग़ालमाउ ह-मल्नाकुम् फ़िल्जारियः ۙ (११) लिनज्-अ़-लहा लकुम् तज़्कि-र-तंव्-व तअि-यहा उज़ुनुंव्वाअियः (१२) फ़इज़ा नुफ़ि - ख़ फ़िस्सूरि नफ़्-ख़तुंव्वाहिदतुंव्- ۙ (१३) -व हुमि-लतिल - अर्ज़ु वल्जिबालु फ़-दुक्कता दक्कतुंव्वाहि-द-तुन् ۙ (१४) फ़यौमइज़िव्व-क़-अ़तिल - वाक़िअ़ः ۙ (१५) वन्-शक़्क़तिस् - समाउ फ़हि - य यौमइज़िंव्वाहि - यतुंव्- ۙ (१६) -वल्म-लकु अ़ला अर्जाइहा ط व यह़्मिलु अ़र् - श रब्बि - क फ़ौक़हुम् यौमइज़िन् समानियः ط (१७)

تبٰرك الذي ٢٩ ٤٥٥ الحاقة ٦٩

نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۝ لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ
بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ۝ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝
وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ
وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝
سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَآقَّةُ ۝ مَا الْحَآقَّةُ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ
وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَاَمَّا عَادٌ
فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّ
ثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ
نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ
وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ
فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى
الْجَارِيَةِ ۝ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝ فَاِذَا
نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا
دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ
يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۝ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ

منزل

▨ व. लाज़िम ★रु. २/४ आ १६ ● रुबअ़ १/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग़ुस्से में भरे हुए थे। (४८) अगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी उन की यावरी न करती, तो वह चटयल मैदान में डाल दिए जाते और उन का हाल बुरा हो जाता। (४६) फिर परवरदिगार ने उन को चुन कर भलों में कर लिया। (५०) और काफ़िर जब (यह) नसीहत (की किताब) सुनते हैं तो यों लगते हैं कि तुम को अपनी निगाहों से फिसला देंगे[1] और कहते हैं कि यह तो दीवाना है ▨ (५१) और (लोगो!) यह (क़ुरआन) दुनिया वालों के लिए नसीहत है। (५२) ★ ●



६६ सूरः हाक़्क़ा ७८

सूरः हाक़्क़ा मक्की है। इस में बावन आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सचमुच होने वाली, (१) वह सचमुच होने वाली क्या है? (२) और तुम को क्या मालूम है कि वह सचमुच होने वाली क्या है? (३) (वही) खड़खड़ाने वाली, (जिस) को समूद और आद (दोनों) ने झुठलाया, (४) सो समूद तो कड़क से हलाक कर दिए गए, (५) रहे आद, उन का निहायत तेज़ आंधी से सत्यानाश कर दिया गया, (६) ख़ुदा ने उस को सात रात और आठ दिन उन पर चलाए रखा, तो (ऐ मुख़ातब!) तू लोगों को इस में (इस तरह) ढहे (और मरे) पड़े देखे, जैसे खजूरों के खोखले तने, (७) भला तू उन में से किसी को भी बाक़ी देखता है? (८) और फ़िरऔन और जो लोग इस से पहले थे और वे जो उलटी बस्तियों में रहते थे, सब गुनाह के काम करते थे। (६) उन्हों ने अपने परवरदिगार के पैग़म्बर की ना-फ़रमानी की, तो ख़ुदा ने भी उन को बड़ा सख़्त पकड़ा। (१०) जब पानी बाढ़ पर आया, तो हम ने तुम (लोगों) को कश्ती में सवार कर लिया, (११) ताकि उस को तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाले कान उसे याद रखें, (१२) तो जब सूर में एक (बार) फूंक मार दी जाएगी, (१३) और ज़मीन और पहाड़ दोनों उठा लिए जाएंगे, फिर एकबारगी तोड़-फोड़ कर बराबर कर दिए जाएंगे, (१४) तो उस दिन हो पड़ने वाली (यानी क़ियामत) हो पड़ेगी। (१५) और आसमान फट जाएगा तो वह उस दिन कमज़ोर होगा, (१६) और फ़रिश्ते उस के किनारों पर (उतर आएंगे) और तुम्हारे परवरदिगार के अर्श को

---

१. यानी तुम को इस तरह घूर-घूर कर देखते हैं कि तुम डर कर फिसल जाओ, यहां यह मुराद है कि यह तुम्हें बुरी नज़र लगाना चाहते हैं, जिस के असर से ख़ुदा ने तुम को महफ़ूज़ रखा है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यौमइज़िन् तुअ्-रज़ू-न ला तख़्फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़ियः (१८) फ़-अम्मा मन्
ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़-यक़ूलु हाउमुक़्रऊ किताबियह (१९)
इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन् हिसाबियह (२०) फ़हु-व फ़ी ईशतिर्-
राज़ियः (२१) फ़ी जन्नतिन् आलियः (२२) क़ुतूफ़ुहा
दानियः (२३) कुलू वश्रबू हनीअम्-
बिमा अस्-लफ़्तुम फ़िल-अय्यामिल-ख़ालियः
(२४) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू
बिशिमालिही फ़-यक़ूलु यालैतनी लम्
ऊ-त किताबियह (२५) व लम् अदरि
मा हिसाबियह (२६) या लैतहा कानतिल-
क़ाज़ियः (२७) मा अग़्ना अन्नी
मालियह (२८) ह-ल-क अन्नी
सुल्तानियह (२९) ख़ुज़ूहु फ़ग़ुल्लूहु
(३०) सुम्मल्-जही-म सल्लूहु (३१)
सुम-म फ़ी सिलसि-लतिन् ज़र्अुहा सब्ऊ-न
ज़िराअन् फ़स्लुकूहु (३२) इन्नहू
का-न ला युअ्मिनु बिल्लाहिल-अज़ीम
(३३) व ला यहुज़्ज़ु अला तआमिल-
मिस्कीन (३४) फ़-लै-स लहुल्यौ-म हाहुना हमीमुंव्- (३५) -व
ला तआमुन् इल्ला मिन ग़िस्लीन (३६) ला यअ्कुलुहू इल्लल्-
ख़ातिऊन ★ (३७) फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून (३८) व मा ला
तुब्सिरून (३९) इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीम (४०) व
मा हु-व बिक़ौलि शाअिरिन् क़लीलम्मा तुअ्मिनून (४१) व ला
बिक़ौलि काहिनिन् क़लीलम्मा त-ज़क्करून (४२) तन्ज़ीलुम-मिर्रब्बिल-
आलमीन (४३) व लौ त-क़व्व-ल अलैना बअ्-ज़ल्-अक़ावीलि (४४)
ल-अ-ख़ज़्ना मिन्हु बिल्यमीन (४५) सुम्-म ल-क़-तअ्-ना मिन्हुल-
वतीन (४६) फ़मा मिन्कुम् मिन् अ-हदिन् अन्हु
हाजिज़ीन (४७) व इन्नहू ल-तज़्कि-र-तुल्-लिलमुत्तक़ीन (४८)

فوقهم يومئذ ثمنية ۞ يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية ۞
فأما من أوتي كتبه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتبيه ۞
إني ظننت أني ملق حسابيه ۞ فهو في عيشة راضية ۞
في جنة عالية ۞ قطوفها دانية ۞ كلوا واشربوا هنيئا بما
أسلفتم في الأيام الخالية ۞ وأما من أوتي كتبه بشماله
فيقول يليتني لم أوت كتبيه ۞ ولم أدر ما حسابيه ۞
يليتها كانت القاضية ۞ ما أغنى عني ماليه ۞ هلك عني
سلطنيه ۞ خذوه فغلوه ۞ ثم الجحيم صلوه ۞ ثم في
سلسلة ذرعها سبعون ذراعا فاسلكوه ۞ إنه كان لا
يؤمن بالله العظيم ۞ ولا يحض على طعام المسكين ۞
فليس له اليوم ههنا حميم ۞ ولا طعام إلا من غسلين ۞
لا يأكله إلا الخاطئون ۞ فلا أقسم بما تبصرون ۞ وما
لا تبصرون ۞ إنه لقول رسول كريم ۞ وما هو بقول شاعر
قليلا ما تؤمنون ۞ ولا بقول كاهن قليلا ما تذكرون ۞
تنزيل من رب العلمين ۞ ولو تقول علينا بعض الأقاويل ۞
لأخذنا منه باليمين ۞ ثم لقطعنا منه الوتين ۞ فما منكم
من أحد عنه حجزين ۞ وإنه لتذكرة للمتقين ۞ و

★रु. १/५ आ ३७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाए होंगे। (१७) उस दिन तुम (सब लोगों के सामने) पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई पोशीदा बात छिपी न रहेगी। (१८) तो जिस का (आमाल-) नामा उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा, वह (दूसरों से) कहेगा कि लीजिए मेरा नामा (-ए-आमाल) पढ़िए। (१९) मुझे यक़ीन था कि मुझ को मेरा हिसाब (-किताब) ज़रूर मिलेगा। (२०) पस वह (शख़्स) मनमाने ऐश में होगा, (२१) (यानी) ऊंचे (-ऊंचे महलों के) बाग़ में, (२२) जिन के मेवे झुके हुए होंगे, (२३) जो (अमल) तुम पिछले दिनों में आगे भेज चुके हो, उस के बदले में मज़े से खाओ और पियो। (२४) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के बाएं हाथ में दिया जाएगा, वह कहेगा, ऐ काश! मुझ को मेरा (आमाल-) नामा न दिया जाता। (२५) और मुझे मालूम न होता कि मेरा हिसाब क्या है। (२६) ऐ काश! मौत (हमेशा-हमेशा के लिए मेरा काम) तमाम कर चुकी होती। (२७) (आज) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया, (२८) (हाय!) मेरी सल्तनत ख़ाक में मिल गयी। (२९) (हुक्म होगा कि) इसे पकड़ लो और तौक़ पहना दो। (३०) फिर दोज़ख़ की आग में झोंक दो, (३१) फिर ज़ंजीर से जिस की नाप सत्तर गज़ है, जकड़ दो। (३२) यह न तो ख़ुदा-ए-जल्लशानुहू पर ईमान लाता था, (३३) और न फ़क़ीर के खाना-खिलाने पर आमादा करता था, (३४) सो आज इस का भी यहां कोई दोस्तदार नहीं, (३५) और न पीप के सिवा (उस के लिए) खाना है, (३६) जिस को गुनाहगारों के सिवा कोई नहीं खाएगा, (३७) ★

तो हम को उन चीज़ों की क़सम, जो तुमको नज़र आती हैं। (३८) और उनकी जो नज़र नहीं आतीं, (३९) कि यह क़ुरआन बुलंद मर्तबा फ़रिश्ते की ज़ुबान का पैग़ाम है, (४०) और यह किसी शायर का कलाम नहीं, मगर तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो, (४१) और न किसी काहिन की बातें हैं लेकिन तुम लोग बहुत ही कम फ़िक्र करते हो। (४२) (यह तो) दुनिया के परवरदिगार का उतारा (हुआ) है। (४३) अगर यह पैग़म्बर हमारे बारे में कोई बात झूठ बना लाते, (४४) तो हम उन का दाहिना हाथ पकड़ लेते, (४५) फिर उन की गर्दन की रग काट डालते, (४६) फिर तुम में से कोई (हमें) इस से रोकने वाला न होता। (४७) और यह (किताब) तो परहेज़-

★रु. १/५ आ ३७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इन्ना ल-नअ्-लमु अन् - न मिन्कुम मुकज़्ज़िबीन (४९) व इन्नहू
ल - ह़स् - रतुन् अ़लल् - काफ़िरीन (५०) व इन्नहू लहक़्क़ुल -
यक़ीन (५१) फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल् - अ़ज़ीम ★ (५२)

تبٰرک الذی ۲۹ ۴۵۷ المعارج ۷۰

إِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٥٠﴾
وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾
سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ أَرْبَعٌ وَّأَرْبَعُونَ آيَةً وَّفِيهَا رُكُوعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ
اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾
إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾ وَّنَرٰىهُ قَرِيبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾
وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾ يُبَصَّرُونَهُمْ
يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ﴿١١﴾ وَصَاحِبَتِهِ
وَأَخِيهِ ﴿١٢﴾ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ﴿١٣﴾ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
ثُمَّ يُنجِيهِ ﴿١٤﴾ كَلَّا إِنَّهَا لَظٰى ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿١٦﴾ تَدْعُوا مَنْ
أَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ فَأَوْعٰى ﴿١٨﴾ إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾
إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾ إِلَّا
الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾ الَّذِينَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِينَ فِي
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ
بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

७० सूरतुल्-मआ़रिजि ७९

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ६७७ अक्षर,
२६० शब्द, ४४ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

स - अ - ल साइलुम-बिअ़ज़ाबिंव्वाक़िअिल्-
(१) -लिल् - काफ़िरी-न लै - स लहू
दाफ़िउम्- (२) -मिनल्लाहि
ज़िलमआ़रिज (३) तअ् - रुजुल -
मलाइ-कतु वर्रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न
मिक़्दारुहू ख़म्सी-न अल्-फ़ स-नतिन् (४)
फ़स्बिर स़ब्-रन् जमीला (५) इन्नहुम्
यरौनहू बअ़ीदंव्- (६) व नराहु
क़रीबा (७) यौ - म तकूनुस् - समाउ
कल्मुह्लि (८) व तकूनुल - जिबालु
कल्अ़िह्नि (९) व ला यस् - अलु ह़मीमुन् ह़मीमंय (१०)
युबस़्स़रूनहुम् यवद्दुल् - मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन अ़ज़ाबि यौमिइज़िम -
बिबनीहि (११) व स़ाह़िबतिही व अख़ीहि (१२) व फ़स़ीलतिहिल्लती
तुअ्वीहि (१३) व मन् फ़िलअर्ज़ि जमीअ़न् सुम्-म युन्जीहि (१४)
कल्ला इन्नहा लज़ा (१५) नज़्ज़ा - अ़ - तल् - लिश्शवा (१६)
तद्ऊ मन् अद्-ब-र व त-वल्ला (१७) व ज-म-अ़ फ़औआ़ (१८) इन्नल्-
इन्सा-न ख़ुलि-क़ हलूअ़न् (१९) इज़ा मस्सहुश्शर्रु जज़ूआ़ (२०)
व इज़ा मस्सहुल् ख़ै-रु मनूआ़ (२१) इल्लल् - मुस़ल्लीन (२२)
अ़ल्लज़ी-न हुम् अ़ला स़लातिहिम् दाइमून (२३) वल्लज़ी - न फ़ी
अम्वालिहिम् ह़क़्क़ुम् - मअ् - लूमुल - (२४) लिस्साइलि
वल्मह़रूम (२५) वल्लज़ी - न युस़द्दिक़ू-न बियौमिद्दीनि (२६)
वल्लज़ी - न हुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून (२७)

★ रु. २/६ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गारों के लिए नसीहत है। (४८) और हम जानते हैं कि तुम में से कुछ इस को झुठलाने वाले हैं। (४९) साथ ही यह काफ़िरों के लिए हसरत (की वजह) है। (५०) और कुछ शक नहीं कि यह सच बात यक़ीन के क़ाबिल है। (५१) सो तुम अपने परवरदिगारे अज़्ज़ व जल्ल के नाम की तस्बीह करते रहो। (५२) ★

७० सूरः मआ़रिज ७९

सूरः मआरिज मक्की है, इस में ४४ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

एक तलब करने वाले ने अज़ाब तलब किया, जो नाज़िल हो कर रहेगा, (१) (यानी) काफ़िरों पर (और) कोई उस को टाल न सकेगा। (२) (और वह) दर्जों के मालिक ख़ुदा[1] की तरफ़ से (नाज़िल होगा)। (३) जिस की तरफ़ रूहुल अमीन और फ़रिश्ते चढ़ते हैं (और) उस दिन (नाज़िल होगा) जिस का अन्दाज़ा पचास हज़ार वर्ष का होगा। (४) (तो तुम काफ़िरों की बातों को) हौसले के साथ बर्दाश्त करते रहो।[2] (५) वह उन लोगों की निगाहों में दूर है, (६) और हमारी नज़र में क़रीब, (७) जिस दिन आसमान ऐसा हो जाएगा और पिघला हुआ तांबा, (८) और पहाड़ (ऐसे), जैसे (धुंकी हुई) रंगीन ऊन। (९) और कोई दोस्त किसी दोस्त का पूछने वाला न होगा, (१०) (हालांकि) एक दूसरे को सामने देख रहे होंगे, (उस दिन) गुनाहगार ख़्वाहिश करेगा कि किसी तरह उस दिन के अज़ाब के बदले में (सब कुछ) दे दे, (यानी) अपने बेटे, (११) और अपनी बीवी और अपने भाई, (१२) और अपना ख़ानदान, जिस में वह रहता था। (१३) और जितने आदमी ज़मीन पर हैं (ग़रज़) सब (कुछ) दे दे और अपने आप को अज़ाब से छुड़ा ले। (१४) (लेकिन) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा, वह भड़कती हुई आग है, (१५) खाल उधेड़ डालने वाली, (१६) उन लोगों को अपनी तरफ़ बुलाएगी, जिन्हों ने (दीने हक़ से) एराज़ किया और मुंह फेर लिया, (१७) और (माल) जमा किया और बन्द कर रखा। (१८) कुछ शक नहीं कि इंसान कम हौसला पैदा हुआ है। (१९) जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है, तो घबरा उठता है। (२०) और जब आराम हासिल होता है, तो बख़ील बन जाता है, (२१) मगर नमाज़ गुज़ार, (२२) जो नमाज़ की पाबन्दी करते, (और बिला-नाग़ा पढ़ते) हैं, (२३) और जिन के माल में हिस्सा मुक़र्रर है, (२४) (यानी) मांगने वाले का और न मांगने वाले का, (२५) और जो बदले के दिन को सच समझते हैं, (२६) और जो अपने परवरदिगार के अज़ाब से ख़ौफ़ रखते

१. दर्जों से मुराद आसमान हैं, चूंकि वे दर्जा-ब-दर्जा ऊपर तले हैं, इस लिए उन के दर्जे फ़रमाया।
२. सब्रे जमील उस सब्र को कहते हैं जिस में चीख़ना-चिल्लाना, सर पटकना वग़ैरह न हो, इसी लिए इस का तर्जुमा हौसले के साथ किया है।

★रु. २/६ आ १५

इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून (२८) वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम्
हाफ़िज़ून ۙ (२९) इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम्
फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन ۚ (३०) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़उलाइ-क
हुमुल्आ़दून ۚ (३१) वल्लज़ी - न हुम् लि - अमानाति - हिम् व अ़ह्दिहिम् राऊ़न ۙ

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ (٢٨) وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ (٢٩)
اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ (٣٠)
فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ (٣١) وَالَّذِيْنَ هُمْ
لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ (٣٢) وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ (٣٣)
وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ (٣٤) اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ
مُّكْرَمُوْنَ (٣٥) فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ (٣٦) عَنِ الْيَمِيْنِ
وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ (٣٧) اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيْمٍ (٣٨) كَلَّا اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ (٣٩) فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ
الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ (٤٠) عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ
وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ (٤١) فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا
يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ (٤٢) يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ (٤٣) خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ (٤٤)

سُوْرَةُ نُوْحٍ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٍ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (١) قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (٢) اَنِ

منزل ٧

(३२) वल्लज़ी-न हुम् बि-शहादाति - हिम्
क़ाइमून ۙ (३३) वल्लज़ी-न हुम्
अ़ला स़लातिहिम् युहाफ़िज़ून ۚ (३४)
उलाइ - क फ़ी जन्नातिम् - मुक्रमून ۚ ★
(३५) फ़मालिल्लज़ी-न क-फ़रू क़ि-ब-ल-क
मुह्तिअ़ीन ۙ (३६) अ़निल् - यमीनि व
अ़निश्शिमालि अ़िज़ीन (३७) अ-यत़्मअ़ु
कुल्लुम्रिइम् - मिन्हुम् अंय्युद्ख़-ल जन्न - त़
नअ़ीम ۙ (३८) कल्ला ۚ इन्ना
ख़-लक़्नाहुम् मिम्मा यअ्-लमून (३९) फ़ला
उक़्सिमु बिरब्बिल् - मशारिक़ि वलमग़ारिबि
इन्ना ल - क़ादिरून ۙ (४०) अ़ला अन्
नुबद्दि - ल ख़ैरम् - मिन्हुम् ۙ व मा नह्नु
बिमस्बूक़ीन (४१) फ़-जर्हुम् यख़ूज़ू व
यल्अ़बू ह़त्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी
यूअ़दून ۙ (४२) यौ - म यख़् - रुजू - न मिनल् - अज्दासि सिराअ़न्
क-अन्नहुम् इला नुसुबिंय्यूफ़िज़ून ۙ (४३) ख़ाशि-अ-त़न् अब् - सारुहुम्
तर् - हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् ۚ ज़ालिकल् - यौमुल्लज़ी कानू यू-अ़दून ★ (४४)

७१ सूरतु नूहिन् ७१

(मक्की) इस सूर: में अ़रबी के ९७४ अक्षर, २३१ शब्द, २८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही अन् अन्ज़िर्
क़ौ-म-क मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति - यहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (१) क़ा-ल
या क़ौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम् - मुबीन ۙ (२)

★रु. १/७ आ ३५ ★रु. २/८ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं। (२७) बेशक उन के परवरदिगार का अज़ाब है ही ऐसा कि उस से बे-खौफ़ न हुआ जाए, (२८) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, (२९) मगर अपनी बीवियों या लौंडियों से कि (उन के पास जाने पर) उन्हें कुछ मलामत नहीं, (३०) और जो लोग इन के सिवा और चाहते हों, वे हद से निकल जाने वाले हैं, (३१) और जो अपनी अमानतों और इक़रारों का ध्यान करते हैं, (३२) और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं, (३३) और जो अपनी नमाज़ की ख़बर रखते हैं, (३४) यही लोग बहिश्त के बाग़ों में इज़्ज़त व इकराम से होंगे। (३५)★

तो उन काफ़िरों को क्या हुआ है कि तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आते हैं, (३६) (और) दाएं-बाएं से गिरोह-गिरोह हो कर (जमा होते) जाते हैं। (३७) क्या उन में से हर शख़्स यह उम्मीद रखता है कि नेमत के बाग़ में दाख़िल किया जाएगा? (३८) हरगिज़ नहीं! हम ने उन को उस चीज़ से पैदा किया है, जिसे वे जानते हैं, (३९) हमें मश्रिक़ों और मग़रिबों के मालिक की क़सम! कि हम ताक़त रखते हैं। (४०) (यानी) इस बात (की क़ुदरत है) कि उन से बेहतर लोग बदल लाएं और हम आजिज़ नहीं हैं। (४१) तो (ऐ पैग़म्बर!) उन को बातिल में पड़े रहने और खेल लेने दो, यहां तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, वह उन के सामने आ मौजूद हो। (४२) उस दिन ये क़ब्रों से निकल कर (इस तरह) दौड़ेंगे जैसे (शिकारी) शिकार के जाल की तरफ़ दौड़ते हैं। (४३) उन की आंखें झुक रही होंगी और ज़िल्लत उन पर छा रही होगी। यही वह दिन है जिस का उन से वायदा किया जाता था। (४४)★



७१ सूर नूह् ७१

सूरः नूह् मक्की है। इस में २८ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा कि इस से पहले कि उन पर दर्द देने वाला अज़ाब वाक़ेअ हो, अपनी क़ौम को हिदायत कर दो। (१) उन्हों ने कहा कि भाइयो! मैं तुम को खुले तौर

★रु. १/७ आ ३५ ★रु. २/८ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अनिअ्-बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु व अतीअून ॥ (३) यग़्फ़िर लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम्
व युअख़्ख़िर्-कुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ♭ इन्-न अ-ज-लल्लाहि इज़ा
जा-अ ला युअख़्ख़रु ▨ लौ कुन्तुम तअ्-लमून (४) क़ा-ल रब्बि इन्नी दअौतु
क़ौमी लैलंव्-व नहारन् ॥ (५) फ़-लम् यज़िद्हुम् दुआई इल्ला फ़िरारा (६)
व इन्नी कुल्लमा दअौतुहुम् लि-तग़्-फ़ि-र लहुम्
ज-अ़लू असाबि-अहुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग़्शौ
सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा ♭
(७) सुम्-म इन्नी दअौतुहुम् जिहारन् ॥
(८) सुम्-म इन्नी अअ्-लन्तु लहुम् व
अस्-रर्तु लहुम् इस्-रारा ॥ (९)
फ़क़ुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् ♭ इन्नहू का-न
ग़फ़्फ़ारंय्-॥ (१०) -युर्सिलिस्समा-अ
अ़लैकुम् मिद्रारंव् ॥- (११) -व
युम्दिद्कुम् बि-अम्वालिंव्-व बनी-न व
यज्-अ़ल् लकुम् जन्नातिंव्-व यज्-अ़ल् लकुम्
अन्हारा ♭ (१२) मा लकुम् ला तर्जू-न
लिल्लाहि वक़ारा ॥ (१३) व क़द्
ख़-ल-क़कुम् अत्वारा (१४) अ-लम् तरौ
कै-फ़ ख़-ल-क़ल्लाहु सब्-अ समावातिन् तिबाक़ा ॥ (१५) व ज-अ़-लल्-क़-म-र
फ़ीहिन्-न नूरंव्-व ज-अ़-लश्शम्-स सिराजा (१६) वल्लाहु अम्ब-त-कुम् मिनल्अर्ज़ि
नबाता ॥ (१७) सुम्-म युईदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा (१८)
वल्लाहु ज-अ़-ल लकुमुलअर्-ज़ बिसाता ॥ (१९) लितस्लुकू मिन्हा सुबुलन्
फ़िजाजा ★ (२०) क़ा-ल नूहुर्रब्बि इन्नहुम् असौनी वत्त-बअू मल्लम् यज़िद्हु
मालुहू व व-ल-दुहू इल्ला ख़सारा ♭ (२१) व म-करू मक्रन् कुब्बारा ♭
(२२) व क़ालू ला त-ज-रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज-रुन्-न वद्दंव्-व ला
सुवाअंव्-॥ व ला यग़ू-स व यऊ-क़ व नस्रा ♭ (२३) व क़द्
अज़ल्लू कसीरन् ♭ व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला ज़लाला (२४)

تبرك الذى ٢٩ ٤٥٩ نوح ٧١

اعبدوا الله واتقوه واطيعون ۝٣ يغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم
الى اجل مسمى ان اجل الله اذا جاء لا يؤخر لو كنتم
تعلمون ۝٤ قال رب اني دعوت قومي ليلا ونهارا ۝٥ فلم يزدهم
دعاءي الا فرارا ۝٦ واني كلما دعوتهم لتغفر لهم جعلوا اصابعهم
في اذانهم واستغشوا ثيابهم واصروا واستكبروا استكبارا ۝٧
ثم اني دعوتهم جهارا ۝٨ ثم اني اعلنت لهم واسررت لهم
اسرارا ۝٩ فقلت استغفروا ربكم انه كان غفارا ۝١٠ يرسل السماء
عليكم مدرارا ۝١١ ويمددكم باموال وبنين ويجعل لكم جنت و
يجعل لكم انهرا ۝١٢ ما لكم لا ترجون لله وقارا ۝١٣ وقد خلقكم
اطوارا ۝١٤ الم تروا كيف خلق الله سبع سموت طباقا ۝١٥ وجعل
القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجا ۝١٦ والله انبتكم من
الارض نباتا ۝١٧ ثم يعيدكم فيها ويخرجكم اخراجا ۝١٨ والله
جعل لكم الارض بساطا ۝١٩ لتسلكوا منها سبلا فجاجا ۝٢٠ قال
نوح رب انهم عصوني واتبعوا من لم يزده ماله وولده الا
خسارا ۝٢١ ومكروا مكرا كبارا ۝٢٢ وقالوا لا تذرن الهتكم ولا
تذرن ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا ۝٢٣ وقد اضلوا
كثيرا ولا تزد الظلمين الا ضللا ۝٢٤ مما خطيئتهم اغرقوا

وقف لازم
ع ١
منزل

▨ व. लाज़िम ★ रु. १/९ आ २०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पर नसीहत करता हूं, (२) कि ख़ुदा की इबादत करो और उससे डरो और मेरा कहा मानो, (३) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और (मौत के) मुक़र्रर वक़्त तक तुम को मोहलत अता करेगा। जब ख़ुदा का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो देर नहीं होती, काश तुम जानते होते। (४) जब लोगों ने न माना, तो (नूह ने) ख़ुदा से अर्ज़ की कि परवरदिगार! मैं अपनी क़ौम को रात-दिन बुलाता रहा, (५) लेकिन मेरे बुलाने से वे और ज़्यादा भागते रहे। (६) जब-जब मैं ने उन को बुलाया कि (तौबा करें और) तू उन को माफ़ फ़रमाए, तो उन्हों ने अपने कानों में उंगलियां दे लीं और कपड़े ओढ़ लिए और अड़ गये और अकड़ बैठे। (७) फिर मैं उन को खुले तौर पर भी बुलाता रहा, (८) और खुले और छिपे हर तरह समझाता रहा, (९) और कहा कि अपने परवरदिगार से माफ़ी मांगो कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है, (१०) वह तुम पर आसमान से मेंह बरसाएगा, (११) और माल और बेटों से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हें बाग़ अता करेगा और (उन में) तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा। (१२) तुम को क्या हुआ है कि तुम ख़ुदा की अज़्मत का एतक़ाद नहीं रखते। (१३) हालांकि उसने तुमको तरह-तरह (की हालतों) का पैदा किया है। (१४) क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने सात आसमान कैसे ऊपर-तले बनाए हैं, (१५) और चांद को उन में (ज़मीन का) नूर बनाया है और सूरज को चिराग़ ठहराया है, (१६) और ख़ुदा ही ने तुम को ज़मीन से पैदा किया है, (१७) फिर उसी में तुम्हें लौटा देगा और (उसी से) तुम को निकाल खड़ा करेगा, (१८) और ख़ुदा ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया, (१९) ताकि उस के बड़े-बड़े कुशादा रास्तों में चलो-फिरो (२०)। ★

(इस के बाद) नूह ने अर्ज़ की कि मेरे परवरदिगार! ये लोग मेरे कहने पर नहीं चले और ऐसों के ताबेअ हुए हैं, जिन को उन के माल और औलाद ने नुक़्सान के सिवा कुछ फ़ायदा नहीं दिया। (२१) और वे बड़ी-बड़ी चालें चले, (२२) और कहने लगे कि अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और वद्द और सुवाअ़ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र[1] को कभी न छोड़ना। (२३) (परवरदिगार!) उन्होंने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया है, तो तू उन को और गुमराह कर

१. वद्द और सुवआ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र बुतों के नाम हैं।

व. लाज़िम ★रु. १/६ आ २०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मिम्मा ख़ती़आतिहिम उग़्रिक़ू फ़-उद्ख़िलू नारन् ॥ फ़-लम् यजिदू लहुम्
मिन दूनिल्लाहि अन्सा़रा (२५) व क़ा-ल नूहुर्रब्बि ला त-जर् अ-लल्अर्ज़ि
मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा (२६) इन्न-क इन् त-जर्हुम् युज़िल्लू अिबा-द-क
व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा (२७) रब्बिग़्फ़िर्ली व लिवालिदय्-य
व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-
मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति ॥ व ला
तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ★ (२८) ●

७२ सूरतुल्-जिन्नि ४०

(मक्की) इस सूर: में अ़रबी के ११२६ अक्षर, २८७ शब्द, २८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

क़ुल ऊह़ि-य इलय्-य अन्नहुस्त-म-अ़ न-फ़रुम्-
मिनल्-जिन्नि फ़-क़ालू इन्ना समिअ्ना
क़ुर्-आनन् अ़-ज-बंय्- ॥ (१) -यह्दी
इलर्रुश्दि फ़-आमन्ना बिही ॥ व लन्
नुश्-रि-क बिरब्बिना अ-ह़-दा ॥ (२) व
अन्नहू तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज सा़हि़-
ब-तंव्-व ला व-ल-दा ॥ (३) व अन्नहू का-न

تبٰرك الذی ٢٩ ٤٦٠ الجن ٧٢

فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ
نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ اِنَّكَ
اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ
اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا
عَجَبًا ﴿١﴾ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ﴿٢﴾ وَّ
اَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ
سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿٥﴾ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ
مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ﴿٦﴾ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ
يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ﴿٧﴾ وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۗءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا
شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ﴿٨﴾ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ
الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ
فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا

منزل ٧

यक़ूलु सफ़ीहुना अ़लल्लाहि श-त़-त़ा ॥ (४) व अन्ना ज-नन्ना अल्लन् तक़ूलल्-
इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि कजिबा ॥ (५) व अन्नहु का-न रिजालुम्-मिनल्-
इन्सि य-अ़ूज़ू-न बिरिजालिम-मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादू-हुम् र-ह-क़ंव् - ॥ (६)
व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़-नन्तुम् अल्लंय्यब्-अ़-सल्लाहु अ-ह़-दा ॥ (७) व
अन्ना ल-मस्-नस्समा-अ फ़-व-जद्नाहा मुलि-अत् ह़-र-सन् शदीदंव्-व शुहुबंव - ॥ (८)
व अन्ना कुन्ना नक़्-अ़ुदु मिन्हा मक़ाअि-द लिस्सम्अि ॥ फ़मंय्यस्तमिअि्-आ-न
यजिद् लहू शिहाबर्-र-स़-दंव् - ॥ (९) व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन् उरी-द
बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-श-दा ॥ (१०) व अन्ना
मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना त़राइ-क़ क़ि-द-दा ॥ (११)

★रु. २/१० आ ८ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर दे। (२४) (आख़िर) वे अपने गुनाहों की वजह से (पहले) डुबा दिए गए, फिर आग में डाल दिये गये, तो उन्हों ने ख़ुदा के सिवा किसी को अपना मददगार न पाया। (२५) और (फिर) नूह ने (यह) दुआ की कि मेरे परवरदिगार किसी काफ़िर को धरती पर बसता न रहने दे। (२६) अगर तू उन को रहने देगा, तो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उन से जो औलाद होगी, वह भी बद-कार और ना-शुक्रगुज़ार होगी। (२७) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझ को और मेरे मां-बाप को और जो ईमान ला कर मेरे घर में आए उस को और तमाम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को माफ़ फ़रमा और ज़ालिम लोगों के लिए और ज़्यादा तबाही बढ़ा। (२८) ★ ●



७२ सूरः जिन्न ४०

सूरः जिन्न मक्की है, इस में २८ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कह दो कि मेरे पास वह्य आयी है कि जिन्नों की एक जमाअत ने (इस किताब को) सुना तो कहने लगे कि हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना, (१) जो भलाई का रास्ता बताता है, सो हम उस पर ईमान ले आए और हम अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं बनाएंगे। (२) और यह कि हमारे परवरदिगार की (शान की) बड़ाई बहुत बड़ी है, वह न बीवी रखता है न औलाद, (३) और यह कि हममें से कुछ बेवक़ूफ़ ख़ुदा के बारे में झूठ गढ़ते हैं, (४) और हमारा (यह) ख़्याल था कि इन्सान और जिन्न ख़ुदा के बारे में झूठ नहीं बोलते, (५) और यह कि कुछ आदम की औलाद कुछ जिन्नों की पनाह पकड़ा करती थी, (इस से) उन की सरकशी और बढ़ गयी थी। (६) और यह कि उन का भी यही एतक़ाद था, जिस तरह तुम्हारा था कि ख़ुदा किसी को नहीं जिलाएगा। (७) और यह कि हमने आसमान को टटोला, तो उस को मज़बूत चौकीदारों और अंगारों से भरा हुआ पाया, (८) और यह कि पहले हम वहां बहुत सी जगहों में (ख़बरें) सुनने के लिए बैठा करते थे। अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिए अंगारा तैयार पाए, (९) और यह कि हमें मालूम नहीं कि इस से ज़मीन वालों के हक़ में बुराई मक़्सूद है या उन के परवरदिगार ने उन की भलाई का इरादा फ़रमाया है। (१०) और यह कि हम में कोई नेक है और

★ रु. २/१० आ ८ ● नि. १/२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् नुअ्जिज़ल्ला-ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-र-बंव्
(१२) व अन्ना लम्मा समिअ्-नल् - हुदा आमन्ना बिही फ़मंय्युअ्मिम् -
बिरब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव् - व ला र - ह - क़ा (१३) व अन्ना मिन्नल् -
मुस्लिमू - न व मिन्नल - क़ासितून फ़-मन् अस्-ल-म फ़-उलाइ - क त-हर्रौ र-श-दा
(१४) व अम्मल् - क़ासितू-न फ़-कानू
लि-ज - हन्न - म ह़-त-बंव् - (१५) -व
अल्लविस्तक़ामू अ़लत्तरीक़ति ल - अस्क़ैनाहुम्
माअन् ग़-द-क़ल (१६) लिनफ़्ति-नहुम्
फ़ीहि व मंय्युअ्-रिज़् अ़न् ज़िक्रि रब्बिही
यस्लुक्हु अ़ज़ाबन् स-अ़-दंव् - (१७) व
अन्नल् - मसाजि-द लिल्लाहि फ़ला तद्अू
म-अल्लाहि अ-ह़-दा (१८) व अन्नहू
लम्मा क़ा-म अ़ब्दुल्लाहि यद्अूहु कादू यकूनू-न
अ़लैहि लि-ब-दा ★ (१९) क़ुल् इन्नमा
अद्अू रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-ह़-दा
(२०) क़ुल इन्नी ला अम्लिकु लकुम्
ज़र्रंव्-व ला र-श-दा (२१) क़ुल् इन्नी
लंय्युजीरनी मिनल्लाहि अ-ह़दुंव् - व
लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-ह़-दा (२२) इल्ला बलाग़म् - मिनल्लाहि
व रिसालातिही व मंय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न
फ़ीहा अ-ब-दा (२३) ह़त्ता इज़ा रऔ मा यू-अ़दू-न फ़-स-यअ्-लमू-न मन्
अज़्अ़फ़ु नासिरंव्-व अक़ल्लु अ़-द-दा (२४) क़ुल् इन् अद्री अ-क़रीबुम्
मा तूअ़दू-न अम् यज्अ़लु लहू रब्बी अ-म-दा (२५) आ़लिमुल्-ग़ैबि फ़ला
युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिही अ-ह़-दन् (२६) इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन्
फ़इन्नहू यस्लुकु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र - स़ - दल्
(२७) लियअ्-ल-म अन् क़द् अब् - लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व
अह़ा-त बिमा लदैहिम् व अह़्-सा कुल्-ल शैइन् अ़-द-दा ★ (२८)

تبٰرك الذى ٢٩ ٤٦١ الجن ٧٢

دُوْنَ ذٰلِكَ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝١١ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى
الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝١٢ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ
بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝١٣ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا
الْقٰسِطُوْنَ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝١٤ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ
فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝١٥ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ
مَّآءً غَدَقًا ۝١٦ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ
عَذَابًا صَعَدًا ۝١٧ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝١٨ وَّاَنَّهٗ
لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝١٩ قُلْ اِنَّمَآ
اَدْعُوْا رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ۝٢٠ قُلْ اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا
رَشَدًا ۝٢١ قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِىْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ
دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝٢٢ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۝٢٣ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا
يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ۝٢٤ قُلْ اِنْ
اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّىْٓ اَمَدًا ۝٢٥ عٰلِمُ الْغَيْبِ
فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝٢٦ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ
يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۝٢٧ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا
رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًا ۝٢٨

منزل ٧

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोई और तरह के, हमारे कई तरह के मज़हब हैं। (११) और यह कि हमने यक़ीन कर लिया है कि हम ज़मीन में (चाहे कहीं हों) ख़ुदा को हरा नहीं सकते और न भाग कर उस को थका सकते हैं। (१२) और जब हमने हिदायत (की किताब) सुनी, उस पर ईमान ले आए तो जो शख़्स अपने परवरदिगार पर ईमान लाता है, उस को न नुक़्सान का डर है, न ज़ुल्म का। (१३) और यह कि हम में कुछ फ़रमांबरदार हैं और कुछ (ना-फ़रमान) गुनाहगार हैं, तो जो फ़रमांबरदार हुए, वे सीधे रास्ते पर चले। (१४) और जो गुनाहगार हुए, वे दोज़ख का ईंधन बने। (१५) और (ऐ पैग़म्बर!) यह (भी उन से कह दो) कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर रहते तो हम उन के पीने को बहुत-सा पानी देते, (१६) ताकि इस से उन की आज़माइश करें और जो शख़्स अपने परवरदिगार की याद से मुंह फेरेगा, वह उस को सख़्त अज़ाब में दाख़िल करेगा। (१७) और यह कि मस्जिदें (ख़ास) ख़ुदा की हैं, तो ख़ुदा के साथ किसी और की इबादत न करो। (१८) और जब ख़ुदा के बन्दे (मुहम्मद) उस की इबादत को खड़े हुए तो काफ़िर उन के चारों तरफ़ भीड़ कर लेने को थे। (१९) ★

कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार ही की इबादत करता हूं और (२०) यह भी कह दो कि मैं तुम्हारे हक़ में नुक़्सान और नफ़े का कुछ अख़्तियार नहीं रखता। (२१) यह भी कह दो कि ख़ुदा (के अज़ाब) से मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और मैं उस के सिवा कहीं पनाह की जगह नहीं देखता। (२२) हां, ख़ुदा की (तरफ़ से हुक्मों का) और उस के पैग़ामों का पहुंचा देना (ही मेरे ज़िम्मे है) और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बर की ना-फ़रमानी करेगा तो ऐसों के लिए जहन्नम की आग है, हमेशा-हमेशा उस में रहेंगे, (२३) यहां तक कि जब ये लोग वह (दिन) देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तब उन को मालूम हो जाएगा कि मददगार किस के कमज़ोर और तायदाद किन की थोड़ी है। (२४) कह दो कि जिस (दिन) का तुम से वायदा किया जाता है, मैं नहीं जानता कि वह (बहुत) क़रीब (आने वाला) है या मेरे परवरदिगार ने उस की मुद्दत लम्बी कर दी है। (२५) (वही) ग़ैब (की बात) जानने वाला है और किसी पर अपने ग़ैब को ज़ाहिर नहीं करता। (२६) हां, जिस पैग़म्बर को पसन्द फ़रमाए तो उस (को ग़ैब की बातें बता देता और उस) के आगे और पीछे निगहबान मुक़र्रर कर देता है, (२७) ताकि मालूम फ़रमाए कि उन्हों ने अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचा दिए हैं और (यों तो) उस ने उन की सब चीज़ों को हर तरफ़ से क़ाबू कर रखा है और एक-एक चीज़ गिन रखी है। (२८) ★

★रु. १/११ आ १९ ★रु. २/१२ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७३ सूरतुल्-मुज़्ज़म्मिलि ३

(मक्की) इस सूर: मे अरबी के ८६४ अक्षर, २०० शब्द, २० आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

या अय्युहल् - मुज़्ज़म्मिलु ۙ (१) क़ुमिल्लै - ल इल्ला क़लीलन् ۙ - (२)
निस़्फ़हू अविन्क़ुस़ मिन्हु क़लीलन् ۙ (३) औ ज़िद् अ़लैहि व रत्तिलिल् -
क़ुर्आ-न तर्तीला ط (४) इन्ना सनुल्क़ी अ़लै-क क़ौलन् सक़ीला (५)
इन्-न नाशि-अ-तल्लैलि हि-य अशद्दु वत्-अंव्-व अक़्वमु क़ीला ط (६) इन्-न ल-क
फ़िन्नहारि सब् - ह़न् त़वीला ط (७)
वज़्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि
तब्तीला ط (८) रब्बुल् - मश्रिक़ि
वलमग़्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़त्तख़िज़्हु
वकीला (९) वस़्बिर अ़ला मा यक़ूलू-न
वह्जुर्हुम् हज्-रन् जमीला (१०) व ज़र्नी
वल्-मुकज़्ज़िबी-न उलिन्नअ़्-मति व मह्हिल्हुम्
क़लीला (११) इन्-न लदैना अन्कालंव्-व
जह़ीमंव् - ۙ (१२) व त़आमन्
ज़ा ग़ुस़्स़तिंव्-व अ़ज़ाबन् अलीमा ق (१३)
यौ-म तर्जुफ़ुल्अर्ज़ु वल्जिबालु व कानतिल् -
जिबालु कसीबम् - महीला (१४) इन्ना
अर्सल्ना इलैकुम् रसूलन् ۙ शाहिदन्
अ़लैकुम् कमा अर्सल्ना इला फ़िर्औ-न
रसूला ط (१५) फ़-अ़स़ा फ़िर्औनुर् - रसू-ल फ़-अ-ख़ज़्नाहु अख़्ज़ंव्वबीला (१६)
फ़-कै-फ़ तत्तक़ू-न इन् क-फ़र्तुम् यौमंय्यज-अ़लुल् -विल्दा-न शी-ब-नि- صلے (१७)
-स्समाउ मुन्फ़तिरुम् - बिही ط का - न वअ़्दुहू मफ़्ऊला (१८)
इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शा-अत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला ★ (१९)

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ ۝١ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ ۝٢ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ
قَلِيْلًا ۙ ۝٣ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۭ ۝٤ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا
ثَقِيْلًا ۝٥ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۭ ۝٦ اِنَّ لَكَ فِي
النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۭ ۝٧ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۭ ۝٨ رَبُّ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝٩ وَاصْبِرْ عَلٰي مَا
يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۝١٠ وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ
وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۝١١ اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ ۝١٢ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ
وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٣ۤ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ
كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۝١٤ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ
اَرْسَلْنَآ اِلٰي فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ۭ ۝١٥ فَعَصٰي فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا
وَّبِيْلًا ۝١٦ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ۝١٧ۖ
السَّمَاۗءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ۭ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۝١٨ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ
شَاۗءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝١٩ۧ اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى
مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَاۗىِٕفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ۭ
وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا

منزل ٧

★रु० १/१३ आ १९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७३ सूरः मुज़्ज़म्मिल ३

सूरः मुज़्ज़म्मिल मक्की है, इस में २० आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद !) जो कपड़े में लपट रहे हो, (१) रात को क़ियाम किया करो, मगर थोड़ी-सी रात[1] (२) यानी आधी रात या उस से कुछ कम, (३) या कुछ ज़्यादा और क़ुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ा करो। (४) हम बहुत जल्द तुम पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे। (५) कुछ शक नहीं कि रात का उठना (हैवानी नफ़्स को) सख़्त पामाल करता है और उस वक़्त ज़िक्र भी ख़ूब दुरुस्त होता है। (६) दिन के वक़्त तो तुम्हें और बहुत से शुग़्ल (काम) होते हैं। (७) तो अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करो और हर तरफ़ से बे-ताल्लुक़ हो कर उसी की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ। (८) (वही) पूरब और पश्चिम का मालिक (है और) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को अपना कारसाज़ बनाओ। (९) और जो-जो (दिल दुखाने वाली) बातें ये लोग कहते हैं, उन को सहते रहो और अच्छे तरीक़े से उन से किनारा अख़्तियार कर लो। (१०) और मुझे उन झुठलाने वालों से जो दौलतमंद हैं, समझ लेने दो[2] और उन को थोड़ी-सी मोहलत दो। (११) कुछ शक नहीं कि हमारे पास बेड़ियां हैं और भड़कती आग है, (१२) और गुलूगीर[3] खाना है और दर्द देने वाला अज़ाब है, (१३) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपने लगें और पहाड़ (ऐसे भुरभुरे, गोया) रेत के टीले हो जाएं। (१४) (ऐ मक्का वालो !) जिस तरह हम ने फ़िऔन के पास (मूसा को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा था, (उसी तरह) तुम्हारे पास भी (मुहम्मद) रसूल भेजे हैं, जो तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह होंगे। (१५) सो फ़िऔन ने (हमारे) पैग़म्बर का कहा न माना, तो हम ने उस को बड़े वबाल में पकड़ लिया। (१६) अगर तुम भी (उन पैग़म्बर को) न मानोगे तो उस दिन से कैसे बचोगे, जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा,[4] (१७) (और) जिस से आसमान फट जाएगा। यह उस का वायदा (पूरा) हो कर रहेगा। (१८) यह (क़ुरआन) तो नसीहत है, सो जो चाहे अपने परवरदिगार तक (पहुंचने का) रास्ता अख़्तियार कर ले। (१९) ★

---

१. रात को खड़ा रह यानी नमाज़ पढ़ो रात को अव्वल। दीन में नमाज़ रात ही की फ़र्ज़ हुई, मगर किसी रात न हो तो माफ़ है।

२. लफ़्ज़ों का मतलब तो यह है कि मुझे और इन झुठलाने वालों को जो दौलतमंद हैं, छोड़ दो, मगर हम ने मुहावरे का ख़्याल किया है।

३. हलक़ में फंसने वाला, जो न अन्दर जाए, न बाहर जाए।

४. इस आयत के यह मानी भी हैं कि अगर तुम उस दिन को न मानोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा, तो कैसे बचोगे।

★रु. १/१३ आ १९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्-न रब्ब-क यअ्-लमु अन्न-क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलुसयिल्लैलि व निस्-फ़हू व सुलु-सहू व ताँ-इफ़तुम्-मिनल्लज़ी-न म-अ-क ط वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र ط अलि-म अल्लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अ़लैकुम् फ़क़्-रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-क़ुरआनि ط अ़लि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्-ज़ा ۙ व आख़रू-न यज़्रिबू-न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू-न मिन् फ़ज़्-लिल्लाहि ۙ व आख़रू-न युक़ातिलू-न फ़ी सबी-लिल्लाहि ۖ फ़क़्-रऊ मा त-यस्स-र मिन्हु ۙ व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्-ज़न् ह़-स-नन् ط व मा तुक़द्दिमू लि-अन्-फ़ुसि-कुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ्-ज़-म अज्-रन् ط वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम ★ (२०)

७४ सूरतुल्-मुद्दस्सिरि ४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११४५ अक्षर, २५६ शब्द, ५६ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहल्-मुद्दस्सिरु ۙ (१) क़ुम् फ़-अन्-ज़िर् ۙ (२) व रब्ब-क फ़-कब्बिर ۙ (३) व सिया-ब-क फ़-त़ह्हिर् ۙ (४) वर्रुज्-ज़ फ़ह्जुर् ۙ (५) व ला तम्-नुन् तस्तक्सिर ۙ (६) व लिरब्बि-क फ़स्बिर् ط (७) फ़इज़ा नुक़ि-र फ़िन्नाक़ूरि ۙ (८) फ़ज़ालि-क यौमइज़िय्यौमुन् असीरुन् ۙ (९) अ़लल्-काफ़िरी-न ग़ैरु यसीर (१०) ज़र्नी व मन् ख़-लक़्तु वह़ीदंव- ۙ (११) व ज-अ़ल्तु लहू मालम्-मम्दूदंव- ۙ (१२) व बनी-न शुहूदंव- ۙ (१३) व मह्-हत्तु लहू तम्हीदा ۙ (१४) सुम्-म यत़्मअु अन् अज़ी-द ۙ (१५) कल्ला ط इन्नहू का-न लिआयातिना अ़नीदा ط (१६) सउर्हिक़ुहू सऊदन् ط (१७) इन्नहू फ़क्क-र व क़द्-द-र ۙ (१८) फ़क़ुति-ल कै-फ़ क़द्-द-र ۙ (१९) सुम्-म क़ुति-ल कै-फ़ क़द्-द-र ۙ (२०) सुम्-म न-ज़-र ۙ (२१) सुम्-म अ-ब-स व ब-स-र ۙ (२२) सुम्-म अद्-ब-र वस्तक्-ब-र ۙ (२३) फ़-क़ा-ल इन् हाज़ा इल्ला सिह़रुंय्युअ्-सरु ۙ (२४) इन् हाज़ा इल्ला क़ौलुल्-ब-शर ط (२५) सउस्लीहि स-क़र (२६) व मा अद्-रा-क मा स-क़र ط (२७) ला तुब्क़ी व ला त-ज़र ۚ (२८) लव्वाह़तुल्-लिल-ब-शर ۚ (२९) अ़लैहा तिस्-अ-त़ अ्-शर ط (३०)

تبرك الذى ٢٩ ٤٦٣ المدثر ٧٤

مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ
فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ
فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ
خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾
سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِىَ سِتٌّ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ﴿٤﴾
وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾ فَاِذَا نُقِرَ
فِى النَّاقُوْرِ ﴿٨﴾ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ﴿٩﴾ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ﴿١٠﴾
ذَرْنِىْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿١١﴾ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿١٢﴾ وَّبَنِيْنَ
شُهُوْدًا ﴿١٣﴾ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿١٤﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ
لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿١٦﴾ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿١٧﴾ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ﴿١٩﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ
وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿٢٤﴾ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾
سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِىْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾
لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَاۤ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا

منزل ٧

★ रु. २/१४ आ १

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है कि तुम और तुम्हारे साथ के लोग (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात क़ियाम किया करते हो और ख़ुदा तो रात और दिन का अन्दाज़ा रखता है। उस ने मालूम किया कि तुम उस को निबाह न सकोगे तो उस ने तुम पर मेहरबानी की, पस जितना आसानी से हो सके (उतना) क़ुरआन पढ़ लिया करो। उस ने जाना कि तुम में कुछ बीमार भी होते हैं, और कुछ ख़ुदा के फ़ज़्ल (यानी रोज़ी) की खोज में मुल्क में सफ़र करते हैं और कुछ ख़ुदा की राह में लड़ते हैं, तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ लिया करो और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो और ख़ुदा को नेक (और नीयत के ख़ुलूस से) क़र्ज़ देते रहो और जो नेक अमल तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उस को ख़ुदा के यहां बेहतर और बदले में बुज़ुर्गतर पाओगे और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते रहो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२०)★

७४ सूरः मुद्दस्सिर ४

सूरः मुद्दस्सिर मक्की है। इस में ५६ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद!) जो कपड़ा लपेटे पड़े हो[1], (१) उठो और हिदायत कर दो, (२) और अपने परवरदिगार की बड़ाई करो, (३) और अपने कपड़ों को पाक रखो, (४) और नापाकी से दूर रहो, (५) और (इस नीयत से) एहसान न करो कि इस से ज़्यादा की तलब में हो, (६) और अपने परवरदिगार के लिए सब्र करो। (७) जब सूर फूंका जाएगा, (८) वह दिन मुश्किल का दिन होगा, (९) (यानी) काफ़िरों पर आसान होगा, (१०) हमें उस शख़्स से समझ लेने दो, जिस को हम ने अकेला पैदा किया, (११) और ज़्यादा माल दिया, (१२) और (हर वक़्त उस के पास) हाज़िर होने वाले बेटे (दिए,) (१३) और हर तरह के सामान में वुस्अत दी। (१४) अभी ख़्वाहिश रखता है कि और ज़्यादा दें। (१५) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। यह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है। (१६) हम उसे सऊद पर चढ़ाएंगे। (१७) उस ने फ़िक्र किया और तज्वीज़ की। (१८) यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्वीज़ की, (१९) फिर यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्वीज़ की, (२०) फिर ताम्मुल किया, (२१) फिर त्यौरी चढ़ायी और मुंह बिगाड़ लिया, (२२) फिर पीठ फेर कर चला और (हक़ क़ुबूल करने से) घमंड किया, (२३) फिर कहने लगा कि यह तो जादू है, जो (अगलों से) बराबर होता चला आया है।[2] (२४) (फिर) बोला) यह (ख़ुदा का कलाम नहीं, बल्कि) इंसान का कलाम है। (२५) हम बहुत जल्द उस को सक़र में दाख़िल करेंगे, (२६) और तुम क्या समझे कि सक़र क्या है? (२७) (वह आग है कि) न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी। (२८) और बदन को झुलसा कर काला कर देगी, (२९) उस पर उन्नीस दारोग़ा

१. यह सूरः वह्य के शुरू के दिनों में नाज़िल हुई थी। चूंकि हज़रत सल्ल० वह्य के डर की वजह से कपड़ा ओढ़ लेते थे, इस लिए 'मुद्दस्सिर' से ख़िताब फ़रमाया।

२. ये आयतें वलीद बिन मुग़ीरह के हक़ में नाज़िल हुई हैं। यह शख़्स बड़ा मालदार और क़ुरैश में नामी था। बेटे भी बहुत-से रखता था। ग़रज़ दुनिया में जो बातें ख़ुशक़िस्मती की समझी जाती हैं, सब उस को हासिल थीं।

(शेष पृष्ठ ९२५ पर)

★रु. २/१४ आ १

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व मा ज-अल्ना अस्-हाबन्नारि इल्ला मलाइ-क-तंव्-व मा ज-अल्ना अिद्-द-तहुम्
इल्ला फ़ित्-न-तल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू ॥ लियस्तैक़िनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब व यज़्दा-
दल्लज़ी-न आमनू ईमानंव्-वला यर्ताबल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब वल्मुअ्मिनू-न ॥
व लियक़ूलल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुंव्वल्-काफ़िरू-न माज़ा
अरादल्लाहु बिहाज़ा म-स-लन् b कज़ालि-क
युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ b
व मा यअ्-लमु जुनू-द रब्बि-क इल्ला हु-व b
व मा हि-य इल्ला ज़िक्रा लिल्ब-शर
★ (३१) कल्ला वल्क़मरि ॥ (३२)
वल्लैलि इज़् अद्-ब-र ॥ (३३) वस्सुब्हि
इज़ा अस्-फ़-र ॥ (३४) इन्नहा
ल-इह्दल्-कुबरि ॥ (३५) नज़ीरल्-
लिल्ब-शर ॥ (३६) लिमन् शा-अ मिन्कुम्
अंय्य-त-क़द्-द-म औ य-त-अख़्ख़-र b (३७) कुल्लु
नफ़्सिम्-बिमा क-स-बत् रहीनतुन् ॥ (३८)
इल्ला अस्-हाबल्-यमीन b (३९) फ़ी जन्ना-
तिन् य-त-सा-अलून ॥ (४०) अनिल्-मुज्रिमीन ॥
(४१) मा स-ल-ककुम् फ़ी स-क़र (४२) क़ालू लम् नकु मिनल्-मुसल्लीन ॥ (४३)
व लम् नकु नुत्अिमुल्-मिस्कीन ॥ (४४) व कुन्ना नख़ूज़ु म-अल्-
ख़ाइज़ीन ॥ (४५) व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बियौमिद्दीन ॥ (४६) हत्ता
अतानल्-यक़ीन b (४७) फ़मा तन्फ़अुहुम् शफ़ा-अतुश्-शाफ़िअीन b (४८)
फ़मा ल-हुम् अनित्तज़्-किरति मुअ्-रिज़ीन ॥ (४९) क-अन्नहुम् हुमुरुम्-
मुस्तन्फ़िरः ॥ (५०) फ़र्रत् मिन् क़स्-वरः b (५१) बल् युरीदु
कुल्लुम्रिइम्-मिन्हुम् अंय्युअ्ता सुहुफ़म्-मुनश्-श-र-तन् ॥ (५२) कल्ला b
बल् ला यख़ाफ़ूनल्-आख़िरः b (५३) कल्ला इन्नहू तज़्कि-रतुन् (५४) फ़-मन्
शा-अ ज-करह b (५५) व मा यज़्कुरू-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु b हु-व
अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल्-मग़्फ़िरः ★ ● (५६)

مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا
يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَ ع ١٥
الَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيْرًا
لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ
رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ مع ١٦
مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ
الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾
فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾
كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَ
مَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾ ع ٢
سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ اَيَحْسَبُ

★रु. १/१५ आ ३१ मु. अि मु. ता ख़. १६ ★रु. २/१६ आ २५ ●सु. ३/४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं, (३०) और हम ने दोज़ख़ के दारोग़ा फ़रिश्ते बनाए हैं और उन की तायदाद को काफ़िरों की आज़माइश के लिए मुक़र्रर किया है (और) इस लिए कि किताब वाले यक़ीन करें और मोमिनों का ईमान और ज़्यादा हो और अह्ले किताब और मोमिन शक न लाएं और इस लिए कि जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) मर्ज़ है और (जो) काफ़िर (हैं) कहें कि इस मिसाल (के बयान करने) से ख़ुदा का मक़्सूद क्या है ? इसी तरह ख़ुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है और तुम्हारे परवरदिगार के लश्करों को उस के सिवा कोई नहीं जानता और यह् तो आदम की औलाद के लिए नसीहत है। (३१)★

हां, (हां, हमें,) चांद की क़सम ! (३२) और रात की, जब पीठ फेरने लगे, (३३) और सुबह् की जब रोशन हो, (३४) कि वह (आग) एक बहुत बड़ी (आफ़त) है, (३५) (और) बशर के लिए ख़ौफ़ की वजह, (३६) जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे।' (३७) हर शख़्स अपने आमाल के बदले रेहन है, (३८) मगर दाहिनी तरफ़ वाले (नेक लोग) (३९) ∴(कि) वे बहिश्त के बाग़ों में (होंगे और)∴ पूछते होंगे, (४०) (यानी आग में जलने वाले) गुनाहगारों से, (४१) कि तुम दोज़ख़ में क्यों पड़े ? (४२) वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे, (४३) और न फ़क़ीरों को खाना खिलाते थे, (४४) और बातिल वालों के साथ मिल कर (हक़ से) इंकार करते थे, (४५) और बदले के दिन को झुठलाते थे, (४६) यहां तक कि हमें मौत आ गयी, (४७) तो (इस हाल में) सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन के हक़ में कुछ फ़ायदा न देगी. (४८) उन को क्या हुआ है कि नसीहत से मुंह फेर रहे हैं। (४९) गोया गधे हैं कि बिदक जाते हैं, (५०) (यानी) शेर से डर कर भाग जाते हैं। (५१) असल यह है कि उन में से हर शख़्स यह चाहता है कि उस के पास खुली हुई किताब आए। (५२) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। हक़ीक़त यह है कि उन को आख़िरत का ख़ौफ़ ही नहीं। (५३) कुछ शक नहीं कि यह नसीहत है। (५४) तो जो चाहे याद रखे, (५५) और याद भी तभी रखेंगे जब ख़ुदा चाहे। वही डरने के लायक़ और बख़्शिश का मालिक है। (५६) ★●

(पृष्ठ ९२३ का शेष)

एक बार जो हज़रत सल्ल० के पास आया तो आप ने उस को क़ुरआन सुनाया, ऐसा मीठा कलाम सुन कर फड़क उठा और बे-साख़्ता तारीफ़ करने लगा। यह बात अबू जह्ल को मालूम हुई तो उस ने वलीद से आ कर कहा कि चचा ! तुम्हारी बिरादरी के लोग तुम्हारे लिए चन्दा जमा करना चाहते हैं। उस ने कहा किस लिए ? अबू जह्ल ने कहा कि तुम मुहम्मद के पास जा कर उन की बातें सुनते हो। उस ने कहा कि क़ुरैश को मालूम है कि मैं इन सब से ज़्यादा दौलतमंद हूं, तो मुझे उन के चन्दे की क्या ज़रूरत है। अबू जह्ल ने कहा, अच्छा, तो ऐसी बात कहो, जिस से साबित हो कि तुम उन के कलाम को पसन्द नहीं करते। उस ने कहा कि मैं उन के हक़ में क्या कहूं। ख़ुदा की क़सम ! तुम में कोई शख़्स मुझ से ज़्यादा अशआर व क़सीदे का आलिम नहीं और मैं उन के कलाम को हरगिज़ शेर नहीं कह सकता। अबू जह्ल ने कहा, जब तक तुम उन के बारे में कोई बात लोगों की ख़्वाहिश के मुताबिक़ तज्वीज़ न करोगे, वे तुम से ख़ुश नहीं होंगे। आख़िर उस ने सोच कर कहा कि यह जादू है। सऊद दोज़ख़ में एक पहाड़ है, जिस पर काफ़िर को चढ़ा कर नीचे गिरा दिया करेंगे। कुछ ने कहा कि सऊद दोज़ख़ में एक बहुत बड़ा पत्थर है, जिस पर काफ़िर को मुंह के बल घसीटेंगे। किसी ने कहा कि सऊद जहन्नम में एक चिकना पत्थर है, जिस पर काफ़िर को चढ़ने के लिए मजबूर करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७५ सूरतुल्-क़ियामति ३१

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ६८२ अक्षर, १६४ शब्द, ४० आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

ला उक़्सिमु बियौमिल्-क़ियामति (१) व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल्-
लव्वामः (२) अ-यह़्सबुल-इन्सानु अल्लन् नज्म-अ अिज़ामह (३) बला क़ादि-
री-न अला अन्नुसव्वि-य बनानह (४) बल् युरीदुल-इन्सानु लियफ़्जु-र अमामह
(५) यस्अलु अय्या-न यौमुल-क़ियामः (६) फ़इज़ा बरिक़ल-ब-स़रु (७) व
ख़-स-फ़ल्-क़-मरु (८) व जुमिअश्शम्सु वल्क़-
मरु (९) यक़ूलुल-इन्सानु यौमइज़िन् ऐनल-
म-फ़र्रु (१०) कल्ला ला व-ज़र (११)
इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल-मुस्तक़र्र (१२)
युनब्बउल-इन्सानु यौमइज़िम्-बिमा क़द्-द-म व
अख़्ख़-र (१३) बलिल-इन्सानु अला नफ़्सिही
बसीरतुंव- (१४) व लौ अल्क़ा मआज़ीरह (१५)
ला तुहर्रिक् बिही लिसान-क लितअ-ज-ल बिही
(१६) इन-न अलैना जम्-अहू व क़ुरआनहू
(१७) फ़इज़ा क़-रअ्नाहु फ़त्तबिअ-क़ुर्आनह
(१८) सुम-म इन-न अलैना बयानह (१९)
कल्ला बल् तुह़िब्बूनल-आजि-ल-त (२०) व
त-ज़रूनल-आख़ि-रः (२१) वुजूहुंय्यौमइज़िन्
नाज़ि-र-तुन् (२२) इला रब्बिहा नाज़िरः
(२३) व वुजूहुंय्यौमइज़िम्-बासि-रतुन् (२४) तज़ुन्नु अंय्युफ़्-अ-ल बिहा फ़ाक़ि-
रः (२५) कल्ला इज़ा ब-ल-ग़तित-तराक़ि-य (२६) व क़ी-ल मन् राक़िव
(२७) -व ज़न-न अन्नहुल-फ़िराक़ु (२८) वल-तफ़्फ़तिस्साक़ु बिस्साक़ि (२९)
इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल-मसाक़ ★ (३०) फ़ला स़द्-द-क़ व ला स़ल्ला (३१)
व लाकिन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (३२) सुम-म ज़-ह-ब इला अह़्लिही य-त-मत्ता (३३)
औला ल-क फ़-औला (३४) सुम-म औला ल-क फ़-औला (३५) अ-यह़्सबुल-इन्सानु
अंय्युत-र-क सुदा (३६) अ-लम् यकु नुत़्फ़-तम्-मिम्-मनिय्यिंय्युम्ना (३७) सुम-म
का-न अ-ल-क़-तन् फ़-ख़-ल-क़ फ़-सव्वा (३८) फ़-ज-अ-ल मिन्हुज़्-ज़ौजैनिज़्-ज-क-र
वल-उन्सा (३९) अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अला अंय्युह़्यि-यल-मौता ★ (४०)

القيمة ٧٥ — ٩٦٥ — تبرك الذى ٢٩

الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ ۝٣ بَلَىٰ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ
بَنَانَهُ ۝٤ بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝٥ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ
الْقِيَامَةِ ۝٦ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَ
الْقَمَرُ ۝٩ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝١٠ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١١ إِلَىٰ
رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝١٢ يُنَبَّأُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝١٣
بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝١٤ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ۝١٥ لَا تُحَرِّكْ
بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝١٦ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝١٧ فَإِذَا قَرَأْنَاهُ
فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۝١٨ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝١٩ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝٢٠
وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝٢١ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ۝٢٢ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝٢٣
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝٢٤ تَظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝٢٥ كَلَّا إِذَا
بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝٢٦ وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۝٢٧ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝٢٨ وَ
الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝٢٩ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝٣٠ فَلَا صَدَّقَ
وَلَا صَلَّىٰ ۝٣١ وَلَٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝٣٢ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ۝٣٣
أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝٣٤ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝٣٥ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ
يُتْرَكَ سُدًى ۝٣٦ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَىٰ ۝٣٧ ثُمَّ كَانَ
عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝٣٨ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۝٣٩
أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۝٤٠

★रु. १/१७ आ ३० ★रु. २/१८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७५ सूरः क़ियामः ३१

सूरः क़ियामः मक्की है, इस मे चालीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम को क़ियामत के दिन की क़सम, (१) और नफ़्से लव्वामा[1] की (कि सब लोग उठा कर खड़े किए जाएंगे,) (२) क्या इंसान यह ख़्याल करता है कि हम उस की (बिखरी हुई) हड्डियां इकट्ठी नहीं करेंगे ? (३) ज़रूर करेंगे (और) हम इस बात पर क़ुदरत रखते हैं कि उसके पोर-पोर दुरुस्त कर दें, (४) मगर इंसान चाहता है कि आगे को ख़ुदसरी करता जाए। (५) पूछता है कि क़ियामत का दिन कब होगा ? (६) जब आंखें चुंधिया जाएं, (७) और चांद गहना जाए, (८) और सूरज और चांद जमा कर दिए जाएं, (९) उस दिन इंसान कहेगा कि (अब) कहां भाग जाऊं ? (१०) बेशक कहीं पनाह नहीं, (११) उस दिन परवरदिगार ही के पास ठिकाना है, (१२) उस दिन इंसान को जो (अमल) उस ने आगे भेजे और जो पीछे छोड़े होंगे, सब बता दिए जाएंगे, (१३) बल्कि इंसान आप अपना गवाह है, (१४) अगरचे उज़्र माज़रत करता रहे (१५) और (ऐ मुहम्मद !) वह्य के पढ़ने के लिए अपनी ज़ुबान न चलाया करो कि उस को जल्द याद कर लो। (१६) उस का जमा करना और पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (१७) जब वह वह्य पढ़ा करें, तो तुम (उस को सुना करो और) फिर उसी तरह पढ़ा करो, (१८) फिर उस (के मानी) का बयान भी हमारे ज़िम्मे है, (१९) मगर (लोगो !) तुम दुनिया को दोस्त रखते हो, (२०) और आख़िरत को छोड़े देते हो, (२१) उस दिन बहुत से मुंह रौनक़दार होंगे, (२२) (और) अपने परवरदिगार का दीदार कर रहे होंगे, (२३) और बहुत-से मुंह उस दिन उदास होंगे, (२४) ख़्याल करेंगे कि उन पर मुसीबत वाक़ेअ होने को है। (२५) देखो, जब जान गले तक पहुंच जाए, (२६) और लोग कहने लगें, (इस वक़्त) कौन झाड़-फूंक करने वाला है, (२७) और उस (जान गले तक पहुंचे हुए शख़्स) ने समझा कि अब सब से जुदाई है, (२८) और पिंडली से पिंडली लिपट जाए, (२९) उस दिन तुझ को अपने परवरदिगार की तरफ़ चलना है, (३०) ★

तो उस (अंजाम से ना-समझ) ने न तो (ख़ुदा के कलाम की) तस्दीक़ की, न नमाज़ पढ़ी। (३१) बल्कि झुठलाया और मुंह फेर लिया, (३२) फिर अपने घर वालों के पास अकड़ता हुआ चल दिया। (३३) अफ़सोस है तुझ पर, फिर अफ़सोस है, (३४) फिर अफ़सोस है तुझ पर, फिर अफ़सोस है। (३५) क्या इंसान ख़्याल करता है कि यों ही छोड़ दिया जाएगा ? (३६) क्या वह मनी की, जो रहम में डाली जाती है, एक बूंद न था ? (३७) फिर लोथड़ा हुआ, फिर (ख़ुदा ने) उस को बनाया, फिर (उस के अंगों को) ठीक किया, (३८) फिर उस की दो क़िस्में बनायीं, (एक) मर्द और (एक) औरत। (३९) क्या उस को इस बात पर क़ुदरत नहीं कि मुर्दों को जिला उठाये ? (४०) ★

---

१. इन्सान का जी तीन तरह का है, एक जो गुनाहों और बुरे कामों की तरफ़ मायल रहे, उस को नफ़्से अम्मारा या अम्मारा बिस्सूइ कहते हैं, दूसरा जो बुराई और क़ुसूर के होने पर मलामत करे कि तू ने यह हरकत क्यों की, उस को नफ़्से लव्वामा कहते हैं। तीसरा जो नेकियों में दिलचस्पी बढ़ाएं और बुराइयों से नफ़रत दिलाए, ऐसा जी बड़े चैन में रहता है और उस को नफ़्से मुत्मइन्ना कहते हैं। यहां ख़ुदा ने नफ़्से लव्वामा की क़सम खायी है।

★रु. १/१७ आ ३० ★रु. २/१८ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७६ सूरतुद्‌दह्रि ९८

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के १०९९ अक्षर, २४६ शब्द, ३१ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

हल् अता अ़-लल-इन्सानि ह़ीनुम्-मिनद-दह्रि लम् यकुन् शै-अम्-मज़्कूरा
(१) इन्ना ख़-लक़्नल-इन्सा-न मिन् नुत़्फ़तिन् अम्शाजिन् नब्तलीहि फ़-ज-अ़ल्नाहु
समीअ़म्-बसी़रा (२) इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफ़ूरा (३)
इन्ना अअ्-तद्ना लिलकाफ़िरी-न सलासि-ल व अग़्लालंव्-व सअ़ीरा (४) इन्नल-
अब्रा-र यश्-रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ा-
जुहा काफ़ूरा (५) अ़ैनंय्यश्-रबु बिहा
अ़िबादुल्लाहि युफ़ज्जिरू-नहा तफ़्-जीरा (६)
यूफ़ू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू-न यौमन् का-न
शर्रुहू मुस्तती़रा (७) व युत़्अिमूनत्त़आ-म
अ़ला हु़ब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा
(८) इन्नमा नुत़्अिमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला
नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव्-व ला शुकूरा (९)
इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना यौमन् अ़बूसन् क़म्-
त़रीरा (१०) फ़-वक़ाहुमुल्लाहु शर्-र
ज़ालिकल-यौमि व लक़्क़ाहुम् नज़्-रतंव्-व सुरूरा
(११) व जज़ाहुम् बिमा स-बरू जन्नतंव्-व
ह़रीरम्- (१२) मुत्तकिई-न फ़ीहा
अ़लल्-अराइकि ला यरौ-न फ़ीहा शम्संव्-व ला ज़म्-हरी-रा (१३) व
दानि-य-तन् अ़लैहिम् ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत् क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला (१४) व युताफ़ु
अ़लैहिम् बिआनि-यतिम्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव्-व अक्वाबिन् कानत् क़वारी-र (१५)
क़वारी-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् क़द्दरूहा तक़्दीरा (१६) व युस्क़ौ-न फ़ीहा कअ्-सन्
का-न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला (१७) अ़ैनन् फ़ीहा तुसम्मा सल्सबीला (१८)
व यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मुख़ल्लदू-न इज़ा रऐतहुम् ह़सिब्-तहुम् लुअ्लुअम्-मन्सूरा
(१९) व इज़ा रऐ-त सम्-म रऐ-त नअ़ीमंव्-व मुल्कन् कबीरा (२०)

تبارك الذي ٢٩ ٥٦٦ الدهر ٧٦

سورة الدهر مدنية وهي احدى وثلثون اية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
هل اتى على الانسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا ﴿١﴾ انا
خلقنا الانسان من نطفة امشاج نبتليه فجعلنه سميعا بصيرا ﴿٢﴾
انا هدينه السبيل اما شاكرا واما كفورا ﴿٣﴾ انا اعتدنا للكفرين
سلسلا واغللا وسعيرا ﴿٤﴾ ان الابرار يشربون من كاس كان
مزاجها كافورا ﴿٥﴾ عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها تفجيرا ﴿٦﴾ يوفون
بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا ﴿٧﴾ ويطعمون الطعام
على حبه مسكينا ويتيما واسيرا ﴿٨﴾ انما نطعمكم لوجه الله لا نريد
منكم جزاء ولا شكورا ﴿٩﴾ انا نخاف من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ﴿١٠﴾
فوقىهم الله شر ذلك اليوم ولقىهم نضرة وسرورا ﴿١١﴾ وجزىهم بما
صبروا جنة وحريرا ﴿١٢﴾ متكـين فيها على الارائك لا يرون فيها
شمسا ولا زمهريرا ﴿١٣﴾ ودانية عليهم ظللها وذللت قطوفها تذليلا ﴿١٤﴾
ويطاف عليهم بانية من فضة واكواب كانت قواريرا ﴿١٥﴾ قواريرا من
فضة قدروها تقديرا ﴿١٦﴾ ويسقون فيها كاسا كان مزاجها زنجبيلا ﴿١٧﴾
عينا فيها تسمى سلسبيلا ﴿١٨﴾ ويطوف عليهم ولدان مخلدون اذا
رايتهم حسبتهم لؤلؤا منثورا ﴿١٩﴾ واذا رايت ثم رايت نعيما وملكا

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७६ सूर: दह्र ९८

सूर: दह्र मक्की है, इस में इक्तीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक इंसान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त भी आ चुका है कि वह कोई चीज़ ज़िक्र के क़ाबिल न था। (१) हम ने इंसान को मिले-जुले नुत्फ़े से पैदा किया[1], ताकि उसे आज़माएं, तो हम ने उसे सुनता-देखता बनाया। (२) और उसे रास्ता भी दिखा दिया। (अब वह) चाहे शुक्रगुज़ार हो, चाहे ना-शुक्रा। (३) हम ने काफ़िरों के लिए जंजीरें और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। (४) जो नेकी वाले हैं, वह ऐसी शराब[2] पिएंगे, जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी। (५) यह एक चश्मा है, जिस में से ख़ुदा के बन्दे पिएंगे और उस में से (छोटी-छोटी) नहरें निकाल लेंगे। (६) ये लोग नज़्रें पूरी करते हैं और उस दिन से जिस की सख़्ती फैल रही होगी, ख़ौफ़ रखते हैं, (७) और इसके बावजूद कि उन को ख़ुद खाने की ख़्वाहिश (और ज़रूरत) है, फ़क़ीरों और यतीमों और क़ैदियों को खिलाते हैं। (८) (और कहते हैं कि) हम तुम को ख़ालिस ख़ुदा के लिए खिलाते हैं, न तुम से बदले की ख़्वाहिश है, न शुक्रगुज़ारी के (तलबगार।) (९) हम को अपने परवरदिगार से उस दिन का डर लगता है जो (चेहरों को) देखने में बुरा और (दिलों को) सख़्त (बेचैन कर देने वाला) है। (१०) तो ख़ुदा उन को उस दिन की सख़्ती से बचा लेगा और ताज़गी और ख़ुशदिली इनायत फ़रमाएगा। (११) और उन के सब्र के बदले उन को बहिश्त (के बाग़) और रेशम (के कपड़े) अता करेगा? (१२) उन में वे तख़्तों पर तकिए लगाए बैठे होंगे, वहां न धूप (की गर्मी) देखेंगे, न सर्दी की तेज़ी, (१३) उन से (फलदार शाखें और) उन के साए क़रीब होंगे और मेवों के गुच्छे झुके हुए लटक रहे होंगे। (१४) (नौकर-चाकर) चांदी के बासन लिए हुए उन के चारों तरफ़ फिरेंगे और शीशे के (निहायत साफ़-सुथरे) गिलास, (१५) और शीशे भी चांदी के, जो ठीक अन्दाज़े के मुताबिक़ बनाए गए हैं, (१६) और वहां उन को ऐसी शराब (भी) पिलायी गयी, जिस में सोंठ की मिलावट होगी। (१७) यह बहिश्त में एक चश्मा है, जिस का नाम सलसबील है। (१८) और उन के पास लड़के आते जाते होंगे, जो हमेशा एक ही हालत पर आएंगे। जब तुम उन पर निगाह डालो, तो ख़्याल करो कि बिखरे हुए मोती हैं। (१९) और बहिश्त में (जहां) आंख उठाओगे, कसरत से नेमत और शानदार सल्तनत देखोगे। (२०) (उन (के बदनों) पर हरी दीबा

---

१. चूंकि मर्द और औरत दोनों के नुत्फ़ों के मिलने से बच्चा बनता है, इस लिए मिला-जुला नुत्फ़ा फ़रमाया।

२. 'कास' शराब के साग़र को भी कहते हैं और इसे शराब के लिए भी बोल सकते हैं, इस लिए यहां हम ने इस का तर्जुमा शराब किया।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आलि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् ख़ुज़्रुंव्-व इस्तब्रकुंव्-व हुल्लू असावि-र मिन् फ़िज़्ज़-तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा (२१) इन्-न हाज़ा का-न लकुम् जज़ा-अंव्-व का-न सअ्-युकुम् मश्कूरा★(२२) इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अ़लैकल-क़ुर्आ-न तन्ज़ीला (२३) फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ्-मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा (२४) वज़्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्-र-तंव्-व असीला (२५) व मिनल्लैलि फ़स्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला (२६) इन्-न हाउला-इ युहिब्बूनल्-आजि-ल-त व य-ज़-रू-न वरा-अहुम् यौमन् सक़ीला (२७) नह्नु ख़-लक़्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला (२८) इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शा-अत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला (२९) व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु इन्नल्ला-ह का-न अ़ली-मन् हकीमंय- (३०) -युद्ख़िलु मंय्यशाउ फ़ी रह्मतिही वज़्ज़ालिमी-न अ-अ़द्-द लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा ★ (३१)

المرسلت ۷۷ ۴۶۷ تبٰرک الذی ۲۹

كَبِيرًا ﴿٢٠﴾ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّإِسْتَبْرَقٌ ۖ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ
مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً
وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾
فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ
رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا
طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا
ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ
تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَ
مَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ يُّدْخِلُ
مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾
فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾ اِنَّمَا
تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾
وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ

منزل ۷

७७ सूरतुल्-मुर्सलाति ३३

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ८४६ अक्षर, १८१ शब्द, ५० आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वल्मुर्सलाति अ़ुर्फ़न् (१) फ़ल-आसिफ़ाति अ़स्फ़न् (२) वन्नाशिराति नश्रन् (३) फ़ल्फ़ारिक़ाति फ़र्क़न् (४) फ़ल्मुल्क़ियाति ज़िक्रन् (५) अ़ुज़्रन् औ नुज़्रन् (६) इन्नमा तू-अ़दू-न लवाक़ि-अ़ (७) फ़-इज़न्नुजूमु तुमिसत् (८) व इज़स्समाउ फ़ुरिजत् (९) व इज़ल्-जिबालु नुसिफ़त् (१०) व इज़र्रुसुलु उक़्क़ितत् (११) लिअय्यि यौमिन् उज्जिलत् (१२) लियौमिल्-फ़स्लि (१३) व मा अद्रा-क मा यौमुल्-फ़स्ल (१४)

★रु. १/१९ आ २२ ★रु. २/२० आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और अतलस के कपड़े होंगे और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे और उन का परवरदिगार उन को निहायत पाकीज़ा शराब पिलाएगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कोशिश (ख़ुदा के यहां) मक़बूल हुई। (२२) ★

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम पर क़ुरआन धीरे-धीरे नाज़िल किया है, (२३) तो अपने परवरदिगार के हुक्म के मुताबिक़ सब्र किए रहो और उन लोगों में से किसी बद-अमल और ना-शुक्रे का कहा न मानो, (२४) और सुबह व शाम अपने परवरदिगार का नाम लेते रहो। (२५) और रात को बड़ी रात तक उस के आगे सज्दे करो और उस की पाकी बयान करते रहो। (२६) ये लोग दुनिया को दोस्त रखते हैं और (क़ियामत के) भारी दिन को पीठ पीछे छोड़ देते हैं। (२७) हम ने उन को पैदा किया और उन के जोड़ों को मज़बूत बनाया और अगर हम चाहें तो उन के बदले उन्हीं की तरह और लोग ले आएं। (२८) यह तो नसीहत है, जो चाहे अपने परवरदिगार की तरफ़ पहुंचने का रास्ता अख़्तियार करे। (२९) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर जो ख़ुदा को मंज़ूर हो। बेशक ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है, (३०) जिस को चाहता है, अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और ज़ालिमों के लिए उस ने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है★(३१)

७७ सूरः मुर्सलात ३३

सूरः मुर्सलात मक्की है, उस में पचास आयतें और दो रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हवाओं की क़सम जो नर्म-नर्म चलती हैं, (१) फिर ज़ोर पकड़ कर झक्कड़ हो जाती हैं, (२) और (बादलों को) फाड़ कर फैला देती हैं, (३) फिर उन को फाड़ कर जुदा-जुदा कर देती हैं, (४) फिर फ़रिश्तों की क़सम, जो वह्य लाते हैं, (५) ताकि उज़्र (दूर) कर दिया जाए, (६) कि जिस का तुम से वायदा किया जाता है, वह हो कर रहेगा। (७) जब तारों की चमक जाती रहे, (८) और जब आसमान फट जाए, (९) और जब पहाड़ उड़े-उड़े फिरें, (१०) और जब पैग़म्बर फ़राहम किए जाएं, (११) भला (इन मामलों में) देर किस लिए की गयी ? (१२) फ़ैसले के दिन के लिए, (१३) और तुम्हें क्या ख़बर कि फ़ैसले का दिन क्या है, (१४) उस दिन झुठलाने वालों के

★रु. १/१९ आ २२ ★रु. २/२० आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वैलुंय्यौमइज़िल् - लिलमुकज़्ज़िबीन (१५) अ-लम् नुह्लिकिल् - अव्वलीन ط
(१६) सुम्-म नुत्बिअुहुमुल् - आख़िरीन (१७) कज़ालि-क नफ़्अलु बिल्-
मुज्रिमीन (१८) वैलुंय्यौमइज़िल् - लिलमुकज़्ज़िबीन (१९) अ - लम्
नख़्लुक्कुम् मिम् - माइम् - महीन ۙ (२०) फ़-ज-अल्नाहु फ़ी क़रारिम् -
मकीन ۙ (२१) इला क़-दरिम्-मअ्-लूम ۙ (२२)
फ़-क़-दर्ना ۖ फ़निअ्-मल् - क़ादिरून (२३)
वैलुंय्यौमइज़िल्-लिलमुकज़्ज़िबीन (२४) अ-लम्
नज्अलिल्-अर्-ज़ किफ़ातन् ۙ (२५) अह्याअंव्-व
अम्वातंव्- ۙ (२६) व जअल्ना फ़ीहा रवासि-य
शामिख़ातिंव्-व अस्क़ैनाकुम् माअन् फ़ुराता ط
(२७) वैलुंय्यौमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (२८)
इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून ج
(२९) इन्तलिक़ू इला ज़िल्लिन् ज़ी सलासि
शु-अबिल- ۙ (३०) ला ज़लीलिंव्-व ला युग़्नी
मिनल्ल-हब ط (३१) इन्नहा तर्मी बि-श-ररिन् कल्-
क़स्रि ج (३२) क-अन्नहू जिमा-लतुन् सुफ़्र ط (३३)
वैलुंय्यौमइज़िल-लिल-मुकज़्ज़िबीन (३४) हाज़ा
यौमु ला यन्तिक़ून ۙ (३५) व ला युअ्ज़नु लहुम् फ़-यअ्-तज़िरून (३६) वैलुंय्-
यौमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (३७) हाज़ा यौमुल-फ़स्लि ج ज-मअ्-नाकुम् वल्-अव्वलीन
(३८) फ़इन् का-न लकुम् कैदुन् फ़कीदून (३९) वैलुंय्यौमइज़िल-लिलमुकज़्ज़ि-
बीन ★(४०) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी ज़िलालिंव्-व अुयून ۙ (४१) व फ़वाकि-ह मिम्मा
यश-तहून ط (४२) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (४३) इन्ना
कज़ालि-क नज्ज़िल-मुह्सिनीन (४४) वैलुंय्यौमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (४५)
कुलू व त-मत्तअू क़लीलन् इन्नकुम् मुज्रिमून (४६) वैलुंय्यौमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन
(४७) व इज़ा क़ी-ल लहुमुर-कअू ला यर्-कअून (४८) वैलुंय्यौमइज़िल-
लिलमुकज़्ज़िबीन (४९) फ़-बिअय्यि हदीसिम्-बअ्-दहू युअ्मिनून ★(५०)

تبرک الذی ٢٩ ۴٦٨ المرسلت ٧٧

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾
كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ
مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾
فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمْ
نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ
شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾
اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ
شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ
كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾
هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾
فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ اِنَّ
الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾ كُلُوْا
وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

منزل ٧

★रु. १/२१ आ ४० ★रु. २/२२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिए ख़राबी है। (१५) क्या हम ने पहले लोगों को हलाक नहीं कर डाला ? (१६) फिर इन पिछलों को भी उन के पीछे भेज देते हैं। (१७) हम गुनाहगारों के साथ ऐसा ही करते हैं। (१८) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (१९) क्या हम ने तुम को हक़ीर पानी से नहीं पैदा किया ? (२०) (पहले) उस को एक महफ़ूज़ जगह में रखा, (२१) एक मालूम वक़्त तक, (२२) फिर अन्दाज़ा मुक़र्रर किया और हम क्या ही ख़ूब अन्दाज़ा मुक़र्रर करने वाले हैं। (२३) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (२४) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया ? (२५) (यानी) ज़िंदों और मुर्दों को, (२६) और उस पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ रख दिए और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया, (२७) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (२८) जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे, (अब) उस की तरफ़ चलो, (२९) (यानी) उस साए की तरफ़ चलो, जिस की तीन शाख़ें हैं, (३०) न ठंडी छांव और न लपट से बचाव, (३१) उस से आग की (इतनी-इतनी बड़ी) चिंगारियां उड़ती हैं, जैसे महल, (३२) गोया पीले रंग के ऊंट हैं, (३३) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (३४) यह वह दिन है कि (लोग) लब तक न हिला सकेंगे, (३५) और न उन को इजाज़त दी जाएगी कि उज़्र कर सकें। (३६) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (३७) यही फ़ैसले का दिन है, (जिस में) हम ने तुम को और पहले के लोगों को जमा किया है। (३८) अगर तुम को कोई दांव आता हो तो मुझ से कर चलो। (३९) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४०) ★

बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे। (४१) और मेवों में जो उन को पसन्द हों, (४२) जो अमल तुम करते रहे थे, उन के बदले में मज़े से खाओ और पियो। (४३) हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (४४) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४५) (ऐ झुठलाने वालो !) तुम किसी क़दर खा लो और फ़ायदे उठा लो, तुम बेशक गुनाहगार हो। (४६) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४७) और जब उन से कहा जाता है कि (ख़ुदा के आगे) झुको, तो झुकते नहीं। (४८) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४९) अब इस के बाद ये कौन-सी बात पर ईमान लाएंगे ? (५०)★

★रु. १/२१ आ ४० ★रु. २/२२ आ १०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तीसवां पारः अम्-म य-त-सा-अलून

७८ सूरतुन्नबइ ८०

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ८०१ अक्षर, १७४ शब्द, ४० आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अम्-म य-त-सा-अलून ج (१) अनिन्न-ब-इल्-अज़ीम ۙ (२) अल्लज़ी हुम्
फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून ط (३) कल्ला स-यअ्-लमू-न ۙ (४) सुम्-म कल्ला स-यअ्-लमून
(५) अ-लम् नज्अलिल्-अर्-ज़ मिहादंव्- ۙ (६) वल्जिबा-ल औतादंव्- صلے (७) व
ख़-लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्- ۙ (८) व ज-अल्ना नौमकुम् सुबातंव्- ۙ (९) व ज-अल्-
नल्लै-ल लिबासंव्- ۙ (१०) व ज-अल्नन्नहा-र
मआशंव्- صلے (११) व बनैना फ़ौ-क़कुम् सब्-अन्
शिदादंव्- ۙ (१२) व ज-अल्ना सिराजंव्वह्हा-
जंव्- صلے (१३) व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ्-सिराति
मा-अन् सज्जाजल्- ۙ (१४) लि-नुख़्रि-ज बिही
ह़ब्बंव्-व नबातंव- ۙ (१५) व जन्नातिन् अल्-
फ़ाफ़ा ط (१६) इन्-न यौमलफ़स्लि का-न
मीक़ातंय्- ۙ (१७) यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि
फ़-तअ्-तू-न अफ़्वाजंव्- ۙ (१८) व फ़ुतिह़तिस्-
समाउ फ़-कानत अब्-वाबंव्- ۙ (१९) व सुय्यि-
रतिल-जिबालु फ़-कानत सराबा ط (२०) इन्-न
ज-हन्न-म कानत मिर्-सादल- صلے (२१) लित्ता-
ग़ी-न म-आबल्- ۙ (२२) लाबिसी-न फ़ीहा
अह्-क़ाबा ج (२३) ला यज़ूक़ू-न फ़ीहा बर्दंव्-व
ला शराबन् ۙ (२४) इल्ला ह़मीमंव्-व ग़स्सा-
क़न् ۙ (२५) जज़ाअंव्विफ़ाक़ा ط (२६) इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न हिसाबव्- ۙ (२७)
व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा ط (२८) व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन् ۙ
(२९) फ़ज़ूक़ू फ़-लन् नज़ी-द-कुम् इल्ला अज़ाबा ★ (३०) इन्-न लिल-मुत्तक़ी-न
मफ़ाज़न् ۙ (३१) ह़-दाइ-क़ व अअ्-नाबंव्- ۙ (३२) व कवाअि-ब अत-राबंव्- ۙ
(३३) व कअ्-सन् दिहाक़ा ط (३४) ला यस्-मअू-न फ़ीहा लग़्वंव्-व ला
किज़्ज़ाबा ج (३५) जज़ाअम् - मिर्रब्बि-क अताअन् हिसाबर्- ۙ (३६)

سورة النبإ مكية وهي اربعون اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

عم يتساءلون ۝ عن النبإ العظيم ۝ الذي هم فيه
مختلفون ۝ كلا سيعلمون ۝ ثم كلا سيعلمون ۝ الم نجعل
الارض مهادا ۝ والجبال اوتادا ۝ وخلقناكم ازواجا ۝ وجعلنا
نومكم سباتا ۝ وجعلنا اليل لباسا ۝ وجعلنا النهار معاشا ۝ و
بنينا فوقكم سبعا شدادا ۝ وجعلنا سراجا وهاجا ۝ وانزلنا
من المعصرات ماء ثجاجا ۝ لنخرج به حبا ونباتا ۝ وجنت
الفافا ۝ ان يوم الفصل كان ميقاتا ۝ يوم ينفخ في الصور فتاتون
افواجا ۝ وفتحت السماء فكانت ابوابا ۝ وسيرت الجبال فكانت
سرابا ۝ ان جهنم كانت مرصادا ۝ للطاغين مابا ۝ لبثين فيها
احقابا ۝ لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا ۝ الا حميما وغساقا ۝
جزاء وفاقا ۝ انهم كانوا لا يرجون حسابا ۝ وكذبوا باياتنا
كذابا ۝ وكل شيء احصينه كتبا ۝ فذوقوا فلن نزيدكم الا
عذابا ۝ ان للمتقين مفازا ۝ حدائق واعنابا ۝ وكواعب اترابا ۝
وكاسا دهاقا ۝ لا يسمعون فيها لغوا ولا كذبا ۝ جزاء من ربك
عطاء حسابا ۝ رب السموت والارض وما بينهما الرحمن لا

★रु. १/१ आ ३०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

७८ सूर: नबा ८०

सूर: नबा मक्की है। इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ये) लोग किस चीज़ के बारे में पूछते हैं ? (१) (क्या) बड़ी ख़बर के बारे में ? (२) जिस में ये इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। (३) देखो, ये बहुत जल्द जान लेंगे। (४) फिर देखो, ये बहुत जल्द जान लेंगे। (५) क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया ? (६) और पहाड़ों को (उस की) मेखें (नहीं ठहराया ?) (७) (बेशक बनाया) और तुम को जोड़ा-जोड़ा भी पैदा किया, (८) और नींद को तुम्हारे लिए आराम की (वजह) बनाया, (९) और रात को पर्दा मुक़र्रर किया, (१०) और दिन को रोज़ी (का वक़्त) क़रार दिया, (११) और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आसमान) बनाये, (१२) और (सूरज का) रोशन चिराग़ बनाया, (१३) और निचुड़ते बादलों से मूसलाधार मेंह बरसाया, (१४) ताकि उस से अनाज और सब्ज़ा पैदा करें, (१५) और घने-घने बाग़। (१६) बेशक फ़ैसले का दिन मुक़र्रर है, (१७) जिस दिन सूर फूंका जाएगा, तो तुम लोग गुट के गुट आ मौजूद होगे, (१८) और आसमान खोला जाएगा, तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (१९) और पहाड़ चलाए जाएंगे, तो वे रेत हो कर रह जाएंगे। (२०) बेशक दोज़ख़ घात में है, (२१) (यानी) सर-कशों का वही ठिकाना है। (२२) उस में मुद्दतों पड़े रहेंगे। (२३) वहां न ठंडक का मज़ा चखेंगे, न (कुछ) पीना (नसीब होगा), (२४) मगर गर्म पानी और बहती पीप, (२५) (यह) बदला है पूरा-पूरा। (२६) ये लोग हिसाब (आख़िरत) की उम्मीद नहीं रखते थे। (२७) और हमारी आयतों को झूठ समझ कर झुठलाते रहते थे। (२८) और हम ने हर चीज़ को लिख कर ज़ब्त कर रखा है। (२९) सो (अब) मज़ा चखो। हम तुम पर अज़ाब ही बढ़ाते जाएंगे। (३०)★

बेशक परहेज़गारों के लिए कामियाबी है। (३१) (यानी) बाग़ और अंगूर, (३२) और हम-उम्र नव-जवान औरतें, (३३) और शराब के छलकते हुए गिलास, (३४) वहां न बेहूदा बात सुनेंगे, न झूठ (ख़ुराफ़ात)।[1] (३५) यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बदला है तै इनाम, (३६)

---

१. कोई किसी से झगड़ता नहीं कि उस की बात मुकरावे।

★रु. १/१ आ ३०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमर्रह़्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु ख़िताबा(३७) यौ-म यक़ूमुर्रूह़ु वलमला-इकतु सफ़्फ़ल्-ला य-त-कल्लमू-न इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह़्मानु व क़ा-ल सवाबा (३८) ज़ालिकल-यौमुल्ह़क़्क़ु फ़-मन् शा-अत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही मआबा (३९) इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अज़ाबन् क़रीबंय्-यौ-म यन्ज़ुरुल्-मर्उ मा क़द्-द-मत यदाहु व यक़ूलुल-काफ़िरु यालैतनी कुन्तु तुराबा ★ (४०)

७९ सूरतुन्-नाज़िआति ८१

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७६१ अक्षर, १८१ शब्द, ४६ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वन्नाज़िआति ग़र्क़ंव्-(१) वन्नाशि-ताति नश्तंव्-(२) वस्साबिह़ाति सब्ह़न्(३) फ़स्साबिक़ाति सब्क़न्(४) फ़लमुदब्बि-राति अम्रा(५) यौ-म तर्जुफ़ुर्राजिफ़तु(६) तत्बअुहर-रादिफ़ः(७) क़ुलूबुंय्यौम-इज़िंव्वाजिफ़तुन्(८) अब्सारुहा ख़ाशिअः(९) यक़ूलू-न अ इन्ना ल-मर्दूदू-न फ़िल्-ह़ाफ़िरः(१०) अ इज़ा कुन्ना अिज़ामन् नख़िरः(११) क़ालू तिल्-क इज़न् कर्रतुन् ख़ासिरः(१२) फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्वाह़िदतुन्(१३) फ़-इज़ा हुम् बिस्साहिरः(१४) हल् अता-क ह़दीसु मूसा(१५) इज़् नादाहु रब्बुहू बिलवादिल-मुक़द्दसि तुवा(१६) इज़्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा(१७) फ़क़ुल् हल् ल-क इला अन् त-ज़क्का(१८) व अह्दि-य-क इला रब्बि-क फ़-तख़्शा(१९) फ़-अराहुल-आ-य-तल-कुब्रा(२०) फ़-कज़्ज़-ब व अ़सा(२१) सुम्-म अद्-ब-र यस्आ(२२) फ़-ह़-श-र फ़नादा(२३) फ़क़ा-ल अ-न रब्बुकुमुल-अअ्-ला(२४) फ़-अ-ख़-ज़हुल्लाहु नकालल्-आख़िरति वल्ऊला(२५) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अिब्रतल-लिमंय्यख़्शा ★ (२६) अ अन्तुम् अशद्दु ख़ल् - क़न् अमिस्समाउ बनाहा (२७)

يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا
يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝ ذٰلِكَ الْيَوْمُ
الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝ إِنَّآ أَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا
يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِي كُنْتُ تُرٰبًا ۝
سُورَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّأَرْبَعُونَ اٰيَةً وَّفِيهَا رُكُوعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝ فَالسّٰبِقٰتِ
سَبْقًا ۝ فَالْمُدَبِّرٰتِ أَمْرًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝
قُلُوبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝ أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝ يَقُولُونَ ءَإِنَّا
لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ۝ ءَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝ قَالُوا تِلْكَ
إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝
هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ مُوسٰى ۝ إِذْ نَادٰىهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ
طُوًى ۝ اذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغٰى ۝ فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلٰٓى
أَنْ تَزَكّٰى ۝ وَأَهْدِيَكَ إِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝ فَأَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۝
فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعٰى ۝ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۝ فَقَالَ أَنَا
رَبُّكُمُ الْأَعْلٰى ۝ فَأَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْأُولٰى ۝ إِنَّ فِي
ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَآءُ

★रु. २/२ आ १० ▨ व. लाज़िम ▨ व. लाज़िम ▨ व. लाज़िम ▨ व. लाज़िम ★रु. १/३ आ २६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वह जो आसमानों और ज़मीन और जो उन दोनों में है, सब का मालिक है, बड़ा मेहरबान, किसी को उस से बात करने का यारा न होगा। (३७) जिस दिन रूहुल अमीन और (और) फ़रिश्ते सफ़ बांध कर खड़े हों, तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिस को (ख़ुदा-ए-) रहमान इजाज़त बख़्शे और उस ने बात भी दुरुस्त कही हो। (३८) यह दिन बर-हक़ है। पस जो शख़्स चाहे अपने परवरदिगार के पास ठिकाना बना ले। (३९) हम ने तुम को अज़ाब से, जो बहुत जल्द आने वाला है, आगाह कर दिया है। जिस दिन हर शख़्स उन (आमाल) को जो उन से आगे भेजे होंगे, देख लेगा और काफ़िर कहेगा कि ऐ काश ! मैं मिट्टी होता। (४०) ★

८१ सूरः नाज़िआत ७९

सूरः नाज़िआत मक्की है। इस में छियालीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन (फ़रिश्तों) की क़सम, जो डूब कर खींच लेते हैं, (१) और उन की जो आसानी से खोल देते हैं, (२) और उन की जो तैरते-फिरते हैं, (३) फिर लपक कर आगे बढ़ते हैं, (४) फिर (दुनिया के) कामों का इन्तिज़ाम करते हैं[1] (५) (कि वह दिन आ कर रहेगा), जिस दिन ज़मीन को भोंचाल आएगा, (६) फिर उस के पीछे और (भोंचाल) आएगा, (७) उस दिन (लोगों के) दिल डर रहे होंगे। (८) (और) आंखें झुकी हुई (९) काफ़िर कहते हैं, क्या हम उलटे पांव फिर लौटेंगे ? (१०) भला जब हम खोखली हड्डियां हो जाएंगे, (तो फिर ज़िंदा किए जाएंगे)। (११) कहते हैं कि यह लौटना तो नुक़्सान (की वजह) है (१२) वह तो सिर्फ़ एक डांट होगी। (१३) उस वक़्त वे (सब हश्र के) मैदान में जमा होंगे। (१४) भला तुम को मूसा की हिकायत पहुंची है, (१५) जब उन के परवरदिगार ने उन को पाक मैदान (यानी) तुवा में पुकारा, (१६) (और हुक्म दिया) कि फ़िरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है, (१७) और (उस से) कहो, क्या तू चाहता है कि पाक हो जाए, (१८) और मैं तुझे तेरे परवरदिगार का रास्ता बताऊं, ताकि तुझ को ख़ौफ़ (पैदा) हो। (१९) ग़रज़ उन्हों ने उस को बड़ी निशानी दिखायी, (२०) मगर उस ने झुठलाया और न माना, (२१) फिर लौट गया और तद्बीरें करने लगा, (२२) और (लोगों को) इकट्ठा किया और पुकारा, (२३) कहने लगा कि तुम्हारा सब से बड़ा मालिक मैं हूं। (२४) तो ख़ुदा ने उस को दुनिया और आख़िरत (दोनों) के अज़ाब में पकड़ लिया। (२५) जो शख़्स (ख़ुदा से) डर रखता है, उस के लिए इस (क़िस्से) में इब्रत है। (२६) ★

भला तुम्हारा बनाना मुश्किल है या आसमान का ? उसी ने उस को बनाया, (२७) उस की

---

१. जिन चीज़ों की यह ख़ूबियां बयान की गयी हैं, उन के बारे में आम राय यही है कि वे फ़रिश्ते हैं, इसी लिए तर्जुमे में हम ने फ़रिश्तों का लफ़्ज़ बढ़ा दिया है। डूब कर खींचने से मुराद रूहों का खींचना है। किसी की रूह को मुश्किल से निकालते हैं और किसी की रूह को आसानी से गोया बन्द खोल देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

र-फ़-अ़ सम्कहा फ़-सव्वाहा (२८) व अग़त़-श लैलहा व अख़्र-ज ज़ुहाहा (२९)
वल्अर्-ज़ बअ्-द ज़ालि-क दहाहा (३०) अख़्-र-ज मिन्हा मा-अहा व मर्आ़हा
(३१) वल्जिबा-ल अर्साहा (३२) मताअ़ल्-लकुम् व लि-अन्आ़मिकुम् (३३)
फ़-इज़ा जा-अतित्-ताम्मतुल-कुब्रा (३४) यौ-म य-त-जक्करुल् इन्सानु मा सआ़
(३५) व बुर्रिज़तिल-जह़ीमु लिमंय्यरा
(३६) फ़-अम्मा मन् त़ग़ा (३७) व
आ-स-रल्-ह़यातद्दुन्या (३८) फ़-इन्नल्-
जह़ी-म हियल्-मअ्वा (३९) व अम्मा मन्
ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही व नहन्नफ़्-स अ़निल्-
हवा (४०) फ़-इन्नल-जन्न-त हि-यल्-
मअ्वा (४१) यस्-अलू-न-क अ़निस्साअ़ति
अय्या-न मुर्साहा (४२) फ़ी-म अन्-त
मिन् ज़िक्-राहा (४३) इला रब्बि-क
मुन्तहाहा(४४) इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरु मंय्यख़्-
शाहा(४५) क-अन्नहुम् यौ-म यरौनहा लम्
यल्बसू इल्ला अ़शिय्य-तन् औ ज़ुहाहा★(४६)

بنها ۝ رفع سمكها فسوىها ۝ واغطش ليلها واخرج ضحىها ۝
والارض بعد ذلك دحىها ۝ اخرج منها ماءها ومرعىها ۝ و
الجبال ارسىها ۝ متاعا لكم ولانعامكم ۝ فاذا جاءت الطامة
الكبرى ۝ يوم يتذكر الانسان ما سعى ۝ وبرزت الجحيم لمن
يرى ۝ فاما من طغى ۝ واثر الحيوة الدنيا ۝ فان الجحيم هي
الماوى ۝ واما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى ۝
فان الجنة هي الماوى ۝ يسئلونك عن الساعة ايان مرسىها ۝ فيم
انت من ذكرىها ۝ الى ربك منتهىها ۝ انما انت منذر من يخشىها ۝
كانهم يوم يرونها لم يلبثوا الا عشية او ضحىها ۝
سورة عبس مكية وهي اثنتان واربعون اية وفيها ركوع واحد
بسم الله الرحمن الرحيم
عبس وتولى ۝ ان جاءه الاعمى ۝ وما يدريك لعله يزكى ۝ او
يذكر فتنفعه الذكرى ۝ اما من استغنى ۝ فانت له
تصدى ۝ وما عليك الا يزكى ۝ واما من جاءك يسعى ۝ و
هو يخشى ۝ فانت عنه تلهى ۝ كلا انها تذكرة ۝ فمن شاء
ذكره ۝ في صحف مكرمة ۝ مرفوعة مطهرة ۝ بايدي
سفرة ۝ كرام بررة ۝ قتل الانسان ما اكفره ۝ من اي

८० सूरतु अ़-ब-स २४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ५५३ अक्षर, ११३ शब्द, ४२ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अ़-ब-स व त-वल्ला (१) अन् जा-अहुल-अअ्-मा (२) व मा युद्-री-क
ल-अ़ल्लहू यज़्ज़क्का (३) औ यज़्ज़क्करु फ़-तन्फ़-अ़-हुज़्ज़िक्रा (४) अम्मा
मनिस्तग़्ना (५) फ़-अन्-त लहू त-सद्दा (६) व मा अ़लै-क अल्ला य-ज़्ज़क्का
(७) व अम्मा मन् जा-अ-क यस्-आ (८) व हु-व यख़्शा (९) फ़-अन्-त
अ़न्हु त-लह्हा (१०) कल्ला इन्नहा तज़्कि-रतुन् (११) फ़-मन् शा-अ ज़-क-
रः ▨ (१२) फ़ी सुहुफ़िम्-मुकर्रमतिम्- (१३) मर्फ़ूअ़तिम्-मुतह-ह-रतिम्
(१४) बिऐदी सफ़्-रतिन् (१५) किरामिम् - ब-र-रः (१६)
क़ुतिलल-इन्सानु मा अक्फ़रः (१७) मिन् अय्यि शैइन् ख़-ल-क़ः (१८)

★रु. २/४ आ २० ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छत को ऊंचा किया, फिर उसे बराबर कर दिया, (२८) और उसी ने रात अंधेरी बनायी और (दिन को) धूप निकाली, (२९) और उस के बाद ज़मीन को फैला दिया, (३०) उसी ने इस में से इस का पानी निकाला और चारा उगाया, (३१) और उस पर पहाड़ों का बोझ रख दिया। (३२) यह सब कुछ तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए (किया)। (३३) तो जब बड़ी आफ़त आएगी, (३४) उस दिन इंसान अपने कामों को याद करेगा, (३५) और दोज़ख़ देखने वाले के सामने निकाल कर रख दी जाएगी, (३६) तो जिस ने सरकशी की, (३७) और दुनिया की ज़िंदगी को मुक़द्दम समझा, (३८) उस का ठिकाना दोज़ख़ है। (३९) और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता और जी को ख़्वाहिशों से रोकता रहा, (४०) उस का ठिकाना बहिश्त है। (४१) (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब वाक़ेअ होगी ? (४२) सो तुम उस के ज़िक्र से किस फ़िक्र में हो ? (४३) उस का मुन्तहा (यानी वाक़ेअ होने का वक़्त) तुम्हारे परवरदिगार ही को (मालूम है)[1] (४४) जो शख़्स उस से डर रखता है, तुम तो उसी को डर सुनाने वाले हो। (४५) जब वे उस को देखेंगे, (तो ऐसा ख़्याल करेंगे) कि गोया (दुनिया में सिर्फ़) एक शाम या सुबह रहे थे। (४६)★

८० सूरः अ-ब-स २४

सूरः अ-ब-स मक्की है। इस में ४२ आयतें और एक रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(मुहम्मद मुस्तफ़ा) तुर्शरू हुए और मुंह फेर बैठे, (१) कि उन के पास एक अंधा आया, (२) और तुम को क्या ख़बर, शायद वह पाकी हासिल करता, (३) या सोचता तो समझाना उसे फ़ायदा देता। (४) जो परवाह नहीं करता, (५) उस की तरफ़ तो तवज्जोह करते हो, (६) हालांकि अगर वह न संवरे, तो तुम पर कुछ (इल्ज़ाम) नहीं, (७) और जो तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आया, (८) और (ख़ुदा से) डरता है, (९) उस से तुम बे-रुख़ी करते हो,[2] (१०) देखो यह (क़ुरआन) नसीहत है, (११) पस जो चाहे, उसे याद रखे (१२) अदब के क़ाबिल पन्नों में (लिखा हुआ), (१३) जो बुलन्द मक़ाम पर रखे हुए (और) पाक हैं, (१४) (ऐसे) लिखने वालों के हाथों में, (१५) जो सरदार और नेक हैं, (१६) इंसान हलाक हो जाए, कैसा ना-शुक्रा है (१७) उसे

---

१. पूछते-पूछते इसी तक पहुंचता है, बीच में सब बे-ख़बर हैं।

२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उत्बा बिन रबीआ और अबू जह्ल बिन हिशाम और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से बड़ी तवज्जोह से बातें कर रहे थे, क्योंकि आप दिल से चाहते थे कि वे इस्लाम ले आएं। इतने में अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम, जो आंखों से मजबूर थे, आए और हज़रत से कहने लगे कि मुझ को क़ुरआन सुनाइए और जो कुछ ख़ुदा ने आप को सिखाया है, वह मुझे सिखाइए ? आप ने इस हालत में उन की बात को पसन्द न फ़रमाया और पेशानी पर बल ला कर उस की तरफ़ से मुंह फेर लिया। इस पर ये आयतें नाज़िल हुयीं।

★रु. २/४ आ २० व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मिन् नुत्-फ़तिन्ь ख़-ल-क़हू फ़-क़द्-द-रहू ॥ (१९) सुम्मस्सबी-ल यस्स-रहू ॥ (२०)
सुम्-म अमातहू फ़-अक़्ब-रहू ॥ (२१) सुम्-म इज़ा शा-अ अन्शरः ь (२२) कल्ला
लम्मा यक़्ज़ि मा अ-म-रः ь (२३) फ़ल्-यन्ज़ुरिल-इन्सानु इला तआमिही ॥ (२४)
अन्ना स-बब्नल-मा-अ सब्बन् ॥ (२५) सुम्-म श-क़क़्नल्अर-ज़ शक़्क़न् ॥ (२६)
फ़-अम्बत्ना फ़ीहा हब्बंव्- ॥ (२७) व अि-न-
बंव्-व क़ज़्बंव्- ॥ (२८) व ज़ैतूनंव्-व नख़्लंव्-
(२९) व हदाइ-क़ ग़ुल्बंव्- ॥ (३०) व
फ़ाकिहतंव्-व अब्बम्- ॥ (३१) मताअल्-लकुम्
व लि-अन्आमिकुम् ь (३२) फ़-इज़ा जा-अति-
स्साख़्ख़ः ┘ (३३) यौ-म यफ़िर्रुल-मरउ मिन्
अख़ीहि ॥ (३४) व उम्मिही व अबीहि ॥ (३५)
व साहिबतिही व बनीह ь (३६) लि-कुल्लिम्-
रिइम्-मिन्हुम् यौमइजिन् शअनुंय्युग़्नीह ь (३७)
वुजूहुंय्यौमइजिम्-मुस्फ़ि-र-तुन् ॥ (३८) ज़ाहि-
कतुम्-मुस्तब्शि-रतुन् ७ (३९) व वुजूहुंय्यौमइजिन्
अलैहा ग़-ब-रतुन् (४०) तर्हक़ुहा क़-त-रः ь (४१)
उलाइ-क हुमुल्-क-फ़-रतुल्-फ़-ज-रः ★ (४२)

عم ٣٠ ٤٧٢ التكوير ٨١

شَيْءٍ خَلَقَهُ ﴿١٨﴾ مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ﴿٢٠﴾
ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ﴿٢١﴾ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا
أَمَرَهُ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ﴿٢٤﴾ أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾
ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَ
زَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ﴿٣١﴾ مَتَاعًا لَكُمْ
وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾
وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ
شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾
سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿٣﴾
وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾ وَإِذَا الْبِحَارُ
سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾ وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِأَيِّ
ذَنْبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَ
إِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا
أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا

منزل ٧

८१ सूरतुत्-तक्वीरि ७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४३६ अक्षर, १०४ शब्द, २९ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़श्शम्सु कुव्विरत् (१) व इज़न्नुजूमुन-क-द-रत् (२) व इज़ल-जिबालु
सुय्यिरत् (३) व इज़ल्अिशारु अुत्तिलत् (४) व इज़ल्वुहूशु हुशिरत् (५) व
इज़ल्बिहारु सुज्जिरत् (६) व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् (७) व इज़ल्मौऊदतु सुइ-
लत् (८) बिअय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् ь (९) व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत् (१०) व
इज़स्समाउ कुशितत् (११) व इज़ल - जहीमु सुअ्-अिरत् (१२)
व इज़ल्जन्नतु उज़्लिफ़त (१३) अलिमत नफ़्सुम्मा अह् - ज़ - रतь
(१४) फ़ला उक़्सिमु बिल्ख़ुन्नसिल्- ॥ (१५) जवारिल्-कुन्नस ॥ (१६)

★रु. १/५ आ ४२

(ख़ुदा ने) किस चीज़ से बनाया? (१८) नुत्फ़े से बनाया, फिर उस का अन्दाज़ा मुक़र्रर किया, (१९) फिर उस के लिए रास्ता आसान कर दिया, (२०) फिर उस को मौत दी, फिर क़ब्र में दफ़्न कराया, (२१) फिर जब चाहेगा, उसे उठा खड़ा करेगा। (२२) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ने उसे जो हुक्म दिया, उस ने उस पर अमल न किया, (२३) तो इंसान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ़ नज़र करे। (२४) बेशक हम ही ने पानी बरसाया, (२५) फिर हम ही ने ज़मीन को चीरा-फाड़ा। (२६) फिर हम ही ने उसमें अनाज उगाया, (२७) और अंगूर और तरकारी, (२८) और ज़ैतून और खजूरें, (२९) और घने-घने बाग़, (३०) और मेवे और चारा, (३१) (यह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के लिए बनाया, (३२) तो जब (क़ियामत का) ग़ुल मचेगा, (३३) उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा, (३४) और अपनी मां और अपने बाप से, (३५) और अपनी बीवी और अपने बेटे से, (३६) हर आदमी उस दिन एक फ़िक्र में होगा, जो उसे (मस्रूफ़ियत के लिए) बस करेगा, (३७) और कितने मुंह उस दिन चमक रहे होंगे, (३८) हंसते और खिले हुए चेहरे (ये नेक लोग हैं), (३९) और कितने मुंह होंगे, जिन पर धूल पड़ रही होगी, (४०) (और) स्याही चढ़ रही होगी, (४१) ये कुफ़्फ़ार बद-किरदार हैं (४२)★



८१ सूरः तक्वीर ७

सूरः तक्वीर मक्की है और इस में २९ आयतें हैं। और १ रुकूअ् है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट लिया जाएगा, (१) और जब तारे बे-नूर हो जाएंगे, (२) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (३) और जब ब्याने वाली ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी, (४) और जब वह्शी जानवर जमा किए जाएंगे, (५) और जब दरिया आग हो जाएंगे, (६) और जब रूहें (बदनों से) मिला दी जाएंगी। (७) और जब उस लड़की से जो ज़िंदा दफ़्न की गयी हो, पूछा जाएगा, (८) कि वह किस गुनाह पर मार दी गयी? (९) और जब (अमलों के) दफ़्तर खोले जाएंगे, (१०) और जब आसमान की खाल खींच ली जाएगी, (११) और जब दोज़ख़ (की आग) भड़कायी जाएगी, (१२) और बहिश्त जब क़रीब लायी जाएगी, (१३) तब हर शख़्स मालूम कर लेगा कि वह क्या ले कर आया है। (१४) हम को उन सितारों की क़सम जो पीछे हट जाते हैं, (१५) और

★रु. १/५ आ ४२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल्लैलि इज़ा अस्-अस॒ (१७) वस्सुब्हि इज़ा त-नफ़्फ़स॒ (१८) इन्नहू लक़ौलु
रसूलिन् करीमिन् (१९) ज़ी क़ुव्वतिन् अ़िन-द ज़िल्अ़र्शि मकीनिम्- (२०)
मुताअ़िन् सम्-म अमीन (२१) व मा साहिबुकुम् बिमज्नून (२२) व ल-क़द्
रआहु बिल्उफ़ुक़िल्-मुबीन (२३) व मा हु-व अ़लल्ग़ैबि बिज़नीन (२४) व मा
हु-व बिक़ौलि शैतानिर्रजीम (२५) फ़-ऐ-न
तज़्हबून (२६) इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल-
लिल्आ़लमीन (२७) लिमन् शा-अ मिन्कुम्
अंय्यस्तक़ीम (२८) व मा तशाऊ-न इल्ला
अंय्यशाअल्लाहु रब्बुल-आ़लमीन ★ (२९)

८२ सूरतुल्-इन्फ़ितारि ८२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३३४ अक्षर, ८० शब्द, १९ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इज़स्समाउन्फ़-त-रत (१) व इज़ल-
कवाकिबुन्-त-स-रत् (२) व इज़ल्बिहारु
फ़ुज्जिरत् (३) व इज़ल्क़ुबूरु बुअ्-सिरत् (४)

الانفطار ٨٢ ٤٧٣ عم ٣٠

عَسْعَسَ ﴿١٧﴾ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾
ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾ وَمَا
صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿٢٣﴾ وَمَا هُوَ عَلَى
الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ﴿٢٥﴾ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا
تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

سُورَةُ الْانْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْبِحَارُ
فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَ
أَخَّرَتْ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿٦﴾ الَّذِي خَلَقَكَ
فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ
تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ﴿٩﴾ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا كَاتِبِينَ ﴿١١﴾
يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ الْفُجَّارَ
لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾
وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ
لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

अ़लिमत नफ़्सुम्मा क़द्-द-मत् व अख़्ख़-रत् (५) या अय्युहल-इन्सानु मा ग़र्-र-क
बिरब्बिकल-करीम (६) अ्ल्लज़ी ख़-ल-क़-क फ़-सव्वा-क फ़-अ्-द-लक (७) फ़ी
अय्यि सूरतिम्-मा शा-अ रक्क-बक (८) कल्ला बल् तुकज़्ज़िबू-न बिद्दीनि (९) व
इन्-न अ़लैकुम् लहाफ़िज़ीन (१०) किरामन् कातिबीन (११) यअ्-लमू-न मा
तफ़्-अ़लून (१२) इन्नल-अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम (१३) व इन्नलफ़ुज्जा-र लफ़ी
जहीमिंय् (१४)-यस्लौनहा यौमद्दीन (१५) व मा हुम् अ़न्हा बिग़ाइबीन (१६)
व मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (१७) सुम्-म मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (१८) यौ-म
ला तम्लिकु नफ़्सुल-लिनफ़्सिन् शैअन् वल्अम्रु यौमइज़िल-लिल्लाह ★ (१९) ●

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो सैर करते और ग़ायब हो जाते हैं, (१६) और रात की क़सम, जब ख़त्म होने लगती है, (१७) और सुबह की क़सम जब नमूदार होती है, (१८) कि बेशक यह (क़ुरआन) बुलंद दर्जा फ़रिश्ते की ज़ुबान का पैग़ाम है, (१९) जो ताक़त वाला, अर्श के मालिक के यहां ऊंचे दर्जे वाला, (२०) सरदार (और) अमानतदार है। (२१) और (मक्के वालो!) तुम्हारे रफ़ीक़ (यानी मुहम्मद) दीवाने नहीं है। (२२) बेशक उन्होंने इस (फ़रिश्ते) को (आसमान के) खुले (यानी पूर्वी) किनारे पर देखा है, (२३) और वह छिपी बातों (के ज़ाहिर करने) में बख़ील नहीं, (२४) और यह शैतान मर्दूद का कलाम नहीं। (२५) फिर तुम किधर जा रहे हो? (२६) यह तो जहान के लोगों के लिए नसीहत है, (२७) (यानी) उस के लिए जो तुम में से सीधी चाल चलना चाहे, (२८) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर वही जो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन चाहे। (२९)★



८२ सूरः इन्फ़ितार ८२

सूरः इन्फ़ितार मक्की है। इस में १९ आयतें हैं। और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और जब तारे झड़ पड़ेंगे, (२) और जब दरिया बह (कर एक दूसरे से मिल) जाएंगे, (३) और जब क़ब्रें उखेड़ दी जाएगी, (४) तब हर शख़्स मालूम कर लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा था और पीछे क्या छोड़ा था? (५) ऐ इंसान! तुझ को अपने परवरदिगारे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोखा दिया? (६) (वही तो है) जिस ने तुझे बनाया और (तेरे अंगों को) ठीक किया और (तेरी क़ामत को) एतदाल में रखा, (७) और जिस सूरत में चाहा, तुझे जोड़ दिया, (८) मगर हैरत (अफ़सोस!) तुम लोग बदले को झुठलाते हो, (९) हालांकि तुम पर निगहबान मुक़र्रर हैं, (१०) बुलंद मर्तबा, (तुम्हारी बातों के) लिखने वाले, (११) जो तुम करते हो, वे उसे जानते हैं, (१२) बेशक नेक लोग नेमतों (की) बहिश्त में होंगे। (१३) और बुरे दोज़ख़ में, (१४) (यानी) बदले के दिन उस में दाख़िल होंगे, (१५) और उस से छिप नहीं सकेंगे, (१६) और तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है? (१७) फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है? (१८) जिस दिन कोई किसी का कुछ भला न कर सकेगा और हुक्म उस दिन ख़ुदा ही का होगा। (१९)★●

★रु. १/६ आ २९ ★रु. १/७ आ १९ ●रुबअ़ १/४

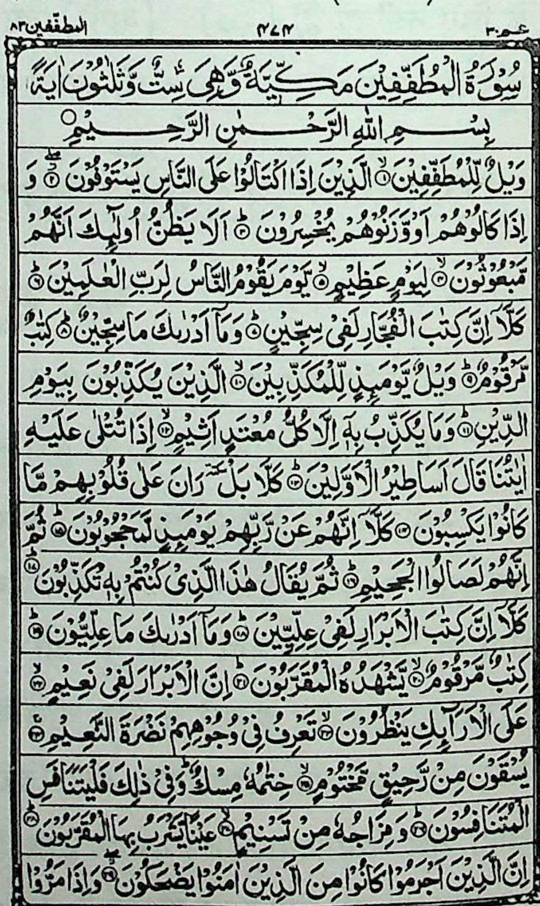
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८३ सूरतुल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन ८६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७५८ अक्षर, १७२ शब्द, ३६ आयतें और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वैलुल् - लिल्मुत़फ़्फ़िफ़ीन(१) अल्लज़ी-न इज़क्तालू अ़लन्नासि यस्तौफ़ून (२) व इज़ा कालू-हुम् अव्व-ज़नूहुम् युख़्सिरून(३) अला यज़ुन्नु उलाइ-क अन्नहुम् मब्अ़ूसून(४) लियौमिन् अ़ज़ीम(५) यौ-म यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल् - आ़लमीन(६) कल्ला इन्-न किताबल्-फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन(७) व मा अद्रा-क मा सिज्जीन(८) किताबुम्-मर्क़ूम (९) वैलुंय्यौ-म - इज़िल्लिल्-मुकज़्ज़िबीन(१०) अल्लज़ी-न युकज़्ज़िबू-न बियौमिद्दीन (११) व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मुअ़्-तदिन् असीम(१२) इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा-ल असात़ीरुल्-अव्वलीन (१३) कल्ला बल् रा-न अ़ला क़ुलूबिहिम् मा कानू यक्सिबून (१४) कल्ला इन्नहुम् अ़र्रब्बिहिम् यौमइज़िल्-ल-मह़्जूबून(१५) सुम्-म इन्नहुम् लसालुल्-जह़ीम(१६) सुम्-म युक़ालु हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून(१७) कल्ला इन्-न किताबल्-अब्रारि लफ़ी अ़िल्लिय्यीन (१८) व मा अद्रा-क मा अ़िल्लिय्यून(१९) किताबुम् - मर्क़ूमुंय् - (२०) यश्हदुहुल् - मुक़र्रबून(२१) इन्नल् - अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम(२२) अ़लल् - अराइकि यन्ज़ुरून(२३) तअ़् - रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नज़्-र-तन्नअ़ीम(२४) युस्क़ौ-न मिर्रह़ीक़िम् - मख़्तूम (२५) ख़ितामुहू मिस्क व फ़ी ज़ालि-क फ़ल् - य-त-नाफ़सिल्-मु-त-नाफ़िसून(२६) व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीम(२७) अ़ैनंय्यश्रबु बिहल् - मुक़र्रबून(२८) इन्नल्लज़ी-न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी-न आमनू यज़्-ह़कून(२९)


الجزء ٣٠ ٧٤٢ المطففين ٨٣

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۝ وَ اِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۝ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۚ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ۝ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَاِذَا مَرُّوْا

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८३ सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन ८६

सूरः तत्फ़ीफ़ मक्की है, इस में ३६ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नाप और तौल में कमी करने वालों के लिए ख़राबी है, (१) जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें, (२) और जब उन को नाप कर या तौल कर दें तो कम दें, (३) क्या ये लोग नहीं जानते कि उठाए भी जाएंगे, (४) (यानी) एक बड़े (सख़्त) दिन में, (५) जिस दिन (तमाम) लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। (६) सुन रखो कि बद-कारों के आमाल सिज्जीन में हैं, (७) और तुम क्या जानते हो, कि सिज्जीन क्या चीज़ है? (८) एक दफ़्तर है लिखा हुआ। (९) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है, (१०) (यानी) जो इंसाफ़ के दिन को झुठलाते हैं, (११) और उस को झुठलाता वही है जो हद से निकल जाने वाला गुनाहगार है। (१२) जब उस को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं, तो कहता है, यह तो अगले लोगों की कहानियां हैं। (१३) देखो, ये जो (बुरे आमाल) करते हैं, उन का उन के दिलों पर ज़ंग बैठ गया है, (१४) बेशक ये लोग उस दिन अपने परवरदिगार (के दीदार) से ओट में होंगे, (१५) फिर दोज़ख़ में जा दाख़िल होंगे, (१६) फिर उन से कहा जाएगा कि यह वही चीज़ है जिस को तुम झुठलाते थे। (१७) (यह भी) सुन रखो कि नेकों के आमाल इल्लीयीन में है, (१८) और तुम को क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या चीज़ है? (१९) एक दफ़्तर है लिखा हुआ, (२०) जिस के पास मुक़र्रब (फ़रिश्ते) हाज़िर रहते हैं। (२१) बेशक नेक लोग चैन में होंगे, (२२) तख़्तों पर बैठे हुए नज़ारे करेंगे, (२३) तुम उन के चेहरों ही से राहत की ताज़गी मालूम कर लोगे, (२४) उन को ख़ालिस शराब मुहरबन्द पिलाई जाएगी, (२५) (२६) जिस की मुहर मुश्क की होगी, तो (नेमतों का) शौक़ रखने वालों को चाहिए कि उसी का चाव करें। (२६) और इस में तस्नीम (के पानी) की मिलावट होगी। (२७) वह एक चश्मा है, जिस में से (ख़ुदा के) मुक़र्रब पिएंगे, (२८) जो गुनहगार (यानी कुफ़्फ़ार) हैं, वे (दुनिया में) मोमिनों से हंसी किया करते थे। (२९) और जब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व इज़ा मर्रूबिहिम् य-त-ग़ा-मज़ून (३०) व इज़न्क़लबू इला अह्लिहिमुन्क़-लबू
फ़किहीन (३१) व इज़ा रऔहुम् क़ालू इन्-न हाउलाइ लज़ाल्लून (३२) व
मा उर्सिलू अ़लैहिम् हाफ़िज़ीन (३३) फ़ल-यौमल्लज़ी-न आमनू मिनल्-कुफ़्फ़ारि
यज़्-हकून (३४) अ़लल् - अराइ-कि यन्ज़ुरून (३५) हल् सुव्विबल्-
कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्-अ़लून ★ (३६)

الانشقاق ٨٤   ٤٧٥   عمّ ٣٠

بهم يتغامزون ﴿٣٠﴾ وإذا انقلبوا إلى أهلهم انقلبوا فكهين ﴿٣١﴾ وإذا
رأوهم قالوا إن هؤلاء لضالون ﴿٣٢﴾ وما أرسلوا عليهم حفظين ﴿٣٣﴾
فاليوم الذين آمنوا من الكفار يضحكون ﴿٣٤﴾ على الأرائك ينظرون ﴿٣٥﴾
هل ثوب الكفار ما كانوا يفعلون ﴿٣٦﴾

سورة الانشقاق مكية وهي خمس وعشرون آية

بسم الله الرحمن الرحيم

إذا السماء انشقت ﴿١﴾ وأذنت لربها وحقت ﴿٢﴾ وإذا الأرض
مدت ﴿٣﴾ وألقت ما فيها وتخلت ﴿٤﴾ وأذنت لربها وحقت ﴿٥﴾ يأيها
الإنسان إنك كادح إلى ربك كدحا فملقيه ﴿٦﴾ فأما من أوتي
كتبه بيمينه ﴿٧﴾ فسوف يحاسب حسابا يسيرا ﴿٨﴾ وينقلب إلى
أهله مسرورا ﴿٩﴾ وأما من أوتي كتبه وراء ظهره ﴿١٠﴾ فسوف يدعوا
ثبورا ﴿١١﴾ ويصلى سعيرا ﴿١٢﴾ إنه كان في أهله مسرورا ﴿١٣﴾ إنه ظن
أن لن يحور ﴿١٤﴾ بلى إن ربه كان به بصيرا ﴿١٥﴾ فلا أقسم
بالشفق ﴿١٦﴾ والليل وما وسق ﴿١٧﴾ والقمر إذا اتسق ﴿١٨﴾ لتركبن طبقا عن
طبق ﴿١٩﴾ فما لهم لا يؤمنون ﴿٢٠﴾ وإذا قرئ عليهم القرآن لا يسجدون ﴿٢١﴾
بل الذين كفروا يكذبون ﴿٢٢﴾ والله أعلم بما يوعون ﴿٢٣﴾ فبشرهم
بعذاب أليم ﴿٢٤﴾ إلا الذين آمنوا وعملوا الصلحت لهم أجر غير ممنون ﴿٢٥﴾

منزل ٧

८४ सूरतुल्-इन्शिक़ाक़ि ८३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४४८ अक्षर,
१०८ शब्द, २५ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़स्समाउन्शक़्क़त् (१) व अज़िनत
लिरब्बिहा व हुक़्क़त (२) व इज़लअर्ज़ु
मुद्दत् (३) व अल्क़त मा फ़ीहा व त-ख़ल्-
लत (४) व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त
(५) या अय्युहल-इन्सानु इन्न-क कादिहुन्
इला रब्बि-क कद्हन् फ़मुलाक़ीहि (६)
फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही
(७) फ़सौ-फ़ युहासबु हिसाबंय्यसीरा (८)
व यन्क़लिबु इला अह्लिही मस्रूरा (९) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू वरा-अ
ज़ह्रिही (१०) फ़सौ-फ़ यद्अू सुबूरा (११) व यस्ला सअ़ीरा (१२) इन्नहू
का-न फ़ी अह्लिही मस्रूरा (१३) इन्नहू ज़न्-न अल्लंय्यहू-र (१४) बला
इन्-न रब्बहू का-न बिही बसीरा (१५) फ़ला उक़्सिमु बिश्शफ़क़ि (१६) वल्-
लैलि व मा व-स-क़ (१७) वल्क़-मरि इज़त्त-स-क़ (१८) ल-तर्कबुन्-न त़-ब-
क़न् अ़न् त़-बक़ (१९) फ़मा लहुम् ला युअ्मिनून (२०) व इज़ा क़ुरि-अ
अ़लैहिमुल-क़ुर्आनु ला यस्जुदून □ (२१) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू युकज़्ज़िबून (२२) वल्लाहु
अअ्-लमु बिमा यूअून (२३) फ़-बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम (२४) इल्-
लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून ★ (२५)

★ रु. १/८ आ ३६ □ सज्दः १३ ★ रु. १/९ आ २५ ∴ मु. अ़ि मु. ता ख़. १७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन के पास से गुज़रते, तो हिक़ारत से इशारे करते, (३०) और जब अपने घर को लौटते, तो इतराते हुए लौटते, (३१) और जब उन (मोमिनों) को देखते तो कहते कि ये तो गुमराह हैं, (३२) हालांकि वे उन पर निगरां बना कर नहीं भेजे गये थे। (३३) तो आज मोमिन काफ़िरों से हंसी करेंगे, (३४) (और) तख़्तों पर (बैठे हुए उन का हाल) देख रहे होंगे। (३५) तो काफ़िरों को उन के अमलों का (पूरा-पूरा) बदला मिल गया। (३६) ★

८४ सूरः इन्शिक़ाक़ ८३

सूरः इन्शिक़ाक़ मक्की है, इस में पचीस आयतें हैं। और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और अपने परवरदिगार का फ़रमान बजा लाएगा और उसे वाजिब भी यही है, (२) और जब ज़मीन हमवार कर दी जाएगी। (३) और जो कुछ इस में है, उसे निकाल कर बाहर डाल देगी और (बिल्कुल) ख़ाली हो जाएगी, (४) और अपने परवरदिगार के इर्शाद की तामील करेगी और उस को लाज़िम भी यही है, (तो क़ियामत क़ायम हो जाएगी।) (५) ऐ इंसान! तू अपने परवरदिगार की तरफ़ (पहुंचने में) ख़ूब कोशिश करता है, सो उस से जा मिलेगा। (६) तो जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा, (७) उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, (८) और वह अपने घर वालों में ख़ुश-ख़ुश आएगा, (९) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस की पीठ के पीछे से दिया जाएगा, (१०) वह मौत को पुकारेगा, (११) और दोज़ख़ में दाख़िल होगा, (१२) यह अपने अहल (व अयाल) में मस्त रहता था, (१३) और ख़्याल करता था कि (ख़ुदा की तरफ़) फिर कर न जाएगा, ∴ (१४) हां, (हां,) ∴ उस का परवरदिगार उस को देख रहा था। (१५) हमें शाम की लाली की क़सम! (१६) और रात की और जिन चीज़ों को वह इकट्ठा कर लेती है, उन की, (१७) और चांद की जब पूरा हो जाए, (१८) कि तुम दर्जा-दर्जा (ऊंचे रुत्बे पर) चढ़ोगे, (१९) तो उन लोगों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते, (२०) और जब उन के सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है, तो सज्दा नहीं करते, (२१) बल्कि काफ़िर झुठलाते हैं, (२२) और ख़ुदा उन बातों को, जो ये अपने दिलों में छिपाते हैं, ख़ूब जानता है, (२३) तो उन को दुख देने वाले अज़ाब की ख़बर सुना दो। (२४) हां, जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है। (२५) ★

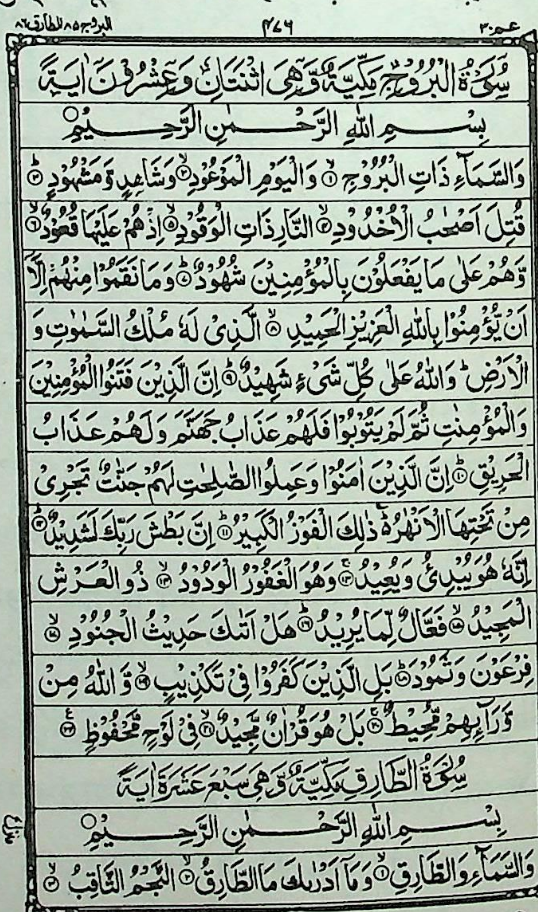
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८५ सूरतुल्-बुरूजि २७

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ४७५ अक्षर, १०९ शब्द, २२ आयत और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वस्समाइ जातिल्बुरूजि (१) वल-यौमिल-मौअ़ूदि (२) व शाहिदिंव्-व
मश्हूद (३) क़ुति-ल अस्ह़ाबुल-उख़्दूदि- (४) -न्नारि जातिलवक़ूदि (५) इज्
हुम् अ़लैहा क़ुअ़ूदुंव्- (६) व हुम् अ़ला मा यफ़्-अ़लू-न बिल्-मुअ्मिनी-न शुहूद
(७) व मा न-क़मू मिन्हुम् इल्ला अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल-अ़ज़ीज़िल-ह़मीद
(८) अ्ल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि
वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (९)
इन्नल्लज़ी-न फ़-तनुल्-मुअ्मिनी-न वल-मुअ्मि-
नाति सुम्-म लम् यतूबू फ़-लहुम् अ़ज़ाबु
ज-हन्न-म व लहुम् अ़ज़ाबुल-ह़रीक़ (१०)
इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति
लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल-अन्हारु
ज़ालिकल-फ़ौज़ुल-कबीर (११) इन्-न बत़्-श
रब्बि-क ल-शदीद (१२) इन्नहू हु-व
युब्दिउ व युअ़ीद (१३) व हुवल-ग़फ़ूरुल-
वदूद (१४) ज़ुलअ़र्शिल-मजीद (१५) फ़अ़्-
आलुल-लिमा युरीद (१६) हल् अता-क
ह़दीसुल्-जुनूद (१७) फ़िर्औ़-न व समूद (१८) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी
तक्ज़ीबिंव - (१९) वल्लाहु मिंव्वराइहिम् मुह़ीत़ (२०) बल्
हु-व क़ुर्आनुम् - मजीद (२१) फ़ी लौह़िम् - मह़्फ़ूज़ ★ (२२)



سورة البروج مكية وهي اثنتان وعشرون آية

بسم الله الرحمن الرحيم

والسماء ذات البروج ۝ واليوم الموعود ۝ وشاهد ومشهود ۝
قتل أصحاب الأخدود ۝ النار ذات الوقود ۝ إذ هم عليها قعود ۝
وهم على ما يفعلون بالمؤمنين شهود ۝ وما نقموا منهم إلا
أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد ۝ الذي له ملك السماوات و
الأرض والله على كل شيء شهيد ۝ إن الذين فتنوا المؤمنين
والمؤمنات ثم لم يتوبوا فلهم عذاب جهنم ولهم عذاب
الحريق ۝ إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات تجري
من تحتها الأنهار ذلك الفوز الكبير ۝ إن بطش ربك لشديد ۝
إنه هو يبدئ ويعيد ۝ وهو الغفور الودود ۝ ذو العرش
المجيد ۝ فعال لما يريد ۝ هل أتاك حديث الجنود ۝
فرعون وثمود ۝ بل الذين كفروا في تكذيب ۝ والله من
ورائهم محيط ۝ بل هو قرآن مجيد ۝ في لوح محفوظ ۝

سورة الطارق مكية وهي سبع عشرة آية

بسم الله الرحمن الرحيم

والسماء والطارق ۝ وما أدراك ما الطارق ۝ النجم الثاقب ۝

८६ सूरतुत्-त़ारिक़ि ३६

(मक्की) इस सूर: में अ़रबी के २५४ अक्षर, ६१ शब्द, १७ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वस्समाइ वत़्त़ारिक़ि (१) व मा अद्रा - क
मत़्त़ारिक़ु - (२) — न्नज्मुस्साक़िबु (३)

▨ आयतहिम्सीयः ★रु. १/१० आ २२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८५ सूरः बुरूज २७

सूरः बुरूज मक्की है, इस में बाईस आयतें हैं। और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान की क़सम, जिस में बुर्ज हैं,[1] (१) और उस दिन की, जिसका वायदा है, (२) और हाज़िर होने वाले की और जो उस के पास हाज़िर किया जाए उस की, (३) कि ख़न्दक़ों (के खोदने) वाले हलाक कर दिए गए, (४) (यानी) आग (की ख़न्दक़ें) जिस में ईंधन (झोंक रखा था,) (५) जबकि वे उन (के किनारों) पर बैठे हुए थे, (६) और जो (सख़्तियां) ईमान वालों पर कर रहे थे, उन को सामने देख रहे थे। (७) उन को मोमिनों की यही बात बुरी लगती थी कि वे ख़ुदा पर ईमान लाए हुए थे, जो ग़ालिब और तारीफ़ के क़ाबिल है।[2] (८) जिस की आसमानों और ज़मीन में बादशाही है और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (९) जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को तक्लीफ़ें दीं और तौबा न की, उन को दोज़ख़ का (और) अज़ाब भी होगा और जलने का अज़ाब भी होगा। (१०) (और) जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन के लिए बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। यही बड़ी कामियाबी है ▨ (११) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की पकड़ बहुत सख़्त है। (१२) वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा (ज़िंदा) करेगा। (१३) और वह बख़्शने वाला (और) मुहब्बत करने वाला है। (१४) अर्श का मालिक, बड़ी शान वाला, (१५) जो चाहता है, कर देता है, (१६) भला तुम को लश्करों का हाल मालूम हुआ है, (१७) (यानी) फ़िऔन और समूद का, (१८) लेकिन काफ़िर (जान-बूझ कर) झुठलाने में (गिरफ़्तार) हैं, (१९) और ख़ुदा (भी) उन को गिर्दा-गिर्द से घेरे हुए है। (२०) (वह किताब बकवास व झूठ नहीं,) बल्कि यह क़ुरआन अज़ीमुश्शान है, (२१) लौहे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ।) (२२) ★

८६ सूरः तारिक़ ३६

सूरः तारिक़ मक्की है, इस में सत्तरह आयतें और चार रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान और रात के वक़्त आने वाले की क़सम ! (१) और तुम को क्या मालूम कि रात के वक़्त आने वाला क्या है ? (२) वह तारा है, चमकने वाला, (३) कि कोई नफ़्स नहीं, जिस पर

---

१. बुर्जों से मुराद तारे या उन की मंज़िलें हैं। बुर्ज अरब में महल को कहते हैं, तारों की मंज़िलों का नाम बुर्ज इस लिए रखा गया कि ये गोया उन के घर हैं।

२. कहते हैं अगले ज़माने में, जब कि दीन में बहुत-सी ख़राबियां पड़ गयीं और लोगों में फ़ित्ने और फ़साद बरपा हो गये, तो एक दीनदार और ख़ुदा परस्त क़ौम ने अलग एक गांव आबाद किया और उस में रहने-सहने और ख़ुदा की इबादत करने लगे, यहां तक कि उस के काफ़िर ज़ालिम बादशाह को इस हाल से इत्तिला हुई तो उस ने उन लोगों को कहला भेजा कि जिन बुतों को हम पूजते हैं, तुम भी उन्हीं को पूजो। उन्हों ने इन्कार किया और कहा कि हम ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करेंगे, क्योंकि वह हमारा माबूद है। बादशाह ने धमकी दी कि अगर हमारे माबूदों को नहीं पूजोगे तो मैं तुम को क़त्ल कर दूंगा। इस का कुछ असर उन के दिल पर न हुआ।
(शेष पृष्ठ ९५१ पर)

▨ आयत हम्सीयः ★रु. १/१० आ २२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन् कुल्लु नफ़्सिल्-लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़ ط (४) फ़ल्-यन्ज़ुरिल-इन्सानु मिम्-म
ख़ुलि-क़ ط (५) ख़ुलि-क़ मिम्माइन् दाफ़िक़िंय्- لا (६) -यख़्रुजु मिम्बैनिस्सुल्बि
वत्तराइब ط (७) इन्नहू अ़ला रज्इ़ही लक़ादिर ط (८) यौ-म तुब्-लस्सराइरु لا
(९) फ़मा लहू मिन् क़ुव्वतिंव्-व ला नासिर ط (१०) वस्समाइ ज़ातिर्-रज्इ़ لا
(११) वलअर्ज़ि ज़ातिस्सद्इ़ لا (१२) इन्नहू
ल-क़ौलुन् फ़स्लुंव्- لا (१३) व मा हु-व बिल्-
हज़्लि ط (१४) इन्नहुम् यकीदू-न कैदंव्- لا (१५)
व अकीदु कैदन् ج (१६) फ़-मह्-हिलिल-
काफ़िरी-न अम्हिल्हुम् रुवैदा ★ (१७) ع

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾
خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾ يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿٧﴾
إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَّ
لَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾
وَّأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِي خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾ وَالَّذِي قَدَّرَ
فَهَدٰى ﴿٣﴾ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوٰى ﴿٥﴾
سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰى ﴿٦﴾ إِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا
يَخْفٰى ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ إِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾
سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى
النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾ قَدْ أَفْلَحَ
مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ﴿١٧﴾ إِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ
الْأُولٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرٰهِيمَ وَمُوسٰى ﴿١٩﴾

८७ सूरतुल्-अअ़्-ला ८

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के २९९ अक्षर, ७२ शब्द, १९ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

सब्बिहिस्-म रब्बिकल-अअ़्-ला لا (१)
अल्लज़ी ख़-ल-क़ फ़-सव्वा صلے (२) वल्लज़ी
क़द्-द-र फ़-हदा صلے (३) वल्लज़ी अख़्-र-जल-
मर्आ़ صلے (४) फ़-ज-अ़-लहू ग़ुसाअन् अह़्वा ط (५) सनुक़्रिउ-क फ़ला तन्सा لا (६)
इल्ला मा शा-अल्लाहु ط इन्नहू यअ़्-लमुल-जह्-र व मा यख़्फ़ा ط (७) व नुयस्सिरु-क
लिल्युस्रा ج (८) फ़ज़क्किर् इन् न-फ़-अ़तिज़्ज़िक्रा ط (९) स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा لا
(१०) व य-त-जन्नबुहल-अश्क़- لا (११) -ल्लज़ी यस्लन्नारल-कुब्रा ج (१२) सुम्-
म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह़्या ط (१३) क़द् अफ़्-ल-ह़ मन् त-ज़क्का لا (१४)
व ज़-क-रस्-म रब्बिही फ़-सल्ला ط (१५) बल् तुअ्सिरूनल-ह़यातद्दुन्या صلے (१६)
वलआख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ط (१७) इन्-न हाज़ा लफ़िस्-
सुहुफ़िल्ऊला لا (१८) सुहुफ़ि इब्राही-म व मूसा ★ (१९)

★रु० १/११ आ १७ ★रु० १/१२ आ १९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निगहबान मुक़र्रर नहीं। (४) तो इंसान को देखना चाहिए कि वह काहे से पैदा हुआ है, (५) वह उछलते हुए पानी से पैदा हुआ है, (६) जो पीठ और सीने के बीच में से निकलता है। (७) बेशक ख़ुदा उस के इआदे (यानी फिर पैदा करने) पर क़ादिर है, (८) जिस दिन दिलों के भेद जांचे जाएंगे,[1] (९) तो इंसान की कुछ पेश न चल सकेगी और न कोई उस का मददगार होगा। (१०) आसमान की क़सम, जो मेंह बरसाता है, (११) और ज़मीन की क़सम! जो फट जाती है, (१२) कि यह कलाम (हक़ को बातिल से) जुदा करने वाला है, (१३) और बेहूदा बात नहीं, (१४) ये लोग तो अपनी तद्‌बीरों में लग रहे हैं, (१५) और अपनी तद्‌बीर कर रहे हैं, (१६) तो तुम काफ़िरों को मोहलत दो, बस कुछ दिन ही मोहलत दो। (१७)★

८७ सूरः अअ्‌ला ८

सूरः अअ्‌ला मक्की है। इस में उन्नीस आयतें हैं। और १ रुकूअ् है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! अपने परवरदिगार जलीलुश्शान के नाम की तस्बीह करो, (१) जिस ने (इंसान को) बनाया, फिर (उस के अंगों को) ठीक किया, (२) और जिस ने (उस का) अन्दाज़ा ठहराया (फिर उन को) रास्ता बताया, (३) और जिस ने चारा उगाया, (४) फिर उस को स्याह रंग का कूड़ा कर दिया। (५) हम तुम्हें पढ़ा देंगे कि तुम भूलोगे नहीं, (६) मगर जो ख़ुदा चाहे। वह खुली बात को भी जानता है और छिपी को भी। (७) हम तुम को आसान तरीक़े की तौफ़ीक़ देंगे, (८) सो जहां तक नसीहत (के) नफ़ा देने (की उम्मीद) हो, नसीहत करते रहो। (९) जो ख़ौफ़ रखता है, वह तो नसीहत पकड़ेगा, (१०) और (बे-ख़ौफ़) बद-बख़्त पहलू बचाएगा, (११) जो (क़ियामत को) बड़ी (तेज़) आग में दाख़िल होगा, (१२) फिर वहां न मरेगा, न जिएगा। (१३) बेशक वह मुराद को पहुंच गया, जो पाक हुआ, (१४) और अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा, (१५) मगर तुम लोग तो दुनिया की ज़िंदगी को अख़्तियार करते हो, (१६) हालांकि आख़िरत बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (१७) यही बात पहले सहीफ़ों (किताबों) में (लिखी हुई) है, (१८) (यानी) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में★ (१९)

(पृष्ठ ९४९ का शेष)
तब उस ने ख़न्दक़ें खुदवा कर उन में आग जलवा दी और ख़ुद उन के किनारे पर खड़े हो कर उन से कहने लगा कि या तो हमारे दीन को क़ुबूल करो या इस आग को अपनाओ, मगर उन्हों ने बुतों को पूजना मंज़ूर न किया और आग में पड़ना मंज़ूर किया। यह हाल देख कर औरतें और बच्चे चिल्ला उठे। दीनदार शौहर और बाप जो ख़ुदा पर पूरा ईमान रखते थे, उन्हों ने तसल्ली दी कि उस को आग न समझो, यह तुम्हारे लिए निजात है। चुनांचे सब के सब इस में कूद पड़े। कहते हैं कि आग के शोले अभी उन के जिस्मों तक पहुंचने न पाए थे कि ख़ुदा ने उन की रूहें क़ब्ज़ कर लीं और आग भड़क कर बादशाह और उस के दरबारियों में जो किनारे पर खड़े थे, जा लगी और सब को जला कर ख़ाक कर दिया।

१. दिलों के भेद जानने से यह मुराद है कि ताल्लुक़ात और ख़्यालात ज़ाहिर कर दिए जाएंगे और अच्छे-बुरे अलग कर दिए जाएंगे।

★रु. १/११ आ १७ ★रु. १/१२ आ १९

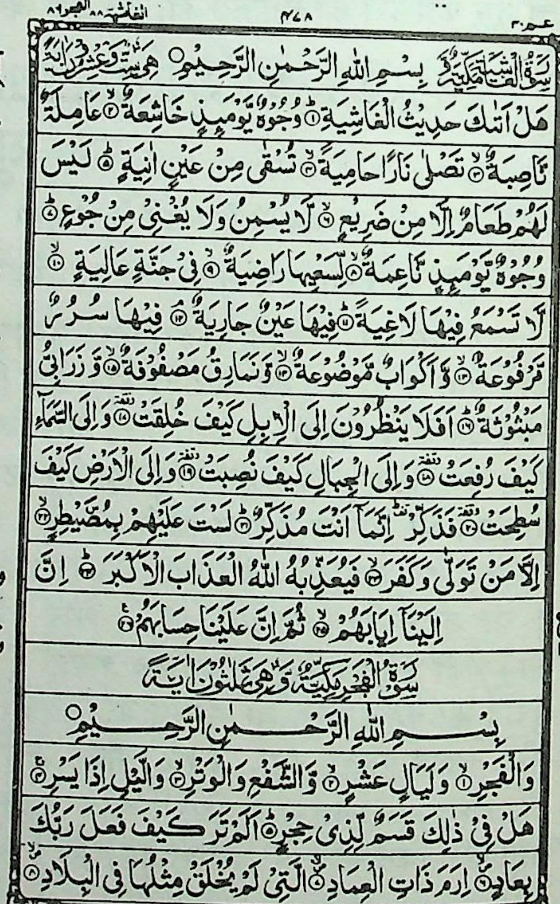
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८८ सूरतुल्-ग़ाशियति ६८

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ३८४ अक्षर, ९३ शब्द, २६ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

हल् अता-क ह़दीसुल-ग़ाशियः (१) वुजूहुंय्यौमइजिन् ख़ाशि-अतुन् (२)
आमि-लतुन् नासि-बतुन् (३) तस्ला नारन् ह़ामि-य-तन् (४) तुस्क़ा मिन्
अ़ैनिन् आनियः (५) लै-स लहुम् त़आमुन् इल्ला मिन् ज़रीअिल्- (६) -ला
युस्मिनु व ला युग़्नी मिन् जू-अ़ (७) वुजूहुंय्यौमइजिन् नाअिमतुल- (८)



लिसअ्-यिहा राज़ियतुन् (९) फ़ी जन्नतिन्
आलि-यतिल- (१०) ला तस्मअु फ़ीहा
लाग़ियः (११) फ़ीहा अ़ैनुन् जारियः (१२)
फ़ीहा सुरुरुम्-मर्फ़ूअ़तुंव- (१३) व अक्वा-
बुम्-मौज़ूअ़तुंव- (१४) व नमारिक़ु मस्फ़ू-
फ़तुंव- (१५) व ज़राबिय्यु मब्सूसः (१६)
अ-फ़ला यन्ज़ुरू-न इलल् - इबिलि कै-फ़
ख़ुलिक़त् (१७) व इलस्समाइ कै-फ़ रुफ़ि-
अ़त् (१८) व इलल्-जिबालि कै-फ़ नुसिबत्
(१९) व इलल्अर्ज़ि कै-फ़ सुतिह़त्
(२०) फ़-जक्किर् इन्नमा अन् - त
मुजक्किर (२१) लस - त अ़लैहिम्
बिमुसैतिरिन् (२२) इल्ला मन्
त-वल्ला व क-फ़र (२३) फ़युअ़ज्जिबुहुल्लाहुल-अ़ज़ाबल अक्बर (२४)
इन-न इलैना इयाबहुम् (२५) सुम्-म इन्-न अ़लैना ह़िसाबहुम् ★ (२६) ●

८९ सूरतुल्-फ़ज्रि १०

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ५८५ अक्षर, १३७ शब्द, ३० आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वल्फ़ज्रि (१) व लयालिन् अ़श्रिव्- (२) वश्शफ़्अि वल्वत्रि
(३) वल्लैलि इज़ा यस्रि (४) हल् फ़ी जालि-क क़-समुल्लिजी ह़िज्र (५)
अ-लम् त-र कै-फ़ फ़-अ़ - ल रब्बु-क बिआदिन् (६) इर-म
जातिल्अिमादि- (७) -ल्लती लम् युख़-लक़् मिस्लुहा फ़िल्बिलाद (८)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८८ सूरः ग़ाशियः ६८

सूरः ग़ाशियः मक्की है, इस में २६ आयतें हैं और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम को ढांप लेने वाली (यानी क़ियामत) का हाल मालूम हुआ है? (१) उस दिन बहुत से मुंह (वाले) ज़लील होंगे, (२) सख़्त मेहनत करने वाले, थके-मांदे, (३) दहकती आग में दाख़िल होंगे, (४) एक खौलते हुए चश्मे का उन को पानी पिलाया जाएगा, (५) और कांटेदार झाड़ के सिवा उन के लिए कोई खाना नहीं (होगा,) (६) जो न मोटा बनाये, न भूख में कुछ काम आए। (७) और बहुत से मुंह (वाले) उस दिन ख़ुश होंगे, (८) अपने आमाल (के बदले) से ख़ुश दिल, (९) ऊंची बहिश्त में, (१०) वहां किसी तरह की बकवास नहीं सुनेंगे, ꕤ (११) उस में चश्मे बह रहे होंगे, (१२) वहां तख़्त होंगे ऊंचे बिछे हुए, (१३) और आबख़ोरे (क़रीने से) रखे हुए, (१४) और गाव तकिए क़तार की क़तार लगे हुए, (१५) और उम्दा मसनदें बिछी हुईं। (१६) ये लोग ऊंटों की तरफ़ नहीं देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किए गए हैं, (१७) और आसमान की तरफ़ कि कैसा बुलन्द किया गया है, (१८) और पहाड़ों की तरफ़ कि किस तरह खड़े किए गए हैं, (१९) और ज़मीन की तरफ़ कि किस तरह बिछायी गयी, (२०) तो तुम नसीहत करते रहो कि तुम नसीहत करने वाले ही हो, (२१) तुम उन पर दारोग़ा नहीं हो, (२२) हां, जिसने मुंह फेरा और न माना, (२३) तो ख़ुदा उस को बड़ा अज़ाब देगा। (२४) बेशक उन को हमारे पास लौट कर आना है, (२५) फिर हम ही को उन से हिसाब लेना है। (२६) ★ ●

८९ सूरः फ़ज्र १०

सूरः फ़ज्र मक्की है, इस में तीस आयतें हैं और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

फ़ज्र की क़सम, (१) और दस रातों की,[1] (२) और जुफ़्त और ताक़ की, (३) और रात की जब जाने लगे, (४) (और) बेशक ये चीज़ें अक़्लमन्दों के नज़दीक क़सम खाने के लायक़ हैं (कि काफ़िरों को ज़रूर अज़ाब होगा।) (५) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने आद[2] के साथ क्या किया? (६) (जो) इरम (कहलाते थे, इतने) लम्बे क़द। (७) कि तमाम

---

१. दस रातों के तै करने में अलग-अलग क़ौल हैं। कुछ लोग कहते हैं, उन से ज़िलहिज्जा का अशरा मुराद है, कुछ का क़ौल है रमज़ान का पहला अशरा मुराद है, मगर कोई दलील इस पर नहीं कि इन से यही अशरे मुराद हैं।

२. आद दो थे। पहले आद जिन को इरम कहते हैं, दूसरे आद समूद। इरम के आद हज़रत हूद अलै० की उम्मत के लोग थे। इरम उन के क़बीले का नाम था।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व समूदल्लजी-न जाबुस्सख़्-र बिल्वादि (९) व फ़िर्औ़-न ज़िल्औतादि- (१०)
ल्लजी-न तग़ौ फ़िल्बिलादि (११) फ़-अक्सरू फ़ीहल्फ़साद (१२) फ़-सब्-ब
अ़लैहिम् रब्बु-क सौ-त़ अ़ज़ाब (१३) इन्-न रब्ब-क लबिल्-मिर्साद (१४) फ़-
अम्मल-इन्सानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़-अक्-र-महू व नअ़्-अ़-महू फ़-यक़ूलु रब्बी
अक्-र-मन (१५) व अम्मा इज़ा मब्तलाहु
फ़-क़-द-र अ़लैहि रिज़्क़हू फ़यक़ूलु रब्बी अहानन्
(१६) कल्ला बल् ला तुक्रिमूनल्-यती-म
(१७) व ला तहा-ज़्ज़ू-न अ़ला त़आ़मिल-
मिस्कीन (१८) व तअ्कुलूनत्तुरा-स अक्-
लल्-लम्मंव्- (१९) व तुहि़ब्बूनल्-मा-ल
हु़ब्बन् जम्मा (२०) कल्ला इज़ा दुक्कतिल-
अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्- (२१) व जा-अ रब्बु-क
वल-म-लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा (२२) व जी-अ
यौमइजिम्-बिज-हन्न-म यौमइज़िय्य-त-ज़क्करुल-
इन्सानु व अन्ना लहुज्ज़िक्रा (२३) यक़ूलु
यालैतनी क़द्दम्तु लिहयाती (२४) फ़यौमइज़िल्ला युअ़ज़्ज़िबु अ़ज़ाबहू अ-ह़दुं व्-
(२५) व ला यूसिक़ु व-साक़हू अ-ह़द (२६) या अय्यतुहन्नफ़्सुल-मुत़मइन्नतु-
(२७) -र्जिई इला रब्बिकि राज़ि - य - तम् - र्ज़िय्यतन् (२८)
फ़द्ख़ुली फ़ी अ़िबादी (२९) वद्ख़ुली जन्नती ★ (३०)

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ۝
الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝ فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ
رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا
مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّآ
اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝ كَلَّا
بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝
وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّآ اِذَا
دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَ
جِايْٓءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ
الذِّكْرٰى ۝ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۝ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۝ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ
الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِيْ
فِيْ عِبٰدِيْ ۝ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۝

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَوَالِدٍ وَّمَا
وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ

९० सूरतुल्-ब-लदि ३५

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ३४७ अक्षर, ८२ शब्द, २० आयतें और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्ब-लदि (१) व अन्-त हि़ल्लुम्-बिहाज़ल-ब-लदि
(२) व वालिदिंव्-व मा व-लद (३) ल-क़द् ख़-लक़्नल-इन्सा-न फ़ी
क - बद (४) अ - यह़्सबु अल्लंय्यक़्दि-र अ़लैहि अ-ह़द (५)

★रु. १/१४ आ ३० ▨ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुल्क में ऐसे पैदा नहीं हुए थे, (८) और समूद के साथ (क्या किया) जो (कुरा की) वादी में पत्थर तराशते और (घर बनाते) थे ?[1] (९) और फ़िरऔन के साथ (क्या किया) जो खेमे और मेखें रखता था ? (१०) ये लोग मुल्कों में सरकश हो रहे थे, (११) और उन में बहुत-सी खराबियां करते थे, (१२) तो तुम्हारे परवरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा नाज़िल किया, (१३) बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक में है, (१४) मगर इंसान (अजीब मख्लूक है कि) जब उस का परवरदिगार उस को आज़माता है कि उसे इज़्ज़त देता और नेमत बख्शता है, तो कहता है कि (आ हा) मेरे परवरदिगार ने मुझे इज़्ज़त बख्शी। (१५) और जब (दूसरी तरह) आज़माता है कि उस पर रोज़ी तंग कर देता है, तो कहता है कि (हाय) मेरे परवरदिगार ने मुझे ज़लील किया। (१६) नहीं, बल्कि तुम लोग यतीम की खातिर नहीं करते, (१७) और न मिस्कीन को खाना खिलाने का चाव पैदा करते हो, (१८) और मीरास के माल को समेट कर खा जाते हो, (१९) और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो, (२०) तो जब ज़मीन की बुलंदी कूट-कूट कर पस्त कर दी जाएगी, (२१) और तुम्हारा परवरदिगार (जलवा फ़रमा होगा) और फ़रिश्ते लाइन बना-बना कर आ मौजूद होंगे, (२२) और दोज़ख उस दिन हाज़िर की जाएगी, तो इंसान उस दिन चेतेगा, मगर (अब) चेतने (से) उसे (फ़ायदा) कहां (मिल सकेगा ?) (२३) कहेगा, काश ! मैं ने अपनी (हमेशा की) ज़िंदगी के लिए कुछ आगे भेजा होता, (२४) तो उस दिन न कोई खुदा के अज़ाब की तरह का (किसी को) अज़ाब देगा। (२५) और न कोई वैसा जकड़ना जकड़ेगा। (२६) ऐ इत्मीनान पाने वाली रूह ! (२७) अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट चल, तू उस से राज़ी, वह तुझ से राज़ी, (२८) तू मेरे (मुम्ताज़) बन्दों में शामिल हो जा, (२९) और मेरी बहिश्त में दाखिल हो जा, (३०) ★



९० सूर: अल-बलद ३५

सूर: अल-बलद मक्की है, इस में बीस आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमें इस शहर (मक्का) की क़सम, (१) और तुम इसी शहर में तो रहते हो, (२) और बाप (यानी आदम) और उस की औलाद की क़सम, (३) कि हमने इंसान को तक्लीफ़ (की हालत) में (रहने वाला) बनाया है, (४) क्या वह ख्याल रखता है कि उस पर कोई क़ाबू न पाएगा ▩ (५)

१. समूद हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम का नाम है। ये लोग ऐसे कारीगर थे कि पहाड़ों में पत्थर काट-काट कर घर बनाते थे और उन में रहते सहते थे।

★रु. १/१४ आ ३० ▩ व. लाज़िम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यक़ूलु अह्‌लक्तु मालल-लु-ब-दा ط(६) अ-यह्‌सबु अल्लम् य-रहू अ-ह़द ط(७)
अ-लम् नज्-अ़ल् लहू अ़ैनैनि لا(८) व लिसानंव्-व श-फ़तैनि لا(९) व हदैनाहुन्-
नज्दैनि ج(१०) फ़-लक़्त-ह़-मल्-अ़-क़-ब-त ز(११) व मा अद्रा-क मल्-अ़-क़-बः ط
(१२) फ़क्कु र-क़-बतिन् لا(१३) औ इत्-आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्ग़-बतिंय- لا
(१४) यतीमन् ज़ा मक़्-र-बतिन् لا(१५)
औ मिस्कीनन् ज़ा मत्-र-बः ط(१६) सुम्-म
का-न मिनल्लज़ी-न आमनू व त-वासौ बिस्स-
ब्रि व त-वासौ बिल्मर्-ह़-मः ط(१७) उलाइ-क
अस्ह़ाबुल् - मै-म-नः ط(१८) वल्लज़ी-न
क-फ़रू बिआयातिना हुम् अस्ह़ाबुल्-मश्-अ-मः ط
(१९) अ़लैहिम् नारुम्-मुअ्-स-दः ★ (२०)

الشمس ٩١ والليل ٩٢ — ٦٨٠ — عم

أَحَدٌ ۞ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۞ أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۞
أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ ۞ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۞ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۞
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۞ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۞ فَكُّ رَقَبَةٍ ۞ أَوْ
إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۞ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۞ أَوْ مِسْكِينًا ذَا
مَتْرَبَةٍ ۞ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۞ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۞ وَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۞ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۞
سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً
وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۞ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ۞ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا ۞
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ۞ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ۞ وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ۞
وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۞ فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۞ قَدْ أَفْلَحَ مَن
زَكَّاهَا ۞ وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّاهَا ۞ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۞ إِذِ
انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۞ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۞
فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنبِهِمْ
فَسَوَّاهَا ۞ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۞
سُورَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ إِحْدَى وَعِشْرُونَ آيَةً
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ۞ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ۞ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۞

९१ सूरतुश्शम्सि २६

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के २५४ अक्षर, ५६ शब्द, १५ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

वश्शम्सि व ज़ुहाहा ص(१) वल्क़-मरि
इज़ा तलाहा ص(२) वन्नहारि इज़ा जल्लाहा
(३) वल्लैलि इज़ा यग़्शाहा ص(४) वस्समाइ
व मा बनाहा ص(५) वल्अर्ज़ि व मा तहाहा
(६) व नफ़्सिंव्-व मा सव्वाहा ص(७)
फ़-अल्-ह-महा फ़ुजूरहा व तक़्-वाहा ص(८) क़द् अफ़्-ल-ह मन् ज़क्काहा ص(९)
व क़द् ख़ा-ब मन् दस्साहा ط(१०) कज़्ज़-बत् समूदु बितग़्वाहा ص(११) इज़िम्ब-अ-स
अश्क़ाहा ص(१२) फ़-क़ा-ल लहुम् रसुलुल्लाहि ना-क़-तल्लाहि व सुक़्याहा ط(१३)
फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ़-क़रूहा ص फ़-दम्द-म अ़लैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़-सव्वाहा ص(१४)
व ला यख़ाफ़ु उ़क़्बाहा ★ (१५)

९२ सूरतुल्लैलि ९

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ३१४ अक्षर, ७१ शब्द, २१ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

वल्लैलि इज़ा यग़्शा لا (१) वन्नहारि इज़ा
त-जल्ला لا (२) व मा ख़-ल-क़ज़्ज़-क-र वल्उन्सा لا (३)

★रु० १/१५ आ २० ★रु० १/१६ आ १५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहता है कि मैं ने बहुत-सा माल बर्बाद कर दिया। (६) क्या उसे यह गुमान है कि उस को किसी ने देखा नहीं ? (७) भला हमने उस को दो आखें नहीं दीं ? (८) और ज़ुबान और दो होंठ (नहीं दिए ?) (९) (ये चीजें भी दीं) और उस को (भलाई-बुराई के) दोनों रास्ते भी दिखा दिए. (१०) मगर वह घाटी पर से हो कर न गुज़रा. (११) और तुम क्या समझे कि घाटी क्या है ? (१२) किसी (की) गरदन का छुड़ाना. (१३) या भूख के दिन खाना खिलाना (१४) यतीम रिश्तेदार को,[1] (१५) या फ़क़ीर खाकसार को, (१६) फिर उन लोगों में भी (दाखिल) हुआ, जो ईमान लाए और सब्र की नसीहत और (लोगों पर) शफ़क़त करने की वसीयत करते रहे। (१७) यही लोग सआदत वाले हैं, (१८) और जिन्हों ने हमारी आयतों को न माना वे बद-बख़्त हैं, (१९) ये लोग आग में बन्द कर दिए जाएंगे। (२०) ★

९१ सूरः शम्स २६

सूरः शम्स मक्की है। इस में पन्द्रह आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की क़सम और उस की रोशनी की, (१) और चांद की, जब उस के पीछे निकले, (२) और दिन की जब उसे चमका दे, (३) और रात की जब उसे छिपा ले, (४) और आसमान की और उस ज़ात की, जिस ने उसे बनाया, (५) और ज़मीन की और उस की, जिस ने उसे फैलाया, (६) और इंसान की और उस की जिस ने उस के अंगों को बराबर किया, (७) फिर उस को बद-कारी (से बचने) और परहेज़गारी करने की समझ दी, (८) कि जिस ने (अपने) नफ़्स (यानी रूह) को पाक रखा, वह मुराद को पहुंचा, (९) और जिस ने उसे ख़ाक में मिलाया, वह घाटे में रहा, (१०) समूद (क़ौम) ने अपनी सरकशी की वजह से (पैग़म्बर को) झुठलाया। (११) जब उन में से एक निहायत बदबख़्त उठा, (१२) तो ख़ुदा के पैग़म्बर (सालेह) ने उन से कहा कि ख़ुदा की ऊंटनी और उस के पानी पीने की बारी से बचो, (१३) मगर उन्होंने पैग़म्बर को झुठलाया और ऊंटनी की कूंचे काट दीं, तो ख़ुदा ने उन के गुनाह की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया और सब को (हलाक कर के) बराबर किया,[2] (१४) और उस को उन के बदला लेने का कुछ भी डर नहीं। (१५) ★

९२ सूरः लैल ९

सूरः लैल मक्की है, इस में २१ आयतें और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

रात की क़सम, जब (दिन को) छिपा ले, (१) और दिन की क़सम, जब चमक उठे, (२) और उस (ज़ात) की क़सम, जिस ने नर और मादा पैदा किए, (३) कि तुम लोगों की कोशिश

---

१. यतीम का एक हक़, नातेदार का एक हक़, जो दोनों हुए तो दो हक़।

२. ख़ुदा ने हज़रत सालेह को एक ऊंटनी मोजज़े के तौर पर दी थी, जो एक बड़े भारी पत्थर में से निकाली गयी थी। सालेह अलैहिस्सलाम ने उन लोगों से कहा कि यह ऊंटनी ख़ुदा की है। उस को बुरी तरह हाथ न लगाना और जो दिन उस के पानी पीने का हो, उस में छेड़ख़ानी न करना। उन्हों ने यह बात न मानी और एक निहायत बद-बख़्त शख़्स ने जिस का नाम क़िदार बिन सालिफ़ था, ऊंटनी के पांव काट दिए। इस वजह से उन सब पर अज़ाब नाज़िल हुआ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्-न सअ्-यकुम् लशत्ता ط (४) फ़-अम्मा मन् अअ्-ता वत्तक़ा ۙ (५) व स़द्-द-क़
बिल्हुस्ना ۙ (६) फ़-स-नुयस्सिरुहू लिल्-युस्रा ط (७) व अम्मा मम्-बख़ि-ल
वस्तग़्ना ۙ (८) व कज़्ज़-ब बिल-हुस्ना ۙ (९) फ़-सनुयस्सिरुहू लिल-
ड़ुस्रा ط (१०) व मा युग़्नी अ़न्हु मालुहू इज़ा त-रद्दा ط (११) इन्-न अ़लैना
लल्हुदा صلے (१२) व इन् - न लना
लल्-आख़ि-र-तु वल्ऊला (१३) फ़-अन्ज़र्तुकुम्
नारन् त-लज़्ज़ा ج (१४) ला यस्-लाहा
इल्ललल-अश्क़- ۙ (१५) -ल्लज़ी कज़्ज़-ब
व त-वल्ला ط (१६) व सयुजन्नबुहल-
अत्क़- ۙ (१७) -ल्लज़ी युअ्ती मा-लहू
य-त-ज़क्का ج (१८) व मा लि-अ-ह़-दिन्
अ़िन्दहू मिन् निअ्-मतिन् तुज्ज़ा ۙ (१९)
इल्लब्तिग़ा - अ वज्हि रब्बिहिल - अअ्-ला ج
(२०) व लसौ-फ़ यर्ज़ा ★ (२१)

९३ सूरतुज़्ज़ुहा ११

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १६६ अक्षर,
४० शब्द, ११ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वज़्ज़ुहा ۙ (१) वल्लैलि इज़ा
सजा ۙ (२) मा वद्-द-अ़-क रब्बु-क व मा क़ला ط (३) व लल्आख़िरतु
ख़ैरुल्ल-क मिनल्ऊला ط (४) व लसौ-फ़ युअ्-ती-क रब्बु-क फ़-तर्ज़ा ط (५) अ-लम्
यजिद्-क यतीमन् फ़-आवा ص (६) व व-ज-द-क ज़ाल्लन् फ़-हदा ص (७) व व-ज-
द-क आ़इलन् फ़-अग़्ना ط (८) फ़-अम्मल्-यती-म फ़ला तक़्-हर् ط (९) व
अम्मस्साइ-ल फ़ला तन्हर् ط (१०) व अम्मा बिनिअ्-मति रब्बि-क फ़-ह़द्दिस् (११)
★

९४ सूरतु अ-लम् नश्रह् १२

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १०३ अक्षर, २७ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अ-लम् नश्रह् ल-क स़द् - र-क ۙ (१) व व-ज़अ्-ना अ़न्-क
विज़्-र-क- ۙ (२) -ल्लज़ी अन्क़-ज़ अह् - र-क ۙ (३)

اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝۴ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝۵ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝۶
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝۷ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝۸ وَكَذَّبَ
بِالْحُسْنٰى ۝۹ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۝۱۰ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا
تَرَدّٰى ۝۱۱ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝۱۲ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝۱۳
فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝۱۴ لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۝۱۵ الَّذِيْ كَذَّبَ
وَتَوَلّٰى ۝۱۶ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝۱۷ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝۱۸
وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۝۱۹ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ
الْاَعْلٰى ۝۲۰ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝۲۱

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ۝۱ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝۲ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝۳ وَلَلْاٰخِرَةُ
خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝۴ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝۵ اَلَمْ
يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۝۶ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝۷ وَوَجَدَكَ
عَآىِٕلًا فَاَغْنٰى ۝۸ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝۹ وَاَمَّا السَّآىِٕلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝۱۰
وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝۱۱

سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَّهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝۱ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝۲ الَّذِيْۤ

★रु० १/१७ आ २१ ★रु० १/१८ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तरह-तरह की है, (४) तो जिस ने (ख़ुदा के रास्ते में माल) दिया और परहेज़गारी की, (५) और नेक बात को सच जाना, (६) उस को हम आसान तरीक़े की तौफ़ीक़ देंगे, (७) और जिस ने कंजूसी की और बे-परवाह बना रहा, (८) और नेक बात को झूठ समझा, (९) उसे सख़्ती में पहुंचाएंगे, (१०) और जब वह (दोज़ख़ के गढ़े में) गिरेगा, तो उस का माल उस के कुछ भी काम न आएगा। (११) हमें तो राह दिखाना है, (१२) और आखिरत और दुनिया हमारी ही चीज़ें हैं, (१३) सो मैं ने तुम को भड़कती आग से डरा दिया। (१४) उस में वही दाखिल होगा, जो बड़ा बद-बख़्त है, (१५) जिस ने झुठलाया और मुंह फेरा, (१६) और जो बड़ा परहेज़गार है, वह (उस से) बचा लिया जाएगा, (१७) जो माल देता है ताकि पाक हो, (१८) और (इस लिए) नहीं (देता कि) उस पर किसी का एहसान (है,) जिस का वह बदला उतारता है, (१९) बल्कि अपने ख़ुदावंदे आला की रज़ामंदी हासिल करने के लिए देता है, (२०) और वह बहुत जल्द ख़ुश हो जाएगा। (२१) ★

९३ सूरः ज़ुहा ११

सूरः ज़ुहा मक्की है और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की रोशनी की क़सम, (१) और रात (की अंधियारी) की जब छा जाए, (२) (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारे परवरदिगार ने न तो तुम को छोड़ा और न (तुम से) नाराज़ हुआ, (३) और आख़िरत तुम्हारे लिए पहली (हालत यानी दुनिया) से कहीं बेहतर है, (४) ओर तुम्हें परवरदिगार बहुत जल्द वह कुछ अता फ़रमाएगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे। (५) भला उस ने तुम्हें यतीम पाकर जगह नहीं दी, (बेशक दी) (६) और रास्ते से अनजान देखा तो सीधा रास्ता दिखाया, (७) और तंगदस्त पाया तो ग़नी कर दिया (८) तो तुम भी यतीम पर सितम न करना, (९) और मांगने वाले को झिड़की न देना, (१०) और अपने परवरदिगार की नेमतों का बयान करते रहना ★ (११)

९४ सूरः इन्शिराह् १२

सूरः इन्शिराह मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) क्या हमने तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया ? (बेशक खोल दिया।) (१) और तुम पर से बोझ भी उतार दिया, (२) जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ रखी थी, (३) और तुम्हारा

★रु. १/१७ आ २१ ★रु. १/१८ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व र-फ़अ्-ना ल-क ज़िक्-रक ط (४) फ़-इन्-न म-अ़ल्-अ़ुस्रि युस्रन् ﻻ (५) इन्-न म-अ़ल्-अ़ुस्रि युस्रा ط (६) फ़इज़ा फ़-रग़्-त फ़न्सब् ﻻ (७) व इला रब्बि-क फ़र्ग़ब् ★ (८)

९५ सूरतुत्तीनि २८

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १६५ अक्षर, ३४ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि ﻻ (१) वतूरि सीनी-न ﻻ (२) व हाज़ल् - ब-लदिल्-अमीन ﻻ (३) ल-क़द् ख़-लक़्-नल्-इन्सा-न फ़ी अह़्सनि तक़्वीम ج (४) सुम्-म र-दद्नाहु अस्फ़ - ल साफ़िलीन ﻻ (५) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून ط (६) फ़मा युकज़्ज़िबु-क बअ् - दु बिद्दीन ط (७) अलैसल्लाहु बि-अह़्कमिल्-ह़ाकिमीन ★ (८)

९६ सूरतुल्-अ़-लक़ि १

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के २६० अक्षर, ७२ शब्द, १९ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

इक़्-रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़् ج (१) ख़-ल-क़ल् - इन्सा-न मिन् अ़-लक़् ج (२) इक़्रअ् व रब्बुकल्-अक्रमु- ﻻ (३) ल्लज़ी अ़ल्ल-म बिल्-क़-लमि ﻻ (४) अ़ल्ल-मल्-इन्सा-न मा लम् यअ्-लम् ط (५) कल्ला इन्नल्-इन्सा-न ल-यत़्ग़ा ﻻ (६) अर्-र - आहुस्तग़्ना ط (७) इन्-न इला रब्बिकर्रुज्आ ط (८) अ-र-ऐ-तल्लज़ी यन्हा ﻻ (९) अ़ब्-दन् इज़ा स़ल्ला ط (१०) अ-र-ऐ-त इन् का-न अ़लल्-हुदा ﻻ (११) औ अ-म-र बित्तक़्वा ط (१२) अ-र-ऐ-त इन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला ط (१३) अ-लम् यअ्-लम् बिअन्नल्ला-ह यरा ط (१४) कल्ला लइल्लम् यन्तहि ۵ ल-नस्फ़ - अ़म् - बिन्नास़ियति ﻻ (१५) नास़ियतिन् काज़िबतिन् ख़ातिअः ج (१६) - फ़ल् - यद्अु नादियः ﻻ (१७)

التين ٩٥ العلق ٩٦   ٤٨٢   عم ٣٠

أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥ إِنَّ
مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝٧ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَب ۝٨   ع ٨ ١٩

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝١ وَطُورِ سِينِينَ ۝٢ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝٣
لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝٤ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ
سَافِلِينَ ۝٥ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ
مَمْنُونٍ ۝٦ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝٧ أَلَيْسَ اللَّهُ
بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝٨   ع ٨ ٢٠

سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ   بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ   هِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢
اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝٣ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤ عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا
لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ كَلَّا إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰ ۝٦ أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ ۝٧ إِنَّ
إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۝٨ أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝٩ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝١٠
أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝١١ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝١٢ أَرَأَيْتَ إِن
كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝١٣ أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝١٤ كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ ۵
لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝١٧

منزل ٧

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज़िक्र बुलंद किया, (४) हां, (हां) मुश्किल के साथ आसानी भी है। (५) (और) बेशक मुश्किल के साथ आसानी भी है, (६) तो जब फ़ारिग़ हुआ करो, तो (इबादत में) मेहनत किया करो, (७) और अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करो। (८) ★

९५ सूरः तीन २८

सूरः तीन मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

इंजीर की क़सम और ज़ैतून की, (१) और तूरे सीनीन की, (२) और इस अम्न वाले शहर की, (३) कि हमने इंसान को बहुत अच्छी सूरत में पैदा किया है। (४) फिर (धीरे-धीरे) उस (की हालत) को (बदल कर) पस्त से पस्त कर दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है, (६) तो (ऐ आदम की औलाद!) फिर तू बदले के दिन को क्यों झुठलाता है? (७) क्या ख़ुदा सब से बड़ा हाकिम नहीं है? (८) ★

९६ सूरः अलक़ १

सूरः अलक़ मक्की है और इसमें १९ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद!) अपने परवरदिगार का नाम ले कर पढ़ो, जिस ने (दुनिया को) पैदा किया, (१) जिस ने इंसान को ख़ून की फुटकी से बनाया, (२) पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा करम वाला है, (३) जिस ने क़लम के ज़रिए से इल्म सिखाया, (४) और इंसान को वे बातें सिखाईं, जिन का उस को इल्म न था,[1] (५) मगर इंसान सरकश हो जाता है, (६) जबकि अपने आप को ग़नी देखता है, (७) कुछ शक नहीं कि (उस को) तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (८) भला तुम ने उस शख़्स को देखा, जो मना करता है। (९) (यानी) एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ने लगता है। (१०) भला देखो तो अगर यह सीधे रास्ते पर हो, (११) या परहेज़गारी का हुक्म करे (तो मना करना कैसा![2]) (१२) और देख तो अगर उस ने दीने हक़ को झुठलाया और उस से मुंह मोड़ा, (तो क्या हुआ?) (१३) क्या उस को मालूम नहीं कि ख़ुदा देख रहा है। (१४) देखो, अगर वह बाज़ न आएगा तो हम (उस की) पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे। (१५) यानी उस झूठे ख़ताकार की पेशानी के बाल। (१६) तो वह अपने यारों की

---

१. हज़रत सल्ल० पर जो वह्य सब से पहले नाज़िल हुई, वही इस सूरः की पहली पांच आयतें हैं। ये आयतें हिरा के ग़ार में नाज़िल हुयीं, जहां आप तश्रीफ़ ले जा कर तंहाई में इबादत किया करते थे। आप फ़रमाते हैं कि जब फ़रिश्ते ने आ कर मुझ से कहा कि पढ़ो तो मैं ने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं ता उस ने मुझे पकड़ कर दबाया, यहां तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो, मैं ने कहा कि मुझे पढ़ना नहीं आता, फिर दोबारा मुझ को दबोचा, यहां तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो। मैं ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। फिर तीसरी बार दबाया, यहां तक कि मैं थक कर चूर हो गया, फिर छोड़ दिया और कहा, 'इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़' और 'मालम्यअलम' तक पहुंचा। इस के बाद आप डर की वजह से कांपते-कांपते हज़रत ख़दीजा के पास आए और कहा कि मुझे लिहाफ़ उढ़ाओ। जब ख़ौफ़ दूर हुआ तो आप ने अपना हाल बयान

(शेष पृष्ठ ९८० पर)

★रु. १/१९ आ ८ ★रु. १/२० आ ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

स-नद्अुज़्ज़बानियः ॥ (१८) क़ल्ला ط ला तुतिअ्-हु वस्जुद् वक़्तरिब् ★ □ (१९)

९७ सूरतुल्-क़द्रि २५

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ११५ अक्षर, ३० शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल-क़द्रि ﺻﻠﮯ (१) व मा अद्रा-क मा लैलतुल - क़द्र ط (२) लैलतुल - क़द्रि ॥ ख़ैरुम् - मिन् अल्फ़ि शह्र् ط ▨ (३) त-नज़्ज़लुल-मलाइकतु वर्रूहु फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् ﺝ (४) सलामुन् ﻗﻒ हि-य ह़त्ता मत्-लअिल्-फ़ज्रि ★ ● (५)

९८ सूरतुल्-बय्यिनति १००

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के ४१३ अक्षर, ९५ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

लम् यकुनिल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि वल्मुश्रिकी-न मुन्फ़क्की-न ह़त्ता तअ्ति-यहुमुल-बय्यिनः ॥ (१) रसूलुम्-मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म्-मुतह्-ह-र-तन् ॥ (२) फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमः ط (३) व मा त-फ़र्रक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्बअ्-दि मा जाअत्हुमुल-बय्यिनः ط (४) व मा उमिरू इल्ला लियअ्-बुदुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ॥ हु-नफ़ा-अ व युक़ीमुस्सला-त व युअ्तुज़्ज़का-त व ज़ालि-क दीनुल-क़य्यिमः ط (५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्किताबि वल्मुश्रिकी-न फ़ी नारि ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा ط उलाइ - क हुम् शर्रुल - बरिय्यः ط (६) इन्नल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्सालिहाति ॥ उलाइ - क हुम् ख़ैरुल - बरिय्यः ط (७) जज़ाउहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु ط ज़ालि-क लिमन् ख़शि-य रब्बः ★ (८)

मु. ख़ि मु ता ख. १८

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝١٨ كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝١٩

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢ لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٣ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٤ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمٰنُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मज्लिस को बुला ले। (१७) हम भी अपने दोज़ख़ के मुवक्किलों को बुलाएंगे। (१८) देखो, उस का कहा न मानना और सज्दा करना और (ख़ुदा का) क़ुर्ब हासिल करते रहना। (१९)★ □

९७ सूरः क़द्र २५

सूरः क़द्र मक्की है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम ने इस (क़ुरआन) को शबे क़द्र में नाज़िल (करना शुरू) किया, (१) और तुम्हें क्या मालूम कि शबे क़द्र क्या है? (२) शबे क़द्र हज़ार महीने से बेहतर है। (३) इस में रूहुल अमीन और फ़रिश्ते हर काम के (इन्तिज़ाम के) लिए, अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते हैं। (४) यह (रात) सुबह के होने तक (अमान और) सलामती है। (५)★ ●

९८ सूरः बय्यिनः १००

सूरः बय्यिनः मदनी है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो लोग काफ़िर हैं यानी अह्ले किताब और मुश्रिक वे (कुफ़्र से) बाज़ रहने वाले न थे, जब तक कि उन के पास खुली दलील न आती, (१) (यानी) ख़ुदा के पैग़म्बर जो पाक पन्ने पढ़ते हैं, (२) जिन में मज़बूत (आयतें) लिखी हुई हैं, (३) और अह्ले किताब जो अलग-अलग (और मुख़्तलिफ़) हुए हैं तो खुली दलील के आने के बाद (हुए हैं) (४) और उन को हुक्म तो यही हुआ था कि अमल के इख़्लास के साथ ख़ुदा की इबादत करें (और यक्सू हो कर) और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और यही सच्चा दीन है। (५) जो लोग काफ़िर हैं (यानी) अह्ले किताब और मुश्रिक, वे दोज़ख़ की आग में (पड़ेंगे और) हमेशा उस में रहेंगे। ये लोग सब मख़्लूक़ से बद-तर हैं। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे तमाम ख़ल्क़त से बेहतर हैं। (७) उन का बदला उन के परवरदिगार के यहां हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा-हमेशा उन में रहेंगे। ख़ुदा उन से ख़ुश और वे उस से ख़ुश। यह (बदला) उस के लिए है, जो अपने परवरदिगार से डरता है। (८)★

---

१. क़ुरआन मजीद एक ही बार नाज़िल नहीं हुआ, बल्कि पारा-पारा नाज़िल हुआ है। पहले-पहल वह शबेक़द्र में नाज़िल हुआ। इस आयत से मालूम होता है कि शबेक़द्र रमज़ान के महीने में है, जैसा कि दूसरी जगह फ़रमाया — 'शह्रु र-म-ज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल क़ुरआन' यह मालूम नहीं कि यह रात किस तारीख़ को होती है, लेकिन सही हदीसों से इतना साबित है कि हज़रत रमज़ान की आख़िरी दहाई में एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे और जितना एहतिमाम इस दहाई में फ़रमाते और में न फ़रमाते। ज़्यादातर तफ़्सीर लिखने वालों का ख़्याल है कि इस रात का अमल हज़ार महीने के अमल से अफ़्ज़ल है।

मु. ख़ि मु ता ख़. १८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

९९ सूरतुज़्-ज़िल्ज़ालि ९३

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के १५८ अक्षर, ३७ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिलअर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा (१) व अख़्-र-जतिलअर्ज़ु अस्क़ालहा
(२) व क़ालल-इन्सानु मा लहा (३) यौमइज़िन् तुहद्दिसु अख़्-बारहा (४)
बि-अन्-न रब्ब-क औह़ा लहा (५) यौमइज़िय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल-
लियुरौ अअ़्-मालहुम् (६) फ़मंय्यअ़्-मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्यरः (७) व
मंय्यअ़्-मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् शर्रंय्यरः (८) ★

الزلزال ٩٩ العٰديٰت ١٠٠ القارعة ١٠١ ٤٨٣ عم ٣٠

فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُۥ (٨)

سُورَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِذَا زُلْزِلَتِ ٱلْأَرْضُ زِلْزَالَهَا (١) وَأَخْرَجَتِ ٱلْأَرْضُ أَثْقَالَهَا (٢) وَقَالَ ٱلْإِنسَٰنُ مَا لَهَا (٣) يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا (٤) بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا (٥) يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ ٱلنَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا۟ أَعْمَٰلَهُمْ (٦) فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ (٧) وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ (٨)

سُورَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

وَٱلْعَٰدِيَٰتِ ضَبْحًا (١) فَٱلْمُورِيَٰتِ قَدْحًا (٢) فَٱلْمُغِيرَٰتِ صُبْحًا (٣) فَأَثَرْنَ بِهِۦ نَقْعًا (٤) فَوَسَطْنَ بِهِۦ جَمْعًا (٥) إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٌ (٦) وَإِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ (٧) وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ ٱلْخَيْرِ لَشَدِيدٌ (٨) أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي ٱلْقُبُورِ (٩) وَحُصِّلَ مَا فِي ٱلصُّدُورِ (١٠) إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌۢ (١١)

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلْقَارِعَةُ (١) مَا ٱلْقَارِعَةُ (٢) وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْقَارِعَةُ (٣) يَوْمَ يَكُونُ ٱلنَّاسُ كَٱلْفَرَاشِ ٱلْمَبْثُوثِ (٤) وَتَكُونُ ٱلْجِبَالُ كَٱلْعِهْنِ ٱلْمَنفُوشِ (٥)

१०० सूरतुल्-आदियाति १४

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १७० अक्षर, ४० शब्द, ११ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वल्आदियाति ज़ब्हन् (१) फ़ल्मूरि-
याति क़द्हन् (२) फ़ल्मुग़ीराति सुब्हन् (३)
फ़-अ-सर्-न बिही नक़्-अन् (४) फ़-व-सत्-न
बिही जम्-अन् (५) इन्नल-इन्सा-न लि-
रब्बिही ल-कनूद (६) व इन्नहू अ़ला
ज़ालि-क ल-शहीद (७) व इन्नहू लिहुब्बिल-
ख़ैरि ल-शदीद (८) अ-फ़ला यअ़्-लमु इज़ा
बुअ़्-सि-र मा फ़िल्क़ुबूरि (९) व हुस्सि-ल
मा फ़िस्सुदूरि (१०) इन्-न रब्बहुम् बिहिम् यौमइज़िल्-ल-ख़बीर ★ (११)

१०१ सूरतुल्-क़ारिअ़ति ३०

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १६० अक्षर, ३५ शब्द, ११ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अल्क़ारिअतु (१) मल्क़ारिअः (२) व मा अद्-रा-क
मल्क़ारिअः (३) यौ-म यकूनुन्नासु कल्फ़राशिल-मब्सूसि
(४) व तकूनुल्जिबालु कल्अ़िह़्निल-मन्फ़ूश (५)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

९९ सूरः ज़िल्ज़ाल ९३

सूरः ज़िलज़ाल मदनी है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन भोंचाल से हिला दी जाएगी, (१) और ज़मीन अपने (अन्दर के) बोझ निकाल डालेगी, (२) और इन्सान कहेगा कि इस को क्या हुआ है? (३) उस दिन वह अपने हालात बयान कर देगी, (४) क्योंकि तुम्हारे परवरदिगार ने उस को हुक्म भेजा (होगा।) (५) उस दिन लोग गिरोह-गिरोह हो कर आएंगे, ताकि उन को उन के आमाल दिखा दिए जाएं। (६) तो जिस ने ज़र्रा भर नेकी की होगी, वह उस को देख लेगा, (७) और जिस ने ज़र्रा भर बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा। (८) ★

१०० सूरः आ़दियात १४

सूरः आदियात मक्की है और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम, जो हांप उठते हैं, (१) फिर पत्थरों पर (नाल) मार कर आग निकालते हैं, (२) फिर सुबह को छापा मारते हैं, (३) फिर उस में गर्द उठाते हैं, (४) फिर उस वक़्त (दुश्मन की) फ़ौज में जा घुसते हैं, (५) कि इंसान अपने परवरदिगार का नाशुक्रा है, (६) और वह इस से आगाह भी है। (७) वह तो माल की सख़्त मुहब्बत करने वाला है। (८) क्या वह उस वक़्त को नहीं जानता कि जो (मुर्दे) क़ब्रों में हैं, वे बाहर निकाल लिए जाएंगे, (९) और जो (भेद) दिलों में हैं, वे जाहिर कर दिए जाएंगे। (१०) बेशक उन का परवरदिगार उस दिन को ख़ूब जानता होगा। (११) ★

१०१ सूरः क़ारिअ़ः ३०

सूरः क़ारिअः मक्की है, और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

खड़खड़ाने वाली, (१) खड़खड़ाने वाली क्या है? (२) और तुम क्या जानो कि खड़खड़ाने वाली क्या है? (३) (वह क़ियामत है,) जिस दिन लोग ऐसे होंगे जैसे बिखरे हुए पतंगे, (४) और पहाड़ ऐसे हो जाएंगे जैसे धुंकी हुई रंग-बिरंग की ऊन, (५) तो जिस के (आमाल के) वज़न भारी

★रु. १/२४ आ ८ ★रु. १/२५ आ ११

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़-अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू (६) फ़हु-व फ़ी अ़ीशतिर्-राज़ियः (७) व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू (८) फ़-उम्मुहू हावियः (९) व मा अद्रा-क मा हियः (१०) नारुन् ह़ामियः ★ (११)

१०२ सूरतुत्तकासुरि १६

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १२३ अक्षर, २८ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

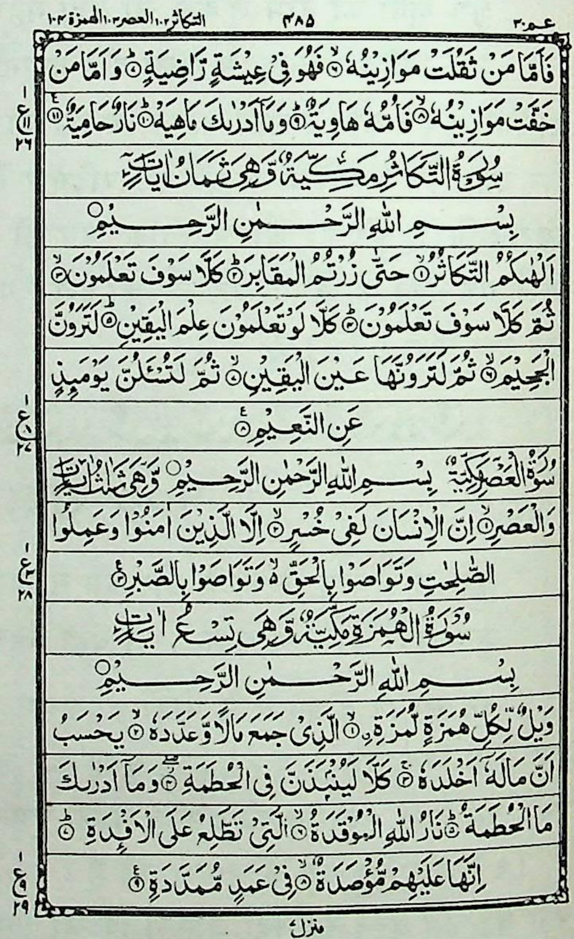
बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अल्हाकुमुत्तकासुरु (१) ह़त्ता ज़ुर्तुमुल्-मक़ाबिर (२) कल्ला सौ-फ़ तअ़्लमून (३) सुम्-म कल्ला सौ-फ़ तअ़्लमून (४) कल्ला लौ तअ़्लमू-न अ़िल्मल्-यक़ीन (५) ल-त - रवुन्नल्-जह़ीम (६) सुम्-म ल-त-र-वुन्नहा अ़ैनल्-यक़ीन (७) सुम्-म लतुस - अलुन्-न यौमइज़िन् अ़निन्नअ़ीम ★ (८)

१०३ सूरतुल्-अ़स्रि १३

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ७४ अक्षर, १४ शब्द, ३ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •



वल्अ़स्रि (१) इन्नल्-इन्सा-न लफ़ी ख़ुस्र (२) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिह़ाति व त-वासौ बिल्ह़क़्क़ि व त-वासौ बिस्सब्रि★ (३)

१०४ सूरतुल्-हु-मज़ति़ ३२

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १३५ अक्षर, ३३ शब्द, ९ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वैलुल्लिकुल्लि हु-म-ज़तिल्-लु-मज़ः (१) अल्लज़ी ज-म-अ़ मालंव्-व अ़द्-द-दहू (२) यह़्सबु अन्-न मा लहू अख़्-ल-दः (३) कल्ला लयुम्बज़न्-न फ़िल्-हु-तमति़ (४) व मा अद्रा-क मल्हु-त-मः (५) नारुल्लाहिल्-मूक़-दतु- (६) -ल्लती तत्तलिअ़ु अ़लल्-अफ़्-इदः (७) इन्नहा अ़लैहिम् मुअ़्-स-दतुन् (८) फ़ी अ़-मदिम्-मुमद्-द-दः★ (९)

★रु० १/२६ आ ११ ★रु० १/२७ आ ८ १/२८ आ ३ ★रु० १/२९ आ ९

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निकलेंगे, (६) वह दिल पसन्द ऐश में होगा, (७) और जिस के वज़न हल्के निकलेंगे, (८) उन के लौटने की जगह हाविया है, (९) और तुम क्या समझे कि हाविया क्या चीज़ है? (१०) (वह) दहकती हुई आग है। (११) ★

१०२ सूरः तकासुर १६

सूर: तकासुर मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(लोगो!) तुम को (माल की) बहुत सी तलब ने ग़ाफ़िल कर दिया, (१) यहां तक कि तुम ने क़ब्रें जा देखीं। (२) देखो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा, (३) फिर देखो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (४) देखो अगर तुम जानते (यानी) यक़ीन का इल्म (रखते, तो ग़फ़लत न करते,) (५) तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे। (६) फिर उस को (ऐसा) देखोगे (कि) ऐनुन् यक़ीन (यक़ीन की आंख) (आ जाएगा), (७) फिर उस दिन तुम से नेमत के (शुक्र के) बारे में पूछ-गछ होगी। (८) ★

१०३ सूरः अ़स्र १३

सूर: अस्र मक्की है और इस में तीन आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अस्र की क़सम, (१) कि इंसान नुक़्सान में है, (२) मगर वे लोग, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और आपस में हक़ (बात) की तल्क़ीन और सब्र की ताकीद करते रहे। (३) ★

१०४ सूरः हु-म-ज़ः ३२

सूर: हु-म-ज़: मक्की है और इस में नौ आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तानों भरे इशारे करने वाले चुग़लख़ोर की ख़राबी है, (१) जो माल जमा करता और उस को गिन-गिन कर रखता है, (२) और ख़्याल करता है कि उस का माल उस की हमेशा की ज़िंदगी की वजह होगा। (३) हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर हुतमा में डाला जाएगा। (४) और तुम क्या समझे कि हुतमा क्या है? (५) वह ख़ुदा की भड़कायी हुई आग है, (६) जो दिलों पर जा लपटेगी, (७) (और) वे उस में बन्द कर दिए जाएंगे, (८) यानी (आग के) लम्बे-लम्बे स्तूनों में। (९) ★

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१०५ सूरतुल्-फ़ीलि १९

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ९४ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अ-लम् त-र कै-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बि-अस्ह़ाबिलफ़ील ط (१) अ-लम् यज्-
अ़ल् कैदहुम् फ़ी तज़्लीलिंव- ۙ (२) व अर्स-ल अ़लैहिम् तैरन् अबाबील ۙ
(३) तर्मीहिम् बिहि़जा-रतिम्-मिन् सिज्जीलिन् ۙصلے (४) फ़-ज-अ़-लहुम्
क़-अ़स्फ़िम-मअ्-कूल ★ (५)

عم ٣٠   ٤٨٦   الفيل ١٠٥ قريش ١٠٦ الماعون ١٠٧ الكوثر ١٠٨

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ط ① اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ
فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ ② وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ ③ تَرْمِيْهِمْ
بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ ④ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ⑤

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيٰتٍ

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ ① اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ②
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ ③ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ ۵ وَّ
اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ④

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ط ① فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۙ ②
وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ط ③ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ ④ الَّذِيْنَ
هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ ⑤ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ ⑥ وَ
يَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ⑦

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيٰتٍ

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ط ① فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ط ② اِنَّ

منزل ٧

१०६ सूरतु क़ुरैशिन् २९

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ७९ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

लि - ईलाफ़ि क़ुरैशिन् ۙ (१)
ईलाफ़िहिम् रिह़्-ल-तश् - शिताइ वस्सैफ़ ج
(२) फ़ल्यअ्-बुदू रब्-ब हाजलबैति- ۙ (३)
ल्लज़ी अत़् - अ़ - महुम् मिन् जूअिंव्- ۙ ۵
व अ-म - नहुम् मिन् ख़ौफ़ ★ (४)

१०७ सूरतुल्-माअ़ूनि १७

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ११५ अक्षर, २५ शब्द, ७ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अ-र-ऐ-तल्लज़ी युकज्ज़िबु बिद्दीन ط (१)
फ़-ज़ालिकल्लज़ी यदुअ़-अ़ुल्-यतीम ۙ (२) व
ला यहु़ज़्ज़ु अ़ला त़आ़मिल् - मिस्कीन ط
(३) फ़वैलुल्-लिलमुस़ल्लीन ۙ (४) अ्ल्लज़ी-न हुम् अ़न् स़लातिहिम्
साहून ۙ (५) अ्ल्लज़ी-न हुम् युराऊ-न ۙ (६) व यम्-अ़ूनल्-माअ़ून ★ (७)

१०८ सूरतुल्-कौ-सरि १५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३७ अक्षर, १० शब्द, ३ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इन्ना अअ़्-तै़नाकल्-कौ-सर ط (१) फ़-स़ल्लि लिरब्बि-क वन्ह़र् ط (२)

★रु. १/३० आ ५ ★रु. १/३१ आ ४ ★रु. १/३२ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१०५ सूरः फ़ील १९

सूरः फ़ील मक्की है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ क्या किया? (१) क्या उन का दांव ग़लत नहीं किया? (किया।) (२) और उन पर झिल्लड़ के झिल्लड़ जानवर भेजे, (३) जो उन पर कंकर की पत्थरियां फेंकते थे, (४) तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भुस। (५) ★

१०६ सूरः क़ुरैश २९

सूरः क़ुरैश मक्की है और इस में चार आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ुरैश के मानूस करने की वजह से, (१) (यानी) उन को जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस करने की वजह से, (२) (लोगों को) चाहिए कि (इस नेमत के शुक्र में) इस घर के मालिक की इबादत करें, (३) जिस ने उन को भूख में खाना खिलाया और ख़ौफ़ से अम्न बख़्शा।[1] (४) ★

१०७ सूरः माऊन १७

सूरः माऊन मक्की है और इस में सात आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम ने उस शख़्स को देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है। (१) यह वही (बद-बख़्त) है जो यतीम को धक्के देता है, (२) और फ़क़ीर को खाना खिलाने के लिए (लोगों को) तर्ग़ीब नहीं देता। (३) तो ऐसे नमाज़ियों की ख़राबी है, (४) जो नमाज़ की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। (५) जो दिखावे का काम करते हैं, (६) और बरतने की चीज़ें (उधार) नहीं देते। (७) ★

१०८ सूरः कौसर १५

सूरः कौसर मक्की है और इस में तीन आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम को कौसर अता फ़रमायी है।[1] (१) तो अपने परवरदिगार के

---

१. हज़रत की बारहवीं पीढ़ी में एक आदमी नज़्र बिन कनाना था। उस की औलाद क़ुरैश में है। ये बैतुल्लाह के ख़ादिम थे और लोग उन का बहुत अदब और एहतराम करते थे। इस सूरः में ख़ुदा क़ुरैश पर अपना एहसान बताता है कि वह जाड़े और गर्मी में तिजारत के लिए सफ़र करते हैं और कोई उन को टोकता नहीं, चैन से खाते-पीते और अम्न से रहते-सहते हैं तो उन को चाहिए कि तौहीद अपनाएं और बुतों की पूजा को छोड़ कर उस के घर के मालिक यानी एक ख़ुदा की इबादत करें। कुछ तफ़सीर लिखने वालों ने लिखा है कि यह सूरः पहली सूरः से मुताल्लिक़ है और उन के नज़दीक इस के मानी यह हैं कि हम ने जो मक्के से हाथियों और हाथी वालों को रौंद (शेष पृष्ठ ९८० पर)

★रु. १/३० आ ५ ★रु. १/३१ आ ४ ★रु. १/३२ आ ७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्-न शानि-अ-क हुवल्-अब्तर ★ (३)

१०९ सूरतुल्-काफ़िरून १८

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ९९ अक्षर, २६ शब्द, ६ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

क़ुल् या अय्युहल्-काफ़िरून (१) ला अअ्-बुदु मा तअ्-बुदून (२) व ला अन्तुम् आ़बिदू-न मा अअ्-बुद (३) व ला अ-न आ़बिदुम्-मा अबत्तुम् (४) व ला अन्तुम् आ़बिदू-न मा अअ्-बुद (५) लकुम् दीनुकुम् वलि-य दीन ★ (६)

११० सूरतुन्नस्रि ११४

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ८१ अक्षर, १९ शब्द, ३ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु (१) व रऐ-तन्ना-स यद्ख़ुलू-न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा (२) फ़सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क वस्तग़्फ़िर्हु ▨ इन्नहू का-न तव्वाबा ★ (३)

१११ सूरतुल्-ल-हबि ६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ८१ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तब्बत् यदा अबी ल-हबिंव्-व तब्-ब (१) मा अग़्ना अ़न्हु मा लुहू व मा क-सब् (२) स-यस्ला नारन् ज़ा-त ल-हबिंव्- صلے (३) منزل वम्-र-अतुहू हम्मालतल्-ह-तबि (४) फ़ी जीदिहा हब्लुम्-मिम्-म-सद् ★ (५)

११२ सूरतुल् इख़्लासि २२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४९ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

क़ुल् हुवल्लाहु अ-हद (१) अल्लाहुस्स-मद (२) लम् यलिद् व लम् यूलद् (३)

شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿٣﴾

سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ﴿١﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ﴿٤﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ﴿٥﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ﴿١﴾ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ﴿٢﴾ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿٣﴾ وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿٤﴾ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ﴿٥﴾

سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَّهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿٢﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ﴿٣﴾

★ रु. १/३३ आ ३ ★ रु. १/३४ आ ६ ▨ व. नबी स. ★ रु. १/३५ आ ३ ★ रु. १/३६ आ ५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के लिए नमाज़ पढ़ा करो और क़ुर्बानी किया करो। (२) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा दुश्मन ही बे-
औलाद रहेगा।[1] (३) ★

१०९ सूरः काफ़िरून १८

सूर: काफ़िरून मक्की है और इस में छः आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर ! इस्लाम के इन मुन्किरों से) कह दो कि ऐ काफ़िरो ! (१) जिन (बुतों)
को तुम पूजते हो, उन को मैं नहीं पूजता, (२) और जिस (ख़ुदा) की मैं इबादत करता हूं, उस की
तुम इबादत नहीं करते, (३) और (मैं फिर कहता हूं कि) जिन की तुम पूजा करते हो, उन की मैं
पूजा करने वाला नहीं हूं। (४) और न तुम उस की बन्दगी करने वाले (मालूम होते) हो, जिस की
मैं बन्दगी करता हूं। (५) तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर। (६) ★

११० सूरः नस्र ११४

सूर: नस्र मदनी है और इस में तीन आयतें और २ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ख़ुदा की मदद आ पहुंची और फ़त्ह (हासिल हो गयी,) (१) और तुम ने देख लिया कि
लोग झुंड के झुंड ख़ुदा के दीन में दाख़िल हो रहे हैं, (२) तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ
तस्बीह करो और उस से मग़्फ़िरत मांगो▨ बेशक वह माफ़ करने वाला है। (३) ★

१११ सूरः ल-हब ६

सूर: ल-हब मक्की है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब क़े हाथ टूटें और वह हलाक हो, (१) न तो उस का माल ही उस के कुछ काम
आया हो और न वह जो उस ने कमाया। (२) वह जल्द भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा। (३)
और उस की जोरू भी जो ईंधन सर पर उठाए फिरती है, (४) उस के गले में मूंज की रस्सी
होगी।[2] (५) ★

११२ सूरः इख़्लास़ २२

सूर: इख़्लास मक्की है और इस में चार आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि वह (ज़ात पाक जिस का नाम) अल्लाह (है) एक है, (१) (वह) माबूदे बरहक़,
बे-नियाज़ है। (२) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा, (३) और कोई उस का हमसर

---

१. अब्तर उस को कहते हैं जिस के मर्द औलाद में से कोई न रहे। जब हज़रत के बेटों का इन्तिक़ाल हो गया तो कुछ काफ़िर कहने लगे कि मुहम्मद अब्तर हो गया, इस के बाद कोई इस का नाम लेने वाला न रहेगा। ख़ुदा ने आप से फ़रमाया कि तुम्हारा बुरा चाहने वाले ही की नस्ल कट जाएगी और आप का नाम आप की उम्मत के ज़रिए से हमेशा के लिए बाक़ी रखा।

२. 'अबू लहब' रिश्ते में हज़रत का चचा था, मगर बड़ा काफ़िर और आप की जान का दुश्मन, उस का नाम तो

(शेष पृष्ठ ९७३ पर)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अ-हद ★ (४)

११३ सूरतुल्-फ़-लक़ि २०

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ७३ अक्षर, २३ शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

क़ुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिल्-फ़-लक़ि (१) मिन् शर्रि मा ख़-लक़् (२)

व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब् (३)

व मिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल्अ़ुक़द् (४)

व मिन् शर्रि ह़ासिदिन् इज़ा ह़-सद ★ (५)

११४ सूरतुन्नासि २१

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ८१ अक्षर, २० शब्द, ६ आयतें और १ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

क़ुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नासि (१) मलिकिन्नासि (२) इलाहिन्नासि (३) मिन् शर्रिल्-वस्वासिल्-ख़न्नासि- (४) -ल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि (५) मिनल्जिन्नति वन्नास ★ (६)

عمّ ٣٠ ٤٨٨ الفلق ١١٣ الناس ١١٤

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ

غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ

شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ

النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

مطبوعہ
راجیل نسیم (آفسٹ) پرنٹنگ پریس سوئیوالان - نئی دہلی ٢

★रु. १/३७ आ ४ ★रु. १/३८ आ ५ ★रु. १/३९ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(साथी) नहीं। (४) ★

११३ सूरः फ़लक़ २०

सूरः फ़लक़ मदनी है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं, (१) हर चीज़ की बुराई से, जो उस ने पैदा की, (२) और अंधेरी रात की बुराई से, जब उस का अंधेरा छा जाए, (३) और गंडों पर (पढ़-पढ़ कर) फूंकने वालियों की बुराई से, (४) और हसद (जलन) करने वाले की बुराई से, जब हसद करने लगे।[१] (५) ★



११४ सूरः नास २१

सूरः नास मदनी है और इस में छः आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं लोगों के परवरदिगार की पनाह मांगता हूं, (१) (यानी) लोगों के हक़ीक़ी बादशाह की, (२) लोगों के माबूदे बर-हक़ की, (३) (शैतान) वस्वसा डालने वाले की बुराई से जो (ख़ुदा का नाम सुन कर) पीछे हट जाता है[२], (४) जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है, (५) (चाहे वह) जिन्नों में से (हो) या इंसानों में से। (६) ★

अब्दुल उज़्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब था, मगर मशहूर इसी कुन्नियत से था, क्योंकि बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत था और हुस्न व जमाल की वजह से उस का चेहरा आग की तरह चमकता था। जब आप को हुक्म हुआ कि अपने क़बीलों को तंबीह करो तो आप ने क़ुरैश को जमा कर के फ़रमाया कि भला अगर मैं तुम को ख़बर दूं कि दुश्मन की फ़ौज सुबह या शाम तुम पर हमला करने वाली है तो तुम इस बात को मान लोगे ? उन्हों ने कहा ज़रूर मानेंगे। आप ने फ़रमाया कि मैं तुम को एक सख़्त अज़ाब से आगाह करता हूं जो तुम पर नाज़िल होने वाला है तो अबू लहब ने कहा कि तुम्हारे हाथ टूटें (यानी तुम हलाक हो) जो तुम ने हम को इसी लिए जमा किया था ? इस के जवाब में यह आयत नाज़िल हुई थी। अबू लहब की जोरू जिस का नाम उम्मे जमील था, उस को भी आप से बड़ा बैर था। उस ने यह तरीक़ा अख़्तियार कर रखा था कि रात को आप के रास्ते में कांटेदार लकड़ियां डाल जाती थी, इसी लिए उस को 'हम्मालतल हतब' फ़रमाया।

१. उस वक़्त उस की टोक लग जाती है।

२. शैतान गुनाह की दावत दे और आप नज़र न आए।

★रु. १/३७ आ ४ ★रु. १/३८ आ ५ ★रु. १/३९ आ ६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

دعائے ماثورہ

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِيْ فِيْ قَبْرِيْ ۚ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِالْقُرْاٰنِ
الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِيْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً ۚ اَللّٰهُمَّ
ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِيْ
تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِيْ حُجَّةً يَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۚ

दुआए मासूर:

अल्लाहुम्-म आनिस् वह्-शती फ़ी क़ब्री अल्लाहुम्मर्-ह़म्नी बिक़ुर्आनिल्-अ़ज़ीमि वज्अ़ल्हु ली इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह़्म-तऩ् अल्लाहुम्-म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिलाव-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वज्अ़ल्हु ली हुज्जतंय्या रब्बल्-आ़लमीन आमीन



दुआए मासूर:

ऐ अल्लाह ! मेरे मरने के बाद मेरी क़ब्र की परेशानी से मुझ को मानूस (अभ्यस्त) करना। इस महान क़ुरआन मजीद (की बरकत) के वसीले से मुझ पर रहम कर और क़ुरआन मजीद को मेरे लिए इमाम (अधिनायक), नूर (प्रकाश), हिदायत (पथ-प्रदर्शक), और रहमत (का साधन) बना। ऐ अल्लाह ! (क़ुरआन मजीद में) जो मैं भूल गया हूं मुझे याद दिला (और) जो मैं नहीं जान पाया वह मुझे सिखला। अमन से रात दिन (क़ुरआन मजीद की) तिलावत करने का नसीब दे और उसको मेरे लिए दलील बना, ऐ दुनिया के पालनहार ! (यह मेरी दुआ क़ुबूल कर।)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह मुराद है कि जिन रास्तों से इन्सान हिदायत की बातों को सुन सकता और समझ सकता है, वे बन्द हैं।

३. इस आयत से मुनाफ़िक़ों का हाल शुरू होता है। मुनाफ़िक़ उस को कहते हैं जो दिल से तो काफ़िर हो और ज़ाहिर में अपने को मोमिन बयान करे। इस तरह के लोग मदीने में थे और काफ़िरों के मुक़ाबले में उन से नुक़्सान पहुंचने का ज्यादा ख़तरा रहता था, इस लिए अल्लाह तआला ने उन के हाल और उन की चाल से मुसलमानों को आगाह फ़रमा दिया, ताकि उन से बचते रहें और उन के धोखे में न आएं।

४. ये लोग मुसलमानों के पास भी आते थे और काफ़िरों के यहां भी जाते थे, तो ऐसी बातें करते जिन से फ़साद पैदा हो, सो जब उन से कहा जाता कि फ़साद की बातें न करो, तो जवाब देते कि हमारी ग़रज़ तो दोनों फ़रीक़ों में सुलह व साज़गारी पैदा करना है। ख़ुदा ने फ़रमाया कि उन के काम फ़साद की वजह हैं और ये यक़ीनी तौर पर फ़साद पैदा करने वाले हैं, लेकिन इन को मालूम नहीं।

५. शैतानों से मुराद उन के सरदार हैं। मुनाफ़िक़ लोग जब मुसलमानों से मिलते तो कहते कि हम तो तुम्हारी तरह मोमिन हैं और जब अपने सरदारों के पास जाते तो कहते, कहां का ईमान, कैसी मुसलमानी ! हम तो मुसलमानों से दिल-लगी करते हैं और अपना ईमान ज़ाहिर कर के उन को मूर्ख बनाते हैं।

६. इस आयत में ख़ुदा मुनाफ़िक़ों की इन बातों के जवाब में फ़रमाता है कि उनसे ख़ुदा हंसी करता है। हंसी से मुराद यहां यह है कि जिस तरह वे देखने में ईमान ज़ाहिर करते हैं और अपने सरदारों से मिल कर यह कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, इसी तरह ख़ुदा दुनिया में उन को पनाह देता और उन के माल व जान को महफ़ूज़ रखता है और वे समझे हुए हैं कि उन के काम उन को नुक़्सान नहीं पहुंचाते, लेकिन क़ियामत के दिन उन को अज़ाब में मुब्तला किया जाएगा।

७. मुनाफ़िक़ कई क़िस्म के थे। कुछ ऐसे थे कि पहले मुसलमान हो गये थे, फिर मुनाफ़िक़ हो गये। इस आयत की मिसाल उन्हीं का नक़्शा खींचती है कि उन्होंने पहले ईमान लाकर रोशनी हासिल की, फिर मुनाफ़िक़ बनकर इस रोशनी को खो दिया और निफ़ाक़ के अंधेरे में पड़ गये यानी उन के दिल अंधे हो गये।

(पृष्ठ ७ का शेष)

२. इस आयत में यह बयान है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा के पैग़म्बर और क़ुरआन मजीद ख़ुदा का कलाम है और कुफ़्फ़ार को चैलेंज किया गया है कि अगर तुम इन बातों को नहीं मानते और समझते हो कि यह किताब ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल नहीं हुई, बल्कि मुहम्मद (सल्लम) ने अपनी तरफ़ से बना ली है, तो इस जैसी एक सूरः तुम भी बना लाओ। इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि क़ुरआन किस लिहाज़ से बे-मिस्ल और चुप कर देने वाला है यानी जैसी उम्दा, साफ़-सुथरी और जानदार इबारत क़ुरआन मजीद की है, ऐसी इबारत किसी से नहीं बन सकती। वे यह भी कहते हैं और इसे उन के दावे की दलील समझना चाहिए कि जिस ज़माने में, जिस का ज्यादा प्रचार होता था, उस वक्त के पैग़म्बर को उसी क़िस्म का मोजज़ा दिया जाता था। चूंकि क़ुरआन मजीद के उतरने के ज़माने में अरब में जानदार और साफ़-सुथरी ज़ुबान का बहुत चर्चा था, इस लिए ख़ुदा ने ख़ात-मुन्नबीयीन (नबियों में आख़िरी नबी) को क़ुरआन की ज़ोरदार और साफ़-सुथरी ज़ुबान का ऐसा मोजज़ा बख़्शा कि बड़े-बड़े नामी और माहिर शायर और ख़तीब उस के मुक़ाबले में आजिज़ हो गये। कुछ ने कहा कि क़ुरआन अपनी हकीमाना हिदायतों के लिहाज़ से मोजिज़ (चुप कर देने वाली) है। कुछ इस को रूहानियत के एतबार से मोजिज़ मानते हैं, बहरहाल इस में आदाब हैं, अख़्लाक़ हैं, समाजी ज़िंदगी गुज़ारने का बेहतरीन तरीक़ा है, नफ़्स को संवारने की बात है, सियासत के क़ानून हैं, मुल्क का इंतिज़ाम चलाने के क़ायदे हैं, अदब व इंसाफ़ है, कमाई व व्यापार है, हुक़ूक़ हैं, इबादतें हैं, बराबरी है, भाईचारा है, नर्मी है, रियायत है, ख़ैरख़्वाही है, नसीहत है, ख़ुदा की हस्ती

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और वह्दानियत है, ग़रज़ इसमें कमाल दर्जे की इंसान की हालत की इस्लाह है और कुछ शक नहीं कि वह क्या साफ़-सुथरी ज़ोरदार ज़ुबान के लिहाज़ से और क्या हकीमाना हिदायतों और रूहानियत के, बे-मिसाल व बेनज़ीर है ? और कोई आदमी इस क़िस्म की किताब बनाने की क़ुदरत नहीं रखता। इसी वजह से दूसरी जगह इर्शाद हुआ है, 'क़ुल ल-इनिज-त-म-अतिल इन्सु वल जिन्नु अला अय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल क़ुरआनि ला यातू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ्ज़ुहुम लि बअ्ज़िन ज़हीर०' (कह दीजिए, अगर तमाम जिन्न व इंसान इस क़ुरआन जैसा बना लाने पर जमा हो जाएं, तो वे इस जैसा नहीं ला सकते, चाहे वे एक दूसरे के पुश्त-पनाह ही क्यों न हों।)

३. क़ुरआन में मुश्रिकों और उनके झूठे माबूदों की मिसालें कुछ आयतों में इस तरह बयान हुई हैं कि 'जो लोग ख़ुदा को छोड़ कर औरों को कर्ता-धर्ता बनाते हैं, उनकी मिसाल मकड़ी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर बनाती है और कुछ शक नहीं कि तमाम घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर होता है, काश ये इस बात को जानते।' दूसरी आयत में है, 'लोगो ! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे इस (काम) के लिए सब जमा हो जाएं और अगर उनसे मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाए तो उसे उससे छुड़ा नहीं सकते। तालिब और मतलूब (यानी आबिद और माबूद) दोनों गये गुज़रे हैं।' काफ़िर लोग ये मिसालें सुनते तो कहते कि ऐसी छोटी और मामूली चीज़ों की मिसालें बयान करना ख़ुदा की शान के ख़िलाफ़ है। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ख़ुदा मच्छर या जो चीज़ें इससे बड़ी हैं, उनकी मिसालें बयान करने से शर्माता नहीं। इन चीज़ों को पैदा भी तो उसी ने किया है और जब पैदा करने में उसे शर्म नहीं तो उनकी मिसाल में क्यों शर्म हो ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

२. शैतान जिन्न की क़िस्म से था, बड़ी इबादत किया करता था और बड़ा इल्म रखता था। इबादत की ज़्यादती की वजह से फ़रिश्तों का दर्जा मिल गया था। यही वजह है कि जब अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करें तो इस ख़िताब में वह भी दाख़िल था। चूंकि उस की पैदाइश आग से हुई थी और आदम की मिट्टी से, और आग को मिट्टी पर बरतरी है, इस के अलावा वह इबादत करने वाला और इल्म रखने वाला भी बड़ा था, इस लिए शेख़ी में आ गया और आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न किया। ख़ुदा ने इस घमंड-ग़ुरूर की वजह से उसे मर्दूद (धुत्कारा हुआ) कर दिया।

(पृष्ठ १५ का शेष)

उस हुक्म के ख़िलाफ़ करते और एक दिन पहले दरिया के किनारे गढ़े खोद कर उस में पानी भर देते थे और जब मछलियां उनमें जमा हो जातीं, तो निकालते और कहते कि यह शिकार जुमा का हैं। इस हीले की वजह से बन्दर बना दिये गये।

२. तफ़्सीर लिखने वाले लिखते हैं कि बनी इस्राईल में एक बड़ा मालदार शख़्स था, मगर बे-औलाद। उस का वारिस उस का एक भतीजा था। उस ने माल के लोभ की वजह से उस को क़त्ल कर डाला। जो लोग इस तरह क़त्ल किया करते थे, बड़ी एहतियात से काम लिया करते थे। उस ने भी ऐसे तरीक़े से उसे क़त्ल किया कि क़ातिल का कुछ पता नहीं मिलता था। लोग इस बारे में लड़ने-झगड़ने लगे, तो किसी ने कहा कि तुम में ख़ुदा के पैग़म्बर मौजूद हैं, उन से रुजूअ् करो। उन्होंने मूसा अलै० से यह कैफ़ियत बयान की। आप ने बैल ज़िब्ह करने का हुक्म दिया। अजब नहीं कि क़ातिल को इस बात का ख़ौफ़ हो गया हो कि कहीं राज़ न खुल जाए, इस लिए इस से पहले कि बैल के बारे में हुज्जतें करें, यह बात कही कि क्या आप इस से हंसी करते हैं, क्योंकि हम पूछते हैं कि क़ातिल कौन है ? आप कहते हैं कि बैल ज़िब्ह करो और यह एक बिल्कुल बे-मुनासिब बात है। मूसा अलै० ने फ़रमाया

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कि मैं हंसी नहीं करता, बल्कि हक़ीक़त तो यह है कि वह बात कहता हूं, जिस को ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है, तो उन्होंने बैल की ख़ूबियां मालूम करने में कई तरह की बातें कीं। आख़िरकार उन्होंने उस को ज़िब्ह किया, तो हुक्म हुआ, उस का कोई-सा टुकड़ा मक़्तूल को मारो। उस के मारने से मक़्तूल ज़िंदा हो गया और उस से पूछा गया कि तुझ को किस ने मारा था? तो उस ने क़ातिल का नाम ले दिया। इस क़िस्से से यह ज़ाहिर करना मक़्सूद है कि जिस तरह ख़ुदा ने उस मक़्तूल को तुम्हारी आंखों के सामने ज़िंदा कर दिया, उसी तरह वह क़ियामत के दिन तमाम मुर्दों को उठा खड़ा करेगा और यह उस को कुछ मुश्किल नहीं।

(पृष्ठ १७ का शेष)

ऐसी बातें मुसलमानों को क्यों बताया करते हो? वे उन की सनद से तुम को क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने इल्ज़ाम देंगे। ख़ुदा ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ों का यह ख़्याल ग़लत है कि उन के अपने बताने से हमारे यहां उन पर इल्ज़ाम लगेगा, बल्कि हम तमाम बातों को, जो ये छिपे या खुले तौर पर करते हैं, जानते हैं और ख़ुदा ही उन से पूछ लेंगे कि हमारी नाफ़रमानी क्यों करते रहे?

३. यहूदी कहते थे कि हम ने चालीस दिन बछड़े की पूजा की थी, सो उतने ही दिन हम को दोज़ख़ का अज़ाब होगा और किसी और अमल की वजह से हम ज़्यादा अज़ाब नहीं पाएंगे। ख़ुदा ने इस क़ौल की तर्दीद (खंडन) की और फ़रमाया कि क्या ख़ुदा ने तुम से वायदा किया है कि तुम कुछ दिन से ज़्यादा दोज़ख़ में न रहोगे, हालांकि तुम्हारे अमल ऐसे हैं कि हमेशा जहन्नम की आग में जलते रहो।

(पृष्ठ ५६१ का शेष)

कहा था, फिर उस ने सवारी का अगला पांव दबाया, तो मैं उस पर सवार हो गयी और वह मेरी सवारी की बाग हाथ में ले कर चला, यहां तक कि हम लश्कर में जा पहुंचे और उस वक़्त ठीक दोपहर थी। फिर मेरे बारे में जो कुछ अफ़वाहें फैलायी गयीं, फैलायी गयीं और जो हलाक हुआ, सो हुआ।

इस तूफ़ान उठाने में जिस ने सब से बड़ा हिस्सा लिया, यह अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था, इस के बाद हम मदीना आए और वहां आ कर मैं महीने भर बीमार रही। लोग मेरे बारे में तज़्किरे करते थे, लेकिन मुझ को कुछ ख़बर न थी। अलबत्ता मुझे एक बात से शक होता था कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ पर वह लुत्फ़ व तवज्जोह नहीं फ़रमाते थे, जो पहले मेरी बीमारी के ज़माने में फ़रमाया करते थे। अब जो तशरीफ़ लाते तो सलाम करने के बाद सिर्फ़ इतना पूछते कि तुम्हारा हाल कैसा है। इस से मुझे एक तरह का शुब्हा तो होता, लेकिन बोहतान लगाने वालों के बोहतान व शरारत की बिल्कुल ख़बर न थी। इस हालत में मैं बहुत कमज़ोर हो गयी। एक रात जो ज़रूरत पूरी करने बाहर निकली, तो मिस्तह की मां मेरे साथ थी। इत्तिफ़ाक़ से उस का पांव लड़खड़ाया तो उस ने कहा, 'मिस्तह हलाक हो।' मैं ने कहा तुम ऐसे शख़्स को बद-दुआ देती हो, जो बद्र में शरीक हुआ। उस ने कहा, क्या तुम ने नहीं सुना कि क्या बोहतान लगाया है? मैं ने कहा, नहीं, तुम बताओ कि उस ने क्या कहा है? तो उस ने पूरा माजरा बयान किया। उस को सुन कर मुझे बहुत रंज हुआ। एक तो मैं पहले ही बीमार थी। यह हालत सुन कर रंज पर रंज हुआ। जब मैं लौट कर अपने घर आयी, तो जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और मेरा हाल पूछा। मैं ने कहा, अगर आप इजाज़त बख़्शें तो मैं अपने मायके चली जाऊं। मेरा मतलब यह था कि वहां जा कर इस ख़बर की यक़ीनी मालूमात करूं। आप ने इजाज़त दे दी और मैं अपने मां-बाप के पास चली गयी। वहां मैं ने अपनी मां से पूछा कि लोग क्या तज़्किरा करते हैं? उन्हों ने कहा कि बेटा! कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है, तुम कुछ ख़्याल न करो। इस जवाब से मेरा दिल मुत्मइन न हुआ और मैं रात भर रोती रही। उधर जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य आने में बहुत देर हो गयी तो आप ने मश्विरा लेने के लिए हज़रत अली बिन अबी तालिब और उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया। उसामा ने तो यह कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! वह आप की

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बीवी हैं और हम को उन के बारे में भलाई के सिवा कुछ नहीं मालूम। रहे अली बिन अबी तालिब, उन्हों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ख़ुदा ने आप पर तंगी नहीं की, औरतें और बहुत हैं। अगर आप लौंडी यानी बरीरा रज़ि० से मालूम फ़रमाएंगे, तो वह सच-सच बयान कर देंगी। आप ने बरीरा रज़ि० को बुला कर मालूम किया, तो उस ने कहा कि क़सम है उस ज़ात की! जिस ने आप को हक़ दे कर भेजा है, मैं ने कोई ऐसी बात नहीं देखी कि इस का उन पर ऐब लगाऊं। वह तो एक सीधी-सादी और भोली-भाली नव-उम्र लड़की है। यह सुन कर आप उसी दिन ख़ुत्बा पढ़ने को खड़े हुए और फ़रमाया कि उस शख़्स के मुक़ाबले में, जिस की वजह से मुझे मेरे अह्ल के मामले में इतनी तक्लीफ़ पहुंची है, कौन मेरी मदद करता है, तो साद बिन मुआज़ अंसारी खड़े हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप की मदद करता हूं और वह शख़्स औस क़बीले से है, तो हम उस की गरदन मारेंगे और अगर भाइयों या ख़ज़रज क़बीले से है तो आप जो इर्शाद फ़रमाएंगे, हम उसे पूरा करेंगे। फिर साद बिन उबादा खड़े हुए। यह ख़ज़रज क़बीले के सरदार थे, थे तो नेक आदमी, लेकिन हमीयत ने जोश मारा तो साद बिन मुआज़ से कहने लगे कि तुम ने ग़लत कहा। अगर वह शख़्स तुम्हारी जमाअत से है, तो मैं भी पसन्द नहीं करता कि क़त्ल किया जाए, तो उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० जो साद बिन मुआज़ रज़ि० के चचेरे भाई हैं, खड़े हुए और साद बिन उबादा रज़ि० से कहने लगे कि तुम ने झूठ कहा। ख़ुदा की क़सम! हम उस को ज़रूर क़त्ल कर डालेंगे। तुम मुनाफ़िक़ हो कि मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से झगड़ते हो। फिर दोनों क़बीले औस और ख़ज़रज मारे ग़ुस्से के खड़े हो गये और क़रीब था कि उन में लड़ाई और हाथापाई हो जाए, मगर प्यारे नबी सल्ल० ने उन के जोश को ठंडा किया और लड़ाई होने से रुक गयी। हां, तो मेरे रोने का यह हाल था कि मेरे मां-बाप सोचते थे कि रोना मेरे कलेजे को फाड़ कर रहेगा। इसी बीच एक दिन दोनों मेरे पास बैठे थे, और मैं रो रही थी कि अंसार की एक औरत मेरे पास आयी और वह भी बैठ कर मेरे साथ रोने लगी। अभी हम रो ही रहे थे कि रसूले ख़ुदा सल्ल० तश्रीफ़ लाए और सलाम कर के बैठ गये। जब से लोगों ने मेरे बारे में वह कहा जो कहा, आप मेरे पास नहीं बैठते थे और आप पर मेरी शान में कुछ वह्य नहीं हुई थी। जब आप बैठ गये तो ख़ुत्बा पढ़ा और फ़रमाया, ऐ आइशा! तुम्हारे बारे में ऐसी बात मुझ तक पहुंची है, अगर तुम बरी हो, तो बहुत जल्द ख़ुदा तुम्हारा बरी होना ज़ाहिर कर देगा और अगर तुम से गुनाह हुआ है, तो ख़ुदा से बख़्शिश मांगो और उस की तरफ़ रुजूअ हो, क्योंकि बन्दा जिस वक़्त अपने गुनाह का इक़रार करता और तौबा कर लेता है, तो ख़ुदा भी उस पर रुजूअ फ़रमाता और उस की तौबा क़ुबूल कर लेता है। जब आप बातें ख़त्म कर चुके, तो मेरे आंसू थम गये, यहां तक कि एक क़तरा भी आंख से नहीं निकलता था। फिर मैं ने अपने बाप से कहा कि आप मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जवाब दे दीजिए। उन्हों ने कहा, मैं नहीं जानता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहूं। फिर मैं ने अपनी मां से कहा कि आप जवाब दे दीजिए। उन्हों ने भी यही कहा कि ख़ुदा की क़सम! मैं नहीं जानती कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहूं। फिर मैं ने ख़ुद ही कहा, हालांकि मैं एक नव-उम्र लड़की थी और क़ुरआन भी बहुत-सा नहीं पढ़ा था कि जो क़िस्सा आप ने सुना है, वह मुझे मालूम हो गया है और यह भी कि आप उसे बावर कर चुके हैं, लेकिन अगर मैं कहूं कि मैं बरी हूं और ख़ुदा ख़ूब जानता है कि मैं बरी हूं तो आप उस को सच नहीं समझेंगे और अगर इस का इक़रार कर लूं हालांकि ख़ुदा जानता है कि मैं उस से बरी हूं, तो आप उस को मना लेंगे, सो ख़ुदा की क़सम! मैं वही बात कहती हूं, जो यूसुफ़ के बाप ने कही थी कि 'फ़सब्रुन जमील वल्लाहुल मुस्तआनु अला मा तसिफ़ून०' फिर मैं वहां से उठ कर अपने बिस्तर पर आ लेटी और मैं यक़ीन करती थी कि चूंकि मैं बरी हूं, इस लिए ख़ुदा ज़रूर मेरे बरी होने का एलान फ़रमायेगा, लेकिन मैं यह ख़्याल नहीं करती थी कि मेरी शान में क़ुरआन की आयतें नाज़िल होंगी, क्योंकि मैं अपनी शान को इस से कमतर समझती थी कि ख़ुदा मेरे बारे में अपना कलाम नाज़िल फ़रमाएगा, जो हमेशा पढ़ा जाएगा, अल-बत्ता उम्मीद ज़ाहिर करती थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोई ख्वाब देख लेंगे, जिस में ख़ुदा मेरा बरी होना जाहिर फ़रमाएगा। सो ख़ुदा की क़सम ! अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज्लिस से तश्रीफ़ भी नहीं ले जाने पाए थे कि ख़ुदा ने आप पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया और वह्य नाज़िल होते वक़्त जिस तरह आप पसीना-पसीना हो जाते थे, उसी तरह उस वक़्त आप के मुबारक जिस्म से मोतियों की तरह पसीने के क़तरे टपकने लगे। जब वह हालत दूर हो गयी तो आप का चेहरा खिल उठा और पहला जुम्ला जो आप की मुबारक ज़ुबान से निकला, वह यह था कि ऐ आइशा रज़ि० ! ख़ुश हो जाओ, ख़ुदा ने तुम्हें बरी क़रार दे दिया है। जब ख़ुदा ने हज़रत आइशा के बरी किए जाने में 'इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल इफ़्कि अुस्बतुम मिन्कुम' से दस आयतें नाज़िल कीं, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मैं आगे मिस्तह को कुछ ख़र्च नहीं दूंगा। मिस्तह हज़रत अबूबक्र रज़ि० के अज़ीज़ों में थे और ग़रीब थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़र्च से उन की मदद किया करते थे, लेकिन इत्तिफ़ाक़ से इस बोहतान के तज़्किरे में वह भी शरीक हो गये थे। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने क़सम खायी कि वह मिस्तह को ख़र्च नहीं देंगे, तो ख़ुदा ने आयत 'व ला यअ्तलि उलुल फ़ज़्लि मिन्कुम' नाज़िल फ़रमायी। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पहले ही की तरह ख़र्च देना जारी कर दिया और कहने लगे कि अल्लाह की क़सम ! मैं इस को ख़र्च देने से कभी हाथ न रोकूंगा।

(पृष्ठ ८१३ का शेष)

ग़लबा हासिल करें या जान ही दे दें।

चुनांचे साथियों को हुक्म दिया कि ख़ुदा का नाम ले कर चल दो। फिर वहां से रवाना हुए और मुरार की घाटी में से हो कर हुदैबिया के परले सिरे जा उतरे। वहां आप के पास क़ुरैश के कई आदमी एक-एक कर के आते रहे। आप उन से यही फ़रमाते रहे कि हम तो सिर्फ़ काबा की ज़ियारत के लिए आए हैं, लड़ाई लड़ने नहीं आए। वे लोग जो बातें यहां सुनते थे वहां जा कर कह देते थे। आख़िर में आप ने अपनी तरफ़ से हज़रत उस्मान रज़ि० को क़ुरैश के पास यह पैग़ाम दे कर भेजा कि हम लड़ने नहीं आए, ख़ाना-ए-ख़ुदा की ज़ियारत करने को आए हैं, अभी आप वापस नहीं आए थे कि यहां यह अफ़वाह उड़ गयी कि आप क़त्ल कर दिए गए हैं। यह ख़बर सुन कर जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लड़ाई का इरादा करना पड़ा और इसी इरादे से आप ने मुसलमानों से बैअत ली, जिस को 'बैअतुर्रिज़्वान' कहते हैं। उधर कुफ़्फ़ार को जो यहां के हालात मालूम हुए, तो वह जोश व ख़रोश हल्का पड़ गया और उन्हों ने सुहैल बिन अम्र को हज़रत सल्ल० के पास समझौते के लिए रवाना किया और समझौते की शर्तें यह क़रार दीं कि आप अब के बे उमरा किए वापस चले जाएं, अगले साल उमरे को आएं और सिर्फ़ तीन दिन ठहरें और तलवारों के सिवा कोई हथियार साथ न लाएं और उन को भी म्यान से न निकालें।

शर्तें हज़रत सल्ल० ने मंज़ूर फ़रमा लीं और सुलहनामा तैयार होने लगा, तो आप ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि लिखो, 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' तो सुहैल बोला, हम नहीं जानते 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' क्या है, 'बिस्मिकल्लाहुम-म' लिखो। फिर आप ने फ़रमाया लिखो 'मिम मुहम्मदिर्रसूलुल्लाह' तो कहा कि हम अगर इस बात को मान लेते कि आप ख़ुदा के रसूल हैं, तो आप की पैरवी ही न अपना लेते ? अपने वालिद का नाम लिखवाइए, तो आप ने फ़रमाया, लिखो, 'मिम मुहम्मदिब्नि अब्दुल्लाह' और एक शर्त कुफ़्फ़ार ने यह की कि जो शख़्स आप की तरफ़ से हमारे पास जाए, हम उसको वापस न करेंगे और जो हमारी तरफ़ से आपके पास जाए, आप उस को वापस कर दें। इस समझौते की जो मसलहत थी, उस को तो जनाब रसूले ख़ुदा ही ख़ूब समझते थे, लेकिन जोशीले साथियों को सुलह की बातें बहुत बोझ मालूम हुयीं और सख़्त रंजीदा हुए और इस पर ख़्वाब का मामला उन को बे-दिल किए देता था। वे यह समझते थे कि इसी साल उमरा करेंगे, मगर जाते हैं नाकाम व ना-मुराद। इसी बीच एक ना-ख़ुशगवार वाक़िआ पेश आया कि अभी सुलहनामा लिखा ही जा रहा था कि अचानक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अबू जुन्दल बिन सुहैल बिन अम्र, पैरों में ज़ंजीर पड़ी हुई, कुफ़्फ़ार में से भाग कर पास आ मौजूद हुए, तो सुहैल ने कहा कि जिन लोगों के बारे में मैं आप से समझौता करता हूं, उन में यह पहला शख्स है, इस को आप मेरे हवाले कर दीजिए। आप ने फ़रमाया कि अभी तक सुलहनामा मुकम्मल नहीं हुआ। उस ने कहा कि मामला उस के आने से पहले तै हो चुका है। आप ने फ़रमाया, हां, यह सच है। फिर सुहैल ने उठ कर अबू जुन्दल का गरेबान पकड़ लिया और अबू जुन्दल धाड़ें मार-मार कर रोने और कहने लगे कि मुसलमानो ! तुम मुझे मुश्रिकों के हवाले क्यों करते हो ? ये तो मुझे मेरे दीन से हटा देंगे। हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, अबू जुन्दल ! सब्र कर और ख़ुदा से अपने बदले की उम्मीद रख, ख़ुदा तेरी मुश्किलों का हल करने वाला है। हम तुझ को हरगिज़ वापस न देते, लेकिन हम इन लोगों से इस बात का अह्द कर चुके हैं और हम अह्द तोड़ना नहीं चाहते। बहरहाल ये बातें मुसलमानों पर बहुत बोझ रहीं और इन्हों ने उन को बड़ा दुखी किया, लेकिन यह समझौता ही था, जो तमाम कामियाबियों की तम्हीद साबित हुआ। इस के बाद वही बात हो गयी—

जिधर रुख़ किया, सल्तनत ज़ेरे फ़रमां,
जिधर आंख उठायी ममालिक मुसख़्ख़र ॥

(पृष्ठ ९६१ का शेष)

फ़रमाया। ख़दीजा ने आप को तसल्ली दी और वरक़ा बिन नौफ़ुल (अपने चचेरे भाई) के पास ले गयीं। ये बूढ़े शख्स जाहिलियत के ज़माने में ईसाई हो गये थे। उन्हों ने आप से यह माजरा सुना तो कहा कि यह वही नामूस है, जो ईसा पर उतरा था और ख़ुदा ने आप को पैग़म्बर किया है और यह भी कहा, काश मैं जवान होता और जिस वक़्त आप की क़ौम आप को वतन से निकालती, उस वक़्त तक ज़िंदा रहता। आप ने पूछा, क्या वे मुझ को निकाल देंगे ? उस ने कहा, हां, जो शख्स ऐसी चीज़ लाया करता है जो आप लाए हैं, लोग उस के दुश्मन हो जाया करते हैं। अगर मैं उस वक़्त तक जीता रहूंगा तो तुम्हारी बहुत मदद व हिमायत करूंगा। मगर उस के थोड़े ही अर्से के बाद वह इन्तिक़ाल फ़रमा गये और जी की आरज़ू जी ही में ले गये।

२. यह मतलब भी हो सकता है कि अगर यह मना करने वाला शख्स सीधे रास्ते पर होता और परहेज़गारी की बातें सिखाता तो क्या अच्छा होता। तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि मना करने वाले शख्स से मुराद अबू जह्ल है, जो नमाज़ पढ़ते वक़्त आप को देखता, तो चिढ़ाता। ख़ुदा ने फ़रमाया कि क्या यह नहीं जानता कि ख़ुदा उस के कामों को देख रहा है और अगर यह ऐसी गुस्ताख़ियों से बाज़ न आएगा, तो हम उस को घसीट कर जहन्नम में दाख़िल कर देंगे। कहते हैं कि दुनिया में भी उस को यह सज़ा मिली कि बद्र की लड़ाई में मारा गया और घसीट कर गढ़े में डाल दिया गया।

(पृष्ठ ९६९ का शेष)

कर हलाक किया, तो इस लिए कि क़ुरैश जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस हो कर अपने शहर में अम्न व अमान से रहें।

२. बहुत-सी हदीसें हैं, जिनसे साबित होता है कि कौसर बहिश्त की एक नहर का नाम है जो हज़रत सल्ल० को अता हुई है। हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्ल० को ऊंघ आ गयी, फिर सर उठा कर मुस्कराए और मुस्कराने की यह वजह बयान फ़रमायी कि अभी मुझ पर एक सूरः नाज़िल हुई है और फिर यह सूरः पढ़ी और फ़रमाया कि तुम जानते हो कि कौसर क्या चीज़ है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा और रसूल ही जानें। फ़रमाया, वह एक नहर है जो ख़ुदा ने मुझ को बहिश्त में दी है, इस में ख़ैरे कसीर (बड़ी भलाई) है।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क़ुरआन ख़त्म करने के बाद की दुआ

अल्लाह बुलन्द और अज़मत (बड़ा दर्जे) वाले ने सच्चा कलाम नाज़िल (उतारा) किया और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो बहुत ही इज्ज़त और इकराम वाले नबी हैं, उन्होंने सच सच हम तक पहुंचा दिया। हम सब उसके सच्चा होने की गवाही देते हैं। ऐ हमारे रब ! तू इस क़ुरआन की तिलावत (पाठ) हम से क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है।

ऐ अल्लाह ! तू हमें क़ुरआन मजीद के हर एक हुरूफ़ के बदले में ईमान की लज़्ज़त (मज़ा) और मिठास अता फ़रमा (दे) और क़ुरआन मजीद के हर मक़ाम (जगह) के हर हिस्सा में से तिलावत करने की हम को जज़ाए ख़ैर (अच्छा बदला) अता फ़रमा। ऐ अल्लाह हर (अलिफ़) के पढ़ने पर हमें उलफ़त (मुहब्बत) अता फ़रमा और (बा) के सबब बरकत अता फ़रमा और (ता) के पढ़ने पर हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा और (सा) के हर्फ़ पर हमें सवाब अता फ़रमा और (जीम) के पढ़ने पर हमें जमाल (ख़ूबसूरती) अता फ़रमा और (हा) के अदा करने पर हिकमत अता फ़रमा और हर्फ़ (ख़ा) के पढ़ने पर हमें ख़ैर (भलाई) से नवाज़ दे और (दाल) के अदा करने (पढ़ने) पर हमें दलील अता कर और हर्फ़ (ज़ाल) के पढ़ने पर हमें ज़िक्र(याद) की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हर्फ़ (रा) पर हमें अपनी रहमत से नवाज़ दे और (ज़ा) पर हमें साफ़ सुथरापन अता कर और (सीन) से हम में सआदत मन्दी (नेक बख़्ती) पैदा फ़रमा और (शीन) के पढ़ने पर शिफ़ा (तन्दुरुस्ती) अता फ़रमा और (सा़द) पर हमें सच्चा सादिक़ (सच बोलने वाला) बना दे और (ज़ाद) से हमें रोशनी में चला दे और (तो) से हमें ताज़गी अता फ़रमा और (जो) से हमें कामयाब कर और (अ़ैन) से हमें इल्म (ज्ञान) अता फ़रमा और (ग़ैन) से माल की कुशादगी अता फ़रमा और (फ़ा) से फ़लाह (निजात) और फ़तह (कामयाबी) अता फ़रमा और (क़ाफ़) से हमें अपनी क़ुर्बत (नज़दीकी) अता फ़रमा और (काफ़) हमें इकराम (अच्छाई) की ज़िन्दगी अता फ़रमा और (लाम) से हम पर लुत्फ़ व इनायत (मेहरबानी) की बारिश कर दे और (मीम) के बदले में हमें अच्छी नसीहत पर चला दे और (नून) से हम पर अपने नूर की किरनों को नुज़ूल फ़रमा और हर्फ़ (वाव) से हमें इत्तफ़ाक व इत्तहाद की बरकत से नवाज़ दे और (हा) के बदले हमें हिदायत (सीधी राह) पर चला दे और क़ुरआन मजीद में हर जगह तिलावत में आये हुये (या) की बरकत से हम को यक़ीने मुहकम (पक्का यक़ीन) अता फ़रमा।

ऐ अल्लाह ! हमें तू अज़मत (बुज़ुर्गी) वाले क़ुरआन मजीद की बरकत से ख़ूब नफ़ा अता फ़रमा और हर आयत की दानिश मन्दाना (बुद्धिपरख) नसीहत से हमारे दरजात में बुलन्दी अता फ़रमा और हमारे इस पढ़ने पढ़ाने को क़ुबूल फ़रमा। क़ुरआन मजीद की तिलावत के मौक़े पर हम से जो ख़ता (ग़लती) हो गई हो और भूल चूक हुई हो उसे माफ़ कर दे, क़ुरआन पढ़ते वक़्त किसी लफ़्ज़ में उस के ठिकाने से हट कर ग़लती की हो तो उसे माफ़ कर दे या कोई हर्फ़ आगे पढ़ लिया, या आगे का पीछे पढ़ लिया, या कोई हम से ज्यादती हुई, या पढ़ने में कमी हुई वह सब हम को माफ़ फ़रमा और तूने जो कलाम नाज़िल फ़र्माया (उतारा) उस के खुलासे में ग़लती करने से हम को बचा ले, हर तरह के शक शुब्हा और भूल चूक से हमें बचा ले, चाहे नामुनासिब

आवाज़ से पढ़ने में आ गया हो, या क़ुरआन की तिलावत में हम से उजलत (जल्द बाज़ी) हो गई हो, या सुस्ती सी हो या कहीं तेज़ी से गुज़र गये हों या पढ़ते वक़्त हमारी ज़ुबान लड़खड़ा गई हो, तो ऐसी तमाम भूल चूक से दर गुज़र फ़रमा।

पढ़ते वक़्त जहां ठहरने की जगह हो वहां न ठहरे हों या अल्फ़ाज़ (शब्द) मिला कर पढ़ने की बजाए बग़ैर मिलाए पढ़ लिये हों या कोई ऐसा लफ़्ज़ जो तूने बयान न फ़रमाया हो और हमारी ज़ुबान से निकल गया हो, तो उसकी भी हम तुझ से माफ़ी चाहते हैं।

ऐ अल्लाह ! क़ुरआन मजीद में कोई मद (ٓ) की जगह हो या तशदीद (ّ) या जहां तशदीद न हो, या जज़्म (ْ) हो या कोई ज़ेर, ज़बर (ِ , َ) और पेश (ُ)। इस तरह पढ़ लिया हो जो वहां लिखा हुआ न हो, तो उस भूल की भी हम तुझ से माफ़ी के तलबगार (चाहने वाले) हैं। रहमत की आयत पढ़ते वक़्त बग़ैर रग़बत (लगाव) के पढ़ लिये हों और अज़ाब की आयातें पढ़ने पर हमारे दिल में तेरा डर पैदा होने की कमी रह गई हो तो माफ़ कर दे।

ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा और हक़ (सच्चाई) की गवाही देने वालों की फ़ेहरिस्त (सूची) में हमारा भी नाम लिख ले। या अल्लाह ! हमारे दिलों को क़ुरआन मजीद के नूर (रोशनी) से जगमगा दे, हमारे अख़्लाक़ (आचरण) में क़ुरआन मजीद की तालीम से ज़ीनत पैदा फ़रमा। ऐ अल्लाह ! क़ुरआन मजीद की बरकत से हमें आग से निजात अता फ़रमा और क़ुरआन मजीद के ज़रिए हमें जन्नत में दाख़िल अता फ़रमा। ऐ अल्लाह ! दुनिया की ज़िन्दगी में हमारे लिये क़ुरआन मजीद को तुझ से ताल्लुक़ बनाये रखने का ज़रिया बना और क़ब्र में क़ुरआन मजीद की बरकत से हमारे लिये बहशत (ख़ौफ़) को दूर कर दे, आख़िरत का रास्ता तै करने पर हमारे लिये क़ुरआन मजीद को जन्नत में हमारा रफ़ीक़ (साथी) बना दे और आग से बचने की ढाल बना और तमाम भलाइयों के हासिल करने में क़ुरआन मजीद को हमारे लिये दलील (राह बताने वाला) बना दे और तमाम भलाइयां हमारे लिये नामए आमाल (कर्मनामा) में दर्ज फ़र्मा (लिख दे) और हमें तौफ़ीक़ दे कि सच्चे दिल से, साफ़ सुथरी ज़ुबान से, ख़ैर व भलाई की मुहब्बत से और ईमान की बशारत (ख़ुश ख़बरी) से हम माला माल हो जायें।

और ऐ अल्लाह ! तूने दरूद व सलाम का तोहफ़ा हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अता फ़रमाया है जो तेरी मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल (उत्तम) और बेहतर हैं और तेरे लुत्फ़ व इनायत (मेहरबानी) की हम को पहचान कराने वाले हैं जो हम सब के सरदार हैं और अपने अर्श (तख़्त) के नूर से तूने उनको नवाज़ा (अता किया) है। ऐ अल्लाह ! तू हम सब की तरफ़ से दरूद व सलाम का तोहफ़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, उन की अज़वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) पर उनकी औलाद पर और उन के तमाम असहाबे किराम (नेक साथियों) तक पहुंचा दे, सलाम पर सलाम और बहुत बहुत बहुत सलाम......

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वल कवर प्रिंटिंग : न्यू क्रिस

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हमारे स्टाकिस्ट

फ़रीद बुक डिपो, जामा मस्जिद, दिल्ली-६

अन्जुम बुक डिपो, जामा मस्जिद, दिल्ली-६

कुतुब ख़ाना रशीदिया, जामा मस्जिद, दिल्ली-६

कुतुब ख़ाना अज़ीज़िया, जामा मस्जिद, दिल्ली-६

न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, भिंडी बाज़ार, बम्बई-३

हुसामी बुक डिपो, मछली कमान, हैदराबाद-२

अल-फ़लाह बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड, माले गांव

हनीफ़ बुक डिपो, मोमिन पुरा, नागपुर-१८

फ़ज़ले रब्बी, इस्लामिक बुक सेन्टर दरगाह रोड मीरज

एम. इक़बाल बुक डिपो, भिंडी बाज़ार, बेलगाम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri